१ ओं सतिगुर प्रसादि ।

आदि

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब

(दूसरी सैंची)

[हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण]

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ५०३/१२०, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।

आदि

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब

(दूसरी सैंची)

[हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण]

अनुवाद—

डॉ० मनमोहन सहगल

एम० ए०, पीएच्०डी०, डी०लिट्०

लिप्यन्तरण—

नन्दकुमार अवस्थी

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

प्रथम संस्करण—

१९८० ई०

पृष्ठसंख्या—१८×२२÷८ = ९९२

भेंट— ५०·०० रुपया

मुद्रक :—

वाणी प्रेस

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ—२२६००३

प्रकाशकीय

प्रत्येक क्षेत्र प्रत्येक सन्त की वाणी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी॥

विषय-प्रवेश

लोकप्रख्यात धर्मग्रन्थ 'श्री गुरुग्रन्थ साहिब' के हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण के चार सैंचियों (जिल्दों) में प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत, प्रथम सैंची १९७८ ई० में प्रकाशित हुई थी। इस अद्भुत ग्रन्थ के हिन्दी में अवतरित होते ही पाठकों के हर्ष का वारापार न रहा। अगली सैंचियों के शीघ्र प्रकाशन के तकाज़े आते रहे। विद्वान् अनुवादक श्री डॉ० सहगल के भी अदम्य उत्साह के फलस्वरूप यह दूसरी सैंची आज पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। भुवन वाणी ट्रस्ट के देवनागरी अक्षयवट की देशी-विदेशी प्रकाण्ड-शाखाओं में, संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, कश्मीरी, गुरमुखी, राजस्थानी, सिन्धी, गुजराती, मराठी, कोंकणी, मलयाळम, तमिळ, कन्नड, तॅलुगु, ओड़िया, बंगला, असमिया, नेपाली, अंग्रेज़ी, हिब्रू, ग्रीक आदि के वाङ्मय के अनेक अनुपम ग्रन्थ-प्रसून और किसलय खिल चुके हैं, अथवा खिल रहे हैं। इस नागरी अक्षयवट की गुरमुखी शाखा में प्रस्तुत ग्रन्थ दूसरा पल्लव-गुच्छ है।

भूमण्डल पर देश-काल-पात्र के प्रभाव से मानव जाति, विभिन्न लिपियाँ और भाषाएँ अपनाती रही है। उन सभी भाषाओं में अनेक दिव्य वाणियाँ अवतरित हैं, जो विश्वबन्धुत्व और परमात्मपरायणता का पथ प्रदर्शन करती हैं; किन्तु उन लिपियों और भाषाओं से अपरिचित होने के कारण हम इस तथ्य को नहीं देख पाते। अपनी निजी लिपि और अपनी भाषा में ही सारा ज्ञान और सारी यथार्थता समाविष्ट मानकर, दूसरे भाषा-भाषियों को उस ज्ञान से रहित समझते हुए हम भेद-विभेद के भ्रमजाल में भ्रमित होते हैं। भूमण्डल की बात तो दूर, हमारे अपने देश 'भारत' में ही अनेक भाषाएँ और लिपियाँ प्रचलित हैं। एक ब्राह्मी लिपि के मूल से उत्पन्न होने के बावजूद उन सबसे परिचित न होने के कारण हम अपने को परस्पर विघटित समझने लगते हैं। सारी लिपियाँ और भाषाएँ सीखना-समझना सम्भव भी नहीं है।

सुतरां, यथासाध्य विश्व, और अनिवार्यतः स्वराष्ट्र की सभी भाषाओं के दिव्य वाङ्मय को राष्ट्रभाषा हिन्दी और सम्पर्कलिपि नागरी में सानुवाद लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से बढ़ाकर उसको सारे राष्ट्र को सुलभ कराना, समस्त सदाचार-साहित्य-निधि को सारे देश की सम्पत्ति बनाना, यह संकल्प भगवान की प्रेरणा से सन् १९४७ में मैंने अपनाया, और इसी उद्देश्य से १९६९ ई० में भुवन वाणी ट्रस्ट की स्थापना हुई। प्रस्तुत 'श्री गुरुग्रन्थ साहिब' का हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण भी भाषाई सेतुबन्ध की इसी पुष्कल शृंखला की एक कड़ी है।

आदि ग्रन्थ

आदि श्री गुरूग्रन्थ साहिब की लिपि गुरमुखी है। पृष्ठ ३२ पर प्रस्तुत गुरमुखी-देवनागरी वर्णमाला चार्ट से स्पष्ट है कि गुरमुखी अक्षर प्राय: नागरी लिपि के अनुरूप हैं और सामान्य ध्यान रखने पर गुरमुखी और हिन्दी-भाषी परस्पर दोनों लिपियों का सरलता से पाठ कर सकते हैं। ग्रन्थ की अधिकांश गुरुवाणियाँ पंजाब प्रदेश में अवतरित हैं और इस कारण जन-साधारण उनकी भाषा को पंजाबी के सदृश अनुमान करता है; जबकि बात ऐसी नहीं है। श्री गुरूग्रन्थ की भाषा आधुनिक पंजाबी की अपेक्षा हिन्दी भाषा के अधिक समीप है और हिन्दी-भाषी को पंजाबी-भाषी की अपेक्षा उनका आशय अधिक बोधगम्य है।

दूसरी भ्रान्ति है कि सामान्यजन समझते हैं कि श्री गुरूग्रन्थ साहिब सिक्ख-पन्थ-मात्र का धर्मग्रन्थ है, उसमें सिक्ख अनुयायियों के लिए ही विधि-निषेध वर्णित होंगे; जबकि तथ्य यह नहीं है। अलबत्ता यही सही है कि संकट और त्रास के युग में एक संत्रस्त मानव-समूह इन वाणियों के बल पर संगठित हुआ और अपूर्व उत्सर्ग एवं बलिदान द्वारा उसने परित्राण प्राप्त किया। परन्तु श्री गुरूग्रन्थ साहिब की दिव्य गुरुवाणियों में किसी वर्ग-विशेष, पक्ष-विपक्ष, मित्र-शत्रु की झलक मात्र नहीं मिलती। सामाजिक एवं धार्मिक आडम्बरों से बन्धनमुक्त करते हुए, शाश्वत सदाचार और सद्विचार के द्वारा गुरु-चिन्तन, आत्म-परमात्म-चिन्तन और मिलन की ओर मानव मात्र को उन्मुख किया गया है। कहीं यह गन्ध भी नहीं मिलती कि कौन उत्पीड़ित है, कौन उत्पीड़क। मानवीय दुर्बलताओं और दुर्वासनाओं को ही शत्रु मानकर साक्षात् ईश्वरस्वरूप गुरु की कृपा से उनसे स्वत: त्राण, और अन्ततः आवागमन से मुक्ति पाने का नाद सारे ग्रन्थ में ओतप्रोत है। यह तो भान भी नहीं होता कि यह किसी विशिष्ट सम्प्रदाय का ग्रन्थ है। यह श्री गुरूग्रन्थ साहिब की अलौकिकता है।

गुरमुखी में प्राप्त ऐसे सार्वभौम दिव्य ग्रन्थ के अनुवाद पंजाबी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में भले ही हुए हैं, किन्तु आम जनता को बोधगम्य हिन्दी टीका कदाचित् उपलब्ध नहीं है। ग्रन्थ साहिब के आंशिक हिन्दी भाष्य तो देखने को मिले; श्री परमानन्द उदासी द्वारा श्री जपुजी की विशद व्याख्या, एवं कई अन्य टीकाएँ भी। किन्तु एक तो वे टीकाएँ समग्र ग्रन्थ की नहीं हैं, आंशिक हैं; दूसरे वे व्याख्याएँ विस्तर में हैं और विद्वानों के लिए उपयुक्त हैं। जनसाधारण की सहज पैठ उनमें संभव नहीं। इस विचार से प्रेरित होकर, श्री गुरूग्रन्थ साहिब का हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण, सामान्य जनता के लिए आवश्यक प्रतीत हुआ।

हिन्दी अनुवाद

वाणी और भाव, दोनों का सही निर्वाह करते हुए अनुवाद का कार्य

सरल नहीं था। हिन्दी और गुरमुखी, दोनों भाषाओं में पर्याप्त गति, भावग्राह्यता, और दर्शन के प्रति सहज निष्ठा, इन सबकी ज़रूरत थी। इसी खोज के दौरान, डॉ० मनमोहन सहगल, हिन्दी विभागाध्यक्ष, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला से साक्षात् हुआ। ट्रस्ट के पुनीत और गुरुतर कार्य पर प्रसन्न होकर उन्होंने बड़े निस्पृह भाव से इस गहन कार्य को सम्हाला। उन्हीं के योगदान से, आदि ग्रन्थ का पूर्वार्द्ध अंश (प्रथम एवं द्वितीय सैंची) पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हो सका है। आगे का अनुवाद चल रहा है। राष्ट्र भाषा में यह एक बड़े अभाव की पूर्ति हो रही है। हिन्दी-भाषी जनता गुरुवाणी का अमृतपान कर डॉ० सहगल की सदैव कृतज्ञ रहेगी। ट्रस्ट की विद्वत्परिषद के कश्मीरी भाषा-सलाहकार सदस्य डॉ० शिबनकृष्ण रैणा के भी हम आभारी हैं; उन्होंने ही डॉ० सहगल से शुभ परिचय का संयोग उपस्थित किया था।

नागरी लिप्यन्तरण

गुरुमुखी पाठ को यथावत् शुद्ध रूप में नागरी लिपि में प्रस्तुत करने के लिए प्रकाशित अब तक के नागरी लिप्यन्तरणों और श्री शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर द्वारा प्रकाशित नागरी संस्करण को हमने आरम्भ में आधार बनाया। किन्तु श्री शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर द्वारा प्रकाशित श्री गुरुग्रन्थ साहिब के गुरमुखी संस्करण से मिलान करने पर विदित हुआ कि नागरी लिप्यन्तरणकार ने गुरमुखी पाठ को नागरी लिपि में रूपान्तरित करते समय, शब्दों को हिन्दी और संस्कृत के समीप पहुँचाने का यत्न किया है; जबकि उनको गुरमुखी पाठ को केवल नागरी अक्षरों में यथावत् लिख देना चाहिए था।

सभी भारतीय भाषाओं में संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का अमित भण्डार है; सुतरां, गुरमुखी में और श्री गुरुग्रन्थ साहिब की (गुरमुखी) भाषा में भी संस्कृत से उद्भूत अनेक तद्भव शब्दों का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। ज्ञातव्य है कि मूल पोथी के लेख की आर्ष पवित्रता को चिरस्थायी रखने के लिए, आदि पोथी में यदि कोई शब्द प्रमादवश अशुद्ध लिख गया है, तो आज भी, लाखों प्रतियाँ छप जाने पर भी, उन अशुद्धियों को संशोधित रूप में लिखना अमान्य समझा गया। उदाहरण के लिए यदि आदि लेख में 'ओुही', 'गुोबिंद', 'गुोपाल' आदि लिख गये हैं, तो उनको आर्ष होने के नाते पूज्य और शाश्वत मानकर जैसे का तैसा ही लिखा जा रहा है; उनको, अगले छापों में, क्रमशः 'ओही', 'गोबिंद', 'गोपाल' नहीं संशोधित किया गया।

ऐसी सावधानी का निर्देश रहने पर जो शब्द गुरमुखी पाठ में गुरु ग्रन्थ साहिब की भाषा के अनुरूप शुद्ध लिखे गये हैं, उनके हिन्दीकरण, अथवा संस्कृतीकरण, अथवा तद्भव से तत्सम बनाने का प्रश्न ही कहाँ उठता है? उदाहरण के लिए नागरी लिप्यन्तरण में (१) अम्रित को

अमृत किया गया है। राग-लय-बद्ध गुरुवाणियों में इन दोनों प्रयोगों में एक मात्रा का अन्तर पड़ जाता है। 'अम्रित' में चार मात्राओं के स्थान पर 'अमृत' में केवल तीन मात्राएँ रहकर छन्द-दोष उत्पन्न करती हैं। (२) उसी प्रकार 'त्रिखा' को 'तृखा' लिखा गया है। गुरमुखी में ऋ अक्षर का प्रयोग ही नहीं है। फिर यदि तत्सम रूप ही देना था, तो 'तृषा' चाहिए, न कि 'तृखा'। इसी प्रकार 'स्रिसटि', 'द्रिसटि' आदि को 'सृसटि', 'दृसटि' आदि लिखा गया है, जबकि उनके तत्सम रूप 'सृष्टि' और 'दृष्टि' हैं। इस प्रकार अन्य नागरी लिप्यन्तरणों में अनेक शब्द मूलपाठ से विकृत हो गये हैं; न अब वे गुरमुखी रहे, न हिन्दी और न संस्कृत रहे।

इस समस्या को सामने देखकर, हमने एक-एक अक्षर गुरमुखी पाठ से मिलाकर उसी प्रकार गुरमुखी शैली पर लिखा है जिस प्रकार वे मान्य और पूज्य हैं। जहाँ लघु या वृहद्, किसी भी आकार में मुद्रण होने पर 'ग्रन्थ साहिब' में सदैव १४३० ही पृष्ठ रखने की मर्यादा निर्धारित है; न कम न ज़्यादा, और जहाँ 'गुोबिंद' के स्थान पर 'गोबिंद' नागरी लिप्यन्तरण में नहीं बदला गया है, वहाँ गुरमुखी के अन्य शुद्ध शब्दों के हिन्दीकरण की गुंजाइश कहाँ, या आवश्यकता भी क्या ? गुरमुखी में 'स्री' अथवा 'सिरी' पाठ है, उसको 'श्री' लिखकर शुद्धीकरण उचित नहीं। पावन ग्रन्थ श्री गुरूग्रन्थ साहिब, पवित्र गुरमुखी भाषा में अवतरित है। अतः नागरी लिपि में गुरमुखी पाठ को जैसे का तैसा रूपान्तरित करने मात्र का अधिकार है; उसके हिन्दीकरण या संस्कृतीकरण का नहीं।

फलस्वरूप, भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित सानुवाद नागरी संस्करण से दो पावन उद्देश्य सिद्ध हुए। (१) एक तो विश्वप्रसिद्ध अद्वितीय 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' का नाम प्रत्येक व्यक्ति से सुपरिचित होते हुए भी, उसकी पवित्र वाणी का सानुवाद अमृतपान, जो गुरमुखी न जानने वालों के लिए अब तक दुर्लभ था, वह देश-विदेश के समस्त हिन्दी-जगत् के लिए सुलभ हो गया। (२) दूसरे, श्री गुरूग्रन्थ साहिब का नितांत शुद्ध नागरी लिप्यन्तरण प्रस्तुत हो सका।

आभार-प्रदर्शन

उत्तरप्रदेश शासन, तथा विद्वान् अनुवादक डॉ० सहगल के प्रति हम विशेष रूप से नितांत आभारी हैं।

विश्ववाङ्मय से निस्रित अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा।।
अमर भारती सलिला की 'गुरमुखी' सुपावन धारा।
पहन नागरी पट, 'सखि' ने अब भूतल-भ्रमण विचारा।।

नन्दकुमार अवस्थी
प्रतिष्ठाता, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ—३

अनुवादकीय

गुरुग्रन्थ साहिब मध्यकालीन सन्तों की अमूल्य वाणी का एक अपूर्व संकलन है, जिसमें सम्पादक गुरु अर्जुनदेवजी ने विग्रह और विघटन के युग में व्यापक भारतीय दृष्टि से प्रादेशिक, भाषाकीय, वर्गीय अथवा जातीय वृत्तों-घेरों से परे एक समान मंच की स्थापना की थी। युग-बोध और भावी आदर्शों के साथ-साथ इसमें भावात्मक एकता का सूत्र थाम कर भारतीय महानात्माओं ने सांसारिक जीवों के लिए जीने का सही मूल्य आँकने का सफल प्रयास किया था। वाणीकारों की समयावधि बारहवीं से सत्रहवीं शती ईसवी तक, लगभग ५०० वर्षों की थी— वे इतने दीर्घकाल की सर्वांगीण परिस्थितियों के भुक्त-भोगी एवं अध्यात्मानुभवी महापुरुष थे। इसीलिए उनकी वाणी मानवता के प्रति प्रेम, शुद्धाचरण एवं ईश्वरेच्छा में विश्वास की प्रचारक थी। विपरीत परिस्थितियों की प्रबलता में जीवन-मूल्य दम तोड़ने लगे थे, संस्कृति का ह्रास हो रहा था तथा भारतीय प्रज्ञा कुण्ठित की जा रही थी। वाणीकार संत-हंसों ने नीर-क्षीर-विवेचन की योग्यता द्वारा युगानुकूल खोटे का त्याग एवं खरे को ग्रहण किया— और इस प्रकार भारतीय संस्कृति की डगमगाती नैया के पतवार बन गए। पंजाब प्रदेश में शत्रु के विशेष प्रकोप के कारण स्थिति अधिक गम्भीर थी, अतः यहाँ जीवन के कर्णधार इन सन्तों की पीढ़ियों को गुरु-परम्परा रूप में कार्य-संलग्न रहना पड़ा। उनकी वाणी का प्रस्तुत संकलन 'गुरुग्रन्थ साहिब' किसी वर्ग या मत का रिक्थ-ग्रन्थ नहीं, वरन् देश के मध्यकालीन चिन्तन का वह रत्नाकर है, जिसमें प्रत्येक गवेषक के लिए जीवन-मूल्य-रूपी रत्न उपलब्ध हैं। इतनी महान् आध्यात्मिक वाणी की निधि को पंथों, मत-मतांतरों के संकीर्ण घेरों में आवृत्त करना हमारा स्वार्थ तथा अन्याय है। इसी तथ्य को अनावृत्त करने के उद्देश्य से हमने गुरुग्रन्थ साहिब को देवनागरी में लिप्यन्तरित करके, जन-साधारण की सूझ-बूझ के लिए साथ-साथ गद्य में उसकी सरल पद-व्याख्या प्रस्तुत की है। यह एक भगीरथ-कार्य है, जिसे भुवन वाणी ट्रस्ट सरीखी निष्ठावान् एवं समर्पित संस्थाएँ ही सम्पूर्ण कर सकती हैं। इसी योजना की प्रथम कड़ी आप देख चुके हैं— यह दूसरी कड़ी आपके समक्ष है।

पंजाब की उपर्युक्त गुरु-परम्परा के अन्तिम दशमेश गुरु गोबिंदसिंह जी ने वचन किया था कि उनके उपरान्त गुरु-गद्दी किसी व्यक्ति-विशेष के रूप में न रहकर शब्द-रूप में ही सत्यान्वेषियों का मार्ग-प्रदर्शन करेगी। भाई प्रह्लादसिंह ने अपने 'रहतनामा' में गुरुजी की उस आज्ञा को यों प्रस्तुत किया है—

अकाल पुरख के बचन सिउ परगट चलाइयो पंथ।
सभ सिक्खन को बचन है गुरु मानीओ ग्रन्थ॥

गुरु खालसा जानीओ प्रगट गुरु की देह।
जो सिख मो मिलबो चहै खोज इनी मो लेह ॥

अभिप्राय यह कि इस पुनीत वाणी के शब्दों में ही प्रभु-मिलन का मार्ग निर्दिष्ट है, उसी में खोज लो। क्योंकि अब से यही वाणी जीवों का पथ-प्रदर्शन करेगी, इसलिए इसे ही गुरु स्वीकार किया जाए। बड़ा महान् और स्पष्ट निर्देश था। अब भी योग्य और सूझवान अनुयायी वाणी को पावनता तथा सामर्थ्य को गुरु का शब्द-रूप मानकर ही शीष झुकाते हैं।

पाँचवें गुरु अर्जुनदेवजी के समय (सन् १५८२-१६०७) तक पंजाब के गुरुओं की वाणी का कोई प्रामाणिक संकलन तैयार नहीं किया गया था। पाँचवें गुरुजी ने महसूस किया कि उन्हें अपने पूर्वजों की वाणी के प्रामाणिक रूप को संगृहीत करना चाहिए, ताकि शिष्यों और भक्तों को पूर्वगुरुओं तथा सन्तों-महात्माओं के ज्ञान, प्रबोध और उपदेश से अभिज्ञ करवाया जा सके। उन्हीं दिनों गुरु-दरबार में आनेवाले किसी सिक्ख ने कोई अप्रामाणिक 'शबद' पढ़ा। गुरुजी ने उसे टोका। अन्य उपस्थित सिक्खों ने शिकायत की कि गुरुजी का भतीजा मिहरवान नानक छाप से वाणी रचने लगा है, जिससे गुरुओं की यथार्थ वाणी में मिथ्यात्व का मिश्रण हो रहा है। गुरुजी ने इस समस्या के समाधान-रूप में सच्ची वाणी के संग्रह-रूप में गुरुग्रन्थ साहिब का सम्पादन किया। एक और कारण हो सकता है— गुरु-दरबार में शब्द-कीर्तन होता था। यह कार्य डूम, मिरासी, भाट आदि करते थे। वे लोग प्रायः लोभी होते थे, इसलिए उन्हें धन देकर गुरु-परम्परा के विरोधी गुरु-वाणी के अतिरिक्त किसी का भी प्रशस्ति-गान करवाते थे। गुरु अर्जुनदेव ने अनुभव किया कि क्यों न उनके शिष्य-भक्तजन ही कीर्तन का कार्य करें। अतः उन्होंने गुरु-भक्तों को प्रामाणिक वाणी प्रदान करने के विचार से ग्रन्थ-सम्पादन किया।

अब प्रश्न उठता है कि यदि गुरुओं की प्रामाणिक वाणी का संग्रह तयार हो रहा था, तो उसमें सन्तों, भक्तों, भाटों आदि की वाणियाँ क्यों संग्रह की गईं। सन्त-महात्माओं की वाणी यहाँ संग्रह करने के दो कारण हो सकते हैं— एक, स्वयं गुरु साहब अपने से पूर्व हुए सन्त-महात्माओं की वाणियों का पाठ किया करते थे, उपदेश-रूप में इन्हें अपने शिष्यों को सुनाते एवं इनकी व्याख्या उन्हें समझाते थे। दूसरे, गुरुजी ने इन वाणियों में गुरु-परम्परा की विचारधारा की पुष्टि होती अनुभव की। अतः गुरु-विचारधारा का महत्त्व स्थापित करने तथा शिष्यों को यह सुझाने के लिए कि शताब्दियों से भारत के सन्त-महात्मा वही बात कहते रहे हैं, जो गुरु-परम्परा ने भी कही, गुरु अर्जुनदेवजी ने इन वाणियों को गुरुग्रन्थ साहिब में संगृहीत किया। भाटों की अधिकांश वाणी गुरु-प्रशस्ति से सम्बन्धित है।

गुरु-गुण-गान को गुरुग्रन्थ साहिब की विचारधारा में विशेष स्थान प्राप्त है, इसलिए भाटों के वे सवैये भी ग्रन्थ में शामिल कर लिये गए।

पूर्वगुरुओं की वाणी परम्परित रूप में कुछ तो गुरुजी के पास मौजूद ही थी, कुछ उन्होंने गुरु अमरदासजी के ज्येष्ठ पुत्र बाबा मोहन द्वारा संकलित पोथियों में से प्राप्त कर ली। अन्य सन्तों-महात्माओं की भी कुछ वाणी इन पोथियों में मौजूद थी। प्रो० साहबसिंह के मतानुसार क्योंकि गुरुनानक-पद्धति अपने पीछे गुरु-गद्दी सँभालनेवाले में अपनी ही ज्योति जलाने की चर्चा करती है— अतः यह वाणी क्रमानुसार अपनी-अपनी वाणी सहित एक गुरु अपने बाद के दूसरे गुरु को देते रहे होंगे। हमारा मत है कि गुरुवाणी का संग्रह साथ-साथ ही होता रहा होगा। गुरु अर्जुनदेवजी ने ग्रन्थ के सम्पादन-समय पूर्व संकलित वाणी को एक नियमित तन्त्रात्मक क्रम दे दिया है। यों भी गुम होने अथवा बिखरने की सम्भावना गुरु नानक-वाणी के सम्बन्ध में ही हो सकती है— अन्य तीनों गुरु (गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास) प्रायः गुरु-गद्दी प्राप्ति से लेकर ज्योति-जोत समाने तक किसी लम्बी यात्रा आदि पर नहीं गए। जहाँ रहे, वहीं वाणी रची और अपने उत्तराधिकारी को गुरु-गद्दी सहित सौंप गए। गुरु अर्जुनदेव के राग गउड़ी के 'हम धनवंत भागठ सच नाइ' वाले पद से यही संकेत मिलता प्रतीत होता है। सिक्ख इतिहास में गुरु अंगददेव को गद्दी देते समय गुरु नानकदेव ने सेली, टोपी और पोथी दी थी। यह पोथी निश्चय ही गुरु नानकदेव की वाणी का संग्रह होगा। यह सही है कि साखीकारों ने ऐसे सन्दर्भ प्रायः प्रस्तुत किए हैं, जिनके अनुसार किसी भी परिस्थिति में भावावेश में आए गुरु नानक रबाब की लय में वाणी गाने लगते थे। यदि यह तर्क मान लिया जाए तो गुरुजी की लम्बी वाणियों— जपुजी, सिद्ध-गोष्ठ आदि— के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण कठिन हो जाएगा। हाँ, यह बात अधिक मर्यादा और गुरुता से सभर है कि गुरुजी समय-समय पर वाणी रचते थे और अवसरानुकूल अपना कोई भी सुयोग्य पद गा देते थे। इस दशा में वे रचित वाणी के विस्मृत हो जाने के भय से अवश्य लिपिबद्ध करते अथवा करवा लेते होंगे और अन्तिम समय गुरु अंगद को सौंपी पोथी उसी रचना की होगी। इस तथ्य की सत्यता प्रथम एवं तृतीय गुरुओं की वाणी के भाव और भाषा की पारस्परिक समानता में खोजी जा सकती है।

गुरुग्रन्थ साहिब में आई सन्तों-महात्माओं की वाणी का संग्रह भी निश्चय ही गुरु अर्जुनदेवजी ने मूल स्रोतों से ही प्राप्त किया होगा। उन्होंने उन्हीं महात्माओं की वाणी को अपनाया है, जिनका स्वर निर्गुण ब्रह्म की प्रशस्ति करता एवं गुरुओं के चिन्तन से समानता रखता है। यहाँ तक कि सूरदास सरीखे सगुणवादी महात्मा की वाणी ग्रन्थ में लिखते समय 'छाड़ि मन हरि विमुखन को संग' लिखवाकर वे रुक गए, क्योंकि पद की अन्य

पंक्तियों में आए 'सूरदास खल काली कामरि चढ़े न दूजौ रंग' के सिद्धान्त से वे सहमत न थे। वे दुष्ट से दुष्ट व्यक्ति में भी एक उज्ज्वल आत्मा देखने के समर्थक थे। आत्मा मैली नहीं होती, उसे प्रबोधन की अपेक्षा है।

गुरुग्रन्थ साहिब की मूल प्रति का प्रश्न भी सिक्ख विद्वानों में साहित्यिक तर्क-वितर्क का कारण बना हुआ है। गुरुग्रन्थ साहिब की अनेक धाराएँ चली हैं। कहते हैं, जब गुरुजी ने ग्रन्थ तैयार कर लिया तो अपने एक सेवक भाई बन्नो को उसपर जिल्द बँधवाने लाहौर भेजा। बन्नो ने मार्ग में समय पाकर आदिग्रन्थ की मूल बीड़ (पाण्डुलिपि) की एक प्रतिलिपि और तैयार कर ली। यह बन्नो वाली बीड़ कहलाई। बाद में मूल बीड़ अथवा बन्नो की बीड़ से प्रतिलिपियाँ बनती रहीं, किन्तु गुरु तेग़बहादुर के समय धीरमल्ल मूल बीड़ को छीनकर करतारपुर ले गया। गुरु तेग़बहादुर उदार एवं उदात्त व्यक्तित्व के स्वामी थे, इसलिए उन्होंने मूल बीड़ को धीरमल से छीनना उपयुक्त नहीं समझा। वह बीड़ अब भी करतारपुर के गुरुद्वारे में मौजूद है। भाई जोधसिंह समिति ने उस बीड़ को भलीभाँति जाँचकर एक रिपोर्ट गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को दे दी थी। तदुपरान्त स्वयं भाई जोधसिंह ने एक पुस्तक 'करतारपुरी बीड़ बारे' लिखकर अनेक तर्क एवं सम्भावनाएँ प्रस्तुत करते हुए यह दावा किया है कि करतारपुर वाली बीड़ ही वह मूल बीड़ है जिसे गुरु अर्जुनदेवजी ने भाई गुरुदास से लिखवाया था।

गुरुग्रन्थ साहिब के वाणीकार

ऊपर बताया जा चुका है कि गुरुवाणी के अतिरिक्त अनेक सन्त-महात्माओं की वाणी आदिग्रन्थ में संग्रह की गई है। कालक्रमानुसार वाणीकारों के नाम, रचनाकाल तथा वाणी की मात्रा निम्नानुसार है—

१. जयदेव, जन्म ११७० ई०, २ पद
२. शेख़ फ़रीद, जन्म ११७३ ई०, १३४ (४ शब्द, १३० श्लोक)
३. त्रिलोचन, जन्म १२६७ ई०, ४ पद
४. नामदेव, जन्म १२७० ई०, ६० पद
५. रामानन्द, १२९९-१४१० ई०, १ पद
६. सधना, १३वीं शती अन्तिमचरण, १ पद
७. बेनी, १३वीं शती अन्तिमचरण, ३ पद
८. रविदास, १३८४-१५१४ ई०, ४१ पद
९. कबीर, जन्म १३९८ ई०, २९२ पद २४९ श्लोक
१०. धन्ना, जन्म १४१५ ई०, ४ पद
११. पीपा जन्म १४२५ ई०, १ पद
१२. सेन, १५वीं शती ई० पूर्वार्द्ध, १ पद
१३. परमानन्द, मृत्यु १६वीं शती प्रथम दशाब्द ई०, १ पद

१४. सूरदास, जन्म १४७८ ई०, १ पंक्ति
१५. भीखन, मृत्यु १५७४ ई०, २ पद
१६. मीराबाई, जन्म १४९८ ई०, कुछ हस्तलिखित बीड़ों में १ पद (मूल में नहीं)
१७. गुरु नानकदेव, जन्म १४६९ ई०, ९७४ पद और श्लोक
१८. गुरु अंगददेव, जन्म १५०४ ई०, ६२ श्लोक
१९. गुरु अमरदास, १४७९ई०, ९०७ पद और श्लोक
२०. गुरु रामदास, जन्म १५३४ ई०, ६७९ पद और श्लोक
२१. गुरु अर्जुनदेव, जन्म १५६३ ई०, २२१८ पद और श्लोक
२२. गुरु तेग़बहादुर, जन्म १६२२ ई०, ११५ पद और श्लोक (मूल बीड़ में इनकी वाणी नहीं है, आजकल मुद्रित-प्रकाशित ग्रन्थ में यह वाणी है।)
२३. गुरु गोबिंदसिंह, जन्म १६६६ ई०, १ श्लोक (यह गुरु तेग़बहादुर के श्लोकों में ही सम्मिलित है)
२४. भाई मरदाना, जन्म १४५९ ई०, ३ श्लोक
२५. बाबा सुन्दरजी, १६वीं शती ई०, ६ पद (पउड़ियाँ)
२६-२७. सत्ताडूम और राय बलवंड गुरु अर्जुन-दरबार में विद्यमान ८ पद (पउड़ियाँ)

उपर्युक्त वाणीकारों के अतिरिक्त गुरु-दरबारों में विभिन्न कालों में हुए भाटों ने १२३ सवैये कहे हैं।

गुरुग्रन्थ वाणी : आन्तरिक क्रम

कहा जा चुका है कि गुरुवाणी को आदिग्रन्थ में एक विशेष क्रम में प्रस्तुत किया गया है। उपलब्ध मुद्रित प्रतियों के अनुसार समूची वाणी ३१ प्रधान रागों में बाँटी गई है। प्रत्येक राग में संकलित वाणी में सर्वप्रथम गुरु नानकदेवजी की वाणी म० १ के संकेत से लिखी गई है, फिर इसी प्रकार म० २, म० ३, म० ४, म० ५, म० ९ के संकेतों से क्रमशः गुरु अंगददेव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुनदेव तथा गुरु तेग़बहादुर की वाणी को संग्रह किया गया है। प्रत्येक महला की पद संख्या अलग-अलग एवं संयुक्त रूप में दी गई है। उदाहरणार्थ यदि पद के अन्त में ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ३१ ॥ ६४ ॥ लिखा है, तो उससे यह अभिप्राय होगा कि वह पद चार पंक्ति का था (चौथी पंक्ति पर समाप्त), महला १ के ३३ पद थे, फिर म० २ या म० ३ (जैसी भी स्थिति हो) के ३१ पद हैं, पदों की अब तक कुल संख्या ६४ है। गुरु अंगददेव की वाणी के उपरान्त सन्तों-महात्माओं की वाणी दी गई है, जोकि प्रायः कबीर से आरम्भ हुई है। किन्तु इस वाणी की परिगणना इकट्ठी ही कर ली गई है।

रागों में दी गई वाणियों के अतिरिक्त कतिपय वाणियाँ वहीं रागों के अन्तर्गत विभिन्न संज्ञाओं से भी प्रस्तुत की गई हैं; यथा—

१. सिरीराग में 'पहरे' और 'वणजारा'।
२. माझ राग में 'बारहमाहा', 'दिनरैंणी'।
३. आसा राग में 'बिरहड़े', 'पट्टी'।
४. गौड़ी राग में 'करहले', 'बावन अखरी', 'सुखमनी', 'थिति'।
५. वडहंस राग में 'घोड़ियाँ', 'अलाहणियाँ'।
६. धनासरी राग में 'आरती'।
७. सूही राग में 'कुचज्जी', 'सुचज्जी', 'गुणवन्ती'।
८. रामकली राग में 'अनंदु', 'सद्', 'ओअंकारु', 'सिध-गोसटि'।
९. बिलावल राग में 'थित्ति', 'वारसत्त'।
१०. मारू राग में 'अंजुलिया', 'सोलहे'।
११. तुखारी राग में 'बारहमासा'।

मुद्रित गुरुग्रन्थ साहिब के कुल १४३० पृष्ठ हैं। क्रम इस प्रकार है—

१. (क) जपुजी (१ से ८ पृ०) प्रातःकालीन वन्दना।
(ख) सोदरु (८ से १० पृ०), सोपुरखु (१० से १२ पृ०) सोदरु तथा सोपुरखु की वाणियों का संयुक्त नाम 'रहिरास' है, जो सांध्यवंदना के लिए गाई जाती है।
(ग) सोहिला (१२ से १३ पृ०): शयनकाल की वंदना।

२. (१४ से १३५३ पृ० तक) रागों में लिखी गई वाणी, जिसमें क्रमशः चौपदे, द्विपदे, त्रिपदे, पंचपदे, छःपदे, अष्टपदे, सोलहे, शबद, छंत, वारें, भक्तों की वाणियों का क्रम है। कुल ३१ रागों में यह वाणी विभक्त है— सिरी, माझ, गौड़ी, आसा, गूजरी, देव-गांधारी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठ, धनासरी, जैतसरी, टोडी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, गौंड, रामकली, नट-नारायण, माली-गौड़ा, मारू, तुखारी, केदारा, भैरउ, बसंत, सारंग, मलार, कानड़ा, कल्याण, प्रभाती, जैजैवंती। इनके अतिरिक्त कहीं-कहीं दो रागों का सम्मिलित प्रयोग भी हुआ है; यथा— गौड़ी-माझ, आसा-काफ़ी, गौड़ी-दीपकी, सूही-ललित, बिलावल-गोंड, बसंत-हिंडोल आदि।

३. पृ० १३५३ से 'भोग' (समाप्ति) की वाणी शुरू होती है। यह पृष्ठ १४२१ तक चलती है। इस अंश में अधिकतर श्लोक, सवैये, भाट-वाणी आदि ही सम्मिलित है। क्रम निम्नानुसार है—
(क) श्लोक-सहसकृति (म० १) कुल श्लोक ४, पृ० १३५३।
(ख) श्लोक-सहकृति (म० ५) कुल श्लोक ६७, पृ० १३५३-१३६०।
(ग) गाथा (म० ५) कुल २४ बन्द, पृ० १३६०-६१।
(घ) फुनहे (म० ५) कुल २३ बन्द, पृ० १३६१-६३।

(ङ) चौबोले (म० ५) कुल ११ बन्द, पृ० १३६३-६४।
(च) श्लोक (कबीर) २४३ श्लोक, पृ० १३६४-७७।
(छ) श्लोक (फ़रीद) १३० श्लोक, पृ० १३७७-८४।
(ज) सवैये स्री मुखवाक (म० ५) २० सवैये, पृ० १३८५-८९।
(झ) भाटों के सवैये १२३ सवैये, पृ० १३८९-१४०९।
(ञ) श्लोक वाराँ ते वधीक १६२ श्लोक, पृ० १४१०-१४२६ तक।
(ट) श्लोक (म० ९) ५७ श्लोक, पृ० १४२६-२९।
(ठ) मुंदावणी (म० ५) २ श्लोक, पृ० १४२९।
(ड) रागमाला — — पृ० १४२९-३०।

प्रस्तुत सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण में गुरुग्रन्थ साहिब को (कलेवर अधिक होने के कारण) चार सैंचियों में विभक्त किया गया है। प्रथम सैंची ९६७ पृष्ठों में समाप्त हुई थी और इसमें मूल गुरुग्रन्थ साहिब के ३४६ पृष्ठों की सामग्री आई है। विषय-सूची पृष्ठ २१-३१ पर अवलोकनीय है। मूल ग्रन्थ के पृष्ठ ३४७ 'रागु आसा' से प्रस्तुत सैंची का आरम्भ हो रहा है। इसमें मूल गुरुग्रन्थ साहिब के पृष्ठ ३४७ से पृ० ७२० तक की वाणी का सरल अनुवाद दिया गया है। इसमें राग आसा, राग गूजरी, राग देवगंधारी, राग विहागड़ा, राग वडहंस, राग सोरठि, राग धनासरी, राग जैतसरी, राग टोडी और राग बैराड़ी में लिखी गई वाणी का पदान्वय किया गया है।

रागमाला की रचना के सम्बन्ध में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। मैकॉलिफ़ एवं सिक्ख इतिहासकार ज्ञानसिंह ज्ञानी इसकी रचना कवि आलम द्वारा की गई मानते हैं। कुछ सिक्ख श्रद्धालु इसे गुरुजी की ही लिखी मानते हैं। किन्तु इसमें कहीं नानक छाप न होने तथा भाषा की दृष्टि से भी गुरुओं की भाषा से अलग होने के कारण 'रागमाला' गुरुजी की रचना नहीं कही जा सकती।

वर्ण्य-विषय

गुरुग्रन्थ साहिब मुक्तात्मा गुरुओं, सच्चे सन्त-महात्माओं की वाणी और भाटों द्वारा की गई गुरु-प्रशस्तियों का संकलन है। सन्त-महात्मा सदैव सबके लिए समान होते हैं; वे 'सत्य' के साधक एवं प्रचारक होते हैं, इसीलिए उनकी वाणी सार्वलौकिक और सर्वकालीन होती है। उनके वचन युग-युगान्तर में अटल सत्य होते हैं। अतः गुरुग्रन्थ साहिब में संकलित वाणी 'सत्य की वाणी' है। क्योंकि 'सत्य' एक शाश्वत तत्त्व है, इसलिए श्रद्धालु जन-मानस इसे 'धुर की वाणी' अर्थात् 'आदि वाणी' कहकर पुकारता है। सामाजिक रीति-रिवाज एवं मानव-व्यवहार देश-कालानुरूप बदलते रहते हैं, इसलिए गुरुग्रन्थ साहिब की वाणी इन तत्त्वों से सम्बद्ध न होकर देश-काल के परे के परमसत्य से सम्बद्ध है। यदि कहीं प्रसंग-वश

रीति या मानव-व्यवहार की बात हुई भी है, तो वहाँ अपरिवर्तनीय आदर्श का संकेत उपलब्ध होता है।

गुरुग्रन्थ साहिब के वाणीकार क्योंकि लगभग ५०० वर्ष के काल-विस्तार में बटे हुए हैं, इसलिए युग-विशेष का प्रभाव उनकी रचना में यत्र-तत्र मिल ही जाता है। सर्वोपरि मानव-जीवन के प्रति मानववादी दृष्टिकोण को महत्त्व दिया गया है। भारतीय सांस्कृतिक विकास के पाठक के सम्मुख यदि उन पाँच सौ वर्षों (सन् ११७३-१६७९ तक) का सात्विक साँचे में ढला चित्र प्रस्तुत करना हो, तो ग्रन्थ साहिब से उत्तम रचना और कोई न मिल सकेगी। उसी युग में तुलसी का रामचरितमानस भी लिखा गया है, जोकि कला की कसौटी पर अनुपम है। परन्तु विचार-क्षेत्र में स्पष्ट वैष्णव-चिन्तन-स्रोत होने के कारण वह महान रचना एकांगी रह गई है, जबकि गुरुवाणी चिन्तन के प्रत्येक धरातल का स्पर्श करती है। निर्गुण, सगुण, निर्गुण-सगुण, सब विश्वास और साधनाएँ इसका श्रृंगार हैं—इसीलिए तो विश्व के अन्य युगान्तरकारी महाग्रन्थों की भाँति हमने इसे 'सत्य का स्रोत' कहा है।

भारतीय संस्कृति में चिन्तन की विभिन्न छः धाराओं (षट्शास्त्र) का सार प्रस्तुत ग्रन्थ में उपलब्ध है। 'एकता में अनेकता' और 'अनेकता में एकता' की सरलतम चर्चा गुरुवाणी में मिलती है। भारतीय संस्कारों को बदलते हुए मानों के आश्रय उज्ज्वलतम उदार और आदर्श-रूप में प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि यह रचना किसी दार्शनिक प्रक्रिया का विवेचन-अध्ययन नहीं करती, तो भी अनुसंधित्सु और पारखी को इसमें एक निश्चित ढर्रे पर निर्मित दार्शनिक संकल्पनाएँ (कॉन्सेप्ट्स) मिल जाती हैं। यों धर्म, दर्शन, मिथिहास, इतिहास, नृतत्व मूल्य, युग-विशेष की परिस्थितियाँ आदि सब गुरुग्रन्थ साहिब में खोजे जा सकते हैं।

गुरु साहिब ने स्वयं मुंदावणी में ग्रन्थ साहिब के वर्ण्य-विषय का निर्देश किया है।

थाल विचि तिनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो।
अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिसका सभसु अधारो।
जे को खावै जे को भुंचै तिसका होइ उधारो॥

'उनका कथन है कि इसमें सत्य, सन्तोष और चिन्तन का संकलन हुआ है। (सत्य— अकालपुरुष की संज्ञा, सन्तोष— जीवन जीने की कला, विचार या चिन्तन— आतमा, परमात्मा और सृष्टि सम्बन्धी दार्शनिक चर्चा)। यदि कोई जीव प्रभु-सत्ता में विश्वास बनाकर उसके नाम-स्मरण के आश्रय इन तीनों महत् तत्त्वों का भोग करे अर्थात् इनकी गहनता को पहचाने तो उसका उद्धार हो सकता है।' अभिप्राय यह कि गुरु अर्जुनदेवजी संकलित वाणी के वर्ण्य-विषय के प्रति बड़े सचेत थे और इसीलिए प्रस्तुत रूपक

द्वारा उन्होंने वह सब कुछ स्पष्ट कर दिया है, जिस पर प्रायः अनुयायियों में द्वन्द्व की आशंका हो सकती है।

साहित्य-प्रेमी पाठक के लिए भी गुरुग्रन्थ साहिब का काव्य उच्चकोटि का है। इसके पदों में संगीत, लय, ताल, राग आदि का उचित ध्यान रखा गया है। अभिव्यक्ति को छन्दों, अलंकारों, गुणों और सहज-रस से शृंगारित किया है और उस पर भी इसकी भाषा सरल, सम्पन्न और जन-साधारण के समझ सकने योग्य है। जो लोग संस्कृत भाषा से अपरिचित होने के कारण, भारत के संस्कार-वाङ्मय से अपरिचित हैं, उनके लिए गुरुग्रन्थ साहिब उन सभी रसों का सहज निचोड़ है। इसीलिए प्रस्तुत संकलन को देश-कालातीत सर्व-जन-हिताय रचना कहा जा सकता है।

टीका क्यों ?

गुरुग्रन्थ साहिब के जिन गुणों की चर्चा हमने ऊपर की है, वे ही यहाँ इसका टीका प्रस्तुत करने के मूल कारण हैं। मूलतः गुरुग्रन्थ की रचना गुरुमुखी लिपि में हुई, फिर देवनागरी में इसका लिप्यन्तरण तो हुआ किन्तु इसमें की मात्रिक योजना एवं शब्द-भण्डार के कारण प्रायः वाणी के कथनों को समझ पाना हिन्दी पढ़े-लिखों के लिए कठिन पड़ता। इसीलिए भारत के व्यापक हिन्दीप्रदेश के मानवीय धर्म के साधक, जो गुरुमुखी लिपि से अनभिज्ञ थे, इस परमज्ञान से वंचित रह जाते रहे। अंग्रेज़ी के माध्यम से कदाचित् प्रयास किए गए, किन्तु जन-साधारण की पहुँच से फिर भी ग्रन्थ बाहर ही रहा। भक्ति, ज्ञान एवं कर्म के समन्वित रूप आदिग्रन्थ को जिज्ञासुओं की पहुँच तक लाने के लिए ही हमने 'भुवन वाणी ट्रस्ट', लखनऊ के आश्रय इस ग्रन्थ का देवनागरी लिप्यन्तरण एवं सरल भाषा में पदों का सहज अर्थ, इस प्रकार चार भागों में धर्म-पिपासुओं के सम्मुख लाने का निश्चय किया है। इस महत् उद्यम के लिए श्री नन्दकुमार अवस्थी विशेष वधाई के पात्र हैं, जिन्होंने अपने ट्रस्ट के माध्यम से संसार के प्रसिद्धतर धर्म-ग्रन्थों का लिप्यन्तरण एवं टीका हिन्दी में प्रकाशित करने का संकल्प लिया है।

लिप्यन्तरण में हमने श्री शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी, अमृतसर द्वारा प्रकाशित गुरुमुखी 'आदिग्रन्थ' में दिए शब्द-विन्यास को ज्यों का त्यों स्वीकार किया है। शब्द, मात्रा, अंक तथा संकेत, जिस रूप में पंजाबी में दिए गए हैं, उच्चारण की परवाह किए बग़ैर, वैसे ही देवनागरी में रखे हैं। इससे गुरुग्रन्थ की धार्मिक पावनता, सिक्खधर्म की मर्यादा तथा मानसिक सन्दर्भिता का सत्कार बना रह सका है। सरल अर्थ देते समय भी हमने सिक्ख सन्दर्भों में उपलब्ध मान्यताओं को समादृत किया है। गुरुवाणी के प्रति विनतभाव से ही उसके आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्रतिष्ठा की है। आशा है जिज्ञासु पाठक हमारे इस अकिंचन प्रयास से लाभान्वित होंगे।

सुधी पाठक हमारे विनम्र प्रयास का प्रथम पड़ाव देख चुके हैं। वह उन्हें पसन्द आया है। हमारे पास प्रथम सैंची के साहसपूर्ण प्रकाशन पर अनेक वधाई-पत्र तथा प्रशस्तियाँ प्राप्त हुई हैं। हमारा श्रम उन विद्वानों का स्वीकृति-जन्य प्रोत्साहन पाकर धन्य हो उठा है और उसी उल्लास में हम यह दूसरी सैंची अपने सम्मानित पाठकों की भेंट कर रहे हैं। आशा है, हमारे इस भगीरथ-श्रम-साध्य कार्य को विद्वज्जन का भरपूर संरक्षण प्राप्त होगा।

गद्यात्मक सरल टीका प्रस्तुत करने में मेरे विभागीय सहयोगी मित्र डॉ ब्रजमोहन शर्मा तथा डॉ० ओमप्रकाश आनन्द से मुझे समय-समय पर पर्याप्त सहकार मिलता रहा है, मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

आभार स्वीकृति

प्रस्तुत टीका को आकार देने के लिए हमने पंजाबी में उपलब्ध निम्नलिखित टीकाओं का आश्रय लिया है। हम उन विद्वान् टीकाकारों का आभार स्वीकार करते हैं—

१. श्री गुरुग्रन्थ साहिब — टीकाकार प्रो० साहिब सिंह
२. श्री गुरुग्रन्थ साहिब — फ़रीदकोट वाली टीका
३. श्री गुरुग्रन्थ साहिब — शब्दार्थ (शि० गु० प्र० क०)

अनेक अन्य पंजाबी के विद्वानों को भी हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं, जिनकी गुरु-वाणी टीकाओं से हम प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहायता लेते रहे हैं।

(डॉ०) मनमोहन सहगल
एम. ए. पीएच्.डी., डी. लिट्.

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय,
पटियाला

सूचना

☞ कार्य सम्पन्न होने पर प्रस्तुत ग्रन्थ की प्रतियाँ, हम गुरुग्रन्थ साहिब के अधिकारी विद्वानों और संस्थाओं को निरीक्षणार्थ भेज रहे हैं। यदि उसमें कोई सुधार के सुझाव उनसे प्राप्त होंगे, तो पुस्तक के अन्त में उन्हें एक 'सुधार पत्र' रूप में देकर हम प्रसन्न होंगे। लिप्यन्तरणकार, अनुवादक, प्रकाशक—सभी इसको सहायता और सहकार मानकर स्वीकार करेंगे।

॥ ओं सतिगुरु प्रसादि ॥

श्री गुरूग्रन्थ साहिब

(दूसरी सैंची)

ततकरा रागों और शबदों का

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त

पंजाबी (गुरमुखी) वर्णमाला का देवनागरी रूपान्तर

पंजाबी (गुरमुखी)-देवनागरी वर्णमाला				
ਅ अ	ਆ आ	ਇ इ	ਈ ई	ਉ उ
ਊ ऊ	ਰੀ ऋ	ਏ ए	ਐ ऐ	ਓ ओ
	ਔ औ	ਅੰ अं	ਅਃ अः	
ਕ क	ਖ ख	ਗ ग	ਘ घ	ਙ ङ
ਚ च	ਛ छ	ਜ ज	ਝ झ	ਞ ञ
ਟ ट	ਠ ठ	ਡ ड	ਢ ढ	ਣ ण
ਤ त	ਥ थ	ਦ द	ਧ ध	ਨ न
ਪ प	ਫ फ	ਬ ब	ਭ भ	ਮ म
ਯ य	ਰ र	ਲ ल	ਵ व	ਸ਼ श
	ਖ਼ ष	ਸ स	ਹ ह	

आदि

श्री गुरू ग्रंथ साहिब

(नागरी लिपि में)

हिन्दी व्याख्या सहित

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

राग़ु आसा महला १ घरु १ सोदरु । सोदरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब सम्हाले । वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे । केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे । गावन्हि तुध नो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरम दुआरे । गावन्हि तुध नो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु वीचारे । गावन्हि तुध नो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे । गावन्हि तुध नो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले । गावन्हि तुध नो सिध समाधी अंदरि गावन्हि तुध नो साध बीचारे । गावन्हि तुध नो जती सती संतोखी गावनि तुध नो वीर करारे । गावनि तुध नो पंडित पड़े रखीसुर जुगु जुगु बेदा नाले । गावनि तुध नो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले । गावन्हि तुध नो रतन उपाए तेरे जेते अठसठि तीरथ नाले । गावन्हि तुध नो जोध महाबल सूरा गावन्हि तुध नो खाणी चारे । गावन्हि तुध नो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे । सेई तुध नो गावन्हि जो तुधु भावन्हि रते तेरे भगत रसाले । होरि केते तुध नो गावनि से मै चिति न आवनि

नानकु किआ बीचारे । सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई । है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई । रंगी रंगी भाती जिनसी माइआ जिनि उपाई । करि करि देखै कीता अपणा जिउ तिस दी वडिआई । जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई । सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ १ ॥ १ ॥

(अब गुरुजी परमात्मा की महानता का दिग्दर्शन करवाने के लिए सृष्टि की सभी शक्तियों को उसके दरबार में कोर्निश करती हुई दिखाते हैं) (हे परमात्मा !) वह कौन-सा घर-दर है, जहाँ बैठकर तुम समस्त (जीवों की) सम्भाल करते हो ? (वहाँ) अनेक वादनों का स्वर मुखरित है, असंख्य वादक भी वहाँ अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। कितने ही राग अपनी परियों (रागिनियों) सहित वहाँ गाये जा रहे हैं, कितने ही गायक उन्हें गा रहे हैं। पवन, पानी, अग्नि आदि सृष्टि के मूल तत्त्व एवं धर्मराज स्वयं, सब तुम्हारे दरबार में तुम्हारा यश गाते हैं। जीवों के कर्मों का आलेख रखनेवाला चित्रगुप्त भी (हे ईश्वर!) तेरा ही गुणगान करता है—उसी के कर्मालेख के अनुसार धर्मराज जीवों के (पाप-पुण्य का) विचार करता है। शिवजी, ब्रह्मा तथा देवी (भगवती) सब तुम्हारे द्वारा निर्मित हैं, तुम्हारा नाम गा रहे हैं। कई इन्द्र अपनी देव-प्रजा सहित तुम्हारा यशोगान करते हैं। सिद्ध अपनी समाधियों और साधु भगवद्कथा में तुम्हें ही खोज रहे हैं। यती, सती, संतोषी, सब प्रकार के जीव तुम्हारा विरद गाते हैं, बड़े-बड़े शूर-वीर भी तुम्हारा ध्यान लगाते हैं। विद्वज्जन, ऋषि-मुनि आदि वेदाध्ययन करते हुए भी तुम्हारा ही गुणगान करते हैं। स्वर्ग, इह एवं पाताललोकों की मोहिनी सुन्दरियाँ तुम्हारे ही नाम का गान कर रही हैं। सृष्टि के अठसठ तीर्थ एवं चौदह रत्न, सब तेरे अपने बनाए हुए हैं और वे सब तुम्हारा ही गुण गाते हैं। बली, शूर और योद्धा, सब तुम्हारा नाम लेते हैं, चारों सृष्टियाँ (अण्डज, जेरज, स्वेदज तथा उद्भिज) तुम्हारा यशोगान करती हैं। समूचा ब्रह्माण्ड, उसके खण्ड-मण्डल, सब तेरी रचना है, तेरा नाम पुकारते हैं। तेरा नाम-जाप वास्तव में वे ही कर सकते हैं, जो तुम्हें स्वीकार हैं; वे तुम्हारे नाम-रस के मतवाले हैं; तुम्हारे भक्त हैं। और अनेक ऐसे गुणगायक भी होंगे, जो इस समय मेरे ध्यान में नहीं आ रहे। गुरु नानकजी कहते हैं कि उनका कहाँ तक विचार किया जाय ? वह परमपिता परमात्मा ही सत्य है, उसकी विरद भी सच है। उसका अस्तित्व है, वह भविष्य में भी रहेगा। सृष्टि का रचयिता वह परमात्मा न कभी मरता है, न जन्म लेता है। परमात्मा ने अनेक रंगों,

प्रकारों एवं वस्तुओं की रचना की है, माया भी उसी ने बनाई है। वह जीवों का निर्माण करके स्वयं ही उनको संरक्षण भी दे रहा है, यही बड़े के अनुकूल बड़प्पन है। वह वही करता है, जो उसे रुचता है। (कोई उसका प्रतिद्वन्द्वी नहीं)। वह सबका शासक है, शासकों का भी शासक है, गुरु नानकदेव कहते हैं कि उसकी आशंसा में ही रहे बनता है, (जीव उसे कदापि चुनौती नहीं दे सकता) ॥ १ ॥ १ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा। सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा। सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा। हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा। हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥ १ ॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा। इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा। तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा। तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा। जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥ २ ॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी। से मुकतु से मुकतु भए जिन्ह हरि धिआइआ जीउ तिन टूटी जम की फासी। जिन निरभउ जिन्ह हरि निरभउ धिआइआ जीउ तिन का भउ सभु गवासी। जिन्ह सेविआ जिन्ह सेविआ मेरा हरि जीउ ते हरि हरि रूपि समासी। से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जीउ जनु नानकु तिन बलि जासी ॥ ३ ॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बेअंत बेअंता। तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता। तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता। तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता। से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥ ४ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई। तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई। तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई। तुधु आपे

त्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई । जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥ ५ ॥ २ ॥

['सो पुरुख' वाणी का नाम है । इन चारों पदों में परमात्मा का स्तुति-गान है ।]

वह परब्रह्म मायातीत, मन-वाणी से परे है, भूतकाल में भी अगम था और भविष्य में भी अगम्य रहेगा । हे सच्चे परमात्मा, तू सबका रचयिता है, सब केवल तुम्हारा ध्यान ही करते हैं, अतीत में तेरा ही ध्यान लगाते थे और भविष्य में भी तुझे स्मरण करते रहेंगे । सब जीव तुम्हारे द्वारा ही निर्मित हैं, तू ही उनका पोषक और रक्षक है । इसलिए हे सन्तजनो, उस दु:खमोचन हरि का स्मरण करो । वास्तव में परमात्मा स्वयं स्वामी है, सेवक भी स्वयं ही है, गुरु नानकजी कहते हैं कि बेचारे जीव तो तुच्छ हैं, (उसकी गहनता को नहीं पहचान सकते) ॥ १ ॥ परमात्मा सब जीवों के अन्त:करण में समाया हुआ है । (फिर भी यदि) कोई दाता है और कोई भिखारी, वह सब उस (परमात्मा) के विस्मयकारक कौतुक ही हैं । (हे परमेश्वर !) तू ही देनेवाला है और तू ही भोगनेवाला; मैं तुम्हारे अतिरिक्त और किसी को नहीं जानता । तू परब्रह्म है, अनादि और अनन्त है, तेरे गुणों का बखान कर सकने का सामर्थ्य मुझमें नहीं । गुरु नानकजी कहते हैं कि जो जीव तुम्हारा स्मरण करते हैं, तुम्हारी सेवा में समर्पित हैं, वे उनके बलिहार जाते हैं ॥ २ ॥ हे प्रभु, जो जीव तुम्हारा ध्यान करते हैं, तुम्हें स्मरण करते हैं, वे सदैव सुख में वास करते हैं । हरि का स्मरण करनेवाले जीव मोक्ष-लाभ करते हैं, वे यम के फंदे से भी मुक्त हो जाते हैं । जिन जीवों ने निर्भयता-पूर्वक उस परम निर्भय भगवान का ध्यान किया, उनका जागतिक भय मूलत: नष्ट हो जाता है । जो हरि की सेवा में आत्मसमर्पित होते हैं, वे तो उसी के रूप में विलीन हो जाते हैं । हरि-स्मरण करनेवाले जीव धन्य हैं, नानक उनपर बलिहार है ॥ ३ ॥ हे अनन्त हरि जी, भक्तों के हृदयों में तीनों काल तुम्हारी भक्ति के अखुट कोष भरे पड़े हैं । तुम्हारे भक्त निरन्तर अनेक प्रकार की पूजा-विधियों से तुम्हारे चरणों में अनन्त वन्दना अर्पण करते हैं । अनेक प्रकार से तुम्हारी उपासना होती है, योगी-जती आदि जप-जाप और अनन्त तपस्याओं के माध्यम से तुम्हारी प्रशस्ति करते हैं । तुम्हारे अनेक जीव स्मृतियों-शास्त्रों आदि धार्मिक ग्रन्थों का वाचन करते और षट्कर्म (मनुस्मृति के अनुसार पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना, आदि छ: कार्य) की दिनचर्या को अपनाते हैं, किन्तु नानकजी कहते हैं कि इन सब प्रकार के भक्त जीवों में वे ही सफल हैं, जो परमात्मा को प्रिय हैं ॥ ४ ॥ हे प्रभु तुम आदिपुरुष हो, असीम हो, तुम्हारी महानता को पा सकना किसी और के बूते में नहीं । तुम भूत, भविष्य और वर्तमान में सदैव एक

ही हो। तुम्हीं एक-मात्र अपरिवर्तनीय हो, (शेष सब संसार परिवर्तनशील है)। जो तुम्हें प्रिय है, वही होता है; तुम्हारे करने से ही सबका अस्तित्व है। यह समूची सृष्टि तुमने स्वयं निर्मित की है (और इच्छा होने पर), स्वयं ही इसे अपने में लीन भी कर लेते हो। गुरु नानक कहते हैं कि इसीसे हमें उस कर्तार का स्तुति-गान मात्र करना चाहिए। जो सबका आधार है, उसकी जाँच-पड़ताल सम्भव नहीं (आशय यह कि जाँच-पड़ताल तो वह करे, जो उस परमात्मा की सीमा से बाहर रहकर उसे देखे ! यह असम्भव है) ॥ ५ ॥ २ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ रागु आसा महला १ चउपदे घरु २।
सुणि वडा आखै सभ कोई। केवडु वडा डीठा होई। कीमति पाइ न कहिआ जाइ। कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥ १ ॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा। कोई न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई। सभ कीमति मिलि कीमति पाई। गिआनी धिआनी गुर गुरहाई। कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ। सिधा पुरखा कीआ वडिआईआं। तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ। करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥ आखण वाला किआ बेचारा। सिफती भरे तेरे भंडारा। जिसु तूं देहि तिसै किआ चारा। नानक सचु सवारणहारा ॥ ४ ॥ १ ॥

प्रत्येक जीव (दूसरों से) सुनकर ही प्रभु को (बड़ा) महान कह देता है। लेकिन तू कितना बड़ा है, यह बात तो देखने पर ही कही जा सकती है। तेरे बड़प्पन का अनुमान नहीं लगाया जा सकता, (यह) नहीं कहा जा सकता (कि तू कितना बड़ा है), तेरी महानता का बखान करनेवाले (अपने आपको भूलकर) तुझ में ही लीन हो जाते हैं ॥ १ ॥ हे मेरे महान मालिक ! तू अथाह, गम्भीर तथा अगणित गुणों से सम्पन्न है। कोई भी नहीं जानता कि तेरा कितना बड़ा विस्तार है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (तुझे जानने के लिए) कितने ही प्रसिद्ध योगियों ने ध्यान लगाने के बार-बार यत्न किए, कितने ही शास्त्रवेत्ताओं ने पारस्परिक सहयोग से तेरे बराबर की हस्ती ढूँढने की कोशिश की, पर तेरी महानता के लघुतम अंश के बराबर भी नहीं ढूँढ सके ॥ २ ॥ सब शुभ कार्य, समस्त तप तथा शुभ गुण, सिद्धों की रिद्धियाँ-सिद्धियाँ —किसी को भी यह सफलता तेरी सहायता के बिना

प्राप्त नहीं हुई। (अगर किसी को यह सफलता प्राप्त हुई है तो) तेरी कृपा से प्राप्त हुई है तथा दूसरा कोई (व्यक्ति) इस प्राप्ति के मार्ग में रुकावट नहीं ला सका ॥ ३ ॥ (हे प्रभु !) तेरे गुणों के भण्डार भरे पड़े हैं। जीव की क्या सामर्थ्य है कि इन गुणों का बखान कर सके ? तुम जिसे गुणस्तुति करने की देन देते हो, उसके मार्ग में रुकावट डालने के लिए किसी का ज़ोर नहीं चल सकता; क्योंकि, हे नानक! सदा स्थिर रहनेवाला प्रभु उसको आप सवाँरनेवाला है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ आसा महला १ ॥ आखा जीवा विसरै मरि जाउ। आखणि अउखा साचा नाउ। साचे नाम की लागै भूख। तितु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥ १ ॥ सो किउ विसरै मेरी माइ। साचा साहिबु साचै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई। आखि थके कीमति नही पाई। जे सभि मिलि कै आखण पाहि। वडा न होवै घाटि न जाइ ॥ २ ॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु। देंदा रहै न चूकै भोगु। गुणु एहो होरु नाही कोइ। ना को होआ ना को होइ ॥ ३ ॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति। जिनि दिनु करि कै कीती राति। खसमु विसारहि ते कमजाति। नानक नावै बाझु सनाति ॥ ४ ॥ २ ॥

ज्यों-ज्यों मैं प्रभु के नाम का उच्चारण करता हूँ, त्यों-त्यों मेरे भीतर आत्मिक जीवन पैदा होता है। जब मुझे नाम विस्मृत हो जाता है, मेरी आत्मिक मौत होने लगती है। प्रभु का सत्य नाम स्मरण करना कठिन काम है, (यह जानते हुए भी, जिस मनुष्य के भीतर) प्रभु के सदा स्थिर रहनेवाले नाम-स्मरण की भूख पैदा होती है, इस भूख के प्रभाव से (नाम-भोजन) खाकर सारे दुख दूर हो जाते हैं ॥ १ ॥ हे मेरी माँ ! (प्रार्थना कर कि) वह प्रभु मुझे कभी विस्मृत न हो। ज्यों-ज्यों उस सत्यस्वरूप प्रभु का नाम-स्मरण किया जाय, त्यों-त्यों वह सत्यस्वरूप मालिक (मन में बसता है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा स्थिर रहनेवाले परमात्मा के नाम की तनिकमात्र महिमा बखान करके (समस्त जीव) थक गए हैं। कोई भी नहीं बता सका कि उसके समकक्ष कौन है ? यदि (जगत के) सारे जीव मिलकर उसका बखान करने का यत्न करें तो वह (अपनी असलियत से) बड़ा नहीं हो जाता और (महानता न बखान करने से) वह कम नहीं हो जाता ॥ २ ॥ वह परमात्मा कभी नहीं मरता और न उसे शोक होता है। वह प्रभु सदा (जीवों को भोजन) देता है, उसकी दी हुई देनों का इस्तेमाल कभी समाप्त नहीं होता। उस प्रभु की सर्वोपरि विशेषता यह

है कि दूसरा कोई उसके जैसा नहीं है, (उस जैसा आज तक) न ही कोई हुआ है और न ही कभी होगा ॥ ३ ॥ (हे प्रभु !) जितने (महान) तुम आप हो उतनी ही महान तुम्हारी देन है। (तुम्हीं ने) दिन तथा रात बनाए हैं। हे नानक ! वे पुरुष निम्न आचरण करनेवाले बन जाते हैं जो प्रियतम प्रभु को भुलाते हैं। नामहीन जीव नीच हैं ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ आसा महला १ ॥ जे दरि मांगतु कूक करे महली खसमु सुणे। भावै धीरक भावै धके एक वडाई देइ ॥ १ ॥ जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि कराए आपि करेइ। आपि उलाम्हे चिति धरेइ। जा तूं करणहारु करतारु। किआ मुहताजी किआ संसारु ॥ २ ॥ आपि उपाए आपे देइ। आपे दुरमति मनहि करेइ। गुर परसादि वसै मनि आइ। दुखु अन्हेरा विचहु जाइ ॥ ३ ॥ साचु पिआरा आपि करेइ। अवरी कउ साचु न देइ। जे किसै देइ वखाणै नानकु आगै पूछ न लेइ ॥ ४ ॥ ३ ॥

यदि कोई भिखारी प्रभु-द्वार पर पुकार करे तो वह महल का मालिक प्रियतम प्रभु सुन लेता है। (फिर) प्रभु चाहे उसे हौसला दे या उसे द्वार से धक्का दे, (उसकी प्रार्थना सुनने में ही) प्रभु उसे बड़प्पन दे रहा है॥ १ ॥ उस ज्योति को पहचानो, वहाँ जाति नहीं पूछी जाती, परलोक में जात-पात का ध्यान नहीं रखा जाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु आप ही पुकार कराता है और आप ही (प्रत्येक जीव में अन्तर्निहित होकर) पुकार करता है, आप ही प्रभु (प्रत्येक जीव की) शिकायत सुनता है। जब (प्रभु यह निश्चय करा देता है कि) सृजनहार प्रभु सब कुछ करने के समर्थ है तो उसे (दुनिया की) कोई आवश्यकता नहीं रहती, दुनिया उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती ॥ २ ॥ परमात्मा आप ही जीवों को पैदा करता है, आप ही (सबको भोजन आदि) देता है। प्रभु आप ही जीवों को दुर्बुद्धि से रोकता है। गुरु की कृपा से प्रभु जिसके मन में आ बसता है, उसके भीतर से दुख दूर हो जाता है, अज्ञानता मिट जाती है॥ ३ ॥ प्रभु आप ही जीवों के मन में अपने नाम-स्मरण के लिए लगाव पैदा करता है; जिनके भीतर प्रेम की कमी रहती है उन्हें आप ही स्मरण की देन नहीं देता। नानक कहता है— जिसको प्रभु स्मरण की देन देता है उससे परलोक में कर्मों का लेखा नहीं माँगता ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ आसा महला १ ॥ ताल मदीरे घट के घाट। दोलक दुनीआ वाजहि वाज। नारदु नाचै कलि का भाउ। जती सती

कह राखहि पाउ ॥ १ ॥ नानक नाम विटहु कुरबाणु । अंधी दुनीआ साहिबु जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरू पासहु फिरि चेला खाइ । तामि परीति वसै घरि आइ । जे सउ वर्हिआ जीवण खाणु । खसम पछाणै सो दिनु परवाणु ॥ २ ॥ दरसनि देखिऐ दइआ न होइ । लए दिते विणु रहै न कोइ । राजा निआउ करे हथि होइ । कहै खुदाइ न मानै कोइ ॥ ३ ॥ माणस मूरति नानकु नामु । करणी कुता दरि फुरमानु । गुरपरसादि जाणै मिहमानु । ता किछु दरगह पावै मानु ॥ ४ ॥ ४ ॥

(मनुष्य के) मन के संकल्प-विकल्प (मानो) घुँघरू हैं, दुनिया का मोह ढोलकी है— यह बाजे बज रहे हैं तथा (प्रभु के नाम से रहित) मन (माया के वशीभूत हो) नाच रहा है। यह कलियुग का प्रभाव है कि सदाचरण का संसार में कहीं स्थान नहीं रहा ॥ १ ॥ हे नानक ! परमात्मा के नाम पर न्योछावर होइए। (नाम के बिना) दुनिया (माया में) अन्धी हो रही है, एक मालिक प्रभु आप ही चतुर है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (अब कलियुग में) शिष्य ही गुरु से पेट भराता है, रोटी के लिए आकर शिष्य बन जाता है। (इस हालत में) यदि मनुष्य सौ साल जिए तथा उसका खान-पान सहज बना रहे (तो भी यह उम्र व्यर्थ ही समझो।) वही दिन भाग्यशाली है, जब मनुष्य अपने मालिक प्रभु के साथ सम्बन्ध बनाता है ॥ २ ॥ मनुष्य एक-दूसरे को देखकर भातृत्व भाव नहीं महसूस करते। रिश्वत लिए-दिए बिना कोई नहीं रहता। (यहाँ तक कि) राजा भी तभी न्याय करता है यदि उसे देने के लिए पास में माया हो। यदि कोई परमात्मा के नाम पर काम कराना चाहे तो उसकी पुकार कोई नहीं सुनता ॥ ३ ॥ नानक (कहता है कि देखने में ही) मनुष्य की शक्ल है, नाममात्र ही मनुष्य है पर आचरण में (वह) कुत्ता है जो (मालिक के) द्वार पर पेट भरने के लिए हुक्म (मान रहा है)। मनुष्य परमात्मा के दरबार में तब ही कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है जब गुरु की कृपा से (अपने आपको संसार में) अतिथि समझे ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ आसा महला १ ॥ जेता सबदु सुरति धुनि तेती जेता रूपु काइआ तेरी । तूं आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ माई ॥ १ ॥ साहिबु मेरा एको है । एको है भाई एको है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे लेवै देइ । आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ ॥ २ ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई । जैसा वरतै तैसो कहीऐ

सभ तेरी वडिआई ॥ ३ ॥ कलि कलवाली माइआ मदु मीठा मनु मतवाला पीवतु रहै। आपे रूप करे बहु भांतीं नानकु बपुड़ा एव कहै ॥ ४ ॥ ५ ॥

(हे प्रभु !) (जगत में) यह जितना बोलना तथा सुनना है अर्थात बोलने तथा सुनने की क्रिया है यह सारी तेरी ही जीवन-ध्वनि (का प्रभाव) है, यह जितना दिखता हुआ आकार है यह सारा तेरा ही शरीर है। तुम आप ही रस लेनेवाले हो, तुम आप ही (जीवों की) ज़िन्दगी हो। हे माँ! परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं जिसके बारे में मैं कह सकूँ ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा ही एकमात्र हमारा स्वामी है, बस ! वही स्वामी है, वह अप्रतिम है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु आप हो (सब जीवों को) मारता है, आप ही सँभालता है, आप ही (प्राण) ले लेता है, आप ही (प्राण) देता है। प्रभु आप ही देखभाल करता है, आप ही देखभाल कर प्रसन्न होता है और आप ही सब पर कृपादृष्टि करता है ॥ २ ॥ (विश्व में) जो कुछ हो रहा है प्रभु आप ही कर रहा है। किसी दूसरे जीव से कुछ नहीं किया जा सकता। जैसा काम प्रभु करता है वैसा ही उसका नाम पड़ जाता है। (हे प्रभु !) यह जो कुछ परिलक्षित है तेरी ही महानता (का प्रकाश) है ॥ ३ ॥ जिस प्रकार किसी शराब बेचनेवाली औरत के पास शराबी नित्यप्रति शराब पीता रहता है, उसी प्रकार दुनिया में कलियुगी स्वभाव है जिसके (प्रभाव से) माया मीठी लग रही है और जीवों का मन (माया में) मस्त हो रहा है —यह भाँति-भाँति के रूप भी प्रभु आप ही बना रहा है। (हर भले-बुरे व्यक्ति में प्रभु को व्यापक देखकर) बेचारा नानक यही कह सकता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ आसा महला १ ॥ वाजा मति पखावजु भाउ। होइ अनंदु सदा मनि चाउ। एहा भगति एहो तप ताउ। इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ १ ॥ पूरे ताल जाणै सालाह। होरु नचणा खुसीआ मन माह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु संतोखु वजहि दुइ ताल। पैरी वाजा सदा निहाल। रागु नादु नही दूजा भाउ। इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ २ ॥ भउ फेरी होवै मन चीति। बहदिआ उठदिआ नीता नीति। लेटणि लेटि जाणै तनु सुआहु। इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ ३ ॥ सिख सभा दीखिआ का भाउ। गुरमुखि सुणणा साचा नाउ। नानक आखणु वेरा वेर। इतु रंगि नाचहु रखि रखि पैर ॥ ४ ॥ ६ ॥

जिस मनुष्य ने श्रेष्ठ बुद्धि को बाजा बनाया है, प्रभु-प्रेम को जोड़ी बनाया है, उसके भीतर सदा आनन्द बना रहता है, उसके मन में उत्साह रहता है। वास्तविक भक्ति यही है और महान तपस्या भी यही है। इस आत्मिक आनन्द में टिके रहकर सदा जीवन-मार्ग पर चलो। बस ! यही नाच नाचो ॥ १ ॥ जो मनुष्य परमात्मा की गुणस्तुति करना जानता है वह (जीवन-नृत्य में) ताल सहित नाचता है, (जीवन के सही मार्ग पर चलता है) दूसरे नृत्य केवल मन की खुशियाँ हैं, (केवल) मन के चाव हैं, (भक्ति नहीं) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (लोगों की) सेवा, संतुष्ट जीवन —ये दोनो बजें, सदा प्रसन्न रहना —ये पैरों में घुँघरू (बजें), कोई दूसरी लगन न होवे —यह (हर पल) राग तथा अलाप हो। (हे भाई !) इस आत्मिक आनन्द में टिको, इस जीवन-मार्ग पर चलो। बस, यही नाच नाचो ॥ २ ॥ उठते-बैठते प्रभु का भय मन में टिका रहे —यह नाच की फेरी हो; देह को नाशमान समझा जाय —यह लेटकर नाच करना होवे; (हे भाई !) इस श्रेष्ठ आनन्द में टिके रहो; यही जीवन जियो। बस ! यही नाच नाचो ॥ ३ ॥ सत्संग में रहकर गुरु-उपदेश के प्रति लगाव, गुरु के सम्मुख रहकर परमात्मा का अटल नाम सुनते रहना, परमात्मा का नाम बार-बार जपना —इस रंग में, हे नानक ! टिको, इस जीवन-मार्ग पर चरण रखो। बस यही नाच नाचो ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ आसा महला १ ॥ पउणु उपाइ धरी सभ धरती जल अगनी का बंधु कीआ। अंधुलै दहसिरि मूंडु कटाइआ रावणु मारि किआ वडा भइआ ॥ १ ॥ किआ उपमा तेरी आखी जाइ। तूं सरबे पूरि रहिआ लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ उपाइ जुगति हथि कीन्ही काली नथि किआ वडा भइआ। किसु तूं पुरखु जोरू कउण कहीऐ सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥ २ ॥ नालि कुटंबु साथि वरदाता ब्रहमा भालण स्रिसटि गइआ। आगै अंतु न पाइओ ता का कंसु छेदि किआ वडा भइआ ॥ ३ ॥ रतन उपाइ धरे खीरु मथिआ होरि भखलाए जि असी कीआ। कहै नानकु छपै किउ छपिआ एकी एकी वंडि दीआ ॥ ४ ॥ ७ ॥

परमात्मा ने हवा बनाई, तमाम पृथ्वी का निर्माण किया, आग और पानी का मेल किया। मूर्ख रावण ने अपनी मृत्यु (बुद्धिहीनता के कारण) प्राप्त की। परमात्मा (केवल उस मूर्ख) रावण को मारकर ही बड़ा नहीं हो गया ॥ १ ॥ (हे प्रभु !) तेरी महानता नहीं बखानी जा सकती। तुम सब जीवों में व्यापक हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे अकालपुरुष !) सृष्टि

के समस्त जीव पैदा करके सब की जीवनयुक्ति अपने हाथ में रखी हुई है, (सब को वश में किया है) तुम केवल मात्र कालीयनाग को वश में करके बड़े नहीं हो गए। न तुम किसी विशेष स्त्री के स्वामी हो, न कोई स्त्री विशेष तेरी पत्नी है, तुम तो निरन्तर सब जीवों के भीतर मौजूद हो ॥ २॥ (जो) ब्रह्मा पुष्प की नलकी में से उत्पन्न हुआ था, विष्णु उसका सहयोगी था; वह ब्रह्मा परमात्मा की प्रकृति का रहस्य खोजने के लिए गया लेकिन रहस्य न प्राप्त कर सका। (अकालपुरुष अथाह प्रकृति का स्वामी है) केवल कंस को मारकर वह कितना बड़ा बन गया ? (यह तो उसके समक्ष साधारण-सी बात है) ॥ ३ ॥ (देवों और दानवों ने मिलकर) समुद्र मन्थन किया और (उसमें से) चौदह रत्न निकाले, (बाँटते समय दोनो पक्ष) आगबबूला हो गए और कहने लगे कि यह रत्न हमने निकाले हैं, (परमात्मा ने मोहिनी रूप धारण कर) एक-एक करके सब रत्न बाँट दिए (लेकिन) नानक कहता है कि वह चाहे अपनी प्रकृति में अगोचर है लेकिन वह अगोचर रह नहीं सकता ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ आसा महला १ ॥ करम करतूति बेलि बिसथारी रामनामु फलु हूआ। तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ ॥ १॥ करे वखिआणु जाणै जे कोई। अंम्रितु पीवै सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह पीआ से मसत भए है तूटे बंधन फाहे। जोती जोति समाणी भीतरि ता छोडे माइआ के लाहे ॥ २ ॥ सरब जोति रूपु तेरा देखिआ सगल भवन तेरी माइआ। रारै रूपि निरालमु बैठा नदरि करे विचि छाइआ ॥ ३॥ बीणा सबदु वजावै जोगी दरसनि रूपि अपारा। सबदि अनाहदि सो सहु राता नानकु कहै विचारा ॥ ४ ॥ ८ ॥

(नाम-स्मरण के प्रभाव से) मनुष्य का उच्च आचरण (मानवता से) फैली हुई बेल है, (इस बेल में) परमात्मा का नामरूपी फल लगता है। मायारहित प्रभु ने उसके (गुरमुख के) भीतर गुणस्तुति का एक प्रवाह चला दिया है, (वह प्रवाह मानो एक संगीत है) जो निरन्तर प्रभाव बनाए रखता है पर उसकी कोई रूपरेखा शब्दों से परे है ॥ १ ॥ यदि कोई मनुष्य (नाम-स्मरण के द्वारा) परमात्मा से परिचय कर ले और उसकी गुणस्तुति करता रहे तो वह नाम-अमृत पान करता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन-जिन जीवों ने नाम-रस पान किया वे मस्त हो गए। उनके सांसारिक बन्धन आदि टूट गए। उनके भीतर परमात्मा की ज्योति टिक गई और उन्होंने माया के लिए की जानेवाली भाग-दौड़ छोड़ दी ॥ २ ॥ (तेरे भक्तों ने) सारे जीवों में तेरा ही दर्शन किया, उन्होंने सारे लोकों में तेरी

उत्पादित माया को प्रभावकारी देखा। (वह मनुष्य देखता है कि) परमात्मा झगड़े-रूपी संसार में अलग बैठा हुआ है और बीच में ही प्रतिबिम्ब के समान व्यापक होकर देख भी रहा है ॥ ३ ॥ वही योगी अपार परमात्मा के दृश्य में लीन होकर गुणस्तुति-रूपी वीणा बजाता रहता है। नानक (अपना यह) विचार कहता है कि निरन्तर गुणस्तुति में जुड़े रहने के कारण वह मनुष्य परमात्मा के रंग में रँगा रहता है ॥ ४ ॥ ८ ॥

॥ आसा महला १ ॥ मै गुण गला के सिरि भार। गली गला सिरजणहार। खाणा पीणा हसणा बादि। जब लगु रिदै न आवहि यादि ॥ १ ॥ तउ परवाह केही किआ कीजै। जनमि जनमि किछु लीजी लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की मति मतागलु मता। जो किछु बोलीऐ सभु खतो खता। किआ मुहु लै कीचै अरदासि। पापु पुंनु दुइ साखी पासि ॥ २ ॥ जैसा तूं करहि तैसा को होइ। तुझ बिनु दूजा नाही कोइ। जेही तूं मति देहि तेही को पावै। तुधु आपे भावै तिवै चलावै ॥ ३ ॥ राग रतन परीआ परवार। तिसु विचि उपजै अंम्रितु सार। नानक करते का इहु धनु मालु। जे को बूझै एहु बीचारु ॥ ४ ॥ ९ ॥

(हे सृजनहार !) मुझमें तो केवल यही गुण है कि मैंने अपने सिर पर केवल बातों के भार बाँधे हैं। बातों में केवल वही बातें भली हैं जो तुझसे सम्बद्ध हैं। जब तक तुम मुझे स्मरण नहीं आते, तब तक मेरा खाना-पीना, हँस-हँसकर समय बिताना —सब व्यर्थ है ॥ १ ॥ मनुष्य-जन्म में आकर यदि कोई प्राप्त करने योग्य पदार्थ एकत्र किया जाए तो कोई चिन्ता नहीं रह जाती, किसी की ज़रूरत नहीं रह जाती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (नाम-स्मरण नहीं किया, अतः) मन की मति यह है कि वह मस्त हाथी बन गया है। जो कुछ बोलते हैं, सब गलत ही गलत है। (तेरे द्वार पर) प्रार्थना भी किस मुँह से करें ? (क्योंकि) हमारे शुभ और अशुभ (कर्मों के संग्रह) —दोनो ही हमारी करतूतों के साक्ष्य हैं ॥ २ ॥ (पर हमारे वश में कुछ नहीं है, हे प्रभु !) तू आप ही जीव को जैसा बनाते हो वह वैसा ही बन जाता है। तुझसे दूसरा कोई नहीं (जो हमें बुद्धि प्रदान करे)। तुम ही जैसी बुद्धि देते हो, वही बुद्धि जीव ग्रहण कर लेता है। जिस प्रकार तुझे अच्छा लगता है, तुम उसी प्रकार जगत का धन्धा चलाते हो ॥ ३ ॥ श्रेष्ठ राग तथा रागिनियों का समूचा परिवार —यदि इस

राग परिवार में श्रेष्ठ नाम-रस उद्भूत हो जाए (तो इस मेल से आश्चर्य-जनक आत्मिक आनन्द पैदा होता है)। हे नानक ! यदि किसी भाग्यशाली जीव को यह सूझ जाय तो वह निश्चित रूप में जान जाय कि यही कर्तार तक पहुँचानेवाला धनमाल है ।। ४ ।। ९ ।।

।। आसा महला १ ।। करि किरपा अपनै घरि आइआ । ता मिलि सखीआ काजु रचाइआ । खेलु देखि मनि अनदु भइआ सहु वीआहण आइआ ।। १ ।। गावहु गावहु कामणी बिबेक बीचारु । हमरै घरि आइआ जगजीवनु भतारु ।। १ ।। रहाउ ।। गुरूदुआरै हमरा वीआहु जि होआ जां सहु मिलिआ तां जानिआ । तिहु लोका महि सबदु रविआ है आपु गइआ मनु मानिआ ।। २ ।। आपणा कारजु आपि सवारे होरनि कारजु न होई । जितु कारजि सतु संतोखु दइआ धरमु है गुरमुखि बूझै कोई ।। ३ ।। भनति नानकु सभना का पिरु एको सोइ । जिस नो नदरि करे सा सोहागणि होइ ।। ४ ।। १० ।।

जब मेरा पतिप्रभु मेरे हृदय-रूपी घर में आ टिका तो मेरी सहेलियों (इन्द्रियों) ने मिलकर प्रभुपति के साथ मेल के गीत गाने-सुनने शुरू कर दिए । मेरा पतिप्रभु मुझे ब्याहने आया है, प्रभु-मिलाप के लिए यह खेल (चाव) देखकर मेरे मन में आनन्द पैदा हो गया है ।। १ ।। हे स्त्रियो ! (भले-बुरे की) परख (महसूस करानेवाला गीत) बार-बार गाओ । हमारे घर में वह पतिप्रभु आ बसा है जो सम्पूर्ण जगत की जिन्दगी (का एकमात्र अवलम्ब) है ।। १ ।। रहाउ ।। गुरु की शरण लेने पर हमारा यह विवाह हुआ और जब मुझे पतिप्रभु मिल गया तब मुझे समझ हुई कि वह प्रभु जीवन-प्रवाह बनकर जगत में सर्वव्यापक है। मेरे भीतर से आपा-भाव दूर हो गया, मेरा मन उस प्रभुपति की याद में लग गया ।। २ ।। प्रभुपति, जीव-स्त्री को अपने साथ मिलाने का यह अपना दायित्व समझता है और अपने आप ही इसे निभाता है, किसी दूसरे से इस कार्य का निर्वाह नहीं किया जा सकता । प्रभु-ऐक्य के प्रभाव से (जीव-स्त्री के भीतर) सेवा, सन्तोष, दया-धर्म आदि गुण पैदा होते हैं। इस भेद को वही समझता है जो गुरु के सम्मुख होता है ।। ३ ।। नानक कहता है— परमात्मा ही सब जीव-स्त्रियों का स्वामी है, (लेकिन इतना होने पर भी) वह जिस पर कृपादृष्टि करता है वह भाग्यशाली होती है ।। ४ ।। १० ।।

।। आसा महला १ ।। ग्रिहु बनु समसरि सहजि सुभाइ । दुरमति गतु भई कीरति ठाइ । सच पउड़ी साचउ मुखि नांउ ।

सतिगुरु सेवि पाए निज थाउ ॥ १ ॥ मन चूरे खटु दरसन जाणु । सरब जोति पूरन भगवानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अधिक तिआस भेख बहु करै । दुखु बिखिआ सुखु तनि परहरै । कामु क्रोधु अंतरि धनु हिरै । दुबिधा छोडि नामि निसतरै ॥ २ ॥ सिफति सलाहणु सहज अनंद । सखा सैनु प्रेमु गोबिंद । आपे करे आपे बखसिंदु । तनु मनु हरि पहि आगै जिंदु ॥ ३ ॥ झूठ विकार महा दुखु देह । भेख वरन दीसहि सभि खेह । जो उपजै सो आवै जाइ । नानक असथिरु नामु रजाइ ॥ ४ ॥ ११ ॥

(जितेन्द्रिय पुरुष को) घर तथा जंगल एक समान है क्योंकि वह स्थिर अवस्था में रहता है, प्रभु-प्रेम में (दत्तचित्त रहता) है, उसकी दुर्बुद्धि हट जाती है और उसके भीतर प्रभु की गुणस्तुति टिक जाती है। प्रभु का नाम उसके मुख पर होता है, (स्मरण की) इस सच्ची सीढ़ी के द्वारा वह सतिगुरु के बतलाए रास्ते पर चलकर आत्मिक ठिकाना प्राप्त कर लेता है जो सदा उसका अपना बना रहता है ॥ १ ॥ जो मनुष्य स्वाधीनमना है वह मानो छः शास्त्रों का ज्ञाता हो गया है। उसे अकालपुरुष की ज्योति सब जीवों में व्याप्त दिखाई देती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लेकिन यदि मनुष्य के भीतर माया की बहुत तृष्णा हो, और (बाहर दिखावे के लिए) बहुत धार्मिक वस्त्र पहने, (तो) मायामोह से उपजा हुआ क्लेश उसके भीतर आत्मिक सुख को दूर कर देता है और काम, क्रोध उसके भीतरी नाम-धन को चुरा ले जाता है। (सांसारिक विषय-वासनाओं से वही मनुष्य) पार उतरता है, जो प्रभु के नाम में जुड़ा रहता है तथा जो द्वैतभाव छोड़ देता है ॥ २ ॥ (जो स्थिरमना हो) वह परमात्मा की गुणस्तुति करता है, आत्मिक स्थिरता का आनन्द प्राप्त करता है, गोविंद के प्रेम को अपना साथी बनाता है और वही मनुष्य अपना तन, मन और प्राण प्रभु के सहारे रखता है। उसे विश्वास रहता है कि प्रभु आप ही (जीवों को) पैदा करता है, आप ही देन देनेवाला है ॥ ३ ॥ (आत्मिक आनन्द के भोक्ता को) झूठ आदि विकार शरीर के लिए भारी कष्ट लगते हैं, (जगत दिखावे वाले) तमाम वेश तथा रंग मिट्टी के समान दिखाई देते हैं। हे नानक ! उसे विश्वास रहता है कि जगत जन्मता रहता है, विनसता रहता है और परमात्मा का एक नाम ही सदा स्थिर रहनेवाला है ॥ ४ ॥ ११ ॥

॥ आसा महला १ ॥ एको सरवरु कमल अनूप । सदा बिगासै परमल रूप । ऊजल मोती चूगहि हंस । सरब कला

जगदीसै अंस ।। १ ।। जो दीसै सो उपजै बिनसै । बिनु जल सरवरि कमलु न दीसै ।। १ ।। रहाउ ।। बिरला बूझै पावै भेदु । साखा तीनि कहै नित बेदु । नाद बिंद की सुरति समाइ । सतिगुरु सेवि परमपदु पाइ ।। २ ।। मुकतो रातउ रंगि रवांतउ । राजन राजि सदा बिगसांतउ । जिसु तूं राखहि किरपा धारि । बूडत पाहन तारहि तारि ।। ३ ।। त्रिभवण महि जोति त्रिभवण महि जाणिआ । उलट भई घरु घर महि आणिआ । अहिनिसि भगति करे लिव लाइ । नानकु तिन कै लागै पाइ ।।४।। १२।।

सत्संग एक सरोवर है (जिसमें) संतजन सुन्दर कमलपुष्प हैं। (सत्संग उन्हें नाम-जल देकर) सदा खिलाए रखता है, (सदा) सुगन्धि तथा सुन्दरता प्रदान करता है। संत-हंस सुन्दर मोती चुगकर खाते हैं तथा (इस प्रकार) सर्वशक्तिमान जगदीश का भाग (बने रहते) हैं ।। १ ।। जो कुछ गोचर है, जन्मता है तथा नष्ट होता है पर सरोवर में (उगा हुआ) कमल पानी से विच्छिन्न नहीं होता (इसलिए वह नष्ट होता) नहीं दिखाई देता ।। १ ।। रहाउ ।। (सत्संग सरोवर की इस) रहस्यात्मक प्रतिष्ठा को कोई बिरला समझता है। वेद (भी) त्रिगुणात्मक संसार का वर्णन करता है। (सत्संग में रहकर) जिस मनुष्य की सुरति परमात्मा की गुणस्तुति की बाजी की सूझ में लीन रहती है, वह अपने गुरु के बतलाए मार्ग पर चलकर सर्वोपरि आत्मिक अवस्था को प्राप्त कर लेता है ।। २ ।। (सत्संग-सरोवर में डुबकी लगानेवाला मनुष्य) माया के प्रभाव से स्वतन्त्र है, प्रभु की याद में मस्त रहता है, प्रेम में टिककर स्मरण करता है, राजाओं के अधिपति भी प्रभु में (लीन रहकर) सदा प्रसन्न-चित्त रहते हैं। (पर हे प्रभु !) तुम कृपा करके जिसे बचा लेते हो (वह बच जाता है), तुम अपने नाम की नाव में (बड़े-बड़े) पत्थरों को तार लेते हो ।। ३ ।। (सत्संगी मनुष्य ने) तीनों भवनों में प्रभु की ज्योति देख ली, उसने तमाम जगत में व्याप्त प्रभु को पहचान लिया, उसकी सुरति माया-मोह से हट गई, उसने परमात्मा का निवास-स्थान अपने हृदय में बना लिया, वह सुरति जोड़कर दिन-रात भक्ति करता है। नानक ऐसे (प्रभु-भक्त संत) जनों के चरण-स्पर्श करता है ।। ४ ।। १२ ।।

।। आसा महला १ ।। गुरमति साची हुजति दूरि । बहुतु सिआणप लागै धूरि । लागी मैलु मिटै सच नाइ । गुरपरसादि रहै लिव लाइ ।। १ ।। है हजूरि हाजरु अरदासि । दुखु सुखु साचु करते प्रभ पासि ।। १ ।। रहाउ ।। कूड़ु कमावै

आवै जावै। कहणि कथनि वारा नही आवै। किआ देखा सूझ बूझ न पावै। बिनु नावै मनि त्रिपति न आवै॥ २॥ जो जनमे से रोगि विआपे। हउमै माइआ दूखि संतापे। से जन बांचे जो प्रभि राखे। सतिगुरु सेवि अंम्रित रसु चाखे॥ ३॥ चलतउ मनु राखै अंम्रितु चाखै। सतिगुर सेवि अंम्रित सबदु भाखै। साचै सबदि मुकति गति पाए। नानक विचहु आपु गवाए॥ ४॥ १३॥

जो मनुष्य गुरु की शिक्षा को दृढ़तापूर्वक आत्मसात करता है, उस मनुष्य की अवस्था दूर हो जाती है। मनुष्य की अनगिनत चतुराइयों से मन में (विकारों की) मैल एकत्रित होती है। यह एकत्रित हुई मैल सत्यस्वरूप प्रभु-नाम द्वारा ही मिट सकती है, और गुरु-कृपा से ही मनुष्य सुरति टिकाकर रख सकता है॥ १॥ (हे भाई!) परमात्मा हरवक्त हमारे साथ-साथ है, एकाग्र मन से उसके समक्ष प्रार्थना करो। यह सही जानो कि प्रत्येक जीव का सुख-दुख वह कर्तार प्रभु जानता है॥ १॥ रहाउ॥ जो मनुष्य व्यर्थ की कमाई करता है वह जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है, उसकी ये व्यर्थ बातें कभी समाप्त नहीं होतीं। (उस अज्ञानी ने) वास्तविकता नहीं देखी, इसलिए उसे कोई समझ नहीं आती, और परमात्मा के नाम के बिना उसके हृदय में शांति नहीं आती॥ २॥ जो भी जीव जगत में जन्मते हैं वे आत्मिक रोग में दबे रहते हैं तथा अहंकार के दुख में, माया-मोह के दुख में वे दुखी होते रहते हैं। इस रोग से, इस दुख से वही मनुष्य बचते हैं, जिनकी प्रभु ने आप रक्षा की; जिन्होंने गुरु के बतलाए मार्ग पर चलकर प्रभु का अमृत-नाम चखा॥ ३॥ जो मनुष्य परमात्मा का सत्यस्वरूप नाम-रस चखता है तथा चंचल मन को नियन्त्रण में रखता है, जो मनुष्य गुरु की शिक्षा के अनुसार चलकर अटल आत्मिक जीवन देनेवाली परमात्मा की गुणस्तुति करनेवाली वाणी उच्चरित करता है, वह मनुष्य इस सत्य वाणी के द्वारा विकारों से छुटकारा प्राप्त कर लेता है और उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त कर लेता है, और हे नानक! वह अपने भीतर से (अपनी चतुराई का) अहंकार दूर कर लेता है॥ ४॥ १३॥

॥ आसा महला १॥ जो तिनि कीआ सो सचु थीआ। अंम्रित नामु सतिगुरि दीआ। हिरदै नामु नाही मनि भंगु। अनदिनु नालि पिआरे संगु॥ १॥ हरि जीउ राखहु अपनी सरणाई। गुरपरसादी हरि रसु पाइआ नामु पदारथु नउनिधि पाई॥ १॥ रहाउ॥ करम धरम सचु साचा नाउ। ता कै

सद बलिहारै जाउ। जो हरि राते से जन परवाणु। तिन की संगति परम निधानु ॥ २ ॥ हरि वरु जिनि पाइआ धन नारी। हरि सिउ राती सबदु वीचारी। आपि तरै संगति कुल तारै। सतिगुरु सेवि ततु वीचारै ॥ ३ ॥ हमरी जाति पति सचु नाउ। करम धरम संजमु सत भाउ। नानक बखसे पूछ न होइ। दूजा मेटे एको सोइ ॥ ४ ॥ १४ ॥

जिस जीव को उस परमात्मा ने अपना बना लिया वह सत्यस्वरूप प्रभुवत हो गया। उसे सतिगुरु ने आत्मिक जीवन देनेवाला हरि-नाम दे दिया। उस जीव के हृदय में (सदा प्रभु का) नाम बसता है, उसके मन में प्रभु-चरणों से कभी विछोह नहीं होता, हरवक्त प्यारे प्रभु के साथ उसका संग बना रहता है ॥ १ ॥ हे प्रभुजी ! जिस मनुष्य को तुम अपनी शरण में लेते हो, गुरु-कृपा से वह तेरे नाम का स्वाद चख लेता है, उसे तेरा श्रेष्ठ नाम मिल जाता है, (जो उसके लिए मानो) नौ भण्डार हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैं उस मनुष्य पर बलिहारी जाता हूँ, जो प्रभु के सत्यनाम को ही सर्वोत्तम कर्म समझता है। प्रभु-दरबार में वही मनुष्य सत्कृत होते हैं जो प्रभु-प्रेम में रँगे रहते हैं, उसकी संगति करने से बहुमूल्य भण्डार मिल जाता है ॥ २ ॥ वह जीव-स्त्री भाग्यवान है जिसने प्रभु-पति (को अपने हृदय में) प्राप्त कर लिया है, जो प्रभु-प्रेम में रँगी रहती है, जो प्रभु की गुणस्तुति की वाणी का विचार करती है। वह जीव-स्त्री आप (संसार-समुद्र से) पार उतर जाती है और अपनी संगति से अपने कुल को भी पार कर लेती है। सतिगुरु के बताए मार्ग पर चलकर मनुष्य-जन्म की वास्तविक उपलब्धि वह अपनी आँखों से देखती है ॥ ३ ॥ (हे प्रभु !) तेरा सत्यनाम ही मेरे लिए जात-पात तथा कुल होवे और तेरा सत्य प्रेम ही मेरे लिए धार्मिक कर्म-धर्म तथा जीवन-युक्ति होवे। हे नानक ! जिस मनुष्य को प्रभु अपने नाम की देन देता है उस (मनुष्य) से किए हुए कर्मों का लेखा नहीं पूछा जाता, उसे (हर तरफ) एक प्रभु ही दिखाई देता है, प्रभु से अलग किसी दूसरे के अस्तित्व का विचार भी उसके भीतर से मिट जाता है ॥ ४ ॥ १४ ॥

॥ आसा महला १ ॥ इकि आवहि इकि जावहि आई। इकि हरि राते रहहि समाई। इकि धरनि गगन महि ठउर न पावहि। से करम हीण हरि नामु न धिआवहि ॥ १ ॥ गुर पूरे ते गति मिति पाई। इहु संसारु बिखु वत अति भउजलु गुरसबदी हरि पारि लंघाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह कउ आपि लए प्रभु मेलि। तिन कउ कालु न साकै पेलि। गुरमुखि

निरमल रहहि पिआरे । जिउ जल अंभ ऊपरि कमल निरारे ॥ २ ॥ बुरा भला कहु किस नो कहीऐ । दीसै ब्रहमु गुरमुखि सचु लहीऐ । अकथु कथउ गुरमति वीचारु । मिलि गुर संगति पावउ पारु ॥ ३ ॥ सासत बेद सिम्रिति बहु भेद । अठसठि मजनु हरिरसु रेद । गुरमुखि निरमलु मैलु न लागै । नानक हिरदै नामु वडे धुरि भागै ॥ ४ ॥ १५ ॥

अनेक जीव जगत में जन्मते हैं, अनेक आकर (जन्म लेकर) चले जाते हैं । लेकिन कुछ (भाग्यशाली) हैं जो प्रभु के प्रेम में रँगे रहते हैं और प्रभु की याद में (डूबे) रहते हैं । जो व्यक्ति प्रभु-नाम का स्मरण नहीं करते वे अभागे हैं । समूची सृष्टि में उन्हें कहीं भी शांति के लिए जगह नहीं प्राप्त होती ॥ १ ॥ उच्च आत्मिक जीवन का आचरण पूर्ण-गुरु से ही मिलता है । यह संसार एक भँवर है, परमात्मा गुरु के शब्द में जोड़कर (इस भँवर से) इसमें से पार कर देता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन व्यक्तियों को प्रभु आप अपनी याद में लगाता है उन्हें मृत्यु का भय नहीं गिरा सकता, गुरु के सम्मुख रहकर वे इस प्रकार पवित्र-आत्मा रहते हैं जैसे पानी में कमलपुष्प निर्लिप्त रहते हैं ॥ २ ॥ पर, न कोई प्राणी नीच है और न उच्च, क्योंकि प्रत्येक प्राणी में परमात्मा ही बसता दिखाई देता है । हाँ, गुरु के सम्मुख होने से ही वह सत्यस्वरूप प्रभु प्राप्त होता है । परमात्मा का स्वरूप नेति-नेति है, गुरु की शिक्षा लेने पर ही मैं उसके गुण कह सकता हूँ या उसपर विचार कर सकता हूँ । गुरु की संगति में रहकर ही मैं इस भँवर का दूसरा किनारा प्राप्त कर सकता हूँ ॥ ३ ॥ (हे भाई!) परमात्मा के नाम का आनन्द हृदय में महसूस करो —यही है वेदों, शास्त्रों और स्मृतियों के भिन्न-भिन्न विचारों पर चिन्तन करना और यही है अठारह तीर्थों का स्नान । गुरु के संसर्ग में जीवन पवित्र रहता है तथा विकारों की मैल नहीं लगती । हे नानक ! आरम्भ से ही परमात्मा की ओर से कृपा होवे तो नाम हृदय में बसता है ॥ ४ ॥ १५ ॥

॥ आसा महला १ ॥ निवि निवि पाइ लगउ गुर अपुने आतम रामु निहारिआ । करत बीचारु हिरदै हरि रविआ हिरदै देखि बीचारिआ ॥ १ ॥ बोलहु रामु करे निसतारा । गुरपरसादि रतनु हरि लाभै मिटै अगिआनु होइ उजीआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रवनी रवै बंधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई । सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै ता को लेखै पाई ॥ २ ॥ हरि हरि नामु भगति प्रिअ प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ।

भगतिवछलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥ ३ ॥ मन सिउ जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाए । नानक क्रिपा करे जगजीवनु सहज भाइ लिव लाए ॥ ४ ॥ १६ ॥

मैं पुनः पुनः अपने गुरु के चरण छूता हूँ, (गुरु-कृपा से) मैंने अपने भीतर बसते राम को देख लिया है। परमात्मा के गुणों का विचार करके उसे अपने भीतर स्मरण कर रहा हूँ, हृदय में उसका दर्शन कर रहा हूँ, उसके गुणों को सोच रहा हूँ ॥ १ ॥ (हे भाई !) परमात्मा का नाम स्मरण करो; जब गुरु की कृपा से कीमती हरि-नाम प्राप्त हो जाता है तो भीतर से अज्ञानता का अँधेरा मिट जाता है और ज्ञान का प्रकाश हो जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य (ब्रह्मज्ञान की) केवल मौखिक बातें करता है उसके (माया वाले) बन्धन टूटते नहीं हैं, वह अहंकार में ही फँसा रहता है। उसके मन की दुबिधा दूर नहीं होती। जब पूर्णगुरु मिले तब ही अहंभावना टूटती है और तब ही मनुष्य सत्कृत होता है ॥ २ ॥ जो मनुष्य हरि-नाम स्मरण करता है, प्रिय प्रभु की भक्ति करता है, सुखों के समुद्र प्रियतम प्रभु को अपने हृदय में बसाता है, उस मनुष्य को, भक्ति को प्यार करनेवाला प्रभु, जगत के जीवन का सहारा प्रभु, श्रेष्ठ बुद्धि देनेवाला प्रभु गुरु के उपदेश के प्रभाव से (संसार-समुद्र से) पार करा देता है ॥ ३ ॥ जो जीव अपने मन से जूझकर अहंकार को मिटा लेता है, मन के चापल्य को मन के भीतर (प्रभु-स्मृति में) लीन कर देता है, वह प्रभु को प्राप्त कर लेता है। हे नानक ! जगत का जीवन-प्रभु जिस मनुष्य पर कृपा करता है वह स्थिरचित्त होकर (प्रभु-चरणों में) मन लगाए रहता है ॥ ४ ॥ १६ ॥

॥ आसा महला १ ॥ किस कउ कहहि सुणावहि किस कउ किसु समझावहि समझि रहे । किसै पड़ावहि पड़ि गुणि बूझे सतिगुर सबदि संतोखि रहे ॥ १ ॥ ऐसा गुरमति रमतु सरीरा । हरि भजु मेरे मन गहिर गंभीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनत तरंग भगति हरि रंगा । अनदिनु सूचे हरि गुण संगा । मिथिआ जनमु साकत संसारा । राम भगति जनु रहै निरारा ॥ २ ॥ सूची काइआ हरि गुण गाइआ । आतमु चीनि रहै लिव लाइआ । आदि अपारु अपरंपरु हीरा । लालि रता मेरा मनु धीरा ॥ ३ ॥ कथनी कहहि कहहि से मूए । सो प्रभु दूरि नाही प्रभु तूं है । सभु जगु देखिआ माइआ छाइआ । नानक गुरमति नामु धिआइआ ॥ ४ ॥ १७ ॥

जो मनुष्य (प्रभु-भक्ति से) ज्ञानी हो जाते हैं वे अपने बारे में न किसी को कहते हैं, न सुनाते हैं और न समझाते हैं। जो मनुष्य (परमात्मा के गुण) पढ़कर (जीवन-रहस्य को) समझ लेते हैं वे अपनी विद्या का दिखावा नहीं करते, गुरु के शब्द में जुड़कर वे संतोषयुक्त जीवन व्यतीत करते हैं ।। १ ।। हे मेरे मन ! गुरु की शिक्षा के अनुसार चलकर उस अथाह तथा विशाल हृदय वाले हरि का भजन कर जो सबकी देह में व्याप्त है ।। १ ।। रहाउ ।। जो मनुष्य प्रतिदिन परमात्मा की गुणस्तुति के साथ बिताते हैं उनका जीवन पवित्र होता है, उनके भीतर प्रभु-भक्ति की अनेक लहरें उठती रहती हैं। मायाग्रस्त सांसारिक जीव का जीवन व्यर्थ चला जाता है। जो मनुष्य परमात्मा की भक्ति करता है वह (माया से) निर्लिप्त रहता है ।। २ ।। जो मनुष्य हरि के गुण गाता है, उसका शरीर पवित्र रहता है, अपने आपको पहचानकर वह सदा प्रभु-चरणों में सुरति जोड़े रखता है। वह मनुष्य उस प्रभु का रूप हो जाता है जो सबका आदि है, जो अनन्त अपरम्पार है और जो हीरे के समान बहुमूल्य है। उसका वह मन जो पहले ममत्व का शिकार था, लाल के समान अमूल्य प्रभु के प्रेम में रँग जाता है तथा स्थिर हो जाता है ।। ३ ।। जो मनुष्य केवल बातें ही बातें करते हैं, वे आत्मिक रूप से मृत हैं। (पर) हे नानक ! जिन मनुष्यों ने गुरु की शिक्षा का आसरा लेकर प्रभु का नाम-स्मरण किया है उन्हें परमात्मा अपने अत्यन्त निकट दिखाई देता है, सारा जगत माया का प्रसार दिखाई देता है ।। ४ ।। १७ ।।

।।आसा महला १ तितुका।। कोई भीखकु भीखिआ खाइ। कोई राजा रहिआ समाइ। किसही मानु किसै अपमानु। ढाहि उसारे धरे धिआनु। तुझ ते वडा नाही कोइ। किसु वेखाली चंगा होइ ।। १ ।। मै तां नामु तेरा आधारु। तूं दाता करणहारु करतारु।। १ ।। रहाउ ।। वाट न पावउ वीगा जाउ। दरगह बैसण नाही थाउ। मन का अंधुला माइआ का बंधु। खीन खराबु होवै नित कंधु। खाण जीवण की बहुती आस। लेखै तेरै सास गिरास ।। २ ।। अहिनिसि अंधुले दीपकु देइ। भउजल डूबत चिंत करेइ। कहहि सुणहि जो मानहि नाउ। हउ बलिहारै ता कै जाउ। नानकु एक कहै अरदासि। जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ।। ३ ।। जांतूं देहि जपी तेरा नाउ। दरगह बैसण होवै थाउ। जां तुधु भावै ता दुरमति जाइ।

गिआन रतनु मनि वसै आइ। नदरि करे ता सतिगुरु मिलै। प्रणवति नानकु भवजलु तरै ॥ ४ ॥ १८ ॥

(परमात्मा को विस्मृत कर) कोई भिखारी भीख (माँग-माँगकर) खाता है, कोई मनुष्य राजा बनकर मस्त हो रहा है। किसी को आदर मिल रहा है, किसी का निरादर हो रहा है, (कोई मनुष्य) कितनी कल्पनाएँ बनाता है और मिटाता है, बस, इन्हीं (कल्पनाओं अथवा योजनाओं) में खोया रहता है। पर हे प्रभु ! तुझसे कोई बड़ा नहीं (जिसे बड़प्पन मिलता है, तुझसे ही मिलता है)। मैं कोई ऐसा आदमी नहीं दिखा सकता जो भला बन गया होवे ॥ १ ॥ मेरे लिए केवल तेरा नाम ही आसरा है, (क्योंकि) तू ही (सब देन) देनेवाला है, तू सब कुछ करने को समर्थ है, तू सारी सृष्टि का पैदा करनेवाला है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे प्रभु ! तेरी ओट के बिना) मैं जीवन का सही रास्ता नहीं प्राप्त कर सकता, कुमार्ग का ही अनुसरण करता हूँ, तेरे दरबार में भी मुझे जगह नहीं मिल सकती। मैं माया के मोह में बँधा रहता हूँ, मन का अन्धा ही रहता हूँ, मेरा शरीर (विकारों में) सदा दुखी तथा परेशान होता है। मैं सदा अलग-अलग पदार्थों के खाने तथा जीने की आशाएँ लगाता हूँ। मेरा एक-एक श्वास और ग्रास तेरे हिसाब में है ॥ २ ॥ प्रभु अन्धे को दिन-रात मार्ग-प्रदर्शन करता है, संसार-समुद्र में डूबते हुए की चिन्ता रखता है। मैं उन व्यक्तियों पर बलिहारी जाता हूँ जो प्रभु का नाम जपते हैं, सुनते हैं, उसमें श्रद्धा रखते हैं। हे प्रभु ! नानक तेरे द्वार पर यह प्रार्थना करता है कि हमारे प्राण तथा हमारा शरीर सब कुछ तेरे ही आसरे है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! जब तुम देते हो तब ही मैं तेरा नाम जप सकता हूँ और तेरी हज़ूरी में मुझे बैठने के लिए जगह मिल सकती है। जब तेरी इच्छा हो तब मेरी दुर्बुद्धि दूर हो सकती है तथा तेरा प्रदान किया हुआ श्रेष्ठ ज्ञान मेरे मन में आकर बस सकता है। नानक प्रार्थना करता है कि जिस मनुष्य पर प्रभु कृपादृष्टि करता है उसे गुरु मिलता है और वह संसार-सागर से पार उतर जाता है ॥ ४ ॥ १८ ॥

॥ आसा महला १ पंचपदे ६ ॥ दुध बिनु धेनु पंख बिनु पंखी जल बिनु उतभुज कामि नाही। किआ सुलतानु सलाम विहूणा अंधी कोठी तेरा नामु नाही ॥ १ ॥ की विसरहि दुखु बहुता लागै। दुखु लागै तूं विसरु नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अखी अंधु जीभ रसु नाही कंनी पवणु न वाजै। चरणी चलै पजूता आगै विणु सेवा फल लागे ॥ २ ॥ अखर बिरख बाग भुइ चोखी सिंचित भाउ करेही। सभना फलु लागै नामु एको बिनु

करमा कैसे लेही ॥ ३ ॥ जेते जीअ तेते सभि तेरे विणु सेवा फलु किसै नाही। दुखु सुखु भाणा तेरा होवै विणु नावै जीउ रहै नाही ॥ ४ ॥ मति विचि मरणु जीवणु होरु कैसा जा जीवा तां जुगति नाही। कहै नानकु जीवाले जीआ जह भावै तह राखु तुही ॥ ५ ॥ १६ ॥

जो गाय दूध न देवे वह किस काम की है? जिस पक्षी के पंख न हों, जिस वनस्पति के पास जल न हो (वह व्यर्थ है)। वह बादशाह कैसा जिसे कोई सलाम न करे? इसी प्रकार हे प्रभु! जिस हृदय में तेरा नाम न होवे वह एक अँधेरी कोठरी ही है ॥ १ ॥ हे प्रभु! तुम मुझे क्यों भुलाते हो? तेरे द्वारा भुलाने पर मुझे बड़ा आत्मिक दुख होता है। हे प्रभु! (मेरे मन से) विस्मृत न हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आँखों के आगे अँधेरा आने लगता है, जिह्वा में खाने-पीने का स्वाद लेने की शक्ति नहीं रहती, कानों में भी आवाज़ नहीं सुनाई देती, पैरों से भी मनुष्य तभी चलता है जब दूसरा कोई आगे चलते हुए उसकी लकड़ी पकड़े। (बुढ़ापे के कारण जीव की ऐसी हालत हो जाती है फिर भी) मनुष्य स्मरण से खाली रहता है, इसके जीवन-वृक्ष को दूसरे फल लगते रहते हैं ॥ २ ॥ जो मनुष्य शुद्ध हृदय की भूमि में गुरुशब्द रूपी बाग के वृक्ष लगाते हैं और प्रेम रूपी पानी से सिंचन करते हैं उन सबको अकालपुरुष का नाम-फल लगता है; पर प्रभु की कृपा के बिना यह देन नहीं मिलती ॥ ३ ॥ हे प्रभु! ये तमाम जीव तुझसे उत्पादित हैं, तेरा स्मरण किए बिना मनुष्य जीवन का लाभ किसी को नहीं मिल सकता, कभी दुख तथा कभी सुख मिलना तो तेरी रज़ा (इच्छा) है, (पर) तेरे नाम के सहारे के बिना प्राणात्मा स्थिर नहीं रह सकती ॥ ४ ॥ गुरु के अनुसार चलकर अहंभावना का मर जाना —यही सही जीवन है, यदि मनुष्य का स्वार्थी जीवन समाप्त नहीं हुआ तो वह जीवन व्यर्थ है। यदि मैं यह स्वार्थी जीवन जीता हूँ, तो इसे जीवन का सही ढंग नहीं कहा जा सकता। नानक कहता है— जो परमात्मा ज़िन्दगी देनेवाला है (उसी से प्रार्थना कीजिए कि) हे प्रभु! जहाँ तेरी रज़ा है वहीं हमें रख ॥ ५ ॥ १९ ॥

॥ आसा महला १ ॥ काइआ ब्रहमा मनु है धोती। गिआनु जनेऊ धिआनु कुसपाती। हरिनामा जसु जाचउ नाउ। गुर परसादी ब्रहमि समाउ ॥ १ ॥ पांडे ऐसा ब्रहम बीचारु। नामे सुचि नामो पड़उ नामे चजु आचारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाहरि जनेऊ जिचरु जोति है नालि। धोती टिका नामु

समालि । ऐथै ओथै निबही नालि । विणु नावै होरि करम न भालि ॥ २ ॥ पूजा प्रेम माइआ परजालि । एको वेखहु अवरु न भालि । चीन्है ततु गगन दसदुआर । हरि मुखि पाठ पड़ै बीचार ॥ ३ ॥ भोजनु भाउ भरमु भउ भागै । पाहरूअरा छबि चोरु न लागै । तिलकु लिलाटि जाणै प्रभु एकु । बूझै ब्रहमु अंतरि बिबेकु ॥ ४ ॥ आचारी नही जीतिआ जाइ । पाठ पड़ै नही कीमति पाइ । असटदसी चहु भेदु न पाइआ । नानक सतिगुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ ५ ॥ २० ॥

मनुष्य शरीर ही ब्राह्मण है, (पवित्र) मन उसकी धोती है, परमात्मा से गहरी जान-पहचान जनेऊ है तथा प्रभु-चरणों में जुड़ी सुरति कुशा है । मैं तो परमात्मा का नाम ही माँगता हूँ, गुणस्तुति ही माँगता हूँ ताकि गुरु की कृपा से (नाम-स्मरण कर) परमात्मा में लीन रहूँ ॥ १ ॥ हे पांडे ! परमात्मा के नाम में ही पवित्रता है, मैं तो परमात्मा का नाम-स्मरण (रूपी वेद) पढ़ता हूँ, प्रभु के नाम में ही तमाम धार्मिक रीतियाँ आ जाती हैं । तू भी इसी प्रकार परमात्मा के गुणों का विचार कर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे पांडे !) बाहरी जनेऊ उतनी देर तक ही है जितनी देर तक ज्योति शरीर में मौजूद है । प्रभु का नाम हृदय में सँभाल —यही धोती है, यही टीका है। यह नाम ही लोक-परलोक में साथ निभाता है । (हे पांडे !) नाम भुलाकर दूसरी धार्मिक रीतियाँ न ढूँढता फिर ॥ २ ॥ (नाम में जुड़कर) माया का मोह अच्छी प्रकार जला दे —यही है देवपूजा । सब स्थानों पर एक परमात्मा को ही देख, (हे पांडे !) उससे अलग किसी दूसरे देवता को न ढूँढता रह । जो मनुष्य सर्वत्र व्याप्त परमात्मा को पहचान लेता है, उसने मानो दसवें द्वार में समाधि लगाई हुई है । जो मनुष्य प्रभु के नाम को सदा अपने मुँह में रखता है, (उच्चरित करता है) वह (वेद आदि पुस्तकों के) विचार पढ़ रहा है ॥ ३ ॥ (हे पांडे !) प्रभु-प्रेम ही भोग है, इससे मन की दुबिधा दूर हो जाती है, भय हट जाता है । प्रभु रक्षक का तेज (अपने भीतर प्रकाशकर) कोई कामादिक चोर निकट नहीं पहुँचता । जो मनुष्य परमात्मा से गहरे सम्बन्ध जोड़ता है, मानो उसने माथे पर तिलक लगाया हुआ है । जो अपने भीतर बसते प्रभु को पहचानता है वह भले-बुरे काम की परख सीख लेता है ॥ ४ ॥ (हे पांडे !) परमात्मा केवल धार्मिक रीतियों से वश में नहीं किया जा सकता, वेद आदि पुस्तकों का पाठ करने पर भी उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता । जिस परमात्मा का भेद अठारह पुराणों तथा चार वेदों ने भी प्राप्त न किया, हे नानक ! सतिगुरु ने वह (सर्वत्र) दिखा दिया है ॥ ५ ॥ २० ॥

॥ आसा महला १ ॥ सेवकु दासु भगतु जनु सोई । ठाकुर का दासु गुरमुखि होई । जिनि सिरि साजी तिनि फुनि गोई । तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ १ ॥ साचु नामु गुर सबदि वीचारि । गुरमुखि साचे साचै दरबारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचा अरजु सची अरदासि । महली खसमु सुणे साबासि । सचै तखति बुलावै सोइ । दे वडिआई करे सु होइ ॥ २ ॥ तेरा ताणु तू है दीबाणु । गुर का सबदु सचु नीसाणु । मंने हुकमु सु परगटु जाइ । सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥ ३ ॥ पंडित पड़हि वखाणहि वेदु । अंतरि वसतु न जाणहि भेदु । गुर बिनु सोझी बूझ न होइ । साचा रवि रहिआ प्रभु सोइ ॥ ४ ॥ किआ हउ आखा आखि वखाणी । तूं आपे जाणहि सरब विडाणी । नानक एको दरु दीबाणु । गुरमुखि साचु तहा गुदराणु ॥ ५ ॥ २१ ॥

गुरु के सम्मुख रहनेवाला मनुष्य ही परमात्मा का सेवक बनता है, वही मनुष्य (वास्तविक) सेवक है, भक्त है और दास है। जिस प्रभु ने यह सृष्टि रची है वही इसे नष्ट करता है, वह अप्रतिम है ॥ १ ॥ गुरु के उपदेश द्वारा परमात्मा का सत्यनाम विचारकर चलनेवाले व्यक्ति सदा प्रभु के दरबार में निश्चिन्त होते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु के सम्मुख रहकर की हुई विनय तथा प्रार्थना ही वास्तविक (प्रार्थना) है, महल का मालिक पति-प्रभु उस प्रार्थना को सुनता है और आदर देता है, अपने सत्य-सिंहासन पर (बठा हुआ प्रभु) उस सेवक को बुलाता है और वह सब कुछ करने में समर्थ प्रभु उसे मान-आदर देता है ॥ २ ॥ (हे प्रभु !) गुरमुख को तेरा ही बल है, तेरा ही आसरा है, गुरु का शब्द ही उसके पास सच्चा परवाना है, गुरमुख परमात्मा की रज़ा को मानता है, जगत में शोभा प्राप्त करके जाता है, गुरु शब्द की सच्ची राहदारी (यात्रा-खर्च) के कारण उसकी ज़िन्दगी के रास्ते में कोई विकार रुकावट नहीं पाता ॥ ३ ॥ पण्डित लोग वेद पढ़ते हैं और दूसरों को व्याख्या करके सुनाते हैं पर (अहंकारवश) यह भेद नहीं जानते कि परमात्मा का नाम-पदार्थ भीतर ही मौजूद है। सत्य-स्वरूप प्रभु हरेक के भीतर व्याप्त है लेकिन यह समझ गुरु का शरण लिए बिना नहीं आती ॥ ४ ॥ हे आश्चर्यजनक कौतुक करनेवाले प्रभु ! गुरु के सम्मुख रहने की मैं क्या बात करूँ ? क्या कहकर सुनाऊँ ? तुम (इस रहस्य को) आप ही जानते हो। हे नानक ! गुरमुख के लिए प्रभु का ही एक दरवाज़ा है, आसरा है; जहाँ गुरु के सम्मुख रहकर स्मरण करना जीवन का अवलम्ब बना रहता है ॥ ५ ॥ २१ ॥

॥ आसा महला १ ॥ काची गागरि देह दुहेली उपजै बिनसै दुखु पाई। इहु जगु सागरु दुतरु किउ तरीऐ बिनु हरि गुर पारि न पाई ॥ १ ॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे पिआरे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे। सरबी रंगी रूपी तूं है तिसु बखसे जिसु नदरि करे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी। सखी साजनी के हउ चरन सरेवउ हरि गुर किरपा ते नदरि धरी ॥ २ ॥ आपु बीचारि मारि मनु देखिआ तुम सा मीतु न अवरु कोई। जिउ तूं राखहि तिव ही रहणा दुखु सुखु देवहि करहि सोई ॥ ३ ॥ आसा मनसा दोऊ बिनासत त्रिहु गुण आस निरास भई। तुरीआवसथा गुरमुखि पाईऐ संत सभा की ओट लही ॥ ४ ॥ गिआन धिआन सगले सभि जप तप जिसु हरि हिरदै अलख अभेवा। नानक राम नामि मनु राता गुरमति पाए सहज सेवा ॥ ५ ॥ २२ ॥

यह शरीर दुखों का घर बन गया है तथा कच्चे घड़े के समान है (शीघ्र ही पानी में गलनेवाला) यह पैदा होता है, दुख पाता है और फिर नष्ट हो जाता है। यह जगत एक ऐसा सागर है जिससे पार उतरना अत्यन्त कठिन है, (विकृत होकर) इसमें से पार होना असम्भव है, (वास्तव में) गुरु परमात्मा का आसरा लिए बिना इससे पार नहीं हुआ जा सकता॥ १॥ मेरे प्यारे (प्रभु), तुम्हारे बिना दूसरा कोई नहीं; कोई और (मेरे कष्टों को) तुम्हारे बिना दूर नहीं कर सकता। (विश्व के) समूचे आकार-विस्तार में जिस पर तुम्हारी कृपा होती है, वही मोक्ष को प्राप्त करता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (मेरा पति-प्रभु हृदय-घर में ही बसता है, पर) यह दुष्टा सास (माया) मुझे हृदय-घर में टिकने ही नहीं देती और पति के साथ मिलने ही नहीं देती। (इससे बचने के लिए) मैं सत्संगी सहेलियों के चरणों की सेवा करती हूँ। गुरु की कृपा से पति-प्रभु मुझ पर कृपादृष्टि करता है ॥ २ ॥ (हे प्रभु !) जब मैंने अपने आपको विचारकर अपना मन मारकर देखा तो (मुझे महसूस हुआ कि) तुम्हारे समान मित्र कोई नहीं है। हम जीवों को तुम जिस हालत में रखते हो, उसी हालत में हम रह सकते हैं। दुख भी तुम ही देते हो, सुख भी तुम ही देते हो। जो कुछ तुम करते हो, वही होता है ॥ ३ ॥ गुरु की शरण लेने से ही माया सम्बन्धी लालसाएँ तथा आकांक्षाएँ मिटती हैं और त्रिगुणात्मक माया की लालसाओं से निर्लिप्त रहा जा सकता है। जब सत्संग का आसरा लिया जाए, जब गुरु के बतलाए मार्ग पर चला जाए तब ही वह आत्मिक अवस्था

बनती है जहाँ माया न पहुँच सके ॥ ४ ॥ जिस मनुष्य के हृदय में अलक्ष्य, अभेद परमात्मा बस जाए उसे मानो तमाम जप, तप, ज्ञान, ध्यान प्राप्त हो गए। हे नानक! गुरु की शिक्षा का अनुसरण करने से मन प्रभु के रंग में रँगा जाता है और मन स्थिर अवस्था में टिक कर स्मरण करता है ॥५॥२२॥

॥ आसा महला १ पंचपदे २ ॥ मोहु कुटंबु मोहु सभ कार। मोहु तुम तजहु सगल वेकार ॥ १ ॥ मोहु अरु भरमु तजहु तुम्ह बीर। साचु नामु रिदे रवै सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु नामु जा नवनिधि पाई। रोवै पूतु न कलपै माई ॥ २ ॥ एतु मोहि डूबा संसारु। गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ ३ ॥ एतु मोहि फिरि जूनी पाहि। मोहे लागा जम पुरि जाहि ॥ ४ ॥ गुरदीखिआ ले जपु तपु कमाहि। ना मोहु तूटै ना थाइ पाहि ॥ ५ ॥ नदरि करे ता एहु मोहु जाइ। नानक हरि सिउ रहै समाइ ॥ ६ ॥ २३ ॥

(हे भाई!) मोह परिवार के प्रति लगाव पैदा करता है, मोह तमाम कामकाज चला रहा है (लेकिन) मोह ही सारे विकार पैदा करता है, (इसलिए) मोह को त्याग ॥ १ ॥ हे भाई! मोह त्याग तथा मन की दुबिधा मिटा। (निर्लिप्त) मनुष्य परमात्मा का अटल नाम हृदय में स्मरण कर सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब मनुष्य परमात्मा का सत्यनाम (रूपी) नौ निधियाँ प्राप्त कर लेता है, (तो) मन माया के लिए नहीं रोता ॥ २ ॥ इस मोह में सारा जगत डूबा हुआ है, कोई बिरला मनुष्य ही जो गुरु के बतलाए मार्ग पर चलता है, (मोह के सागर से) पार उतरता है ॥ ३ ॥ इस मोह में (फँसा हुआ) तू बारबार योनियों में पड़ेगा, मोह में जकड़ा हुआ तू यमराज के देश में जाएगा ॥ ४ ॥ जो व्यक्ति गुरु की शिक्षा लेकर जप-तप कमाते हैं, उनका मोह टूटता नहीं, (इन जपों-तपों से) वे (प्रभु के दरबार में) सत्कृत नहीं होते ॥ ५ ॥ हे नानक! जिस मनुष्य पर प्रभु कृपादृष्टि करता है, उसका यह मोह दूर होता है, वह सदा परमात्मा (की याद) में लीन रहता है ॥ ६ ॥ २३ ॥

॥ आसा महला १ ॥ आपि करे सचु अलख अपारु। हउ पापी तूं बखसणहारु ॥ १ ॥ तेरा भाणा सभु किछु होवै। मन हठि कीचै अंति विगोवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख की मति कूड़ि विआपी। बिनु हरि सिमरण पापि संतापी ॥ २ ॥ दुरमति तिआगि लाहा किछु लेवहु। जो उपजै सो अलख

अभेवहु ॥ ३ ॥ ऐसा हमरा सखा सहाई । गुर हरि मिलिआ भगति द्रिड़ाई ॥ ४ ॥ सगलीं सउदीं तोटा आवै । नानक राम नामु मनि भावै ॥ ५ ॥ २४ ॥

सब कुछ सत्यस्वरूप, अलक्ष्य एवं अनन्त परमात्मा आप कर रहा है। (हे प्रभु ! यह बात भुलाकर) मैं दोषी हूँ (और) तुम क्षमा करनेवाले हो ॥ १ ॥ जगत में जो कुछ होता है, सब वही कुछ होता है जो (हे प्रभु!) तुझे अच्छा लगता है, (पर यह अटल सच्चाई भुलाकर) केवल अपने मन के हठ से काम करने पर दुखी होता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केवल स्वेच्छाचारी मनुष्य की बुद्धि माया के मोह में फँसी रहती है, (इस प्रकार) प्रभु के स्मरण से रहित होकर (लालच में किए) नीच कार्य के कारण दुखी होती है ॥ २ ॥ (हे भाई !) दुर्बुद्धि त्यागकर कुछ आत्मिक लाभ प्राप्त करो, (यह विश्वास उपजाओ कि) जो कुछ पैदा हुआ है, उस अलक्ष्य तथा अभेद प्रभु से ही पैदा हुआ है ॥ ३ ॥ हमारा मित्र प्रभु सदा सहायता करनेवाला है, (उसकी कृपा से) जो मनुष्य गुरु को मिल जाता है, गुरु उसे परमात्मा की भक्ति का निर्देश करता है ॥ ४ ॥ (प्रभु का स्मरण भुलाकर) सभी सांसारिक सौदों में घाटा ही घाटा है। हे नानक ! जिसे मन में परमात्मा का नाम प्यारा लगता है (उसे लाभ ही लाभ है) ॥ ५ ॥ २४ ॥

॥ आसा महला १ चउपदे ४ ॥ विदिआ वीचारी तां परउपकारी । जां पंच रासी तां तीरथ वासी ॥ १ ॥ घुंघरू वाजै जे मनु लागै । तउ जमु कहा करे मो सिउ आगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस निरासी तउ संनिआसी । जां जतु जोगी तां काइआ भोगी ॥ २ ॥ दइआ दिगंबरु देह बीचारी । आपि मरै अवरा नह मारी ॥ ३ ॥ एकु तू होरि वेस बहुतेरे । नानकु जाणै चोज न तेरे ॥ ४ ॥ २५ ॥

(विद्या प्राप्त करके) जो मनुष्य परोपकारी हो गया है तभी समझो कि वह विद्या पाकर विचारवान बना है। तीर्थों पर निवास करनेवाला तभी सफल है यदि उसने पाँचों कामादिक वश में कर लिए हैं ॥ १ ॥ यदि मेरा मन प्रभु-चरणों में जुड़ना सीख गया है तभी (भक्त बनकर) घुँघरू बजाना सफल है। फिर परलोक में यमराज मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि (व्यक्ति) सब माया सम्बन्धी लालसाओं से तटस्थ है तो समझो कि यह संन्यासी है। यदि (गृहस्थी होते हुए भी) योगी की-सी जितेन्द्रियता (विद्यमान) है तो उसे असली गृहस्थ जानो ॥ २ ॥ यदि (हृदय में) दया है, यदि शरीर को (विकारों

से मुक्त रखने) के विचार वाला है तो वह असली दिगम्बर (नग्न जैनी) जो आप (अहंत्व से) मृत है, वही अहिंसापालक है, जो दूसरों को नहीं मारता ॥ ३ ॥ (किसी को नीच नहीं कहा जा सकता, हे प्रभु !) ये सब तेरे ही अनेक वेश हैं, हरेक जीव में तुम आप मौजूद हो। नानक, उस परमात्मा के कौतुक-तमाशे समझ नहीं सकता ॥ ४ ॥ २५ ॥

॥ आसा महला १ ॥ एक न भरीआ गुण करि धोवा। मेरा सहु जागै हउनिसि भरि सोवा ॥ १ ॥ इउ किउ कंत पिआरी होवा। सहु जागै हउ निस भरि सोवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस पिआसी सेजै आवा। आगै सह भावा कि न भावा ॥ २ ॥ किआ जाना किआ होइगा री माई। हरि दरसन बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी। गइआ सु जोबनु धन पछुतानी ॥ ३ ॥ अजै सु जागउ आस पिआसी। भईले उदासी रहउ निरासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै खोइ करे सीगारु। तउ कामणि सेजै रवै भतारु ॥ ४ ॥ तउ नानक कंतै मनि भावै। छोडि वडाई अपणे खसम समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ २६ ॥

मैं केवल किसी एक अवगुण से लथपथ नहीं हूँ कि अपने भीतर गुण पैदा करके उस एक अवगुण को धो सकूँ, (मेरे भीतर तो अवगुण ही अवगुण हैं क्योंकि) मैं तो तमाम उम्र-रात्रि ही (मोह निद्रा में) सोती रही हूँ और मेरा पति-प्रभु जागता रहता है ॥ १ ॥ ऐसी हालत में मैं पति-प्रभु को कैसे प्यारी लग सकती हूँ ? पति जागता है और मैं तमाम रात्रि सोती रहती हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनेक आशाओं में पगी यदि मैं आऊँ, तो भी क्या पता कि पति (प्रभु) मुझे स्वीकार कर लेंगे या नहीं ॥ २ ॥ हे माँ ! मुझे समझ नहीं आती कि मेरा क्या बनेगा। (पर अब) प्रभु-पति के दर्शनों के बिना मुझे टिकाव नहीं होता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे माँ ! तमाम उम्र) मैंने प्रभु-पति के प्रेम का स्वाद न चखा; इसीलिए मेरी माया वाली तृष्णा शान्त नहीं हो सकी। मेरा यौवन बीत गया है, अब मेरी आत्मा पश्चाताप कर रही है ॥ ३ ॥ अभी भी मैं माया की लालसाओं से निर्लिप्त होकर, माया की आकांक्षाएँ त्यागकर जीवन बिताऊँ (शायद प्रभु कृपा कर दे) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब जीव-स्त्री अहंभावना गवाँती है, जब यह आत्मा को सुन्दर बनाने का प्रयास करती है, तब उस जीव-स्त्री को प्रभु-पति उसकी हृदय-सेज पर आकर मिलता है ॥ ४ ॥ हे नानक ! तब ही जीवस्त्री पति-प्रभु के मन को भली लगती है, जब अहंभावना छोड़कर अपने पति की रज़ा में लीन होती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ २६ ॥

॥ आसा महला १ ॥ पेवकड़ै धन खरी इआणी । तिसु सह की मै सार न जाणी ॥ १ ॥ सहु मेरा एकु दूजा नही कोई । नदरि करे मेलावा होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहुरड़ै धन साचु पछाणिआ । सहजि सुभाइ अपणा पिरु जाणिआ ॥ २ ॥ गुरपरसादी ऐसी मति आवै । तां कामणि कंतै मनि भावै ॥ ३ ॥ कहतु नानकु भै भाव का करे सीगारु । सद ही सेजै रवै भतारु ॥ ४ ॥ २७ ॥

जगत के मोह में फँसकर जीव-स्त्री बहुत मूर्ख बनी रहती है (मोहग्रस्त होकर ही) मैं उस पति-प्रभु की महत्ता नहीं समझ सकी ॥ १ ॥ मेरा पति-प्रभु हमेशा एक जैसा रहता है, वह अद्वितीय है । वह सदा कृपादृष्टि करता है, (इसलिए) मेरा उससे मिलाप हो सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जीव-स्त्री जगत के मोह से निकलकर प्रभु-चरणों में जुड़ी रहती है, वह उस सत्यस्वरूप प्रभु (की महत्ता) पहचान लेती है; स्थिर अवस्था में टिककर, प्रेम में जुड़कर वह अपने पति-प्रभु से गहरे सम्बन्ध बना लेती है ॥ २ ॥ जब गुरु की कृपा से (जीव-स्त्री को) ऐसी बुद्धि आ जाती है तब जीव-स्त्री पति-प्रभु के मन को प्रिय लगने लगती है ॥ ३ ॥ नानक कहता है, जो जीव-स्त्री परमात्मा के भय का अथवा प्रेम का शृंगार करती है उसकी हृदय-सेज पर पति-प्रभु सदा विराजमान रहता है ॥ ४ ॥ २७ ॥

॥ आसा महला १ ॥ न किस का पूतु न किस की माई । झूठै मोहि भरमि भुलाई ॥ १ ॥ मेरे साहिब हउ कीता तेरा । जां तूं देहि जपी नाउ तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुते अउगण कूकै कोई । जा तिसु भावै बखसे सोई ॥ २ ॥ गुरपरसादी दुरमति खोई । जह देखा तह एको सोई ॥ ३ ॥ कहत नानक ऐसी मति आवै । तां को सचे सचि समावै ॥ ४ ॥ २८ ॥

मिथ्या मोह के कारण दुनिया दुबिधा में पड़कर कुमार्गगामी हो गई है जबकि माँ, पुत्र आदि कोई भी किसी का पक्का साथी नहीं है ॥ १ ॥ हे मेरे मालिक प्रभु ! मैं तेरे द्वारा उत्पादित हूँ । जब तुम मुझे अपना नाम देते हो तब मैं जप सकता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कितने ही पाप किए हुए हों फिर भी यदि कोई मनुष्य प्रार्थना करता है (और) जब परमात्मा को (प्रार्थना) पसन्द आती है तो वह देन देता है (आत्मिक जीवन के लिए नाम की देन देता है) ॥ २ ॥ मैं जिधर देखता हूँ उधर वह परमात्मा ही व्याप्त देखता हूँ । गुरु की कृपा से हमारी दुर्बुद्धि नष्ट होती है ॥ ३ ॥ नानक कहता है, जब जीव को ऐसी बुद्धि आ जाए कि हर

तरफ उसे परमात्मा ही दिखाई दे तो जीव सदा स्थिर रहनेवाले प्रभु की याद में लीन रहता है ॥ ४ ॥ २८ ॥

॥ आसा महला १ दुपदे ॥ तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ । पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥ १ ॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना । हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ । प्रणवति नानक तिन्ह की सरणा जिन्ह तूं नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ २९ ॥

(हम जीवों का) उस भयानक सरोवर में वास है जिसमें उस प्रभु ने आप ही पानी के स्थान पर आग पैदा की है, (उस सरोवर में) जो मोह की कीचड़ है (उसमें जीवों का) पैर नहीं चल सकता, हमारे सामने ही कितने जीव (सरोवर के अथाह जल में) डूबते जा रहे हैं ॥ १ ॥ हे मूर्ख मन ! तू एक प्रभु को याद नहीं करता । तू जैसे-जैसे प्रभु को भुलाता है, तेरे (भीतर से) गुण कम होते जा रहे हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! न मैं जितेन्द्रिय हूँ, न सत्यवादी हूँ, न पढ़ा-लिखा हूँ; मेरा जीवन तो अज्ञानियों जैसा बना हुआ है । (इसलिए) नानक प्रार्थना करता है— (हे प्रभु !) मुझे उन (गुरमुखों) की शरण में रख जिन्हें तूने विस्मृत नहीं किया ॥ २ ॥ २९ ॥

॥ आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस । गुर गुरु एको वेस अनेक ॥ १ ॥ जै घरि करते कीरति होइ । सो घरु राखु वडाई तोहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु भइआ । सूरजु एको रुति अनेक । नानक करते के केते वेस ॥ २ ॥ ३० ॥

छः शास्त्र हैं, छः ही (शास्त्रों के) चलानेवाले हैं, छः ही इनके सिद्धान्त हैं । पर इन सबका मूल गुरु (परमात्मा) एक है, (ये सब सिद्धान्त) उस एक प्रभु के ही अनेक वेश हैं ॥ १ ॥ जिस (सत्संग) घर में अकालपुरुष की गुणस्तुति होती है, (हे भाई !) तू उस घर को सँभाल कर रख, तुझे महानता (प्रतिष्ठा) मिलेगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस प्रकार विसुए, चसे, घड़ियाँ, प्रहर, तिथियाँ, वार, महीने आदि तथा दूसरी कई ऋतुएँ हैं लेकिन सूर्य एक ही है (जिसके यह अलग-अलग स्वरूप हैं), उसी प्रकार, हे नानक ! कर्तार के (ये लौकिक प्राणी) अनेक स्वरूप हैं ॥ २ ॥ ३० ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ आसा घरु ३ महला १॥ लख लसकर लख वाजे नेजे लख उठि करहि सलामु। लखा उपरि फुरमाइसि तेरी लख उठि राखहि मानु। जां पति लेखै ना पवै तां सभि निराफल काम॥ १॥ हरि के नाम बिना जगु धंधा। जे बहुता समझाईऐ भोला भी सो अंधो अंधा॥ १॥ रहाउ॥ लख खटीअहि लख संजीअहि खाजहि लख आवहि लख जाहि। जां पति लेखै ना पवै तां जीअ किथै फिरि पाहि॥ २॥ लख सासत समझावणी लख पंडित पड़हि पुराण। जां पति लेखै ना पवै तां सभे कुपरवाण॥ ३॥ सच नामि पति ऊपजै करमि नामु करतारु। अहिनिसि हिरदै जे वसै नानक नदरी पारु॥ ४॥ १॥ ३१॥

(हे भाई!) यदि तेरी फौजें लाखों की गिनतियों में हों, उनमें लाखों ही व्यक्ति बाजे बजाने वाले हों, लाखों नेजे से संयुक्त हों, लाखों ही व्यक्ति उठकर नित्य तुझे सलाम करते हों, (हे भाई!) यदि लाखों व्यक्तियों पर तेरी हुकूमत होवे, लाखों व्यक्ति उठकर तेरी प्रतिष्ठा करते हों, (तो क्या हुआ) यदि तेरी यह प्रतिष्ठा परमात्मा के दरबार में स्वीकृत न हो। इस प्रकार तेरे यहाँ जगत में किए गए सारे काम ही व्यर्थ गए॥ १॥ परमात्मा के नाम-स्मरण के बिना जगत का मोह (सांसारिक प्राणियों के लिए) उलझन ही उलझन बन जाता है। चांहे कितना ही समझाते रहो, मन अन्धा ही अन्धा रहता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि लाखों रुपये कमाए जाएँ, लाखों रुपये जोड़े जाएँ, लाखों रुपये खर्च किए जाएँ, लाखों रुपये आएँ और लाखों चले जाएँ, लेकिन यदि प्रभु की दृष्टि में यह प्रतिष्ठा स्वीकार्य न हो तो (लाखों रुपये के मालिक भी भीतर से) दुखी ही रहते हैं॥ २॥ लाखों बार शास्त्रों की व्याख्या की जाए, विद्वान लोग लाखों बार पुराण पढ़ें, तो भी यदि यह प्रतिष्ठा प्रभु के द्वार पर स्वीकार्य न होवे तो सब पढ़ना-पढ़ाना बेकार है॥ ३॥ सत्यस्वरूप परमात्मा के नाम में जुड़ने से ही प्रतिष्ठा मिलती है और उसकी अपनी कृपा से कर्तार (का यह) नाम मिलता है। हे नानक! यदि परमात्मा का नाम हृदय में रात-दिन बसा रहे, तो परमात्मा की कृपा से मनुष्य (संसार-समुद्र का) दूसरा किनारा प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ १॥ ३१॥

॥ आसा महला १॥ दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु। उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ

मेलु ॥ १ ॥ लोका मत को फकड़ि पाइ । लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु । ऐथै ओथै आगै पाछै एहु मेरा आधारु ॥ २ ॥ गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ । सचा नावणु तां थीऐ जां अहिनिसि लागै भाउ ॥ ३ ॥ इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ । नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखूटसि नाहि ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥

मेरे लिए परमात्मा का नाम ही दीपक है, (जिससे मुझे आत्मिक प्रकाश मिलता है) उस दीपक में मैंने दुख रूपी तेल को डाला है। उस प्रकाश से वह दुख रूपी तेल जलता जाता है तथा यमराज के साथ सम्बन्ध भी समाप्त हो जाता है ॥ १ ॥ हे लोगो ! मेरी बात की हँसी न उड़ाओ। लाखों मन लकड़ी के ढेर एकत्रित करके (यदि) थोड़ी सी भी आग लगाकर देखें (तो सब जलकर राख हो जाते हैं जैसे अनगिनत पापों को एक नाम समाप्त कर देता है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पत्तलों पर पिण्ड भरना (दान देना) मेरे लिए परमात्मा (का नाम) ही है, मेरे लिए 'किरिया' भी कर्तार (का) सच्चा नाम ही है। यह नाम लोक-परलोक में सर्वत्र मेरी ज़िन्दगी का अवलम्ब है ॥ २ ॥ (हे प्रभु !) तेरी गुणस्तुति ही मेरे लिए गंगा, काशी आदि तीर्थों का स्नान है, तेरी गुणस्तुति ही मेरे आत्मा का स्नान है। सच्चा स्नान ही तब है, जब दिन-रात प्रभु-चरणों में प्रेम बना रहे ॥ ३ ॥ ब्राह्मण एक पिण्ड बनाकर देवताओं को भेंट करता है और दूसरा पिण्ड पितरों को, पिण्ड बनाने के बाद वह आप खाता है। (पर) हे नानक ! ब्राह्मण के माध्यम से दिया गया पिण्डदान कब तक स्थायी रह सकता है ? हाँ, परमात्मा की कृपा का पिण्ड कभी समाप्त नहीं होता ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥

आसा घरु ४ महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ देवतिआ दरसन कै ताई दूख भूख तीरथ कीए । जोगी जती जुगति महि रहते करि करि भगवे भेख भए ॥ १ ॥ तउ कारणि साहिबा रंगि रते । तेरे नाम अनेका रूप अनंता कहणु न जाही तेरे गुण केते ॥१॥रहाउ॥ दर घर महला हसती घोड़े छोडि विलाइति देस गए । पीर पेकांबर सालिक सादिक छोडी दुनीआ थाइ पए ॥ २ ॥ साद

सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोडे चमड़ लीए। दुखीए दरदवंद दरि तेरै नामि रते दरवेस भए ॥ ३ ॥ खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूतु धोती कीन्ही। तूं साहिबु हउ सांगी तेरा प्रणवै नानकु जाति कैसी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३३ ॥

देवताओं ने भी तेरा दर्शन करने के लिए दुख सहे, भूख-प्यास सही और तीर्थ-भ्रमण किया। अनेक योगी तथा यती अपनी मर्यादाओं को निभाते हुए गेरुए रंग के कपड़े पहनते रहे ॥ १ ॥ हे मेरे मालिक ! तुझे मिलने के लिए अनेक व्यक्ति तेरे प्रेम में रँगे रहते हैं। तेरे अनेक नाम हैं, अनन्त रूप हैं, अनन्त गुण हैं, (ये) किसी भी ओर से बखाने नहीं जा सकते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (तेरा दर्शन पाने के लिए अनेक प्राणी) अपने महल, भवन, द्वार पर बँधे हुए हाथी, घोड़ों तथा अपने स्थान को छोड़कर (जंगलों में) चले गए। अनेक पीर, पैग़म्बर, ज्ञानियों तथा आस्तिकों ने तेरे द्वार पर सत्कृत होने के लिए दुनिया त्याग दी ॥ २ ॥ अनेक व्यक्तियों ने दुनिया के सुख-आराम तथा सब रसों के पदार्थ छोड़ दिए और कपड़े छोड़कर चमड़ा पहना। अनेक व्यक्ति दुखियों के समान तेरे द्वार पर प्रार्थना करने के लिए, तेरे नाम में रँगे रहने के लिए फ़कीर हो गए ॥ ३ ॥ किसी ने (भांग आदि के लिए) चमड़े की झोली ले ली, किसी ने (घर-घर भिक्षा माँगने के लिए) खप्पर (हाथ में) पकड़ लिया, कोई डण्डाधारी संन्यासी बना, किसी ने मृगछाला ले ली, कोई चोटी, जनेऊ तथा धोती का धारण करनेवाला हो गया। पर नानक प्रार्थना करता है— हे प्रभु ! तुम मेरे मालिक हो, मैं केवल तेरा स्वांगी हूँ, किसी विशेष जाति में उत्पन्न होने का मुझे कोई अभिमान नहीं है ॥ ४ ॥ १ ॥ ३३ ॥

आसा घरु ५ महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भीतरि पंच गुपत मनि वासे। थिरु न रहहि जैसे भवहि उदासे ॥ १ ॥ मनु मेरा दइआल सेती थिरु न रहै। लोभी कपटी पापी पाखंडी माइआ अधिक लगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फूल माला गलि पहिरउगी हारो। मिलैगा प्रीतमु तब करउगी सीगारो ॥ २ ॥ पंच सखी हम एकु भतारो। पेडि लगी है जीअड़ा चालणहारो ॥ ३ ॥ पंच सखी मिलि रुदनु करेहा। साहु पजूता प्रणवति नानक लेखा देहा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥

मेरे मन के भीतर पाँच कामादिक (शत्रु) छिपे हुए हैं, वह घबराए हुए (व्यक्तियों की) तरह भागे फिरते हैं, न वे आप टिकते हैं, (न मेरे भीतर टिकाव आने देते हैं) ॥ १ ॥ मेरा मन दयालु परमात्मा की याद में नहीं लगता है। इस पर माया ने बहुत जोर लगाया हुआ है। यह लोभी, कपटी, पापी और पाखण्डी बन पड़ा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैं अपने पति के गले में फूलों की माला पहनाऊँगी, फूलों का हार पहनाऊँगी और उसके मिलने पर मैं श्रृंगार करूँगी ॥ २ ॥ मेरी पाँच सहेलियाँ (ज्ञानेन्द्रियाँ) भी जिनका जीवात्मा ही पति है, (जीवात्मा की मदद करने के स्थान पर) शरीर के भोग में लगी हुई हैं (उन्हें हृदय में यह ध्यान नहीं कि इस शरीर से इस जीवात्मा का बिछोह होना है) जीवात्मा को अवश्य जाना है ॥ ३ ॥ (बिछोह के वक्त) पाँचों सहेलियाँ मिलकर रो देती हैं (अर्थात पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ जीवात्मा का साथ छोड़ देती हैं और) नानक कहता है कि जीवात्मा (अकेला) लेखा देने के लिए पकड़ा जाता है ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ६ महला १ ॥ मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी । खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥ १ ॥ लाल बहु गुणि कामणि मोही । तेरे गुण होहि न अवरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हारु कंठि ले पहिरै दामोदरु दंतु लेई । कर करि करता कंगन पहिरै इन बिधि चितु धरेई ॥ २ ॥ मधुसूदनु कर मुंदरी पहिरै परमेसरु पटु लेई । धीरजु धड़ी बंधावै कामणि स्रीरंगु सुरमा देई ॥ ३ ॥ मन मंदरि जे दीपकु जाले काइआ सेज करेई । गिआन राउ जब सेजै आवै त नानक भोगु करेई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३५ ॥

यदि जीव-स्त्री अपने मन को पवित्र मोती जैसा गहना बना ले, यदि प्रत्येक श्वास धागा बने, यदि दुनिया के अत्याचार को सहन करने के स्वभाव को जीव-स्त्री श्रृंगार बनाकर अपने शरीर पर पहन ले तो वह पति-प्रभु की प्यारी होकर उसे मिल जाती है ॥ १ ॥ कामिनी (आत्मा) अपने प्रियतम परमात्मा के बहुगुणी (व्यक्तित्व) में आसक्त है। (हे प्रभु!) तुम्हारे सरीखे गुण और किसी में नहीं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि जीव-स्त्री परमात्मा की हर समय की स्मृति को हार बनाकर अपने गले में डाल ले, यदि प्रभु-स्मरण को (दाँतों का) दँदासा इस्तेमाल करे, यदि कर्तार की भक्ति-सेवा को कंगन बनाकर हाथों में पहन ले तो इस प्रकार उसका चित्त प्रभु-चरणों में टिका

रहता है ॥ २ ॥ यदि जीव-स्त्री हरि-भजन की अँगूठी बनाकर हाथ की उँगली में पहन ले, प्रभु-नाम की ओट को अपनी प्रतिष्ठा का रक्षक रेशमी कपड़ा बनाए, गम्भीरता को पट्टियाँ सजाने के लिए प्रयोग करे, लक्ष्मीपति प्रभु के नाम का सुरमा डाले; ॥ ३ ॥ यदि जीव-स्त्री अपने मन के महल में ज्ञान का दीपक जगाए, हृदय को (प्रभु मिलाप के लिए) सेज बनाए, हे नानक! (ऐसी स्थिति में) जब ज्ञानदाता प्रभु उसकी हृदय-सेज पर प्रकट होता है तो उसे अपने साथ मिला लेता है ॥ ४ ॥ १ ॥ ३५ ॥

॥ आसा महला १ ॥ कीता होवै करे कराइआ तिसु किआ कहीऐ भाई । जो किछु करणा सो करि रहिआ कीते किआ चतुराई ॥ १ ॥ तेरा हुकमु भला तुधु भावै । नानक ता कउ मिलै वडाई साचे नामि समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरतु पइआ परवाणा लिखिआ बाहुड़ि हुकमु न होई । जैसा लिखिआ तैसा पड़िआ मेटि न सकै कोई ॥ २ ॥ जे को दरगह बहुता बोलै नाउ पवै बाजारी । सतरंज बाजी पकै नाही कची आवै सारी ॥ ३ ॥ ना को पड़िआ पंडितु बीना ना को मूरखु मंदा । बंदी अंदरि सिफति कराए ता कउ कहीऐ बंदा ॥४॥२॥३६॥

हे भाई! जीव के क्या वश है? जीव वही कुछ करता है जो परमात्मा उससे कराता है। जीव की कोई चतुराई काम नहीं आती, जो कुछ अकालपुरुष करना चाहता है, वही कर रहा है ॥ १ ॥ (हे प्रभु!) जो जीव तुझे अच्छा लगता है, उसे तेरी रज़ा मीठी लगने लगती है। (सो) हे नानक! उस जीव को आदर मिलता है जो उस सत्य स्वामी के नाम में लीन रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमारे जन्मजन्मान्तरों के किए कार्यों के संस्कारों का संचित रूप हमारे मन में अंकित होता है उसके अनुसार हमारे जीवन-लेख लिखे जाते हैं, उसके विपरीत वश नहीं चलता। फिर जैसा वह जीवन-लेख लिखा पड़ा होता है उसके अनुसार (जीवन-यात्रा) दिखती चली जाती है, कोई (उन लेखों को अपने उद्यम से) मिटा नहीं सकता ॥ २ ॥ यदि कोई जीव परमात्मा द्वारा लिखे हुक्म के विपरीत विरोध करता जाय तो उसे बकवादी ही माना जा सकता है। (जीवन की बाजी) शतरंज (चौसर) की बाजी है, यह जीती नहीं जा सकेगी, सारें कच्ची ही रहती हैं, (केवल वही सारें पक्की होती हैं जो) पक्के होनेवाले घर में चली जाती हैं ॥ ३ ॥ इस रास्ते में न किसी को विद्वान पण्डित कहा जा सकता है, न कोई (अनपढ़) मूर्ख या दुष्ट स्वीकार किया जा सकता है। वही जीव अपने को सही व्यक्ति कहलवा सकता है जिसे प्रभु अपनी रज़ा में रखकर उससे अपनी गुणस्तुति कराता है ॥ ४ ॥ २ ॥ ३६ ॥

॥ आसा महला १ ॥ गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिथा खिमा हढावउ । जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि पावउ ॥ १ ॥ बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तंत महि जोगं । अंम्रितु नामु निरंजन पाइआ गिआन काइआ रस भोगं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप तिआगी बादं । सिङी सबदु सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं ॥ २ ॥ पतु वीचारु गिआन मति डंडा वरतमान बिभूतं । हरि कीरति रहरासि हमारी गुरमुखि पंथु अतीतं ॥ ३ ॥ सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरन अनेकं । कहु नानक सुणि भरथरि जोगी पारब्रहम लिव एकं ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३७ ॥

(हे योगी !) गुरु का शब्द मैंने अपने मन में टिकाया हुआ है, यही तो मुद्राएँ हैं। मैं क्षमा का स्वभाव अर्थात गुदड़ी पहनता हूँ। जो कुछ परमात्मा करता है उसे मैं जीवों के कल्याणार्थ मानता हूँ। इस प्रकार मेरा मन चलायमान होने से बचा रहता है— यह है योगसाधना का भण्डार जो मैं एकत्रित कर रहा हूँ ॥ १ ॥ (हे भाई !) जो जीव हरि में जुड़ा है अर्थात हरिनाम में लीन है, वह युग-युग से (सदैव) योगी है। वह परमतत्त्व में संयुक्त है। (बाहरी योगी दस-द्वारों को रूँधने की समाधि द्वारा शारीरिक रस अनुभव करता है) किन्तु जिस योगी ने निरंजन का नाम-रस पा लिया है, वह ज्ञानी है और ज्ञान द्वारा ही उक्त रस को भोग लेता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे योगी !) मैं भी आसन पर बैठता हूँ, मैं मन की कल्पनाओं तथा दुनियावी झंझटों को छोड़कर कल्याणस्वरूप प्रभु के देश में (प्रभु के चरणों में) टिककर बैठता हूँ (यह मेरा आसन पर बैठना है)। हे योगी ! मेरे भीतर गुरु का शब्द है; यह है सिंगी की मीठी सुहावनी आवाज़, जो मेरे भीतर हो रही है। दिन-रात मेरा मन गुरु-शब्द का नाद बजा रहा है ॥ २ ॥ प्रभु के गुणों का विचार मेरा खप्पर है, परमात्मा के साथ गहरा सम्बन्ध जोड़नेवाली बुद्धि (मेरे हाथ में) डण्डा है, प्रभु को सर्वत्र मौजूद देखना देह पर मलनेवाली राख है। अकालपुरुष की गुणस्तुति योग की (प्रभु के साथ ऐक्य की) मर्यादा है। गुरु के सम्मुख टिके रहना ही हमारा धर्म-मार्ग है जो हमें माया से विरक्त रखता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! (कह—) हे योगी ! सुन, सब जीवों में अनेक रूपरंगों में प्रभु की ज्योति को देखना ही वैराग्यवृत्ति है जो हमें प्रभु-चरणों में लीन होने के लिए बल देती है ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३७ ॥

॥ आसा महला १ ॥ गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ । भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि

अमिउ चुआईऐ ॥ १ ॥ बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ। अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे। अंम्रित का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥ २ ॥ गुर की साखी अंम्रित बाणी पीवत ही परवाणु भइआ। दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै किआ ॥ ३ ॥ सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै। कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अंम्रित धारै ॥४॥४॥३८॥

[योगी लोग समाधि-अवस्था में सुरति की एकाग्रता के लिए सुरापान करते हैं। सतिगुरुजी प्रस्तुत पद में सुरापान की निन्दा करते हुए बतलाते हैं।]

(हे योगी!) परमात्मा के साथ गहरे सम्बन्ध को गुड़ बना, प्रभु-चरणों में जुड़ी सुरति को महुए के पुष्प बना, सदाचरण को कीकर की छाल बनाकर मिला दे। शारीरिक मोह को जला— यह शराब निकालने की भट्टी तैयार कर, प्रभु-चरणों में नेह जोड़— यह वह ठण्डा पोचा है जो अर्क की नली पर फेरना है। इस समूचे मिले-जुले रस से (भीतर को शुद्ध करनेवाला) अमृत निकलेगा ॥ १ ॥ हे योगी! असली मस्ताना वह मन है जो परमात्मा के स्मरण का रस-पान करता है, (स्मरण का आनन्द महसूस करता है) जो सहज के रंग में रँगा रहता है, जिसे प्रभु-चरणों के प्रेम की इतनी लौ लगती है कि दिन-रात बनी रहती है, जो अपने गुरु के शब्द को निरन्तर अपने भीतर टिकाए रखता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे योगी!) यह है वह प्याला जिसकी मस्ती सदा टिकी रहती है, सब गुणों का मालिक प्रभु टिकाव में रखकर उस मनुष्य को (यह प्याला) पिलाता है जिस पर वह आप कृपादृष्टि करता है। जो मनुष्य अटल आत्मिक जीवन देनेवाले इस रस का व्यापारी बन जाए वह ओछी शराब से प्यार नहीं करता ॥ २॥ जिस मनुष्य ने अटल आत्मिक जीवन देनेवाली गुरु की शिक्षा भरी वाणी का रस पान किया है, वह पीते ही प्रभु की दृष्टि में सत्कृत हो जाता है, वह परमात्मा के द्वार के दर्शन का प्रेमी बन जाता है, उसे न मुक्ति की आवश्यकता रहती है न बैकुण्ठ की ॥ ३॥ हे नानक! (कह—) हे योगी! जो मनुष्य प्रभु की गुणस्तुति में रँगा है, वह सदा विरक्त रहता है, वह आत्मिक रूप से उच्च मनुष्य-जीवन जुए में नहीं गवाँता, वह तो स्थिर आत्मिक जीवन के दाता के आनन्द में मस्त रहता है ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३८ ॥

॥ आसा महला १ ॥ खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ। आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ।

एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ।। १ ।। करता तूं सभना का सोई । जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ।। १ ।। रहाउ ।। सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई । रतन विगाड़ि विगोए कुतीं मुइआ सार न काई । आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ।। २ ।। जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे । खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे । मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे ।। ३ ।। ५ ।। ३९ ।।

[जिन दिनों मक्के की तीसरी 'उदासी' से गुरु नानकदेव बगदाद एवं काबुल के रास्ते से सन् १५२१ में हिन्दुस्तान वापिस आ रहे थे उन्हीं दिनों बाबर ने सैदपुर (एमनाबाद) पर आक्रमण कर दिया । सतिगुरु गुरु नानकदेव से रहा न गया और एमनाबाद पहुँचे और वहाँ मुगलों के अत्याचारों से पीड़ित जनता के दुख से दुखी होकर उन्होंने जो कुछ उच्चरित किया वह इस शब्द में है ।]

खुरासान की सुपुर्दगी (किसी दूसरे को) करके (बाबर ने हमला करके) हिन्दुस्तान को आ डराया । परमात्मा अपने पर दोष नहीं लेता । उसने मुगल बाबर को यमराज बनाकर (हिन्दुस्तान पर) चढ़ा दिया । (परन्तु, हे कर्तार ! अहंग्रस्त पठान बादशाहों के साथ ग़रीब निहत्थे लोग भी पीसे गए) इतनी मार पड़ी कि वे (हाय-हाय) पुकार उठे । क्या (इतना अमानुषिक रक्तपात देखकर) उन पर दया नहीं आई ? ।। १ ।। हे कर्तार ! तुम सब जीवों की सुधि रखनेवाले हो । यदि कोई शक्तिशाली, किसी शक्तिशाली की मार कुटाई करे तो (देखनेवालों के) मन में गुस्सा-गिल्ला नहीं होता (क्योंकि दोनों पक्ष बराबर के होते हैं) ।। १ ।। रहाउ ।। पर यदि कोई शेर (जैसा) शक्तिमान गायों के झुण्ड (जैसे कमज़ोर निहत्थों) पर हमला करके मारने लगे तो इसकी फ़र्याद (झुण्ड के) स्वामी से ही होती है । मुगल रूपी कुत्तों ने (तेरे बनाए) सुन्दर व्यक्तियों को मार-मार कर मिट्टी में मिला दिया है, मृतकों की कोई सुधि नहीं लेता । (हे कर्तार ! तेरी रज़ा तुम ही जानो) तुमने आप ही (सम्बन्ध) जोड़कर आप ही वियुक्त कर दिया है । देख, हे कर्तार ! यह तेरी ताकत का करिश्मा है ।। २ ।। यदि कोई मनुष्य अपने आपको बड़ा कहलवाए तथा इच्छानुसार रंगरेलियाँ करे तो भी वह प्रभु की दृष्टि में कीड़ा ही दिखाई देता है जो (धरती पर) दाने चुग-चुग गुज़ारा करता है । हे नानक ! जो मनुष्य विकारों की ओर से आपाभाव मारकर जीता है और प्रभु का नाम-स्मरण करता है, वही यहाँ से कुछ प्राप्त करता है ।। ३ ।। ५ ।। ३९ ।।

रागु आसा घरु २ महला ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। हरि दरसनु पावै वडभागि । गुर कै सबदि सचै बैरागि । खटु दरसन वरतै वरतारा । गुर का दरसनु अगम अपारा ।। १ ।। गुर कै दरसनि मुकति गति होइ । साचा आपि वसै मनि सोइ ।। १ ।। रहाउ ।। गुर दरसनि उधरै संसारा । जे को लाए भाउ पिआरा । भाउ पिआरा लाए विरला कोइ । गुर कै दरसनि सदा सुखु होइ ।।२।। गुर कै दरसनि मोख दुआरु । सतिगुरु सेवै परवार साधारु । निगुरे कउ गति काई नाही । अवगणि मुठे चोटा खाही ।। ३ ।। गुर कै सबदि सुखु सांति सरीर । गुरमुखि ता कउ लगै न पीर । जम कालु तिसु नेड़ि न आवै । नानक गुरमुखि साचि समावै ।। ४ ।। १ ।। ४० ।।

(जगत में वेदान्त आदि) छः शास्त्रों की प्रथा है लेकिन गुरु का शास्त्र (इन छः शास्त्रों की) पहुँच से परे है। (ये छः शास्त्र गुरु के शास्त्र का) अन्त नहीं पा सकते। गुरु के शब्द में जुड़कर, सत्यस्वरूप परमात्मा में लगन लगाकर मनुष्य बड़े भाग्य से परमात्मा का शास्त्र प्राप्त करता है ।। १ ।। गुरु के (दिए हुए) शास्त्र के द्वारा विकारों से छुटकारा हो जाता है, वह सत्यस्वरूप परमात्मा आप मन में आ बसता है ।। १ ।। रहाउ ।। यदि कोई मनुष्य (गुरु के शास्त्र में) नेह जोड़े तो (नेह लगाने-वाला) जगत गुरु के शास्त्र के प्रभाव से (विकारों से) बच जाता है। पर कोई बिरला मनुष्य ही (गुरु के शास्त्र में) नेह पैदा करता है। (हे भाई !) गुरु के शास्त्र में चित्त लगाने से सदा आत्मिक आनन्द मिलता है ।। २ ।। गुरु के शास्त्र में (सुरति टिकाकर) विकारों से मुक्त होनेवाला मनुष्य मार्ग प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य सतिगुरु की शरण लेता है वह अपने परिवार के लिए भी सहारा बन जाता है। जो मनुष्य गुरु की शरण नहीं लेता, उसे कोई उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त नहीं होती। (हे भाई !) जो मनुष्य पाप (कर्म) में लूटे जा रहे हैं, वे जीवन-यात्रा में चोटें खाते हैं ।। ३ ।। (हे भाई !) गुरु के शब्द में अनुरक्त (मनुष्य के) शरीर को सुख मिलता है, शान्ति मिलती है, गुरु की शरण लेने के कारण उसे कोई दुख नहीं पहुँच सकता। हे नानक ! जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, उसके निकट आत्मिक मौत नहीं फटक सकती। वह मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन रहता है ।। ४ ।। १ ।। ४० ।।

॥ आसा महला ३ ॥ सबदि मुआ बिचहु आपु गवाइ । सतिगुरु सेवे तिलु न तमाइ । निरभउ दाता सदा मनि होइ । सची बाणी पाए भागि कोइ ॥ १ ॥ गुण संग्रहु विचहु अउगुण जाहि । पूरे गुर कै सबदि समाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुणा का गाहकु होवै सो गुण जाणै । अंम्रित सबदि नामु वखाणै । साची बाणी सूचा होइ । गुण ते नामु परापति होइ ॥ २ ॥ गुण अमोलक पाए न जाहि । मनि निरमल साचै सबदि समाहि । से वडभागी जिन्ह नामु धिआइआ । सदा गुणदाता मंनि वसाइआ ॥ ३ ॥ जो गुण संग्रहै तिन्ह बलिहारै जाउ । दरि साचै साचे गुण गाउ । आपे देवै सहजि सुभाइ । नानक कीमति कहणु न जाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥

जो मनुष्य गुरु के शब्द में जुड़कर निर्लिप्त हो जाता है वह अपने भीतर से अहंत्व दूर कर लेता है । जो मनुष्य सतिगुरु की शरण लेता है उसे (माया का) तनिकमात्र भी लालच नहीं रहता । उस मनुष्य के मन में वह दाता सदा बसा रहता है जिसे किसी का कोई भय नहीं । लेकिन कोई बिरला मनुष्य ही सौभाग्यवश सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति की वाणी द्वारा उसे प्राप्त कर सकता है ॥ १ ॥ (हे भाई ! श्रेष्ठ गुण एकत्रित करो, इससे मन के विकार दूर हो जाते हैं । पूर्णगुरु के शब्द द्वारा (तू स्वामी प्रभु में) टिका रहेगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य परमात्मा की गुणस्तुति का सौदा करता है, वही उस गुणस्तुति की प्रतिष्ठा समझता है; वह मनुष्य आत्मिक जीवन देनेवाले गुरु-उपदेश के द्वारा परमात्मा का नाम स्मरण करता रहता है । सत्यस्वरूप परमात्मा की गुणस्तुति के प्रभाव से वह मनुष्य पवित्र जीवन वाला हो जाता है । गुणस्तुति के प्रभाव से उसे परमात्मा के नाम का सौदा मिल जाता है ॥ २ ॥ परमात्मा के गुणों का मूल्यांकन नहीं हो सकता, किसी भी मूल्य पर (गुण) मिल नहीं सकते, (हाँ) सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति के द्वारा (ये गुण) पवित्र मन में आकर बस जाते हैं । (हे भाई !) जिन व्यक्तियों ने परमात्मा का नाम-स्मरण किया है, अपने गुणों की देन देनेवाला प्रभु मन में बसाया है, वे भाग्यशाली हैं ॥ ३ ॥ जो-जो व्यक्ति परमात्मा के गुण एकत्रित करते हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, (उनकी प्रेरणा से) मैं उस सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर उसके गुण गाता हूँ । हे नानक ! (गुणों की देन जिस व्यक्ति को) प्रभु आप देता है, वही आत्मिक स्थिरता में टिकता है, प्रेम में जुड़ा रहता है, (उसके पवित्र जीवन का) मूल्य अकथ्य है ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर विचि वडी वडिआई । चिरी विछुंने मेलि मिलाई । आपे मेले मेलि मिलाए । आपणी कीमति आपे पाए ॥ १ ॥ हरि की कीमति किन बिधि होइ । हरि अपरंपरु अगम अगोचरु गुर कै सबदि मिलै जनु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि कीमति जाणै कोइ । विरले करमि परापति होइ । ऊची बाणी ऊचा होइ । गुरमुखि सबदि वखाणै कोइ ॥ २ ॥ विणु नावै दुखु दरदु सरीरि । सतिगुरु भेटे ता उतरै पीर । बिनु गुर भेटे दुखु कमाइ । मनमुखि बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ हरि का नामु मीठा अति रसु होइ । पीवत रहै पीआए सोइ । गुर किरपा ते हरिरसु पाए । नानक नामि रते गति पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४२ ॥

(हे भाई !) सतिगुरु में यह एक बहुत बड़ा गुण है कि वह अनेक जन्मों से बिछुड़े हुए जीवों को परमात्मा के चरणों में जोड़ देता है। प्रभु आप ही (गुरु) मिलाता है, गुरु मिलाकर अपने चरणों में लगाता है और फिर जीवों में अपने नाम की प्रतिष्ठा आप ही पैदा करता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) किस विधि से परमात्मा के नाम की प्रतिष्ठा (मनुष्य के मन में) पैदा होवे ? परमात्मा अपरम्पार है, अगम्य है, ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच से परे है। गुरु के शब्द के द्वारा कोई बिरला मनुष्य प्रभु को मिलता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई बिरला मनुष्य ही गुरु की शरण लेकर परमात्मा के नाम का महत्व समझता है, किसी बिरले को परमात्मा की कृपा से (नाम) मिलता है। सर्वोच्च प्रभु की गुणगान के प्रभाव से मनुष्य उच्च जीवन वाला बन जाता है। कोई (बिरला भाग्यशाली मनुष्य) गुरु की शरण लेकर गुरु के शब्द के द्वारा परमात्मा का नाम-स्मरण करता है ॥ २॥ परमात्मा के नाम-स्मरण के बिना मनुष्य के शरीर में दुख, रोग पैदा हुए रहते हैं, जब मनुष्य को गुरु मिलता है तब उसका यह दुख दूर हो जाता है। गुरु को मिले बिना मनुष्य वेही कर्म कमाता है जो दुख पैदा करें, (इस प्रकार) मनमुख मनुष्य को सदा बहुत सज़ा मिलती रहती है ॥ ३ ॥ (हे भाई !) परमात्मा का नाम मीठा है, सरस है। लेकिन वही मनुष्य नाम-रस पीता रहता है जिसे वह परमात्मा आप पिलाए ! हे नानक ! गुरु-कृपा से ही मनुष्य परमात्मा के नाम-जल का आनन्द पाता है और नाम-रंग में रँगकर मनुष्य उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त कर लेता है ॥४॥ ३॥४२॥

॥ आसा महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा गहिर गंभीर । सेवत ही सुखु सांति सरीर । सबदि तरे जन सहजि सुभाइ ।

तिन कै हम सद लागह पाइ ।। १ ।। जो मनि राते हरि रंगु लाइ । तिन का जनम मरण दुखु लाथा ते हरि दरगह मिले सुभाइ ।। १ ।। रहाउ ।। सबदु चाखै साचा सादु पाए । हरि का नामु मंनि वसाए । हरि प्रभु सदा रहिआ भरपूरि । आपे नेड़ै आपे दूरि ।। २ ।। आखणि आखै बकै सभु कोइ । आपे बखसि मिलाए सोइ । कहणै कथनि न पाइआ जाइ । गुरपरसादि वसै मनि आइ ।। ३ ।। गुरमुखि विचहु आपु गवाइ । हरि रंगि राते मोहु चुकाइ । अति निरमलु गुरसबद वीचार । नानक नामि सवारणहार ।। ४ ।। ४ ।। ४३ ।।

(हे भाई !) प्यारा प्रभु सत्यस्वरूप है, अथाह और विशालमना है। उसके स्मरण करने से शरीर को सुख मिलता है, शान्ति मिलती है। (जो मनुष्य) गुरु के द्वारा (संसार-सागर से) पार उतर जाते हैं वे आत्मिक स्थिरता में टिके रहते हैं। वे प्रभु-प्रेम में जुड़े रहते हैं, हम सदा उनके चरण छूते हैं।। १ ।। जो मनुष्य परमात्मा का प्रेम-रंग इस्तेमाल करके अपने मन में रँगे जाते हैं, उन मनुष्यों के जन्म-मरण के चक्र का दुख दूर हो जाता है, वे प्रेम के प्रभावस्वरूप मनुष्य परमात्मा के दरबार में टिके रहते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। जो मनुष्य गुरु के शब्द का रस चखता है वह सदा स्थिर रहनेवाला (आत्मिक) आनन्द भोगता है; (क्योंकि) वह परमात्मा के नाम को मन में बसाए रखता है (और उसे महसूस होता है कि) परमात्मा हर स्थान पर व्यापक है, वह आप ही जीव के साथ-साथ है और आप ही दूर भी है ।। २ ।। (हे भाई !) औपचारिक रूप से हरेक मनुष्य कहता है, सुनाता है कि (परमात्मा) हरेक के निकट रहता है, लेकिन जिस किसी को वह अपने चरणों में मिलाता है, वह आप ही कृपा करके मिलाता है। मौखिक रूप से बातें करने से परमात्मा नहीं मिलता, (वह) गुरु की कृपा से मन में आ बसता है ।। ३ ।। गुरु के सम्मुख रहनेवाला मनुष्य अपने भीतर से अहंत्व दूर कर लेता है और परमात्मा के प्रेम-रंग में रँगकर (माया-मोह) समाप्त करता है। हे नानक ! गुरु के शब्द का चिन्तन मनुष्य को अत्यन्त पवित्र जीवन वाला बना देती है, प्रभु-नाम में लगकर मनुष्य दूसरों का जीवन सँवारने योग्य भी हो जाता है ।। ४ ।। ४ ।। ४३ ।।

।। आसा महला ३ ।। दूजै भाइ लगे दुखु पाइआ । बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ । सतिगुरु सेवै सोझी होइ । दूजै भाइ न लागै कोइ ।। १ ।। मूलि लागे से जन परवाणु । अनदिनु राम नामु जपि हिरदै गुरसबदी हरि एको जाणु ।। १ ।।

रहाउ ।। डाली लागै निहफलु जाइ । अंधीं कंमी अंध सजाइ । मनमुखु अंधा ठउर न पाइ । बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइ ।। २ ।। गुर की सेवा सदा सुखु पाए । संत संगति मिलि हरि गुण गाए । नामे नामि करे वीचारु । आपि तरै कुल उधरणहारु ।। ३ ।। गुर की बाणी नामि वजाए । नानक महलु सबदि घरु पाए । गुरमति सतसरि हरि जलि नाइआ । दुरमति मैलु सभु दुरतु गवाइआ ।। ४ ।। ५ ।। ४४ ।।

(जो मनुष्य परमात्मा के अतिरिक्त) किसी दूसरे के प्रेम में मस्त रहते हैं उन्होंने दुख ही दुख प्राप्त किया, गुरु के ज्ञान से ख़ाली रहकर उन्होंने अपनी ज़िन्दगी व्यर्थ गवाँ दी। जो मनुष्य गुरु की शिक्षा का अनुसरण करता है उसे जीवन की समझ आ जाती है, वह फिर माया के नेह में नहीं लगता ।। १ ।। (जो मनुष्य) जगत के सृजनहार परमात्मा (की याद) में जुड़ते हैं, वे मनुष्य (परमात्मा की दृष्टि में) स्वीकृत हो जाते हैं। परमात्मा का नाम प्रतिपल अपने हृदय में जपकर गुरु की शिक्षा के द्वारा मनुष्य एक परमात्मा से गहरे सम्बन्ध बना लेता है ।। १ ।। रहाउ ।। जो मनुष्य जगत के मूल प्रभु रूपी वृक्ष को छोड़कर उसकी रची हुई (माया रूपी) टहनी से चिपटा ही रहता है वह व्यर्थ ही जाता है, बुद्धिहीनता के कामों में पड़कर (माया के मोह में) अन्धा हुआ मनुष्य ठिकाना नहीं प्राप्त कर सकता। वह मायाग्रस्त होकर ऐसे दुखी होता है जैसे गन्दगी का कीड़ा गन्दगी में ।। २ ।। जो मनुष्य गुरु की शिक्षा-अनुसार सेवा करता है वह सदा आत्मिक आनन्द भोगता है (क्योंकि) सत्संगति में मिलकर वह परमात्मा के गुण गाता रहता है। वह सदा परमात्मा के नाम में जुड़कर तद्विषयक विचार करता है। (इस प्रकार) वह आप पार उतर जाता है और अपने वंश को पार उतारने योग्य हो जाता है ।। ३ ।। परमात्मा के नाम में जुड़कर जो मनुष्य सतिगुरु की बाणी (का बाजा) बजाता है, हे नानक ! गुरु के उपदेश के प्रभाव से वह मनुष्य परमात्मा के चरणों में घर प्राप्त कर लेता है। गुरु की शिक्षा-अनुसार जिस मनुष्य ने सत्संग-सरोवर में परमात्मा के नाम-जल से स्नान किया उसने दुर्बुद्धि की मैल धो ली और उसने सारा पाप दूर कर लिया ।। ४ ।। ५ ।। ४४ ।।

।। आसा महला ३ ।। मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि । दूजै भाइ आतम संघारहि । मेरा मेरा करि करि विगूता । आतमु न चीन्है भरमै विचि सूता ।। १ ।। मरु मुइआ सबदे मरि जाइ । उसतति निंदा गुरि सम जाणाई इसु जुग महि लाहा हरि

जपि लै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम विहूण गरभ गलि जाइ । बिरथा जनमु दूजै लोभाइ । नाम बिहूणी दुखि जलै सबाई । सतिगुरि पूरै बूझ बुझाई ॥ २ ॥ मनु चंचलु बहु चोटा खाइ । एथहु छुड़किआ ठउर न पाइ । गरभ जोनि विसटा का वासु । तितु घरि मनमुखु करे निवासु ॥ ३ ॥ अपुने सतिगुर कउ सदा बलि जाई । गुरमुखि जोती जोति मिलाई । निरमल बाणी निज घरि वासा । नानक हउमै मारे सदा उदासा ॥४॥६॥४५॥

स्वेच्छाचारी मनुष्य (आत्मिक मृत्यु) मरते हैं, और इस तरह मरकर वे अपनी मृत्यु ख़राब करते हैं, क्योंकि माया के मोह में पड़कर वे अपना आत्मिक जीवन तबाह कर लेते हैं। स्वेच्छाचारी मनुष्य (यह धन) मेरा है, (यह परिवार) मेरा है— नित्य कह-कह कर स्वयं दुखी होता रहता है, कभी अपने आत्मिक जीवन को नहीं खोजता, माया की दुबिधा में पड़कर (आत्मिक जीवन) की ओर से निश्चिन्त हुआ रहता है ॥ १ ॥ कोई भला कहे या बुरा, उसे एक जैसा स्वीकारना— जिसे गुरु ने यह सूझ दी है, वह मनुष्य जीवन में परमात्मा का नाम जपकर (जगत से) कमाई करके जाता है, वह मनुष्य (माया के मोह से) मृत्यु प्राप्त करता है और गुरु की शिक्षा के द्वारा (मोह से) वह अलग रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम से ख़ाली रहकर मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में पड़कर आत्मिक जीवन नष्ट कर लेता है, वह सदा माया के मोह में फँसा रहता है, (इस कारण) उसकी ज़िन्दगी व्यर्थ चली जाती है। नाम से ख़ाली रहकर तमाम दुनिया दुख में जलती रहती है। पर यह समझ पूर्णगुरु ने (किसी बिरले पुरुष को) दी है ॥ २ ॥ जिस मनुष्य का मन हर वक्त माया-मोह में भटकता है, वह मोह की चोटें खाता रहता है; इस मनुष्य जीवन में (स्मरण से) ख़ाली व्यक्ति फिर आत्मिक आनन्द का स्थान नहीं प्राप्त कर सकता। जन्म-मरण का चक्र मानो गन्दगी का घर है, इस घर में उस व्यक्ति का निवास हुआ रहता है जो स्वेच्छाचारी होता है ॥ ३ ॥ (हे भाई!) मैं अपने सतिगुरु पर सदा बलिहारी जाता हूँ, (क्योंकि) शरणागत मनुष्य की सुरति को वह गुरु परमात्मा की ज्योति में मिला देता है। हे नानक! गुरु की पवित्र बाणी के प्रभाव से अपने वास्तविक घर (प्रभु-चरणों) में ठिकाना मिल जाता है, (मनुष्य) अहंत्व को मार लेता है और सदा निर्लिप्त रहता है ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ लालै आपणी जाति गवाई । तनु मनु अरपे सतिगुर सरणाई । हिरदै नामु वडी वडिआई ।

सदा प्रीतमु प्रभु होइ सखाई ॥ १ ॥ सो लाला जीवतु मरै । सोगु हरखु दुइ सम करि जाणै गुर परसादी सबदि उधरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करणी कार धुरहु फुरमाई । बिनु सबदै को थाइ न पाई । करणी कीरति नामु वसाई । आपे देवै ढिल न पाई ॥ २ ॥ मनमुखि भरमि भुलै संसारु । बिनु रासी कूड़ा करे वापारु । विणु रासी वखरु पलै न पाइ । मनमुखि भुला जनमु गवाइ ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे सु लाला होइ । ऊतम जाती ऊतमु सोइ । गुर पउड़ी सभदू ऊचा होइ । नानक नामि वडाई होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥

अपना मन, शरीर, गुरु के आश्रित कर, उसका शरणागत होकर (सेवक ने) अपने अस्तित्व को मिटा लिया है। जो परमात्मा सबका प्यारा है और सबका साथी है, उसका नाम, दास अपने हृदय में बसाए रखता है, यही उसके लिए सबसे बड़ी प्रतिष्ठा है ॥ १ ॥ (हे भाई !) असली दास वह है जो दुनियावी काम-काज करता हुआ सांसारिक वासनाओं से निर्लिप्त है। (वह) सुख-दुख दोनो को एक जैसा समझता है और गुरु की कृपा से वह गुरु के शब्द में जुड़कर तृष्णाओं से बचा रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा ने अपने दास को अपने दरबार से ही स्मरण की कमाई को ही करणीय बताया है। गुरु की शिक्षा को माने बिना कोई मनुष्य प्रभु-द्वार पर स्वीकृत नहीं हो सकता, इसलिए सेवक उसकी गुणस्तुति करता है, उसका नाम (अपने मन में) बसाए रखता है— यही उसके लिए करणीय कमाई है। (लेकिन यह देन प्रभु) आप ही देता है (और देने में) देर नहीं लगाता ॥ २ ॥ स्वेच्छाचारी मनुष्य माया की दुबिधा में पड़कर कुमार्ग का अनुसरण करता है, जैसे कोई व्यापारी धन के बिना ठगी का ही व्यापार करता है, (क्योंकि) जिसके पास पूँजी नहीं उसे सौदा नहीं मिल सकता। (ऐसे ही) स्वेच्छाचारी मनुष्य (ईश्वर-भक्ति से) हटकर अपनी ज़िन्दगी बरबाद करता है ॥ ३ ॥ दास वही है जो सतिगुरु की शरण लेता है, वही ऊँची हस्ती वाला बन जाता है, वही ऊँचे जीवन वाला बन जाता है, गुरु की सीढ़ी का सहारा लेकर वह सबसे ऊँचा हो जाता है। हे नानक ! परमात्मा के नाम-स्मरण में ही प्रतिष्ठा है ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ मनमुखि झूठो झूठु कमावै । खसमै का महलु कदे न पावै । दूजै लगी भरमि भुलावै । ममता बाधा आवै जावै ॥ १ ॥ दोहागणी कामन देखु सीगारु । पुत्र कलत्रि धनि माइआ चितु लाए झूठु मोहु पाखंड विकारु ॥१॥

रहाउ ॥ सदा सोहागणि जो प्रभ भावै । गुर सबदी सीगारु बणावै । सेज सुखाली अनदिनु हरि रावै । मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै ॥ २ ॥ सा सोहागणि साची जिसु साचि पिआरु । अपणा पिरु राखै सदा उरधारि । नेड़ै वेखै सदा हदूरि । मेरा प्रभु सरब रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥ आगै जाति रूपु न जाइ । तेहा होवै जेहे करम कमाइ । सबदे ऊचो ऊचा होइ । नानक साचि समावै सोइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥

स्वेच्छाचारी जीव-स्त्री सदा वही कुछ करती है जो उसके किसी काम नहीं आ सकता, (उन कामों से) वह पतिप्रभु का ठिकाना कभी भी प्राप्त नहीं कर सकती, माया के मोह में फँसी हुई माया की दुबिधा में पड़कर वह कुमार्गगामी बनी रहती है। (हे मन !) अपनत्व के बन्धनों में बँधा हुआ जगत जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है ॥ १ ॥ (रे मन !) कुकर्मी स्त्री का शृंगार देख, निरा पाखण्ड है, निरा विकार है। (इसी प्रकार) जो मनुष्य पुत्र, स्त्री, माया में मन लगाता है उसका यह समूचा मोह व्यर्थ है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जीव-स्त्री प्रभु-पति को प्रिय लगती है वह सदा सौभाग्यशालिनी है, वह गुरु के शब्द द्वारा अपना सौंदर्य बनाती है, उसके हृदय की सेज सुखदायक हो जाती है क्योंकि वह प्रत्येक समय प्रभु-पति का मिलाप भोगती है, प्रभु-प्रियतम को मिलकर वह सदा आत्मिक आनन्द प्राप्त करती है ॥ २ ॥ जिस जीव-स्त्री का प्यार सत्यस्वरूप परमात्मा से हो जाता है वह सदा के लिए भाग्यशालिनी बन जाती है, वह अपने पति-प्रभु को सदा अपने हृदय में टिकाए रखती है, वह प्रभु को सदा अपने निकट देखती है, उसे प्यारा प्रभु सर्वत्र व्यापक दिखाई देता है ॥ ३ ॥ परलोक में न जाति जाती है न रूप जाता है। मनुष्य जैसे कर्म करता है वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। हे नानक ! (ज्यों-ज्यों मनुष्य) गुरु के शब्द के प्रभाव से ऊँचा होता जाता है त्यों-त्यों वह सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन होता जाता है ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ भगति रता जनु सहजि सुभाइ । गुर कै भै साचै साचि समाइ । बिनु गुर पूरे भगति न होइ । मनमुख रुंने अपनी पति खोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि जपि सदा धिआइ । सदा अनंदु होवै दिनु राती जो इछै सोई फलु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूरे ते पूरा पाए । हिरदै सबदु सचु नामु वसाए । अंतरु निरमलु अंम्रितसरि नाए । सदा सूचे साचि समाए ॥ २ ॥ हरि प्रभु वेखै सदा हजूरि । गुर परसादि

रहिआ भरपूरि । जहा जाउ तह वेखा सोइ । गुर बिनु दाता अवरु न कोइ ।। ३ ।। गुरु सागरु पूरा भंडार । ऊतम रतन जवाहर अपार । गुर परसादी देवणहारु । नानक बखसे बखसणहारु ।। ४ ।। ९ ।। ४८ ।।

जो मनुष्य परमात्मा की भक्ति के रंग में रँगा जाता है वह आत्मिक स्थिरता में टिका रहता है, वह प्रभु के प्रेम में प्रसन्न रहता है, गुरु की प्रतिष्ठा करते हुए, सत्यस्वरूप परमात्मा के भय में रहकर वह सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन हो जाता है । (पर) पूर्णगुरु का शरणागत हुए बिना परमात्मा की भक्ति नहीं हो सकती । जो मनुष्य स्वेच्छाचरण करते हैं वे (अन्त में) अपमानित होकर पश्चाताप करते हैं ।। १ ।। हे मेरे मन ! परमात्मा के गुण स्मरण कर, सदा परमात्मा का ध्यान कर । (परमात्मा के भक्त के भीतर) दिन-रात सदा आत्मिक चाव बना रहता है । वह जिस फल की इच्छा करता है, वही फल प्राप्त कर लेता है ।। १ ।। रहाउ ।। पूर्णगुरु के माध्यम से ही समूचे गुणों का मालिक परमात्मा प्राप्त होता है, (पूर्णगुरु की कृपा से ही) वह हृदय में गुरु का शब्द बसाता है, प्रभु का सत्यनाम बताता है, (ज्यों-ज्यों) वह आत्मिक जीवन देनेवाले नाम-जल के सरोवर में स्नान करता है उसका हृदय पवित्र होता जाता है । (हे भाई !) सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन होकर मनुष्य सदा के लिए पवित्र हो जाते हैं ।। २ ।। (जो मनुष्य) गुरु की कृपा से परमात्मा को अपने इर्द-गिर्द देखता है उसे परमात्मा हर स्थान पर व्यापक दिखाई देता है । (गुरु-कृपा द्वारा) मैं जिधर जाता हूँ उस परमात्मा को ही देखता हूँ । (लेकिन) गुरु के अतिरिक्त दूसरा कोई यह देन देने योग्य नहीं है ।। ३ ।। हे नानक ! गुरु समुद्र है जिसमें परमात्मा की गुणस्तुति के बहुमूल्य रत्न जवाहरात भरे पड़े हैं । जीवों को देन देनेवाला परमात्मा देन देता है और गुरु की कृपा द्वारा वह प्रभु-दाता गुणस्तुति के बहुमूल्य रत्न जवाहरात देता है ।। ४ ।। ९ ।। ४८ ।।

।। आसा महला ३ ।। गुरु साइरु सतिगुरु सचु सोइ । पूरै भागि गुर सेवा होइ । सो बूझै जिसु आपि बुझाए । गुर परसादी सेव कराए ।। १ ।। गिआन रतनि सभ सोझी होइ । गुरपरसादि अगिआनु बिनासै अनदिनु जागै वेखै सचु सोइ ।। १ ।। रहाउ ।। मोहु गुमानु गुरसबदि जलाए । पूरे गुर ते सोझी पाए । अंतरि महलु गुरसबदि पछाणै । आवण जाणु रहै थिरु नामि समाणे ।। २ ।। जंमणु मरणा है संसारु । मनमुखु अचेतु

माइआ मोहु गुबारु। पर निंदा बहु कूड़ु कमावै। विसटा का कीड़ा विसटा माहि समावै ॥ ३ ॥ सतसंगति मिलि सभ सोझी पाए। गुर का सबदु हरि भगति द्रिड़ाए। भाड़ा मंने सदा सुखु होइ। नानक सचि समावै सोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४९ ॥

(हे भाई !) गुरु (अनन्त गुणों का) समुद्र है, गुरु उस सत्यस्वरूप परमात्मा का रूप है, सौभाग्यवश गुरु की सेवा हो सकती है। (इसे) वह मनुष्य समझता है जिसे (परमात्मा) आप समझाता है और (उससे) गुरु-कृपा से सेवा-भक्ति कराता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) गुरु के दिए हुए ज्ञान-रत्न के प्रभाव से (मनुष्य को) हर प्रकार की समझ आ जाती है। गुरु-कृपा से जिसका अज्ञान दूर हो जाता है वह हर समय जाग्रत रहता है, वह (सर्वत्र) उस सत्यस्वरूप परमात्मा को ही देखता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) जो मनुष्य गुरु के शब्द के प्रभाव से मोह तथा अहंकार जला लेता है, जो मनुष्य पूर्णगुरु से (सही जीवन-युक्ति) समझ लेता है वह गुरु की शिक्षा के द्वारा अपने भीतर (बसते परमात्मा का) ठिकाना पहचान लेता है; उसका जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है वह परमात्मा के नाम में टिका रहता है और स्थिरचित्त हो जाता है ॥ २ ॥ जगत जन्म-मरण (का चक्र) है। स्वेच्छाचारी मनुष्य (परमात्मा की स्मृति से) असावधान रहता है, माया का मोहरूपी गहरा अँधेरा (सही मार्ग का बोध नहीं होने देता) वह सदा परनिंदा करता रहता है, वह केवल झूठ फरेब ही कमाता रहता है। (वह) गन्दगी का कीड़ा गन्दगी में ही टिका रहता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! जो मनुष्य सत्संगति में मिलकर सारी सूझबूझ प्राप्त करता है, जो गुरु के शब्द को (आत्मसात कर) परमात्मा की भक्ति को (अपने भीतर) पक्की तरह टिकाता है, जो परमात्मा की रज़ा को (मीठी) मानता है, उसे आत्मिक आनन्द मिला रहता है और वह उस सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन रहता है ॥ ४ ॥ १० ॥ ४९ ॥

॥ आसा महला ३ पंचपदे २ ॥ सबदि मरै तिसु सदा अनंद। सतिगुर भेटे गुर गोबिंद। ना फिरि मरै न आवै जाइ। पूरे गुर ते साचि समाइ ॥ १ ॥ जिन्ह कउ नामु लिखिआ धुरि लेखु। ते अनदिनु नामु सदा धिआवहि गुर पूरे ते भगति विसेखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह कउ हरि प्रभु लए मिलाइ। तिन्ह की गहण गति कही न जाइ। पूरै सतिगुर दिती वडिआई। ऊतम पदवी हरिनामि समाई ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपे आपि। एक घड़ी महि थापि उथापि। कहि कहि कहणा

आखि सुणाए । जे सउ घाले थाइ न पाए ॥ ३ ॥ जिन्ह कै पोतै पुंनु तिन्हा गुरू मिलाए । सचु बाणी गुरु सबदु सुणाए । जहां सबदु वसै तहां दुखु जाए । गिआनि रतनि साचै सहजि समाए ॥ ४ ॥ नावै जेवडु होरु धनु नाही कोइ । जिस नो बखसे साचा सोइ । पूरै सबदि मंनि वसाए । नानक नामि रते सुखु पाए ॥ ५ ॥ ११ ॥ ५० ॥

जो मनुष्य परमात्मा के शब्द में जुड़कर (माया के मोह की तरफ़ से) मरता है उसे सदा आत्मिक आनन्द मिलता है । जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, परमात्मा का आसरा लेता है, वह दोबारा आत्मिक मौत नहीं मरता, वह बारबार जन्मता-मरता नहीं । पूर्णगुरु की कृपा से वह सदा सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन रहता है ॥ १ ॥ (परमात्मा ने) जिनके माथे पर नाम-स्मरण का लेख लिख दिया, वे मनुष्य सदा ही नाम-स्मरण करते हैं, पूर्णगुरु की ओर से उन्हें प्रभु-भक्ति का टीका मिलता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) जिन मनुष्यों को परमात्मा अपने चरणों में मिला लेता है उनकी गहरी आत्मिक अवस्था वर्णन नहीं की जा सकती । जिन्हें पूर्णगुरु ने (प्रभु-चरणों में जुड़ने की) महानता दी उन्हें उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त हो गई, परमात्मा के नाम में उनकी हर समय लीनता हो गई ॥ २ ॥ 'जो कुछ करता है परमात्मा आप ही करता है । परमात्मा एक घड़ी में पैदा करके तुरन्त नाश भी कर सकता है'— जो मनुष्य बारबार यही कहकर लोगों को सुना देता है । यदि ऐसी (केवल दूसरों को कहने की) मेहनत सौ बार भी करे तो भी उसकी ऐसी कोई मेहनत स्वीकृत नहीं होती ॥ ३ ॥ जिनके पास (स्मरण के) अच्छे संस्कार हैं, उन्हें परमात्मा गुरु के साथ मिलाता है, गुरु उन्हें गुणस्तुति की बाणी सुनाता है, गुणस्तुति का शब्द सुनाता है । (हे भाई !) जिस हृदय में गुरु का शब्द बसता है, वहाँ से हरेक किस्म का दुख दूर हो जाता है । गुरु के द्वारा दिए ज्ञान-रत्न के प्रभाव से मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा में जुड़ा रहता है और आत्मिक स्थिरता में टिका रहता है ॥ ४ ॥ (हे भाई !) परमात्मा के नाम के बराबर दूसरा कोई नहीं है (परन्तु यह धन) जिसे सत्यस्वरूप परमात्मा आप देता है, पूर्णगुरु के शब्द की सहायता से वह मनुष्य परमात्मा का नाम अपने मन में बसाए रखता है । हे नानक ! परमात्मा के नाम में रँगकर मनुष्य (सदा) आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है ॥ ५ ॥ ११ ॥ ५० ॥

॥ आसा महला ३ ॥ निरति करे बहु वाजे वजाए । इहु मनु अंधा बोला है किसु आखि सुणाए । अंतरि लोभु भरमु अनल वाउ । दीवा बलै न सोझी पाइ ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति

घटि चानणु होइ । आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि निरति हरि लागै भाउ । पूरे ताल विचहु आपु गवाइ । मेरा प्रभु साचा आपे जाणु । गुर कै सबदि अंतरि ब्रहमु पछाणु ॥ २ ॥ गुरमुखि भगति अंतरि प्रीति पिआरु । गुर का सबदु सहजि वीचारु । गुरमुखि भगति जुगति सचु सोइ । पाखंडि भगति निरति दुखु होइ ॥ ३ ॥ एहा भगति जनु जीवत मरै । गुर परसादी भवजलु तरै । गुर कै बचनि भगति थाइ पाइ । हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ ४ ॥ हरि क्रिपा करे सतिगुरू मिलाए । निहचल भगति हरि सिउ चितु लाए । भगति रते तिन्ह सची सोइ । नानक नामि रते सुखु होइ ॥ ५ ॥ १२ ॥ ५१ ॥

(पर जब तक मनुष्य का) यह अपना मन (माया के मोह में) अन्धा तथा बहरा हुआ पड़ा है। (तब तक यदि वह भक्तिवश) नाच करता है तथा कितने ही वाद्ययन्त्र भी बजाता है तो भी वह किसी को भी कहकर नहीं सुना रहा। उसके भीतर तृष्णा की अग्नि जल रही है, दुबिधा का तूफ़ान उठा हुआ है, ऐसी स्थिति में इसके अन्तर्मन में दीपक नहीं जग सकता, वह (सही जीवन की) समझ नहीं प्राप्त कर सकता ॥ १ ॥ (हे भाई!) गुरु के सम्मुख रहकर की हुई भक्ति के प्रभाव से हृदय में प्रकाश हो जाता है। इससे (मनुष्य) अपने आत्मिक जीवन को परखता रहता है (और मनुष्य को) वह प्रभु मिल पड़ता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु के सम्मुख रहना ही नाच है (इस प्रकार) परमात्मा से प्रेम बनता है और भीतर से अहंकार दूर करता है, —यही है ताल अनुसार नाच करना। (ऐसे मनुष्य का) सत्यस्वरूप-प्रभु आप ही उसका मित्र बन जाता है, गुरु के शब्द के द्वारा उसके भीतर बसता हुआ प्रभु उसका पारखी हो जाता है ॥ २ ॥ गुरु के सम्मुख रहकर भक्ति द्वारा मनुष्य के भीतर प्रीति पैदा होती है। गुरु का शब्द उसे आत्मिक स्थिरता में ले जाता है, (प्रभु के गुणों का) विचार देता है। गुरु के सम्मुख रहकर की हुई भक्ति ही (सही) तरीका है। (जिससे) वह परमात्मा मिलता है। दिखावे की भक्ति के नाच के द्वारा दुख होता है ॥ ३ ॥ असल भक्ति यह है (कि) मनुष्य दुनियावी काम-काज करता हुआ ही माया-मोह से तटस्थ हो जाता है और गुरु की कृपा से संसार-समुद्र से पार उतर जाता है। गुरु के उपदेश द्वारा की हुई भक्ति ही प्रभु द्वारा स्वीकृत होती है और प्रभु आप ही मनुष्य के मन में आ बसता है ॥ ४ ॥ जिस जीव पर परमात्मा कृपा करता है उसे गुरु मिलाता है जिससे वह स्थिर भक्ति करता है और

परमात्मा से अपना हृदय जोड़े रखता है। हे नानक ! जो मनुष्य (परमात्मा की) भक्ति के (रंग में) रँगे जाते हैं उन्हें शाश्वत शोभा मिलती है। परमात्मा के नाम-रंग में रँगे हुए व्यक्तियों को आत्मिक आनन्द मिलता है ॥ ५ ॥ १२ ॥ ५१ ॥

आसा घरु ८ काफी महला ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि कै भाणै सतिगुरु मिलै सचु सोझी होई । गुर परसादी मनि वसै हरि बूझै सोई ॥ १ ॥ मै सहु दाता एकु है अवरु नाही कोई । गुर किरपा ते मनि वसै ता सदा सुखु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि निरभउ हरिनामु है पाईऐ गुर वीचारि । बिनु नावै जम कै वसि है मनमुखि अंध गवारि ॥ २ ॥ हरि कै भाणै जनु सेवा करै बूझै सचु सोई । हरि कै भाणै सालाहीऐ भाणै मंनिऐ सुखु होई ॥ ३ ॥ हरि कै भाणै जनमु पदारथु पाइआ मति ऊतम होई । नानक नामु सलाहि तूं गुरमुखि गति होई ॥ ४ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ ५२ ॥

(हे भाई !) परमात्मा की रज़ा अनुसार गुरु मिलता है (जिसे गुरु मिल जाता है, उसे) सत्यस्वरूप प्रभु मिल जाता है, (और उसे जीवन-युक्ति की) समझ आ जाती है। जिस मनुष्य के मन में गुरु की कृपा से परमात्मा आ बसता है वही मनुष्य परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) एक परमात्मा ही मेरा पति-रक्षक है और मुझे सब देन देनेवाला है, उसके बिना कोई दूसरा मेरा नहीं है। पर गुरु की कृपा से ही वह मन में बस सकता है। (उसके भीतर होने पर) सदा के लिए आनन्द बन जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) इस जगत में परमात्मा का नाम ही है जो (जगत के) तमाम भय से बचानेवाला है, पर यह नाम गुरु के बतलाए हुए विचार के प्रभाव से मिलता है। परमात्मा के नाम के बिना स्वेच्छाचारिणी जीव-स्त्री आत्मिक मृत्यु के काबू में रहती है, माया के मोह में अन्धी हुई रहती है और वह मूर्ख बनी रहती है ॥ २ ॥ जो मनुष्य परमात्मा की रज़ा में चलता है वही मनुष्य परमात्मा की सेवा-भक्ति करता है वही उस सत्यस्वरूप प्रभु को समझता है। परमात्मा की रज़ा में चलें तो ही आत्मिक आनन्द प्राप्त होता है ॥ ३ ॥ (हे भाई ! जिस मनुष्य ने) परमात्मा की रज़ा में चलकर मनुष्य-जन्म का मनोरथ प्राप्त कर लिया, उसकी बुद्धि भली बन गई। हे नानक ! तू भी परमात्मा के

नाम की प्रशंसा कर। गुरु की शरण लेने से ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है ॥ ४ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ ५२ ॥

आसा महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तूं करता सचिआरु मैडा सांई। जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ। जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ। गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ। तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि। तुझ बिनु दूजा कोई नाहि। जीअ जंत सभि तेरा खेलु। विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥ २ ॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै। हरिगुण सद ही आखि वखाणै। जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ। सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ। तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ। तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ। जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५३ ॥

(हे प्रभु!) तुम (सारे जगत के) सृजनहार हो, तुम सत्यस्वरूप हो, तुम ही मेरे पति हो। हे प्रभु! (जगत में) वही कुछ हो रहा है जो तुझे अच्छा लगता है। (हे प्रभु!) मैं वही कुछ हासिल कर सकता हूँ जो कुछ तुम देते हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे प्रभु!) सारी सृष्टि तेरी है, जीवों ने (दुख-सुख के वक्त) तुझे ही स्मरण किया है। जिस पर तुम कृपा करते हो उस मनुष्य ने तेरा नाम-रत्न प्राप्त कर लिया (पर) प्राप्त उसी ने किया जिसने गुरु की शरण ली, और जो स्वेच्छाचारी बना उसने खोया। मनमुख को तूने आप ही अलग किया है और गुरमुख को आप ही (अपने चरणों में) जोड़ा हुआ है ॥ १ ॥ हे प्रभु! तुम समुद्र हो, सारी सृष्टि तुझमें ही है, तुझसे अलग कोई दूसरा नहीं है। (जगत के) सारे जीव-जंतु तेरा तमाशा है। (तेरे प्रभाव से ही) वियोग के कारण मिला हुआ जीव बिछुड़ जाता है और संयोग के कारण दोबारा मिलाप प्राप्त कर लेता है ॥ २ ॥ (हे प्रभु!) जिस मनुष्य को तुम ज्ञान देते हो वही मनुष्य (जीवन-मनोरथ को) पहचानता है और वही मनुष्य हरि प्रभु के गुण सदा कहकर बतलाता है। जिस मनुष्य ने परमात्मा की सेवा-भक्ति की उसने आत्मिक आनन्द प्राप्त कर लिया; वह मनुष्य आत्मिक स्थिरता

में टिककर परमात्मा के नाम में लीन हो गया ।। ३ ।। (हे प्रभु !) तुम आप ही सृजनहार हो, (जगत में) सब कुछ तेरा किया ही हो रहा है, तुझसे अलग दूसरा कोई कुछ करनेवाला नहीं है । तुम आप ही (जगत-रचना) कर-करके (सब की) सँभाल करते हो, तुम आप ही इस सारे (भेद) को जानते हो । हे दास नानक ! गुरु के सम्मुख रहनेवाले मनुष्य को यह सारी बात समझ में आ जाती है ।। ४ ।। १ ।। ५३ ।।

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। रागु आसा घरु २ महला ४ ।। किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई । किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई । किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई । हमारा धड़ा हरि रहिआ समाई ।। १ ।। हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक । मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ।।१।।रहाउ।। जिन्ह सिउ धड़े करहि से जाहि । झूठु धड़े करि पछोताहि । थिरु न रहहि मनि खोटु कमाहि । हम हरि सिउ धड़ा कीआ जिस का कोई समरथु नाहि ।। २ ।। एह सभि धड़े माइआ मोह पसारी । माइआ कउ लूझहि गावारी । जनमि मरहि जूऐ बाजी हारी । हमरै हरि धड़ा जि हलतु पलतु सभु सवारी ।।३।। कलिजुग महि धड़े पंच चोर झगड़ाए । कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु वधाए । जिस नो क्रिपा करे तिसु सतसंगि मिलाए । हमरा हरि धड़ा जिनि एह धड़े सभि गवाए ।। ४ ।। मिथिआ दूजा भाउ धड़े बहि पावै । पराइआ छिद्रु अटकलै आपणा अहंकारु वधावै । जैसा बीजै तैसा खावै । जन नानक का हरि धड़ा धरमु सभ स्रिसटि जिणि आवै ।। ५ ।। २ ।। ५४ ।।

किसी मनुष्य ने अपने मित्र, पुत्र या भाई के साथ मेलजोल किया हुआ है, किसी ने सगे समधी और दामाद के साथ जुट बनाया हुआ है, किसी ने स्वार्थपूर्ति के लिए (गाँव के) चौधरी के साथ धड़ा बनाया हुआ है; लेकिन मेरा साथी वह परमात्मा है जो सर्वत्र मौजूद है ।। १ ।। हमने परमात्मा के साथ नेह जोड़ा है, वही मेरा आसरा है । परमात्मा से अलग मेरा कोई धड़ा नहीं, पक्ष नहीं । मैं परमात्मा के ही असंख्य गुण गाता रहता हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। लोग जिन व्यक्तियों के साथ धड़ा बनाते हैं वे अन्त में कूच कर जाते हैं, (धड़ा बनानेवाले) यह झूठा आडम्बर रचकर

(उनके बिछुड़ने पर) पछताते हैं। वे आप भी शाश्वत नहीं हैं और (व्यर्थ ही धड़ेबाजी के लिए) अपने मन में ठगी-फरेब करते रहते हैं। पर मैंने तो उस परमात्मा के साथ अपना मेलजोल बनाया है जिसके बराबर शक्तिमान कोई दूसरा नहीं है ॥ २ ॥ (हे भाई !) ये सारे धड़े माया का फैलाव हैं, मोह का फैलाव हैं। (धड़े बनानेवाले) मूर्ख लोग माया की खातिर ही लड़ते रहते हैं। इसलिए जन्मते-मरते हैं, वे (मानो) जुए में ही (मनुष्य-जीवन की) बाज़ी हारकर चले जाते हैं। लेकिन मेरे साथ तो साथी परमात्मा है जो लोक-परलोक में मेरा सब कुछ सँवारनेवाला है ॥३॥ परमात्मा से बिछुड़कर (कलियुगी स्वभाव में फँसकर) मनुष्यों के धड़े बनते हैं, कामादिक पाँचों चोरों के कारण झगड़े पैदा होते हैं, (परमात्मा का वियोग) काम, क्रोध, लोभ मोह तथा अहंकार को बढ़ाता है। जिस मनुष्य पर परमात्मा कृपा करता है उसे साधु-संगति में मिलाता है। (हे भाई !) मेरी मदद पर परमात्मा आप है जिसने (मेरे भीतर से) ये सब धड़े समाप्त कर दिए हैं ॥ ४ ॥ (परमात्मा को छोड़कर) माया का झूठा प्रेम (मनुष्य के भीतर) टिककर धड़ेबाजी पैदा करता है (मोहग्रस्त मनुष्य) दूसरों के दोष जानता फिरता है और (अपने को भला समझकर) अपना अहंकार बढ़ाता है। (ऐसा मनुष्य) जैसा बीज बोता है वह वैसा ही फल प्राप्त करता है। दास नानक का पक्ष लेनेवाला साथी तो परमात्मा है, वही (उसका) धर्म है, (जिसके प्रभाव से) वह सारी सृष्टि को जीतकर आ सकता है ॥ ५ ॥ २ ॥ ५४ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ हिरदै सुणि सुणि मनि अंम्रितु भाइआ। गुरबाणी हरि अलखु लखाइआ ॥ १ ॥ गुरमुखि नामु सुनहु मेरी भैना। एको रवि रहिआ घट अंतरि मुखि बोलहु गुर अंम्रित बैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै मनि तनि प्रेमु महा बैरागु। सतिगुरु पुरखु पाइआ वडभागु ॥ २ ॥ दूजै भाइ भवहि बिखु माइआ। भागहीन नही सतिगुरु पाइआ ॥ ३ ॥ अंम्रितु हरि रसु हरि आपि पीआइआ। गुरि पूरै नानक हरि पाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५५ ॥

(हे बहनो !) गुरु की वाणी सुनकर जिस मनुष्य को हृदय में आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल प्यारा लगने लगता है, गुरबाणी के प्रभाव से वह मनुष्य अलक्ष्य परमात्मा का दर्शन कर लेता है ॥ १ ॥ (हे मेरी बहनो !) गुरु की शरण लेकर उस परमात्मा का नाम सुना करो जो आप ही हरेक जीव के शरीर में मौजूद है। (हे मेरी बहनो !) मुख से गुरु के आत्मिक जीवन देनेवाले शब्द बोला करो ॥ १ ॥ रहाउ ॥

(हे बहनो !) परमात्म-स्वरूप तथा सौभाग्यशाली सतिगुरु मुझे मिल गया है जिससे मेरे मन में परमात्मा के लिए नेह पैदा हो गया है। परमात्मा के लिए लगन पैदा हो गई है ॥ २ ॥ वे मनुष्य अभागे हैं जिन्हें गुरु नहीं मिला। वे माया-मोह में फँसकर माया की ख़ातिर भटकते फिरते हैं जो उनके लिए आत्मिक मृत्यु का कारण बनती है ॥ ३ ॥ हे नानक ! परमात्मा ने आप ही जिस मनुष्य को आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल, हरिनाम-रस पिला दिया उसने पूर्णगुरु के द्वारा उस परमात्मा को प्राप्त कर लिया ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५५ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु नामु आधारु। नामु जपी नामो सुख सारु ॥ १ ॥ नामु जपहु मेरे साजन सैना। नाम बिना मै अवरु न कोई वडै भागि गुरमुखि हरि लैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना नही जीविआ जाइ। वडै भागि गुरमुखि हरि पाइ ॥ २ ॥ नाम हीन कालख मुखि माइआ। नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु जीवाइआ ॥ ३ ॥ वडा वडा हरि भाग करि पाइआ। नानक गुरमुखि नामु दिवाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५६ ॥

(हे मेरे संगियो !) परमात्मा का नेह तथा नाम (ही) मेरे मन-तन का आसरा है। मैं (सदा प्रभु का) नाम जपता रहता हूँ, नाम ही समस्त सुखों का सार है ॥ १ ॥ (हे मेरे साथियो !) परमात्मा का नाम जपा करो। परमात्मा के नाम के अतिरिक्त मुझे दूसरा कोई नहीं दिखाई देता। यह हरिनाम सौभाग्यवश गुरु के द्वारा मिल सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे मित्रो !) परमात्मा का नाम जपे बिना आत्मिक जीवन नहीं मिल सकता। यह हरि-नाम बड़े भाग्य से गुरु के द्वारा प्राप्त हो सकता है ॥ २ ॥ परमात्मा का नाम-स्मरण किए बिना जीना धिक्कार है। परमात्मा के नाम के बिना रहने से माया के (मोहवश) कारण मुँह पर कालिख लगती है, कलंक होता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! गुरु के द्वारा (जिस मनुष्य को परमात्मा) अपने नाम की देन दिलाता है वह मनुष्य उस सर्वोच्च परमात्मा को बड़े भाग्य से मिल पड़ता है ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५६ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ गुण गावा गुण बोली बाणी। गुरमुखि हरि गुण आखि वखाणी ॥ १ ॥ जपि जपि नामु मनि भइआ अनंदा। सति सति सतिगुरि नामु दिड़ाइआ रसि गाए गुण परमानंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावै हरि जन लोगा। वडै भागि पाए हरि निरजोगा ॥ २ ॥ गुण विहूण माइआ मलु धारी। विणु गुण जनमि मुए अहंकारी ॥ ३ ॥ सरीरि

सरोवरि गुण परगटि कीए । नानक गुरमुखि मथि ततु कढीए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५७ ॥

(हे भाई !) गुरु की शरण लेकर मैं भी परमात्मा के गुण गाता रहता हूँ, परमात्मा की गुणस्तुति की बाणी उच्चरित करता रहता हूँ, परमात्मा के गुण कह-कहकर बखानता रहता हूँ ॥ १ ॥ परमात्मा का नाम बार-बार जपकर मन में आनन्द उपजता है। जिस मनुष्य के हृदय में सतिनाम परिपक्व हो गया उसने बड़े प्रेम से परमानन्द प्रभु के गुण गाने शुरू कर दिए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (गुरुकृपा द्वारा) परमात्मा का भक्त परमात्मा के गुण गाता है और सौभाग्यवश उस निर्लिप्त परमात्मा को मिल पड़ता है ॥ २ ॥ (हे भाई !) परमात्मा की गुणस्तुति से खाली मनुष्य माया के मोह की मैल (अपने मन में) टिकाए रखते हैं। गुणस्तुति के बिना अहंकारग्रस्त जीव पुनःपुनः जन्मते-मरते रहते हैं ॥ ३ ॥ (हे भाई ! मनुष्य के) इस शरीर-सरोवर में (परमात्मा के गुण गुरु ने ही) प्रकट किए हैं। हे नानक ! गुरु की शरण लेनेवाला मनुष्य पुनःपुनः विचारकर (जीवन का) निचोड़ प्राप्त कर लेता है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५७ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ नामु सुणी नामो मनि भावै । वडै भागि गुरमुखि हरि पावै ॥ १ ॥ नामु जपहु गुरमुखि परगासा । नाम बिना मै धर नही काई नामु रविआ सभ सास गिरासा ॥१॥ रहाउ ॥ नामै सुरति सुनी मनि भाई । जो नामु सुनावै सो मेरा मीतु सखाई ॥ २ ॥ नाम हीण गए मूड़ नंगा । पचि पचि मुए बिखु देखि पतंगा ॥ ३ ॥ आपे थापे थापि उथापे । नानक नामु देवै हरि आपे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५८ ॥

(हे भाई !) मैं (सदा परमात्मा का) नाम सुनता रहता हूँ, नाम ही मेरे मन में प्यारा लग रहा है। गुरु की शरणागत मनुष्य सौभाग्यवश यह हरि-नाम प्राप्त कर लेता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) गुरु की शरण लेकर परमात्मा का नाम जपा करो (भीतर) प्रकाश हो जायगा। परमात्मा के नाम के बिना मुझे कोई दूसरा आसरा नहीं दिखता (इसलिए) मैं हर एक साँस, हर ग्रास के साथ प्रभु का नाम-स्मरण करता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब से मैंने हरिनाम की ध्वनि सुनी है (तब से वह) मन में प्यारी लग रही है। वही मनुष्य मेरा मित्र है, मेरा साथी है जो मुझे परमात्मा का नाम सुनाता है ॥ २ ॥ परमात्मा के नाम से खाली मूर्ख मनुष्य खाली हाथ चले जाते हैं, (जैसे) पतिंगा (जलते दीपक को) देखकर (जल सकता है उसी प्रकार नामहीन मनुष्य आत्मिक मौत लानेवाली माया रूप) विष में

दुखी होकर आत्मिक मौत मरते हैं ॥ ३ ॥ (पर), हे नानक ! (जीवों के भी क्या वश ?) जो परमात्मा आप ही जगत-रचना रचता है, जो आप ही रचकर नाश भी करता है वह परमात्मा आप ही हरि-नाम की देन देता है ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५८ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि हरि हरि वेलि वधाई । फल लागे हरि रसक रसाई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपि अनत तरंगा । जपि जपि नामु गुरमति सालाही मारिआ कालु जम कंकर भुइअंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि गुर महि भगति रखाई । गुरु तुठा सिख देवै मेरे भाई ॥ २ ॥ हउमै करम किछु बिधि नही जाणै । जिउ कुंचरु नाइ खाकु सिरि छाणै ॥ ३ ॥ जे वड भाग होवहि वड ऊचे । नानक नामु जपहि सचि सूचे ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५९ ॥

(हे भाई !) गुरु की शरण लेनेवाले लोगों ने हरिनाम की बेल को (स्मरण का जल सींच-सींचकर अपने भीतर) बड़ी कर लिया है (इस बेल को) रस देनेवाले स्वादिष्ट (आत्मिक गुणों के) फल लगते हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! अनन्त लहरों के सर्जक परमात्मा का नामस्मरण कर । गुरु की शिक्षा लेकर पुनःपुनः हरिनाम-स्मरण कर गुणस्तुति करता रह (जिसने गुणस्तुति की, उसने मन-) साँप को मार लिया, उसने मौत के भय को समाप्त कर लिया, उसने यमदूतों को मार लिया । यमदूत उसके निकट नहीं आते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे भाई ! परमात्मा ने भक्ति गुरु में टिका रखी है और गुरु प्रसन्न होकर (भक्ति की यह देन) सिख को देता है ॥ २ ॥ (पर जो मनुष्य अहंकार में ही (अपनी ओर से धार्मिक) कार्य (भी करता है, वह परमात्मा की) भक्ति की तनिकमात्र भी सुधि नहीं करता (अहंकार पर आश्रित किए हुए उसके धार्मिक कार्य इस प्रकार हैं) जिस प्रकार हाथी स्नान करके अपने सिर पर मिट्टी डाल लेता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! यदि अच्छे भाग्य हों तो मनुष्य नाम जपते हैं (इस प्रकार) सत्यस्वरूप परमात्मा में जुड़कर वे पवित्र जीवनवाले बन जाते हैं ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५९ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ हरि हरि नाम की मनि भूख लगाई । नामि सुनिऐ मनु त्रिपतै मेरे भाई ॥ १ ॥ नामु जपहु मेरे गुरसिख मीता । नामु जपहु नामे सुखु पावहु नामु रखहु गुरमति मनि चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामो नामु सुणी मनु सरसा । नामु लाहा लै गुरमति बिगसा ॥ २ ॥ नाम

बिना कुसटी मोह अंधा। सभ निहफल करम कीए दुखु धंधा ॥ ३ ॥ हरि हरि हरि जसु जपै वडभागी। नानक गुरमति नामि लिव लागी ॥ ४ ॥ ८ ॥ ६० ॥

(हे मेरे भाई !) (मेरे) मन में सदा परमात्मा की भूख लगी रहती है (इस भूख के रहने से माया की भूख नहीं लगती, क्योंकि) यदि परमात्मा का नाम सुनते रहें तो मन (माया की ओर से) तृप्त रहता है ॥ १ ॥ हे मेरे मित्रो ! (सदा परमात्मा का) नाम जपते रहो, नाम में जुड़कर आत्मिक आनन्द प्राप्त करो, गुरु की शिक्षा के द्वारा परमात्मा के नाम को अपने मन में, अपने चित्त में टिकाए रखो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा परमात्मा का नाम ही नाम सुनकर मन प्रसन्न हुआ रहता है। गुरु की शिक्षा के प्रभाव से परमात्मा का नाम प्राप्त कर मन सुप्रसन्न स्थिर रहता है ॥ २ ॥ परमात्मा के नाम से खाली मनुष्य कोढ़ी की तरह, आत्मिक रोगों से ग्रसित होकर दुखी होता रहता है, माया का मोह उसे अन्धा किए रखता है। दूसरे जितने भी काम वह करता है, सब व्यर्थ जाते हैं, वह काम उसे (आत्मिक) दुख ही देते हैं और उसके लिए माया का जाल बने रहते हैं ॥ ३ ॥ हे नानक ! वह मनुष्य सौभाग्यशाली है जो सदा परमात्मा की गुणस्तुति करता है। गुरु की शिक्षा के प्रभाव से परमात्मा के नाम में रुचि बनी रहती है ॥ ४ ॥ ८ ॥ ६० ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ महला ४ रागु आसा घरु ६ के ३ ॥

हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन। गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रंगि भेन ॥ १ ॥ जोगी हरि देहु मती उपदेसु। जुगु जुगु हरि हरि एको वरतै तिसु आगै हम आदेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावहि राग भाति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल। जोवहि कूप सिंचन कउ बसुधा उठि बैल गए चरि बेल ॥ २ ॥ काइआ नगर महि करम हरि बोवहु हरि जामै हरिआ खेतु। मनूआ असथिरु बैलु मनु जोवहु हरि सिंचहु गुरमति जेतु ॥ ३ ॥ जोगी जंगम स्रिसटि सभ तुमरी जो देहु मती तितु चेल। जन नानक के प्रभ अंतरजामी हरि लावहु मनूआ पेल ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६१ ॥

योगी हाथ में वीणा लेकर तार बजाता है पर उसकी वीणा व्यर्थ ही बजती रहती है। हे योगी ! गुरु की शिक्षा लेकर परमात्मा के गुणों का उच्चारण करता रहा कर, (इस प्रकार) यह मन परमात्मा के प्रेम-रंग में

भीगा रहता है ॥ १ ॥ हे योगी ! स्वयं को हरि-नाम के स्मरण की शिक्षा दिया करो। वह परमात्मा हरेक युग में आप ही आप सब कुछ करता रहता है। मैं तो उसके समक्ष सदा सिर झुकाता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ योगी लोग राग अलापते हैं, दूसरे कई प्रकार के बोल बोलते हैं पर उनका यह अपरिवर्तनीय मन दूसरे खेल खेलता रहता है। जैसे किसान खेती की सिंचाई करने के लिए कुँआ चलाते हैं पर उनके (अपने) बैल (ही) उठकर बेल आदि खा जाते हैं ॥ २ ॥ (हे योगी !) इस शरीर-नगर में हरिनाम-स्मरण के कर्म बोओ; (जिससे) हरिनाम का सुन्दर हरा-भरा खेत उग पड़ता है। हे योगी ! इस मन को दुबिधा से रोको, स्थिरचित्त रूपी बैल को जोड़ो और गुरु की शिक्षा के द्वारा (अपने भीतर) हरि-नाम रूपी जल को सींचो ॥ ३ ॥ योगी, जंगम आदि यह तमाम सृष्टि तेरी ही रची हुई है, प्रभु आप जो दिशा इस सृष्टि को देता है, उधर ही यह चलती है। हे अन्तर्यामी प्रभु ! मेरे मन को प्रेरित कर तुम आप ही अपने चरणों में जोड़ो ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६१ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाबु। आवत जात बार खिनु लागै हउ तब लगु समारउ नामु ॥ १ ॥ मेरै मनि ऐसी भगति बनि आई। हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे जल बिनु मीनु मरि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग धुनि उठावै। मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै तब लगु मेरा मनु राम गुन गावै ॥ २ ॥ कब को नाचै पाव पसारै कब को हाथ पसारै। हाथ पाव पसारत बिलमु तिलु लागै तब लगु मेरा मनु राम सम्हारै ॥ ३ ॥ कब कोऊ लोगन कउ पतीआवै लोकि पतीणै ना पति होइ। जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु ता जै जै करे सभु कोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ६२ ॥

ताल देने के लिए कोई क्यों घुँघरू ढूँढ़ता फिरे ? क्यों कोई रबाब आदि (वाद्ययन्त्र) बजाता फिरे ? (घुँघरू, रबाब आदि लाने के लिए) तो आते-जाते कुछ न कुछ समय लगता है। पर मैं तो उतना समय भी परमात्मा का नाम ही याद करूँगा ॥ १ ॥ (हे भाई !) मेरे मन में परमात्मा की भक्ति ऐसी बनी पड़ी है कि परमात्मा की याद के बिना मैं घड़ी-पल भी नहीं रह सकता, जैसे पानी से अलग होकर मछली मर जाती है (वैसी ही स्थिति मेरी परमात्मा की स्मृति के बिना होती है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) गाने के लिए क्यों कोई पाँच तारें तथा सात सुर

मिलाता फिरे ? क्यों कोई राग का स्वर उठाए ? तार, सुर मिलाते हुए तथा स्वर उठाते हुए कुछ न कुछ समय अवश्य लगता है। मेरा मन तो उतना समय भी परमात्मा के गुण गाता रहेगा ।। २ ।। (हे भाई !) क्यों कोई नाचता फिरे ? (नाचने के लिए) क्यों कोई पैर चलाए ? क्यों कोई हाथ घुमाए ? इन हाथों-पैरों को घुमाने-फिराने में थोड़ा बहुत समय लगता ही है। मेरा मन तो उतना समय भी परमात्मा को हृदय में स्मरण रखेगा ।। ३ ।। (हे भाई !) क्यों कोई लोगों को (अपने भक्त होने का) विश्वास दिलाता फिरे ? यदि लोगों को तसल्ली हो भी जाए तो भी (प्रभु-द्वार पर) प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी। हे दास नानक ! सदा अपने हृदय में परमात्मा को स्मरण करते रहो, इस प्रकार हरेक जीव आदर-सत्कार करता है ।। ४ ।। १० ।। ६२ ।।

।। आसा महला ४ ।। सत संगति मिलीऐ हरि साधू मिलि संगति हरिगुण गाइ। गिआन रतनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरा जाइ ।। १ ।। हरि जन नाचहु हरि हरि धिआइ। ऐसे संत मिलहि मेरे भाई हम जन के धोवह पाइ ।।१।। रहाउ ।। हरि हरि नामु जपहु मन मेरे अनदिनु हरि लिव लाइ। जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि भूख न लागै आइ ।। २ ।। आपे हरि अपरंपरु करता हरि आपे बोलि बुलाइ। सेई संत भले तुधु भावहि जिन्ह की पति पावहि थाइ ।। ३ ।। नानकु आखि न राजै हरि गुण जिउ आखै तिउ सुखु पाइ। भगति भंडार दीए हरि अपुने गुण गाहकु वणजि लै जाइ ।। ४ ।। ११ ।। ६३ ।।

(हे भाई !) गुरु की सत्संगति में मिलना चाहिए और सत्संगति में मिलकर प्रभु के गुण गाते रहो (ऐसा करने से प्रभुभक्त के भीतर) ज्ञान का रत्न चमक पड़ता है, उसके हृदय में (आत्मिक) प्रकाश हो जाता है, (उसके भीतर से) अज्ञानता का अँधेरा दूर हो जाता है ।। १ ।। हे हरि के सेवको ! परमात्मा का नाम-स्मरण करके नाचो। हे मेरे भाई ! यदि मुझे ऐसे सन्तजन मिल जाएँ तो मैं उनके पैर धोऊँ।। १ ।। रहाउ ।। हे मेरे मन ! प्रतिदिन परमात्मा में सुरति लगाकर परमात्मा का नाम जपा कर, जिस फल की इच्छा करेगा वही फल प्राप्त कर लेगा और पुनः तुझे कभी माया की भूख नहीं लगेगी ।। २ ।। (लेकिन) सृजनहार अनन्त परमात्मा आप ही (सब जीवों में व्यापक होकर) बोलता है और आप ही जीवों को बोलने के लिए प्रेरित करता है। हे प्रभु ! वही मनुष्य सन्त हैं जो तुझे प्यारे लगते हैं, जिनकी प्रतिष्ठा तेरे द्वार पर स्वीकृत होती है ।। ३ ।।

(हे भाई !) नानक, परमात्मा के गुण बखान कर-करके तृप्त नहीं होता है। ज्यों-ज्यों नानक उसकी गुणस्तुति करता है, त्यों-त्यों वह आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है। (हे भाई !) परमात्मा ने अपनी भक्ति के भण्डार दिए हुए हैं, लेकिन गुणों का ग्राहक ही उसे खरीदकर परलोक में ले जाता है ॥ ४ ॥ ११ ॥ ६३ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ८ के काफी २ महला ४ ॥ आइआ मरणु धुराहु हउमै रोईऐ। गुरमुखि नामु धिआइ असथिरु होईऐ ॥ १ ॥ गुर पूरे साबासि चलणु जाणिआ। लाहा नामु सु सारु सबदि समाणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखे डेह सि आए माइआ। चलणु अजु कि कल्हि धुरहु फुरमाइआ ॥ २ ॥ बिरथा जनमु तिना जिन्ही नामु विसारिआ। जूऐ खेलणु जगि कि इहु मनु हारिआ ॥ ३ ॥ जीवणि मरणि सुखु होइ जिन्हा गुरु पाइआ। नानक सचे सचि सचि समाइआ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६४ ॥

(हे भाई !) प्रभु के दरबार से ही (हरेक जीव के लिए) मौत (का परवाना) आया हुआ है। अहंकार के कारण ही (किसी के मरने पर) रोया जाता है। गुरु के द्वारा परमात्मा का नाम-स्मरण कर स्थिरचित्त हुआ जाता है ॥ १ ॥ जिन मनुष्यों ने पूर्णगुरु के द्वारा यह रहस्य जान लिया कि अन्त में मृत्यु अवश्य होगी और यहाँ से चले जाना है, उन्होंने प्रशंसा प्राप्त की, उन्होंने परमात्मा का नामरूपी श्रेष्ठ लाभ प्राप्त कर लिया और वे गुरु के शब्द द्वारा लीन हुए रहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे माँ ! पूर्व जन्म में (प्रभु द्वारा) लिखे अनुसार (जिन्हें जीवन के दिन) मिलते हैं वे जगत में आ जाते हैं; उसी प्रकार प्रभु के दरबार से यह आदेश भी है कि यहाँ से आज या कल चले भी जाना है ॥ २ ॥ (हे भाई !) जिन मनुष्यों ने (जगत में आकर) परमात्मा का नाम भुला दिया उनका मानव-जन्म व्यर्थ चला गया। उन्होंने जगत में आकर जुए का खेल खेला (और इस खेल में) अपना मन पराजित कर दिया, अर्थात विकारों के हाथों हार गए ॥ ३ ॥ जिन्हें गुरु मिल गया उन्हें (सारे) जीवन में सुख ही अनुभूत हुआ, (क्योंकि) हे नानक ! वे मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा में ही लीन रहे और सत्यस्वरूप प्रभु का रूप बने रहे ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६४ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ जनमु पदारथु पाइ नामु धिआइआ। गुर परसादी बुझि सचि समाइआ ॥ १ ॥ जिन्ह धुरि लिखिआ

लेखु तिन्ही नामु कमाइआ । दरि सचै सचिआर महलि बुलाइआ ।। १ ।। रहाउ ।। अंतरि नामु निधानु गुरमुखि पाईऐ । अनदिनु नामु धिआइ हरिगुण गाईऐ ।। २ ।। अंतरि वसतु अनेक मनमुखि नही पाईऐ । हउमै गरबै गरबु आपि खुआईऐ ।। ३ ।। नानक आपे आपि आपि खुआईऐ । गुरमति मनि परगासु सचा पाईऐ ।। ४ ।। १३ ।। ६५ ।।

(हे भाई !) जिन मनुष्यों ने बहुमूल्य मनुष्य-जन्म पाकर परमात्मा का नाम-स्मरण किया, गुरु की कृपा से मनुष्य-जन्म के महत्व को समझकर प्रभु में लीन हो गए ।। १ ।। (हे भाई !) उन मनुष्यों ने ही परमात्मा का नाम-स्मरण करने की कमाई की है जिनके मस्तक पर प्रभु-दरबार से ही यह कमाई करने का लेख लिखा हुआ है, वे मनुष्य सदा सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर सच्चे होते हैं; उन्हें परमात्मा के दरबार में बुलाया जाता है (अर्थात वहाँ आदर मिलता है) ।। १ ।। रहाउ ।। (हे भाई !) नाम-भण्डार हरेक मनुष्य के भीतर मौजूद है लेकिन यह गुरु की शरण लेने से मिलता है । (इसलिए) प्रतिदिन परमात्मा का नाम-स्मरण कर परमात्मा के गुण गाते रहिए ।। २ ।। (हे भाई !) नाम-पदार्थ हरेक मनुष्य के भीतर है, अनेकों गुण हरेक मनुष्य के भीतर हैं परन्तु स्वेच्छाचारी कुछ भी प्राप्त नहीं करता । स्वेच्छाचारी मनुष्य अहंभावना के कारण अहंकार करता है और (इस प्रकार) आप ही परमात्मा से बिछुड़ा रहता है ।। ३ ।। हे नानक ! मनमुख मनुष्य सदा आप ही परमात्मा से बिछुड़ा रहता है । गुरु की शिक्षा पर चलने से मन में प्रकाश हो जाता है और सत्यस्वरूप परमात्मा मिल पड़ता है ।। ४ ।। १३ ।। ६५ ।।

रागु आसावरी घर १६ के २ महला ४ सुधंग

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। हउ अनदिनु हरिनामु कीरतनु करउ । सतिगुरि मो कउ हरि नामु बताइआ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ ।। १ ।। रहाउ ।। हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ इकु खिनु । जैसे हंसु सरवर बिनु रहि न सकै तैसे हरि जनु किउ रहै हरि सेवा बिनु ।। १ ।। किनहूं प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि किनहूं प्रीति लाई मोह अपमान । हरि जन प्रीति लाई हरि निरबाण पद नानक सिमरत हरि हरि भगवान ।। २ ।। १४ ।। ६६ ।।

(हे भाई !) गुरु ने मुझे परमात्मा का नाम बताया है (तब से) मैं परमात्मा के नाम-स्मरण के बिना एक घड़ी भी नहीं रह सकता। मैं हर वक्त परमात्मा की गुणस्तुति करता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) मेरे पास परमात्मा की गुणस्तुति सुनना और परमात्मा का नाम जपना ही पूँजी है, परमात्मा का नाम जपे बिना मैं नहीं रह सकता जैसे परमात्मा का भक्त परमात्मा की सेवा-भक्ति के बिना नहीं रह सकता॥ १॥ (हे भाई !) किसी मनुष्य ने माया का नेह हृदय में टिकाकर माया से प्रीति जोड़ी हुई है, किसी ने मोह तथा अहंकार के साथ प्रीति जोड़ी हुई है, पर, हे नानक ! परमात्मा के भक्तों ने परमात्मा के साथ प्रीति जोड़ी हुई है। वे सदा वासना-रहित अवस्था प्राप्त करते हैं और हरि भगवान को स्मरण करते रहते हैं ॥ २ ॥ १४ ॥ ६६ ॥

॥ आसावरी महला ४ ॥ माई मोरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई। हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे करहलु बेलि रीझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरा मनु बैराग बिरकतु भइओ हरि दरसन मीत कै ताई। जैसे अलि कमला बिनु रहि न सकै तैसे मोहि हरि बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ राखु सरणि जगदीसुर पिआरे मोहि सरधा पूरि हरि गुसाई। जन नानक कै मनि अनदु होत है हरि दरसनु निमख दिखाई ॥ २ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ १५ ॥ ६७ ॥

हे माँ ! मुझे बतला, प्यारा राम (कहाँ है, उसे देखकर मेरा मन ऐसे प्रसन्न होता है) जैसे ऊँट का बच्चा बेलें देख-देखकर प्रसन्न होता है। मैं उस हरि के बिना एक क्षण भी, एक पल भी (सुखी) नहीं रह सकता॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे माँ !) मित्र-प्रभु के दर्शन के लिए मेरा मन उतावला हो रहा है, मेरा मन (लौकिक एषणाओं से) तटस्थ हुआ पड़ा है। जैसे भौंरा कमल-पुष्प के बिना नहीं रह सकता, उसी प्रकार मुझसे भी परमात्मा के बिना नहीं रहा जा सकता ॥ १ ॥ हे जगत के मालिक, हे प्यारे हरि ! मुझे अपनी शरण में रख और मेरी यह अभिलाषा पूर्ण कर। (तेरे दर्शन से) दास नानक के मन में चाव पैदा हो जाता है। हे हरि ! (मुझ नानक को) पलक झपकने के समय के बराबर ही अपना दर्शन दे॥ २॥ ३९॥ १३॥ १५॥ ६७॥

रागु आसा घरु २ महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जिनि लाई प्रीति सोई फिरि

खाइआ। जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ। भाई मीत कुटंब देखि बिबादे। हम आई वसगति गुर परसादे ॥ १ ॥ ऐसा देखि बिमोहित होए। साधिक सिध सुर देव मनुखा बिनु साधू सभि ध्रोहनि ध्रोहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि फिरहि उदासी तिन्ह कामि विआपै। इकि संचहि गिरही तिन्ह होइ न आपै। इकि सती कहावहि तिन्ह बहुतु कलपावै। हम हरि राखे लगि सतिगुर पावै ॥ २ ॥ तपु करते तपसी भूलाए। पंडित मोहे लोभि सबाए। त्रै गुण मोहे मोहिआ आकासु। हम सतिगुर राखे दे करि हाथु ॥ ३ ॥ गिआनी की होइ वरती दासि। कर जोड़े सेवा करे अरदासि। जो तूं कहहि सु कार कमावा। जन नानक गुरमुख नेड़ि न आवा ॥ ४ ॥ १ ॥

जिस व्यक्ति ने माया से स्नेह किया उसी को माया ने खा लिया अर्थात उसका समूचा जीवन माया-मोह में ही बीत गया। जिसने (इसे) आदर देकर पास बिठाया उसे इसने (माया ने) अनेक तरीकों से भय दिखाया। भाई, मित्र और कुटुम्बी समस्त जन इसे देखकर परस्पर झगड़ पड़ते हैं, (लेकिन) गुरु की कृपा से यह हमारे वश में आ गई है ॥ १ ॥ साधक, सिद्ध, सुर, देव और मनुष्य सभी इस (माया) को देखकर मोहित हो जाते हैं। गुरु के बिना सभी इस ठगिनी माया द्वारा ठगे जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनेक व्यक्ति त्यागी बनकर घूमते-फिरते हैं उन्हें यह कामभावना के रूप में दबाती है। बहुत से व्यक्ति इसका संचय करते हैं यह (माया) उनकी भी नहीं बनती। अनेक व्यक्ति स्वयं को दानी कहलवाते हैं उन्हें भी यह बहुत दुखी करती है। सतिगुरु के चरणों में लगे हुए हमें परमात्मा ने (इस माया से) बचा लिया है ॥ २ ॥ तपस्या में निरत तपस्वियों को इसने (माया ने) भटका दिया। समस्त पण्डित लोभ में फँसकर ठगे गए। समस्त त्रैगुणी जीव ठगे जा रहे हैं और समस्त देवगणों को भी इसने ठग लिया है। हमें तो सतिगुरु ने अपना हाथ देकर इस माया से बचा लिया है ॥ ३ ॥ (जिस ज्ञानी पुरुष को परमात्म बोध होता है) माया उस ज्ञानी पुरुष की दासी बनकर काम-काज करती है। उसके समक्ष हाथ जोड़कर प्रार्थना करती है कि जो तुम कहोगे मैं वही करूँगी। गुरुजी कहते हैं (कि माया का कथन बिल्कुल स्पष्ट है) कि मैं उस पुरुष के निकट नहीं आऊँगी जो गुरमुख है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ ससू ते पिरि कीनी वाखि। देर जिठाणी मुई दूखि संतापि। घर के जिठेरे की चूकी काणि।

घिरि रखिआ कीनी सुघड़ सुजाणि ॥ १ ॥ सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ । दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मो कउ हरि नामु दिवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति । दुतीआ तिआगी लोगा रीति । त्रै गुण तिआगि दुरजन मीत समाने । तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥ २ ॥ सहज गुफा महि आसणु बाधिआ । जोति सरूप अनाहदु वाजिआ । महा अनंदु गुरसबदु वीचारि । प्रिअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥ ३ ॥ जन नानकु बोले ब्रहम बीचारु । जो सुणे कमावै सु उतरै पारि । जनमि न मरै न आवै न जाइ । हरि सेती ओहु रहै समाइ ॥ ४ ॥ २ ॥

प्रभु-पति ने मुझे (अज्ञानता) सास से अलग कर लिया है, मेरी देवरानी-जेठानी (आशा, तृष्णा आदि) दुख-क्लेश से मर गई हैं (कि मेरा प्रभु-पति से ऐक्य हो गया है) । अब मुझे जेठ (धर्मराज) की भी परवाह नहीं रही । चतुर पति ने मुझे (समस्त सम्बन्धियों से) बचा लिया है ॥ १ ॥ हे लोगो ! सुनो, मैंने परमात्मा के प्रेम का आनन्द महसूस किया है । गुरु ने मुझे परमात्मा के नाम की देन दी है जिससे मैंने विकृत भाव मार लिए हैं और कामादिक शत्रु समाप्त कर दिए हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु-प्रियतम से भेंट होने पर सर्वप्रथम अहंकार के प्रति लगाव रखना छोड़ दिया, फिर मैंने लोक-व्यवहार की रस्मों को छोड़ दिया और तदनन्तर माया के तीनो गुण छोड़कर वैरी तथा मित्र एक जैसे समझ लिए । गुरु को मिलकर उस गुण को पा लिया जो चौथे आत्मिक पद पर पहुँचाता है ॥ २ ॥ (गुरु-प्राप्ति के बाद) आत्मिक स्थिरता की गुफा में अपना आसन जमा लिया और मेरे भीतर ज्योतिरूप परमात्मा के मिलाप का निरन्तर बजनेवाला बाजा बजने लगा । गुरु के शब्द विचारकर मेरे भीतर अत्यधिक आनन्द हो रहा है । (हे लोगो !) वह जीवस्त्री धन्य है जो (प्रभु) पति के प्रेम रंग से रँगी गई है ॥ ३ ॥ (हे भाई !) दास नानक परमात्मा के गुणों का विचार ही उच्चरित करता रहता है । जो मनुष्य परमात्मा की गुणस्तुति सुनता है और उसके अनुसार आचरण करता है वह (संसार-समुद्र से) पार उतर जाता है । वह (बार-बार) न जन्मता है, न मरता है; वह (जगत में बार-बार) न आता है और न ही (यहाँ से) जाता है । वह सदा परमात्मा की स्मृति में लीन रहता है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ निज भगती सीलवंती नारि । रूपि अनूप पूरी आचारि । जितु ग्रिहि वसै सो ग्रिहु सोभावंता ।

गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता ॥ १ ॥ सुकरणी कामणि गुर मिलि हम पाई । जजि काजि परथाइ सुहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिचरु वसी पिता कै साथि । तिचरु कंतु बहु फिरै उदासि । करि सेवा सतपुरखु मनाइआ । गुरि आणी घर महि ता सरब सुख पाइआ ॥ २ ॥ बतीह सुलखणी सचु संतति पूत । आगिआकारी सुघड़ सरूप । इछ पूरे मन कंत सुआमी । सगल संतोखी देर जेठानी ॥ ३ ॥ सभ परवारै माहि सरेसट । मती देवी देवर जेसट । धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ । जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥

परमात्मा की भक्ति मधुर स्वभाव वाली स्त्री है जो अनुपम रूपवती तथा शुभ लक्षणों वाली है । जिस घर में (यह स्त्री) बसती है वह घर शोभा वाला बन जाता है लेकिन किसी विरले जीव ने गुरु की शरण में पड़कर (यह स्त्री) प्राप्त की है ॥ १ ॥ (हे भाई !) गुरु को मिलकर मैंने श्रेष्ठकरनी-रूपी (उत्तमआचरण-रूपा) स्त्री प्राप्त की है जो शादी-ब्याह में हर जगह सुन्दर लगती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (यह भक्ति रूपी स्त्री) जब तक पिता के पास रहती है तब तक जीव बहुत भटकता फिरता है । जब सेवा द्वारा परमात्मा को प्रसन्न किया तो गुरु ने (इसके हृदय) घर में लाकर बिठा दिया और इसने समस्त सुख प्राप्त कर लिए ॥ २ ॥ (यह भक्ति रूपी जीवस्त्री) बत्तीस शुभ लक्षणों वाली है, सर्वदा स्थिर परमात्म-नाम इसकी सन्तान है, पुत्र हैं, यह आज्ञाकारिणी है, चतुर है, रूपवती है, कंत के मन की हरेक इच्छा पूरी करती है तथा देवरानी-जेठानी (आशा, तृष्णा) को हर प्रकार से सन्तुष्ट करती है ॥ ३ ॥ समूचे (आत्मिक) परिवार में भक्ति श्रेष्ठ है (क्योंकि यही) सारे देवर-जेठों को सन्मार्ग बतानेवाली है । वह हृदय-घर सौभाग्यशाली है जिस घर में यह (भक्ति रूपी स्त्री) दर्शन देती है । (उस मनुष्य की आयु) सुख के साथ बीतती है ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ मता करउ सो पकनि न देई । सील संजम कै निकटि खलोई । वेस करे बहु रूप दिखावै । ग्रिहि बसनि न देई वखि वखि भरमावै ॥ १ ॥ घर की नाइकि घर वासु न देवै । जतन करउ उरझाइ परेवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुर की भेजी आई आमरि । नउखंड जीते सभि थान थनंतर । तटि तीरथि न छोडै जोग संनिआस । पड़ि थाके सिम्रिति बेद अभिआस ॥ २ ॥ जह बैसउ तह नाले बैसै । सगल भवन

महि सबल प्रवेसै । होछी सरणि पइआ रहणु न पाई । कहु मीता हउ कै पहि जाई ॥ ३ ॥ सुणि उपदेसु सतिगुर पहि आइआ । गुरि हरि हरि नामु मोहि मंत्रु द्रिड़ाइआ । निज घरि वसिआ गुण गाइ अनंता । प्रभु मिलिओ नानक भए अचिंता ॥ ४ ॥ घरु मेरा इह नाइकि हमारी । इह आमरि हम गुरि कीए दरबारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥

आत्मिक टिकाव के लिए मैं जो भी परामर्श करता हूँ उसे (यह माया) पूर्ण नहीं होने देती । मधुर स्वभाव तथा संयम के निकट यह हर वक्त खड़ी रहती है । यह अनेक वेश धारण करती है और अनेक रूप दिखाती है । यह मुझे हृदय-घर में टिकने नहीं देती, कई तरीकों से भटकाती फिरती है ॥ १ ॥ (यह माया मेरे) हृदय-घर की स्वामिनी बन बैठी है और मुझे घर में निवास नहीं करने देती है । यदि मैं यत्न करता हूँ तो और अधिक दुबिधाएँ पैदा कर देती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (यह माया) परमात्मा के दरबार से सेविका बनाकर भेजी हुई आई है (लेकिन यहाँ आकर इसने नौ खण्डों वाली समूची धरती जीत ली है, सभी स्थान जीत लिए हैं, नदियों के किनारे पर बैठे योग-साधना करनेवाले और संन्यासी भी (इसने) जीत लिए हैं । स्मृतियाँ पढ़-पढ़कर और वेदों के (पाठों के) अभ्यास करनेवाले पण्डित लोग भी (माया के समक्ष) हार गए हैं ॥ २ ॥ मैं जहाँ भी (जाकर) बैठता हूँ यह मेरे साथ आ बैठती है, यह अत्यन्त शक्तिमान है, यह सारे ही भवनों में जा पहुँचती है, किसी शक्तिहीन की शरण लेने पर यह मुझसे अलग नहीं हटती । इसलिए, हे मित्र ! कहो, मैं (इससे मुक्त होने के लिए) किसके पास जाऊँ ? ॥ ३ ॥ (सत्संगी मित्र से) उपदेश सुनकर मैं गुरु के पास आया और सतिगुरु ने परमात्मा का नाम-मन्त्र मुझे (मेरे हृदय में) दृढ़ करके दे दिया । अब मैं अनन्त प्रभु के गुण गा-गाकर टिकाव की स्थिति में आ गया हूँ । हे नानक ! (कहो— अब मुझे) परमात्मा मिल गया है और मैं निश्चिन्त हो गया हूँ ॥ ४ ॥ (अब यह हृदय-घर) मेरा अपना घर बन गया है और यह मालकिन भी हमारी बन गई है, गुरु ने इसे मेरी सेविका बना दिया है और मुझे प्रभु के दरबार में रहनेवाला बना दिया है ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे मता जि पत्री चलावउ । दुतीए मता दुइ मानुख पहुचावउ । त्रितीए मता किछु करउ उपाइआ । मै सभु किछु छोडि प्रभ तुही धिआइआ ॥ १ ॥ महा अनंद अचिंत सहजाइआ । दुसमन दूत मुए सुखु

पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि मो कउ दीआ उपदेसु । जीउ पिंडु सभु हरि का देसु । जो किछु करी सु तेरा ताणु । तूं मेरी ओट तूं है दीबाणु ॥ २ ॥ तुध नो छोडि जाईऐ प्रभ कैं धरि । आन न बीआ तेरी समसरि । तेरे सेवक कउ किस की काणि । साकतु भूला फिरै बेबाणि ॥ ३ ॥ तेरी वडिआई कही न जाइ । जह कह राखि लैहि गलि लाइ । नानक दास तेरी सरणाई । प्रभि राखी पैज वजी वाधाई ॥ ४ ॥ ५ ॥

[सिख-इतिहास के अनुसार सुलही खाँ वाली मुसीबत टलने पर गुरुजी ने इस शब्द का उच्चारण किया था ।]

पहले मुझे परामर्श दिया गया कि मैं उसे चिट्ठी लिख भेजूँ, फिर परामर्श मिला कि मैं (उसके पास) दो व्यक्ति भेजूँ, तीसरा परामर्श मिला कि मैं कोई न कोई उपाय अवश्य करूँ । लेकिन हे प्रभु ! दूसरे सभी प्रयास छोड़कर मैंने केवल तुझे ही स्मरण किया ॥ १ ॥ (परमात्मा का आसरा लेने से) अत्यन्त आत्मिक आनन्द मिलता है, निश्चिन्तता हो जाती है, आत्मिक स्थिरता पैदा हो जाती है, समस्त दुश्मन समाप्त हो जाते हैं और इस प्रकार अन्तर्मन में सुख अनुभूत होता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु ने मुझे यह उपदेश दिया कि यह शरीर और प्राण सब कुछ परमात्मा के रहने का स्थान है इसलिए मैं जो कुछ भी करता हूँ तेरा सहारा लेकर करता हूँ, तुम ही मेरी ओट हो, तुम ही मेरा सहारा हो ॥ २ ॥ हे प्रभु ! तुझे छोड़कर किस दूसरे के पास जाएँ ? (क्योंकि तेरे समान कोई है ही नहीं । तेरे सेवक को किसकी ज़रूरत हो सकती है ? (लेकिन हे प्रभु !) तुझसे विछुड़ा हुआ मनुष्य कुमार्गगामी होकर उजाड़ प्रदेश में भटकता रहता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तेरी महानता मुझसे व्यक्त नहीं की जा सकती । तुम हर स्थान पर (मुझे अपने) गले लगाकर बचा लेते हो । हे दास नानक ! (कहो— हे प्रभु !) मैं तेरी शरण में पड़ा रहता हूँ । (हे भाई !) प्रभु ने मेरी प्रतिष्ठा बचा ली है (इसलिए उस प्रभु की कृपा से) मेरी आत्मिक शक्ति हमेशा प्रबल रहती है ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ परदेसु झागि सउदे कउ आइआ । वसतु अनूप सुणी लाभाइआ । गुण रासि बन्हि पलै आनी । देखि रतनु इहु मनु लपटानी ॥ १ ॥ साह वापारी दुआरै आए । वखरु काढहु सउदा कराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहि पठाइआ साहै पासि । अमोल रतन अमोला रासि । विसटु सुभाई पाइआ मीत । सउदा मिलिआ निहचल चीत ॥ २ ॥ भउ

नही तसकर पउण न पानी । सहजि विहाझी सहजि लै जानी । सत कै खटिऐ दुखु नही पाइआ । सही सलामति घरि लै आइआ ॥ ३ ॥ मिलिआ लाहा भए अनंद । धंनु साह पूरे बखसिंद । इहु सउदा गुरमुखि किनै विरलै पाइआ । सहली खेप नानकु लै आइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे शाह ! बड़ी कठिनाइयों से परदेश को पार कर तुम्हारे पास नाम का सौदा करने आया हूँ । मैंने सुना है कि नाम बड़ी सुन्दर तथा लाभदायक वस्तु है । हे गुरु ! मैं गुणों का धन पल्ले में बाँधकर लाया हूँ, प्रभु का नाम-रत्न देखकर मेरा यह मन प्रसन्न हो गया है ॥ १ ॥ हे शाह ! तेरे द्वार पर जीव-व्यापारी आए हैं । तुम अपने भण्डार में से नाम का सौदा निकालकर इन्हें सौदा करने की जाँच सिखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) परमात्मा-शाह ने मुझे गुरु के पास भेजा (और गुरु के द्वार से) रत्न मिल गया है । वह धन मिला है जिसके बराबर की कीमत का दुनिया में कोई पदार्थ नहीं है । (ईश्वर-कृपा से) स्नेहीमना गुरु माध्यम-मित्र मिल गया है । उसके पास से परमात्मा के नाम का सौदा प्राप्त किया है इसलिए मेरा मन लौकिक पदार्थों की ओर आकर्षित होने से हट गया है ॥ २ ॥ इस नाम-रत्न को चोरों से ख़तरा नहीं, हवा से भय नहीं, पानी का डर नहीं, अर्थात इसे चोर, हवा और पानी किसी से भी भय नहीं । आत्मिक स्थिरता के प्रभाव से यह रत्न मैंने (गुरु से) ख़रीदा है और इस स्थिति में रहकर यह रत्न मैं अपने साथ ले जाऊँगा । ईमानदारी से प्राप्त करने के कारण इस रत्न की प्राप्ति में मुझे कोई दुख नहीं सहना पड़ा और यह नाम-सौदा कुशलतापूर्वक सँभालकर अपने हृदय-घर में ले आया हूँ ॥ ३ ॥ हे पूर्ण कृपा करनेवाले शाह-प्रभु ! मैं तेरी सराहना करता हूँ, तेरी कृपा से मुझे नाम का लाभ मिला है और मेरे भीतर आनन्द पैदा हो गया है । हे भाई ! किसी विरले सौभाग्यशाली ने गुरु की शरण लेकर यह सौदा प्राप्त किया है (गुरु की शरण लेकर ही) नानक यह लाभदायक सौदा प्राप्त कर सका है ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ गुनु अवगनु मेरो कछु न बीचारो । नह देखिओ रूप रंग सींगारो । चज अचार किछु बिधि नही जानी । बाह पकरि प्रिअ सेजै आनी ॥ १ ॥ सुनिबो सखी कंति हमारो कीअलो खसमाना । करु मसतकि धारि राखिओ करि अपुना किआ जानै इहु लोकु अजाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुहागु हमारो अब हुणि सोहिओ । कंतु मिलिओ मेरो सभु दुखु

जोहिओ । आंगनि मेरै सोभा चंद । निसि बासुर प्रिअ संगि अनंद ॥ २ ॥ बसत्र हमारे रंगि चलूल । सगल आभरण सोभा कंठि फूल । प्रिअ पेखी द्रिसटि पाए सगल निधान । दुसट दूत की चूकी कानि ॥ ३ ॥ सद खुसीआ सदा रंग माणे । नउ निधि नामु ग्रिह महि त्रिपताने । कहु नानक जउ पिरहि सीगारी । थिरु सोहागनि संगि भतारी ॥ ४ ॥ ७ ॥

मेरे पति ने गुण-अवगुण पर विचार नहीं किया । उसने मेरा रूप, रंग और श्रृंगार भी नहीं देखा । मैं तो कार्यकौशल और सदाचरण का कोई ढंग भी नहीं जानती थी फिर भी मेरी बाँह पकड़कर प्रभुपति अपनी सेज पर ले आए ॥ १ ॥ हे (मेरी) सहेली ! सुन, मेरे पति-प्रभु ने (मेरी) सँभाल की है । (मेरे) मस्तक पर अपना हाथ रखकर मुझे अपनी जानकर रक्षा की है । लेकिन यह मूर्ख जगत इस (रहस्य) को क्या समझे ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अब मेरा सुहाग सुशोभित है अर्थात मेरे भाग्य उदय हो गए हैं, मेरा पति-प्रभु मुझे मिल गया है और उसने मेरा दुख गहराई से देख लिया है । मेरे हृदय रूपी आँगन में शोभा का चन्द्रमा प्रकाशमान है । मैं रात-दिन प्रिय के साथ आनन्द अनुभूत कर रही हूँ ॥ २ ॥ प्रिय ने मुझे (प्रेम की) दृष्टि से देख लिया है (अब मानो) मुझे तमाम भण्डार मिल गए हैं, मेरे कपड़े गहरे चटकीले रंग में रँगे गए हैं, तमाम गहने (देह पर सुशोभित हैं) फूलों के हार मेरे गले में सुशोभित हैं । अब, कामादिक दुश्मनों की चिन्ता भी मिट गई है ॥ ३ ॥ हे सखी, नौ निधियों के तुल्य परमात्मा का नाम मेरे हृदय-घर में आ बसा है, मेरी सारी तृष्णा समाप्त हो गई है, मुझे अब खुशियाँ ही खुशियाँ हैं, मैं अब सदा आत्मिक आनन्द अनुभव कर रही हूँ । हे नानक ! (कहो—) जब प्रभु-पति ने (जीवस्त्री को) सुन्दर जीवन वाली बना दिया तो वह प्रभु-पति के चरणों में रहकर सौभाग्यवती बन गई, वह सदा के लिए स्थिरचित्त हो गई ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ दानु देइ करि पूजा करना । लैत देत उन्ह मूकरि परना । जितु दरि तुम्ह है ब्राहमण जाणा । तितु दरि तूं ही है पछुताणा ॥ १ ॥ ऐसे ब्राहमण डूबे भाई । निरापराध चितवहि बुरिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि लोभु फिरहि हलकाए । निंदा करहि सिरि भारु उठाए । माइआ मूठा चेतै नाही । भरमे भूला बहुती राही ॥ २ ॥ बाहरि भेख करहि घनेरे । अंतरि बिखिआ उतरी घेरे । अवर उपदेसै

आपि न बूझै। ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ॥ ३ ॥ मूरख बामण प्रभू समालि। देखत सुनत तेरै है नालि। कहु नानक जे होवी भागु। मानु छोडि गुर चरणी लागु ॥ ४ ॥ ८ ॥

(हे भाई ! ढोंगी ब्राह्मणों की स्थिति देखिए) यजमान तो उन्हें दान देकर उनकी पूजा करते हैं लेकिन वे (ब्राह्मण) सब कुछ लेते हुए मुकर जाते हैं अर्थात वे यजमान का धन्यवाद तक नहीं करते। परन्तु, हे ब्राह्मण ! जिस प्रभु-द्वार पर तुझे पहुँचना है उस द्वार पर ही तू पछताएगा ॥ १ ॥ ऐसे ब्राह्मणों को डूबे हुए जानो जो निर्दोष व्यक्तियों को हानि पहुँचाने के तरीके सोचते रहते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इन ब्राह्मणों के मन में लोभ होता है और ये पागल हुए फिरते हैं। ये दूसरों की निंदा करते हुए फिरते हैं और इस प्रकार अपने सिर पर निंदा का भार उठाए फिरते हैं। हे भाई ! माया से अपने आत्मिक जीवन की पूँजी लुटा देने के बाद यह परमात्मा को स्मरण नहीं करता। माया के भ्रम में भूला हुआ यह ब्राह्मण कई ओर दुखी होता फिरता है ॥ २ ॥ ऐसे ब्राह्मणों के भीतर तो माया स्थित है पर बाहर (लोक-दिखावे के लिए) कई प्रकार के वेश धारण करते हैं। वह आप धार्मिक सिद्धान्तों को नहीं पहचानता लेकिन दूसरों को उपदेश करता है, ऐसा ब्राह्मण कहीं भी सफल नहीं होता ॥ ३ ॥ हे नानक ! (ऐसे ब्राह्मण को कह—) हे मूर्ख ब्राह्मण ! परमात्मा को स्मरण किया कर, वह परमात्मा तेरे समस्त काम देखता-सुनता तेरे साथ रहता है। यदि तेरे भाग्य जागें तो (जाति-अभिमान) छोड़कर गुरु की शरण ले ॥ ४ ॥ ८ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ दूख रोग भए गतु तन ते मनु निरमलु हरि हरि गुण गाइ। भए अनंद मिलि साधू संगि अब मेरा मनु कतही न जाइ ॥ १ ॥ तपति बुझी गुरसबदी माइ। बिनसि गइओ ताप सभ सहसा गुरु सीतलु मिलिओ सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धावत रहे एकु इकु बूझिआ आइ बसे अब निहचलु थाइ। जगतु उधारन संत तुमारे दरसनु पेखत रहे अघाइ ॥ २ ॥ जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचलु साधू पाइ। सहज धुनि गावै मंगल मनूआ अब ता कउ फुनि कालु न खाइ ॥ ३ ॥ करन कारन समरथ हमारे सुखदाई मेरे हरि हरि राइ। नामु तेरा जपि जीवै नानकु ओति पोति मेरै संगि सहाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥

(हे माँ !) परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गा-गाकर मेरा मन पवित्र हो गया है, मेरे शरीर से सारे दुख तथा रोग दूर हो गए हैं।

सत्संगति में बैठकर मेरे भीतर आनन्द ही आनन्द हो गया है। अब मेरा मन किसी भी दिशा में नहीं भटकता ॥ १ ॥ हे माँ ! गुरु की शिक्षा के प्रभाव से (मेरे भीतर) जलन मिट गई है। मेरे समस्त दुख, क्लेश तथा सन्ताप नष्ट हो गए हैं। अब मैं आत्मिक स्थिरता में टिका हुआ हूँ, अब मैं प्रभु-प्रेम में लीन हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे माँ !) जब से मेरा केवल एक परमात्मा से सम्बन्ध हुआ है, मेरी समस्त दुविधाएँ समाप्त हो गई हैं। अब मैं स्थिरचित्त होकर प्रभु-चरणों में टिका हुआ हूँ। (हे प्रभु !) तमाम दुनिया को विकारों से बचानेवाले तेरे सन्तजनों के दर्शन करके मेरी सारी तृष्णा समाप्त हो गई है ॥ २ ॥ (हे माँ !) अब मैंने स्थिरचित्त होकर गुरु के चरण पकड़ लिए हैं, मेरे अनेक जन्मों के पापों से मेरी मुक्ति हो गई है। मेरा मन आत्मिक स्थिरता के स्वर में परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता रहता है, अब इस मन को कभी आत्मिक मौत नहीं दबोच सकती ॥ ३ ॥ हे मेरे सुखदाता प्रभु स्वामी ! हे सब कुछ करने और कराने की शक्ति रखनेवाले ! (तेरा दास) नानक तेरा नाम याद कर-करके आत्मिक जीवन प्राप्त कर रहा है, तुम मेरे साथी उसी प्रकार हो जैसे ताने-बाने में धागा मिला हुआ होता है ॥ ४ ॥ ९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ अरड़ावै बिललावै निंदकु । पारब्रहमु परमेसरु बिसरिआ अपणा कीता पावै निंदकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे कोई उस का संगी होवै नाले लए सिधावै । अणहोदा अजगरु भारु उठाए निंदकु अगनी माहि जलावै ॥ १ ॥ परमेसर कै दुआरै जि होइ बितीतै सु नानकु आखि सुणावै । भगत जना कउ सदा अनंदु है हरि कीरतनु गाइ बिगसावै ॥२॥१०॥

(हे भाई ! भक्तजनों की) निंदा करनेवाला (अपने भीतर) बड़ा दुखी होता रहता है, बड़ा बिलखता है। उस निंदक को पारब्रह्म परमात्मा विस्मृत होता है, (इसलिए) निंदा करनेवाला मनुष्य निंदा का (दुख रूपी) फल भोगता रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) यदि कोई मनुष्य उस निंदक का साथी बने (तो निंदक) उसे भी अपने साथ ले लेता है। निंदक (निंदा का) मनःकल्पित अनन्त बोझ (अपने सिर पर) उठाए फिरता है और अपने आपको निंदा की अग्नि में जलाता रहता है ॥ १ ॥ जो नियम परमात्मा के द्वार पर सदा सक्रिय रहता है, नानक वह नियम (तुम्हें) स्पष्टता से सुनाता है कि भक्तजनों को (भक्ति के प्रभाव से) सदा आनन्द प्राप्त रहता है। परमात्मा का भक्त परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गा-गाकर प्रसन्न रहता है ॥ २ ॥ १० ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जउ मै कीओ सगल सीगारा। तउ भी मेरा मनु न पतीआरा। अनिक सुगंधत तन महि लावउ। ओहु सुखु तिलु समानि नही पावउ। मन महि चितवउ ऐसी आसाई। प्रिअ देखत जीवउ मेरी माई ॥ १ ॥ माई कहा करउ इहु मनु न धीरै। प्रिअ प्रीतम बैरागु हिरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसत्र बिभूखन सुख बहुत बिसेखै। ओइ भी जानउ कितै न लेखै। पति सोभा अरु मानु महतु। आगिआकारी सगल जगतु। ग्रिहु ऐसा है सुंदर लाल। प्रभ भावा ता सदा निहाल ॥ २ ॥ बिंजन भोजन अनिक परकार। रंग तमासे बहुतु बिसथार। राज मिलख अरु बहुतु फुरमाइसि। मनु नही ध्रापै त्रिसना न जाइसि। बिनु मिलबे इहु दिनु न बिहावै। मिलै प्रभू ता सभ सुख पावै ॥ ३ ॥ खोजत खोजत सुनी इह सोइ। साध संगति बिनु तरिओ न कोइ। जिसु मसतकि भागु तिनि सतिगुरु पाइआ। पूरी आसा मनु त्रिपताइआ। प्रभ मिलिआ ता चूकी डंझा। नानक लधा मन तन मंझा ॥ ४ ॥ ११ ॥

यदि मैंने अनेक विधियों से श्रृंगार किया तो भी मेरा मन सन्तुष्ट नहीं हुआ। यदि मैं अनेक सुगन्धियाँ शरीर पर लगाती हूँ तो भी मैं तिलमात्र सुख प्राप्त नहीं कर सकती। हे मेरी माँ ! अब मैं ऐसी आशाएँ बनाती रहती हूँ (कि प्रभु पति से भेंट कैसे हो क्योंकि) प्रिय प्रभु-पति का दर्शन करके आत्मिक जीवन पैदा हो जाता है ॥ १ ॥ हे माँ ! मैं क्या करूँ ? मेरा मन स्थिर नहीं है। प्रियतम का प्रेम मुझे खींच रहा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे विचार से (सुन्दर) कपड़े, गहने और विशेष प्रकार के सुख सब व्यर्थ हैं। आदर, शोभा, महानता, प्रतिष्ठा (भी मिल जाए) सारा जगत मेरी आज्ञा में चले, बड़ा सुन्दर और कीमती घर मिले तब भी मैं हमेशा के लिए खुश तभी रह सकती हूँ यदि प्रभु-पति को प्यारी लगूँ ॥ २ ॥ (हे माँ !) यदि अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन मिल जाएँ, यदि अनेक प्रकार के रंग-तमाशे (देखने को) मिलें, यदि राज्य मिल जाए, पृथ्वी का प्रभुत्व मिल जाए और बहुत हुकूमत मिल जाए तो भी यह मन कभी तृप्त नहीं होता, इसकी तृष्णा समाप्त नहीं होती। प्रभु-पति को को मिले बिना मेरा यह दिन नहीं गुज़रता। जब (जीव-स्त्री को) प्रभु-पति मिल जाए तो वह (मानो) सारे सुख प्राप्त कर लेती है ॥ ३ ॥

खोजते-खोजते (हे माँ !) मैंने यह ख़बर सुनी कि सत्संगति के बिना (तृष्णा की बाढ़ से) कोई जीव कभी पार नहीं उतर सका। जिसका सौभाग्य उदय हुआ उसीने गुरु प्राप्त कर लिया, उसकी हरेक आशा पूर्ण हो गई, उसका मन तृप्त हो गया। हे नानक ! जब जीव (गुरु की शरण लेकर) प्रभु को मिल गया (तभी) उसकी (भीतरी) जलन समाप्त हो गई, उसने अपने मन में व्याप्त प्रभु प्राप्त कर लिया ॥ ४ ॥ ११ ॥

॥ आसा महला ५ पंचपदे ३ ॥ प्रथमे तेरी नीकी जाति। दुतीआ तेरी मनीऐ पांति। त्रितीआ तेरा सुंदर थानु। बिगड़ रूपु मन महि अभिमानु ॥ १ ॥ सोहनी सरूपि सुजाणि बिचखनि। अति गरबै मोहि फाकी तूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अति सूची तेरी पाकसाल। करि इसनानु पूजा तिलकु लाल। गली गरबहि मुखि गोवहि गिआन। सभ बिधि खोई लोभि सुआन ॥ २ ॥ कापर पहिरहि भोगहि भोग। आचार करहि सोभा महि लोग। चोआ चंदन सुगंध बिसथार। संगी खोटा क्रोधु चंडाल ॥ ३ ॥ अवर जोनि तेरी पनिहारी। इसु धरती महि तेरी सिकदारी। सुइना रूपा तुझ पहि दाम। सीलु बिगारिओ तेरा काम ॥ ४ ॥ जा कउ द्रिसटि मइआ हरि राइ। सा बंदी ते लई छडाइ। साध संगि मिलि हरि रसु पाइआ। कहु नानक सफल ओह काइआ ॥ ५ ॥ सभि रूप सभि सुख बने सुहागनि। अति सुंदरि बिचखनि तूं ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १२ ॥

(हे जीव-स्त्री) सबसे पहले तू कुलीन है, दूसरे तेरा वंश भी महान माना जाता है, तीसरे तेरी देह सुन्दर है, लेकिन तेरा रूप कुरूप ही रहा (क्योंकि) तेरे मन में अहंकार है ॥ १ ॥ तू सुन्दर है, रूपवान है, बुद्धिमान है, चतुर है, लेकिन तू बड़े अहंकार तथा मोह में फँसी पड़ी है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी रसोई बड़ी साफ-सुथरी है। तू स्नान करके पूजा भी कर सकती है, माथे पर लाल तिलक लगा लेती है। तू बातचीत से अपने आपको प्रकट कर सकती है, मुख से ज्ञान की बातें कर सकती है लेकिन कुत्ते रूपी लोभ ने तेरी हर प्रकार की महानता को गवाँ दिया है ॥ २ ॥ तू (सुन्दर) कपड़े पहनती है, भोग भोगती है, दुनिया में शोभा पाने के लिए इत्र, चन्दन तथा दूसरी सुगन्धियाँ प्रयुक्त करती है लेकिन चाण्डाल क्रोध तेरा हमेशा साथी है ॥ ३ ॥ दूसरी सब योनियाँ तेरी सेवक हैं, धरती पर तेरा ही प्रभुत्व है, तेरे पास ही सोना, चाँदी आदि धन पदार्थ हैं, लेकिन कामवासना ने तेरा स्वभाव विकृत कर दिया है ॥ ४ ॥

हे नानक ! जिस जीव-स्त्री पर प्रभु बादशाह की कृपादृष्टि होती है उसे वह (लोभ, क्रोध आदि की) क़ैद से मुक्त करा लेता है। जिस शरीर ने सत्संगति में परमात्मा के नाम का आस्वादन किया, वह शरीर ही सफल है ।। ५ ।। (हे जीव-स्त्री !) यदि तू प्रभु-पति वाली बन जाए तो समस्त सौंदर्य तथा सुख तुझे सुशोभित हों; तू (सचमुच) बड़ी सुन्दर तथा चतुर बन जाए ।। १ ।। रहाउ दूजा ।। १२ ।।

।। आसा महला ५ इक तुके २ ।। जीवत दीसै तिसु सरपर मरणा। मुआ होवै तिसु निहचलु रहणा ।। १ ।। जीवत मुए मुए से जीवे। हरि हरि नामु अवखधु मुखि पाइआ गुरसबदी रसु अंम्रितु पीवे ।। १ ।। रहाउ ।। काची मटुकी बिनसि बिनासा। जिसु छूटै त्रिकुटी तिसु निज घरि वासा ।। २ ।। ऊचा चड़ै सु पवै पइआला। धरनि पड़ै तिसु लगै न काला ।। ३ ।। भ्रमत फिरे तिन किछू न पाइआ। से असथिर जिन गुर सबदु कमाइआ ।। ४ ।। जीउ पिंडु सभु हरि का मालु। नानक गुर मिलि भए निहाल ।। ५ ।। १३ ।।

जो मनुष्य (माया के मोह में मस्त होकर) जीवित दिखता है उसे अवश्य ही आत्मिक मृत्यु हड़प किए रखती है। लेकिन जो मनुष्य माया से निर्लिप्त है उसे स्थिर सदाचरण मिला रहता है ।। १ ।। हे भाई ! जो मनुष्य माया-मोह में मस्त रहते हैं वे आत्मिक रूप से मृत रहते हैं। लेकिन जो माया के अभिमान से अलिप्त हैं वे आत्मिक जीवन जीते हैं, जिन मनुष्यों ने परमात्मा की नाम-औषधि मुँह में रखी, उन्होंने गुरु की शिक्षा के अनुसार आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-रस पान किया ।। १ ।। रहाउ ।। जैसे कच्चा घड़ा अवश्य नष्ट होनेवाला है (वैसे ही माया का साथ भी क्षणभंगुर है) जिस मनुष्य के अन्तर्मन से अहंकारजन्य खीझ समाप्त हुई रहती है उसका निवास सदा प्रभु-चरणों में रहता है ।। २ ।। जो मनुष्य अहंकार-ग्रस्त रहता है वह आत्मिक मृत्यु के गड्ढे में पड़ा रहता है लेकिन जो मनुष्य विनम्रतापूर्वक रहता है उसे आत्मिक मृत्यु स्पर्श नहीं कर सकती ।।३।। जो मनुष्य माया की टोह में सदा भटकते फिरते हैं उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता, लेकिन जिन्होंने गुरु की शिक्षा का आचरण किया है वे स्थिरचित्त रहते हैं ।। ४ ।। हे नानक ! जिन मनुष्यों ने यह प्राण और शरीर ईश्वरप्रदत्त स्वीकारा है वे सर्वदा गुरु के सान्निध्य में प्रसन्नचित्त रहते हैं ।। ५ ।। १३ ।।

॥ आसा महला ५ ॥ पुतरी तेरी बिधि करि थाटी । जानु सति करि होइगी माटी ॥ १ ॥ मूलु समालहु अचेत गवारा । इतने कउ तुम्ह किआ गरबे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीनि सेर का दिहाड़ी मिहमानु । अवर वसतु तुझ पाहि अमान ॥ २ ॥ बिसटा असत रकतु परेटे चाम । इसु ऊपरि ले राखिओ गुमान ॥ ३ ॥ एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक । बिनु बूझे तूं सदा नापाक ॥ ४ ॥ कहु नानक गुर कउ कुरबानु । जिस ते पाईऐ हरि पुरखु सुजानु ॥ ५ ॥ १४ ॥

(परमात्मा ने) तेरी यह देह बड़ी बुद्धिमानी से बनाया है, (लेकिन) तू सच मान कि इसे मिट्टी हो जाना है ॥ १ ॥ हे मूर्ख जीव ! उस आदि (-प्रभु) को सँभालकर रख । इस ओछे अस्तित्व वाले शरीर के लिए क्या गर्व करता है ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू मेहमान है जिसे प्रतिदिन तीन सेर (कच्चा आटा आदि) मिलता है । दूसरी सब चीज़ें तेरे पास धरोहरतुल्य हैं ॥ २ ॥ (तेरे भीतरी अंश) विष्ठा, हड्डियों, लहू तथा चमड़ी के साथ लिपटे हुए हैं लेकिन तू इस पर ही अभिमान किए जा रहा है ॥ ३ ॥ यदि तू एक प्रभु के नाम-पदार्थ के साथ मेल कर ले तो तू पवित्र जीवन वाला हो जाए । प्रभु-नाम से मेल किए बिना तू सदा ही अपवित्र है ॥ ४ ॥ हे नानक ! कह— (हे मूर्ख जीव !) उस गुरु पर बलिहारी हो जिसके द्वारा अन्तर्यामी सर्वव्यापक परमात्मा मिल सकता है ॥ ५ ॥ १४ ॥

॥ आसा महला ५ इक तुके चउपदे ॥ इक घड़ी दिनसु मो कउ बहुतु दिहारे । मनु न रहै कैसे मिलउ पिआरे ॥ १ ॥ इकु पलु दिनसु मो कउ कबहु न बिहावै । दरसन की मनि आस घनेरी कोई ऐसा संतु मो कउ पिरहि मिलावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि पहर चहु जुगह समाने । रैणि भई तब अंतु न जाने ॥२॥ पंच दूत मिलि पिरहु विछोड़ी । भ्रमि भ्रमि रोवै हाथ पछोड़ी ॥ ३ ॥ जन नानक कउ हरि दरसु दिखाइआ । आतमु चीन्हि परम सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥

(हे भाई !) दिन की एक घड़ी भी प्रभु-पति से अलग रहकर मुझे कई दिनों के बराबर लगती है, मेरा मन धैर्य नहीं धारण करता (मैं जानना चाहता हूँ कि) प्यारे प्रभु को कैसे मिलूँ ॥ १ ॥ दिन में एक पल भी ऐसा नहीं गुज़रता (जब उस प्रियतम की याद न आती हो) । मेरे मन में प्रभु के दर्शनों की तीव्र उत्कण्ठा है, कोई सच्चा गुरु ही मुझे परमात्मा-पति

के साथ मिला सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (दिन के) चार प्रहर (वियोगावस्था में) चार युगों के बराबर लगते हैं, जब रात्रि आ जाती है तो वह समाप्त होने में नहीं आती ॥ २ ॥ (कामादिक) पाँच शत्रुओं ने मिलकर (जिस भी जीव-स्त्री को) प्रभु-पति से अलग किया है वह भटक-भटककर रोती है तथा पछताती है ॥ ३ ॥ हे दास नानक ! (जिस जीव को) परमात्मा ने दर्शन दिए, उसने अपने आत्मिक जीवन की जाँच-पड़ताल कर सर्वोपरि आनन्द प्राप्त कर लिया ॥ ४ ॥ १५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ हरि सेवा महि परम निधानु । हरि सेवा मुखि अंम्रित नामु ॥ १ ॥ हरि मेरा साथी संगि सखाई । दुखि सुखि सिमरी तह मउजूदु जमु बपुरा मो कउ कहा डराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मेरी ओट मै हरि का ताणु । हरि मेरा सखा मन माहि दीबाणु ॥ २ ॥ हरि मेरी पूंजी मेरा हरि वेसाहु । गुरमुखि धनु खटी हरि मेरा साहु ॥ ३ ॥ गुर किरपा ते इह मति आवै । जन नानकु हरि कै अंकि समावै ॥ ४ ॥ १६ ॥

(हे भाई !) आत्मिक जीवन देनेवाला परमात्मा का नाम उच्चरित करना परमात्मा की सेवा है और परमात्मा की सेवा में सर्वोपरि भण्डार (छिपा हुआ है) ॥ १ ॥ (हे भाई !) परमात्मा मेरा साथी है । दुख, सुख के समय जब भी मैं उसे स्मरण करता हूँ, वह वहीं उपस्थित होता है । इसलिए, बेचारा यमराज मुझे कहाँ डरा सकता है ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) परमात्मा ही मेरी ओट है, मुझे परमात्मा का ही सहारा है, परमात्मा मेरा मित्र है, मुझे अपने मन में परमात्मा का ही सहारा है ॥ २ ॥ परमात्मा (का नाम ही) मेरी पूँजी है, मेरे लिए प्रेरक स्रोत है । गुरु की शरण लेकर मैं नाम-धन कमा रहा हूँ, परमात्मा ही मेरा शाह है ॥ ३ ॥ दास नानक का विचार है कि जिसे गुरु-कृपा से इस व्यापार की समझ आ जाती है वह सदा परमात्मा की गोद में लीन रहता है ॥ ४ ॥ १६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ प्रभु होइ क्रिपालु त इहु मनु लाई । सतिगुरु सेवि सभै फल पाई ॥ १ ॥ मन किउ बैरागु करहिगा सतिगुरु मेरा पूरा । मनसा का दाता सभ सुख निधानु अंम्रितसरि सद ही भरपूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल रिद अंतरि धारे । प्रगटी जोति मिले राम पिआरे ॥ २ ॥ पंच सखी मिलि मंगलु गाइआ । अनहद बाणी नादु वजाइआ ॥ ३ ॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ हरि राइ । सुखि रैणि विहाणी सहजि सुभाइ ॥४॥१७॥

(हे भाई !) यदि परमात्मा कृपालु हों तो ही मैं यह मन (गुरु के चरणों में) जोड़ सकता हूँ, तब ही गुरु की सेवा करके मनोवांछित फल प्राप्त कर सकता हूँ ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! तू क्यों घबराता है ? प्यारा सतिगुरु तेरा (रक्षक) है जो मन की आवश्यकताएँ पूर्ण करनेवाला है, जो सारे सुखों का भण्डार है और जिस अमृत के सरोवर रूपी गुरु में आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल लबालब भरा हुआ है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस मनुष्य ने अपने हृदय में (गुरु के) सुन्दर चरण टिका लिए उसके हृदय में परमात्मा की ज्योति जग पड़ी और उसे प्यारा प्रभु मिल गया; ॥ २ ॥ उसकी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों ने मिलकर परमात्मा की गुणस्तुति की बाणी का बाजा निरन्तर बजाना शुरू कर दिया ॥ ३ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य पर गुरु प्रसन्न हो गया उसे प्रभु बादशाह मिल गया और उसकी रात्रि सुखपूर्वक बीतने लगी ॥ ४ ॥ १७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ करि किरपा हरि परगटी आइआ । मिलि सतिगुर धनु पूरा पाइआ ॥ १ ॥ ऐसा हरि धनु संचीऐ भाई । भाहि न जालै जलि नही डूबै संगु छोडि करि कतहु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तोटि न आवै निखुटि न जाइ । खाइ खरचि मनु रहिआ अघाइ ॥ २ ॥ सो सचु साहु जिसु घरि हरि धनु संचाणा । इसु धन ते सभु जगु वरसाणा ॥ ३ ॥ तिनि हरि धनु पाइआ जिसु पुरब लिखे का लहणा । जन नानक अंति वार नामु गहणा ॥ ४ ॥ १८ ॥

(हे भाई !) जिस मनुष्य ने सतिगुरु को मिलकर अक्षय नाम-धन प्राप्त कर लिया, उसके भीतर परमात्मा कृपा करके आप प्रकट होता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) ऐसा परमात्मा का नाम एकत्रित करना चाहिए जिसे आग नहीं जला सकती, जो पानी में डूबता नहीं और जो साथ छोड़कर किसी भी दूसरे स्थान पर नहीं जाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा का नाम-धन ऐसा है जिसमें कभी घाटा नहीं होता और जो कभी समाप्त नहीं होता । यह धन आप इस्तेमाल करके तथा दूसरों को बाँटकर मन तृप्त रहता है ॥ २ ॥ (हे भाई !) जिस मनुष्य के हृदय-घर में परमात्मा का नाम-धन एकत्रित हो जाता है वही मनुष्य सदैव के लिए शाह बन जाता है । उसके इस धन से सारा जगत लाभ उठाता है ॥ ३ ॥ (पर, हे भाई !) उस मनुष्य ने यह हरि-नाम रूपी धन प्राप्त किया है जिसके भाग्य में पूर्वकृत शुभ कर्मों के संस्कारों के अनुसार इसकी प्राप्ति लिखी होती है । वास्तव में परमात्मा का नाम-धन ही अन्तिम वक्त का आभूषण है ॥ ४ ॥ १८ ॥

॥ आसा ५ ॥ जैसे किरसाणु बोवै किरसानी। काची पाकी बाढि परानी ॥ १ ॥ जो जनमै सो जानहु मूआ। गोविंद भगतु असथिरु है थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिन ते सरपर पउसी राति। रैणि गई फिरि होइ परभाति ॥ २ ॥ माइआ मोहि सोइ रहे अभागे। गुर प्रसादि को विरला जागे ॥ ३ ॥ कहु नानक गुण गाईअहि नीत। मुख ऊजल होइ निरमल चीत ॥ ४ ॥ १९ ॥

हे प्राणी ! (जैसे) कोई किसान खेती बोता है (और जब मन चाहे) उसे काट लेता है (चाहे वह) कच्ची (होवे चाहे) पकी हुई ॥ १ ॥ (हे भाई !) विश्वास जानो कि जो जीव पैदा होता है वह मरता भी (अवश्य) है। परमात्मा का भक्त ऐसा जानकर स्थिरचित्त हो जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) दिन के पश्चात अवश्य रात्रि होगी, रात्रि भी समाप्त हो जाती है और दोबारा सवेरा हो जाता है ॥ २ ॥ (इस परिवर्तन-चक्र को जानते हुए भी) अभागे व्यक्ति माया-मोह में बेसुध रहते हैं। कोई बिरला मनुष्य ही गुरु की कृपा से जागता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! कहो— (हे भाई !) सदा परमात्मा के गुण गाए जाने चाहिए, इससे ही मुख उजला और पवित्र हो जाता है ॥ ४ ॥ १९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ नउ निधि तेरै सगल निधान। इछा पूरकु रखै निदान ॥ १ ॥ तूं मेरो पिआरो ता कैसी भूखा। तूं मनि वसिआ लगै न दूखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तूं करहि सोई परवाणु। साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥ २ ॥ जा तुधु भावै ता हरिगुण गाउ। तेरै घरि सदा सदा है निआउ ॥ ३ ॥ साचे साहिब अलख अभेव। नानक लाइआ लागा सेव ॥ ४ ॥ २० ॥

(हे प्रभु !) तेरे घर में नवों निधियाँ और समूचे भण्डार मौजूद हैं। तू ऐसा इच्छापूरक है जो अन्त में मनुष्य की रक्षा करता है (जब सांसारिक आश्रय समाप्त हो जाते हैं) ॥ १ ॥ (हे प्रभु !) जब तुम मुझसे नेह करनेवाले हो तो मुझे कोई तृष्णा नहीं रह सकती। यदि तुम मेरे मन में टिके रहो तो कोई भी दुख मुझे नहीं छू सकता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! जो कुछ तुम करते हो वही स्वीकृत होता है। हे सच्चे मालिक ! तेरा हुक्म ही अटल है ॥ २ ॥ हे प्रभु ! जब तुझे स्वीकार होता है तब ही मैं तेरी गुणस्तुति के गीत गा सकता हूँ। तेरे घर में सदा ही न्याय है ॥ ३ ॥

हे नानक ! (कह—) हे सच्चे मालिक ! हे अलक्ष्य तथा अपरम्पार परमेश्वर ! तेरे द्वारा प्रेरित जीव ही तेरी सेवा-भक्ति में लग सकता है ॥ ४ ॥ २० ॥

॥ आसा महला ५ ॥ निकटि जीअ कै सद ही संगा । कुदरति वरतै रूप अरु रंगा ॥ १ ॥ करहै न झुरै ना मनु रोवनहारा । अविनासी अविगतु अगोचरु सदा सलामति खसमु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे दासरे कउ किस की काणि । जिस की मीरा राखै आणि ॥ २ ॥ जो लउडा प्रभि कीआ अजाति । तिसु लउडे कउ किस की ताति ॥ ३ ॥ वेमुहताजा वेपरवाहु । नानक दास कहहु गुर वाहु ॥ ४ ॥ २१ ॥

हे भाई ! परमात्मा सब जीवों के निकट रहता है, सदा सबके साथ रहता है, उसकी ही कला सब रूपों में, सब रंगों में काम कर रही है ॥ १ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य को यह निश्चय हो जाता है कि अविनाशी, अलक्ष्य तथा अपरम्पार परमात्मा, हमेशा हमारे रक्षक के रूप में विद्यमान है उस (मनुष्य) का मन कभी दुखी नहीं होता और वह कभी शिकायत नहीं करता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तेरे तुच्छ से सेवक को भी किसी के आश्रय की ज़रूरत नहीं रहती । जिस सेवक की प्रतिष्ठा प्रभु-बादशाह आप रखे उसे किसी के सहारे की आवश्यकता कैसी ? ॥ २ ॥ जिस सेवक को परमात्मा ने उच्च जाति आदि के अहंकार से रहित कर दिया, उसे किसी की ईर्ष्या का भय नहीं रहता ॥ ३ ॥ हे दास नानक ! (कहो— हे भाई !) उस सर्वोच्च परमात्मा को ही धन्य-धन्य कहते रहो जो निश्चिन्त है और जिसे किसी की पराधीनता नहीं ॥ ४ ॥ २१ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ हरि रसु छोडि होछै रसि माता । घर महि वसतु बाहरि उठि जाता ॥ १ ॥ सुनी न जाई सचु अंम्रित काथा । रारि करत झूठी लगि गाथा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वजहु साहिब का सेव बिरानी । ऐसे गुनह अछादिओ प्रानी ॥ २ ॥ तिसु सिउ लूक जो सद ही संगी । कामि न आवै सो फिरि फिरि मंगी ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभ दीन दइआला । जिउ भावै तिउ करि प्रतिपाला ॥ ४ ॥ २२ ॥

(हे भाई ! विकारग्रस्त मनुष्य) परमात्मा का नाम-रस छोड़कर (दुनियावी पदार्थों के) रस में मस्त रहता है जो शीघ्र ही समाप्त हो जाता है । (सुखदायक) नाम-वस्तु (इसके) हृदय-घर में मौजूद है पर वह (नश्वर सुखों के लिए) बाहर दौड़ता फिरता है ॥ १ ॥ (हे भाई ! विकारग्रस्त जीव) सत्यस्वरूप परमात्मा का नाम सुनना पसन्द नहीं करता,

आत्मिक जीवन देनेवाली गुणस्तुति की बातें सुननी पसन्द नहीं करता लेकिन झूठी कथा-कहानी में लगकर झगड़ा करता रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) मनुष्य इस प्रकार विकारग्रस्त रहता है कि खाता तो है मालिक प्रभु का दिया हुआ, लेकिन सेवा करता है दूसरों की (प्रभु के कृतज्ञ होने की अपेक्षा धन एकत्रित करता रहता है) ॥ २ ॥ जो परमात्मा सदा ही साथी है उससे छिपाव करता है, जो वस्तु किसी काम नहीं आती वही बार-बार माँगता रहता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! कह— हे दीनदयालु प्रभु ! जैसे भी हो सके (विकारों से) रक्षा कर ॥ ४ ॥ २२ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जीअ प्रान धनु हरि को नामु । ईहा ऊहां उन संगि कामु ॥ १ ॥ बिनु हरि नाम अवरु सभु थोरा । त्रिपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति भंडार गुरबाणी लाल । गावत सुनत कमावत निहाल ॥ २ ॥ चरण कमल सिउ लागो मानु । सतिगुरि तूठै कीनो दानु ॥ ३ ॥ नानक कउ गुरि दीखिआ दीन्ह । प्रभ अबिनासी घटि घटि चीन्ह ॥ ४ ॥ २३ ॥

(हे भाई !) मन एवं प्राणों के लिए परमात्मा का नाम (ही वास्तविक) धन है, (यह धन) इस लोक में भी तथा परलोक में प्राणों के काम (आता) है ॥ १ ॥ परमात्मा के नाम के अतिरिक्त दूसरा सारा (धन पदार्थ) घाटे वाला है। (हे भाई !) मेरा मन परमात्मा के दर्शन के प्रभाव से तृप्त हो गया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) परमात्मा की भक्ति (सतिगुरु की बाणी) मानो लालों के खज़ाने हैं, (गुरबाणी) गाते-सुनते और साधना करते हुए मन प्रसन्न रहता है ॥ २ ॥ (हे भाई !) कृपालु सतिगुरु ने जिस मनुष्य को परमात्मा के नाम-धन की देन दी, उसका मन परमात्मा के सुन्दर चरणों में जुड़ गया ॥ ३ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य को गुरु ने शिक्षा दी उसने अविनाशी प्रभु को हरेक हृदय में (व्याप्त) देख लिया ॥ ४ ॥ २३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ अनद बिनोद भरे पुरि धारिआ । अपुना कारजु आपि सवारिआ ॥ १ ॥ पूर समग्री पूरे ठाकुर की । भरिपुरि धारि रही सोभ जाकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु निधानु जा की निरमल सोइ । आपे करता अवरु न कोइ ॥ २ ॥ जीअ जंत सभि ता कै हाथि । रवि रहिआ प्रभु सभ कै साथि ॥ ३ ॥ पूरा गुरु पूरी बणत बणाई । नानक भगत मिली वडिआई ॥ ४ ॥ २४ ॥

दुनिया के सब कौतुक, तमाशे, उस सर्वव्यापक परमात्मा के ही रचे हुए हैं, अपने रचे हुए संसार को उसने आप ही सुन्दर बनाया है ।। १ ।। जिस परमात्मा की शोभा सर्वत्र बिखरी हुई है, ये सारे जगत-पदार्थ उस अविस्मरणीय परमात्मा के ही बनाए हुए हैं ।। १ ।। रहाउ ।। जिस (परमात्मा) की गुणस्तुति सदाचारी बना देती है, जिसका नाम (जीवों के लिए) भण्डार है, वह आप ही सबका उत्पादक है, और वह अप्रतिम है ।।२।। (हे भाई ! जगत के) सारे जीव-जंतु उस परमात्मा के ही हाथ में हैं, वह परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है, हरेक जीव के साथ-साथ है ।। ३ ।। हे नानक ! परमात्मा सर्वोच्च है, उसमें कोई कमी नहीं है । उसकी बनाई रचना भी दोषरहित है, परमात्मा की भक्ति करनेवालों को (लोक-परलोक में) आदर मिलता है ।। ४ ।। २४ ।।

।। आसा महला ५ ।। गुर कै सबदि बनावहु इहु मनु । गुर का दरसनु संचहु हरि धनु ।। १ ।। ऊतम मति मेरै रिदै तूं आउ । धिआवउ गावउ गुण गोविंदा । अति प्रीतम मोहि लागै नाउ ।। १ ।। रहाउ ।। त्रिपति अघावनु साचै नाइ । अठसठि मजनु संत धूराइ ।। २ ।। सभ महि जानउ करता एक । साध संगति मिलि बुधि बिबेक ।। ३ ।। दासु सगल का छोडि अभिमानु । नानक कउ गुरि दीनो दानु ।। ४ ।। २५ ।।

(हे भाई !) गुरु के शब्द में जुड़कर इस मन को नए सिरे से बनाओ । (गुरु का शब्द ही) गुरु का दर्शन है इससे परमात्मा का नाम-धन एकत्रित करो ।। १ ।। हे सुबुद्धि ! तू मेरे भीतर आ बस ताकि मैं परमात्मा के गुण गाऊँ, परमात्मा का ध्यान लगाऊँ और परमात्मा का नाम मुझे बहुत प्यारा लग पड़े ।। १ ।। रहाउ ।। (हे भाई !) गुरु के चरणों की धूलि अठारह तीर्थों का स्नान है । (गुरु द्वारा) सत्यस्वरूप परमात्मा के नाम में जुड़ने से तृष्णा समाप्त हो जाती है और मन तृप्त हो जाता है ।। २ ।। (हे भाई !) गुरु की संगति में मिलकर मैंने भले-बुरे की परख करनेवाली बुद्धि प्राप्त कर ली है और मैं सब में एक कर्तार को ही बसता हुआ पहचानता हूँ ।। ३ ।। (हे भाई !) नानक को गुरु ने ऐसी देन दी है कि वह अहंकार त्यागकर सबका दास बन गया है ।। ४ ।। २५ ।।

।। आसा महला ५ ।। बुधि प्रगास भई मति पूरी । ताते बिनसी दुरमति दूरी ।। १ ।। ऐसी गुरमति पाईअले । बूडत घोर अंध कूप महि निकसिओ मेरे भाई रे ।। १ ।। रहाउ ।। महा अगाह अगनि का सागरु । गुरु बोहिथु तारे रतनागरु ।।२।।

दुतर अंध बिखम इह माइआ । गुरि पूरै परगटु मारगु दिखाइआ ॥ ३ ॥ जाप ताप कछु उकति न मोरी । गुर नानक सरणागति तोरी ॥ ४ ॥ २६ ॥

(गुरु की कृपा से) मेरी बुद्धि में (आत्मिक ज्ञान का) प्रकाश हो गया है, मेरी बुद्धि विकारहीन हो गई है, इसकी सहायता से मेरी दुर्बुद्धि का नाश हो गया है, मेरी परमात्मा से दूरी मिट गई है ॥ १ ॥ हे मेरे भाई ! मैंने गुरु से ऐसी बुद्धि प्राप्त कर ली है जिसकी सहायता से मैं माया के घोर अँधेरे कूप से डूबता-डूबता बच निकला हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) संसार तृष्णा की अग्नि का एक बड़ा अथाह समुद्र है, रत्नों की खानि गुरु जहाज़ है जो (संसार-समुद्र से) पार कर देता है ॥ २ ॥ (हे भाई !) यह माया (एक समुद्र है जिससे) पार उतरना कठिन है जिसमें घोर अँधेरा है । (इससे पार होने के लिए) पूर्णगुरु ने मुझे साफ़ रास्ता दिखला दिया है ॥ ३ ॥ हे नानक ! (कह—) हे गुरु ! मेरे पास कोई जप, तप और चतुराई नहीं, मैं तो तेरी ही शरण आया हूँ ॥४॥२६॥

॥ आसा महला ५ तिपदे २ ॥ हरिरसु पीवत सद ही राता । आन रसा खिन महि लहि जाता । हरि रस के माते मनि सदा अनंद । आन रसा महि विआपै चिंद ॥ १ ॥ हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा । आन रसा सभि होछे रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रस की कीमति कही न जाइ । हरि रसु साधू हाटि समाइ । लाख करोरी मिलै न केह । जिसहि परापति तिस ही देहि ॥ २ ॥ नानक चाखि भए बिसमादु । नानक गुर ते आइआ सादु । ईत ऊत कत छोडि न जाइ । नानक गीधा हरि रस माहि ॥ ३ ॥ २७ ॥

(हे भाई !) परमात्मा का नाम-अमृत पीनेवाला मनुष्य (नाम-रंग में) सदा ही रँगा रहता है । दूसरे रसों का प्रभाव एक क्षण में उतर जाता है । परमात्मा के नाम-रस के मतवाले मनुष्य के मन में सदा आनन्द टिका रहता है लेकिन लौकिक पदार्थों के स्वादों में पड़ने से चिन्ता आ दबाती है ॥ १ ॥ जो मनुष्य परमात्मा का नाम-अमृत पीता है वह उस नाम-रस का प्रेमी बन जाता है, उसे दुनिया के तमाम रस फीके लगते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा के नाम-रस का मूल्य अव्यक्त है । यह नाम-रस गुरु की हाट में सदा टिका रहता है । लाखों, करोड़ों रुपये देने से भी यह किसी को मिल नहीं सकता । हे प्रभु ! जिस मनुष्य के भाग्य में तूने इसकी प्राप्ति लिखी है उसी को तू आप ही देता है ॥ २ ॥

हे नानक ! (यह नाम-रस) चखकर (मनुष्य) विस्मयविमुग्ध हो जाता है। हरि के इस नाम-रस का आनन्द गुरु से ही प्राप्त होता है, इस रस का प्राप्तकर्त्ता लोक-परलोक में इस नाम-रस को छोड़कर (कहीं) नहीं जाता, वह सदा हरिनाम-रस में ही मस्त रहता है ॥ ३ ॥ २७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु मिटावै छुटकै दुरमति अपुनी धारी। होइ निमाणी सेव कमावहि ता प्रीतम होवहि मनि पिआरी ॥ १ ॥ सुणि सुंदरि साधू बचन उधारी। दूख भूख मिटै तेरो सहसा सुख पावहि तूं सुखमनि नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण पखारि करउ गुर सेवा आतम सुधु बिखु तिआस निवारी। दासन की होइ दासि दासरी ता पावहि सोभा हरि दुआरी ॥ २ ॥ इही अचार इही बिउहारा। आगिआ मानि भगति होइ तुम्हारी। जो इहु मंत्रु कमावै नानक सो भउजलु पारि उतारी ॥ ३ ॥ २८ ॥

हे सुन्दरी ! यदि तू अभिमान त्यागकर प्रभु की सेवा-भक्ति करेगी तो प्रियतम-प्रभु के मन में प्यारी लगेगी, प्रभु-भक्ति तेरे काम, क्रोध, लोभ, मोह को मिटा देगा, तेरी स्वयं उत्पादित दुर्बुद्धि समाप्त हो जायगी ॥ १ ॥ हे सुन्दरी ! हे आत्मिक आनन्द को बनाए रखने की इच्छुक जीव-स्त्री ! गुरु के वचन सुनकर तेरा दुख मिट जायगा, तेरी माया की भूख मिट जायगी और तू आत्मिक आनन्द प्राप्त करेगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे सुन्दरी ! गुरु के चरण धोकर गुरु की (बतलाई) सेवा किया कर, तेरी आत्मा पवित्र हो जायगी (यह प्रभु-भक्ति) विष को दूर कर देगी, माया की तृष्णा मिटा देगी। यदि तू परमात्मा के सेवकों की दासी बन जाए तो तू परमात्मा के दरबार में शोभा-आदर प्राप्त करेगी ॥ २ ॥ (हे सुन्दरी !) यही कुछ तेरे लिए धार्मिक रस्मों का पालन करना है, यही तेरा नित्य का व्यवहार होना चाहिए, परमात्मा की रज़ा को स्वीकार कर (की गई प्रक्रिया) तेरी प्रभु-भक्ति हो जायगी। हे नानक ! जो मनुष्य इस उपदेश के अनुसार चलता है वह संसार-समुद्र से पार उतर जाता है ॥ ३ ॥ २८ ॥

॥ आसा महला ५ दुपदे ॥ भई परापति मानुख देहुरीआ। गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ। अवरि काज तेरै कितै न काम। मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥ १ ॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै। जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ। सेवा साध न

जानिआ हरि राइआ । कहु नानक हम नीच करंमा । सरणि परे की राखहु सरमा ॥ २ ॥ २९ ॥

(हे भाई !) तुझे मनुष्य-जन्म में सुन्दर देह की प्राप्ति हुई है, यही समय परमात्मा को मिलने का है । तेरे और दूसरे काम तेरे किसी काम में नहीं आएँगे । (इसलिए) सत्संगति में बैठा कर (और वहाँ) केवल परमात्मा के नाम का भजन किया कर ॥ १ ॥ (हे भाई !) संसार-समुद्र में से पार उतरने के प्रयास में लग । माया के मोह से ग्रस्त होकर तेरा मनुष्य-जन्म व्यर्थ जा रहा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे नानक ! कह— हे प्रभु-बादशाह ! मैंने कोई जप-तप नहीं किया, और कोई इन्द्रिय-नियन्त्रण नहीं किया । हे प्रभु-बादशाह ! मैंने तो तेरे सन्तजनों के सेवा करने की जाँच नहीं सीखी । मैं कुकर्मी हूँ लेकिन अपने दास की लाज रख ॥ २ ॥ २९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ तुझ बिनु अवरु नाही मै दूजा तूं मेरे मन माही । तूं साजनु संगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराही ॥ १ ॥ तुमरी ओट तुमारी आसा । बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाही तूं सास गिरासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखु राखु सरणि प्रभ अपनी अगनि सागर विकराला । नानक के सुखदाते सतिगुर हम तुमरे बाल गुपाला ॥ २ ॥ ३० ॥

हे मेरे प्राण ! तू क्यों डरता है ? (हर वक्त इस प्रकार प्रार्थना किया कर—) हे प्रभु ! तेरे बिना मेरा कोई दूसरा सहारा नहीं, तुम सदा मेरे मन में बसे रहो । तुम ही मेरे साजन, साथी तथा मालिक हो ॥ १ ॥ मुझे तेरा ही सहारा है, मुझे तेरी सहायता की आशा रहती है । (हे प्रभु ! कृपा कर) उठते, बैठते, सोते-जागते, हरेक श्वास तथा हरेक ग्रास के साथ तुम मुझे कभी भी विस्मृत न होओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! यह आग का समुद्र (संसार) भयावह है । इसलिए मुझे अपनी शरण में टिकाए रख । हे गोपाल ! हे सतिगुरु ! हे नानक के सुखदाता वाहिगुरु ! मैं तेरा बच्चा (अंश) हूँ ॥ २ ॥ ३० ॥

॥ आसा महला ५ ॥ हरि जन लीने प्रभू छडाइ । प्रीतम सिउ मेरो मनु मानिआ तापु मुआ बिखु खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाला ताऊ कछू न बिआपै राम नाम गुन गाइ । डाकी को चिति कछू न लागै चरन कमल सरनाइ ॥ १ ॥ संत प्रसादि भए किरपाला होए आपि सहाइ । गुन निधान निति गावै नानकु सहसा दुखु मिटाइ ॥ २ ॥ ३१ ॥

(हे भाई !) परमात्मा अपने भक्तों को (माया से) आप बचा लेता है। (गुरु-कृपा से) मेरा मन भी प्रियतम परमात्मा में रम गया है, मेरा भी माया सम्बन्धी दुख ऐसे समाप्त हो गया है जैसे कोई प्राणी विष खाकर मर जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) परमात्मा के सुन्दर चरणों का आसरा लेने से (मनुष्य के) चित्त पर इस डायन का कोई ज़ोर नहीं चढ़ता। प्रभु की गुणस्तुति के गीत गाने से न तो माया का लालच दबाव डाल सकता है और न माया का भय बाध्य कर सकता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) गुरु की कृपा से प्रभु कृपालु हो गया है वह आप मेरा सहायक बना हुआ है। अब नानक भय तथा दुख दूर करके गुणों के भण्डार परमात्मा के गुण सदा गाता रहता है ॥ २ ॥ ३१ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ अउखधु खाइओ हरि को नाउ। सुख पाए दुख बिनसिआ थाउ ॥ १ ॥ तापु गइआ बचनि गुर पूरे। अनदु भइआ सभि मिटे विसूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सगल सुखु पाइआ। पारब्रहमु नानक मनि धिआइआ ॥ २ ॥ ३२ ॥

(हे भाई !) जिस मनुष्य ने परमात्मा की नाम-औषधि खाई उसके दुखों का स्रोत समाप्त हो गया और उसने आत्मिक आनन्द प्राप्त कर लिए ॥ १ ॥ गुरु के उपदेश से (नाम-औषधि लेने से) माया का ताप उतर जाता है, आत्मिक आनन्द पैदा होता है और समस्त चिन्ताएँ मिट जाती हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे नानक ! जिस-जिस मनुष्य ने परमात्मा को अपने मन में स्मरण किया, उन सबने आत्मिक आनन्द प्राप्त किया ॥२॥३२॥

॥ आसा महला ५ ॥ बांछत नाही सु बेला आई। बिनु हुकमै किउ बुझै बुझाई ॥ १ ॥ ठंढी ताती मिटी खाई। ओहु न बाला बूढा भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक दास साध सरणाई। गुरप्रसादि भउ पारि पराई ॥ २ ॥ ३३ ॥

(हे भाई !) जिसे कोई भी पसन्द नहीं करता, मृत्यु का वह समय अवश्य आ जाता है। (विडम्बना है कि जीव इस अवश्यसम्भावी मृत्यु को नहीं समझता) जब तक परमात्मा का हुक्म न होवे, जीव को कितना भी समझाइए लेकिन यह नहीं समझता ॥ १ ॥ हे भाई ! जीवात्मा (परमात्मा का अंश है जो) न कभी बालक है और न कभी बूढ़ा है (वह तो शाश्वत है केवल देह क्षणिक है) मृत शरीर को जलप्रवाह किया जाता है, आग जला देती है या मिट्टी खा जाती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे दास

नानक ! गुरु का शरणागत होकर ही, गुरु की कृपा से ही मनुष्य (मृत्यु के) भय से पार उतर सकता है ॥ २ ॥ ३३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ सदा सदा आतम परगासु । साध संगति हरि चरण निवासु ॥ १ ॥ राम नाम निति जपि मन मेरे । सीतल सांति सदा सुख पावहि किलविख जाहि सभे मन तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरन करम । सतिगुर भेटे पूरन पारब्रहम ॥ २ ॥ ३४ ॥ दूजे घर के चउतीस ॥

(हे भाई !) सत्संगति में रहकर जिस मनुष्य का मन परमात्मा के चरणों में टिका रहता है। उसे सदा सत्यस्वरूप आत्मिक जीवन का प्रकाश मिल जाता है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! सदा परमात्मा का नाम जपा कर। हे मन ! (नाम के प्रभाव से) तेरे सारे पाप दूर हो जाएँगे, तेरा अहंत्व शान्त हो जायगा, तेरे भीतर शान्ति हो जायगी और तू सदा आत्मिक आनन्द प्राप्त करता रहेगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे नानक ! कह, जिस मनुष्य के पूर्ण भाग्य जागते हैं वह ही सतिगुरु को मिलता है और सर्वगुणसम्पन्न परमात्मा को मिलता है ॥ २ ॥ ३४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जा का हरि सुआमी प्रभु बेली । पीड़ गई फिरि नही दुहेली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा चरन संगि मेली । सूख सहज आनंद सुहेली ॥ १ ॥ साध संगि गुण गाइ अतोली । हरि सिमरत नानक भई अमोली ॥ २ ॥ ३५ ॥

(हे भाई !) सब जीवों का मालिक हरि-प्रभु जिस मनुष्य का सहायक बन जाता है, उसका हरेक प्रकार का दुख-दर्द दूर हो जाता है। उसे दोबारा कभी दुख नहीं घेर सकते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस जीव को परमात्मा कृपा करके अपने चरणों में लगाता है, उसके भीतर सुख, आनन्द, आत्मिक स्थिरता आदि आ जाते हैं और उसका जीवन सुखी हो जाता है ॥ १ ॥ हे नानक ! सत्संगति में परमात्मा के गुण गाकर, परमात्मा का स्मरण कर मनुष्य अप्रतिम हो जाता है उसका कोई मूल्यांकन नहीं कर सकता ॥ २ ॥ ३५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर ए खेलत सभि जूऐ हारे । सतु संतोखु दइआ धरमु सचु इह अपुनै ग्रिह भीतरि वारे ॥ १ ॥ जनम मरन चूके सभि भारे । मिलत संगि भइओ मनु निरमलु गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले

दीसहि मीत पिआरे । सभ मधे रविआ मेरा ठाकुरु दानु देत सभि जीअ सम्हारे ॥ २ ॥ एको एकु आपि इकु एकै एकै है सगला पासारे । जपि जपि होए सगल साध जन एकु नामु धिआइ बहुतु उधारे ॥ ३ ॥ गहिर गंभीर बिअंत गुसाई अंतु नही किछु पारावारे । तुम्हरी क्रिपा ते गुन गावै नानक धिआइ धिआइ प्रभ कउ नमसकारे ॥ ४ ॥ ३६ ॥

(हे भाई ! सत्संगी मनुष्य) काम, क्रोध, माया-मोह, अहंकार, ईर्ष्या —इन सारे विकारों को (मानो) जुए की बाजी में खेलकर हार देता है और सत्य, सन्तोष, दया, धर्म —इन सब गुणों को अपने हृदय-घर में पाता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) सत्संगति में मिलकर बैठने से मन पवित्र हो जाता है, सत्संगी मनुष्य को पूर्णगुरु ने एक क्षण में (विकारों के समुद्र से) पार कर लिया, उसके जन्म-मरण के चक्र समाप्त हो गए और उसकी सब जिम्मेवारियाँ समाप्त हो गईं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सत्संगी व्यक्ति का मन सबकी चरणधूलि बन जाता है । उसे (सृष्टि के) सारे प्यारे मित्र दिखते हैं (वह विश्वास बना लेता है कि) पालनकर्ता प्रभु सब जीवों में मौजूद है और सब जीवों को देन देकर सबकी सँभाल कर रहा है ॥ २ ॥ परमात्मा का नाम-स्मरण कर सत्संगी जीव गुरमुख बन जाते हैं, एक परमात्मा का ध्यान करके वे दूसरे अनेकों को विकारों से बचा लेते हैं उनका विश्वास बन जाता है कि परमात्मा आप ही आप बस रहा है, यह सारा जगत उस एक परमात्मा का ही प्रसार है ॥ ३ ॥ हे नानक ! (कह—) हे गम्भीर प्रभु ! हे विशालमना परमेश्वर ! तेरे गुणों का अन्त नहीं हो सकता, तेरी शक्ति का आर-पार कोई नहीं ढूँढ़ सकता । जो भी जीव तेरे गुण गाता है, जो भी जीव तेरा नाम स्मरण कर तेरे आगे सिर झुकाता है, वह सब कुछ तेरी कृपा से ही करता है ॥ ४ ॥ ३६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ तू बिअंतु अविगतु अगोचरु इहु सभु तेरा आकारु । किआ हम जंत करह चतुराई जां सभु किछु तुझै मझारि ॥ १ ॥ मेरे सतिगुर अपने बालिक राखहु लीला धारि । देहु सुमति सदा गुण गावा मेरे ठाकुर अगम अपार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे जननि जठर महि प्रानी ओहु रहता नाम अधारि । अनदु करै सासि सासि सम्हारै ना पोहै अगनारि ॥ २ ॥ पर धन पर दारा पर निंदा इन सिउ प्रीति निवारि । चरन कमल सेवी रिद अंतरि गुर पूरे कै आधारि ॥ ३ ॥ ग्रिहु मंदर महला जो दीसहि

ना कोई संगारि । जब लगु जीवहि कली काल महि जन नानक नामु सम्हारि ॥ ४ ॥ ३७ ॥

तुम अनन्त हो, अलक्ष्य हो, ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच से परे हो, यह दृश्यमान जगत तेरा ही रचा हुआ है । हम तेरे द्वारा उत्पादित जीव तेरे समक्ष अपनी बुद्धिमानी का क्या दिखावा कर सकते हैं ? जो कुछ हो रहा है, सब तेरे हुक्म-अधीन हो रहा है ॥ १ ॥ हे मेरे सतिगुरु ! हे मेरे अगम्य और अनन्त ठाकुर ! अपने बच्चों को अपना कौतुक रचकर बचाए रख । मुझे सुबुद्धि दे ताकि मैं सदा तेरे गुण गाता रहूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (यह तेरा ही कौतुक है जिस प्रकार) जीव माँ के पेट में रहता हुआ तेरे नाम के आसरे जीता है (वहाँ) वह हरेक साँस के साथ तेरा नाम याद करता है और आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है । उसे माँ के पेट की अग्नि प्रभावित नहीं करती ॥ २ ॥ (जीवों की रक्षा करना तेरा विरद है इसलिए अपना विरद निभाने के लिए) पराया धन, पराई स्त्री, परनिन्दा —इन विकारों से मेरी प्रीति दूर कर । पूर्णगुरु का आसरा लेकर मैं तेरे सुन्दर चरणों का ध्यान अपने हृदय में टिकाए रखूँ ॥ ३ ॥ हे दास नानक ! (कह— हे भाई !) घर के भीतर जो भी महल-भवन तुझे दिख रहे हैं इनमें से कोई तेरे साथ नहीं जायगा (इसलिए) जब तक तू जगत में जीता है, परमात्मा का नाम अपने हृदय में धारण किए रख ॥ ४ ॥ ३७ ॥

आसा घरु ३ महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ राज मिलक जोबन ग्रिह सोभा रूपवंतु जुोआनी । बहुतु दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख बैआनी । आगै दरगहि कामि न आवै छोडि चलै अभिमानी ॥१॥ काहे एक बिना चितु लाईऐ । ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बचित्र सुंदर आखाड़े रण महि जिते पवाड़े । हउ मारउ हउ बंधउ छोडउ मुख ते एव बबाड़े । आइआ हुकमु पारब्रहम का छोडि चलिआ एक दिहाड़े ॥ २ ॥ करम धरम जुगति बहु करता करणैहारु न जानै । उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै । नांगा आइआ नांगो जासी जिउ हसती खाकु छानै ॥ ३ ॥ संत सजन सुनहु सभि मीता झूठा एहु पसारा । मेरी मेरी करि करि

डूबे खपि खपि मुए गवारा । गुर मिलि नानक नामु धिआइआ साचि नामि निसतारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३८ ॥

(हे भाई !) हुकूमत, ज़मीन की मिल्कियत, यौवन, घर, प्रतिष्ठा, सौंदर्य, बहुत धन, हाथी तथा घोड़े, और यदि लाखों रुपये खर्च करके (कीमती) लाल मोल ले आएँ, तो भी आगे परमात्मा के दरबार में (इनमें से कोई भी चीज़) काम नहीं आती। (इन पदार्थों का) अभिमान करनेवाला मनुष्य (इन सबको यहीं) छोड़कर (यहाँ से) चल पड़ता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) एक परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे में प्रीति नहीं जोड़नी चाहिए। उठते-बैठते, सोते-जागते सदा परमात्मा में सुरति जोड़ी रखनी चाहिए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि कोई मनुष्य आश्चर्यजनक कुश्तियाँ जीतता है, यदि वह रणभूमि में जाकर युद्ध जीतता है, और अपने मुँह से इस प्रकार व्यर्थ प्रलाप भी करता है कि मैं दुश्मनों को मार सकता हूँ, मैं उन्हें बाँध सकता हूँ, छोड़ भी सकता हूँ (तो भी क्या हुआ ?) आखिर एक दिन परमात्मा का हुक्म आता है (मौत आ जाती है) और यह सब कुछ छोड़कर यहाँ से चल पड़ता है ॥ २ ॥ यदि कोई मनुष्य अनेक प्रकार के धार्मिक काम करता हो लेकिन सृजनहार प्रभु के साथ मेल न करे, दूसरों को तो (धर्म का) उपदेश करता रहे पर अपना जीवन धार्मिक न बनाए और परमात्मा की गुणस्तुति की वाणी का महत्व न समझे तो वह खाली हाथ जगत में आता है और खाली हाथ ही चल पड़ता है जैसे हाथी (स्नान करके तदुपरान्त अपने ऊपर) मिट्टी डाल लेता है ॥ ३ ॥ हे सन्तजनो, हे मित्रो ! सब सुन लो, यह सारा जगत-प्रसार नाशमान है। जो मूर्ख नित्य यह कहते रहे कि यह मेरी माया है, यह मेरी सम्पत्ति है वे (माया-मोह के समुद्र में) डूबे रहे तथा दुखी होकर आत्मिक मृत्यु पाते रहे। हे नानक ! जिस मनुष्य ने सतिगुरु से मिलकर परमात्मा का नाम-स्मरण किया, सत्यस्वरूप परमात्मा के नाम में जुड़कर उसका उद्धार हो गया ॥ ४ ॥ १ ॥ ३८ ॥

रागु आसा घरु ५ महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भ्रम महि सोई सगल जगत धंध अंध । कोऊ जागै हरि जनु ॥ १ ॥ महा मोहनी मगन प्रिअ प्रीति प्रान । कोऊ तिआगै विरला ॥ २ ॥ चरन कमल आनूप हरि संत मंत । कोऊ लागै साधू ॥ ३ ॥ नानक साधू संगि जागे गिआन रंगि । वडभागे किरपा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३९ ॥

(हे भाई !) सांसारिक धन्धों में अन्धी हुई सारी दुनिया माया की दुबिधा में सुप्त है। कोई विरला परमात्मा का भक्त जाग रहा है ॥ १ ॥ (हे भाई !) मन को मोह लेनेवाली बलवान माया में दुनिया मस्त पड़ी है, (माया के साथ यह) प्रीति प्राणों की अपेक्षा भी प्रिय लग रही है। कोई विरला मनुष्य माया के इस आकर्षण को त्यागता है ॥ २ ॥ (हे भाई !) परमात्मा के सुन्दर चरणों में सन्तजनों के उपदेश में, कोई विरला गुरमुख मनुष्य मन लगाता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! कोई भाग्यवान मनुष्य, जिस पर प्रभु की कृपा हो जाए गुरु की संगति में आकर (गुरु के दिए) ज्ञान के रंग में रँगकर जागता रहता है ॥ ४ ॥ १ ॥ ३९ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ६ महला ५ ॥ जो तुधु भावै सो परवाना सूखु सहजु मनि सोई। करण कारण समरथ अपारा अवरु नाही रे कोई ॥ १ ॥ तेरे जन रसकि रसकि गुण गावहि। मसलति मता सिआणप जन की जो तूं करहि करावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रितु नामु तुमारा पिआरे साधसंगि रसु पाइआ। त्रिपति अघाइ सेई जन पूरे सुख निधानु हरि गाइआ ॥ २ ॥ जा कउ टेक तुम्हारी सुआमी ता कउ नाही चिंता। जा कउ दइआ तुमारी होई से साह भले भगवंता ॥ ३ ॥ भरम मोह ध्रोह सभि निकसे जब का दरसनु पाइआ। वरतणि नामु नानक सचु कीना हरि नामे रंगि समाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४० ॥

हे प्रभु ! जो कुछ तुझे भला लगता है वही तेरे सेवकों को स्वीकार्य होता है, तेरी रज़ा ही उनके मन में आनन्द तथा आत्मिक टिकाव पैदा करती है। हे प्रभु ! तुझे ही तेरे दास सब कुछ करने और जीवों से कराने की शक्ति रखनेवाला मानते हैं, तुम ही उनकी दृष्टि में अनन्त हो। हे भाई ! परमात्मा के दासों को परमात्मा के बराबर कोई नहीं दिखाई देता ॥ १ ॥ तेरे दास पुनःपुनः चाव से तेरे गुण गाते हैं। जो कुछ तुम आप करते हो, जो कुछ तुम जीवों से कराते हो उसका अनुसरण करना तेरे सेवकों के लिए चतुराई है, वही सलाह-मशवरा तथा निर्णय है ॥१॥रहाउ॥ हे प्यारे प्रभु ! तेरे दासों के लिए तेरा नाम आत्मिक जीवन देनेवाला है, सत्संगति में बैठकर वे आनन्द अनुभव करते हैं। (हे भाई !) जिन्होंने सुखों के भण्डार हरि की गुणस्तुति की वे मनुष्य सर्वगुण-सम्पन्न हो गए, वही मनुष्य (माया की तृष्णा से) तृप्त हो गए ॥ २ ॥ हे स्वामी ! जिन

मनुष्यों को तेरा आसरा है उन्हें कोई चिन्ता नहीं छू सकती। हे स्वामी! जिन पर तेरी कृपा होती है वे (नाम-धन से) साहूकार बन गए और भाग्यशाली हो गए ॥ ३ ॥ हे नानक! (कह—) जब भी कोई मनुष्य परमात्मा का दर्शन कर लेता है (उसके भीतर से) दुबिधा, मोह, ठगी आदि सारे विकार निकल जाते हैं। वह मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा के नाम को दैनिक व्यवहार की वस्तु बना लेता है वह प्रभु के प्रेम-रंग में रँगकर नाम में ही लीन रहता है ॥ ४ ॥ १ ॥ ४० ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जनम जनम की मलु धोवै पराई आपणा कीता पावै। ईहा सुखु नही दरगह ढोई जम पुरि जाइ पचावै ॥ १ ॥ निंदकि अहिला जनमु गवाइआ। पहुचि न साकै काहू बातै आगै ठउर न पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरतु पइआ निंदक बपुरे का किआ ओहु करै बिचारा। तहा बिगूता जह कोइ न राखै ओहु किसु पहि करे पुकारा ॥ २ ॥ निंदक की गति कतहूं नाही खसमै एवै भाणा। जो जो निंद करे संतन की तिउ संतन सुखु माना ॥ ३ ॥ संता टेक तुमारी सुआमी तूं संतन का सहाई। कहु नानक संत हरि राखे निंदक दीए रुड़ाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥

(निंदक) दूसरों के अनेक जन्मों के किए गए विकारों की मैल धोता है और अपने किए कर्मों का दुष्प्रभाव (कुफल) स्वयं भोगता है। उसे इस लोक में सुख नहीं मिलता, परमात्मा के दरबार में भी उसे आदर का स्थान नहीं मिलता (इसलिए) वह नरक में पहुँचकर दुखी होता रहता है ॥ १ ॥ (हे भाई!) सन्तों के निंदक ने कीमती मनुष्य-जन्म गवाँ लिया वह किसी बात में भी (सन्तजनों) की बराबरी नहीं कर सकता, यहीं नहीं बल्कि आगे परलोक में भी उसे आदर का स्थान नहीं मिलता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लेकिन निंदक के भी वश की बात नहीं (वह भी विवश है) उसके पूर्व जन्मों में किए संस्कार उस अभागे निंदक के पल्ले पड़ जाते हैं। निंदक ऐसी अधोगामी आत्मिक अवस्था में दुखी होता रहता है कि वहाँ कोई उसकी मदद नहीं कर सकता। सहायता के लिए वह किसी के पास पुकारने योग्य भी नहीं रहता ॥ २ ॥ पति-प्रभु की रज़ा यही है कि निंदक मनुष्य को कहीं भी ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। (दूसरी ओर) ज्यों-ज्यों कोई मनुष्य सन्तजनों की निंदा करता है त्यों-त्यों सन्तजन भी इसमें सुख अनुभव करते हैं (उन्हें अपने आपको परखने का अवसर मिलता है) ॥ ३ ॥ हे मालिक-प्रभु! तेरे सन्तों को सदा तेरा सहारा रहता है, तुम ही सन्तों के सहायक भी बनते हो। हे नानक! कह— सन्तों को तो परमात्मा

(कुकर्मों से) बचाए रखता है पर निंदकों को (निंदा की बाढ़ में) बहा देता है अर्थात् निंदक पुरुष अपने कुकर्मों में ही जीवन गवाँ देता है ॥४॥२॥४१॥

॥ आसा महला ५ ॥ बाहरु धोइ अंतरु मनु मैला दुइ ठउर अपुने खोए। ईहा कामि क्रोधि मोहि विआपिआ आगै मुसि मुसि रोए ॥ १ ॥ गोविंद भजन की मति है होरा। वरमी मारी सापु न मरई नामु न सुनई डोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ की किरति छोडि गवाई भगती सार न जानै। बेद सासत्र कउ तरकनि लागा ततु जोगु न पछानै ॥ २ ॥ उघरि गइआ जैसा खोटा ढबूआ नदरि सराफा आइआ। अंतरजामी सभु किछु जानै उस ते कहा छपाइआ ॥ ३ ॥ कूड़ि कपटि बंचि निमुनीआदा बिनसि गइआ ततकाले। सति सति सति नानकि कहिआ अपनै हिरदै देखु समाले ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४२ ॥

जो मनुष्य शरीर धोकर भीतरी मन मैला ही रखता है वह लोक-परलोक अपने दोनो स्थान गवाँ लेता है। इहलोक में कामवासना, क्रोध, मोह में फँसा रहता है और आगे परलोक में फूट-फूटकर रोता है ॥ १ ॥ (हे भाई!)परमात्मा का भजन करनेवाली बुद्धि और प्रकार की होती है। यदि मनुष्य परमात्मा का नाम नहीं सुनता, यदि नाम की ओर से बहरा रहता है (तो बाह्य कर्म तो सर्प के बिल को पीटने के बराबर है) लेकिन बिल को जितना चाहे पीटे जाएँ इस प्रकार साँप नहीं मरता अर्थात् बाहरी दिखावे से मन नियंत्रित नहीं होता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (जिस मनुष्य ने भ्रमवश जीवन यापन करने के लिए) माया कमाने का उद्यम छोड़ दिया वह भक्ति का महत्व भी नहीं जानता, जो मनुष्य वेद-शास्त्र आदि धार्मिक पुस्तकों को केवल वाद-विवाद तक रखता है वह उनकी वास्तविकता नहीं समझता, वह परमात्मा का मिलाप नहीं समझता ।। २ ।। जब कोई खोटा रुपया सर्राफों की दृष्टि में पड़ता है तो उसका खोट प्रत्यक्ष दिखाई दे जाता है। वैसे ही कोई जीव परमात्मा से अपना (भीतरी दोष) छिपा नहीं सकता, हरेक के मन की जाननेवाला परमात्मा उसकी हरेक करतूत को जानता है ॥ ३ ॥ मनुष्य की इस जगत में चार दिन की ज़िन्दगी है लेकिन यह मोह, ठगी-फ़रेब आदि में आत्मिक जीवन लुटाकर बड़ी जल्दी ही आत्मिक मौत मर जाता है। हे भाई ! नानक ने यह बात विश्वस्त रूप से सत्य कही है कि परमात्मा के नाम को अपने हृदय में बसाकर उसे अपने भीतर बसता देख अर्थात् परमात्म-अनुभव करता हुआ जीवन व्यतीत कर ॥४॥३॥४२॥

॥ आसा महला ५ ॥ उदमु करत होवै मनु निरमलु नाचै आपु निवारे। पंच जना ले वसगति राखै मन महि एकंकारे ॥१॥ तेरा जनु निरति करे गुन गावै। रबाबु पखावज ताल घुंघरू अनहद सबदु वजावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै। राम नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ॥ २ ॥ कर संगि साधू चरन पखारै संत धूरि तनि लावै। मनु तनु अरपि धरे गुर आगै सति पदारथु पावै ॥ ३ ॥ जो जो सुनै पेखै लाइ सरधा ता का जनम मरन दुखु भागै। ऐसी निरति नरक निवारै नानक गुरमुखि जागै ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४३ ॥

कोई भक्त ज्यों-ज्यों प्रभु के गुणगान का प्रयत्न करता है उसका मन पवित्र होता जाता है, वह अपने भीतर से अहंत्व दूर कर लेता है, (यह, मानो) वह (परमात्मा के दरबार में) नाच करता है। वह अपने मन में परमात्मा को बसाए रखता है और (इस प्रकार) कामादिक पाँच शत्रुओं को वश में रखता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तेरा भक्त गुणस्तुति के गीत गाता है (यह, मानो) वह नाच करता है। हे प्रभु ! तेरा भक्त तेरी गुणस्तुति का शब्द-रूपी बाजा लगातार बजाता रहता है अर्थात् वह प्रतिपल प्रभु-स्मरण में लीन रहता है यही उसके लिए रबाब, तबला, घुँघरू (आदि वाद्ययन्त्रों का बजाना) है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईश्वरभक्त पहले अपने मन को (मोहनिद्रा से) जगाता है, फिर दूसरों के भीतर (गुणस्तुति की) ललक पैदा करता है, पहले वह अपने हृदय में परमात्मा के नाम का जाप करता है और फिर मुँह से वह जाप दूसरों को भी सुनाता है ॥ २ ॥ (परमात्मा का सेवक) अपने हाथों से गुरमुखों के चरण छूता है, सन्तजनों के चरणों की धूलि अपने शरीर पर लगाता है, अपना मन गुरु के हवाले करता है, अपना शरीर गुरु के हवाले करता है और गुरु से सत्य-स्वरूप हरि-नाम प्राप्त करता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! जो-जो मनुष्य विश्वास करके परमात्मा के गुणस्तुति रूपी नृत्य को सुनता तथा देखता है उसके जन्म-मरण के चक्र का दुख दूर हो जाता है। ऐसा नाच गुरु की शरण लेनेवाले मनुष्य को नरकों से बचा लेता है और इससे वह (मोहनिद्रा से) जाग पड़ता है ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ अधम चंडाली भई ब्रहमणी सूदी ते स्रेसटाई रे। पाताली आकासी सखनी लहबर बूझी खाई रे ॥१॥ घर की बिलाई अवर सिखाई मूसा देखि डराई रे। अज कै वसि गुरि कीनो केहरि कूकर तिनहि लगाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाझु

थूनीआ छपरा थाम्हिआ नीघरिआ घरु पाइआ रे । बिनु जड़ीए लै जड़िओ जड़ावा थेवा अचरजु लाइआ रे ॥ २ ॥ दादी दादि न पहुचनहारा चूपी निरनउ पाइआ रे । मालि दुलीचै बैठी ले मिरतकु नैन दिखालनु धाइआरे ॥ ३ ॥ सोई अजाणु कहै मै जाना जानणहारु न छाना रे । कहु नानक गुरि अमिउ पीआइआ रसकि रसकि बिगसाना रे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४४ ॥

हे भाई ! नाम-अमृत के प्रभाव से अत्यन्त नीच चाण्डालिनी-वृत्ति (मानो) ब्राह्मणी बन गई और शूद्रा से कुलीना हो गई । जो वृत्ति पहले पाताल से लेकर आकाश तक सारी दुनिया के पदार्थ लेकर भी भूखी रहती थी उसकी तृष्णा-अग्नि की लपट बुझ गई ॥ १ ॥ (जिस मनुष्य को गुरु ने नाम-अमृत पिला दिया उसकी पहली) सन्तोषहीन वृत्ति रूपी बिल्ली अब दूसरे प्रकार की शिक्षा लेती है वह दुनियावी पदार्थ (चूहा) देखकर लालच करने में संकोच करती है । गुरु ने उसके अहंकार-सिंह को तृष्णा-बकरी के अधीन कर दिया । उसकी तमोगुणी इन्द्रियों (कुतियों) को सतोगुणी दिशा में लगा दिया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईश्वर-भक्त जीव का मन रूपी छप्पर लौकिक पदार्थों की इच्छाओं की थमलों के बिना थम गया, उसके भटकते मन ने (प्रभु-चरणों में) ठिकाना प्राप्त कर लिया । कारीगर स्वर्णकारों के बिना ही (उसके मन का) जड़ाऊ गहना तैयार हो गया और उस मन-गहने में परमात्मा के नाम का सुन्दर नग जड़ दिया गया ॥ २ ॥ (हे भाई ! परमात्मा के चरणों से बिछुड़कर नित्य) शिकायत करनेवाला (मनोवांछित) न्याय कभी भी प्राप्त नहीं कर सकता था परन्तु अब प्रभु से ऐक्य होने पर शान्तचित्त हुए को न्याय मिलने लगा । (उसका) दूसरों को घूरनेवाला स्वभाव समाप्त हो गया, दलीचे बिछाकर बैठनेवाली (अहंकार-भरी वृत्ति) उसे अब आत्मिक मृत्यु को प्राप्त दिखाई पड़ने लगी ॥ ३ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य केवल मौखिक रूप में सब कुछ समझने की बात करता है वह अभी मूर्ख है । जिसने (नाम-रस को) समझ लिया है वह कभी छिपा नहीं रहता है । हे नानक ! कह— जिसे गुरु ने आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-रस पिला दिया है वह इस नाम-जल का आस्वाद महसूस कर सदा खिला रहता है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ बंधन काटि बिसारे अउगन अपना बिरदु सम्हारिआ । होए क्रिपाल मात पित निआई बारिक जिउ प्रतिपारिआ ॥ १ ॥ गुर सिख राखे गुर गोपालि । काढि लीए महा भवजल ते अपनी नदरि निहालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै

सिमरणि जम ते छुटीऐ हलति पलति सुखु पाईऐ। सासि गिरासि जपहु जपु रसना नीत नीत गुण गाईऐ ॥ २ ॥ भगति प्रेम परम पदु पाइआ साध संगि दुख नाठे। छिजै न जाइ किछु भउ न बिआपे हरि धनु निरमलु गाठे ॥ ३ ॥ अंति काल प्रभ भए सहाई इत उत राखनहारे। प्रान मीत हीत धनु मेरै नानक सद बलिहारे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥

(हे भाई ! गुरु के शरणागत सिक्खों के माया सम्बन्धी) बंधन काटकर परमात्मा उनके अवगुणों को भुला देता है और अपना विरद स्मरण रखता है, माँ-बाप के समान उन पर दयालु होता है और बच्चों के समान उन्हें पालता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) गुरु के शरणागत सिक्खों को सर्वोच्च जगतपालक-प्रभु (विकारों से) बचा लेता है। अपनी कृपादृष्टि से देखकर उन्हें बड़े संसार-समुद्र से निकाल लेता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस परमात्मा के स्मरण द्वारा यमों से छुटकारा पाया जाता है, लोक-परलोक में सुख पाया जाता है, (हे भाई !) प्रत्येक साँस, प्रत्येक ग्रास द्वारा उसका नाम जिह्वा से जपा करो। आइए, सदा ही उसकी गुणस्तुति के गीत गाते रहें ॥ २ ॥ (हे भाई ! गुरु के शरणागत) सिक्खों के पास परमात्मा के नाम का पवित्र धन एकत्रित हो जाता है (उस धन को चोर आदि का) भय नहीं होता, वह धन घटता नहीं, वह धन गुम नहीं होता, सत्संगति में आकर उन गुरमुखों के दुख दूर हो जाते हैं, परमात्मा के प्रेम और भक्ति के प्रभाव से वे सर्वोच्च आत्मिक स्थान प्राप्त कर लेते हैं ॥ ३ ॥ (हे भाई !) प्रभु अन्तिम समय में भी सहायक बनते हैं, इस लोक तथा परलोक में रक्षा करते हैं। हे नानक ! (कहो) मैं सदा परमात्मा पर बलिहारी जाता हूँ। उसका नाम ही मेरे पास ऐसा धन है जो मेरी आत्मा का सहायक तथा मेरा मित्र है ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जा तूं साहिबु ता भउ केहा हउ तुधु बिनु किसु सालाही। एकु तूं ता सभु किछु है मै तुधु बिनु दूजा नाही ॥ १ ॥ बाबा बिखु देखिआ संसारु। रखिआ करहु गुसाई मेरे मै नामु तेरा आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाणहि बिरथा सभा मन की होरु किसु पहि आखि सुणाईऐ। विणु नावै सभु जगु बउराइआ नामु मिलै सुखु पाईऐ ॥ २ ॥ किआ कहीऐ किसु आखि सुणाईऐ जि कहणा सु प्रभ जी पासि। सभु किछु कीता तेरा वरतै सदा सदा तेरी आस ॥ ३ ॥ जे देहि वडिआई

ता तेरी वडिआई इत उत तुझहि धिआउ । नानक के प्रभ सदा सुखदाते मै ताणु तेरा इकु नाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥

हे प्रभु ! यदि तुम मालिक रक्षा करो तो कोई भय नहीं हो सकता, मैं तेरे अतिरिक्त किसी दूसरे की प्रशंसा नहीं करता । हे प्रभु ! यदि तुम अकेले ही मेरी ओर रहो तो हरेक चीज़ मेरे पास है, तेरे अतिरिक्त मेरा दूसरा कोई सहायक नहीं है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! मैंने देख लिया है कि संसार विष है (जो जीव के भीतर मोह पैदा करता है) । हे मेरे पति-प्रभु ! (इस विष से) मुझे बचाए रख, तेरा नाम मेरी जिन्दगी का आसरा बना रहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम ही (हरेक जीव के) मन की समस्त पीड़ा समझते हो, तुमसे अलग किसी दूसरे को अपने मन का दुख-दर्द कहना व्यर्थ है । (हे भाई !) परमात्मा के नाम से रहित होकर सारा जगत पागल हुआ फिरता है । यदि परमात्मा का नाम प्राप्त हो जाए तो आत्मिक आनन्द प्राप्त किया जाता है ॥ २ ॥ (हे भाई ! अपने मन का दुख-दर्द) जो कुछ भी कहना हो परमात्मा के पास ही कहना चाहिए । उसके अतिरिक्त किसी दूसरे को कुछ नहीं कहना चाहिए । हे प्रभु ! जगत में जो कुछ हो रहा है सब कुछ तेरा किया हुआ हो रहा है । हम जीवों को सदा तेरी सहायता की ही आस हो सकती है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! यदि तुम मुझे कोई मान-सत्कार देते हो तो इससे भी तेरी शोभा ही फैलती है क्योंकि मैं तो लोक तथा परलोक में तेरा ध्यान करता हूँ । हे नानक के प्रभु ! हे सदैव सुखदायक प्रभु ! तेरा नाम ही मेरे लिए सहारा है ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ अंम्रितु नामु तुम्हारा ठाकुर एहु महारसु जनहि पीओ। जनम जनम चूके भै भारे दुरतु बिनासिओ भरमु बीओ ॥ १ ॥ दरसनु पेखत मै जीओ । सुनि करि बचन तुम्हारे सतिगुर मनु तनु मेरा ठारु थीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते भइओ साध संगु एहु काजु तुम्ह आपि कीओ । दिड़ु करि चरण गहे प्रभ तुम्हरे सहजे बिखिआ भई खीओ ॥ २ ॥ सुख निधान नामु प्रभ तुमरा एहु अबिनासी मंत्रु लीओ । करि किरपा मोहि सतिगुरि दीना तापु संतापु मेरा बैरु गीओ ॥ ३ ॥ धंनु सु माणस देही पाई जितु प्रभि अपनै मेलि लीओ । धंनु सु कलिजुगु साध संगि कीरतनु गाईऐ नानक नामु अधारु हीओ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥

हे ठाकुर ! तेरा नाम आत्मिक जीवन देनेवाला जल है । यह श्रेष्ठ

रस (गुरु की सहायता से) किसी दास ने ही पान किया है और जिसने पान किया है उसके जन्म-जन्मान्तरों के भय और पूर्वकृत भार समाप्त हो गए, उसके भीतर से पाप नष्ट हो गया, उसके भीतर से दुबिधा दूर हो गई ॥१॥ हे सतिगुरु ! तेरा दर्शन करके मेरे भीतर आत्मिक जीवन पैदा हो जाता है, तेरे वचन सुनकर मेरा तन-मन बिल्कुल शान्त हो जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तेरी कृपा से (मुझे) गुरु की संगति प्राप्त हुई। यह काम तूने आप ही किया, मैंने तेरे चरण कसकर पकड़ लिए, मैं आत्मिक स्थिरता में टिक गया और अब (मेरे भीतर से) माया का ज़ोर ख़त्म हो गया है ॥ २ ॥ हे सुखों के भण्डार प्रभु ! तेरा अनश्वर नाम-मन्त्र मैंने जपना शुरू कर दिया, तेरा यह नाम-मन्त्र सतिगुरु ने कृपा करके मुझे दिया जिसके प्रभाव से मेरे भीतर से दुख-क्लेश तथा वैर-विरोध दूर हो गया ॥ ३ ॥ हे नानक ! (कहो—) मुझे सौभाग्यशाली मनुष्य-देह मिला जिससे प्रभु ने मुझे अपने चरणों में लगा लिया। यह कलियुग भी मांगलिक है यदि गुरु की संगति में टिककर परमात्मा का कीर्तन किया जाए और यदि परमात्मा का नाम हृदय का आसरा बना रहे ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ आगै ही ते सभु किछु हूआ अवरु कि जाणै गिआना। भूल चूक अपना बारिकु बखसिआ पारब्रहम भगवाना ॥ १ ॥ सतिगुरु मेरा सदा दइआला मोहि दीन कउ राखि लीआ। काटिआ रोगु महा सुखु पाइआ हरि अंम्रितु मुखि नामु दीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक पाप मेरे परहरिआ बंधन काटे मुकत भए। अंध कूप महा घोर ते बाह पकरि गुरि काढि लीए ॥ २ ॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ राखे राखनहारे। ऐसी दाति तेरी प्रभ मेरे कारज सगल सवारे ॥ ३ ॥ गुण निधान साहिब मनि मेला। सरणि पइआ नानक सोहेला ॥४॥९॥४८॥

जो कृपा मुझ पर हुई है, परमात्मा द्वारा ही हुई है —इसके बिना जीव दूसरा क्या ज्ञान समझ सकता है ? मेरी अनेक भूल-चूक देखकर भी पारब्रह्म भगवान ने मुझे अपने बच्चे को क्षमा कर लिया है ॥ १ ॥ (हे भाई !) मेरा सतिगुरु सदा ही दयालु रहता है उसने मुझ दरिद्र को (आत्मिक मौत लानेवाले रोग से) बचा लिया। (सतिगुरु ने) मेरे मुँह में परमात्मा का, आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल डाला (मेरा विकारों का) रोग कट गया और मुझे बड़ा आत्मिक आनन्द प्राप्त हुआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) गुरु ने मेरे अनेक पाप दूर कर दिए हैं, मेरे बन्धन काट दिए हैं, मैं समस्त बन्धनों से मुक्त हो गया हूँ। गुरु ने मेरी बाँह पकड़कर मुझे (माया-मोह के) घोर अँधेरे कुएँ से निकाल लिया है ॥ २ ॥

(हे भाई ! विकारों से) बचाने की सामर्थ्य रखनेवाले परमात्मा ने मुझे बचा लिया है, अब उस ओर से निश्चिन्त हूँ और मेरा हर प्रकार का भय दूर हो गया है। हे मेरे प्रभु ! तेरी मुझ पर ऐसी कृपा हुई है कि मेरे (आत्मिक जीवन के) समस्त कार्य पूर्ण हो गए हैं ॥ ३ ॥ हे नानक ! (कहो— हे भाई !) गुणों के भण्डार मालिक-प्रभु का मेरे मन में मिलाप हो गया है। अब मैं प्रभु की शरण में हूँ मैं सुखी हो गया हूँ ॥४॥९॥४८॥

॥ आसा महला ५ ॥ तूं विसरहि तां सभु को लागू चीति आवहि तां सेवा। अवरु न कोऊ दूजा सूझै साचे अलख अभेवा ॥ १ ॥ चीति आवै तां सदा दइआला लोगन किआ वेचारे। बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुम्हारे ॥१॥ रहाउ ॥ तेरी टेक तेरा आधारा हाथ देइ तूं राखहि। जिसु जन ऊपरि तेरी किरपा तिस कउ बिपु न कोऊ भाखै ॥ २ ॥ ओहो सुखु ओहा वडिआई जो प्रभ जी मनि भाणी। तूं दाना तूं सद मिहरवाना नामु मिलै रंगु माणी ॥ ३ ॥ तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा। कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥ ४ ॥ १० ॥ ४९ ॥

हे प्रभु ! यदि तुम मुझे विस्मृत हो जाओ तो हरेक जीव मुझे शत्रु लगता है, लेकिन यदि तुम मेरे मन में आ बसो तो प्रत्येक जीव मेरा आदर-सत्कार करता है। हे सदा सत्यस्वरूप, अलक्ष्य, अभेद प्रभु ! मुझे (जगत में) तेरे बराबर दूसरा कोई दिखाई नहीं देता ॥ १ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य के मन में परमात्मा की याद टिकी रहती है उस पर परमात्मा दयालु रहता है, दुनिया के सामान्य लोग उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। हे प्रभु ! सारे जीव तेरे द्वारा उत्पादित हैं। फिर बतला, किसे अच्छा कहा जा सकता है और किसे बुरा कहा जा सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! मुझे तेरी ही ओट है, तेरा ही सहारा है, तू अपना हाथ देकर आप (हमारी) रक्षा करता है। जिस मनुष्य पर तेरी कृपादृष्टि होवे उसे कोई मनुष्य बुरा वचन नहीं कहता ॥२॥ हे प्रभुजी ! जो बात तुझे अपने मन में भली लगती है वही मेरे लिए सुख है, वही मेरे लिए आदर-सत्कार है। तुम सबके मन की जाननेवाले हो, तुम सदा सब जीवों पर दयावान रहते हो। मैं तभी आनन्द महसूस कर सकता हूँ जब मुझे तेरा नाम मिला रहे ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तेरे समक्ष मेरी प्रार्थना है— मेरी यह देह तथा आत्मा सब कुछ तेरा दिया हुआ है। हे नानक ! कहो— सांसारिक शोभा तेरी ही दी हुई महानता है। तुझे भुलाने पर कोई जीव मेरा नाम पता करने की भी परवाह न करे ॥ ४ ॥ १० ॥ ४९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ करि किरपा प्रभ अंतरजामी साध संगि हरि पाईऐ । खोलि किवार दिखाले दरसनु पुनरपि जनमि न आईऐ ॥ १ ॥ मिलउ परीतम सुआमी अपुने सगले दूख हरउ रे । पारब्रहमु जिन्हि रिदै अराधिआ ता कै संगि तरउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा उदिआन पावक सागर भए हरख सोग महि बसना । सतिगुरु भेटि भइआ मनु निरमलु जपि अंम्रितु हरि रसना ॥ २ ॥ तनु धनु थापि कीओ सभु अपना कोमल बंधन बांधिआ । गुरपरसादि भए जन मुकते हरि हरि नामु अराधिआ ॥ ३ ॥ राखि लीए प्रभि राखनहारै जो प्रभ अपुने भाणे । जीउ पिंडु सभु तुम्हरा दाते नानक सद कुरबाणे ॥ ४ ॥ ११ ॥ ५० ॥

हे सबके मन की जाननेवाले प्रभु ! कृपा कर (जिससे गुरु की प्राप्ति हो क्योंकि) गुरु की संगति में रहने से परमात्मा मिल जाता है (जो) हमारे कपाट खोलकर अपना दर्शन कराता है और तदुपरान्त जन्मों के चक्र में नहीं पड़ा जाता ॥ १ ॥ हे भाई ! मैं अपने प्यारे पति-प्रभु से मिल लूँ। जिस मनुष्य ने पारब्रह्म प्रभु को अपने हृदय में स्मरण किया है, मैं भी उसकी संगति में रहकर संसार-समुद्र से पार उतर जाऊँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई ! प्रभु से वियुक्त जीव के लिए जगत) एक बड़ा जंगल बन जाता है (जिसमें मनुष्य भटकता फिरता है), आग का समुद्र बन जाता है (जिसमें मनुष्य जलता रहता है)। कभी सुख और कभी दुख में बसता है। जिस मनुष्य को गुरु मिल जाता है, उस मनुष्य का मन आत्मिक जीवन देनेवाला हरिनाम जिह्वा से जपकर पवित्र हो जाता है ॥ २ ॥ (हे भाई !) इस शरीर एवं धन को अपना मानकर, जीव (माया-मोह के) मीठे-मीठे बन्धनों में बँधे रहते हैं, पर जिन मनुष्यों ने परमात्मा के नाम की उपासना की, वे गुरु की कृपा से इन लौकिक बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं ॥ ३ ॥ (हे भाई !) जो मनुष्य, प्यारे प्रभु को भले लगते हैं, उन्हें रक्षक प्रभु ने बचा लिया। हे नानक ! (कहो—) हे दाता ! यह देह तथा आत्मा तेरे दिए हैं, मैं तुझ पर बलिहारी हूँ ॥ ४ ॥ ११ ॥ ५० ॥

॥ आसा महला ५ ॥ मोह मलन नीद ते छुटकी कउनु अनुग्रहु भइओ री । महा मोहनी तुधु न विआपै तेरा आलसु कहा गइओ री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु गाखरो संजमि कउन छुटिओ री । सुरि नर देव असुर त्रैगुनीआ सगलो भवनु लुटिओ री ॥ १ ॥ दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोई

हरिआ बूटु रहिओ री । ऐसो समरथु वरनि न साकउ ता की उपमा जात न कहिओ री ।। २ ।। काजर कोठ महि भई न कारी निरमल बरनु बनिओ री । महा मंत्रु गुर हिरदै बसिओ अचरज नामु सुनिओ री ।। ३ ।। करि किरपा प्रभ नदरि अवलोकन अपुनै चरणि लगाई । प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ।। ४ ।। १२ ।। ५१ ।।

हे जीवात्मा ! तू मन को मैला करनेवाली मोह की नींद से बच गई है, तुझ पर कौन सी कृपा हुई है ? (जीवों के मन को) मोह लेनेवाली शक्तिशाली माया भी तुझ पर दबाव नहीं डाल सकती, तेरा आलस्य भी सदा के लिए समाप्त हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। हे बहन ! यह काम, क्रोध, अहंकार बड़ी बेचैनी देनेवाले हैं, (तेरे भीतर से) किस युक्ति से इनका नाश हुआ ? हे बहन ! भले मनुष्य, देव, दैत्य, समस्त त्रिगुणात्मक जीव —सारा जगत ही इन्होंने लूट लिया है ।। १ ।। हे सहेली ! जब जंगल को आग लगती है तो बहुत सारा घास-फूँस जल जाता है, कोई विरला ही हरा वृक्ष बचता है (जो बच जाता है वह जितेन्द्रिय है) ; ऐसे शक्तिमान पुरुष की आत्मिक अवस्था मैं व्यक्त नहीं कर सकती । मैं बतला नहीं सकती कि उस जैसा दूसरा कौन हो सकता है ।। २ ।। (उपर्युक्त अंश में जिस प्रश्न का उल्लेख है उसका उत्तर अगले अंश में है) । हे बहन ! मेरे हृदय में सतिगुरु का (शब्द रूप) बड़ा शक्तिशाली मन्त्र बस रहा है, मैं आश्चर्यजनक (शक्ति वाले) प्रभु का नाम सुनती रहती हूँ, (इसलिए इस) काजल-भरी कोठरी (संसार में रहते हुए भी) मैं विकारों की कालिख से काली नहीं हुई, मेरा साफ़-सुथरा रंग भी टिका रहा है ।। ३ ।। हे नानक ! (कहो—) हे बहन ! प्रभु ने कृपा करके अपनी कृपादृष्टि से मुझे देखा, मुझे अपने चरणों में लगाए रखा, मुझे उसका प्रेम प्राप्त हुआ, मुझे उसकी भक्ति (की देन) मिली, जिससे मैं आत्मिक आनन्द महसूस कर रही हूँ, और सत्संगति में लीन रहती हूँ ।। ४ ।। १२ ।। ५१ ।।

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। रागु आसा घरु ७ महला ५ ।।

लालु चोलना तै तनि सोहिआ । सुरिजन भानी तां मनु मोहिआ ।। १ ।। कवन बनी री तेरी लाली । कवन रंगि तूं भई गुलाली ।। १ ।। रहाउ ।। तुम ही सुंदरि तुमहि सुहागु । तुम घरि लालनु तुम घरि भागु ।। २ ।। तूं सतवंती तूं परधानि । तूं प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि ।। ३ ।। प्रीतम भानी तां रंगि

गुलाल। कहु नानक सुभ द्रिसटि निहाल ॥ ४ ॥ सुनि री सखी इह हमरी घाल। प्रभ आपि सीगारि सवारनहार ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ५२ ॥

(हे बहन!) तेरे शरीर पर लाल रंग का वस्त्र सुशोभित है। तू सज्जन हरि को प्यारी लग रही है, इसलिए तूने मेरा मन भी मोह लिया है ॥ १ ॥ हे बहन! (बता,) तेरे मुख पर लालिमा कैसे बन गई है? किस रंग के प्रभाव से तू सुन्दर गहरे रंग वाली बन गई है? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे बहन! तू बड़ी सुन्दर दिखाई दे रही है, तेरा सौभाग्य उदित हो गया है (लगता है कि) तेरे हृदय-घर में पति-प्रभु आ बसा है; तेरे हृदय-घर में भाग्य जाग गया है ॥ २ ॥ हे बहन! तू सदाचारी हो गई है, अब सर्वत्र मान-सत्कार पा रही है। (यदि) तू पति-प्रभु को अच्छी लग रही है (तो) तू श्रेष्ठ ज्ञान वाली बन गई है ॥ ३ ॥ हे नानक! कहो— (हे बहन! मैं) पति-प्रभु को भली लग गई हूँ, इसलिए मैं गहन प्रेम-रंग में रँग गई हूँ, वह पति-प्रभु मुझे भली दृष्टि से देखता है ॥ ४ ॥ (लेकिन) हे सहेली! तू पूछती है यही मेहनत है जो मैंने की कि उस सुन्दरता की देन देनेवाले प्रभु ने आप ही मुझे (अपने प्रेम की देन देकर) सुन्दर बना लिया है ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ५२ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ दूखु घनो जब होते दूरि। अब मसलति मोहि मिली हदूरि ॥ १ ॥ चुका निहोरा सखी सहेरी। भरमु गइआ गुरि पिर संगि मेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निकटि आनि प्रिअ सेज धरी। काणि कढन ते छूटि परी ॥ २ ॥ मंदरि मेरै सबदि उजारा। अनद बिनोदी खसमु हमारा ॥ ३ ॥ मसतकि भागु मै पिरु घरि आइआ। थिरु सोहागु नानक जन पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५३ ॥

हे सहेली! जब मैं प्रभु-चरणों से दूर रहती थी मुझे बहुत दुख (होता था) अब (गुरु की) शिक्षा के प्रभाव से (मुझे) प्रभु का सामीप्य प्राप्त हो गया है (इसलिए तमाम दुख से छुटकारा हो गया है) ॥ १ ॥ हे सहेली! मुझे गुरु ने पति-प्रभु के साथ मिला दिया है, अब मेरी दुबिधा दूर हो गई है और उलाहना देना समाप्त हो गया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे सहेली! (गुरु ने) मुझे प्रभु-चरणों के निकट लाकर प्यारे प्रभु-पति की सेज पर बिठा दिया है (प्रभु-चरणों में जोड़ दिया है)। अब (हर व्यक्ति का) आसरा लेने से बच गई हूँ ॥ २ ॥ (हे सहेली!) गुरु के उपदेश से मेरे हृदय-मन्दिर में (सही आत्मिक जीवन का) प्रकाश हो गया है, तमाम आनन्द

तथा कौतुक-तमाशों का मालिक मेरा पति-प्रभु (मुझे मिल गया है) ।। ३ ।। हे दास नानक ! (कहो— हे सखी !) मेरे माथे का सौभाग्य जाग पड़ा है (क्योंकि) मेरा पति-प्रभु मेरे (हृदय-) घर में आ गया है, मैंने अब यह सौभाग्य प्राप्त कर लिया है ।। ४ ।। २ ।। ५३ ।।

।। आसा महला ५ ।। साचि नामि मेरा मनु लागा । लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ।। १ ।। बाहरि सूतु सगल सिउ मउला । अलिपतु रहउ जैसे जल महि कउला ।। १ ।। रहाउ ।। मुख की बात सगल सिउ करता । जीअ संगि प्रभु अपुना धरता ।। २ ।। दीसि आवत है बहुतु भीहाला । सगल चरन की इहु मनु राला ।। ३ ।। नानक जनि गुरु पूरा पाइआ । अंतरि बाहरि एकु दिखाइआ ।। ४ ।। ३ ।। ५४ ।।

(हे भाई !) मेरा मन सत्यस्वरूप परमात्मा के नाम में (सदा) जुड़ा रहता है, सांसारिक व्यक्तियों के साथ मेरा उतना ही व्यवहार है जितने व्यवहार की अत्यन्त आवश्यकता पड़ती है ।। १ ।। (हे भाई !) दुनिया के साथ व्यवहार के समय मैं सबके साथ प्रेम वाला सम्बन्ध रखता हूँ, (मैं दुनिया में इस प्रकार) निर्लिप्त रहता हूँ जिस प्रकार पानी में (टिका हुआ भी) कमल-फूल (पानी से निर्लिप्त रहता है) ।। १ ।। रहाउ ।। (हे भाई !) मैं सब लोगों से (आवश्यकतानुसार) मुख से तो बातें करता हूँ (लेकिन) अपने हृदय में मैं केवल अपने परमात्मा को ही टिकाए रखता हूँ ।। २ ।। दुनियावी लोगों को मेरा मन बड़ा शुष्क दिखता है; पर (असल में मेरा) यह मन सबके चरणों की धूलि बना रहता है ।। ३ ।। हे नानक ! जिस पुरुष ने पूर्णगुरु प्राप्त कर लिया है (गुरु ने उसे) उसके भीतर तथा बाहर सारे जगत में एक परमात्मा ही बसता दिखा दिया है (इसलिए दुनिया से तो वह व्यावहारिक सम्बन्ध बनाए रखता ही है साथ-साथ भीतर से परमात्मा से जुड़ा रहता है) ।। ४ ।। ३ ।। ५४ ।।

।। आसा महला ५ ।। पावतु रलीआ जोबनि बलीआ । नाम बिना माटी संगि रलीआ ।। १ ।। कान कुंडलीआ बसत्र ओढलीआ । सेज सुखलीआ मनि गरबलीआ ।। १ ।। रहाउ ।। तलै कुंचरीआ सिरि कनिक छतरीआ । हरि भगति बिना ले धरनि गडलीआ ।। २ ।। रूप सुंदरीआ अनिक इसतरीआ । हरि रस बिनु सभि सुआद फिकरीआ ।। ३ ।। माइआ छलीआ बिकार बिखलीआ । सरणि नानक प्रभ पुरख दइअलीआ ।। ४ ।। ४ ।। ५५ ।।

(हे भाई ! जब तक) यौवन में शारीरिक शक्ति मिली हुई है (मनुष्य निश्चिन्त होकर) आनन्द भोगता है, अन्त में शरीर मिट्टी में मिल जाता है, (और जीवात्मा) परमात्मा के नाम से बिना (ख़ाली हाथ) ही रह जाता है ॥ १ ॥ (हे भाई ! मनुष्य) कानों में (सोने के) कुण्डल पहनकर (सुन्दर) कपड़े पहनता है, नरम-नरम बिस्तरों पर (सोता है), (और इन सुखोपभोग के साधनों का) अभिमान करता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई ! मनुष्य को यदि अपनी सवारी के लिए) हाथी (भी मिला हुआ है, और उसके) सिर पर सोने का छत्र झूल रहा है, (तो भी शरीर आख़िरकार) मिट्टी में ही मिलाया जाता है (इन पदार्थों के अभिमान में) मनुष्य परमात्मा की भक्ति से ख़ाली ही रह जाता है ॥ २ ॥ (हे भाई ! यदि) अनेक सुन्दर स्त्रियाँ (भी मिल जाएँ तो भी क्या हुआ ?) परमात्मा के नाम से उपजे आनन्द के समक्ष सब आस्वाद फीके हैं ॥ ३ ॥ माया ठगिनी ही है और (लौकिक विषय) विष-भरे हैं (आत्मिक मृत्यु का कारण बनते हैं) । हे नानक ! (कहो—) हे प्रभु ! हे दयालु पुरुष ! मैं तेरी शरण आया हूँ (मुझे माया तथा इससे उपजे विकारों से बचाए रख) ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ एकु बगीचा पेड घन करिआ । अंम्रित नामु तहा महि फलिआ ॥ १ ॥ ऐसा करहु बीचारु गिआनी । जा ते पाईऐ पदु निरबानी । आसि पासि बिखूआ के कुंटा बीचि अंम्रितु है भाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंचन हारे एकै माली । खबरि करतु है पात पत डाली ॥ २ ॥ सगल बनसपति आणि जड़ाई । सगली फूली निफल न काई ॥ ३ ॥ अंम्रित फलु नामु जिनि गुर ते पाइआ । नानक दास तरी तिनि माइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५६ ॥

हे भाई ! यह जगत एक बगीचा है जिसमें (सृजनहार माली ने) अनगिनत वृक्ष लगाए हुए हैं आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल है, उनमें (पवित्र आत्मिक जीवन का) भय लग रहा है ॥ १ ॥ हे ज्ञानी मनुष्य ! कोई ऐसा विचार कर जिसके प्रभाव से वह (आत्मिक) स्थान प्राप्त हो जाए जहाँ कोई वासना न पहुँच सके । हे भाई ! तेरे चतुर्दिक (माया-मोह के) विषैले झरने हैं, लेकिन तेरे भीतर (नाम-) अमृत (का झरना चल रहा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देनेवाले उस एक (सृजनहार-) माली को अपने भीतर स्मरण रख जो हर एक वृक्ष के पत्ते-पत्ते, डाली-डाली की रक्षा करता है ॥ २ ॥ (हे भाई ! उस माली ने इस जगत-बगीचे में) सारी वनस्पति लाकर सजा दी है (रंग-बिरंगे फूलों से संसार-बगीचे को सुन्दर बना दिया

है) सारी वनस्पति फूल दे रही है कोई वृक्ष फल से ख़ाली नहीं (हरेक जीव माया के उपार्जन में लगा है) ॥ ३ ॥ दास नानक का कहना है कि जिस मनुष्य ने गुरु से आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-फल प्राप्त कर लिया है उसने माया (की नदी) पार कर ली है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ राज लीला तेरै नामि बनाई । जोगु बनिआ तेरा कीरतनु गाई ॥ १ ॥ सरब सुखा बने तेरै ओल्है । भ्रम के परदे सतिगुर खोल्हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हुकमु बूझि रंग रस माणे । सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥ २ ॥ जिनि तूं जाता सो गिरसत उदासी परवाणु । नामि रता सोई निरबाणु ॥ ३ ॥ जा कउ मिलिओ नामु निधाना । भनति नानक ता का पूर खजाना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५७ ॥

हे प्रभु ! तेरे नाम ने मुझे वह आनन्द दिया जो राजा-महाराजाओं को राज्य से मिलता है, जब मैं तेरी गुणस्तुति का गीत गाता हूँ तो मुझे योगियों वाला योग प्राप्त हो जाता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! सतिगुरु ने दुबिधा पैदा करनेवाले पर्दे खोल दिए हैं और तेरे आसरे पर रहने से मेरे लिए सारे सुख ही सुख बन गए हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तेरी रज़ा को समझकर मैं समस्त आत्मिक आनन्द भोग रहा हूँ, सतिगुरु की सेवा के प्रभाव से मुझे सर्वोच्च वासनारहित अवस्था प्राप्त हो गई है ॥ २ ॥ हे प्रभु ! जिस मनुष्य ने तेरे साथ गहरे सम्बन्ध बना लिए वह चाहे गृहस्थी हो, चाहे त्यागी, वह तेरी दृष्टि में सत्कृत है। हे प्रभु ! जो मनुष्य तेरे नाम-रंग में रँगा हुआ है वह सदा लौकिक वासना से बचा रहता है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है— हे प्रभु ! जिस मनुष्य को तेरा नाम-भण्डार मिल गया है उसका भण्डार सदा भरा रहता है क्योंकि उसे तृप्ति महसूस हो जाती है ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ तीरथि जाउ त हउ हउ करते । पंडित पूछउ त माइआ राते ॥ १ ॥ सो असथानु बतावहु मीता । जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पाप पुंन वीचार । नरकि सुरगि फिरि फिरि अउतार ॥ २ ॥ गिरसत महि चिंत उदास अहंकार । करम करत जीअ कउ जंजार ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते मनु वसि आइआ । नानक गुरमुखि तरी तिनि माइआ ॥ ४ ॥ साध

संगि हरि कीरतनु गाईऐ। इहु असथानु गुरू ते पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७ ॥ ५८ ॥

हे मित्र ! यदि मैं (किसी) तीर्थ पर जाता हूँ तो मैं वहाँ पर 'मैं धर्मात्मा हूँ', 'मैं धर्मात्मा हूँ' कहते हुए लोगों को देखता हूँ, यदि मैं पण्डितों को पूछता हूँ तो वे भी माया के रंग में रँगे हैं ॥ १ ॥ हे मित्र ! मुझे वह स्थान बता जहाँ हर समय परमात्मा की गुणस्तुति होती हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे मित्र !) शास्त्र और वेद, पाप तथा पुण्यों के विचार ही बतलाते हैं (जिनके करने से) पुन:पुन: नरक तथा स्वर्ग में जाया जाता है ॥ २ ॥ हे मित्र ! गृहस्थी लोगों को चिन्ता दबा रही है और गृहस्थ त्याग करनेवाले अहंकार-ग्रस्त हैं, इसके अतिरिक्त कर्मकाण्ड करनेवालों की आत्मा को (माया के) जंजाल (पड़े हुए हैं) ॥ ३ ॥ नानक का विचार है कि परमात्मा की कृपा से जिस मनुष्य का मन वश में आ जाता है उसने गुरु की शरण लेकर माया की सूखी नदी पार कर ली है ॥ ४ ॥ (हे मित्र !) सत्संगति में रहकर (सदा) परमात्मा की गुणस्तुति करते रहना चाहिए। (लेकिन बात यह है) कि यह स्थान गुरु की ओर से प्राप्त होता है ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७ ॥ ५८ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा। हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥ १ ॥ सगल सूख जां तूं चिति आंवैं। सो नामु जपै जो जनु तुधु भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु सीतलु जपि नामु तेरा। हरि हरि जपत ढहै दुख डेरा ॥ २ ॥ हुकमु बूझै सोई परवानु। साचु सबदु जा का नीसानु ॥ ३ ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ। भनति नानकु मेरै मनि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५९ ॥

भक्त जीव को अपने हृदय-घर में आनन्द प्रतीत होता रहता है, बाहर लौकिक व्यवहार का निर्वाह करते हुए भी उसका आत्मिक आनन्द बना रहता है और परमात्मा का स्मरण करने से सारे दुख नष्ट हो जाते हैं ॥ १ ॥ हे प्रभु ! जिस मनुष्य के चित्त में तुम आ बसते हो उसे सारे सुख ही सुख प्रतीत होते हैं। (पर) वही मनुष्य तेरा नाम जपता है जो तुझे प्यारा लगता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तेरा नाम जपकर मन शान्त हो जाता है, शरीर भी शान्त हो जाता है। हे भाई ! परमात्मा का नाम जपते हुए दुखों का डेरा ही उठ जाता है ॥ २ ॥ जो जीव हुकम में विचरते हैं (अर्थात् ईश्वरेच्छा पर समर्पित होते हैं) वे ही प्रभु के दरबार में सम्मानित होते हैं। उनको सच्चा शब्द प्राप्त होता है (जो पार-पत्र के

रूप में उन्हें दुनिया से पार लगाता है) ॥ ३ ॥ (हे भाई ! इस जीवन-यात्रा से गुज़रते हुए जिस मनुष्य के पास सत्यस्वरूप परमात्मा की गुणस्तुति की वाणी की चुंगी है और जो प्रभु की रज़ा को समझ लेता है वह मनुष्य (परमात्मा के दरबार में) सत्कृत होता है। नानक का कथन है— पूर्णगुरु ने परमात्मा का नाम मेरे हृदय में पक्का कर दिया है इसलिए मेरे मन ने (सदा) सुख ही अनुभव किया है ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जहा पठावहु तह तह जाईं। जो तुम देहु सोई सुखु पाईं ॥ १ ॥ सदा चेरे गोविंद गोसाईं। तुम्हरी क्रिपा ते त्रिपति अघाईं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरा दीआ पैन्हउ खाईं। तउ प्रसादि प्रभ सुखी वलाईं ॥ २ ॥ मन तन अंतरि तुझै धिआईं। तुम्हरै लवै न कोऊ लाईं ॥ ३ ॥ कहु नानक नित इवै धिआईं। गति होवै संतह लगि पाईं ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६० ॥

हे गोबिन्द प्रभु ! तुम जिधर मुझे भेजते हो, मैं उस ओर ही (प्रसन्नतापूर्वक) जाता हूँ, (सुख हो, चाहे दुख) जो कुछ तुम मुझे देते हो, मैं उसे प्रसन्नतापूर्वक सुख (जानकर) मानता हूँ ॥ १ ॥ हे गोबिन्द प्रभु ! (मेरी अभिलाषा है कि) सदा तेरा दास बना रहूँ (क्योंकि) तेरी कृपा से ही मैं माया की तृष्णा से सदा तृप्त रहता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! जो कुछ तुम मुझे (पहनने को, खाने को) देते हो वही मैं सन्तोषपूर्वक पहनता हूँ, खाता हूँ, तेरी कृपा से मैं सुखपूर्वक जीवन बिता रहा हूँ ॥ २ ॥ हे प्रभु ! मैं अपने मन में, अपने हृदय में (सदा) तुझे ही स्मरण करता रहता हूँ,तेरे बराबर का मैं किसी को नहीं समझता ॥ ३ ॥ (नानक का कथन है कि प्रभु से प्रार्थना करो कि) मैं इसी प्रकार सदा तुझे स्मरण करता रहूँ। तेरी कृपा से सन्तजनों के चरण स्पर्श कर मुझे उच्च आत्मिक अवस्था मिली रहे ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६० ॥

॥ आसा महला ५ ॥ ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ। मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥ १ ॥ स्रवन सुनीजै अंम्रित कथा। जासु सुनी मनि होइ अनंदा दूख रोग मन सगले लथा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कारजि कामि बाट घाट जपीजै। गुर प्रसादि हरि अंम्रितु पीजै ॥ २ ॥ दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईऐ। सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥ ३ ॥ आठ पहर जिसु विसरहि नाही। गति होवै नानक तिसु लगि पाईं ॥ ४ ॥ १० ॥ ६१ ॥

(हे भाई !) उठते-बैठते, सोते अर्थात प्रत्येक समय परमात्मा को याद करते रहना चाहिए, रास्ता तय करते हुए भी सदा परमात्मा की गुणस्तुति करते रहना चाहिए ॥ १ ॥ (हे भाई !) कानों से (परमात्मा की) आत्मिक जीवन देनेवाली गुणस्तुति सुनते रहना चाहिए जिससे मन में आत्मिक आनन्द पैदा होता है और मन के सारे दुख-रोग दूर हो जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) हर एक कामकाज करते हुए, मार्ग पर चलते हुए, नाव पार करते हुए परमात्मा का नाम जपते रहना चाहिए और गुरु की कृपा के प्रभाव से आत्मिक जीवन देनेवाला हरिनाम-जल पीते रहना चाहिए ॥ २ ॥ (हे भाई !) दिन-रात परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाते रहना चाहिए ऐसा करने से जिन्दगी रूपी यात्रा में आत्मिक मृत्यु उसके निकट नहीं पहुँचती ॥ ३ ॥ नानक का विचार है कि जिस मनुष्य को आठों प्रहर परमात्मा विस्मृत नहीं होता, उसके चरण स्पर्श कर उच्च आत्मिक अवस्था मिल जाती है ॥ ४ ॥ १० ॥ ६१ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जा कै सिमरनि सूख निवासु । भई कलिआण दुख होवत नासु ॥ १ ॥ अनदु करहु प्रभ के गुन गावहु । सतिगुरु अपना सद सदा मनावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर का सचु सबदु कमावहु । थिरु घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥ २ ॥ पर का बुरा न राखहु चीत । तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ ३ ॥ हरि हरि तंतु मंतु गुरि दीन्हा । इहु सुखु नानक अनदिनु चीन्हा ॥ ४ ॥ ११ ॥ ६२ ॥

(हे भाई ! परमात्मा का नाम-स्मरण सर्वश्रेष्ठ है) जिसके प्रभाव से (मन में) सुख का वास हो जाता है, सदा सुख-शान्ति बनी रहती है और दुखों का नाश हो जाता है ॥ १ ॥ सदा ही गुरु की प्रसन्नता प्राप्त करते रहो (गुरु के हुक्म-अनुसार) परमात्मा की गुणस्तुति करते रहा करो जिससे आत्मिक आनन्द महसूसते रहोगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) सदा सत्यस्वरूप परमात्मा की गुणस्तुति वाले गुरु-शब्द को हृदय में रखो जिससे अपने हृदय-घर में टिके रहोगे और परमात्मा को भीतर ही प्राप्त कर लोगे ॥ २ ॥ हे भाई ! कभी किसी का बुरा न सोचो । सबका भला सोचने से तुम्हें भी दुख स्पर्श नहीं कर सकेगा ॥ ३ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य को गुरु ने परमात्मा का नाम सुना दिया है, परमात्मा का नाम मन्त्र रूप में दिया है (वह सांसारिक जादू-टोनों के स्थान पर) प्रत्येक समय आत्मिक आनन्द बसता हुआ पहचान लेता है ॥ ४ ॥ ११ ॥ ६२ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जिसु नीच कउ कोई न जानै ।

नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥ १ ॥ दरसनु मागउ देहि पिआरे । तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै निकटि न आवै कोई । सगल स्रिसटि उआ के चरन मलि धोई ॥ २ ॥ जो प्रानी काहू न आवत काम । संत प्रसादि ता को जपीऐ नाम ॥ ३ ॥ साधसंगि मन सोवत जागे । तब प्रभ नानक मीठे लागे ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६३ ॥

हे प्रभु ! जिस मनुष्य को निम्न जाति का समझकर कोई पहचानता भी नहीं, तेरा नाम जपने से जगत में उसका आदर-सत्कार होने लगता है ॥ १ ॥ हे प्यारे प्रभु ! मैं तेरा दर्शन चाहता हूँ, मुझे यह देन दे । जिस-जिस व्यक्ति ने तेरी भक्ति की उसे तूने संसार-समुद्र से पार कर दिया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! जिस मनुष्य के निकट भी कोई नहीं जाता था, तेरा भक्त बनने पर सारी दुनिया उसके पैर मल-मलकर धोने लग जाती है ॥ २ ॥ हे प्रभु ! जो मनुष्य किसी का कोई काम सँवारने योग्य नहीं था (अब) गुरु-कृपा से (तेरा नाम जपने से) उसे हर स्थान पर याद किया जाता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! (कहो—) हे मन ! सत्संगति में आकर सोए हुए व्यक्ति जाग पड़ते हैं और उन्हें प्रभुजी प्यारे लगने लगते हैं ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ एको एकी नैन निहारउ । सदा सदा हरिनामु सम्हारउ ॥ १ ॥ राम रामा रामा गुन गावउ । संत प्रतापि साध कै संगे हरि हरि नामु धिआवउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल समग्री जा कै सूति परोई । घट घट अंतरि रविआ सोई ॥ २ ॥ ओपति परलउ खिन महि करता । आपि अलेपा निरगुनु रहता ॥ ३ ॥ करन करावन अंतरजामी । अनंद करै नानक का सुआमी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६४ ॥

मैं गुरु-कृपा से हर स्थान पर एक परमात्मा को ही अपनी आँखों से देखता हूँ और सदा ही परमात्मा का नाम अपने हृदय में टिकाए रखता हूँ ॥ १ ॥ हे भाई ! गुरु के दिए प्रताप के प्रभाव से गुरु की संगति में रहकर मैं सदा परमात्मा का नाम स्मरण करता रहता हूँ और परमात्मा के सुन्दर गुण गाता रहता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई ! गुरु-कृपा से मुझे विश्वास है कि) वह परमात्मा ही हरेक शरीर के भीतर विद्यमान है जिस (की रज़ा) के धागे में सारे पदार्थ पिरोए हुए हैं ॥ २ ॥ (गुरु-कृपा से मुझे ज्ञान हो गया है कि) परमात्मा एक क्षण में सारे जगत की सृजना तथा नाश कर सकता है, प्रभु आप सब से अलग रहता है और माया के तीन

गुणों के प्रभाव से अछूता रहता है ॥ ३ ॥ (हे भाई ! मेरा विश्वास है कि) अन्तर्यामी परमात्मा (सब में व्यापक होकर) सब कुछ करने तथा जीवों से कराने की सामर्थ्य रखता है। मुझ नानक का पति-प्रभु सदा प्रसन्न रहता है ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ कोटि जनम के रहे भवारे। दुलभ देह जीती नही हारे ॥ १ ॥ किलबिख बिनासे दुख दरद दूरि। भए पुनीत संतन की धूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ के संत उधारन जोग। तिसु भेटे जिसु धुरि संजोग ॥ २ ॥ मनि आनंदु मंत्रु गुरि दीआ। त्रिसन बुझी मनु निहचलु थीआ ॥ ३ ॥ नामु पदारथु नउ निधि सिधि। नानक गुर ते पाई बुधि ॥ ४ ॥ १४ ॥ ६५ ॥

सत्संगी व्यक्तियों के सम्पर्क के प्रभाव से भक्त जीवों के करोड़ों जन्मों के चक्र समाप्त हो गए, उन्होंने कठिनता से मिले मनुष्य-जन्म की बाज़ी जीत ली और उन्होंने माया की मार नहीं खाई ॥ १ ॥ (हे भाई ! जिन सौभाग्यशाली मनुष्यों को) सन्तों के चरणों की धूलि (मिल गई वे) पवित्र जीवन वाले हो गए (उनके सारे) दुख-क्लेश दूर हो गए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) परमात्मा की भक्ति करनेवाले सन्तजन दूसरों को भी विकारों से बचाने की सामर्थ्य रखते हैं लेकिन सन्तजन उसी को मिलते हैं जिसके भाग्य में परमात्मा के दरबार से मिलाप का लेख लिखा होता है ॥ २ ॥ जिसे गुरु ने उपदेश दे दिया उसके मन में (सदा) आनन्द बना रहता है, उसके अन्तर्मन से तृष्णा बुझ जाती है, उसका मन अविचलित हो जाता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य ने गुरु द्वारा यह सूझ प्राप्त कर ली, उसे मानो दुनिया के सब भण्डार मिल जाते हैं, उसे करामाती शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं ॥ ४ ॥ १४ ॥ ६५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ मिटी तिआस अगिआन अंधेरे। साध सेवा अघ कटे घनेरे ॥ १ ॥ सूख सहज आनंदु घना। गुर सेवा ते भए मन निरमल हरि हरि हरि हरि नामु सुना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनसिओ मन का मूरखु ढीठा। प्रभ का भाणा लागा मीठा ॥ २ ॥ गुर पूरे के चरण गहे। कोटि जनम के पाप लहे ॥ ३ ॥ रतन जनमु इहु सफल भइआ। कहु नानक प्रभ करी मइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ६६ ॥

(हे भाई ! नाम की महिमा अद्भुत है उसका प्रभाव जीव को तृप्त वना देता है उसके प्रभाव से सर्वप्रथम) अज्ञानता के अँधेरे के कारण पैदा हुई माया की तृष्णा मिट जाती है, गुरु की (बताई) सेवा के कारण उनके अनेकों ही पाप काटे जाते हैं ॥ १ ॥ (हे भाई ! जो मनुष्य) सदा परमात्मा का नाम सुनते रहते हैं, गुरु-कृपा से उनके मन पवित्र हो जाते हैं और उन्हें बड़ा आनन्द प्राप्त होता है (उनके भीतर) आत्मिक स्थिरता बनी रहती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई ! हरि-नाम के श्रोताओं के) मन की बेसमझी तथा दुराग्रह समाप्त हो जाते हैं, उन्हें परमात्मा की रज़ा प्यारी लगने लगती है ॥ २ ॥ (हे भाई !) जिन मनुष्यों ने सतिगुरु के चरण पकड़ लिए हैं उनके (पिछले) करोड़ों जन्मों के किए पाप समाप्त हो जाते हैं ॥ ३ ॥ हे नानक ! कह— (जिन मनुष्यों पर) परमात्मा ने कृपा की उनका यह बहुमूल्य जन्म सफल हो जाता है ॥ ४ ॥ १५ ॥ ६६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ सतिगुरु अपना सद सदा सम्हारे । गुर के चरन केस संगि झारे ॥ १ ॥ जागु रे मन जागनहारे । बिनु हरि अवरु न आवसि कामा झूठा मोहु मिथिआ पसारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर की बाणी सिउ रंगु लाइ । गुरु किरपालु होइ दुखु जाइ ॥ २ ॥ गुर बिनु दूजा नाही थाउ । गुरु दाता गुरु देवै नाउ ॥ ३ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु आपि । आठ पहर नानक गुर जापि ॥ ४ ॥ १६ ॥ ६७ ॥

हे मन ! अपने सतिगुरु को सदा ही (अपने भीतर) सँभालकर रख । (हे भाई !) गुरु के चरणों को अपने केशों से झाड़ा कर अर्थात गुरु-द्वार पर नम्रतापूर्वक रह ॥ १ ॥ हे जानने योग्य मेरे मन ! सचेत हो । परमात्मा के नाम के अतिरिक्त दूसरा कोई (पदार्थ) तेरे काम नहीं आएगा, लौकिक मोह तथा उसका विस्तार —इनमें से कोई भी साथ निभानेवाले नहीं हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) सतिगुरु की वाणी से नेह जोड़ । जिस मनुष्य पर गुरु दयालु होता है उसका हरेक दुख दूर हो जाता है ॥२॥ (हे भाई !) गुरु के अतिरिक्त दूसरा कोई स्थान नहीं (जहाँ जीव को सन्मार्ग मिल सके) । गुरु (परमात्मा का) नाम देता है, वही नाम की देन देने योग्य है ॥ ३ ॥ हे नानक ! (कहो— हे भाई !) आठ प्रहर गुरु को स्मरण रख, गुरु पारब्रह्म (का रूप) है, गुरु परमेश्वर (का रूप) है ॥ ४ ॥ १६ ॥ ६७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ आपे पेडु बिसथारी साख । अपनी खेती आपे राख ॥ १ ॥ जत कत पेखउ एकै ओही । घट घट

अंतरि आपे सोई ।। १ ।। रहाउ ।। आपे सूरु किरणि बिसथारु । सोई गुपतु सोई आकारु ।। २ ।। सरगुण निरगुण थापै नाउ । दुह मिलि एकै कीनो ठाउ ।। ३ ।। कहु नानक गुरि भ्रमु भउ खोइआ । अनद रूपु सभु नैन अलोइआ ।। ४ ।। १७ ।। ६८ ।।

(हे भाई ! यह जगत, मानो एक फैलाव वाला वृक्ष है) परमात्मा आप ही इसका बड़ा तना है उस वृक्ष की शाखाओं का विस्तार फैला हुआ है। (हे भाई ! यह जगत) परमात्मा की (बोई हुई) फसल है, आप ही इस फसल का वह रक्षक है ।। १ ।। (हे भाई !) मैं जिधर देखता हूँ मुझे एक परमात्मा ही दिखाई देता है, वह परमात्मा आप ही हरेक शरीर में बस रहा है ।। १ ।। रहाउ ।। (हे भाई !) परमात्मा आप ही सूर्य है (और यह जगत, मानो उनकी) किरणों का फैलाव है, वह आप ही अलक्ष्य है और आप ही दृश्यमान है ।। २ ।। (हे भाई ! अपने दृश्यमान तथा अदृश्य रूपों का) निर्गुण तथा सगुण नाम वह प्रभु आप ही स्थापित करता है, इन दोनो (रूपों) ने मिलकर एक परमात्मा में ही ठिकाना बनाया हुआ है ।। ३ ।। हे नानक ! कह— गुरु ने जिस मनुष्य की दुबिधा तथा भय दूर कर दिया उसने सर्वत्र उस परमात्मा को अपनी आँखों से देख लिया जो सदा ही आनन्द में रहता है ।। ४ ।। १७ ।। ६८ ।।

।। आसा महला ५ ।। उकति सिआनप किछू न जाना । दिनु रैणि तेरा नामु वखाना ।। १ ।। मै निरगुन गुणु नाही कोइ । करन करावन हार प्रभ सोइ ।। १ ।। रहाउ ।। मूरख मुगध अगिआन अवीचारी । नाम तेरे की आस मनि धारी ।। २ ।। जपु तपु संजमु करम न साधा । नामु प्रभू का मनहि अराधा ।। ३ ।। किछू न जाना मति मेरी थोरी । बिनवति नानक ओट प्रभ तोरी ।। ४ ।। १८ ।। ६९ ।।

हे प्रभु! मैं कोई तर्क या चतुराई नहीं जानता, लेकिन तुम्हारी कृपा से मैं दिन-रात तेरा (ही) नाम उच्चारित करता हूँ ।। १ ।। हे प्रभु ! मैं गुणहीन हूँ, मुझमें कोई गुण नहीं लेकिन हे प्रभु ! वह तुम ही हो जो सर्वव्यापक होकर सब कुछ करने की शक्ति रखता है और उन जीवों से कराने की सामर्थ्य वाला है ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु ! मैं मूर्ख, अज्ञानी तथा बेसमझ हूँ लेकिन मैंने तेरे नाम की आशा मन में रखी हुई है (कि तुम शरण आए की लाज रखोगे) ।। २ ।। हे भाई ! मैंने कोई जप नहीं किया, मैंने कोई तप नहीं किया, मैंने कोई संयम नहीं साधा; मैं तो परमात्मा का नाम ही अपने मन में याद करता रहता हूँ ।। ३ ।। नानक प्रार्थना करता है—

हे प्रभु ! मैं कुछ भी करना नहीं जानता, मेरी बुद्धि बहुत तुच्छ-सी है और मैंने केवल तेरा ही आसरा लिया है ॥ ४ ॥ १८ ॥ ६९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ हरि हरि अखर दुइ इह माला । जपत जपत भए दीन दइआला ॥ १ ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुनी । करि किरपा राखहु सरणाई मो कउ देहु हरे हरि जपनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि माला उर अंतरि धारै । जनम मरण का दूखु निवारै ॥ २ ॥ हिरदै समालै मुखि हरि हरि बोलै । सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥ ३ ॥ कहु नानक जो राचै नाइ । हरि माला ता कै संगि जाइ ॥ ४ ॥ १९ ॥ ७० ॥

(हे भाई ! मेरे पास तो) 'हरि-हरि' —यह दो शब्दों की माला है, इस हरि-नाम की माला को जपते हुए कंगालों के ऊपर भी परमात्मा दयालु हो जाता है ॥ १ ॥ हे सतिगुरु ! मैं तेरे समक्ष अपनी यह प्रार्थना करता हूँ कि कृपा करके मुझे अपनी शरण में रख और मुझे 'हरि-हरि' नाम की माला दे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य हरि-नाम की माला अपने हृदय में टिकाकर रखता है, वह अपने जन्म-मरण के चक्र का दुख दूर कर लेता है ॥ २ ॥ जो मनुष्य हरि-नाम को अपने हृदय में सँभालकर रखता है और मुँह से हरि-नाम उच्चारित करता रहता है वह, न इस लोक में और न परलोक में, कहीं भी विचलित नहीं होता ॥ ३ ॥ हे नानक ! कहो— जो मनुष्य परमात्मा के नाम में जुड़ा रहता है, हरि-नाम की माला उसके साथ (परलोक में भी) जाती है ॥ ४ ॥ १९ ॥ ७० ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जिस का सभु किछु तिस का होइ । तिसु जन लेपु न बिआपै कोइ ॥ १ ॥ हरि का सेवकु सद ही मुकता । जो किछु करै सोई भल जन कै अति निरमल दास की जुगता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल तिआगि हरि सरणी आइआ । तिसु जन कहा बिआपै माइआ ॥ २ ॥ नामु निधानु जा के मन माहि । तिस कउ चिंता सुपनै नाहि ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइआ । भरमु मोहु सगल बिनसाइआ ॥ ४ ॥ २० ॥ ७१ ॥

(हे भाई ! जो मनुष्य) उस परमात्मा का सेवक बना रहता है, जिसके द्वारा यह सारा जगत निर्मित है, उस मनुष्य पर माया का प्रभाव नहीं पड़ सकता ॥ १ ॥ (हे भाई !) परमातमा का भक्त सदा ही मुक्त रहता है, परमात्मा जो कुछ करता है सेवक को वह सदा भलाई ही भलाई प्रतीत होती है, सेवक की जीवन-चर्या बहुत ही पवित्र होती है ॥ १ ॥

रहाउ ॥ (हे भाई ! जो मनुष्य दूसरे) सारे (आसरे) छोड़कर परमात्मा की शरण लेता है, माया उस मनुष्य पर कभी भी अपना प्रभाव नहीं डाल सकती ॥ २ ॥ (हे भाई !) जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम-भण्डार टिका रहता है, उसे कभी भी कोई चिन्ता स्पर्श नहीं कर सकती ॥ ३ ॥ हे नानक ! कहो— जो मनुष्य पूर्णगुरु को प्राप्त कर लेता है उसके भीतर से दुबिधा दूर हो जाती है और सारा मोह दूर हो जाता है ॥ ४ ॥ २० ॥ ७१ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जउ सुप्रसंन होइओ प्रभु मेरा । तां दूखु भरमु कहु कैसे नेरा ॥ १ ॥ सुनि सुनि जीवा सोइ तुम्हारी । मोहि निरगुन कउ लेहु उधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटि गइआ दूखु बिसारी चिंता । फलु पाइआ जपि सतिगुर मंता ॥ २ ॥ सोई सति सति है सोइ । सिमरि सिमरि रखु कंठि परोइ ॥ ३ ॥ कहु नानक कउन उह करमा । जा कै मनि वसिआ हरि नामा ॥ ४ ॥ २१ ॥ ७२ ॥

(हे भाई ! जब मेरा प्रभु बहुत प्रसन्न होता है तब कहो, कोई दुख, भ्रम उस मनुष्य के निकट कैसे आ सकता है ? ॥ १ ॥ (हे मेरे प्रभु !) तेरी शोभा सुन-सुनकर मेरे भीतर आत्मिक जीवन पैदा होता है। इसलिए कृपा करके मुझ गुणहीन को (दुखों से) बचाए रख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) सतिगुरु की वाणी जपकर मैंने यह फल प्राप्त कर लिया है कि (मेरे) भीतर से हरेक किस्म का दुख दूर हो गया है, और मैंने सब प्रकार की चिन्ता भुला दी है ॥ २ ॥ (हे भाई !) वह परमात्मा ही सत्यस्वरूप है, वह परमात्मा ही सदा स्थिर रहनेवाला है, उसे स्मरण करते रहो और उस (के नाम) को अपने गले में पिरोकर रख ॥ ३ ॥ हे नानक ! कहो— जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम आ बसे, उसे दूसरा कौन सा काम है जिसे उसे जरूरी करना है ॥ ४ ॥ २१ ॥ ७२ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विगूते । हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥ १ ॥ सोइ रहे माइआ मद माते । जागत भगत सिमरत हरि राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह भरमि बहु जोनि भवाइआ । असथिरु भगत हरि चरण धिआइआ ॥ २ ॥ बंधन अंध कूप ग्रिह मेरा । मुकते संत बुझहि हरि नेरा ॥ ३ ॥ कहु नानक जो प्रभ सरणाई । ईहा सुखु आगै गति पाई ॥ ४ ॥ २२ ॥ ७३ ॥

(हे भाई ! माया-ग्रसित जीव) काम, क्रोध और अहंकार में (फँसकर) दुखी होते रहते हैं। परमात्मा के सेवक, परमात्मा के नाम का स्मरण करके (काम, क्रोध आदि से) बचे रहते हैं ॥ १ ॥ (हे भाई !) माया के नशे में मस्त होकर (लौकिक जीव) सोए रहते हैं। पर परमात्मा की भक्ति करनेवाले मनुष्य प्रभु-नाम का स्मरण करते हुए (हरि-नाम रंग में) लीन रहकर सचेत रहते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई ! माया के) मोह की दुबिधा में पड़कर मनुष्य अनेक योनियों में भटकाए जाते हैं; पर भक्तजन परमात्मा के चरणों का ध्यान लगाते हैं, वे आवागमन के चक्र से अविचलित रहते हैं ॥ २ ॥ (हे भाई !) यह घर मेरा है, यह घर मेरा है —इस मोह के अन्धकूप के बन्धनों से वे सन्तजन स्वतन्त्र रहते हैं जो परमात्मा को (हर वक्त) अपने निकट बसता समझते हैं ॥ ३ ॥ हे नानक ! कहो— जो मनुष्य परमात्मा की शरण लेता है वह इस लोक में आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है और परलोक में भी वह उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त किए रखता है ॥ ४ ॥ २२ ॥ ७३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ तू मेरा तरंगु हम मीन तुमारे। तू मेरा ठाकुरु हम तेरै दुआरे ॥ १ ॥ तू मेरा करता हउ सेवकु तेरा। सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू मेरा जीवनु तू आधारु। तुझहि पेखि बिगसै कउलारु ॥ २ ॥ तू मेरी गति पति तू परवानु। तू समरथु मै तेरा ताणु ॥ ३ ॥ अनदिनु जपउ नाम गुण तासि। नानक की प्रभ पहि अरदासि ॥ ४ ॥ २३ ॥ ७४ ॥

हे स्वामी प्रभु ! तुम मेरी तरंग हो और मैं तेरी मछली हूँ अर्थात् जब तक मैं तुझमें डूबा रहता हूँ तब तक शान्ति अनुभूत होती है, तुम मेरे स्वामी हो और मैं तेरे द्वार पर (शरणागत के रूप में) हूँ ॥ १ ॥ तुम मेरे जन्मदाता हो और मैं तुम्हारा सेवक हूँ। हे समस्त गुणों के गहन समुद्र रूपी प्रभु ! मैं तुम्हारी शरणागत हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही मेरे जीवन हो, तुम ही मेरे आधार हो, तुम्हारे दर्शन से मेरा हृदय कमलपुष्प की भाँति खिल जाता है ॥ २ ॥ तुम ही उच्च आत्मिक अवस्था तथा प्रतिष्ठा के रक्षक हो, तुम्हारी प्रत्येक गतिविधि मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ, तुम प्रत्येक शक्ति के स्वामी हो और मुझे तुम्हारा ही अवलम्ब है ॥ ३ ॥ हे गुणों के भण्डार प्रभु ! नानक की यही प्रार्थना है कि मैं सदा तेरा नाम-स्मरण करता रहूँ ॥ ४ ॥ २३ ॥ ७४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ रोवनहारै झूठु कमाना। हसि

हसि सोगु करत बेगाना ॥ १ ॥ को मूआ का कै घरि गावनु । को रोवै को हसि हसि पावनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा ते बिरधाना । पहुचि न मूका फिरि पछुताना ॥ २ ॥ त्रिहु गुण महि वरतै संसारा । नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥ ३ ॥ कहु नानक जो लाइआ नाम । सफल जनमु ता का परवान ॥ ४ ॥ २४ ॥ ७५ ॥

हे भाई ! किसी मृत सम्बन्धी के लिए रोनेवाला भी झूठा रोना ही रोता है। जो अपरिचित व्यक्ति (मृत्यु के पश्चात् दुख प्रकट करता है वह) अलिप्त भाव से अफ़सोस करता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) जगत में सुख-दुख का चक्र चलता ही रहता है, जहाँ कोई मरता है (वहाँ) रोना-पीटना हो रहा है, और किसी के घर (किसी ख़ुशी आदि के कारण) गाना-बजाना हो रहा है। कोई रोता है कोई हँस-हँस पड़ता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ शैशव से वृद्धावस्था तक मनुष्य सुख की आशा करता है, लेकिन अगली स्थिति में जब तक वह मुश्किल से पहुँचता ही है (कि दुखों से घिर जाता है और फिर भटकाव में) पुन: पश्चाताप करता है ॥ २ ॥ (हे भाई !) जगत माया के त्रैगुणी प्रभाव के बीच ही भाग-दौड़ कर रहा है और पुन:पुन: (कभी) नरक, (कभी) स्वर्ग में पड़ता रहता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! कहो— जिस मनुष्य को परमात्मा अपने नाम में जोड़ता है, उसका मनुष्य-जन्म सफल हो जाता है और वह परमात्मा द्वारा स्वीकृत हो जाता है ॥ ४ ॥ २४ ॥ ७५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ सोइ रही प्रभ खबरि न जानी । भोरु भइआ बहुरि पछुतानी ॥ १ ॥ प्रिअ प्रेम सहजि मनि अनदु धरउ री । प्रभ मिलबे की लालसा ता ते आलसु कहा करउ री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर महि अंम्रितु आणि निसारिओ । खिसरि गइओ भूम परि डारिओ ॥ २ ॥ सादि मोहि लादी अहंकारे । दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥ ३ ॥ साध संगि मिटे भरम अंधारे । नानक मेली सिरजणहारे ॥ ४ ॥ २५ ॥ ७६ ॥

हे सहेली ! जो जीव-स्त्री सोती रहती है वह प्रभु (के मिलाप) की किसी शिक्षा को नहीं समझती। पर जब दिन चढ़ आता है (ज़िन्दगी समाप्त-प्राय होने लगती है) तब वह पछताती है ॥ १ ॥ हे सखी ! प्यारे (प्रभु) के प्रेम के प्रभाव से आत्मिक स्थिरता में टिककर मैं अपने मन में (उसके दर्शन की इच्छा का) आनन्द टिकाए रखती हूँ। हे सखी ! मुझे प्रभु के मिलाप की इच्छा बनी रहती है, इसलिए (प्रभु-स्मरण में) मैं कभी

भी आलस्य नहीं कर सकती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे सखी ! (मनुष्य-जन्म देकर परमात्मा ने) हमारे हाथों में आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल लाकर दिया था (अर्थात् नाम रूपी अमृत पीने का मौका दिया था पर मोह-निद्रा में डूबी स्त्री के हाथों से वह अमृत) गिर जाता है और मिट्टी में जा मिलता है ॥ २ ॥ हे सखी ! इस विषय में सृजनहार प्रभु को कोई दोष नहीं दिया जा सकता, क्योंकि जीव-स्त्री स्वयं ही पदार्थों के स्वाद में, माया के मोह में, अहंकार में दबी रहती है ॥ ३ ॥ हे नानक ! सत्संगति में आकर जिसकी माया से उपजी दुविधा मिट जाती है, उसे सृजनहार प्रभु अपने साथ लगा लेता है ॥ ४ ॥ २५ ॥ ७६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ चरन कमल की आस पिआरे । जम कंकर नसि गए विचारे ॥ १ ॥ तू चिति आवहि तेरी मइआ । सिमरत नाम सगल रोग खइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक दूख देवहि अवरा कउ । पहुचि न साकहि जन तेरे कउ ॥ २ ॥ दरस तेरे की पिआस मनि लागी । सहज अनंद बसै बैरागी ॥ ३ ॥ नानक की अरदासि सुणीजै । केवल नामु रिदे महि दीजै ॥ ४ ॥ २६ ॥ ७७ ॥

हे प्यारे प्रभु ! जिस मनुष्य के हृदय में तेरे सुन्दर चरणों से जुड़े रहने की आशा पैदा हो जाती है, यमदूत भी उस पर अपना प्रभाव न पड़ता देख उससे दूर भाग जाते हैं ॥ १ ॥ हे प्रभु ! जिस मनुष्य पर तेरी कृपा होती है उसके हृदय में तुम आ बसते हो, तेरा नाम स्मरण करने से उसके सारे रोग दूर हो जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! दूसरों को तो (ये यमदूत) अनेक किस्मों के दुख देते हैं पर तेरे सेवक के यह निकट भी नहीं आ सकते ॥ २ ॥ हे प्रभु ! जिस मनुष्य के मन में तेरे दर्शन की इच्छा पैदा होती है वह माया की ओर से विरक्त होकर आत्मिक स्थिरता के आनन्द में टिका रहता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! नानक की भी प्रार्थना सुन, मुझे केवल नाम हृदय में (बसाने के लिए) दे ॥ ४ ॥ २६ ॥ ७७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ मनु त्रिपतानो मिटे जंजाल । प्रभु अपुना होइआ किरपाल ॥ १ ॥ संत प्रसादि भली बनी । जा कै ग्रिहि सभु किछु है पूरनु सो भेटिआ निरभै धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु द्रिड़ाइआ साध क्रिपाल । मिटि गई भूख महा बिकराल ॥ २ ॥ ठाकुरि अपुनै कीनी दाति । जलनि बुझी मनि होई सांति ॥ ३ ॥ मिटि गई भाल मनु सहजि समाना । नानक पाइआ नाम खजाना ॥ ४ ॥ २७ ॥ ७८ ॥

हे भाई ! जिस पर प्यारा प्रभु दयालु हो जाता है उसका मन माया की तृष्णा से तृप्त हो जाता है और उसके माया-मोह के सारे बन्धन टूट जाते हैं ॥ १ ॥ (हे भाई !) गुरु की कृपा से मेरा भाग्य जाग पड़ा है। मुझे वह मालिक मिल गया है जिसे किसी की ओर से कोई भय नहीं और जिसके घर में हरेक चीज़ अक्षय है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) दया-स्वरूप गुरु ने जिसके भीतर नाम पक्का कर दिया उसकी बड़ी भयानक (माया की) भूख दूर हो गई ॥ २ ॥ (हे भाई !) ठाकुर-प्रभु ने जिस अपने सेवक को नाम की देन दी उसकी समस्त जलन बुझ गई। उसके मन में ठण्ड पड़ गई ॥ ३ ॥ हे नानक ! जिसने परमात्मा के नाम का ख़ज़ाना प्राप्त कर लिया, लौकिक पदार्थों के बारे में उसकी ढूँढ़ दूर हो गई और उसका मन आत्मिक स्थिरता में टिक गया ॥ ४ ॥ २७ ॥ ७८ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर सिउ जा की बनि आई। भोजन पूरन रहे अघाई ॥ १ ॥ कछू न थोरा हरि भगतन कउ। खात खरचत बिलछत देवन कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा का धनी अगम गुसाई। मानुख की कहु केत चलाई ॥ २ ॥ जा की सेवा दस असट सिधाई। पलक दिसटि ता की लागहु पाई ॥ ३ ॥ जा कउ दइआ करहु मेरे सुआमी। कहु नानक नाही तिन कामी ॥ ४ ॥ २८ ॥ ७६ ॥

(हे भाई !) जिस मनुष्य की प्रीति मालिक-प्रभु से दृढ़ हो जाती है। अक्षयनाम-भोजन के प्रभाव से वह तृप्त रहता है ॥ १ ॥ भक्तजनों के पास किसी चीज़ की कमी नहीं होती। वे उस ख़ज़ाने को आप प्रयोग करते हैं, दूसरों को बाँटते हैं, आप आनन्द महसूसते हैं और दूसरों को आनन्द देने योग्य होते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत का स्वामी, अगम्य मालिक जिस मनुष्य का (रक्षक) बन जाता है। कहो, किसी मनुष्य का उस पर क्या ज़ोर चल सकता है? ॥ २ ॥ (हे भाई !) जिसकी सेवा-भक्ति करने से और जिसकी कृपादृष्टि से अठारह करामाती शक्तियाँ मिल जाती हैं, सदा उसके चरणों में लगे रहो ॥ ३ ॥ हे नानक ! कहो— हे मेरे स्वामी ! जिन मनुष्यों पर तुम कृपा करते हो उन्हें किसी बात की कमी नहीं रहती ॥ ४ ॥ २८ ॥ ७९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जउ मै अपुना सतिगुरु धिआइआ। तब मेरै मनि महा सुखु पाइआ ॥ १ ॥ मिटि गई गणत बिनासिउ संसा। नामि रते जन भए भगवंता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ मै अपुना साहिबु चीति। तउ भउ मिटिओ मेरे

मीत ।। २ ।। जउ मै ओट गही प्रभ तेरी । तां पूरन होई मनसा मेरी ।। ३ ।। देखि चलित मनि भए दिलासा । नानक दास तेरा भरवासा ।। ४ ।। २६ ।। ८० ।।

(हे भाई !) जब से मैंने गुरु को अपने मन में बसा लिया है तब से मेरे मन ने बड़ा आनन्द प्राप्त किया है ।। १ ।। (हे भाई !) जो मनुष्य परमात्मा के नाम-रंग में रँगे जाते हैं वे सौभाग्यशाली हो जाते हैं, उनकी हरेक चिन्ता और भय दूर हो जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। हे मेरे मित्र ! जब से मैंने अपने मालिक को चित्त में (बसाया है) तब से मेरा हर प्रकार का भय दूर हो गया है ।। २ ।। हे प्रभु ! जब से मैंने तेरी ओट ली है तब से मेरी हरेक मनोकामना पूर्ण हो रही है ।। ३ ।। हे नानक ! (कहो— हे प्रभु ! मुझ तेरे) दास को तेरा ही भरोसा है, तेरे चरित्र देख-देखकर मेरे मन में सहारा बनता जाता है कि तुम शरणागतों के रक्षक हो ।। ४ ।। २९ ।। ८० ।।

।। आसा महला ५ ।। अनदिनु मूसा लाजु टुकाई । गिरत कूप महि खाहि मिठाई ।। १ ।। सोचत साचत रैनि बिहानी । अनिक रंग माइआ के चितवत कबहू न सिमरै सारिंगपानी ।। १ ।। रहाउ ।। द्रुम की छाइआ निहचल ग्रिहु बांधिआ । काल कै फांसि सकत सरु सांधिआ ।। २ ।। बालू कनारा तरंग मुखि आइआ । सो थानु मूड़ि निहचलु करि पाइआ ।। ३ ।। साधसंगि जपिओ हरि राइ । नानक जीवै हरि गुण गाइ ।। ४ ।। ३० ।। ८१ ।।

हे भाई ! (तेरी आयु रूपी) रस्सी को प्रतिदिन चूहा काट रहा है (लेकिन) तू कुएँ में गिरा हुआ भी मिठाई खाए जा रहा है अर्थात् लौकिक पदार्थों की एषणाओं में लगा हुआ है ।। १ ।। माया के सम्बन्ध में सोचते हुए मनुष्य की (ज़िन्दगी की सारी) रात्रि बीत जाती है, मनुष्य माया के ही अनेक रंग-तमाशे सोचता रहता है और परमात्मा को कभी स्मरण नहीं करता ।। १ ।। रहाउ ।। मोहवश मनुष्य वृक्ष की छाया को पक्का घर मान बैठता है जब कि मनुष्य काल की फाँसी में फँसा हुआ है और ऊपर से माया ने तीखा (मोह का) तीर कस रखा है ।। २ ।। (यह जगत-वासा, मानो) रेत का किनारा (दरिया की) लहरों के मुँह में आया हुआ है पर मोहग्रस्त मूर्ख जीव ने इस स्थान को पक्का समझा हुआ है ।। ३ ।। हे नानक ! जिस मनुष्य ने सत्संगति में टिककर प्रभु-बादशाह का जाप जपा है वह परमात्मा के गुण गा-गाकर आत्मिक जीवन प्राप्त करता है ।। ४ ।। ३० ।। ८१ ।।

॥ आसा महला ५ दुतुके ६ ॥ उन कै संगि तू करती केल । उन कै संगि हम तुम संगि मेल । उन्ह कै संगि तुम सभु कोऊ लोरै । ओसु बिना कोऊ मुखु नही जोरै ॥ १ ॥ ते बैरागी कहा समाए । तिसु बिनु तुही दुहेरी री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उन्ह कै संगि तू ग्रिह महि माहरि । उन्ह कै संगि तू होईहै जाहरि । उन्ह कै संगि तू रखी पपोलि । ओसु बिना तूं छुटकी रोलि ॥ २ ॥ उन्ह कै संगि तेरा मानु महतु । उन्ह कै संगि तुम साकु जगतु । उन्ह कै संगि तेरी सभ बिधि थाटी । ओसु बिना तूं होईहै माटी ॥ ३ ॥ ओहु बैरागी मरै न जाइ । हुकमे बाधा कार कमाइ । जोड़ि विछोड़े नानक थापि । अपनी कुदरति जाणै आपि ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ८२ ॥

हे मेरी काया ! जीवात्मा की संगति में रहकर तू (कई प्रकार के) आश्चर्यजनक कार्य करती है, सबके साथ तेरा मेल-मिलाप बना रहता है, हर व्यक्ति तुझे मिलना चाहता है पर उस जीवात्मा के मिलाप के बिना तुझे कोई मुँह नहीं लगाता ॥ १ ॥ हे काया ! उस (जीवात्मा) के बिना तू दुखी हो जाती है; पर नहीं, वह जीवात्मा तुझसे तटस्थ होकर कहाँ चला जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे काया ! जब तक तू जीवात्मा के साथ भी तू समझदार (समझी जाती) है; सर्वत्र तू प्रकट होती है, तुझे पाल-पोसकर रखा जाता है। पर जब वह जीवात्मा चला जाता है तो तू घायल हो जाती है, मिट्टी में मिल जाती है ॥ २ ॥ हे काया ! जीवात्मा के साथ होने से तेरा आदर-सत्कार होता है, तुझे महानता मिलती है, सारा जगत तेरा सगा-सम्बन्धी लगता है, तेरा हर प्रकार से पालन किया जाता है। परन्तु जब उस जीवात्मा से तू बिछुड़ जाती है तब तू मिट्टी में मिल जाती है ॥ ३ ॥ नानक का विचार है कि जीवात्मा इस बारे में पराधीन है, क्योंकि परमात्मा मनुष्य-शरीर बनाकर, और बनाकर फिर अलग भी कर देता है। काया से उदासीन होकर चला जानेवाला जीवात्मा (अपने आप) न मरता है न जन्मता है (बल्कि ईश्वर के) हुक्म में बँधा हुआ काम करता है। अपने विचित्र खेल को परमात्मा आप ही जानता है ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ८२ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ ना ओहु मरता ना हम डरिआ । ना ओहु बिनसै ना हम कड़िआ । ना ओहु निरधनु ना हम भूखे । ना ओसु दूखु न हम कउ दूखे ॥ १ ॥ अवरु न कोऊ मारनवारा । जीअउ हमारा जीउ देनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥

ना उसु बंधन ना हम बाधे। ना उसु धंधा ना हम धाधे। ना उसु मैलु न हम कउ मैला। ओसु अनंदु त हम सद केला ॥ २ ॥ ना उसु सोचु न हम कउ सोचा। ना उसु लेपु न हम कउ पोचा। ना उसु भूख न हम कउ त्रिसना। जा उहु निरमलु तां हम जचना ॥ ३ ॥ हम किछु नाही एकै ओही। आगै पाछै एको सोई। नानक गुरि खोए भ्रम भंगा। हम ओइ मिलि होए इक रंगा ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ८३ ॥

(हे भाई !) हम जीवों का परमात्मा से अलग कोई अस्तित्व नहीं। वह आप ही जीवात्मा-रूप में हमारे भीतर विद्यमान है। वह परमात्मा कभी नहीं मरता, हमें भी मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। वह परमात्मा कभी नष्ट नहीं होता, हमें भी विनाश की कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए। वह प्रभु कंगाल नहीं है, हम भी अपने आप को भूखे ग़रीब न समझें। उसे कोई दुख नहीं स्पर्श करता, हमें भी कोई दुख नहीं स्पर्श करेगा ॥ १ ॥ (हे भाई!) जीवित रहें, हमारे प्राणदाता परमात्मा हैं और उनके अतिरिक्त कोई हमें मारने की शक्ति नहीं रखता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उस परमात्मा को माया के बन्धन जकड़ नहीं सकते, (इसलिए असल में) हम भी माया के मोह में बँधे हुए नहीं हैं। उसे कोई भौतिक भाग-दौड़ ग्रस नहीं सकती, हम भी धंधों में ग्रसित नहीं हैं। उस परमात्मा को विकारों की मैल नहीं लग सकती, हमें भी मैल नहीं लगनी चाहिए। उसे सदा आनन्द ही आनन्द है, हम भी सदा प्रसन्न रहें ॥ २ ॥ (हे भाई !) उस परमात्मा को कोई चिन्ता नहीं लगती, हमें भी कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए। उस पर माया का प्रभाव नहीं पड़ता, हम पर भी क्यों पड़े ? उस परमात्मा को माया का मालिक नहीं दबा सकता, हमें भी माया की तृष्णा नहीं होनी चाहिए। जब वह परमात्मा पवित्र-स्वरूप है (वही हमारे भीतर मौजूद है), तो हमें भी शुद्ध-स्वरूप रहना चाहिए ॥ ३ ॥ (हे भाई !) हमारा कोई अलग अस्तित्व नहीं है (सब में) वह परमात्मा आप ही आप है। इस लोक में तथा परलोक में सर्वत्र वह परमात्मा आप ही आप है। हे नानक! जब गुरु ने भ्रम दूर कर दिए, जो आत्मा-परमात्मा के मध्य विघ्नरूप थे, तब हम उस (परमात्मा) को मिलकर उसके साथ एक हो जाते हैं ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ८३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ अनिक भांति करि सेवा करीऐ। जीउ प्रान धनु आगै धरीऐ। पानी पखा करउ तजि अभिमानु। अनिक बार जाईऐ कुरबानु ॥ १ ॥ साई सुहागणि जो प्रभ भाई। तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥

दासनि दासी की पनिहारि । उन्ह की रेणु बसै जीअ नालि । माथै भागु त पावउ संगु । मिलै सुआमी अपुनै रंगि ।। २ ।। जाप ताप देवउ सभ नेमा । करम धरम अरपउ सभ होमा । गरबु मोहु तजि होवउ रेन । उन्ह कै संगि देखउ प्रभु नैन ।। ३ ।। निमख निमख एही आराधउ । दिनसु रैणि एह सेवा साधउ । भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद । साध संगि नानक बखसिंद ।। ४ ।। ३३ ।। ८४ ।।

हे माँ ! सत्संगी जीव-स्त्री की सेवा अनेक प्रकार से करनी चाहिए। यह आत्मा, यह प्राण और (अपना) धन उसके समक्ष रख देना चाहिए। (उस जीव-स्त्री पर) अनेक बार न्यौछावर होना चाहिए। (मेरी इच्छा है कि) मैं भी अहंकार त्यागकर उसका पानी ढोने और उस पर पंखा करने की सेवा करूँ ।। १ ।। हे मेरी माँ ! जो जीव-स्त्री प्रभु-पति को प्यारी लग पड़ती है, वही सौभाग्यशालिनी हो जाती है; (यदि मुझ पर कृपा हो तो) मैं भी उस सुहागिन की संगति में मिलकर बैठूँ ।। १ ।। रहाउ ।। हे माँ ! मेरे मस्तक पर (पूर्वकर्मों का) भाग्य जाग पड़े तो मैं उन सुहागिनों की संगति प्राप्त करूँ, उनकी दासियों की पनिहारी बनूँ, उन सुहागिनों की चरणधूलि मेरे शरीर पर टिकी रहे। उनके संसर्ग से पति-प्रभु अपने प्रेम-रंग में आकर मिल पड़ता है ।। २ ।। मैं सारे जप, तप तथा दूसरे साधन देने को तैयार हूँ; सारे धार्मिक कर्म, यज्ञ, होम भेंट करने को तैयार हूँ। (मेरी यह इच्छा है कि) अहंकार छोड़कर, मोह त्यागकर उन सुहागिनों की चरणधूलि बन जाऊँ (क्योंकि) उन सुहागिनों की संगति में रहकर ही मैं प्रभु-पति को इन आँखों से देख सकूँगी ।। ३ ।। (हे माँ !) मैं पल-पल यही कामना करती हूँ कि मैं दिन-रात उनकी सेवा का साधन करती रहूँ। हे नानक ! जो जीव-स्त्री सत्संगति में जा पहुँचती है, क्षमा करनेवाले गोविंद-प्रभु उस पर दयालु हो जाते हैं ।। ४ ।। ३३ ।। ८४ ।।

।। आसा महला ५ ।। प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइ । प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइ । प्रभ की प्रीति हउमै मलु खोइ । प्रभ की प्रीति सद निरमल होइ ।।१।। सुनहु मीत ऐसा प्रेम पिआरु । जीअ प्रान घट घट आधारु ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभ की प्रीति भए सगल निधान । प्रभ की प्रीति रिदै निरमल नाम । प्रभ की प्रीति सद सोभावंत । प्रभ की प्रीति सभ मिटी है चिंत ।। २ ।। प्रभ की प्रीति इहु भवजलु तरै । प्रभ की प्रीति जम ते नही डरै । प्रभ की प्रीति सगल उधारै ।

प्रभ की प्रीति चलै संगारै ।। ३ ।। आपहु कोई मिलै न भूलै । जिसु क्रिपालु तिसु साध संगि घूलै । कहु नानक तेरै कुरबाणु । संत ओट प्रभ तेरा ताणु ।। ४ ।। ३४ ।। ८५ ।।

हे मित्र ! परमात्मा की प्रीति से सदा आत्मिक आनन्द मिला रहता है, (तदन्तर) कोई दुख स्पर्श नहीं कर सकता । ऐसी अवस्था को प्राप्त मनुष्य अहंकार का मैल दूर कर लेता है, और ईश्वर-प्रेम सदा पवित्र जीवन वाला बनाए रखता है ।। १ ।। हे मित्र ! सुनो, (परमात्मा का) प्रेम ऐसी देन है कि हरेक जीव की आत्मा का, हरेक जीव के प्राणों का आसरा बन जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु-प्रीति से सब निधियाँ प्राप्त होती हैं, प्रभु में प्रेम जगने से ही हृदय में निर्मल नाम स्थित होता है । प्रभु-प्रीति करनेवाला सदैव शोभा पाता है, प्रभु-प्रीति से सब प्रकार की सांसारिक चिन्ताओं का नाश होता है ।। २ ।। हे मित्र ! (जिस मनुष्य के हृदय में) परमात्मा की प्रीति है वह इस संसार-समुद्र से पार उतर जाता है, वह यमदूतों से भय नहीं खाता और दूसरों को (विकारों से) बचा लेता है । (हे मित्र !) परमात्मा की प्रीति (ही एक ऐसी राशि है जो) सदा मनुष्य के साथ निभाती है ।। ३ ।। (पर, हे मित्र ! परमात्मा से प्रीति जोड़नी किसी मनुष्य के वश की बात नहीं) अपने उद्यम से न कोई मनुष्य (परमात्मा के चरणों में) जुड़ा रह सकता है और न कोई (बिछुड़कर) कुमार्गगामी होता है । जिस मनुष्य पर प्रभु दयालु होता है उसे सत्संगति में मिलाता है । हे नानक ! कहो— हे प्रभु ! मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ, तुम ही सन्तों की ओट हो, तुम ही सन्तों का बल हो ।।४।।३४।।८५।।

।। आसा महला ५ ।। भूपति होइ कै राजु कमाइआ । करि करि अनरथ विहाझी माइआ । संचत संचत थैली कीन्ही । प्रभि उस ते डारि अवर कउ दीन्ही ।। १ ।। काच गगरीआ अंभ मझरीआ । गरबि गरबि उआहू महि परीआ ।। १ ।। रहाउ ।। निरभउ होइओ भइआ निहंगा । चीति न आइओ करता संगा । लसकर जोड़े कीआ सांबाहा । निकसिआ फूक त होइ गइओ सुआहा ।। २ ।। ऊचे मंदर महल अरु रानी । हसति घोड़े जोड़े मनि भानी । वड परवारु पूत अरु धीआ । मोहि पचे पचि अंधा मूआ ।। ३ ।। जिनहि उपाहा तिनहि बिनाहा । रंग रसा जैसे सुपनाहा । सोई मुकता तिसु राजु मालु । नानक दास जिसु खसमु दइआलु ।। ४ ।। ३५ ।। ८६ ।।

राजा बनकर राज्य (का आनन्द भी) प्राप्त कर लिया, (लोगों पर)

अत्याचार कर-करके माल-धन भी जोड़ लिया, जोड़ते-जोड़ते (यदि उसने) ख़ज़ाना (भी) बना लिया (तो भी क्या उपलब्धि है ?) परमात्मा ने (आख़िर) उससे छीनकर किसी दूसरे को दे दिया (सभी सांसारिक उपलब्धियाँ नश्वर हैं) ॥ १॥ यह मनुष्य-देह कच्ची मिट्टी की गागर के तुल्य है जो पानी में ही (गल जाती है। इसी तरह मनुष्य) अहंकार कर-करके उसी (संसार-समुद्र) में ही डूब जाता है॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि कोई राज्य पाकर मृत्यु के भय से निडर हो गया, उसे हर वक़्त साथ रहता हुआ कर्तार कभी याद न आया और फ़ौजें जमा कर-करके उसने बड़ा लश्कर बना लिया (तो भी सब व्यर्थ है ?) जब उसके श्वास निकल गए तो (उसका शरीर) मिट्टी हो गया ॥ २ ॥ (हे भाई !) यदि उसे ऊँचे राजमहल, सुन्दर स्त्री, हाथी-घोड़े, (सुन्दर) मनभावने कपड़े प्राप्त हो गए और वह पुत्र-पुत्रियों वाला, बड़े परिवार का मुखिया बन गया, तो भी तो (माया के) मोह में दुखी होकर आत्मिक मृत्यु ही प्राप्त कर बैठा ॥ ३ ॥ (हे भाई !) जिस परमात्मा ने (उसे) पैदा किया था उसने उसे नष्ट भी कर दिया, उसके भोगे हुए रंग-तमाशे तथा मौज-बहार स्वप्न के समान हो गए। नानक का विचार है कि वही मनुष्य (माया के मोह से) बचा रहता है, उसके पास (सत्यस्वरूप) राज्य तथा धन है जिस पर पति-प्रभु दयालु होता है (और जिसे नाम-स्मरण में लगाता है) ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ८६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ इन्ह सिउ प्रीति करी घनेरी। जउ मिलीऐ तउ वधै वधेरी। गलि चमड़ी जउ छोडै नाही। लागि छुटो सतिगुर की पाई ॥ १ ॥ जग मोहनी हम तिआगि गवाई। निरगुनु मिलिओ वजी वधाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी सुंदरि मन कउ मोहै। बाटि घाटि ग्रिहि बनि बनि जोहै। मनि तनि लागै होइ कै मीठी। गुरप्रसादि मै खोटी डीठी ॥ २ ॥ अगरक उसके वडे ठगाऊ। छोडहि नाही बाप न माऊ। मेली अपने उनि ले बांधे। गुर किरपा ते मै सगले साधे ॥ ३ ॥ अब मोरै मनि भइआ अनंद। भउ चूका टूटे सभि फंद। कहु नानक जा सतिगुरु पाइआ। घरु सगला मै सुखी बसाइआ ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ८७ ॥

(हे भाई !) यदि इस (माया) से बहुत प्रीति की जाए, तो ज्यों-ज्यों इसके साथ नेह होता है त्यों-त्यों इसके साथ मोह बढ़ता जाता है; (लेकिन) जब गले से चिपटी हुई छोड़ती ही नहीं तब सतिगुरु के चरण स्पर्श करके इससे मुक्ति पाई जाती है ॥ १ ॥ मुझे माया के तीन गुणों के प्रभाव से ऊपर रहनेवाला परमात्मा मिला है, मेरे भीतर उत्साह-भरी अवस्था

प्रबल हो गई है, तब से ही मैंने सारे जगत को मोहित करनेवाली माया (के मोह) को त्यागकर दूर फेंक दिया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माया ऐसी मोहक है कि जीव के मन को (तुरन्त) मोह लेती है। रास्ते में (चलते हुए), नाव पर (पार होते हुए), घर में (बैठे हुए), जंगल-जंगल में घूमते हुए इस मन को (मोहित करने के लिए) दृष्टि लगाए रखती है। मीठी बनकर यह तन-मन में आ चिपटती है। पर मैंने गुरु की कृपा से देख लिया है कि यह बड़ी खोटी है।।२।। (हे भाई ! कामादिक) उस माया के मालिक बड़े ठग हैं, माँ-बाप किसी को भी ठगने से छोड़ते नहीं। जिन-जिन लोगों ने इनसे मेल-मुलाकात की, इन्होंने उन सबको अच्छी तरह बाँध लिया, परन्तु मैंने गुरु की कृपा से इन सबको क़ाबू में कर लिया है ॥ ३ ॥ हे नानक ! जब से मुझे सतिगुरु मिल गया है, तब से अब मेरे मन में आत्मिक आनन्द बना रहता है और चोरों का भय समाप्त हो गया है, इनके द्वारा पैदा किए सब बन्धन टूट गए हैं। अब मैंने अपना सारा घर सुखी बना लिया है (अर्थात् इन्द्रियों के विषयों के प्रति आकर्षण से बचाव हो गया है, अतएव अब सुख ही सुख है) ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ८७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ आठ पहर निकटि करि जानै। प्रभ का कीआ मीठा मानै। एकु नामु संतन आधारु। होइ रहे सभ की पग छारु ॥ १ ॥ संत रहत सुनहु मेरे भाई। उआ की महिमा कथनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वरतणि जा कै केवल नाम। अनद रूप कीरतनु बिस्राम। मित्र सत्रु जा कै एक समानै। प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥ २ ॥ कोटि कोटि अघ काटनहारा। दुख दूरि करन जीअ के दातारा। सूर बीर बचन के बली। कउला बपुरी संती छली ॥ ३ ॥ ता का संगु बाछहि सुर देव। अमोघ दरसु सफल जा की सेव। कर जोड़ि नानकु करे अरदासि। मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ८८ ॥

परमात्मा का भक्त परमात्मा को आठों प्रहर अपने निकट बसता समझता है, जो कुछ परमात्मा करता है उसे मीठा समझकर मानता है। (हे भाई !) परमात्मा का नाम ही सन्तजनों (की ज़िन्दगी) का आसरा है। सन्तजन सबके चरणों की धूलि बने रहते हैं ॥ १ ॥ हे मेरे भाई ! (परमात्मा के) सन्त की जीवनयुक्ति सुन उसका बड़प्पन व्यक्त नहीं किया जा सकता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई ! सन्त वह है) जिसके हृदय में केवल हरि के नाम-स्मरण का व्यवहार होता है, सदा आनन्द रहनेवाले

परमात्मा की गुणस्तुति ही (सन्त की ज़िन्दगी का) सहारा है। (सन्त वह है) जिसके मन में मित्र और वैरी एक जैसे लगते हैं (क्योंकि सन्त सब जीवों में) अपने प्रभु के अतिरिक्त किसी दूसरे को (बसता हुआ) नहीं समझता ॥ २ ॥ (हे भाई! परमात्मा का सन्त दूसरों के) करोड़ों ही पाप दूर करने की शक्ति रखता है। (हे भाई!) परमात्मा के सन्त सबके दुख दूर करने योग्य हो जाते हैं, वे (लोगों को) आत्मिक जीवन देने की सामर्थ्य रखते हैं, वे सचमुच शूरवीर होते हैं, किए हुए वचनों का पालन करते हैं। इस तुच्छ माया को सन्त अपने वश में कर लेते हैं ॥ ३ ॥ (हे भाई!) परमात्मा के सन्त का मिलाप आकाशवासी देवता भी चाहते हैं। सन्त का दर्शन व्यर्थ नहीं जाता, सन्त की सेवा ज़रूर फलदायक होती है। नानक की प्रभु को हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि हे गुणों के भण्डार प्रभु! मुझे सन्तजनों की देन दे ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ८८ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ सगल सूख जपि एकै नाम। सगल धरम हरि के गुण गाम। महा पवित्र साध का संगु। जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥ १ ॥ गुरप्रसादि ओइ आनंद पावै। जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासा ता की गति मिति कहनु न जावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वरत नेम मजन तिसु पूजा। बेद पुरान तिनि सिम्रिति सुनीजा। महा पुनीत जा का निरमल थानु। साध संगति जा कै हरि हरि नामु ॥ २ ॥ प्रगटिओ सो जनु सगले भवन। पतित पुनीत ता की पग रेन। जा कउ भेटिओ हरि हरि राइ। ता की गति मिति कथनु न जाइ ॥ ३ ॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ। उन साधा का दरसनु पावउ। मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ। नानक आइ पए सरणाइ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ८९ ॥

(हे भाई!) गुरु की संगति बहुत पवित्र करनेवाली है, गुरु के मिलने से परमात्मा का प्रेम (हृदय में) पैदा हो जाता है, परमात्मा का नाम जपने से समस्त सुख प्राप्त हो जाते हैं। (हे भाई!) परमात्मा की गुणस्तुति करने में ही दूसरे सारे धर्म आ जाते हैं ॥ १ ॥ (हे भाई!) गुरु की कृपा से जिस मनुष्य के मन में प्रभु का नाम-स्मरण करने से प्रकाश हो जाता है। उसकी ऊँची आत्मिक अवस्था व्यक्त नहीं की जा सकती, उसकी आत्मिक महत्ता कही नहीं जा सकती, वह मनुष्य अनेक आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई!) गुरु की संगति के प्रभाव से जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम आ बसता है, (नाम के प्रभाव से) जिस

मनुष्य का हृदय-स्थान बहुत पवित्र हो जाता है, उसके मानो व्रत, नियम, समस्त तीर्थस्नान तथा समस्त पूजाएँ हो गईं, उसने मानो, वेद-पुराण, स्मृतियाँ आदि धार्मिक पुस्तकें सुन लीं ॥ २ ॥ जिस मनुष्य को प्रभु-बादशाह मिल जाता है, उस मनुष्य की ऊँची आत्मिक अवस्था, उस मनुष्य की आत्मिक महत्ता व्यक्त नहीं की जा सकती, उस मनुष्य के चरणों की धूलि विकारों में फँसे हुए व्यक्तियों को पवित्र करने की सामर्थ्य रखती है, वह मनुष्य सारे भवनों में प्रसिद्ध हो जाता है ॥ ३ ॥ नानक का विचार है कि जो गुरमुख तेरी शरण में आ गए हैं, मुझ ग़रीब को उनकी संगति में मिला दे (जिससे) मैं उनका दर्शन करता रहूँ और आठों प्रहर हाथ जोड़कर तेरा ध्यान करता रहूँ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ८९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ आठ पहर उदक इसनानी । सद ही भोगु लगाइ सु गिआनी । बिरथा काहू छोडै नाही । बहुरि बहुरि तिसु लागह पाई ॥ १ ॥ सालगिरामु हमारै सेवा । पूजा अरचा बंदन देवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घंटा जा का सुनीऐ चहुकुंट । आसनु जा का सदा बैकुंठ । जा का चवरु सभ ऊपरि झूलै । ता का धूपु सदा परफुलै ॥ २ ॥ घटि घटि संपटु है रे जा का । अभग सभा संगि है साधा । आरती कीरतनु सदा अनंद । महिमा सुंदर सदा बेअंत ॥ ३ ॥ जिसहि परापति तिस ही लहना । संत चरन ओहु आइओ सरना । हाथ चड़िओ हरि सालगिरामु । कहु नानक गुरि कीनो दानु ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ९० ॥

(हे पण्डित !) हम उस हरिशालिग्राम के चरण पुनःपुनः छूते हैं, जो किसी की भी दर्द-पीड़ा नहीं रहने देता । वह आठों प्रहर ही पानी का स्नान करनेवाला है, हरेक के मन को अच्छी तरह जाननेवाला वह हरि-शालिग्राम सदा ही भोग लगाता रहता है॥१॥ (हे पण्डित !) परमात्मा की सेवा-भक्ति ही हमारे घर में शालिग्राम (की पूजा) है । हरिनाम-स्मरण ही पूजा, सुगन्धि-भेंट तथा नमस्कार है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे पण्डित !) उस (हरिशालिग्राम की रज़ा) का घण्टा सारे जगत में ही सुना जाता है । (सत्संगति रूपी) वैकुण्ठ में उसका निवास सदा ही टिका रहता है, सब जीवों पर उसका (पवन-) चँवर झूल रहा है, सारी वनस्पति सदा फूल दे रही है, यही है उसके लिए धूप ॥ २ ॥ (हे पण्डित !) हरेक शरीर में वह बस रहा है, हरेक का हृदय ही उसका डिब्बा है; उसकी सन्त-सभा कभी समाप्त होनेवाली नहीं है, सत्संगति में वह हर वक़्त रहता है, जहाँ

उसकी सदा आनन्द देनेवाली गुणस्तुति हो रही है, यह गुणस्तुति उसकी आरती है, उस अनन्त तथा सुन्दर (हरिशालिग्राम) की सदा महिमा हो रही है ॥ ३ ॥ (पर, हे पण्डित !) जिस मनुष्य के भाग्य में उस (हरि-शालिग्राम) की प्राप्ति लिखी है, उसी को वह मिलता है । वह मनुष्य सन्तों के चरण छूता है, वह सन्तों की शरण में पड़ा रहता है। हे नानक ! कहो— जिस मनुष्य को गुरु ने (नाम की) देन दी, उसे हरिशालिग्राम मिल पड़ता है ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ९० ॥

॥ आसा महला ५ पंचपदा १ ॥ जिह पैडै लूटी पनिहारी । सो मारगु संतन दूरारी ॥ १ ॥ सतिगुर पूरै साचु कहिआ । नाम तेरे की मुकते बीथी जम का मारगु दूरि रहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह लालच जागाती घाट । दूरि रही उह जन ते बाट ॥ २ ॥ जह आवटे बहुत घन साथ । पारब्रहम के संगी साध ॥ ३ ॥ चित्र गुपतु सभ लिखते लेखा । भगत जना कउ द्रिसटि न पेखा ॥ ४ ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा । वाजे ता कै अनहद तूरा ॥ ५ ॥ ४० ॥ ९१ ॥

(हे भाई !) विकारों में फँसी हुई जीव-स्त्री जिस जीवन-मार्ग में सारी पूँजी लुटा बैठती है, वह रास्ता सन्तजनों से दूर रह जाता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! पूर्णगुरु ने जिस मनुष्य को तेरे सत्यनाम का उपदेश दे दिया, यमदूतों (आत्मिक मृत्यु) वाला रास्ता उस मनुष्य से दूर रह जाता है, उसे तेरे नाम के प्रभाव से जीवन-यात्रा में खुला रास्ता प्राप्त हो जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) जहाँ लालची कर लेनेवालों का घाट है, वह रास्ता सन्तजनों से दूर रह जाता है ॥ २ ॥ (हे भाई !) जिस जीवन-यात्रा में (मायाग्रस्त जीवों के) अनेकों ही क़ाफ़िले दुखी होते रहते हैं, उस यात्रा में गुरमुख मनुष्य परमात्मा के सत्संगी बने रहते हैं ॥ ३ ॥ चित्रगुप्त सब जीवों के कर्मों का हिसाब लिखते रहते हैं, लेकिन परमात्मा की भक्ति करनेवाले व्यक्तियों की ओर वे आँख उठाकर भी नहीं देख सकते ॥ ४ ॥ हे नानक ! कहो— जिस मनुष्य को पूर्णगुरु मिल जाता है उसके हृदय में सदा प्रभु की गुणस्तुति के निरन्तर बाजे बजते रहते हैं (इसलिए) उसे विकारों की प्रेरणा सुनाई नहीं देती ॥ ५ ॥ ४० ॥ ९१ ॥

॥ आसा महला ५ दुपदा १ ॥ साधू संगि सिखाइओ नामु । सरब मनोरथ पूरन काम । बुझि गई त्रिसना हरि जसहि अघाने । जपि जपि जीवा सारिगपाने ॥ १ ॥ करन करावन सरनि परिआ । गुर परसादि सहज घरु पाइआ मिटिआ अंधेरा चंदु

चड़िआ ।। १ ।। रहाउ ।। लाल जवेहर भरे भंडार । तोटि न आवै जपि निरंकार । अंम्रित सबदु पीवै जनु कोइ । नानक ता की परम गति होइ ।। २ ।। ४१ ।। ९२ ।।

गुरु अपनी संगति में रखकर जिन्हें परमात्मा का नाम-स्मरण सिखाता है, उसके सब मनोरथ, सब काम सफल हो जाते हैं, उनकी तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है, वे परमात्मा की गुणस्तुति में टिककर तृप्त रहते हैं। (हे भाई !) मैं भी ज्यों-ज्यों परमात्मा का नाम जपता हूँ, मेरे भीतर आत्मिक जीवन पैदा होता है ।। १ ।। (हे भाई ! जो मनुष्य) गुरु-कृपा से उस परमात्मा की शरण ले लेता है जो सब कुछ करने तथा कराने की शक्ति वाला है, वह मनुष्य वह आत्मिक ठिकाना प्राप्त कर लेता है, जहाँ उसे आत्मिक स्थिरता मिली रहती है। उसके भीतर मोह से उपजा अँधेरा दूर हो जाता है और प्रकाश हो जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। हे नानक ! पवित्र जीवन के गुण ही हीरे-जवाहर हैं, परमात्मा का नाम जप कर मनुष्य के भीतर इनके खज़ाने भर जाते हैं और कभी इनकी कमी नहीं होती। गुरु का शब्द आत्मिक जीवन देनेवाला जल है, जो भी मनुष्य यह नाम-जल पीता है उसकी सबसे ऊँची आत्मिक अवस्था बन जाती है ।। २ ।। ४१ ।। ९२ ।।

।। आसा घरु ७ महला ५ ।। हरि का नामु रिदै नित धिआई । संगी साथी सगल तरांई ।। १ ।। गुरु मेरै संगि सदा है नाले । सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ।। १ ।। रहाउ ।। तेरा कीआ मीठा लागै । हरिनामु पदारथु नानकु मांगै ।। २ ।। ४२ ।। ९३ ।।

गुरु-कृपा से मैं परमात्मा का नाम सदा अपने हृदय में स्मरण करता हूँ, (जिससे मैं संसार-समुद्र से पार हो जाऊँ) और अपने संगी-साथियों (ज्ञानेन्द्रियों को) पार उतारने योग्य बना रहा हूँ ।। १ ।। (हे भाई ! मेरा) गुरु सदा मेरे साथ बसता है इसलिए मैं उस (परमात्मा) को सदा स्मरण कर सदा अपने हृदय में बसाए रखता हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। गुरु-कृपा से मुझे तेरा किया हुआ हरेक काम अच्छा लग रहा है और (तेरा दास) नानक तुझसे सर्वाधिक बहुमूल्य वस्तु तेरा नाम माँग रहा है ।।२।।४२।।९३।।

।। आसा महला ५ ।। साधू संगति तरिआ संसारु । हरि का नामु मनहि आधारु ।। १ ।। चरन कमल गुरदेव पिआरे । पूजहि संत हरि प्रीति पिआरे ।। १ ।। रहाउ ।।

जा कै मसतकि लिखिआ भागु । कहु नानक ता का थिरु सोहागु ॥ २ ॥ ४३ ॥ ९४ ॥

(गुरमुख जीव) गुरु की संगति के प्रभाव से वह (जीव) संसार-समुद्र से पार उतर जाता है (क्योंकि) परमात्मा का नाम उसके मन का आसरा बना रहता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) हरि के सन्तजन प्रीति से, सप्रेम प्यारे गुरुदेव के सुन्दर कोमल चरण पूजते रहते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य के मस्तक पर लिखा लेख जाग पड़ता है उससे प्राप्त सौभाग्य (गुरु की कृपा से) सदा के लिए स्थिर रहता है ॥ २ ॥ ४३ ॥ ९४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ मीठी आगिआ पिर की लागी । सउकनि घर की कंति तिआगी । प्रिअ सोहागनि सीगारि करी । मन मेरे की तपति हरी ॥ १ ॥ भलो भइओ प्रिअ कहिआ मानिआ । सूखु सहजु इसु घर का जानिआ ॥ रहाउ ॥ हउ बंदी प्रिअ खिजमतदार । ओहु अबिनासी अगम अपार । ले पखा प्रिअ झलउ पाए । भागि गए पंच दूत लावे ॥ २ ॥ ना मै कुलु ना सोभावंत । किआ जाना किउ भानी कंत । मोहि अनाथ गरीब निमानी । कंत पकरि हम कीनी रानी ॥ ३ ॥ जब मुखि प्रीतमु साजनु लागा । सूख सहज मेरा धनु सोहागा । कहु नानक मोरी पूरन आसा । सतिगुर मेली प्रभ गुणतासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ९५ ॥

जब से मुझे प्रभु-पति की रज़ा मीठी लग रही है (तब से) प्रभु-पति ने मेरा हृदय-घर प्राप्त करके बैठी मेरी सौत (माया) से मुक्ति करा दी है । प्यारे ने सुहागिनी बनाकर मुझे सुन्दर बना दिया है और मेरे मन की (तृष्णा की) जलन दूर कर दी है ॥ १ ॥ (हे सखी !) मेरे भाग्य जाग पड़े हैं (कि गुरु की कृपा से) मैंने प्यारे प्रियतम की रज़ा को मीठा मानना शुरू कर दिया है, इसलिए अब मेरे इस हृदय-घर में बसते सुख और आत्मिक स्थिरता से मेरा गहरा सम्बन्ध बन गया है ॥ रहाउ ॥ (हे सखी ! अब) मैं प्यारे प्रभु-पति की दासी बन गई हूँ । जो कभी मरनेवाला नहीं, अगम्य तथा अनन्त है । (हे सखी ! गुरु की कृपा द्वारा जब से) पंखा (हाथ में) पकड़कर उसके पैरों में खड़े होकर मैं उस प्यारे पर पंखा करती हूँ, तब से मेरा आधार काटनेवाले कामादिक पाँचों वैरी भाग गए हैं ॥ २ ॥ (हे सखी !) न मेरा कोई ऊँचा ख़ानदान है, न मैं शोभा की मालिक हूँ, मुझे पता नहीं मैं कैसे प्रभु-पति को अच्छी लगी हूँ । हे सखी ! मुझ अनाथ को, गरीबिनी को पति-प्रभु ने (भुजाओं में) पकड़कर अपनी रानी बना

लिया है ॥ ३ ॥ (हे सहेली ! जब से) मुझे मेरा सज्जन प्रियतम मिला है, मेरे भीतर आनन्द बन रहा है, आत्मिक स्थिरता पैदा हो गई है, मेरे भाग्य जाग पड़े हैं। हे नानक ! कहो— (हे सहेली ! प्रभु-पति के मिलाप की) मेरी आशा पूर्ण हो गई है, सतिगुरु ने ही मुझे गुणों के भण्डार उस प्रभु के साथ मिलाया है ॥ ४ ॥ १ ॥ ९५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ माथै त्रिकुटी द्रिसटि करूरि । बोलै कउड़ा जिहबा की फूड़ि । सदा भूखी पिरु जानै दूरि ॥ १ ॥ ऐसी इसत्री इक रामि उपाई । उनि सभु जगु खाइआ हम गुरि राखे मेरे भाई ॥ रहाउ ॥ पाइ ठगउली सभु जगु जोहिआ । ब्रहमा बिसनु महादेउ मोहिआ । गुरमुखि नामि लगे से सोहिआ ॥ २ ॥ वरत नेम करि थाके पुनहचरना । तट तीरथ भवे सभ धरना । से उबरे जि सतिगुर की सरना ॥ ३ ॥ माइआ मोहि सभो जगु बाधा । हउमै पचै मनमुख मूराखा । गुर नानक बाह पकरि हम राखा ॥ ४ ॥ २ ॥ ९६ ॥

(हे भाई ! उस माया-स्त्री के) माथे पर बल पड़े रहते हैं, उसकी दृष्टि क्रोध से भरी रहती है, वह (सदा) कटु बोलती है, जिह्वा से अतृप्त है और वह भूखी टिकी रहती है, वह (माया-स्त्री) प्रभु-पति को कहीं दूर बसता हुआ समझती है ॥ १ ॥ हे मेरे भाई ! परमात्मा ने (माया) एक ऐसी स्त्री पैदा की है कि उसने सारे जगत को खा लिया है, मुझे तो गुरु ने कृपा करके उससे बचा रखा है ॥ रहाउ ॥ उस माया-स्त्री ने ठग-बूटी खिलाकर सारे जगत को अपनी ताक में रखा हुआ है, उसने तो ब्रह्मा, शिव और विष्णु को भी अपने मोह में फँसाया हुआ है। जो मनुष्य गुरु की शरण लेकर परमात्मा के नाम में जुड़े रहते हैं वे सुन्दर आत्मिक जीवन वाले बने रहते हैं ॥ २ ॥ (हे भाई ! अनेकों व्यक्ति) व्रत रख-रखकर, धार्मिक नियम निभाकर पश्चाताप-वश धार्मिक रस्में कर-करके थक गए, अनेकों तीर्थों पर, समस्त पृथ्वी पर भ्रमण कर चुके हैं, लेकिन माया-स्त्री से अपनी रक्षा न कर सके। (हे भाई !) केवल वही व्यक्ति बचते हैं जो गुरु की शरण लेते हैं ॥ ३ ॥ (हे भाई !) सारा जगत माया के मोह में बँधा हुआ है, स्वेच्छाचारी मूर्ख मनुष्य अहंकार में दुखी होता रहता है। हे नानक ! (कहो—) हे गुरु ! मुझे तूने ही मेरी बाँह पकड़कर माया से बचाया है ॥ ४ ॥ २ ॥ ९६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ सरब दूख जब बिसरहि सुआमी । ईहा ऊहा कामि न प्रानी ॥ १ ॥ संत त्रिपतासे हरि हरि ध्याइ ।

करि किरपा अपुनै नाइ लाए सरब सूख प्रभ तुमरी रजाइ ॥रहाउ॥ संगि होवत कउ जानत दूरि । सो जनु मरता नित नित झूरि ॥ २ ॥ जिनि सभु किछु दीआ तिसु चितवत नाहि । महा बिखिआ महि दिनु रैनि जाहि ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभु सिमरहु एक । गति पाईऐ गुर पूरे टेक ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९७ ॥

हे मालिक-प्रभु ! जब (किसी जीव के मन से) प्रभु विस्मृत हो जाता है तो उसे सारे दुख आ घेरते हैं, वह जीव लोक-परलोक में किसी काम नहीं आता ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तेरी रज़ा में चलने से सारे सुख प्राप्त होते हैं। हे प्रभु ! जिन मनुष्यों को तुम कृपा करके अपने नाम में जोड़े रखते हो वे सन्तजन तुम्हारा हरिनाम स्मरण कर तृप्त रहते हैं ॥ रहाउ॥ (हे भाई !) जो मनुष्य अपने साथ बसते हुए परमात्मा को कहीं दूर बसता हुआ समझता है, वह सदा खीझ-खीझकर आत्मिक मृत्यु चिपटाए रखता है ॥ २ ॥ (हे भाई !) जिस परमात्मा ने हरेक चीज़ दी है, जो मनुष्य उसे स्मरण नहीं करता उसके तमाम रात-दिन दुष्टा माया के प्रभाव में बीतते हैं ॥ ३ ॥ हे नानक ! कहो— (हे भाई !) पूर्णगुरु की शरण लेकर एक परमात्मा को स्मरण करते रहा करो, (इस प्रकार) ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ नामु जपत मनु तनु सभु हरिआ । कलमल दोख सगल परहरिआ ॥ १ ॥ सोई दिवसु भला मेरे भाई । हरि गुन गाइ परमगति पाई ॥ रहाउ ॥ साध जना के पूजे पैर । मिटे उपद्रह मन ते बैर ॥ २ ॥ गुर पूरे मिलि झगरु चुकाइआ । पंच दूत सभि वसगति आइआ ॥ ३ ॥ जिसु मनि वसिआ हरि का नामु । नानक तिसु ऊपरि कुरबान ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९८ ॥

जैसे पानी से सूखी वनस्पति हरी हो जाती है वैसे ही परमात्मा का नाम जपने से (नाम-जल से) मनुष्य का हृदय आत्मिक जीवन वाला हो जाता है, (उसके भीतर से) सारे पाप दूर हो जाते हैं ॥ १ ॥ हे मेरे भाई ! केवल वही दिन भाग्यशाली होता है जब जीव परमात्मा के गुण गाकर ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त करता है ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य गुरमुखों के चरण पूजता है, उसके मन से तमाम शरारतें, तमाम वैर-विरोध समाप्त हो जाते हैं ॥ २ ॥ (हे भाई !) जिस मनुष्य ने गुरु को प्राप्त कर शोर समाप्त कर लिया, कामादिक पाँचों वैरी उसके क़ाबू में आ जाते हैं ॥ ३ ॥ हे नानक ! (कहो—) जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम आ बसता है उस पर सदा बलिहारी होना चाहिए ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९८ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ गावि लेहि तू गावनहारे । जीअ पिंड के प्रान अधारे । जा की सेवा सरब सुख पावहि । अवर काहू पहि बहुड़ि न जावहि ॥ १ ॥ सदा अनंद अनंदी साहिबु गुन निधान नित नित जापीऐ । बलिहारी तिसु संत पिआरे जिसु प्रसादि प्रभु मनि वासीऐ ॥ रहाउ ॥ जा का दानु निखूटै नाही । भली भाति सभ सहजि समाही । जा की बखस न मेटै कोई । मनि वासाईऐ साचा सोई ॥ २ ॥ सगल समग्री ग्रिह जा कै पूरन । प्रभ के सेवक दूख न झूरन । ओटि गही निरभउ पदु पाईऐ । सासि सासि सो गुननिधि गाईऐ ॥ ३ ॥ दूरि न होई कतहू जाईऐ । नदरि करे ता हरि हरि पाईऐ । अरदासि करी पूरे गुर पासि । नानकु मंगै हरि धनु रासि ॥ ४ ॥ ५ ॥ ९९ ॥

हे भाई ! जब तक गाने की सामर्थ्य है उस परमात्मा के गुण गाता रह, जो तेरे शरीर और आत्मा का सहारा है, जो तेरे प्राणों का अवलम्ब है, जिसकी सेवा-भक्ति करने से सारे सुख प्राप्त कर लेगा, किसी दूसरे के पास जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ॥ १ ॥ (हे भाई !) उस मालिक-प्रभु को सदा ही जपना चाहिए जो सारे गुणों का भण्डार है और जो सदा आनन्द का स्रोत है। (हे भाई !) उस प्यारे गुरु पर बलिहारी जाना चाहिए जिसकी कृपा से परमात्मा को मन में बसाया जा सकता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! उस सत्यस्वरूप परमात्मा को ही सदा अपने मन में बसाना चाहिए, जिसकी दी हुई देन कभी समाप्त नहीं होती। जिसकी कृपा में कोई रुकावट नहीं डाल सकता, उसे स्मरण करनेवाले सारे भली प्रकार आत्मिक स्थिरता में टिके रहते हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! हरेक श्वास के साथ गुणों के भण्डार उस प्रभु के गुण गाते रहना चाहिए, जिसके घर में सारे पदार्थ भरे पड़े रहते हैं, जिसके सेवकों को कष्ट, दुख छू नहीं सकते और जिसका आसरा लेने से वह आत्मिक स्थान मिल जाता है जहाँ कोई भय दबाव नहीं डाल सकता ॥ ३ ॥ हे भाई ! वह परमात्मा हमसे दूर नहीं बसता और उसे कहीं (दूर) ढूँढने जाने की आवश्यकता नहीं, (लेकिन) उसकी प्राप्ति तभी हो सकती है जब वह आप कृपादृष्टि करे। हे भाई ! मैं तो पूर्णगुरु के पास ही प्रार्थना करता हूँ कि नानक हरिनाम-धन माँगता है, जो सर्वोपरि धन है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ९९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे मिटिआ तन का दूख । मन सगल कउ होआ सूखु । करि किरपा गुर दीनो नाउ ।

बलि बलि तिसु सतिगुर कउ जाउ ॥ १ ॥ गुरु पूरा पाइओ मेरे भाई । रोग सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई ॥ रहाउ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाए । मन चिंतत सगले फल पाए । अगनि बुझी सभ होई सांति । करि किरपा गुरि कीनी दाति ॥ २ ॥ निथावे कउ गुरि दीनो थानु । निमाने कउ गुरि कीनो मानु । बंधन काटि सेवक करि राखे । अंम्रित बानी रसना चाखे ॥ ३ ॥ वडै भागि पूज गुर चरना । सगल तिआगि पाई प्रभ सरना । गुरु नानक जा कउ भइआ दइआला । सो जनु होआ सदा निहाला ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०० ॥

(हे भाई ! गुरु को मिलकर) सर्वप्रथम मेरे शरीर का हरेक दुख मिट गया, फिर मेरे मन को पूर्णानन्द प्राप्त हुआ । गुरु ने कृपा करके मुझे परमात्मा का नाम दिया । (हे भाई !) मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ ॥ १ ॥ हे मेरे भाई ! जब से मुझे पूर्णगुरु मिला है, उसकी शरण लेने से मेरे समस्त रोग, दुख नष्ट हो गए हैं ॥ रहाउ ॥ (हे भाई ! जब से) मैंने गुरु के चरण अपने हृदय में बसाए हैं, मुझे मनोवांछित फल मिल रहे हैं, मेरी तृष्णा रूपी अग्नि बुझ गई है, (और अब मेरे भीतर) पूर्णठण्डक हो गई है । यह समस्त देन गुरु ने ही कृपा करके दी है ॥ २ ॥ मुझे पहले कहीं सहारा नहीं मिलता था, गुरु ने मुझे (अपने चरणों में) स्थान दिया, मुझ ग़रीब को गुरु ने आदर दिया, मेरे (माया-मोह के) बन्धन काटकर, अपना सेवक बनाकर चरणों में टिका लिया; अब मेरी जिह्वा आत्मिक जीवन देनेवाली गुणस्तुति की वाणी का रस चखती रहती है ॥ ३ ॥ (हे भाई !) सौभाग्यवश गुरु के चरणों की पूजा से मैं दूसरे आश्रय छोड़कर प्रभु की शरण आ गया हूँ । हे नानक ! (कहो—) जिस मनुष्य पर गुरु दयालु हो जाता है, वह मनुष्य सदा आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०० ॥

॥ आसा महला ५ ॥ सतिगुर साचै दीआ भेजि । चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि । उदरै माहि आइ कीआ निवासु । माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥ १ ॥ जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का । प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ रहाउ ॥ दसी मासी हुकमि बालक जनमु लीआ । मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ । गुरबाणी सखी अनंदु गावै । साचे साहिब कै मनि भावै ॥ २ ॥ वधी वेलि बहु पीड़ी चाली । धरम कला हरि बंधि बहाली । मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइआ । भए अचिंत

एक लिव लाइआ ॥ ३ ॥ जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु । बुलाइआ बोलै गुर कै भाणि । गुझी छंनी नाही बात । गुरु नानकु तुठा कीनी दाति ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०१ ॥

(हे भाई !) सत्यस्वरूप परमात्मा ने गुरु (नानक) को (जगत में) भेजा है, उसकी संगति से अटल आत्मिक जीवन पैदा हो रहा है। (हे भाई ! जैसे जब माँ के) पेट में (बच्चा) आ बसता है तो माँ के मन में बहुत ख़ुशी पैदा होती है ॥ १ ॥ (हे भाई ! गुरु नानक) परमात्मा का भक्त उत्पन्न हुआ, (परमात्मा का) पुत्र उत्पन्न हुआ, उसके भक्त समस्त जीवों के भीतर प्रभु के दरबार का (सेवा-भक्ति का) लेख प्रकट हो रहा है ॥ रहाउ ॥ (जिस घर में) परमात्मा के हुक्म-अनुसार दसवें महीने पुत्र उत्पन्न होता है, (तो उस घर से) शोक मिट जाता है और बड़ा उत्साह होता है; (उसी प्रकार जो सत्संगिनी) सहेली गुरु की गुणस्तुति की वाणी गाती है, वह आत्मिक आनन्द प्राप्त करती है और वह सदा सत्यस्वरूप प्रभु के मन में प्यारी लगती है ॥ २ ॥ (हे भाई ! सदाचारी मनुष्य) एक परमात्मा में सुरति जोड़ते हैं, वे चिन्ता से रहित हो जाते हैं। सतिगुरु उन्हें मनोवांछित फल देता है, गुरु उन गुरमुखों में परमात्मा की धार्मिक रूपरेखा भर देता है, ये गुरमुख ही बढ़ती हुई बेल हैं, चल रही पीढ़ियाँ हैं ॥ ३ ॥ (हे भाई !) अब यह कोई लुकी-छिपी बात नहीं है, यह सत्य है कि जिस पर गुरु नानक कृपा करता है, (जिसे नाम की) देन देता है, वह जो कुछ बोलता है गुरु द्वारा प्रेरित हुआ गुरु की रज़ा में ही बोलता है; उसे गुरु पर उतना ही गर्व होता है जितना कोई पुत्र अपने पिता पर गर्व करता है। अर्थात् जैसे पुत्र पिता से सहायता की आकांक्षा करता है वैसे शिष्य गुरु से रक्षा चाहता है ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०१ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ गुर पूरे राखिआ दे हाथ । प्रगटु भइआ जन का परतापु ॥ १ ॥ गुरु गुरु जपी गुरू गुरु धिआई । जीअ की अरदासि गुरू पहि पाई ॥ रहाउ ॥ सरनि परे साचे गुर देव । पूरन होई सेवक सेव ॥ २ ॥ जीउ पिंडु जोबनु राखै प्रान । कहु नानक गुर कउ कुरबान ॥ ३ ॥ ८ ॥ १०२ ॥

(हे भाई !) जिस सेवक को पूर्णगुरु अपना हाथ देकर विकारों से रक्षा करता है, उसकी शोभा-गरिमा सर्वत्र प्रकट हो जाती है ॥ १ ॥ (हे भाई !) मैं सदा गुरु को ही याद करता हूँ; सदा गुरु का ही ध्यान करता हूँ। गुरु से ही मैं अपने मन की माँगी हुई आवश्यकताएँ प्राप्त करता हूँ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) जो सेवक सत्यस्वरूप प्रभु के रूप

सतिगुरु का आसरा लेते हैं, उनकी सेवा सफल हो जाती है ॥ २ ॥ नानक का विचार है कि अपने आप को गुरु के हवाले कर देना चाहिए। (गुरु, शरणागत सेवक के) प्राण, शरीर, यौवन को (विकार आदि से) बचाकर रखता है ॥ ३ ॥ ८ ॥ १०२ ॥

आसा घरु ८ काफी महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मै बंदा बैखरीदु सचु साहिबु मेरा। जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥ १ ॥ माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा। बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए। जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ॥ २ ॥ चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईऐ। तुठा साहिबु जो देवै सोई सुखु पाईऐ ॥ ३ ॥ जे लख करम कमाईअहि किछु पवै न बंधा। जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धंधा ॥ ४ ॥ १ ॥ १०३ ॥

मैं तो अपने सच्चे मालिक का मोल लिया गुलाम हूँ, मेरा तन-मन-प्राण उसी का है ॥ १ ॥ (हे परमात्मा !) तू अनाथों का नाथ है, मेरा स्वामी है, मुझे तुम्हारा ही एकमात्र भरोसा है। सच्चे परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई भी सहारा कच्चा है, अस्थिर है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मालिक ! तुम्हारा हुकम असीम है, उसका कोई अन्त नहीं। जिसे सतिगुरु की प्राप्ति हो जाती है, वही तुम्हारे हुकम को पहचानता और (उसके अनुसार आचरण करता है) ॥ २ ॥ व्यक्ति का चातुर्य या बुद्धि इस क्षेत्र में व्यर्थ है (कोई काम नहीं आते)। वह मालिक सन्तुष्ट हो (हमारे कर्मों को स्वीकार कर ले) तो उसकी प्रत्येक देन सुखकारी होती है ॥ ३ ॥ यदि हम बाहरी कार्यों में सदैव संलग्न रहें, तो भी (बढ़ती हुई तृष्णा का) कोई अन्त नहीं (उसका अन्त नहीं होता)। गुरु नानकजी कहते हैं कि (प्रभु के) दास को समस्त इच्छाएँ और आडम्बर त्यागकर मात्र नाम का सहारा लेना चाहिए ॥ ४ ॥ १ ॥ १०३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ सरब सुखा मै भालिआ हरि जेवडु न कोई। गुर तुठे ते पाईऐ सचु साहिबु सोई ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद सद कुरबाना। नामु न विसरउ इकु

खिनु चसा इहु कीजै दाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागठु सचा सोइ है जिसु हरि धनु अंतरि । सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि ॥ २ ॥ गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सतसरु । ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥ ३ ॥ नामु धिआवहु सद सदा हरि हरि मनु रंगे । जीउ प्राण धनु गुरू है नानक कै संगे ॥ ४ ॥ २ ॥ १०४ ॥

मैंने दुनिया के समस्त सुखों की छानबीन करके देख लिया है, ईश्वर-मिलन के समान दूसरा कोई सुख नहीं है, और वह सत्यस्वरूप परमात्मा के प्रसन्न होने पर गुरु द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है ॥ १ ॥ (हे भाई!) मैं अपने गुरु पर सदा बलिहारी हूँ। मुझे यह दान (गुरु महाराज दें) कि मैं परमात्मा का नाम एक क्षण या एक पलक-मात्र के लिए भी न भुलाऊँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम रूपी धन हो, वही असली साहूकार है। जिस मनुष्य के भीतर गुरु का उपदेश निरन्तर टिका रहे, वह मनुष्य माया के विस्तृत जाल से बचा रहता है ॥ २ ॥ हे भाई! मैं यह बताने में असमर्थ हूँ कि गुरु कितना महान है? गुरु ज्ञान का सरोवर है, वह पवित्र आचरण का सरोवर है; वह उस पूर्णपरमेश्वर का प्रतिरूप है, जो सबका आदि है, जो सृष्टि के आदि से है और हरेक युग में मौजूद है ॥ ३ ॥ हे भाई! सदा परमात्मा का नाम स्मरण करते रहो, अपने मन को परमात्मा के प्रेम रूपी रंग में रँगे रखो। (उस परमात्मा की प्राप्ति गुरु द्वारा ही सम्भव है) इसलिए गुरु ही मेरी आत्मा है, गुरु ही मेरे प्राण हैं और गुरु ही मेरा धन है ॥ ४ ॥ २ ॥ १०४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ साई अलखु अपारु भोरी मनि वसै । दूखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु नसै ॥ १ ॥ हउ वंञा कुरबाणु साई आपणे । होवै अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिंदक गाल्हि सुणी सचे तिसु धणी । सूखी हूं सुखु पाइ माइ न कीम गणी ॥ २ ॥ नैण पसंदो सोइ पेखि मुसताक भई । मै निरगुणि मेरी माइ आपि लड़ि लाइ लई ॥ ३ ॥ बेद कतेब संसार हभाहूं बाहरा । नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १०५ ॥

हे माँ! जब वह अनन्त, अगोचर पति-प्रभु पल मात्र के लिए भी मेरे मन में टिकता है, तब मेरा हरेक दुख-दर्द, रोग आदि सब कुछ दूर हो जाता है ॥ १ ॥ हे माँ! मैं अपने पति-प्रभु पर बलिहारी हूँ, उसका नाम स्मरण

करने से मेरे हृदय में आनन्द उत्पन्न हो जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे माँ ! जब उस सत्यस्वरूप स्वामी-प्रभु की मैं थोड़ी सी भी गुणस्तुति सुनती हूँ, तो मैं इतना अधिक सुख अनुभव करती हूँ कि मैं उस सुख का मूल्यांकन नहीं कर सकती ॥ २ ॥ हे मेरी माँ ! वह स्वामी मेरी आँखों को सुन्दर लगता है, उसे देखकर मैं मस्त हो जाती हूँ। मैं गुणहीन हूँ लेकिन फिर भी उसने मुझे अपने साथ लगा लिया है ॥ ३ ॥ वह प्रियतम-प्रभु अप्रत्यक्ष होकर भी सर्वत्र है; वेद, किताब (धार्मिक ग्रन्थ आदि) उसका स्वरूप व्यक्त नहीं कर सकते। मुझे वह नानक का बादशाह सर्वत्र दिखाई दे रहा है ॥ ४ ॥ ३ ॥ १०५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ लाख भगत आराधहि जपते पीउ पीउ । कवन जुगति मेलावउ निरगुण बिखई जीउ ॥ १ ॥ तेरी टेक गोबिंद गुपाल दइआल प्रभ । तूं सभना के नाथ तेरी स्रिसटि सभ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सहाई संत पेखहि सदा हजूरि । नाम बिहूनड़िआ से मरन्हि विसूरि विसूरि ॥ २ ॥ दास दासतण भाइ मिटिआ तिना गउणु । विसरिआ जिन्हा नामु तिनाड़ा हालु कउणु ॥ ३ ॥ जैसे पसु हरिआउ तैसा संसारु सभ । नानक बंधन काटि मिलावहु आपि प्रभ ॥४॥४॥१०६॥

हे प्रभु ! तुम्हारे लाखों भक्त तुम्हें 'प्यारा-प्यारा' कहकर तुम्हारा नाम जपते हैं, तुम्हारी आराधना करते हैं; लेकिन मैं तो गुणहीन विकारी जीव हूँ, मैं तुम्हें किस प्रकार मिलूँ ? ॥ १ ॥ हे दयालु गोविन्द प्रभु ! मुझे तुम्हारा ही सहारा है। तुम सब जीवों के स्वामी हो, सारी सृष्टि तुम्हारी ही उत्पादित की हुई है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम अपने सन्तों की सहायता करनेवाले हो, तुम्हारे सन्त तुम्हें हमेशा अपने साथ देखते हैं, पर जो तुम्हारे नाम से ख़ाली हैं वे दुखी होकर आत्मिक मृत्यु चिपटाए रखते हैं ॥ २ ॥ हे प्रभु ! जो मनुष्य तुम्हारे 'दासों का दास' होने का भाव अपने भीतर टिकाए रखते हैं, उनका आवागमन समाप्त हो जाता है; लेकिन जिन्हें तेरा नाम विस्मृत रहता है, उनका हाल ख़राब ही रहता है ॥ ३ ॥ जैसे बन्धनहीन खेती चरनेवाला आवारा पशु होता है, वैसे ही सारा जगत विकारों से ग्रस्त है। हे नानक ! (कह—) हे प्रभु ! मुझे लौकिक बन्धनों से मुक्त करके अपने चरणों में जोड़े रख ॥ ४ ॥ ४ ॥ १०६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ हभे थोक विसारि हिको खिआलु करि । झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥ १ ॥ आठ पहर सालाहि सिरजनहार तूं । जीवां तेरी दाति किरपा करहु

मूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई कंमु कमाइ जितु मुखु उजला । सोई लगै सचि जिसु तूं देहि अला ॥ २ ॥ जो न ढहंदो मूलि सो घरु रासि करि । हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥ ३ ॥ तिन्हा पिआरा रामु जो प्रभ भाणिआ । गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १०७ ॥

हे भाई ! समस्त सांसारिक पदार्थों को भुलाकर केवल एक परमात्मा का स्मरण कर, लौकिक पदार्थों से उपजा झूठा अहंकार दूर कर दे, अपना मन (परमात्मा के प्रति) समर्पित कर दे और अपना हृदय (प्रभु-चरणों में) जोड़ दे ॥ १ ॥ हे सृजनहार प्रभु ! तुम्हें आठों प्रहर स्मरण करके मेरे भीतर आत्मिक जीवन पैदा होता है। मुझ पर कृपा कर जिससे मुझे गुणस्तुति की देन मिल जाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! वही कर्म कर जिससे तेरा मुँह उज्ज्वल रहे। (लेकिन) हे प्रभु ! तेरे सत्यस्वरूप नाम में वही मनुष्य जुड़ता है जिसे तू स्वयं यह देन देता है ॥ २ ॥ हे भाई ! उस हृदय रूपी घर को (आत्मिक विकास द्वारा) सुन्दर बना, जो दोबारा फिर कभी भी ढह नहीं सके। हे भाई ! एक ईश्वर को ही अपने हृदय में टिकाए रख, वह ईश्वर कभी भी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता ॥ ३ ॥ जो मनुष्य परमात्मा को भले लगते हैं, उन्हें परमात्मा प्यारा लगने लगता है (पर यह सब गुरु-कृपा द्वारा ही सम्भव है)। नानक ने गुरु-कृपा से ही उस अनन्तगुणों के स्वामी प्रभु की गुणस्तुति करनी शुरू की है ॥४॥५॥१०७॥

॥ आसा महला ५ ॥ जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ । भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ ॥ १ ॥ मनु तनु होइ निहालु तुम्ह संगि भेटिआ । सुखु पाइआ जन परसादि दुखु सभु मेटिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते खंड ब्रहमंड उधारे तिन्ह खे । जिन्ह मनि वुठा आपि पूरे भगत से ॥ २ ॥ जिस नो मंने आपि सोई मानीऐ । प्रगट पुरखु परवाणु सभ ठाई जानीऐ ॥ ३ ॥ दिनसु रैणि आराधि सम्हाले साह साह । नानक की लोचा पूरि सचे पातिसाह ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०८ ॥

यहाँ एक नये प्रश्न को उठाते हुए पूछा है कि जिन मनुष्यों को कभी भी परमात्मा का नाम विस्मृत नहीं होता, वे कैसे होते हैं ? उनमें और पति-प्रभु में तनिक भी भेद नहीं रहता, वे प्रभुतुल्य हो जाते हैं ॥ १ ॥ (हे प्रभु !) जिन मनुष्यों ने तेरा सत्संग किया उनका हृदय प्रसन्न रहता है, उन्होंने (तुम्हारे) सेवक गुरु की कृपा से आत्मिक आनन्द प्राप्त कर लिया है और अपना सारा दुख मिटा लिया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !)

जिन मनुष्यों के हृदय में परमात्मा आप आकर टिक जाता है वे पूर्णभक्त बन जाते हैं, वे सारे खण्डों-ब्रह्माण्डों को भी बचा लेने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेते हैं ॥ २ ॥ जिस मनुष्य को परमात्मा आप आदर देता है वही सम्मानित होता है, वही मनुष्य सर्वत्र प्रसिद्ध हो जाता है और वही प्रसिद्धि-प्राप्त मनुष्य सर्वत्र लोकप्रिय हो जाता है ॥ ३ ॥ हे सत्यस्वरूप स्वामी ! नानक की यह अभिलाषा पूर्ण करो कि वह दिन-रात तुम्हारी उपासना करके तुम्हें प्रत्येक श्वास-हृदय में बसाए रखे ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०८ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ पूरि रहिआ स्रब ठाइ हमारा खसमु सोइ । एकु साहिबु सिरि छतु दूजा नाहि कोइ ॥ १ ॥ जिउ भावै तिउ राखु राखणहारिआ । तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपाले प्रभु आपि घटि घटि सारीऐ । जिसु मनि वुठा आपि तिसु न विसारीऐ ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपि आपण भाणिआ । भगता का सहाई जुगि जुगि जाणिआ ॥ ३ ॥ जपि जपि हरि का नामु कदे न झूरीऐ । नानक दरस पिआस लोचा पूरीऐ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०९ ॥

(हे भाई !) वह पति-प्रभु सर्वत्र व्यापक है, वह ही (समस्त जीवों का) एकमात्र मालिक है, सृष्टि के स्वामित्व का छत्र उसके सिर पर है, उसके समकक्ष कोई दूसरा नहीं ॥ १ ॥ हे सर्वरक्षक प्रभु ! जैसे तुझे सही लगे, वैसे ही मेरी रक्षा कर । मैंने तुम्हारे अतिरिक्त अपनी आँखों से कोई दूसरा नहीं देखा, जो तुम्हारे जैसा हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) प्रत्येक शरीर में विद्यमान प्रभु सबकी ख़बर लेता है और प्रत्येक का पालन करता है । जिस मनुष्य के मन में वह प्रभु आप आ बसता है, उसे फिर विस्मृत नहीं करता ॥ २ ॥ जो कुछ परमात्मा कर रहा है, अपनी इच्छानुसार कर रहा है । यह बात प्रसिद्ध है कि प्रत्येक युग में परमात्मा अपने भक्तों की सहायता करता आ रहा है ॥ ३ ॥ परमात्मा का नाम स्मरण करके कभी किसी क़िस्म की चिन्ता नहीं करनी पड़ती । (हे प्रभु !) नानक को तुम्हारे दर्शनों की पिपासा है, इसलिए उसकी यह अभिलाषा पूर्ण करो ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ किआ सोवहि नामु विसारि गाफल गहिलिआ । कितीं इतु दरीआइ वंञन्हि वहदिआ ॥ १ ॥ बोहिथड़ा हरि चरण मन चड़ि लंघीऐ । आठ पहर गुण गाइ साधू संगीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भोगहि भोग अनेक विणु नावै सुंञिआ । हरि की भगति बिना मरि मरि रुंनिआ ॥ २ ॥

कपड़ भोग सुगंध तनि मरदन मालणा। बिनु सिमरन तनु छारु सरपर चालणा ॥ ३ ॥ महा बिखमु संसारु विरलै पेखिआ। छूटनु हरि की सरणि लेखु नानक लेखिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ११० ॥

हे लापरवाह मन ! परमात्मा का नाम विस्मृत कर क्यों सो रहा है ? नाम के बिना अनेक जीव संसार रूपी नदी में बहे जा रहे हैं ॥१॥ हे मन ! परमात्मा के चरण सुन्दर जहाज़ के तुल्य हैं, जिनके द्वारा संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है। (इसलिए) हे मन ! गुरु की संगति में रहकर आठों प्रहर परमात्मा का गुणगान कर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (मोहनिद्रा में मग्न जीव) अनेक सांसारिक भोग भोगते हैं, लेकिन परमात्मा के नाम के बिना आत्मिक जीवन प्राप्त नहीं कर पाते। परमात्मा की भक्ति के बिना ऐसे जीव आत्मिक मृत्यु पाकर दुखी होते रहते हैं ॥ २ ॥ देख ! जीव सुन्दर कपड़े पहनते हैं, स्वादिष्ट भोजन खाते हैं, शरीर पर सुगन्धित उबटन आदि लगाते हैं, लेकिन परमात्मा के नाम-स्मरण के बिना उनका यह शरीर राखतुल्य रहता है। इस शरीर को तो अन्त में अवश्य नष्ट होना है ॥३॥ हे नानक ! (कह—) किसी भाग्यशाली ने देखा है कि संसार-समुद्र अत्यन्त भयावह है, परमात्मा के शरणागत होने पर ही इससे छुटकारा होता है। (वही जीव बचता है, जिसके मस्तक पर प्रभु-स्मरण का) लेख लिखा है ॥ ४ ॥ ८ ॥ ११० ॥

॥ आसा महला ५ ॥ कोइ न किस ही संगि काहे गरबीऐ। एकु नामु आधारु भउजलु तरबीऐ ॥ १ ॥ मै गरीब सचु टेक तूं। मेरे सतिगुर पूरे। देखि तुम्हारा दरसनो मेरा मनु धीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु जंजालु काजि न कितै गनो। हरि कीरतनु आधारु निहचलु एहु धनो ॥ २ ॥ जेते माइआ रंग तेत पछाविआ। सुख का नामु निधानु गुरमुखि गाविआ ॥ ३ ॥ सचा गुणी निधानु तूं प्रभ गहिर गंभीरे। आस भरोसा खसम का नानक के जीअरे ॥ ४ ॥ ९ ॥ १११ ॥

किसी मनुष्य का सदा किसी के साथ निभाव नहीं होता (इसलिए लौकिक सम्बन्धों का) अहंकार नहीं करना चाहिए। केवल मात्र परमात्मा का नाम ही (वास्तविक) सहारा है, उसी के द्वारा संसार-समुद्र से पार हुआ जा सकता है ॥ १ ॥ हे मेरे पूर्णसतिगुरु ! तुम सत्यस्वरूप हो, मुझ ग़रीब के तुम्हीं सहारा हो। तुम्हारे दर्शन से मेरा मन विश्वस्त होता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुनिया की बादशाही (मिल्कियत) और भौतिक पदार्थ मन को आकर्षित किए रहते हैं, (लेकिन इसे) अन्त में व्यर्थ सिद्ध होनेवाला समझ।

परमात्मा की गुणस्तुति ही शरीर का वास्तविक आश्रय है, यही सत्यस्वरूप धन है ॥ २ ॥ माया के जितने भी रंग-तमाशे हैं, वे सब परछाईं के तुल्य ढल जानेवाले हैं। परमात्मा का नाम ही समस्त सुखों का भण्डार है। (लेकिन) यह नाम गुरु का शरणागत होकर सराहा जा सकता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तुम गहन, गम्भीर, विशालमना और सत्यस्वरूप हो। तुम्हीं समस्त गुणों के भण्डार हो। हे देह ! पति-प्रभु की ही आशा रख, उसका ही भरोसा रख ॥ ४ ॥ ९ ॥ १११ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जिसु सिमरत दुखु जाइ सहज सुखु पाईऐ। रैणि दिनसु कर जोड़ि हरि हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ नानक का प्रभु सोइ जिस का सभु कोइ। सरब रहिआ भरपूरि सचा सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि संगि सहाई गिआन जोगु। तिसहि अराधि मना बिनासै सगल रोगु ॥ २ ॥ राखनहारु अपारु राखै अगनि माहि। सीतलु हरि हरि नामु सिमरत तपति जाइ ॥ ३ ॥ सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा। कारज सगले सिधि भए भेटिआ गुरु पूरा ॥ ४ ॥ १० ॥ ११२ ॥

(हे भाई !) जिस परमात्मा का स्मरण करने से हर एक दुख दूर हो जाता है और आत्मिक स्थिरता का आनन्द महसूस होता है, उस प्रभु के समक्ष हाथ जोड़कर सदैव उसका स्मरण करना चाहिए ॥ १ ॥ नानक का पति-प्रभु वह है जिसके द्वारा प्रत्येक जीव उत्पादित है। वह सब जीवों में व्याप्त है, वह सत्यस्वरूप है और केवल वही सत्यस्वरूप है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे मन ! उस परमात्मा की आराधना कर, जो सबके भीतर विद्यमान है, जो सारे संसार में विद्यमान है, जो सबके साथ रहता है, जो सबकी सहायता करता है, जिसके साथ गहरी जान-पहचान करना ज़रूरी है। (उसकी) कृपा से हर एक रोग नष्ट हो जाता है ॥ २ ॥ हे भाई ! सबकी रक्षा करने की सामर्थ्य वाला अनन्त परमात्मा (गर्भकालीन स्थिति में) आग में हरेक जीव की संरक्षणा करता है, उसका नाम शान्ति देनेवाला है, उसके स्मरण से (मन से तृष्णा की) जलन शान्त हो जाती है ॥ ३ ॥ हे नानक ! (कह—) जिस मनुष्य को पूर्णगुरु प्राप्त हो जाता है, जो मनुष्य सन्तजनों के चरणों की धूलि में टिका रहता है, उसे आत्मिक स्थिरता के बहुत से सुख एवं आनन्द प्राप्त हुए रहते हैं और उसे समस्त कार्यों में सफलता प्राप्त होती है ॥ ४ ॥ १० ॥ ११२ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ गोबिंदु गुणी निधानु गुरमुखि जाणीऐ । होइ क्रिपालु दइआलु हरि रंगु माणीऐ ॥ १ ॥ आवहु संत मिलाह हरि कथा कहाणीआ । अनदिनु सिमरह नामु तजि लाज लोकाणीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपि जपि जीवा नामु होवै अनदु घणा । मिथिआ मोहु संसारु झूठा विणसणा ॥ २ ॥ चरण कमल संगि नेहु किनै विरलै लाइआ । धंनु सुहावा मुखु जिनि हरि धिआइआ ॥ ३ ॥ जनम मरण दुख काल सिमरत मिटि जावई । नानक कै सुखु सोइ जो प्रभ भावई ॥ ४ ॥ ११ ॥ ११३ ॥

परमात्मा समस्त गुणों का भण्डार है, गुरु की शरण लेकर उससे अटूट मिलाप किया जा सकता है। यदि वह प्रभु दयालु हो अर्थात् कृपालु हो जाए तो उसका प्रेमजन्य आनन्द महसूस किया जा सकता है ॥ १ ॥ हे सन्तो ! आइए, हम एकत्रित हो मिलकर बैठें और परमात्मा की गुणस्तुति की बातें करें, लोकलाज छोड़कर प्रतिपल उसका नाम स्मरण करते रहें ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैं तो ज्यों-ज्यों परमात्मा का नाम जपता हूँ, मेरे भीतर आत्मिक जीवन पैदा होता जाता है, मेरे भीतर असीम आनन्द पैदा होता है। (मुझे लगता है कि) संसार का मोह व्यर्थ है, संसार नश्वर है, संसार तो नष्ट ही जानेवाला है ॥ २ ॥ (लेकिन) किसी विरले (भाग्यशाली) मनुष्य ने परमात्मा के सुन्दर कोमल चरणों से नेह किया है। जिसने भी यह (नेह जोड़कर) परमात्मा का नाम स्मरण किया है, उसका मुख सुन्दर तथा भाग्यशाली है ॥ ३ ॥ (हे सन्तो !) परमात्मा का नाम स्मरण करने से आवागमन का दुख समाप्त हो जाता है। जो कुछ प्रभु को भला लगता है, वही नानक के हृदय में आनन्द (पैदा किए रखता) है ॥४॥११॥११३॥

॥ आसा महला ५ ॥ आवहु मीत इकत्र होइ रस कस सभि भुंचह । अंम्रित नामु हरि हरि जपह मिलि पापा मुंचह ॥ १ ॥ ततु वीचारहु संत जनहु ता ते बिघनु न लागै । खीन भए सभि तसकरा गुरमुखि जनु जागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुधि गरीबी खरचु लैहु हउमै बिखु जारहु । साचा हटु पूरा सउदा वखरु नामु वापारहु ॥ २ ॥ जीउ पिंडु धनु अरपिआ सेई पतिवंते । आपनड़े प्रभ भाणिआ नित केल करंते ॥ ३ ॥ दुरमति मदु जो पीवते बिखलीपति कमली । राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥ ४ ॥ १२ ॥ ११४ ॥

हे मित्रो ! आइए, मिलकर आत्मिक जीवन के प्रदाता हरि-नाम का जाप करें और इससे समस्त पापों का विनाश कर लें। येही मानो समस्त स्वादिष्ट पदार्थ हैं। आइए, इन समस्त स्वादिष्ट पदार्थों को खाएँ ॥ १ ॥ हे सन्तो ! यह विचारणीय है कि मनुष्य-जीवन का वास्तविक मनोरथ क्या है, इससे (जीवन-यात्रा में) कोई अड़चन नहीं पड़ती, कामादिक समस्त चोर नष्ट हो जाते हैं। (क्योंकि) गुरु की शरण लेकर मनुष्य सचेत रहता है॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे सन्तो ! विनम्रता वाली बुद्धि धारण करो। यह जीवन-यात्रा का खर्च पल्ले में बाँध लो। (नाम-स्मरण से) अहंकार को जला दो, जो विषतुल्य है। गुरु का घर ही सत्यस्वरूप दुकान है (क्योंकि वहीं से प्रभु के नाम का) पूरा सौदा मिलता है, (इसलिए वहाँ से) नाम-सौदा खरीदें ॥ २ ॥ (जिन्होंने नाम-धन के लिए) अपनी आत्मा, अपना शरीर, अपना सांसारिक धन न्यौछावर कर दिया, वे मनुष्य सर्वत्र प्रतिष्ठित हो गए और परमात्मा को प्यारे लगने लगे, वे ही सदा आत्मिक आनन्द प्राप्त करने लगे ॥३॥ हे सन्तो! दुर्बुद्धि शराब है। जो मनुष्य यह शराब पीने लगते हैं वे दुराचारी हो जाते हैं और विकारग्रस्त हो पागल हो जाते हैं। (लेकिन) हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा के नाम के उत्तम रस में मस्त रहते हैं, उन्हें सत्यस्वरूप परमात्मा के नाम का नशा हो जाता है ॥ ४ ॥ १२ ॥ ११४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ उदमु कीआ कराइआ आरंभु रचाइआ। नामु जपे जपि जीवणा गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ १ ॥ पाइ परह सतिगुरू कै जिनि भरमु बिदारिआ। करि किरपा प्रभि आपणी सचु साजि सवारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु गहि लीने आपणे सचु हुकमि रजाई। जो प्रभि दिती दाति सा पूरन वडिआई ॥ २ ॥ सदा सदा गुण गाईअहि जपि नामु मुरारी। नेमु निबाहिओ सतिगुरू प्रभि किरपा धारी ॥ ३ ॥ नामु धनु गुण गाउ लाभु पूरै गुरि दिता। वणजारे संत नानका प्रभु साहु अमिता ॥ ४ ॥ १३ ॥ ११५ ॥

(हे भाई !) जिस प्रकार गुरु ने उद्यम करने के लिए प्रेरणा दी है, उसी प्रकार मैंने उद्यम किया है और परमात्मा के नाम जपने के उद्यम की शुरुआत मैंने कर दी है। गुरु ने मेरे हृदय में नाम-मन्त्र परिपक्व करके टिका दिया है, अब नाम जप-जपकर मुझे आत्मिक जीवन मिल गया है ॥१॥ (हे भाई ! आइए) उस गुरु के चरणों पर गिर पड़ें, जिसने मन की दुबिधा मिटाई है। (गुरु-कृपा से) परमात्मा ने अपनी कृपा से (अपना) सत्यस्वरूप नाम चलाकर हमारा जीवन सुन्दर बना दिया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वह

रज़ा का स्वामी सत्यस्वरूप है। उसने अपने हुक्म के अनुसार मेरा हाथ पकड़कर अपने चरणों में लीन कर लिया है। (प्रभु ने) जो नाम की देन मुझे दी है, वही मेरे लिए सबसे बड़ा सत्कार है ॥ २ ॥ (हे भाई !) अब मेरे भीतर सर्वदा परमात्मा का गुणगान है, मैं सदा परमात्मा का नाम जपता रहता हूँ। प्रभु ने कृपा की है, (तभी) गुरु मेरा (नाम जपने का) नियम पूर्ण कर रहा है॥ ३ ॥ (अब) परमात्मा का नाम ही मेरा धन है, मैं सदा परमात्मा के गुण गाता रहता हूँ। पूर्णगुरु ने मुझे यह लाभ दिया है। हे नानक ! (कह—) साहूकार-परमात्मा अनन्त शक्ति का स्वामी है और उसके सन्तजन वनजारे हैं॥ ४ ॥ १३ ॥ ११५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जा का ठाकुरु तुही प्रभ ता के वडभागा। ओहु सुहेला सद सुखी सभु भ्रमु भउ भागा ॥ १ ॥ हम चाकर गोबिंद के ठाकुरु मेरा भारा। करन करावन सगल बिधि सो सतिगुरू हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजा नाही अउरु को ता का भउ करीऐ। गुर सेवा महलु पाईऐ जगु दुतरु तरीऐ ॥ २ ॥ द्रिसटि तेरी सुखु पाईऐ मन माहि निधाना। जा कउ तुम किरपाल भए सेवक से परवाना ॥ ३ ॥ अंम्रित रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै। वजहु नानक मिलै एकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥ ४ ॥ १४ ॥ ११६ ॥

हे प्रभु ! तुम आप ही जिस मनुष्य के रक्षक हो, वह भाग्यशाली है अथवा उसके भाग्य बलवान हैं, वह सदा सहज (जीवन व्यतीत करता) है, वह सदा सुखी (रहता) है, उसका हर एक प्रकार का भय तथा भ्रम दूर हो जाता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) मैं उस गोविन्द का सेवक हूँ, वह मेरा स्वामी है; जो सर्वोच्च है, समस्त तरीक़ों से (सब कुछ) करनेवाला है और करानेवाला है। वही मेरा गुरु है (मार्ग-प्रदर्शक है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (विश्व में) परमात्मा के बराबर का दूसरा कोई नहीं है, जिसका भय माना जाए। गुरु द्वारा बतलाई सेवा करने से (परमात्मा के चरणों में) ठिकाना मिल जाता है और इस संसार-सागर से पार उतर जाते हैं, जिससे पार उतरना अत्यन्त कठिन है ॥ २ ॥ हे प्रभु ! तेरी कृपादृष्टि से ही सुख प्राप्त होता है। (तुम्हारी कृपा से) मन में (तुम्हारा नाम-) भण्डार आ बसता है। हे प्रभु! जिन पर तुम दयालु होते हो, वे तेरे सेवक, तेरे द्वार पर सत्कृत होते हैं ॥३॥ हे भाई! परमात्मा की गुणस्तुति आत्मिक जीवन देने-वाला रस है, कोई विरला मनुष्य यह(अमृतरस)पान करता है। हे नानक! जिसे परमात्मा का नाम-वज़ीफ़ा मिल जाता है, वह अपने हृदय में यह नाम सदा जपकर आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेता है ॥ ४ ॥ १४ ॥ ११६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जा प्रभ की हउ चेरुली सो सभ ते ऊचा। सभु किछु ता का कांढीऐ थोरा अरु मूचा ॥ १ ॥ जीअ प्रान मेरा धनो साहिब की मनीआ। नामि जिसै कै ऊजली तिसु दासी गनीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वे परवाहु अनंद मै नाउ माणक हीरा। रजी धाई सदा सुखु जा का तूं मीरा ॥ २ ॥ सखी सहेरी संग की सुमति द्रिड़ावउ। सेवहु साधू भाउ करि तउ निधि हरि पावउ ॥ ३ ॥ सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा। जिसहि सीगारे नानका तिसु सुखहि बसेरा ॥ ४ ॥ १५ ॥ ११७ ॥

हे सहेलियो! मैं जिस प्रभु की तुच्छ दासी हूँ, वह मालिक-प्रभु सर्वोच्च है; मेरे पास जो भी छोटी-बड़ी वस्तु है, वह उस मालिक की ही कहलाती है ॥ १ ॥ हे सहेलियो! यह देह, प्राण और धन आदि सब कुछ मैं मालिक-प्रभु की देन मानती हूँ। जिस स्वामी-प्रभु के प्रभाव से मैं प्रतिष्ठा-सम्पन्न हो गई हूँ, मैं अपने आपको उसकी दासी गिनती हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे मालिक-प्रभु!) तुझे किसी की पराधीनता नहीं, तुम आनन्द-स्वरूप हो, तेरा नाम मेरे लिए मोती तथा हीरा है। हे प्रभु! जिस जीव-स्त्री के तुम बादशाह हो, वह माया की ओर से निर्लिप्त रहती है, वह सदा आनन्दित रहती है ॥ २ ॥ हे मेरी सहेलियो! मैं तुम्हें यह शुभ परामर्श बार-बार स्मरण कराती हूँ कि तुम श्रद्धा-प्रेमपूर्वक गुरु की शरण लो। (गुरु की शरणागत होकर) मैं परमात्मा का नाम-भण्डार प्राप्त कर रही हूँ ॥ ३ ॥ हे मेरी सहेलियो! प्रत्येक जीव-स्त्री ही मालिक-प्रभु की दासी है, प्रत्येक जीव-स्त्री कहती है कि परमात्मा मेरा मालिक है। पर, हे नानक! प्रभु जिस जीव-स्त्री के जीवन को सुन्दर बनाता है, उसका निवास सुख-आनन्द में रहता है ॥ ४ ॥ १५ ॥ ११७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखु री। सगल गुणा गुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥ १ ॥ इहु मनु सुंदरि आपणा हरिनामि मजीठै रंगि री। तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री। दूजा भाउ विसारीऐ एहु तंबोला खाइ री ॥ २ ॥ गुर का सबदु करि दीपको इह सत की सेज बिछाइ री। आठ पहर कर जोड़ि रहु तउ भेटै हरि राइ री ॥ ३ ॥ तिस ही चजु सीगारु सभु

साई रूपि अपारि री। साई सोहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥ ४ ॥ १६ ॥ ११८ ॥

हे मेरी सुन्दर आत्मा ! तू सत्संगियों की तुच्छ-सी दासी बनी रह, बस ! यह कर्तव्य सीख, और, हे आत्मा ! उस पति-प्रभु को कहीं दूर बसता न ख़याल कर, जो समस्त गुणों का मालिक है, जो गुणों के आधार पर सर्वोत्तम है ॥ १ ॥ हे सुन्दर आत्मा ! तू अपने इस मन को मजीठ (जैसे पक्के) परमात्मा के नाम-रंग से रँग ले। अपने भीतर से बुद्धिमानी तथा चतुराई छोड़कर सृष्टि के पालक प्रभु को अपने साथ बसता समझती रह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरी आत्मा ! पति-प्रभु जो हुक्म करता है, वह मानना चाहिए —बस ! इस बात को अपना श्रृंगार बनाए रख। परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा अन्य प्रेम भुला देना चाहिए। (यह नियम आत्मिक जीवन के लिए पान का बीड़ा है), हे आत्मा ! यह पान खाया कर ॥ २ ॥ हे सुन्दर आत्मा ! सतिगुरु के शब्द को दीपक बना और उस आत्मिक जीवन की (अपने हृदय में) सेज बिछा। हे सुन्दर आत्मा ! आठों प्रहर हाथ जोड़कर (प्रभु-चरणों में) टिकी रह, तब ही प्रभु-स्वामी (आकर) मिलता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! (कह—) हे मेरी सुन्दर आत्मा ! उसी जीव-स्त्री का चातुर्य माना जाता है, उसी जीव-स्त्री का श्रृंगार स्वीकृत होता है, वही जीव-स्त्री सुन्दरी समझी जाती है, जो अनन्त परमात्मा (के चरणों) में लीन रहती है। हे आत्मा ! वही जीव-स्त्री सौभाग्यशाली है, जो कर्तार को प्यारी लगती है और जो कर्तार में लीन रहती है ॥ ४ ॥ १६ ॥ ११८॥

॥ आसा महला ५ ॥ डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा। भ्रम काटे गुरि आपणै पाए बिसरामा ॥ १ ॥ ओइ बिखादी दोखीआ ते गुर ते हूटे। हम छूटे अब उन्हा ते ओइ हम ते छूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा तेरा जानता तब ही ते बंधा। गुरि काटी अगिआनता तब छुटके फंधा ॥ २ ॥ जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखीआ। गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते सुखीआ ॥ ३ ॥ ना को दुसमनु दोखीआ नाही को मंदा। गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बंदा ॥ ४ ॥ १७ ॥ ११९ ॥

हे भाई ! विकारों में गिरने और मोह में फँसने का क्रम तब तक बना रहता है, जब तक मनुष्य के मन को (माया के प्रति) भाग-दौड़ बनी रहती है। लेकिन गुरु ने जिस मनुष्य की दुबिधाएँ मिटा दीं, उसने मानसिक टिकाव प्राप्त कर लिया ॥ १ ॥ ये जितने भी कामादिक शत्रु हैं, गुरु की शरणागत होकर सारे थक गए हैं। अब उनसे मुक्ति हो गई

है, वे सब हमारा पीछा छोड़ गए हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब से मनुष्य ने भेदभाव की वृत्ति को अपनाया है, तब से इसे माया-मोह के बन्धनों ने जकड़ा है। लेकिन जब गुरु ने अज्ञानता मिटा दी, तब मोह के बन्धनों से मुक्ति हो गई ॥ २ ॥ हे भाई ! जब तक मनुष्य परमात्मा की रज़ा को नहीं समझता, तब तक दुखी रहता है। लेकिन जिसने गुरु की शरण लेकर परमात्मा की रज़ा को समझ लिया, वह उसी समय से सुखी हो गया ॥ ३ ॥ हे नानक ! जो मनुष्य गुरु-अनुसार बतलाई सेवा करके परमात्मा का सेवक बन जाता है, पति-प्रभु का दास बन जाता है; उसे कोई मनुष्य अपना दुश्मन नहीं दिखता, कोई वैरी नहीं लगता और कोई उसे बुरा नहीं लगता ॥ ४ ॥ १७ ॥ ११९ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ सूख सहज आनदु घणा हरि कीरतनु गाउ। गरह निवारे सतिगुरू दे अपणा नाउ ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद सद बलि जाउ। गुरू विटहु हउ वारिआ जिसु मिलि सचु सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै। तिसु जमु नेड़ि न आवई जो हरि प्रभि भावै ॥ २ ॥ पुंन दान जप तप जेते सभ ऊपरि नामु। हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥ ३ ॥ भै बिनसे भ्रम मोह गए को दिसै न बीआ। नानक राखे पारब्रहमि फिरि दूखु न थीआ ॥ ४ ॥ १८ ॥ १२० ॥

गुरु ने मुझे वह हरि-नाम देकर, जिसे वह आप जपता है; मुझे नौ ग्रहों की मुसीबतों से दूर कर दिया है। मैं परमात्मा की गुणस्तुति करता रहता हूँ और मेरे अन्तर्मन में आत्मिक स्थिरता का आनन्द बना रहता है ॥ १ ॥ (हे भाई !) मैं गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, सदा ही न्यौछावर जाता हूँ; क्योंकि उसके माध्यम से सत्यस्वरूप प्रभु का नाम-स्मरण मैंने अपना ध्येय बना लिया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ शुभ-अशुभ शकुनों का आतंक उस मनुष्य को होता है, जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का वास नहीं होता। लेकिन जो मनुष्य प्रभु (की स्मृति) में जुड़कर हरि-प्रभु को प्रिय लगता है, यमदूत भी उसके निकट नहीं आता ॥ २ ॥ शुभकर्म, जप, तप आदि जितने भी (लौकिक व्यवहार) हैं, परमात्मा का नाम-स्मरण इन सबसे श्रेष्ठ कर्म है। जो मनुष्य जिह्वा द्वारा परमात्मा का नाम जपता है, उसका जीवन-मनोरथ सफल हो जाता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! जिन मनुष्यों की रक्षा परमात्मा ने आप की है, उन्हें दोबारा कोई दुख नहीं होता, उनके समस्त भय दूर हो जाते हैं, उनके मोह तथा भ्रम समाप्त हो जाते हैं, उन्हें कोई मनुष्य पराया नहीं लगता ॥ ४ ॥ १८ ॥ १२० ॥

आसा घरु ९ महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ चितवउ चितवि सरब सुख पावउ आगै भावउ कि न भावउ । एकु दातारु सगल है जाचिक दूसर कै पहि जावउ ॥ १ ॥ हउ मागउ आन लजावउ । सगल छत्रपति एको ठाकुरु कउनु समसरि लावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठउ बैसउ रहि भि न साकउ दरसनु खोजि खोजावउ । ब्रहमादिक सनकादिक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार तिन्ह कउ महलु दुलभावउ ॥ २ ॥ अगम अगम आगाधि बोध कीमति परै न पावउ । ता की सरणि सतिपुरख की सतिगुरु पुरखु धिआवउ ॥ ३ ॥ भइओ क्रिपालु दइआलु प्रभु ठाकुरु काटिओ बंधु गरावउ । कहु नानक जउ साध संगु पाइओ तउ फिरि जनमि न आवउ ॥ ४ ॥ १ ॥ १२१ ॥

(हे भाई !) मैं चाहता हूँ कि परमात्मा का नाम स्मरण करके समस्त सुख प्राप्त करूँ, (लेकिन इस कामना के कारण मैं यह निर्णय नहीं कर पाता कि) प्रभु की सेवा में भला लग रहा हूँ अथवा नहीं । (किसी सुख की याचना के लिए) मैं प्रभु के अतिरिक्त किसी के पास जा भी नहीं सकता, क्योंकि देन देनेवाला एक परमात्मा है, और सृष्टि, माँगनेवाली है ॥ १ ॥ जब मैं किसी दूसरे से (परमात्मा के अतिरिक्त) माँगता हूँ, तो मैं लज्जित होता हूँ; क्योंकि एक मालिक-प्रभु ही सब जीवों का राजा है, मैं किसी दूसरे को उसके बराबर का सोच नहीं सकता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! (परमात्मा के दर्शनार्थ) मैं उठता हूँ, फिर बैठ जाता हूँ, (पर दर्शन किए बिना) रह भी नहीं सकता, पुनःपुनः खोजकर दर्शन करना चाहता हूँ । परमात्मा का ठिकाना तो उनके लिए दुर्लभ रहा, जो ब्रह्मा-जैसे सनक, सनंदन, सनातन, सनतकुमार (ब्रह्मा के पुत्र कहलाए) ॥ २ ॥ हे भाई ! परमात्मा अगम्य है, जीवों की पहुँच से परे है, वह अथाह समुद्र है, जिसकी गहराई अपरिमित है, उसकी क़ीमत का अंकन नहीं हो सकता । (उस प्रभु के दर्शनों के लिए) मैंने गुरु महापुरुष की शरण ली है, मैं सतिगुरु की आराधना करता हूँ ॥ ३ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य पर ठाकुर-प्रभु दयावान होता है, उसके गले से (मोह-माया की) फाँसी काट देता है । हे नानक ! कह— यदि मुझे सत्संगति प्राप्त हो जाए, तब ही मैं आवागमन के चक्र से बच सकूँगा अर्थात् दोबारा जन्म-मरण में नहीं आऊँगा ॥ ४ ॥ १ ॥ १२१ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी । संगि चलन कउ तोसा दीन्हा गोबिंद नाम के बिउहारी ॥ १ ॥ अवर बिसारी बिसारी । नाम दानु गुरि पूरै दीओ मै एहो आधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पंथि सम्हारी । नाम द्रिड़ु गुरि मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥ २ ॥ दिनु भी गावउ रैनी गावउ गावउ सासि सासि रसनारी । सतसंगति महि बिसासु होइ हरि जीवत मरत संगारी ॥ ३ ॥ जन नानक कउ इहु दानु देहु प्रभ पावउ संत रेन उरि धारी । स्रवनी कथा नैन दरसु पेखउ मसतकु गुर चरनारी ॥ ४ ॥ २ ॥ १२२ ॥

(हे भाई !) परमात्मा के नाम के वनजारे सत्संगियों ने मेरा साथ करने के लिए (परमात्मा का नाम) यात्रा-खर्च के रूप में दिया है। अब मैं हृदय में परमात्मा के गुण गाता हूँ, बाहर लौकिक व्यवहार निभाता हुआ भी परमात्मा की गुणस्तुति स्मरण रखता हूँ, सोते-जागते (प्रत्येक पल) मैं परमात्मा की गुणस्तुति करता रहता हूँ ॥ १ ॥ परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा सहारा मैंने बिल्कुल भुला दिया है। पूर्णगुरु ने मुझे परमात्मा के नाम की देन दी है, मैंने इसी को (अपनी ज़िन्दगी का) सहारा बना लिया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) गुरु ने मेरे मन में प्रभु-नाम को दृढ़ कर दिया है, (जिसने) मेरी तृष्णा मिटा दी है। अब मैं दुखों में परमात्मा के गुण गाता रहता हूँ। सुख में भी गुणगान करता हूँ और रास्ते में चलते हुए भी परमात्मा की स्मृति को सँभाले रखता हूँ ॥ २ ॥ (हे भाई !) अब मैं रात-दिन, प्रत्येक श्वास के साथ अपनी जिह्वा से परमात्मा के गुण गाता हूँ। सत्संगति में रहने से यह विश्वास बन जाता है कि परमात्मा जीते-मरते हमेशा हमारे साथ रहता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! अपने दास नानक को यह दान दो कि मैं तेरे सन्तजनों की चरणधूलि प्राप्त करूँ, तेरी स्मृति को हृदय में टिकाए रखूँ, तेरी गुणस्तुति अपने कानों से सुनता रहूँ, तेरा दर्शन अपनी आँखों से करता रहूँ और अपना मस्तक गुरु के चरणों पर टिकाए रखूँ ॥ ४ ॥ २ ॥ १२२ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु १० महला ५ ॥ जिस नो तूं असथिरु करि मानहि ते पाहुन दो दाहा । पुत्र कलत्र ग्रिह सगल समग्री सभ मिथिआ असनाहा ॥ १ ॥ रे मन किआ करहि है हा हा । द्रिसटि देखु जैसे हरि चंदउरी इकु राम भजनु

लै लाहा ।। १ ।। रहाउ ।। जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोइ चारि भोराहा । भीति ऊपरे केतकु धाईऐ अंति ओर को आहा ।। २ ।। जैसे अंभ कुंड करि राखिओ परत सिंधु गलि जाहा । आवगि आगिआ पारब्रहम की उठि जासी मुहत चसाहा ।। ३ ।। रे मन लेखै चालहि लेखै बैसहि लेखै लैदा साहा । सदा कीरति करि नानक हरि की उबरे सतिगुर चरण ओटाहा ।। ४ ।। १ ।। १२३ ।।

हे मन ! जिस पुत्र, स्त्री और घरेलू सामान को तू शाश्वत माने बैठा है, ये सब तो दो दिन के मेहमान हैं। पुत्र, स्त्री, घरेलू सामान —इनके साथ मोह बिल्कुल मिथ्या है ।। १ ।। हे मेरे मन ! ख़ुशी में डूबकर क्या आहा ! आहा !! करता है ? विचारपूर्वक देख, यह सारा प्रसार धुएँ के पर्वत के समान है। परमात्मा का भजन किया कर, (मनुष्य-जन्म में) केवल यही लाभ प्राप्त किया जा सकता है ।। १ ।। रहाउ ।। हे मन ! यह जगत-प्रसार इस प्रकार मिथ्या है, जैसे शरीर पर पहने कपड़े दो-चार दिन में पुराने हो जाते हैं। हे मन ! दीवार पर कहाँ तक दौड़ा जा सकता है ? आख़िर उसका अन्तिम छोर आ ही जाता है ।। २ ।। हे मन ! जैसे पानी का हौज़ बना हो और नमक उसमें गिरते ही गल जाता है, (बिल्कुल यही स्थिति आदमी की है)। हे मन ! जब परमात्मा का हुक्म आवेगा, वह उसी वक़्त उठकर चल पड़ेगा ।। ३ ।। हे मेरे मन ! तू अपने गिने-चुने मिले श्वासों के भीतर ही जगत में घूमता-फिरता है और परमात्मा के लिखे अनुसार ही तू श्वास लेता है, (आखिर श्वास समाप्त हो जाते हैं)। हे नानक ! सदा परमात्मा की गुणस्तुति करता रह। जो मनुष्य गुरु के चरणों का आश्रय लेते हैं, वे (माया-मोह में ग्रस्त होने से) बच जाते हैं ।। ४ ।। १ ।। १२३ ।।

।। आसा महला ५ ।। अपुसट बात ते भई सीधरी दूत दुसट सजनई । अंधकार महि रतनु प्रगासिओ मलीन बुधि हछनई ।। १ ।। जउ किरपा गोबिंद भई । सुख संपति हरिनाम फल पाए सतिगुर मिलई ।। १ ।। रहाउ ।। मोहि किरपन कउ कोइ न जानत सगल भवन प्रगटई । संगि बैठनो कही न पावत हुणि सगल चरण सेवई ।। २ ।। आढ आढ कउ फिरत ढूंढते मन सगल त्रिसन बुझि गई । एकु बोलु भी खवतो नाही साध संगति सीतलई ।। ३ ।। एक जीह गुण कवन वखानै अगम अगम

अगमई । दासु दास दास को करीअहु जन नानक हरि सरणई ॥ ४ ॥ २ ॥ १२४ ॥

(गुरु-कृपा से मेरी हरेक) ग़लत बात सही हो गई, (मेरे पूर्ववर्ती) निकम्मे शत्रु भी अब सज्जन मित्र बन गए हैं। मेरे मन के घोर अन्धकार में (गुरु-कृपा से ज्ञान-) रत्न चमक पड़ा है और (विकारों द्वारा) मैली हो चुकी (पथभ्रष्ट) बुद्धि अब निर्मल हो गई है ॥ १ ॥ हे भाई! जब मुझ पर गोविंद की कृपा हुई तभी मैं सतिगुरु से मिला। इसके परिणामस्वरूप मुझे आत्मिक आनन्द की दौलत और परमात्मा के नाम की प्राप्ति हो गई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (गुरु के मिलन से पूर्व) मुझ निकम्मे को कोई नहीं जानता था, अब मैं तमाम लोकों में प्रसिद्ध हो गया। (पहले) मुझे किसी के पास बैठना नहीं मिलता था, अब सारी दुनिया मेरे चरणों की सेवा करने लगी ॥ २ ॥ (गुरु की भेंट से पूर्व) मैं आधी-आधी दमड़ी को ढूँढ़ता फिरता था, अब (गुरु-कृपा से) मेरे मन की सारी तृष्णा बुझ गई है। पहले मैं किसी का एक कटु शब्द सहन नहीं कर पाता था, अब सत्संगति के प्रभाव से मेरा मन शान्त हो गया है ॥ ३ ॥ (प्रभु के) कौन-कौन से उपकार मेरी एक जिह्वा व्यक्त करे, वह अकथ्य और अपहुँच है। हे नानक! (केवल यही कहता रह—) हे हरि! मैं दास तेरी शरणागत हूँ, मुझे अपने दासों का दास बनाए रख ॥ ४ ॥ २ ॥ १२४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ रे मूड़े लाहे कउ तूं ढीला ढीला तोटे कउ बेगि धाइआ। ससत वखरु तूं घिनहि नाही पापी बाधा रेनाइआ ॥ १ ॥ सतिगुर तेरी आसाइआ। पतित पावनु तेरो नामु पारब्रहम मै एहा ओटाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गंधण वैण सुणहि उरझावहि नामु लैत अलकाइआ। निंद चिंद कउ बहुतु उमाहिओ बूझी उलटाइआ ॥ २ ॥ पर धन पर तन परती निंदा अखाधि खाहि हरकाइआ। साच धरम सिउ रुचि नही आवै सति सुनत छोहाइआ ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ ठाकुर भगत टेक हरि नाइआ। नानक आहि सरण प्रभ आइओ राखु लाज अपनाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२५ ॥

हे मूर्ख मन! (आत्मिक जीवन के) लाभ की ओर तू आलसी है, लेकिन (आत्मिक जीवन के) घाटे के लिए तू शीघ्र उठ दौड़ता है। हे पापी! तू सस्ता सौदा नहीं लेता, (विकारों के) क़र्ज़ से बँधा पड़ा है ॥१॥ हे गुरु! मुझे तेरी (सहायता की) आशा है। हे परमात्मा! मुझे यही आश्वासन है कि तेरा नाम विकारग्रस्त व्यक्तियों को पवित्र करनेवाला

है ।। १ ।। रहाउ ।। हे मूर्ख ! तू अश्लील गीत सुनता है और मस्त होता है, परमात्मा के नाम-स्मरण में आलस्य करता है, किसी की निंदा की कल्पना से तुझे बहुत चाव चढ़ता है। हे मूर्ख ! तूने हर एक बात विपरीत ही समझी हुई है ।। २ ।। हे मूर्ख ! तू पराया धन (चुराता है), पराया रूप (ग़लत दृष्टि से देखता है), (ईर्ष्यावश) परनिन्दा में उलझा है और पागल हो गया है, इसलिए अभक्ष्य का भक्षण करता है। हे मूर्ख ! शाश्वत धर्म के साथ तेरा नेह नहीं उपजता और सत्य का उपदेश सुनने से तुझे खीझ होती है ।। ३ ।। हे नानक ! (कह—) हे दीन-दयालु ठाकुर, हे कृपा के घर प्रभु ! तेरे भक्तों को तेरे नाम का सहारा है। हे प्रभु ! मैं उत्साहपूर्वक तेरी शरणागत हूँ, मुझे अपना दास बनाकर मेरी लाज रख ।। ४ ।। ३ ।। १२५ ।।

।। आसा महला ५ ।। मिथिआ संगि संगि लपटाए मोह माइआ करि बाधे। जह जानो सो चीति न आवै अहंबुधि भए आंधे ।। १ ।। मन बैरागी किउ न अराधे। काच कोठरी माहि तूं बसता संगि सगल बिखै की बिआधे ।। १ ।। रहाउ ।। मेरी मेरी करत दिनु रैनि बिहावै पलु खिनु छीजै अरजाधे। जैसे मीठै सादि लोभाए झूठ धंधि दुरगाधे ।। २ ।। काम क्रोध अरु लोभ मोह इह इंद्री रसि लपटाधे। दीई भवारी पुरखि बिधातै बहुरि बहुरि जनमाधे ।। ३ ।। जउ भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे। कहु नानक दिनु रैनि धिआवउ मारि काढी सगल उपाधे ।। ४ ।। इउ जपिओ भाई पुरखु बिधाते। भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु जनम मरण दुख लाथे ।। १ ।। रहाउ दूजा ।। ४ ।। ४ ।। १२६ ।।

(अभागा मनुष्य) कुसंगति में मस्त रहता है, माया-मोह में बँधा रहता है; जहाँ अन्त में जाना है, वह स्थान इसके हृदय में कभी नहीं आता और अहंकार में अन्धा हुआ रहता है ।। १ ।। हे मेरे मन ! तू माया-मोह से तटस्थ होकर परमात्मा की आराधना क्यों नहीं करता ? तेरा शरीर कच्ची कोठरी है, तेरे साथ विषय-विकारों के रोग चिपटे पड़े हैं ।। १ ।। रहाउ ।। 'यह मेरी सम्पत्ति है' —यह बोलते-बोलते ही (अभागे आदमी का) दिन गुज़र जाता है, (ऐसे ही रात्रि) बीत जाती है, पल-पल आदमी की अवस्था बीतती जाती है। जिस प्रकार मीठे के आस्वादन में (मक्खी) फँस जाती है, वैसे ही अभागा मनुष्य झूठे धन्धे की दुर्गन्धि में फँसा रहता है ।। २ ।। काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा इन्द्रियों के रस में डूबा रहता है।

(इनके परिणामस्वरूप जब) सृजनहार प्रभु ने इसे (योनियों में जन्म लेने की दुविधा दे दी तो यह बार-बार योनियों में भटकता फिरता है ॥ ३ ॥ जब ग़रीबों के दुख नष्ट करनेवाला परमात्मा दयालु होता है, तब गुरु को मिलकर यह सारे सुख प्राप्त कर लेता है। हे नानक ! कह— मैं दिन-रात परमात्मा का स्मरण करता हूँ, उसने मेरे भीतर से समस्त विकार समाप्त कर दिए हैं ॥ ४ ॥ (हे भाई !) इस प्रकार ही (मनुष्य) सृजनहार अकालपुरुष का नाम जप सकता है। जिस मनुष्य पर ग़रीबों के दुख दूर करनेवाला दयालु होता है, उसके जन्म-मरण के दुख दूर हो जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ निमख काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि । घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥ १ ॥ अंधे चेति हरि हरि राइआ । तेरा सो दिनु नेड़ै आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पलक द्रिसटि देखि भूलो आक नीम को तूंमरु । जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे तैसो ही इहु पर ग्रिहु ॥ २ ॥ बैरी कारणि पाप करता बसतु रही अमाना । छोडि जाहि तिनही सिउ संगी साजन सिउ बैराना ॥ ३ ॥ सगल संसारु इहै बिधि बिआपिओ सो उबरिओ जिसु गुरु पूरा । कहु नानक भव सागरु तरिओ भए पुनीत सरीरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२७ ॥

हे अन्धे जीव ! पल भर के काम-सुख के लिए तू करोड़ों दिन दुख सहता है। तू घड़ी, दो घड़ी मौज करता है, उसके बाद बार-बार पश्चाताप करता है ॥ १ ॥ हे काम-वासना में अन्धे जीव ! प्रभु-बादशाह का स्मरण कर। तेरा वह दिन निकट आ रहा है, (जब तुझे यहाँ से जाना है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे अन्धे मनुष्य ! आक, नीम जैसे कड़वे पदार्थ (जो देखने में सुन्दर होते हैं), थोड़े समय के लिए देखकर तू भूल जाता है। हे अन्धे! पराई स्त्री का साथ भी सर्प के साथ के तुल्य है ॥२॥ हे अन्धे ! बैर बढ़ानेवाली माया के लिए तू पाप करता रहता है, वास्तविक चीज़ तुझसे दूर ही रह जाती है। जिन्हें अन्त में तुझे छोड़ना है, उनके साथ तूने मेल-जोल किया हुआ है और मित्र (-प्रभु) के साथ वैर किया हुआ है ॥ ३ ॥ हे नानक ! कह— सारा संसार इसी प्रकार माया-जाल में फँसा है, इसमें से वही बचकर निकलता है, जिसका रक्षक पूर्णगुरु बनता है। वह मनुष्य संसार-समुद्र से पार उतर जाता है और उसका शरीर पवित्र हो जाता है ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२७ ॥

।। आसा महला ५ दुपदे ।। लूकि कमानो सोई तुम्ह पेखिओ मूड़ मुगध मुकरानी। आप कमाने कउ ले बांधे फिरि पाछै पछुतानी ।। १ ।। प्रभ मेरे सभ बिधि आगै जानी। भ्रम के मूसे तूं राखत परदा पाछै जीअ की मानी ।। १ ।। रहाउ ।। जितु जितु लाए तितु तितु लागे किआ को करै परानी। बखसि लैहु पारब्रहम सुआमी नानक सद कुरबानी ।। २ ।। ६ ।। १२८ ।।

हे प्रभु ! जो-जो (नीच) कर्म मनुष्य छिपकर करते हैं, तुम उन्हें देख लेते हो, लेकिन मूर्ख मनुष्य फिर भी अस्वीकार करते हैं। अपने कृत कर्मों के कारण पकड़े जाते हैं और तदन्तर वे पश्चाताप करते हैं ।। १ ।। मेरा मालिक-प्रभु तो मनुष्यों की हर करतूत सबसे पहले जान लेता है। हे भ्रमवश आत्मिक जीवन लुटानेवाले जीव ! तू परमात्मा से छिपाव करता है, और, छिपकर मनमानी करता है ।। १ ।। रहाउ ।। (लेकिन जीवों के भी क्या वश ?) जिस-जिस ओर परमात्मा जीवों को लगाता है, वे बेचारे उस ओर ही लग जाते हैं। कोई जीव (परमात्मा की प्रेरणा के समक्ष) विरोध नहीं प्रकट कर सकता। हे नानक ! कह— हे परमात्मा ! हे जीवों के स्वामी ! तुम आप जीवों पर कृपा करो, मैं सदा तुम पर बलिहारी हूँ ।। २ ।। ६ ।। १२८ ।।

।। आसा महला ५ ।। अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै। जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ।। १ ।। सेवक कउ निकटी होइ दिखावै। जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ।। १ ।। रहाउ ।। तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै। तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ।। २ ।। ७ ।। १२९ ।।

(हे भाई ! परमात्मा) अपने सेवक की आप प्रतिष्ठा रखता है, आप ही उससे नाम का स्मरण कराता है। सेवक को जहाँ-जहाँ कोई काम हो, वहीं-वहीं परमात्मा उसी वक़्त पहुँच जाता है ।। १ ।। हे भाई ! परमात्मा अपने सेवक को उसका समीपस्थ होकर दिखा देता है (अर्थात् परमात्मा उसके हर समय साथ-साथ है), जो कुछ सेवक परमात्मा से माँगता है, वह माँग उसी वक़्त पूर्ण हो जाती है ।। १ ।। रहाउ ।। हे नानक ! (कह—) जो सेवक परमात्मा को प्रिय लगता है, मैं उस पर बलिहारी हूँ। उसकी प्रशंसा सुनकर श्रोता प्रसन्नचित्त हो जाता है और वह उस सेवक के चरण स्पर्श करने के लिए आता है ।। २ ।। ७ ।। १२९ ।।

आसा घरु ११ महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ नटूआ भेख दिखावै बहु बिधि जैसा है ओहु तैसा रे । अनिक जोनि भ्रमिओ भ्रम भीतरि सुखहि नाही परवेसा रे ॥ १ ॥ साजन संत हमारे मीता बिनु हरि हरि आनीता रे । साध संगि मिलि हरि गुण गाए इहु जनमु पदारथु जीता रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ ब्रहम की कीन्ही कहहु कवन बिधि तरीऐ रे । घूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥ २ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ ततु नानक इहु जाना रे । सिमरत नामु निधानु निरमोलकु मनु माणकु पतीआना रे ॥ ३ ॥ १ ॥ १३० ॥

हे भाई ! बहुरूपिया कई प्रकार के स्वाँग (बनाकर लोगों को) दिखाता है, किन्तु वह जैसा होता है वैसा ही रहता है(अर्थात् मूल रूप में वह वही रहता है जो होता है) । इसी प्रकार दुबिधा में फँसकर अनेक योनियों में भटकता फिरता है, (फिर भी) उसका प्रवेश सुख में नहीं होता ॥ १ ॥ हे सन्तजनो ! सज्जनो और मित्रो ! परमात्मा के अतिरिक्त सब कुछ नश्वर है । जिस मनुष्य ने सत्संगति में मिलकर परमात्मा के गुण गाने शुरू कर दिए, उसने यह क़ीमती मनुष्य-जन्म जीत लिया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! परमात्मा द्वारा उत्पादित यह त्रिगुणात्मक माया (मानो, एक समुद्र है, इसमें से) कहो, कैसे पार हुआ जाए ? इसमें विकारों के अनेक भँवर पड़ गए हैं, यह अथाह है, इसमें से पार होना कठिन है । (हाँ, हे भाई !) गुरु के ज्ञान द्वारा ही इसमें से पार हुआ जा सकता है ॥ २ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य ने चिन्तन किया, उसने यह वास्तविकता समझ ली कि परमात्मा का नाम, जो सारे गुणों का भण्डार है, जिसके बराबर मूल्य की कोई वस्तु नहीं, उसे स्मरण करने से मन, मोती जैसा हो जाता है और नाम-स्मरण में लग जाता है ॥ ३ ॥ १ ॥ १३० ॥

॥ आसा महला ५ दुपदे ॥ गुर परसादि मेरै मनि वसिआ जो मागउ सो पावउ रे । नाम रंगि इहु मनु त्रिपताना बहुरि न कतहूं धावउ रे ॥ १ ॥ हमरा ठाकुरु सभ ते ऊचा रैणि दिनसु तिसु गावउ रे । खिन महि थापि उथापन हारा तिस ते तुझहि डरावउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब देखउ प्रभु अपुना सुआमी तउ अवरहि चीति न पावउ रे । नानकु दासु प्रभि आपि पहिराइआ भ्रमु भउ मेटि लिखावउ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १३१ ॥

हे भाई ! जब से गुरु की कृपा से वह मालिक-प्रभु मेरे मन में आ बसा है, तब से मैं जो उससे माँगता हूँ वह प्राप्त कर लेता हूँ। (प्रभु के) नाम के प्रेम-रंग से मेरा यह मन (माया की तृष्णा से) तृप्त हो चुका है। (तब से) मैं दोबारा किसी दूसरी ओर भटकता नहीं फिरता ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! मेरा मालिक-प्रभु सर्वोच्च है, मैं रात-दिन उसकी गुणस्तुति करता रहता हूँ। मेरा वह मालिक क्षण भर में पैदा करके नाश करने की भी शक्ति रखनेवाला है। मैं (हे मन !) तुझे उसके भय-सम्मान में रखना चाहता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जब मैं अपने पति-प्रभु को (अपने भीतर बसता) देख लेता हूँ, तब मैं किसी दूसरे को अपने हृदय में स्थान नहीं देता। हे भाई ! जब से प्रभु ने अपने दास नानक को आप उपकृत किया है, तब से मैं दूसरे हरेक क़िस्म का भय दूर करके परमात्मा के नाम को लिखता रहता हूँ ॥ २ ॥ २ ॥ १३१ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे। सुंदर सुघर सरूप सिआने पंचहु ही मोहि छली रे ॥ १ ॥ जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे। जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडी कोम वसि भागहि नाही मुहकम फउज हठली रे। कहु नानक तिनि जनि निरदलिआ साध संगति कै झली रे ॥ २ ॥ ३ ॥ १३२ ॥

हे भाई ! चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र) हैं, (पर कामादिक) इन चारों वर्णों के व्यक्तियों को मर्दन करनेवाले हैं, छः वेष धारण करनेवाले साधुओं को भी हथेली पर नचाते हैं, सुन्दर, बाँके, बुद्धिमान सभी को (कामादिक) पाँचों ने मोहवश छल लिया है ॥ १ ॥ हे भाई ! कोई विरला ही ऐसा सामर्थ्यवान है, जिसने (गुरु को) मिलकर कामादिक पाँचों शूरवीरों को मार लिया हो। हे भाई ! जगत में वही मनुष्य पूर्ण है, जिसने इन पाँचों को मारकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! इनका (कामादिक पाँचों का) बड़ा शक्तिमान वंश है, न ये किसी के क़ाबू में आते हैं और न किसी से डरकर भागते हैं। इनकी फ़ौज बड़ी मज़बूत और हठी है। हे नानक ! कह— हे भाई ! केवल उस मनुष्य ने इन्हें पूर्णतः प्रताड़ित किया है, जो सत्संगति के आश्रय में रहता है ॥ २ ॥ ३ ॥ १३२ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ नीकी जीअ की हरि कथा ऊतम। आन सगल रस फीकी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु गुनि धुनि मुनि

जन खटु बेते । अवरु न किछु लाईकी रे ॥१॥ बिखारी निरारी अपारी सहजारी साध संगि नानक पीकी रे ॥ २ ॥ ४ ॥ १३३ ॥

हे भाई ! परमात्मा की गुणस्तुति की बात आत्मा के लिए श्रेष्ठ और सुन्दर चीज़ है । (सांसारिक) दूसरे समस्त पदार्थों के स्वाद फीके हैं ॥१॥ रहाउ ॥ हे भाई ! यह हरि-कथा अनन्त गुणों वाली है, मिठास-भरी है, छः शास्त्रों के ज्ञाता ऋषि भी किसी दूसरे उद्यम को (आत्मा के लिए) लाभदायक नहीं मानते ॥ १ ॥ हे भाई ! यह हरि-कथा विषयों के जहर के प्रभाव को नष्ट करती है, विचित्र स्वाद वाली है, अकथ्य है और आत्मिक टिकाव पैदा करती है । हे नानक ! यह (हरि-कथा रूपी अमृत-धार) सत्संगति में रहकर ही पान की जा सकती है ॥ २ ॥ ४ ॥ १३३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ हमारी पिआरी अंम्रित धारी । गुरि निमख न मन ते टारी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन परसन सरसन हरसन । रंगि रंगी करतारी रे ॥१॥ खिनु रम गुर गम हरि दम नह जम । हरि कंठि नानक उरिहारी रे ॥२॥५॥१३४॥

हे भाई ! गुरु ने (कृपा करके) निमिष मात्र के लिए भी (प्रभु की गुणस्तुति) विस्मृत न होने दी, यह वाणी मुझे मीठी लगती है, यह वाणी आत्मिक जीवन देनेवाले नाम-जल की धारा मेरे भीतर जारी रखती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! यह वाणी कर्तार के प्रेम में रँगनेवाली है, इसके प्रभाव से कर्तार का दर्शन होता है, कर्तार के चरणों का स्पर्श मिलता है, मन में आनन्द और पुलक पैदा होता है ॥ १ ॥ हे भाई ! इस वाणी को एक क्षण के लिए भी हृदय में बसाने से गुरु के चरणों तक पहुँच बन जाती है, इसे प्रत्येक श्वास-हृदय में बसाने पर यमों का भय स्पर्श नहीं कर सकता । हे नानक ! इस हरि-कथा को अपने गले में पिरोकर रख, इसे अपने हृदय में हार (बनाकर) रख ॥ २ ॥ ५ ॥ १३४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ नीकी साध संगानी ॥ रहाउ ॥ पहर मूरत पल गावत गावत गोविंद गोविंद वखानी ॥ १ ॥ चालत बैसत सोवत हरि जसु मनि तनि चरन खटानी ॥ २ ॥ हंउ हउरो तू ठाकुरु गउरो नानक सरनि पछानी ॥ ३ ॥ ६ ॥ १३५ ॥

(हे भाई !) सत्संगति (व्यक्ति के लिए) मंगलकारी है ॥ रहाउ ॥ इसमें आठों प्रहर, प्रत्येक पल और घड़ी परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाए जाते हैं, परमात्मा की गुणस्तुति की बातें होती हैं ॥ १ ॥ उठते-बैठते और सोते हुए परमात्मा की गुणस्तुति करने का स्वभाव बन जाता है, मन

में परमात्मा का वास हो जाता है तथा परमात्मा के चरणों में प्रत्येक पल मेल बना रहता है ॥ २ ॥ हे नानक ! (कह— हे प्रभु !) मैं गुणहीन हूँ और मेरा मालिक गुणसम्पन्न है, (सत्संगति के प्रभाव से) मुझे तेरी शरण लेने की सूझ आई है ॥ ३ ॥ ६ ॥ १३५ ॥

रागु आसा महला ५ घरु १२

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तिआगि सगल सिआनपा भजु पारब्रहम निरंकारु । एक साचे नाम बाझहु सगल दीसै छारु ॥ १ ॥ सो प्रभु जाणीऐ सद संगि । गुर प्रसादी बूझीऐ एक हरि कै रंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि समरथ एक केरी दूजा नाही ठाउ । महा भउजलु लंघीऐ सदा हरिगुण गाउ ॥२॥ जनम मरणु निवारीऐ दुखु न जमपुरि होइ । नामु निधानु सोई पाए क्रिपा करे प्रभु सोइ ॥ ३ ॥ एक टेक अधारु एको एक का मनि जोरु । नानक जपीऐ मिलि साध संगति हरि बिनु अवरु न होरु ॥ ४ ॥ १ ॥ १३६ ॥

(हे भाई !) तमाम चतुराइयाँ छोड़कर निरंकार परमात्मा का स्मरण किया कर । सत्यस्वरूप परमात्मा के नाम-स्मरण के बिना (संसार-समुद्र से पार होने के लिए) दूसरी सब चतुराइयाँ निकम्मी हैं ॥ १ ॥ (इसलिए) उस परमात्मा को सदा अपने साथ-साथ रहता समझना चाहिए । यह समझ भी तभी आ सकती है, जब गुरु की कृपा द्वारा एक परमात्मा के प्रेम में टिक रहें ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (संसार-समुद्र से पार कर सकने की) सामर्थ्य रखनेवाली केवल एक परमात्मा की ओट है, इसके अतिरिक्त दूसरा कोई सहारा नहीं । (इसलिए) सदा परमात्मा के गुण गाता रह, तभी इस भयंकर संसार-समुद्र से पार उतरा जा सकेगा ॥ २ ॥ (परमात्मा को साथ महसूसने से) जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है, यमों के नगर में निवास नहीं होता, कोई दुख स्पर्श नहीं करता । पर, (गुणों का) भण्डार रूपी हरि-नाम वही मनुष्य प्राप्त करता है, जिस पर प्रभु आप कृपा करता है ॥ ३ ॥ एक परमात्मा की ओट, एक परमात्मा का ही सहारा और मन में एक परमात्मा का तकिया यमपुरी से बचा सकता है । (इसलिए) हे नानक ! सत्संगति में मिलकर परमात्मा का ही नाम-स्मरण करना चाहिए, परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं (जो संसार-समुद्र से पार कर सके) ॥ ४ ॥ १ ॥ १३६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ जीउ मनु तनु प्रान प्रभ के दीए सभि रस भोग । दीन बंधप जीअ दाता सरणि राखण जोगु ॥ १ ॥ मेरे मन धिआइ हरि हरि नाउ । हलति पलति सहाइ संगे एक सिउ लिव लाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन धिआवहि तरण कउ संसारु । करम धरम अनेक किरिआ सभ ऊपरि नामु अचारु ॥ २ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिलै सतिगुर देव । नाम द्रिड़ु करि भगति हरि की भली प्रभ की सेव ॥ ३ ॥ चरण सरण दइआल तेरी तूं निमाणे माणु । जीअ प्राण अधारु तेरा नानक का प्रभु ताणु ॥ ४ ॥ २ ॥ १३७ ॥

(हे भाई !) यह आत्मा, शरीर, प्राण तथा समस्त स्वादिष्ट पदार्थ ईश्वर के दिए हैं। परमात्मा ही ग़रीबों का सम्बन्धी है, वही आत्मिक जीवन का दाता है, वही शरणागत की रक्षा करने की सामर्थ्य वाला है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! सदा परमात्मा का नाम स्मरण करता रह। परमात्मा ही लोक तथा परलोक में तेरी सहायता करनेवाला है, तेरे साथ रहनेवाला है। (इसलिए) एक परमात्मा से ही सुरति जोड़े रख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! संसार-सागर से पार उतरने के लिए लोग वेद-शास्त्रों को विचारते हैं, अनगिनत धार्मिक कर्म एवं दूसरे साधन करते हैं। लेकिन परमात्मा का नाम-स्मरण एक ऐसा उद्यम है, जो उन सब सोचे हुए धार्मिक कार्यों से ऊँचा है, श्रेष्ठ है ॥ २ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य गुरुदेव को मिल लेता है, (उसके मन से) कामवासना दूर हो जाती है, क्रोध और अहंकार मिट जाता है। (इसलिए) परमात्मा का नाम भली प्रकार टिकाकर रख, परमात्मा की भक्ति कर, उसकी सेवा-भक्ति ही उत्तम कामकाज है ॥ ३ ॥ हे दया के घर प्रभु ! मैंने तेरे चरणों की ओट ली है, तुम ही मुझ तुच्छ को आदर देनेवाले हो। हे प्रभु ! मुझे अपनी आत्मा एवं प्राणों के लिए तेरा ही आसरा है। हे भाई ! दास नानक का आसरा परमात्मा ही है ॥ ४ ॥ २ ॥ १३७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ डोलि डोलि महा दुखु पाइआ बिना साधू संग । खाटि लाभु गोबिंद हरि रसु पारब्रहम इक रंग ॥ १ ॥ हरि को नामु जपीऐ नीति । सासि सासि धिआइ सो प्रभु तिआगि अवर परीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण कारण समरथ सो प्रभु जीअ दाता आपि । तिआगि सगल सिआणपा आठ पहर प्रभु जापि ॥ २ ॥ मीतु सखा सहाइ संगी ऊच अगम अपारु । चरण कमल बसाइ हिरदै जीअ को आधारु ॥ ३ ॥

करि किरपा प्रभ पारब्रहम गुण तेरा जसु गाउ। सरब सूख वडी वडिआई जपि जीवै नानकु नाउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३८ ॥

(हे मन !) गुरु-संगति से खाली रहकर, विश्वासहीन होकर तू बहुत दुख सहता रहा। अब तो हरि-नाम का आस्वादन कर। एक परमात्मा के मिलाप का आनन्द प्राप्त कर (और जीवन का) लाभ प्राप्त कर ले ॥ १ ॥ (हे भाई !) परमात्मा का नाम सदा जपते रहना चाहिए। प्रत्येक श्वास के साथ उसे स्मरण करता रह और किसी दूसरे की प्रीति त्याग दे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (दुखों से मुक्त होने के लिए) दूसरी सब चतुराइयाँ छोड़, आठों प्रहर प्रभु को स्मरण करता रह। वह प्रभु ही सारे जगत का मूल है, (दुख दूर करने के) योग्य है, वह आप ही आत्मिक जीवन देनेवाला है ॥ २ ॥ हे भाई ! वह सर्वोच्च, अगम्य और अनन्त परमात्मा वास्तविक मित्र है, सहायक है, उसके सुन्दर कोमल चरण अपने हृदय में बसाए रख, वही आत्मा का (वास्तविक) सहारा है ॥ ३ ॥ हे पारब्रह्म प्रभु ! कृपा कर, मैं सदा तेरे गुण गाता रहूँ, तेरी गुणस्तुति करता रहूँ, (जिसमें) समस्त सुख और बहुत अधिक प्रतिष्ठा है। (तेरा दास) नानक तेरा नाम स्मरण करके आत्मिक जीवन प्राप्त करता है ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३८ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ उदमु करउ करावहु ठाकुर पेखत साधू संगि। हरि हरि नामु चरावहु रंगनि आपे ही प्रभ रंगि ॥ १ ॥ मन महि राम नामा जापि। करि किरपा वसहु मेरै हिरदै होइ सहाई आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन का चाउ। दइआ करहु किरम अपुने कउ इहै मनोरथु सुआउ ॥ २ ॥ तनु धनु तेरा तूं प्रभु मेरा हमरै वसि किछु नाहि। जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि ॥ ३ ॥ जनम जनम के किलविख काटै मजनु हरिजन धूरि। भाइ भगति भरम भउ नासै हरि नानक सदा हजूरि ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३९ ॥

हे मेरे मालिक ! (मुझसे यह उद्यम) कराता रह, गुरु-संगति में तेरा दर्शन करता हुआ मैं तेरे नाम जपने का कामकाज करता रहूँ। हे प्रभु ! मेरे मन पर अपने नाम का रंग चढ़ाओ, तुम आप ही (मेरे मन को प्रेम-रंग में) रँग दो ॥ १ ॥ हे प्रभु ! (मुझ पर) कृपा कर, मेरे हृदय में विराजमान हो। यदि तुम मेरे सहायक बनो, तो मैं अपने मन में तुम्हारा राम-नाम जपता रहूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे प्यारे ! तुम मेरे मालिक हो, अपने इस तुच्छ सेवक पर कृपा करो, ताकि तुम्हारा नाम सुन-सुनकर मेरे भीतर

तुम्हारे दर्शन का चाव बना रहे। मेरा यह मनोरथ, मेरी यह ज़रूरत पूर्ण कर ।। २ ।। हे प्रभु ! मेरा यह शरीर, धन सर्वस्व तेरा ही दिया हुआ है, तुम ही मेरे स्वामी हो, हमारे वश कुछ नहीं है। तुम हम जीवों को जिस रूप में रखते हो, वैसे ही हम जीवन बिताते हैं, हम तुम्हारा दिया हुआ ही हरेक पदार्थ खाते हैं ।। ३ ।। हे नानक ! (कह—) परमात्मा के सेवकों के (चरणों की) धूलि में किया स्नान मनुष्य के जन्म-जन्मान्तरों के पाप दूर कर देता है, प्रभु-प्रेम के द्वारा, भक्ति के प्रभाव से मनुष्य का हरेक प्रकार का भय दूर हो जाता है और परमात्मा सदा साथ-साथ प्रतीत होने लगता है ।। ४ ।। ४ ।। १३९ ।।

।। आसा महला ५ ।। अगम अगोचरु दरसु तेरा सो पाए जिसु मसतकि भागु । आपि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी सतिगुरि बखसिआ हरिनामु ।। १ ।। कलिजुगु उधारिआ गुरदेव । मल मूत मूड़ जि मुघद होते सभि लगे तेरी सेव ।। १ ।। रहाउ ।। तू आपि करता सभ स्रिसटि धरता सभ महि रहिआ समाइ । धरम राजा बिसमादु होआ सभ पई पैरी आइ ।। २ ।। सतजुगु त्रेता दुआपरु भणीऐ कलिजुगु ऊतमो जुगा माहि । अहिकरु करे सु अहिकरु पाए कोई न पकड़ीऐ किसै थाइ ।।३।। हरि जीउ सोई करहि जि भगत तेरे जाचहि एहु तेरा बिरदु । कर जोड़ि नानक दानु मागै अपणिआ संता देहि हरि दरसु ।।४।।५।।१४०।।

हे अगम्य प्रभु ! तुम मनुष्यों की ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच से परे हो, तेरा दर्शन वही करता है जो भाग्यशाली है। (जिस पर) कृपा के घर प्रभु ने कृपादृष्टि की, उसे सतिगुरु ने परमात्मा के नाम (-स्मरण की देन) दे दी ।। १ ।। हे सतिगुरु ! तुमने (तो) कलियुग को भी बचा लिया है, जिसे बहुत बुरा माना जाता है, अर्थात् जितने भी पहले नीच मनुष्य थे, वे सब (तेरी सेवा-भक्ति में लग गए हैं) ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु ! तुम आप सृष्टि के सृजनहार हो, तुम सारी सृष्टि को आसरा देनेवाले हो, तुम आप ही सारी सृष्टि में व्यापक हो, (फिर दुनिया में कलियुग ही निकम्मा कैसे हो गया ? सब तो तुम्हारी सृष्टि है), धर्मराज आश्चर्यचकित हो रहा है कि सारी दुनिया तेरी चरण-सेवा में लगी है। (इस प्रकार कलियुग भी पूर्ववर्ती युगों के समान ही है, अभागा मनुष्य परमात्मा के नाम-स्मरण में नहीं लगता)।। २ ।। हे भाई! सतयुग, त्रेता, द्वापर को भला युग कहा जाता है, पर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है कि कलियुग सर्वश्रेष्ठ है। (क्योंकि इस युग में) जो हाथ जैसा कर्म करता है, वही हाथ उसका फल भुगतता है। कोई दूसरा मनुष्य उसके स्थान पर पकड़ा नहीं जाता ।। ३ ।। हे प्रभु ! तुम

वही कुछ करते हो, जो तेरे भक्त तुझसे माँगते हैं, यह तेरा स्वभाव सृष्टि के प्रारम्भ से ही है। हे हरि ! (दास नानक भी) दोनों हाथ जोड़कर (यह) दान माँगता है कि नानक को अपने सन्तजनों के दर्शन दे ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४० ॥

रागु आसा महला ५ घरु १३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सतिगुर बचन तुम्हारे । निरगुण निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत संगारे ॥ १ ॥ जनम भवंते नरकि पड़ंते तिन्ह के कुल उधारे ॥ २ ॥ कोइ न जानै कोइ न मानै से परगटु हरिदुआरे ॥ ३ ॥ कवन उपमा देउ कवन वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥ ४ ॥ १ ॥ १४१ ॥

हे सतिगुरु ! तुम्हारे शब्दों ने अनगिनत गुणहीन व्यक्तियों को (संसार-सागर से) पार कर दिया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हारी संगति में क्रूर स्वभाव वाले एवं दुराचारी व्यक्ति भी सदाचारी बन गए ॥ १ ॥ हे सतिगुरु ! तूने उन व्यक्तियों के वंश को बचा लिया, जो अनेक जन्मों से आवागमन के चक्र में भटकते हुए तथा नारकीय जीवन भोग रहे थे ॥ २ ॥ हे सतिगुरु ! तेरी कृपा से वे व्यक्ति भी प्रभु के द्वार पर प्रतिष्ठा पाने योग्य हो गए, जिन्हें पहले कोई जानता-पहचानता भी न था, जिन्हें (जगत में) कोई आदर-सम्मान नहीं देता था ॥३॥ हे नानक ! (कह— हे सतिगुरु !) मैं तुम्हारे समान किसे कहूँ ? मैं तुम्हारी क्या गुणस्तुति करूँ ? मैं तुझ पर प्रति क्षण बलिहारी हूँ ॥ ४ ॥ १ ॥ १४१ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ बावर सोइ रहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह कुटंब बिखै रस माते मिथिआ गहन गहे ॥ १ ॥ मिथन मनोरथ सुपन आनंद उलास मनि मुखि सति कहे ॥ २ ॥ अंम्रितु नामु पदारथु संगे तिलु मरमु न लहे ॥ ३ ॥ करि किरपा राखे सतसंगे नानक सरणि आहे ॥ ४ ॥ २ ॥ १४२ ॥

(माया के मोह में) मस्त मनुष्य सोए रहते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसे व्यक्ति पारिवारिक मोह और विषयों के आस्वादन में मस्त होकर मिथ्या उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं ॥ १ ॥ (माया-मोह में पागल हुए मन) उन पदार्थों की इच्छा करते रहते हैं, जिनके साथ हमारा संसर्ग स्थायी नहीं रहता और जो स्वप्नों में महसूस होनेवाले आनन्द के तुल्य हैं। (माया में लिप्त) व्यक्ति इन पदार्थों को मन में स्थायी समझते हैं और मुख से भी

उन्हें ही पक्का साथी समझते हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! आत्मिक जीवन का दाता हरि-नाम ही सदा साथ देनेवाला पदार्थ है, लेकिन माया के मोह में पागल हुए मनुष्य इस हरि-नाम का भेद तनिकमात्र नहीं समझते ॥ ३ ॥ (वास्तव में) प्रभु कृपा करके जिन मनुष्यों को सत्संगति में रखता है, वही उस प्रभु की शरण आए रहते हैं ॥ ४ ॥ २ ॥ १४२ ॥

॥ आसा महला ५ तिपदे ॥ ओहा प्रेम पिरी ॥१॥रहाउ॥ कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही ॥ १ ॥ राज न भाग न हुकम न सादन । किछु किछु न चाही ॥ २ ॥ चरनन सरनन संतन बंदन । सुखो सुखु पाही । नानक तपति हरी । मिले प्रेम पिरी ॥ ३ ॥ ३ ॥ १४३ ॥

(हे भाई ! मुझे तो) प्यारे परमात्मा का वही प्रेम चाहिए जो स्थायी है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (प्रभु-प्रेम के स्थान पर) सोना, मोती, बड़े-बड़े मोती, हीरे, लाल आदि पदार्थों में से मुझे कोई भी चीज़ नहीं चाहिए ॥ १ ॥ मुझे राज्य, धन-पदार्थ, स्वामित्व, स्वादिष्ट भोजन आदि किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं ॥ २ ॥ सन्तपुरुषों के चरणों की शरण तथा उनके चरणों पर नमस्कार —इनमें मैं सुख ही सुख अनुभव करता हूँ । हे नानक ! यदि प्यारे प्रभु का प्रेम मिल जाए, तो वह मन से तृष्णा की जलन दूर कर देता है ॥ ३ ॥ ३ ॥ १४३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ गुरहि दिखाइओ लोइना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि । तूंही तूंही मोहिना ॥ १ ॥ कारन करना धारन धरना । एकै एकै सोहिना ॥ २ ॥ संतन परसन बलिहारी दरसन । नानक सुखि सुखि सोइना ॥ ३ ॥ ४ ॥ १४४ ॥

(हे मोहनप्रभु !) गुरु ने मुझे इन आँखों से तेरा दर्शन करा दिया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मोहन ! अब लोक, परलोक, प्रत्येक शरीर और हृदय में तुम ही दिखाई दे रहे हो ॥ १ ॥ हे सुन्दर प्रभु ! एक तुम ही जगत के मूल सृजनहार हो और एक तुम ही सारी सृष्टि को सहारा देनेवाले हो ॥ २ ॥ हे नानक ! (कह— हे मोहनप्रभु !) मैं तेरे सन्तों के चरण छूता हूँ, उनके दर्शन पर बलिहारी जाता हूँ, (क्योंकि उनके संसर्ग में) हमेशा के लिए आत्मिक आनन्द में लीनता प्राप्त होती है ॥ ३ ॥ ४ ॥ १४४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ हरि हरि नामु अमोला । ओहु सहजि सुहेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगि सहाई छोडि न जाई ओहु

अगह अतोला ॥ १ ॥ प्रीतमु भाई बापु मोरो माई भगतन का ओल्हा ॥ २ ॥ अलखु लखाइआ गुर ते पाइआ नानक इहु हरि का चोल्हा ॥ ३ ॥ ५ ॥ १४५ ॥

हे भाई ! जिस मनुष्य को परमात्मा का अमूल्य नाम प्राप्त हो जाता है, वह मनुष्य आत्मिक स्थिरता में टिका रहता है, वह मनुष्य सहज जीवन व्यतीत करता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! परमात्मा ही सदा साथ रहनेवाला साथी है, वह कभी नहीं त्यागता; लेकिन वह (चतुराइयों से) वश में नहीं होता, वह अप्रतिम है ॥ १ ॥ हे भाई ! वह परमात्मा ही मेरा प्रियतम, भाई, पिता और मेरी माँ है, वही अपने भक्तों (की ज़िन्दगी) का सहारा है ॥ २ ॥ हे नानक ! उस परमात्मा का सही स्वरूप व्यक्त नहीं किया जा सकता । गुरु ने मुझे उसका ज्ञान दे दिया है, गुरु द्वारा मैंने उसका मिलाप प्राप्त किया है । यह उस परमात्मा का विचित्र तमाशा है (कि वह गुरु द्वारा प्राप्त होता है) ॥३॥५॥१४५॥

॥ आसा महला ५ ॥ आपुनी भगति निबाहि । ठाकुर आइओ आहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु पदारथु होइ सकारथु हिरदै चरन बसाहि ॥ १ ॥ एह मुकता एह जुगता राखहु संत संगाहि ॥ २ ॥ नामु धिआवउ सहजि समावउ नानक हरि गुन गाहि ॥ ३ ॥ ६ ॥ १४६ ॥

हे मेरे मालिक ! मैं सकाम होकर तेरी शरण आया हूँ, मुझे सदा अपनी भक्ति दिए रख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे मालिक ! अपने चरण मेरे हृदय में बसाए रख, मुझे अपना बहुमूल्य नाम दिए रख, ताकि मेरा जीवन सफल हो जाए ॥ १ ॥ हे मेरे मालिक ! मुझे सत्संगति में रख, यही मेरे लिए मुक्ति है, यही मेरे लिए जीने का सही तरीक़ा है ॥ २ ॥ हे नानक ! (कह—) हे हरि ! तेरे गुणों में डूबकर तेरा नाम स्मरण करता रहूँ और आत्मिक स्थिरता में टिका रहूँ ॥ ३ ॥ ६ ॥ १४६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर चरण सुहावे । हरि संतन पावे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु गवाइआ सेव कमाइआ गुन रसि रसि गावे ॥ १ ॥ एकहि आसा दरस पिआसा आन न भावे ॥ २ ॥ दइआ तुहारी किआ जंत विचारी नानक बलि बलि जावे ॥ ३ ॥ ७ ॥ १४७ ॥

(हे भाई !) मालिक-प्रभु के चरण सुन्दर हैं, लेकिन प्रभु के सन्तों को इनका मिलाप प्राप्त होता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सन्तजन अहंकार दूर

करके परमात्मा की सेवा-भक्ति करते हैं और उसके गुण आनन्दपूर्वक गाते रहते हैं ॥ १ ॥ (सन्तजनों को) एक परमात्मा की (सहायता की) ही आशा लगी रहती है, उन्हें परमात्मा के दर्शनों की इच्छा लगी रहती है, (इसके अतिरिक्त) उन्हें कोई दूसरी (सांसारिक आशा) भली नहीं लगती ॥ २ ॥ हे नानक ! (जीव में ईश्वर-प्रेम का उपजना) तेरी ही कृपा है। बेचारे जीवों का क्या वश है ? हे प्रभु ! मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ ॥ ३ ॥ ७ ॥ १४७ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ एकु सिमरि मन माही ॥१॥रहाउ॥ नामु धिआवहु रिदै बसावहु तिसु बिनु को नाही ॥१॥ प्रभ सरनी आईऐ सरब फल पाईऐ सगले दुख जाही ॥ २ ॥ जीअन को दाता पुरखु बिधाता नानक घटि घटि आही ॥ ३ ॥ ८ ॥ १४८ ॥

(हे भाई ! अपने) मन में एक परमात्मा का स्मरण करता रह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) परमात्मा का नाम स्मरण किया करो, हरि-नाम अपने हृदय में बसाए रखो, परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई सहायक नहीं है ॥१॥ (हे भाई !) आओ, परमात्मा की शरण लें और समस्त फल प्राप्त करें। (परमात्मा के शरणागत होकर ही) सारे दुख दूर हो जाते हैं ॥ २ ॥ नानक का कथन है कि सृजनहार अकालपुरुष सब जीवों को देन देनेवाला है, वह हरेक शरीर में विद्यमान है ॥ ३ ॥ ८ ॥ १४८ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ हरि बिसरत सो मूआ ॥१॥रहाउ॥ नामु धिआवै सरब फल पावै सो जनु सुखीआ हूआ ॥ १ ॥ राजु कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रमि सूआ ॥२॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु भेटिआ सो जनु निहचलु थीआ ॥३॥९॥१४९॥

हे भाई ! जिस मनुष्य को परमात्मा की स्मृति विस्मृत हो गई, वह आत्मिक मौत को प्राप्त हो गया (समझो) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करता रहता है, वह सारे फल प्राप्त कर लेता है और सहज जीवन व्यतीत करता है ॥१॥ (लेकिन जो मनुष्य अहंकारवश) स्वयं को राजा कहलवाता है, वह अहंकार पैदा करनेवाले काम करता है। वह अहंकार में ऐसे बँधा रहता है, जैसे (डूबने से बचे रहने के लिए) भ्रम में पड़कर तोता नलकी से चिपटा रहता है ॥ २ ॥ हे नानक ! कह— जिस मनुष्य को सतिगुरु मिल जाता है, वह मनुष्य स्थिर आत्मिक जीवन वाला बन जाता है ॥ ३ ॥ ९ ॥ १४९ ॥

आसा महला ५ घरु १४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ओहु नेहु नवेला। अपुने प्रीतम सिउ लागि रहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो प्रभ भावै जनमि न आवै। हरि प्रेम भगति हरि प्रीति रचै ॥१॥ प्रभ संगि मिलीजै इहु मनु दीजै। नानक नामु मिलै अपनी दइआ करहु॥ २॥ १॥ १५०॥

हे भाई ! जो प्रेम प्रियतम-प्रभु के साथ बना रहता है, वह नित्यनवीन (नितनूतन) होता है॥ १ ॥ रहाउ॥ हे भाई ! जो मनुष्य प्रभु को प्यारा लगने लगता है, वह पुनः जन्म नहीं लेता। जिस मनुष्य को हरि का प्रेम प्राप्त हो जाता है, हरि की भक्ति प्राप्त हो जाती है, वह हरि-प्रीति में तल्लीन रहता है ॥ १ ॥ प्रभु (के चरणों) में (तब ही) मिला जा सकता है यदि परमात्मा के प्रति मन अर्पित कर दें। हे नानक ! (प्रार्थना कर और कह कि) प्रभु, अपनी कृपा कर (ताकि) तेरे दास नानक को तेरा नाम प्राप्त हो जाए॥ २ ॥ १ ॥ १५०॥

॥ आसा महला ५॥ मिलु राम पिआरे तुम बिनु धीरजु को न करै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिम्रिति सासत्र बहु करम कमाए। प्रभ तुमरे दरस बिनु सुखु नाही ॥ १ ॥ वरत नेम संजम करि थाके। नानक साध सरनि प्रभ संगि वसै ॥ २ ॥ २ ॥ १५१ ॥

हे मेरे प्यारे राम ! (मुझे) मिल। तेरे मिलाप के अतिरिक्त दूसरा कोई भी मेरे मन में शान्ति पैदा नहीं कर सकता ॥ १ ॥ रहाउ॥ हे प्यारे राम ! अनेक व्यक्तियों ने शास्त्रों-स्मृतियों के लिखे अनुसार कार्य किए, लेकिन किसी प्रकार भी तुम्हारे दर्शनों के बिना आत्मिक आनन्द नहीं मिलता ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम्हें पाने के लिए अनेक लोग व्रत रखते रहे, कई नियम निभाते रहे, इन्द्रियों को वश में करने के यत्न करते रहे; लेकिन यह सब कुछ करके थक गए (तेरा दर्शन प्राप्त न हुआ)। हे नानक ! गुरु की शरणागत होकर (मनुष्य का मन) परमात्मा के (चरणों) में लीन हो जाता है ॥ २ ॥ २ ॥ १५१ ॥

आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ बिकार माइआ मादि सोइओ सूझ बूझ न आवै। पकरि केस जमि उठारिओ तद ही घरि

जावै ॥१॥ लोभ बिखिआ बिखै लागे हिरि वित चित दुखाही । खिन भंगुना कै मानि माते असुर जाणहि नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही डोरा । निपटि बाजी हारि मूका पछुताइओ मनि भोरा ॥ २ ॥ डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ । जेंह कारजि रहै ओल्हा सोइ कामु न करिआ ॥ ३ ॥ ऐसो जगु मोहि गुरि दिखाइओ तउ एक कीरति गाइआ । मानु तानु तजि सिआनप सरणि नानकु आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १५२ ॥

(हे भाई !) विकार एवं माया के नशे में मनुष्य सोता रहता है, इसे (सही जीवन-मार्ग की) सूझ नहीं आती। जब यम ने इसे केशों से पकड़कर उठाया, तब ही इसे होश आती है ॥ १ ॥ माया के लोभ तथा विषयों में प्रवृत्त होकर पराया धन चुराकर (दूसरों के) मन दुखाते हैं, पल में नष्ट होनेवाली माया के नशे में मस्त निर्दयी मनुष्य समझते नहीं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) वेद-शास्त्र एवं सन्तजन आदि पुकार-पुकार कर बतलाते हैं, पर (माया के नशे के कारण) बहरा हो चुका मनुष्य (उनके उपदेश को) सुनता नहीं। जब बिल्कुल ही जीवन-बाज़ी हारकर अन्त समय पर आ पहुँचता है, तब यह मूर्ख अपने मन में पछताता है ॥ २ ॥ (माया-मोह में डूबा हुआ मनुष्य) व्यर्थ ही दण्ड भरता रहता है। (वह) परमात्मा की सेवा में स्वीकृत नहीं होता। जिस काम के करने से परमात्मा के द्वार पर प्रतिष्ठा बने, वह काम यह कभी भी नहीं करता ॥ ३ ॥ (जब) गुरु ने मुझे ऐसा (माया-ग्रसित) जगत दिखा दिया, तब मैंने एक परमात्मा की गुणस्तुति करनी शुरू कर दी, तब अभिमान त्यागकर (दूसरा) आसरा छोड़, चतुराइयाँ त्यागकर (मैं) नानक परमात्मा की शरण में आ गया ॥ ४ ॥ १ ॥ १५२ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ बापारि गोविंद नाए । साध संत मनाए प्रिअ पाए गुन गाए पंच नाद तूर बजाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरपा पाए सहजाए दरसाए अब रातिआ गोविंद सिउ । संत सेवि प्रीति नाथ रंगु लालन लाए ॥ १ ॥ गुर गिआनु मनि द्रिड़ाए रहसाए नही आए सहजाए मनि निधानु पाए । सभ तजी मनै की काम करा । चिरु चिरु चिरु चिरु भइआ मनि बहुतु पिआस लागी । हरि दरसनो दिखावहु मोहि तुम बतावहु । नानक दीन सरणि आए गलि लाए ॥ २ ॥ २ ॥ १५३ ॥

हे भाई ! जो मनुष्य परमात्मा के नाम के व्यापार में लग पड़ता है, परमात्मा के गुण गाता है, वह सन्तजनों की प्रसन्नता प्राप्त कर लेता है और उसे प्यारे प्रभु का मिलन अनुभव हो जाता है (और तदन्तर) उसके भीतर, मानो, पाँचों प्रकार के बाजे बजने लगते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! परमात्मा की कृपा द्वारा ही मनुष्य को आत्मिक स्थिरता प्राप्त हो जाती है, परमात्मा का दर्शन हो जाता है, वह सदा के लिए परमात्मा के प्रेम-रंग में रँगा जाता है । गुरु की बतलाई सेवा के द्वारा उसे पति-प्रभु की प्राप्ति हो जाती है और उस पर प्रियतम प्यारे का प्रेम-रंग चढ़ जाता है ॥ १ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य गुरु के दिए ज्ञान को आत्मसात करता है, उसके भीतर प्रसन्नता पैदा हो जाती है, वह आवागमन के चक्र में नहीं पड़ता, उसके भीतर आत्मिक स्थिरता पैदा हो जाती है और वह अपने मन में नाम-ख़ज़ाना प्राप्त कर लेता है । वह अपने मन की समस्त वासनाएँ त्याग देता है । नानक की प्रभु से प्रार्थना है कि मैं दीन तेरी शरणागत हूँ, मुझे अपने गले लगा । बहुत समय हो चुका है, मेरे मन में तेरे दर्शनों की इच्छा पैदा हो रही है । हे हरि ! मुझे अपना दर्शन दो, तुम मुझे आप ही मार्ग-दर्शन करो ॥ २ ॥ २ ॥ १५३ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ कोऊ बिखम गार तोरै । आस पिआस धोह मोह भरम ही ते होरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मान इह बिआधि छोरै ॥ १ ॥ संत संगि नाम रंगि गुन गोबिंद गावउ । अनदिनो प्रभ धिआवउ । भ्रम भीति जीति मिटावउ । निधि नामु नानक मोरै ॥ २ ॥ ३ ॥ १५४ ॥

(हे भाई ! जगत में) कोई विरला मनुष्य है, जो सख़्त किले को तोड़ता है (और अपने मन को) सांसारिक एषणाओं, माया की तृष्णा, ठगी-फ़रेब, मोह तथा दुबिधा से रोकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (कोई विरला ही) काम, क्रोध, अहंकार आदि बीमारियाँ (अपने भीतर से) दूर करता है ॥१॥ हे नानक ! (कह— हे भाई !) मैं तो सन्तजनों की संगति में रहकर परमात्मा के नाम-रंग में लीन होकर परमात्मा के गुण गाता हूँ, मैं तो प्रत्येक पल परमात्मा का स्मरण करता हूँ और इस प्रकार दुबिधा की दीवार को जीतकर मिटाता हूँ । (हे भाई !) मेरे पास परमात्मा का नाम-ख़ज़ाना ही है (जो सब ओर से मेरी रक्षा करता है) ॥ २ ॥ ३ ॥ १५४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु तिआगु । मनि सिमरि गोबिंद नाम । हरि भजन सफल काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि मान मोह विकार मिथिआ जपि राम राम राम । मन

संतना कै चरनि लागु ॥ १ ॥ प्रभ गोपाल दीन दइआल पतित पावन पारब्रहम हरि चरण सिमरि जागु । करि भगति नानक पूरन भागु ॥ २ ॥ ४ ॥ १५५ ॥

(हे भाई ! अपने) मन में परमात्मा का नाम स्मरण करता रह और काम, क्रोध और लोभ दूर कर ले । परमात्मा के स्मरण से सारे काम सफल हो जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मन ! अहंकार, मोह, विकार, झूठ त्याग दे, सदा परमात्मा का स्मरण किया कर और सन्तजनों की शरण लिये रह ॥ १ ॥ हे भाई ! उस हरि-प्रभु के चरणों का ध्यान करके सचेत रह, जो धरती का रक्षक है, जो दीन-दयालु है और जो विकारग्रस्तों को पवित्र करनेवाला है । हे नानक ! (कह— हे भाई !) परमात्मा की भक्ति कर, तेरा भाग्य जाग जायगा ॥ २ ॥ ४ ॥ १५५ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ हरख सोग बैराग अनंदी खेलु री दिखाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिन हूं भै निर भै खिन हूं खिन हूं उठि धाइओ । खिन हूं रस भोगन खिन हूं खिन हूं तजि जाइओ ॥ १ ॥ खिन हूं जोग ताप बहु पूजा खिन हूं भरमाइओ । खिन हूं किरपा साधू संग नानक हरि रंगु लाइओ ॥२॥५॥१५६॥

हे सहेली ! आनन्द रूपी परमात्मा ने मुझे यह जगत-तमाशा दिखा दिया है, जिसमें कहीं हर्ष, कहीं दुख और कहीं वैराग्य है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (कहीं) एक पल में अनेक भय (आ घेरते हैं, कहीं) निर्भयता है, (कहीं कोई दुनियावी पदार्थों की ओर) उठकर दौड़ता है, कहीं एक पल में स्वादिष्ट पदार्थ भोगे जा रहे हैं, कहीं कोई एक पल में इन भोगों को त्याग जाता है ॥ १ ॥ (इस जगत-तमाशे में कहीं) योग साधन किए जा रहे हैं, कहीं धूनियाँ तपाई जा रही हैं, कहीं अनेक देवपूजा हो रही हैं, कहीं अनगिनत दुविधाएँ ग्रस रही हैं । हे नानक ! (कह— हे सखी !) कहीं सत्संगति में रखकर एक पल में परमात्मा की कृपा हो रही है और परमात्मा का प्रेम-रंग दिया जा रहा है ॥ २ ॥ ५ ॥ १५६ ॥

रागु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी

१ ओं सतिगुर प्रसादि । गोबिंद गोबिंद करि हां । हरि हरि मनि पिआरि हां । गुरि कहिआ सु चिति धरि हां । अन सिउ तोरि फेरि हां । ऐसे लालनु पाइओ री सखी ॥१॥रहाउ॥

पंकज मोह सरि हां। पगु नही चलै हरि हां। गहडिओ मूड़ नरि हां। अनिन उपाव करि हां। तउ निकसै सरनि पै री सखी।। १।। थिर थिर चित थिर हां। बनु ग्रिहु समसरि हां। अंतरि एक पिर हां। बाहरि अनेक धरि हां। राजन जोगु करि हां। कहु नानक लोग अलोगी री सखी ।। २ ।। १ ।। १५७ ।।

(हे सहेली !) सदा परमात्मा का स्मरण करती रह, (इस प्रकार अपने) मन में परमात्मा के साथ प्रेम बना। जो कुछ गुरु ने कहा, वह अपने हृदय में बसा। परमात्मा के अतिरिक्त दूसरों के साथ की हुई प्रीति तोड़ दे, दूसरों की ओर से अपने मन को हटा ले। हे सहेली ! परमात्मा को इस तरीक़े से ही पाया है ।। १ ।। रहाउ ।। हे सहेली ! संसार-समुद्र में मोह का कीचड़ है, (जहाँ फँसा हुआ) पैर परमात्मा की ओर नहीं उठता। मूर्ख मनुष्य ने अपना पैर मोह के कीचड़ में फँसाया हुआ है। हे सखी ! केवल एक परमात्मा के स्मरण का ही कामकाज कर और परमात्मा की शरण ले, तब ही (मोह-कीचड़ से) पैर निकल सकता है ।। १ ।। हे सहेली ! अपने चित्त को स्थिर बना ले, ताकि जंगल और घर एक समान प्रतीत हों। अपने हृदय में एक परमात्मा की याद टिकाए रख, तदन्तर जगत में निस्सन्देह चाहे जो धन्धा कर, (इस प्रकार) राज्य भी कर और योगसाधना भी कर। (परन्तु) हे नानक ! कह— हे सखी ! सांसारिक कामकाज करते हुए निर्लिप्त रहना संसार से विचित्र रास्ता है ।। २ ।। १ ।। १५७ ।।

।। आसावरी महला ५ ।। मनसा एक मानि हां। गुर सिउ नेत धिआनि हां। द्रिड़ु संत मंत गिआनि हां। सेवा गुर चरानि हां। तउ मिलीऐ गुर क्रिपानि मेरे मना ।। १ ।। रहाउ ।। टूटे अन भरानि हां। रविओ सरब थानि हां। लहिओ जम भइआनि हां। पाइओ पेड थानि हां। तउ चूकी सगल कानि ।। १ ।। लहनो जिसु मथानि हां। भै पावक पारि परानि हां। निज घरि तिसहि थानि हां। हरि रस रसहि मानि हां। लाथी तिस भुखानि हां। नानक सहजि समाइओ रे मना ।। २ ।। २ ।। १५८ ।।

(हे मेरे मन !) एक (परमात्मा के मिलन) की आकांक्षा टिकाकर रख। गुरु-चरणों में जुड़कर (परमात्मा) के ध्यान में टिका रह। गुरु के ज्ञान की परख में दृढ़चित्त हो। गुरु-चरणों में (रहकर) सेवा-भक्ति कर। हे मेरे मन ! तब ही गुरु-कृपा से (परमात्मा को) मिला जा सकता

है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे मन ! जब दूसरी दुविधाएँ समाप्त हो जाती हैं, जब सर्वत्र परमात्मा व्यापक दिखता है, जब भयावह यमराज का भय उतर जाता है, संसार-वृक्ष के मूल हरि के चरणों में ठिकाना मिल जाता है, तब हर एक प्रकार का अभाव मिट जाता है ॥ १ ॥ हे नानक ! (कह—) हे मेरे मन ! जिस मनुष्य के भाग्य उदय हो जाते हैं, वह (विकारों की) आग के संकट से पार उतर जाता है, उसे अपने असली घर में स्थान मिल जाता है, वह रसों में श्रेष्ठ रस हरि-नाम रूपी रस को अनुभव करता है, उसकी भूख-प्यास दूर हो जाती है, और वह सदा आत्मिक स्थिरता में लीन रहता है ॥ २ ॥ २ ॥ १५८ ॥

॥ आसावरी महला ५ ॥ हरि हरि हरि गुनी हां। जपीऐ सहज धुनी हां। साधू रसन भनी हां। छूटन बिधि सुनी हां। पाईऐ वड पुनी मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजहि जन मुनी हां। स्रब का प्रभ धनी हां। दुलभ कलि दुनी हां। दूख बिनासनी हां। प्रभ पूरन आसनी मेरे मना ॥ १ ॥ मन सो सेवीऐ हां। अलख अभेवीऐ हां। तां सिउ प्रीति करि हां। बिनसि न जाइ मरि हां। गुर ते जानिआ हां। नानक मनु मानिआ मेरे मना ॥ २ ॥ ३ ॥ १५९ ॥

हे मेरे मन ! आत्मिक स्थिरता की लहर में लीन होकर उस परमात्मा का नाम सदा जपना चाहिए, जो समस्त गुणों का मालिक है। (हे भाई !) गुरु की शरण लेकर अपनी जिह्वा से परमात्मा के गुण उच्चरित कर। हे मेरे मन ! सुन, यही विकारों से बचने का तरीक़ा है, लेकिन यह सौभाग्यवश प्राप्त होता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे मन ! सारे ऋषि-मुनि उस परमात्मा को खोजते आ रहे हैं, जो सब जीवों का मालिक है, जो इस कलियुगी दुनिया में पाना कठिन है, जो सब दुखों का नाशक है और जो सबकी आशाएँ पूर्ण करनेवाला है ॥ १ ॥ हे मन ! उस परमात्मा की सेवा-भक्ति करनी चाहिए, जिसका सही स्वरूप अव्यक्त है, जिसका भेद अप्राप्य है। हे मेरे मन ! उस अनश्वर परमात्मा से प्रेम कर, जो न जन्मता है और न मरता है। हे नानक ! (कह—) हे मेरे मन ! जिस मनुष्य ने गुरु के द्वारा उस परमात्मा से घनिष्ठ मेल कर लिया, उसका मन सदा (उसमें) लीन हो जाता है ॥ २ ॥ ३ ॥ १५९ ॥

॥ आसावरी महला ५ ॥ एका ओट गहु हां। गुर का सबदु कहु हां। आगिआ सति सहु हां। मनहि निधानु लहु हां। सुखहि समाईऐ मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवत जो

मरै हां। दुतरु सो तरै हां। सभ की रेनु होइ हां। निरभउ कहउ सोइ हां। मिटे अंदेसिआ हां। संत उपदेसिआ मेरे मना ॥ १ ॥ जिसु जन नाम सुखु हां। तिसु निकटि न कदे दुखु हां। जो हरि हरि जसु सुने हां। सभु को तिसु मंने हां। सफलु सु आइआ हां। नानक प्रभ भाइआ मेरे मना ॥ २ ॥ ४ ॥ १६० ॥

हे मेरे मन ! एक परमात्मा का पल्ला पकड़, सदा गुरु की वाणी उच्चरित करता रह। हे मेरे मन ! सदा परमात्मा की रज़ा को मीठी मानकर स्वीकार कर। अपने मन में विद्यमान सारे गुणों के भण्डार प्रभु को मिल ले। हे मेरे मन ! इस प्रकार सदा आत्मिक आनन्द में लीन रहा जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे मन ! जो मनुष्य कामकाज करता हुआ मोह-माया से असम्पृक्त रहता है, वह मनुष्य इस संसार-समुद्र से पार उतर जाता है, जहाँ से पार होना अत्यन्त दुःसाध्य है। वह मनुष्य सबके चरणों की धूलि बना रहता है। (यदि गुरु-कृपा हो तो) मैं भी उस निर्भय परमात्मा की गुणस्तुति करता रहूँ। हे मेरे मन ! जिस मनुष्य को सतिगुरु की शिक्षा प्राप्त हो जाती है, उसकी सब चिन्ताएँ मिट जाती हैं ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! जिस मनुष्य को परमात्मा के नाम का आनन्द प्राप्त हो जाता है, कभी कोई दुख उसके निकट नहीं आता। हे मन ! जो मनुष्य सदा परमात्मा की गुणस्तुति सुनता रहता है, हर एक सांसारिक मनुष्य उसका आदर-सत्कार करता है। हे नानक ! (कह—) हे मेरे मन ! जगत में उसी व्यक्ति का जीवन सफल है, जो परमात्मा को प्रिय लगा है ॥२॥४॥१६०॥

॥ आसावरी महला ५ ॥ मिलि हरि जसु गाईऐ हां। परमपदु पाईऐ हां। उआ रस जो बिधे हां। ता कउ सगल सिधे हां। अनदिनु जागिआ हां। नानक बडभागिआ मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत पग धोईऐ हां। दुरमति खोईऐ हां। दासह रेनु होइ हां। बिआपै दुखु न कोइ हां। भगतां सरनि परु हां। जनमि न कदे मरु हां। असथिरु से भए हां। हरि हरि जिन्ह जपि लए मेरे मना ॥ १ ॥ साजनु मीतु तूं हां। नामु द्रिड़ाइ मूं हां। तिसु बिनु नाहि कोइ हां। मनहि अराधि सोइ हां। निमख न वीसरै हां। तिसु बिनु किउ सरै हां। गुर कउ कुरबानु जाउ हां। नानकु जपे नाउ मेरे मना ॥ २ ॥ ५ ॥ १६१ ॥

हे भाई ! (सत्संगति में) मिलकर परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाना चाहिए, (क्योंकि इसी तरीक़े से) आत्मिक जीवन का सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया जाता है, जो मनुष्य इस आस्वादन में लीन हो जाता है, उसे (मानो) सारी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। हे नानक ! प्रभु-भक्त प्राणी सौभाग्यशाली हो जाता है, वह प्रत्येक पल (विषयों से) सावधान रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! सन्तजनों के चरण धोने चाहिए, (तभी मन की) खोटी बुद्धि दूर हो सकती है। हे भाई ! प्रभु के सेवकों की चरणधूलि बना रह, (इससे) कोई दुख अपना दबाव नहीं डाल सकता। हे भाई ! भक्तजनों की शरण लो, जन्म-मरण का चक्र नहीं रहेगा। हे मेरे मन ! जो मनुष्य सदा परमात्मा का नाम जपते हैं, वे स्थिर आत्मिक जीवन वाले बन जाते हैं ॥ १ ॥ (हे प्रभु !) तुम ही मेरे सज्जन हो, मित्र हो, अपना नाम मेरे हृदय में दृढ़ करके टिका दो। उस परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई (मित्र) नहीं है, सदा उस (प्रभु) को ही स्मरण करता रह। (वह परमात्मा) निमिषमात्र के लिए भी विस्मरण नहीं करना चाहिए, (क्योंकि) उसके बिना जीवन सुखी नहीं बीतता। हे मेरे मन ! मैं (नानक) गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, (क्योंकि गुरु की कृपा से ही) नानक (परमात्मा का) नाम जपता है ॥ २ ॥ ५ ॥ १६१ ॥

॥ आसावरी महला ५ ॥ कारन करन तूं हां। अवरु ना सुझै मूं हां। करहि सु होईऐ हां। सहजि सुखि सोईऐ हां। धीरज मनि भए हां। प्रभ कै दरि पए मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संगमे हां। पूरन संजमे हां। जब ते छुटे आप हां। तब ते मिटे ताप हां। किरपा धारीआ हां। पति रखु बनवारीआ मेरे मना ॥ १ ॥ इहु सुखु जानीऐ हां। हरि करे सु मानीऐ हां। मंदा नाहि कोइ हां। संत की रेन होइ हां। आपे जिसु रखै हां। हरि अंम्रितु सो चखै मेरे मना ॥ २ ॥ जिस का नाहि कोइ हां। तिस का प्रभू सोइ हां। अंतरगति बुझै हां। सभु किछु तिसु सुझै हां। पतित उधारि लेहु हां। नानक अरदासि एहु मेरे मना ॥ ३ ॥ ६ ॥ १६२ ॥

यहाँ गुरुजी ने मन को प्रभु की प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करते हुए ईश्वर से कहा है कि तुम सारे जगत के सृजनहार हो, मुझे कोई दूसरा तुम्हारे समकक्ष नहीं सूझता। हे प्रभु ! जो कुछ तुम करते हो, वही (जगत में) होता है। (यदि अपनी चतुराइयाँ छोड़कर) परमात्मा के द्वार पर शरण लें, तो मन में हौसला बन जाता है और तभी आत्मिक स्थिरता में, आनन्द

में लीन रहा जा सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे मन ! गुरु की संगति में रहने से वह मुक्ति पूर्ण तौर से आ जाती है, जिससे ज्ञानेन्द्रियाँ वश में आ जाती हैं। हे मन ! जिस वक्त अहंकार समाप्त हो जाता है, उसी वक्त से (मन के) सारे दुख-क्लेश दूर हो जाते हैं। सो हे मेरे मन ! (प्रभु-द्वार पर प्रार्थना कर, और कह—) हे जगत के मालिक-प्रभु ! मुझ पर कृपा कर, और मुझ शरणागति की प्रतिष्ठा रख ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! जो कुछ परमात्मा करता है, उसे (मीठा) मानना चाहिए, उसी को सुख समझना चाहिए। हे मन ! जो मनुष्य सन्तजनों के चरणों की धूलि बनता है, उसे कोई बुरा नहीं दिखाई देता। हे मेरे मन ! परमात्मा आप ही जिस मनुष्य को बचाता है, वह मनुष्य आत्मिक जीवन देनेवाला हरि-नाम-जल पीता है ॥ २ ॥ हे मेरे मन ! जिस मनुष्य का कोई भी सहायक नहीं बनता, वह प्रभु उसका रक्षक बन जाता है। वह परमात्मा सबके हृदय की बात जानता है, उसे हर एक जीव की हर एक मनोकामना की समझ आ जाती है। हे मेरे मन ! परमात्मा के द्वार पर इस प्रकार प्रार्थना कर— हे प्रभु ! (विकारों में) ग्रस्त जीवों की रक्षा कीजिए, (तेरे द्वार पर) नानक की यही प्रार्थना है ॥ ३ ॥ ६ ॥ १६२ ॥

॥ आसावरी महला ५ इक तुका ॥ ओइ परदेसीआ हां। सुनत संदेसिआ हां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा सिउ रचि रहे हां। सभ कउ तजि गए हां। सुपना जिउ भए हां। हरि नामु जिन्हि लए ॥ १ ॥ हरि तजि अन लगे हां। जनमहि मरि भगे हां। हरि हरि जनि लहे हां। जीवत से रहे हां। जिसहि क्रिपालु होइ हां। नानक भगतु सोइ ॥२॥७॥१६३॥२३२॥

जगत में चार दिनों के लिए आए हे जीव ! यह सन्देश ध्यानपूर्वक सुन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुझसे पूर्ववर्ती जीव जिस माया के मोह में फँसे रहे, अन्त में उस तमाम को छोड़कर वे लोग यहाँ से चले गए, (अब वह) स्वप्नवत हो गए। फिर तू क्यों परमात्मा का नाम याद नहीं करता ? ॥ १ ॥ (हे भाई !) जो मनुष्य परमात्मा को भुलाकर दूसरे पदार्थों के मोह में फँसे रहते हैं, वे जन्म-मरण के चक्र में भटकते फिरते हैं। जिस-जिस मनुष्य ने परमात्मा को प्राप्त कर लिया, वे आत्मिक जीवन के स्वामी हो गए। (पर) हे नानक ! जिस मनुष्य पर प्रभु दयालु होता है, वह उसका भक्त बनता है ॥ २ ॥ ७ ॥ १६३ ॥ २३२ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ९ ॥ बिरथा कहउ कउन सिउ मन की। लोभि ग्रसिओ दसहू दिस धावत

आसा लागिओ धन की ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की । दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥ १ ॥ मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की । नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥ २ ॥ १ ॥ २३३ ॥

(हे भाई !) मैं इस (मानवीय) मन की दुर्गति किसे बताऊँ ? लोभ में फँसा हुआ यह मन दसों दिशाओं में दौड़ता रहता है, इसे धन जोड़ने की तृष्णा चिपटी रहती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे भाई !) सुख पाने के लिए (यह मन) इधर-उधर ख़ुशामद करता फिरता है, (इस प्रकार वह) अधिक दुख सहता है। कुत्ते के तुल्य हरेक के द्वार पर भटकता फिरता है, लेकिन इसे परमात्मा का भजन करने की कभी सूझ ही नहीं होती ॥ १ ॥ (लोभग्रस्त जीव) अपना मनुष्य-जन्म व्यर्थ गवाँ देता है, (इसके लालच के कारण) लोगों की ओर से हो रहे हँसी-मज़ाक की भी इसे लाज नहीं आती। हे नानक ! (कह— हे जीव !) तू परमात्मा की गुणस्तुति क्यों नहीं करता ? (गुणस्तुति से) तेरी यह दुर्बुद्धि दूर हो सकेगी ॥ २ ॥ १ ॥ २३३ ॥

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ उतरि अवघटि सरवरि न्हावै । बकै न बोलै हरिगुण गावै । जलु आकासी सुंनि समावै । रसु सतु झोलि महा रसु पावै ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु सुनहु अभ मोरे । भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु ब्रतु नेमु न कालु संतावै । सतिगुर सबदि करोधु जलावै । गगनि निवासि समाधि लगावै । पारसु परसि परम पदु पावै ॥ २ ॥ सचु मन कारणि ततु बिलोवै । सुभर सरवरि मैलु न धोवै । जै सिउ राता तैसो होवै । आपे करता करे सु होवै ॥ ३ ॥ गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै । सेवा सुरति बिभूत चड़ावै । दरसनु आपि सहज घरि आवै । निरमल बाणी नादु बजावै ॥ ४ ॥ अंतरि गिआनु महा रसु सारा । तीरथ मजनु गुर वीचारा । अंतरि पूजा थानु मुरारा । जोती जोति मिलावणहारा ॥ ५ ॥ रसि रसिआ मति एकै भाइ । तखत निवासी पंच समाइ । कार कमाई खसम रजाइ । अविगत नाथु न लखिआ जाइ ॥ ६ ॥

जल महि उपजै जल ते दूरि। जल महि जोति रहिआ भरपूरि। किसु नेड़ै किसु आखा दूरि। निधि गुण गावा देखि हदूरि॥७॥ अंतरि बाहरि अवरु न कोइ। जो तिसु भावै सो फुनि होइ। सुणि भरथरि नानकु कहै बीचारु। निरमल नामु मेरा आधारु॥ ८ ॥ १ ॥

हे भृतहरि योगी ! जो मनुष्य अहंकार आदि की दुर्गम घाटी से उतरकर (सत्संग-) सरोवर में स्नान करता है, जो बहुत व्यर्थ नहीं बोलता और परमात्मा के गुण गाता है; वह मनुष्य इस प्रकार उस आत्मिक अवस्था में टिका रहता है, जहाँ कोई धन सम्बन्धी ललक नहीं उठती। जैसे (समुद्र का) जल (सूर्य की मदद से ऊँचा उठकर) आकाश में (उड़ान लगाता) है, वैसे वह मनुष्य शान्तिरस को मथकर नाम रूपी महारस पान करता है॥१॥ हे मेरे मन ! परमात्मा के साथ गहरे सम्बन्ध बनाने की यह बात सुन, (कि) परमात्मा सर्वत्र व्यापक है और सर्वत्र सहारा दे रहा है॥१॥रहाउ॥ (हे योगी !) जिस मनुष्य ने सत्यप्रभु (के नाम) को अपने नित्य का संकल्प बना लिया है, नित्यप्रति का काम बना लिया है, उसे मौत का दुख नहीं सताता। गुरु के शब्द में जुड़कर वह (अपने भीतर से) क्रोध जला देता है, उच्च आत्मिक मण्डल में रहने से वह प्रभु-चरणों में जुड़ा रहता है और पारस (के चरणों) को स्पर्श कर वह सर्वोच्च आत्मिक स्थान प्राप्त कर लेता है॥ २ ॥ (जो मनुष्य) अपने मन को संयमित करने के लिए सत्यस्वरूप प्रभु को बार-बार याद करता है और अपने मूल प्रभु की खोज करता है, जो मनुष्य लबालब भरे (नाम-अमृत से भरे) स्वच्छ सरोवर में स्वयं को धोता है, (उसे ज्ञान हो जाता है कि) जगत में वही कुछ होता है, जो कर्तार आप ही कर रहा है॥ ३ ॥ (हे योगी !) बर्फ़-जैसे शीतल हृदय वाले गुरु को मिलकर जो मनुष्य (तृष्णा की अग्नि) बुझाता है, जो गुरु के द्वारा बतलाई सेवा में अपनी रुचि रखता है, जो, मानो यह राख अपनी देह पर मलता है, जो प्रभु की गुणस्तुति से भरपूर गुरु की पवित्र वाणी अपने भीतर बसाता है, जो, मानो यह नाद बजाता है, उसने असली वेश बना लिया है, वह सदा स्थिर आत्मिक अवस्था में टिका रहता है॥ ४ ॥ जिस मनुष्य ने अपने भीतर प्रभु से मेल कर लिया है, जो सदा श्रेष्ठ नाम-रस पान कर रहा है, जिसने सतिगुरु की वाणी के विचार को (अठसठ) तीर्थों का स्नान बना लिया है, जिसने अपने हृदय को परमात्मा का मन्दिर बना लिया है और अन्तर्मन में उसकी पूजा करता है, वह अपनी ज्योति को परमात्मा की ज्योति में मिला लेता है॥ ५ ॥ (हे योगी !) जिस मनुष्य का मन नाम-रस में भीग जाता है, जिसकी बुद्धि एक प्रभु के नाम-रस में भीग जाती है, वह कामादिक पाँचों

को मारकर स्थितप्रज्ञ हो जाता है, पति-प्रभु की रजा में चलना ही उसकी नित्यप्रति की जीवनचर्या और दैनिक कमाई हो जाती है। वह मनुष्य उस स्वामी जैसा हो जाता है, जो अगोचर है और जिसका स्वरूप व्यक्त नहीं किया जा सकता ॥ ६ ॥ (वह परमात्मा) पानी में चमकता है, लेकिन वह पानी से बहुत दूर है, पानी में उसकी ज्योति चमक मारती है, इसी प्रकार परमात्मा की ज्योति सब जीवों में, सर्वत्न व्यापक है। मैं यह नहीं कह सकता कि वह परमात्मा किसके निकट है और किससे दूर है? उसे सर्वव्यापक देखकर मैं उस गुणों के भण्डार प्रभु का गुणगान करता हूँ ॥ ७ ॥ हे भृतहरि योगी! सुन, नानक तुझे विचार की बात कहता है कि सर्वत्न जीवों के भीतर-बाहर सृष्टि में परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है। जगत में वही कुछ हो रहा है, जो उसे अच्छा लगता है। उस परमात्मा का पवित्न नाम मेरी ज़िन्दगी का आसरा है ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ आसा महला १ ॥ सभि जप सभि तप सभ चतुराई। ऊझड़ि भरमै राहि न पाई। बिनु बूझे को थाइ न पाई। नाम बिहूणै माथे छाई ॥ १ ॥ साच धणी जगु आइ बिनासा। छूटसि प्राणी गुरमुखि दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगु मोहि बाधा बहुती आसा। गुरमती इकि भए उदासा। अंतरि नामु कमलु परगासा। तिन्ह कउ नाही जम की त्रासा ॥ २ ॥ जगु त्रिअ जितु कामणि हितकारी। पुत्र कलत्र लगि नामु विसारी। बिरथा जनमु गवाइआ बाजी हारी। सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ ३ ॥ बाहरहु हउमै कहै कहाए। अंदरहु मुकतु लेपु कदे न लाए। माइआ मोहु गुरसबदि जलाए। निरमल नामु सद हिरदै धिआए ॥ ४ ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए। सिख संगति करमि मिलाए। गुर बिनु भूलो आवै जाए। नदरि करे संजोगि मिलाए ॥ ५ ॥ रूड़ो कहउ न कहिआ जाई। अकथ कथउ नह कीमति पाई। सभ दुख तेरे सूख रजाई। सभि दुख मेटे साचै नाई ॥ ६ ॥ कर बिनु वाजा पग बिनु ताला। जे सबदु बुझै ता सचु निहाला। अंतरि साचु सभे सुख नाला। नदरि करे राखै रखवाला ॥ ७ ॥ त्रिभवण सूझै आपु गवावै। बाणी बूझै सचि समावै। सबदु वीचारे एक लिव तारा। नानक धंनु सवारणहारा ॥ ८ ॥ २ ॥

जो मनुष्य सारे जप-तप करता है, (शास्त्र आदि समझने के लिए)

हर एक प्रकार की चतुराई दिखाता है, परन्तु यदि वह (परमात्मा का दास बनने की युक्ति) नहीं समझता, तो उसका (जप-तप आदि का) कोई भी उद्यम (प्रभु द्वारा) स्वीकृत नहीं होता। वह ग़लत मार्ग पर भटक रहा है, वह परमात्मा-प्राप्ति के रास्ते पर नहीं जा रहा। परमात्मा के नाम से ख़ाली मनुष्य के सिर पर राख पड़ती है ॥ १ ॥ जगत जन्मता-मरता रहता है, (लेकिन) जगत का स्वामी सत्यस्वरूप है। जो प्राणी गुरु की शरण लेकर परमात्मा का दास बन जाता है, वह जन्म-मरण के चक्र से बच जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत माया के मोह में बँधा हुआ अत्यधिक आशाओं में लगा रहता है, लेकिन कई (सौभाग्यशाली मनुष्य) गुरु की शिक्षा को स्वीकार कर मोह से निर्लिप्त रहते हैं, उनके भीतर परमात्मा का नाम बसता है, जिससे (उनका हृदय-कमल) खिला रहता है। ऐसे व्यक्तियों को जन्म-मरण के चक्र का भय नहीं रहता ॥ २ ॥ (गुरु की शरण के बिना) जगत कामातुर हो रहा है, स्त्री के मोह में फँसा हुआ है, पुत्र एवं पत्नी के मोह में पड़कर परमात्मा के नाम को भुला रहा है। इस प्रकार मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ गवाँता है और मनुष्य-जन्म का खेल हार कर जाता है, लेकिन जो मनुष्य गुरु की बतलाई (सेवा) करता है, उसका नित्य-कर्म श्रेष्ठ हो जाता है ॥ ३ ॥ जो मनुष्य गुरु के शब्द में लीन होकर माया का मोह जला देता है, परमात्मा के पवित्र नाम को सदा अपने हृदय में याद रखता है, वह अन्तर्मन में माया के मोह से आज़ाद रहता है, उस पर माया का प्रभाव नहीं पड़ता, हाँ, वैसे लौकिक कामकाज करता हुआ वह देखने को अपना आप जताता है ॥ ४ ॥ जिस सिक्ख को (परमात्मा अपनी) कृपा से संगति में मिलाता है, वह दुबिधाग्रस्त मन की देखभाल करता है, (अपने को माया-मोह से) रोक कर रखता है। गुरु की शरण लिये बिना मनुष्य पथभ्रष्ट हो जाता है और आवागमन में पड़ जाता है। जब प्रभु कृपादृष्टि करता है, तो उसे भी संगति में मिलाकर अपने चरणों में जोड़ लेता है ॥५॥ (हे प्रभु !) तुम सुन्दर हो, लेकिन यदि मैं बताने का यत्न करूँ कि तुम कितने सुन्दर हो, तो व्यक्त नहीं किया जा सकता। हे प्रभु ! तेरे गुण व्यक्त नहीं किए जा सकते, यदि मैं प्रयत्न भी करूँ तो भी तेरे गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। (हे प्रभु !) तेरी रज़ा में रहने से सारे दुख, सुख बन जाते हैं। सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति से सारे दुख मिट जाते हैं ॥ ६ ॥ जो मनुष्य (गुरु के) शब्द समझ ले, तो वह अपने भीतर सत्यस्वरूप प्रभु का दर्शन कर लेता है। उसके भीतर ऐसी आत्मिक अवस्था बन जाती है कि, मानो, बिना बजाए बाजा बजता है और बिना पैरों से नृत्य किए, ताल बनी रहती है। जिस मनुष्य को रक्षक प्रभु कृपादृष्टि करके बचाता है, उसके भीतर सत्यस्वरूप प्रभु प्रकट हो जाता है, उसे अपने भीतर सुख ही सुख प्रतीत होते हैं ॥ ७ ॥ जो मनुष्य ईश्वरमय

होकर आपा-भाव दूर करता है, उसे परमात्मा त्रिभुवन में व्याप्त दिख जाता है। गुरु के ज्ञान द्वारा उसे सही ज्ञान हो जाता है, वह सत्यस्वरूप प्रभु में लीन रहता है। वह मनुष्य गुरु के शब्द को अपने मस्तिष्क में टिकाए रखता है और निरन्तर सुरति प्रभु में जोड़ता है। हे नानक ! उस मनुष्य का जन्म धन्य है, वह दूसरों का जन्म भी धन्य बना देता है ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ आसा महला १ ॥ लेख असंख लिखि लिखि मानु। मनि मानिऐ सचु सुरति वखानु। कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु। लेख असंख अलेखु अपारु ॥ १ ॥ ऐसा साचा तूं एको जाणु। जंमणु मरणा हुकमु पछाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहि जगु बाधा जमकालि। बांधा छूटै नामु सम्हालि। गुरु सुखदाता अवरु न भालि। हलति पलति निबही तुधु नालि ॥ २ ॥ सबदि मरै तां एक लिव लाए। अचरु चरै तां भरमु चुकाए। जीवन मुकतु मनि नामु वसाए। गुरमुखि होइ त सचि समाए ॥ ३ ॥ जिनि धर साजी गगनु अकासु। जिनि सभ थापी थापि उथापि। सरब निरंतरि आपे आपि। किसै न पूछे बखसे आपि ॥ ४ ॥ तू पुरु सागरु माणक हीरु। तू निरमलु सचु गुणी गहीरु। सुखु मानै भेटै गुर पीरु। एको साहिबु एकु वजीरु ॥ ५ ॥ जगु बंदी मुकते हउ मारी। जगि गिआनी विरला आचारी। जगि पंडितु विरला वीचारी। बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै अहंकारी ॥ ६ ॥ जगु दुखीआ सुखीआ जनु कोइ। जगु रोगी भोगी गुण रोइ। जगु उपजै बिनसै पति खोइ। गुरमुखि होवै बूझै सोइ ॥ ७ ॥ महघो मोलि भारि अफारु। अटल अछलु गुरमती धारु। भाइ मिलै भावै भइ कारु। नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ ८ ॥ ३ ॥

परमात्मा के स्वरूप के सम्बन्ध में अनगिनत लेख लिख-लिखकर अहंकार ही पैदा होता है। निस्सन्देह अनगिनत लेख लिखे जाएँ, परमात्मा का स्वरूप अभिव्यक्ति से तथा लेख से परे है, उसके गुणों का अन्त नहीं पाया जा सकता। उसके गुण कथन तथा पठन से भी अहंकार का भार बढ़ता है। यदि मनुष्य का मन परमात्मा के गुणों की स्मृति में लग जाए, यदि (मनुष्य की) सुरति में सत्यस्वरूप प्रभु (टिक जाए), तो बस यही असल लेख है (जो उसे स्वीकार होता है) ॥ १ ॥ ऐसा अप्रत्यक्ष और सत्यस्वरूप तू केवल एक प्रभु को ही जान और यह जन्म-मरण भी उस

परमात्मा का हुक्म ही समझ ।। १ ।। रहाउ ।। माया-मोह के कारण जगत मौत के भय में बँधा है, वह बँधा हुआ केवल परमात्मा के नाम को ही सँभालकर मुक्त हो सकता है। यह नाम ही लोक-परलोक में तेरे साथ निभ सकता है। गुरु ही आत्मिक सुख देनेवाला है, (इस देन के लिए गुरु के अतिरिक्त) किसी दूसरे को खोजता न फिर ।। २ ।। (जीव) तभी एक परमात्मा में सुरति जोड़ सकता है, जब गुरु के शब्द के द्वारा (मोह आदि से निर्लिप्त हो जाए अर्थात्) मर जाए। तब ही जीव माया के प्रति मन की दुबिधा दूर कर सकता है, यदि (कामादिक) न समाप्त किए जाने-वाले समूह के प्रभाव को समाप्त कर दे। जो मनुष्य अपने मन में परमात्मा का नाम बसा लेता है, वह इसी ज़िन्दगी में (इन पाँचों के प्रभाव से) मुक्त हो जाता है, लेकिन सत्यस्वरूप प्रभु के नाम में वही मनुष्य लीन होता है, जो गुरु के सम्मुख रहे ।। ३ ।। (हे भाई !) ऐसा सत्यस्वरूप केवल परंब्रह्म ही है, जिसने पृथ्वी और आकाश का निर्माण किया है, जिसने समूची सृष्टि बनाई है, जो निर्माण करके मिटाने में भी समर्थ है। फिर वह आप ही आप सबके भीतर मौजूद है, आप ही सब पर कृपा करता है, (इस कृपा के लिए) किसी दूसरे की सलाह नहीं लेता ।। ४ ।। हे प्रभु ! तुम आप ही आपूरित समुद्र हो, तुम आप ही इसमें माणिक्य-हीरा आदि हो, तुम पवित्रस्वरूप हो, सत्यस्वरूप हो और समस्त गुणों के कोष हो। तुम आप ही बादशाह हो और आप ही मन्त्री हो। जिस मनुष्य को गुरु-पीर मिल जाता है, वह आन्तरिक आनन्द प्राप्त करता है ।। ५ ।। प्रभु के बिना जगत (अहंकार की) क़ैद में है, इस क़ैद से वे ही मुक्त हैं (जिन्होंने गुण की शरण लेकर) इस अहंभावना को मारा है। जगत में वही कोई विरला ज्ञानी व्यक्ति है, जिसका नित्य आचरण उस ज्ञान के अनुसार है। जगत में पण्डित भी कोई विरला है, जो सही विचारक है। (परन्तु) यह शुद्ध विचार और आचरण गुरु द्वारा ही मिलते हैं। गुरु के मिले बिना सारी सृष्टि अहंकार में भटकती फिरती है ।। ६ ।। जगत अहंकारवश दुखी हो रहा है, कोई विरला मनुष्य सुखी है। जगत (आत्मिक रूप से) रोगी हो रहा है, भोगों में प्रवृत्त है और आत्मिक गुणों के लिए अभिलाषा करता है। (प्रभु को विस्मृत करके) जगत में प्रतिष्ठा गवाँकर जन्मता-मरता है, मरता-जन्मता है। जो गुरु की शरण लेता है, वही इस भेद को समझता है ।।७।। (हे भाई !) ग़रीब नानक तुझे यह विचारणीय बात कहता है कि यदि कोई मूल्य देकर परमात्मा को प्राप्त करना हो, तो वह मूल्य अत्यन्त अधिक है। यदि उसके बराबर की कोई चीज़ देकर उसे पाना हो, तो कोई चीज़ उसके बराबर नहीं है। (हे भाई !) गुरु की शिक्षा लेकर उसे सँभालकर रख। वह प्रभु प्रेम के द्वारा मिलता है, जीव द्वारा उसके भय-सम्मान में रहना ही उसे प्रिय लगता है ।। ८ ।। ३ ।।

।। आसा महला १ ।। एकु मरै पंचे मिलि रोवहि । हउमै जाइ सबदि मलु धोवहि । समझि सूझि सहज घरि होवहि । बिनु बूझे सगली पति खोवहि ।। १ ।। कउणु मरै कउणु रोवै ओही । करण कारण सभसै सिरि तोही ।।१।।रहाउ।। मूए कउ रोवै दुखु कोइ । सो रोवै जिसु बेदन होइ । जिसु बीती जाणै प्रभ सोइ । आपे करता करे सु होइ ।। २ ।। जीवत मरणा तारे तरणा । जै जगदीस परमगति सरणा । हउ बलिहारी सतिगुर चरणा । गुरु बोहिथु सबदि भै तरणा ।।३।। निरभउ आपि निरंतरि जोति । बिनु नावै सूतकु जगि छोति । दुरमति बिनसै किआ कहि रोति । जनमि मूए बिनु भगति सरोति ।। ४ ।। मूए कउ सचु रोवहि मीत । त्रै गुण रोवहि नीता नीत । दुखु सुखु परहरि सहजि सु चीत । तनु मनु सउपउ क्रिसन परीति ।। ५ ।। भीतरि एकु अनेक असंख । करम धरम बहु संख असंख । बिनु भै भगती जनमु बिरंथ । हरि गुण गावहि मिलि परमारंथ ।। ६ ।। आपि मरै मारे भी आपि । आपि उपाए थापि उथापि । स्रिसटि उपाई जोती तू जाति । सबदु वीचारि मिलणु नही भ्राति ।।७।। सूतकु अगनि भखै जगु खाइ । सूतकु जलि थलि सभ ही थाइ । नानक सूतकि जनमि मरीजै । गुरपरसादी हरि रसु पीजै ।। ८ ।। ४ ।।

एक (व्यक्ति) मरता है, उसके सगे-सम्बन्धी मिलकर रोते हैं । ऐसे (रोदन-आलाप) करनेवाले परमात्मा की दृष्टि में प्रतिष्ठा खो बैठते हैं । लेकिन जो मनुष्य गुरु के शब्द में जुड़कर मोह का मैल मन से धो लेते हैं, उनकी अहंभावना दूर हो जाती है, वे प्रभु को सर्वव्यापक समझकर स्थिरचित्त रहते हैं ।। १ ।। हे सम्पूर्ण जगत के कर्तार प्रभु ! हर एक जीव के सिर पर तुम आप ही हो । न कोई मरता है और न कोई (मृत को) 'हाय, हाय' कहकर रोता है, अर्थात् नष्ट होनेवाला और रोनेवाला परमात्मा ही है ।। १ ।। रहाउ ।। यदि कोई मृत व्यक्ति को रोता है, वह (असल में अपना) दुख प्रकट करता है; वही रोता है, जिस पर विपत्ति आ जाती है । पर जिस जीव पर (मृत्यु की घटना) घटित होती है, वह प्रभु की यह रज़ा समझ लेता है कि वही कुछ हो रहा है, जो कर्तार आप करता है ।। २ ।। जीने की लालसा से मन का मर जाना अर्थात् निर्लिप्त होना (संसार-सागर से) पार होने के लिए, मानो, नाव है । यह उच्च आत्मिक अवस्था जगत के मालिक-प्रभु की शरण लेने से प्राप्त होती है, इसलिए मैं गुरु के चरणों

पर वलिहारी हूँ। गुरु, मानो जहाज़ है, गुरु के शब्द में जुड़कर भवसागर से पार उतरा जा सकता है ।। ३ ।। परमात्मा को कोई भय स्पर्श नहीं कर सकता, वह आप निरन्तर हरेक के भीतर अपनी ज्योति का प्रकाश कर रहा है, लेकिन उसके नाम से ख़ाली होने के कारण जगत में कहीं सूतक है, कहीं छूत है। दुर्बुद्धि के कारण जगत आत्मिक मौत मर रहा है, (इस बारे में) क्या कह-कहकर कोई रोवे ? परमात्मा की भक्ति के बिना, प्रभु की गुणस्तुति सुने बिना, जीव जन्म-मरण के चक्र में पड़ रहे हैं ।। ४ ।। अहंत्व से मरे हुए को सचमुच उसके (पहले) मित्र माया के तीन गुण नित्य रोते हैं (कि हमारा साथ छोड़ गया है), क्योंकि वह दुख-सुख त्यागकर स्थिर अवस्था में सचेत हो गया है और उसने अपना मन और तन परमात्मा की प्रीति पर न्यौछावर कर दिया है ।। ५ ।। सबके भीतर एक परमात्मा बस रहा है, वह अनेक असंख्य रूपों में दिखाई दे रहा है, (लेकिन जीवों ने उसे भुलाकर) दूसरे धर्म-कर्म रच लिये हैं। परमात्मा के भय-सम्मान में रहे बिना, प्रभु की भक्ति के बिना, जीवों का मनुष्य-जन्म व्यर्थ जाता है। जो मिलकर हरि के गुण गाते हैं, वे मनुष्य-जन्म का मनोरथ प्राप्त कर लेते हैं ।। ६ ।। किसी जीव की मृत्यु में मानो परमात्मा ही मरता है, उस जीव को मारता भी वह आप ही है। प्रभु आप ही पैदा करता है, पैदा करके आप ही नाश करता है। हे ज्योतिरूप प्रभु ! तुमने आप ही सृष्टि पैदा की है, तुमने आप ही अनेक जातियाँ पैदा कर दी हैं। परमात्मा की गुणस्तुति की वाणी को विचारकर जीव का उससे मिलाप हो जाता है, जीव को किसी भी प्रकार की अर्थात् सूतक आदि की दुबिधा नहीं रहती ।। ७ ।। (सूतक का भ्रम कहाँ-कहाँ किया जायगा) आग में भी सूतक है, जो भड़कती है और जगत को भस्म करती है। सूतक पानी में भी है, धरती में है, सर्वत्र है (क्योंकि जीव सर्वत्र जन्मते-मरते हैं)। हे नानक ! सूतक (के भ्रम) में पड़कर संसार जन्म-मरण के चक्र में पड़ा हुआ है, जबकि उसे गुरु-कृपा द्वारा परमात्मा के नाम का अमृत-रस पान करना चाहिए ।। ८ ।। ४ ।।

।। रागु आसा महला १ ।। आपु वीचारै सु परखे हीरा । एक द्रिसटि तारे गुर पूरा । गुरु मानै मन ते मनु धीरा ।। १ ।। ऐसा साहु सराफी करै । साची नदरि एक लिव तरै ।। १ ।। रहाउ ।। पूंजी नामु निरंजन सारु । निरमलु साचि रता पैकारु । सिफति सहज घरि गुरु करतारु ।। २ ।। आसा मनसा सबदि जलाए । राम नराइणु कहै कहाए । गुर ते वाट महलु घरु पाए ।। ३ ।। कंचन काइआ जोति अनूपु । त्रिभवण देवा सगल सरूपु । मै सो धनु पलै साचु अखूटु ।। ४ ।। पंच तीनि

नव चारि समावै । धरणि गगनु कल धारि रहावै । बाहरि जातउ उलटि परावै ॥ ५ ॥ मूरखु होइ न आखी सूझै । जिहवा रसु नही कहिआ बूझै । बिखु का माता जग सिउ लूझै ॥ ६ ॥ ऊतम संगति ऊतमु होवै । गुण कउ धावै अवगण धोवै । बिनु गुर सेवे सहजु न होवै ॥ ७ ॥ हीरा नामु जवेहर लालु । मनु मोती है तिस का मालु । नानक परखै नदरि निहालु ॥ ८ ॥ ५ ॥

जिस मनुष्य को पूर्णगुरु एक दृष्टि से पार उतार देता है, जो मनुष्य सच्चे मन से गुरु पर श्रद्धा करता है; उसका मन चंचल नहीं होता, वह अपने आप को (पहचानता) विचारता है और परमात्मा के श्रेष्ठ नाम की क़ीमत पहचानता है ॥ १ ॥ गुरु ऐसा सर्राफ़ है और ऐसा पारखी है कि (जीवों को तुरन्त पकड़ लेता है, और) उसकी अचूक कृपादृष्टि से जीव एक परमात्मा में सुरति जोड़कर पार उतर जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य निरंजन-प्रभु के श्रेष्ठ नाम को अपनी राशि-पूँजी बनाता है, जो सत्यस्वरूप प्रभु के नाम-(रंग) में रँगा रहता है, वह सदाचारी हो जाता है, वह पूर्ण पारखी बन जाता है और गुणस्तुति के द्वारा वह गुरु कर्तार को अपने स्थिर हृदय-घर में बसाता है ॥ २ ॥ जो मनुष्य गुरु से (ज़िन्दगी का सही) रास्ता प्राप्त कर लेता है, परमात्मा का (महल) घर प्राप्त कर लेता है, वह गुरु-ज्ञान के द्वारा अपने भीतर से माया-सम्बन्धी आकांक्षाओं को जला देता है, वह आप परमात्मा का भजन करता है और दूसरों को इस ओर प्रेरित करता है ॥ ३ ॥ जो परमात्मा शुद्ध सोने जैसी पवित्रता वाला है, जो केवल प्रकाश ही प्रकाश है, जो अप्रतिम है, जो त्रिभुवन का स्वामी है, यह सारा आकार जिसका स्वरूप है उस परमात्मा का सत्य और अक्षुण्ण नाम-धन मुझे (गुरु-सर्राफ़) से मिला है ॥ ४ ॥ जो परमात्मा पाँचों तत्वों, माया के तीनों गुणों, नौ खण्डों और चार दिशाओं में व्यापक है, जो पृथ्वी और आकाश को अपनी सत्ता के सहारे टिकाए रखता है; वह गुरु-सर्राफ़ मनुष्य के बाहर दिखते हुए आकार की ओर दौड़ते मन को उस परमात्मा की ओर लौटाता है ॥५॥ वह मनुष्य मूर्ख है, जिसे आँखों से प्रभु नहीं दिखाई देता, जिसकी जिह्वा में नाम-रस नहीं आया, जो गुरु के बतलाए उपदेश को नहीं समझता। वह मनुष्य विषैली माया में मस्त होकर जगत के साथ झगड़ा करता है ॥ ६ ॥ गुरु की श्रेष्ठ संगति के द्वारा मनुष्य श्रेष्ठ जीवन वाला बन जाता है, आत्मिक गुणों की प्राप्ति के लिए भाग-दौड़ करता है और अवगुण धो देता है। (बात विश्वसनीय है कि) गुरु द्वारा बतलाई सेवा किये बिना स्थिर आत्मिक

अवस्था नहीं मिलती ।। ७ ।। हे नानक ! गुरु-सर्राफ़ जिस मनुष्य को कृपादृष्टि से देखता है, वह धन्य-धन्य हो जाता है, मोती (जैसा पवित्र) मन, परमात्मा का नाम हीरा, जवाहर और लाल उस मनुष्य की राशि-पूंजी बन जाता है ।। ८ ।। ५ ।।

।। आसा महला १ ।। गुरमुखि गिआनु धिआनु मनि मानु। गुरमुखि महली महलु पछानु । गुरमुखि सुरति सबदु नीसानु ।। १ ।। ऐसे प्रेम भगति वीचारी । गुरमुखि साचा नामु मुरारी ।। १ ।। रहाउ ।। अहिनिसि निरमलु थानि सु थानु। तीन भवन निहकेवल गिआनु । साचे गुर ते हुकमु पछानु ।। २ ।। साचा हरखु नाही तिसु सोगु । अंम्रितु गिआनु महा रसु भोगु । पंच समाई सुखी सभु लोगु ।। ३ ।। सगली जोति तेरा सभु कोई । आपे जोड़ि विछोड़े सोई । आपे करता करे सु होई ।। ४ ।। ढाहि उसारे हुकमि समावै । हुकमो वरतै जो तिसु भावै । गुर बिनु पूरा कोइ न पावै ।। ५ ।। बालक बिरधि न सुरति परानि । भरि जोबनि बूडै अभिमानि । बिनु नावै किआ लहसि निदानि ।। ६ ।। जिस का अनु धनु सहजि न जाना । भरमि भुलाना फिरि पछुताना । गलि फाही बउरा बउराना ।। ७ ।। बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे । सतिगुरि राखे से वडभागे । नानक गुर की चरणी लागे ।। ८ ।। ६ ।।

(हे भाई ! तू) गुरु के सम्मुख होकर अपने मन में परमात्मा से गहरा मेल और परमात्मा में जुड़ी सुरति (का आनन्द) प्राप्त कर । गुरु का शरणागत हो, तू अपने भीतर प्रभु का ठिकाना पहचान । गुरु के सम्मुख रहकर तू गुरु के शब्द को अपने मस्तिष्क में टिका, (यही तेरे लिए) चुंगी है ।। १ ।। गुरु के सम्मुख रहनेवाले मनुष्य को परमात्मा का सत्य-नाम प्राप्त हो जाता है, और इस प्रकार प्रभु-चरणों से प्रेम और परमात्मा की भक्ति करके पवित्र आचरण का मालिक बन जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। (जो मनुष्य गुरु के सम्मुख रहता है, वह) दिन-रात अपने हृदय-स्थान में परमात्मा का पवित्र एवं श्रेष्ठ डेरा बनाए रखता है, तीनों भवनों में व्यापक और वासनारहित प्रभु के साथ उसका गहरा सम्बन्ध हो जाता है । (हे भाई !) तू भी अविस्मरणीय गुरु से परमात्मा की रज़ा को समझ ।।२।। (गुरु के शरणागत मनुष्य के) भीतर स्थिर आनन्द बना रहता है, उसे कभी कोई चिन्ता स्पर्श नहीं करती; परमात्मा का आत्मिक जीवन देनेवाला श्रेष्ठ रस वाला नाम और परमात्मा के साथ मेल-मिलाप उस मनुष्य का

आत्मिक भोजन बन जाता है। (यदि गुरु की शरण लेकर) जगत कामादिक पाँचों तत्वों को समाप्त कर दे, तो सारा जगत सुखी हो जाए ॥ ३ ॥ हे प्रभु! सारी सृष्टि में तेरी ही ज्योति है। इसलिए (गुरमुख को विश्वास हो जाता है कि) परमात्मा आप ही जीवों के संयोग बनाता है और आप ही विछोह करा देता है। जो कुछ कर्तार आप करता है, वही होता है ॥ ४ ॥ (गुरमुख के विश्वास अनुसार) परमात्मा आप ही सृष्टि को गिराकर, आप ही निर्मित करता है; उसके हुक्म अनुसार जगत दोबारा उसमें लीन हो जाता है। जो उसे अच्छा लगता है, उसके अनुसार उसका हुक्म चलता है। गुरु का शरणागत हुए बिना कोई जीव पूर्णपरमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता ॥ ५ ॥ जिस प्राणी की सुरति, न बाल अवस्था में, न वृद्ध अवस्था में अर्थात् कभी भी परमात्मा में नहीं जुड़ती, (बल्कि) पूर्ण यौवनावस्था में वह (यौवन के) अहंकार में डूबा रहता है; वह परमात्मा के नाम से ख़ाली रहकर आख़िर क्या प्राप्त करेगा? ॥ ६ ॥ जिस परमात्मा का दिया अन्न और धन जीव इस्तेमाल करता रहता है, यदि स्थिर अवस्था में टिककर उसके साथ कभी भी मेल नहीं करता और माया की दुविधा में जीवन मार्ग से भटका रहता है, तो आख़िर पछताता है। उसके गले में मोह की फाँसी पड़ी रहती है, मोह में ही वह सदा पागल हुआ फिरता है ॥ ७ ॥ हे नानक! जो मनुष्य गुरु के चरण छूते हैं, वे जगत को (मोह में) डूबता देखकर डरकर भाग जाते हैं, वे भाग्यशाली हैं, सतिगुरु ने उन्हें (मोह की क़ैद से) बचा लिया है ॥८॥६॥

॥ आसा महला १ ॥ गावहि गीते चीति अनीते। राग सुणाइ कहावहि बीते। बिनु नावै मनि झूठु अनीते ॥ १ ॥ कहा चलहु मन रहहु घरे। गुरमुखि राम नामि त्रिपतासे खोजत। पावहु सहजि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा। लबु लोभु अहंकारु सु पीरा। राम नाम बिनु किउ मनु धीरा ॥ २ ॥ अंतरि नावणु साचु पछाणै। अंतर की गति गुरमुखि जाणै। साच सबद बिनु महलु न पछाणै ॥ ३ ॥ निरंकार महि आकारु समावै। अकल कला सचु साचि टिकावै। सो नरु गरभ जोनि नही आवै ॥ ४ ॥ जहां नामु मिलै तह जाउ। गुर परसादी करम कमाउ। नामे राता हरिगुण गाउ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते आपु पछाता। अंम्रित नामु वसिआ सुखदाता। अनदिनु बाणी नामे राता ॥ ६ ॥ मेरा प्रभु लाए ता को लागै। हउमै मारे सबदे जागै। ऐथै ओथै सदा सुखु

आगै ॥ ७ ॥ मनु चंचलु बिधि नाही जाणै । मनमुखि मैला सबदु न पछाणै । गुरमुखि निरमलु नामु वखाणै ॥ ८ ॥ हरि जीउ आगै करी अरदासि । साधू जन संगति होइ निवासु । किलविख दुख काटे हरिनामु प्रगासु ॥ ९ ॥ करि बीचारु आचारु पराता । सतिगुर बचनी एको जाता । नानक रामनामि मनु राता ॥ १० ॥ ७ ॥

जो मनुष्य (दूसरों को ही सुनाने के लिए भक्ति के) गीत गाते हैं, लेकिन उनके हृदय में नीच विचार (मौजूद) हैं; जो दूसरों को ईश्वर-प्रेम सुनाकर (यह) कहलवाते हैं कि हम राग-द्वेष से बचे हैं, परमात्मा के नाम-स्मरण के बिना उनके मन में झूठ (बसता) है, उनके मन में कुकर्म (टिके हुए) हैं ॥ १ ॥ हे मन ! तू (कुकर्मों में) क्यों भटक रहा है ? अपने भीतर ही टिका रह । जो मनुष्य गुरु के सम्मुख होते हैं, वे परमात्मा के नाम में जुड़कर (विकारों से) हट जाते हैं । हे मन ! तू भी गुरु के माध्यम से खोज करके सहज अवस्था में टिककर परमात्मा को प्राप्त कर लेगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस मनुष्य के मन और देह में काम, क्रोध, अहंकार, मोह और क्लेश हैं, परमात्मा का नाम स्मरण किए बिना उसका मन (इनका मुक़ाबला करने का) कैसे साहस कर सकता है ? ॥ २ ॥ जो मनुष्य गुरु की शरण लेकर अपनी आन्तरिक आत्मिक दशा समझ लेता है, जो मनुष्य अन्तर्मन में स्थित सत्यस्वरूप प्रभु से मेल कर लेता है, वह अपनी आत्मा में (तीर्थ-) स्नान कर रहा है । (लेकिन गुरु के) सच्चे शब्द के बिना परमात्मा का ठिकाना कोई मनुष्य पहचान नहीं सकता ॥ ३ ॥ जो मनुष्य गोचर संसार को अगोचर प्रभु में लीन कर लेता है (अर्थात् अपनी वृत्ति को बाहर से रोककर भीतर ले आता है); जिस प्रभु की सत्ता गणना से परे है, उस सत्यस्वरूप प्रभु को जो मनुष्य स्मरण के द्वारा अपने हृदय में टिकाता है, वह मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता ॥ ४ ॥ (इसलिए) जहाँ से मुझे परमात्मा का नाम मिल जाए, मैं वहीं जाऊँ; गुरु की कृपा से मैं वही काम करूँ (जिससे परमात्मा का नाम प्राप्त हो), और परमात्मा के नाम-रंग में रँगा हुआ मैं परमात्मा के गुण गाता रहूँ ॥ ५ ॥ गुरु द्वारा बतलाई सेवा के द्वारा जिस मनुष्य ने अपना भीतरी आत्मिक जीवन पहचान लिया, उसके मन में आत्मिक जीवन देनेवाला, आत्मिक आनन्द देनेवाला हरि-नाम बस गया । वह मनुष्य प्रभु की गुणस्तुति की वाणी के द्वारा प्रत्येक दिन नाम-रंग में रँगा रहता है ॥ ६ ॥ जीव यह सब प्रभु-कृपा द्वारा ही सम्भव कर पाता है । जब प्यारा प्रभु किसी जीव को अपने नाम में लगाता है, तब ही गुरु-शब्द के द्वारा अहंकार को मारकर (सदा) सचेत रहता है । इसके पश्चात् लोक-परलोक में सदा आत्मिक आनन्द उसके

सामने मौजूद रहता है ॥ ७ ॥ लेकिन चंचल मन अहंत्वहीन होने का यह ढंग नहीं जान सकता, क्योंकि मनमुख का मन मैला रहता है और वह गुरु के शब्द से तादात्म्य नहीं कर सकता। गुरु के बतलाए मार्ग पर चलनेवाला मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करता है और पवित्र जीवन वाला होता है ॥ ८ ॥ मैं प्रभुजी के समक्ष प्रार्थना करता हूँ कि गुरमुखों की संगति में मेरा निवास बना रहे, मेरे अन्दर परमात्मा का नाम चमक पड़े और वह नाम मेरे पाप-क्लेश काट दे ॥ ९ ॥ हे नानक ! जो मनुष्य गुरु के शब्द को मानकर एक परमात्मा के साथ मेल जोड़ता है, वह गुरु की वाणी को विचार कर शुद्ध आचरण के रहस्य को समझ लेता है। उसका मन परमात्मा के नाम-रंग में रँगा रहता है ॥ १० ॥ ७ ॥

॥ आसा महला १ ॥ मनु मैगलु साकतु देवाना । बनखंडि माइआ मोहि हैराना । इत उत जाहि काल के चापे । गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे ॥ १ ॥ बिनु गुर सबदै मनु नही ठउरा । सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी । बिनु समझे जम का दुखु सहसी । आपे बखसे सतिगुरु मेलै । कालु कंटकु मारे सचु पेलै ॥ २ ॥ इहु मनु करमा इहु मनु धरमा । इहु मनु पंच ततु ते जनमा । साकतु लोभी इहु मनु मूड़ा । गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा ॥ ३ ॥ गुरमुखि मनु असथाने सोई । गुरमुखि त्रिभवणि सोझी होई । इहु मनु जोगी भोगी तपु तापै । गुरमुखि चीन्है हरि प्रभु आपै ॥ ४ ॥ मनु बैरागी हउमै तिआगी । घटि घटि मनसा दुबिधा लागी । राम रसाइणु गुरमुखि चाखै । दरि घरि महली हरि पति राखै ॥ ५ ॥ इहु मनु राजा सूर संग्रामि । इहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि । मारे पंच अपुनै वसि कीए । हउमै ग्रासि इकतु थाइ कीए ॥ ६ ॥ गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे । गुरमुखि इहु मनु भगती जागे । अनहद सुणि मानिआ सबदु वीचारी । आतमु चीन्हि भए निरंकारी ॥ ७ ॥ इहु मनु निरमलु दरि घरि सोई । गुरमुखि भगति भाउ धुनि होई । अहिनिसि हरि जसु गुरपरसादि । घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि ॥ ८ ॥ राम रसाइणि इहु मनु माता । सरब रसाइणु गुरमुखि जाता ।

भगति हेतु गुर चरण निवासा । नानक हरि जन के दासनि दासा ॥ ६ ॥ ८ ॥

(गुरु-शब्द से ख़ाली रहकर) मोहग्रस्त मन पागल हाथी है, माया-मोह के कारण (संसार-)जंगल में भटकता फिरता है । (माया-मोह के कारण) जिन्हें आत्मिक मौत दबा लेती है, वे इधर-उधर भटकते फिरते हैं । जो मनुष्य गुरु के सम्मुख होता है, वह खोजकर अपने भीतर परमात्मा का ठिकाना प्राप्त कर लेता है ॥ १ ॥ (माया-मोह में द्विधाग्रस्त हो) यह मन अपनी सूझ गवाँ लेता है, (हे मन !) परमात्मा के निर्मल नाम का सदा स्मरण कर और अपने माया-मोह, अहंकार का त्याग कर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फिर कहो, यह भटके बिना कैसे रह सकता है ? अपने अस्तित्व की सूझ के बिना यह मन आत्मिक मौत का दुख सहेगा ही । जिस मनुष्य पर परमात्मा आप कृपा करता है, उसे गुरु मिल जाता है, वह दुखदायक आत्मिक मौत को सहन कर लेता है, सत्यस्वरूप प्रभु (उसे आत्मिक जीवन की ओर) प्रेरित करता है ॥ २ ॥ (माया-मोह में हैरान हुआ) यह मन दूसरी-दूसरी धार्मिक रस्में करता फिरता है और जन्म-मरण के चक्र में फिरता रहता है । माया-ग्रस्त यह मन लालची बन जाता है, मूर्ख हो जाता है । जो मनुष्य गुरु के सम्मुख होकर प्रभु का नाम जपता है, उसका मन सुन्दर (बन जाता) है ॥ ३ ॥ गुरु के सम्मुख हुए मनुष्य का मन परमात्मा को (अपने भीतर) स्थान देता है, उसे उस प्रभु की सूझ हो जाती है, जो तीनों भवनों में व्यापक है । (मोहवश) यह मन कभी योग-साधना करता है, कभी माया के भोग भोगता है और तपों से शरीर को कष्ट देता है; लेकिन कहीं भी उसे चैन नहीं मिलती । जो मनुष्य गुरु के सम्मुख होता है, वह हरि-परमात्मा को अपने भीतर खोज लेता है ॥ ४ ॥ (माया-मोह के कारण हैरान हुआ) यह मन कभी अहंकार त्यागकर वैरागी बन जाता है, कभी हर एक शरीर में (माया-ग्रस्त मन को) माया से सम्बद्ध कल्पनाएँ और दुबिधाएँ आ घेरती हैं । जो मनुष्य गुरु की शरण लेकर रसों का घर नाम-रस चखता है, उसे भीतर-बाहर महल का मालिक-प्रभु (दिखता है), जो उसकी प्रतिष्ठा बचाता है ॥ ५ ॥ यह मन कभी रणभूमि में राजा तथा शूरवीर बना पड़ा है । लेकिन जब यह मन गुरु की शरण लेकर प्रभु के नाम में जुड़ता है, तो (माया के आक्रमणों से) निर्भय हो जाता है, कामादिक पाँचों वैरियों को मार देता है, अपने वश में कर लेता है, अहंकार को समाप्त कर इन सबको एक स्थान में (क़ाबू) कर लेता है ॥ ६ ॥ गुरु के सम्मुख हुआ यह मन राग (द्वेष) तथा दूसरे आस्वादनों को त्याग देता है । गुरु की शरण लेकर यह मन परमात्मा की भक्ति में जुड़कर सचेत हो जाता है । जो मनुष्य गुरु के शब्द को अपने

चिन्तन-मण्डल में टिकाता है, वह निरन्तर (हो रहे) गीत (नाद) को सुन-सुनकर (उसमें) रम जाता है और अपने आप को खोजकर परमात्म-रूप हो जाता है ॥ ७ ॥ यह मन गुरु के सामीप्य से पवित्र हो जाता है, इसे बाहर-भीतर वह परमात्मा ही दिखता है। गुरु के सम्मुख होकर (इस मन के भीतर) भक्ति की लगन लग जाती है, प्रभु-प्रेम (जाग्रत हो जाता है)। गुरु-कृपा से यह मन दिन-रात परमात्मा की गुणस्तुति करता है। जो परमात्मा समस्त सृष्टि का आदि है, जो परमात्मा युगों के आदिमकाल से विद्यमान है; वह इस मन को हरेक शरीर में बसता दिखाई दे जाता है ॥ ८ ॥ गुरु के सम्मुख होकर यह मन रसों के घर नाम-रस में मस्त हो जाता है और सब रसों के स्रोत प्रभु को पहचान लेता है। जब गुरु के चरणों में मन जुड़ जाता है, तो (इसके भीतर परमात्मा की) भक्ति का प्रेम (जाग्रत हो जाता है)। हे नानक ! तब यह मन गुरमुखों के सेवकों का सेवक बन जाता है ॥ ९ ॥ ८ ॥

॥ आसा महला १ ॥ तनु बिनसै धनु का को कहीऐ। बिनु गुर राम नामु कत लहीऐ। राम नाम धनु संगि सखाई। अहिनिसि निरमलु हरि लिवलाई ॥ १ ॥ राम नाम बिनु कवनु हमारा। सुख दुख सम करि नामु न छोडउ आपे बखसि मिलावणहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक कामनी हेतु गवारा। दुबिधा लागे नामु विसारा। जिसु तूं बखसहि नामु जपाइ। दूतु न लागि सकै गुन गाइ ॥ २ ॥ हरि गुरु दाता राम गुपाला। जिउ भावै तिउ राखु दइआला। गुरमुखि रामु मेरै मनि भाइआ। रोग मिटे दुखु ठाकि रहाइआ ॥ ३ ॥ अवरु न अउखधु तंत न मंता। हरि हरि सिमरणु किलविख हंता। तूं आपि भुलावहि नामु विसारि। तूं आपे राखहि किरपा धारि ॥ ४ ॥ रोगु भरमु भेदु मनि दूजा। गुर बिनु भरमि जपहि जपु दूजा। आदि पुरख गुर दरस न देखहि। विणु गुर सबदै जनमु कि लेखहि ॥ ५ ॥ देखि अचरजु रहे बिसमादि। घटि घटि सुर नर सहज समाधि। भरिपुरि धारि रहे मन माही। तुम समसरि अवरु को नाही ॥ ६ ॥ जा की भगति हेतु मुखि नामु। संत भगत की संगति रामु। बंधन तोरे सहजि धिआनु। छूटै गुरमुखि हरि गुर गिआनु ॥ ७ ॥ ना जमदूत दूखु तिसु लागै। जो जनु रामनामि लिव जागै। भगति वछलु भगता हरि संगि। नानक मुकति भए हरि रंगि ॥ ८ ॥ ९ ॥

जब मनुष्य का शरीर नष्ट हो जाता है, तब उसके द्वारा संचित धन उसका नहीं कहा जा सकता। (परमात्मा का नाम-धन ही शाश्वत होने के कारण सच्चा धन है, लेकिन) परमात्मा का नाम-धन गुरु के अतिरिक्त किसी दूसरे से नहीं मिल सकता। परमात्मा का नाम-धन ही मनुष्य के साथ असली साथी है। जो मनुष्य दिन-रात अपनी सुरति प्रभु (-चरणों) में जोड़ता है, उसका जीवन पवित्र हो जाता है ॥ १ ॥ परमात्मा के नाम के अतिरिक्त (जीवों का) दूसरा कौन (शाश्वत मित्र) हो सकता है ? उसे सुख तथा दुख एक जैसा समझकर मैं (कभी) उसका साथ नहीं छोड़ूँगा। (मुझे निश्चय है कि) परमात्मा आप ही कृपा करके (अपने चरणों में जोड़नेवाला है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वे मूर्ख हैं, जिन्होंने परमात्मा का नाम भुला दिया है, जो सोने तथा स्त्री के साथ मोह में डूबे हैं और दुबिधा में पड़े हुए हैं। लेकिन इस सम्बन्ध में जीव विवश है क्योंकि जिस जीव को वह प्रभु अपना नाम जपाकर (नाम की देन) देता है, वह उसके गुण गाता है, यमदूत उसके निकट नहीं जा सकता ॥ २ ॥ हे हरि ! हे गोपाल ! तुम सबसे बड़े दाता हो। जैसे तुझे अच्छा लगे वैसे, हे दयालु ! मुझे (कनक-कामिनी) से बचा लो। गुरु की शरण लेकर परमात्मा (का नाम) मेरे मन में प्यारा लगा है, मेरे (आत्मिक) रोग मिट गए हैं और (आत्मिक मौत वाला) दुख मैंने रोक लिया है ॥ ३ ॥ (प्रभु-नाम के अतिरिक्त) कोई दूसरी औषधि नहीं है, कोई मन्त्र नहीं है, परमात्मा का नाम-स्मरण ही सारे पापों का नाशक है। लेकिन, हे प्रभु ! हम जीव क्या कर सकते हैं ? हमारे मन से अपना नाम विस्मृत करके आप ही हमें कुमार्गगामी बनाते हो और तुम आप ही कृपा करके समस्त विकारों से बचाते हो ॥ ४ ॥ गुरु की शरण लिये बिना जो मनुष्य कुमार्गगामी होकर दूसरा जप जपते हैं, उनके मन में विकारों का रोग है, दुबिधा है, प्रभु से दूरी है, मेरा-तेरा है। जो मनुष्य कभी गुरु का दर्शन नहीं करते, सबके आदि सर्वव्यापक प्रभु का दर्शन नहीं करते, गुरु के शब्द में जुड़े बिना उनका जन्म किसी भी लेखे में नहीं रह जाता ॥ ५ ॥ (हे प्रभु !) तुझ अचरजकारी रूप को देखकर हम जीव हैरान हुए हैं। तुम हरेक शरीर में मौजूद हो, देवताओं और मनुष्यों में स्वतः ही स्थिर होकर टिके हुए हो। तुम हरेक जीव के मन में परिव्याप्त हो और हर एक जीव को सहारा दे रहे हो, तुम अप्रतिम हो ॥ ६ ॥ परमात्मा उन सन्तों, भक्तों की भक्ति में मिलता है, जिनके मुँह में (सदा उस प्रभु का) नाम टिका रहता है। उन सन्तजनों के हृदय में प्रभु की भक्ति के लिए प्रेम है, खिंचाव है। स्थिर अवस्था में (प्रभु का) ध्यान करके (मोह-माया के) बन्धन तोड़ लेते हैं। जो मनुष्य गुरु के सम्मुख होता है, जिसके भीतर गुरु का दिया हुआ ईश्वरीय ज्ञान प्रकट होता है; वह भी इन बन्धनों से

मुक्त हो जाता है ॥ ७ ॥ जो मनुष्य परमात्मा के नाम में लौ लगाकर 'कनक-कामिनी' की ओर से सचेत हो जाता है, उसे यमदूतों का दुख स्पर्श नहीं कर सकता। भक्ति के साथ प्रेम करनेवाला परमात्मा अपने भक्तों के साथ-साथ रहता है। हे नानक! प्रभु के भक्त प्रभु के प्रेम-रंग में (रँगकर बन्धनों से) आज़ाद हो जाते हैं ॥ ८ ॥ ९ ॥

॥ आसा महला १ इक तुकी ॥ गुरु सेवे सो ठाकुर जानै। दूखु मिटै सचु सबदि पछानै ॥ १ ॥ रामु जपहु मेरी सखी सखैनी। सतिगुरु सेवि देखहु प्रभु नैनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बंधन मात पिता संसारि। बंधन सुत कंनिआ अरु नारि ॥ २ ॥ बंधन करम धरम हउ कीआ। बंधन पुतु कलतु मनि बीआ ॥ ३ ॥ बंधन किरखी करहि किरसान। हउमै डंनु सहै राजा मंगै दान ॥ ४ ॥ बंधन सउदा अण वीचारी। तिपति नाही माइआ मोह पसारी ॥ ५ ॥ बंधन साह संचहि धनु जाइ। बिनु हरि भगति न पवई थाइ ॥ ६ ॥ बंधन बेदु बादु अहंकार। बंधनि बिनसै मोह विकार ॥ ७ ॥ नानक राम नाम सरणाई। सतिगुरि राखे बंधु न पाई ॥ ८ ॥ १० ॥

जो मनुष्य गुरु के कहे अनुसार परमात्मा का स्मरण करता है, वह परमात्मा को (सर्वत्र व्यापक) जान लेता है, वह मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु को गुरु शब्द के द्वारा (सर्वत्र) पहचान लेता है, और (इस प्रकार उसका) मोह-जन्य दुख मिट जाता है ॥ १ ॥ हे मेरी सहेलियो! परमात्मा का नाम जपो, गुरु द्वारा बतलाई सेवा करके तुम (सर्वत्र) परमात्मा का दर्शन करोगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (नाम-स्मरण के बिना) संसार में माँ, बाप, पुत्र, कन्या और पत्नी— ये बन्धनों का कारण बन जाते हैं ॥ २ ॥ (स्मरण के बिना) धार्मिक रीति बन्धन बन जाती हैं, (मनुष्य अभिमान करता है कि यह सब कुछ) 'मैंने किया है, मैंने किया है'। यदि मन में कोई अन्य प्रेम है, अथवा पुत्र, पत्नी (का रिश्ता भी) बन्धनों का (मूल हो जाता है) ॥३॥ किसान खेती-बाड़ी करते हैं, लेकिन स्मरण के बिना खेती-बाड़ी बन्धन बन जाती है। राजा (किसानों से) लगान लेता है। (पर परमात्मा के नाम के बिना) राजा अहंकार की सज़ा भुगतता है ॥ ४ ॥ (व्यापारी) व्यापार करता है, प्रभु का नाम स्मरण किए बिना वह व्यापार बन्धनों का मूल है, क्योंकि वह माया-मोह के विस्तार में (लीन होकर माया से) तृप्त नहीं होता ॥ ५ ॥ सौदागर धन एकत्रित करते हैं, लेकिन धन (आख़िरकार) साथ छोड़ जाता है और (नाम-स्मरण के बिना) बन्धन बन

जाता है। परमात्मा की भक्ति के बिना (उनका कोई उद्यम परमात्मा की दृष्टि में) स्वीकृत नहीं होता ॥ ६ ॥ (स्मरण के बिना) वेद-पाठ और वेद-रचना भी अहंकार का मूल है, बन्धनों का मूल है। मोह और विकारों के बन्धनों में मनुष्य की आत्मिक मौत हो जाती है ॥ ७ ॥ हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा के नाम का आश्रय लेते हैं, सतिगुरु द्वारा उन्हें मोह के बन्धनों से सुरक्षित समझो, उन्हें कोई बन्धन नहीं होता ॥ ८ ॥ १० ॥

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु । से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि । महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥ १ ॥ आदेसु बाबा आदेसु । आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि । हीडोली चड़ि आईआ दंद खंड कीते रासि । उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥ २ ॥ इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ीआ । गरी छुहारे खांदीआ माणन्हि सेजड़ीआ । तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥ ३ ॥ धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ । दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ । जे तिसु भावै दे वडिआई जे भावै देइ सजाइ ॥ ४ ॥ अगो दे जे चेतीऐ तां काइतु मिलै सजाइ । साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ । बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥ ५ ॥ इकना वखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ । चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ । रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥ ६ ॥ इकि घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख । इकन्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख । जो तिसु भावै सो थीऐ नानक किआ मानुख ॥ ७ ॥ ११ ॥

जिन (सुन्दर स्त्रियों) के सिर पर माँग में सिन्दूर तथा काले केशों की पट्टियाँ सुशोभित होती आ रही थीं, (उनके) मुँह पर मिट्टी बरस रही है। जो पहले अपने महलों में रहती थीं, अब उन्हें उन महलों के निकट भी फटकने नहीं दिया जाता ॥ १ ॥ हे अकालपुरुष ! (तुम्हें) प्रणाम है,

(तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा आश्रय कौन है ?) हे आदिपुरुष ! (तुम्हारा) भेद नहीं पाया जाता। तुम यह इच्छा आप ही करके आप ही देख रहे हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब ये सुन्दरियाँ विवाहित होकर आई थीं, तब उनके पास उनके दूल्हे शोभायमान थे, वे पालकियों में चढ़कर आई थीं, (उनकी बाँहों में) हाथी-दाँत के चूड़े सुशोभित थे। (ससुराल-गृह में आने पर) उन पर शगुनों का जल वार दिया था, पंखे उनके पास (उनके हाथों में) चमक रहे थे ॥ २ ॥ (ससुराल-गृह में आकर) बैठी वे शगुनों का एक-एक लाख रुपया लेती थीं, खड़ी हुई भी उतना ही धन लेती थीं। नारियल-छुहारे खाती थीं और सुन्दर सेजों पर शयन करती थीं। (आज) उनके गले में दुष्टों द्वारा रस्सियाँ डाली हुई हैं, उनके (गले में पड़े) मोतियों के हार टूट रहे हैं ॥ ३ ॥ (उनका) धन और यौवन, जिनका उन सुन्दरियों को बहुत अभिमान था, आज दोनों ही उनके वैरी बने हुए हैं। (बाबर ने) क्रूर सिपाहियों को हुक्म दे दिया है, वे उनकी प्रतिष्ठा गवाँकर उन्हें ले जा रहे हैं। (जीवों के कुछ वश नहीं) यदि परमात्मा को उपयुक्त लगे तो जीवों को आदर-सम्मान देता है, यदि उसकी रज़ा होवे तो सज़ा देता है ॥ ४ ॥ यदि पहले ही (अपने-अपने कर्तव्य को) याद करते रहें, तो ऐसी सज़ा क्यों मिले ? (यहाँ के) हाकिमों ने ऐश-आराम के चाव में अपना कर्तव्य भुला दिया था। (अब, जब) बाबर की आवाज़ आई है, तो कोई पठान शहज़ादा भी रोटी नहीं खा सकता ॥ ५ ॥ (ज़ालिमों के पंजे में आकर) मुसलमानी स्त्रियों के नमाज़ के वक्त छिन गए हैं, हिन्दू स्त्रियों की पूजा का समय जा रहा है। (जो पहले बड़ी ही औपचारिक विधि के साथ पूजा करती थीं, अब) वे न स्नान करके टीके लगा सकती हैं, न ही उनके चौके पवित्र रह गए हैं। (जिन्होंने धन-यौवन के नशे में) कभी राम को स्मरण नहीं किया था, अब उन्हें ख़ुदा, ख़ुदा कहना भी नहीं मिलता ॥ ६ ॥ (बाबर की क़ैद से) बचकर जो विरले मनुष्य अपने-अपने घर आते हैं, वे परस्पर मिलकर कुशल-क्षेम पूछते हैं। उनकी क़िस्मत में यह विपत्ति पूर्व-लिखित थी; वे एक दूसरे के पास बैठकर अपने-अपने दुख रोते हैं। (पर) हे नानक ! मनुष्य बेचारे क्या करने योग्य हैं ? वही कुछ होता है, जो उसे भला लगता है ॥ ७ ॥ ११ ॥

॥ आसा महला १ ॥ कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई। कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई। कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथै दिसहि नाही ॥ १ ॥ इहु जगु तेरा तू गोसाई। एक घड़ी महि थापि उथापे जरु वंडि देवै भांई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहां सु घर दर मंडप महला कहा सु

बंक सराई। कहां सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई। कहा सुपान तंबोली हरमा होईआ छाई माई ॥ २ ॥ इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई। पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई। जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई ॥ ३ ॥ कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ। थान मुकाम जले बिज मंदर मुछि मुछि कुइर रुलाइआ। कोई मुगलु न होआ अंधा किनै न परचा लाइआ ॥ ४ ॥ मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाई। ओन्ही तुपक ताणि चलाई ओन्ही हसति चिड़ाई। जिन्ह की चीरी दरगह पाटी तिन्हा मरणा भाई ॥ ५ ॥ इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी। इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी। जिन्ह के बंके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी ॥ ६ ॥ आपे करे कराए करता किस नो आखि सुणाईऐ। दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किसथै जाइ रूआईऐ। हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥ ७ ॥ १२ ॥

(सैदपुर में पहले रौनक़ थी, पर अब) फ़ौजियों के खेल-तमाशे कहाँ हैं ? घोड़े और तबेले कहाँ हैं ? नगारे और तूतियाँ कहाँ हैं ? पश्मीने के तेग़बन्द कहाँ हैं ? और कहाँ हैं वे (फ़ौजियों की) लाल वर्दियाँ ? कहाँ हैं शीशे और उनमें दृश्यमान मुँह ? (आज) यहाँ (सैदपुर में कहीं) नहीं दिखते ॥ १ ॥ हे प्रभु ! यह जगत तेरा है, तुम इस जगत के मालिक हो। वह जगत बनाकर एक घड़ी में ही तबाह भी कर देता है और धन-दौलत बाँटकर दूसरों को देता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहाँ हैं वे सुन्दर घर, महल-अटारियाँ और सुन्दर सराय ? कहाँ है सुखदायक स्त्री और उसकी सेज, जिसे देखकर नींद उड़ जाती थी ? कहाँ है पान और पान बेचनेवाली औरतें और कहाँ हैं पर्दे में रहनेवाली औरतें ? सब कहीं गुम हो चुकी हैं ॥ २ ॥ जिस धन की ख़ातिर दुनिया दुखी होती है, उसने अधिकांश दुनिया को दुखी किया है। पाप, अन्याय अथवा अत्याचार किये बिना दौलत एकत्रित नहीं हो सकती, और मृत्यु के समय यह साथ नहीं जाती। (पर, जीव के क्या वश ?) परमातमा जिसे आप कुमार्गगामी बनाता है, (पहले उससे उसकी) भलाई (भलमनसाहत) छीन लेता है ॥ ३ ॥ जब पठान हाकिमों ने सुना कि मीर बाबर आक्रमण करने आ रहा है, तो उन्होंने अनेकों ही पीर-पैग़म्बरों को (जादू-टोने के लिए) रोक रखा। (कुछ करने पर भी) पक्के स्थान, पक्के महल (मुग़लों की लगाई आग से)

जलकर (राख) हो गए। उन्होंने पठान शहज़ादियों के टुकड़े-टुकड़े करके मिट्टी में मिला दिया (पीरों के जादू-टोने से) कोई एक मुग़ल भी अन्धा न हुआ, किसी भी पीर ने कोई करामात न दिखाई ॥ ४ ॥ जब मुग़ल और पठानों की लड़ाई हुई, तब लड़ाई के मैदान में तलवार चलाई गई। मुग़लों ने बन्दूकों के निशाने लगा-लगाकर गोलियाँ चलाईं, लेकिन पठानों के हाथों में ही चिड़-चिड़ करके रह गईं। हे भाई! परमात्मा के दरबार से जिनकी उम्र की चिट्ठी फाड़ दी जाती है, उन्हें मरना ही पड़ता है ॥ ५ ॥ क्या हिन्दू औरतें क्या मुसलमान औरतें, क्या भाटों और ठाकुरों की औरतें—कितनी औरतों के बुर्क़े सिर से पैर तक फट गए और कितनी औरतों का श्मसान में ठिकाना हो गया। जिनके सुन्दर पति घर में न आए, उन्होंने (वह विपत्ति की) रात्रि कैसे बिताई होगी ? ॥ ६ ॥ लेकिन यह दर्द-भरी कहानी किसे कहकर सुनाई जाए ? कर्तार आप ही सब कुछ करता है और जीवों से कराता है। हे कर्तार ! दुख हो या सुख, सब तेरी रज़ा अनुसार होता है। तुमसे अलग किसके पास जाकर दुख व्यक्त किया जाय ? हे नानक ? रज़ा का मालिक-प्रभु अपनी रज़ा अनुसार ही जगत का कार्य-व्यापार चला रहा है और सन्तुष्ट हो रहा है। प्रत्येक जीव को लिखा लेख भोगना पड़ता है ॥ ७ ॥ १२ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा काफी महला १ घरु ८ असटपदीआ ॥ जैसे गोइलि गोइली तैसे संसारा। कूड़ु कमावहि आदमी बांधहि घरबारा ॥ १ ॥ जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नीत नीत घर बांधीअहि जे रहणा होई। पिंडु पवै जीउ चलसी जे जाणै कोई ॥२॥ ओही ओही किआ करहु है होसी सोई। तुम रोवहुगे ओस नो तुम्ह कउ कउणु रोई ॥ ३ ॥ धंधा पिटिहु भाईहो तुम्ह कूड़ु कमावहु। ओहु न सुणई कतही तुम्ह लोक सुणावहु ॥ ४ ॥ जिस ते सुता नानका जागाए सोई। जे घरु बूझै आपणा तां नीद न होई ॥ ५ ॥ जे चलदा लै चलिआ किछु संपै नाले। ता धनु संचहु देखि कै बूझहु बीचारे ॥ ६ ॥ वणजु करहु मखसूदु लैहु मत पछोतावहु। अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥७॥ धरमु भूमि सतु बीजु करि ऐसी किरस कमावहु। तां वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ॥ ८ ॥ करमु होवै सतिगुरु मिलै बूझै बीचारा। नामु वखाणै सुणे नामु नामे बिउहारा ॥ ९ ॥

जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई। जो तिसु भावै नानका साई वडिआई ।। १० ।। १३ ।।

जैसे कोई ग्वाला पराये चरागाह में (पशु ले जाए) वैसे ही यह दुनिया की रीति है। जो आदमी (मौत को भुलाकर) पक्के मकान बनाते हैं, वे व्यर्थ उद्यम करते हैं ।। १ ।। (माया-मोह में) सोए हुए जीवो ! सँभलो, सँभलो। (तुम्हारा साथी) जीव वनजारा (सदा के लिए दुनिया से) जा रहा है (इसी प्रकार तुम्हारी बारी आएगी) ।। १ ।। रहाउ ।। सदा टिके रहनेवाले मकान तब ही बनाए जाएँ, यदि यहाँ सदा टिके रहना हो; पर यदि कोई मनुष्य विचार करे तो इसे ज्ञान हो जायगा कि जब आत्मा यहाँ से चली जाती है, तो शरीर भी गिर पड़ता है ।। २ ।। (हे भाई ! किसी की मृत्यु पर) क्यों व्यर्थ हाय, हाय करते हो। सत्य-स्वरूप तो केवल परमात्मा है, जो अब भी है और हमेशा रहेगा। यदि तुम उस मृतक के मरण पर रोते हो, तो तुम्हें भी कोई रोयेगा ।। ३ ।। हे भाई ! तुम व्यर्थ माथा पीटते हो, व्यर्थ काम करते हो। जो मर गया है, वह तो तुम्हारा रोना बिल्कुल नहीं सुनता। तुम केवल लोगों को सुना रहे हो ।। ४ ।। हे नानक ! जिस परमात्मा के हुक्म से जीव सोया हुआ है, वही इसे जगाता है। (प्रभु-कृपा द्वारा) यदि जीव यह समझ ले कि मेरा वास्तविक घर कौन सा है, तो उसे माया-मोह की नींद नहीं लगती ।। ५ ।। हे भाई ! देखभाल करने पर यह समझो, यदि कोई मरनेवाला अपने साथ कुछ ले जाता है, तो तुम भी निश्चिन्त होकर धन जोड़ो ।। ६ ।। (नाम-स्मरण का) ऐसा वाणिज्य-व्यापार करो जिससे जीवन-मनोरथ का लाभ प्राप्त कर सको, नहीं तो पछताना पड़ेगा; इसलिए दुष्कर्म त्यागो और गुण ग्रहण करो। इस प्रकार असली कमाई प्राप्त करो ।। ७ ।। (हे भाई !) धर्म को पृथ्वी बनाओ, उसमें पवित्र आचरण का बीज बोओ। बस ! ऐसी (आत्मिक जीवन को विकसित करनेवाली) खेती-बाड़ी करो। यदि तुम (आत्मिक जीवन का) लाभ प्राप्त करके ले जाओगे तो (चतुर) व्यापारी समझे जाओगे ।। ८ ।। (जिस मनुष्य पर) परमात्मा की कृपा हो, उसे गुरु मिलता है और वही इस विचार को ग्रहण करता है। वह परमात्मा का नाम बोलता, सुनता है और नाम में ही रमण करता है ।। ९ ।। संसार की यह रीति परम्परागत है, कोई ईश्वर के नाम-स्मरण द्वारा लाभ प्राप्त करता है और कोई हानि उठाता है। हे नानक ! परमात्मा को जो भला लगता है (वही होता है), यही उसका बड़प्पन है ।। १० ।। १३ ।।

।।आसा महला १।। चारे कुंडा ढूढीआ को नीम्ही मैडा। जे तुधु भावै साहिबा तू मै हउ तैडा ।। १ ।। दरु बीभा मै

नीम्हि को कै करी सलामु । हिको मैडा तू धणी साचा मुखि नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधा सेवनि सिध पीर मागहि रिधि सिधि । मै इकु नामु न वीसरै साचे गुर बुधि ॥ २ ॥ जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर । गुर का सबदु न चीन्हही ततु सारु निरंतर ॥ ३ ॥ पंडित पाधे जोइसी नित पढ़हि पुराणा । अंतरि वसतु न जाणनी घटि ब्रहमु लुकाणा ॥ ४ ॥ इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा । आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥ ५ ॥ इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि । बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥ ६ ॥ इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे । नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सु जागे ॥ ७ ॥ गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै । नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥ ८ ॥ १४ ॥

मैंने सारी सृष्टि खोज ली है, मुझे कोई भी अपना शुभचिन्तक नहीं मिला। हे मेरे साहब ! यदि तुम्हें उपयुक्त लगे (तो कृपा कर) तुम मेरे (रक्षक बनो), मैं तुम्हारा (सेवक) बना रहूँ ॥ १ ॥ मुझे कोई दूसरा द्वार नहीं मिलता। दूसरे किसके आगे नमस्कार करूँ। केवल एक तुम ही मेरे मालिक हो। (मैं तुझसे यह दान माँगता हूँ कि) तेरा सत्यस्वरूप नाम मेरे मुँह में (टिका रहे) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीव सिद्ध और पीर (बनने के लिए) पूर्णयोगियों की सेवा करते हैं और उनसे रिद्धि-सिद्धियों (की शक्ति) माँगते हैं। (मेरी प्रार्थना है कि) अविस्मरणीय गुरु की दी हुई बुद्धि के अनुसार मुझे तेरा नाम कभी न भूले ॥ २ ॥ योगी तथा फटे-पुराने कपड़े पहननेवाले फ़कीर व्यर्थ ही देशाटन करते हैं। वे सतिगुरु के उपदेश को नहीं खोजते, वे निरन्तर श्रेष्ठ वास्तविकता को नहीं खोजते ॥ ३ ॥ पण्डित और ज्योतिषी नित्य पुराण आदि पुस्तकें पढ़ते रहते हैं। परमात्मा अन्तर्यामी है, लेकिन ये लोग भीतर विद्यमान नाम-वस्तु को नहीं पहचानते ॥ ४ ॥ अनेक व्यक्ति तपस्वी बने हुए हैं, जंगलों में तपस्या कर रहे हैं और सदा तीर्थों पर निवास करते हैं। लेकिन फिर भी वे क्रोध से अभिभूत रहते हैं, अपने आत्मिक जीवन को नहीं खोजते। त्यागी बनने का उन्हें कोई लाभ नहीं होता ॥ ५ ॥ अनेक व्यक्ति ऐसे हैं, जो यत्न द्वारा वीर्य को संयमित करते हैं और अपने आप को यती कहलवाते हैं। लेकिन गुरु के ज्ञान के बिना वे भी छुटकारा प्राप्त नहीं करते। (जितेन्द्रिय होने की ही) दुबिधा में पड़कर जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं ॥ ६ ॥ अनेक गृहस्थ ऐसे हैं जो सेवा करते हैं, सेवा के साधन करते

हैं, वे गुरु की दी हुई शिक्षा पर चलते हैं। वे नाम जपते हैं, दूसरों को नाम जपने के लिए प्रेरित करते हैं, अपना आचरण पवित्र रखते हैं। वे परमात्मा की भक्ति में अपने आप को दृढ़ करके (विकारों के आक्रमणों से) सचेत रहते हैं ॥ ७ ॥ हे नानक ! परमात्मा का द्वार तथा गृह गुरु द्वारा ही पहचाना जा सकता है। वही मनुष्य पहचानता है, जो गुरु के पास आता है। उसे परमात्मा का नाम विस्मृत नहीं होता, उसका मन सत्यस्वरूप परमात्मा की स्मृति में रम जाता है ॥ ८ ॥ १४ ॥

॥ आसा महला १ ॥ मनसा मनहि समाइ ले भउजलु सचि तरणा। आदि जुगादि दइआलु तू ठाकुर तेरी सरणा ॥१॥ तू दातौ हम जाचिका हरि दरसनु दीजै। गुरमुखि नामु धिआईऐ मन मंदरु भीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूड़ा लालचु छोडीऐ तउ साचु पछाणै। गुर कै सबदि समाईऐ परमारथु जाणै ॥ २ ॥ इहु मनु राजा लोभीआ लुभतउ लोभाई। गुरमुखि लोभु निवारीऐ हरि सिउ बणिआई ॥ ३ ॥ कलरि खेती बीजीऐ किउ लाहा पावै। मनमुखु सचि न भीजई कूड़ु कूड़ि गडावै ॥ ४ ॥ लालचु छोडहु अंधिहो लालचि दुखु भारी। साचौ साहिबु मनि वसै हउमै बिखु मारी ॥ ५ ॥ दुबिधा छोडि कुवाटड़ी मूसहुगे भाई। अहिनिसि नामु सलाहीऐ सतिगुर सरणाई ॥ ६ ॥ मनमुख पथरु सैलु है ध्रिगु जीवणु फीका। जल महि केता राखीऐ अभ अंतरि सूका ॥ ७ ॥ हरि का नामु निधानु है पूरै गुरि दीआ। नानक नामु न वीसरै मथि अंम्रितु पीआ ॥८॥१५॥

(हे भाई ! मन से उठनेवाली) लालसा मन में ही लीन कर दे (क्योंकि स्वेच्छाचारी होकर मुक्त होना असम्भव है)। सत्यस्वरूप परमात्मा में जुड़ने पर ही संसार-समुद्र से पार उतरा जा सकता है। हे सृष्टि के आदिम प्रभु ! हे युगों से पूर्व विद्यमान, सर्वरक्षक प्रभु ! तुम सब जीवों पर दया करनेवाले हो। मैं तुम्हारी शरणागत हूँ ॥ १ ॥ हे हरि ! तुम सब जीवों को देन देनेवाले हो, हम जीव भिक्षुक हैं, (हमें) दर्शन दो। गुरु की शरणागत होकर ही परमात्मा का नाम-स्मरण किया जा सकता है, (स्मरण करनेवाले के) मन का मन्दिर (हरि-नाम से) भीग जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माया का लोभ छोड़ देना चाहिए, (माया के लोभ से मुक्त होकर ही मनुष्य) सत्यस्वरूप प्रभु के साथ मेल करता है। गुरु के शब्द के द्वारा ही (परमात्मा के नाम में) लीन हुआ जा सकता है, (प्रभु-नाम में लीन होकर ही जीव) जीवन के

सर्वोच्च मनोरथ को समझ लेता है ॥ २ ॥ यह लोभी मन (शरीर-नगर का) राजा है, (जो) हमेशा लोभ में फँसा हुआ (सदा) माया का लोभ करता रहता है। गुरु की शरण लेकर ही यह लोभ दूर किया जा सकता है। (निर्लिप्त मनुष्य की) परमात्मा के साथ प्रीति बन जाती है ॥ ३ ॥ यदि बंजर में खेती बोई जाए, तो उसमें से लाभ नहीं प्राप्त किया जा सकता। स्वेच्छाचारी मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु में रम नहीं सकता, बल्कि मिथ्या में ही लीन रहता है ॥ ४ ॥ हे माया में अन्धे हुए जीवो ! माया का लालच छोड़ दो। लालच में फँसने पर भारी दुख सहना पड़ता है। जिस मनुष्य के मन में सत्यस्वरूप मालिक बस जाता है, वह अहंकार के विष को मार लेता है ॥ ५ ॥ हे भाई ! दुबिधा छोड़ दो। यह ग़लत रास्ता है, (इसे पकड़कर) लूटे जाओगे। (इसलिए) सतिगुरु की शरण लेकर दिन-रात परमात्मा के नाम की गुणस्तुति करनी चाहिए ॥ ६ ॥ स्वेच्छाचारी मनुष्य (का हृदय) चट्टान है, उसका जीवन सानन्द-रहित रहता है, (वह) धिक्कार योग्य है। पत्थर को कितने ही समय पानी में रखा जाए, तो भी वह भीतर से सूखा ही रहता है ॥ ७ ॥ परमात्मा का नाम (सारे आत्मिक गुणों का) भण्डार है, जिस मनुष्य को पूर्णगुरु ने नाम दे दिया, वह हे नानक ! सदा जप-जपकर आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-रस पान करता है, उसे परमात्मा का नाम कभी विस्मृत नहीं होता ॥ ८ ॥ १५ ॥

॥ आसा महला १ ॥ चले चलणहार वाट वटाइआ। धंधु पिटे संसारु सचु न भाइआ ॥ १ ॥ किआ भवीऐ किआ ढूढीऐ गुर सबदि दिखाइआ। ममता मोहु विसरजिआ अपनै घरि आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि मिलै सचिआरु कूड़ि न पाईऐ। सचे सिउ चितु लाइ बहुड़ि न आईऐ ॥ २ ॥ मोइआ कउ किआ रोवहु रोइ न जाणहू। रोवहु सचु सलाहि हुकमु पछाणहू ॥ ३ ॥ हुकमी वजहु लिखाइ आइआ जाणीऐ। लाहा पलै पाइ हुकमु सिञाणीऐ ॥ ४ ॥ हुकमी पैधा जाइ दरगह भाणीऐ। हुकमे ही सिरि मार बंदि रबाणीऐ ॥ ५ ॥ लाहा सचु निआउ मनि वसाईऐ। लिखिआ पलै पाइ गरबु वञाईऐ ॥६॥ मनमुखीआ सिरि मार वादि खपाईऐ। ठगि मुठी कूड़िआर बंन्हि चलाईऐ ॥ ७ ॥ साहिबु रिदै वसाइ न पछोतावही। गुनहां बखसणहारु सबदु कमावही ॥ ८ ॥ नानकु मंगै सचु गुरमुखि घालीऐ। मै तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहालीऐ॥९॥१६॥

ईश्वर-नाम में अनास्था रखनेवाले परदेशी व्यक्ति सही मार्ग से

विचलित होकर चले जा रहे हैं। (मोह-ग्रस्त) जगत वही काम परेशान हो-होकर करता है, जो गले में माया का जंजाल डाल देता है। (मोह-ग्रस्त) जगत को सत्यस्वरूप प्रभु का नाम प्यारा नहीं लगता ॥ १ ॥ (जिसे परमात्मा ने) गुरु-शब्द के द्वारा (अपना आप) दिखा दिया, उसकी दुबिधा समाप्त हो जाती है; उसे अन्यत्र सुख खोजने की ज़रूरत नहीं रहती। उसने अपने भीतर से माया की ममता दूर कर दी और माया का मोह त्याग दिया। वह उस घर में आ टिका, जो हमेशा के लिए उसका बन गया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सत्य का व्यापारी सत्यस्वरूप प्रभु में जुड़कर (प्रभु को) मिल लेता है, मिथ्या पदार्थों में लगने से प्रभु नहीं मिलता। सत्यस्वरूप परमात्मा में हृदय लगाने से बार-बार आवागमन में आना नहीं होता ॥ २ ॥ हे भाई ! यदि तुम मृत सम्बन्धियों को रोते हो (तो) यह व्यर्थ काम है। वास्तव में तुम्हें वैराग्य में आने की जाँच नहीं। परमात्मा की गुणस्तुति करो और इसे परमात्मा का हुक्म समझो। (इस प्रकार) दुनिया से विरक्त होने का तरीक़ा सीखो। यह बात समझनी चाहिए कि हर एक जीव परमात्मा की रज़ा में ही रोज़ी लिखाकर जगत में आता है। उसकी रज़ा को पहचानना चाहिए, इस प्रकार जीवन-लाभ मिलता है। परमात्मा की रज़ा अनुसार जीव प्रतिष्ठा पाकर यहाँ से जाता है और प्रभु के दरबार में आदर पाता है। प्रभु की रज़ा से ही (माया-ग्रस्त होने से) जीवों के सिर पर मार पड़ती है और आवागमन की ईश्वरीय क़ैद में जीव पड़ जाते हैं ॥ ३, ४, ५ ॥ यदि यह बात मन में बसा ली जाय कि सर्वत्र परमात्मा का न्याय सक्रिय है, तो सत्यस्वरूप प्रभु का नाम-लाभ प्राप्त किया जाता है। लेकिन अपनी चतुराई का अभिमान जीव को दूर कर देना चाहिए। (प्रभु की रज़ा अनुसार) प्रत्येक जीव कृत कर्मों के संस्कारों के अनुसार प्राप्ति करता है ॥ ६ ॥ जो जीव-स्त्री स्वेच्छाचरण करती है, उसके सिर पर (जन्म-मरण के चक्र की) मार है, वह झगड़े में ही दुखी होती है। मिथ्या की व्यापारी जीव-स्त्री (ममता-मोह में ही) ठगी जाती है ॥ ७ ॥ हे भाई ! मालिक-प्रभु को मन में बसा, (अन्त में) पश्चाताप नहीं करना पड़ेगा। उस प्रभु की गुणस्तुति कर, वह समस्त पापों को क्षमा करनेवाला है ॥ ८ ॥ हे प्रभु ! नानक तेरा सत्यनाम माँगता है, (तेरी कृपा होवे तो) मैं गुरु की शरण लेकर यह साधना करूँ। तुम्हारे बिना मेरा दूसरा कोई सहारा नहीं है, मेरी ओर कृपादृष्टि से देखिए ॥ ९ ॥ १६ ॥

॥ आसा महला १ ॥ किआ जंगलु ढूढी जाइ मै घरि बनु हरीआवला। सचि टिकै घरि आइ सबदि उतावला ॥ १ ॥ जह देखा तह सोइ अवरु न जाणीऐ। गुर की कार कमाइ महलु

पछाणीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि मिलावै सचु ता मनि भावई । चलै सदा रजाइ अंकि समावई ॥ २ ॥ सचा साहिबु मनि वसै वसिआ मनि सोई । आपे दे वडिआईआ दे तोटि न होई ॥ ३ ॥ अबे तबे की चाकरी किउ दरगह पावै । पथर की बेड़ी जे चड़ै भर नालि बुडावै ॥ ४ ॥ आपनड़ा मनु वेचीऐ सिरु दीजै नाले । गुरमुखि वसतु पछाणीऐ अपना घरु भाले ॥ ५ ॥ जंमण मरणा आखीऐ तिनि करतै कीआ । आपु गवाइआ मरि रहे फिरि मरणु न थीआ ॥ ६ ॥ साई कार कमावणी धुर की फुरमाई । जे मनु सतिगुर दे मिलै किनि कीमति पाई ॥ ७ ॥ रतना पारखु सो धणी तिनि कीमति पाई । नानक साहिबु मनि वसै सची वडिआई ॥ ८ ॥ १७ ॥

मैं जंगल जाकर (परमात्मा की) खोज क्यों करूँ ? जिस मनुष्य को परमात्मा सर्वत्र दिखाई दे, उसे घर में भी हरा-भरा जंगल अर्थात् प्रभु दृष्टिगोचर होता है। जो मनुष्य गुरु के शब्द द्वारा सत्यस्वरूप प्रभु में टिकता है, परमात्मा एकदम उसके हृदय-घर में आ बसता है ॥ १ ॥ मैं जहाँ देखता हूँ, मुझे वहाँ वही दिखता है। (यह कभी) नहीं समझना चाहिए कि उस प्रभु जैसा कोई दूसरा मौजूद है। गुरु द्वारा बतलाया काम करके उसका ठिकाना पहचान लिया जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब सत्यस्वरूप प्रभु आप (जीव को अपने चरणों में) मिलाता है, तब वह उस जीव के मन में प्यारा लगने लगता है, वह जीव सदा उसकी रज़ा में रहता है और उसकी गोदी में समा जाता है ॥ २ ॥ सत्यस्वरूप मालिक जिस मनुष्य के मन में बस जाता है, उस मनुष्य को अपने मन में वही प्रभु बसा हुआ (दिखता है)। (उसे विश्वास हो जाता है कि) प्रभु आप ही महानता देता है और उसकी देन देने से कम नहीं होती ॥ ३ ॥ इस-उस की ख़ुशामद करने से परमात्मा की सेवा प्राप्त नहीं हो सकती (क्योंकि) जो मनुष्य पत्थर की नाव में सवार होता है, वह (संसार-) समुद्र में डूब जाता है ॥ ४ ॥ (परमात्मा के नाम रूपी सौदे के लिए) यदि अपना मन (गुरु के आगे) बेच दें और अपना सिर भी (अर्थात् स्वेच्छाचारी होने के स्थान पर ईश्वर-प्रेम में रँग जाएँ), तो गुरु के द्वारा अपना हृदय-घर खोजकर (अपने भीतर ही) नाम-पदार्थ पहचान लिया जाता है ॥ ५ ॥ प्रत्येक व्यक्ति आवागमन की बात करता है, जिसे कर्तार ने आप बनाया है। जो जीव अहंभाव गवाँकर (माया-मोह की ओर से) मर जाते हैं, उन्हें यह जन्म-मरण का चक्र नहीं लगता ॥ ६ ॥ (पूर्वकृत कर्मों के संस्कारों के अनुसार) ईश्वर द्वारा जिस काम के करने का हुक्म होता है, जीव वही

काम करता है; लेकिन यदि जीव अपना मन गुरु के सहारे छोड़कर प्रभु-चरणों में टिक जाए (तो इसका जीवन इतना उत्तम बन जाता है कि) कोई भी उसका मूल्यांकन नहीं कर सकता ।। ७ ।। वह मालिक आप इन रत्नों की परख करता है और आप ही इनका मूल्यांकन करता है। हे नानक ! जिस मनुष्य के मन में मालिक-प्रभु बस जाता है, उसे शाश्वत प्रतिष्ठा देता है ।। ८ ।। १७ ।।

।। आसा महला १ ।। जिनी नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई । मूलु छोडि डाली लगे किआ पावहि छाई ।। १ ।। बिनु नावै किउ छूटीऐ जे जाणै कोई । गुरमुखि होइ त छूटीऐ मनमुखि पति खोई ।। १ ।। रहाउ ।। जिन्ही एको सेविआ पूरी मति भाई । आदि जुगादि निरंजना जन हरि सरणाई ।। २ ।। साहिबु मेरा एकु है अवरु नही भाई । किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई ।। ३ ।। गुर बिनु किनै न पाइओ केती कहै कहाए । आपि दिखावै वाटड़ीं सची भगति द्रिड़ाए ।। ४ ।। मनमुखु जे समझाईऐ भी उझड़ि जाए । बिनु हरिनाम न छूटसी मरि नरक समाए ।। ५ ।। जनमि मरै भरमाईऐ हरिनामु न लेवै । ताकी कीमति ना पवै बिनु गुर की सेवै ।। ६ ।। जेही सेव कराईऐ करणी भी साई । आपि करे किसु आखीऐ वेखै वडिआई ।। ७ ।। गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए । नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए ।। ८ ।। १८ ।।

जिन व्यक्तियों ने और अधिक दुबिधा में पड़कर, पथभ्रष्ट होकर परमात्मा का नाम भुला दिया, जो व्यक्ति (संसार-वृक्ष के) मूल-(प्रभु) को छोड़कर वृक्ष की डालियों में लगे हैं, उन्हें आत्मिक जीवन में से कुछ भी प्राप्त न हुआ ।। १ ।। यदि कोई समझ ले कि परमात्मा के नाम (में जुड़े) बिना (माया-मोह से) नहीं बचा जा सकता, तब गुरु के बतलाए मार्ग पर चलने से उस मनुष्य की मुक्ति होती है। स्वेच्छाचारी मनुष्य (माया-मोह में फँसकर) अपनी प्रतिष्ठा गवाँ देता है ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! जिन मनुष्यों ने एक परमात्मा का स्मरण किया, उनकी बुद्धि (माया-मोह में) भ्रष्ट नहीं होती। प्रभु के वे सेवक उस प्रभु की ही शरण में टिके रहते हैं, जो सारे जगत का मूल है, जो आदिम युग से है और जिस पर माया का प्रभाव नहीं पड़ सकता ।। २ ।। हे प्रभु ! हमारा मालिक-प्रभु अप्रतिम और अद्वितीय है। यदि उस सत्यस्वरूप प्रभु के आसरे टिके रहें, तो उसकी कृपा द्वारा आत्मिक आनन्द मिलता है ।। ३ ।।

दुनिया दूसरे-दूसरे रास्ते बतलाती है, लेकिन गुरु की शरण लिये बिना परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। (गुरु की शरण लेकर) परमात्मा (अपने मिलन का) सही रास्ता आप ही दिखा देता है, (जीव के हृदय में) अटल भक्ति दृढ़ कर देता है ॥ ४ ॥ पर जो मनुष्य स्वेच्छाचारी होता है, यदि उसे सही मार्ग समझाने की कोशिश भी करें तो भी वह कुमार्ग पर ही जाता है। परमात्मा के नाम के बिना वह इस (कुमार्ग) से बच नहीं सकता, वह आत्मिक मृत्यु लपेट लेता है, (मानो) नरकों में पड़ा रहता है ॥ ५ ॥ जो मनुष्य हरि का नाम नहीं स्मरण करता, वह जन्मता है मरता है, मरता है जन्मता है; अर्थात् आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है। (बचाव का मार्ग केवल परमात्मा का नाम-स्मरण है, लेकिन) गुरु की शरण लिये बिना परमात्मा के नाम का मूल्यांकन नहीं हो सकता ॥ ६ ॥ परमात्मा जिस काम में जीव को लगाता है, जीव को उसी काम में लगना है। परमात्मा आप ही (सृष्टि) रचकर आप इसकी सँभाल करता है, यह उसकी अपनी ही बुजुर्गी है। (उसके अतिरिक्त) किसी दूसरे के सामने पुकार नहीं की जा सकती ॥ ७ ॥ हे नानक ! गुरु की बतलाई सेवा भी वही मनुष्य करता है, जिससे परमात्मा आप कराता है। (माया-मोह से) मुक्ति अहंत्व-भाव गवाँ कर होती है। जो मनुष्य अपना सिर (गुरु के) हवाले करता है, वह परमात्मा के सामीप्य में सत्कृत होता है ॥ ८ ॥ १८ ॥

॥ आसा महला १ ॥ रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी। वडै भागि सतिगुरु मिलै पाईऐ पदु निरबाणी ॥१॥ मै ओल्हगीआ ओल्हगी हम छोरू थारे। जिउ तूं राखहि तिउ रहा मुखि नामु हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआसा घणी भाणै मनि भाईऐ। मेरे ठाकुर हाथि वडिआईआ भाणै पति पाईऐ ॥ २ ॥ साचउ दूरि न जाणीऐ अंतरि है सोई। जह देखा तह रवि रहे किनि कीमति होई ॥ ३ ॥ आपि करे आपे हरे वेखै वडिआई। गुरमुखि होइ निहालीऐ इउ कीमति पाई ॥ ४ ॥ जीवदिआ लाहा मिलै गुर कार कमावै। पूरबि होवै लिखिआ ता सतिगुरु पावै ॥५॥ मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाए। मनमुखु अंधु न चेतई किउ दरसनु पाए ॥ ६ ॥ ता जगि आइआ जाणीऐ साचै लिव लाए। गुर भेटे पारसु भए जोती जोति मिलाए ॥७॥ अहिनिसि रहै निरालमो कार धुर की करणी। नानक नामि संतोखीआ राते हरि चरणी ॥ ८ ॥ १९ ॥

हे ठाकुर ! तुम सुन्दर और बुद्धिमान हो। गुरु की सुन्दर वाणी के

द्वारा (तुम्हारी प्राप्ति हो सकती है)। सौभाग्यवश गुरु मिलता है, जिसके माध्यम से वासना-रहित आत्मिक अवस्था मिलती है ॥ १ ॥ (हे प्रभु !) मैं तेरे दासों का दास हूँ, मैं तेरा छोटा सा सेवक हूँ। मैं उसी तरह जीना चाहता हूँ, जिस तरह तेरी रज़ा हो। मेरे मुँह में अपना नाम दो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु की रज़ा अनुसार (जीव के भीतर) उसके दर्शन की तीव्र आकांक्षा पैदा होती है, उसकी रज़ा अनुसार ही वह जीव के मन में प्यारा लगने लगता है। प्यारे ठाकुर के हाथ में सब महानताएँ हैं, उसकी रज़ा अनुसार ही (जीव को) प्रतिष्ठा मिलती है ॥ २ ॥ सत्यस्वरूप परमात्मा को कहीं दूर नहीं समझना चाहिए, हर एक जीव के भीतर वह आप विद्यमान है। मैं जिधर देखता हूँ, उधर ही प्रभु व्याप्त है। लेकिन किसी जीव द्वारा उसका मूल्यांकन नहीं हो सकता ॥ ३ ॥ परमात्मा आप ही उभारता है, आप ही गिराता है, (अपनी यह) शक्ति वह आप ही देख रहा है। गुरु के सम्मुख होकर उसका दर्शन किया जा सकता है और इस प्रकार उसका मूल्यांकन हो सकता है (कि वह सर्वव्यापक है) ॥ ४ ॥ जो मनुष्य गुरु का बताया काम करता है, उसे इसी जीवन में परमात्मा का नाम-लाभ मिल जाता है। लेकिन गुरु भी तब ही मिलता है, यदि पूर्व जन्मों के किये शुभ कर्मों के संस्कार (अन्दर) मौजूद हों ॥ ५ ॥ स्वेच्छाचारी मनुष्यों के आत्मिक गुणों में नित्य कमी होती रहती है, (माया के) भटकाए हुए वे (नित्य) भटकते रहते हैं। स्वेच्छाचारी मनुष्य (माया में) अन्धा हो जाता है, वह परमात्मा को स्मरण नहीं करता। उसे परमात्मा का दर्शन कैसे हो ? ॥ ६ ॥ तब ही किसी को जगत में जन्मा हुआ समझो, यदि वह सत्यस्वरूप प्रभु में सुरति जोड़ता हो। जो मनुष्य गुरु को मिल जाते हैं, वे पारस बन जाते हैं; उनकी ज्योति परमात्मा की ज्योति में मिली रहती है ॥ ७ ॥ हे नानक ! प्रभु के नाम में जुड़े हुए व्यक्ति सन्तोष वाला जीवन बिताते हैं, उस परमात्मा के चरणों के प्रेम में रँगे रहते हैं। (जो व्यक्ति ईश्वरप्रदत्त काम करता है, वह सदा निर्लेप रहता है) ॥ ८ ॥ १९ ॥

॥ आसा महला १ ॥ केता आखणु आखीऐ ता के अंत न जाणा। मै निधरिआ धर एक तूं मै ताणु सताणा ॥ १ ॥ नानक की अरदासि है सच नामि सुहेला। आपु गइआ सोझी पई गुर सबदी मेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै गरबु गवाईऐ पाईऐ वीचारु। साहिब सिउ मनु मानिआ दे साचु अधारु ॥ २ ॥ अहिनिसि नामि संतोखीआ सेवा सचु साई। ता कउ बिघनु न लागई चालै हुकमि रजाई ॥ ३ ॥ हुकमि रजाई जो चलै सो

पवै खजानै । खोटे ठवर न पाइनी रले जूठानै ।। ४ ।। नित नित खरा समालीऐ सचु सउदा पाईऐ । खोटे नदरि न आवनी ले अगनि जलाईऐ ।। ५ ।। जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई । एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ।। ६ ।। अंम्रित फलु जिनी चाखिआ सचि रहे अघाई । तिना भरमु न भेदु है हरि रसन रसाई ।। ७ ।। हुकमि संजोगी आइआ चलु सदा रजाई । अउगणिआरे कउ गुणु नानकै सचु मिलै वडाई ।। ८ ।। २० ।।

परमात्मा के गुणों का चाहे कितना ही वर्णन किया जाए, मैं अन्त नहीं जान सकता । (हे प्रभु !) मुझ निराश्रित के केवल तुम ही आश्रय हो और तुम ही मुझ शक्तिहीन की शक्ति हो ।। १ ।। नानक की यह प्रार्थना है कि मैं सदा सत्यस्वरूप प्रभु के नाम में (जुड़कर) सुखी रहूँ । जो मनुष्य अपने भीतर से आपा-भाव गवाँता है, उसे (ऐसी प्रार्थना करने की) समझ हो जाती है ।। १ ।। रहाउ ।। इसलिए अपना अहंभाव त्यागकर (प्रभु का) ध्यान करो । जब परमात्मा के साथ जीव का मन मिल जाता है, तब वह प्रभु उसे अपने सत्यस्वरूप नाम का आसरा दे देता है ।। २ ।। सत्यस्वरूप प्रभु वही सेवा (स्वीकार करता है, जिससे जीव) दिन-रात प्रभु के नाम में जुड़कर सन्तोष वाला जीवन बनाता है । जो मनुष्य रज़ा के मालिक प्रभु के हुक्म अनुसार चलता है, उसे कोई रुकावट नहीं पड़ती ।।३।। जो मनुष्य रज़ा के मालिक प्रभु के हुक्म को मानता है, वह (खरा सिक्का बनकर) प्रभु-ख़ज़ाने में पड़ता है, खोटे सिक्कों को (प्रभु के ख़ज़ाने में) सहारा नहीं मिलता, वे तो खोटों में ही मिले रहते हैं ।।४।। (हे भाई !) सदा ही उस परमात्मा को अपने हृदय में सँभालकर रखो, जिसमें माया-मोह की तनिक भी मैल नहीं है। इस प्रकार वह सौदा ख़रीद लिया जाता है, जो शाश्वत है और सदा के लिए मिला रहता है। खोटे सिक्के परमात्मा स्वीकार नहीं करता, उन्हें मिलावट आदि का मैल जलाने के लिए आग में डालकर तपाया जाता है ।। ५ ।। जिन व्यक्तियों ने अपने आत्मिक जीवन को परखा है, वे ही व्यक्ति परमात्मा को पहचान लेते हैं। (वे जान जाते हैं कि) एक परमात्मा ही आत्मिक जीवन रूपी फल देनेवाला वृक्ष है, उस प्रभु-वृक्ष का फल सदा अमृतरूप है ।। ६ ।। जिन मनुष्यों ने आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-फल चख लिया, वे सत्यस्वरूप प्रभु के नाम में जुड़कर तृप्त रहते हैं । उन्हें (माया आदि की कोई) दुबिधा नहीं रहती, उनकी परमात्मा से कोई दूरी नहीं रहती, उनकी जीभ परमात्मा के नाम-रस में लिप्त रहती है ।। ७ ।। (हे जीव !) तू परमात्मा के हुक्म-अधीन

(पूर्वकृत कर्मों के) संयोग अनुसार आया है, सदा उसकी रज़ा अनुसार ही आचरण कर। (मुझ) गुणहीन नानक को सत्यस्वरूप प्रभु का (स्मरण रूपी) गुण मिल जाए, तो मैं (प्रभु की इस श्रेष्ठ देन को) समझूँगा ॥ ८ ॥ २० ॥

॥ आसा महला १ ॥ मनु रातउ हरि नाइ सचु वखाणिआ। लोका दा किआ जाइ जा तुधु भाणिआ ॥ १ ॥ जउ लगु जीउ पराण सचु धिआईऐ। लाहा हरि गुण गाइ मिलै सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सची तेरी कार देहि दइआल तूं। हउ जीवा तुधु सालाहि मै टेक अधारु तूं ॥ २ ॥ दरि सेवकु दरवानु दरदु तूं जाणही। भगति तेरी हैरानु दरदु गवावही ॥३॥ दरगह नामु हदूरि गुरमुखि जाणसी। वेला सचु परवाणु सबदु पछाणसी ॥ ४ ॥ सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइ। मनहु छोडि विकार सचा सचु देइ ॥ ५ ॥ सचे सचा नेहु सचै लाइआ। आपे करे निआउ जो तिसु भाइआ ॥ ६ ॥ सचे सची दाति देहि दइआलु है। तिसु सेवी दिनु राति नामु अमोलु है ॥ ७ ॥ तूं उतमु हउ नीचु सेवकु कांढीआ। नानक नदरि करेहु मिलै सचु वांढीआ ॥ ८ ॥ २१ ॥

जिस मनुष्य का मन परमात्मा के नाम-(रंग) में रँगा जाए, जो सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति करे, जब (वह भाग्यशाली जीव) तुम्हें प्यारा लगने लगे, तो इसमें लोगों का कुछ नहीं बिगड़ता क्योंकि ईश्वर-भक्त कभी भी अमंगलकारी नहीं होता ॥ १ ॥ जब तक प्राण और साँस हैं, (तब तक) परमात्मा को स्मरण करना चाहिए; (नाम-स्मरणकर्ता को) प्रभु के गुण गाकर आत्मिक आनन्द रूपी लाभ मिलता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे दयालु प्रभु ! तुम मुझे अपनी (भक्ति की) कमाई दो, जिसमें कोई दोष नहीं है। ज्यों-ज्यों मैं तुम्हारी गुणस्तुति करता हूँ, मेरा आत्मिक जीवन विकसित होता है। हे प्रभु ! तुम मेरे जीवन की टेक हो, मेरा आसरा हो ॥ २ ॥ हे प्रभु ! जो मनुष्य तेरे द्वार पर सेवक बनता है, जो तेरा द्वार प्राप्त करता है, तुम उसका दुख-दर्द जानते हो। जगत देखकर हैरान होता है कि जगत तेरी भक्ति करता है, तुम उसका दुख-दर्द दूर करते हो ॥३॥ जो मनुष्य गुरु के सम्मुख होता है, उसे समझ आ जाती है कि परमात्मा के दरबार में उसका नाम(-स्मरण ही) स्वीकृत होता है। जो मनुष्य गुरु के शब्द को पहचानता है, उसका जीवन-समय सफल है, प्रामाणिक है ॥ ४ ॥ जिन व्यक्तियों को सत्यस्वरूप प्रभु अपना सत्य-नाम देता है, वे अपने मन में से विकार

छोड़कर सत्य, सन्तोष और हरि-नाम के रास्ते का खर्च बनाते हैं ॥ ५ ॥ (यदि किसी जीव को) सत्यस्वरूप प्रभु का सत्यस्वरूप प्रेम उपजा है, (वह प्रेम) सत्यस्वरूप प्रभु ने आप ही उपजाया है। वह आप ही न्याय करता है (कि किसे प्रेम की देन देनी है), जो उसे पसन्द आता है (वही न्याय है) ॥ ६ ॥ मैं दिन-रात प्रभु का स्मरण करता हूँ, जिसका नाम अमूल्य है, जो सब जीवों पर दया करता है। हे सत्यस्वरूप प्रभु! मुझे अपने नाम की देन दे, यह देन सत्यस्वरूप है ॥ ७ ॥ हे नानक! (प्रभु-द्वार पर इस प्रकार प्रार्थना कर— हे प्रभु!) तुम श्रेष्ठ हो, मैं नीच हूँ (फिर भी) सेवक कहलाता हूँ। मुझ पर कृपादृष्टि कर ताकि मुझ चरणों से बिछुड़े हुए को सत्यस्वरूप नाम मिल जाए ॥ ८ ॥ २१ ॥

॥ आसा महला १ ॥ आवण जाणा किउ रहै किउ मेला होई। जनम मरण का दुखु घणो नित सहसा दोई ॥ १ ॥ बिनु नावै किआ जीवना फिटु ध्रिगु चतुराई। सतिगुर साधु न सेविआ हरि भगति न भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवणु जावणु तउ रहै पाईऐ गुरु पूरा। राम नामु धनु रासि देइ बिनसै भ्रमु कूरा ॥ २ ॥ संत जना कउ मिलि रहै धनु धनु जसु गाए। आदि पुरखु अपरंपरा गुरमुखि हरि पाए ॥ ३ ॥ नटूऐ सांगु बणाइआ बाजी संसारा। खिनु पलु बाजी देखीऐ उझरत नही बारा ॥ ४ ॥ हउमै चउपड़ि खेलणा झूठे अहंकारा। सभु जगु हारै सो जिणै गुर सबदु वीचारा ॥ ५ ॥ जिउ अंधुलै हथि टोहणी हरिनामु हमारै। राम नामु हरि टेक है निसि दउत सवारै ॥ ६ ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा हरि नाम अधारा। अंति सखाई पाइआ जन मुकति दुआरा ॥ ७ ॥ जनम मरण दुख मेटिआ जपि नामु मुरारे। नानक नामु न वीसरै पूरा गुरु तारे ॥ ८ ॥ २२ ॥

(नाम-स्मरण के बिना) जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं होता, परमात्मा के साथ मिलाप नहीं होता, जन्म-मरण का भारी क्लेश रहता है और माया के मोह में फँसे रहने के कारण (प्राणों को) नित्य भय खाता है ॥ १ ॥ जिस मनुष्य ने साधु गुरु की सेवा नहीं की, जिसे परमात्मा की भक्ति अच्छी नहीं लगी, जो परमात्मा के नाम से खाली रहा, उसका जीवन वास्तविक जीवन नहीं है। (उस मनुष्य की) कोई भी चतुराई धिक्कार योग्य है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन्म-मरण का चक्र तब ही समाप्त होता है, जब पूर्णसतिगुरु मिलता है। गुरु परमात्मा का नाम-धन देता है।

(जिससे) झूठी माया के लिए उपजनेवाली दुबिधा समाप्त हो जाती है ॥ २ ॥ गुरु की शरण लेकर मनुष्य सत्संगति में टिका रहता है, परमात्मा का धन्यवाद करता हुआ उसकी गुणस्तुति करता है और इस प्रकार जगत के मूल, सर्वव्यापक, अनन्त प्रभु को प्राप्त कर लेता है ॥ ३ ॥ (जैसे कोई) मदारी तमाशा दिखाता है (और लोग उसे देखकर प्रसन्न होते हैं), ऐसे ही संसार एक खेल है। घड़ी भर यह खेल देखा जाता है, इसके उजड़ते हुए देर नहीं लगती ॥ ४ ॥ (अहंकारी मनुष्य) अहं की चौसर को झूठ तथा अहंकार (की गोटियों) से खेल रहा है। (इस खेल में लगकर) सारा संसार हार रहा है। केवल वह मनुष्य जीतता है, जो गुरु के ज्ञान को अपने विचार-मण्डल में टिकाता है ॥ ५ ॥ जैसे किसी अन्धे आदमी के हाथ में डण्डी होती है, वैसे ही हम जीवों के पास परमात्मा का नाम (होता है)। परमात्मा का नाम (एक ऐसा) सहारा है, (जो) दिन-रात (सहायक बनता है) ॥ ६ ॥ हे प्रभु ! जिस हालत में तुम मुझे रखो, मैं उसी हालत में रह सकता हूँ। हे हरि ! (हम जीवों को) तेरे नाम का आसरा मिल सकता है। जिन्होंने अन्तिम क्षण तक निभनेवाले इस साथी को प्राप्त कर लिया, उन्हें माया के मोह से छुटकारा प्राप्त करने का मार्ग मिल जाता है ॥ ७ ॥ परमात्मा का नाम जपकर जन्म-मरण के चक्र का क्लेश मिटाया जा सकता है। हे नानक ! जिन्हें नाम विस्मृत नहीं होता, उन्हें पूर्णगुरु संसार-समुद्र से पार उतार देता है ॥ ८ ॥ २२ ॥

आसा महला ३ असटपदीआ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सासतु बेदु सिम्रिति सरु तेरा सुरसरी चरण समाणी। साखा तीनि मूलु मति रावै तूं तां सरब विडाणी ॥ १ ॥ ता के चरण जपै जनु नानकु बोले अंम्रित बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेतीस करोड़ी दास तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी। ता के रूप न जाही लखड़े किआ करि आखि वीचारी ॥ २ ॥ तीनि गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरीआ खाणी। करमु होवै ता परमपदु पाईऐ कथे अकथ कहाणी ॥३॥ तूं करता कीआ सभु तेरा किआ को करे पराणी। जा कउ नदरि करहि तूं अपणी साई सचि समाणी ॥ ४ ॥ नामु तेरा सभु कोई लेतु है जेती आवण जाणी। जा तुधु भावै ता गुरमुखि बूझै होर मनमुखि फिरै इआणी ॥ ५ ॥ चारे वेद ब्रहमे कउ दीए पड़ि

पड़ि करे वीचारी । ता का हुकमु न बूझै बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी ॥ ६ ॥ जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी । तिन भी अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी ॥ ७ ॥ तूं सचा तेरा कीआ सभु साचा देहि त साचु वखाणी । जा कउ सचु बुझावहि अपणा सहजे नामि समाणी ॥ ८ ॥ १ ॥ २३ ॥

हे प्रभु ! तुम्हारा नाम-सरोवर शास्त्र, वेद और स्मृतियाँ है, तुम्हारे चरणों में लगाव ही (मेरे लिए) गंगा (-स्नान) है। हे प्रभु ! तुम इस समस्त आश्चर्यजनक जगत के स्वामी हो, तुम त्रिगुणात्मक माया के कर्ता हो। मेरी बुद्धि (तेरी स्मृति के आनन्द को ही) महसूस करती है ॥ १ ॥ (प्रभु का) सेवक नानक उस परमात्मा के चरणों का स्मरण करता रहता है, आत्मिक जीवन की दाता उसकी गुणस्तुति की वाणी को उच्चरित करता रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेंतीस करोड़ देवगण तुम्हारे ही दास हैं, रिद्धियों, सिद्धियों और प्राणों का सहारा तुम ही हो। (हे भाई !) उस परमात्मा के अनेकानेक रूपों का बखान नहीं किया जा सकता। मैं क्या कहकर उनका कोई विचार व्यक्त करूँ ? ॥ २ ॥ हे प्रभु ! इस जगत में तीन गुण तेरे द्वारा उत्पादित हैं। (सृष्टि के जन्म की) चार अवस्थाएँ (अण्डज, जेरज, स्वेदज, उद्भिज) तेरे द्वारा ही निर्मित हैं। तेरी कृपा हो तब ही सर्वोच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त की जा सकती है, तब ही कोई तेरे अकथनीय रूप की कोई बात कर सकता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तुम सृष्टि के सर्जक हो, सारा जगत तेरे द्वारा उत्पादित है, तेरे हुक्म के बिना कोई जीव कुछ नहीं कर सकता। जिस जीव-स्त्री पर तुम कृपादृष्टि करते हो, वही तेरे सत्यस्वरूप नाम में लीन रहती है ॥ ४ ॥ हे प्रभु ! जितनी भी आवागमन में पड़ी हुई सृष्टि है, इसमें हर एक जीव तेरा ही नाम जपता है; लेकिन जब तुझे उपयुक्त लगता है, तब ही गुरु का शरणागत कोई जीव इसे समझता है। स्वेच्छाचारी, शेष मूर्ख दुनिया तो (प्रभु-नाम के बिना) भटकती ही फिरती है ॥ ५ ॥ (परमात्मा ने) चारों वेद ब्रह्मा को दिए, (ब्रह्मा ने चारों वेद रचे और उनका बार-बार) पठन-पाठन करके चिन्तन करता रहा। वह बेचारा यह न समझ सका कि प्रभु का हुक्म मानना सही जीवन-मार्ग है, वह (केवल) नरक-स्वर्ग की बातों में ही टिका रहा ॥ ६ ॥ (परमात्मा ने) राम, कृष्ण आदि अपने-अपने युगों के महापुरुष पैदा किए, लोग उन्हें अवतार मानकर सराहते आ रहे हैं। उन्होंने भी परमात्मा के गुणों का अन्त न पाया, मैं क्या कहकर उनके गुणों का विचार कर सकता हूँ ? ॥ ७ ॥ हे प्रभु ! तुम सत्यस्वरूप हो, तेरे द्वारा उत्पादित विश्व तेरी सत्यस्वरूप स्थिति का स्वरूप है। यदि तू आप (अपने नाम की देन) दे तभी मैं तेरा सत्यस्वरूप नाम उच्चरित कर सकता हूँ।

हे प्रभु ! जिस मनुष्य को तुम अपना सत्यस्वरूप नाम जपने की सूझ देते हो, वह मनुष्य आत्मिक स्थिरता में टिक कर तुम्हारे नाम में लीन रहता है ॥ ८ ॥ १ ॥ २३ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ। हरि नामु निरंजनु मंनि वसाइआ। सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे ततु गिआनु। देवण वाला सभ बिधि जाणै गुरमुखि पाईऐ नामु निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर भेटे की वडिआई। जिनि ममता अगनि त्रिसना बुझाई। सहजे माता हरिगुण गाई ॥ २ ॥ विणु गुर पूरे कोइ न जाणी। माइआ मोहि दूजै लोभाणी। गुरमुखि नामु मिलै हरि बाणी ॥ ३ ॥ गुर सेवा तपां सिरि तपु सारु। हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु। दरि साचै दीसै सचिआरु ॥४॥ गुर सेवा ते त्रिभवण सोझी होइ। आपु पछाणि हरि पावै सोइ। साची बाणी महलु परापति होइ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते सभ कुल उधारे। निरमल नामु रखै उरिधारे। साची सोभा साचि दुआरे ॥ ६ ॥ से वडभागी जि गुरि सेवा लाए। अनदिनु भगति सचु नामु द्रिड़ाए। नामे उधरे कुल सबाए ॥ ७ ॥ नानकु साचु कहै वीचारु। हरि का नामु रखहु उरिधारि। हरि भगती राते मोख दुआरु ॥ ८ ॥ २ ॥ २४ ॥

(हे भाई !) गुरु ने मेरी दुबिधा दूर कर दी है, निर्लिप्त प्रभु का नाम मेरे मन में बसा दिया है, अब मैं गुरु के शब्द को पहचानकर सदा टिके रहनेवाला आत्मिक आनन्द को महसूस कर रहा हूँ ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! वास्तविकता सुन, (यह) जान-पहचान की बात सुन—वह सारे पदार्थ देने की सामर्थ्य वाला परमात्मा हर एक तरीक़ा जानता है। (सारे सुखों का) ख़ज़ाना (उसका) नाम गुरु की शरण लेने से मिलता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे मेरे मन !) गुरु को मिलने से उत्पन्न आत्मिक उच्चता की (बात सुन) उस गुरु ने (जिस मनुष्य) का आपाभाव दूर कर दिया, तृष्णा की आग बुझा दी, वह मनुष्य आत्मिक स्थिरता में मस्त रहकर परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता रहता है ॥ २ ॥ (हे मेरे मन !) गुरु को मिले बिना कोई मनुष्य (ईश्वर के बारे में) नहीं जान सकता क्योंकि मनुष्य माया-मोह में, व्यर्थ लोभों में फँसा रहता है। गुरु की शरण लेने से ही प्रभु का नाम मिलता है, प्रभु की गुणस्तुति की वाणी का सत्कार होता है ॥ ३ ॥ (हे मेरे मन !) गुरु

द्वारा बतलाई सेवा सर्वश्रेष्ठ तप है। सारे दुख दूर करनेवाला परमात्मा मन में आ बसता है और मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा के द्वार पर निश्चिन्त दिखता है ॥ ४ ॥ गुरु द्वारा बतलाई सेवा से तीनों भुवनों में व्याप्त परमात्मा की सूझ प्राप्त होती है और वह मनुष्य अपना आत्मिक जीवन खोजकर परमात्मा को मिल लेता है। सत्यस्वरूप परमात्मा की वाणी के प्रभाव से उसे परमात्मा के चरणों में ही जगह मिल जाती है ॥ ५ ॥ (हे मेरे मन !) गुरु द्वारा बतलाई सेवा से मनुष्य अपने ख़ानदान को भी विकारों से बचा लेता है। जो मनुष्य परमात्मा के पवित्र नाम को अपने हृदय में टिकाए रखता है, उसे सत्यस्वरूप परमात्मा के द्वार पर शाश्वत महानता मिल जाती है ॥ ६ ॥ (हे मेरे मन !) उन मनुष्यों को भाग्यशाली समझ, जिन्हें गुरु ने परमात्मा की सेवा-भक्ति में जोड़ दिया। गुरु उनके हृदय में प्रति पल परमात्मा की भक्ति और सत्यस्वरूप नाम का स्मरण दृढ़ कर देता है। (हे मन !) हरि-नाम के द्वारा, उनके समस्त ख़ानदान भी विकारों से बच जाते हैं ॥ ७ ॥ (हे भाई !) नानक सत्य चिन्तन बतलाता है कि परमात्मा का नाम सदा अपने हृदय में टिकाए रख। जो मनुष्य परमात्मा की भक्ति के रंग में रँग जाते हैं, उन्हें (विकारों से) छुटकारा पाने का दरवाज़ा मिल जाता है ॥ ८ ॥ २ ॥ २४ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ आसा आस करे सभु कोई। हुकमै बूझै निरासा होई। आसा विचि सुते कई लोई। सो जागै जागावै सोई ॥ १ ॥ सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु नावै भुख न जाई। नामे त्रिसना अगनि बुझै नामु मिलै तिसै रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलि कीरति सबदु पछानु। एहा भगति चूकै अभिमानु। सतिगुरु सेविऐ होवै परवानु। जिनि आसा कीती तिस नो जानु ॥ २ ॥ तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाए। करि किरपा नामु मंनि वसाए। इहु सिरु दीजै आपु गवाए। हुकमै बूझे सदा सुखु पाए ॥ ३ ॥ आपि करे तै आपि कराए। आपे गुरमुखि नामु वसाए। आपि भुलावै आपि मारगि पाए। सचै सबदि सचि समाए ॥ ४ ॥ सचा सबदु सची है बाणी। गुरमुखि जुगि जुगि आखि वखाणी। मनमुखि मोहि भरमि भोलाणी। बिनु नावै सभ फिरै बउराणी ॥ ५ ॥ तीनि भवन महि एका माइआ। मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ द्रिड़ाइआ। बहु करम कमावै दुखु सबाइआ। सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥ ६ ॥ अंम्रितु

मीठा सबदु वीचारि। अनदिनु भोगे हउमै मारि। सहजि अनंदि किरपा धारि। नामि रते सदा सचि पिआरि ॥ ७ ॥ हरि जपि पड़ीऐ गुर सबदु वीचारि। हरि जपि पड़ीऐ हउमै मारि। हरि जपीऐ भइ सचि पिआरि। नानक नामु गुरमति उर धारि ॥ ८ ॥ ३ ॥ २५ ॥

हर एक जीव आशा ही आशा बनाता रहता है। जो मनुष्य परमात्मा की रज़ा को समझ लेता है, वह लालसाओं के जाल से निकल जाता है। (हे भाई!) अनगिनत दुनिया लालसाओं (के जाल) में (फँसकर) सोई हुई है। वही मनुष्य इस (निद्रा में से) जागता है, जिसे परमात्मा आप जगाता है ॥ १ ॥ (हे भाई!) तृष्णा की आग परमात्मा के नाम के द्वारा ही बुझती है, यह नाम उस मालिक की रज़ा अनुसार मिलता है, उसी की कृपा से गुरु ने हरि-नाम (स्मरण करना) सिखा दिया। (हे भाई!) हरि-नाम के बिना (माया वाली) भूख दूर नहीं होती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत में परमात्मा की गुणस्तुति करता रह, गुरु के शब्द से जान-पहचान किए रख। परमात्मा की भक्ति ही है, (जिससे) अहंकार दूर होता है और गुरु की बतलाई सेवा करने से मनुष्य परमात्मा की सेवा में स्वीकृत होता है। (हे भाई! इन लालसाओं के जाल से निकलने के लिए) उस परमात्मा के साथ गहरे सम्बन्ध बना, जिसने लालसा (मनुष्य के मन में) पैदा की है ॥ २ ॥ जो (गुरु अपना) शब्द सुनाता है और कृपा करके परमात्मा का नाम मन में बसाता है, उसे कौन सी भेंट देनी चाहिए? (हे भाई!) आपाभाव दूर करके अपना यह सिर भेंट करना चाहिए, (गुरु के प्रति समर्पण करनेवाला.) वह परमात्मा की रज़ा को समझकर सदा आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है ॥ ३ ॥ परमात्मा सब कुछ आप ही कर रहा है और आप ही जीवों से कराता है। वह आप ही गुरु द्वारा (मनुष्य के मन में अपना) नाम बसाता है। परमात्मा आप ही कुमार्गगामी करता है और आप ही सन्मार्ग पर डालता है। (प्रभु-नाम का प्रेमी) मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति के शब्द में जुड़कर सत्यस्वरूप हरि-नाम में लीन रहता है ॥ ४ ॥ सत्यस्वरूप प्रभु की वाणी एवं उसका शब्द ही प्रत्येक युग में दुनिया, गुरु के मार्गदर्शन से कहती आई है। परन्तु स्वेच्छाचारी मनुष्य माया के मोह में फँसा रहा, माया की दुबिधा में पड़कर कुमार्गगामी बना रहा। (हे भाई!) परमात्मा के नाम से ख़ाली रहकर दुनिया हमेशा भ्रमवश भटकती रही है ॥ ५ ॥ तीनों भुवनों में एक माया का ही प्रभाव चला आ रहा है। मूर्ख मनुष्य ने (स्मृति-शास्त्र आदि) पढ़-पढ़कर माया का प्रेम ही दृढ़ किया। मूर्ख मनुष्य अनेक धार्मिक कर्म करता है और केवल दुख ही पाता है। गुरु द्वारा बतलाई सेवा करके ही सत्यस्वरूप

शाश्वत आनन्द पाता है ॥ ६ ॥ हे भाई ! गुरु के शब्द को विचारकर (और, भीतर से) अहंकार दूर करके (भाग्यशाली जीव) आत्मिक जीवन देनेवाला स्वादिष्ट नाम-रस हर वक्त भोग सकता है। (गुरु) कृपा करके उसे आत्मिक स्थिरता में टिकाए रखता है। (हे भाई !) परमात्मा के नाम-रंग में रँगे हुए मनुष्य सदा प्रभु-प्रेम में मग्न रहते हैं और सत्यस्वरूप हरि-नाम में लीन रहते हैं ॥ ७ ॥ हे भाई ! गुरु के शब्द को अपने मस्तिष्क में टिकाकर, अहंकार दूर करके परमात्मा के नाम का जाप करना चाहिए, परमात्मा का नाम पढ़ना चाहिए; परमात्मा के भय-सम्मान में रहकर सत्यस्वरूप हरि के प्रेम में मस्त होकर हरि-नाम का जाप करना चाहिए। हे नानक ! (कह— हे भाई !) गुरु की शिक्षा लेकर परमात्मा का नाम अपने हृदय में टिकाए रख ॥ ८ ॥ ३ ॥ २५ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥ गुर ते सांति ऊपजै जिनि त्रिसना अगनि बुझाई। गुर ते नामु पाईऐ वडी वडिआई ॥ १ ॥ एको नामु चेति मेरे भाई। जगतु जलंदा देखि कै भजि पए सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर ते गिआनु ऊपजै महा ततु बीचारा। गुर ते घरु दरु पाइआ भगती भरे भंडारा ॥ २ ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ बूझै वीचारा। गुरमुखि भगति सलाह है अंतरि सबदु अपारा ॥ ३ ॥ गुरमुखि सूखु ऊपजै दुखु कदे न होई। गुरमुखि हउमै मारीऐ मनु निरमलु होई ॥ ४ ॥ सतिगुरि मिलिऐ आपु गइआ त्रिभवण सोझी पाई। निरमल जोति पसरि रही जोती जोति मिलाई ॥ ५ ॥ पूरै गुरि समझाइआ मति ऊतम होई। अंतरु सीतलु सांति होइ नामे सुखु होई ॥ ६ ॥ पूरा सतिगुरु तां मिलै जां नदरि करेई। किलविख पाप सभ कटीअहि फिरि दुखु बिघनु न होई ॥ ७ ॥ आपणै हथि वडिआईआ दे नामे लाए। नानक नामु निधानु मनि वसिआ वडिआई पाए ॥ ८ ॥ ४ ॥ २६ ॥

हे मेरे भाई ! जिस गुरु ने तृष्णा की आग बुझा दी है, (तू उसकी शरण ले), गुरु द्वारा ही आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है। हे भाई ! गुरु द्वारा परमात्मा का नाम मिलता है, जिससे लोक-परलोक में बड़ा आदर मिलता है ॥ १ ॥ हे भाई ! (विकारों की अग्नि से बचने के लिए) एक परमात्मा का नाम स्मरण करता रह। विश्व को (विकारों में) जलता देखकर मैं तो (गुरु की) शरण में दौड़कर आ गया हूँ (जिसने मुझे नाम

की देन दी है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरु द्वारा आत्मिक जीवन की सूझ पैदा होती है, आत्मिक जीवन की सूझ ही सबसे बड़ी वास्तविकता है और श्रेष्ठ विचार है। (हे भाई !) मैंने गुरु द्वारा ही परमात्मा का ठिकाना पाया है और परमात्मा की भक्ति के खज़ाने (मेरे भीतर) भर गए हैं ॥ २ ॥ हे मेरे भाई ! गुरु की शरण लेकर ही प्रभु का नाम स्मरण किया जा सकता है। (गुरु का शरणागत होकर ही) इस विचार को समझ सकता है। गुरु का शरणागत होकर परमात्मा की गुणस्तुति प्राप्त होती है, हृदय में अनन्त प्रभु की गुणस्तुति का शब्द आ जुड़ता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य गुरु के सम्मुख रहता है, उसके भीतर आत्मिक आनन्द पैदा हो जाता है; उसे कभी भी दुख स्पर्श नहीं करता। गुरु का शरणागत होकर भीतर से अहंभावना दूर की जा सकती है, मन पवित्र हो जाता है ॥ ४ ॥ हे भाई ! यदि गुरु मिल जाए तो अहंकार का नाश हो जाता है, यह ज्ञान हो जाता है कि परमात्मा तीनों ही भुवनों में व्यापक है, सर्वत्र परमात्मा की ही पवित्र ज्योति प्रकाशमान है, (इस प्रकार) परमात्मा की ज्योति में सुरति जुड़ जाती है ॥ ५ ॥ (हे भाई !) (जिस मनुष्य को) पूर्णगुरु ने ज्ञान दे दिया, (उसकी) बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है, उसका हृदय (विकारों की जलन से बचकर) शान्त हुआ रहता है और हरि-नाम के द्वारा उसे आनन्द प्राप्त होता है ॥ ६ ॥ (लेकिन) पूर्णगुरु तब ही मिलता है, जब परमात्मा आप कृपादृष्टि करता है। (गुरु से मिलाप होने पर) उसके सारे पाप-विकार समाप्त हो जाते हैं, उसे पुनः कोई दुख स्पर्श नहीं करता, उसकी जीवन-यात्रा में कोई रुकावट नहीं पड़ती ॥ ७ ॥ हे नानक ! (तमाम) महानताएँ परमात्मा के अपने हाथ में हैं, वह आप ही (प्रतिष्ठा) देकर (जीव को) अपने नाम में जोड़ता है। (जिस मनुष्य के) मन में उसका नाम-भण्डार आ जाता है, (वह लोक-परलोक में) आदर-सत्कार पाता है ॥ ८ ॥ ४ ॥ २६ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ सुणि मन मंनि वसाइ तूं आपे आइ मिलै मेरे भाई। अनदिनु सची भगति करि सचै चितु लाई ॥ १ ॥ एको नामु धिआइ तूं सुखु पावहि मेरे भाई। हउमै दूजा दूरि करि वडी वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु भगती नो सुरिनर मुनिजन लोचदे विणु सतिगुर पाई न जाइ। पंडित पड़दे जोतिकी तिन बूझ न पाइ ॥ २ ॥ आपै थै सभु रखिओनु किछु कहणु न जाई। आपे देइ सु पाईऐ गुरि बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ जीअ जंत सभि तिस दे सभना का सोई। मंदा किसनो आखीऐ जे दूजा होई ॥ ४ ॥ इको हुकमु वरतदा एका सिरिकारा।

आपि भवाली दितीअनु अंतरि लोभु विकारा ॥ ५ ॥ इक आपे गुरमुखि कीतिअनु बूझनि वीचारा । भगति भी ओना नो बखसीअनु अंतरि भंडारा ॥ ६ ॥ गिआनीआ नो सभु सचु है सचु सोझी होई । ओइ भुलाए किसै दे न भुलन्ही सचु जाणनि सोई ॥ ७ ॥ घर महि पंच वरतदे पंचे वीचारी । नानक बिनु सतिगुर वसि न आवन्ही नामि हउमै मारी ॥ ८ ॥ ५ ॥ २७ ॥

हे मेरे मन ! सुन, तू अपने भीतर (परमात्मा का नाम) टिकाए रख । हे मेरे भाई ! वह परमात्मा नाम-स्मरण द्वारा आप ही मिलता है । हे भाई ! प्रत्येक पल परमात्मा की भक्ति करता रह, यही सत्यस्वरूप वस्तु है; सत्यस्वरूप परमात्मा में अपना हृदय जोड़े रख ॥ १ ॥ हे मेरे भाई ! एक परमात्मा का स्मरण किया कर, (इस प्रकार) सुख प्राप्त करेगा, और बहुत आदर मिलेगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! देवता तथा ऋषि-मुनि भी यह हरि-भक्ति करने की इच्छा करते हैं, पर गुरु की शरण लिये बिना यह देन नहीं मिलती । पण्डित (वेद-शास्त्र आदि) पढ़ते रहे, ज्योतिषी भी ग्रन्थों का अध्ययन करते रहे, परन्तु उन्हें हरि-भक्ति की समझ न आई ॥ २ ॥ लेकिन, हे भाई ! परमात्मा ने यह सब कुछ अपने वश में रखा हुआ है, कुछ नहीं कहा जा सकता । गुरु ने यह बात समझाई है कि जो कुछ वह प्रभु आप ही देता है, वही हमें मिल सकता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! जगत के सारे जीव-जन्तु उस प्रभु के ही बनाए हुए हैं, वह आप ही सबका पति है, किसी जीव को दुष्ट नहीं कहा जा सकता, (दुष्ट तब ही कहा जाए यदि उनमें) परमात्मा के अतिरिक्त कोई दूसरा बसता हो ॥४॥ हे भाई ! जगत में एक परमात्मा का ही हुक्म चल रहा है, हरेक को वही काम करना है, जो परमात्मा की ओर से उसके सिर पर लिखा गया है । जिन जीवों को परमात्मा ने आप (माया-मोह की) दुबिधा दी, उनके भीतर लोभ आदि विकार ज़ोर पकड़ गए ॥ ५ ॥ कई मनुष्यों को प्रभु ने आप ही गुरु के सम्मुख रहनेवाले बना दिया, वे वास्तविक ज्ञान समझने लगे । उन्हें परमात्मा ने अपनी भक्ति की देन दे दी, उनके भीतर नाम-धन के खज़ाने भर गए ॥ ६ ॥ हे भाई ! सही आत्मिक सूझ वाले मनुष्यों को सर्वत्र सत्यस्वरूप प्रभु ही दिखता है । (प्रभु-कृपा से) यह समझ आ जाती है । यदि कोई मनुष्य (अपने निश्चय से) हटाना चाहे तो वे पथ-भ्रष्ट नहीं होते, वह (सर्वत्र) सत्यस्वरूप प्रभु को ही बसता समझते हैं ॥७॥ (कामादिक) पाँचों उन ज्ञानियों के हृदय में भी बसते हैं, लेकिन वे पाँचों ज्ञानी बन जाते हैं । हे नानक ! (ये कामादिक) पाँचों गुरु की शरण

लिये बिना नियंत्रित नहीं होते। हे भाई! परमात्मा के नाम में जुड़ने से ही अहंभावना दूर की जा सकती है॥ ८॥ ५॥ २७॥

॥ आसा महला ३॥ घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही। गुरपरसादी पाईऐ अंतरि कपट खुलाही ॥१॥ सतिगुर ते हरि पाईऐ भाई। अंतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीआ दिखाई॥ १॥ रहाउ॥ हरि का गाहकु होवै सो लए पाए रतनु वीचारा। अंदरु खोलै दिब दिसटि देखै मुकति भंडारा॥ २॥ अंदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा। मन चिंदिआ फलु पाइसी फिरि होइ न फेरा॥ ३॥ पारखीआ वथु समालि लई गुर सोझी होई। नामु पदारथु अमुलु सा गुरमुखि पावै कोई॥ ४॥ बाहरु भाले सु किआ लहै वथु घरै अंदरि भाई। भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति गवाई॥ ५॥ घरु दरु छोडे आपणा पर घरि झूठा जाई। चोरै वांगू पकड़ीऐ बिनु नावै चोटा खाई॥ ६॥ जिन्ही घरु जाता आपणा से सुखीए भाई। अंतरि ब्रहमु पछाणिआ गुर की वडिआई॥ ७॥ आपे दानु करे किसु आखीऐ आपे देइ बुझाई। नानक नामु धिआइ तूं दरि सचै सोभा पाई॥ ८॥ ६॥ २८॥

(परमात्मा का नाम-) ख़ज़ाना (मनुष्य के) हृदय के भीतर ही है, बाहर जंगल आदि में कुछ नहीं मिलता। लेकिन यह गुरु की कृपा द्वारा ही मिलता है। गुरु-कृपा द्वारा भीतरी द्वार खुल जाते हैं ॥१॥ हे भाई! गुरु द्वारा ही परमात्मा मिलता है। (यों तो हरेक मनुष्य के) भीतर नाम-ख़ज़ाना मौजूद है, लेकिन गुरु ने ही (यह ख़ज़ाना) दिखाया है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई! जो मनुष्य परमात्मा के नाम-धन का ग्राहक बनता है, वह (गुरु के द्वारा) प्राप्त कर लेता है, वह आत्मिक जीवन का बहुमूल्य विचार प्राप्त कर लेता है। (माया-मोह द्वारा बन्द) हृदय वह (गुरु-कृपा से) खोल लेता है, आतमदृष्टि द्वारा देखता है कि माया-मोह से छुटकारा दिलाने वाले नाम-धन के ख़ज़ाने भरे पड़े हैं॥ २॥ हे भाई! मनुष्य के हृदय में नाम-धन के अनेक ख़जाने मौजूद हैं, जीवात्मा भी भीतर ही बसता है। (गुरु द्वारा सूझ-बूझ होने पर) मनोवांछित फल प्राप्त करता है और दोबारा इसे जन्म-मरण का चक्र नहीं रहता॥ ३॥ हे भाई! जिन्हें गुरु द्वारा बताई सूझ मिल गई, उन आत्मिक जीवन की परख करनेवालों ने नाम-ख़ज़ाना अपने हृदय में सँभाल लिया। प्रभु का नाम-ख़ज़ाना किसी दुनियावी क़ीमत द्वारा नहीं मिल सकता। गुरु की शरण लेकर ही मनुष्य

परमात्मा को प्राप्त कर सकता है ॥ ४ ॥ हे भाई ! नाम-ख़ज़ाना हृदय के भीतर ही है, जो आदमी जंगल आदि में ढूँढ़ता फिरता है, उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता। स्वेच्छाचारी मनुष्य भ्रम में कुमार्गगामी हुआ सारा जगत खोजता फिरता है और प्रतिष्ठा गवाँ देता है ॥ ५ ॥ जैसे कोई झूठा व्यक्ति अपना घर-बार छोड़ देता है और पराये घर जाता है, वह चोर के तुल्य पकड़ा जाता है; ऐसे ही परमात्मा के नाम से ख़ाली रहकर मनुष्य (लोक-परलोक में) चोटें खाता है ॥ ६ ॥ हे भाई ! जिन मनुष्यों ने अपना (हृदय-) घर भली प्रकार समझ लिया है, इसे पहचान लिया है कि परमात्मा (हमारे) भीतर ही बसता है, वे सुखी जीवन बिताते हैं। (लेकिन हे भाई !) यह सतिगुरु की ही कृपा है, जिससे इस ज्ञान की प्राप्ति होती है ॥ ७ ॥ हे भाई ! परमात्मा आप ही नाम की देन करता है, किसी दूसरे को कुछ नहीं कहा जा सकता, वह प्रभु आप ही नाम की समझ देता है। हे नानक ! तू सदा हरि-नाम स्मरण करता रह और सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर शोभा प्राप्त कर ॥ ८ ॥ ६ ॥ २८ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ आपै आपु पछाड़िआ सादु मीठा भाई। हरि रसि चाखिऐ मुकतु भए जिन्हा साचो भाई ॥ १ ॥ हरि जीउ निरमल निरमला निरमल मनि वासा। गुरमती सालाहीऐ बिखिआ माहि उदासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु सबदै आपु न जापई सभ अंधी भाई। गुरमती घटि चानणा नामु अंति सखाई ॥ २ ॥ नामे ही नामि वरतदे नामे वरतारा। अंतरि नामु मुखि नामु है नामे सबदि वीचारा ॥ ३ ॥ नामु सुणीऐ नामु मंनीऐ नामे वडिआई। नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु पाई ॥ ४ ॥ नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई। नामे ही सुखु ऊपजै नामे सरणाई ॥ ५ ॥ बिनु नावै कोइ न मंनीऐ मनमुखि पति गवाई। जम पुरि बाधे मारीअहि बिरथा जनमु गवाई ॥ ६ ॥ नामै की सभ सेवा करै गुरमुखि नामु बुझाई। नामहु ही नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥ ७ ॥ जिस नो देवै तिसु मिलै गुरमती नामु बुझाई। नानक सभ किछु नावै कै वसि है पूरै भागि को पाई ॥ ८ ॥ ७ ॥ २९ ॥

हे भाई ! परमात्मा का नाम-रस चखने से मनुष्य अपने ही आत्मिक जीवन को खोजने लग जाता है और इस प्रकार नाम-रस का स्वाद मीठा लगने लगता है। (नाम-रस द्वारा) जिन्हें सत्यस्वरूप परमात्मा प्यारा लगने लगता है, वे माया-मोह से आज़ाद हो जाते हैं ॥ १ ॥ हे भाई !

परमात्मा बिल्कुल पवित्र है, उसका वास पवित्र मन में ही हो सकता है। यदि गुरु की शिक्षा पर चलकर परमात्मा की गुणस्तुति करें तो माया में रहते हुए भी माया से निर्लिप्त रहा जा सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरु के शब्द के बिना आत्मिक जीवन को परखा नहीं जा सकता। (शब्द के बिना) सारी दुनिया अन्धी हुई रहती है। गुरु की शिक्षा के द्वारा हृदय में बसा नाम प्रकाश देता है, अन्तिम समय में भी हरि-नाम ही साथी बनता है ॥ २ ॥ (गुरमुख) सदा हरि-नाम में ही लीन रहते हैं, नाम में ही लीन हो दुनियावी कामकाज करते हैं, उनके हृदय में नाम टिका रहता है, उनके मुँह में नाम बसता है, वे गुरु-शब्द के द्वारा हरि-नाम का ही विचार करते रहते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! प्रत्येक पल हरि-नाम सुनना चाहिए, हरि-नाम में मन रमाना चाहिए, हरि-नाम के प्रभाव से (लोक-परलोक) में आदर मिलता है। जो मनुष्य सर्वदा प्रत्येक पल हरि की गुणस्तुति करता है, वह हरि-नाम के द्वारा हरि-चरणों में ठिकाना प्राप्त कर लेता है ॥ ४ ॥ हे भाई ! हरि-नाम के द्वारा हृदय में प्रकाश पैदा होता है, (सर्वत्र) शोभा मिलती है, आत्मिक आनन्द प्राप्त होता है और जीव हरि की ही शरण लिये रहता है ॥ ५ ॥ हे भाई ! नाम-स्मरण के बिना किसी भी मनुष्य को दरबार में आदर नहीं मिलता, स्वेच्छाचारी मनुष्य (दरबार में) प्रतिष्ठा गवाँ बैठता है। ऐसे मनुष्य यमपुरी में बँधे मार खाते हैं और वे अपना मनुष्य-जन्म व्यर्थ गवाँ जाते हैं ॥ ६ ॥ हे भाई ! सारी दुनिया हरि-नाम (जपनेवाले) की सेवा करती है, नाम जपने की सूझ गुरु देता है। हरि-नाम (जपनेवाले) को ही आदर मिलता है, नाम के प्रभाव से (लोक-परलोक में) प्रतिष्ठा मिलती है ॥ ७ ॥ लेकिन, हे भाई ! हरि-नाम केवल उसी मनुष्य को मिलता है, जिसे हरि आप देता है, जिसे गुरु की शिक्षा पर चलाकर नाम (स्मरण की) सूझ देता है। हे नानक ! हरेक (मान-सम्मान) हरि-नाम के वश में है, लेकिन कोई विरला मनुष्य सौभाग्यवश हरि-नाम प्राप्त करता है ॥ ८ ॥ ७ ॥ २९ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ दोहागणी महलु न पाइन्ही न जाणनि पिर का सुआउ। फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥ १ ॥ इहु मनूआ किउ करि वसि आवै। गुरपरसादी ठाकीऐ गिआन मती घरि आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु। सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥ २ ॥ सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ। पिर कै प्रेमि मोहीआ मिलि प्रीतम सुखु पाइ ॥ ३ ॥ गिआन अपारु सीगारु है सोभावंती नारि। सा सभराई सुंदरी

पिर कै हेति पिआरि ॥ ४ ॥ सोहागणी विचि रंगु रखिओनु सचै अलखि अपारि । सतिगुरु सेवनि आपणा सचै भाइ पिआरि ॥ ५ ॥ सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु । प्रेम पिरमलु तनि लावणा अंतरि रतनु वीचारु ॥ ६ ॥ भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ । बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥ ७ ॥ हउ हउ करदी सभ फिरै बिनु सबदै हउ न जाइ । नानक नामि रते तिन हउमै गई सचै रहे समाइ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ३० ॥

अभागिन जीव-स्त्रियाँ प्रभु-पति का ठिकाना नहीं प्राप्त कर सकतीं, वे प्रभु-पति के मिलाप का आनन्द नहीं जान सकतीं। वे कटु वचन बोलती हैं, विनम्रता नहीं जानतीं, माया का प्रेम ही उनकी ज़िन्दगी का प्रेम बना रहता है ॥ १ ॥ (हे भाई ! क्या तुम्हें पता है कि) मन नियंत्रण में कैसे होता है ? (इसे) गुरु की कृपा द्वारा ही (विकारों से) नियंत्रित किया जा सकता है, (गुरु द्वारा दिए गए) ज्ञान के सहारे (यह मन) भीतर आ टिकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सौभाग्यशाली स्त्रियों को अपने प्रेम की देन देकर परमात्मा ने आप सुन्दर जीवन वाली बना दिया है। वे सदा गुरु की रज़ा में जीवन गुज़ारती हैं। नाम तथा आत्मिक स्थिरता में टिके रहना उनके आत्मिक जीवन का श्रृंगार है ॥ २ ॥ वे जीव-स्त्रियाँ सदा अपने प्रभु-पति को हृदय में बसाए रखती हैं, प्रेम के प्रभाव से (उनका हृदय प्रभु-पति के लिए) शाश्वत सेज बना रहता है, (इस प्रकार) आत्मिक आनन्द प्राप्त करके प्रियतम प्रभु को मिलकर वे प्रभु-स्वामी के प्रेम में डूबी रहती हैं ॥ ३ ॥ जिस जीव-स्त्री पर ईश्वर-कृपा होती है, वह जीव-स्त्री शोभा पाती है, गुरु द्वारा दिया गया उसके पास अक्षुण्ण (आत्मिक) श्रृंगार है। प्रभु-पति के प्रेम द्वारा वह सुन्दर जीवन वाली बन जाती है, वह प्रभु-बादशाह की पटरानी बन जाती है ॥ ४ ॥ सत्यस्वरूप तथा अपरम्पार प्रभु ने सुहागिन स्त्रियों के हृदय में अपना प्रेम टिकाया हुआ है, वे गुरु द्वारा बतलाई सेवा करती रहती हैं और सत्यस्वरूप परमात्मा के प्रेम में (मस्त रहती हैं) ॥ ५ ॥ हे भाई ! जिन जीव-स्त्रियों के सिर पर पति-प्रभु का हाथ है, उन्होंने पति-प्रभु के गुणों को अपने जीवन का गहना बनाया हुआ है, प्रभु के गुणों का हार बनाकर अपने गले में पहना हुआ है। वे प्रभु-पति के प्रेम की सुगन्धि को अपने शरीर पर लगाती हैं और अपने हृदय में प्रभु के गुणों के चिन्तन का रत्न सँभालकर रखती हैं ॥ ६ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य प्रभु की भक्ति के रंग में रँग जाते हैं, वे उच्च जाति वाले हैं। गुरु के शब्द में जुड़ने से ही जाति उच्च बनती

है और उसी से खानदान ऊँचा होता है। प्रभु के नाम से खाली दुनिया ही निम्न जाति वाली है, वह व्यर्थ बातों में ऐसे प्रसन्न है जैसे विष्ठा का कीड़ा विष्ठा में ही प्रसन्न रहता है॥ ७॥ सारी दुनिया अहंकार में मदमस्त हुई फिरती है, (लेकिन) गुरु के शब्द के बिना अहंभावना दूर नहीं हो सकती। हे नानक ! जो व्यक्ति परमात्मा के नाम-रंग में रँगे जाते हैं, उनकी अहंभावना दूर हो जाती है, वे सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन रहते हैं॥ ८॥ ८॥ ३०॥

॥ आसा महला ३ ॥ सचे रते से निरमले सदा सची सोइ। ऐथै घरि घरि जापदे आगै जुगि जुगि परगटु होइ॥ १॥ ए मन रूढ़े रंगुले तूं सचा रंगु चड़ाइ। रूड़ी बाणी जे रपै ना इहु रंगु लहै न जाइ॥ १॥ रहाउ॥ हम नीच मैले अति अभिमानी दूजै भाइ विकार। गुरि पारसि मिलिऐ कंचनु होए निरमल जोति अपार॥ २॥ बिनु गुर कोइ न रंगीऐ गुरि मिलिऐ रंगु चड़ाउ। गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ॥ ३॥ भै बिनु लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ। बिनु भै करम कमावणे झूठे ठाउ न कोइ॥ ४॥ जिसनो आपे रंगे सु रपसी सत संगति मिलाइ। पूरे गुर ते सत संगति ऊपजै सहजे सचि सुभाइ॥ ५॥ बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर। जिन्हि कीते तिसै न जाणन्ही बिनु नावै सभि चोर॥ ६॥ इकि गुण विहाझहि अउगण विकणहि गुर कै सहजि सुभाइ। गुर सेवा ते नाउ पाइआ वुठा अंदरि आइ॥ ७॥ सभना का दाता एकु है सिरि धंधै लाइ। नानक नामे लाइ सवारिअनु सबदे लए मिलाइ॥ ८॥ ९॥ ३१॥

हे भाई ! जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु के (नाम-रंग) में रँगे जाते हैं, वे पवित्र जीवन वाले हो जाते हैं, उन्हें शाश्वत शोभा मिलती है, इस दुनिया में वे हर एक घर में प्रकट हो जाते हैं, आगे परलोक में भी उनकी शोभा सदा के लिए प्रकट हो जाती है॥ १॥ हे सुन्दर, रँगीले मन ! (तू अपने पर) प्रभु के शाश्वत नाम-रंग को चढ़ा। हे भाई ! यदि यह मन सुन्दर गुणस्तुति की वाणी द्वारा रँगा जाए, तो (इसका) रंग कभी नहीं उतरता, कभी दूर नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई ! माया के मोह तथा विकारों में ग्रस्त होकर हम जीव दुराचारी और अहंकारी बन जाते हैं, (लेकिन) पारस-गुरु के मिलने पर हम सोना बन जाते हैं और हमारे भीतर अनन्त प्रभु की पवित्र ज्योति जग पड़ती है॥ २॥ हे भाई ! गुरु

की शरण लिये बिना कोई मनुष्य (नाम-रंग से) रँगा नहीं जा सकता, यदि गुरु मिल जाए तभी नाम-रंग चढ़ता है। जो मनुष्य गुरु के भय-सत्कार के द्वारा या गुरु के प्रेम के द्वारा रँगे जाते हैं, गुणस्तुति के प्रभाव से सत्यस्वरूप प्रभु में वे लीन हो जाते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! भय-सत्कार के बिना (मन-कपड़े को) लाग नहीं लग सकती, मन साफ़-सुथरा नहीं हो सकता। इस भय-सत्कार के बिना यदि काम किए भी जाएँ तो भी झूठे मनुष्य को (प्रभु के पास) जगह नहीं मिलती ॥ ४ ॥ हे भाई ! सत्संगति में लाकर जिस मनुष्य को परमात्मा आप ही नाम-रंग चढ़ाता है, वही रँगा जायगा। सत्संगति पूर्णगुरु द्वारा मिलती है, (जिसे मिलती है वह) आत्मिक स्थिरता में, सत्यस्वरूप प्रभु-प्रेम में (मस्त रहता है) ॥ ५ ॥ सत्संगति के बिना सारे मनुष्य पशुओं, डंगरों की तरह घूमते फिरते हैं। जिस परमात्मा ने उन्हें पैदा किया है, उसके साथ मेल नहीं करते, उसके नाम के बिना तमाम उसके चोर हैं ॥ ६ ॥ कई मनुष्य ऐसे भी हैं, जो गुरु द्वारा आत्मिक स्थिरता में टिकते हैं, प्रभु-प्रेम में जुड़ते हैं, वे परमात्मा के गुण ख़रीदते हैं और उनके अवगुण बिक जाते हैं। गुरु द्वारा बताई सेवा द्वारा वे प्रभु का नाम रूपी सौदा प्राप्त कर लेते हैं, परमात्मा उनके भीतर आ बसता है ॥ ७ ॥ (लेकिन, हे भाई !) परमात्मा आप ही सब जीवों को सब कुछ देनेवाला है, वह आप ही हर एक जीव को धन्धे में लगाता है। हे नानक ! उसने आप ही जीवों के जीवन अपने नाम में जोड़कर सुन्दर बनाए हैं, उसने आप ही गुरु के शब्द के द्वारा जीवों को अपने चरण में लगाया है ॥ ८ ॥ ९ ॥ ३१ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ सभ नावै नो लोचदी जिसु क्रिपा करे सो पाए। बिनु नावै सभु दुखु है सुखु तिसु जिसु मंनि वसाए ॥ १ ॥ तूं बेअंतु दइआलु है तेरी सरणाई। गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि एकु है बहुबिधि स्रिसटि उपाई। हुकमे कार कराइदा दूजा किसु कहीऐ भाई ॥ २ ॥ बुझणा अबुझणा तुधु कीआ इह तेरी सिरिकार। इकना बखसिहि मेलि लैहि इकि दरगह मारि कढे कूड़िआर ॥३॥ इकि धुरि पवित पावन हहि तुधु नामे लाए। गुर सेवा ते सुखु ऊपजै सचै सबदि बुझाए ॥ ४ ॥ इकि कुचल कुचील विखलीपते नावहु आपि खुआए। ना ओन सिधि न बुधि है न संजमी फिरहि उतवताए ॥ ५ ॥ नदरि करे जिसु आपणी तिस नो भावनी लाए। सतु संतोखु इह संजमी मनु निरमलु सबदु सुणाए ॥ ६ ॥

लेखा पड़ि न पहूचीऐ कथि कहणै अंतु न पाइ। गुर ते कीमति पाईऐ सचि सबदि सोझी पाइ ॥ ७ ॥ इहु मनु देही सोधि तूं गुर सबदि वीचारि। नानक इसु देही विचि नामु निधानु है पाईऐ गुर कै हेति अपारि ॥ ८ ॥ १० ॥ ३२ ॥

(दुखों में फँसकर) समस्त दुनिया हरि-नाम चाहती है, लेकिन हरि-नाम वही प्राप्त करता है, जिस पर प्रभु आप कृपा करता है। हरि-नाम के बिना (जगत में) केवल दुख ही दुख है; सुख केवल उसे है, जिसके मन में प्रभु अपना नाम बसाता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम अनन्त हो, दया के स्रोत हो, मैं तेरी शरणागत हूँ। (तुम्हारा नाम) पूर्णगुरु द्वारा मिलता है और तेरे नाम के द्वारा सर्वत्र आदर मिलता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! परमात्मा ने यह कई रंगों की दुनिया पैदा की हुई है, हर एक के भीतर दुनिया में वह आप विद्यमान है। प्रभु अपने हुक्म अनुसार ही सब जीवों से काम कराता है, कोई दूसरा ऐसी सामर्थ्य वाला नहीं है ॥ २ ॥ हे प्रभु ! समझ और बेसमझी में यह खेल तूने बनाया है, हर एक जीव के सिर पर तेरे द्वारा बताया कामकाज है। कितने ही जीवों पर प्रभु कृपा करता है और कितने ही माया-ग्रस्त जीवों को अपने दरबार से धक्के मार कर बाहर निकाल देता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! कितने ही ऐसे हैं, जिन्हें तुमने आरम्भ से ही पवित्र जीवन वाले बना दिया है, तुमने उन्हें अपने नाम में जोड़ा हुआ है। गुरु द्वारा बतलाई सेवा से उन्हें आत्मिक आनन्द मिलता है। गुरु उन्हें सत्यस्वरूप हरि-नाम में जोड़कर (सही जीवन की) समझ देता है ॥ ४ ॥ हे भाई ! कई ऐसे मनुष्य हैं, जो चरित्रहीन, गन्दे और दुराचारी हैं; उन्हें परमात्मा ने अपने नाम से ख़ाली रखा है, उन्हें ज़िन्दगी में सफलता नहीं मिली, सुबुद्धि प्राप्त नहीं की, वे सदाचारी नहीं बने, डावाँडोल भटकते फिरते हैं ॥ ५ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य पर प्रभु कृपा-दृष्टि करता है, उसके अन्दर अपने नाम की श्रद्धा पैदा करता है, उसे (गुरु के द्वारा अपनी गुणस्तुति का) शब्द सुनाता है, उसका मन पवित्र हो जाता है। सेवा करनी, सन्तोष धारण करना —वह मनुष्य ऐसे आचरण वाला बन जाता है ॥ ६ ॥ (हे भाई ! प्रभु के गुणों का) हिसाब करके अन्त तक पहुँचा नहीं जा सकता, उसके गुण गिन-गिनकर, व्यक्त कर-करके गुणों की गिनती समाप्त नहीं की जा सकती। उस प्रभु की क़द्र-क़ीमत गुरु द्वारा ही मिलती है। गुरु अपने शब्द में जोड़ता है, गुरु सत्यस्वरूप हरि-नाम में जोड़ता है और सूझ-बूझ देता है ॥ ७ ॥ हे भाई ! तू अपने मन तथा तन को खोज और गुरु के शब्द में जुड़कर विचार कर। हे नानक ! सारे सुखों का ख़ज़ाना हरि-नाम शरीर के बीच में ही है; जो गुरु की अपार कृपा द्वारा ही मिलता है ॥ ८ ॥ १० ॥ ३२ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ सचि रतीआ सोहागणी जिना गुर कै सबदि सीगारि। घर ही सो पिरु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ १ ॥ अवगण गुणी बखसाइआ हरि सिउ लिव लाई। हरि वरु पाइआ कामणी गुरि मेलि मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि पिरु हदूरि न जाणन्ही दूजै भरमि भुलाइ। किउ पाइन्हि डोहागणी दुखी रैणि विहाइ ॥ २ ॥ जिन कै मनि सचु वसिआ सची कार कमाइ। अनदिनु सेवहि सहज सिउ सचे माहि समाइ ॥ ३ ॥ दोहागणी भरमि भुलाईआ कूड़ु बोलि बिखु खाहि। पिरु न जाणनि आपणा सुंञी सेज दुखु पाहि ॥ ४ ॥ सचा साहिबु एकु है मतु मन भरमि भुलाहि। गुर पूछि सेवा करहि सचु निरमलु मंनि वसाहि ॥ ५ ॥ सोहागणी सदा पिरु पाइआ हउमै आपु गवाइ। पिर सेती अनदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ ॥ ६ ॥ मेरी मेरी करि गए पलै किछु न पाइ। महलु नाही डोहागणी अंति गई पछुताइ ॥ ७ ॥ सो पिरु मेरा एकु है एकसु सिउ लिवलाइ। नानक जे सुखु लोड़हि कामणी हरि का नामु मंनि वसाइ ॥ ८ ॥ ११ ॥ ३३ ॥

जिन सुहागिन स्त्रियों ने गुरु के ज्ञान द्वारा अपना जीवन सुन्दर बना लिया है, वे सत्यस्वरूप प्रभु के नाम-रंग में रँग गईं; सत्यस्वरूप हरि की गुणस्तुति वाले गुरु-ज्ञान के द्वारा (प्रभु के गुणों को) विचार कर उन्होंने प्रभु-पति को अपने हृदय-घर में ही प्राप्त कर लिया ॥ १ ॥ जिस जीव-स्त्री ने परमात्मा के चरणों में सुरति जोड़ ली, उसने अपने अवगुण गुणों के द्वारा क्षमा करवा लिये, उस जीव-स्त्री ने प्रभु-पति का मिलाप प्राप्त कर लिया क्योंकि गुरु ने उसे प्रभु-चरणों में जोड़ दिया ॥१॥रहाउ॥ जो जीव-स्त्रियाँ माया की दुबिधा के कारण कुमार्गगामी होकर प्रभु-पति के साथ-साथ रहते हुए उस प्रभु को नहीं समझतीं, वे अभागिन प्रभु-पति को नहीं मिल सकतीं। उनकी ज़िन्दगी की रात्रि दुखों में ही बीत जाती है ॥ २ ॥ सत्यस्वरूप हरि की गुणस्तुति की कमाई करके जिनके मन में सत्यस्वरूप हरि आ बसता है, वे सत्यस्वरूप प्रभु में लीन होकर आत्मिक स्थिरता से हर वक्त उस प्रभु की सेवा करती रहती हैं ॥ ३ ॥ अभागिन जीव-स्त्रियाँ माया की दुबिधा के कारण कुमार्गगामी हो जाती हैं, वे व्यर्थ बोल-बोलकर (माया के मोह का) ज़हर खाती रहती हैं। वे कभी भी अपने प्रभु-पति के साथ मेल नहीं करतीं, उनके हृदय की सेज सदा ख़ाली रहती है, इसलिए वे दुख ही पाती रहती हैं ॥ ४ ॥ हे मेरे मन ! माया

की दुबिधा में पड़कर कहीं कुमार्गगामी न हो जाओ क्योंकि सत्यस्वरूप केवल मालिक-प्रभु ही है। यदि तू गुरु की शिक्षा लेकर उसकी सेवा करेगा तो उस सत्यस्वरूप पवित्र प्रभु को अपने भीतर बसा लेगा ॥ ५ ॥ भाग्यशाली जीव-स्त्रियाँ अपने भीतर से अहंकार दूर करके सत्यस्वरूप प्रभु को मिलती हैं, वे प्रत्येक समय प्रभु-पति के चरणों में जुड़ी रहती हैं, उन (के हृदय) की सेज स्थिर हो जाती है और वे सदा आत्मिक आनन्द प्राप्त करती हैं ॥ ६ ॥ हे भाई ! जो व्यक्ति जगत से यही कहते चले गये कि यह मेरी माया है, यह मेरी मिल्कियत है, उनके हाथ पल्ले कुछ भी न पड़ा। अभागिन जीव-स्त्रियों को परमात्मा के चरणों में ठिकाना नहीं मिलता, वे अन्त में निराश होकर ही दुनिया से जाती हैं ॥ ७ ॥ हे जीव-स्त्री ! सत्यस्वरूप प्रभु-पति केवल एक ही है, उस एक के चरणों में सुरति जोड़े रख। हे नानक ! (कह—) हे जीव-स्त्री ! यदि तू सुख पाना चाहती है, तो उस परमात्मा का नाम अपने हृदय में बसाए रख ॥ ८ ॥ ११ ॥ ३३ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ अंम्रितु जिन्हा चखाइओनु रसु आइआ सहजि सुभाइ। सचा वेपरवाहु है तिसनो तिलु न तमाइ ॥ १ ॥ अंम्रितु सचा वरसदा गुरमुखा मुखि पाइ। मनु सदा हरीआवला सहजे हरि गुण गाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि सदा दोहागणी दरि खड़ीआ बिललाहि। जिन्हा पिर का सुआदु न आइओ जो धुरि लिखिआ सु कमाहि ॥ २ ॥ गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु। जो इतु लाहै लाइअनु भगती देइ भंडार ॥ ३ ॥ गुरमुखि सदा सोहागणी भै भगति सीगारि। अनदिनु रावहि पिरु आपणा सचु रखहि उरधारि ॥ ४ ॥ जिन्हा पिरु राविआ आपणा तिन्हा विटहु बलि जाउ। सदा पिर कै संगि रहहि विचहु आपु गवाइ ॥ ५ ॥ तनु मनु सीतलु मुख उजले पिर कै भाइ पिआरि। सेज सुखाली पिरु रवै हउमै त्रिसना मारि ॥ ६ ॥ करि किरपा घरि आइआ गुर कै हेति अपारि। वरु पाइआ सोहागणी केवल एकु मुरारि ॥ ७ ॥ सभे गुनह बखसाइ लइओनु मेले मेलणहारि। नानक आखणु आखीऐ जे सुणि धरे पिआरु ॥ ८ ॥ १२ ॥ ३४ ॥

जिन्हें आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल परमात्मा ने आप चखाया, उन्हें आत्मिक स्थिरता में, प्रेम में टिककर उसका आस्वादन हो गया; (उन्हें ज्ञान हो गया कि) वह शाश्वत प्रभु बेपरवाह है, उसे तनिक भी लोभ-लालच

नहीं है ॥ १ ॥ हे भाई ! सत्यस्वरूप और आत्मिक जीवन का दाता नाम-जल (सर्वत्र) बरस रहा है; लेकिन यह उन मनुष्यों के मुँह में गिरता है, जो गुरु के सम्मुख रहते हैं। आत्मिक स्थिरता में टिक कर, हरि के गुण गा-गाकर उनका मन सदा प्रसन्न रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्वेच्छाचारिणी जीव-स्त्रियाँ सदा अभागिन रहती हैं, वे प्रभु के द्वार पर खड़ी बिलखती हैं। जिन्हें प्रभु-पति के मिलाप का कभी आस्वादन न हुआ, वे वही मनमुखता वाले कर्म करती रहती हैं, जो प्रभु के दरबार से उनके पूर्वकृत कर्मों के अनुसार उनके मस्तक पर लिखे पड़े हैं ॥ २ ॥ गुरु के सम्मुख रहनेवाला हरि-नाम बोता है, यह नाम ही वहाँ उगता है, सत्यस्वरूप नाम को ही वह अपना वाणिज्य-व्यापार बनाता है। जिन मनुष्यों को प्रभु ने इस लाभप्रद काम में लगाया है, उन्हें वह अपनी भक्ति के ख़ज़ाने दे देता है ॥ ३ ॥ गुरु के सम्मुख रहनेवाली जीव-स्त्रियाँ सदा भाग्यशाली हैं, वे प्रभु के भय-सम्मान में रहकर प्रभु-भक्ति के द्वारा अपना आत्मिक जीवन सुन्दर बनाती हैं, वे हर वक्त प्रभु-पति का मिलाप पाती हैं, वे सत्यस्वरूप हरि-नाम को अपने हृदय में टिकाकर रखती हैं ॥ ४ ॥ हे भाई ! मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने सदा प्रभु-पति के मिलाप को महसूस किया है, वे अपने भीतर से आपाभाव दूर कर सदा प्रभु-पति के चरणों में जुड़ी रहती हैं ॥ ५ ॥ प्रभु-पति के प्रेम में रहनेवाली जीव-स्त्रियों का मन तथा हृदय शान्त रहता है, उनके मुँह (लोक-परलोक में) प्रकट हो जाते हैं। अपने भीतर अहंकार को, तृष्णा को मारकर उनकी हृदय-सेज सुखदायक हो जाती है, प्रभु-पति (उस सेज पर) सदा टिका रहता है ॥ ६ ॥ गुरु की अपार कृपा से प्रभु कृपालु जिस जीव-स्त्री के हृदय-घर में आ बसता है, वह सुहागिन उस प्रभु-पति को मिलती है जो अद्वितीय है ॥ ७ ॥ हे भाई ! गुरु की शरण लेकर जिस मनुष्य ने प्रभु की गुणस्तुति की, उसने सारे पाप क्षमा करवा लिये, भेंट कराने की सामर्थ्य रखनेवाले प्रभु ने उसे अपने चरणों में मिला लिया। हे नानक ! (कह— हे भाई !) प्रभु की गुणस्तुति का बोल ही बोलना चाहिए, जिसे सुनकर वह प्रभु (हमारे साथ) प्रेम करे ॥ ८ ॥ १२ ॥ ३४ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभु मेलै सोइ। सहजे नामु धिआईऐ गिआनु परगटु होइ ॥ १ ॥ ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि। सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ तिन्ही इक मनि धिआइआ। सदा रवहि पिरु आपणा सचै नामि सुखु पाइआ ॥ २ ॥ ए मन तेरा को नही करि वेखु

सबदि वीचारु । हरि सरणाई भजि पउ पाइहि मोख दुआरु ॥ ३ ॥ सबदि सुणीऐ सबदि बुझीऐ सचि रहै लिव लाइ । सबदे हउमै मारीऐ सचै महलि सुखु पाइ ॥ ४ ॥ इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ । इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥ ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ से मुए मरि जाहि । हरिरस सादु न आइओ बिसटा माहि समाहि ॥ ६ ॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु अनदिनु नामे लाइ । सचु कमावहि सचि रहहि सचे सचि समाहि ॥ ७ ॥ बिनु सबदै सुणीऐ न देखीऐ जगु बोला अंना भरमाइ । बिनु नावै दुखु पाइसी नामु मिलै तिसै रजाइ ॥ ८ ॥ जिन बाणी सिउ चितु लाइआ से जन निरमल परवाणु । नानक नामु तिन्हा कदे न वीसरै से दरि सचे जाणु ॥ ९ ॥ १३ ॥ ३५ ॥

जब प्रभु उस गुरु से मिला देता है, तब गुरु से गुणों की देन मिलती है, जिसके प्रभाव से आत्मिक स्थिरता में टिक कर हरि-नाम का स्मरण किया जा सकता है और भीतर आत्मिक जीवन की सूझ प्रकट हो जाती है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! कहीं यह न समझ लेना कि परमात्मा (तुझसे) दूर बसता है, उसे सदा अपने साथ-साथ बसता देख । वह प्रभु तुझे सदा सुन रहा है, सदा देख रहा है । गुरु के शब्द में (जुड़कर वह सर्वत्र) व्यापक दिख पड़ेगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु के सम्मुख रहनेवाली जीव-स्त्रियाँ अपने आत्मिक जीवन को खोजती रहती हैं, सुरति जोड़कर स्मरण करती हैं, सदा अपने प्रभु-पति का मिलाप प्राप्त करती हैं और सत्यस्वरूप प्रभु-नाम में जुड़कर आत्मिक आनन्द प्राप्त करती हैं ॥ २ ॥ हे मन ! गुरु के शब्द के द्वारा विचार करके देख, (प्रभु के अतिरिक्त) तेरा कोई सच्चा साथी नहीं है, दौड़कर प्रभु की शरण ले (इस प्रकार माया-मोह के बन्धनों से) मुक्ति का मार्ग प्राप्त कर लेगा ॥ ३ ॥ हे मन ! गुरु के शब्द के द्वारा ही हरि-नाम सुना जा सकता है । शब्द के द्वारा ही (सही जीवन-मार्ग) समझा जा सकता है । (गुरमुख) सत्यस्वरूप हरि में सुरति जोड़े रखता है; शब्द के प्रभाव से ही अहंभावना समाप्त की जा सकती है (जो मनुष्य गुरु-शब्द का आसरा लेता है, वह) सत्यस्वरूप हरि के चरणों में आनन्द प्राप्त करता है ॥ ४ ॥ हे मन ! जगत में नाम के प्रभाव से ही शोभा मिलती है, हरि-नाम के बिना मिली हुई शोभा वास्तविक शोभा नहीं । माया के प्रताप से मिली हुई शोभा चार दिन ही रहती है, इसके नष्ट होते देर नहीं लगती ॥ ५ ॥ जिन मनुष्यों ने हरि-नाम भुला दिया उन्होंने आत्मिक मौत प्राप्त कर ली, वे आत्मिक मौत मरे रहते हैं; जिन्हें

हरि-नाम के रस का आस्वादन न आया, वे विकारों की गन्दगी में मस्त रहते हैं, जैसे गन्दगी के कीड़े गन्दगी में मस्त रहते हैं ॥ ६ ॥ कितने ही ऐसे भाग्यशाली हैं, जिन्हें परमात्मा ने हर वक्त अपने नाम में लगाकर, कृपा करके आप ही चरणों में जोड़ रखा है। वे सत्यस्वरूप नाम-स्मरण की कमाई करते हैं, सत्यस्वरूप नाम में टिके रहते हैं, प्रत्येक पल सत्यस्वरूप हरि में ही लीन रहते हैं ॥ ७ ॥ हे भाई ! जगत माया के मोह में अन्धा और बहरा हो रहा है, (माया के लिए) भटकता फिरता है। गुरु के शब्द से ख़ाली रहकर हरि-नाम सुना नहीं जा सकता, (सर्वव्यापक प्रभु) देखा नहीं जा सकता। नाम से ख़ाली रहकर विश्व दुख ही सहता है। (जगत के भी क्या वश ?) क्योंकि हरि-नाम उसकी रज़ा द्वारा ही मिल सकता है ॥ ८ ॥ जिन मनुष्यों ने गुरु की वाणी से अपना चित्त जोड़ा है, वे मनुष्य पवित्र जीवन वाले हो जाते हैं, वे प्रभु के दरबार में स्वीकृत होते हैं। हे नानक ! उन्हें परमात्मा का नाम कभी विस्मृत नहीं होता, सत्यस्वरूप परमात्मा के द्वार पर वे प्रकट होते हैं ॥ ९ ॥ १३ ॥ ३५ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ सबदौ ही भगत जापदे जिन्ह की बाणी सची होइ। विचहु आपु गइआ नाउ मंनिआ सचि मिलावा होइ ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जन की पति होइ। सफलु तिन्हा का जनमु है तिन्ह मानै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु। सबदि मरै ता जाति जाइ जोती जोति मिलै भगवानु ॥ २ ॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा। नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट भंडारा ॥ ३ ॥ आवहि इसु रासी के वापारीए जिन्हा नामु पिआरा। गुरमुखि होवै सो धनु पाए तिन्हा अंतरि सबदु वीचारा ॥ ४ ॥ भगती सार न जाणन्ही मनमुख अहंकारी। धुरहु आपि खुआइअनु जूऐ बाजी हारी ॥ ५ ॥ बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि। प्रेम पदारथु पाईऐ गुर भगती मन धीरि ॥ ६ ॥ जिस नो भगति कराए सो करे गुर सबद वीचारि। हिरदै एको नामु वसै हउमै दुबिधा मारि ॥७॥ भगता की जति पति एको नामु है आपे लए सवारि। सदा सरणाई तिस की जिउ भावै तिउ कारजु सारि ॥ ८ ॥ भगति निराली अलाह दी जापै गुर वीचारि। नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि ॥ ९ ॥ १४ ॥ ३६ ॥

गुरु के शब्द के प्रभाव से भक्त (संसार) में प्रकट होते हैं, परमात्मा की गुणस्तुति ही उनकी बातचीत हो जाती है। उनके अन्दर से आपा-भाव दूर हो जाता है, उनका मन नाम को स्वीकृत कर लेता है, सत्यस्वरूप हरि में उनका मिलाप हो जाता है ॥ १ ॥ (हे भाई!) परमात्मा के भक्तों के लिए परमात्मा का नाम ही प्रतिष्ठा है, (नाम जपकर) उनकी ज़िन्दगी सफल हो जाती है, हरेक जीव उनका आदर-सत्कार करता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ 'मैं' 'मैं', 'मेरी' 'मेरी' —यही (पुकार) परमात्मा से मनुष्य का भेद बना देती है, इसी कारण मनुष्य के भीतर क्रोध और अहंकार पैदा हुआ रहता है। जब गुरु की शिक्षा के द्वारा 'मैं', 'मेरी' का अभाव हो जाता है तो विभेद समाप्त हो जाता है, हरि-ज्योति में सुरति लीन हो जाती है और परमात्मा मिल जाता है ॥ २ ॥ (जब) पूर्णगुरु मिल जाता है, तब हमारी ज़िन्दगी सफल हो जाती है, हमें हरि-नाम मिल जाता है, जो जगत के नौ ख़ज़ानों के बराबर है। नाम-धन से हमारे ख़ज़ाने भर जाते हैं, यह ख़ज़ाने कभी ख़ाली नहीं हो सकते ॥ ३ ॥ इस नाम-धन के वही बनजारे आते हैं, जिन्हें यह नाम-(धन) प्यारा लगता है। जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, वह नाम-धन प्राप्त कर लेता है। ऐसे मनुष्यों के भीतर गुरु-शब्द बस जाता है, प्रभु के गुणों का चिन्तन टिक जाता है ॥ ४ ॥ (लेकिन) स्वेच्छाचारी मनुष्य अहंकारी हो जाते हैं, वे प्रभु की भक्ति की प्रतिष्ठा नहीं समझते। (जीवों के क्या वश? उन्हें) प्रभु ने आप ही आरम्भ से अपने हुक्म द्वारा कुमार्गगामी बना दिया है, वे जीवनबाज़ी हार जाते हैं, (जैसे कोई जुआरी) जुए में (हार जाता है) ॥ ५ ॥ यदि हृदय में प्रभु के लिए प्रेम न हो तो प्रभु-भक्ति नहीं की जा सकती, (भक्ति के बिना) शरीर को आत्मिक आनन्द भी नहीं मिलता। प्रेम की देन गुरु से मिलती है, गुरु द्वारा बतलाई भक्ति से मन में शान्ति का टिकाव हो जाता है ॥ ६ ॥ गुरु के शब्द का विचार करके वही मनुष्य प्रभु की भक्ति कर सकता है, जिससे प्रभु आप भक्ति कराता है। (गुरु की शिक्षा से) वह मनुष्य अहंकार तथा मेरा-तेरा समाप्त कर लेता है, उसके हृदय में एक परमात्मा का नाम आ बसता है ॥ ७ ॥ परमात्मा का नाम ही भक्तों के लिए ऊँची जाति है, नाम ही उनके लिए उत्तम वंश है, परमात्मा आप ही उनके जीवन को सुन्दर बना देता है। भक्त सदा उस प्रभु की शरण लिये रहते हैं, जिस प्रकार प्रभु को उपयुक्त लगता है, उसी प्रकार वह उनका प्रत्येक कार्य पूर्ण कर देता है ॥ ८ ॥ गुरु के शब्द के प्रभाव से यह समझ पैदा होती है कि परमात्मा की भक्ति विचित्र रूप से लाभदायक है। हे नानक! जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु का नाम आ बसता है, प्रभु की भक्ति उसे भय-सम्मान में

रखकर, प्रभु के नाम में जोड़कर उसके आत्मिक जीवन को सुन्दर बना देती है ॥ ९ ॥ १४ ॥ ३६ ॥

॥ आसा महला ३ ॥ अनरस महि भोलाइआ बिनु नामै दुख पाइ । सतिगुरु पुरखु न भेटिओ जि सची बूझ बुझाइ ॥१॥ ए मन मेरे बावले हरिरसु चखि सादु पाइ । अनरसि लागा तूं फिरहि बिरथा जनमु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि गुरमुख निरमले सचि नामि रहहि लिवलाइ । विणु करमा किछु पाईऐ नही किआ करि कहिआ जाइ ॥ २ ॥ आपु पछाणहि सबदि मरहि मनहु तजि विकार । गुर सरणाई भजि पए बखसे बखसण हार ॥ ३ ॥ बिनु नावै सुखु न पाईऐ ना दुखु विचहु जाइ । इहु जगु माइआ मोहि विआपिआ दूजै भरमि भुलाइ ॥ ४ ॥ दुहागणी पिर की सार न जाणही किआ करि करहि सीगारु । अनदिनु सदा जलदीआ फिरहि सेजै रवै न भतारु ॥ ५ ॥ सोहागणी महलु पाइआ विचहु आपु गवाइ । गुर सबदी सीगारीआ अपणे सहि लईआ मिलाइ ॥ ६ ॥ मरणा मनहु विसारिआ माइआ मोहु गुबारु । मनमुख मरि मरि जंमहि भी मरहि जमदरि होहि खुआरु ॥७॥ आपि मिलाइअनु से मिले गुर सबदि वीचारि । नानक नामि समाणे मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥ ८ ॥ २२ ॥ १५ ॥ ३७ ॥

मनुष्य दूसरे पदार्थों के आस्वादनों में फँसकर कुमार्गगामी हुआ रहता है, नाम से ख़ाली होकर दुख सहता रहता है; उसे महापुरुष गुरु नहीं मिलता, जो सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति की बुद्धि देता है ॥ १ ॥ हे मेरे पागल मन ! परमात्मा के नाम का रस चख, परमात्मा के नाम का आस्वादन कर। तू अपना जीवन व्यर्थ गवाँ-गवाँकर दूसरे पदार्थों के आस्वादन में फँसा हुआ भटक रहा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुनिया में वही मनुष्य सदाचारी होते हैं, जो गुरु की शरण लेते हैं और उस सत्यस्वरूप हरि में सुरति जोड़कर उसके नाम में लीन रहते हैं। पर क्या कहा जाए ? प्रभु-कृपा के बिना कुछ नहीं मिलता ॥ २ ॥ (जिन पर कृपा होती है वे) अपना जीवन सवाँरते हैं, गुरु के ज्ञान के द्वारा मन से विकार दूर करके निर्लिप्त हो जाते हैं। वे गुरु की शरण लिये रहते हैं, कृपालु हरि उन पर कृपा करता है ॥ ३ ॥ हरि-नाम के बिना सुख नहीं मिलता, भीतर में दुख-क्लेश दूर नहीं होता। लेकिन यह जगत माया के मोह में फँसा रहता है, (नाम भूलकर) माया की दुबिधा में पड़कर कुमार्गगामी

हुआ रहता है ॥ ४ ॥ (नाम-हीन जीव-स्त्रियाँ इस प्रकार हैं, जैसे) परित्यक्ताएँ अपने पति के मिलाप की क़द्र नहीं जानतीं, व्यर्थ ही शारीरिक शृंगार करती हैं, हर वक्त (भीतर-भीतर) जलती फिरती हैं, पति कभी सेज पर आता ही नहीं ॥ ५ ॥ भाग्यशालिनी जीव-स्त्रियाँ भीतर से आपाभाव दूर करके प्रभु-पति के चरणों में स्थान पा लेती हैं, गुरु के शब्द के प्रभाव से वे अपना जीवन सुन्दर बना लेती हैं; पति-प्रभु ने उन्हें अपने साथ मिला लिया है ॥ ६ ॥ हे भाई ! माया का मोह गहरा अन्धकार है । (इसमें फँसकर) स्वेच्छाचारी मनुष्य मृत्यु को मन से भुला देते हैं, आत्मिक रूप से मरकर जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं और यमराज के द्वार पर दुखी होते हैं ॥ ७ ॥ जिन्हें परमात्मा ने अपने चरणों में जोड़ लिया, वे गुरु के शब्द के द्वारा प्रभु के गुणों का विचार करके प्रभु-चरणों में लीन हो गए । हे नानक ! जो मनुष्य हरि-नाम में रहते हैं, वे सत्यस्वरूप परमात्मा के दरबार में निश्चिन्त हो जाते हैं ॥ ८ ॥ २२ ॥ १५ ॥ ३७ ॥

आसा महला ५ असटपदीआ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पंच मनाए पंच रुसाए । पंच वसाए पंच गवाए ॥ १ ॥ इन्ह बिधि नगरु वुठा मेरे भाई । दुरतु गइआ गुरि गिआनु द्रिड़ाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साच धरम की करि दीनी वारि । फरहे मुहकम गुर गिआनु बीचारि ॥२॥ नामु खेती बीजहु भाई मीत । सउदा करहु गुरु सेवहु नीत ॥३॥ सांति सहज सुख के सभि हाट । साह वापारी एकै थाट ॥ ४ ॥ जेजीआ डंनु को लए न जगाति । सतिगुरि करि दीनी धुर की छाप ॥ ५ ॥ वखरु नामु लदि खेप चलावहु । लै लाहा गुरमुखि घरि आवहु ॥ ६ ॥ सतिगुरु साहु सिख वणजारे । पूंजी नामु लेखा साचु सम्हारे ॥ ७ ॥ सो वसै इतु घरि जिसु गुरु पूरा सेव । अबिचल नगरी नानक देव ॥ ८ ॥ १ ॥

(गुरु द्वारा शिक्षा पाकर मनुष्य ने) शरीर रूपी नगर में सत्य, सन्तोष, दया, धर्म, धैर्य --ये पाँचों विकसित कर लिये, कामादिक पाँचों नाराज़ कर लिये; (सत्य, सन्तोष आदि) पाँचों भीतर बसा लिये और कामादिक पाँचों (शरीर-नगर से) बाहर निकाल दिए ॥ १ ॥ गुरु ने (जिसे) आत्मिक जीवन की सूझ भली प्रकार दे दी, (उसके भीतर से)

विकार-पाप दूर हो गए, और, हे भाई ! इस प्रकार उस मनुष्य का शरीर-नगर बस गया ।। १ ।। रहाउ ।। (शरीर-नगर की रक्षा के लिए गुरु ने) सत्यस्वरूप प्रभु के नित्यप्रति स्मरण की बाड़ी (घेरा) लगा दी और जीव ने गुरु-प्रदत्त ज्ञान को मस्तिष्क में टिकाकर अपनी ज्ञानेन्द्रियाँ संयमित कर ली ।। २ ।। हे मेरे मित्र ! हे भाई ! तुम भी सदा गुरु की शरण लो, शरीर-खेती में परमात्मा का नाम बोया करो, शरीर-नगर में नाम-स्मरण का सौदा करते रहो ।। ३ ।। हे भाई ! जो (सिक्ख-) बनजारे (गुरु-) शाह के साथ तादात्म्य कर लेते हैं, उनके समस्त हाट शान्ति, आत्मिक स्थिरता और आत्मिक आनन्द के हाट बन जाते हैं ।। ४ ।। (जिन्हें गुरु ने ज्ञान की देन दी, उनके शरीर-नगर के लिए) गुरु ने प्रभु-द्वार से स्वीकृत हुई क्षमा पर मुहर लगा दी । कोई (पाप-विकार नाम-सौदे पर) जज़िया दण्ड, मसूल आदि नहीं लगा सकता, अर्थात् अब वह सब विकारों के प्रभाव से ऊपर हो गया ।। ५ ।। हे मित्र ! हे भाई ! गुरु की शरण लेकर तुम भी नाम-स्मरण का सौदा लादकर व्यापार करो, (इससे) लाभ प्राप्त करो और हरि के चरणों में ठिकाना करो ।। ६ ।। गुरु ही (नाम-धन का) साहूकार है, (जिससे आत्मिक जीवन का) व्यापार करनेवाले सिक्ख हरि-नाम का धन प्राप्त करते हैं । (गुरु द्वारा ज्ञान प्राप्त करने पर) सिक्ख सत्यस्वरूप प्रभु को अपने हृदय में सँभालकर रखता है; (यही) लेखा है, जो भक्त नाम-व्यापार द्वारा प्राप्त करता है ।। ७ ।। हे नानक ! (कह— हे भाई !) पूर्णगुरु जिस मनुष्य को प्रभु की सेवा-भक्ति की देन देता है, वह ऐसे घर में रहता है जो परमात्मा के सम्मुख रहने के लिए अटल नगरी बन जाता है ।। ८ ।। १ ।।

आसावरी महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। मेरे मन हरि सिउ लागी प्रीति । साध संगि हरि हरि जपत निरमल साची रीति ।। १ ।। रहाउ ।। दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार । करहु अनुग्रहु पारब्रहम हरि किरपा धारि मुरारि ।। १ ।। मनु परदेसी आइआ मिलिओ साध कै संगि । जिसु वखर कउ चाहता सो पाइओ नामहि रंगि ।। २ ।। जेते माइआ रंग रस बिनसि जाहि खिन माहि । भगत रते तेरे नाम सिउ सुखु भुंचहि सभ ठाइ ।। ३ ।। सभु जगु चलतउ पेखीऐ निहचलु हरि को नाउ । करि मित्राई

साध सिउ निहचलु पावहि ठाउ ॥ ४ ॥ मीत साजन सुत बंधपा कोऊ होत न साथ । एकु निवाहू राम नाम दीना का प्रभु नाथ ॥ ५ ॥ चरन कमल बोहिथ भए लगि सागरु तरिओ तेह । भेटिओ पूरा सतिगुरू साचा प्रभ सिउ नेह ॥ ६ ॥ साध तेरे की जाचना विसरु न सासि गिरासि । जो तुधु भावै सो भला तेरै भाणै कारज रासि ॥ ७ ॥ सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा अनंद । कहु नानक सभ दुख मिटे प्रभ भेटे परमानंद ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

हे मेरे मन ! जिस मनुष्य की प्रीति परमात्मा के साथ बन जाती है, गुरु के संसर्ग में नाम स्मरण करते हुए उसकी प्रतिदिन की यही पवित्र साधना बन जाती है कि वह सत्यस्वरूप प्रभु का नाम जपता रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तेरे अनेक प्रकार के गुणों को स्मरण करते हुए मुझमें दर्शन की आकांक्षा प्रबल हो उठी है, हे पारब्रह्म ! हे मुरारी ! कृपा कर ॥ १ ॥ अनेक योनियों में भटकता जब कोई मन गुरु की संगति में आ मिलता है, जिस सौदे (आत्मिक जीवन) को वह तरसता आ रहा था, वह उसे परमात्मा के नाम के प्रेम में जुड़ने से मिल जाता है ॥ २ ॥ माया के जितने भी कौतुक और स्वादिष्ट पदार्थ दिख रहे हैं, वे एक क्षण में नष्ट हो जाते हैं; (लेकिन जो प्राणी) तेरे नाम-रंग में रँगे रहते हैं, वे सर्वत्र आनन्द महसूस करते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! सारा संसार नश्वर दिख रहा है, शाश्वत केवल परमात्मा का नाम ही है । गुरु से प्रेम कर, जिससे तू वह ठिकाना प्राप्त कर लेगा, जो कभी भी नष्ट होनेवाला नहीं है ॥ ४ ॥ हे भाई! मित्र, सज्जन, रिश्तेदार —कोई भी स्थायी मित्र नहीं हैं । सदा साथ निभानेवाला केवल परमात्मा का नाम ही है, जो ग़रीबों का रक्षक है ॥ ५ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य के लिए गुरु के सुन्दर कोमल चरण जहाज़ बन गए, वह इन चरणों में जुड़कर संसार-समुद्र से पार उतर गया । जिस मनुष्य को पूर्णगुरु मिल गया, उसका परमात्मा के साथ दृढ़ प्रेम हो गया ॥ ६ ॥ हे प्रभु ! तेरे सेवक की (यही) माँग है कि साँस लेते, रोटी खाते, कभी तेरा नाम विस्मृत न हो । जो कुछ तुझे अच्छा लगता है, तेरे सेवक को भी वही अच्छा लगता है; तेरी रज़ा में चलने से तेरे सेवक के सारे काम पूर्ण हो जाते हैं ॥ ७ ॥ हे नानक ! कह— सुखों के समुद्र प्रियतम प्रभुजी जिस मनुष्य को मिल जाते हैं, उसके भीतर बड़ा आनन्द पैदा हो जाता है; सर्वोत्कृष्ट आनन्द के स्वामी प्रभुजी जिसे मिलते हैं, उसके समस्त दुख, क्लेश दूर हो जाते हैं ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

आसा महला ५ बिरहड़े घरु ४ छंता की जति

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पारब्रह्मु प्रभु सिमरीऐ पिआरे दरसन कउ बलि जाउ ॥ १ ॥ जिसु सिमरत दुख बीसरहि पिआरे सो किउ तजणा जाइ ॥ २ ॥ इहु तनु वेची संत पहि पिआरे प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ ३ ॥ सुख सीगार बिखिआ के फीके तजि छोडे मेरी माइ ॥ ४ ॥ कामु क्रोधु लोभु तजि गए पिआरे सतिगुर चरनी पाइ ॥ ५ ॥ जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाइ ॥ ६ ॥ हरिरसु जिन्ही चाखिआ पिआरे त्रिपति रहे आघाइ ॥ ७ ॥ अंचलु गहिआ साध का नानक भै सागरु पारि पराइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥ जनम मरण दुखु कटीऐ पिआरे जब भेटै हरिराइ ॥ १ ॥ सुंदरु सुघरु सुजाणु प्रभु मेरा जीवनु दरसु दिखाइ ॥ २ ॥ जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे जनमि मरहि बिखु खाइ ॥ ३ ॥ जिसु तूं मेलहि सो मिलै पिआरे तिस कै लागउ पाइ ॥ ४ ॥ जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख ते कहणु न जाइ ॥ ५ ॥ साची प्रीति न तुटई पिआरे जुगु जुगु रही समाइ ॥ ६ ॥ जो तुधु भावै सो भला पिआरे तेरी अमरु रजाइ ॥ ७ ॥ नानक रंगि रते नाराइणै पिआरे माते सहजि सुभाइ ॥ ८ ॥ २ ॥ सभ बिधि तुम ही जानते पिआरे किसु पहि कहउ सुनाइ ॥ १ ॥ तूं दाता जीआ सभना का तेरा दिता पहिरहि खाइ ॥ २ ॥ सुखु दुखु तेरी आगिआ पिआरे दूजी नाही जाइ ॥ ३ ॥ जो तूं करावहि सो करी पिआरे अवरु किछु करणु न जाइ ॥ ४ ॥ दिनु रैणि सभ सुहावणे पिआरे जितु जपीऐ हरि नाउ ॥ ५ ॥ साई कार कमावणी पिआरे धुरि मसतकि लेखु लिखाइ ॥ ६ ॥ एको आपि वरतदा पिआरे घटि घटि रहिआ समाइ ॥ ७ ॥ संसार कूप ते उधरि लै पिआरे नानक हरि सरणाइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ १ ॥ ३ ॥

हे प्यारे ! सदा परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, मैं उस परमात्मा के दर्शन पर बलिहारी जाता हूँ ॥ १ ॥ जिस परमात्मा का स्मरण करने से सारे दुख विस्मृत हो जाते हैं, उसे छोड़ना नहीं चाहिए ॥ २ ॥ मैं तो अपना यह शरीर उस गुरु के पास बेचने को तैयार हूँ, जो प्रियतम प्रभु के साथ

मिला देता है ॥ ३ ॥ हे मेरी माँ ! मैंने माया के सुख, सौन्दर्य सब छोड़ दिए हैं, (जिसके समक्ष सारे सुख) निरस्वाद हैं ॥ ४ ॥ जबसे मैं गुरु के चरणों में आ गया हूँ, तबसे काम, क्रोध, लोभ आदि मेरा पीछा छोड़ गए हैं ॥ ५ ॥ जो मनुष्य परमात्मा के प्रेम-रंग से रँगे जाते हैं, (उनमें से) कोई भी किसी और स्थान पर नहीं जाता ॥ ६ ॥ जो मनुष्य परमात्मा के नाम का स्वाद चख लेते हैं, वे (सांसारिक पदार्थों से) तृप्त हो जाते हैं ॥ ७ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य ने गुरु का पल्ला पकड़ लिया, वह इस भयानक संसार-समुद्र से पार उतर जाता है ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥ हे प्यारे ! जब प्रभु-बादशाह मिल जाता है, तब जन्म-मरण के चक्र का दुख कट जाता है ॥ १ ॥ हे भाई ! प्रभु सुन्दर है, चतुर और बुद्धिमान है, जब वह मुझे दर्शन देता है, मेरे भीतर (मानो) प्राणों का प्रवेश हो जाता है ॥ २ ॥ हे प्यारे प्रभु ! जो जीव तुझसे बिछुड़ जाते हैं, (वे माया-मोह का) विष खाकर मनुष्य-जन्म में आए हुए भी आत्मिक मौत मर जाते हैं ॥ ३ ॥ हे प्यारे प्रभु ! जिस जीव को तुम आप मिलाते हो, वही तुम्हें मिलता है। मैं उस (भाग्यशाली) के चरण स्पर्श करता हूँ ॥ ४ ॥ हे प्यारे (प्रभु !) तेरा दर्शन करने से जो आनन्द (अनुभव होता है), वह मुँह से बतलाया नहीं जा सकता ॥ ५ ॥ हे प्यारे ! जिसने सत्यस्वरूप प्रभु से दृढ़ प्रेम कर लिया, उसका प्रेम कभी टूट नहीं सकता, वह प्रेम तो युग-युगों तक उसके हृदय में टिका रहता है ॥ ६ ॥ हे प्रभु ! तेरा नाम अमिट है। जीवों के लिए वही काम शुभ है, जो तुझे अच्छा लगता है ॥७॥ हे नानक ! (कह—) हे प्यारे ! जो मनुष्य नारायण के प्रेम-रंग में रँग जाते हैं, वे आत्मिक स्थिरता में मस्त रहते हैं, वे उसके प्रेम में मस्त रहते हैं ॥ ८ ॥ २ ॥ हे प्रभु ! सारे तरीक़े तुम आप ही जानते हो। मैं (उन्हें जानने के लिए) और दूसरे किससे कहूँ ॥ १ ॥ सारे जीवों को देन देनेवाले तुम आप ही हो, (सभी प्राणी तेरे द्वारा दिए गए) वस्त्र पहनते हैं, (प्रत्येक प्राणी तेरा दिया अन्न) खाता है ॥ २ ॥ हे प्यारे प्रभु ! तेरे हुक्म अनुसार कभी सुख मिलता है, कभी दुख। (तेरे अतिरिक्त) कोई दूसरी जगह नहीं है ॥ ३ ॥ हे प्यारे ! मैं वही कुछ कर सकता हूँ, जो तुम मुझसे कराते हो; (तुमसे विद्रोही बनकर) दूसरा कुछ भी नहीं किया जा सकता ॥ ४ ॥ हे प्यारे हरि ! वे दिन-रात सुन्दर लगते हैं, जब तेरा नाम स्मरण किया जाता है ॥ ५ ॥ हे प्यारे प्रभु ! तेरे दरबार से हम जीव मस्तक पर जो लेख लिखाकर (आए हैं), वह काम हम जीव कर सकते हैं ॥ ६ ॥ हे प्यारे प्रभु ! तुम एक आप ही (जगत में) विद्यमान हो, हरेक शरीर में तुम आप ही टिके हुए हो ॥ ७ ॥ हे नानक ! (कह—) हे हरि ! मैं तेरे शरणागत हूँ, मुझे (माया-मोह से भरे) संसार-कुएँ से निकाल ले ॥ ८ ॥ ३ ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु आसा महला १ पटी लिखी ।। १ ओं सतिगुर प्रसादि ।।
ससै सोइ स्रिसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ । सेवत रहे चितु जिन्ह का लागा आइआ तिन्ह का सफलु भइआ ।। १ ।। मन काहे भूले मूड़ मना । जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ।। १ ।। रहाउ ।। ईवड़ी आदि पुरखु है दाता आपे सचा सोई । एना अखरा महि जो गुरमुखि बूझै तिसु सिरि लेखु न होई ।। २ ।। ऊड़ै उपमा ता की कीजै जा का अंतु न पाइआ । सेवा करहि सेई फलु पावहि जिन्ही सचु कमाइआ ।।३।। ङङै ङिआनु बूझै जे कोई पड़िआ पंडितु सोई । सरब जीआ महि एको जाणै ता हउमै कहै न कोई ।। ४ ।। ककै केस पुंडर जब हूए विणु साबूणै उजलिआ । जम राजे के हेरू आए माइआ कै संगलि बंधि लइआ ।। ५ ।। खखै खुंदकारु साह आलमु करि खरीदि जिनि खरचु दीआ । बंधनि जा कै सभु जगु बाधिआ अवरी का नही हुकमु पइआ ।। ६ ।। गगै गोइ गाइ जिनि छोडी गली गोबिदु गरबि भइआ । घड़ि भांडे जिनि आवी साजी चाड़ण वाहै तई कीआ ।। ७ ।। घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै । बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि साहिबु रमतु रहै ।। ८ ।। चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चारि जुगा । जुगु जुगु जोगी खाणी भोगी पड़िआ पंडितु आपि थीआ ।। ९ ।।

वही एक प्रभु सब जीवों का मालिक है, जिसने यह सृष्टि-रचना की है। जो व्यक्ति प्रभु को स्मरण करते रहे और जिनका मन (उसके चरणों में) जुड़ा रहा, उनका जगत में आना सफल हो गया ।। १ ।। हे मेरे मूर्ख मन ! वास्तविक जीवन-मार्ग से दूर क्यों जा रहा है ? हे भाई ! जब तू अपने किए कर्मों का लेखा देगा, तब ही तू शिक्षित समझा जायेगा ।। १ ।। रहाउ ।। जो व्यापक प्रभु सारी सृष्टि का मूल है, जो सब जीवों को अन्न देनेवाला है, वह आप ही सत्यस्वरूप है। (विद्वान वही है) जो गुरु की शरण लेकर अपनी विद्या के द्वारा उस (प्रभु) को समझ लेता है, उस मनुष्य के सिर पर विकारों का कोई क़र्ज़ा एकत्रित नहीं होता ।। २ ।। जिस परमात्मा के गुणों का अन्तिम छोर नहीं पाया जा सकता, उसकी गुणस्तुति करनी चाहिए। जिन मनुष्यों ने सदा साथ निभनेवाली कमाई की है, जो (सदा प्रभु का) स्मरण करते हैं, वे ही

मनुष्य जीवन का मनोरथ प्राप्त करते हैं ॥ ३ ॥ वही व्यक्ति विद्वान है, वही पंडित है, जो परमात्मा के साथ जान-पहचान कर ले; यदि वह यह समझ ले कि केवल परमात्मा ही समस्त जीवों में मौजूद है। (परमात्मा को सर्वव्यापक समझनेवाले व्यक्ति की पहचान यह है कि) वह फिर यह नहीं कहता कि मैं ही होऊँ ॥४॥ (लेकिन यह कैसी पंडिताई है कि) जब सिर के केश सफ़ेद हो जाएँ, (ये श्वेत केश) यमराज के भेजे हुए (मृत्यु का वक्त) देखनेवाले (दूत) आ खड़े हों और इधर अभी भी इसे माया की जंजीरों ने बाँध रखा हो? ॥ ५ ॥ जो ख़ुदा सारी दुनिया का बादशाह है, जिसके हुक्म में सारा जगत नियन्त्रित है, (अर्थात् जिसके द्वारा नाक में नकेल डाली हुई है) और किसी दूसरे का हुक्म नहीं चल सकता तथा सारे जगत को रोज़ी पहुँचाई हुई है, (हे मनुष्य! तू) ऐसे प्रभु की गुणस्तुति का सौदा लेकर व्यापार कर ॥ ६ ॥ जिस (गोविन्द) ने यह सारी सृष्टि रची है, जिसने बर्तन बनाकर संसार रूपी आवाँ तैयार किया है; उस गोविन्द को जो मनुष्य केवल मात्र विद्वत्ता की बातों से (समझकर) अहंकारी बनता है, उस पंडित के लिए उस गोविन्द ने जन्म-मरण (का चक्र) तैयार किया हुआ है ॥ ७ ॥ यदि मनुष्य सेवक बनकर अथक साधना करे, यदि अपनी सुरति गुरु के शब्द में जोड़े रखे (अर्थात् मिथ्या विद्वत्ता के स्थान पर गुरु की शिक्षा में विश्वास रखे), यदि वह दुख-सुख को एक समान समझे —यही तरीक़ा है, जिससे प्रभु को (भली प्रकार) स्मरण कर सकता है ॥ ८ ॥ जिस परमात्मा ने (अंडज, जेरज, स्वेदज, उद्भिज) चारों प्रकार के जीव पैदा किए हैं, जिस प्रभु ने (सूर्य-चन्द्र आदि बनाकर) सृष्टि-रचना कर, चारों युग आप ही बनाए हैं, जिस प्रभु ने चारों वेद रचे हैं, जो हरेक युग में मौजूद है, जो चारों प्रकार के जीवों में व्यापक होकर आप रचे पदार्थ आप ही भोग रहा है, फिर निर्लिप्त भी है, वह आप ही विद्वान है, आप ही पंडित है ॥ ९ ॥

छछै छाइआ वरती सभ अंतरि तेरा कीआ भरमु होआ। भरमु उपाइ भुलाईअनु आपे तेरा करमु होआ तिन गुरू मिलिआ ॥ १० ॥ जजै जानु मंगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविआ। एको लेवै एको देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥ ११ ॥ झझै झूरि मरहु किआ प्राणी जो किछु देणा सु दे रहिआ। दे दे वेखै हुकमु चलाए जिउ जीआ का रिजकु पइआ ॥ १२ ॥ ञंञै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही। एको रवि रहिआ सभ थाई एकु वसिआ मन माही ॥ १३ ॥ टटै टंचु करहु किआ प्राणी घड़ी कि मुहति कि उठि चलणा।

जूऐ जनमु न हारहु अपणा भाजि पड़हु तुम हरि सरणा ।। १४ ।। ठठै ठाढि वरती तिन अंतरि हरि चरणी जिन्ह का चितु लागा । चितु लागा सेई जन निसतरे तउ परसादी सुखु पाइआ ।। १५ ।। डडै डंफु करहु किआ प्राणी सो किछु होआ सु सभु चलणा । तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु सरब निरंतरि रवि रहिआ ।। १६ ।। ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे । करि करि वेखै हुकमु चलाए तिसु निसतारे जा कउ नदरि करे ।। १७ ।। णाणै रवतु रहै घट अंतरि हरि गुण गावै सोई । आपे आपि मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई ।। १८ ।।

(हे प्रभु !) तेरी ही उत्पादित अविद्या सब जीवों में प्रबल हो रही है, (जीवों के मन की) दुबिधा तेरी ही बनाई हुई है। (हे मन !) प्रभु ने आप ही दुबिधा पैदा करके सृष्टि को कुमार्गगामी बना दिया है। (यदि बचाव करना है तो अहंकार छोड़कर कह—) हे प्रभु ! जिन पर तेरी कृपा होती है, उन्हें गुरु मिल जाता है ।।१०।। (हे मन !) उस प्रभु से मेल कर, (जिसके द्वार से) हरेक जीव भिखारी बनकर दान माँगता है। वह प्रभु चौरासी लाख योनियों में आप ही मौजूद है। वह आप ही भिक्षा लेनेवाला है और आप ही भिक्षा देता है। मैंने अभी तक नहीं सुना कि उसके अतिरिक्त कोई दूसरा देन देनेवाला है ।।११।। हे प्राणी! (रोजी के लिए) चिन्ता करके क्यों आत्मिक मृत्यु प्राप्त करता है ? जो कुछ प्रभु ने तुझे देने का फ़ैसला किया हुआ है, वह (तेरी चिन्ता के बिना) आप ही दे रहा है। जैसे-जैसे जीवों का भोजन निश्चित है, वह सबको दे रहा है, देख-भाल भी आप ही कर रहा है और अपने हुक्म को लागू कर रहा है ।। १२ ।। (हे मन ! चिन्ता छोड़, क्योंकि) मैं जब भी ग़ौर से देखता हूँ, मुझे प्रभु के विना कोई दूसरा दिखाई नहीं देता। प्रभु आप ही सर्वत्र मौजूद है, हरेक के मन में आप ही बस रहा है ।। १३ ।। हे प्राणी ! व्यर्थ धन्धे करने का कोई लाभ नहीं है, (क्योंकि इस दुनिया से) थोड़े ही समय में उठकर चले जाना है। हे प्राणी ! (प्रभु की याद भुलाकर) अपना मनुष्य-जन्म जुए में हारता है ? हे भाई ! तू शीघ्र ही परमात्मा का शरणागत हो ।। १४ ।। जिन मनुष्यों का मन परमात्मा के चरणों में टिका रहता है, उनके मन में शान्ति बनी रहती है। हे प्रभु ! दुनियावी काम-काज में शान्तचित्त रहकर वही पार उतरते हैं, जिनका मन (तेरे चरणों में) जुड़ा रहता है। तेरी कृपा से उन्हें आत्मिक सुख प्राप्त हुआ रहता है ।। १५ ।। हे जीव ! जगत में जो कुछ पैदा हुआ है, वह नश्वर है। किसी प्रकार दिखावा करने का कोई लाभ नहीं होगा। आत्मिक आनन्द तभी मिलेगा, यदि

उस परमात्मा का स्मरण करोगे, जो निरन्तर सब जीवों के भीतर व्यापक है ॥ १६ ॥ परमात्मा आप ही जगत-रचना को नष्ट करता है, आप ही बनाता है; जो उसे उचित लगता है, वही करता है। प्रभु जीव पैदा करके सँभाल करता है, (सर्वत्र) अपना हुक्म क्रियान्वित कर रहा है; (लेकिन) जिस मनुष्य पर प्रभु कृपादृष्टि करता है, उसे (मोह-सागर से) पार उतार देता है ॥ १७ ॥ जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा अपना आपा प्रकट कर दे, वह मनुष्य उसकी गुणस्तुति करने लगता है। (उसकी प्रीति पर रीझकर) कर्तार आप ही उसे अपने साथ मिला लेता है। उस मनुष्य को बार-बार जन्म नहीं मिलता ॥ १८ ॥

ततै तारू भवजलु होआ ता का अंतु न पाइआ। ना तरना तुलहा हम बूडसि तारि लेहि तारण राइआ ॥ १९ ॥ थथै थानि थानंतरि सोई जा का कीआ सभु होआ। किआ भरमु किआ माइआ कहीऐ जो तिसु भावै सोई भला ॥ २० ॥ ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ। जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥ २१ ॥ धधै धारि कला जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रंग कीआ। तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकमु पइआ ॥ २२ ॥ नंनै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना संम्हलिआ। गली हउ सोहागणि भैणे कंतु न कबहूं मैं मिलिआ ॥ २३ ॥ पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ। देखै बूझै सभ किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥ २४ ॥ फफै फाही सभु जगु फासा जम कै संगलि बंधि लइआ। गुरपरसादी से नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पइआ ॥ २५ ॥ बबै बाजी खेलण लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा। जीअ जंत सभ सारी कीते पासा ढालणि आपि लगा ॥ २६ ॥ भभै भालहि से फलु पावहि गुरपरसादी जिन्ह कउ भउ पइआ। मनमुख फिरहि न चेतहि मूड़े लख चउरासीह फेरु पइआ ॥ २७ ॥

यह संसार-समुद्र बहुत गहरा है, इसका दूसरा किनारा भी नहीं मिलता। (इससे पार होने के लिए) हमारे पास न कोई नाव है, न कोई तराजू, (इनके बिना) हम डूब जाएँगे। हे पार कराने में समर्थ प्रभु! हमें पार कर ले ॥ १९ ॥ जिस परमात्मा द्वारा निर्मित यह सारा जगत है, वही प्रभु सर्वत्र मौजूद है। माया तथा मोह भी सर्वव्यापक प्रभु से

अलग नहीं हैं। जो उस प्रभु को अच्छा लगता है, वही (जीवों के लिए) शुभ हो रहा है ॥ २० ॥ (हे मन ! यदि तू पढ़कर सचमुच पंडित हो गया है, तो यह स्मरण रख कि) जैसे काम मैं करता हूँ, वैसा ही फल मैं पा लेता हूँ, दूसरे लोगों को दोष नहीं देना चाहिए। दोष अपने कर्मों में ही होता है, (इसलिए यह स्मरण रख कि) मैं किसी दूसरे के सिर दोष न मढ़ूँ। दूसरे के दोष न देखकर अपनी पड़ताल करो ॥ २१ ॥ जिस हरि ने (अपनी सृष्टि में) अपना अस्तित्व टिका रखा है, जिस कौतुकी प्रभु ने यह अलग-अलग रंगों की रचना रची है, सारे जीव उसी की देन इस्तेमाल कर रहे हैं; लेकिन हरेक जीव के अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही प्रभु का हुक्म चल रहा है ॥ २२ ॥ हे सत्संगी सहेली ! जिस परमात्मा के दिए हुए पदार्थ प्रत्येक जीव इस्तेमाल कर रहा है, उसका अभी तक मैंने कभी दर्शन नहीं किया, उसे कभी हृदय में नहीं टिकाया। मैं केवल बातों से ही स्वयं को सुहागिन कहती रही, लेकिन पति-प्रभु मुझे अभी तक नहीं मिला ॥ २३ ॥ परमेश्वर तमाम विश्व का बादशाह है। उसने आप यह संसार बनाया है कि जीव इसमें उसका दर्शन करें। सृजनहार प्रभु हरेक जीव की सँभाल करता है, प्रत्येक के मन की बात समझता है, वह सारे संसार में सर्वत्र व्यापक है ॥ २४ ॥ (हे मन !) सारा संसार (माया के) बन्धन में फँसा हुआ है और उसे यम के बन्धन ने बाँध लिया है अर्थात् विश्व आवागमन में बँध जाता है। इस बन्धन से गुरु की कृपा से वे ही बचे हैं, जो दौड़कर परमात्मा की शरण लेते हैं ॥ २५ ॥ हे मन ! परमात्मा आप (चौसर की) खेल खेल रहा है। चार युगों को उसने (चौसर के) चार पल्ले बनाया है, सारे जीव-जन्तुओं की गोटियाँ बनाई हैं, प्रभु आप पासे फेंकता है (कुछ गोटियाँ पार उतर जाती हैं और कुछ बीच में पड़ी रहती हैं) ॥ २६ ॥ गुरु की कृपा से जिन मनुष्यों के मन में परमात्मा का भय टिक जाता है, वे मनुष्य उसका दर्शन करने के यत्न करते हैं और (अपने यत्नों का) फल प्राप्त कर लेते है। लेकिन जो मूर्ख मनुष्य स्वेच्छाचारी बनते हैं, वे दूसरी दिशाओं में भटकते फिरते हैं, परमात्मा का स्मरण नहीं करते, उन्हें चौरासी लाख योनियों का चक्र मिल जाता है ॥ २७ ॥

ममै मोहु मरणु मधुसूदनु मरणु भइआ तब चेतविआ। काइआ भीतरि अवरो पड़िआ ममा अखरु वीसरिआ ॥ २८ ॥ ययै जनमु न होवी कदही जे करि सचु पछाणै। गुरमुखि आखै गुरमुखि बूझै गुरमुखि एको जाणै ॥ २९ ॥ रारै रवि रहिआ सभ अंतरि जेते कीए जंता। जंत उपाइ धंधै सभ लाए करमु

होआ तिन नामु लइआ ।। ३० ।। ललै लाइ धंधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु कीआ । खाणा पीणा सम करि सहणा भाणै ता कै हुकमु पइआ ।। ३१ ।। ववै वासुदेउ परमेसरु वेखण कउ जिनि वेसु कीआ । वेखै चाखै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ।। ३२ ।। ड़ाड़ै राड़ि करहि किआ प्राणी तिसहि धिआवहु जि अमरु होआ । तिसहि धिआवहु सचि समावहु ओसु विटहु कुरबाणु कीआ ।। ३३ ।। हाहै होरु न कोई दाता जीअ उपाइ जिनि रिजकु दीआ । हरिनामु धिआवहु हरि नामि समावहु अनदिनु लाहा हरिनामु लीआ ।। ३४ ।। आइड़ै आपि करे जिनि छोडी जो किछु करणा सु करि रहिआ । करे कराए सभ किछु जाणै नानक साइर इव कहिआ ।। ३५ ।। १ ।।

माया का मोह मनुष्य की आत्मिक मौत है। जब मौत सिर पर आती है, तब परमात्मा को स्मरण करने का विचार आता है। जब तक जीवित रहा, (लौकिक विधा के सहारे) दूसरी बातें ही पढ़ता रहा, न मृत्यु स्मरण आई और न मधुसूदन (परमात्मा) स्मरण आया ।। २८ ।। यदि मनुष्य गुरु द्वारा बतलाए मार्ग पर चलकर सत्यस्वरूप परमात्मा को ही सर्वत्र देखे, परमात्मा की गुणस्तुति करता रहे, परमात्मा को सर्वव्यापक समझे और परमात्मा से गहरा मेल बनाए, तो उसे कभी जन्म-मरण का चक्र नहीं मिलता ।। २९ ।। जितने भी जीव परमात्मा ने उत्पन्न किए हैं, उन सबके भीतर परमात्मा आप मौजूद है। जीवों को पैदा कर परमात्मा ने सबको कामकाज में लगाया हुआ है। जिन पर उसकी कृपा होती है, वे ही उसका नाम-स्मरण करते हैं ।। ३० ।। जिस परमात्मा ने (अपनी सृष्टि) माया के धन्धे में लगाई है, जिसने माया का मोह मीठा बना दिया है, उसी की रज़ा में उसका हुक्म क्रियान्वित होता है और जीवों को खाने-पीने के पदार्थ (सुख) तथा उसी प्रकार दुख भी सहने को मिलते हैं ।। ३१ ।। परमात्मा परमेश्वर आप ही है, जिसने तमाशा देखने के लिए जगत बनाया है, हर एक जीव की भली प्रकार सँभाल करता है, (सबके भीतर की) बात जानता है और भीतर-बाहर सर्वत्र व्यापक है ।। ३२ ।। हे प्राणी ! (विधा का सहारा लेकर) झगड़े आदि करने से कोई (आत्मिक) लाभ नहीं होगा। उस परमात्मा को स्मरण करो जो सत्यस्वरूप है, उसी का स्मरण करो, उसी में लीन होकर रहो। (वही मनुष्य पंडित है जिसने) उस परमात्मा के स्मरण से (अपने अहंकार को) बलिहारी कर दिया है ।। ३३ ।। जिस परमात्मा ने (सृष्टि के) जीव पैदा करके सबको अन्न पहुँचाया है, (उसके अतिरिक्त) कोई दूसरा

देन देनेवाला नहीं है। (हे मन!) उस हरि का नाम स्मरण करते रहो, उस हरि के नाम में सदा टिके रहो। (वही पंडित है जिसने) प्रत्येक क्षण हरि-नाम के स्मरण का लाभ प्राप्त किया है ॥ ३४ ॥ जिस परमात्मा ने (सारी सृष्टि) आप पैदा की है, वह जो कुछ करना ठीक समझता है, वही किए जा रहा है। परमात्मा आप सब कुछ करता है, आप ही सब कुछ जीवों से कराता है, (हर एक के मन की भावना) आप ही जानता है। हे नानक! (कह— जो विद्वान है) उसने परमात्मा को इस प्रकार ही व्यक्त किया है। (विद्वत्ता के अहंकारवश वह अनाप-शनाप नहीं बोलता) ॥ ३५ ॥ १ ॥

रागु आसा महला ३ पटी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अयो अंङै सभु जगु आइआ काखै घंङै कालु भइआ। रीरी लली पाप कमाणे पड़ि अवगण गुण वीसरिआ ॥ १ ॥ मन ऐसा लेखा तूं की पड़िआ। लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधं ङाइऐ सिमरहि नाही नंनै ना तुधु नामु लइआ। छछै छीजहि अहिनिसि मूड़े किउ छूटहि जमि पाकड़िआ ॥ २ ॥ बबै बूझहि नाही मूड़े भरमि भुले तेरा जनमु गइआ। अणहोदा नाउ धराइओ पाधा अवरा का भारु तुधु लइआ ॥ ३ ॥ जजै जोति हिरि लई तेरी मूड़े अंति गइआ पछुतावहिगा। एकु सबदु तूं चीनहि नाही फिरि फिरि जूनी आवहिगा ॥ ४ ॥ तुधु सिरि लिखिआ सो पड़ु पंडित अवरा नो न सिखालि बिखिआ। पहिला फाहा पइआ पाधे पिछो दे गलि चाटड़िआ ॥ ५ ॥ ससै संजमु गइओ मूड़े एकु दानु तुधु कुथाइ लइआ। साई पुत्री जजमान की सा तेरी एतु धानि खाधै तेरा जनमु गइआ ॥ ६ ॥ मंमै मिति हिरि लई तेरी मूड़े हउमै वडा रोगु पइआ। अंतर आतमै ब्रहमु न चीनिआ माइआ का मुहताजु भइआ ॥ ७ ॥ ककै कामि क्रोधि भरमिओहु मूड़े ममता लागे तुधु हरि विसरिआ। पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूं डूबि मुआ ॥ ८ ॥ ततै तामसि जलिओहु मूड़े थथै थान भरिसटु होआ। घघै घरि घरि फिरहि तूं मूड़े ददै दानु न तुधु लइआ ॥ ९ ॥

सारा विश्व (जो) अस्तित्व में आया हुआ है, (इसके सिर पर) मौत (भी) विद्यमान है। (लेकिन जीव मौत को भुलाकर) अवगुण पैदा करनेवाली बातें पढ़कर गुण भुला देते हैं और पाप कमाते रहते हैं ॥ १ ॥ हे मन ! ऐसा लेखा पढ़ने का तुझे कोई लाभ नहीं हो सकता (क्योंकि इसमें पड़कर तू कुमार्गगामी ही बना रहा) और अपने कर्मों का हिसाब देना तेरे सिर पर रहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे मन ! केवल मात्र दुनियावी लेखा सीखने में लगकर) तू परमात्मा को स्मरण नहीं करता, तू परमात्मा का नाम स्मरण नहीं करता। हे मूर्ख ! (प्रभु को भुलाकर) दिन-रात तू कमज़ोर हो रहा है, जब यम तुझे पकड़ लेंगे, तो छुटकारा कैसे होगा ? ॥ २ ॥ हे मूर्ख ! तूने (सही मार्ग) नहीं समझता, इस भ्रम में कुमार्गगामी होकर तू अपना मनुष्य-जीवन व्यर्थ गवाँ रहा है। तेरे भीतर आत्मिक गुण नहीं हैं, (फिर भी) तूने अपना नाम पंडित रखवाया हुआ है। तूने अपने समीप के दूसरे लोगों का भार अपने सिर पर उठाया हुआ है ॥ ३ ॥ हे मूर्ख ! (माया-मोह ने) तेरी बुद्धि छीन ली है, अन्तिम समय में जब यहाँ से जाएगा, तब पश्चाताप करेगा। (अब इस समय) तू प्रभु की गुणस्तुति की वाणी से मेल नहीं जोड़ता, इस कारण पुनःपुनः योनियों में पड़ा रहेगा ॥ ४ ॥ हे पंडित ! तेरे अपने मस्तक पर जो लेख लिखा हुआ है, पहले तू उस लेख को पढ़ और उसे समझकर दूसरों को भी केवल माया का लेखा न सिखा। (माया का लेख पढ़ानेवाले) पंडित ने अपने गले में (माया की) फाँसी डाली हुई है, तत्पश्चात वही फाँसी अपने विद्यार्थियों के गले में डाल देता है ॥ ५ ॥ हे मूर्ख ! तू अज्ञानवश जीवन-मुक्ति भी गवाँ बैठा है। पुरोहित होने के कारण यजमान से ख़ूब दान लेता है, (लेकिन) एक दान तू अपने यजमान से ग़लत स्थान पर लेता है। यजमान की बेटी तेरी ही बेटी है (बेटी के ब्याह में यजमान से कुछ लेना पाप है)। यह अन्न खाने से (एक पैसा लेने से भी) तू अपना आत्मिक जीवन गवाँ लेता है ॥ ६ ॥ हे मूर्ख ! (माया के लालच ने) तेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है। (दूसरे) तुझे यह बड़ा (आत्मिक) रोग चिपटा हुआ है कि मैं विद्वान हूँ। तू अपने भीतर विद्यमान परमात्मा को पहचान नहीं सका, (इसलिए तेरा आपा) माया (के लालच) में फँसा है ॥ ७ ॥ हे मूर्ख ! (दूसरों को सूझ-बूझ देता हुआ) तू आप कामवासना में, क्रोध में (फँसकर) कुमार्गगामी हो गया है। तू (धार्मिक पुस्तक) पढ़ता है, उनका आशय सोचता है और दूसरों को सुनाता भी है; लेकिन (सही जीवन-मार्ग) समझे बिना तू मोह में डूबकर आत्मिक मौत मर चुका है ॥ ८ ॥ हे मूर्ख (पंडित !) तू (भीतर से) क्रोध से जला हुआ है, तेरा हृदय-स्थान (लालच से) गन्दा हुआ पड़ा है। हे मूर्ख ! तू हर एक

(यजमान के) घर में (दक्षिणा के लिए) घूमता फिरता है, लेकिन प्रभु के नाम की दक्षिणा तूने अभी तक किसी से नहीं ली ॥ ९ ॥

पपै पारि न पवही मूड़े परपंचि तूं पलचि रहिआ। सचै आपि खुआइओहु मूड़े इहु सिरि तेरै लेखु पइआ ॥ १० ॥ भभै भवजलि डुबोहु मूड़े माइआ विचि गलतानु भइआ। गुरपरसादी एको जाणै एक घड़ी महि पारि पइआ ॥ ११ ॥ ववै वारी आईआ मूड़े वासुदेउ तुधु वीसरिआ। एह वेला न लहसहि मूड़े फिरि तूं जम कै वसि पइआ ॥ १२ ॥ झझै कदे न झूरहि मूड़े सतिगुर का उपदेसु सुणि तूं विखा। सतिगुर बाझहु गुरु नही कोई निगुरे का है नाउ बुरा ॥ १३ ॥ धधै धावत वरजि रखु मूड़े अंतरि तेरै निधानु पइआ। गुरमुखि होवहि ता हरि रसु पीवहि जुगा जुगंतरि खाहि पइआ ॥ १४ ॥ गगै गोबिदु चिति करि मूड़े गली किनै न पाइआ। गुर के चरन हिरदै वसाइ मूड़े पिछले गुनह सभ बखसि लइआ ॥ १५ ॥ हाहै हरि कथा बूझु तूं मूड़े ता सदा सुखु होई। मनमुखि पड़हि तेता दुखु लागै विणु सतिगुर मुकति न होई ॥ १६ ॥ रारै रामु चिति करि मूड़े हिरदै जिन्ह कै रवि रहिआ। गुर परसादी जिन्ही रामु पछाता निरगुण रामु तिन्ही बूझि लहिआ ॥ १७ ॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ अकथु न जाई हरि कथिआ। नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ ॥ १८ ॥ २ ॥

हे मूर्ख ! तू संसार (के मोह-जाल) में (इतना) उलझ रहा है कि इसमें से दूसरी ओर नहीं गुज़र सकता। हे मूर्ख ! (तेरे कृत कर्मों के अनुसार) कर्तार ने तुझे कुमार्गगामी बना दिया है और उन कृत कर्मों के संस्कारों का एकत्रित समूह का लेख तेरे मस्तक पर (ऐसा) लिखा हुआ है कि तुझे कुछ नहीं सूझता ॥ १० ॥ हे मूर्ख ! तू माया में इतना मस्त है कि तुझे कुछ सूझता ही नहीं, तू संसार-समुद्र में गोते खा रहा है। (लेकिन) गुरु की कृपा से जो मनुष्य परमात्मा के साथ मेल जोड़ता है, वह इस संसार-समुद्र से एक पल में पार उतर जाता है ॥ ११ ॥ हे मूर्ख ! सौभाग्य से मनुष्य-जन्म की बारी आई थी, लेकिन इसमें भी तुझे परमात्मा विस्मृत ही रहा। हे मूर्ख ! यह समय पुनः प्राप्त नहीं हो सकेगा। व्यर्थ ही जन्म गवाँकर तू यम के वश में हो जायगा ॥ १२ ॥ हे मूर्ख ! तू पूर्णगुरु का उपदेश धारण करके देख ले, तुझे कभी दुख नहीं होगा

(क्योंकि माया-मोह का जाल टूट जायगा); लेकिन यदि पूर्णगुरु की शरण नहीं लेगा, तो कोई गुरु (इन मानसिक दुखों से) बचा नहीं सकता। जो मनुष्य पूर्णगुरु के बताए मार्ग पर नहीं चलता, वह बदनामी ही प्राप्त करता है ॥ १३ ॥ हे मूर्ख ! आत्मिक सुख का ख़ज़ाना तेरे भीतर बस रहा है, इसलिए बाहर भटकते मन को रोककर रख। यदि तू गुरु द्वारा बताए मार्ग पर चले तो परमात्मा के नाम का रस पान करेगा, सदा यह नाम-रस इस्तेमाल करता रहेगा ॥१४॥ हे मूर्ख ! गोविंद के ध्यान बिना राह नहीं, गुरु के चरण हृदय में रख, पूर्व कृत समस्त पाप क्षमा हो जाएँगे ॥ १५ ॥ हे मूर्ख ! यदि तू परमात्मा की गुणस्तुति करनी सीख ले, तो तुझे हमेशा आत्मिक आनन्द मिलता रहे। स्वेच्छाचारी मनुष्य जितना ही (लौकिक शिक्षा) ग्रहण करते हैं, उतनी ही अधिक अशान्ति पाते हैं, (लेकिन) गुर-शरण के बिना (इस अशान्ति से) मुक्ति नहीं होती ॥ १६ ॥ हे मूर्ख ! परमात्मा को अपने हृदय में बसाए रख। जिन मनुष्यों के हृदय में परमात्मा सदा टिका रहता है, (उनकी संगति में रहकर) गुरु-कृपा द्वारा जिन व्यक्तियों ने परमात्मा से मेल कर लिया, उन्होंने माया से निर्लिप्त प्रभु (का वास्तविक रूप) समझकर उसका मिलाप प्राप्त कर लिया ॥ १७ ॥ हे प्रभु ! तेरे गुणों का अन्त नहीं पाया जा सकता। परमात्मा का स्वरूप अभिव्यक्ति से परे है, उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। हे नानक ! जिन्हें सतिगुरु मिल जाए, उनके भीतर से माया-मोह के संस्कारों का हिसाब समाप्त हो जाता है ॥ १८ ॥ २ ॥

रागु आसा महला १ छंत घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मुंध जोबनि बालड़ीए मेरा पिरु रलीआला राम। धन पिर नेहु घणा रसि प्रीति दइआला राम। धन पिरहि मेला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे। सेजा सुहावी संगि पिर कै सात सर अंम्रित भरे। करि दइआ मइआ दइआल साचे सबदि मिलि गुण गावओ। नानका हरि वरु देखि बिगसी मुंध मनि ओमाहओ ॥ १ ॥ मुंध सहजि सलोनड़ीए इक प्रेम बिनंती राम। मै मनि तनि हरि भावै प्रभ संगमि राती राम। प्रभ प्रेमि राती हरि बिनंती नामि हरि कै सुखि वसै। तउ गुण पछाणहि ता प्रभु जाणहि गुणह वसि अवगण नसै। तुधु बाझु इकु तिलु रहि न साका कहणि सुनणि न धीजए। नानका प्रिउ प्रिउ करि पुकारे रसन रसि मनु भीजए ॥ २ ॥

सखीहो सहेलड़ीहो मेरा पिरु वणजारा राम । हरिनामो वणंजड़िआ रसि मोलि अपारा राम । मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभ भावै ता मुंध भली । इकि संगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली । करण कारण समरथ स्रीधर आपि कारजु सारए । नानक नदरी धन सोहागणि सबदु अभ साधारए ।। ३ ।। हम घरि साचा सोहिलड़ा प्रभ आइअड़े मीता राम । रावे रंगि रातड़िआ मनु लीअड़ा दीता राम । आपणा मनु दीआ हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावए । तनु मनु पिर आगै सबदि सभागै घरि अंम्रित फलु पावए । बुधि पाठि न पाईऐ बहु चतुराईऐ भाइ मिलै मनि भाणे । नानक ठाकुर मीत हमारे हम नाही लोकाणे ।। ४ ।। १ ।।

हे यौवन में मदमस्त मूर्ख स्त्री ! प्यारा प्रभु ही आनन्द का स्रोत है । जिस जीव-स्त्री के साथ प्रभु-पति का बहुत प्रेम होता है, वह बड़े चाव से दयालु प्रभु को प्यार करती है । प्रभु-स्वामी आप कृपा करता है, तब ही जीव-स्त्री का प्रभु-पति के साथ मिलाप होता है । पति-प्रभु की संगति में उसकी हृदय-सेज सुन्दर बन जाती है, उसकी पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ, उसका मन तथा बुद्धि —ये सब नाम-अमृत से भरपूर हो जाते हैं । हे सत्यस्वरूप दयालु प्रभु ! मुझ पर कृपा कर, मैं गुरु के शब्द में जुड़कर तेरे गुण गाऊँ । हे नानक ! जिस जीव-स्त्री के मन में पति-प्रभ के मिलाप का चाव पैदा होता है, वह हरि-प्रियतम का दर्शन करके (भीतर) प्रसन्न होती है ।। १ ।। हे आत्मिक स्थिरता में टिकी सुन्दर नेत्रों वाली जीव-स्त्री ! मेरी एक प्रेममयी प्रार्थना सुन ! मुझे भक्ति में प्रभु प्यारा लगे और मैं प्रभु के साथ मिल जाऊँ । जो जीव-स्त्री प्रभु-प्रेम में मस्त रहती है और उसके द्वार पर प्रार्थना करती रहती है, वह उस प्रभु के नाम में जुड़कर आत्मिक आनन्द में जीवन व्यतीत करती है । हे प्रभु ! जो जीव-स्त्रियाँ जब तेरे गुण पहचानती हैं, तब वे तेरे साथ गहरे सम्बन्ध बना लेती हैं; उनके हृदय में गुण आ टिकते हैं और अवगुण उनके भीतर से दूर हो जाते हैं । हे प्रभु ! मैं तेरे बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकती । (तेरे नाम के अतिरिक्त कुछ) कहने या सुनने से मेरा मन धैर्य धारण नहीं करता । हे नानक ! जो जीव-स्त्री प्रभु को 'हे प्यारे ! हे प्यारे !' कह-कहकर स्मरण करती है, उसकी जिह्वा तथा मन नाम-रस में भीग जाता है ।। २ ।। हे सहेलियो ! परमात्मा प्रेम का व्यापारी है । जिसने उसके नाम का व्यापार किया है, वह उसके नाम-रस में भीगकर इतने उच्च आत्मिक जीवन वाली बन जाती है कि उसका मूल्यांकन नहीं

हो सकता । वह जीव-सखी अमूल्य हो जाती है, प्यारे प्रभु के सत्यस्वरूप चरणों में वह जुड़ी रहती है। वही जीव-स्त्री भली समझो, जो पति-प्रभु को प्यारी लगती है । प्रभु की स्मृति में लीन होकर अनगिनत (जीव-स्त्रियाँ) आत्मिक आनन्द पाती हैं, मैं उनके द्वार पर खड़ा होकर प्रार्थना करता हूँ (कि मेरी सहायता करो, मैं प्रभु का स्मरण कर सकूँ) । हे नानक ! जिस जीव-स्त्री पर प्रभु की कृपा-दृष्टि होती है वह भाग्यशाली है, गुरु का ज्ञान उसके हृदय को सहारा देता है; वह परमात्मा जो सारे जगत का मूल है, जो सब कुछ करने योग्य है, जो माया का स्वामी है, वह जीव-स्त्री के मनुष्य-जन्म के मनोरथ को सफल करता है ॥३॥ हे सहेलियो ! मेरे हृदय-घर में, मानो अटल खुशियों भरा गीत होने लगा है क्योंकि मित्र-प्रभु मेरे अन्दर आ बसा है । वह प्रभु उन जीवों को मिलता है, जो उसके प्रेम-रंग में रँगे रहते हैं। वे अपना मन उसके आश्रित करते हैं और वह नाम प्राप्त करते हैं । जो जीव-स्त्री अपना मन प्रभु-पति के हवाले करती है, वह प्रभु-पति का मिलाप प्राप्त कर लेती है, फिर अपनी रज़ा अनुसार प्रभु उस जीव-स्त्री के साथ मिला रहता है । जो जीव-वधू गुरु के शब्द में जुड़कर अपना मन प्रभु-पति को भेंट करती है, वह अपने सौभाग्यशाली हृदय-घर में आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-फल पा लेती है । प्रभु किसी चतुराई, किसी प्रपंच, किसी पाठ से नहीं मिलता, वह तो प्रेम के द्वारा मिलता है; उसे मिलता है, जिसे मन में वह प्यारा लगता है । हे नानक ! (कह—) हे मेरे ठाकुर ! हे मेरे मित्र ! (कृपा कर) मैं तेरे अतिरिक्त किसी दूसरे का न बनूँ ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ आसा महला १ ॥ अनहदो अनहदु वाजै रुण झुण कारे राम । मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम । अनदिनु राता मनु बैरागी सुंन मंडलि घरु पाइआ । आदि पुरखु अपरंपरु पिआरा सतिगुरि अलखु लखाइआ । आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे । नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण झुण कारे ॥ १ ॥ तितु अगम तितु अगम पुरे कहु कितु बिधि जाईऐ राम । सचु संजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईऐ राम । सचु सबदु कमाईऐ निज घरि जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना । तितु साखा मूलु पतु नही डालो सिरि सभना परधाना । जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईऐ । नानक सहजि मिले जग जीवन सतिगुर बूझ बुझाईऐ ॥ २ ॥ गुरु सागरो रतनागरु तितु रतन घणेरे राम । करि मजनो सपत सरे मन

निरमल मेरे राम। निरमल जलि न्हाए जा प्रभ भाए पंच मिले वीचारे। कामु करोधु कपटु बिखिआ तजि सचु नामु उरि धारे। हउमै लोभ लहरि लब थाके पाए दीन दइआला। नानक गुर समानि तीरथु नही कोई साचे गुर गोपाला ॥ ३ ॥ हउ बनु बनो देखि रही त्रिणु देखि सबाइआ राम। त्रिभवणो तुझहि कीआ सभु जगतु सबाइआ राम। तेरा सभु कीआ तूं थिरु थीआ तुधु समानि को नाही। तूं दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किसु सालाही। अणमंगिआ दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भंडारा। राम नाम बिनु मुकति न होई नानकु कहै वीचारा ॥ ४ ॥ २ ॥

मेरा मन प्रभु के रंग में रँग गया है, अब मेरे भीतर (मानो) घुँघरुओं, झाँझों की ध्वनि करनेवाला (अनहद) निरन्तर बज रहा है। मेरा मन प्रत्येक पल (प्रभु-स्मृति में) मस्त रहता है, मैंने अब ऐसे उच्च मंडल में ठिकाना प्राप्त कर लिया है, जहाँ कोई माया सम्बन्धी कल्पना नहीं उठती। सतिगुरु ने मुझे वह अलक्ष्य प्रभु दिखा दिया है, जो सबका आदि है, जो सबमें व्यापक है, जो सबका प्यारा है और जिससे परे कोई हस्ती नहीं। मेरा मन गुरु के शब्द के विचार से उस नारायण में मस्त रहता है, जो अपने आसन पर सदा स्थिर रहता है। हे नानक ! जिन मनुष्यों के मन प्रभु के नाम में रँगे जाते हैं, (प्रभु-नाम के) मतवाले हो जाते हैं, उनके भीतर, (मानो) घुँघरुओं की छनकार करनेवाला (बाजा) निरन्तर बजता रहता है ॥ १ ॥ (हे सहेलियो !) कह, उस अगम्य परमात्मा के शहर में किस तरीक़े से जाया जाता है। (अगली पंक्ति में प्रभु के पास जाने का मार्ग सुझाया है) सत्यस्वरूप प्रभु का नाम स्मरण कर, इन्द्रियों को संयमित करके, प्रभु के गुण (हृदय में) सँभालकर सतिगुरु का शब्द कमाना चाहिए। सत्यस्वरूप प्रभु के साथ मिलानेवाले गुरु-शब्द की साधना करके अपने घर में (निज-स्वरूप में) पहुँचा जाता है और गुणों का ख़ज़ाना प्राप्त किया जाता है। उस प्रभु का सहारा लेने पर उसकी टहनियों, डालियों, जड़ और पत्तों का आसरा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती (क्योंकि) वह परमात्मा सबके सिर पर मालिक है। यह दुनिया जप करके, तप साधकर, इन्द्रियों को रोकने का यत्न करके हार गई है, (इस प्रकार के) हठ से इन्द्रियों को वश में करने के प्रयास से परमात्मा नहीं मिलता। हे नानक ! वे मनुष्य आत्मिक स्थिरता में टिककर जगत के सहारे प्रभु को मिल जाते हैं, जिन्हें सतिगुरु की (दी हुई) शिक्षा ने (सही जीवन-मार्ग) समझा दिया है ॥ २ ॥ गुरु (एक) समुद्र है, गुरु रत्नों की खान है, उसमें अनेक रत्न

हैं। (हे सहेलियो ! उसमें) पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ, मन तथा बुद्धि सहित स्नान कर, तेरा मन पवित्र हो जायगा। जीव पवित्र जल में तब ही स्नान कर सकता है, जब प्रभु को अच्छा लगता है। गुरु-शिक्षा के प्रभाव से इसे (सत्य, सन्तोष, दया, धर्म और धैर्य) पाँचों ही प्राप्त हो जाते हैं और (काम, क्रोध आदि) त्यागकर जीव सत्यस्वरूप प्रभु-नाम को अपने हृदय में बसा लेता है। जो मनुष्य दीनदयालु प्रभु को प्राप्त कर लेता है, उसके भीतर से अहंकार, लोभ की लहर तथा मिथ्या आदि समाप्त हो जाते हैं। हे नानक ! गुरु सत्यस्वरूप प्रभु गोपाल का रूप है, गुरु जैसा कोई दूसरा तीर्थ नहीं है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! मैं हरेक जंगल देख चुकी हूँ, सारी वनस्पति को देख चुकी हूँ। यह सब कुछ तूने ही पैदा किया है, ये त्रिभुवन तेरे द्वारा ही बनाए हुए हैं। सारा संसार तेरी सृजना है, (हे प्रभु ! तुम) सत्यस्वरूप हो, अप्रतिम हो। सारे जीव तेरे भिखारी हैं, तुम सबको देन देनेवाले हो, मैं तुमसे अलग किसकी गुणस्तुति करूँ ? हे दाता ! तुम तो बिना माँगे ही देन दिए जाते हो। भक्ति की देन से तेरे भंडार भरे पड़े हैं। नानक का विचार है कि परमात्मा के नाम के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ आसा महला १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु राता राम पिआरे राम। सचु साहिबो आदि पुरखु अपरंपरो धारे राम। अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रहमु परधानो। आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो। करम धरम की सार न जाणै सुरति मुकति किउ पाईऐ। नानक गुरमुखि सबदि पछाणै अहिनिसि नामु धिआईऐ ॥ १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु मानिआ नामु सखाई राम। हउमै ममता माइआ संगि न जाई राम। माता पित भाई सुत चतुराई संगि न संपै नारे। साइर की पुत्री परहरि तिआगी चरण तलै वीचारे। आदि पुरखि इकु चलतु दिखाइआ जह देखा तह सोई। नानक हरि की भगति न छोडउ सहजे होइ सु होई ॥ २ ॥ मेरा मनो मेरा मनु निरमलु साचु समाले राम। अवगण मेटि चले गुण संगम नाले राम। अवगण परहरि करणी सारी दरि सचै सचिआरो। आवणु जावणु ठाकि रहाए गुरमुखि ततु वीचारो। साजनु मीतु सुजाणु सखा तूं सचि मिलै वडिआई। नानक नामु रतनु परगासिआ ऐसी गुरमति पाई ॥ ३ ॥ सचु अंजनो अंजनु सारि निरंजनि राता राम। मनि तनि रवि रहिआ जग जीवनो दाता राम।

जग जीवनु दाता हरि मनि राता सहजि मिलै मेलाइआ। साध सभा संता की संगति नदरि प्रभू सुखु पाइआ। हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा। नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३ ॥

(गुरु की शरण लेकर) मेरा मन उस प्यारे प्रभु के नाम-रंग में रँग गया है, जो सत्यस्वरूप है, जो सबका मालिक है, सबका आदि है, सर्वव्यापक है, जिससे परे कोई नहीं है और जो सबको आसरा देता है। वह परमात्मा अगम्य है, मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों की उस तक पहुँच नहीं हो सकती, उससे परे कोई नहीं, वह अनन्त और सर्वोपरि है। सृष्टि के आदिकाल से चला आ रहा है, अब भी है और हमेशा मौजूद रहेगा। (हे भाई !) शेष संसार को नश्वर समझो। मेरा मन शास्त्रों के बतलाए धार्मिक कर्मों की विधि नहीं जानता, मेरे मन को यह ज्ञान भी नहीं है कि मोक्ष कैसे मिलती है ? हे नानक ! गुरु की शरण लेकर, उसकी शिक्षा मानकर मेरा मन यही पहचानता है कि दिन-रात परमात्मा का नाम स्मरण करना चाहिए ॥ १ ॥ मेरा मन स्वीकार कर चुका है कि परमात्मा का नाम ही सच्चा साथी है, माया, मोह और अहंकार मनुष्य के साथ नहीं जाते। माँ, बाप, भाई, पुत्र, धन, स्त्री, लौकिक चतुराई आदि शाश्वत साथी नहीं बन सकते, (इसलिए) गुरु के शब्द द्वारा मैंने माया-मोह बिल्कुल त्याग दिया है और इसे अपने पैरों के नीचे रखा हुआ है। (मेरा विश्वास है कि) आदि पुरुष ने (जगत रूपी) एक तमाशा दिखा दिया है, मुझे सब ओर परमात्मा ही दृष्टिगोचर होता है। हे नानक ! (कह—) मैं परमात्मा की भक्ति कभी विस्मृत नहीं करता। जगत में जो कुछ हो रहा है, वह स्वतः ही प्रभु की रज़ा में हो रहा है ॥ २ ॥ सत्यस्वरूप परमात्मा का नाम सँभालकर मेरा मन पवित्र हो गया है। (जीवन-यात्रा में) मैं अवगुण दूर करके चल रहा हूँ और इस प्रकार मेरे साथ गुणों का संग बन गया है। जो मनुष्य गुरु के द्वारा अवगुण त्यागकर श्रेष्ठ कर्म करता है, वह सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर सच्चा माना जाता है। वह मनुष्य अपना जन्म-मरण का चक्र समाप्त कर लेता है और वह जगत के मूल प्रभु को अपने मस्तिष्क में टिकाए रखता है। हे प्रभु ! तुम ही मेरे सज्जन हो, मित्र हो और अन्तर्यामी साथी हो। तेरे सत्यस्वरूप नाम में जुड़ने से आदर मिलता है। हे नानक ! (कह—) मुझे गुरु की ऐसी शिक्षा प्राप्त हुई है कि मेरे हृदय में परमात्मा का श्रेष्ठ नाम प्रकट हो गया है ॥ ३ ॥ (प्रभु के ज्ञान का) सुरमा डालकर मेरा मन माया-रहित परमात्मा के नाम में रँगा गया है। जगत का जीवन तथा सब देन देनेवाला प्रभु मेरे हृदय में प्रत्येक पल मौजूद रहता है। (गुरु के द्वारा)

जगत का जीवन और दाता प्रभु मन में बस जाता है, मन उसके नाम-रंग से रँग जाता है और आत्मिक स्थिरता में टिक जाता है। गुरमुखों की संगति में रहने से परमात्मा की कृपादृष्टि से सुख प्राप्त होता है। हे नानक ! जगत में ऐसे बिरले व्यक्ति हैं, जो परमात्मा की भक्ति के रंग में रँगकर माया-मोह से निर्लिप्त रहते हैं, जिनके भीतर से मोह तथा तृष्णा समाप्त हो जाते हैं और जो अहं को समाप्त कर परमात्मा के नाम में ही सदा लगे रहते हैं ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु आसा महला १ छंत घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ । सभना का दाता करम बिधाता दूख बिसारणहारु जीउ । दूख बिसारणहारु सुआमी कीता जाका होवै । कोटकोटंतर पापा केरे एक घड़ी महि खोवै । हंस सि हंसा बग सि बगा घट घट करे बीचारु जीउ । तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ १ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ । तिन जमु नेड़ि न आवै गुर सबदु कमावै कबहु न आवहि हारि जीउ । ते कबहु न हारहि हरि हरि गुण सारहि तिन्ह जमु नेड़ि न आवै । जंमणु मरणु तिन्हा का चूका जो हरि लागे पावै । गुरमति हरि रसु हरि फलु पाइआ हरि हरि नामु उरधारि जीउ । जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ २ ॥ जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ तिसै विटहु कुरबाणु जीउ । ता की सेव करीजै लाहा लीजै हरि दरगह पाईऐ माणु जीउ । हरि दरगह मानु सोई जनु पावै जो नरु एकु पछाणै । ओहु नव निधि पावै गुरमति हरि धिआवै नित हरि गुण आखि वखाणै । अहिनिसि नामु तिसै का लीजै हरि ऊतमु पुरखु परधानु जीउ । जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ हउ तिसै विटहु कुरबानु जीउ ॥ ३ ॥ नामु लैनि सि सोहहि तिन सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ । तिन फल तोटि न आवै जा तिसु भावै जे जुग केते जाहि जीउ । जे जुग केते जाहि सुआमी तिन फल तोटि न आवै । तिन्ह जरा न मरणा नरकि न परणा जो हरि

नामु धिआवै । हरि हरि करहि सि सूकहि नाही नानक पीड़ न खाहि जीउ । नामु लैन्हि सि सोहहि तिन्ह सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

हे प्रभु ! मैं जहाँ जाता हूँ, तुम सर्वत्र मौजूद (रहते) हो, तुम सत्य-स्वरूप हो, तुम जगत को पैदा करनेवाले हो। तुम जीवों को उनके कर्मों के अनुसार पैदा करनेवाले हो और समस्त दुखों के विनाशक हो। जिस प्रभु का किया हुआ सब घटित होता है, वह सबका स्वामी है, सबके दुख मिटाने में समर्थ है। वह जीवों के पापों के ढेर एक निमिष मात्र में नष्ट कर देता है। जीव चाहे श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम हों या अधम से अधम, परमात्मा सबकी रक्षा करता है। हे प्रभु ! मैं जहाँ जाता हूँ, तुम सर्वत्र मौजूद रहते हो, सत्यस्वरूप हो और सबके पैदा करनेवाले हो ॥ १ ॥ जिन मनुष्यों ने एकाग्र होकर प्रभु का स्मरण किया है, उन्होंने आत्मिक आनन्द प्राप्त किया है; लेकिन ऐसे व्यक्ति संसार में बिरले होते हैं। जो-जो व्यक्ति गुरु के शब्द की साधना करते हैं, यमराज उनके निकट नहीं आता और वे कभी भी मनुष्य-जन्म की बाज़ी हारकर नहीं आते। जो मनुष्य परमात्मा के गुण हृदय में टिकाते हैं, वे कभी भी (विकारों से) हार नहीं खाते, आत्मिक मृत्यु उनके निकट नहीं आती। जो व्यक्ति परमात्मा के चरण संस्पर्श करते हैं, उनका जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है। गुरु की शिक्षा लेकर जिन्होंने प्रभु-नाम का रस चखा है, नाम-फल प्राप्त किया है, प्रभु का नाम हृदय में टिकाया है, एकाग्रचित्त होकर प्रभु को स्मरण किया है, उन्होंने आत्मिक आनन्द प्राप्त किया है; लेकिन ऐसे व्यक्ति जगत में बिरले ही हैं ॥ २ ॥ मैं उस प्रभु पर बलिहारी हूँ, जिसने सृष्टि का सृजन किया है; यही लाभ जगत से प्राप्त करना चाहिए, (इससे ही) प्रभु के दरबार में आदर मिलता है। वही मनुष्य परमात्मा के दरबार में सेवा पाता है, जो एक परमात्मा को पहचानता है। जो मनुष्य गुरु की शिक्षा लेकर प्रभु-स्मरण करता है, परमात्मा की गुणस्तुति करता है, वह जगत के नौ खज़ाने प्राप्त करता है। दिन-रात उस प्रभु का स्मरण करना चाहिए, जो सर्वश्रेष्ठ है, सर्वव्यापक है और सर्वोच्च है। मैं उस परमात्मा पर बलिहारी हूँ, जिसने जगत पैदा किया है और इसे माया की भाग-दौड़ में लगा रखा है ॥ ३ ॥ जो मनुष्य परमात्मा का नाम-स्मरण करते हैं, वे सर्वत्र शोभा पाते हैं, उन्हें आत्मिक आनन्द रूपी फल मिलता है, (सर्वत्र) आदर पाते हैं, वे (मनुष्य-जन्म की बाज़ी) जीतकर (यहाँ से) जाते हैं। उन्हें (आत्मिक सुख का) फल इतना मिलता है कि परमात्मा की रज़ा अनुसार वह कभी भी कम नहीं होता, चाहे अनेक युग बीत जाएँ। हे प्रभु स्वामी ! चाहे अनेक युग बीत जाएँ, प्रभु-स्मरण करनेवालों के

आत्मिक आनन्द का फल कभी कम नहीं होता। जो-जो व्यक्ति हरि-नाम स्मरण करते हैं, उनकी उपलब्ध आत्मिक अवस्था को न बुढ़ापा आता है, न मृत्यु आती है और न ही वे कभी नरक में पड़ते हैं। हे नानक! जो व्यक्ति परमात्मा का स्मरण करते हैं, वे कभी क्षीण नहीं होते, वे कभी दुखी नहीं होते। जो मनुष्य नाम-स्मरण करते हैं, वे (सर्वत्र) शोभा पाते हैं, उन्हें आत्मिक आनन्द रूपी फल प्राप्त होता है, वे (सर्वत्र) सम्मानित होते हैं, वे (मनुष्य-जन्म की बाज़ी) जीतकर (यहाँ से) जाते हैं ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला १ छंत घरु ३ ॥

तूं सुणि हरणा कालिआ की वाड़ीऐ राता राम। बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम। फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परता पए। ओहु जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए। हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ। सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ ॥ १ ॥ भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम। मै गुरु पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम। बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातओ। सूरजु चड़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातओ। जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ। सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ ॥ २ ॥ मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले राम। साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम। मछुली विछुंनी नैण रुंनी जालु बधिकि पाइआ। संसारु माइआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइआ। भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि मनहु अंदेसिआ। सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ ॥ ३ ॥ नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम। जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम। कोई सहजि जाणै हरि पछाणै सतिगुरू जिनि चेतिआ। बिनु नाम हरि के भरमि भूले पचहि मुगध अचेतिआ। हरि नामु भगति न रिदै साचा से अंति धाही रुंनिआ। सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुंनिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

हे काले हरिण रूपी मन! तू (मेरी बात) सुन। तू इस जगत-फुलवाड़ी

में क्यों मस्त रहा है ? इस (फुलवाड़ी का) फल विष है, यह थोड़े दिन ही स्वादिष्ट लगता है फिर यह दुखदायक बन जाता है। जिसमें तू इतना मस्त है, यह आख़िर दुखदायक हो जाता है। परमात्मा के नाम के बिना यह अत्यन्त दुख देता है। (यह ऐसे क्षणिक हैं) जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं या जैसे बिजली चमक मारती है। परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई रक्षक नहीं है (हे मन ! ऐसे प्रभु को) तू भुलाए बैठा है। नानक कहता है— हे काले हरिण ! सत्यस्वरूप परमात्मा को स्मरण कर, नहीं तो (माया-मोह में लगकर) तू अपनी आत्मिक मृत्यु चिपटा लेगा ।। १ ।। हे प्रत्येक पुष्प पर बैठनेवाले भँवरे रूपी (मन !) इस प्रकार अत्यन्त भारी दुख पैदा होता है। मैंने अपने गुरु से पूछा है, जो सत्यस्वरूप प्रभु को अपने मस्तिष्क में टिकाए रखता है। (तेरी स्थिति विचारकर) मैंने गुरु से पूछा है कि यह मन-भँवरा तो बेलों तथा पुष्पों पर मस्त हो रहा है। (गुरु ने बतलाया है कि) जब ज़िन्दगी की रात्रि समाप्त हो जाती है, यह शरीर गिरकर राख हो जाता है, (विकारों में फँसा जीव ऐसे दुखी होता है जैसे) तेल हँडिया में डालकर गर्म किया जाता है। हे (दुनियावी पदार्थों में मस्त हुए जीव रूपी) भूत ! सतिगुरु के शब्द से ख़ाली रहकर तू यमराज के रास्ते में बँधा हुआ चोटें खाएगा। नानक कहता है— हे मेरे मन ! सत्यस्वरूप परमात्मा का स्मरण कर, नहीं तो आत्मिक मौत रूपी भँवर चिपटा लेगा ।। २ ।। हे मेरी परदेसी जीवात्मा ! तू क्यों जंजाल में फँस रही है ? यदि सत्यस्वरूप मालिक तेरे मन में रहता हो तो तू (मोह रूपी) यम के फैलाए हुए जाल में क्यों फँसे ? (हे मेरी आत्मा ! देख) जब शिकारी द्वारा (पानी में) जाल फैलाया हुआ होता है और मछली जाल में फँसकर पानी से बिछुड़ जाती है, तब आँखें भरकर रोती है। (इसी प्रकार जीव को) यह जगत मीठा लगता है, माया का मोह मीठा लगता है; लेकिन अन्त में यह भ्रम दूर होता है। हे मेरी आत्मा ! परमात्मा के चरणों में मन लगाकर भक्ति द्वारा अपने मन से चिन्ताएँ दूर कर ले। नानक कहता है— हे मेरी परदेसी जीवात्मा ! हे मेरे मन ! सत्यस्वरूप परमात्मा का स्मरण कर ।। ३ ।। नदियों से बिछुड़े प्रवाह का (नदी से) मेल सौभाग्यवश होता है, ऐसे ही मोहग्रस्त जीव सौभाग्यवश परमात्मा से मिल पाते हैं। जो मनुष्य प्रभु-चरणों में प्रीति करता है, वह समझ लेता है कि माया का मोह मीठा अवश्य है, लेकिन ज़हर से भरा रहता है। ऐसा कोई व्यक्ति, जिसने गुरु को स्मरण रखा है, आत्मिक स्थिरता में टिककर इस वास्तविकता को समझता है और परमात्मा से मेल करता है। परमात्मा के नाम के बिना माया-मोह की दुबिधा में पड़कर, कुमार्गगामी होकर अनेक मूर्ख एवं लापरवाह जीव दुखी होते हैं। जो व्यक्ति परमात्मा का नाम स्मरण नहीं करते, प्रभु की भक्ति नहीं करते,

अपने हृदय में सत्यस्वरूप प्रभु को नहीं बसाते, वे अन्त में फूट-फूटकर रोते हैं। नानक का कथन है कि सत्यस्वरूप प्रभु अपनी गुणस्तुति के शब्द में जोड़कर चिरकाल से बिछुड़े हुए जीवों को अपने साथ मिला लेता है ।। ४ ।। १ ।। ५ ।।

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। आसा महला ३ छंत घरु १ ।।
हम घरे साचा सोहिला साचै सबदि सुहाइआ राम । धन पिर मेलु भइआ प्रभि आपि मिलाइआ राम । प्रभि आपि मिलाइआ सचु मंनि वसाइआ कामणि सहजे माती । गुर सबदि सीगारी सचि सवारी सदा रावे रंगि राती । आपु गवाए हरि वरु पाए ता हरि रसु मंनि वसाइआ । कहु नानक गुर सबदि सवारी सफलिउ जनमु सबाइआ ।। १ ।। दूजड़ै कामणि भरमि भुली हरि वरु न पाए राम । कामणि गुणु नाही बिरथा जनमु गवाए राम । बिरथा जनमु गवाए मनमुखि इआणी अउगणवंती झूरे । आपणा सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ता पिरु मिलिआ हदूरे । देखि पिरु विगसी अंदरहु सरसी सचै सबदि सुभाए । नानक विणु नावै कामणि भरमि भुलाणी मिलि प्रीतम सुखु पाए ।। २ ।। पिरु संगि कामणि जाणिआ गुरि मेलि मिलाई राम । अंतरि सबदि मिली सहजे तपति बुझाई राम । सबदि तपति बुझाई अंतरि सांति आई सहजे हरि रसु चाखिआ । मिलि प्रीतम अपणे सदा रंगु माणे सचै सबदि सुभाखिआ । पड़ि पड़ि पंडित मोनी थाके भेखी मुकति न पाई । नानक बिनु भगती जगु बउराना सचै सबदि मिलाई ।। ३ ।। साधन मनि अनदु भइआ हरि जीउ मेलि पिआरे राम । साधन हरि कै रसि रसी गुर कै सबदि अपारे राम । सबदि अपारे मिले पिआरे सदा गुण सारे मनि वसे । सेज सुहावी जा पिरि रावी मिलि प्रीतम अवगण नसे । जितु घरि नामु हरि सदा धिआईऐ सोहिलड़ा जुग चारे । नानक नामि रते सदा अनदु है हरि मिलिआ कारज सारे ।। ४ ।। १ ।। ६ ।।

(हे सहेली !) मेरे (हृदय-)घर में सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति का गीत हो रहा है, सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति वाले गुरु-शब्द ने मेरे

(भीतर) को सुन्दर बना दिया है। उस जीव-स्त्री का प्रभु-पति के साथ मेल होता है, जिसे प्रभु ने आप ही (अपने चरणों में) लगा लिया, अपना सत्यस्वरूप नाम उसके हृदय में बसा दिया, वह जीव-स्त्री आत्मिक स्थिरता में मस्त रहती है। गुरु की शिक्षा ने उस जीव-स्त्री का श्रृंगार किया, सत्यस्वरूप हरि-नाम ने उसे सुन्दर बना दिया, वह फिर प्रभु-प्रेम में रँगी हुई सदा (प्रभु-मिलाप) का आनन्द महसूस करती है। (जब जीव-स्त्री) अहंकार दूर करती है और (अपने भीतर) प्रभु-पति को प्राप्त कर लेती है, तब वह प्रभु के नाम का स्वाद अपने मन में करती है। हे नानक ! कह— गुरु के शब्द से जिस जीव-स्त्री का जीवन सुन्दर बन जाता है, उसकी सारी ज़िन्दगी सफल हो जाती है ॥ १ ॥ (हे सहेली !) जो जीव-स्त्री व्यर्थ की दुविधाओं में पड़कर पथभ्रष्ट हो जाती है, उसे प्रभु-पति का मिलाप नहीं होता। वह जीव-स्त्री (अपने भीतर) गुण पैदा नहीं करती, वह अपनी ज़िन्दगी व्यर्थ गवाँ देती है। स्वेच्छाचारिणी मूर्ख जीव-स्त्री व्यर्थ जीवन गवाँती है, अवगुणों से भरी रहने से वह भीतर ही भीतर दुखी रहती है। लेकिन जब उसने गुरु द्वारा बतलाई सेवा करके शाश्वत आत्मिक आनन्द प्राप्त कर लिया, तब उसे प्रभु-पति साथ-साथ रहता ही महसूस हो गया। प्रभु-पति को देखकर वह प्रसन्न हो गई, वह भीतर से आनन्दमग्न हो गई, वह सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति वाले गुरु-शब्द में और प्रभु-प्रेम में लीन हो गई। हे नानक ! प्रभु के नाम सेअलग जीव-स्त्री दुविधा के कारण कुमार्गगामी हुई रहती है और बाद में वही किसी प्रकार प्रियतम-प्रभु को मिलकर आत्मिक आनन्द प्राप्त करती है ॥ २ ॥ (हे सखी !) जिस जीव-स्त्री को गुरु ने प्रभु-चरणों में जोड़ दिया, उसे प्रभु-पति ने साथ-साथ बसता हुआ पहचान लिया; वह भीतर से गुरु-शब्द के प्रभाव से प्रभु में ऐक्यभाव (एकाकार) हो गई और आत्मिक स्थिरता में टिककर उसने अपनी जलन बुझा ली। (जिसने) अपने भीतर से विकारों की जलन बुझा ली, उसके भीतर शीतलता हो गई, आत्मिक स्थिरता में टिककर उसने हरि-नाम का स्वाद चख लिया। अपने प्रभु-पति को मिलकर वह सदा प्रेम-रंग में मस्त रहती है, सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति वाले गुरु-शब्द में जुड़कर उसकी बोली मीठी हो जाती है। (हे सखी !) पंडित पढ़-पढ़कर, मौनी (समाधि लगाकर), योगी आदि (वेश बदल-बदलकर) थक गए; (लेकिन इन तरीक़ों से) उन्हें मुक्ति प्राप्त न हुई। हे नानक ! परमात्मा की भक्ति के बिना जगत (माया-मोह में) पागल हुआ फिरता है, सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति वाले गुरु-शब्द के प्रभाव से प्रभु-चरणों में मिलाप प्राप्त कर लेता है ॥ ३ ॥ (हे सखी !) जिस जीव-स्त्री को प्यारे हरि-प्रभु ने अपने चरणों में शरण दे दी, उसके हृदय में ख़ुशियों का उदय हो जाता है। वह जीवात्मा प्रभु की गुणस्तुति करनेवाले गुरु के शब्द द्वारा प्रभु के प्रेमरस में सिक्त रहती है।

अपरम्पार प्रभु की गुणस्तुति करनेवाली वाणी के प्रभाव से वह जीव-स्त्री प्रभु का दर्शन करती है, प्रभु के गुणों को अन्तर्मन में सँभालकर रखती है और उन्हें टिकाए रखती है। जब प्रभु-पति ने उसे अपने चरणों में स्थान दिया, तब उसकी हृदय-सेज सुन्दर बन गई। प्रियतम-प्रभु के दर्शन से उसके समस्त अवगुण मिट गए। जिस हृदय रूपी घर में प्रभु का नाम-स्मरण होता है, वहाँ सदा ख़ुशी के गीत गाए जाते हैं। नानक का कथन है कि जो जीव परमात्मा के नाम-रंग में रँगे होते हैं, उनके भीतर सदा आनन्द का अनुभव होता है और वे प्रभु-चरणों में रहकर अपने सब कार्य सफल कर लेते हैं ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छंत घरु ३ ॥

साजन मेरे प्रीतमहु तुम सह की भगति करेहो। गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो। भगति करहु तुम सहै केरी जो सह पिआरे भावए। आपणा भाणा तुम करहु ता फिरि सह खुसी न आवए। भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा गुर दुआरै को पावए। कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगती चितु लावए ॥ १ ॥ मेरे मन बैरागीआ तूं बैरागु करि किसु दिखावहि। हरि सोहिला तिन्ह सद सदा जो हरि गुण गावहि। करि बैरागु तूं छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणए। जलि थलि महीअलि एको सोई गुरमुखि हुकमु पछाणए। जिनि हुकमु पछाता हरी केरा सोई सरब सुख पावए। इव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु हरि लिव लावए ॥ २ ॥ जह जह मन तूं धावदा तह तह हरि तेरै नाले। मन सिआणप छोडीऐ गुर का सबदु समाले। साथि तेरै सो सहु सदा है इकु खिनु हरि नामु समालहे। जनम जनम के तेरे पाप कटे अंति परम पदु पावहे। साचे नालि तेरा गंढु लागै गुरमुखि सदा समाले। इउ कहै नानकु जह मन तूं धावदा तह हरि तेरै सदा नाले ॥ ३ ॥ सतिगुर मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आए। नामु विहाझे नामु लए नामि रहे समाए। धावतु थंम्हिआ सतिगुरि मिलिऐ दसवा दुआरु पाइआ। तिथै अंम्रित भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु थंम्हि रहाइआ। तह अनेक वाजे सदा अनहदु है सचे रहिआ समाए। इउ कहै नानकु सतिगुरि मिलिऐ धावतु थंम्हिआ

निज घरि वसिआ आए ।। ४ ।। मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु । मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु । मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई । गुरपरसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई । मनि सांति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु । इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु ।। ५ ।।

हे मेरे प्यारे सज्जनो ! सदा प्रभु की भक्ति करते रहा करो, गुरु की शरण लो और उससे सर्वाधिक बहुमूल्य वस्तु रूपी हरि-नाम प्राप्त करो । तुम प्रभु रूपी पति की आराधना करते रहो, यह आराधना प्रियतम-प्रभु को बहुत भाती है । यदि तुम स्वेच्छाचारी बने रहोगे, तो प्रभु-पति की प्रसन्नता तुम्हें नहीं मिलेगी । भक्ति और प्रेम का यह मार्ग अत्यन्त कठिनाइयों से भरा है । कोई विरला मनुष्य जो गुरु के द्वार पर आ गिरता है, इसे प्राप्त करने में सफल होता है । नानक का कथन है कि जिस मनुष्य पर प्रभु स्वयं दयालु होता है, वह मनुष्य अपना मन प्रभु की भक्ति में जोड़ता है ।। १ ।। हे वैराग्यभाव से प्रेरित मन ! तू यह वैराग्य किसे दिखाता है ? (वास्तविकता यह है कि) जो मनुष्य परमात्मा के गुण गाते हैं, उनके भीतर सदा उमंग तथा चाव बना रहता है । (इसलिए) पाखंड छोड़कर प्रभु-पति से मिलन की इच्छा कर । वह प्रियतम-प्रभु अन्तर्यामी और जल, धरती तथा आकाश सर्वत्र व्यापक है । जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, वह उस प्रभु की रज़ा को समझता है । जिसने परमात्मा की रज़ा को समझ लिया, वही समस्त आनन्द अनुभव करता है । नानक का विचार है कि प्रभु-मिलन की इच्छा रखनेवाला ऐसा मनुष्य प्रतिपल प्रभु-चरणों में सुरति जोड़े रखता है ।। २ ।। हे मेरे मन ! जहाँ-जहाँ तू दौड़ता फिरता है, वहाँ सर्वत्र परमात्मा तेरे साथ ही रहता है । इसलिए अपनी चतुराई को त्याग देना चाहिए । गुरु की शिक्षा को ग्रहण कर (तब तुझे महसूस होगा कि) वह प्रियतम-प्रभु सदा तुम्हारे साथ है । यदि तू एक क्षण के लिए भी परमात्मा का नाम भीतर टिकाए, तो तेरे अनेक जन्मों के पाप कट जाएँ और इस प्रकार तू सर्वोच्च आत्मिक स्तर प्राप्त कर ले । गुरु की शरणागत हो तू सर्वदा परमात्मा को अपने भीतर बसाए रख, (इस प्रकार उस) सत्यस्वरूप परमात्मा के साथ अटूट प्रेम बन जायगा । नानक मन को इस प्रकार बतलाता है कि जहाँ-जहाँ तू भटकता फिरता है, वहाँ सर्वत्र परमात्मा सदा तेरे साथ ही रहता है ।। ३ ।। यदि गुरु मिल जाय तो दुबिधाग्रस्त मन टिक जाता है और प्रभु-चरणों में आ टिकता है । तदन्तर यह परमात्मा के नाम का सौदा करता है और नाम-स्मरण में लीन रहता है। यही आत्मिक स्थिति वह दसवाँ दरवाज़ा है, जो इसे प्राप्त हो जाता है।

इस आत्मिक स्थिति में पहुँचकर (यह मन) आत्मिक जीवन के दाता नाम की ख़ुराक खाता है; इसके भीतर आत्मिक स्थिरता की सहज ध्वनि उत्पन्न हो जाती है और यह गुरु-शब्द के प्रभाव से दुनिया के मोह को रोके रखता है। उस आत्मिक अवस्था में मन के भीतर (मानो) अनेक संगीत के वाद्ययन्त्र बजने लग जाते हैं, इसके भीतर सदा आनन्द बना रहता है और यह सत्यस्वरूप परमात्मा में तल्लीन रहता है। नानक का विचार है कि यदि गुरु मिल जाए, तो यह दुविधाग्रस्त मन स्थिर हो जाता है और प्रभु-चरणों में आ टिकता है ॥ ४ ॥ हे मेरे मन ! तू उस परमात्मा का अंश है, जो प्रकाश ही प्रकाश है। अपने उस मूल रूप से मेल कर। वह परमात्मा सदा तेरे साथ-साथ रहता है, (इसलिए) गुरु की शिक्षा पर चलकर उसके मिलाप का आस्वादन कर। हे मन ! यदि तू अपना मूल रूप जान ले तो प्रभु-पति के साथ तेरी गहरी मित्रता बन जायगी, तब तुझे यह समझ भी आ जाएगी कि आत्मिक मृत्यु क्या चीज़ है और आत्मिक जीवन क्या है ? यदि तू गुरु की कृपा से एक परमात्मा के साथ गहरा मेल कर ले, तो तेरे भीतर और कोई मोह प्रबल नहीं हो सकेगा। जब मनुष्य के भीतर शांति पैदा हो जाती है, जब इसका विकास हो जाता है, तब यह प्रभु के दरबार में सत्कृत हो जाता है। नानक का कथन है कि मेरे मन ! तू उस प्रभु का अंश है जो निरा प्रकाश है, इसलिए अपने उस मूल के साथ अटूट मेल बना ॥ ५ ॥

मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जाहि । माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि । गारबि लागा जाहि मुगध मन अंति गइआ पछुतावहे । अहंकारु तिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे । मनमुख मुगध चेतहि नाही अगै गइआ पछुतावहे । इउ कहै नानकु मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जावहे ॥ ६ ॥ मन तूं मत माणु करहि जि हउ किछु जाणदा गुरमुखि निमाणा होहु । अंतरि अगिआनु हउ बुधि है सचि सबदि मलु खोहु । होहु निमाणा सतिगुरू अगै मत किछु आपु लखावहे । आपणै अहंकारि जगतु जलिआ मत तूं आपणा आपु गवावहे । सतिगुर कै भाणै करहि कार सतिगुर कै भाणै लागि रहु । इउ कहै नानकु आपु छडि सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु ॥ ७ ॥ धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ । महा अनंदु सहजु भइआ मनि तनि सुखु पाइआ । सो सहु चिति आइआ मंनि वसाइआ अवगण सभि विसारे । जा

तिसु भाणा गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे। से जन परवाणु होए जिन्ही इकु नामु दिड़िआ दुतीआ भाउ चुकाइआ। इउ कहै नानकु धंनु सुवेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ॥ ८॥ इकि जंत भरमि भुले तिनि सहि आपि भुलाए। दूजै भाइ फिरहि हउमै करम कमाए। तिनि सहि आपि भुलाए कुमारगि पाए तिन का किछु न वसाई। तिनकी गति अवगति तूं है जाणहि जिनि इह रचन रचाई। हुकमु तेरा खरा भारा गुरमुखि किसै बुझाए। इउ कहै नानकु किआ जंत विचारे जा तुधु भरमि भुलाए॥ ६॥ सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई। तूं पारब्रहमु बेअंतु सुआमी तेरी कुदरति कहणु न जाई। सची तेरी वडिआई जा कउ तुधु मंनि वसाई सदा तेरे गुण गावहे। तेरे गुण गावहि जा तुधु भावहि सचे सिउ चितु लावहे। जिस नो तूं आपे मेलहि सु गुरमुखि रहै समाई। इउ कहै नानकु सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई॥ १०॥ २॥ ७॥ ५॥ २॥ ७॥

हे मन ! तू अहंकार से भरा पड़ा है, अहंकार से लदा हुआ ही यहाँ से चला जायगा। मोहिनी माया ने तुझे मोहग्रस्त किया हुआ है, जिससे तुझे पुन:पुन: अनेक योनियों में डाला जाएगा। हे मूर्ख मन ! जब तू अहंत्व से भरा हुआ यहाँ से जाएगा तो चलते समय हाथ मलेगा, तुझमें अहंकार चिपटा हुआ है, तुझे तृष्णा का रोग लगा है और तू मनुष्य-जन्म व्यर्थ गवाँ रहा है। हे स्वेच्छाचारी मन ! तू परमात्मा को स्मरण नहीं करता, परलोक में जाकर पश्चाताप करेगा। नानक तुझे बतलाते हैं कि तू यहाँ अहंकारग्रस्त है और (मृत्योपरान्त) अहंकार से लादा हुआ यहाँ से जाएगा॥ ६॥ हे मन ! यह अभिमान मत करना कि मैं बुद्धिमान हूँ, गुरु का शरणागत हो अहंत्व त्याग दे। तेरे भीतर परमात्मा से दूरी है और 'मैं, मैं' करनेवाली बुद्धि है। इस मैल को हरि-नाम तथा प्रभु-चरणों में प्रीति करके दूर कर। हे मन ! अहंत्वरहित हो गुरु के चरणों पर गिर पड़। देख, कहीं अपने आप न जलने लग जाना (क्योंकि) तमाम विश्व अहंकार में जल रहा है, कहीं तू भी अहंत्व से विकृत हो अपना नाश न कर लेना। (इससे बचाव का मार्ग यही है, यदि तू) गुरु की आज्ञानुसार कार्य करेगा। (इसलिए) हे मन ! गुरु के हुक्म में टिका रह। नानक तुझे यही समझाते हैं कि अहंकार छोड़ दे (क्योंकि) अहंकार छोड़कर ही सुख पाएगा॥ ७॥ वह समय धन्य था, जब मुझे गुरु प्राप्त हुआ था, (तब) पति-प्रभु मेरे भीतर आ वसा। मेरे भीतर अत्यन्त आनन्द अनुभूत

हुआ, मेरे भीतर आत्मिक स्थिरता पैदा हो गई और मेरे मन ने, मेरे हृदय ने सुख अनुभव किया। (गुरु-कृपा से) वह पति-प्रभु मेरे भीतर आ बसा और उसने मेरे सब अवगुण भुला दिए। (वास्तव में) जब उस स्वामी को रुचता है, तब मनुष्य के भीतर शुभ गुण प्रकट हो जाते हैं और गुरु स्वयं उस मनुष्य के जीवन को सुन्दर बना देता है। जो मनुष्य केवल हरि-नाम को अपने हृदय में दृढ़ कर लेते हैं और माया का मोह भीतर से मिटा देते हैं, वे प्रभु के दरबार में सत्कृत होते हैं। नानक का कथन है कि वह समय धन्य था, जब गुरु प्राप्त हुआ था और पति-प्रभु मेरे हृदय में आ बसा था ॥ ८ ॥ असंख्य जीव माया की दुविधा में पड़कर कुमार्गगामी हो गए हैं, वे पति-प्रभु ने आप ही कुमार्गगामी बनाए हुए हैं। ऐसे जीव अहंत्व के कारण कार्य करते हुए माया के मोह में भटकते हैं। उस पति-प्रभु ने स्वयं उन्हें सन्मार्ग से भ्रष्ट किया है और कुमार्गगामी बनाया है। (इस बारे में) उन जीवों का कोई वश नहीं चलता। हे प्रभु! जिसने यह सृष्टि-सृजना की है, वह तुम उन जीवों की शुभ-अशुभ आत्मिक स्थिति से परिचित हो। तुम्हारा हुक्म दुर्निवार है (जीव उसे टाल नहीं सकते)। हे भाई! पति-प्रभु किसी विरले भाग्यशाली को गुरु का शरणागत करके अपना हुक्म समझाता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु! यदि तुमने आप ही जीवों को माया की दुबिधा में डालकर कुमार्गगामी बनाया है, तो ये बेचारे जीव क्या कर सकते हैं? ॥ ९ ॥ हे मेरे सत्यस्वरूप प्रभु! तुम्हारी महानता शाश्वत है। तुम अनन्त स्वामी हो, तुम पारब्रह्म हो और तुम्हारी शक्ति अव्यक्त है। हे प्रभु! तुम्हारी महानता शाश्वत है। जिन मनुष्यों के मन में तुमने यह महानता बसा दी है, वे सदा तुम्हारी गुणस्तुति के गीत गाते हैं। लेकिन तुम्हारी गुणस्तुति के गीत वे तभी गाते हैं, जब तुझे भले लगते हैं, फिर वे तुम्हारे सत्यस्वरूप में अपना मन लगाए रखते हैं। हे प्रभु! जिस मनुष्य को तुम आप ही अपने चरणों में लगाते हो, वह गुरु का शरणागत होकर तेरी स्मृति में तल्लीन रहता है। नानक का कथन है— हे मेरे सत्यस्वरूप स्वामी! तेरी महानता भी सदा स्थिर रहनेवाली है ॥ १० ॥ २ ॥ ७ ॥ ५ ॥ २ ॥ ७ ॥

रागु आसा छंत महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जीवनो मै जीवनु पाइआ गुरमुखि भाए राम। हरिनामो हरिनामु देवै मेरै प्रानि वसाए राम। हरि हरि नामु मेरै प्रानि वसाए सभु संसा दूखु गवाइआ। अदिसटु अगोचरु गुर बचनि धिआइआ पवित्र परम पदु पाइआ।

अनहद धुनि वाजहि नित वाजे गाई सतिगुर बाणी। नानक दाति करी प्रभि दातै जोती जोति समाणी ।। १ ।। मनमुखा मनमुख मुए मेरी करि माइआ राम । खिनु आवै खिनु जावै दुरगंध मड़ै चितु लाइआ राम । लाइआ दुरगंध मड़ै चितु लागा जिउ रंगु कसुंभ दिखाइआ । खिनु पूरबि खिनु पछमि छाए जिउ चकु कुम्हिआरि भवाइआ । दुखु खावहि दुखु संचहि भोगहि दुख की बिरधि वधाई । नानक बिखमु सुहेला तरीऐ जा आवै गुर सरणाई ।। २ ।। मेरा ठाकुरो ठाकुरु नीका अगम अथाहा राम । हरि पूजी हरि पूजी चाही मेरे सतिगुर साहा राम । हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै । नीद भूख सभ परहरि तिआगी सुंने सुंनि समावै । वणजारे इक भाती आवहि लाहा हरिनामु लै जाहे । नानक मनु तनु अरपि गुर आगै जिसु प्रापति सो पाए ।। ३ ।। रतना रतन पदारथ बहु सागरु भरिआ राम । बाणी गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ राम । गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ निरमोलकु रतनु अपारा । हरि हरि नामु अतोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा । समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई । गुर गोविंदु गुोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ।। ४ ।। १ ।। ८ ।।

(हे भाई !) जब गुरु के शरणागत होकर मुझे प्रभुजी प्रिय लगने लगे, (तब) मुझे आत्मिक जीवन प्राप्त हो गया, मुझे आत्मिक जीवन प्राप्त हो गया। अब गुरु प्रत्येक पल हरि-नाम दिए जाता है और उसने प्रत्येक साँस में हरि-नाम बसा दिया है। जबसे गुरु ने प्रत्येक श्वास में हरि-नाम बसा दिया है, तबसे मैंने प्रत्येक भय एवं दुख मिटा दिया है। गुरु के ज्ञान के प्रभाव से मैंने उस परमात्मा को स्मरण किया है, जो अप्रत्यक्ष है, जो ज्ञानेन्द्रियों की पकड़ से परे हैं, (उस प्रभु के नाम-स्मरण से) मैंने सर्वोच्च तथा पवित्र आत्मिक पद प्राप्त कर लिया है। जबसे मैंने सतिगुरु की वाणी का गायन शुरू किया है, तबसे मेरे भीतर अक्षुण्ण स्वर से बजनेवाले वाद्ययन्त्र सदा बजते रहते हैं। हे नानक ! दाता प्रभु ने यह कृपा की है, अब मेरी आत्मा प्रभु की ज्योति में टिकी रहती है ।। १ ।। स्वेच्छाचारी मनुष्य स्वतन्त्र आचरण के कारण 'मेरी माया' कह-कह व्यर्थ मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। उनका मन क्षण में उत्साही और क्षण भर में निरुत्साही हो जाता है। वे अपने मन को सदा दुर्गन्धयुक्त शरीर में लगाए रखते हैं। सर्वदा दुर्गन्धयुक्त देह में आसक्ति के कारण उनका मन शारीरिक मोह में

अनुरक्त रहता है, (लेकिन यह शारीरिक सुख नश्वर है) जैसे कसुंभे के पुष्प का रंग (तुरन्त फीका हो जानेवाला), जैसे छाया (जो) कभी पूर्व की दिशा में और कभी पश्चिम दिशा में हो जाती है, या जैसे कोई चाक जो किसी कुम्हार द्वारा परिचालित है। स्वेच्छाचारी मनुष्य दुख सहन करते हैं, दुख संचित करते हैं और दुख भोगते रहते हैं और उनके जीवन में दुखों की ही वृद्धि होती है। लेकिन, हे नानक! गुरु की शरणागत होने पर यह दुस्तर संसार-समुद्र सहज रूप में पार किया जा सकता है ॥ २ ॥ मेरा मालिक-प्रभु सुन्दर है, (लेकिन) वह अपहुँच है और अथाह समुद्र है। हे मेरे स्वामी सतिगुरु! मैं तुझसे हरि-नाम की पूँजी माँगता हूँ। जो प्राणी हरि के नाम-धन की खोज करता है और हरि-नाम का व्यापार करता है, वह सदा हरि के गुण गाता रहता है, अपने गुणों के कारण वह हरि को प्रिय लगता है। वह माया-मोह की निद्रा, माया की भूख को बिल्कुल ही त्याग देता है। वह तो सदा उस परमात्मा में लीन रहता है, जिसके भीतर माया से सम्बद्ध स्वप्न नहीं उपजते। जब एक हरि-नाम का व्यापार करनेवाले सत्संगी मिलकर बैठते हैं, तो वे परमात्मा के नाम की कमाई करके ले जाते हैं। हे नानक! तू भी अपना मन तथा देह गुरु के सहारे छोड़ दे, लेकिन यह नाम का सौदा वही मनुष्य प्राप्त करता है, जिसके भाग्य में परमात्मा द्वारा लिखा होता है ॥ ३ ॥ यह (देह एक) समुद्र है, जो अनेक रत्नों (शुभ गुणों) से ऊपर तक भरा पड़ा है। जो मनुष्य सतिगुरु की वाणी में लगाव रखते हैं, उन्हें अनन्त परमात्मा का वह नाम-रत्न मिल जाता है, जिसके समकक्ष कोई दूसरा पदार्थ नहीं है। हे प्रभु! उन मनुष्यों के हृदय में तुम्हारी भक्ति के ख़ज़ाने भर जाते हैं और वे मनुष्य तुम्हारे नाम-रतन रूपी अप्रतिम पदार्थ को प्राप्त कर लेते हैं। हे भाई! गुरु-कृपा से जब मैंने शरीर-समुद्र को परखकर देखा, तो गुरु ने (शरीर में विद्यमान परमात्मा के नाम रूपी) सुन्दर बहुमूल्य पदार्थ को दिखा दिया। नानक का कथन है— गुरु परमात्मा है और परमात्मा गुरु है, दोनों में किसी प्रकार का भेद नहीं है ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ झिमि झिमे झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा राम। गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम। राम नामु पिआरा जगत निसतारा राम नामि वडिआई। कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पारि लघाई। हलति पलति रामनामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी। नानक दाति दइआ करि देवै राम नामि निसतारी ॥ १ ॥ रामो राम नामु

जपिआ दुख किलविख नास गवाइआ राम। गुर परचै गुर परचै धिआइआ मै हिरदै रामु रवाइआ राम। रविआ रामु हिरदै परमगति पाई जा गुर सरणाई आए। लोभ विकार नाव डुबदी निकली जा सतिगुरि नामु दिड़ाए। जीअ दानु गुरि पूरै दीआ राम नामि चितु लाए। आपि क्रिपालु क्रिपा करि देवै नानक गुर सरणाए॥ २॥ बाणी राम नाम सुणी सिधि कारज सभि सुहाए राम। रोमे रोमि रोमि रोमे मै गुरमुखि रामु धिआए राम। राम नामु धिआए पवितु होइ आए तिसु रूपु न रेखिआ काई। रामो रामु रविआ घट अंतरि सभ त्रिसना भूख गवाई। मनु तनु सीतलु सीगारु सभु होआ गुरमति रामु प्रगासा। नानक आपि अनुग्रहु कीआ हम दासनि दासनि दासा॥ ३॥ जिनी रामो राम नामु विसारिआ से मनमुख मूड़ अभागी राम। तिन अंतरे मोहु विआपै खिनु खिनु माइआ लागी राम। माइआ मलु लागी मूड़ भए अभागी जिन राम नामु नह भाइआ। अनेक करम करहि अभिमानी हरि रामो नामु चोराइआ। महा बिखमु जम पंथु दुहेला कालूखत मोह अंधिआरा। नानक गुरमुखि नामु धिआइआ ता पाए मोख दुआरा॥ ४॥

(जब मनुष्य के हृदय की धरती पर) आत्मिक जीवन के दाता नाम-जल की धार धीमी-धीमी वर्षा करती है (और मन को सांत्वना देती है तो) गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले उस भाग्यशाली मनुष्य को प्रिय परमात्मा का दर्शन हो जाता है। समस्त प्राणियों को संसार-समुद्र से पार उतारनेवाला परमात्मा का नाम उस प्राणी को प्रिय लगने लगता है और परमात्मा के नाम के प्रभाव से उसे मान-सम्मान मिल जाता है। हे भाई! विकारग्रस्त हीन आत्मिक स्थिति के वक्त परमात्मा का नाम जहाज़ है, गुरु की शरणागत करके परमात्मा जीव को पार कर देता है। जो मनुष्य परमात्मा के नाम में अनुरक्ति रखते हैं, वे लोक-परलोक में सुखी रहते हैं। गुरु की शरणागत हो (नाम-स्मरण ही) सर्वश्रेष्ठ करणीय कर्म है। हे नानक! परमात्मा कृपा करके जिस मनुष्य को अपने नाम की देन देता है, उसे नाम में अनुरक्त करके संसार-समुद्र से पार उतार देता है॥ १॥ जिन्होंने प्रतिपल परमात्मा का नाम स्मरण किया, उन्होंने समस्त दुख और पाप दूर कर लिये। हे भाई! गुरु के माध्यम से मैंने प्रतिपल कामकाज करते हुए हरि-नाम स्मरण करना शुरू किया और हृदय में परमात्मा को बसा लिया। जब मैंने गुरु की शरण प्राप्त की और

परमात्मा को भीतर बसा लिया, तो मैंने सर्वोच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त कर ली। हे भाई! जब गुरु ने परमात्मा का नाम दृढ़ कर हृदय में बसा दिया, तब लोभ आदि विकारों में डूबती हुई उसकी जीवन-नौका बाहर निकल आई। जिस मनुष्य को पूर्णगुरु ने आत्मिक जीवन की देन दी, उसने अपना चित्त परमात्मा के नाम में जोड़ लिया। नानक का विचार है कि गुरु का शरणागत करके, कृपालु परमात्मा स्वयं कृपा करके नाम की देन देता है ॥ २ ॥ जिस मनुष्य ने परमात्मा की वाणी का श्रवण किया और उसकी गुणस्तुति का श्रवण किया, उसके समस्त कार्य पूर्ण हो गए। मैं भी गुरु का शरणागत हो परमात्मा का नाम स्मरण कर रहा हूँ। जिसने परमात्मा का नाम स्मरण किया, वह पवित्र जीवन वाला होकर उस प्रभु के द्वार पर जा पहुँचा, जिसका कोई स्वरूप या चिह्नचक्र व्यक्त नहीं किया जा सकता। जिस मनुष्य ने प्रतिपल हृदय में परमात्मा का नाम स्मरण किया, उसने माया के प्रति होनेवाली भूख-प्यास दूर कर ली, उसका मन बिल्कुल शान्त हो गया, उसके आत्मिक जीवन को हरेक प्रकार का सूर्य प्राप्त हो गया और गुरु की शिक्षा के प्रभाव से उसके भीतर परमात्मा का नाम प्रकाशमान हो गया। नानक का विचार है कि जबसे परमात्मा ने मुझ पर कृपा की है, तबसे उसके दासों का दास बन गया हूँ ॥ ३ ॥ जिन स्वेच्छाचारी व्यक्तियों ने परमात्मा का नाम भुला दिया, वे मूर्ख अभागे ही रहे। उनके भीतर मोह प्रबल हुआ है तथा उनसे प्रतिपल माया चिपटी रहती है। जिन मनुष्यों को परमात्मा का नाम नहीं रुचता, वे मूर्ख अभागे ही रहते हैं और उन्हें सदा माया की मैल लगी रहती है। वे ज्यों-ज्यों कर्मकाण्डों में रुचि लेते हैं, त्यों-त्यों अहंकारी होते जाते हैं। ये धार्मिक कर्मकाण्ड (उनके भीतर से) परमात्मा का नाम चुरा ले जाते हैं। यमों का मार्ग बड़ा दुर्गम है, जो दुखों से परिपूरित है और जहाँ माया के मोह की कालिमा के कारण अँधेरा है। नानक का कथन है कि जब मनुष्य गुरु का शरणागत हो परमात्मा का नाम स्मरण करता है, तब मुक्ति का मार्ग प्राप्त कर लेता है ॥ ४ ॥

रामो राम नामु गुरू रामु गुरमुखे जाणै राम। इहु मनूआ खिनु ऊभ पइआली भरमदा इकतु घरि आणै राम। मनु इकतु घरि आणै सभ गति मिति जाणै हरि रामो नामु रसाए। जन की पैज रखै राम नामा प्रहिलाद उधारि तराए। रामो रामु रमो रमु ऊचा गुण कहतिआ अंतु न पाइआ। नानक राम नामु सुणि भीने रामै नामि समाइआ ॥ ५ ॥ जिन अंतरे राम नामु वसै तिन चिंता सभ गवाइआ राम। सभि अरथा सभि धरम

मिले मनि चिंदिआ सो फलु पाइआ राम। मन चिंदिआ फलु पाइआ राम नामु धिआइआ राम नाम गुण गाए। दुरमति कबुधि गई सुधि होई राम नामि मनु लाए। सफलु जनमु सरीरु सभु होआ जितु रामनामु परगासिआ। नानक हरि भजु सदा दिनु राती गुरमुखि निज घरि वासिआ ॥ ६ ॥ जिन सरधा राम नामि लगी तिन्ह दूजै चितु न लाइआ राम। जे धरती सभ कंचनु करि दीजै बिनु नावै अवरु न भाइआ राम। राम नामु मनि भाइआ परम सुखु पाइआ अंति चलदिआ नालि सखाई। राम नाम धनु पूंजी संची ना डूबै ना जाई। राम नामु इसु जुग महि तुलहा जम कालु नेड़ि न आवै। नानक गुरमुखि रामु पछाता करि किरपा आपि मिलावै ॥ ७ ॥ रामो राम नामु सते सति गुरमुखि जाणिआ राम। सेवको गुर सेवा लागा जिनि मनु तनु अरपि चड़ाइआ राम। मनु तनु अरपिआ बहुतु मनि सरधिआ गुर सेवक भाइ मिलाए। दीनानाथु जीआ का दाता पूरे गुर ते पाए। गुरू सिखु सिखु गुरू है एको गुर उपदेसु चलाए। राम नाम मंतु हिरदै देवै नानक मिलणु सुभाए ॥ ८ ॥ २ ॥ ६ ॥

जो मनुष्य कभी अहंकार में और कभी निरुत्साहित होकर भटकता रहता है, (वह) यदि गुरु के माध्यम से गुरु की शरण लेकर परमात्मा के नाम के साथ सम्बन्ध जोड़ता है तो अपने (द्विधाग्रस्त) मन को प्रभु-चरणों में लगाता है। परमात्मा के चरणों में प्रीति करके (मन टिकाकर) वह आत्मिक जीवन की प्रत्येक मर्यादा को समझ लेता है और परमात्मा के नाम का आनन्द महसूसता रहता है। परमात्म-नाम ऐसे मनुष्य की प्रतिष्ठा की रक्षा करता है। जिस प्रकार (पूर्वकाल में) परमात्मा ने प्रह्लाद आदि भक्त बचाकर पार उतार दिए अर्थात् उनके सम्मान की रक्षा कर उनका उद्धार कर दिया। परमात्मा सर्वोच्च है, अत्यन्त रमणीय है, अभिव्यक्ति द्वारा उसके गुणों का अन्त नहीं पाया जा सकता। नानक का कथन है कि परमात्मा का नाम सुनकर जो भावविभोर हो जाते हैं, वे मनुष्य परमात्मा के नाम में ही लीन रहते हैं ॥ ५ ॥ जिन मनुष्यों के अन्तर्मन में परमात्मा का नाम बस जाता है, वे अपनी समस्त दुबिधाएँ दूर कर लेते हैं, उन्हें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि समस्त पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं और उन्हें मनोवांछित फल प्राप्त हो जाते हैं। वे लगातार मनोवांछित फल पाते हैं और परमात्मा का नाम स्मरण करते रहते हैं। वे सदा परमात्मा

की गुणस्तुति के गीत गाते रहते हैं, उनकी दुर्बुद्धि दूर हो जाती है, उन्हें आत्मिक सूझ हो जाती है और वे परमात्मा के नाम में प्रीति लगाए रहते हैं। उनका मनुष्य-जन्म और देह सफल हो जाते हैं, क्योंकि उनके शरीर में परमात्मा के नाम (की कान्ति) उभर आती है। नानक का कथन है कि तू भी हमेशा परमात्मा का नाम स्मरण करता रह। गुरु की शरणागत हो परमात्मा के चरणों में जगह मिली रहती है ॥ ६ ॥ जिन मनुष्यों ने परमात्मा के नाम-स्मरण में मन लगा लिया, वे किसी दूसरे पदार्थ में अपना मन नहीं लगाते। यदि सम्पूर्ण पृथ्वी स्वर्ण बनाकर उनके समक्ष रखें तो भी परमात्मा के नाम के अतिरिक्त अन्य कोई पदार्थ उन्हें प्यारा नहीं लगता। वे नाम-स्मरण द्वारा उत्तम आनन्द अनुभव करते हैं। अन्तिम क्षण दुनिया से प्रयाण करते हुए भी यह हरि-नाम उनके साथ साथी होता है। वे सदा परमात्मा का नाम-धन रूपी राशि एकत्रित करते रहते हैं। यह नाम-धन न पानी में डूबता है और न गुम होता है। हे भाई ! परमात्मा का नाम ही इस जगत में (पार होने के लिए) नाव है। नाम-स्मरण करनेवाले व्यक्ति के पास आत्मिक मृत्यु नहीं फटकती। नानक का कथन है कि जिस मनुष्य ने गुरु की शरण लेकर परमात्मा के साथ अभिन्नता पैदा कर ली है, परमात्मा कृपा करके आप उसे अपने चरणों में मिला लेता है ॥ ७ ॥ परमात्मा का नाम सत्यस्वरूप है, परमात्मा का नाम शाश्वत है; जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, वह उससे अभिन्नता पैदा करता है। वही सेवक गुरु द्वारा बतलाई सेवा में लगता है, जिसने अपना मन और तन पूजा के रूप में गुरु के हवाले कर दिया, उसके मन में गुरु के लिए श्रद्धा पैदा हो जाती है। (गुरु उसे) उस प्रेम के प्रभाव से (प्रभु के चरणों में) मिला देता है, जो गुरु के सेवक के हृदय में होना चाहिए। परमात्मा ग़रीबों का स्वामी है, सब जीवों को देन देनेवाला है, वह परमात्मा पूर्णगुरु द्वारा ही मिलता है। (प्रेम द्वारा) गुरु सिक्ख है और सिक्ख गुरु है, सिक्ख भी गुरु के उपदेश को आगे जारी रखता है अर्थात् दूसरे सिक्खों को परमात्मा का प्रेम दिखाता है। नानक का कथन है कि गुरु जिस मनुष्य को परमात्मा के नाम का मंत्र हृदय में (बसाने के लिए) देता है, प्रेम के प्रभाव से उसका मिलाप (परमात्मा से) हो जाता है ॥ ८ ॥ २ ॥ ९ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि। आसा छंत महला ४ घरु २ ॥

हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ।
हरि सेवा भाई परमगति पाई हरि ऊतमु हरि हरि कामु जीउ।
हरि ऊतमु कामु जपीऐ हरि नामु हरि जपीऐ असथिरु होवै।

जनम मरण दोवै दुख मेटे सहजे ही सुखि सोवै । हरि हरि किरपा धारहु ठाकुर हरि जपीऐ आतम रामु जीउ । हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ १ ॥ हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ । गुरमुखि हरि पड़ीऐ गुरमुखि हरि सुणीऐ हरि जपत सुणत दुखु जाइ जीउ । हरि हरि नामु जपिआ दुखु बिनसिआ हरिनामु परम सुखु पाइआ । सतिगुर गिआनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ । हरि हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि धुरि लिखि पाइ जीउ । हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥ २ ॥ हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ । हरि प्रीति लगाई हरि नामु सखाई भ्रमु चूका आवणु जाणु जीउ । आवण जाणा भ्रमु भउ भागा हरि हरि हरि गुण गाइआ । जनम जनम के किलविख दुख उतरे हरि हरि नामि समाइआ । जिन हरि धिआइआ धुरि भाग लिखि पाइआ तिन सफलु जनमु परवाणु जीउ । हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥३॥ जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ । हरिनामु वडाई हरिनामु सखाई गुर सबदी हरि रस भोग जीउ । हरि रस भोग महा निरजोग वड भागी हरि रसु पाइआ । से धंनु वडे सतपुरखा पूरे जिन गुरमति नामु धिआइआ । जनु नानकु रेणु मंगै पग साधू मनि चूका सोगु विजोगु जीउ । जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १० ॥

सृजनहार परमात्मा दुखों का नाशक है, उस परमात्मा का नाम विकारग्रस्त जीवों को पवित्र करनेवाला है। जिस मनुष्य को परमात्मा की सेवा-भक्ति प्रिय लगती है, वह सर्वोच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त कर लेता है। हे भाई ! हरि का नाम-स्मरण सर्वोत्कृष्ट कर्म है, इसलिए हरि-नाम स्मरण करना चाहिए। नाम-स्मरण करनेवाला जीव स्थिरचित्त हो जाता है। वह मनुष्य जन्मों के चक्र का दुख, आत्मिक मृत्यु का दुख —यह दोनों दुख मिटा लेता है और वह सदा आत्मिक स्थिरता, आत्मिक आनन्द में लीन रहता है। हे हरि स्वामी ! कृपा करो। (उस प्रभु की कृपा द्वारा) उस सर्वव्यापक परमात्मा का नाम जपा जा सकता है।

हे भाई ! सृजनहार परमात्मा दुखों का नाशक है, उस परमात्मा का नाम विकारग्रस्त जीवों को पवित्र करने योग्य है ॥ १ ॥ इस माया-ग्रसित जगत में परमात्मा का नाम श्रेष्ठ पदार्थ है, लेकिन यह हरि-नाम गुरु के प्रेम में टिककर ही जपा जा सकता है। गुरु की शरणागत होकर ही परमात्मा की गुणस्तुति वाली वाणी पढ़ी जा सकती है, गुरु की शरणागत होकर ही परमात्मा की गुणस्तुति सुनी जा सकती है। परमात्मा का नाम जपते-सुनते दुख दूर हो जाता है। जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम जपा, उसका दुख नष्ट हो गया; जिसने हरि-नाम पाया, उसे सर्वोत्कृष्ट आनन्द महसूस हुआ। गुरु-प्रदत्त आत्मिक जीवन की सूझ जिस मनुष्य के भीतर ज्योतिर्मान हो गई, उसके हृदय में (सही जीवन का) प्रकाश हो गया, उसने अपने भीतर से अज्ञानता का अँधेरा दूर कर लिया। हे भाई ! उन मनुष्यों ने ही परमात्मा का नाम स्मरण किया है, जिनके मस्तक पर परमात्मा ने आदि से स्मरण का लेख लिखकर रख दिया है। (हे भाई !) इस माया-ग्रसित संसार में परमात्मा का नाम श्रेष्ठ पदार्थ है, लेकिन यह हरि-नाम गुरु के प्रेम में अनुरक्त होकर ही जपा जा सकता है ॥ २ ॥ जिस मनुष्य को परमात्मा का नाम मन में भाया उसने सर्वोत्कृष्ट आनन्द प्राप्त कर लिया, उसने वह आत्मिक अवस्था प्राप्त कर ली जहाँ कोई वासना स्पर्श नहीं कर सकती। जिस मनुष्य ने प्रभु-चरणों में प्रीति लगाई, हरि-नाम उसका सदा के लिए साथी बन गया, उसकी दुबिधा समाप्त हो गई और उसका आवागमन का चक्र समाप्त हो गया। जिन मनुष्यों ने परमात्मा की गुणस्तुति की, उनका जन्म-मरण, उनकी दुबिधा, उनका भय दूर हो गया; जन्म-जन्मान्तरों से किए गए उनके पाप और दुख दूर हो गए और वे सदा के लिए परमात्मा के नाम में लीन हो गए। जिन्होंने परमात्मा के दरबार से लिखे भाग्यों के अनुसार नाम की देन प्राप्त कर ली और हरि-नाम स्मरण करने से उनका मनुष्य-जीवन सफल हो गया, वे प्रभु के दरबार में सत्कृत हो गए। जिन मनुष्यों को परमात्मा मन में प्रिय लगा, उन्होंने सर्वोच्च आत्मिक आनन्द प्राप्त कर लिया; उन्होंने वह आत्मिक अवस्था प्राप्त कर ली जहाँ कोई वासना स्पर्श नहीं कर सकती ॥ ३ ॥ हे भाई ! जिन मनुष्यों को परमात्मा प्रिय लगा, वे मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाते हैं, वे परमात्मा के प्यारे जीव श्रेष्ठ जीवन वाले बन जाते हैं। परमात्मा का नाम उनके लिए प्रतिष्ठा है, परमात्मा का नाम उनका साथी है और वे गुरु के शब्द में जुड़कर परमात्मा के नाम-रस का आनन्द महसूसते हैं। वे मनुष्य सदा हरि-नाम का रस आस्वादन करते हैं, जिसके प्रभाव से वे बड़े निर्लिप्त रहते हैं, सौभाग्यवश उन्हें परमात्मा के नाम का आनन्द मिल जाता है। हे भाई ! जिन मनुष्यों ने गुरु की शिक्षा लेकर प्रभु का नाम स्मरण किया, वे सौभाग्यशाली बन गए, वे चारित्रिक तथा

पूर्ण जीवन वाले बन गए। दास नानक गुरु के चरणों की धूलि माँगता है। (ईश्वर-कृपा द्वारा ही) मन में विद्यमान चिन्ता दूर हो जाती है, उनके मन में प्रभु-चरणों से बिछोह दूर हो जाता है। हे भाई! जिन मनुष्यों को परमात्मा प्रिय लगने लगता है, वे प्रतिष्ठित हो जाते हैं, वे परमात्मा के प्यारे जीव पवित्र जीवन वाले बन जाते हैं ॥ ४ ॥ ३ ॥ १० ॥

॥ आसा महला ४ ॥ सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ। मनि तनि हरि गावहि परम सुखु पावहि हरि हिरदै हरि गुण गिआनु जीउ। गुण गिआनु पदारथु हरि हरि किरतारथु सोभा गुरमुखि होई। अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको दूजा अवरु न कोई। हरि हरि लिव लाई हरिनामु सखाई हरि दरगह पावै मानु जीउ। सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरम धिआनु जीउ ॥ १ ॥ तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ। पगु चउथा खिसिआ त्रै पग टिकिआ मनि हिरदै क्रोधु जलाइ जीउ। मनि हिरदै क्रोधु महा बिसलोधु निरप धावहि लड़ि दुखु पाइआ। अंतरि ममता रोगु लगाना हउमै अहंकारु वधाइआ। हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि बिखु गुरमति हरि नामि लहि जाइ जीउ। तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥ २ ॥ जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ। तपु तापन तापहि जग पुंन आरंभहि अति किरिआ करम कमाइ जीउ। किरिआ करम कमाइआ पगु दुइ खिसकाइआ दुइ पग टिकै टिकाइ जीउ। महा जुध जोध बहु कीन्हे विचि हउमै पचै पचाइ जीउ। दीन दइआलि गुरु साधु मिलाइआ मिलि सतिगुर मलु लहि जाइ जीउ। जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥ ३ ॥ कलिजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ। गुर सबदु कमाइआ अउखधु हरि पाइआ हरि कीरति हरि सांति पाइ जीउ। हरि कीरति रुति आई हरि नामु वडाई हरि हरि नामु खेतु जमाइआ। कलिजुगि बीजु बीजे बिनु नावै सभु लाहा मूलु गवाइआ। जन नानकि गुरु पूरा पाइआ मनि हिरदै

नामु लखाइ जीउ । कलजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥

सतयुगी आत्मिक अवस्था में टिके हुए मनुष्य को सर्वत्र सन्तोष (सहायक होता है, पूर्ण धार्मिक जीवन उनके जीवन का लक्ष्य होता है ।) वे अपने मन में परमात्मा की गुणस्तुति करते रहते हैं और सर्वोच्च आत्मिक आनन्द महसूसते रहते हैं, उनके हृदय में परमात्मा के गुणों से अभिन्नता बनी रहती है । सतयुगी आत्मिक अवस्था में स्थित मनुष्य परमात्मा के गुणों के साथ अभिन्नता को बहुमूल्य चीज़ जानता है, हरि के नाम-स्मरण में अपने जीवन को सफल समझता है और गुरु की शरण लेकर उसे सर्वत्र शोभा मिलती है । उसे अपने भीतर तथा सारे जगत में परमात्मा ही बसता दिखता है, उसके अतिरिक्त उसे कोई दृष्टिगोचर नहीं होता । जो मनुष्य परमात्मा के चरणों में सुरति लगाता है, परमात्मा उसका साथी बन जाता है, वह मनुष्य परमात्मा की सेवा में आदर पाता है; ऐसी सतयुगी आत्मिक अवस्था में टिके हुए मनुष्य को सर्वत्र (सहायक होता है) और प्रत्येक बात में पूर्ण धर्म उसके जीवन का निशाना बना रहता है ॥ १ ॥ जिस मनुष्य के भीतर (दूसरों के साथ) धोखा करने का स्वभाव होता है, उसके लिए त्रेतायुग आ जाता है । वह मनुष्य (परमात्मा के नाम-स्मरण को भुलाकर) वीर्य को संयमित करना (सर्वोपरि समझता है), वह मनुष्य इन्द्रियों को संयमित करनेवाले कर्म ही करता है । उस मनुष्य के भीतर से (धर्म रूपी बैल का) चौथा पैर फिसल जाता है और धर्म-बैल तीन पैरों के सहारे खड़ा हो जाता है, उसके मन, तन में क्रोध पैदा होता है जो उसके आत्मिक जीवन को जलाता है । (धोखा करनेवाले) मनुष्य के मन में क्रोध पैदा हुआ रहता है जो, मानो, एक बड़ा अकेला वृक्ष है । (इस क्रोध के कारण ही) राजा एक-दूसरे पर हमला करते हैं, आपस में लड़-लड़कर दुख पाते हैं । जिस मनुष्य के भीतर ममता का रोग लग जाता है, उसके भीतर अहंभावना बढ़ती है, अहंकार वृद्धि पाता है; लेकिन जिस मनुष्य पर मेरे मालिक-प्रभु ने कृपा की, गुरु की शिक्षा के प्रभाव से, हरि-नाम के प्रभाव से उसके भीतर से यह ज़हर उतर जाता है । जिस मनुष्य के भीतर (दूसरों पर) धोखा (करने का स्वभाव) आ बसता है, उसके भीतर, मानो त्रेतायुग घटित हो रहा है ॥ २ ॥ जो-जो स्त्री-पुरुष परमात्मा ने उत्पन्न किए हैं (इनमें जो माया की) दुबिधा में भटक रहे हैं (उनके लिए, मानो) द्वापरयुग आया हुआ है । ये लोग तप करते हैं, धूनियाँ तपाने के कष्ट सहते हैं, यज्ञ आदि पुण्यकर्म करते हैं । (जो मनुष्य दूसरे धार्मिक कर्मकाण्ड) करता है उनके भीतर से धर्म-बैल अपने

पैर खिसका लेता है और दो पैरों के सहारे टिका रहता है। (माया की दुबिधा के कारण ही) बड़े-बड़े शूरवीर बड़े युद्ध मचा देते हैं। (दुबिधा के कारण मनुष्य आप) अहंकार में जलता है और दूसरों को जलाता है। दीनदयालु परमात्मा ने जिस मनुष्य को पूर्णगुरु मिला दिया, गुरु को मिलकर उसका (भीतरी) मैल उतर जाता है। हे भाई! जो-जो स्त्री-पुरुष परमात्मा ने उत्पन्न किए हैं, जो-जो माया की दुबिधा में भटक रहे हैं, (उनके लिए, मानो) द्वापरयुग आ गया है ॥ ३ ॥ जिस मनुष्य के भीतर से धर्म-बैल के तीन पैर फिसल गए और (धर्म-बैल) केवल चौथा पैर टिकाए रखता है, (जिसके भीतर नाम मात्र धर्म रह जाता है, उसके लिए) मानो परमात्मा ने कलियुग बना दिया। जो मनुष्य गुरु के शब्द की साधना करता है, वह हरि-नाम रूपी औषधि प्राप्त कर लेता है, वह परमात्मा की गुणस्तुति करता है, उसके भीतर परमात्मा शान्ति पैदा करता है। (यह मनुष्य-जन्म की) ऋतु परमात्मा की गुणस्तुति के लिए मिली है, परमात्मा का नाम ही सर्वत्र सत्कार देता है। वह मनुष्य परमात्मा के नाम की फसल बोता है, लेकिन जो मनुष्य परमात्मा का नाम छोड़कर (धार्मिक कर्मकाण्ड आदि कोई दूसरा) बीज बोता है, वह कलियुग के प्रभाव में है। वह धन भी गवाँ देता है और लाभ भी कोई नहीं प्राप्त करता। (ईश्वर-कृपा से) दास नानक ने पूर्णगुरु प्राप्त कर लिया है, गुरु ने उसके मन में, हृदय में प्रभु-नाम दृढ़ कर दिया है। जिस मनुष्य के भीतर से धर्म रूपी बैल के तीन पैर फिसल गए और धर्म-बैल केवल चौथा पैर टिकाए रखता है, उसके लिए परमात्मा ने कलियुग बना दिया है, (उसके भीतर केवल परमात्मा का नाम-स्मरण ही बचाव का साधन है) ॥४॥४॥११॥

॥ आसा महला ४ ॥ हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ। हरि हरि रसु पाइआ गुरमति हरि धिआइआ धुरि मसतकि भाग पुरान जीउ। धुरि मसतकि भागु हरि नामि सुहागु हरि नामै हरि गुण गाइआ। मसतकि मणी प्रीति बहु प्रगटी हरि नामै हरि सोहाइआ। जोती जोति मिली प्रभु पाइआ मिलि सतिगुर मनूआ मान जीउ। हरि कीरति मनि भाई परमगति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ १ ॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ। तिन्ह हम चरण सरेवह खिनु खिनु पग धोवह जिन हरि मीठ लगान जीउ। हरि मीठा लाइआ परम सुख पाइआ मुखि भागा रती चारे। गुरमति हरि गाइआ हरि

हारु उरि पाइआ हरि नामा कंठि धारे। सभ एक द्रिसटि समतु करि देखै सभु आतम रामु पछान जीउ। हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ २ ॥ सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरिरसु होइ जीउ। हरि हरि आराधिआ गुर सबदि विगासिआ बीजा अवरु न कोइ जीउ। अवरु न कोइ हरि अंम्रितु सोइ जिनि पीआ सो बिधि जाणै। धनु धंनु गुरू पूरा प्रभु पाइआ लगि संगति नामु पछाणै। नामो सेवि नामो आराधै बिनु नामै अवरु न कोइ जीउ। सत संगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥ ३ ॥ हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ। मोह चीकड़ि फाथे निघरत हम जाते हरि बांह प्रभू पकराइ जीउ। प्रभि बांह पकराई ऊतम मति पाई गुर चरणी जनु लागा। हरि हरि नामु जपिआ आराधिआ मुखि मसतकि भागु सभागा। जन नानक हरि किरपा धारी मन हरि हरि मीठा लाइ जीउ। हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२ ॥

जिस मनुष्य को परमात्मा की गुणस्तुति प्रिय लगी, उसने सर्वोच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त कर ली और उसे मन में, हृदय में प्रभु प्यारा लगने लगा। जिस मनुष्य ने गुरु की शिक्षा-अनुसार परमात्मा का स्मरण किया, परमात्मा के नाम का आस्वादन किया, उसके मस्तक पर ईश्वर के दरबार से लिखे लेख जाग पड़े, उसके मस्तक पर ईश्वरीय दरबार से लिखा लेख प्रकट हो गया, हरि-नाम में जुड़कर उसने पति-प्रभु को पा लिया, वह सदा हरि-नाम में अनुरक्त रहता है, सदा हरि के गुण गाता रहता है, उसके मस्तक पर प्रभु-चरणों के प्रेम की मणि चमक उठती है, उसकी सुरति प्रभु-ज्योति में मिल जाती है, वह प्रभु को प्राप्त कर लेता है और गुरु को मिलकर उसका मन परमात्मा में लग जाता है। हे भाई! जिस मनुष्य को मन में परमात्मा की गुणस्तुति भली लगने लगी, उसने सर्वोत्कृष्ट आत्मिक अवस्था प्राप्त कर ली और उसे मन में, हृदय में प्रभु प्यारा लगने लगा ॥ १ ॥ जो मनुष्य परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाते हैं वे सर्वोच्च आत्मिक स्थान प्राप्त कर लेते हैं, वे जगत में, उत्तम माने जाते हैं और प्रतिष्ठित माने जाते हैं। जिन मनुष्यों को ईश्वर प्यारा लगता है, हम उनके चरणों की सेवा करते हैं और प्रति पल उनके चरण धोते हैं। जिन्हें परमात्मा प्रिय लगा, उन्होंने सर्वोच्च आत्मिक आनन्द महसूस किया

और उनके मुख पर सौभाग्य की प्रतीक सुन्दर मणि चमक पड़ी। जो मनुष्य गुरु की शिक्षा-अनुसार परमात्मा की गुणस्तुति करता है, परमात्मा के गुणों का, उसके नाम का हार अपने हृदय में सँभालता है, अपने गले में पहनता है, वह तमाम दुनिया को समदर्शी होकर एक जैसा समझकर देखता है, वह सर्वत्र सर्वव्यापक परमात्मा को बसता हुआ पहचानता है। जो मनुष्य परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाते हैं, वे सर्वोच्च आत्मिक स्थान प्राप्त कर लेते हैं, वे मनुष्य जगत में उत्तम गिने जाते हैं और प्रतिष्ठित समझे जाते हैं ॥ २ ॥ हरि-नाम के रस में मग्न सत्संगति जिस मनुष्य को प्रिय लगती है, उसे संगति में हरि-नाम का आस्वादन प्राप्त होता है। वह मनुष्य ज्यों-ज्यों परमात्मा के नाम की आराधना करता है, गुरु के ज्ञान के प्रभाव से उसका अन्तस् प्रसन्न हो उठता है, उसे परमात्मा के अतिरिक्त कहीं भी कोई नहीं दिखता और वह सदा आत्मिक जीवन का दाता हरि-नाम जल पीता रहता है। जो मनुष्य यह नाम-अमृत पान करता है, वही अपनी आत्मिक स्थिति को पहचानता है। वह मनुष्य हर समय गुरु का धन्यवाद करता है क्योंकि गुरु के माध्यम से वह परमात्मा को प्राप्त करता है, गुरु की संगति से ही वह परमात्मा के साथ अभिन्नता बनाता है। वह मनुष्य सदा हरि-नाम ही स्मरण करता है, हरि-नाम का ही स्तवन करता है और हरि-नाम के अतिरिक्त उसे कोई चीज़ भली नहीं लगती। हे भाई! हरि-नाम के रस में मग्न सत्संगति जिस मनुष्य को रुचती है, उसे सत्संगति में हरि-नाम का आस्वाद प्राप्त होता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु! कृपा करो, हम कठोर हृदय वाले जीवों को पार उतार लो, गुरु की शिक्षा और अपने प्रेम में अनुरक्त कर मोह रूपी कीचड़ से निकाल लो। हम माया-मोह के कीचड़ में फँसे हुए हैं, आत्मिक जीवन में (भी) हम अधोमुखी हैं, (इसलिए) हे प्रभु! हमें अपनी बाँह पकड़ा। जिस मनुष्य को प्रभु ने अपनी बाँह पकड़ा दी, उसने सन्मति प्राप्त कर ली, वह मनुष्य गुरु की शरणागत हो गया, प्रतिपल परमात्मा का नाम जपने लगा और हरि-नाम स्मरण करने लगा। उसके मुँह पर, मस्तक पर सौभाग्य प्रकट हो गया। नानक का कथन है कि जिस मनुष्य पर परमात्मा ने कृपा की, उसे मन में परमात्मा का नाम भला लगने लगता है। हे हरि! हे प्रभु! हम कठोर हृदयों को पार उतार लो। गुरु के शब्द और अपने प्रेम में अनुरक्त कर मोह-कीचड़ से निकाल लो ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ। जो जन मरि जीवे तिन्ह अंम्रितु पीवे मनि लागा गुरमति भाउ जीउ। मनि हरि

हरि भाउ गुरु करे पसाउ जीवन मुकतु सुखु होई। जीवणि मरणि हरि नामि सुहेले मनि हरि हरि हिरदै सोई। मनि हरि हरि वसिआ गुरमति हरि रसिआ हरि हरि रस गटाक पीआउ जीउ। मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ १ ॥ जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ। हरि अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको इहु जीअड़ा रखिआ न जाइ जीउ। किउ जीउ रखीजै हरि वसतु लोड़ीजै जिस की वसतु सो लै जाइ जीउ। मनमुख करण पलाव करि भरमे सभि अउखध दारू लाइ जीउ। जिस की वसतु प्रभु लए सुआमी जन उबरे सबदु कमाइ जीउ। जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥ २ ॥ धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ। हरि सोभा पाई हरि नामि वडिआई हरि दरगह पैधे जानि जीउ। हरि दरगह पैधे हरि नामै सीधे हरि नामै ते सुखु पाइआ। जनम मरण दोवै दुख मेटे हरि रामै नामि समाइआ। हरि जन प्रभु रलि एको होए हरिजन प्रभु एक समानि जीउ। धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ ३ ॥ जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ। गुरु मंत्रु द्रिड़ाए हरि रसकि रसाए हरि अंम्रितु हरि मुखि चोइ जीउ। हरि अंम्रित रसु पाइआ मुआ जीवाइआ फिरि बाहुड़ि मरणु न होई। हरि हरि नामु अमर पदु पाइआ हरि नामि समावै सोई। जन नानक नामु अधारु टेक है बिनु नावै अवरु न कोइ जीउ। जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १३ ॥

हे भाई! भक्तजन सदा अपने मन में हरि-नाम का जाप करते हैं, हरि-नाम उन्हें मन में भला लगता है, उन्हें मन में नाम जपने का चाव बना रहता है। जो मनुष्य आपाभाव मिटाकर आत्मिक जीवन जीते हैं, वे सदा आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल पीते रहते हैं और गुरु की शिक्षा के प्रभाव से उनके मन में प्रभु के प्रति प्रेम बना रहता है। हे भाई! जिस मनुष्य पर गुरु कृपा करता है, उसके मन में प्रभु-चरणों के लिए प्रेम पैदा हो जाता है, वह मनुष्य सांसारिक काम-काज करता हुआ ही

माया के बन्धनों से छूट जाता है और वह आत्मिक आनन्द महसूसता है। हे भाई ! आत्मिक जीवन जीने तथा अहंत्वभाव से मृततुल्य होने के कारण परमात्मा के नाम में अनुरक्त मनुष्य सदा सुखी रहते हैं; उनके मन में, हृदय में सदा परमात्मा ही बसा रहता है। गुरु की शिक्षा के प्रभाव से उनके भीतर सदा परमात्मा का नाम बसा रहता है, हरि-नाम उनके भीतर मिल जाता है और वे हरि-नाम रूपी जल, मानो गट-गट करते हुए पीते रहते हैं। हे भाई ! भक्तजन सदा अपने मन में हरि-नाम जपते हैं, उन्हें हरि-नाम मन में प्यारा लगता है और उनके मन में नाम जपने का चाव बना रहता है ॥ १ ॥ दुनिया में मृत्यु किसी को नहीं रुचती, प्रत्येक (जीव) अपने आप को छिपाता है कि कहीं यमराज इसे पकड़कर न ले जाए; लेकिन परमात्मा हर प्राणी के भीतर और बाहर सम्पूर्ण जगत में भी बसता है, उससे छिपाकर यह देह मृत्यु से बचाई नहीं जा सकती। यह देह किसी प्रकार भी मृत्यु से बचाकर नहीं रखी जा सकती, हरि-प्रभु इस वस्तु को ढूँढ़ ही लेता है। हरि-प्रभु की ही यह वस्तु है, वह इसे ले ही जाता है। स्वेच्छाचारी प्राणी प्रार्थना कर-करके, हरेक प्रकार की औषधि करके भटकते फिरते हैं; लेकिन जिस परमात्मा की दी हुई यह चीज़ है, वह मालिक-प्रभु इसे ले लेता है। परमात्मा के सेवक गुरु के शब्द की साधना करके (मृत्यु के भय से) बच जाते हैं। हे भाई ! जगत में किसी को भी मृत्यु नहीं रुचती, प्रत्येक प्राणी अपनी देह को छिपाता है कि कहीं यमराज इसे पकड़कर न ले जाए ॥ २ ॥ हे भाई ! गुरु के शरणागत मनुष्यों को यह परमात्मा के दरबार से लिखी मृत्यु भी प्रिय लगती है, वे गुरमुख जन परमात्मा के चरणों के ध्यान में लगकर मृत्यु के भय से बचे रहते हैं। परमात्मा के नाम में लगकर वे गुरमुख शोभा तथा गौरव पाते हैं, दुनिया से सत्कार-बड़प्पन लेकर उस परमात्मा के दरबार में जाते हैं। गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य परमात्मा की सेवा में प्रतिष्ठित होते हैं, हरि-नाम के प्रभाव से वे अपना जीवन सफल बना लेते हैं और परमात्मा के नाम से वे आत्मिक आनन्द महसूस करते हैं। गुरु के द्वार पर टिके रहनेवाले मनुष्य परमात्मा के नाम में लीन रहते हैं और इस प्रकार वे योनियों का चक्र तथा मौत —इन दोनों दुखों को समाप्त कर लेते हैं। हे भाई ! परमात्मा के भक्त और परमात्मा मिलकर एकरूप हो जाते हैं, भक्त और परमात्मा दोनों एक जैसे हो जाते हैं। हे भाई ! गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्यों को यह ईश्वर के दरबार से लिखी मृत्यु भी सुन्दर लगती है, वे गुरमुख प्राणी परमात्मा के ध्यान में लीन होकर (मृत्यु के भय से) बचे रहते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! जगत जन्मता है, मरता है, और आत्मिक मृत्यु मरता रहता है; (लेकिन यही) गुरु के द्वारा प्रभु-चरणों में लगकर स्थिरचित्त हो जाता है। गुरु जिस मनुष्य के हृदय

में नाम-मंत्र दृढ़ करता है और मुख में आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल देता है, वह मनुष्य हरि के नाम-रस को स्वादपूर्वक अपने भीतर मिलाता है। जब वह मनुष्य गुरु से आत्मिक जीवन का दाता नाम-रस प्राप्त करता है, तब वह आत्मिक रूप से मृत मनुष्य आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेता है, उसे दोबारा यह मृत्यु नहीं लगती। जो मनुष्य गुरु से परमात्मा का नाम प्राप्त कर लेता है, वह मनुष्य वह स्थान प्राप्त कर लेता है जहाँ आत्मिक मृत्यु स्पर्श नहीं कर सकती, वह मनुष्य परमात्मा के नाम में लीन रहता है। हे दास नानक! परमात्मा का नाम उसका आसरा बन जाता है, परमात्मा के नाम के अतिरिक्त कोई पदार्थ उसके आत्मिक जीवन का सहारा नहीं बन सकता। हे भाई! माया-ग्रसित जगत बार-बार जन्मता है, मरता है, आत्मिक मृत्यु मरता रहता है; (लेकिन वही) गुरु द्वारा (प्रभु के चरणों में) लगकर स्थिरचित्त हो जाता है॥ ४॥ ६॥ १३॥

॥ आसा महला ४ छंत ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ। ता की गति कही न जाई अमिति वडिआई मेरा गोविंदु अलख अपार जीउ। गोविंदु अलख अपारु अपरंपरु आपु आपणा जाणै। किआ इह जंत विचारे कहीअहि जो तुधु आखि वखाणै। जिस नो नदरि करहि तूं अपणी सो गुरमुखि करे वीचारु जीउ। वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ॥ १॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ। तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि सभ महि रहिआ समाइ जीउ। घट अंतरि पारब्रहमु परमेसरु ता का अंतु न पाइआ। तिसु रूपु न रेख अदिसटु अगोचरु गुरमुखि अलखु लखाइआ। सदा अनंदि रहै दिनु राती सहजे नामि समाइ जीउ। तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ॥ २॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ। हरि हरि प्रभु एको अवरु न कोई तूं आपे पुरखु सुजानु जीउ। पुरखु सुजानु तूं परधानु तुधु जेवडु अवरु न कोई। तेरा सबदु सभु तूं है वरतहि तूं आपे करहि सु होई। हरि सभ महि रविआ एको सोई गुरमुखि लखिआ हरि नामु जीउ। तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ॥ ३॥ सभु तूं है करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ। तुधु आपे भावै

तिवै चलावहि सभ तेरै सबदि समाइ जीउ । सभ सबदि समावै जां तुधु भावै तेरै सबदि वडिआई । गुरमुखि बुधि पाईऐ आपु गवाईऐ सबदे रहिआ समाई । तेरा सबदु अगोचरु गुरमुखि पाईऐ नानक नामि समाइ जीउ । सभु तूं है करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४ ॥

हे भाई ! मेरा गोविन्द सर्वोपरि है, अगम्य है और इन्द्रियों की पहुँच से परे है, वह समस्त विश्व का मूल है, उसे माया की कालिख नहीं लग सकती, उसकी कोई विशेष आकृति नहीं बताई जा सकती । यह नहीं कहा जा सकता कि परमात्मा कैसा है, उसका बड़प्पन भी नहीं मापा जा सकता । मेरा वह गोविन्द अव्यक्त है, अनन्त है, अपरम्पार है, अपने आप को वही जानता है, इन जीव बेचारों के क्या वश की बात है (कि ईश्वर के बारे में कुछ कहें) ? कोई भी नहीं है जो तेरी हस्ती को वर्णन कर समझा सके । हे प्रभु ! जिस मनुष्य पर तुम कृपादृष्टि करते हो, वह गुरु का शरणागत हो (तुम्हारे गुणों के बारे में) चिन्तन करता है । हे भाई ! मेरा गोविन्द सर्वोपरि है, अपहुँच है और ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच से परे है, वही जगत का मूल है, उसे माया की कालिख नहीं लग सकती, उसकी कोई विशेष आकृति नहीं बताई जा सकती ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम सारे जगत का मूल हो और सर्वव्यापक हो, तुम अपरम्पार हो और सारी सृष्टि के सृजनहार हो, तेरी हस्ती का ओर-छोर किसी को नहीं मिल सकता । तुम हर एक शरीर में मौजूद हो और तुम निरन्तर सबमें परिव्याप्त हो । हे भाई ! पारब्रह्म परमेश्वर हरेक शरीर में मौजूद है, उसके गुणों का अन्त कोई नहीं पा सकता । उस प्रभु का कोई विशेष रूप, चिह्न, चक्र नहीं बताया जा सकता । वह प्रभु अगोचर तथा इन्द्रियों की पहुँच से परे है । गुरु द्वारा ही ज्ञान होता है कि परमात्मा अव्यक्त है । (गुरु के सान्निध्य में रहनेवाला) दिन-रात प्रतिपल आत्मिक आनन्द में प्रसन्न रहता है और परमात्मा के नाम में लीन रहता है । हे प्रभु ! तुम सारे जगत के मूल हो, सर्वव्यापक हो, अपरम्पार हो और सारी सृष्टि के सृजनहार हो । तुम्हारी हस्ती का ओर-छोर नहीं मिल सकता ॥ २ ॥ हे प्रभु ! तुम सत्यस्वरूप हो, सर्वोपरि हो, शाश्वत हो और समस्त गुणों के कोष हो, तुम ही एक स्वामी हो, तुम्हारे समकक्ष कोई दूसरा नहीं है, तुम स्वयं सर्वव्यापी हो और अन्तर्यामी हो । हे हरि ! तुम सबमें व्याप्त हो, प्रत्येक के हृदय की जाननेवाले हो, तुम सर्वोपरि हो और तुम्हारे समान कोई नहीं है । सर्वत्र तुम्हारा आदेश परिचालित है, तुम सर्वत्र मौजूद हो, जगत में वही होता है जो तुम आप करते हो । हे भाई ! सारी सृष्टि में एक परमात्मा ही परिव्याप्त है । गुरु का शरणागत हो उसके नाम की

सूझ होती है। हे प्रभु ! तुम सत्यस्वरूप हो, तुम सर्वोपरि हाकिम हो, तुम शाश्वत हो और समस्त गुणों के कोष हो ॥ ३ ॥ हे कर्तार ! सर्वत्र तुम ही तुम हो, सारी सृष्टि में तुम्हारे ही तेज-प्रताप का प्रकाश है। हे कर्तार ! जैसे तुझे उपयुक्त लगे वैसे ही सृष्टि को चलाए। हे कर्तार ! जैसे तुझे उचित लग रहा है, उसी प्रकार सृष्टि को काम-काज में लगा रहा है। सारी दुनिया तेरे ही हुक्म के अनुसार आचरण करती है। सारी दुनिया तेरे हुक्म में ही टिकी रहती है। जब तुम्हें उचित लगता है तो तुम्हारे हुक्म-अनुसार ही जीवों को सत्कार मिलता है। हे भाई ! यदि गुरु का शरणागत हो सुबुद्धि प्राप्त कर लें, यदि अहंत्व-अहंकार दूर कर लें तो गुरु के ज्ञान के प्रभाव से वह कर्तार सर्वत्र दृष्टिगत होता है। नानक का कथन है कि परमात्मा का हुक्म जीवों की ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच से परे है। (उसके आदेश की सूझ) गुरु की शरणागत होने पर होती है, (उसके हुक्म की समझ होने पर) मनुष्य नाम में लीन हो जाता है। हे कर्तार ! सर्वत्र तुम ही तुम हो, सारी सृष्टि तुम्हारे ही तेज-प्रताप का प्रकाश है। हे कर्तार ! जैसे तुम्हें उचित लगे वैसे ही अपने आदेश-अनुसार सृष्टि को चलाएँ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥

हरि अंम्रित भिने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे। मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना। गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिना। जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना॥ १॥ हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे। जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ। जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ। जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥ २ ॥ हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे। गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा। मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा। मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सत संगा ॥ ३ ॥ दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे। हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ। भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ। जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १५ ॥

हे भाई ! मेरी आँखें आत्मिक जीवन के दाता हरि के नाम-जल से भीग गई हैं, मेरा मन प्रभु के नाम-रंग में रँगा है। परमात्मा ने मेरे मन को कसौटी पर परखा है और यह शुद्ध कंचन बन गया है। गुरु का शरणागत हो मेरा मन प्रभु के प्रेम-रंग में गहरा लाल हो गया है, मेरा मन और हृदय प्रेम-रंग में ओत-प्रोत हो गया है। दास नानक प्रभु के नाम की कस्तूरी से भली प्रकार सुगन्धित हो गया है, (अब नानक का) सम्पूर्ण जीवन सौभाग्यशाली बन गया है ॥ १ ॥ प्रभु-चरणों में प्रेम उपजाने के लिए गुरवाणी ने मेरा मन बींध लिया है, जैसे तीखी नोक वाले तीर किसी चीज़ को बींध लेते हैं। जिस मनुष्य के भीतर प्रभु-प्रेम की कसक उठती है, वही जानता है कि उस कसक को कैसे सहा जाए। जो मनुष्य माया-मोह से असंलग्न होकर जीवन बिताता है, वह सांसारिक काम-काज करता हुआ भी माया के बन्धनों से आज़ाद रहता है। दास नानक की प्रार्थना है कि हे प्रभु ! मुझे गुरु से मिला, ताकि मैं इस दुस्तर संसार-सागर से पार हो सकूँ ॥ २ ॥ हे अनन्त कौतुकों के स्वामी गोविन्द ! हमें मिलो, हम मूर्ख एवं अज्ञानी तेरी शरण आए हैं। मैं (गुरु से) परमात्मा की भक्ति की याचना करता हूँ क्योंकि पूर्णगुरु के द्वारा ही परमात्मा मिल सकता है। गुरु के ज्ञान के द्वारा अनन्त लहरों वाले (समुद्र-प्रभु) को स्मरण कर मेरा मन खिल गया है, मेरा हृदय प्रफुल्लित हो गया है। नानक का कथन है कि सन्तजनों को मिलकर सन्तों की संगति में मैंने परमात्मा को प्राप्त कर लिया है ॥३॥ हे दीनदयालु हरि ! हे प्रभु ! हे बादशाह ! मेरी प्रार्थना सुन। हे हरि ! मैं तेरे नाम का आसरा माँगता हूँ। हे हरि ! तेरा नाम (यदि तेरी कृपा हो तो) मुँह द्वारा जप सकता हूँ। हे भाई ! परमात्मा का यह शाश्वत स्वभाव है कि वह भक्ति के साथ प्रेम करता है। (शरणागत की) प्रतिष्ठा की रक्षा करता है। दास नानक भी उस हरि का शरणागत है, (जो शरणागत को) अपने नाम में अनुरक्त करके संसार-समुद्र से पार कर देता है ॥ ४ ॥ ८ ॥ १५ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे। कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा। हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा। धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥ १॥ पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे। हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली। मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली। जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥ २ ॥ गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने

राम राजे। मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिने। मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने। हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ॥ ३ ॥ गुर अंम्रित भिनी देहुरी अंम्रितु बुरके राम राजे। जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंम्रिति छकि छके। गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके। हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥ ४ ॥ ६ ॥ १६ ॥

गुरु का शरणागत हो मैंने खोजते-खोजते मित्र-प्रभु को प्राप्त कर लिया है। मेरा यह शरीर रूपी किला स्वर्ण का बन गया है (क्योंकि) इसमें परमात्मा प्रकट हो गया है। मुझे अपने भीतर ही परमात्मा का नाम-रत्न, नाम-हीरा मिल गया है, जिससे मेरा मन, मेरा हृदय बिंध गया है अर्थात् स्थिर हो गया है। नानक का कथन है कि प्रभु की सेवा से सौभाग्यवश मुझे परमात्मा मिला है और मेरा अहंत्व उसके प्रेम-रस में भीग गया है अर्थात् समाप्त हो गया है ॥ १ ॥ हे सतिगुरु ! मैं यौवनसम्पन्ना मूर्ख जीव-स्त्री सदा खड़ी हुई तुझसे प्रभु-प्रियतम के देश का मार्ग पूँछती हूँ। हे सतिगुरु ! मुझे प्रभु-पति का नाम स्मरण कराते रहो (ताकि) मैं परमात्मा (की प्राप्ति के) मार्ग पर चलूँ। मेरे मन और हृदय में प्रभु का नाम ही अवलम्ब है (यदि तुम्हारी कृपा हो तो) मैं अहंकार-विष को जला सकूँगी। दास नानक की प्रार्थना है कि गुरु से भेंट कराइए। जो भी कोई परमात्मा को मिला है, गुरु के द्वारा ही मिला है ॥ २ ॥ हे प्यारे हरि ! मुझ चिरकाल से बिछुड़े हुए को गुरु के माध्यम से आकर दर्शन दो। मेरा मन, मेरा हृदय वैराग्य-युक्त है। मेरी आँखें प्रेम-जल से गीली हैं। हे हरि ! मुझे प्यारे गुरु का पता बताइए ताकि गुरु को मिलकर मेरा मन तेरी याद में लग जाए। नानक का कथन है कि हे हरि ! मैं मूर्ख हूँ, मुझे अपने नाम-स्मरण के काम में लगाइए ॥ ३ ॥ गुरु का सुन्दर हृदय सदा आत्मिक जीवन के दाता नाम-जल से भीगा रहता है, वह आत्मिक जीवन के दाता नाम-जल को (दूसरों के लिए भी) छिड़कता रहता है। जिन मनुष्यों को अपने मन में सतिगुरु की वाणी प्रिय लगती है, उनके हृदय भी वाणी का आनन्द अनुभव करके आत्मिक जीवन के दाता नाम-जल से भीगे रहते हैं। नानक का कथन है (गुरु-कृपा से) परमात्मा और उसका सेवक एकरूप हो जाते हैं और सेवक परमात्मा में लीन हो जाता है ॥ ४ ॥ ९ ॥ १६ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ हरि अंम्रित भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे। गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ

हरि रासे। धनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे। जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥ १ ॥ सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे। सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा। जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा। जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥ २ ॥ हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे। हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो। हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो। जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥ ३ ॥ जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे। हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए। हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए। जनु नानकु दासु हरि कांढिआ हरि पैज रखाए ॥ ४ ॥ १० ॥ १७ ॥

हे भाई! आत्मिक जीवन देनेवाली प्रभु-भक्ति के कोष गुरु तथा सतिगुरु के पास ही हैं। इस सत्यस्वरूप हरि-भक्ति के ख़ज़ाने का साहूकार गुरु सतिगुरु ही है, वही अपने सिक्खों को भक्ति रूपी धन देता है, यही श्रेष्ठ व्यापार है। वही मनुष्य भाग्यवान है, जो यह व्यापार करता है, नाम-धन का साहूकार उस मनुष्य को प्रोत्साहन देता है। दास नानक का कथन है कि जिन मनुष्यों के मस्तक पर आदि से प्रभु की सेवा द्वारा इसकी उपलब्धि का लेख लिखा है, यह प्रभु-भक्ति का व्यापार उन्हें ही मिलता है ॥ १ ॥ हे प्रभु! तुम हमारे स्वामी हो, तुम शाश्वत साहूकार हो, तमाम दुनिया तुम्हारे दिए नाम-धन से नाम-वाणिज्य करने के लिए आई हुई है। हे प्रभु! ये सब जीव-जन्तु तेरे द्वारा उत्पादित हैं, इनके भीतर तेरी ही आत्मा मौजूद है, कोई बेचारा जीव कुछ भी नहीं कर सकता। जो पदार्थ तुम इन शरीरों में डालते हो, वही प्रकट होता है। हे हरि! अपने दास नानक को भी तुमने ही अपनी भक्ति का कोष दिया हुआ है ॥ २ ॥ हे मेरे मालिक! हम तुम्हारे कौन-कौन से गुण गिनकर कह सकते हैं (क्योंकि तुम्हारे गुण अनन्त हैं), प्रभु तुम अनन्त हो। हे स्वामी! हम तो रात-दिन तुम्हारे नाम की महानता बखानते हैं, हमारे जीवन का यही अवलम्ब है, यही आसरा है। हे प्रभु! हम मूर्ख हैं, अज्ञानी हैं, हम तुम्हारा अन्त कैसे पा सकते हैं? दास नानक तो परमात्मा का दास है, परमात्मा के दासों का दास है ॥ ३ ॥ हे प्रभु! हम तेरे शरणागत हैं, अब जैसे तेरी इच्छा हो वैसे हमें बचा ले, हम दिन-रात (जीवन-मार्ग से) भ्रष्ट होकर अपने जीवन को ख़राब करते रहते

हैं। हे हरि ! हमारी प्रतिष्ठा बचा, हम तुम्हारे बच्चे हैं, तुम हमारे गुरु हो, तुम हमारे माता-पिता हो, हमें सन्मति देकर भली सूझ-बूझ दीजिए। हे हरि ! दास नानक तुम्हारा दास कहलाता है (इसलिए अपने दास की) प्रतिष्ठा रखो ॥ ४ ॥ १० ॥ १७ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे। अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ। हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ। जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥ १ ॥ जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे। इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए। हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुख किआ खाए। मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥ २ ॥ तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे। किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाए। जिन्ह तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए। जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥ ३ ॥ कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे। जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै। हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै। जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥ ४ ॥ ११ ॥ १८ ॥

जिन मनुष्यों के मस्तक पर परमात्मा के दरबार से गुरु-मिलाप का लेख परमात्मा द्वारा लिखा होता है, उन्हें गुरु मिल जाता है। (गुरु-कृपा द्वारा) आत्मिक जीवन की ओर से अज्ञान का अँधेरा दूर हो जाता है और उनके हृदय में गुरु द्वारा दी हुई आत्मिक जीवन की सूझ प्रकट हो जाती है। उन्हें परमात्मा का नाम रूपी क़ीमती रत्न प्राप्त हो जाता है, जो पुनः गुम नहीं होता। नानक का कथन है कि गुरु का शरणागत हो जो मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं, वे नाम-स्मरण द्वारा परमात्मा में लीन हो जाते हैं ॥ १ ॥ ऐसा क़ीमती (अर्थात् आत्मिक जीवन का प्रेरक) नाम जिन मनुष्यों ने स्मरण नहीं किया, वे जगत में किसलिए उत्पन्न हुए ? यह मानव-जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है, (जो) नाम-स्मरण के बिना सम्पूर्ण व्यर्थ चला जाता है। जो मनुष्य जीवन में उपयुक्त समय पर अपने हृदय की खेती में परमात्मा का नाम (रूपी बीज) नहीं बोता, वह परलोक में तब कौन सी ख़ुराक इस्तेमाल करेगा, जब आत्मिक जीवन के

बढ़ने के लिए नाम-भोजन की आवश्यकता होगी ? नानक का कथन है कि स्वेच्छाचारी व्यक्तियों को बार-बार जन्मों का चक्र मिलता है। (शायद उनके लिए) परमात्मा को यही सही लगता है ॥ २ ॥ हे हरि ! तुम सब जीवों के स्वामी हो, हर एक जीव तुम्हारा है, सब तुम्हारे द्वारा उत्पादित हैं, किसी जीव के वश में कुछ नहीं, जैसे तुम चलाते हो वैसे ही सब जीव आचरण करते हैं। हे प्यारे प्रभु ! जिन जीवों को तुम अपने साथ मिलाते हो, जो तुम्हें अपने मन में भले लगते हैं, वे तुम्हारे चरणों में जुड़े रहते हैं। दास नानक का कथन है कि जिन मनुष्यों को गुरु प्राप्त हो जाता है, उन मनुष्यों को गुरु परमात्मा के नाम में जोड़कर पार उतार देता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! कुछ मनुष्य राग गाकर, कुछ शंख आदि बजाकर, कुछ धार्मिक पुस्तकें पढ़कर परमात्मा के गुण गाते हैं; लेकिन परमात्मा इस प्रकार प्रसन्न नहीं होता, वह (तो) हर एक प्राणी के भीतर की बात जानता है, चाहे भीतरी विकारों को छिपाकर रखा जाय (परमात्मा से कुछ भी छिपा नहीं रह सकता)। हे नानक ! गुरु का शरणागत होकर जिन मनुष्यों का हृदय पवित्र हो जाता है, वे ही परमात्मा की भक्ति करते हैं और वे ही हरि का नाम लेते हैं॥ ४ ॥ ११ ॥ १८ ॥

॥ आसा महल ४ ॥ जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे। जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे। हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे। जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे॥ १ ॥ जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे। गुर सिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा। गुर सिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा। जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा॥२॥ गुर सिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे। करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी। गुर सिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी। जन नानक हरि पुंनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी॥ ३ ॥ गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे। कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुर सिखा मनि मिठा। हरि दरगह गुर सिख पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा। जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥

जिन मनुष्यों के हृदय में परमात्मा का प्रेम है, वे मनुष्य बुद्धिमान हैं; यदि वे कभी भूल-चूक से बाहर लोगों में ओछे बोल बोलते हैं तो भी वे परमात्मा को बड़े प्रिय लगते हैं। परमात्मा के सन्तों को परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा सहारा नहीं होता, परमात्मा ही तुच्छ व्यक्तियों का सम्मान है। हे नानक! परमात्मा का नाम ही परमात्मा के सेवकों के लिए सहारा है, परमात्मा ही उनका बाहुबल है, जिससे वे (विकारों से जूझने के लिए) दृढ़ रहते हैं ॥ १ ॥ हे भाई! जिस स्थान पर प्यारा (प्रभु) जा बैठता है, वह स्थान सुन्दर बन जाता है; गुर-सिक्ख उस स्थान को प्राप्त कर लेते हैं और उसकी धूलि को अपने मस्तक पर लगाते हैं। जो गुर-सिक्ख परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं, उनकी मेहनत परमात्मा के द्वार पर स्वीकृत हो जाती है। नानक का कथन है कि जो मनुष्य अपने हृदय में गुरु का आदर-सत्कार करते हैं, परमात्मा (जगत में उनका) आदर कराता है ॥ २ ॥ हे हरि! गुरु के सिक्खों के मन में तेरी प्रीति बनी रहती है, तेरे नाम का प्रेम टिका रहता है। वे अपने गुरु को अविस्मरणीय जानकर उसकी बतलाई सेवा करते रहते हैं, (जिसके प्रभाव से उनके मन से) माया की भूख दूर हो जाती है, उनकी संगति करके बहुत सी दुनिया (नाम-स्मरण की ख़ुराक) खाती है। हे नानक! जो मनुष्य अपने हृदय-खेत में हरि के नाम-स्मरण का शुभ बीज बोते हैं, उनके भीतर इस भले कर्म की कभी कमी नहीं होती ॥ ३ ॥ जिन गुर-सिक्खों ने प्यारे गुरु का दर्शन कर लिया, उनके मन में सदा उत्साह बना रहता है। यदि कोई मनुष्य परमात्मा की गुणस्तुति की बात आ सुनाए, तो वह मनुष्य गुर-सिक्खों को प्यारा लगने लगता है। हे भाई! जिन पर प्यारा सतिगुरु कृपालु होता है, उन्हें परमात्मा के दरबार में आदर मिलता है। नानक का कथन है कि वे गुर-सिक्ख परमात्मा का रूप हो जाते हैं, परमात्मा उनके मन में सदा बसा रहता है ॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥

॥ आसा महला ४ ॥ जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु द्रिड़ावै राम राजे। तिस की त्रिसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै। जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै। जन नानक कउ हरि क्रिपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥ १ ॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे। जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई। जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई। जिन्हा नानकु सतिगुरु भेटिआ तिन्हा मिलिआ हरि सोई ॥ २ ॥ जिन्हा अंतरि गुरमुखि प्रीति

है तिन्ह हरि रखणहारा राम राजे। तिन्ह की निंदा कोई किआ करे जिन्ह हरि नामु पिआरा। जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा। जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥ ३ ॥ हरिजुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे। हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ। अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नाम देउ मुखि लाइआ। जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २० ॥

जिन मनुष्यों ने प्यारे गुरु का पल्ला पकड़ लिया, गुरु उनके हृदय में परमात्मा का नाम दृढ़ कर देता है। जो मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करता है, उसकी माया-सम्बन्धी भूख-प्यास दूर हो जाती है। जो मनुष्य सदा परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं, यमराज उनके निकट नहीं आता। नानक का कथन है कि जिस पर परमात्मा कृपा करता है, वह सदा उसका नाम जपता है और परमात्मा उसे अपने नाम में लगाकर पार उतार देता है ॥ १ ॥ जो मनुष्य गुरु की शरणागत हो परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं, उन्हें जीवन-यात्रा में दोबारा रुकावट नहीं होती। जो मनुष्य सामर्थ्यवान गुरु को प्रसन्न कर लेते हैं, हर एक जीव उनका आदर-सत्कार करता है। जो मनुष्य प्यारे गुरु की बताई सेवा करते हैं, उन्हें सदा ही आत्मिक आनन्द प्राप्त रहता है। नानक का कथन है कि जो मनुष्य गुरु का पल्ला पकड़ते हैं, उन्हें परमात्मा आप आ मिलता है ॥ २ ॥ गुरु के बतलाए मार्ग का अनुसरण कर जिन मनुष्यों के हृदय में प्रीति पैदा हो जाती है, बचाने की सामर्थ्य रखनेवाला परमात्मा उन्हें बचाता है। जिन मनुष्यों को परमात्मा का नाम प्यारा लगने लगता है, कोई मनुष्य उनकी निन्दा नहीं कर सकता, क्योंकि कोई निन्दनीय विकृति उनके जीवन में नहीं रह जाती। इसलिए जिनका मन परमात्मा में रस जाता है, विकृत मनुष्य (उन्हें बदनाम करने के लिए) व्यर्थ टक्करें मारते हैं। हे दास नानक ! जो मनुष्य हरि-नाम स्मरण करते हैं, बचाने की सामर्थ्य रखनेवाला हरि (उन्हें बचा लेता है) ॥३॥ परमात्मा प्रत्येक युग में ही भक्त पैदा करता है और (विपत्ति के वक्त) उनकी रक्षा करता आ रहा है। मूर्ख हिरण्यकशिपु को आख़िर परमात्मा ने जान से मार दिया और भक्त प्रह्लाद को कुशलपूर्वक बचा लिया। मन्दिर से बाहर निकालनेवाले निन्दकों और अहंकारियों को परमात्मा ने पीठ देकर अपने भक्त नामदेव को दर्शन दिए। हे दास नानक ! जो भी मनुष्य ऐसी सामर्थ्य वाले परमात्मा की सेवा-भक्ति करता है, परमात्मा उसे समस्त विपत्तियों से बचा लेता है ॥ ४ ॥ १३ ॥ २० ॥

आसा महला ४ छंत घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे । हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे । रंगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा करे । गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥ १ ॥ मै प्रेमु न चाखिआ मेरे पिआरे भाउ करे । मनि त्रिसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे । नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरे । भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरिधारे ॥ २ ॥ पिर रतिअड़े मैडे लोइण मेरे पिआरे चात्रिक बूंद जिवै । मनु सीतलु होआ मेरे पिआरे हरि बूंद पीवै । तनि बिरहु जगावै मेरे पिआरे नीद न पवै किवै । हरि सजणु लधा मेरे पिआरे नानक गुरू लिवै ॥ ३ ॥ चड़ि चेतु बसंतु मेरे पिआरे भलीअ रुते । पिर बाझड़िअहु मेरे पिआरे आंगणि धूड़ि लुते । मनि आस उडीणी मेरे पिआरे दुइ नैन जुते । गुरु नानकु देखि विगसी मेरे पिआरे जिउ मात सुते ॥ ४ ॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ मेरे पिआरे सतिगुरू सुणाईआ । गुर विटड़िअहु हउ घोली मेरे पिआरे जिनि हरि मेलाईआ । सभि आसा हरि पूरीआ मेरे पिआरे मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ । हरि तुठड़ा मेरे पिआरे जनु नानकु नामि समाइआ ॥ ५ ॥ पिआरे हरि बिनु प्रेमु न खेलसा । किउ पाई गुरु जितु लगि पिआरा देखसा । हरि दातड़े मेलि गुरमुखि गुरमुखि मेलसा । गुरु नानकु पाइआ मेरे पिआरे धुरि मसतकि लेखुसा ॥ ६ ॥ १४ ॥ २१ ॥

हे इधर-उधर भटकते हुए प्यारे मन ! कभी तो प्रभु-चरणों में लग, तू हरि रूपी गुरु को मिल, (तुझे पता लग जायगा कि) परमात्मा तेरे भीतर ही विद्यमान है। हे मेरे प्यारे मन ! प्रभु के प्रेम में टिककर आत्मिक आनन्द महसूस कर, (और प्रभु से प्रार्थना कर कि) प्रभु यह कृपा करें। नानक कहते हैं कि हे प्यारे मन ! जिस पर गुरु दयालु होता है, उसे परमात्मा से मिला देता है ॥ १ ॥ हे मेरे प्यारे मन ! मैंने प्रभु-प्रेम करके उसका आस्वादन कभी नहीं किया क्योंकि मेरे मन में कभी भी तृष्णा समाप्त नहीं हुई। मेरा मन सदा माया की लालसा में लगा रहता है। हे मेरे प्यारे मन ! इस प्रकार मेरा यौवन बीतता जा रहा है

और मृत्यु का देवता मेरे श्वासों को देख रहा है। नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे मन ! वही जीव-स्त्री सौभाग्यशालिनी बनती है, उसके मस्तक पर भाग्यों की मणि चमकती है, जो परमात्मा की स्मृति अपने हृदय में टिकाए रखती है ॥ २ ॥ हे मेरे प्यारे ! मेरी आँखें प्रभु-पति के दर्शन में मस्त हैं, जैसे पपीहा (स्वाति-वर्षा) की बूँद के लिए उन्मत्त होता है। हे मेरे प्यारे ! जब मेरा मन परमात्मा के नाम-जल की बूँद पीता है तो शीतल हो जाता है। हे मेरे प्यारे ! मेरे शरीर में उपजा हुआ बिछोह का दर्द मुझे जगाए रखता है, मुझे किसी तरह भी नींद नहीं आती। नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे ! गुरु द्वारा दी हुई लगन के प्रभाव से मैंने सज्जन प्रभु को पा लिया है ॥ ३ ॥ हे मेरे प्यारे ! चैत्र चढ़ता है, बसंत आता है और तब सुहावनी ऋतु आ गई है, लेकिन हे मेरे प्यारे ! प्रभु-पति के बिना मेरे आँगन में धूलि उड़ रही है। हे मेरे प्यारे ! मेरे मन में प्रभु-मिलाप की आशा नहीं रही है, मैं (सुन्दर ऋतु की ओर से) उदास हूँ, मेरी दोनों आँखें (प्रभु-पति की प्रतीक्षा में) जुड़ गई हैं। हे मेरे प्यारे ! गुरु नानक को देखकर मेरी आत्मा ऐसे प्रसन्न हो गई है, जैसे माँ अपने पुत्र को देखकर खिल उठती है ॥ ४ ॥ हे मेरे प्यारे ! मुझे गुरु ने परमात्मा की गुणस्तुति की बातें सुनाई हैं। मैं उस गुरु पर बलिहारी जाती हूँ, जिसने मुझे प्रभु-पति के चरणों में लगा दिया है। हे मेरे प्यारे ! प्रभु ने मेरी समस्त आशाएँ पूर्ण कर दी हैं, प्रभु की ओर से मैंने मनोवांछित फल पा लिया है। नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे ! जिस मनुष्य पर परमात्मा दयालु होता है, वह परमात्मा के नाम में लीन हो जाता है ॥ ५ ॥ हे प्यारे ! परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे के साथ प्रेम-क्रीड़ा नहीं करूँगी। मैं गुरु को कैसे प्राप्त करूँ, जिसके द्वारा तेरा दर्शन कर सकूँगी। हे प्यारे दाता हरि ! मुझे गुरु से मिला, गुरु के द्वारा ही मैं तेरा दर्शन कर सकूँगी। नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे ! जिसके मस्तक पर प्रभु के दरबार से लेख लिखा होता है, उसे गुरु मिल जाता है ॥ ६ ॥ १४ ॥ २१ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ५ छंत घरु १ ॥

अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम। चाखिअड़ा चाखिअड़ा मै हरि रसु मीठा राम। हरि रसु मीठा मन महि वूठा सतिगुरु तूठा सहजु भइआ। ग्रिहु वसि आइआ मंगलु गाइआ पंच दुसट ओइ भागि गइआ। सीतल आघाणे अंम्रित बाणे साजन संत बसीठा। कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ सो प्रभु नैणी

डीठा ॥ १ ॥ सोहिअड़े सोहिअड़े मेरे बंक दुआरे राम। पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम। संत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा। आपे जाञी आपे माञी आपि सुआमी आपि देवा। अपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे। कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥ २ ॥ नव निधे नउ निधे मेरे घर महि आई राम। सभु किछु मै सभु किछु पाइआ नामु धिआई राम। नामु धिआई सदा सखाई सहज सुभाई गोविंदा। गणत मिटाई चूकी धाई कदे न विआपै मन चिंदा। गोविंद गाजे अनहद वाजे अचरज सोभ बणाई। कहु नानक पिरु मेरै संगे ता मै नव निधि पाई॥ ३॥ सरसिअड़े सरसिअड़े मेरे भाई सभ मीता राम। बिखमो बिखमु अखाड़ा मै गुर मिलि जीता राम। गुर मिलि जीता हरि हरि कीता तूटी भीता भरम गड़ा। पाइआ खजाना बहुतु निधाना साणथ मेरी आपि खड़ा। सोई सुगिआना सो परधाना जो प्रभि अपना कीता। कहु नानक जां वलि सुआमी ता सरसे भाई भीता ॥ ४ ॥ १ ॥

मेरे हृदय-घर में आनन्द ही आनन्द हो गया है (क्योंकि) मैंने उस प्रभु का दर्शन कर लिया है और मैंने परमात्मा के नाम का मीठा रस चख लिया है। परमात्मा के नाम का मीठा रस मेरे भीतर आ बसा है (क्योंकि) सतिगुरु मुझ पर दयालु हो गया है। (प्रभु-कृपा से) मेरे भीतर आत्मिक स्थिरता पैदा हो गई है। अब मेरा हृदय रूपी घर बस गया है और मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ ख़ुशी का गीत गा रही हैं। वे (कामादिक) पाँचों वैरी भाग गए हैं। जबसे मित्र-गुरु (ईश्वर-मिलाप के लिए) वकील बना है, तभी से उसकी आत्मिक जीवन की देनेवाली वाणी के प्रभाव से मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ शीतल हो गई हैं, अर्थात् शान्त हो गई हैं और तृप्त हो गई हैं। हे नानक ! कह— मेरा मन अब परमात्मा के साथ रम गया है और मैंने उस परमात्मा को अपनी आँखों से देख लिया है॥ १ ॥ (हे सहेली ! मेरे हृदय रूपी घर के सब द्वार) मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ सुन्दर हो गई हैं। मेरी आत्मा के स्वामी और सन्त प्रभुजी मेरे हृदय-घर में आ विराजे हैं। मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ उसे प्रणाम करके उसकी सेवा-भक्ति में लग गई हैं। वह आप ही बराती है, आप ही मेल है, आप ही मालिक है और आप ही इष्टदेव है। प्रभु यह कार्य (आत्मा को परमात्मा से मिलाने का) आप ही पूर्ण करता है। हे नानक ! कह— मेरा पति-प्रभु मेरे हृदय-घर में आ

बैठा है और मेरी सारी ज्ञानेन्द्रियाँ सुन्दर बन गई हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! अब मैं परमात्मा का नाम स्मरण करता हूँ, मुझे हर एक पदार्थ मिल गया है। मैंने सब कुछ पा लिया है, सृष्टि के समस्त नौ ख़ज़ाने मेरे हृदय-घर में आ टिके हैं। मैं उस गोविन्द का नाम स्मरण करता हूँ, जो हमेशा के लिए मेरा साथी बन गया है, जिसके प्रभाव से मेरे भीतर आत्मिक टिकाव तथा प्रेम उत्पन्न हो गया है। मैंने अपने भीतर से चिन्ता-फ़िक्र को समाप्त कर दिया है, मेरी दुबिधा मिट गई है, कोई चिन्ता अब मेरे मन पर दबाव नहीं डाल सकती। मेरे भीतर गोविन्द प्रकट हो रहा है, (ऐसा लगता है जैसे समस्त संगीत उत्पन्न करनेवाले वाद्ययन्त्र) मेरे भीतर निरन्तर बज रहे हों। परमात्मा ने मेरे भीतर विस्मय उत्पन्न कर देनेवाली आत्मिक सुन्दरता पैदा कर दी है। हे नानक ! कह— अब प्रभु-पति मेरे साथ-साथ बस रहा है, इसलिए मुझे प्रतीत हो रहा है कि मैंने सृष्टि के नौ ख़ज़ाने प्राप्त कर लिये हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! गुरु को मिलकर मैंने यह दुस्साध्य संसार-अखाड़ा जीत लिया है और अब मेरी मित्र अर्थात् ज्ञानेन्द्रियाँ आनन्दित हो रही हैं। हे भाई ! गुरु का शरणागत होकर मैंने संसार-अखाड़ा जीता है (इसलिए) अब मैं सदा परमात्मा का स्मरण करती हूँ। अब दुबिधा के किले की दीवार ढह गई है अर्थात् अब मैं दुबिधाओं से मुक्त हो गई हूँ। मैंने हरि-नाम का कोष पा लिया है, एक बड़ा कोष पा लिया है, मेरी रक्षा के लिए प्रभु आप आकर खड़े हैं। हे भाई ! वही मनुष्य अच्छी सूझ-बूझ वाला है, वही सर्वत्र सम्मानित है, जिसे प्रभु ने अपना बना लिया है। हे नानक ! जब पति-प्रभु पक्षधर हो तो सारे मित्र एवं भाई भी प्रसन्न हो जाते हैं ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ अकथा हरि अकथ कथा किछु जाइ न जाणी राम। सुरि नर सुरि नर मुनि जन सहजि वखाणी राम। सहजे वखाणी अमिउ बाणी चरण कमल रंगु लाइआ। जपि एकु अलखु प्रभु निरंजनु मन चिंदिआ फलु पाइआ। तजि मानु मोहु विकारु दूजा जोती जोति समाणी। बिनवंति नानक गुर प्रसादी सदा हरि रंगु माणी ॥ १ ॥ हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाई राम। वडभागी वडभागी सत संगति पाई राम। वडभागी पाए नामु धिआए लाथे दूख संतापै। गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे आपु मिटाइआ आपै। करि किरपा मेले प्रभि अपुनै विछुड़ि कतहि न जाई। बिनवंति नानक दासु तेरा सदा हरि सरणाई ॥ २ ॥ हरि दरे हरि दरि सोहनि

तेरे भगत पिआरे राम। वारी तिन वारी जावा सद बलिहारे राम। सद बलिहारे करि नमसकारे जिन भेटत प्रभु जाता। घटि घटि रवि रहिआ सभ थाई पूरन पुरखु बिधाता। गुरु पूरा पाइआ नामु धिआइआ जूऐ जनमु न हारे। बिनवंति नानक सरणि तेरी राखु किरपा धारे॥ ३॥ बेअंता बेअंत गुण तेरे केतक गावा राम। तेरे चरणा तेरे चरण धूड़ि वडभागी पावा राम। हरि धूड़ी नाईऐ मैलु गवाईऐ जनम मरण दुख लाथे। अंतरि बाहरि सदा हदूरे परमेसरु प्रभु साथे। मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुड़ि जोनि न पावा। बिनवंति नानक गुर सरणि तरीऐ आपणे प्रभ भावा॥ ४॥ २॥

हे भाई! परमात्मा की गुणस्तुति नहीं की जा सकती, (किसी चतुराई के द्वारा) परमात्मा की गुणस्तुति के साथ जान-पहचान नहीं होती। दैवी प्रकृति वाले प्राणी तथा शान्तचित्त व्यक्ति आत्मिक स्थिरता में टिककर ही गुणस्तुति करते हैं। हे भाई! जिन मनुष्यों ने आत्मिक जीवन की दाता गुरवाणी के प्रभाव से आत्मिक स्थिरता में टिककर परमात्मा की गुणस्तुति की है, उन्होंने परमात्मा के सुन्दर चरण-कमलों से प्रेम कर लिया और उस एक अगोचर तथा निर्लिप्त प्रभु को स्मरण कर मनोवांछित फल प्राप्त कर लिया। नानक प्रार्थना करता है कि जिन्होंने अहंकार, मोह, विकार, माया का लगाव दूर कर अपनी सुरति ईश्वरीय ज्योति में लगा ली, वे गुरु की कृपा से सर्वदा प्रभु-मिलाप का आनन्द अनुभव करते हैं॥ १॥ हे भाई! परमात्मा के सन्तजन मेरे मित्र हैं, मेरे सज्जन हैं, मेरे साथी हैं, उनकी संगति मैंने सौभाग्यवश प्राप्त की है। जो मनुष्य सन्तजनों की संगति सौभाग्यवश प्राप्त कर लेता है, वह परमात्मा का नाम स्मरण करता है, उसके सारे क्लेश तथा दुख दूर हो जाते हैं। हे भाई! जो व्यक्ति सतिगुरु के चरण स्पर्श करता है, उसकी दुबिधा मिट जाती है, उसका प्रत्येक भय, आतंक समाप्त हो जाता है, वह अपने भीतर से अहंत्व दूर कर लेता है। जिस मनुष्य को प्रिय परमात्मा ने कृपापूर्वक अपने चरणों में स्थान दिया है, वह प्रभु से बिछुड़कर और कहीं भी नहीं जाता। नानक प्रार्थना करता है कि हे हरि! मैं तुम्हारा दास हूँ, मुझे भी शरण में रखो॥ २॥ हे हरि! तेरे द्वार पर, तेरे दरवाज़े पर तेरे प्यारे भक्त शोभा पा रहे हैं; मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, न्योछावर जाता हूँ। मैं उन भक्तों के सम्मुख शीश झुकाकर उन पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्हें मिलने से परमात्मा के साथ गहरी अभिन्नता हो जाती है (और यह महसूस हो जाता है कि) सर्वव्यापक, सृजनहार प्रभु

हरेक शरीर में सर्वत्र मौजूद है। हे भाई! जिस मनुष्य को पूर्णगुरु मिल जाता है, वह परमात्मा का नाम स्मरण करता है, वह किसी जुआरी की तरह जुए में जन्म की बाज़ी नहीं हारता। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! मैं तेरा शरणागत हूँ, कृपा करके मुझे बचा ले ॥ ३ ॥ हे प्रभु! तेरे अनन्त गुण हैं, तेरे गुणों का अन्त नहीं पाया जा सकता, मैं तेरे कितने गुण गा सकता हूँ? हे प्रभु! यदि मेरे सौभाग्य हों तो ही तेरे चरणों की धूलि मुझे मिल सकती है। हे भाई! प्रभु के चरणों की धूलि में स्नान करना चाहिए, (इससे) विकारों का मैल दूर हो जाता है और जन्म-मरण के दुख उतर जाते हैं। (यह भी गुरमुख को महसूस हो जाता है कि) परमात्मा प्रभु हमारे साथ-साथ बसता है। जो मनुष्य परमात्मा की गुणस्तुति करता है उसके भीतर सुख उत्पन्न हो जाते हैं, उसके दुख मिट जाते हैं और वह दोबारा योनियों में नहीं पड़ता। नानक प्रार्थना करता है कि गुरु का शरणागत हो संसार-सागर से पार उतरा जाता है, (यदि गुरु से भेंट हो जाय तो मैं भी) अपने प्रभु को प्यारा लगने लगूँ ॥ ४ ॥ २ ॥

आसा छंत महला ५ घरु ४ १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि चरन कमल मनु बेधिआ किछु आन न मीठा राम राजे। मिलि संत संगति आराधिआ हरि घटि घटे डीठा राम राजे। हरि घटि घटे डीठा अंम्रितो वूठा जनम मरन दुख नाठे। गुण निधि गाइआ सभ दूख मिटाइआ हउमै बिनसी गाठे। प्रिउ सहज सुभाई छोडि न जाई मनि लागा रंगु मजीठा। हरि नानक बेधे चरन कमल किछु आन न मीठा ॥ १ ॥ जिउ राती जलि माछुली तिउ राम रसि माते राम राजे। गुर पूरै उपदेसिआ जीवन गति भाते राम राजे। जीवन गति सुआमी अंतरजामी आपि लीए लड़ि लाए। हरि रतन पदारथो परगटो पूरनो छोडि न कतहू जाए। प्रभु सुघरु सरूपु सुजानु सुआमी ताकी मिटै न दाते। जल संगि राती माछुली नानक हरि माते ॥ २ ॥ चात्रिकु जाचै बूंद जिउ हरि प्रान अधारा राम राजे। मालु खजीना सुत भ्रात मीत सभहूं ते पिआरा राम राजे। सभहूं ते पिआरा पुरखु निरारा ता की गति नही जाणीऐ। हरि सासि गिरासि न बिसरै कबहूं गुर सबदी रंगु माणीऐ। प्रभु पुरखु जग जीवनो संत रसु पीवनो जपि भरम मोह दुख डारा। चात्रिकु

जाचै बूंद जिउ नानक हरि पिआरा ।। ३ ।। मिले नराइण आपणे मानोरथो पूरा राम राजे । ढाठी भीति भरंम की भेटत गुरु सूरा राम राजे । पूरन गुर पाए पुरबि लिखाए सभ निधि दीन दइआला । आदि मधि अंति प्रभु सोई सुंदर गुर गोपाला । सूख सहज आनंद घनेरे पतित पावन साधू धूरा । हरि मिले नराइण नानका मानोरथो पूरा ।। ४ ।। १ ।। ३ ।।

जिस मनुष्य का मन सुन्दर कमल-चरणों में बिंध जाता है, उसे परमात्मा की स्मृति के बिना कोई दूसरी चीज़ मीठी नहीं लगती, सत्संगति में मिलकर वह मनुष्य प्रभु का नाम स्मरण करता है, उसे परमात्मा हरेक शरीर में विद्यमान दिखाई देता है, उसके हृदय में आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल आ बसता है, उसके जन्म-मरण के दुख दूर हो जाते हैं, वह मनुष्य गुणों के कोष प्रभु की गुणस्तुति करता है, वह अपने समस्त दुख मिटा लेता है, जिसके परिणामस्वरूप उसके भीतर से अहंत्व की गाँठ खुल जाती है, आत्मिक स्थिरता को चाहनेवाला प्यारा प्रभु उसे नहीं त्यागता, उसके मन में मजीठ के रंग के समान परमात्मा-प्रेम का रंग चढ़ जाता है । नानक का कथन है जिस मनुष्य का मन प्रभु के सुन्दर कोमल चरणों में बिंध गया, उसे कोई दूसरी चीज़ मीठी नहीं लगती ।। १ ।। जिन मनुष्यों को पूर्णगुरु ने नाम-स्मरण का उपदेश दे दिया, वे परमात्मा के नाम-आस्वादन में ऐसे मस्त रहते हैं जैसे मछली पानी में प्रसन्न रहती है, वे मनुष्य आत्मिक जीवन के दाता प्रभु को प्यारे लगते हैं । हे भाई ! आत्मिक जीवन देनेवाला मालिक-प्रभु हरेक के दिल की जाननेवाला है, वह उन मनुष्यों को अपने साथ बाँध लेता है, वह सर्वव्यापक प्रभु उनके भीतर अपने उत्तम नाम-रत्न को प्रकट कर देता है, उन्हें दोबारा छोड़कर कहीं नहीं जाता । हे नानक! परमात्मा सुन्दर आत्मिक रूपरेखा वाला है, बुद्धिमान है, उसकी देन कभी समाप्त नहीं होती (अर्थात् उसकी देन शाश्वत होती है); इसलिए वे मनुष्य हरि-नाम में ऐसे मस्त रहते हैं जैसे मछली पानी की संगति में (मस्त रहती है) ।। २ ।। हे भाई ! जैसे चातक (स्वाति नक्षत्र की) बूँद माँगता है, वैसे ही संतों के लिए परमात्मा का नाम ज़िन्दगी का सहारा है; दुनियावी धन-पदार्थ, कोष, पुत्र, भाई, मित्र —इन सबसे उन्हें परमात्मा प्यारा लगता है। जिस परमात्मा की उच्च आत्मिक अवस्था नहीं जानी जा सकती, वह निराला तथा सर्वव्यापक प्रभु उन्हें प्यारा लगता है। हरेक श्वास, ग्रास के साथ कभी भी परमात्मा उन्हें विस्मृत नहीं होता, (लेकिन) उस परमात्मा के मिलाप का आनंद गुरु के ज्ञान के प्रभाव से प्राप्त किया जा सकता है । हे भाई ! जो परमात्मा सर्वव्यापक और दुनिया की ज़िन्दगी है, संतजन उसके नाम-जल का रस पीते हैं, उस प्रभु का नाम जपकर वे अपने भीतर से

दुबिधा तथा मोह के दुख दूर कर लेते हैं। हे भाई ! जैसे चातक (स्वाति नक्षत्र की) बूँद माँगता है, वैसे ही संतों के लिए परमात्मा का नाम-जल जीवन का आसरा है ॥ ३ ॥ जो मनुष्य अपने परमात्मा में लीन हो जाते हैं उनके जीवन का लक्ष्य पूर्ण हो जाता है, शूरवीर गुरु को मिलकर उनके भीतर से दुबिधा की दीवार ढह जाती है; (लेकिन) पूर्णगुरु भी उन्हें ही प्राप्त होता है, जिनके मस्तक पर पूर्व जन्म के अनुसार गुणों के कोष तथा दीनदयालु परमात्मा द्वारा (गुरु से भेंट) का लेख लिखा हुआ है। (ऐसे भक्तों को विश्वास हो जाता है कि) वह सर्वोच्च तथा सृष्टि का पालनहार प्रभु ही सृष्टि के आदि में था, सृष्टि-सृजना के मध्य अब है और अन्त में भी रहेगा। हे भाई ! विकारग्रस्त जीवों को पवित्र करनेवाले गुरु की चरण-धूलि जिस मनुष्य को प्राप्त हो जाती है, उसे आत्मिक स्थिरता तथा अनेक सुख प्राप्त हो जाते हैं। नानक का कथन है कि जो व्यक्ति प्रभु-चरणों में मिल जाता है, उसका जीवन-मनोरथ सफल हो जाता है ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

आसा महला ५ छंत घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात। नानक प्रीति लगी तिन्ह राम सिउ भेटत साध संगात ॥ १ ॥ छंतु ॥ जल दुध निआई रीति अब दुध आच नही मन ऐसी प्रीति हरे। अब उरझिओ अलि कमलेह बासन माहि मगन इकु खिनु भी नाहि टरै। खिनु नाहि टरीऐ प्रीति हरीऐ सीगार हभि रस अरपीऐ। जह दूखु सुणीऐ जम पंथु भणीऐ तह साध संगि न डरपीऐ। करि कीरति गोविंद गुणीऐ सगल प्राछत दुख हरे। कहु नानक छंत गोविंद हरि के मन हरि सिउ नेहु करेहु ऐसी मन प्रीति हरे॥ १॥ जैसी मछुली नीर इकु खिनु भी ना धीरे मन ऐसा नेहु करेहु। जैसी चात्रिक पिआस खिनु खिनु बूंद चवै बरसु सुहावे मेहु। हरि प्रीति करीजै इहु मनु दीजै अति लाईऐ चितु मुरारी। मानु न कीजै सरणि परीजै दरसन कउ बलिहारी। गुर सु प्रसंने मिलु नाह विछुंने धन देदी साचु सनेहा। कहु नानक छंत अनंत ठाकुर के हरि सिउ कीजै नेहा मन ऐसा नेहु करेहु ॥ २ ॥ चकवी सूर सनेहु चितवै आस घणी कदि दिनीअरु देखीऐ। कोकिल अंब परीति चवै सुहावीआ मन हरि रंगु कीजीऐ। हरि प्रीति करीजै मानु न कीजै इक

राती के हभि पाहुणिआ। अब किआ रंगु लाइओ मोहु रचाइओ नागे आवण जावणिआ। थिरु साधू सरणी पड़ीऐ चरणी अब टूटसि मोह जु कितीऐ। कहु नानक छंत दइआल पुरख के मन हरि लाइ परीति कब दिनीअरु देखीऐ ॥ ३ ॥ निसि कुरंक जैसे नाद सुणि स्रवणी हीउ डिवै मन ऐसी प्रीति कीजै। जैसी तरुणि भतार उरझी पिरहि सिवै इहु मनु लाल दीजै। मनु लालहि दीजै भोग करीजै हभि खुसीआ रंग माणे। पिरु अपना पाइआ रंगु लालु बणाइआ अति मिलिओ मित्र चिराणे। गुरु थीआ साखी ता डिठमु आखी पिर जेहा अवरु न दीसै। कहु नानक छंत दइआल मोहन के मन हरि चरण गहीजै ऐसी मन प्रीति कीजै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

जिन पर प्रभु कृपालु होते हैं, वे ही मनुष्य सदा परमात्मा का नाम जपते हैं, लेकिन गुरु की संगति में रहने से उनकी यह प्रीति परमात्मा से बनती है ॥१॥छंतु॥ हे भाई ! परमात्मा और जीवात्मा के प्रेम की मर्यादा दूध और पानी के प्रेम जैसी है, पानी अपने होते हुए दूध को आँच नहीं लगने देता; हे मन ! परमात्मा का प्रेम भी ऐसा ही है (कि जीव को विकारों से जलने नहीं देता)। जब कमल प्रस्फुटित हो जाता है, तब (सुगन्धि से आकर्षित हो) भ्रमर कमल-पुष्प की सुगन्धि में मस्त हो जाता है, एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हटता और (पत्तियों में) फँस जाता है। (इसलिए) हे भाई! परमात्मा की प्रीति से एक क्षण के लिए भी परे नहीं हटना चाहिए, सारे शारीरिक आस्वाद और सुख उस परमात्म-प्रेम पर बलिहारी कर देना चाहिए। (इसके प्रभाव से) जहाँ यमों का देश कहा जाता है, सुना जाता है और (लोक-विश्वास है कि) यमों से दुख मिलता है, वहाँ गुरु-संगति के प्रभाव से कोई भय असर नहीं करता। सो, हे मन ! परमात्मा की गुणस्तुति करता रह, वही परमात्मा सारे दुख, सारे पश्चाताप दूर कर देता है। नानक का कथन है कि हे मन ! गोविंद की महानता के गीत गाता रह, परमात्मा से प्रेम बनाए रख। हे मन ! परमात्मा की प्रीति ऐसी है (कि विकारों का प्रभाव नहीं पड़ने देती) ॥ १ ॥ हे मन ! तू परमात्मा के साथ ऐसा प्रेम बना जैसा मछली का प्रेम पानी से है, मछली एक क्षण भी पानी के बिना जीवित नहीं रह सकती; जैसा प्रेम पपीहा स्वाति-बूँद से करता है, (कितना भी) प्यासा हो पर बार-बार स्वाति-बूँद माँगता है और बादल से कहता है कि सुन्दर मेघ ! वर्षा कर। हे भाई ! परमात्मा से प्रेम करना चाहिए, यह मन उसके हवाले करना चाहिए (और इस प्रकार) मन को परमात्मा के चरणों में लगाना चाहिए, अहंकार नहीं करना चाहिए,

परमात्मा की शरण लेनी चाहिए और उसके दर्शन के लिए स्वयं को न्यौछावर करना चाहिए। हे भाई ! जिस जीव-स्त्री पर गुरु दयालु होता है, वह सत्यस्वरूप प्रभु का स्मरण करती है और उसके द्वार पर प्रार्थना करती है कि हे बिछुड़े हुए प्रभु-पति ! मुझे मिल। हे नानक ! तुम भी अनन्त प्रभु की गुणस्तुति के गीत गाओ। हे मन ! परमात्मा के प्रति (मछली, चातक जैसा एकनिष्ठ) प्रेम बना ॥ २ ॥ हे मन ! तुझे परमात्मा से प्रेम करना चाहिए (जैसे चकवी का सूर्य से और कोयल का आम से है)। चकवी का सूर्य से प्रेम है, वह सारी रात सूर्य का स्मरण करती है, बहुत सोचती है कि कब सूर्य का दर्शन होगा; कोयल का आम के साथ प्रेम है, इसलिए वह मीठा बोलती है। हे भाई ! परमात्मा के साथ प्रेम करना चाहिए, किसी भी सांसारिक पदार्थ का अहंकार नहीं करना चाहिए। हम सभी यहाँ एक रात्रि के अतिथि हैं, फिर भी तूने दुनिया से क्यों मोह बढ़ाया हुआ है, माया के साथ लगाव बढ़ाया हुआ है। यहाँ सब नंगे आते हैं और नंगे ख़ाली हाथ ही चले जाते हैं। हे भाई ! गुरु का आसरा लेना चाहिए, गुरु का शरणागत होना चाहिए (क्योंकि शरणागत होकर ही) मन स्थिर हो सकता है, तभी यह मोह भंग होगा जो तूने माया के साथ बनाया है। हे नानक ! दया के घर सर्वव्यापक प्रभु की गुणस्तुति के गीत गाया कर, अपने भीतर परमात्मा के साथ प्रेम बना। (तेरे भीतर चकवी के समान आकांक्षा उभरे कि) कब सूर्य का दर्शन होगा ॥ ३ ॥ हे मन ! परमात्मा से ऐसा प्रेम करना चाहिए जैसा प्रेम हरिण करता है, रात के वक्त हरिण नाद सुनकर अपना हृदय उसके हवाले कर देता है। जैसे यौवनसम्पन्ना स्त्री अपने पति के प्रेम में बँधी हुई उसकी सेवा करती है, वैसे ही अपना मन सुन्दर प्रभु को देना चाहिए और उसके मिलाप का आनन्द पाना चाहिए। (प्रभु-पति को समर्पित करनेवाली जीव-स्त्री) उस प्रभु के मिलाप के सब आनंद, सब ख़ुशियाँ प्राप्त करती है, वह अपने प्रभु-पति को पा लेती है, अपनी आत्मा को गहरा प्रेम-रंग चढ़ा लेती है और इस प्रकार वह आदिम काल के मित्र प्रभु-प्रियतम को मिलती है। हे जीव-स्त्री ! जब से गुरु मध्यस्थ बना है, तब से मैंने प्रभु-प्रियतम को अपनी आँखों से देख लिया है, मुझे उस जैसा दूसरा कोई नज़र नहीं आता। हे नानक ! कह— मेरे मन ! दया के घर और मनमोहन परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता रह। हे मन ! परमात्मा के चरणों को पकड़कर रखना चाहिए। हे मन ! परमात्मा से ऐसा प्रेम करना चाहिए, (जैसा हरिण, नाद से और यौवनसम्पन्ना नारी अपने स्वामी से करती है) ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ सलोकु ॥ बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि। नानक भेटे साध जब हरि पाइआ मन

माहि ॥ १ ॥ छंत ॥ जाकउ खोजहि असंख मुनी अनेक तपे। ब्रहमे कोटि अराधहि गिआनी जाप जपे। जप ताप संजम किरिअ पूजा अनिक सोधन बंदना। करि गवनु बसुधा तीरथह मजनु मिलन कउ निरंजना। मानुख बनु तिनु पसू पंखी सगल तुझहि अराधते। दइआल लाल गोबिंद नानक मिलु साध संगति होइ गते ॥ १ ॥ कोटि बिसन अवतार संकर जटा धार। चाहहि तुझहि दइआर मनि तनि रुच अपार। अपार अगम गोबिंद ठाकुर सगल पूरक प्रभ धनी। सुर सिध गण गंधरब धिआवहि जख किंनर गुण भनी। कोटि इंद्र अनेक देवा जपत सुआमी जै जै कार। अनाथ नाथ दइआल नानक साध संगति मिलि उधार ॥ २ ॥ कोटि देवी जा कउ सेवहि लखिमी अनिक भाति। गुपत प्रगट जा कउ अराधहि पउण पाणी दिनसु राति। नखिअत्र ससीअर सूर धिआवहि बसुध गगना गावए। सगल खाणी सगल बाणी सदा सदा धिआवए। सिम्रिति पुराण चतुर बेदह खटु सासत्र जा कउ जपाति। पतित पावन भगति वछल नानक मिलीऐ संगि साति ॥ ३ ॥ जेती प्रभू जनाई रसना तेत भनी। अनजानत जो सेवै तेती नह जाइ गनी। अविगत अगनत अथाह ठाकुर सगल मंझे बाहरा। सरब जाचिक एकु दाता नह दूरि संगी जाहरा। वसि भगत थीआ मिले जीआ ताकी उपमा कित गनी। इहु दानु मानु नानकु पाए सीसु साधह धरि चरनी ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

(दुनिया परमात्मा की प्राप्ति के लिए) हर एक जंगल में छानबीन करती फिरी (और) खोज कर-करके थक गई, लेकिन जब गुरु मिल गया तब उसने अपने मन में परमात्मा को पा लिया ॥१॥ छंत ॥ जिस परमात्मा को असंख्य समाधिमग्न ऋषिवर तथा अनेक धूनियाँ तपानेवाले सिद्ध पुरुष प्राप्त करते हैं, करोड़ों ही ब्रह्मा और धार्मिक पुस्तकों के विद्वान जिसका जाप करके स्तवन करते हैं, जिस निर्लिप्त प्रभु को मिलने के लिए लोग कई प्रकार के जप-तप करते हैं, इन्द्रियों को संयमित करने के यत्न करते हैं, अनेक धार्मिक रस्म और पूजा करते हैं, अपने शरीर को पवित्र करने के साधन और दण्डवत प्रणाम करते हैं, तमाम पृथ्वी का भ्रमण करते हैं और तीर्थों पर स्नान करते हैं। हे दया के स्रोत गोविंद! हे प्यारे परमेश्वर! मनुष्य, जंगल, वनस्पति, पशु, पक्षी —सब तेरी ही आराधना करते हैं। मुझ

नानक पर दया करके गुरु की संगति में मिला, ताकि मुझे उच्च आत्मिक स्थिति प्राप्त हो जाए ॥ १ ॥ हे दयालु हरि ! विष्णु के करोड़ों अवतार और करोड़ों जटाधारी तुम्हें मिलना चाहते हैं, उनके मन और हृदय में तुम्हें मिलने की इच्छा रहती है। हे अनन्त और अगम्य प्रभु ! हे सबकी मनोकामनाओं के पूरक गोविंद ठाकुर ! हे सबके स्वामी-प्रभु ! देवगण, योग-साधनों में व्यस्त योगी, शिवगण, देवताओं के रागी, यक्ष, किन्नर तेरा स्मरण करते हैं और तेरे गुण गाते हैं। हे भाई ! करोड़ों इन्द्र, असंख्य देवगण, मालिक-प्रभु की जय-जय करते हैं। हे नानक ! उस निराश्रितों के आश्रय, स्वामी-प्रभु को, दया के स्रोत परमात्मा को सत्संगति के द्वारा मिलकर (संसार-समुद्र से) जहाज़ पार होता है ॥ २ ॥ करोड़ों देवियाँ जिस परमात्मा की सेवा-भक्ति करती हैं, धन की देवी लक्ष्मी अनेक विधियों से जिसकी सेवा करती है, गोचर-अगोचर समस्त जीव-जंतु जिसका स्तवन करते हैं, हवा-पानी दिन-रात जिसकी आराधना करते हैं, धरती जिसकी गुणस्तुति करती है, तमाम दिशाओं और तमाम बोलियों का हरेक जीव जिस परमात्मा का सदा गुण स्मरण करता है, सत्ताइस स्मृतियाँ, अठारह पुराण, चार वेद, छः शास्त्र जिस परमात्मा को जपते रहते हैं, उस पतितपावन प्रभु को, उस भक्तवत्सल हरि को सत्यस्वरूप सत्संगति द्वारा ही मिला जा सकता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! सृष्टि की जितनी सूझ प्रभु ने मुझे दी है, उतनी मेरी जिह्वा ने वर्णन कर दी है; लेकिन शेष सृष्टि का मुझे पता नहीं जो वह प्रभु की सेवा-भक्ति करती है, उसकी गणना मेरी शक्ति से परे की बात है। वह प्रभु अथाह, गहन समुद्र है, सबका मालिक है, सब जीवों के भीतर भी है और बाहर भी है, सब जीव-जन्तु उसके भिखारी हैं, वह एक ही सबको देन देनेवाला है, वह किसी जीव से दूर नहीं है, वह सबके साथ बसता है और प्रत्यक्ष है। हे भाई ! वह परमात्मा अपने भक्तों के वश में है। जो जीव उसे मिलते हैं, उनकी महानता मैं कहाँ तक वर्णन करूँ ? यदि उसकी कृपा हो तो नानक उसके भक्तजनों के चरणों पर अपना सिर रखे ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

॥ आसा महला ५ सलोक ॥ उदमु करहु वडभागीहो सिमरहु हरि हरि राइ। नानक जिसु सिमरत सभ सुख होवहि दूखु दरदु भ्रमु जाइ ॥ १ ॥ छंतु ॥ नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ। भेटत साधू संग जम पुरि नह जाईऐ। दूख दरद न भउ बिआपै नामु सिमरत सद सुखी। सासि सासि अराधि हरि हरि धिआइ सो प्रभु मनि मुखी। क्रिपाल दइआल रसाल गुण निधि करि दइआ सेवा लाईऐ। नानकु पइअंपै चरण जंपै

नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ।। १ ।। पावन पतित पुनीत नाम निरंजना। भरम अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना। गुर गिआन अंजन प्रभ निरंजन जलि थलि महीअलि पूरिआ। इक निमख जाके रिदै वसिआ मिटे तिसहि विसूरिआ। अगाधि बोध समरथ सुआमी सरब का भउ भंजना। नानकु पइअंपै चरण जंपै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना।। २।। ओट गही गोपाल दइआल क्रिपानिधे। मोहि आसर तुअ चरन तुमारी सरनि सिधे। हरि चरन कारन करन सुआमी पतित उधरन हरि हरे। सागर संसार भव उतार नामु सिमरत बहु तरे। आदि अंति बेअंत खोजहि सुनी उधरन संत संग बिधे। नानकु पइअंपै चरन जंपै ओट गही गोपाल दइआल क्रिपा निधे ।। ३ ।। भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ। जह जह संत अराधहि तह तह प्रगटाइआ। प्रभि आपि लीए समाइ सहजि सुभाइ भगत कारज सारिआ। आनंद हरि जस महा मंगल सरब दूख विसारिआ। चमतकार प्रगासु दह दिस एकु तह द्रिसटाइआ। नानकु पइअंपै चरण जंपै भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ।। ४।। ३ ।। ६ ।।

नानक का कथन है कि हे सौभाग्यशाली जीवो ! जिस प्रभु के स्मरण से सारे सुख मिल जाते हैं और सब प्रकार का दुख, दर्द और तनाव समाप्त हो जाता है, उस प्रभु-बादशाह का स्मरण करते रहो, (सदा उसके स्मरण का) प्रयास करते रहो ।। १ ।। छंतु ।। हे सौभाग्यशालियो ! परमात्मा का नाम जपते हुए आलस्य नहीं करना चाहिए, गुरु के सान्निध्य में रहने से यमलोक में नहीं जाना पड़ता, परमात्मा के नाम-स्मरण से कोई दुख, कोई दर्द अपना प्रभाव नहीं कर सकता, सर्वदा सुखी रहा जा सकता है। हे भाई ! हरेक श्वास के साथ परमात्मा की आराधना करता रह, उस प्रभु को अपने मन में स्मरण कर, अपने मुख से उसका नाम उच्चरित कर। हे कृपा के स्रोत ! दया के घर ! गुणों के कोष प्रभु ! दया कर, (मुझ नानक को) अपनी सेवा-भक्ति में लगा। नानक प्रार्थना करता है, तेरे चरणों का स्मरण करता है। हे भाई ! गोविंद का नाम जपते हुए कभी आलस्य नहीं करना चाहिए ।। १ ।। हे भाई निर्लिप्त परमात्मा का नाम पवित्र है, विकारग्रस्त जीवों को पवित्र करनेवाला है। हे भाई ! गुरु की दी हुई आत्मिक जीवन की सूझ एक ऐसा शूरवीर है, जो दुबिधा के अँधेरे का विनाश कर देता है। गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान का सुरमा यह ज्ञान पैदा कर देता है कि परमात्मा निर्लिप्त होकर भी पानी, पृथ्वी, आकाश में

सर्वत्र व्यापक है। जिसके हृदय में वह प्रभु आँख झपकने के समय के लिए भी बसता है, उसकी तमाम चिंता-फ़िक्र मिट जाती हैं। हे भाई! परमात्मा अथाह ज्ञान का मालिक है, सब कुछ करने योग्य है, सबका मालिक है, सबके डर का नाश करनेवाला है। नानक प्रार्थना करता है (और) उसके चरणों का स्मरण करता है, (क्योंकि) निर्लिप्त परमात्मा का नाम पवित्र है और विकारग्रस्त जीवों को पवित्र करनेवाला है ॥ २ ॥ हे सृष्टि के पालक! दयास्रोत! कृपा के भंडार प्रभु! मैंने तेरी ओट ली है, मुझे तेरे ही चरणों का सहारा है, तेरी शरण में रहना मेरे जीवन की सफलता है। हे हरि! हे स्वामी! हे जगत के मूल प्रभु! तेरे चरणों का आसरा विकारग्रस्त जीवों को बचाने योग्य है, संसार-समुद्र के जन्म-मरण के भँवर से पार करने योग्य है। तेरा नाम स्मरण कर अनेक व्यक्ति (संसार-समुद्र से) पार उतर रहे हैं। हे प्रभु! जगत-सृजना के आरम्भ में भी तुम ही हो, अंत में भी तुम ही हो, असंख्य जीव तेरी खोज कर रहे हैं। तेरे संतजनों की संगति ही एक ऐसा तरीक़ा है, जिससे संसार-समुद्र के विकारों से बचा जा सकता है। नानक तेरे द्वार पर प्रार्थना करता है और तेरे चरणों का स्मरण करता है, हे गोपाल! दयालु और कृपा के भंडार! मैंने तेरा सहारा लिया है ॥३॥ हे भाई! परमात्मा अपनी भक्ति के साथ प्रेम करनेवाला है, अपना यह विरद उसने आप ही बनाया है, जहाँ-जहाँ उसके संत आराधना करते हैं, वहाँ-वहाँ वह जाकर दर्शन देता है। हे भाई! परमात्मा आप ही (अपने भक्त अपने में) लीन किए हुए है, आत्मिक स्थिरता और प्रेम में टिकाए हुए है, अपते भक्तों के समस्त कार्य प्रभु आप ही सँवारता है। भक्त परमात्मा की गुणस्तुति करते हैं, प्रभु-मिलाप की ख़ुशी के गीत गाते हैं, आत्मिक आनंद महसूस करते हैं और सारे दुख विस्मृत कर देते हैं। हे भाई! जिस परमात्मा के नूर की झलक, ज्योति का प्रकाश दसों दिशाओं में हो रहा है, वही परमात्मा भक्तजनों के हृदय में प्रकट हो जाता है। नानक प्रार्थना करता है, प्रभु-चरणों का स्मरण करता है। (उसका कथन है कि) परमात्मा अपनी भक्ति के साथ प्रेम करनेवाला है, अपना यह विरद उसने आप ही बनाया है ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ थिरु संतन सोहागु मरै न जावए। जाकै ग्रिहि हरि नाहु सु सद ही रावए। अबिनासी अविगतु सो प्रभु सदा नवतनु निरमला। नह दूरि सदा हदूरि ठाकुरु दह दिस पूरनु सद सदा। प्रानपति गति मति जा ते प्रिअ प्रीति प्रीतमु भावए। नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ १ ॥ जा कउ राम भतारु ता कै अनदु घणा।

सुखवंती सा नारि सोभा पूरि बणा। माणु महतु कलिआणु हरिजसु संगि सुरजनु सो प्रभू। सरब सिधि नवनिधि तितु ग्रिहि नही ऊना सभु कछू। मधुर बानी पिरहि मानी थिरु सोहागु ता का बणा। नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जाको रामु भतारु ताकै अनदु घणा ॥ २ ॥ आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ। पीसउ चरण पखारि आपु तिआगीऐ। तजि आपु मिटै संतापु आपु नह जाणाईऐ। सरणि गहीजै मानि लीजै करे सो सुखु पाईऐ। करि दास दासी तजि उदासी कर जोड़ि दिनु रैणि जागीऐ। नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥ ३ ॥ जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ। ताकी पूरन आस जिन्ह साध संगु पाइआ। साध संगि हरि कै रंगि गोबिंद सिमरण लागिआ। भरमु मोहु विकारु दूजा सगल तिनहि तिआगिआ। मनि सांति सहजु सुभाउ वूठा अनद मंगल गुण गाइआ। नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे भाई! सन्तजनों का सौभाग्य स्थायी रहता है (क्योंकि उनके) शीश का स्वामी अर्थात् परमात्मा न मृत्यु को प्राप्त होता है, न कहीं जाता है। जिस जीव-स्त्री के हृदय-घर में पति-प्रभु आ बसे, वह सदा उसके मिलाप का आनन्द महसूस करती है। वह परमात्मा अनश्वर है, अदृश्य है, सदैव नितनूतन प्रेम वाला है और पवित्रस्वरूप है, वह स्वामी किसी से भी दूर नहीं है, सदा हरेक के साथ-साथ रहता है, दसों दिशाओं में वह सर्वदा व्याप्त रहता है। सब जीवों की देह का स्वामी वह परमात्मा ऐसा है, जिससे जीवों को उच्च आत्मिक अवस्था मिलती है, सन्मति प्राप्त होती है; ज्यों-ज्यों उस प्यारे प्रभु के साथ प्रीति बढ़ाएँ, त्यों-त्यों वह प्रियतम-प्रभु प्यारा लगता है। नानक का कथन है कि गुरु के ज्ञान के प्रभाव से उस प्रभु के साथ अभिन्नता पैदा होती है, सन्तजनों का सौभाग्य सदा बना रहता है (क्योंकि) उनका पति-प्रभु न मृत्यु को प्राप्त होता है और न कहीं छोड़कर जाता है ॥ १ ॥ हे भाई! जिसे प्रभु-पति मिल जाता है उसके हृदय-घर में आनन्द बना रहता है, वह जीव-स्त्री सुखी जीवन बिताती है, सर्वत्र उसकी शोभा एवं गरिमा बनी रहती है, उस जीव-स्त्री को सर्वत्र आदर मिलता है, सुख मिलता है क्योंकि उसे परमात्मा की गुणस्तुति प्राप्त हुई रहती है। दैवी गुणों का मालिक-प्रभु सर्वदा उसके साथ-साथ रहता है, उसके हृदय-घर में समस्त जादुई शक्तियाँ, समस्त नौ

खज़ाने बस जाते हैं, उसे कोई कमी नहीं रहती (बल्कि) उसे सब कुछ प्राप्त हो जाता है। उस जीव-स्त्री के बोल मीठे हो जाते हैं, प्रभु-पति द्वारा वह पहले ही सत्कृत होती है, उसका सौभाग्य सदा बना रहता है। नानक का कथन है कि गुरु के ज्ञान के द्वारा वह जीव-स्त्री प्रभु-पति के साथ अभिन्नता कर लेती है। हे भाई! सर्वव्यापक परमात्मा जिस जीव-स्त्री का पति बन जाता है, उसके हृदय-घर में बहुत आनन्द बना रहता है ॥ २ ॥ हे सखी! आ, गुरु के पास चलें, उसके द्वारा बतलाई सेवा में लगना चाहिए। हे सखी! मैं उस गुरु के लिए चक्की पीसूँ, उसके चरण धोऊँ। गुरु के द्वार पर जाकर अहंकार त्याग देना चाहिए, (क्योंकि) अहंकार त्यागकर मन का क्लेश मिट जाता है। गुरु का पल्ला पकड़ लेना चाहिए, उसका आदेश मान लेना चाहिए, जो कुछ वह करे उसे सुख जानकर स्वीकार करना चाहिए। हे सखी! स्वयं को उस गुरु के दासों की दासी बना ले, मन से उदासीनता त्यागकर, दोनों हाथ जोड़कर दिन-रात सचेत रहना चाहिए। नानक का कथन है कि जीव गुरु के शब्द द्वारा ही परमात्मा से अभिन्नता पैदा कर सकता है, सो, हे सखी! आ, गुरु के पास चलें (क्योंकि) उसकी बतलाई सेवा में लगना चाहिए ॥ ३ ॥ हे भाई! जिनके मस्तक पर भाग्य उदित हो जाते हैं, उन्हें गुरु परमात्मा की सेवा-भक्ति में लगाता है। जिन्हें गुरु की संगति मिलती है उनकी प्रत्येक आशा पूर्ण हो जाती है, सत्संगति के प्रभाव से परमात्मा के प्रेम में जुड़कर वे परमात्मा का स्मरण करने लगते हैं। माया के लिए दुबिधा, दुनियावी मोह, विकार, मेरा-तेरा —ये सब अवगुण वे त्याग देते हैं, उनके मन में शान्ति पैदा हो जाती है, आत्मिक स्थिरता आ जाती है, प्रेम पैदा हो जाता है, वे परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाते हैं और आत्मिक आनन्द महसूस करते हैं। नानक का कथन है कि मनुष्य गुरु के ज्ञान के प्रभाव से ही परमात्मा के साथ अभिन्नता पैदा कर सकता है, जिनके मस्तक पर भाग्य जागते हैं, गुरु उन्हें परमात्मा की सेवा-भक्ति में लगाता है ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ असा महला ५ सलोकु ॥ हरि हरि नामु जपंतिआ कछु न कहै जम कालु । नानक मनु तनु सुखी होइ अंते मिलै गोपालु ॥ १ ॥ छंत ॥ मिलउ संतन कै संगि मोहि उधारि लेहु । बिनउ करउ कर जोड़ि हरि हरि नामु देहु । हरि नामु मागउ चरण लागउ मानु तिआगउ तुम्ह दइआ । कतहूं न धावउ सरणि पावउ करुणामै प्रभ करि मइआ । समरथ अगथ अपार निरमल सुणहु सुआमी बिनउ एहु । कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु ॥ १ ॥ अपराधी मति हीनु निरगुनु

अनाथु नीचु। सठ कठोरु कुल हीनु बिआपत मोह कीचु। मल भरम करम अहं ममता मरणु चीति न आवए। बनिता बिनोद अनंद माइआ अगिआनता लपटावए। खिसै जोबनु बधै जरूआ दिन निहारे संगि मीचु। बिनवंति नानक आस तेरी सरणि साधू राखु नीचु ॥ २ ॥ भरमे जनम अनेक संकट महा जोन। लपटि रहिओ तिह संगि मीठे भोग सोन। भ्रमत भार अगनत आइओ बहुप्रदेसह धाइओ। अब ओट धारी प्रभ मुरारी सरब सुख हरि नाइओ। राखन हारे प्रभ पिआरे मुझ ते कछू न होआ होन। सूख सहज आनंद नानक क्रिपा तेरी तरै भउन ॥ ३ ॥ नाम धारीक उधारे भगतह संसा कउन। जेन केन परकारे हरि हरि जसु सुनहु स्रवन। सुनि स्रवन बानी पुरख गिआनी मनि निधाना पावहे। हरि रंगि राते प्रभ बिधाते राम के गुण गावहे। बसुध कागद बनराज कलमा लिखण कउ जे होइ पवन। बेअंत अंतु न जाइ पाइआ गही नानक चरण सरन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥

हे भाई! परमात्मा का नाम स्मरण करते हुए मृत्यु का भय स्पर्श नहीं कर सकता। हे नानक! (स्मरण द्वारा) मन सुखी रहता है, हृदय प्रसन्न हो जाता है, और, आखिरकार परमात्मा भी मिल जाता है ॥ १ ॥ ॥ छंत ॥ हे हरि! मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ, मुझे अपने नाम की देन दे, मुझे विकारों से बचाए रख, (ऐसी कृपा कर कि) मैं तेरे सन्तजनों की संगति में टिका रहूँ। हे हरि! मैं तुमसे तुम्हारा नाम माँगता हूँ, तुम कृपा करो तो मैं तुम्हारे चरणों में लगा रहूँ और अहंकार त्याग दूँ। हे दयास्वरूप प्रभु! कृपा कर, मैं तेरी शरण में रहूँ और किसी दूसरे के पास न दौड़ूँ। हे सर्वशक्तिमान, अनिर्वचनीय अनन्त एवं पवित्रस्वरूप स्वामी! मेरी यह प्रार्थना सुन, तेरा दास नानक तुझसे यह दान माँगता है कि मेरा जन्म-मरण का चक्र समाप्त कर दे ॥ १ ॥ हे प्रभु! मैं दोषी हूँ, बुद्धिहीन हूँ, गुणहीन हूँ, निराश्रित और दुराचारी हूँ। हे प्रभु! मैं विकारी हूँ, निर्दयी हूँ, निम्न जाति से हूँ और मोह का कीचड़ मुझ पर अपना दबाव डाल रहा है। हे प्रभु! दुबिधाग्रस्त कर्मों का मैल मुझे लगा हुआ है, मेरे भीतर अहंत्व और ममत्व है, इसलिए मृत्यु मुझे स्मरण नहीं आती। मैं स्त्री की केलि-क्रीडाओं में, माया की विलास-लीलाओं में (मग्न हूँ), मुझमें अज्ञानता चिपटी हुई है। हे प्रभु! मेरा यौवन बीत रहा है, बुढ़ापा बढ़ रहा है, मृत्यु मेरी ज़िन्दगी के दिन देख रही है।

तुम्हारा दास प्रार्थना करता है कि मुझे तेरी ही आशा है, मुझ नीच को गुरु की शरण में रख ॥ २ ॥ हे मुरारि प्रभु ! मैं अनेक जन्मों में भटका हूँ, मैंने कई योनियों के भारी दुख सहे हैं, धन और पदार्थों के भोग मुझे मीठे लग रहे हैं, मैं इन्हीं के साथ चिपटा रहता हूँ, अनेक पापों का भार उठाकर मैं भटकता आ रहा हूँ, अनेक विदेशों में भाग-दौड़ चुका हूँ, अब मैंने तुम्हारा सहारा लिया है, और, हे हरि ! तुम्हारे नाम में मुझे सारे सुख मिल गए हैं। हे रक्षा करने में समर्थ प्यारे प्रभु ! मुझसे अब तक कुछ नहीं हो सका, आगे भी कुछ नहीं हो सकेगा। नानक का कथन है कि जिस मनुष्य पर तेरी कृपा हो जाती है, उसे आत्मिक स्थिरता और सुख-आनन्द प्राप्त हो जाते हैं और वह संसार-समुद्र से पार उतर जाता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! परमात्मा ने तो वे मनुष्य भी बचा लिये, जिन्होंने केवल अपना नाम ही भक्त रखाया था; भक्तों को दुनिया का कोई भय नहीं रह सकता (इसलिए) जैसे भी संभव हो अपने कानों से परमात्मा की गुणस्तुति सुनते रहा करो। हे ज्ञानी मनुष्य ! अपने कानों से प्रभु की गुणस्तुति की वाणी सुन, (इस प्रकार तू) मन में नाम-कोष प्राप्त कर लेगा। (वे भाग्यशाली हैं जो) सृजनहार हरि-प्रभु के प्रेम-रंग में मस्त होकर उसके गुण गाते हैं। यदि सारी धरती काग़ज़ बन जाए, यदि समस्त वनस्पति क़लम बन जाए और यदि हवा लिखने के लिए लेखक बन जाए, तो भी अनन्त परमात्मा के गुणों का अन्त नहीं पाया जा सकता। नानक का कथन है कि मैंने परमात्मा के चरणों का आसरा लिया है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ पुरख पते भगवान ता की सरणि गही । निरभउ भए परान चिंता सगल लही । मात पिता सुत मीत सुरिजन इसट बंधप जाणिआ । गहि कंठि लाइआ गुरि मिलाइआ जसु बिमल संत वखाणिआ । बेअंत गुण अनेक महिमा कीमति कछू न जाइ कही । प्रभ एक अनिक अलख ठाकुर ओट नानक तिसु गही ॥ १ ॥ अम्रित बनु संसारु सहाई आपि भए । राम नामु उरहारु बिखु के दिवस गए । गतु भरम मोह बिकार बिनसे जोनि आवण सभ रहे । अगनि सागर भए सीतल साध अंचल गहि रहे । गोविंद गुपाल दइआल सम्रिथ बोलि साधू हरि जै जए । नानक नामु धिआइ पूरन साध संगि पाई परम गते ॥ २ ॥ जह देखउ तह संगि एको रवि रहिआ । घट घट वासी आपि विरलै किनै लहिआ । जलि थलि महीअलि पूरि पूरन कीट हसति समानिआ । आदि अंते मधि सोई गुरप्रसादी

जानिआ। ब्रहमु पसरिआ ब्रहम लीला गोविंद गुण निधि जनि कहिआ। सिमरि सुआमी अंतरजामी हरि एकु नानक रवि रहिआ॥ ३ ॥ दिनु रैणि सुहावड़ी आई सिमरत नामु हरे। चरण कमल संगि प्रीति कलमल पाप टरे। दूख भूख दारिद्र नाठे प्रगटु मगु दिखाइआ। मिलि साध संगे नाम रंगे मनि लोड़ीदा पाइआ। हरि देखि दरसनु इछ पुंनी कुल संबूहा सभि तरे। दिनसु रैणि अनंद अनदिनु सिमरंत नानक हरिहरे॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

जो भगवान सब जीवों का स्वामी है उस प्रभु का जिन संतों ने सहारा लिया है, उनके प्राण (दुनियावी) भयों से मुक्त हैं, उनकी हरेक प्रकार की चिन्ता दूर हो गई है, उन्होंने भगवान को ही अपना माँ-बाप, पुत्र, मित्र, सज्जन-प्यारे रिश्तेदार मान लिया है। गुरु ने उन्हें भगवान के चरणों में लगा दिया है, भगवान ने उनकी बाँह पकड़कर उन्हें गले लगा लिया है, वे संतजन प्रभु की गुणस्तुति उच्चरित करते रहते हैं। प्रभु-परमात्मा के गुणों का वारापार नहीं, उसकी महिमा का मूल्य आँका नहीं जा सकता। वह स्वामी एक है और अदृष्ट है, उसकी आड़ (सहारा) नानक ने ले ली है॥१॥ परमात्मा आप जिस मनुष्य का सहायक बनता है, उसके लिए संसार रूपी समुद्र आत्मिक जीवन का दाता अमृत-जल बन जाता है। जो मनुष्य परमात्मा के नाम को अपने हृदय का हार बना लेता है, उसके लिए (माया-मोह का) विष खानेवाले दिन बीत जाते हैं, उसकी दुबिधा समाप्त हो जाती है, उसके भीतर से मोह तथा विकार नष्ट हो जाते हैं, उसके जन्मों के चक्र समाप्त हो जाते हैं। जो मनुष्य गुरु का सहारा लिये रखता है, विकारों की अग्नि से आपूरित संसार-समुद्र उसके लिए शीतल हो जाता है। हे नानक! गुरु की शरण लेकर गोविंद, गोपाल समर्थ परमात्मा की जय-जयकार करता रहा कर। गुरु की संगति में रहकर पूर्णपरमात्मा का नाम स्मरण कर सर्वोत्कृष्ट आत्मिक अवस्था प्राप्त कर ली जाती है॥ २॥ हे भाई! मैं जिधर देखता हूँ उस ओर ही मुझे अपने साथ परमात्मा मौजूद दिखाई देता है, वह स्वयं ही प्रत्येक शरीर में विद्यमान है, लेकिन किसी विरले पुरुष ने यह बात समझी है। वह व्यापक प्रभु पानी, धरती, हवा और आकाश में सर्वत्र विद्यमान है, चींटी और हाथी में एक जैसा (विद्यमान है)। सृष्टि की सृजना के आदि में वह आप ही था, सृजना के अन्त में भी वह आप ही होगा और अब भी वह आप ही आप है; (लेकिन) गुरु की कृपा द्वारा ही इस बात की समझ आती है। हे भाई! सब ओर परमात्मा का ही प्रसार है,

उसकी रची हुई क्रीड़ा हो रही है, वह परमात्मा समस्त गुणों का मालिक है, किसी विरले सेवक ने ही उसे जपा है। हे नानक! अन्तर्यामी उस मालिक को स्मरण करता रह (क्योंकि) वह हरि आप ही सर्वत्र मौजूद है ।। ३ ।। हे भाई ! मनुष्य के लिए वही रात्रि और दिन शोभायमान हैं, जब वह प्रभु का नाम स्मरण करता है। परमात्मा के सुन्दर कमल-चरणों के साथ जिस मनुष्य की प्रीति हो जाती है, उसके समस्त पाप, विकार दूर हो जाते हैं। जिस मनुष्य को गुरु ने सन्मार्ग दिखा दिया, उसके समस्त दुख, उसकी भूख और ग़रीबी, सब दूर हो गए। जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहकर परमात्मा के नाम-प्रेम में लीन रहता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है। परमात्मा का दर्शन करके मनुष्य की सब कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं, उसकी समस्त वंशावलि भी पार उतर जाती है। हे नानक ! जो मनुष्य सदा हरि-नाम स्मरण करते हैं, उनकी प्रत्येक रात्रि एवं दिन प्रत्येक क्षण आनन्द में बीतता है ।। ४ ।। ६ ।। ९ ।।

आसा महला ५ छंत घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। सलोकु ।। सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग। नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ।। १ ।। छंत ।। भिंनी रैनड़ीऐ चामकनि तारे। जागहि संत जना मेरे राम पिआरे। राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो। चरण कमल धिआनु हिरदै प्रभ बिसरु नाही इकु खिनो। तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे। बिनवंति नानक सदा जागहि हरि दास संत पिआरे ।। १ ।। मेरी सेजड़ीऐ आडंबरु बणिआ। मन अनदु भइआ प्रभु आवत सुणिआ। प्रभ मिले सुआमी सुखह गामी चाव मंगल रस भरे। अंग संगि लागे दूख भागे प्राण मन तन सभि हरे। मन इछ पाई प्रभ धिआई संजोगु साहा सुभ गणिआ। बिनवंति नानक मिले स्रीधर सगल आनंद रसु बणिआ ।। २ ।। मिलि सखीआ पुछहि कहु कंत नीसाणी। रसि प्रेम भरी कछु बोलि न जाणी। गुण गूड़ गुपत अपार करते निगम अंतु न पावहे। भगति भाइ धिआइ सुआमी सदा हरि गुण गावहे। सगल गुण सुगिआन पूरन आपणे प्रभ भाणी। बिनवंति नानक रंगि राती प्रेम सहजि समाणी ।। ३ ।। सुख

सोहिलड़े हरि गावण लागे। साजन सरसिअड़े दुख दुसमन भागे। सुख सहज सरसे हरि नामि रहसे प्रभि आपि किरपा धारीआ। हरि चरण लागे सदा जागे मिले प्रभ बनवारीआ। सुभ दिवस आए सहजि पाए सगल निधि प्रभ पागे। बिनवंति नानक सरणि सुआमी सदा हरिजन तागे ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥

हे परमात्मा ! मेरे विचार शुद्ध हों, (मैं) सदा गोविंद-जाप करूँ, उत्तम साधु-संगति में रहूँ। कुछ ऐसी कृपा करो, हे देव ! कि घड़ी-भर के लिए भी मुझे प्रभु-नाम विस्मृत न हो ॥ १ ॥ छंत ॥ स्निग्ध रात्रि में सितारे चमकते हैं, अर्थात् जीवन में उत्तम गुण विद्यमान हैं। ऐसे में मेरे प्रभु के प्यारे जीव निरन्तर जागृतावस्था भोगते हैं और रात-दिन जगते हुए परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं। उनके हृदय में हरि-चरणों का ध्यान क्षण-भर भी विस्मृत नहीं होता। वे मन का अभिमान, मोह, विकार आदि बुराइयों का त्याग कर दुःखों को नाश करते हैं। गुरु नानक का विनम्र कथन है कि ऐसे जीव प्रभु के प्यारे सन्तजन होते हैं और वे ही सदा जागृतावस्था का भोग करते हैं। (अर्थात् हरि-नाम में लीन जीव नित्य जगते हैं और मनोविकारों तथा जगत के दुःखों से ऊँचे रहते हैं।) ॥ १ ॥ मेरी सेज पर (हरि-मिलन) की तैयारी है। प्रभु-पति के आने का समाचार पाकर मन प्रफुल्लित हो रहा है। परमात्मा-प्रियतम का सम्पर्क सुखदायी है और उसके मिलन का कल्याणप्रद उत्साह मेरे भीतर तरंगित है। उसके अंग लगने मात्र से सब दुःख नष्ट हो गए हैं और तन-मन-प्राण सब तृप्त हो गए हैं। संयोग और शकुन उत्तम है, इसलिए प्रभु-प्रिय के ध्यान में मेरी सब मनोकामनाएँ पूर्ण हुई हैं। गुरु नानक विनम्र कथन करते हैं कि ऐसे में हरि-मिलन होता है और जीव परम आनन्द को प्राप्त होता है ॥ २ ॥ (हरि से संयोग पा लेने पर) अन्य जीव (सखियाँ) सुहागिन आत्मा से प्रभु-पति के गुण पूछने लगती हैं किन्तु रस-पगी संयोगी आत्मा अवाक् है, कुछ कह ही नहीं पाती। परमात्मा-पति के गुण गूढ़, गम्भीर तथा अनन्त हैं, उनका रहस्य तो वेदों में भी प्राप्य नहीं। (जीव के लिए तो) भक्ति-भाव से रस-मग्न होकर सदा हरि-गुण-गान ही समीचीन है। आत्मा उत्तम ज्ञान से मंडित है, इसलिए परमात्मा-पति को स्वीकार होती है। गुरु नानक का विनम्र कथन है कि परमात्मा रूपी पति के प्यार में मदमत्त जीवात्मा सहज में ही विलीन हो जाती है अर्थात् सहजावस्था को प्राप्त होती है ॥ ३ ॥ जीवात्माएँ जब परमात्मा का यशोगान करने लगीं, तो सज्जन (उत्तम) जीव आनन्दित हुए; शत्रु और दुःख पहुँचानेवाले सब नष्ट हो गए। परमात्मा की कृपा से और हरिनाम के भजन से अविचल सुख-समृद्धियों की प्राप्ति हुई। जीवात्मा हरि-चरणों में शरण पा गई

और नित्य जागृति की अधिकारिणी हुई। शुभ दिनों के आगमन से यत्न के बिना ही परमात्मा की शरण मिल गई है, यही विश्व भर के सुखों का कोष है। गुरु नानक कहते हैं कि इसीलिए तो श्रेष्ठ जीवात्माएँ सदा प्रभु-शरण की ओर बढ़ती हैं ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥

॥ आसा महला ५ ॥ उठि वंञु वटाऊड़िआ तै किआ चिरु लाइआ। मुहलति पुंनड़ीआ कितु कूड़ि लोभाइआ। कूड़े लुभाइआ धोहु माइआ करहि पाप अमितिआ। तनु भसम ढेरी जमहि हेरी कालि बपुड़ै जितिआ। मालु जोबनु छोडि वैसी रहिओ पैनणु खाइआ। नानक कमाणा संगि जुलिआ नह जाइ किरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ फाथोहु मिरग जिवै पेखि रैणि चंद्राइणु। सूखहु दूख भए नित पाप कमाइणु। पापा कमाणे छडहि नाही लै चले घति गलाविआ। हरि चंदउरी देखि मूठा कूड़ु सेजा राविआ। लबि लोभि अहंकारि माता गरबि भइआ समाइणु। नानक म्रिग अगिआनि बिनसे नह मिटै आवणु जाइणु ॥ २ ॥ मिठै मखु मुआ किउ लए ओडारी। हसती गरति पइआ किउ तरीऐ तारी। तरणु दुहेला भइआ खिन महि खसमु चिति न आइओ। दूखा सजाई गणत नाही कीआ अपणा पाइओ। गुझा कमाणा प्रगटु होआ ईत उतहि खुआरी। नानक सतिगुर बाझु मूठा मनमुखो अहंकारी ॥ ३ ॥ हरि के दास जीवे लगि प्रभ की चरणी। कंठि लगाइ लीए तिसु ठाकुर सरणी। बल बुधि गिआनु धिआनु अपणा आपि नामु जपाइआ। साध संगति आपि होआ आपि जगतु तराइआ। राखि लीए रखणहारै सदा निरमल करणी। नानक नरकि न जाहि कबहूं हरि संत हरि की सरणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥

ऐ पथिक! उठो और अब चलो, यह विलम्ब क्यों कर रहे हो। जो मुहलत तुम्हें दी गई थी, वह क्यों तुमने मिथ्या व्यवहार में खो दी? मिथ्या व्यवहार में माया के धोखे में पड़े रहे और अगणित पाप करते रहे। अब तो शरीर भस्म की ढेरी हो जाने को है और काल को इस पर विजय पा लेना है। तुम्हें सब पहनना-खाना छोड़कर अब धन-दौलत और यौवन का त्याग कर यों ही उठ जाना होगा। गुरु नानक कहते हैं कि (हे जीव!) तुम्हें अपने कर्मों के साथ ही चलना है, क्योंकि कर्मों का हिसाब-किताब

मिटाया नहीं जा सकता ॥ १ ॥ (हे जीव !) तुम मायावी फंदे में ऐसे फँस गए हो, जैसे मृग शिकारी द्वारा की गई कृत्रिम रोशनी को चन्द्रिका समझकर (फँस जाता है) और परिणामतः उसके सब सुख दुःखों में बदल जाते हैं और वह पाप-रत होता है। जीव पाप-करनी नहीं छोड़ पाता और अन्ततः यमदूत गर्दन में हत्था दे ले जाते हैं। (यह जीव) मायावी स्थितियों को देखकर कपट-जाल में फँसा है, सेज पर मिथ्या स्त्री का भोग करता है अर्थात् मिथ्या रसों को यथार्थ आनन्द मानता है। लोभ, मोह, अहंकारादि में लीन है, उसी में संतुष्ट है। गुरु नानक कहते हैं कि यह जीव रूपी मृग इसी अज्ञान में नष्ट हो जाता है, इसका आवागमन चक्र समाप्त नहीं होता ॥ २ ॥ मक्खी मीठी वस्तु पर ही मर जाती है, उड़ती नहीं। हाथी गढ़े में गिर जाय तो तैरकर निकल नहीं सकता। (इसी प्रकार) भवसागर का तैरना बहुत कठिन है, विशेषकर जब तक हृदय में परमात्मा का स्मरण नहीं किया जाता। अपने ही कर्मों का फल होता है, दुःखों-दण्डों की क्या गिनती ! छिपकर किए गए पाप भी प्रकट हो जाते हैं और यहाँ-वहाँ (इस संसार में तथा परलोक में) ख्वारी होती है। गुरु नानक कहते हैं कि यह जीव सच्चे गुरु की प्राप्ति के बिना मन के हाथों धोखा खाता है और अभिमान में लीन रहता है ॥ ३ ॥ (दूसरी ओर) परमात्मा के सच्चे सेवक परमात्मा के चरणों में स्थान प्राप्त कर लेते हैं, स्वयं हरि उन्हें कंठ लगाते और अपनी शरण में आश्रय देते हैं। अपनी शक्ति, ज्ञान-ध्यान आदि से जीव को नाम-स्मरण का बल प्रदान करते हैं और कृपापूर्वक उसके कर्मों को भी सदैव निर्मल बनाए रखते हैं। गुरु नानक कहते हैं कि हरि-भक्त सदैव हरि-शरण में रहता है, कभी नरक नहीं जाता ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥

॥आसा महला ५॥ वंञु मेरे आलसा हरि पासि बेनंती। रावउ सहु आपनड़ा प्रभ संगि सोहंती। संगे सोहंती कंत सुआमी दिनसु रैणी रावीऐ। सासि सासि चितारि जीवा प्रभु पेखि हरि गुण गावीऐ। बिरहा लजाइआ दरसु पाइआ अमिउ द्रिसटि सिंचंती। बिनवंति नानकु मेरी इछ पुंनी मिले जिसु खोजंती ॥ १ ॥ नसि वंञहु किलविखहु करता घरि आइआ। दूतह दहनु भइआ गोविंदु प्रगटाइआ। प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन साध संगि वखाणिआ। आचरजु डीठा अमिउ वूठा गुरप्रसादी जाणिआ। मनि सांति आई वजी वधाई नह अंतु जाई पाइआ। बिनवंति नानक सुख सहजि मेला प्रभू आपि बणाइआ ॥२॥ नरक न डीठड़िआ सिमरत नाराइण। जै जै

धरमु करे दूत भए पलाइण । धरम धीरज सहज सुखीए साध संगति हरि भजे । करि अनुग्रहु राखि लीने मोह ममता सभ तजे । गहि कंठि लाए गुरि मिलाए गोविंद जपत अघाइण । बिनवंति नानक सिमरि सुआमी सगल आस पुजाइण ।। ३ ।। निधि सिधि चरण गहे ता केहा काड़ा । सभु किछु वसि जिसै सो प्रभू असाड़ा । गहि भुजा लीने नाम दीने करु धारि मसतकि राखिआ । संसार सागरु नह विआपै अमिउ हरि रसु चाखिआ । साध संगे नाम रंगे रणु जीति वडा अखाड़ा । बिनवंति नानक सरणि सुआमी बहुड़ि जमि न उपाड़ा ।। ४ ।। ३ ।। १२ ।।

हरि के चरणों में मेरी विनती है कि मेरा आलस्य दूर हो और मैं अपने प्रभु-पति के साथ क्रीड़ा-मग्न रहकर शोभायमान हो सकूँ । अपने स्वामी की संगति में रात-दिन मैं शोभती हूँ । श्वास-श्वास मैं उसका नाम स्मरण करती, उसके दर्शन चाहती और उसका गुणगान करती हूँ । (मेरी लगन देखकर) विरह दूर हट गया है (लज्जित हुआ है) और मुझे स्वामी के दर्शन हो गए हैं । अब उसकी (प्रेम-भरी) अमृतमयी दृष्टि मुझे सींचती है । गुरु नानक विनती करते हैं कि जिसे आज तक मेरी जीवात्मा खोजती रही, उसके मिलने से मेरी सब इच्छाएँ पूर्ण हो गई हैं ।। १ ।। हे पापो ! यहाँ से भाग जाओ, अब मेरे अन्तर्मन में स्वयं स्रष्टा निवसित है । मेरे अन्तर के पाँचों दूत (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) जल मरे हैं, अब स्वयं परमात्मा वहाँ प्रकट हुआ है । साधु-संगति में परमात्मा से प्यार उत्पन्न हुआ है और वह अब मेरे भीतर प्रत्यक्ष है । गुरु-कृपा द्वारा ही इस आश्चर्यजनक सत्य को मैंने पाया है, (मेरे लिए यह) अमृत-वर्षन के समान है । (प्रभु-प्राप्ति से अब) मन में अनन्त शान्ति और आनन्द है । गुरु नानक की विनती है कि प्रभु की दया से अब मुझे सहज सुख (परमानन्द) की प्राप्ति हो गई है ।। २ ।। हरिनाम-स्मरण से नरक-द्वार नहीं देखना पड़ता, स्वयं धर्मराज जय-जयकार करता एवं यमदूत भाग खड़े होते हैं । साधु-संगति में रहकर हरि-भजन से धर्म, धैर्य और परम सुख की उपलब्धि होती है । परमात्मा ने कृपा करके मोह-ममता से छुड़वाकर हमारी रक्षा की है । गुरु-मिलन से जीव परमात्मा के गले लगते हैं और प्रभु-भजन से तृप्ति लाभ करते हैं । गुरु नानक की विनती है कि संसार में समस्त आशाओं की पूर्ति का एक मात्र निमित्त परमात्मा ही है ।। ३ ।। जब निधि-सिद्धियों (के प्रदायक) चरण (अर्थात् परमात्मा के चरण) पकड़े तो अब कौन-सा दुःख रह सकता है ? जिसके वश में सब कुछ है (जो सर्वशक्तिमान् है), वही हमारा स्वामी है । उसी ने भुजा थामकर हमें अपनाया, नाम-दान

दिया और हमारे माथे पर हाथ धरकर सुरक्षा प्रदान की । उस परमात्मा के दर्शनामृत का रस-पान करने पर अब संसार-सागर का हमें कोई भय नहीं रहा । साधु-संगति एवं नाम-प्यार से हमने संसार के अखाड़े पर विजय पाई है । गुरु नानक की विनती है कि जो इस सत्य को पा लेता है, यमदूत उसे दोबारा नहीं उखाड़ सकते । (अर्थात् वह आवागमन से मुक्त हो जाता है) ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥

॥ आसा महला ५ ॥ दिनु राति कमाइअड़ो सो आइओ माथै । जिसु पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै । संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाईऐ । सुक्रितु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ । आठ पहर हरि नामु सिमरहु चलै तेरै साथे । भजु साध संगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥ १ ॥ वलवंच करि उदरु भरहि मूरख गावारा । सभु किछु दे रहिआ हरि देवणहारा । दातारु सदा दइआलु सुआमी काइ मनहु विसारीऐ । मिलु साध संगे भजु निसंगे कुल समूहा तारीऐ । सिध साधिक देव मुनि जन भगत नामु अधारा । बिनवंति नानक सदा भजीऐ प्रभु एकु करणैहारा ॥ २ ॥ खोटु न कीचई प्रभु परखणहारा । कूड़ु कपटु कमावदड़े जनमहि संसारा । संसारु सागरु तिन्ही तरिआ जिन्ही एकु धिआइआ । तजि कामु क्रोधु अनिंद निंदा प्रभ सरणाई आइआ । जलि थलि महीअलि रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा । बिनवंति नानक टेक जन की चरण कमल अधारा ॥ ३ ॥ पेखु हरि चंदउरड़ी असथिरु किछु नाही । माइआ रंग जेते से संगि न जाही । हरि संगि साथी सदा तेरै दिनसु रैणि समालीऐ । हरि एक बिनु कछु अवरु नाही भाउ दुतीआ जालीऐ । मीतु जोबनु मालु सरब सु प्रभु एकु करि मन माही । बिनवंति नानकु वडभागि पाईऐ सूखि सहजि समाही ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

हमारे दिन-रात के कर्म हमारे माथे पर भाग्य बनकर लिख दिए गए हैं । जिससे हम इन कर्मों को छिपाते थे, वही साथ होकर (परमात्मा अंग-संग में रहकर) उन्हें देख रहा है । सर्जनहार हरि सर्वव्यापक है, सबको देखता है, फिर भला क्यों पाप कमाया जाय ? यदि हम शुभ कर्म करें, हरि-नाम स्मरण करें तो कदापि नरक नहीं जा सकते । (अतः ऐ जीव !) आठों प्रहर हरि-नाम का स्मरण करो, यही तुम्हारे साथ चलेगा । गुरु नानक कहते हैं

कि तुम साधु-संगति में जिओ, उसी से दुष्कर्मों के पाप धुल सकते हैं ॥ १ ॥ ऐ मूर्ख गँवार ! तू छल-बल से पेट पालता है। (तुझे नहीं मालूम कि वह) दाता सबको सब कुछ देने में समर्थ है। (इसलिए) उस दयालु दातार स्वामी को मन से क्यों विस्मृत किया जाय ? सतिगुरु की संगति में निर्भय होकर उस परम पुरुष का भजन करो, इससे समूचा कुल मोक्ष को प्राप्त होता है। सिद्धों, साधकों, मुनियों और भक्तों, सबको प्रभु-नाम का ही आधार है। (इसलिए) गुरु नानक का कथन है कि हमें उस पूर्ण कर्ता-पुरुष को सदैव स्मरण करना चाहिए ॥ २ ॥ छल न करो, परमात्मा जाँच कर लेने में समर्थ है। (जो जीव) छल, कपट और मिथ्या व्यवहार करते हैं, वे बार-बार आवागमन का शिकार होते हैं। जो एक प्रभु का ही ध्यान करता है, वह संसार-सागर से पार हो जाता है। वह काम, क्रोध तथा अनिंद्य लोगों की निंदा का त्याग कर परमात्मा की शरण में आता है। परमात्मा (स्वामी) उच्च, अगम्य और अपार है, फिर भी जल, थल और आकाश में सर्वव्यापक है। गुरु नानक कहते हैं कि जीवात्मा को एक मात्र उसी के चरण-कमलों का अवलम्ब है ॥ ३ ॥ माया के रंगों को मिथ्या नगरी के समान जानो, इसकी कोई वस्तु स्थायी नहीं (सब नश्वर है), कोई रंग स्थायी साथ नहीं देता। केवल हरि-नाम ही सदा साथ रहने वाली चीज़ है, इसे रात-दिन अपनाओ। एक प्रभु के अतिरिक्त और कुछ नहीं, द्वैत-भाव का त्याग करो। परमात्मा को ही एक मात्र मित्र मानो; धन, यौवन का मान त्याग दो। गुरु नानक कहते हैं कि सौभाग्य से हरि मिलता है, वही सहज परम सुख का उद्गम स्थल है ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

आसा महला ५ छंत घरु ८

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कमला भ्रम भीति कमला भ्रम भीति हे तीखण मद बिपरीति हे अवध अकारथ जात। गहबर बन घोर गहबर बन घोर हे ग्रिह मूसत मन चोर हे दिनकरो अनदिनु खात। दिन खात जात बिहात प्रभ बिनु मिलहु प्रभ करुणापते। जनम मरण अनेक बीते प्रिअ संग बिनु कछु नह गते। कुल रूप धूप गिआन हीनी तुझ बिना मोहि कवन मात। कर जोड़ि नानकु सरणि आइओ प्रिअ नाथ नरहर करहु गात॥१॥ मीना जलहीन मीना जलहीन हे ओहु बिछुरत मन तन खीन हे कत जीवनु प्रिअ बिनु होत। सनमुख सहिबान सनमुख सहिबान

हे स्रिग अरपे मन तन प्रान हे ओहु बेधिओ सहज सरोत। प्रिअ प्रीति लागी मिलु बैरागी खिनु रहनु ध्रिगु तनु तिसु बिना। पलका न लागै प्रिअ प्रेम पागै चितवंति अनदिनु प्रभ मना। स्रीरंग राते नाम माते भै भरम दुतीआ सगल खोत। करि मइआ दइआ दइआल पूरन हरि प्रेम नानक मगन होत ॥ २ ॥ अलीअल गुंजात अलीअल गुंजात हे मकरंद रस बासन मात हे प्रीति कमल बंधावत आप। चात्रिक चित पिआस चात्रिक चित पिआस हे घन बूंद बचित्रि मनि आस हे अल पीवत बिनसत ताप। तापा बिनासन दूख नासन मिलु प्रेमु मनि तनि अति घना। सुंदरु चतुरु सुजान सुआमी कवन रसना गुण भना। गहि भुजा लेवहु नामु देवहु द्रिसटि धारत मिटत पाप। नानकु जंपै पतित पावन हरि दरसु पेखत नह संताप ॥ ३ ॥ चितवउ चित नाथ चितवउ चित नाथ हे रखि लेवहु सरणि अनाथ हे मिलु चाउ चाईले प्रान। सुंदर तन धिआन सुंदर तन धिआन हे मनु लुबध गोपाल गिआन हे जाचिक जन राखत मान। प्रभ मान पूरन दुख बिदीरन सगल इछ पुजंतीआ। हरि कंठि लागे दिन सभागे मिलि नाह सेज सोहंतीआ। प्रभ द्रिसटि धारी मिले मुरारी सगल कलमल भए हान। बिनवंति नानक मेरी आस पूरन मिले स्रीधर गुण निधान ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥

कमला (माया) भ्रम की दीवार है; यह भ्रम की दीवार, तीव्र और विपरीत मदांधता है, इससे आयु (जन्म) व्यर्थ जाती है। यह माया घना और भयानक बन है, यह गहन बन है, मन के पाँचों चोर घर को लूट रहे हैं और रात-दिन सूर्य हमें खाए जा रहा है, (अर्थात् आयु के दिन बीतते जा रहे हैं)। दिन बीतते जा रहे हैं, दीन-दयाल प्रभु को बिना मिले आयु व्यर्थ हो रही है। मैं कुलीन उच्चता, सुन्दरता और शोभा से विहीन हूँ, यह तुम्हारा विरद है कि तुम (हे प्रभु!) मुझे अपना रहे हो। हे मालिक! मैं हाथ जोड़कर तुम्हारी शरण में आया हूँ, (गुरु नानक कहते हैं), मुझे गति प्रदान करो ॥ १ ॥ मछली जल के बिना तन-मन के क्षय से मृत्यु को प्राप्त होती है, उस प्रिय पति परमात्मा के बिना मैं क्योंकर जी सकती हूँ? (जीवात्मा अनुभव करती है कि परमात्मा के बिना उसका जीना दूभर है)। मृग सामने से आते तीरों का शिकार होता और तन-मन-प्राण न्यौछावर कर देता है, क्योंकि वह नाद-संगीत का दीवाना होता है। जिससे प्रीति लगती है, उसके मिलन के बिना क्षण भर के लिए भी शरीर का

जीना जघन्य (अपराध) है। (उसके बिना) प्रियतम के प्रेम में पगकर पलकें नहीं लगतीं (नींद नहीं आती), सदा प्रेम-मग्न रात-दिन उसी के ध्यान में लीन रहती हैं। (जो जीव) कर्तार के नाम-मद में मस्त रहते हैं, उनका भय, भ्रम तथा द्वैत-भाव, सब नष्ट हो जाता है। गुरु नानक कहते हैं कि हे दीन-दयाल प्रभु ! कृपा करो और अपना प्रेम-दान देकर (हमें) तल्लीनता प्रदान करो ॥ २ ॥ भँवरे गुंजार करते हैं, फूलों की गंध और रस पर मग्न होते हैं और प्रीति के कारण कमल-पुष्प में अपने आप को बँधवा लेते हैं। पपीहा के मन में प्यास होती है, उसके मन में बादल की विचित्र बूँदों के लिए चाह होती है, उसे ग्रहण करते ही उसका अतृप्त ताप शान्त हो जाता है। (अतः जीव को भी) ताप का नाश करने तथा दुःखों को दूर करने के लिए अपने मन में उसके (परमात्मा के) लिए बहुत अधिक प्रेम उपजाना चाहिए। मेरा स्वामी सुन्दर, चतुर और सुयोग्य है, मैं किस मुँह से उसका गुणगान करूँ (अर्थात् उसके गुणगान के लिए मेरी जिह्वा असमर्थ है)। ऐ मेरे परमात्मा ! मुझे बाजू से थामकर नाम की भिक्षा दो और मेरे पापों को धो डालो। गुरु नानक कहते हैं कि उस पतितपावन हरि का नाम जपने तथा दर्शन करने से सब सन्ताप मिट जाते हैं ॥ ३ ॥ हे स्वामी ! मुझ पर कृपा-दृष्टि करो, मुझ अनाथ को शरण दो, दर्शन देकर मेरे चाव-भरे प्राणों की रक्षा करो। तुम्हारे सुन्दर शरीर में मेरा ध्यान लगा है, मेरा मन प्रभु-ज्ञान की लालसा करता है, तुम अपने चाहनेवालों की मान-रक्षा करते हो (अर्थात् अपने सेवकों के रक्षक हो)। हे प्रभु ! तुमने मेरा मान रखा है, दुःखों को दूर किया है और मेरी समस्त इच्छाओं को पूर्ण किया है। सौभाग्य के दिन आए हैं, पति-प्रभु के कंठ लगने से सेज शोभने लगी है। करुणाकर प्रभु की कृपा-दृष्टि से सकल पाप-विनाशक हरि मुझे मिले हैं। (गुरु नानक कहते हैं) मेरी सब आशाएँ सम्पन्न हुई हैं, मुझे गुणागार परमात्मा स्वयं प्राप्त हो गया है ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे असराजै की धुनी ॥ ॥ सलोकु म० १ ॥ बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सदवार। जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥ १ ॥ ॥ म० २ ॥ जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार। एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥ २ ॥ म० १ ॥ नानक गुरू न

चेतनी मनि आपणै सुचेत। छुटे तिल बूआड़ जिउ सुञे अंदरि खेत। खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह। फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ। दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ। दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ। तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ। करि आसणु डिठो चाउ ॥ १ ॥

[वार पंजाबी कविता में लिखने की एक शैली का नाम है, प्रायः ओजगुण-प्रधान रचना इस शैली में लिखी जाती है। गुरुवाणी में आध्यात्मिक ओज की रचनाओं को वार कहा गया है, इसके छंद को 'पौड़ी' कहते हैं। सम्पादक ने बीच-बीच में म०१ के ही संदर्भ से मिलते-जुलते मुक्तक श्लोकों को पौड़ियों के साथ रख दिया है। 'टुंडे अस राजे की धुनी' से अभिप्राय है कि असिराज नामक टुंडे राजे के युद्ध-वर्णन को जिस राग और ध्वनि में गाया जाता है, उसी में इस वार को भी गाया जाय।]

मैं दिन भर में अपने गुरु पर सैकड़ों बार बलिहार जाती हूँ, (आत्मा गुरु की स्तुति एवं श्रद्धा में संलग्न गुरु का महत्व बता रही है) क्योंकि वही मनुष्य को देव बना देने में समर्थ है और ऐसा करने में उसे कोई विलम्ब नहीं लगता ॥ १ ॥ महला २ ॥ यदि एक ही समय सौ चन्द्रमा उदित हों, हज़ारों सूर्यों का आलोक हो जाय, तो भी इहलोक के इस अज्ञानांधकार में गुरु के बिना प्रकाश की कोई सम्भावना नहीं ॥ २ ॥ ॥ म० १ ॥ (गुरु नानक कहते हैं) जो जीव गुरु की शरण नहीं लेते और अपने अन्तर्मन में ही समूची सूझ का दावा करते हैं, वे उन मिथ्या सारहीन तिलों की तरह होते हैं, जिन्हें खेत में यों ही छोड़ दिया जाता है (अर्थात् जिन्हें सारहीन मानकर एकत्रित नहीं किया जाता)। खेत में छूट जाने पर, गुरु जी कहते हैं, कोई उनका मालिक बने (उनके सैकड़ों मालिक बनते हैं), किन्तु फले-फूले होने पर भी उन बेचारों के भीतर कोई सार नहीं होता (उनके शरीर में मिट्टी ही होती है)। (तात्पर्य यह है कि जो जीव गुरु-शरण में नहीं आता, वह बाहरी तौर पर कितना फले-फूले, उसके भीतर ज्ञानालोक नहीं होता) ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ परमात्मा स्वयम्भू है, उसने स्वयं अपने को रचा है और सांसारिक संदर्भ में उसने स्वयं ही अपना नाम-रूप धारण किया है। (अपने अतिरिक्त) उसने दूसरे यह प्रकृति रची है, जिसमें स्वयं व्याप्त होकर वह अपना प्रसार देखता और प्रफुल्लित होता है। हे प्रभु ! तुम स्वयं बनाने और देनेवाले हो, प्रसन्न हो-होकर (सबको) देते हो और (प्रकृति का) निरन्तर प्रसार करते हो। (अर्थात् तुम्हीं ख़ुश होकर जीवन देते और पोषण करते हो— ब्रह्मा-विष्णु तुम ही हो)। तुम

सब कुछ जानते (सर्वज्ञाता) हो और तुम्हारी आज्ञा से जीवन ले लिया जाता है (मृत्यु होती है अर्थात् शिव भी तुम ही हो)। प्रकृति का यह (समूचा खेल-तमाशा), उसी में बैठकर तुम प्रसन्नता-पूर्वक देख रहे हो ॥१॥

॥ सलोकु म० १ ॥ सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड । सचे तेरे लोअ सचे आकार । सचे तेरे करणे सरब बीचार । सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु । सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु । सचा तेरा करमु सचा नीसाणु । सचे तुधु आखहि लख करोड़ि । सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि । सची तेरी सिफति सची सालाह । सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह । नानक सचु धिआइनि सचु । जो मरि जंमै सु कचु निकचु ॥ १ ॥ म० १ ॥ वडी वडिआई जा वडा नाउ । वडी वडिआई जा सचु निआउ । वडी वडिआई जा निहचल थाउ । वडी वडिआई जाणै आलाउ । वडी वडिआई बुझै सभि भाउ । वडी वडिआई जा पुछि न दाति । वडी वडिआई जा आपे आपि । नानक कार न कथनी जाइ । कीता करणा सरब रजाइ ॥ २ ॥ महला २ ॥ इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु । इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु । इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु । एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि । नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ । ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ । थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ । तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ । लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ २ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ (हे मालिक! तुम्हारी रचना सत्य है) तुम्हारी रचना के समस्त खंड-ब्रह्मांड सत्य हैं, चौदहों लोक सच्चे हैं, प्रकृति के समूचे आकार सच्चे हैं। तुम्हारे सब कार्य विचारपूर्ण (औचित्ययुक्त) और सच्चे हैं। तुम्हारा प्रशासन (समूची रचना में चलता तुम्हारा हुकुम) और तुम्हारा न्याय (तुम्हारी अदालत, जहाँ कर्मों का न्याय होता है), सब सही हैं। तुम जो भी आदेश देते हो, जैसा भी आदेश-पत्र जारी करते हो, वह ठीक ही होता है। तुम्हारी कृपा और अनुमति की छाप, सब सत्य हैं। लाखों-करोड़ों जीव तुम्हारी सच्चाई कहते हैं। तुम्हारा बल, तुम्हारी

शक्तियाँ सच हैं, तुम्हारा विरद सत्य है, तुम्हारी स्तुति सच्ची है। हे सच्चे पातिशाह, तुम्हारी रची समूची प्रकृति सत्य है। गुरु नानक कहते हैं कि जो इस यथार्थ को पहचानते हैं, वे भी सत्य हैं; किन्तु जो इस सत्य को नहीं पहचानते और आवागमन में भटकते हैं, वे कच्चों से भी कच्चे (मिथ्या) हैं ॥ १ ॥ म० १ ॥ परमात्मा की महानता उसके गुणों के बड़े प्रकाश में है, उसके सच्चे-सही न्याय में है। उसकी महानता उसकी स्थिरता-अविचलता में है, उसकी महानता हमारी प्रत्येक प्रार्थना को समझ लेने में है; हमारी इच्छाओं को जान लेने में ही उसका बड़प्पन है। उसकी महानता यह है कि वह किसी से पूछकर (परामर्श कर) नहीं देता; वह जो करता है, अपने आप करता है, यही इसकी महानता है। गुरु नानक कहते हैं कि उसके कार्यों की व्याख्या सम्भव नहीं, जो कुछ भी यहाँ होता है, हुआ है या हो रहा है, वह सब उसी के आदेश से है ॥ २ ॥ महला २ ॥ यह संसार सच्चे परमात्मा का घर है, वह परम सत्य स्वयं इसमें निवास करता है। वही कुछ लोगों को (उत्तम जीवों को— कर्मानुसार) अपने हुकुम में तल्लीन रखता है और कुछ का विनाश कर देता है। कुछ जीवों पर दया करके (अपनी इच्छानुसार) संसार के आवागमन से निकाल लेता है और कुछ को माया के चक्कर में डाले रखता है। ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि वह किसे (किस जीव को) मुक्त करेगा। हाँ, गुरु नानक कहते हैं कि प्रभु-मुख सतिगुरु को हम जान सकते हैं, जिसे परमात्मा ने स्वयं अपना प्रकाश दिया होता है ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ गुरु नानक कहते हैं कि परमात्मा ने जीव उत्पन्न करके उनके कर्मों का हिसाब-किताब धर्मराज के हवाले कर दिया है। उस धर्मराज के सम्मुख केवल सत्यानुसार ही फैसला होता है और दुर्जनों को चुनकर अलग कर दिया जाता है। मिथ्या कर्म कमाने वालों को कोई ठिकाना नहीं मिलता, उनका मुँह काला करके दोज़ख (नरक) में भेज दिया जाता है। जो (जीव) तुम्हारे नाम-स्मरण में लीन होते हैं, वे विजयी होते हैं, किन्तु जो ठग-विद्या के दुष्कर्म करते हैं, वे हारते हैं। उनका लेखा-जोखा धर्मराज को देखना होता है ॥ २ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ विसमादु नाद विसमादु वेद। विसमादु जीअ विसमादु भेद। विसमादु रूप विसमादु रंग। विसमादु नागे फिरहि जंत। विसमादु पउणु विसमादु पाणी। विसमादु अगनी खेडहि विडाणी। विसमादु धरती विसमादु खाणी। विसमादु सादि लगहि पराणी। विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु। विसमादु भुख विसमादु भोगु। विसमादु सिफति विसमादु सालाह। विसमादु उझड़ विसमादु राह।

विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि। विसमादु देखै हाजरा हजूरि। वेखि विडाणु रहिआ विसमादु। नानक बुझणु पूरै भागि ॥ १॥ ॥ म० १ ॥ कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु। कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु। कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु। कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु। कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान। कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु। कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु। सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु। नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु॥२॥ पउड़ी॥ आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ। वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ। अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ। थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ। मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥ ३॥

॥ सलोक महला १ ॥ विस्मय (हैरानी) है कि यहाँ कितने स्वर (बोलियाँ) और कितने धर्मग्रंथ हैं। ये जीव और इनमें के भेद भी विस्मयजनक हैं। संसार के रूप-रंग, अव्यवस्थित घूमते जीव-जन्तु, सब आश्चर्य का विषय है। जल, वायु हैरानी की चीज़ें हैं (कहाँ से आता है, कैसे बना है आदि) और ये विभिन्न प्रकार की अग्नियाँ विचित्र खेल खेलती विस्मय पैदा करती हैं। धरती का अस्तित्व तथा उसमें से उपजे चेतन जीव (उद्भिज), सब आश्चर्य बढ़ानेवाले हैं। प्राणियों की सांसारिक आस्वादों में लीनता भी विचित्र है। मिलन-वियोग के नियम (जीव कभी संसार से विरक्त होकर परमात्मा से मिलना चाहता है, कभी विषय-विकारों में पड़कर उससे दूर हो जाता है) भी आश्चर्यजनक हैं। दुनिया की भूख और भोग-विलास विचित्र है। परमात्मा के विरद और स्तुति, मनुष्य की पथ-भ्रष्टता और सन्मार्ग-आचरण, सब विस्मयबोधी हैं। कोई परमात्मा को निकट मानता है, कोई दूर समझता है, कोई उसे हर समय अंग-संग (हाज़िर-हुज़ूर) जानता है, सभी स्थितियाँ अपनी-अपनी जगह विचित्र हैं। प्रभु का यह समूचा खेल देखकर सामान्यत: मनुष्य (जीव) आश्चर्य में पड़ा है —(हे नानक) कोई भाग्यशाली जीव ही इस विस्मय की गाँठ को खोलता और यथार्थ का ज्ञान प्राप्त करता है ॥ १ ॥ म० १ ॥ जो कुछ भी दृश्यमान है या श्रव्य है, वह क़ुदरत (प्रभु-इच्छा) के अनुसार ही है; भय-भाव तथा सुख का मूल भी क़ुदरत के अनुसार ही है। क़ुदरत

ने ही सृष्टि की समूची रचना की है, आकाशों-पातालों में सब जगह क़ुदरत व्याप्त है। वेद, पुराण और शरीयत आदि धार्मिक पुस्तकें क़ुदरत के नियमानुसार ही उपजती हैं और (विश्व के) ज्ञान का आधार बनती हैं। खाना, पीना, पहनना या संसार की वस्तुओं से लगाव रखने का क़ुदरत ही कारण है। संसार के जीवों में उनके रंगों, जातियों, प्रकारों में क़ुदरत ही कार्यान्वित है। लोगों की अच्छाइयाँ-बुराइयाँ सब क़ुदरत पर आश्रित हैं तथा मान-अभिमान का भाव भी क़ुदरत के अनुसार ही होता है। पवन, पानी, अग्नि, धरती आदि तत्वों में क़ुदरत ही छाई है। हे परमात्मा! यह सब तुम्हारी क़ुदरत है, तुम मालिक हो, रचयिता हो और अपने पावन नाम के कारण पुनीत हो। गुरु नानक कहते हैं कि वह स्वामी नियमों में विचरता है और सब कुछ सोच-समझकर करता है॥ २॥ पउड़ी॥ जीव पदार्थवादी जीवन जीता और भोग-विलास में रमता है। अन्ततः जब आत्मा शरीर से अलग हो जाती है, तो वह मिट्टी की ढेरी बना रह जाता है। (मनुष्य) दुनिया के चक्करों में बड़ा बना फिरता है, किन्तु अन्तकाल (यम) गले में रस्सी डालकर खींच ले जाता है। आगे (धर्मराज की उपस्थिति में) मनुष्य के कर्मों का लेखा पढ़कर सुनाया जाता है। ग़लत कर्मों पर (उसे) दण्ड मिलता है, (सिर छिपाने की) जगह नहीं मिलती— उसके रुदन को अब कौन सुनता है। अज्ञानांध जीव का जन्म यों ही व्यर्थ जाता है॥ ३॥

॥ सलोक म० १ ॥ भै विचि पवणु वहै सद वाउ। भै विचि चलहि लख दरीआउ। भै विचि अगनि कढै वेगारि। भै विचि धरती दबी भारि। भै विचि इंदु फिरै सिर भारि। भै विचि राजा धरम दुआरु। भै विचि सूरजु भै विचि चंदु। कोह करोड़ी चलत न अंतु। भै विचि सिध बुध सुर नाथ। भै विचि आडाणे आकास। भै विचि जोध महाबल सूर। भै विचि आवहि जावहि पूर। सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु। नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु॥१॥ म० १॥ नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल। केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार। केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल। बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार। गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल। लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार। जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार। गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु। करमि

मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ । एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ । सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ । सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ । जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥ ४ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ (ऊपर के श्लोक में मनुष्य को पदार्थवादी होने से रोकने का प्रयास है । आगामी दोनों श्लोकों में गुरुजी उसे पार्थिव मार्गों की फिसलन का भय दिखाते हैं) । सैकड़ों बल वाला पवन परमात्मा के भय में बहता है; विश्व में प्रवाहमान हज़ारों-लाखों नदियाँ उसके भय में चलती हैं । अग्नि भी परमात्मा के भय में आदेशानुसार कार्य करती है । धरती उसी भय में सबका भार वहन करती है । (आकाश में) इन्द्र अपने सिर पर बोझ लिये (बादल बना) भय के कारण ही सदा चलता रहता है । स्वयं धर्मराज की न्यायपालिका भय में बँधी कार्य करती है । सूर्य-चन्द्र भय में कार्य करते हैं, करोड़ों मील चलते हैं फिर भी इनकी यात्रा का कोई अन्त नहीं । ऋषि-मुनि, योगी और स्वयं देवता भी भय-पाश में बँधे हुए हैं । गगनों में आकाश भय के ही कारण तनता है । बड़े-बड़े योद्धा, महाबली और सूरमा, सब भयाक्रांत हैं। आवागमन में पड़े असंख्य जीव नित्य भय में बँधे जन्मते-मरते हैं। परमात्मा के भय ने सबका भाग्य निश्चय कर रखा है । गुरु नानक कहते हैं कि केवल वह परम सत्य प्रभु ही एक मात्र अभय है ॥ १ ॥ म० १ ॥ गुरु नानक कहते हैं कि एक मात्र परमात्मा ही निर्भय है, बाक़ी अनेक जीव तो तुच्छ हैं (धूलि के समान हैं) । कृष्ण की अनेक कथाएँ प्रचलित हैं, वेदों पर कितनी ही व्याख्याएँ हुई हैं । (उसके दरबार के भिखारी) कितने ही नाचते और बार-बार ताल पर झूमते हैं; सौदेबाज़ लोग बाज़ार में आकर (प्रकट में) नाटक करते हैं । राजे-रानियाँ (उसका यश) गाते हैं और स्तुति-रूप कितना उलट-पुलट बोलते हैं । उन्होंने लाखों रुपये की कर्णफूल और मालाएँ पहनी होती हैं, किन्तु (नानक कहते हैं) जिस शरीर पर उन्होंने वे आभूषण पहने होते हैं, उसे राख हो जाना है । सच्चा ज्ञान बातों से नहीं मिलता, सत्य की व्याख्या बड़ी कठिन है । उक्त सत्य की प्राप्ति परमात्मा के अनुग्रह से ही होती है, इस दिशा में चतुराई और छल-कपट व्यर्थ है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ यदि वह दयामय कृपा करे तो उसकी कृपा से सतिगुरु प्राप्त होता है । यह जीव अनेक जन्मों में भ्रमता रहा, अब प्रभु-कृपा के कारण सतिगुरु की शरण में आया है और शब्द का रहस्य समझने लगा है । सब लोग यह जान लो कि सतिगुरु के बराबर कोई

दूसरी दातृ-शक्ति नहीं। जो जीव अहम् का त्याग करके सतिगुरु की शरण लेता है, वही परम सत्य को पाता है। (सतिगुरु) उसे परम सत्य का ज्ञान प्रदान करता है ॥ ४ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल। गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार। सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल। नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जम कालु ॥ १ ॥ म० १ ॥ वाइनि चेले नचनि गुर। पैर हलाइनि फेरन्हि सिर। उडि उडि रावा झाटै पाइ। वेखै लोकु हसै घरि जाइ। रोटीआ कारणि पूरहि ताल। आपु पछाड़हि धरती नालि। गावनि गोपीआ गावनि कान्ह। गावनि सीता राजे राम। निरभउ निरंकारु सचु नामु। जाका कीआ सगल जहानु। सेवक सेवहि करमि चड़ाउ। भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ। सिखी सिखिआ गुर वीचारि। नदरी करमि लघाए पारि। कोलू चरखा चकी चकु। थल वारोले बहुतु अनंतु। लाटू माधाणीआ अनगाह। पंखी भउदीआ लैनि न साह। सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत। नानक भउदिआ गणत न अंत। बंधन बंधि भवाए सोइ। पइऐ किरति नचै सभु कोइ। नचि नचि हसहि चलहि से रोइ। उडि न जाही सिध न होहि। नचणु कुदणु मन का चाउ। नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ। जीउ पिंडु सभु तिसदा दे खाजै आखि गवाईऐ। जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ। जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ। को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥ ५ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ (अवतार किसी अदृश्य शक्ति के साकार रूप को कहते हैं, समय अर्थात् काल-चक्र भी ऐसा ही अदृश्य तत्व है, इसका रूपक प्रस्तुत है)। रास-विलास में कालांश रूप में घड़ियों को गोपियाँ मानो, प्रहरों को कृष्णकन्हैया जानो, चाँद-सूर्य (अभिनेताओं, रास करनेवालों) को पवन, पानी, अग्नि के स्वाँग धारण करनेवाले नट मानो। समूची सृष्टि नाटक करने का सामान है, संसार के कार्य-कलाप मानो पात्रों का व्यवहार हैं। गुरु नानक कहते हैं कि ज्ञान के अभाव में लोग धोखा खा जाते हैं (नाटक को यथार्थ समझने लगते हैं) और अन्ततः काल के ग्रास बनते

हैं ।। १ ।। म० १ ।। (समाज की विचित्र स्थिति है) चेलों की ताल पर गुरु नाचते हैं (अर्थात् गुरु को शिष्यों के कथनानुसार आचरण करना पड़ रहा है) और पाँव हिलाते तथा सिर-चालन करते हैं। धरती की धूलि उड़-उड़कर केशों में पड़ती है। लोग देखते हैं और घर जाकर मज़ाक़ उड़ाते हैं। पेट भरने के लिए वे हाथ-पैर पटकते (नाचते) हैं, अपने को धरती पर गिराते और सिर-चालन करते हैं। कान्ह और गोपियाँ (दुनिया के मंच पर नाटक करनेवाले जीव सब) गाते हैं, राम और सीता गाते हैं। वे निर्भय परम सत्य परमात्मा की स्तुति करते हैं; परमात्मा, जिसने समूचे विश्व को बनाया है। सेवक (उसकी) पूजा करते हैं और सत्कर्मों की पूजा-सामग्री भेंट करते हैं। जिनके मन में प्रभु-मिलन का चाव होता है, उनका समय मधुर होता है (उनका जन्म स्निग्ध हो जाता है)। सेवकों को गुरु-विचारधारा की यह शिक्षा है कि वह परमात्मा कृपा-दृष्टि मात्र से मोक्ष प्रदान करता है। सांसारिक जीवन चर्खा, चक्की, चक्र, कोल्हू की तरह नियम से घूमता है, रेत के (मुसीबतों के) तूफ़ान इसमें उठते हैं। अन्नगहाई करनेवाले यन्त्रों के समान जीव, पक्षी की तरह निराश्रित चक्कर काटा करता है। जैसे तोते को चर्खी पर चढ़ा कर घुमा दिया जाय तो वह घूमते हुए भी अपनी हानि नहीं देखता (चोट न लगने की बात कहता है किन्तु चर्खी को छोड़ता नहीं और अन्ततः शिकारी द्वारा पकड़ लिया जाता है, यही दशा मनुष्य की है)। धर्मराज बन्धन में बाँधकर उन्हें चलाता है, किन्तु परम सत्य के सम्मुख सत्कर्म ही पुरस्कृत होता है। मनुष्य (पदार्थ-बन्धनों में) बड़ा प्रसन्न होता है, किन्तु मृत्यु-समय में उसे रोना पड़ता है। वे उड़कर भी इस अन्त से बच नहीं सकते, न ही कोई करामात सहायक होती है। गुरु नानक कहते हैं कि यह नाचना-कूदना तो मात्र मनोरंजन है, सच्चे जीवों के भीतर परमात्मा का भय होता है, इसी से उनमें परमात्मा के प्रति प्रेम जगता है और वे प्रेमी जीव कहलाते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु ! तुम निरंकार हो (मायातीत हो), तुम्हारा नाम जपनेवाला जीव कभी नरकगामी नहीं होता। हमारा तन, मन, प्राण सब तुम्हारी देन है, हमें सब बाँटकर भोगना चाहिए, कहने से पुण्य की हानि होती है (अर्थात् किसी को देने का दावा मिथ्या है, हमें नहीं करना चाहिए)। यदि अपना भला अपेक्षित है, तो पुण्य करके भी विनम्र रहना चाहिए। (बुढ़ापे से बचा नहीं जा सकता), यदि बुढ़ापे के चिह्न हटा भी दिए जायँ, तो वह किसी अन्य रूप से आ जायेगा। (सत्य यही है) कि आयु पूर्ण होने पर कोई बचा नहीं रह सकता ।। ५ ।।

।। सलोक म० १ ।। मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु। बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ

दीदारु । हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु । तीरथि नावहि अरचा पूजा अगरवासु बहकारु । जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु । सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु । सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि । देदे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु । चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार । इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार । जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार । ओइ जि आखहि सु तूं है जाणहि तिना भि तेरी सार । नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु । सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पाछारु ॥ १ ॥ ॥ म० १ ॥ मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर । घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार । जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर । नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ । सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ । सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ । उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ । जगजीवनु दाता पाइआ ॥ ६ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ (साम्प्रदायिक अहम्-भाव सबसे अधिक भयानक है) मुसलमान शरीअत को मानते हैं और उसी को सर्वोच्च विचार (कानून) कहते हैं । (वे मानते हैं कि) बंदा वही है जो प्रभु की खोज में, बन्दगी में तल्लीन रहता है । हिन्दू लोग भगवान के अनेक रूपों के दर्शन की बात कहते हैं (मूर्ति-पूजा करते हैं) । तीर्थ-स्नान, अर्चन-पूजन तथा अनेक प्रकार की सुगंधियों का प्रयोग करते हैं । योगीजन परमात्मा को निर्गुण रूप में भजते हैं और उसे 'अलख' कहकर पुकारते हैं (अदृश्य कहते हैं) । तथापि अदृश्य रूप और निर्लिप्त नाम वाले उस परम सत्य को वे शरीर के आकार वाला बनाकर देखना चाहते हैं । दानी के मन में देने के विचार से ही संतोष उपजता है । किन्तु दान दे-देकर बदले में हज़ारों गुणा अभिलाषा करनेवाले सांसारिकों की क्या शोभा ? चोर, व्यभिचारी, मिथ्या आचरण करनेवाले विकार-युक्त ऐसे लोग भी हैं, जो पिछली कमाई (कर्म-फल) को यहाँ भोगकर (ख़ाली हाथ) चले जाते हैं । उन्होंने क्या पाया ? जलधि और धरती में अगणित जीव हैं, चौदह लोकों तथा पुरियों में अनन्त आकार हैं (शरीरधारी हैं), उनके कथनों को तुम (हे मालिक !)

समझते हो, उन्हें तुम्हारी बराबर सूझ है। गुरु नानक कहते हैं कि भक्ति-भाव से सम्पन्न जीवों को निरन्तर परमात्मा की स्तुति की भूख रहती है, उन्हें प्रभु के सच्चे नाम का ही एक मात्र अवलम्ब है। वे दिन-रात गुरमुख लोगों की चरण-धूलि में आनन्द मानते हैं ॥ १ ॥ म० १ ॥ (किन्तु साम्प्रदायिक कट्टरपंथियों का हाल क्या होता है ?), (मुसलमान जलाए मुर्दे के दोज़ख़ में जाने की बात कहते हैं, इस पर गुरु-कथन है) मुसलमान के दफ़नाए जाने पर भी उसकी मिट्टी कुम्हार के हाथों आग में पड़ सकती है। वह उसके बर्तन और ईंटें बनाता है और आग में जलती हुई वह पुकारती है; बेचारी जल-जलकर रोती है और उसमें से अंगार झड़ते हैं। गुरु नानक कहते हैं कि जिस परमात्मा ने कारण बनाया है, वही कार्य जानता है (अर्थात् किसका क्या परिणाम होनेवाला है, यह परमात्मा के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता) ॥२॥ पउड़ी॥ (साम्प्रदायिक अहमन्यता से केवल गुरु ही छुटा सकता है) सतिगुरु की कृपा के बिना किसी को (परमात्मा) नहीं मिला या नहीं मिलता। परमात्मा स्वयं सतिगुरु में प्रकट होता है और उसके माध्यम से कार्य करता है। सतिगुरु जीव में से मोह का नाश करता है, अतः इसी से उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। सच्चे परमात्मा से लगन लगाना ही श्रेष्ठ है, इसी से संसार को जीवन देनेवाले (पोषक) प्रभु से मिलन सम्भव होता है ॥ ६ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ। हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ। हउ विचि दिता हउ विचि लइआ। हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ। हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु। हउ विचि पाप पुंन वीचारु। हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु। हउ विचि हसै हउ विचि रोवै। हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै। हउ विचि जाती जिनसी खोवै। हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा। मोख मुकति की सार न जाणा। हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ। हउमै करि करि जंत उपाइआ। हउमै बूझै ता दरु सूझै। गिआन विहूणा कथि कथि लूझै। नानक हुकमी लिखीऐ लेखु। जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥ १ ॥ महला २ ॥ हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि। हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि। हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ। हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि। हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि। किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।

नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ । ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ । ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ । तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ । वडिआई वडा पाइआ ।।७।।

॥ सलोक म० १ ॥ (कुछ जीव अहम् के प्रभाव से बचने के लिए अहम् का पूर्णतः त्याग करते हैं । यह भी उचित नहीं, क्योंकि इससे बुरे कार्यों से बचाव के साथ-साथ भले कार्यों से भी वंचित रह जाना पड़ता है । अहम् मनुष्य-जीवन का अभिन्न अंग है।) जीव अहम् में आता है, अहम् में जाता है, अहम् में जन्मता-मरता है । वह अहम् से प्रभावित रहकर ही लेता-देता है, अहम् में कमाता और गँवाता है । उसकी सत्यता या मिथ्यापन भी अहमान्तर्गत होता है । पाप-पुण्य का विचार भी अहम् पर आधृत होता है । नरक-स्वर्ग का वास अहम् के ही कारण होता है । जीव का हँसना-रोना, मलिनता-स्वच्छता, सब अहम् के ही कारण है । अहम् के ही कारण मनुष्य अपनी उत्तम योनि से पतित होता है; मूर्खता या बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन भी अहम् पर आश्रित है, किन्तु उसे मोक्ष-रहस्य का कुछ भी ज्ञान नहीं होता । मिथ्या रूप और माया-भ्रम सब अहम् की उपज हैं, इसी में अहम् के कारण जीवन की परम्परा अग्रसर होती है । यदि समझदार मनुष्य अपने अहम् को समझ ले (आत्म को चीन्ह ले), तो वह परमात्मा के द्वार को पा सकता है, अन्यथा वह अहंकार में भरा ज्ञानहीन वाद-विवाद में ही पड़ा रह जाता है । गुरुजी कहते हैं कि परमात्मा की इच्छा से ही हम अपने कर्मों के लेख लिखते हैं, और जैसा अपने को समझते हैं, वैसा हरि को मानने लगते हैं (अर्थात् परमात्मा के हुक्म को हम अपने अहम् के दर्पण में ही देखते हैं, जितना यह दर्पण साफ़ होगा, उतना स्पष्ट हम प्रभु-इच्छा को देख पाएँगे) ॥ १ ॥ महला २ ॥ अहम्-भाव से ही हमारा व्यक्तित्व बनता है, इसी पर आधृत हम कर्म कमाते हैं (अहम् त्यागने से तो कर्म-रति ही समाप्त हो जायगी) । अहम्-भाव ही वह बन्धन है, जो बार-बार जीव को आवागमन के चक्र में डालता है । (प्रश्न उठता है) यह अहम् उत्पन्न कहाँ से होता है और कैसे संयम से इस पर प्रतिबन्ध रखा जा सकता है ? अहम् भी प्रभु के हुक्म में बँधा है, इसी से प्रारब्ध बनता और सृष्टि का व्यवहार चलता है । यद्यपि अहम्-भाव दुखद रोग है, तो भी इसका उपचार भी इसी में शामिल है । परमात्मा की कृपा हो और जीव गुरु के शब्द की कमाई कर ले, तो (गुरुजी कहते हैं) सब दुःखों का नाश, इसी उपचार से सम्भव है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ परमात्मा का सच्चा सेवक वही है, जो सदैव परम सत्य का भजन करता है । वह

कभी भ्रष्ट पथ पर क़दम नहीं धरता, सत्कर्मों का धर्म कमाता है। वह संसार के बन्धनों को तोड़ता एवं कम अन्न-पानी का भोग करता है (अर्थात् वह आत्म-संयम करता है)। उस पर परमात्मा की ज़्यादा कृपा होती है, वह निरन्तर प्रगति करता है। इस प्रकार वह (उक्त जीव) परमात्मा की स्तुति करते-करते परमात्मा को पा जाता है ॥ ७ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह। दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह। अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह। सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह। नानक जंत उपाइकै संमाले सभनाह। जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह। सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु। तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु। नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥ १ ॥ ॥ म० १ ॥ लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु। लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण। लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण। लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण। जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु। नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ। जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ। सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ। मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ। विचि दुनीआ काहे आइआ ॥ ८ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ (गुरु नानक कहते हैं कि) वह परमात्मा ही समुद्रों, पहाड़ों, जीवों, मनुष्यों, वृक्षों, तीर्थों, नदी-तटों, मेघों, खेतों, द्वीपों, लोकों, मण्डलों, खण्डों-ब्रह्माण्डों, अंडजों, जेरजों, उद्भिजों, स्वेदजों (चारों प्रकार के जीवों) आदि की गिनती-मिनती (सही अंदाज़ा) जानता है। वह हरि जीवों को उत्पन्न कर उन सबकी सँभाल करता है। जो रचयिता बनाता है, वही उसकी (अपनी रचना की) देख-भाल (चिन्ता) भी करता है। जिस रचयिता (कर्ता-पुरुष) ने संसार उपजाया है, वही इसकी चिन्ता करता है। वह परमात्मा कल्याणकारी है, उसे हमारा प्रणाम है, उसका दरबार नित्य है (अभंग है)। गुरु नानक कहते हैं कि जब तक जीव परमात्मा के सच्चे नाम का सहारा नहीं लेता, तब तक

तिलक-जनेऊ धारण करने से क्या होता है ? ॥ १ ॥ म० १ ॥ यदि लाखों अच्छाइयाँ, नेकियाँ हों, लाखों पुण्य स्वीकृत हुए हों, तीर्थों पर जाकर चाहे लाखों तप किए हों और जंगलों में जाकर योगियों वाला सहज योग कमाया हो। लाखों युद्धों में बल-प्रदर्शन किया हो या वीर-गति प्राप्त हुई हो। श्रुतियों के लाखों पाठों का स्वाध्याय किया हो, ज्ञान-ध्यान में लगन रखी हो; तो भी कर्ता-पुरुष ने कर्मों का जो लेख लिखा है, उसी के अनुसार आवागमन निश्चित है। गुरुजी कहते हैं ये सब (उपर्युक्त योग्यताएँ) व्यर्थ हैं, एक मात्र हरि की कृपा-दृष्टि ही (सचखण्ड प्रवेश का) सच्चा प्रवेश-पत्र है ॥ २॥ पउड़ी ॥ हे हरि! तुम ही एक मात्र सच्चे स्वामी हो और तुम्हारे ही कारण चतुर्दिक् सत्य का प्रसार है। जिसे तुम सत्य का दान देते हो, वही सत्य की कमाई करता है। सच्चे गुरु की प्राप्ति से ही सत्य-लाभ होता है, तभी मन में सत्य का निवास होता है। मूर्ख जीव कभी सत्य को नहीं पहचानते, वे मन-माया द्वारा निर्दिष्ट अपना दुर्लभ मनुष्य-जन्म व्यर्थ खो देते हैं। वे बेकार ही दुनिया में आते हैं ॥ ८ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ। पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात। पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास। पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास। नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥ १ ॥ म० १ ॥ लिखि लिखि पड़िआ तेता कड़िआ। बहु तीरथ भविआ तेतो लविआ। बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ। सहुवे जीआ अपणा कीआ। अंनु न खाइआ सादु गवाइआ। बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ। बसत्र न पहिरै अहिनिसि कहरै। मोनि विगूता किउ जागै गुर बिनु सूता। पग उपेताणा अपणा कीआ कमाणा। अलु मलु खाई सिरि छाई पाई। मूरखि अंधै पति गवाई। विणु नावै किछु थाइ न पाई। रहै बेबाणी मड़ी मसाणी। अंधु न जाणै फिरि पछुताणी। सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए। हरि का नामु मंनि वसाए। नानक नदरि करे सो पाए। आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे। नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे। इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे। हउ ढाढीका नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे। तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ॥ ९ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ गाड़ियाँ लादकर भी यदि पुस्तकें पढ़ लो, पुस्तकों के क़ाफ़िले लादते रहो; पढ़-पढ़कर अपने बन्धन बढ़ाते रहो या पढ़कर गढ़े में डालते रहो। आयु के सब वर्ष पढ़ाई करो, जीवन का एक-एक मास पढ़ो; आयु भर पढ़ो, श्वास-श्वास पढ़ो, किन्तु गुरु नानक कहते हैं कि जीव के कर्मलिख में तो केवल एक ही बात (प्रभु-नाम-जाप) पड़ती है, अन्य सब तो सिर खपाई मात्र है ॥ १ ॥ म० १ ॥ (यहाँ गुरुजी ने विद्या-प्राप्ति के अहम् को तिरस्कृत किया है)। जितना भी मनुष्य लिखता-पढ़ता है, उतना दु:खी होता है। जितना तीर्थों पर घूमता है, उतना ही बेकार बोलता है। अधिक वेष धारण करता है तो शरीर को दु:ख पहुँचाता है। अन्ततः जीव को अपना किया सहना पड़ता है। जो जीव अन्न धारण नहीं करते, वे स्वाद से वंचित रहते हैं। वे द्वैतभाव के कारण बहुत दु:ख उठाते हैं। जो वस्त्र नहीं पहनते, वे रात-दिन कष्ट उठाते हैं। मौन समाधी लगानेवाला दु:खी है, गुरु के बिना अज्ञान-निद्रा से क्योंकर जग सकता है ? पैर से नंगा रहनेवाला (जैन साधु) अपने कर्मों को भोगता है। गंदगी खाने और सिर में राख डालनेवाले मूर्ख, अज्ञानी हैं, अपना सम्मान गँवाते हैं। सच्चे परमात्मा के बिना उन्हें भी कोई ठिकाना नहीं है। जंगलों और श्मशानों में रहने से अज्ञानांधकार दूर नहीं होता, वे लोग बाद में पछताते हैं। सतिगुरु की शरण लेनेवाले सुख लाभ करते हैं। जो जीव हरि-नाम को हृदय में धारण करते हैं, गुरुजी कहते हैं, उनकी कृपा-दृष्टि से सब कुछ प्राप्य होता है। आशा-चिन्ता से रहित होकर वे अपने अहम्-भाव को परमात्मा के शब्द द्वारा नष्ट कर देते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे परमात्मा ! तुम्हें अपने भक्तों से प्यार है, वे नित्य तुम्हारे द्वार पर खड़े कीर्ति-गान करते हैं। गुरु कथन है कि सत्कर्मों के बिना तुम्हारी शरण में किसी को संरक्षण नहीं मिलता। वे लोग अपनी भूल को नहीं पहचानते, अनहोनी कथनी करते हैं। मैं तुम्हारा यशोगान करता हूँ, फिर भी मुझे नीची जाति का कहते हैं और स्वयं ऊँची जाति का कहलाते हैं। मैं तो उन्हें ही चाहता हूँ, जो नित्य तुम्हारा नाम जपते हैं ॥ ९ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु। कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु। कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु। कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु। कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु। कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु। किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु। कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु। नानकु

वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ।। १ ।। म० १ ।। सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ । कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ । सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु । नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु । सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ । धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ । सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ । दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ । सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु । सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु । सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ । नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ।। २ ।। पउड़ी ।। दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ । कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ । फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ । जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ । मति थोड़ी सेव गवाईऐ ।। १० ।।

।। सलोकु म० १ ।। (इस श्लोक में गुरुजी बताना चाहते हैं कि प्रभु के बिना शेष सब मिथ्या है— तुधु बाकु कूड़ो कूड़) । राज्य प्राप्त करके राजा बन जाना, प्रजा-पालक होना या संसार का स्वामी होना, सब हे प्रभु, तुम्हारे बिना मिथ्या है । भव्य भवन, उद्यान और उनमें उठने-बैठनेवाले, सब मिथ्या हैं; सोना-चाँदी और इसे पहननेवाले सब असार हैं । यह शरीर मिथ्या है, सुन्दर वस्त्र और अपार सौंदर्य सब व्यर्थ है । पति या पत्नी होना भी मिथ्या है, वे विषय-विकारों में जूझते रहते हैं । मिथ्या का मिथ्या से लगाव है, परमात्मा को सबने विस्मृत कर दिया है । सारा संसार नश्वर है, यहाँ किसकी मित्रता स्थायी हो सकती है ? मिष्टान्न, मधु और डूबते हुए बेड़े, सब मिथ्या हैं । गुरु नानक कहते हैं कि हे हरि, तुम्हारे बग़ैर सब मिथ्या ही मिथ्या है, नश्वर है, माया है ।। १ ।। ।। म० १ ।। सच्चा जीव उसी को मानिए, जिसके हृदय में सत्य हो । जो शरीर को नाम-जल से धोकर मिथ्यात्व की मलिनता दूर कर लेता है, (वही सच्चा जीव है) । वही जीव सच्चा है, जो परम सत्य से अमित प्यार करता है । जो प्रभु का नाम सुनकर प्रसन्न होता है, वही मुक्ति-द्वार में प्रवेश कर सकता है । सच्चा जीव वही है, जिसे जीने की युक्ति ज्ञात हो; जो शरीर रूपी धरती को सँवारकर उसमें परमात्मा का नाम रूपी बीज बो ले । वही जीव सच्चा है, जो सदैव सच्ची शिक्षा ग्रहण करता है, जो जीवों पर करुणा करता है और उनकी सहायतार्थ कुछ

पुण्य-दान करता है। वही सच्चा जीव है, जो आत्मा के सच्चे तीर्थ पर निवास करता है, गुरु-आज्ञा में बँधकर रहता है। सत्य सब मलिनताओं का उपचार है, सब कष्टों को धो डालता है। गुरु नानक कहते हैं कि उनकी विनती उन्हीं जीवों से है, जिनके पास सत्य का सामर्थ्य है ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ मैं केवल चुटकी भर चरण-धूलि चाहता हूँ, मिले तो मस्तक लगा लूँ। मिथ्यात्व का लोभ छोड़कर मुझे मन में एक मात्र उस अदृश्य का ध्यान लगाना उचित है। (नियम है कि) जैसा कर्म करोगे, वैसा ही फल पाओगे। यदि कर्मों में पहले से प्राप्य हो, तभी उनकी (मुक्तात्माओं की) चरण-धूलि मिल सकती है। अन्यथा बुद्धि के अभाव में किये-कराए पर पानी फिर जाता है ॥ १० ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल। बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि। जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ। नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ। भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ। नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु। कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु। अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु। गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु। उचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु। मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु। धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु। जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु। सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै। पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥ ॥ म० १ ॥ वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ। सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ। अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे। जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥ ३ ॥ ॥ पउड़ी ॥ धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ। एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ। इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ। गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ। सहजे ही सचि समाइआ ॥ ११ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ काल के मिथ्यात्व के कारण सत्य आच्छादित

हो गया है और जीव पापों की कालिमा से लदे हुए हैं। जिन्होंने धर्म का बीज बोया था, वे शोभा पा गए। अब वह बीज (नियम-भंग होने के कारण) पिसकर दाल हो गया है, अब उसे क्योंकर बोया जा सकता है ? बीज साबित हो तभी उग सकता है, (दूसरी शर्त) ऋतुओं में अनुकूल ऋतु होने की भी है। गुरुजी कहते हैं कि ज्यों कोरे कपड़े पर लाग लगाए बग़ैर रंग नही चढ़ता, वैसे ही हमें परमात्मा के भय में कोरे मन को भट्ठी पर चढ़ाना और शरीर में उद्यम की लाग पैदा करना चाहिए। गुरुजी कहते हैं कि यदि जीव पर प्रेम-भक्ति का रंग चढ़ जाए तो फिर उसे मिथ्या की शोभा नहीं होती ॥ १ ॥ म० १ ॥ पाप राजा और लोभ उसका मन्त्री है, मिथ्या व्यवहार उसका टकसाली अधिकारी है (मिथ्या के सिक्के चलाता है)। काम नायब है, जिससे परामर्श किया जाता है। प्रजा अज्ञानांध है, मुर्दे की नाईं चुपचाप अन्याय सहन करती है। ज्ञानी कहलानेवाले रास-नृत्य करते, बाजे बजाते और शरीर शृंगारते हैं। ऊँची आवाज़ों में वाद-विवाद अथवा धर्म-योद्धाओं की कथाएँ गाते हैं। पढ़े-लिखे मूर्ख तर्क-वितर्क करते हैं, उनकी रुचि धन-संग्रह में है। धर्मी जीव धर्म कमाते तो हैं किन्तु उसके प्रभाव से वंचित हो जाते हैं, क्योंकि वे धर्म-कर्म के बदले मुक्ति की कामना करने लगते हैं (निष्काम भाव में नहीं रहते)। यती कहलाने वाले यथार्थ ढंग नहीं जानते, घर-बार ही छोड़ बैठते हैं। सब अपने-अपने कार्य में पूर्ण बनते हैं, कोई अपने को कम नहीं समझता, किन्तु मनुष्य का जीवन तभी सही तौल पर स्वीकार होगा, जब तराज़ू के पिछले पलड़े में प्रभु-स्वीकृति के सम्मान के बाँट धरे जायँगे। गुरु नानक कहते हैं कि यही सही तौल होगी ॥२॥ म० १ ॥ गुरुजी कहते हैं कि मनुष्य की कही बात का मोल है, किन्तु वह परमात्मा से छिपी नहीं होती, वह सब कुछ जानता है। सब बढ़-बढकर प्रयास करते हैं, किन्तु वही होता है जो परमात्मा को स्वीकार होता है। परमात्मा के सम्मुख जाति-बल नहीं चलता, वहाँ तो जीव नया रूप लेते हैं (जातियों का पार्थक्य यहीं रह जाता है)। जिन्हें वहाँ (प्रभु के हुज़ूर में) सम्मान मिलता है, वे ही भले कहे जा सकते हैं ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आरम्भ से ही जिन पर तुम्हारी कृपा है, वे ही प्रभु का नाम जपते हैं। इन जीवों के वश में कुछ भी नहीं, यह तरह-तरह की सृष्टि तुम्हींने उत्पन्न की है। कुछ जीवों को तुम आत्म-विलीन कर लेते हो और कुछ ऐसे हैं जो पाकर भी तुम्हें गँवा बैठते हैं। जहाँ भी गुरु-कृपा से ज्ञान का प्रकाश हुआ है, वहाँ तुमने स्वयं अपने को प्रकट किया है। वह परम सत्य तो सहज ही प्रकट होता और सक्षम जीवों को अपने भीतर विलीन कर लेता है ॥ ११ ॥

।। सलोकु म० १ ।। दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई। तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई। बलिहारी कुदरति वसिआ तेरा अंतु न जाई लखिआ ।। १ ।। रहाउ ।। जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ। तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ। कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ।। २ ।। म० २ ।। जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्रहमणह। खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं पराक्रितह। सरब सबदं एक सबदं जेको जाणै भेउ। नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ।। ३ ।। म० २ ।। एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा। आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ। नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ।।४।। ।। म० १ ।। कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ। गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ।। ५ ।। ।। पउड़ी ।। पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ। जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ। ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ। पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ। मुहि चलै सु अगै मारीऐ ।। १२ ।।

।। सलोकु म० १।। (प्रभु-प्राप्ति के मार्ग पर) सुख रोग है और दुख उसका उपचार, क्योंकि सुख में स्मरण नहीं होता। हे परमात्मा ! तुम रचयिता हो, सब कुछ स्वयं करते हो; यदि मैं अपने बल से कुछ करना भी चाहूँ, तो वह नहीं होता। मैं तुम्हारी क्षमताओं पर बलिहार हूँ, तुम समूची सृष्टि में व्याप्त हो ।। १ ।। रहाउ ।। जीवों की प्रत्येक जाति में तुम्हारा आलोक है और तुम्हारे आलोक से ही समस्त जीव-जातियों का अस्तित्व है; हे मालिक ! तुम कला-विहीन होकर भी व्याप्ति की कला से उन सबमें विद्यमान हो। तुम सक्षम स्वामी हो, तुम्हारी महती महिमा का गान करनेवाले का उद्धार हो जाता है। गुरु नानक कहते हैं कि कर्ता सर्वत्र सक्षम है, जो उसे रुचता है वह कर रहा है।। २ ।। म० २ ।। योगी ज्ञान की पद्धति अपनाते हैं, ब्राह्मणों की पद्धति वेदों का पढ़ना-पढ़ाना है, क्षत्रियों की पद्धति वीरता तथा शूद्रों की सेवा-भावना की है। यदि कोई इन सब पद्धतियों को एक बना ले, गुरु नानक कहते हैं कि वे उसके दास बन जायँगे, क्योंकि वह मनुष्य निर्लिप्त हरि-रूप होगा। (अर्थात् सब अलग-अलग पद्धतियों का विवाद है, यदि कोई इस विवाद से ऊपर उठकर

पूर्ण परमेश्वर को पा ले, तो उसकी कोई भी पद्धति श्रेष्टतर मानी जायगी) ॥ ३ ॥ म० २ ॥ सब देवताओं का मूल देवता वह परब्रह्म ही है, यदि कोई भेद जानता हो तो उसके लिए वही परम सत्य है। गुरु नानक कहते हैं कि वे उसके दास बन जायँगे, क्योंकि वह मनुष्य निर्लिप्त हरि-रूप होगा ॥ ४ ॥ म०१॥ जैसे घड़े के बग़ैर जल नहीं टिका रह सकता, परन्तु जल के बिना घड़ा भी नहीं बन सकता। वैसे ही मन ज्ञान-बन्धन से ही टिकता है, परन्तु (गुरु रूपी) मन के बिना ज्ञान का निजी अस्तित्व क्या हो सकता है ? ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ विद्यावान जीव भी पापी हो सकता है, इसलिए अनपढ़ साधु का सम्मान उचित ही है। कोई जैसे कर्म करता है, वैसा उसके द्वारा उच्चरित ओं नाम ध्वनित होता है। पढ़े-लिखों तथा अनपढ़ों का हिसाब दूसरी दुनिया में होगा— मनमुखी जीव अन्ततः ज़रूर पिटेगा, मार खाएगा ॥ १२ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु। जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि। सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु। त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु। दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु। कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥ १ ॥ म० १ ॥ साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे। सभु को सचि समावै। रिगु कहै रहिआ भरपूरि। राम नामु देवा महि सूरु। नाइ लइऐ पराछत जाहि। नानक तउ मोखंतरु पाहि। जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ। पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ। कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ। नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ। चारे वेद होए सचिआर। पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार। भाउ भगति करि नीचु सदाए। तउ नानक मोखंतरु पाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ। जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ। खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ। सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ। करि किरपा पारि उतारिआ ॥ १३ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ गुरु नानक कहते हैं कि जन्म-मरण की माला का सुमेरु मणि मनुष्य-जन्म ही है। इस शरीर (मनुष्य-जन्म) का एक रथ

है और एक रथवान। युग-युग के अनुसार ये दोनों बदलते रहते हैं, शास्त्र-अध्येता ज्ञानी लोग इस तथ्य को जानते हैं। सतियुग में सन्तोष का रथ था और धर्म उसे हाँकनेवाला रथवान था। त्रेतायुग में यतीत्व का रथ था और बल उसके हाँकनेवाला था (अर्थात् यतीत्व से बल का मेल था)। द्वापर में तपस्या का रथ और सत् रथवान था (अर्थात् तप और सत् का संगम था), किन्तु कलियुग में अग्नि का रथ है और मिथ्यात्व उसका रथवान है अर्थात् शरीर में अग्नि और मन में मिथ्या चेतना है ॥१॥ म० १ ॥ सामवेद के अनुसार परमात्मा श्वेत रंग का है। तब सब कोई सत्य में विचरता था, सत्यमय रहता था और अन्ततः सत्य में ही समा जाता था। ऋग्वेद के अनुसार परमात्मा सर्वव्यापक है। उस समय रामचन्द्र सर्व देवों में श्रेष्ठ माने जाते थे और उनका नाम जपने से पाप नाश होते थे और इस प्रकार लोग मोक्ष-लाभ करते थे। यजुर्वेद के समय (द्वापर में) कृष्ण कन्हैया यादव हुए, जिन्होंने बल से चन्द्रावली (गोपी) को छला; जो अपनी गोपी (सत्यभामा) के लिए (इन्द्र के उद्यान से) पारिजात (कल्पवृक्ष) हर कर ले आए और वृन्दावन में उनके (गोपियों के) साथ आनन्द मनाते रहे। कलियुग में अथर्ववेद हुआ, उसके अनुसार परमात्मा का नाम अल्लाह पड़ा। लोगों ने नीले कपड़े पहने और तुर्कों-पठानों का शासन हुआ। इस प्रकार चारों वेद सच्चे हैं। जो लोग उन्हें पढ़ते और विचारते हैं (वे कर्म-अकर्म का निर्णय कर सकते हैं)। गुरु नानक कहते हैं कि यदि मनुष्य भाव-भक्ति से विनम्रता प्राप्त कर ले, तभी वह मुक्ति का अधिकारी होता है ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ मैं सतिगुरु पर बलिहार हूँ, जिसके मिलाप से परमात्मा का स्मरण सम्भव हुआ। जिसके उपदेश से ज्ञान रूपी अंजन को आत्मा-नेत्रों में आँजने से संसार की यथार्थता को देखा। जो व्यापारी (जीव) अपने स्वामी को छोड़कर द्वैत-भाव में लीन हुए, वे नष्ट हो गए। (इस संसार-सागर का एक मात्र) जहाज़ केवल सतिगुरु ही है, यह विचारनेवाली आत्मा कोई विरल ही होती है —उस पर परमात्मा की कृपा हो जाती है और वह (संसार-सागर से) पार हो जाती है ॥ १३ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ सिमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु। ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु। फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत। मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु। सभु को निवै आप कउ परकउ निवै न कोइ। धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ। अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि। सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥ १ ॥ म० १ ॥ पड़ि पुसतक

संधिआ बादं। सिल पूजसि बगुल समाधं। मुखि झूठ बिभूखण सारं। त्रैपाल तिहाल बिचारं। गलि माला तिलकु लिलाटं। दुइ धोती बसत्र कपाटं। जे जाणसि ब्रहमं करमं। सभि फोकट निसचउ करमं। कहु नानक निहचउ धिआवै। विणु सतिगुर वाट न पावै॥ २॥ पउड़ी॥ कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा। मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा। हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा। नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा। करि अउगण पछोतावणा॥१४॥

॥ सलोकु म० १॥ सेमल का वृक्ष सीधा, ऊँचा और घना होता है, किन्तु आशावान पक्षी वहाँ निराश ही क्यों लौटते हैं ? उसके फल फीके, फूल बकबके (नीरस) और पत्ते निकम्मे होते हैं (क्या लाभ उस ऊँचाई और घनेपन का ?) —इस पर गुरु नानक कहते हैं कि (नीचा होने में) विनम्रता और मिठास में ही जीवन के सही गुणों और अच्छाइयों का तत्व विद्यमान है। सब अपने लिए विनम्र होते हैं, दूसरे के लिए कोई विनम्र नहीं होता— चाहो तो जाँच करके देख लो (तराज़ू में तौलकर देख लो), जो झुकता है (तराज़ू का जो पलड़ा झुकता है) वही भारी (गौरववान) होता है। (झुकना अपराधियों सरीखा नहीं होना चाहिए) अपराधी शिकारी, जो मृगों को मारता है, दो गुणा झुकता है (निशाना लेते समय), किन्तु ऐसा शीश झुकाने का क्या लाभ, जो मन से मैल ही न गया ! ॥ १ ॥ ॥ म० १॥ (व्यर्थ का कर्म-काण्ड भी सहायक नही), (ये ऊँची जाति के कहलानेवाले लोग) शास्त्र पढ़ते, सन्ध्या-वन्दन करते और परस्पर शास्त्रार्थ करते हैं। शिला की पूजा करते और बगुले की नाईं ध्यान लगाते हैं। मुँह से झूठ बोलते और लोहे को कंचन के आभूषण बताते हैं। दिन में तीन बार गायत्री पर विचार (का जाप) करते हैं। गले में मालाएँ और मस्तक पर तिलक धारण करते हैं। दुहरी धोती पहनते और शीश पर भी वस्त्र रखते हैं। यदि वे ब्रह्म के आचरण को जानते-समझते तो उन्हें अपने व्यर्थ के कर्म असार दीखते। गुरु नानक कहते हैं कि जीव को निश्चय से प्रभु-भजन करना अपेक्षित है। सतिगुरु द्वारा पथ-प्रदर्शन के बिना मार्ग नहीं मिलता॥ २॥ पउड़ी॥ (गुरुजी नैतिक मूल्यों से इतर अन्य रुचियों का निषेध करते हैं।) सुन्दर कपड़ों और सुन्दर रूप पर इतराना, (भले कर्मों को) छोड़कर सांसारिक आस्वादनों में मन लगाना —ये सब अपने भले-बुरे कर्म हैं, इनका फल भी (जीव को) स्वयं भोगना पड़ता है। परमात्मा के हुक्म को मन में धारण करो, क्योंकि आगे (दूसरे लोक में) तंग रास्ते (कठिन मार्ग) से गुजरना होता है। सत्कर्म-विहीन

जीव को दोज़ख (नरक) में जाना पड़ेगा और तब वह (कर्महीन होने के कारण) अत्यन्त कुरूप दीख पड़ेगा। अवगुणों और दुष्कर्मों के कारण पछताएगा ॥ १४ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ दइआ कपाहु संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु। एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु। ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ। धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ। चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ। सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ। ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वे तगा गइआ ॥ १ ॥ म० १ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि। लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि। तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ। कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ। होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु। नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥ २ ॥ म० १ ॥ नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु। दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥ ३ ॥ ॥ म० १ ॥ तगु न इंद्री तगु न नारी। भलके थुक पवै नित दाड़ी। तगु न पैरी तगु न हथी। तगु न जिहवा तगु न अखी। वे तगा आपे वतै। वटि धागे अवरा घतै। लै भाड़ि करे वीआहु। कढि कागलु दसे राहु। सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु। मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी। सो सेवकु सेवा करे जिसनो हुकमु मनाइसी। हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी। खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी। ता दरगह पैधा जाइसी ॥ १५ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ (हम जनेऊ पहनते हैं, उसका सही रूप बताते हैं)। दया की कपास हो, संतोष का सूत्र हो, उसमें वासना-नियन्त्रण की गाँठ तथा दृढ़चरित्रता के बल डाले जाएँ, तो आत्मा का सही जनेऊ बनता है। यदि (हे पंडित!) ऐसा उपवीत तुम्हारे पास है तो (मुझे) पहना दो। ऐसा जनेऊ न टूटता है, न मलिन होता है, न जलता या गुम होता है। गुरु नानक कहते हैं कि ऐसा उपवीत धारण करनेवाला व्यक्ति धन्य है। चार कौड़ियों के मोल पर लाया गया और विशिष्ट अनुष्ठान पर (चौक पूरकर) पहना गया जनेऊ तथा उस पर गुरु-ब्राह्मण द्वारा कान में

दीक्षा-मन्त्र —(क्या लाभ इसका ?) व्यक्ति मर जायगा, जनेऊ शरीर से अलग हो जायगा, आत्मा उसके बग़ैर आगे जायगी। (अर्थात् आत्मा को चारित्रिकता का जनेऊ पहनाया जायगा तो मृत्यूपरांत भी साथ तो रहेगा) ॥ १ ॥ ॥ महला १ ॥ (जनेऊ पहनकर भी यदि लोग) लाखों चोरियाँ, व्यभिचार, मिथ्या-वचन और गालियाँ देते हैं और रात-दिन लाखों ठगियाँ और गोपनीय दुश्चरित्रता प्राणों के साथ बनाए रखते हैं— कपास को कातकर धागा बना लेते हैं, ब्राह्मण इसे बल देकर पहना देता है, बकरे का मांस पकाकर सह-भोज किया जाता है, सभी यज्ञोपवीत के साक्षी होते हैं। पुराना हो जाता है, उतार फेंकते हैं, फिर नया धारण करते हैं। गुरु नानक कहते हैं कि जनेऊ का बन्धन यदि शक्तिवान हों तो कभी टूट ही नहीं सकता, (अर्थात् यदि जनेऊ उपर्युक्त गुणों का हो, तो कभी नष्ट नहीं होता) ॥ २ ॥ म० १ ॥ परमात्मा की स्तुति से ही सच्चा धागा उपजता है और प्रभु-नाम-स्मरण से उसके पक्केपन की साक्षी होती है। परमात्मा की स्वीकृति से यदि (ऐसा जनेऊ) अन्तरात्मा में धारण कर लें तो यह अति पवित्र बन्धन (धागा) कभी नहीं टूटता ॥ ३ ॥ म० १ ॥ पुरुष तथा स्त्री के विषयानुरक्त अंगों के लिए कोई धागा (नियन्त्रण) नहीं, प्रतिदिन दाढ़ी में थूक लगता है (विषय-भोग के कारण अपमानित होता है)। हाथ-पैर पर कोई नियन्त्रण (धागा) नहीं, जीभ या आँख पर कोई नियन्त्रण नहीं। स्वयं तो (पंडित) बिना धागे (अनियन्त्रित) घूमता है और दूसरों को धागे बँट-बँटकर पहिनाता है। भाड़ा लेकर विवाह करवाता है, शास्त्रों-पोथियों का प्रमाण देकर लोगों को राह बताता है। सुनो और देखो, हे लोगो, यह कितना विचित्र है कि सूझ से अंधे को सुजान (सूझवान) कहा जाता है ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ परमात्मा की कृपा हो और वह दयापूर्वक (जीव से) सुबुद्ध कर्म करवा सकता है। वही जीव (प्रभु का सच्चा) सेवक हो सकता है, जो उसके हुक्म का पूरा-पूरा पालन करता है। प्रभु का आदेश माननेवाला ही उसे स्वीकार्य होता है और तभी वह स्वामी की संगति प्राप्त करता है। वह वही करता है, जो उसके प्रभु को मंज़ूर होता है, इसी से उसे मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। वही (जीव) ससम्मान प्रभु के दरबार में जाने का अधिकारी है ॥ १५ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई। धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई। अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई। छोडीले पाखंडा। नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥ १ ॥ म० १ ॥ माणस खाणे करहि निवाज। छुरी वगाइनि तिन गलि ताग। तिन

घरि ब्रहमण पूरहि नाद । उना भि आवहि ओई साद । कूड़ी रासि कूड़ा वापारु । कूड़ु बोलि करहि आहारु । सरम धरम का डेरा दूरि । नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि । मथै टिका तेड़ि धोती कखाई । हथि छुरी जगत कासाई । नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु । मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु । अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा । चउके उपरि किसै न जाणा । देकै चउका कढी कार । उपरि आइ बैठे कूड़िआर । मतु भिटै वे मतु भिटै । इहु अंनु असाडा फिटै । तनि फिटै फेड़ करेनि । मनि जूठै चुली भरेनि । कहु नानक सचु धिआईऐ । सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा । आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा । वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा । नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा । दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥ १६ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ (विचित्र विडम्बना है) गऊ और ब्राह्मण पर तो कर लगाया जाता है (गाय का गोबर रसोई लीपने के लिए पवित्र माना जाता है), गोबर तो किसी को मोक्ष नहीं दे सकता । एक ओर धोती, तिलक और माला धारण किए रहते हो, दूसरी ओर म्लेच्छों का धान्य खाते हो । घर के भीतर बैठकर पूजा करते हो और बाहर क़ुरान पढ़ते और मुसलमानों की नाईं व्यवहार करते हो । (हे ब्राह्मण !) इन पाखण्डों को छोड़ो, केवल प्रभु-नाम-जाप से ही मुक्ति सम्भव है ॥ १ ॥ म० १ ॥ मनुष्य का मांस खा जानेवाले (मुसलमान) नमाज़ पढ़ते हैं और जो अत्याचार की काती चलाते हैं (हिन्दू), वे जनेऊ पहने घूमते हैं । उन ब्राह्मणों के घरों में शंख-नाद होता है, उन्हें भी (सांसारिक) स्वादों का बन्धन है । उनका समूचा मूलधन और व्यापार (अर्थात् कारण तथा कार्य) मिथ्या है, वे झूठ बोलकर ही निर्वाह करते हैं । श्रम और धर्म की चेतना उनसे दूर है, गुरुजी कहते हैं कि उनके प्रत्येक व्यापार में मिथ्यापन भरा है । वे माथे पर तिलक लगाते और कक्षायुक्त धोती पहनते हैं, हाथों में छुरी लिये संसार पर ज़ुल्म करते हैं । नीले कपड़े पहनकर मुसलमानों में स्वीकार होना चाहते हैं (हिन्दू लोग नीले कपड़े पहनकर मुसलमानों को ख़ुश करना चाहते थे, गुरुजी इस दास-भावना की निन्दा करते हैं) । म्लेच्छों से प्राप्त अन्न को पूजा में चढ़ाते हैं । एक ओर अभाषा (अरबी-फ़ारसी आदि) का कलमा पढ़कर हलाल किया बकरा खाते हैं और दूसरी ओर अपनी रसोई के समीप

किसी को आने नहीं देते। रसोई की लिपाई करके उसके गिर्द लकीर लगाते हैं और भीतर (अपने समूचे मिथ्या व्यवहार को मन में छिपाए) स्वयं बैठते हैं ताकि कहीं छूत न लग जाय, कहीं हमारा अन्न (किसी के छूने से) ख़राब न हो जाय। (विषय-वासनाओं के कारण) भ्रष्ट शरीर से फिर-फिर बुराइयाँ करते हैं। दूषित मन से चूली भरते (दान देते) हैं। गुरु नानकजी कहते हैं कि (इन सब पाखंडों को त्यागकर) उस परम सत्य का ध्यान करो। मन में यदि पवित्रता हो, तभी वह परम सत्य प्राप्त होता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सब कुछ परमात्मा के ध्यान में है और सब कार्य उसकी दृष्टि में हो रहे हैं। वह अपनी इच्छा से किसी को बड़ाई देता है, वही सबसे कार्य करवाता है। बड़ों से भी बड़ा वह परमात्मा अपनी विस्तृत सृष्टि (के जीवों) को उपयुक्त कामों में लगाता है। यदि उसकी कृपा-दृष्टि न हो तो बादशाह भी धूल चाटते हैं। उन्हें द्वार-द्वार माँगने से भी भिक्षा प्राप्त नहीं होती ॥ १६ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ । अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ । वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ । नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ जिउ जोरू सिर नावणी आवै वारोवार । जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु । सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ । सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ । कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ । चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ । करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ । जरु आई जोबनि हारिआ ॥ १७ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ यदि कोई चोर किसी का घर लूटकर अपने बुज़ुर्गों का श्राद्ध करे, तो वह वस्तु परलोक में पहचानी जाकर पितरों को भी चोर बना देगी (अर्थात् पितरों के श्राद्ध में चोरी की वस्तु से पुण्य प्राप्त नहीं होता, पितरों को कष्ट पहुँचता है)। न्याय के तौर पर मध्यस्थ ब्राह्मण के हाथ काट दिए जायँगे। गुरु नानक कहते हैं कि परलोक में वही प्राप्त होता है, जो परिश्रम से कमाया जाता है ॥ १ ॥ ॥ म० १ ॥ जिस प्रकार स्त्री को बार-बार मासिक धर्म होता है, इसी तरह झूठे व्यक्ति के मुख में झूठ रहता है और इससे वह नित्य मलिन होता रहता है। उन लोगों को निर्मल नहीं कहा जा सकता, जो स्नान करके

शरीर को धो बैठते हैं। (गुरु नानकजी कहते हैं) निर्मल वे ही होते हैं, जिनके मन में वह परमपुरुष बसता है, अर्थात् जो परमात्मा का भजन करते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पवन-वेग से चलनेवाले काठीधारी घोड़ों और हर तरह से सजे हुए रनिवासों का स्वामित्व हो, शानदार भवनों तथा उद्यानों का प्रसार हो, मन-भाते उल्लास-विलास प्राप्त हों, तो भी हरि-भजन के बिना वे (लोग जिन्हें उक्त सब कुछ प्राप्त है) पराजित हैं। वे शासन के अधिकार को भोगते हैं, अपनी प्रशस्ति सुन-सुनकर मरना भुला बैठे हैं—किन्तु (वे भूल जाते हैं कि) बुढ़ापा आते ही यौवन पराजित हो जाता है ॥ १७ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ। गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ। जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ। पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ। सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ। नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु। अखी सूतकु वेखणा परत्रिअ परधन रूपु। कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि। नानक हंसा आदमी बधे जमपुरि जाहि ॥ २ ॥ म० १ ॥ सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ। जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ। खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि। नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ तिन्हा सूतकु नाहि॥३॥ पउड़ी॥ सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ। सहि मेले ता नदरी आईआ। जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ। करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ। सहि तुठै नउनिधि पाईआ ॥ १८ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ यदि (किसी एक स्थिति को) अपवित्र मानें, तो अपवित्रता तो सब जगह होती है। गोबर, लकड़ी (जो हम भोजन बनाने के लिए जलाते हैं) में भी कीड़ा होता है (जिसके जलने से अपवित्रता पैदा होती है)। अन्न के जितने कण हैं, सभी में जीव होता है (उनको खाने से अपवित्रता होती है)। सर्वप्रथम पानी ही जीवन है, जिससे सबको ताज़गी मिलती है (उसमें भी अपावन परमाणु होते हैं)। अतः अपवित्रता से क्योंकर बचा जा सकता है, अपवित्रता तो हमारी रसोई में ही रहती है। गुरु नानक कहते हैं कि अपवित्रता यों दूर नहीं होती, उसे एक मात्र ज्ञान के साबुन से धोकर ही दूर किया जा सकता है ॥ १ ॥ म० १ ॥ लोभ

की वृत्ति मन की अपवित्रता है, झूठ बोलने से जिह्वा अपवित्र होती है। पराई स्त्री, पराए धन या रूप-यौवन को देखना आँख की अपावनता है। दूसरों की निन्दा-चुग़ली सुनना कानों की अपवित्रता है। गुरु नानक कहते हैं, (इन्हीं मलिनताओं में) बँधे हंस रूपी मनुष्य यमपुर सिधार जाते हैं ॥ २ ॥ म० १ ॥ हर प्रकार की अपवित्रता, जो एक से दूसरे को लगने की बात कही जाती है, एक वहम है। जन्म-मरण का चक्कर प्रभु के आदेश से चलता है, आत्मा का आवागमन ईश्वरेच्छा पर आधृत है। खान-पान, जो परमात्मा ने रोज़ी के रूप में दिया है, सब पवित्र है। गुरुजी कहते हैं कि जिसने गुरु-उपदेशों से इस तथ्य को जान लिया है, उन्हें किसी प्रकार की मलिनता (अपवित्रता) नहीं लगती ॥ ३ ॥ ॥ पउड़ी ॥ (अब गुरुजी बताते हैं कि दूषण की उपर्युक्त बुराइयों को गुरु ही निकाल सकता है।) सतिगुरु में महान गुण हैं, उसी को बड़ा करके मनिए, उसी की प्रशस्ति कीजिए। परमात्मा की दया हो, तभी सतिगुरु से मिलाप होता है। उसकी इच्छा हो, तभी मन में लग्न लगती है। प्रभु का हुक्म हो तो सतिगुरु जीव के माथे हाथ रखकर सब बुराइयों को निकाल फेंकता है। मालिक के प्रसन्न होने से हर प्रकार के सुख (नौ निधियाँ— पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कश्यप, कुंद, नील, मुकुंद, खरब) प्राप्त होते हैं ॥ १८ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ। सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ। सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु। कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु। अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु। ता होआ पाकु पवितु। पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु। जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि। नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥ १ ॥ म० १ ॥ भंडि जंमीऐ भंडि निमीऐ भंडि मंगणु वीआहु। भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु। भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु। सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान। भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ। नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ। जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि। नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ। कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ। जा रहणा नाही

ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ । मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ । मूरखै नालि न लुझीऐ ।। १९ ।।

।। सलोकु म० १ ।। (दूषण या अपवित्रता अन्न-पानी में नहीं होती, वास्तव में यह मनुष्य की नाम-रहित ज़िन्दगी में है), (ब्राह्मण या पाखण्डी लोग) पहले नहा-धोकर स्वयं निर्मल होते हैं, फिर 'निर्मल' किए गए चौके में बैठकर अदूषित निर्मल परोसों में, श्लोक पढ़ते हुए भोजन करते हैं। किन्तु वह निर्मल भोजन अन्ततः गंदगी बनाकर गंदगी में फेंक दिया जाता है, इसका दोष किसे लगा ? (अर्थात् आखिरकार विष्टा के रूप में वह गंदगी बन जाता है, उसे निर्मल से मलिन किसने किया ?) अन्न देवता की तरह पवित्र था, पानी, अग्नि, नमक और घी भी सब पवित्र थे —और इन पाँचों से मिलकर पवित्र भोजन बना था। पेट की गंदगी के संयोग से वह पवित्र भोजन थूकने योग्य मलिन हो गया (उसमें थूकादि अपवित्रताएँ मिल गईं)। जिस मुख से नामोच्चारण नहीं होता और व्यक्ति बिना प्रभु-नाम के रसों का भोग (षट्रस भोजन) करता है, तो (गुरुजी कहते हैं) वह मुख थूकने के योग्य है ।। १ ।। म० १ ।। स्त्री जन्मदात्री है फिर भी कुछ लोग उसे नीच या अपवित्र मानते हैं। फिर उसी से सगाई-विवाह करते हैं। स्त्रियों से प्रेम करते हैं, स्त्री से ही संसार की निरन्तरता बनती है। स्त्री की मृत्यु हो जाए तो दूसरी स्त्री की खोज करते हैं, स्त्री ही समाज की स्थिरता का कारण है। बड़े-बड़े महापुरुषों को जन्म देनेवाली (स्त्री) को बुरा क्योंकर समझा जा सकता है ? स्त्री से स्त्री पैदा होती है, स्त्री के बिना (संसार की रचना का) और कोई नहीं। गुरु नानक कहते हैं कि स्त्री से बाहर (अर्थात् अयोनी) केवल वही एक सत्पुरुष है। यदि कोई सुन्दर सुरंग भाग्य के कारण उस प्रभु की प्रशस्ति करता है, गुरुजी कहते हैं, उसका मुख उजला होता है और वह सत्पुरुष से संयोग प्राप्त कर लेता है ।। २ ।। पउड़ी ।। (गुरुजी स्त्री जाति के पक्ष में एक और तर्क देते हैं) परमात्मा को सब अपनी भावनाओं के अनुसार अपनाते हैं, न अपनानेवाले (व्यर्थ समझे जाते हैं और) अलग कर दिए जाते हैं। सब अपने-अपने कर्मों का हिसाब चुकाते हैं। जब इस संसार में किसी को स्थिर नहीं रहना है, तो फिर क्यों अभिमान में फँसा जाए ? (अर्थात् स्त्री-पुरुष दोनों कर्मलिख से बँधे हैं, दोनों नश्वर हैं, फिर स्त्री को नीच क्यों समझा जाए ?) यदि हम पढ़े-लिखे हैं (और स्त्री अनपढ़ है) तो भी हमें विद्या पाकर यही सीखना चाहिए कि हम किसी को नीच या बुरा न समझें। मूर्ख के साथ झगड़ा न करें ।। १९ ।।

।। सलोकु म० १ ।। नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ । फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ । फिका दरगह

सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ । फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु । अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु । जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि । तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि । रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि । परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह । दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि । दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु । दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ । देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ । जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ । जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ । आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥ २० ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ गुरु नानक कहते हैं कि रूखा बोलने से तन-मन रूखा हो जाता है । रूखे भाव से निमन्त्रित अतिथि भी रूखा होता है और वे दोनों रूखे भाव से ही एक दूसरे की चर्चा करते हैं । रूखा या कटु व्यवहार करनेवाला जीव परमात्मा के दरबार में दुत्कार दिया जाता है और वह पतित होता है । इस प्रकार का रुक्ष-व्यवहारी या कटु-भाषी व्यक्ति मूर्ख होता है और उसे जूते लगाकर दण्ड दिया जाता है ॥ १ ॥ ॥ म० १ ॥ (जो जीव) भीतर से मिथ्या होता है और बाहर से दिखावा करता है, वह अठसठ तीर्थों का स्नान करके भी कभी निर्मल नहीं हो सकता । जो बाहर-भीतर एक समान निर्धन हैं, वे ही इस संसार में भले हैं । उन्हें प्रभु को प्रत्यक्ष करने के लिए परमात्मा का लगाव होता है । वे अपनी मौज में हँसते, रोते तथा मौन बने रहते हैं । उन्हें अपने सच्चे स्वामी के सिवाय किसी की परवाह नहीं होती । वे प्रभु के द्वार पर बैठे उसी से माँगते हैं और जब वह देता है तो खाते हैं । (वे जानते हैं कि) प्रभु का दरबार एक है, कर्मलेख लिखनेवाली क़लम भी एक ही है और वहाँ छोटे-बड़े सबके साथ सम व्यवहार किया जाता है । उसी द्वार पर कर्मों का सब हिसाब-किताब चुकाना होता है और गुरुजी कहते हैं कि वहाँ तिल में से तेल की नाईं जीव के भीतर से बुरे कर्मों को निकाल लिया जाता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ (वह परमात्मा) स्वयं रचनाकार है, उसी ने रचना-शक्ति को धारण कर रखा है । (जीवन की चौपड़ पर) कच्ची-पक्की गोटियाँ रखकर वह स्वयं उसका निरीक्षण करता है । जो आया है, वह चलेगा (अर्थात् जो पैदा हुआ है, वह अवश्य

मरेगा), अपनी-अपनी बारी से (सबको जाना ही होता है)। जिसने ये जीव-प्राण दिए हैं, उस स्वामी को मन से क्योंकर विस्मृत किया जा सकता है ? (इसलिए क्यों न) हम अपने हाथों अपना कार्य सँवार लें ! (अर्थात् सत्कर्मों से प्रभु को प्रसन्न करके उसकी कृपा प्राप्त कर लें) ॥ २० ॥

॥ सलोकु महला २ ॥ एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ । नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ । चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ । आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥ १ ॥ महला २ ॥ सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ । नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ । जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ । मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ । जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ । किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥ २१ ॥

॥ सलोकु म० २ ॥ यह कैसा प्यार है कि मन में द्वैतभाव हो (अर्थात् परमात्मा से प्यार करनेवाला कभी दूसरा चिन्तन नहीं करता)। गुरु नानक कहते हैं कि सच्चा प्रेमी वही कहलाता है, जो सदैव उसमें समाया रहता है। अच्छे को अच्छा तथा बुरे को बुरा कहनेवाला जीव सच्चा प्रेमी नहीं हो सकता, (क्योंकि) वह परमात्मा से हिसाब-किताब का व्यवहार करता है ॥ १ ॥ महला २ ॥ जो जीव स्वामी को प्रणाम करता है और साथ ही उस से प्रश्न करता है, वह आरम्भ से ही ग़लत भाव का सेवक होता है। गुरु नानक कहते हैं कि एक साथ ये दोनों बातें (सेवक-सेव्यभाव और प्रश्न-चिह्न या न-नुनक) मिथ्या हैं, इनसे कोई भी जीव मुक्त नहीं हो सकता ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसकी सेवा से परम सुख की प्राप्ति होती है, सदैव उस स्वामी का स्मरण कीजिए। जो कुछ करने से हमारे लिए दुष्कर्म का फल (दण्ड) बनता हो, वह कर्म ही क्यों करें ! बुरा कर्म कभी न करें, ज़रा दूर-दृष्टि से परिणाम का ध्यान कीजिए। हमें ऐसा खेल ही खेलना (कर्म करना) चाहिए, जिससे स्वामी के सम्मुख हमें शर्मिन्दा न होना पड़े। ऐसी ही कमाई उपयुक्त है, जिससे कुछ विशेष लाभ हो (अर्थात् सत्कर्मों की कमाई से ही प्रभु-कृपा ली जा सकती है) ॥ २१ ॥

॥ सलोकु महला २ ॥ चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु । गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु । आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु । नानक जिसनो लगा तिसु मिलै

लगा सो परवानु ॥ १ ॥ महला २ ॥ जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ । बीजे बिखु मंगै अंम्रितु वेखहु एहु निआउ ॥ २ ॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि । जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि । वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि । साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि । कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥ ३ ॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु । पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥ ४ ॥ ॥ महला २ ॥ होइ इआणा करे कंमु आणि न सकै रासि । जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ । हुरमति तिसनो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ । खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ । वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ । जिसदा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि । नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥ २२ ॥

॥ सलोकु म० २ ॥ सेवक में सेवा-भाव और अहंकार तथा विवाद, यदि एक साथ होंगे, तो वह बातें चाहे जितनी भी करे, परमात्मा (स्वामी) के संयोग का रस कभी नहीं पा सकता । अहंकार का त्याग करके यदि जीव सेवा-लिप्त हो, तो सही सम्मान का अधिकारी होता है । गुरु नानक कहते हैं कि किसी में लग्न लगाना तभी उपयुक्त होता है, जब जीव उसका साक्षात्कार कर सके, जिससे उसकी लग्न है ॥ १ ॥ महला २ ॥ जो मन में होता है, वही बाहर मुँह पर आना चाहिए, बेकार बातें महत्वहीन होती हैं । विष बोकर अमृत-फल को चखने की इच्छा न्याय नहीं हो सकती ॥ २ ॥ महला २ ॥ नासमझ के संग मित्रता कभी लाभप्रद नहीं होती (अर्थात् मनमुखी बर्ताव कभी सुयोग्य नहीं), व्यवहार में सन्तुलन का नियम बराबरी में ही सम्भव है, सोच-विचारकर निर्णय कर लो । किसी वस्तु में दूसरी वस्तु तभी समा सकती है, यदि उसमें पहले से पड़ी वस्तु को निकाल लिया जाए । स्वामी के सम्मुख आदेश नहीं चलता, वहाँ विनम्र प्रार्थना ही सानुकूल होती है । मिथ्या व्यवहार से मिथ्या उपलब्धियाँ होती हैं, (गुरुजी कहते हैं) और प्रभु-प्रशस्ति से जीवन का आनन्द मिलता है ॥ ३ ॥ महला २ ॥ मूर्ख के साथ मित्रता करना या अपने से ऊँचे लोगों से प्यार बनाना, पानी में की लकीर के समान अस्थिर तथा अवास्तविक होता है, उसका कोई स्थूल आधार नहीं होता ॥४॥ महला २ ॥ नासमझ

व्यक्ति पर आश्रित कार्य कभी नहीं सँवरता; वह यदि एकाध भला कार्य कर भी लेगा तो दूसरा बिगाड़ बैठेगा (अर्थात् नासमझ मन पर आश्रित रहने से जीव अपना कुछ सँवार नहीं सकता) ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ यथार्थ में वही सेवक सेवा-भावी है, जो स्वामी के आदेशानुसार कार्य करता है (अर्थात् वही जीव परमात्मा का सच्चा सेवक है, जो उसके हुक्म में विचरता है)। ऐसा सेवक सम्मान का अधिकारी होता है और वेतन भी अधिक प्राप्त करता है (अर्थात् वह जीवात्मा प्रभु के दरबार में सम्मानित होता तथा मोक्ष को प्राप्त करता है)। स्वामी की बराबरी करने से मनुष्य स्वामी को अनादृत महसूस करने को विवश करता है। परिणामतः पूर्वलब्ध वेतन से भी हाथ धो बैठता है और ऊपर से जूते भी खाता है। (जीव को चाहिए कि) वह जिसका दिया खाए, उसके प्रति आभार स्वीकार करे। गुरु नानक कहते हैं कि स्वामी के साथ अहंकार नहीं, विनम्रता ही श्रेय होती है। विनम्र सेवा से ही लाभ है ॥ २२ ॥

॥ सलोकु महला २ ॥ एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ। नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥ १ ॥ ॥ महला २ ॥ एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ। नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार। आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार। इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर। आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार। नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥ २३ ॥

॥ सलोकु महला २ ॥ वह कैसी उपलब्धि जो अपने कर्म-फल के रूप में हस्तामलक है? हे नानक! अनुग्रह तो वह है (उपलब्धि तो वही है), जो स्वामी के सन्तुष्ट होने पर प्राप्त हो। (तात्पर्य यह कि कर्म-रत रहकर हमें परमात्मा की कृपादृष्टि की वाञ्छा करनी चाहिए) ॥ १ ॥ ॥ महला २ ॥ (सेवक जब समर्पित सेवा करने लगता है, तो उसके मन में स्वामी की लग्न उसे भय की सीमाओं से बाहर ले जाती है)। वह कैसी सेवा कि जिसके रहते भौतिक भय दूर न हो जाय! गुरु नानक कहते हैं कि वास्तविक सेवक उसी को कहा जा सकता है, जो स्वामी में लीन हो जाय ॥२॥ ॥ पउड़ी ॥ गुरुजी कहते हैं कि हरि अनन्त है, उसका आदि-अन्त कहीं नहीं। वह स्वयं रचना करता है और फिर स्वयं ही उसे नष्ट कर देता है। (उसके न्यायानुसार) कुछ को दण्ड-रूप में साँकल-बद्ध (बन्धन-युक्त) होना

पड़ता है और अन्य असंख्य घोड़ों पर सवार हो मौज करते हैं। वही सब करने-करानेवाला है, और मैं किससे पुकार करूँ ? गुरु नानक कहते हैं कि जिस प्रभु ने हमें बनाया है, अन्ततः उसी को हमारा ध्यान भी रखना है ॥ २३ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ। इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े। इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े। तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥ १ ॥ महला २ ॥ आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि। तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि। किसनो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥२॥ पउड़ी ॥ वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ। सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि। साई कार कमावणी धुरि छोडी तिनै पाइ। नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ। सो करे जि तिसै रजाइ ॥ २४ ॥ १ ॥ सुधु

॥ सलोकु म० १ ॥ परमात्मा ने स्वयं जीव रूपी बर्तन गढ़े हैं और वही उन्हें भरता भी है (अर्थात् जीवों की सब आवश्यकताओं को पूरा करता है)। इनमें कुछ में दूध भरा रहता है और कुछ चूल्हे पर ताप सहते रहते हैं (अर्थात् कुछ को वह सुख देता है और कुछ त्रयताप में जलते हैं); कुछ गद्दों पर विश्राम करते हैं, कुछ उनकी सेवा में हाथ बाँधे खड़े रह जाते हैं। गुरु नानक कहते हैं कि जिन पर हरि की कृपा होती है, उन्हें वह अपनाकर सँवार लेता है ॥ १ ॥ महला २ ॥ परमात्मा इस धरती को ख़ुद बनाता है, और वह स्वयं उसे यथास्थान स्थिर करता है। वही उसमें जीव उत्पन्न करके उन्हें देखता है, बनाता है और फिर नाश कर देता है। गुरु नानक कहते हैं कि इस सम्बन्ध में हम किसे क्या कह सकते हैं, वह परमात्मा तो सब कुछ अपने आप में है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ परमात्मा सबसे महान है, उसकी महानता की व्याख्या का सामर्थ्य किसी में नहीं। वह कर्तापुरुष ब्रह्म सर्व-समर्थ, कृपालु तथा समस्त जीवों को रोज़ी देनेवाला है। (जीवों को तो) वही कर्म करना है, जो उसने आरम्भ से ही भाग्य में लिख दिए हैं। गुरु नानकदेव कहते हैं कि उस एक के अतिरिक्त और दूसरा कुछ भी नहीं। वह वही करता है, जो उसे रुचता है (अर्थात् जीव को समर्पित भाव से परमात्मा की इच्छा को शिरोधार्य करके उसके द्वारा दिए सुखों-दुखों को सहर्ष अपना लेना चाहिए) ॥ २४ ॥ १ ॥ सुधु ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ रागु आसा बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ॥ आसा स्री कबीर जीउ॥ गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ। कवन काजि जगु उपजै बिनसै कहहु मोहि समझाइआ ॥ १ ॥ देव करहु दइआ मोहि मारगि लावहु जितु भै बंधन तूटै। जनम मरन दुख फेड़ करम सुख जीअ जनम ते छूटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ फास बंध नही फारै अरु मन सुंनि न लूके। आपा पदु निरबाणु न चीन्हिआ इन बिधि अभिउ न चूके ॥ २ ॥ कही न उपजै उपजी जाणै भाव अभाव बिहूणा। उदै असत की मन बुधि नासी तउ सदा सहजि लिव लीणा ॥ ३ ॥ जिउ प्रतिबिंबु बिंब कउ मिली है उदक कुंभु बिगराना। कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुंनि समानां ॥ ४ ॥ १ ॥

[पद का समूचा भाव जीव के परमात्मा से बिछुड़ने और पुनर्मिलन से सम्बद्ध है]

गुरु की शरण में आकर मैं विनती करता हूँ कि जीव क्यों पैदा किया गया ? (हे सतिगुरु !) मुझे समझाकर बताओ कि यह जीव किसलिए संसार में जन्म-मृत्यु के चक्र में पड़ा है ?॥ १ ॥ हे देव, मुझ पर दया करो और ऐसे मार्ग पर लगाओ कि जिससे सांसारिक भय के बन्धन टूट जायँ। जिससे मैं जन्म-मरण के दुःख, दुष्कर्मों के आस्वाद एवं योनि-बन्धन से मुक्त हो सकूँ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि जीव माया की फाँसी नहीं काट पाता तथा मन भगवद्भजन में एकाग्र नहीं हो पाता; यदि जीव अपनी यथार्थता तथा अनश्वरता को नहीं समझ पाता, तो उसका सांसारिक संशय कभी समाप्त नहीं हो सकता॥ २॥ (यह जीव) होने और अनहोने के अन्तर से बेख़बर अस्तित्व को अनस्तित्व तथा अनस्तित्व को अस्तित्व मानकर जब (उदय-अस्त) जीवन-मरण के मूल रहस्य को समझ लेता है, तभी सदैव सहजावस्था (प्रभु में लीनता) प्राप्त करता है ॥ ३ ॥ जिस प्रकार पानी के घड़े में पड़नेवाला प्रतिबिंब घड़े के फूट जाने से मूलवस्तु में ही लीन हो जाता है, उसी तरह (संशय चुक जाने पर) कबीरजी कहते हैं, जीव प्रभु में विलीन हो जाता है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ आसा ॥ गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग। गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग। ओइ हरि के संत

न आखीअहि बानारसि के ठग ॥ १ ॥ ऐसे संत न मोकउ भावहि । डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बासन मांजि चरावहि ऊपरि काठी धोइ जलावहि । बसुधा खोदि करहि दुइ चूल्हे सारे माणस खावहि ॥ २ ॥ ओइ पापी सदा फिरहि अपराधी मुखहु अपरस कहावहि । सदा सदा फिरहि अभिमानी सगल कुटंब डुबावहि ॥ ३ ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा तैसे करम कमावै । कहु कबीर जिसु सतिगुरु भेटै पुनरपि जनमि न आवै ॥ ४ ॥ २ ॥

[इस पद में बिछुड़े जीव को कर्मकाण्डी वैष्णव के रूप में चित्रित किया गया है]

(वैष्णव-जन) साढ़े-तीन गज़ी धोती लगाकर गले में त्रिसूत्री जनेऊ धारण करते हैं । उनके गले में मालाएँ तथा हाथों में चमचमाते लोटे होते हैं —ऐसे लोग वास्तव में हरि के भक्त न होकर बनारसी ठगों सरीखे होते हैं ॥ १ ॥ इस प्रकार के सन्त मुझे नहीं जचते । वे तो पेड़ को शाखाओं सहित ही हड़प लेते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वे बरतन को भलीभाँति रगड़कर साफ़ करते और तब (चूल्हे पर) चढ़ाते हैं; लकड़ी भी धोकर जलाते हैं । (अधिक सफ़ाई के विचार से) धरती खोदकर दुहरे चूल्हे बनाते हैं, किन्तु (वे) वास्तव में समूचे मनुष्य को खा जाने में परहेज़ नहीं करते ॥ २ ॥ ऐसे पापी (पाखण्डी) सदा अपराधियों की नाईं घूमते-फिरते हैं और अस्पृष्ट (धातु को न छूनेवाले) कहलवाते हैं । वे (बेईमान) अभिमानी होते हैं, (स्वयं तो डूबते ही हैं), समूचा कुटुंब भी डुबाते हैं ॥ ३ ॥ जिस ओर कोई लग गया है, वैसे ही कर्म करता चलता है, किन्तु कबीरजी कहते हैं कि जिस जीव को सच्चा गुरु मिल जाता है, वह पुनः इस संसार में जन्म नहीं पाता (मोक्ष पा जाता है) ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ आसा ॥ बापि दिलासा मेरो कीन्हा । सेज सुखाली मुखि अंम्रितु दीन्हा । तिसु बाप कउ किउ मनहु विसारी । आगै गइआ न बाजी हारी ॥ १ ॥ मुई मेरी माई हउ खरा सुखाला । पहिरउ नही दगली लगै न पाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि तिसु बापै जिनि हउ जाइआ । पंचा ते मेरा संगु चुकाइआ । पंच मारि पावा तलि दीने । हरि सिमरनि मेरा मनु तनु भीने ॥ २ ॥ पिता हमारो वड गोसाई । तिसु पिता पहि हउ किउकरि जाई । सतिगुर मिले त मारगु दिखाइआ । जगत पिता मेरै मनि भाइआ ॥ ३ ॥ हउ पूतु तेरा तूं बापु मेरा ।

एकै ठाहर दुहा बसेरा । कहु कबीर जनि एको बूझिआ । गुर प्रसादि मै सभु किछु सूझिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥

[पद में कवि ने बताया है, क्योंकि उसने माया को त्यागकर परमात्मा की शरण ली है, उसका वियोग समाप्त हो गया है ।]

प्रभु-पिता ने मुझे सहारा दिया है, जिससे मुझे संयोग मिला है तथा मैं परमात्म-लब्धि का अमृत-पान कर पाया हूँ। उस पिता (प्रभु) को मैं अब कभी विस्मृत नहीं करूँगा, उसी से मेरी बाज़ी नहीं हारेगी (अर्थात् मैं निरन्तर विजयी हूँगा) ॥ १ ॥ मेरी माता (यहाँ पोषिका होने के कारण माया) मर गई है, जिससे मुझे आनन्द मिला है। अब मुझे विरक्त होने (कफ़नी पहनकर दुनिया से भागने) की अपेक्षा नहीं रही, अब मुझे कोई शंका नहीं (पाला नहीं मारता) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैं उस परमात्मा-पिता के बलिहार जाता हूँ, जिसने मुझे पैदा किया है, जिसने मुझे पंच-विकारों से मुक्त करवाया है। मैंने पाँचों विकारों को नियन्त्रित करके पाँव तले कुचल दिया है। अब हरि-भजन में मेरा मन-तन लीन हो रहा है ॥ २ ॥ हमारे प्रभु-पिता बड़े शक्तिशाली हैं, उन तक पहुँच पाना मेरे सामर्थ्य में नहीं। (यह तो) केवल सतिगुरु की संगति में ही उनके निकट पहुँचने का मार्ग प्राप्त होता है; और जब वह मिल जाता है तो मन उसी में रम जाता है ॥ ३ ॥ (हे प्रभु !) तू मेरा पिता है, मैं तुम्हारा पुत्र हूँ, दोनों का निवास भी एक ही जगह है; कबीरजी कहते हैं कि (हे पिता !) गुरु-कृपा से जब मैंने तुम्हें पहचान लिया तो अब मुझे सर्वस्व का ज्ञान हो गया है ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ आसा ॥ इकतु पतरि भरि उरकट कुरकट इकतु पतरि भरि पानी । आसि पासि पंच जोगीआ बैठे बीचि नकटदे रानी ॥ १ ॥ नकटी को ठनगनु बाडाडूं । किनहि बिबेकी काटी तूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल माहि नकटी का वासा सगल मारि अउहेरी । सगलिआ की हउ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी ॥ २ ॥ हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै । ओहु हमारै माथै काइमु अउरु हमरै निकटि न आवै ॥ ३ ॥ नाकहु काटी कानहु काटी काटि कूटि कै डारी । कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि लोक की पिआरी ॥ ४ ॥ ४ ॥

(भाव— हरि की भक्ति करनेवाला जीव माया से इतर होता है) (वाम-मार्गी लोग) एक बरतन में पकाया हुआ मुर्गा रखते हैं और एक पात्र में शराब (पानी) रखते हैं। आस-पास वे लोग योगियों की नाईं बैठते हैं

और बीच में निर्लज्ज भोग्या स्त्री होती है (वाम-मार्गी मांस, मदिरा और मैथुन को उपासना के अंग मानते हैं) ॥ १ ॥ नकटी अर्थात् माया घण्टा बजा-बजाकर भरमाती है, कोई विवेकवान ही इसके फन्दों को काट पाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सब जीवों में माया का वास है, सब जीवों को मारकर यह नकटी माया गर्व से चतुर्दिक् निहारती है। सबकी वह बहिन-भांजी के समान निकट सम्बन्धिनी है, केवल उसी की दासता स्वीकारती है, जो उस पर नियन्त्रण करता (उसे ब्याहता) है ॥ २ ॥ हमारा स्वामी बड़ा विवेकी है, वह पूर्णसतिगुरु है, उसके मौजूद होते कोई दूषित शक्ति (माया) हमारे निकट नहीं आ सकती ॥ ३ ॥ कबीरजी कहते हैं कि हमने तो उसके (माया के) नाक-कान काटकर उसे बेकार कर दिया है। वह सन्तों से द्वेष-वैर रखती है, अन्य तीनों लोक उसे चाहते हैं, प्यार करते हैं ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ आसा ॥ जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना । लुंजित मुंजित मोनि जटा धर अंति तऊ मरना ॥ १ ॥ ता ते सेवीअले रामना । रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगम निरगम जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना । तंत मंत्र सभ अउखध जानहि अंति तऊ मरना ॥ २ ॥ राज भोग अरु छत्र सिंघासन बहु सुंदरि रमना । पान कपूर सुबासक चंदन अंति तऊ मरना ॥ ३ ॥ बेद पुरान सिम्रिति सभ खोजे कहू न ऊबरना । कहु कबीर इउ रामहि जंपउ मेटि जनम मरना ॥ ४ ॥ ५ ॥

[इस पद का भाव है कि काल सबको निगलता है, उससे बचाव केवल प्रभु की शरण में है।]

योगी, यती, संन्यासी लोग (मृत्यु पर विजय पाने के लिए) जगह-जगह तीर्थों पर भटकते फिरते हैं। लुंजित (जड़ से निकाले बालों वाले—जैन साधु), मुंजित (मूंज का लँगोट पहननेवाले—वैरागी), मौनी, जटाधारी, किसी भी प्रकार का साधक हो, अन्ततः तो उसे मरना ही होता है ॥ १ ॥ अतः ऐसी स्थिति में राम की उपासना करनी श्रेयस्कर है। जिसकी जिह्वा को राम-नाम का आस्वादन मिल जाता है, उसका जन्म-मरण समाप्त हो जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ शास्त्रों, वेदों तथा ज्योतिष और व्याकरण के बड़े-बड़े विद्वान, जो तन्त्र-मन्त्र के उपचार से भी परिचित हैं, अन्ततः मृत्यु को प्राप्त होते हैं ॥ २ ॥ राज्य-भोग करनेवाले, छत्रधारी सिंहासनासीन, अनेक सुन्दरियों से रमण करनेवाले, कर्पूर तथा चन्दन की सुगन्धियों का

भोग करनेवालों को भी अन्ततः मरना होता है ॥ ३ ॥ वेद, पुराण, स्मृतियों की शोध में कहीं मृत्यु-विजय का मन्त्र नहीं है। अतः कबीरजी कहते हैं कि यदि कोई (जीव) राम-नाम में रत है, उसका जन्म-मरण एकदम चुक जाता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ आसा ॥ फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै। पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥ १ ॥ राजा राम ककरीआ बरे पकाए। किनै बूझनहारै खाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बैठि सिंघु घरि पान लगावै घीस गलउरे लिआवै। घरि घरि मुसरी मंगलु गावहि कछूआ संखु बजावै ॥ २ ॥ बंस को पूतु बीआहन चलिआ सुइने मंडप छाए। रूप कंनिआ सुंदरि बेधी ससै सिंघ गुन गाए ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु कीटी परबतु खाइआ। कछूआ कहै अंगार भि लोरउ लूकी सबदु सुनाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥

[भाव यह है कि प्रभु की शरण लेनेवाले जीव के लिए अनहोनी भी सम्भव होती है।]

यदि हाथी रबाब बजाए, बैल तबले बजाएँ और कौआ ताल बजाने लगे; गधा चोला-पोशाक पहनकर नृत्य करे तथा भैंसा रास-लीला के स्वाँग भरे ॥ १ ॥ परमात्मा के द्वारा पकाए बर्फ़ के वड़े कोई सद्ज्ञानी ही खा सकता है, अर्थात् अनहोनी स्थितियों का भी आस्वाद-भोग कोई ज्ञानवान जीव ही कर सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंह घर में बैठा पान लगाए, छछूंदर उसके लिए गिलोरी (सुपारी) लाए, घर-घर में चुहिया गीत गाए और कछुआ शंख फूँके ॥ २ ॥ बाँझ का पुत्र विवाह कराने निकले और उसके विवाहावसर पर स्वर्णिम मण्डप सजाए जायँ। वह रूपवती कन्या से संयोग करे और सिंह तथा खरगोश मिलकर पुण्यावसर के गुण गाएँ ॥३॥ कबीरजी कहते हैं, ऐ भले लोगो, यहाँ तो चींटी पर्वत को खा गई, कछुआ (पानी के साथ-साथ) अग्नि की माँग भी कर रहा है —यह एक गुह्य शब्द है (इसे समझ लेनेवाला मोक्ष-लब्ध जीव होता है) ॥ ४ ॥ ६ ॥

शब्दों के आन्तरिक भाव इस प्रकार हैं— हाथी–स्थूल मन; बैल–आलसी मन; कौआ–क्रोधावेष्टित मन; गधा–काम, वासनापूर्ण; भैंसा–लोभ; सिंह–अहंकार; छछूंदर–बुद्धि; चुहिया–इन्द्रियाँ; कछुआ–चित्त; बाँझ का पुत्र–जिज्ञासु; कन्या–मुक्ति; खरगोश–विनम्रता; चींटी–वृत्ति।

॥ आसा ॥ बटूआ एकु बहतरि आधारी एको जिसहि दुआरा । नवै खंड की प्रिथमी मागै सो जोगी जगि सारा ॥ १ ॥ ऐसा जोगी नउनिधि पावै । तलका ब्रहमु ले गगनि चरावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिथा गिआन धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै । पंच ततु की करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥ २ ॥ दइआ फाहुरी काइआ करि धूई द्रिसटि की अगनि जलावै । तिस का भाउ लए रिद अंतरि चहु जुग ताड़ी लावै ॥ ३ ॥ सभ जोगतण राम नामु है जिस का पिंडु पराना । कहु कबीर जे किरपा धारै देइ सचा नीसाना ॥ ४ ॥ ७ ॥

एक बटूआ (शरीर) बहत्तर शारीरिक नाड़ियों से बना है, किन्तु उसका एक ही द्वार है। जो नौ खण्डों का स्वामित्व चाहता है, वही योगी संसार में श्रेष्ठ है ॥ १ ॥ इस प्रकार का योगी नौ निधियों को प्राप्त कर लेता है; वह नीचे के श्वासों को प्राणायाम द्वारा नियन्त्रित करता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो अपनी ज्ञान-गुदड़ी को प्रभु-ध्यान की सुई में शब्द के सुदृढ़ धागे से टाँकता है, जो पाँच इन्द्रियों को आसन बना ले (अर्थात् पाँचों इन्द्रियों को नियन्त्रित करता है), वही गुरु-प्रदर्शित-पथ पर चल सकता है ॥ २ ॥ जो दया की फावड़ी और शरीर की धूनी पर आँखों की तृष्णा को जला डाले और परमात्मा का मन में ध्यान करके वह युग-युग तक ध्यानावस्थित रहता है ॥ ३ ॥ ऐसे सभी योगी अपने शरीर और प्राण को राम-नाम-मय बना लेते हैं। यदि उन पर (कबीरजी कहते हैं,) प्रभु की कृपा-दृष्टि हो जाय तो वे परम यथार्थ के ज्ञाता हो जाते हैं ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ आसा ॥ हिंदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई । दिल महि सोचि बिचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ॥ १ ॥ काजी तै कवन कतेब बखानी । पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकति सनेहु करि सुंनति करीऐ मै न बदउगा भाई । जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥ २ ॥ सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ । अरध सरीरी नारि न छोडै ताते हिंदू ही रहीऐ ॥ ३ ॥ छाडि कतेब राम भजु बउरे जुलम करत है भारी । कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचि हारी ॥ ४ ॥ ८ ॥

(हिन्दू-मुसलमानों की भेद-नीति भी दूषित है)। ये हिन्दू और ये मुसलमान कहाँ से आए ? वह कौन है, जिसने ये दोनों अलग रास्ते बनाए हैं ? हे झगड़नेवाले जीव ! ज़रा भलीभाँति विचार कर देख, ये बिहिश्त और दोज़ख़ (स्वर्ग और नरक) किसके उपजाए हैं ? ॥ १ ॥ न्यायपाल ने कौन से शास्त्रों के अनुसार कथन किया है ? इस प्रकार के (तुम्हारे जैसे) पढ़ने-लिखनेवाले सब लोग असफल रहे, कोई यथार्थ के मूल को नहीं पा सका ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (मुसलमानों में) सुन्नत करवाने की परम्परा स्त्री-भोग के लिए है, मैं नहीं मानता कि (प्रभु-मिलन से इसका कोई सम्बन्ध है)। यदि ख़ुदा को किसी को मुसलमान बनाना था, तो क्यों न जन्मजात सुन्नत हो सकी ॥ २ ॥ यदि सुन्नत करने से ही कोई तुरक होता है, तो औरत का क्या होगा ? (स्त्री की सुन्नत तो होती नहीं, फिर क्या वह कभी मुसलमान नहीं कहला सकती ?) स्त्री तो अर्धांगिनी है, छोड़ी नहीं जा सकती, फिर क्यों न (सुन्नत का पाखण्ड) छोड़कर हिन्दू ही बने रहें ? ॥ ३ ॥ ऐ मूर्ख जीव, शास्त्रों-क़ुरानों को छोड़कर केवल सच्चे परमात्मा का नाम जपा कर, दूसरों पर अत्याचार न कर, और (कबीरजी कहते हैं कि) राम की शरण में ही (सुरक्षा है), मुसलमानों की माथा-पच्ची में वह लक्ष्योपलब्धि नहीं ॥ ४ ॥ ८ ॥

॥ आसा ॥ जब लगु तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई । तेल जले बाती ठहरानी सूंना मंदरु होई ॥ १ ॥ रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई । तूं राम नामु जपि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ का की मात पिता कहु का को कवन पुरख की जोई । घट फूटे कोऊ बात न पूछै काढहु काढहु होई ॥ २ ॥ देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गए भाई । लट छिटकाए तिरीआ रोवै हंसु इकेला जाई ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई । इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नही हटै गुसाई ॥ ४ ॥ ९ ॥ दुतुके

(भाव यह है कि जीवन छोटा है, प्रभु से मिलन का साधन जुटाओ) जब तक दिये में तेल और बाती होती है, उसके आलोक में सब कुछ सूझता है। तेल के चुक जाने पर बाती बुझ जाती है और चतुर्दिक् अन्धकार हो जाता है, घर सूना लगने लगता है, अर्थात् निष्प्राण देह का कोई मोल नहीं ॥ १ ॥ ऐ बावरे, उस समय तुम्हें घड़ी भर के लिए भी कोई घर में रखने को तैयार नहीं होता। इसलिए अपने भविष्य की सुरक्षा के लिए प्रभु-भजन कर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कौन किसकी माता है, किसका कोई पिता है या कोई किसकी पत्नी है (ये सम्बन्ध सब मिथ्या हैं), शरीर का

घट फूटने (मृत्यु होने) पर कोई बात भी नहीं पूछता, सब मृतदेह को घर से निकालने की जल्दी मचाते हैं ॥ २ ॥ उस समय देहरी पर बैठी जननी भी चाहे रोती रहे, लोग अरथी उठाकर श्मशान को ले जाते हैं। बाल बिखेरे पत्नी चाहे कितना विलाप करे, वह आत्मा (प्राण) का संग नहीं दे सकती (आत्मा तो अकेली ही जाती है) ॥ ३ ॥ कबीरजी कहते हैं कि हे भले लोगो ! सुनो, इस भवसागर में जीव पर तब तक यमदूतों का अत्याचार ही होता रहेगा, जब तक कि वह प्रभु की शरण नहीं लेगा ॥४॥ ९॥ दुतुके

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ आसा स्री कबीर जीउ के चउपदे इक तुके ॥ सनक सनंद अंतु नही पाइआ। बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई। सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु करि मटुकी मन माहि बिलोई। इसु मटुकी महि सबदु संजोई ॥ २ ॥ हरि का बिलोवना मन का बीचारा। गुर प्रसादि पावै अंम्रित धारा ॥ ३ ॥ कहु कबीर नदरि करे जे मींरा। राम नाम लगि उतरे तीरा ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥

(भाव— बिना सत्यनाम का भेद जाने बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी प्रभु को नहीं पा सके।) सनक-सनन्दन (ब्रह्मा-पुत्र) सरीखे साधकों को भी प्रभु का भेद ज्ञात नहीं हो पाया। ब्रह्मा स्वयं वेदों की पढ़ाई और सृजन में संलग्न रहा और इसी प्रकार अमूल्य जीवन गँवा दिया ॥ १ ॥ हे भाई, बार-बार हरि-नाम का अभ्यास करो (उसे मथ लो), ऐसे शान्त भाव से मथानी चलाओ (अर्थात् हरि-भजन करो) कि सार-तत्व निश्चय ही आपकी उपलब्धि हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु-नाम को बिलोने के लिए शरीर की मटकी में मन की मथनी अपेक्षित है। मटकी में शब्द रूपी दही एकत्र करो ॥ २ ॥ हरि-नाम को बिलोने का वास्तविक रूप मन को संयमित करने में है। उसी से गुरु-कृपा-प्रसाद के रूप में अमृत (मक्खन) प्राप्त होता है ॥ ३ ॥ कबीरजी कहते हैं कि यदि स्वयं स्वामी दया करे, तो जीव राम-नाम की नौका में (भवसागर से) पार हो जाता है ॥४॥१॥१०॥

॥ आसा ॥ बाती सूकी तेलु निखूटा। मंदलु न बाजै नटु पै सूता ॥ १ ॥ बुझि गई अगनि न निकसिउ धूंआ। रवि रहिआ एकु अवरु नही दूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूटी तंतु न बजै रबाबु। भूलि बिगारिओ अपना काजु ॥ २ ॥ कथनी बदनी

कहनु कहावनु । समझि परी तउ बिसरिओ गावनु ॥ ३ ॥ कहत कबीर पंच जो चूरे । तिन ते नाहि परमपदु दूरे ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥

(जो लोग कर्मकाण्डी भक्ति करते हैं, दिया जलाकर आरती करते हैं), तेल जल जाने पर उनकी बाती सूख गई है (बुझ जाती है), ढोल-मंजीर बजने बन्द हो गए हैं और स्वयं नर्तक थककर सो गया है, अर्थात् आलोक, संगीत और नृत्य द्वारा प्रभु-भक्ति का कुमार्ग मन ने (नर्तक ने) छोड़ दिया है ॥ १ ॥ धूनी रमानेवालों की अग्नि बुझ गई है, अब तो धुआँ भी नहीं रहा, अर्थात् प्रभु की शरण पा जाने पर यह कर्मकाण्ड भी छूट गया है; साधक जीव के लिए अब तो चतुर्दिक् सच्चा परमेश्वर ही व्याप्त है, दूसरा और कोई नहीं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वादन-संगीत भी अब अन्त हुआ है, तन्तु टूट गए हैं, रबाब बजने में असमर्थ है। अब तक उसी में संलग्न रहकर जीव ने अपना-आप बिगाड़ रखा था ॥ २ ॥ ज़बानी बातें तो सब कहने-सुनने मात्र की थीं, जब यथार्थ ज्ञान हुआ तो दिखावे का संगीत अन्त को प्राप्त हुआ ॥ ३ ॥ कबीरजी कहते हैं कि जो जीव पाँचों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) को मार भगाए, उससे परम पद (मोक्षोपलब्धि) दूर नहीं होता ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥

[इस पद में कबीरजी ने कर्मकाण्डी भक्ति को त्यागकर सही अर्थों में पंचविकारों के त्याग तथा प्रभु-शरण ग्रहण करने का सुझाव दिया है।]

॥ आसा ॥ सुतु अपराध करत है जेते । जननी चीति न राखसि तेते ॥ १ ॥ रामईआ हउ बारिकु तेरा । काहे न खंडसि अवगनु मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे अति क्रोप करे करि धाइआ । ता भी चीति न राखसि माइआ ॥ २ ॥ चिंत भवनि मनु परिओ हमारा । नाम बिना कैसे उतरसि पारा ॥३॥ देहि बिमल मति सदा सरीरा । सहजि सहजि गुन रवै कबीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥

(समग्र पद में भाव यह है कि जीव निर्बल है, वह अपने गुणों से विजयी नहीं हो सकता, उसे बालक-समान अपने को प्रभु-पिता के प्रति समर्पित करना चाहिए)। जिस प्रकार पुत्र कितने भी अपराध करे, माता उन्हें मन में नहीं लाती ॥ १ ॥ हे प्रभु, मैं तो तुम्हारा ही बालक हूँ, तू क्यों नहीं दया करके मेरे अवगुण नष्ट कर देता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि पुत्र अतीव क्रुद्ध होकर दूर भी चला जाए, तो भी माता उसकी भूलों को

याद नहीं करती ।। २ ।। हमें मन में चिन्ता लगी है कि परमात्मा के नाम के बग़ैर भवसागर से क्योंकर निस्तार होगा ।। ३ ।। (हे प्रभु !) मेरे इस शरीर में कृपावश विमल बुद्धि प्रदान करो। कबीरजी का कथन है कि हमें सहज में अर्थात् प्रकृत्यानुसार प्रभु का यश गाना ही अपेक्षित है ।। ४ ।।३ ।। १२ ।।

।। आसा ।। हज हमारी गोमती तीर। जहा बसहि पीतंबर पीर ।। १ ।। वाहु वाहु किआ खूबु गावता है। हरि का नामु मेरै मनि भावता है ।। १ ।। रहाउ ।। नारद सारद करहि खवासी। पासि बैठी बीबी कवलादासी ।। २ ।। कंठे माला जिहवा रामु। सहंस नामु लै लै करउ सलामु ।। ३ ।। कहत कबीर राम गुन गावउ। हिंदू तुरक दोऊ समझावउ ।। ४ ।। ४ ।। १३ ।।

हमारी हज्ज (मक्के में नहीं) गोमती-किनारे ही हो जाती है, जहाँ हमारा पीताम्बर (इष्टदेव कृष्ण) निवसित है ।। १ ।। क्या आनन्द है ! वह मस्ती में झूम करके ऐसा गाता है कि मुझे भी हरि-नाम मन में भा जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। नारद हो या शारदा, सब उस पूर्ण परब्रह्म के सेवक हैं और वहीं उसकी माया-दासी लक्ष्मी भी विराजती है ।। २ ।। गले में माला धारण कर, जिह्वा पर राम का नाम ले-लेकर हज़ारों बार उसे नमन करो ।। ३ ।। कबीरजी हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को इसी चलन का उपदेश देते हैं ।। ४ ।। ४ ।। १३ ।।

आसा स्री कबीर जीउ के पंचपदे ९ दुतुके ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ। जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ।। १ ।। भूली मालनी है एउ। सतिगुरु जागता है देउ ।। १ ।। रहाउ ।। ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ। तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किस की सेउ ।। २ ।। पाखान गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ। जे एह मूरति साची है तउ गढ़णहारे खाउ ।। ३ ।। भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु। भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ।। ४ ।। मालिनि

भूली जगु भुलाना हम भुलाने नाहि। कहु कबीर हम राम राखे क्रिपा करि हरि राइ ॥ ५ ॥ १ ॥ १४ ॥

(पद मूर्ति-पूजा के भ्रम के विरुद्ध है)। मालिन पत्र (पत्र-पुष्प, देवार्चन के लिए) तोड़ती है, उस प्रत्येक पत्र में जीव है, किन्तु जिस पत्थर (मूर्ति पर चढ़ाने) के लिए वे पत्र तोड़े जाते हैं, वह पत्थर निर्जीव है ॥१॥ मालिन (साधारण जीव) भूली है, नहीं जानती कि सतिगुरु सजीव, सजग देव है (उसी की पूजा-अर्चना करनी चाहिए) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हे मालिन! हे जीवात्मा!) पूजा के लिए जो तुम पत्र, शाखाएँ और फूल तोड़ती हो, वे पत्र ब्रह्मा हैं, विष्णु शाखाएँ हैं और स्वयं शिव फूल हैं, इस प्रकार तुम तीनों मूल देवों को ही तोड़ देती हो, तो पूजा किसकी करती हो ॥ २ ॥ मूर्तिकार पत्थर को गढ़कर मूर्ति बनाता है, गढ़ते हुए उसकी छाती पर पाँव भी रखता है, यदि वह मूर्ति सत्यस्वरूप होती तो पहले गढ़नेवाले को (छाती पर पाँव रखने के कारण अपमान करनेवाले को) खाएगी ॥ ३ ॥ (पुजारी मूर्ति का सहारा लेकर) भात, दाल, हलुआ, खस्ता, पंजीरी आदि वस्तुओं का भोग करता है, मूर्ति को तो कुछ भी नहीं मिलता ॥ ४ ॥ मालिन पथ भूली है, सारा विश्व उसी पथ पर चला जा रहा है, हम सत्पथ के राही हैं, हम नहीं भूले। कबीरजी कहते हैं कि स्वयं प्रभु ने हम पर कृपा करके हमें सही राह दी है ॥ ५ ॥ १ ॥ १४ ॥

॥ आसा ॥ बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कीओ। तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥ १ ॥ मेरी मेरी करते जनमु गइओ। साइरु सोखि भुजं बलइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूके सरवरि पालि बंधावै लूणै खेति हथ वारि करै। आइओ चोरु तुरंतह ले गइओ मेरी राखत मुगधु फिरै ॥ २ ॥ चरन सीसु कर कंपन लागे नैनी नीरु असार बहै। जिहवा बचनु सुधु नही निकसै तब रे धरम की आस करै ॥ ३ ॥ हरि जीउ क्रिपा करै लिव लावै लाहा हरि हरि नामु लीओ। गुर परसादी हरि धनु पाइओ अंते चलदिआ नालि चलिओ ॥ ४ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु अनु धनु कछूऐ लै न गइओ। आई तलब गोपालराइ की माइआ मंदर छोडि चलिओ ॥ ५ ॥ २ ॥ १५ ॥

(मनुष्य-जीवन में) बारह वर्ष तक बचपने में रहता है, बीस वर्ष (यौवन में) कोई तप नहीं करता। तीस वर्ष तक पहुँचकर भी कोई

देव-पूजा नहीं की और अन्ततः वृद्धावस्था आ जाती है ।। १ ।। सारा जीवन 'मैं-मेरी' में बीत जाता है और अन्ततः (सत्ता का) सरोवर सूखने पर भुजबल भी नष्ट हो जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। (ऐसी दशा को प्राप्त होने पर) सूखे सरोवर के गिर्द बाँध बाँधने एवं कटे खेत के गिर्द बाहों की बाड़ बनाने का निरर्थक प्रयास करता है, किन्तु चोर (मौत) आ ही पहुँचता है और सर्वस्व चुरा लेता है उस मूर्ख जीवात्मा का, जो अपने प्राण बचाने को आतुर रहता है ।। २ ।। (वृद्धावस्था में) चरण, शीर्ष तथा भुजाएँ काँपने लगते हैं, आँखों से अनवरत पानी बहता है । उस समय जिह्वा से सीधा शब्द नहीं निकलता, और तब वह धर्म की आशा करता है ।। ३ ।। यदि परमात्मा की कृपा हो जाए तो प्रभु से प्यार हो और हरि-नाम का लाभ मिले । यह हरि-धन गुरु-कृपा से मिलता है, जो अन्त समय भी साथ चलता है (अन्य सब धन तो यहीं छूट जाते हैं) ।। ४ ।। कबीरजी कहते हैं कि हे भले लोगो, कोई भी अपना अन्न-धन आदि साथ नहीं ले जा सकता । बस परमात्मा का बुलावा आते ही सबको यह माया-मन्दिर छोड़कर चल देना होता है ।। ५ ।। २ ।। १५ ।।

।। आसा ।। काहू दीन्हे पाट पटंबर काहू पलघ निवारा । काहू गरी गोदरी नाही काहू खान परारा ।। १ ।। अहिरख वादु न कीजै रे मन । सुक्रितु करि करि लीजै रे मन ।। १ ।। रहाउ ।। कुम्हारै एक जु माटी गूंधी बहु बिधि बानी लाई । काहू महि मोती मुकताहल काहू बिआधि लगाई ।। २ ।। सूमहि धनु राखन कउ दीआ मुगधु कहै धनु मेरा । जम का डंडु मूंड महि लागै खिन महि करै निबेरा ।। ३ ।। हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई । जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मंनि वसाई ।। ४ ।। कहै कबीरु सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी । चिरगट फारि चटारा लै गइओ तरी तागरी छूटी ।। ५ ।। ३ ।। १६ ।।

(प्रभु ने) किसी को रेशम और रेशमी वस्त्र दिए हैं, किसी को पट्टीदार (निवार वाले) पलंग उपलब्ध हैं । कुछ को जीर्ण गुदड़ी या घास-फूस का घर भी नसीब नहीं ।। १ ।। हे मन, ईर्ष्या के झगड़े में न पड़ —कुछ पाना है तो केवल सत्कर्म कर, उसी में उपलब्धि निहित है ।। १ ।। रहाउ ।। कुम्हार मिट्टी एक ही जैसी गूँधता है, हाँ उसे अनेक प्रकार के रंग लगाकर विविधता देते चलता है अर्थात् परमात्मा सबका निर्माता है, बस किसी को गोरा या काला कर देता है, किसी को अमीर

या ग़रीब बना देता है —यही विविधता है, निर्माण-सामग्री तो एक ही है। (विविधता बनाते हुए) किसी में मोती-माणिक लगाकर (सुन्दर बनाता है) तो किसी में दोष पैदा कर देता है ॥ २ ॥ कंजूस को केवल अमानत के तौर पर रखने को धन दिया, वह मूर्ख उसे अपना ही समझने लगता है। उधर यम-दण्ड सिर में पड़ते ही क्षण भर में बात निपट जाती है, अर्थात् मनुष्य मर जाता है, धन पड़ा रह जाता है ॥ ३ ॥ जो जीव प्रभु-इच्छा में मग्न रहते हैं, वे ही सच्चे हरिजन हैं। वे प्रभु की इच्छा को मन में बसाते और उसे परम सत्य मानकर सुख के भागी बनते हैं ॥ ४ ॥ कबीरजी कहते हैं कि हे भले लोगो, यह मेरी-मेरी की रट मिथ्या है, मृत्यु शरीर के पिंजरे को तोड़कर जीवात्मा को हर ले जाती है, पीछे निर्जीव देह अकारथ होती है ॥ ५ ॥ ३ ॥ १६ ॥

॥ आसा ॥ हम मसकीन खुदाई बंदे तुमरा जसु मनि भावै। अलह अवलि दीन को साहिबु जोरु नही फुरमावै ॥ १ ॥ काजी बोलिआ बनि नही आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई। सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥ २ ॥ निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै। पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥ ३ ॥ खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी। आपु जनाइ अवर कउ जानै तब होइ भिसत सरीकी ॥ ४ ॥ माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रहमु पछाना। कहै कबीरा भिसत छोडि करि दोजक सिउ मनु माना ॥ ५ ॥ ४ ॥ १७ ॥

हम बेचारे, परमात्मा के सेवक हैं, हमें उसी प्रभु का यशोगान प्रिय है। परमात्मा सर्वप्रथम है, ग़रीबों का स्वामी है, वह किसी पर बलात् अन्याय करने को नहीं कहता ॥ १ ॥ हे नैयायिक, उसके सम्मुख तुम्हारा निर्णय उचित नहीं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोज़े रखने, दिखावे की नमाज़ पढ़ने या कलमा कहने से बिहिश्त (स्वर्ग) नहीं मिलता। यदि कोई समझ सके तो (जानने योग्य बात यह है कि) सत्तर काबे शरीर में ही मौजूद हैं, वहीं सत्तर (अनेक) हज्जें हो सकती हैं ॥२ ॥ सच्ची नमाज़ तभी सम्भव है, यदि जीव न्यायपूर्ण विचार करे, वास्तविक कलमा भी उस अकल (रचना-रूप-रहित) को जान लेने में ही है ॥ पाँचों मुस्लिम दासियाँ (पंच-विकार जिन्हें नियन्त्रित करके दास बनाया गया हो) नमाज़ का आसन बिछाएँ, तब कहीं मनुष्य धर्म का यथार्थ रूप पहचान सकता है ॥ ३ ॥ (अतः

ऐ जीव!) प्रभु को पहचान, मन में उसका ध्यान कर और अहम् को मारकर प्रभाव-हीन बना दे । (जीव) पहले अपने-आप को समझे, फिर औरों को समझने का प्रयास करे तो कहीं वह बिहिश्त का अधिकारी हो सकता है ॥ ४ ॥ (मैंने) जान लिया है कि मिट्टी एक ही है, जीवों के रूप तरह-तरह के हैं; उन सबमें एक ही ब्रह्म व्याप्त है । (इसलिए) मैं तुम्हारे बिहिश्त को छोड़कर दोज़ख (नरक) में जाने में रुचि रखने लगा हूँ (क्योंकि बिहिश्त पाने के लिए जो तरीक़े तुम लोगों ने अपना लिये हैं, मुझे वे स्वीकार नहीं) ॥ ५ ॥ ४ ॥ १७ ॥

॥ आसा ॥ गगन नगरि इक बूंद न बरखै नादु कहा जु समाना । पारब्रहम परमेसुरमाधो परम हंसु ले सिधाना ॥ १ ॥ बाबा बोलते ते कहा गए । देही के संगि रहते । सुरति माहि जो निरते करते कथा बारता कहते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बजावनहारो कहा गइओ जिनि इहु मंदरु कीन्हा । साखी सबदु सुरति नही उपजै। खिचि तेजु सभु लीन्हा ॥ २ ॥ स्रवनन बिकल भए संगि तेरे इंद्री का बलु थाका । चरन रहे कर ढरकि परे है मुखहु न निकसै बाता ॥ ३ ॥ थाके पंच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते । थाका मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥ ४ ॥ मिरतक भए दसै बंद छूटे मित्र भाई सभ छोरे । कहत कबीरा जो हरि धिआवै जीवत बंधन तोरे ॥ ५ ॥ ५ ॥ १८ ॥

गगन-नगरी (दशम-द्वार) में एक बूँद भी नहीं बरसती (अर्थात् अब कोमल भावों का अभाव हो गया है) । उसमें समाई ध्वनि भी अकस्मात् ग़ायब हो गई है ? निर्मल जीवात्मा अपने परब्रह्म परमेश्वर में ही विलीन हो गया है ॥ १ ॥ जो बोलता था (प्राण-शक्ति), वह कहाँ गया । वह तो सदैव शरीर के साथ रहता था; वह आत्मा में सुनने-देखने तथा कथा-वार्ता कहने की मूल शक्ति थी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ शरीर रूपी मंदर (ढोल) को बजानेवाला कहाँ चला जाता है (अर्थात् शरीर का संचालक प्राण कहाँ जाता है) ? चेतना के अभाव में आत्मा की साक्षी आवाज़ भी अब पैदा नहीं होती— समूची सत्ता ही निकाल ली गई है ॥ २ ॥ कान भी अब श्रवण-शक्ति-विहीन हो गए हैं, अन्य सब इन्द्रियाँ निर्बल पड़ गई हैं । चरण चलने में असमर्थ हैं, हाथ शिथिल पड़ गए हैं और मुख से बात नहीं निकलती ॥ ३ ॥ पाँचों तस्कर (विकार) अब संघर्ष करते थक चुके हैं, अब वे अपने-आप में ही भ्रमते हैं । मन रूपी हाथी अब थक गया है,

इन्द्रियों को चलानेवाली (सूत्रधार) सत्ता वहाँ से चली गई है (अर्थात् प्राण निकल गए हैं) ॥ ४ ॥ मृत्यूपरांत तो सब किसी के बन्धन टूट जाते हैं, मित्र-भाई सब रह जाते हैं; कबीरजी कहते हैं कि परमात्मा का भजन करनेवाला जीव जीवित अवस्था में ही इन बन्धनों को तोड़ देता है ॥ ५ ॥ ५ ॥ १८ ॥

॥ आसा इक तुके ४ ॥ सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ । जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ ॥ १ ॥ मारु मारु स्त्रपनी निरमल जलि पैठी । जिनि त्रिभवणु डसीअले गुर प्रसादि डीठी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्त्रपनी स्त्रपनी किआ कहहु भाई । जिनि साचु पछानिआ तिनि स्त्रपनी खाई ॥ २ ॥ स्त्रपनी ते आन छूछ नही अवरा । स्त्रपनी जीती कहा करै जमरा ॥ ३ ॥ इह स्त्रपनी ता की कीती होई । बलु अबलु किआ इस ते होई ॥ ४ ॥ इह बसती ता बसत सरीरा । गुर प्रसादि सहजि तरे कबीरा ॥ ५ ॥ ६ ॥ १६ ॥

उस माया (सर्पिणी) से बढ़कर कोई बलवान नहीं, जिसने ब्रह्मा, विष्णु और शिव, सबको छला है ॥ १ ॥ मारा-मार करती हुई यह माया-सर्पिणी अब साधु-संगति रूपी निर्मल जल में प्रवेश कर गई है। उसने तीनों भुवन अर्थात् संसार को डस लिया था, वह अब गुरु-कृपा से दीख पड़ने लगी है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! यह सर्पिणी-सर्पिणी क्या कहते हो, केवल परम सत्य से अभिज्ञ जीव ही इस सर्पिणी को खाते हैं, अर्थात् माया का नाश करते हैं ॥ २ ॥ माया-साँपिन से बढ़कर और कोई बेकार वस्तु नहीं; जिसने इस सर्पिणी को जीत लिया, यमराज भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता ॥ ३ ॥ यह नागिन उस प्रभु की बनाई हुई है, इस पर कोई बल-अबल नहीं चलता ॥ ४ ॥ जब तक इसका प्रभाव बना रहता है, तब तक (जीवात्मा) शरीर में बसता है अर्थात् बार-बार जन्म लेता है। कबीरजी कहते हैं कि यदि गुरु की कृपा हो जाय तो जीव सहज में ही मोक्ष को पा लेता है ॥ ५ ॥ ६ ॥ १९ ॥

॥ आसा ॥ कहा सुआन कउ सिम्रिति सुनाए । कहा साकत पहि हरिगुन गाए ॥ १ ॥ राम राम राम रमे रमि रहीऐ । साकत सिउ भूलि नही कहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कऊआ कहा कपूर चराए । कह बिसीअर कउ दूधु पीआए ॥ २ ॥ सत संगति मिलि बिबेक बुधि होई । पारसु परसि लोहा कंचनु

सोई ॥ ३ ॥ साकतु सुआनु सभु करे कराइआ । जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥ ४ ॥ अंम्रितु लै लै नीमु सिंचाई । कहत कबीर उआ को सहजु न जाई ॥ ५ ॥ ७ ॥ २० ॥

कुत्ते को धर्मशास्त्रों का ज्ञान देने का क्या लाभ है ? शाक्त (यहाँ मायावादी) को प्रभु के गुण कहने का क्या लाभ ? ॥ १ ॥ (जीव को) स्वयं ही राम-नाम में लीन रहना चाहिए, मायावादी (शाक्त) से भूलकर भी राम-वार्ता नहीं करनी चाहिए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कौए को कर्पूर खिलाने से क्या लाभ ? विषधर को दूध पिलाने का क्या लाभ ? (भाव यह है कि कौए की विष्ठा-भक्षी चोंच कर्पूर से सुगंधमयी न होगी और न ही विषधर में दूध-पान से अमृत पैदा होगा ।) ॥ २ ॥ सत्संगति में रहकर जीव को बुद्धि-विवेक की उपलब्धि होती है, (जैसे) पारस के स्पर्श से लोहा कंचन (स्वर्ण) हो जाता है ॥ ३ ॥ शाक्त और कुत्ता (अपने कर्मों के कारण) ईश्वरेच्छा से चलते हैं और बार-बार पूर्व कर्मों से बँधकर आवागमन का शिकार होते हैं ॥ ४ ॥ (यदि कोई) अमृत ले-लेकर भी नीम की सिंचाई करे, तो भी कबीरजी कहते हैं, वह उसके (कड़वे) स्वभाव को नहीं बदल सकता ॥ ५ ॥ ७ ॥ २० ॥

॥ आसा ॥ लंका सा कोटु समुंद सी खाई । तिह रावन घर खबरि न पाई ॥ १ ॥ किआ मागउ किछु थिरु न रहाई । देखत नैन चलिओ जगु जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु लखु पूत सवा लखु नाती । तिह रावन घर दीआ न बाती ॥ २ ॥ चंदु सूरजु जा के तपत रसोई । बैसंतरु जा के कपरे धोई ॥ ३ ॥ गुरमति रामै नामि बसाई । असथिरु रहै न कतहूं जाई ॥ ४ ॥ कहत कबीर सुनहु रे लोई । राम नाम बिनु मुकति न होई ॥ ५ ॥ ८ ॥ २१ ॥

(मनुष्य अपनी सुरक्षा के लाख प्रबन्ध करे, प्रभु-नाम के बिना उसका कोई सच्चा सहायी नहीं) । जिस रावण का सुरक्षा-दुर्ग लंका सरीखा था, उसके गिर्द समुद्र जैसी स्वाभाविक खाई थी, उसके घर का भी आज कुछ पता नहीं चलता (अर्थात् वह भी नष्ट हो गया) ॥ १ ॥ क्या माँगें, कुछ भी तो स्थिर नहीं रहता, आँखों देखते-देखते संसार नाश हो रहा है (मरता जा रहा है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (जिस रावण के) एक लाख पुत्र और सवा लाख नाती-पोते थे, आज उसके घर दिया-बत्ती भी दीख नहीं पड़ती ॥ २ ॥ (वह इतना चमत्कारी था कि) चन्द्र-सूर्य सरीखे बलवान देवता उसकी रसोई करते थे और अग्नि कपड़े धोती थी ॥ ३ ॥

(जिन जीवों ने) गुरु की शिक्षा से अपने मन को राम-नाम में लीन कर लिया है, वे स्थिर रहते हैं, कभी दोलायमान नहीं होते ।। ४ ।। कबीरजी कहते हैं कि हे लोई ! (लोग) राम-नाम के बिना किसी की मुक्ति सम्भव नहीं ।। ५ ।। ८ ।। २१ ।।

।। आसा ।। पहिला पूतु पिछै री माई । गुरु लागो चेले की पाई ।। १ ।। एकु अचंभउ सुनहु तुम्ह भाई । देखत सिंघु चरावत गाई ।। १ ।। रहाउ ।। जल की मछुली तरवरि बिआई । देखत कुतरा लै गई बिलाई ।। २ ।। तलै रे बैसा ऊपरि सूला । तिस कै पेडि लगे फल फूला ।। ३ ।। घोरै चरि भैस चरावन जाई । बाहरि बैलु गोनि घरि आई ।। ४ ।। कहत कबीर जु इस पद बूझै । राम रमत तिसु सभु किछु सूझै ।। ५ ।। ९ ।। २२ ।। बाईस चउपदे तथा पंचपदे ।।

हे भाई, पहले पुत्र (जीव) अपने-आप में विचरता था, बाद में माया (जन्म देनेवाली माता) के घेरे में फँसकर आवागमन में पड़ गया । वह स्वयं (आलोकपूर्ण) गुरु के समान था, किन्तु मन रूपी चेले के निर्देश पर चलने लगा ।। १ ।। हे भाई, एक विचित्र बात सुनो— ब्रह्म चेतन रूपी सिंह (स्व-स्वरूप में विचरती आत्मा) अब (गोपालों की नाईं) इन्द्रियों रूपी गौओं को (विषय-विकार रूपी) घास चरा रहा दीखता है ।। १ ।। रहाउ ।। परम चैतन्य के जल में अडोल निवसित मछली (स्थिर जीव) विकारों के पेड़ पर प्रसूत हुई है (अर्थात् स्थिर जीव अब विकारों का शिकार हो गया है), सन्तोष रूपी कुत्ते को तृष्णा रूपी बिल्ली खा गई ।। २ ।। जीव के दैवी गुणों की शाखाएँ नीचे दब गईं, अज्ञान रूपी मूल काँटों की तरह ऊपर उठ आए हैं और उसके तने में दुष्कर्म के फूल और दुःखों के फल लगने लगे हैं ।। ३ ।। प्राण रूपी घोड़े पर चढ़कर आत्मा आवागमन में पड़ी है । धीरज रूपी बैल अभी बाहर है, जबकि वासना रूपी बोरे घर में आ गए हैं ।। ४ ।। कबीरजी कहते हैं कि जो जीवात्मा इस पद का (उपर्युक्त) भाव जान लेता है, वह राम-नाम में रमण करते हुए संसार के सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है ।। ५ ।। ९ ।। २२ ।।

आसा स्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दुतुके ७ इक तुका १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। बिंदु ते जिनि पिंडु कीआ अगनि कुंड रहाइआ । दस मास माता उदरि राखिआ बहुरि लागी

माइआ ॥ १ ॥ प्रानी काहे कउ लोभि लागे रतन जनमु खोइआ । पूरब जनमि करम भूमि बीजु नाही बोइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारिक ते बिरधि भइआ होना सो होइआ । जा जमु आइ झोट पकरै तबहि काहे रोइआ ॥ २ ॥ जीवनै की आस करहि जमु निहारै सासा । बाजीगरी संसारु कबीरा चेति ढालि पासा ॥ ३ ॥ १ ॥ २३ ॥

जिसने वीर्य-बिन्दु से शरीर उत्पन्न किया, गर्भ रूपी अग्निकुण्ड में रक्षा की, दस मास तक माता के पेट में रखा; और फिर जन्म लेने पर माया प्रिय लगने लगी। (अर्थात् सब कुछ करनेवाला प्रभु भूल गया, जीव माया का रस लेने लगा) ॥ १ ॥ हे प्राणी ! क्यों तुमने दुनिया के लोभों में पड़कर अमूल्य रत्न सरीखा मानव-जीवन व्यर्थ कर दिया; क्यों तुमने कर्म-धरती रूपी पूर्व जन्म में सत्कर्मों का बीज नहीं बोया ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मनुष्य, तू बालक से वृद्ध हो गया, काल-चक्र में कुछ से कुछ बना, किन्तु जब यमराज ने आकर केशों से पकड़ घसीटा, तभी क्यों तुझे रोना याद आया ? (अर्थात् बचपन से वृद्धावस्था तक का समूचा जीवन व्यर्थ गँवा दिया, राम-नाम का गान नहीं किया, मृत्यु-समय ही तुझे यह क्यों सूझा ?) ॥ २ ॥ तू जीने की आशा कर रहा है और मौत तेरी राह देख रही है (साँस गिन रही है)। कबीरजी कहते हैं कि यह संसार तो बाज़ीगर का खेल है, अतः जरा सोच-समझकर (चेतकर) अपनी चाल चल ॥ ३ ॥ १ ॥ २३ ॥

॥ आसा ॥ तनु रैनी मनु पुनरपि करिहउ पाचउ तत बराती । राम राइ सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रंग राती ॥ १ ॥ गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा । मेरे ग्रिह आए राजा राम भतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाभि कमल महि बेदी रचिले ब्रहमगिआन उचारा । रामराइ सो दूलहु पाइओ अस बडभाग हमारा ॥ २ ॥ सुरि नर मुनि जन कउतक आए कोटि तेतीसउ जानां । कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना ॥ ३ ॥ २ ॥ २४ ॥

(मैं) शरीर को रँगीला बनाकर मन को पुनः प्रभु-नाम के रंग में रँग लूँगा और पंचतत्वों को बराती बनाकर परमात्मा के संग फेरे लूँगा और उसी के प्यार में तल्लीन हो जाऊँगा ॥ १ ॥ हे नव-विवाहित सखियो ! ख़ुशी के गीत गाओ, आज मेरे घर (मन में) स्वयं प्रभु राम मेरे

प्रियतम (दूल्हा) बनकर आ गए हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैंने हृदय-कमल में विवाह-वेदी गाड़कर ब्रह्मज्ञान रूपी मन्त्र पढ़ा; परमात्मा स्वयं मेरा वर बना, मैं बड़ी सौभाग्यशालिनी हूँ ॥ २ ॥ (मेरे विवाह की साक्षी के लिए) साधुजन, ऋषि-मुनि और तेंतीस करोड़ देवता भी आए हैं, और (कबीरजी कहते हैं कि) वह एक मात्र परमपुरुष (परमात्मा) मुझे ब्याह कर ले चला है। (अर्थात् मेरी आत्मा प्रभु की शरण में विलीनता को प्राप्त हुई है।) ॥ ३ ॥ २ ॥ २४ ॥

॥ आसा ॥ सासु की दुखी ससुर की पिआरी जेठ के नामि डरउ रे। सखी सहेली ननद गहेली देवर कै बिरहि जरउ रे ॥ १ ॥ मेरी मति बउरी मै रामु बिसारिओ। किन बिधि रहनि रहउ रे। सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु कासउ कहउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बापु सावका करै लराई माइआ सद मतवारी। बडे भाई कै जब संगि होती तब हउ नाह पिआरी ॥ २ ॥ कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनमु गवाइआ। झूठी माइआ सभु जगु बाधिआ मै राम रमत सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥ २५ ॥

(मैं) सास द्वारा सताई हुई (माया रूपी सास द्वारा सताई बहू) हूँ, (परमात्मा रूपी) ससुर की प्यारी हूँ और (मृत्यु रूपी) जेठ के नाम से भयभीत हूँ। हे मेरी सखी, सहेलियो, मुझे (अविवेक रूपी) ननद ने घेर रखा है, मैं देवर (विवेक) के विरह में अत्यंत दुखी हूँ ॥ १ ॥ मेरी बुद्धि का ह्रास हो गया है, जो मैंने राम-नाम विस्मृत किया। अब मैं किस प्रकार उपयुक्त जीवन जी सकती हूँ। मेरा पति-प्रभु मेरी सेज (मन) पर विचरता है, किन्तु मुझ अभागी को दीख नहीं पड़ता। यह असह दुःख मैं किससे कहूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा सौतेला पिता (शरीर) सदैव झगड़ता है और माता (स्वार्थांधता) हमेशा नशे में मस्त रहती है। जब मैं बड़े भाई (ज्ञान, विवेक) का संग करती हूँ, तभी प्रियतम (परमात्मा) मुझे प्यार करता है ॥ २ ॥ कबीरजी कहते हैं कि काम-क्रोधादि पाँच विकारों से लड़ते ही जन्म बीत जाता है; मिथ्या माया ने सारे संसार को बाँध रखा है, मैंने राम-नाम का आश्रय लेकर परम सुख को प्राप्त किया है ॥ ३ ॥ ३॥ २५ ॥

॥ आसा ॥ हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे। तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे ॥ १ ॥ मेरी जिहबा बिसनु नैन नाराइन हिरदै बसहि गोबिंदा।

जमदुआर जब पूछसि बवरे तब किआ कहसि मुकंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम गोरू तुम गुआर गुसाई जनम जनम रखवारे । कबहूँ न पार उतारि चराइहु कैसे खसम हमारे ॥ २ ॥ तूं बाम्हनु मै कासी क जुलहा बूझहु मोर गिआना । तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥ ३ ॥ ४ ॥ २६ ॥

(हे ब्राह्मण !) हम तो अपने घर के सूत से नित्य ताना तनते हैं, तुम्हारे गले में कुछ ही सूत्रों का जनेऊ है । तुम गायत्री-मन्त्र का जाप करते एवं नित्य वेद-पाठ करते हो, जबकि साक्षात् प्रभु हमारे हृदय में वास करता है ॥ १ ॥ मेरी जिह्वा पर नारायण, नेत्रों में विष्णु और हृदय में गोविंद बसता है; ऐ ब्राह्मण, (मुकंद नामक) यम के द्वार पर जब हिसाब माँगा जायगा, तो तू क्या कहेगा ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (यहाँ कबीरजी ब्राह्मणों को ललकारते हैं कि वे शिक्षक होने का दावा तो भरते रहे, कभी ज्ञान न दे पाए) हम (अन्य सब जातियाँ) गौएँ हैं, तुम (ब्राह्मण जाति) हमारे ग्वाले हो, जन्म-जन्म से आप हमारे रक्षक हैं; किन्तु कभी नदी-पार हमें चराने तो ले नहीं गए, कैसे स्वामी हैं आप ? (अर्थात् तुमने हमें कभी यथार्थ विवेक और आनन्द प्रदान नहीं किया) ॥ २ ॥ तुम ब्राह्मण हो, मैं काशी का जुलाहा हूँ, कृपा करके मेरी बात को भलीभाँति समझकर उत्तर दो— तुम जाकर राजाओं से दान माँगते हो और मैं सदैव हरि-चरणों में ध्यान रखता हूँ (क्या भेद है दोनों में ?) ॥ ३ ॥ ४ ॥ २६ ॥

॥ आसा ॥ जगि जीवनु ऐसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानं । साचु करि हम गाठि दीनी छोडि परम निधानं ॥ १ ॥ बाबा माइआ मोह हितु कीन्ह । जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन्ह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नैन देखि पतंगु उरझै पसु न देखै आगि । काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनि लागि ॥ २ ॥ करि बिचारु बिकार परहरि तरन तारन सोइ । कहि कबीर जग जीवनु ऐसा दुतीअ नाही कोइ ॥ ३ ॥ ५ ॥ २७ ॥

जगत में ज़िन्दगी स्वप्न के समान है, किन्तु हमने इसे यथार्थ मानकर पकड़ रखा है और जो परम धन परमात्मा है, उसे भुला दिया है ॥ १ ॥ हे भाई, हम लोग माया-ममता से प्रेम करते हैं, जिससे (ऐसा करने से) ज्ञान-रत्न गँवा बैठते हैं (माया ज्ञान हरण करती है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आँखों से देखता हुआ पतंगा (दीपक से) उलझता है, मूर्ख आग (की जलानेवाली शक्ति) को भी नहीं पहचानता । (इसी प्रकार) मूर्ख जीव भी स्वर्ण और स्त्री, कंचन-कामिनी में पड़कर मौत के फन्दे की उपेक्षा

करता है ।। २ ।। विकारों का त्याग करके (हे मूर्ख जीव !) उस प्रभु को मुक्ति-दाता समझ। कबीरजी कहते हैं कि वह जग-जीवन-दाता (परमात्मा) अद्वितीय है, वैसा कोई दूसरा नहीं ।। ३ ।। ५ ।। २७ ।।

।। आसा ।। जउ मै रूप कीए बहुतेरे अब फुनि रूपु न होई। तागा तंतु साजु सभु थाका राम नाम बसि होई ।। १ ।। अब मोहि नाचनो न आवै। मेरा मनु मंदरीआ न बजावै ।। १ ।। रहाउ ।। कामु क्रोधु माइआ लै जारी त्रिसना गागरि फूटी। काम चोलना भइआ है पुराना गइआ भरमु सभु छूटी ।। २ ।। सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा। कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा ।। ३ ।। ६ ।। २८ ।।

क्योंकि मैं अब तक बहुत रूप बदल चुका हूँ (अर्थात् अनेक योनियों में भ्रमित रहा हूँ), अब मुझसे और अधिक स्वाँग नहीं होता (अधिक जन्म-मरण का आवागमन मुझे अपेक्षित नहीं है)। (मेरे मन का) वाद्य और उसकी तार-तन्त्रिका सब थक गए हैं, अब मैं पूर्णतः राम-नाम को समर्पित हो गया हूँ ।। १ ।। अब मैं और नहीं नाच सकता (अर्थात् जीवन-चक्र में नहीं पड़ना चाहता); मेरा मन अब जीवन का ढोल बजाने में असमर्थ है ।। १ ।। रहाउ ।। मैंने काम, क्रोध, मायादि विकारों को नष्ट कर दिया है (फूँक दिया है); मेरी तृष्णा का घट फूट गया है। कर्मशीलता की कामना अब ढल गई है और अज्ञान दूर हो गया है ।। २ ।। समस्त जीवों को अब मैं एक (परमात्मा का ही रूप) समझने लगा हूँ, इससे सब वाद-विवाद मिट गए हैं। कबीरजी कहते हैं कि राम-कृपा होने से अब पूर्ण परब्रह्म की प्राप्ति हो गई है ।। ३ ।। ६ ।। २८ ।।

।। आसा ।। रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै। आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ।। १ ।। काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै। खबरि न करहि दीन के बउरे ताते जनमु अलेखै ।। १ ।। रहाउ ।। साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नही कोई। पढे गुने नाही कछु बउरे जउ दिल महि खबरि न होई ।। २ ।। अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी। हिंदू तुरक दुहूं महि एकै कहै कबीर पुकारी ।। ३ ।। ७ ।। २९ ।।

(ऐ मनमुखी जीव !) तू परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए रोज़े (व्रत) रखता है, किन्तु जिह्वा के स्वाद के लिए जन्तुओं की हत्या करता

है। तू केवल अपना स्वार्थ ही देखता है, दूसरों का ध्यान नहीं रखता, क्यों व्यर्थ दौड़-भाग करता है? ॥ १ ॥ ऐ काज़ी, तुम्हारा एक खुदा है, वह तुम्हारे भीतर है। तुम सोच-विचारकर उसे नहीं समझते। ऐ कट्टरपंथी, मज़हब के मतवाले, तुम वास्तव को नहीं समझते, इसलिए तुम्हारा जन्म निष्फल है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क़ुरान परमात्मा को सत्य मानता है, उसे स्त्री या पुरुष नहीं कहता। ऐ पगले, जब तक मन में आलोक न हो, पढ़ने-लिखने से कुछ बनता-बनाता नहीं ॥ २ ॥ वह अदृश्य अल्लाह (परमात्मा) सब दिलों में निवसित है, मन में यह धारणा बना ले। कबीरजी कहते हैं कि हिन्दू या मुसलमान के भीतर का परमात्मा एक ही है (इसलिए वे अलग होते हुए भी एक हैं) ॥ ३ ॥ ७ ॥ २९ ॥

॥ आसा ॥ तिपदा ॥ इक तुका ॥ कीओ सिंगारु मिलन के ताई। हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥ १ ॥ हरि मेरो पिरु हउ हरि की बहुरीआ। राम बडे मै तनक लहुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धन पिर एकै संगि बसेरा। सेज एक पै मिलनु दुहेरा ॥ २ ॥ धंनि सुहागनि जो पीअ भावै। कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥ ३ ॥ ८ ॥ ३० ॥

प्रभु-मिलन के लिए (जीवात्मा ने) श्रृंगार किया है, किन्तु वह जगत का स्वामी परमात्मा नहीं मिल सका ॥ १ ॥ हरि मेरे प्रियतम (पति) हैं, मैं उनकी पत्नी हूँ। राम सर्वोच्च हैं, मैं (उनके सम्मुख) बालिका-मात्र हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पति-पत्नी (परमात्मा-आत्मा) एक साथ एक ही घर में रहते हैं, एक ही सेज पर लेटते हैं, किन्तु इनका मिलन (फिर भी) कठिन है। (अर्थात् आत्मा में माया की मलिनता के कारण प्रभु को पहचानने की शक्ति क्षीण हो गई है) ॥ २ ॥ स्त्री वही श्रेष्ठ है, जो पिया को प्रिय है (अर्थात् वही आत्मा श्रेष्ठ है, जिसे परमात्मा अपना ले); कबीरजी कहते हैं कि वह आत्मा मोक्ष को प्राप्त होती है, जन्म-मरण के चक्र से छूट जाती है ॥ ३ ॥ ८ ॥ ३० ॥

आसा स्री कबीर जीउ के दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हीरै हीरा बेधि पवन मनु सहजे रहिआ समाई। सगल जोति इनि हीरै बेधी सतिगुर बचनी मै पाई ॥ १ ॥ हरि की कथा अनाहद बानी। हंसु हुइ हीरा लेइ पछानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहि कबीर हीरा अस देखिओ जग

मह रहा समाई । गुपता हीरा प्रगट भइओ जब गुर गम दीआ दिखाई ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

हीरे ने हीरे को (हरि-भजन रूपी हीरे ने मन रूपी हीरे को) बींध दिया है। अब वायु में अस्थिर (पताका-समान) मन सहजावस्था में स्थिर हो गया है। हरि की इस ज्योति ने (इस हीरे ने) समूची सृष्टि को बींधा है (आलोकित किया है), अर्थात् हरि समस्त संसार में व्याप्त है, यह तथ्य-ज्ञान मुझे गुरु से प्राप्त हुआ है ॥ १ ॥ हरि का यशोगान अनाहत वाणी है, आध्यात्मिक आनन्द है, जीवात्मा रूपी हंस ही हरि रूपी हीरे की सही पहचान करता है (अर्थात् जैसे हंस मोती चुगता है, वैसे ही जीवात्मा हरि-हीरा ही ग्रहण करता है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबीरजी कहते हैं कि यह ऐसा विचित्र हीरा है कि समस्त संसार में समाया हुआ है। गुरु ने ही इस हीरे तक पहुँचने का पथ दिखाया है, उसी से यह हीरा (परमात्मा) अब (मुझे) प्रत्यक्ष है ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

॥ आसा ॥ पहिली करूपि कुजाति कुलखनी साहुरै पेईऐ बुरी । अब की सरूपि सुजानि सुलखनी सहजे उदरि धरी ॥१॥ भली सरी मुई मेरी पहिली बरी । जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु टरिओ । लहुरी संगि भई अब मेरै जेठी अउरु धरिओ ॥ २ ॥ २ ॥ ३२ ॥

पहली पत्नी कुरूप, जातिहीन, कुलक्षिणी और गुणहीन थी, वह ससुराल और पीहर दोनों जगह अप्रिय थी (अर्थात् मनमुखी बुद्धि भ्रष्ट थी, उसे कोई नहीं चाहता था)। अब (वर्तमान पत्नी) सुन्दर, सुजान और सुलक्षिणी है, सहज में ही सबकी आत्मीय बन जाती है (गुरु मिलने से विवेक जागृत हुआ है) ॥ १ ॥ भला हुआ जो मेरी पहली पत्नी मरी, परमात्मा करे मेरी वर्तमान पत्नी युग-युग जीती रहे (अर्थात् भ्रष्ट बुद्धि का अन्त सुखद था, जागृत विवेक सदा बना रहे) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबीरजी कहते हैं कि छोटी दुलहिन (गुरु-प्रदत्त ज्ञान) के आने पर बड़ी पत्नी (भ्रष्ट बुद्धि) का सुहाग छिन गया है। अब (गुरु की शरण मिलने पर) छोटी बहू मेरे साथ रहती है, बड़ी (कुल्टा) ने और पति धारण कर लिया है ॥ २ ॥ २ ॥ ३२ ॥

॥ आसा ॥ मेरी बहुरीआ को धनीआ नाउ । ले राखिओ राम जनीआ नाउ ॥ १ ॥ इन्ह मुंडीअन मेरा घरु धुंधरावा ।

बिटवहि राम रमऊआ लावा ।। १ ।। रहाउ ।। कहतु कबीर सुनहु मेरी माई । इन्ह मुंडीअन मेरी जाति गवाई ।। २ ।। ३ ।। ३३ ।।

मेरी बहू का नाम धनवन्ती (मन के संकेत पर चलनेवाली) था, अब उसका नाम राम-जनिया (राम को जाननेवाली) रख दिया है (अर्थात् मेरी बुद्धि जो पहले धनापेक्षी थी, अब रामापेक्षी हो गई है) ।। १ ।। इन साधु-सन्तों ने मेरा घर (अहम्) मिट्टी में मिला दिया है, मेरे बेटे (मन) को राम-स्मरण में संलग्न कर दिया है ।। १ ।। रहाउ ।। कबीरजी कहते हैं कि हे भाई, इन साधु-सन्तों ने (इनकी निन्दा मत करो) मेरी (नीच) जाति खोदी है, (अब मुझ नीच जाति जुलाहे को ब्राह्मणादि उच्च जाति के लोग भी वन्दन करते हैं) ।। २ ।। ३ ।। ३३ ।।

।। आसा ।। रहु रहु री बहुरीआ घूंघटु जिनि काढै । अंत की बार लहैगी न आढै ।। १ ।। रहाउ ।। घूंघटु काढि गई तेरी आगै । उन की गैलि तोहि जिनि लागै ।। १ ।। घूंघट काढे की इहै बडाई । दिन दस पाच बहू भले आई ।। २ ।। घूंघटु तेरो तउ परि साचै । हरिगुन गाइ कूदहि अरु नाचै ।। ३ ।। कहत कबीर बहू तब जीतै । हरिगुन गावत जनमु बितीतै ।। ४ ।। १ ।। ३४ ।।

ठहरो, ठहरो बहू, लौकिक लाज में पड़कर घूंघट नहीं काढ़ो, अन्त-काल में इसका कौड़ी भर भी लाभ नहीं होगा ।। १ ।। रहाउ ।। तुमसे पहले वाली भी (पूर्व पत्नी) घूंघट काढ़ती मर गई, तुम उसके चरण-चिह्नों पर मत चलना ।। १ ।। घूंघट निकालने का इतना सा ही तो फल है कि लोग यह कहेंगे कि बड़ी भली बहू आई है ।। २ ।। घूंघट का सही और सच्चा रूप तो यह है कि तुम हरि-गुण गाओ और मस्ती से नाचती-कूदती घूमो ।। ३ ।। कबीरजी कहते हैं कि हे बहू, तुम्हारी विजय हरि-गुण गाते हुए जीवन बिताने में है । (अर्थात् दिखावे की लाज नहीं, प्रभु से सच्ची प्रीति ही मोक्षदायिनी है) ।। ४ ।। १ ।। ३४ ।।

।। आसा ।। करवतु भला न करवट तेरी । लागु गले सुनु बिनती मेरी ।। १ ।। हउ वारी मुखु फेरि पिआरे । करवटु दे मोकउ काहे कउ मारे ।। १ ।। रहाउ ।। जउ तनु चीरहि अंगु न मोरउ । पिंडु परै तउ प्रीति न तोरउ ।। २ ।। हम तुम बीचु भइओ नही कोई । तुमहि सुकंत नारि हम सोई ।। ३ ।।

कहतु कबीरु सुनहु रे लोई । अब तुमरी परतीति न होई ॥ ४ ॥ २ ॥ ३५ ॥

(हे प्रभु !) मैं करवत (आरे द्वारा चिरना) स्वीकार कर सकती हूँ, किन्तु तुम्हारा विमुख (करवट लेना) हो जाना मुझे सह्य नहीं है। हे परमात्मा, मुझे गले लगाकर मेरी पुकार (विनती) सुन लो ॥ १ ॥ हे प्रियतम, अपना मुख मेरी ओर फिराओ, मैं बलिहार जाती हूँ; क्यों मुझसे मुँह फिराकर तुम मेरी हत्या कर रहे हो ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि मेरा शरीर भी चीर दिया जाय तो मैं तुमसे मुख नहीं मोड़ूँगी; यदि मेरा शरीर पूर्णतः नष्ट हो जाय, तो भी मैं (हे प्रभु !) तुमसे प्रीति नहीं तोड़ सकती ॥ २ ॥ मेरे और तुम्हारे बीच कभी कोई मध्यस्थ नहीं आया— तुम मेरे पति हो और मैं तुम्हारी वही स्त्री हूँ ॥ ३ ॥ कबीरजी कहते हैं कि ऐ जीवात्मा ! सुनो, अब हमें तुम्हारा विश्वास नहीं रहा, (क्योंकि तुमने प्रभु को इतना सस्ता समझ लिया है) । (वास्तव में यह पद कबीरजी ने अपनी पत्नी के लिए सम्बोधित किया है; वह पहले तो कबीरजी की साधना को अस्वीकार करती रही, जब सूझ पड़ी तो क्षमा माँगने लगी । कबीरजी इस पर भी उसमें प्रतीति लाने से इन्कार करते हैं) ॥ ४ ॥ २ ॥ ३५ ॥

॥ आसा ॥ कोरी को काहू मरमु न जानां । सभु जगु आनि तनाइओ तानां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब तुम सुनि ले बेद पुरानां । तब हम इतन कु पसरिओ तानां ॥ १ ॥ धरनि अकास की करगह बनाई । चंदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥ २ ॥ पाई जोरि बात इक कीनी तह तांती मनु मानां । जोलाहे घरु अपना चीन्हां घट ही रामु पछानां ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु कारगह तोरी । सूतै सूत मिलाए कोरी ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३६ ॥

(कबीरजी अपनी रहस्य-कथा कहते हैं) मुझ जुलाहे का वास्तविक भेद किसी ने नहीं जाना, यद्यपि सारा संसार मुझसे ताने का काम करवाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब तुम लोग वेद-पुराण सुनते हो, तो मैं लम्बा ताना तनता हूँ, (अर्थात् विश्व को विस्तृत ताने-बाने का समझता हूँ) ॥१॥ (इसके लिए) मैंने धरती और आकाश का कर्घा बनाया है और चन्द्र तथा सूर्य की दोनों गिट्टियाँ बना ली हैं ॥ २ ॥ मैंने (जुलाहे की तरह) पाँव जोड़कर एक विशेष बात की है कि अपने रचयिता से मन लगा लिया है। मैंने अपना वास्तविक रूप पहचान लिया है और अपने भीतर ही प्रभु से मिलाप पा लिया है । (अर्थात् मैंने जान लिया है कि मैं जुलाहा हूँ तो परमात्मा भी बड़ा जुलाहा है, इसलिए हम एक ही तत्व के हैं ।) ॥ ३ ॥

कबीरजी कहते हैं कि जब कर्घा टूटा (शरीर छूटा), तो मन का सूत्र (आत्मा) हरि के सूत्र के साथ जुड़ गया ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३६ ॥

॥ आसा ॥ अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानां । लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥ १ ॥ पूजहु रामु एकु ही देवा । साचा नावणु गुर की सेवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि । जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥ २ ॥ मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बांचिआ जाई । हरि का संतु मरै हाड़ंबै त सगली सैन तराई ॥ ३ ॥ दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा । कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

(जिस जीव के) मन में मलिनता हो और वह तीर्थ-स्नान करने चले; वह वैकुण्ठ नहीं पा सकता। लोगों की आँखों में धूल झोंकने से कुछ नहीं बनता, न ही परमात्मा नादान है, (जो सच्चाई को न समझता हो) ॥ १ ॥ (अतः, ऐ जीवो!) केवल परमपुरुष राम को ही एक मात्र देव मानकर उसकी शरण ग्रहण करो (पूजा करो), उसी की सेवा ही सच्चा तीर्थ-स्नान है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि जल के स्नान से जीव को मोक्ष मिल सकता होता, तो मेंढक तो सदा नहाता ही रहता है (अर्थात् पानी में रहता है)। (भाव यह कि मेंढक को मोक्ष तो अब तक हो गया होता), किन्तु मेंढक हो या (तीर्थ-स्नानी) मनुष्य, दोनों को बार-बार जन्म लेना ही पड़ता है ॥ २ ॥ कठोर मन वाला व्यक्ति (पापी) चाहे बनारस में जाकर मरे, तो भी वह नरक से बच नहीं सकता, जबकि हरि-भक्त चाहे मगहर में शरीर त्यागे, वह अपने साथ-साथ सेवकों का भी कल्याण करता है (बनारस में मरने से स्वर्ग तथा मगहर में मरने से गर्दभ योनि मिलती है —ऐसी मान्यता है) ॥ ३ ॥ जहाँ रात-दिन का कोई भेद नहीं, वेद-शास्त्र का ज्ञान अपेक्षित नहीं, सच्चा परमात्मा वहीं बसता है। इसीलिए कबीरजी कहते हैं कि (ऐ जीवो!) संसार की मूर्खताओं से हटकर उसी परमात्मा का भजन करो ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा बाणी स्री नामदेउ जी की ॥

एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई । माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई ॥ १ ॥ सभु गोबिंदु है सभु

गोबिंदु है । गोबिंद बिनु नही कोई । सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे ओति पोति प्रभु सोई ।। १ ।। रहाउ ।। जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन न होई । इहु परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत आन न होई ।। २ ।। मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ । सुक्रित मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ ।। ३ ।। कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी । घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी ।। ४ ।। १ ।।

एक परब्रह्म के अनेक रूप हैं, वह सर्वत्र व्यापक है, जहाँ तक दृष्टि जाती है, वही (उसी का प्रसार) दीख पड़ता है । आश्चर्यचकित करनेवाली मूर्त माया सबको मोह लेती है, कोई विरला ही इस रहस्य को समझ सकता है ।। १ ।। सर्वस्व और सर्वत्र वह परमात्मा ही है, उसके अतिरिक्त और कुछ नहीं; जैसे एक धागे में सैकड़ों-हज़ारों मणियाँ व्यवस्थित रहती हैं, उसी प्रकार ईश्वर (जग की मणियों में धागे की तरह) पिरोया हुआ है (और सबको व्यवस्थित करता है) ।। १ ।। रहाउ ।। जल की लहरें या झाग के बुलबुले जल से अलग नहीं होते —ठीक इसी प्रकार समूची सृष्टि का परपंच परब्रह्म की लीला है, उससे भिन्न कुछ नहीं ।। २ ।। जीव प्रायः मिथ्या तथा स्वप्नवत वस्तुओं को यथार्थ मान लेता है; गुरु के पथ-प्रदर्शन तथा उपदेश से मन में जागृति आई और वह सन्तुष्ट हो गया ।।३।। नामदेवजी कहते हैं कि हरि की रचना के सम्बन्ध में मन में विचार कर देखो, (तब आपको ज्ञात होगा कि) घट-घट में केवल वही परब्रह्म विराजता है ।।४।।१।।

।। आसा ।। आनीले कुंभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ । बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ।। १ ।। जत्र जाउ तत बीठलु भैला । महा अनंद करे सद केला ।। १ ।। रहाउ ।। आनीले फूल परोई ले माला ठाकुर की हउ पूज करउ । पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ।। २ ।। आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ । पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ।। ३ ।। ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही । थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ।। ४ ।। २ ।।

घड़ा लाकर उसमें जल भरकर अपने ठाकुर का स्नान तो कराऊँ, किन्तु जल में जो बयालीस लाख जीव होते हैं, उनके कारण अपने बिट्ठल

भाई (परमात्मा) को पावन स्नान क्योंकर दे सकूँगा ? (चौरासी लाख में से आधी योनियों के जीव जल में और आधी थल में रहते हैं, इसी मान्यता से जल में बयालीस लाख जीवों की बात कही गयी है) ॥ १ ॥ जहाँ जाऊँ वहीं परमेश्वर विद्यमान है, ख़ूब आनन्द से क्रीड़ा-मग्न है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फूल लाकर मैं माला बनाकर अपने ठाकुर की पूजा तो करूँ, किन्तु (वे तो जूठे हैं) उनमें से पहले भँवरों ने सुगन्ध ली है, मैं उनसे अपने बिट्ठल को पावन पूजा क्योंकर अर्पण करूँ ? ॥ २ ॥ दूध लाकर खीर पकाकर मैं अपने ठाकुर को नैवेद्य तो अर्पित करूँ, किन्तु (वहाँ भी) दूध पहले बछड़े ने जूठा किया है, बिट्ठल को पवित्र भोग कैसे लगाऊँ ? ॥ ३ ॥ यहाँ, वहाँ, सब जगह वह बिट्ठल (परमात्मा) ही मौजूद है, उसके बिना संसार का अस्तित्व ही नहीं है। नामदेव कहते हैं कि प्रत्येक स्थान पर प्रभु व्याप्त है, वह प्रत्येक जड़-चेतन में विद्यमान है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ आसा ॥ मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती । मपि मपि काटउ जम की फासी ॥ १ ॥ कहा करउ जाती कह करउ पाती । राम को नामु जपउ दिन राती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ । राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥ २ ॥ भगति करउ हरि के गुन गावउ । आठ पहर अपना खसमु धिआवउ ॥ ३ ॥ सुइने की सूई रुपे का धागा । नामे का चितु हरि सउ लागा ॥ ४ ॥ ३ ॥

मन मेरा गज़ (इंच-टेप) है, जिह्वा कैंची है। इन्हीं से माप-माप कर मैं यम की फाँसी काट रहा हूँ ॥ १ ॥ (अभिप्राय यह कि मन से ध्यानस्थ होकर जीभ से प्रभु-नाम जपता हूँ)। मुझे जाति-पाँति से क्या लेना, मैं तो दिन-रात राम-नाम जपता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (प्रभु के) रंग में अपने को रँगकर, (उसी की) सिलाई में मन को सीकर मैं राम-नाम में लीन हूँ; उसके बिना मैं घड़ी भर नहीं रह सकता ॥ २ ॥ मैं प्रभु का भजन करता हूँ, उसके गुण गाता हूँ, आठों प्रहर अपने स्वामी (परमात्मा) का ध्यान करता हूँ ॥ ३ ॥ नामदेव कहते हैं कि (हरि-स्मरण ऐसी अमूल्य सिलाई है कि) इसकी सुई स्वर्ण की तथा धागा चाँदी का है— उसी के कारण मेरा मन परमात्मा के साथ सिल गया है ॥४॥३॥

[ध्यान रहे श्री नामदेवजी छीपी दरज़ी थे, इसीलिए कबीर की नाईं ये भी अपने व्यवसाय के उपकरणों को प्रतीक बनाते हैं।]

॥ आसा ॥ सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै । उदक

माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥ १ ॥ काहे कउ कीजै धिआनु जपंना । जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंघच भोजनु जो नरु जानै । ऐसे ही ठगदेउ बखानै ॥ २ ॥ नामे के सुआमी लाहि ले झगरा । राम रसाइन पीउ रे दगरा ॥ ३ ॥ ४ ॥

साँप केंचुली छोड़ता है, विष नहीं त्यागता; पानी में बगुला ध्यान लगाता है (किन्तु नियत खोटी होती है, अर्थात् बाहरी दिखावे का क्या लाभ ?) ॥ १ ॥ जब तक मन ही शुद्ध नहीं, ध्यान लगाने या नाम जपने का क्या लाभ ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य सिंह का भोजन (हिंसा द्वारा प्राप्त) करता है, उसे महा ठग कहना चाहिए ॥ २ ॥ नामदेव कहते हैं कि उनके मालिक ने तो सब झगड़ा ही चुकता कर दिया है, इसलिए ऐ छलिए मनुष्य, (सब छोड़कर) राम-नाम के अमृत का पान कर ॥ ३ ॥ ४ ॥

॥ आसा ॥ पारब्रहमु जि चीन्हसी आसा ते न भावसी । रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥ १ ॥ कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना । झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला । संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥ २ ॥ ५ ॥

जो परब्रह्म की अनुभूतियों को संचित करेगा, उसे अन्य सांसारिक इच्छाएँ अच्छी नहीं लगेंगी । जो राम की भक्ति को मन में बसाएगा, उसका मन स्थिर होगा ॥ १ ॥ संसार-सागर तो विषयों का वन (गोरखधंधा-उलझन) है, मेरा मन उसे क्योंकर पार कर सकेगा ? यह मन तो माया के मिथ्यात्व को ही (सत्य समझकर) भूला पड़ा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामदेवजी कहते हैं कि यद्यपि मेरा जन्म छीपी के घर हुआ, फिर भी सद्गुरु का उपदेश मिल जाने से मैंने सन्तों की कृपा से प्रभु से भेंट कर ली है (अर्थात् परमात्मा पा लिया है) ॥ २ ॥ ५ ॥

आसा बाणी स्री रविदास जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास । पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥ १ ॥ माधो अबिदिआ हित कीन । बिबेक दीप मलीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच । मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥ २ ॥

जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ। काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥ ३ ॥ रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन। भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥ ४ ॥ १ ॥

हिरण, मछली, भँवरा, पतंगा और हाथी एक-एक दोष के कारण नष्ट हो जाते हैं। (वह मनुष्य) जिसमें पाँच दोष (विकार) हैं, उसकी क्या आशा की जा सकती है ? (अर्थात् हिरण नाद-रस के कारण, मछली जल के कारण, भँवरा पुष्प-गंध के कारण, पतंगा ज्योति के कारण तथा हाथी काम-वासना के कारण तबाह हो जाते हैं, मनुष्य में पाँच विकार हैं) ॥ १ ॥ हे माधो (प्रभु), मनुष्य अविद्या से प्रेम करने लगा है, उसका विचार-दीप मलिन हो गया है, अर्थात् उसके पास विवेक का आलोक मंद पड़ गया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीन प्रकार की योनियाँ (भूमज, स्वेदज और अण्डज) नीच और विवेकहीन होती हैं, वे पाप-पुण्य या अच्छे-बुरे कर्मों का विचार नहीं कर सकतीं। मनुष्य-योनि दुर्लभ है, किन्तु (दुर्लभ योनि पाकर भी वह) कुसंगति में रहता है— काम-क्रोधादि की संगति करता है ॥ २ ॥ जीव-जन्तु-मनुष्य जो भी जहाँ हैं, सब अपने-अपने कर्मों के वश जन्मते हैं। मृत्यु का समय सब पर भारी है, उससे बचने का कोई उपाय नहीं ॥ ३ ॥ रविदासजी कहते हैं कि हे विरक्त जीव, भ्रमों को त्यागकर, गुरु-उपदेशानुसार सत्य की तपस्या करो; तभी भक्तों का भय हरण करनेवाला प्रभु तुम्हारा उपचार करेगा ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ आसा ॥ संत तुझी तनु संगति प्रान। सतिगुर गिआन जानै संत देवादेव ॥ १ ॥ संत ची संगति संत कथा रसु। संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥ २ ॥ अउर इक मागउ भगति चिंतामणि। जणी लखावहु असंत पापीसणि ॥ ३ ॥ रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु। संत अनंतहि अंतरु नाही ॥ ४ ॥ २ ॥

हे प्रभु, संतजन तुम्हारा शरीर हैं और उनकी संगति तुम्हारा प्राण ! किन्तु ऐ देवाधिदेव, सन्त की पहचान सतिगुरु-ज्ञान से ही सम्भव होती है ॥१॥ हे प्रभु ! (देवाधिदेव !) कृपा करके मुझे सन्तों की संगति, सन्त-कथा का रस तथा सन्तों की शरण और प्रेम प्रदान करो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सन्त-सम आचरण, सन्त-मार्ग पर बढ़ने का सामर्थ्य तथा सन्तों के सेवकों की सेवा मुझे दीजिए ॥ २ ॥ एक चीज़ और माँगता हूँ, (मुझे) भक्ति

रूपी चिन्तामणि (इच्छा-पूरक शक्ति) दें और असन्त-पापी लोगों की संगति कभी न दिखावें ॥ ३ ॥ रविदासजी कहते हैं कि वास्तविक ज्ञानवान वही है, जो यह जानता है कि सन्त और परमात्मा में अभेद होता है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ आसा ॥ तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा । नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥ १ ॥ माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी । हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा । सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥ २ ॥ जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा । राजा राम की सेव न कीन्ही कहि रविदास चमारा ॥ ३ ॥ ३ ॥

तुम (हे सन्तो !) चन्दन के (सुगन्धित) पेड़ हो और हम बेचारे एरंड (Castor) के (गंधहीन) पेड़ हैं, किन्तु तुम्हारी संगति में वास करते हुए नीच वृक्ष से ऊँचे सुगन्धवान वृक्ष हो गए हैं ॥ १ ॥ हे माधो, मैं तो सत्संगति की शरण में हूँ, अवगुणी हूँ किन्तु तुम उपकारी हो (दया करो) । तुम सफ़ेद मुलायम रेशम सरीखे हो, हम तो कठोर काले पत्थर-समान हैं (अर्थात् अयोग्य हैं) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसलिए हे जीवो, जैसे मधु से मक्खियाँ चिपटी हैं, वैसे ही सत्संगति में रहना चाहिए ॥ २ ॥ रविदासजी कहते हैं कि हमारी जाति-पाँति तो ओछी (नीची) थी ही, इस पर यदि हमने राम की सेवा (प्रभु-भजन) भी नहीं की, तो हमारा जन्म ही ओछा (नीच) है ॥ ३ ॥ ३ ॥

॥ आसा ॥ कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु । प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥ १ ॥ तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु । पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संपति बिपति पटल माइआ धनु । ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥ २ ॥ प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन । कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥ ३ ॥ ४ ॥

यदि शरीर टुकड़े-टुकड़े भी हो जाय, तो क्या हुआ ? तुम्हारे इस सेवक को तो तब भय है, जब प्रेम का भाव इससे छिनने की सम्भावना हो । (अर्थात् शरीर भले कट जाय, प्रेम बना रहे, यही भक्त की अभिलाषा है) ॥ १ ॥ मेरे मन के लिए तुम्हारे चरण-कमल ही सही निवास-स्थान है । (तुम्हारा नामामृत) पान करके ही मैंने राम-धन प्राप्त

किया है ।। १ ।। रहाउ ।। संपत्ति, विपत्ति, मोह-माया, धन-दौलत आदि बाहरी आवरण हैं, तुम्हारा सेवक इनकी सीमाओं में नहीं फँसता ।। २ ।। रविदासजी कहते हैं कि तुम्हारा सेवक (जब) प्रेम की शृंखला से बँध गया है, तब इससे किसलिए छूटा जाय? (अर्थात् प्रेम-बन्धन में पड़े रहने में ही आनन्द है) ।। ३ ।। ४ ।।

।। आसा ।। हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे । हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ।। १ ।। रहाउ ।। हरि के नाम कबीर उजागर । जनम जनम के काटे कागर ।। १ ।। निमत नामदेउ दूधु पीआइआ । तउ जग जनम संकट नही आइआ ।।२।। जन रविदास राम रंगि राता । इउ गुर परसादि नरक नही जाता ।। ३ ।। ५ ।।

हरि-नाम का जाप करने तथा हरि-स्मरण करनेवाले जीव मुक्ति को प्राप्त होते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। हरिनाम-स्मरण के कारण ही कबीर का नाम प्रख्यात है, इसी से (उनके) जन्म-जन्म का कर्मलिख निपट गया (अर्थात् कर्मों के हिसाब के काग़ज़ काट दिए गए) ।। १ ।। नामदेव ने (भक्ति-भावना) के निमित्त प्रभु को दूध का भोग लगाया, तो उसके लिए संसार के आवागमन-दुःख का शमन हो गया ।। २ ।। प्रभु का सेवक (यह) रविदास भी (उसी तरह) राम-रंग में तल्लीन है, इसीलिए गुरु-कृपा (का पात्र होने से) नरक से सुरक्षित है ।। ३ ।। ५ ।।

माटी को पुतरा कैसे नचतु है । देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ।। १ ।। रहाउ ।। जब कछु पावै तब गरबु करतु है । माइआ गई तब रोवनु लगतु है ।। १ ।। मन बच क्रम रस कसहि लुभाना । बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ।।२।। कहि रविदास बाजी जगु भाई । बाजीगर सउ मुोहि प्रीति बनि आई ।। ३ ।। ६ ।।

(मनुष्य) मिट्टी का पुतला ही तो है, फिर भी आश्चर्यजनक तरीक़े से नाचता (चलता-फिरता, करता) है। देखता है, सुनता है, बोलता है और (इधर-उधर) दौड़ा फिरता है ।। १ ।। रहाउ ।। जब कोई उपलब्धि होती है तो अभिमान करने लगता है, धनादि की हानि हो तो दुःख-संताप में रोता है ।। १ ।। मन, वचन, कर्मों से सांसारिक सुखों में संलग्न रहता है और मरणोपरांत इधर-उधर जन्म लेकर आवागमन के चक्र में रत रहता है ।। २ ।। रविदासजी कहते हैं कि यह संसार एक

खेल है और मेरी प्रीति (उस खेल के) खिलाड़ी (परमात्मा) के साथ अडोल जुड़ी है ॥ ३ ॥ ६ ॥

आसा बाणी भगत धंने जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे । लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ । गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥ १ ॥ जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे । बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥ २ ॥ गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए । प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए ॥ ३ ॥ जोति समाइ समानी जाकै अछली प्रभु पहिचानिआ । धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

(आवागमन में) भटकते-भटकते अनेक जन्म बीत गए, तन-मन-धन (ये तीनों) कभी स्थिर नहीं हुए। मनुष्य का मन लोभ रूपी विष में लुब्ध रहता है और परमात्मा रूपी हीरा को भुला देता है (अर्थात् विष का लोभ करता है, रत्नों की उपेक्षा कर देता है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यह मूर्ख मन विषैले फलों (कामादि विकार) को मीठा मानता है और नीति-अनीति का विचार नहीं करता। भले गुणों के विपरीत (विकारों से) इसकी प्रीति बढ़ी और इस प्रकार आवागमन का ताना-बाना निरन्तर बना रहा ॥ १ ॥ (प्रभु-प्राप्ति की) युक्ति को जानकर मन में नहीं बसाया और निरन्तर यम-फंद में पड़े जलते रहे। विष-फलों (विकारों) को मन में इस प्रकार भरा कि मन से परमपुरुष परमात्मा की स्मृति निकल गई ॥ २ ॥ गुरु ने जब (मन में) ज्ञान-प्रवेश की युक्ति प्रदान की, तो हरि का ध्यान और मनन (मुझे) प्राप्त हुए। (तब मैंने प्रेम-भक्ति को ग्रहण कर सुख अनुभव किया, पूर्ण सन्तोष मिला और मोक्ष की प्राप्ति हुई) ॥ ३ ॥ जिसके मन में सर्वव्यापक प्रभु की ज्योति प्रकाशित हुई, उसी ने निश्छल प्रभु को पहचाना। धन्नाजी का कथन है कि उन्हें सृष्टि का नियंता प्रभु प्राप्त हुआ है और वे सन्तजन की संगति में रहकर प्रभु में ही विलीन हैं ॥ ४ ॥ १ ॥

।। महला ५ ।। गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा । आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ।। १ ।। रहाउ ।। बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा । नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ।। १ ।। रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिन्हि तिआगी माइआ । परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ।। २ ।। सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ । हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ।। ३ ।। इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा । मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ।। ४ ।। २ ।।

श्री नामदेव का मन गोविन्द (परमात्मा) में लीन हुआ था, तभी वह दो कौड़ी का छीपी लखपती (प्रभु-धन पाकर) बन गया था ।। १ ।। रहाउ ।। कबीरजी ने बिनना-तनना त्यागकर प्रभु के चरणों में प्रीति लगाई थी, तभी वह नीच कुल का जुलाहा गुणवान और गम्भीर हो गया था ।। १ ।। सन्त रविदास नित्य मृत पशुओं को ढोते थे, किन्तु उन्होंने जब सांसारिक माया को त्यागा तो उन्हें परम संगति में साक्षात् परमात्मा के दर्शन हो गए ।।२।। सैन नाई लोगों के छोटे-छोटे कार्य सँवारनेवाला था, किन्तु जब उसके मन में परब्रह्म बसा तो वह घर-घर में विख्यात हो गया ।। ३ ।। इस प्रकार के प्रसंगों को सुन-सुनकर यह जाट भी (धन्नाजी अपने लिए कहते हैं) उद्यम-पूर्वक भक्ति में लीन हुआ, तभी उसका भाग्य जागा और वह प्रत्यक्षतः गोसाईं (परमात्मा) को मिल सका ।। ४ ।। २ ।।

रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई । जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ।। १ ।। रहाउ ।। जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दसदुआरा । देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा ।। १ ।। कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही । पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही ।। २ ।। पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ताचो मारगु नाही । कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही ।। ३ ।। ३ ।।

हे मन, तू क्यों दयालु दामोदर (परमात्मा) को स्मरण नहीं करता, जिसके अतिरिक्त हम किसी अन्य को नहीं जानते । यदि तुम ब्रह्माण्ड के अलग-अलग स्थानों पर भी भागते फिरोगे, तो भी वही होगा, जो परमात्मा को मंज़ूर होगा ।। १ ।। रहाउ ।। (जिस प्रभु ने) माता के उदर-जल में

दस द्वारों वाला यह शरीर रचा और उस अग्नि में हमें भोजन पहुँचाकर हमारी रक्षा की, वही हमारा स्वामी है ॥ १ ॥ कछवी जल में रहती है, उसके बच्चे बाहर (किनारे पर) होते हैं। वह उन्हें न तो पंखों की छाया देती है, न दूध पिलाती है; फिर भी ज़रा मन में सोचो कि वह पूर्ण परमानन्द प्रभु (उन्हें क्योंकर पोषित कर लेता है) ॥ २ ॥ पत्थर में का कीड़ा भीतर होता है, उसके लिए बाहर आने-जाने का कोई मार्ग नहीं, तो भी (धन्नाजी कहते हैं कि परमात्मा उसे भोजन देता है), इसलिए ऐ जीव ! तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं। (वह तुम्हारी भी रक्षा करेगा) ॥ ३ ॥ ३ ॥

आसा सेख फरीद जीउ की बाणी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ दिलहु मुहबति जिंन्ह सेई सचिआ। जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ ॥ १ ॥ रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के। विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से। तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से ॥ २ ॥ परवदगार अपार अगम बेअंत तू। जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं ॥ ३ ॥ तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी। सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥ ४ ॥ १ ॥

जो जीव परमात्मा के साथ दिल से सच्चा प्यार करते हैं, वे ही सही प्रेमी हैं। जिनके मन में कुछ है और मुख में कुछ है, वे झूठे हैं ॥ १ ॥ जो जीव परमात्मा के प्यार में लीन हैं और उसके दर्शन-रंग में रँगे हुए हैं, (वे ही वास्तव में प्रभु के जीव हैं), नाम को भुला देनेवाले जीव तो भूमि का बोझ मात्र होते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु-दरबार के सच्चे फ़कीर वे ही हैं, जिन्हें परमात्मा ने स्वयं अपनी शरण में लिया है। उनको जन्म देने वाली माता धन्य है, उनका संसार में जन्म लेना सफल है ॥ २ ॥ हे प्रभु, तुम सबके पालनहार, अगम, अपार और अनंत हो। जिन्होंने तुम्हारे वास्तविक रूप को पहचान लिया है, मैं उनके पाँव चूमता हूँ ॥३॥ हे हरि ! मुझे तुम्हारी शरण दरकार है, तुम क्षमाशील हो। हे दाता, तुम शेख़ फ़रीद को अपनी बन्दगी (भक्ति) की भिक्षा (ख़ैर) दो ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ आसा ॥ बोलै सेख फरीदु पिआरे अलह लगे। इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥ १ ॥ आजु मिलावा सेख

फरीद टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न आईऐ । झूठी दुनीआ लगि न आपु वञाईऐ ॥ २ ॥ बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ । जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥ ३ ॥ छैल लंघंदे पारि गोरी मनु धीरिआ । कंचन वंने पासे कलवति चीरिआ ॥ ४ ॥ सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ । जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ ॥ ५ ॥ कतिक कूंजां चेति डउ सावणि बिजुलीआं । सीआले सोहंदीआं पिर गलि बाहड़ीआं ॥ ६ ॥ चले चलणहार विचारा लेइ मनो । गंढेदिआं छिअ माह तुड़ंदिआ हिकु खिनो ॥ ७ ॥ जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किंनि गए । जालण गोरां नालि उलामे जीअ सहे ॥ ८ ॥ २ ॥

शेख़ फ़रीद कहते हैं, (ऐ जीवो !) प्रभु की शरण ग्रहण करो । (समय बीते तो) यह शरीर मिट्टी हो जायगा और क़ब्र में रहेगा (अर्थात् शरीर का कोई महत्व नहीं, यह तो मिट्टी है) ॥ १ ॥ (आज यदि तुम) मन को चंचल करनेवाली इन्द्रियों (कूंजड़िओं) को वश में कर सको तो (इसी जन्म में) प्रभु से मिलन सम्भव है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब यह मालूम है कि आख़िर मरना है और फिर लौटकर नहीं आना है, तो इस झूठे संसार में लिप्त होकर अपना भावी क्यों ख़राब करते हो ॥ २ ॥ सत्य बोलना धर्म है, झूठ नहीं बोलना चाहिए । जो मार्ग गुरु ने बताया है, शिष्य को उसी पर अग्रपद होना चाहिए ॥ ३ ॥ युवकों (सन्त रूपी) को भवसागर से पार होते देखकर युवती (दुनिया-धंधे में पड़ी आत्मा) मन को धैर्य देती है (विचारती है कि वह भी उसी पथ पर चलेगी) । (परमात्मा से विमुख) लोगों के मायावी (सोने के) फंदों को आरे से चीरा जायगा ॥ ४ ॥ ऐ शेख़, संसार में किसी का जीवन स्थिर नहीं । जिस आसन पर हम बैठे हैं, इस पर (पहले भी) कितने ही बैठे होंगे ॥ ५ ॥ कार्तिक के महीने में कूँजों का उड़ना, चैत्र मास में दावाग्नि, सावन में बिजलियों का चमकना और शीतकाल में प्रियतम के गले में बाहें डालकर सोना शोभा देता है ॥ ६ ॥ चले जानेवाले (धीरे-धीरे) चले जा रहे हैं । ज़रा विचारो तो सही कि जिसे बनाने में छः महीने लगते हैं, उसे ही तोड़ने में क्षण भर लगता है ॥ ७ ॥ हे फ़रीद, ज़मीन आकाश से पूछती है कि वे कर्णधार (नेता) कहाँ गए ? (आकाश उत्तर देता है) उनके शरीर क़ब्रों में सड़ रहे हैं, दुःख सहते हैं ॥ ८ ॥ २ ॥ (यहाँ ज़मीन-आकाश को कवि ने साक्षी बनाया है) ।

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु गूजरी महला १ चउपदे घरु १

तेरा नामु करी चनणाठीआ जे मनु उरसा होइ । करणी कुंगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ ॥ १ ॥ पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाहरि देव पखालीअहि जे मनु धोवै कोइ । जूठि लहै जीउ माजीऐ मोख पइआणा होइ ॥ २ ॥ पसू मिलहि चंगिआईआ खड़ु खावहि अंम्रितु देहि । नाम विहूणे आदमी ध्रिगु जीवण करम करेहि ॥ ३ ॥ नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे संम्हाले । जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥ ४ ॥ १ ॥

(गुरुजी नाम जपने को ही यथार्थ प्रभु-पूजा मानते हैं) हे प्रभु, यदि मन रूपी पत्थर पर तुम्हारे नाम का चन्दन घिसे और उसमें उत्तम कर्मों का केसर घोला जाय, तो मन के भीतर ही पूजा होती है ॥ १ ॥ (प्रभु का) नाम जपने में ही सच्ची पूजा निर्भर है, नाम के बिना पूजन-अर्चन सम्भव नहीं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रायः (मूर्ति-पूजा करनेवाले) देव-मूर्तियों को स्नान कराते हैं, (यह व्यर्थ है); यदि वे मन का प्रक्षालन करें तो उसकी मलिनता दूर हो । आत्मा के परिमार्जन से ही जूठन (मलिनता) नष्ट होती है और जीवात्मा का प्रयाण मोक्ष के योग्य हो पाता है ॥ २ ॥ उनसे तो पशु भले हैं, जो घास खाकर अमृत-समान दूध देते हैं— नाम-विहीन मनुष्यों का जीना और कर्म करना, दोनों धिक्कार-योग्य हैं ॥३॥ (इसलिए, हे मनुष्यो !) प्रभु तुम्हारे बहुत निकट है, इसे दूर न जानो । वही नित्य सबका पोषण करता है । जो कुछ उसकी कृपा से उपलब्ध है, वही हमारा प्राप्य है (हमें उसी पर आधृत रहना है); गुरु नानक कहते हैं कि एक मात्र वही सच्चा स्वामी है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ गूजरी महला १ ॥ नाभि कमल ते ब्रहमा उपजे बेद पड़हि मुखि कंठि सवारि । ता को अंतु न जाई लखणा आवत

जात रहै गुबारि ॥ १ ॥ प्रीतम किउ बिसरहि मेरे प्राणअधार। जाकी भगति करहि जन पूरे मुनि जन सेवहि गुर वीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रवि ससि दीपक जा के त्रिभवणि एका जोति मुरारि। गुरमुखि होइ सु अहिनिसि निरमलु मनमुखि रैणि अंधारि ॥ २ ॥ सिध समाधि करहि नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै। अंतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबैरै ॥ ३ ॥ सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा। नानक सहजि मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा ॥ ४ ॥ २ ॥

विष्णु के नाभि-कमल से उत्पन्न होकर ब्रह्मा अपने चारों मुखों और कण्ठों को सँवारकर वेद-पाठ में तल्लीन हो गया, किन्तु वह भी प्रभु का वास्तविक रहस्य न जान पाया, अन्धकार में ही भटकता रहा (जन्म-मरण के चक्कर में व्यर्थ पड़ा रहा) ॥ १ ॥ हे मेरे प्राणाधार प्रभु, तुम्हें क्योंकर विस्मृत किया जा सकता है— सब महापुरुष तुम्हारी ही भक्ति करते हैं और मुनिजन भी गुरु के उपदेशानुसार तुम्हारी ही सेवा में रत रहते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूर्य और चन्द्र जिसके दीपक हैं, तीनों लोकों में उसी मुरारि (परमात्मा) की एक मात्र ज्योति प्रकाशमान है। गुरमुख जीव (गुरु का आदेश पालनेवाले जीव) रात-दिन पावन हैं, किन्तु मनमुख जीव (मन द्वारा प्रेरित स्वेच्छाचारी जीव) सदैव अन्धकार में भटकते हैं ॥ २ ॥ सिद्धजन नित्य समाधि लगाकर प्रभु-प्राप्ति का प्रयत्न करते हैं, किन्तु इन नेत्रों (इन्द्रियों) से वे क्या पा सकते हैं? यदि वे मन में प्रभु-विश्वास की ज्योति जलाएँ, नाम-स्मरण की निरन्तर ध्वनि पैदा हो, तो सतिगुरु-कृपा से सब संशय नष्ट हो जाते हैं ॥ ३ ॥ हे अनन्त, अयोनि परमात्मा, तुम देवताओं और मनुष्यों, सबके स्वामी हो, तुम्हारा आवास अगम, अपार तथा सत्य है। गुरु नानक कहते हैं, यदि मुझ पर भी तुम्हारी कृपा-दृष्टि हो, तो मुझे भी वही सहजावस्था में परम लीनता प्राप्त हो सकती है ॥ ४ ॥ २ ॥

रागु गूजरी महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ध्रिगु इवेहा जीवणा जितु हरि प्रीति न पाइ। जितु कंमि हरि वीसरै दूजै लगै जाइ ॥ १ ॥ ऐसा सतिगुरु सेवीऐ मना। जितु सेविऐ गोविद प्रीति ऊपजै अवर विसरि सभ जाइ। हरि सेती चितु गहि रहै जरा का भउ न होवई जीवन पदवी पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिंद प्रीति सिउ

इकु सहजु उपजिआ वेखु जैसी भगति बनी। आप सेती आपु खाइआ ता मनु निरमलु होआ जोती जोति समई ॥ २ ॥ बिनु भागा ऐसा सतिगुरु न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ। कूड़ की पालि विचहु निकलै ता सदा सुखु होइ ॥ ३ ॥ नानक ऐसे सतिगुर की किआ ओहु सेवकु सेवा करे गुर आगै जीउ धरेइ। सतिगुर का भाणा चिति करे सतिगुरु आपे क्रिपा करेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

ऐसे जीवन को धिक्कार है, जिसमें परमात्मा के साथ प्यार न हो। जिन कर्मों से प्रभु विस्मृत हो और मन में द्वैत-भाव पैदा हो, (उन्हें भी धिक्कार है) ॥ १ ॥ हे मन, ऐसे सतिगुरु की सेवा में लीन रहो, जिसकी सेवा में प्रभु-प्रीति सजग हो और अन्य सब बातें विस्मृत हो जायँ। परमात्मा में अटूट विश्वास बने, बुढ़ापे या मृत्यु का भय न रहे, तभी जीवन की यथार्थ सत्ता को मान्यता मिल सकती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा की प्रीति निष्काम-प्रेम को उजागर करती है; उसे देखो ! वह अद्वितीय लगाव का स्वरूप है। (जीव जब) स्वयं अपने अहम् को मार देता है, तभी उसका मन निर्मल होता है और परमात्मा की परमज्योति में आत्मा की ज्योति विलीन हो जाती है ॥ २ ॥ सौभाग्य के बिना ऐसा सर्वापेक्षित सतिगुरु प्राप्त नहीं होता; जब जीव मिथ्या परिधियों के घेरे से निकलता है, तभी परम सुख को पाता है ॥३॥ गुरु नानक कहते हैं कि ऐसे सतिगुरु की क्या सेवा की जाय ? (फिर स्वयं ही उत्तर देते हैं) जीव अपना मन-प्राण उसे समर्पित कर दे। तब सतिगुरु अपनी इच्छा से उस पर कृपा कर देंगे ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

॥ गूजरी महला ३ ॥ हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी। हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥ १ ॥ हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी। गुरप्रसादि मेरा मनु भीजै एहा सेव बनी जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मेरा सिम्रिति हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई। हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु त्रिपतै हरि मेरा साकु अंति होइ सखाई ॥ २ ॥ हरि बिनु होर रासि कूड़ी है चलदिआ नालि न जाई। हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै जहा हउ जाउ तह जाई ॥ ३ ॥ सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई। कहै नानकु हरि का भाणा होआ कहणा कछू न जाई ॥४॥२॥४॥

हे जीवो ! तुम केवल सच्चे परमात्मा की सेवा में रत रहो और किसी की सेवा में न लगो; क्योंकि प्रभु की सेवा से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है, जबकि द्वैत-भावी सेवा से जीवन अकारथ हो जाता है ॥१॥ हरि से (मेरा) प्रेम हो, हरि ही (मेरा) आचार-व्यवहार हो और हरि ही (मेरी) कथा-कहानी अर्थात् मेरी चर्चा का विषय हो ! गुरु-कृपा से (मेरा) मन हरि के प्रेम में रत हो, तभी (सही अर्थों में) हरि-सेवा बने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा (हरि) ही मेरी स्मृति (आचार-विधान) हो, वही मेरा शास्त्र (चिन्तन-विधान) हो, वही रिश्ता-नाता, भाई-बन्धु हो; मुझे केवल हरि-नाम की ही भूख हो, हरि-नाम से मुझे तृप्ति मिले, परमात्मा ही अन्ततः मेरा सहायक हो ! ॥ २ ॥ हरि के बिना अन्य सब सम्पत्तियाँ मिथ्या हैं, मृत्यूपरांत साथ नहीं देतीं । प्रभु का नाम ऐसा धन है, जो मेरे साथ चलेगा, जहाँ मैं जाऊँगा, वहीं वह भी साथ देगा ॥ ३ ॥ वह सब तो मिथ्या है; जो मिथ्या द्वैत में उलझता और अन्यत्र कर्म कमाता है; गुरुजी कहते हैं कि यह सब प्रभु की इच्छा से हो रहा है, तर्क-वितर्क व्यर्थ हैं । (उसी में चित्त एकाग्र करो ।) ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

॥ गूजरी महला ३ ॥ जुग माहि नामु दुलंभु है गुरमुखि पाइआ जाइ । बिनु नावै मुकति न होवई वेखहु को विउपाइ ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ । सतिगुर मिलिऐ हरि मनि वसै सहजे रहै समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जां भउ पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ । बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥ २ ॥ सेइ मुकत जि मनु जिणहि फिरि धातु न लागै आइ । दसवै दुआरि रहत करे त्रिभवण सोझी पाइ ॥ ३ ॥ नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ । इहु कारणु करता करे जोती जोति समाइ ॥४॥३॥५॥

संसार में हरि-नाम दुर्लभ है, जो कि केवल सद्‌गुरु से ही प्राप्त होता है । नाम के बिना मुक्ति भी संभव नहीं है, चाहे कोई भी दूसरा उपाय करके देख लो ॥ १ ॥ (अतः) मैं अपने गुरु पर बलिहार हूँ, बार-बार बलिहार हूँ, क्योंकि उसके मिलन से ही मन में परमात्मा का प्यार जगता और हृदय सहजावस्था में लीन होता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब मन में परमात्मा का भय उपजता है, तभी मनुष्य संसार से विमुख होता है । इसी सांसारिक विमुखता में हरि की निकटता है और तभी हरि में विलीनता सम्भव होती है ॥ २ ॥ वे ही जीव मुक्त होते हैं, जो मन पर विजय पाते हैं । इस पर उन्हें भौतिक मोह नहीं रह जाते । वे जीव दशम द्वार में प्रवेश करते और तीनों लोकों की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं ॥ ३ ॥

गुरुजी कहते हैं कि यह आश्चर्य है— शिष्य भी गुरु की कृपा से गुरु-रूप ही हो जाता है। यह स्थिति परमात्मा की ही देन है, तभी जीव परमज्योति में लीन होने का सामर्थ्य प्राप्त करता है ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

॥ गूजरी महला ३ ॥ राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ। गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥ १॥ अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति। हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै जिन्ह कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि। त्रिसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि ॥ २ ॥ अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ। जिसु नर की दुबिधा न जाइ धरमराइ तिसु देइ सजाइ ॥ ३ ॥ करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई। नानक विचहु हउमै मारे तां हरि भेटै सोई॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

(राम-नाम जपने का तात्पर्य जिह्वा से रटना मात्र नहीं है, बल्कि मन से अहम् को दूर कर उसमें प्रभु के शुद्ध प्रेम को बसाना ही नाम-जाप है)। कहने मात्र से राम-प्राप्ति नहीं होती, यदि गुरु-कृपा से प्रभु मन में बसे, तभी सही फल-प्राप्ति (होती है) सम्भव है ॥ १ ॥ जो जीव मन से परमात्मा को प्यार करने लगता है, उसे कभी प्रभु विस्मृत नहीं होता और वह सदा मन में उसका ध्यान बनाए रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन लोगों के मन में कपट है और बाहर से जो सन्तों का वेष बनाए फिरते हैं, उनकी मनःतृष्णा कभी समाप्त नहीं होती; पश्चाताप ही उनके हाथ लगता है ॥२॥ यदि कोई अनेक तीर्थों के स्नान का उद्यम कर भी ले, तो मन का अहम् कभी नष्ट नहीं होता। ऐसा व्यक्ति सदा द्वैत-भावी बना रहता है और (अन्ततः) धर्मराज के दण्ड का अधिकारी होता है ॥ ३ ॥ जिस पर गुरु की कृपा हो, वही जीव हरि-नाम का सही अधिकारी होता है; गुरुजी कहते हैं कि गुरु-कृपा से उसके भीतर का अहम् नष्ट होता है और तभी वह परमात्मा से साक्षात्कार कर सकने का सामर्थ्य ग्रहण करता है ॥४॥४॥६॥

॥ गूजरी महला ३ ॥ तिसु जन सांति सदा मति निहचल जिस का अभिमानु गवाए। सो जनु निरमलु जि गुरमुखि बूझै हरि चरणी चितु लाए ॥ १ ॥ हरि चेति अचेत मना जो इछहि सो फलु होई। गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि सदा सुखु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइ त पूज कराए। जो उसु पूजे सो फलु पाए दीखिआ देवै

साचु बुझाए ।। २ ।। विणु पारसै पूज न होवई विणु मन परचे अवरा समझाए । गुरू सदाए अगिआनी अंधा किसु ओहु मारगि पाए ।। ३ ।। नानक विणु नदरी किछू न पाईऐ जिसु नदरि करे सो पाए । गुर परसादी दे वडिआई अपणा सबदु वरताए ।। ४ ।। ५ ।। ७ ।।

जो जीव अभिमान-रहित हो जाते हैं, उन्हें परम शान्ति तथा निश्चल मति (स्थिर बुद्धि) की प्राप्ति होती है। गुरु-कृपा से जो जीव निर्मल होते हैं, वे परमात्मा को जान लेते हैं और उसी के चरणों में समर्पित हो जाते हैं ।।१।। हे मूर्ख मन, तू भी हरि का स्मरण कर, तभी वाञ्छित फल की प्राप्ति होगी। गुरु की कृपा से तुम्हें हरि-रस (नाम जपने का सुख) मिलेगा, जिसे पीकर परम सुख की उपलब्धि होगी ।। १ ।। रहाउ ।। जीव सच्चे सतिगुरु की शरण में आकर पारस हो जाता है, तभी उसका सम्मान होता है; उसका सम्मान करनेवाला भी सुयोग्य फल का अधिकारी होता है, वह लोगों का पथ-प्रदर्शन कर उन्हें सत्पथ पर प्रेरित करता है ।। २ ।। बिना पारस (गुणयुक्त) बने कोई आदर नहीं मिलता। यदि अपने मन का ही निश्चय पूर्ण न हो और कोई अन्य लोगों को शिक्षा देने लगे, स्वयं अज्ञानांधकार में भटकता हुआ दूसरों का गुरु बन बैठे, तो ऐसा व्यक्ति किसे राह दिखा सकेगा ? ।।३।। गुरुजी कहते हैं कि उस प्रभु की कृपा (नदरि) के बिना कुछ भी उपलब्ध नहीं; जिस पर उसकी दया होती है, वही अधिकारी बनता है। गुरु-कृपा से उसे सम्मान प्राप्त होता है और स्वयं मालिक उसके मन में अपना नाम स्थापित कर देता है ।। ४ ।। ५ ।। ७ ।।

।। गूजरी महला ३ पंच पदे ।। ना कासी मति ऊपजै ना कासी मति जाइ । सतिगुर मिलिऐ मति ऊपजै ता इह सोझी पाइ ।। १ ।। हरि कथा तूं सुणि रे मन सबदु मंनि वसाइ । इह मति तेरी थिरु रहै तां भरमु विचहु जाइ ।। १ ।। रहाउ ।। हरि चरण रिदै वसाइ तू किलविख होवहि नासु । पंच भू आतमा वसि करहि ता तीरथ करहि निवासु ।। २ ।। मनमुखि इहु मनु मुगधु है सोझी किछू न पाइ । हरि का नामु न बुझई अंति गइआ पछुताइ ।। ३ ।। इहु मनु कासी सभि तीरथ सिम्रिति सतिगुर दीआ बुझाइ । अठसठि तीरथ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरदै रहिआ समाइ ।। ४ ।। नानक सतिगुर मिलिऐ हुकमु बुझिआ एकु वसिआ मनि आइ । जो तुधु भावै सभु सचु है सचे रहै समाइ ।। ५ ।। ६ ।। ८ ।।

(तीर्थ-यात्राओं से भी मन स्थिर नहीं होता। मन को गुरु की शरण में लीन करना ही उचित है)। काशी जाने से न बुद्धि मिलती है, न नष्ट होती है— विवेक की जागृति तो गुरु की शरण लेने से होती हैं, तभी जीव को यथार्थ रहस्यों का ज्ञान होता है ॥ १ ॥ हे मन, तू हरि-कथा को सुनकर हरि-नाम को अपने भीतर बसा ले, तभी तेरा विवेक स्थिर होगा और संशयों का नाश हो जायगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि तू परमात्मा के चरणों में चित्त लगा ले, तो तेरे सब पापों का नाश हो ! पाँच सूक्ष्म तत्वों से बने मन को वश कर ले, तो (बिना तीर्थ-स्थानों पर गए ही) सही अर्थों में तीर्थ-यात्रा हो जायगी ॥ २ ॥ हे मनमुखी जीव, यह तेरा मन मूर्ख है, इसे अभी ज्ञान का आलोक नहीं मिला; हरि-नाम के ज्ञान के बिना अन्ततः यह पश्चाताप ही करता रह जायगा ॥ ३ ॥ यह हमारा मन ही काशी आदि तीर्थ है, यही शास्त्र-स्मृतियाँ है। गुरु की दया से यह रहस्य प्रकट हुआ है। जिनके मन में परमात्मा निवसित है, अठसठ तीर्थ उसके अंग-संग सदैव रहते हैं ॥ ४ ॥ गुरुजी कहते हैं कि सतिगुरु की शरण में आने और उसके आदेशों को पालन करने से उस एक अनुपम प्रभु का ज्ञान होता है— तभी जीव उसकी इच्छाओं का सत्कार करता और सत्य में विचरण करने लगता है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ८ ॥

॥ गूजरी महला ३ तीजा ॥ एको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई। दूजै भाइ जेता पड़हि पड़त गुणत सदा दुखु होई ॥ १ ॥ हरि चरणी तूं लागि रहु गुर सबदि सोझी होई। हरि रसु रसना चाखु तूं तां मनु निरमलु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर मिलिऐ मनु संतोखीऐ ता फिरि त्रिसना भूख न होइ। नामु निधानु पाइआ पर घरि जाइ न कोइ ॥ २ ॥ कथनी बदनी जे करे मनमुखि बूझ न होइ। गुरमती घटि चानणा हरि नामु पावै सोइ ॥ ३ ॥ सुणि सासत्र तूं न बुझही ता फिरहि बारो बार। सो मूरखु जो आपु न पछाणई सचि न धरे पिआरु ॥ ४ ॥ सचै जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ। नानक जो तिसु भावै सो करे जिउ तिस की रजाइ ॥५॥७॥९॥

हे ब्राह्मण, केवल प्रभु का नाम ही अखूट धन है, इसी को पाकर सच्चे अर्थों में कोई जीव सिक्ख (शरण लेनेवाला शिष्य) कहलाता है। इसके अतिरिक्त सब विद्याएँ व्यर्थ हैं, उनको पढ़ने-मानने से अन्ततः दुःख ही मिलता है ॥ १ ॥ (इसलिए) ऐ जीव, तुम हरि-चरणों में समर्पित हो जाओ, तुम्हें गुरु की कृपा से पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होगी। तुम सदा

जिह्वा द्वारा हरि-रस का आस्वादन करो, उसी से तुम्हारा मन निर्मल हो जाएगा ।। १ ।। रहाउ ।। सतिगुरु की शरण लेने से मन सन्तुष्ट हो जाता है, दोबारा किसी प्रकार की तृष्णा नहीं जगती । जिसे नाम-धन प्राप्त हो जाता है, वह कभी द्वैत-भाव में लीन नहीं होता ।। २ ।। जो मनमुख अभ्यासी न होकर केवल कहने-बोलने में ही विश्वास करते हैं, उन्हें कभी ज्ञान नहीं मिलता । गुरु-कृपा से ही अन्तर्मन आलोकित होता और उसमें हरि-नाम का वास होता है ।। ३ ।। शास्त्र-कथाओं के श्रवण से भी परमात्मा का सही ज्ञान नहीं होता, तभी जीव इधर-उधर भटकता है । वह जीव मूर्ख है, जिसे सत्य से प्यार नहीं और जो आत्म को पहचानने का प्रयास नहीं करता ।। ४ ।। स्वयं परम सत्य ने ही इस समूचे जगत को भ्रम में डाल रखा है, हम क्या कह सकते हैं ! गुरुजी कहते हैं कि वह स्वेच्छानुसार जो चाहता है, वही करता है ।। ५ ।। ७ ।। ९ ।।

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। रागु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ।। हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि । हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ।। १ ।। मेरे मीत गुरदेव मोकउ राम नामु परगासि । गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ।। १ ।। रहाउ ।। हरि जन के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस । हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ।। २ ।। जिन्ह हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि । जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ।। ३ ।। जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि । धंनु धंनु सत संगति जितु हरिरसु पाइआ मिलि नानक नामु परगासि ।।४।।१।।

[कहते हैं कि यह पद गुरु रामदास जी ने अपने विवाह पर गुरु अमरदास जी के प्रति उच्चारण किया ।]

हे परमात्मा के प्रतिनिधि सतिगुर, मैं तुम्हारे चरणों में विनती करता हूँ । हम कीड़ों समान दीन-हीन हैं, तुम्हारी शरण में पड़े हैं, कृपा करके हमें हरि-नाम का प्रकाश प्रदान करो ।। १ ।। हे मेरे सच्चे मित्र गुरुदेव, मुझे प्रभु-नाम का आलोक दो । गुरु-मतानुसार बताया हरि-नाम ही मेरा प्राणाधार है, हरि का यशोगान ही मेरी मर्यादा है ।। १ ।। रहाउ ।।

परमात्मा की शरण लेनेवाले जीव सौभाग्यशाली होते हैं, जिन्हें सदैव हरि-नाम की प्यास बनी रहती है। हरिनाम-जल के मिलते ही उन्हें तृप्ति होती प्रभु के जीवों की संगति में उनके सद्‌गुण उजागर होते हैं ॥ २ ॥ जिन जीवों को हरि-रस का पान करने का अवसर नहीं मिला, वे भाग्यहीन हैं, सदैव यम के पाश में बँधे रहते हैं। जो सतिगुरु की शरण से वंचित हैं, उनका जीवन धिक् है, वे व्यर्थ ही जीते हैं ॥ ३ ॥ जिन सद्‌जीवों को सतिगुरु की संगति (शरण) प्राप्त हुई है, उनके माथे शुरू से ही भाग्य-रेखा लिखी होती है। वह सत्संगति धन्य है, जिसमें विचरण से हरि-रस की उपलब्धि होती है और (गुरुजी कहते हैं) हरि-नाम का प्रकाश मिलता है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ गूजरी महला ४ ॥ गोविंदु गोविंदु प्रीतमु मनि प्रीतमु मिलि सतसंगति सबदि मनु मोहै। जपि गोविंदु गोविंदु धिआईऐ सभ कउ दानु देइ प्रभ ओहै ॥ १ ॥ मेरे भाई जना मोकउ गोविंदु गोविंदु गोविंदु मनु मोहै। गोविंद गोविंद गोविंद गुण गावा मिलि गुर साधसंगति जनु सोहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख सागर हरि भगति है गुरमति कउला रिधि सिधि लागै पगि ओहै। जन कउ राम नामु आधारा हरिनामु जपत हरिनामे सोहै ॥ २ ॥ दुरमति भागहीन मति फीके नामु सुनत आवै मनि रोहै। कऊआ काग कउ अंम्रित रसु पाईऐ त्रिपतै विसटा खाइ मुखि गोहै ॥ ३ ॥ अंम्रितसरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै। नानक धनु धंनु वडे वड भागी जिन्ह गुरमति नामु रिदै मलु धोहै ॥ ४ ॥ २ ॥

इस संसार का स्वामी परमात्मा हमें प्रिय है, मन का प्रियतम है; वह सत्संगति में विचरने से शब्द द्वारा हमारे मन को मोह लेता है। (इसलिए) हमें गोविन्द का नाम जपना चाहिए, उसके ध्यान में रत होना चाहिए, (क्योंकि) वही प्रभु मनोवाञ्छाओं का पूरक है ॥१॥ मेरे भाइयो! हरि (के प्रिय) भक्तो! गोविन्द का नाम मेरा मन मोह लेता है, (इसलिए मैं) बार-बार गोविन्द का गुणगान करता हूँ और गुरु की शरण में रहकर साधु-संगति का रस लेता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु के मतानुसार की गई भक्ति सुखों का भण्डार है, स्वयं लक्ष्मी और रिद्धि-सिद्धि शक्तियाँ गुरु-भक्त के चरणों में शरण माँगती हैं। जिन्हें एक मात्र हरि-नाम का सहारा है, वे हरि-नाम का जाप करते और हरि-नाम में ही शोभते हैं ॥ २ ॥ दुर्मति जीव दुर्भाग्यशाली मन्द बुद्धि वाले हैं; उन्हें राम-नाम के श्रवण पर क्रोध

उपजता है, यथा कौए को कितने भी उत्तम भोजन खिलाएँ, वह विष्ठा और गोबर खाकर ही प्रसन्न होता है ॥ ३ ॥ सतिगुरु स्वयं अमृत-सरोवर है, वह सदा सत्याचारी है, उसमें स्नान करने (अर्थात् उसकी शरण लेने) से कौआ भी हंस हो जाता है। गुरुजी कहते हैं कि वे जीव धन्य हैं, भाग्यशाली हैं, जिनके मन की मलिनता गुरु-कृपा द्वारा नाम-जल से धुल जाती है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ गूजरी महला ४ ॥ हरि जन ऊतम ऊतम बाणी मुखि बोलहि परउपकारे। जो जनु सुणै सरधा भगति सेती करि किरपा हरि निसतारे॥ १ ॥ राम मोकउ हरिजन मेलि पिआरे। मेरे प्रीतम प्रान सतिगुरु गुरु पूरा हम पापी गुरि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ॥ गुरमुखि वडभागी वडभागे जिन हरि हरि नामु अधारे। हरि हरि अंम्रितु हरि रसु पावहि गुरमति भगति भंडारे ॥ २ ॥ जिन दरसनु सतिगुर सतपुरख न पाइआ ते भागहीण जमि मारे। से कूकर सूकर गरधभ पवहि गरभ जोनी दयि मारे महा हतिआरे ॥ ३ ॥ दीन दइआल होहु जन ऊपरि करि किरपा लेहु उबारे। नानक जन हरि की सरणाई हरि भावै हरि निसतारे ॥ ४ ॥ ३ ॥

हरि-भक्त श्रेष्ठ हैं, उनकी वाणी श्रेष्ठ है और वे जो कुछ भी बोलते हैं, परोपकार के लिए ही कहते हैं। जो लोग उनकी वाणी को श्रद्धा-भक्ति-युक्त भाव से सुनते हैं, परमात्मा कृपा करके उनको (भवसागर से) पार उतारता है ॥ १ ॥ (इसलिए) हे राम, मुझे हरि-भक्तों की संगति प्रदान करो। सतिगुरु मुझे प्राणों से भी प्रिय है, वह मुझ पापी को भी मोक्ष प्रदान करनेवाला है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु का आदेश पालनेवाले भाग्यशाली हैं, वे भी भाग्यशाली हैं, जिन्हें एक मात्र प्रभु-नाम का ही आश्रय है। वे गुरु के मतानुसार आचरण करते हुए हरि-नाम रूपी अमृत का रस-पान करते हैं ॥ २ ॥ जो जीव सत्पुरुष के दर्शनों से वंचित हैं, वे भाग्यहीन हैं, वे यमदूतों द्वारा प्रताड़ित होते हैं। वे कुत्ते, सुअर या गधे जैसी योनियों के जन्म-मरण-चक्र में दुःखी होते हैं, परमात्मा उन पापियों (हत्यारों) को दण्ड देता है ॥ ३ ॥ हे दीन-दयाल प्रभु, अपने जीवों पर कृपा करके उनकी रक्षा करो। गुरुजी कहते हैं, (हे परमात्मा) जो जीव तुम्हारी शरण लेते हैं, तुम अपनी इच्छा से उनको तार देते हो ॥ ४॥ ३ ॥

॥ गूजरी महला ४ ॥ होहु दइआल मेरा मनु लावहु हउ अनदिनु राम नामु नित धिआई। सभि सुख सभि गुण सभि

निधान हरि जितु जपिऐ दुख भुख सभ लहि जाई ।। १ ।। मन मेरे मेरा राम नामु सखा हरि भाई । गुरमति राम नामु जसु गावा अंति बेली दरगह लए छडाई ।। १ ।। रहाउ ।। तूं आपे दाता प्रभु अंतरजामी करि किरपा लोच मेरै मनि लाई । मै मनि तनि लोच लगी हरि सेती प्रभि लोच पूरी सतिगुर सरणाई ।। २ ।। माणस जनमु पुंनि करि पाइआ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु बिरथा जाई । नाम बिना रस कस दुखु खावै मुखु फीका थुक थूक मुखि पाई ।। ३ ।। जो जन हरि प्रभ हरि हरि सरणा तिन दरगह हरि हरि दे वडिआई । धंनु धंनु साबासि कहै प्रभु जन कउ जन नानक मेलि लए गलि लाई ।। ४ ।। ४ ।।

हे प्रभु, कृपा करके मेरे मन को स्थिरता प्रदान करो, मैं दिन-रात तुम्हारे नाम का ध्यान करूँगा । हरि-नाम के जपने से सब दुःख-भूख दूर हो जाती है, वह सुखों, गुणों और निधियों का भण्डार है ।। १ ।। हे मन, राम-नाम ही मेरा एक मात्र बन्धु और मित्र है । (यदि मैं) गुरु-उपदेशानुसार राम-नाम जपूँ और राम-गुणगान करूँ, तो वही अन्त समय मेरा सहायक होगा और दरगाह में मुझे बचा लेगा ।। १ ।। रहाउ ।। हे परमात्मा, तू दाता है, अन्तर्यामी है, तुम्हींने कृपा करके मेरे मन में यह लग्न जगा दी है । अब मेरे तन-मन में प्रभु की लग्न (प्रीति) लगी है; परमात्मा ने मेरी चाह सतिगुरु के चरणों में पूर्ण की है ।। २ ।। मनुष्य-जन्म उत्तम कर्मों का फल है, किन्तु हरि-नाम के बिना धिक्कार-योग्य है, व्यर्थ ही बीत रहा है । परमात्मा के नाम के बिना तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन भी दुःख-रूप हैं, मुँह फीका ही रहता है (अर्थात् स्वाद व्यर्थ हैं), मुँह पर थूक पड़ती है (अर्थात् अपमान होता है) ।। ३ ।। जो जीव परमात्मा की शरण लेते हैं (उसका नाम जपते हैं), परमात्मा उन्हें दरगाह में सम्मानित करता है । गुरुजी कहते हैं कि वे जीव धन्य हैं, उन्हें शाबाश है, जो प्रभु में लीन हो जाते हैं (जिन्हें परमात्मा गले लगा लेता है) ।। ४ ।। ४ ।।

।। गूजरी महला ४ ।। गुरमुखि सखी सहेली मेरी मोकउ देवहु दानु हरि प्रान जीवाइआ । हम होवह लाले गोले गुर सिखा के जिन्हा अनदिनु हरि प्रभु पुरखु धिआइआ ।। १ ।। मेरै मनि तनि बिरहु गुरसिख पग लाइआ । मेरे प्रान सखा गुर के सिख भाई मोकउ करहु उपदेसु हरि मिलै मिलाइआ ।।१।।रहाउ।। जा हरि प्रभ भावै ता गुरमुखि मेले जिन्ह वचन गुरू सतिगुर मनि

भाइआ। वड भागी गुर के सिख पिआरे हरि निरबाणी निरबाण पदु पाइआ ॥ २ ॥ सतसंगति गुर की हरि पिआरी जिन हरि हरि नामु मीठा मनि भाइआ। जिन सतिगुर संगति संगु न पाइआ से भागहीण पापी जमि खाइआ ॥ ३ ॥ आपि क्रिपालु क्रिपा प्रभु धारे हरि आपे गुरमुखि मिलै मिलाइआ। जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नामि समाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे गुरमुखो, आप ही मेरे भाई, बन्धु, सखा-सहायक हो; मुझे जीवन-प्राण प्रभु का दान दो (अर्थात् हे गुरु-भक्तो, मुझे परमात्मा तक पहुँचने का मार्ग सुझाओ)। मैं उन गुरु-सिक्खों का दास हूँ, जो दिन-रात परमात्मा के ध्यान में निमग्न रहते हैं ॥ १ ॥ (परमात्मा ने) मेरे तन-मन में गुरु-सिक्खों के चरणों की लग्न लगा दी है; गुरु के सिक्ख (गुरमुख) मेरे प्राण-प्रिय मित्र हैं, उन्हीं के उपदेश से मुझे परमात्मा मिल सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब परमात्मा की इच्छा होती है, तभी सतिगुरु के वचनों से प्यार करनेवाले गुरमुखों से मेल होता है। वे गुरु-सिक्ख भाग्यशाली हैं, जिन्हें मोक्षदाता प्रभु ने निर्वाण-पद प्रदान किया है ॥ २ ॥ गुरु का सत्संग परमात्मा की तरह ही प्रिय होता है, (क्योंकि) उसमें परमात्मा के अमृत-मधुर नाम का रस-पान करने को मिलता है। जिन्हें किसी सच्चे गुरु का सत्संग प्राप्त नहीं होता, वे भाग्यहीन हैं, पापी हैं, यम उन्हें पीड़ित करता है ॥ ३ ॥ उस कृपालु परमात्मा की ही कृपा हो, तो गुरमुखों के मिलाने से जीव प्रभु से मिल पाता है। गुरुजी कहते हैं कि गुणों से भरी गुरुवाणी के द्वारा ही जीव हरि-नाम में लीन होता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ गूजरी महला ४ ॥ जिन सतिगुरु पुरखु जिनि हरि प्रभु पाइआ मोकउ करि उपदेसु हरि मीठ लगावै। मनु तनु सीतलु सभ हरिआ होआ वडभागी हरि नामु धिआवै ॥ १ ॥ भाई रे मोकउ कोई आइ मिलै हरिनामु द्रिड़ावै। मेरे प्रीतम प्रान मनु तनु सभु देवा मेरे हरि प्रभ की हरि कथा सुनावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धीरजु धरमु गुरमति हरि पाइआ नित हरिनामै हरि सिउ चितु लावै। अंम्रित बचन सतिगुर की बाणी जो बोलै सो मुखि अंम्रितु पावै ॥ २ ॥ निरमलु नामु जितु मैलु न लागै गुरमति नामु जपै लिव लावै। नामु पदारथु जिन नर नही पाइआ से भागहीण मुए मरि जावै ॥ ३ ॥ आनद मूलु जगजीवन दाता सभ जन कउ अनदु करहु हरि धिआवै। तूं दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥ ४ ॥ ६ ॥

(कोई ऐसा गुरमुख) जिसने समर्थ सतिगुरु तथा स्वयं परमात्मा को पा लिया हो, वह मुझे उपदेश देकर प्रभु-प्यार में तल्लीन कर दे ! (उसके आदेशानुसार) हरि-नाम जपने से मेरा भाग्योदय होगा, तन-मन शीतल और प्रफुल्लित हो जायगा ।। १ ।। हे भाई, कोई तो मुझे ऐसा महापुरुष मिले, जो हरि-नाम का जाप पक्का करवाए— मैं उस प्राण-प्रिय पर तन-मन वार दूँगा, जो मुझे हरि की श्रेष्ठ कथा का रस-पान करवाएगा ।। १ ।। रहाउ ।। मुझे गुरु के उपदेश से ही परमात्मा की प्राप्त्यर्थ धैर्य और दृढ़ता प्राप्त हुए हैं और मेरा मन नित्य हरि में लीन हुआ है । सच्चे गुरु की वाणी अमृत-समान संजीवनी होती है, उसके दृढ़ाने से मुख अमृत-रस का पान करता है ।। २ ।। हरि का नाम नित्य निर्मल है, उसे कभी मल नहीं छूता; जीव गुरु-मतानुसार उसका जाप करता और प्यार से उसी में मग्न हो जाता है । जिस व्यक्ति को नाम-पदार्थ की उपलब्धि नहीं हुई, वह भाग्यहीन मृतक के समान है ।। ३ ।। हे आनन्द-स्रोत ! तुम जग-जीवन-दाता हो । अपने सब जीवों की चिन्ताओं का हरण करो, ताकि वे निश्चिन्त तुम्हारा ध्यान कर सकें । गुरुजी कहते हैं कि तुम स्वामी हो, ये सब जीव तुम्हारे हैं, इन पर कृपा करके इन्हें गुरमुख की शरण प्रदान करो ताकि ये तुममें लीन हो सकें ।। ४ ।। ६ ।।

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। गूजरी महला ४ घरु ३ ।।
माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए । सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए ।। १ ।। हमरा जोरु सभु रहिओ मेरे बीर । हरि का तनु मनु सभु हरि कै वसि है सरीर ।। १ ।। रहाउ ।। भगत जना कउ सरधा आपि हरि लाई । विचे ग्रिसत उदास रहाई ।। २ ।। जब अंतरि प्रीति हरि सिउ बनि आई । तब जो किछु करे सु मेरे हरि प्रभ भाई ।। ३ ।। जितु कारै कंमि हम हरि लाए । सो हम करह जु आपि कराए ।। ४ ।। जिन की भगति मेरे प्रभ भाई । ते जन नानक राम नाम लिव लाई ।। ५ ।। १ ।। ७ ।। १६ ।।

माता, पिता, पुत्रादि रिश्ते हरि ने स्वयं बनाए हैं । हरि ने स्वयं सबके सम्बन्ध जोड़े हैं ।। १ ।। हे मेरे भाई, हमारा जोड़ भी (इसी तरह) रहा है । (इसलिए) हमने अपना तन-मन और शरीर सब हरि को सौंप दिए हैं ।। १ ।। रहाउ ।। भक्तजनों की श्रद्धा स्वयं हरि ने ही उपजाई है । (भक्तजन) गृहस्थी में अलिप्त बने रहते हैं ।। २ ।। जब सेवक के मन में

परमात्मा की सच्ची प्रीति उपजती है, तब जो भी वह सेवक करता है, भगवान को सुहाता है ।। ३ ।। जिस कार्य में हरि ने हमें लगाया है, वही हम करते हैं और वह स्वयं (हमसे वह) करवाता है ।। ४ ।। जिनकी भक्तिभावना प्रभु को लुभाती है, वे ही (गुरुजी कहते हैं) राम-नाम में लीन हो जाते हैं ।। ५ ।। १ ।। ७ ।। १६ ।।

गूजरी महला ५ चउपदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ । सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ।। १ ।। मेरे माधउ जी सत संगति मिले सि तरिआ । गुरपरसादि परमपदु पाइआ सूके कासट हरिआ ।। १ ।। रहाउ ।। जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ । सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ।। २ ।। ऊडै ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ । उन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ।। ३ ।। सभ निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ । जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ।। ४ ।। १ ।।

हे मन, तू क्यों रोज़ी की चिन्ता में भाग-दौड़ करता है, परमात्मा ने स्वयं तुम्हारे लिए सब प्रबन्ध कर रखे हैं (अर्थात् रोज़ी कमाने के धन्धों को प्रभु-मिलन में रुकावट न समझो, परमात्मा सबको भोजन पहुँचाता है) । पर्वतों-पत्थरों में जो कीट रहते हैं, उन्हें भी वह प्रभु भोजन देता है ।। १ ।। (सत्य तो यह है कि) हे प्रभु, जिसे सत्संगति मिली, वह भवसागर से पार होने का अधिकारी बन गया । गुरु की कृपा से जीव परमपद को पाता है और सूखा काठ भी हरा हो जाता है (अर्थात् निकृष्ट जीव भी परमपद को पाकर श्रेष्ठतर बन जाता है) ।। १ ।। रहाउ ।। माता, पिता, लोक, पुत्र, पत्नी आदि कोई किसी को अवलम्ब नहीं देता । परमात्मा प्रत्येक जीव को भोजन पहुँचाता है, (इसलिए) मन में किसी प्रकार का कोई भय नहीं होना चाहिए ।। २ ।। कूँज पक्षी उड़कर कोसों दूर आ जाते हैं, बच्चों को पीछे छोड़ देते हैं । क्या तुमने कभी मन में सोचा है कि उन्हें कौन दाना चुगाता होगा ! ।। ३ ।। नौ निधियाँ, अठारह सिद्धियाँ, उसी परमात्मा की कृपा से हस्तामलक हो सकती हैं । गुरुजी कहते हैं कि

(परमात्मा पर) बार-बार, सहस्रों बार बलिहार हैं, उसके प्रसार का कोई अन्त नहीं ॥ ४ ॥ १ ॥

गूजरी महला ५ चउपदे घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ किरिआचार करहि खटु करमा इतु राते संसारी । अंतरि मैलु न उतरै हउमै बिनु गुर बाजी हारी ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी । कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत बेद सिम्रिति सभि सोधे सभ एका बात पुकारी । बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ॥ २ ॥ अठसठि मजनु करि इसनाना भ्रमि आए धर सारी । अनिक सोच करहि दिन राती बिनु सतिगुर अंधिआरी ॥ ३ ॥ धावत धावत सभु जगु धाइओ अब आए हरिदुआरी । दुरमति मेटि बुधि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

सांसारिक जन कर्मकाण्डी जीवन जीते और षट्कर्म में संलग्न रहते हैं। (किन्तु) इससे भीतर का मैल नहीं कटता, गुरु के बिना (जीव) व्यर्थ जीवन जीता है ॥ १ ॥ हे मेरे परमात्मा, कृपापूर्वक मेरी रक्षा करो। करोड़ों में कोई विरल ही तुम्हारा सच्चा सेवक होता है, अन्य सब तो व्यवहार-कुशल-मात्र होते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ शास्त्र, वेद, स्मृतियाँ आदि सब धर्मग्रंथों का अवलोकन किया, सब एक ही सत्य उद्घाटित करते हैं— (वह सत्य है) गुरु के बिना कोई मुक्ति नहीं पा सकता, मन में ज़रा विचारकर देखो ॥ २ ॥ यदि कोई अठसठ तीर्थों पर स्नान कर ले, समूची धरती की परिक्रमा भी सम्पन्न करे, रात-दिन अनेक चिन्तन करता रहे, किन्तु सतिगुरु के आलोक के बिना उनका अज्ञानांधकार कभी दूर नहीं हो सकता ॥ ३ ॥ सारा संसार घूम-घूमकर अब हम प्रभु के द्वार पर आए हैं। गुरुजी कहते हैं कि अब हमारी कुबुद्धि को दूर कर, हे प्रभु, (ज्ञान का) प्रकाश प्रदान करो और किसी सद्गुरु की शरण में मोक्ष दो ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ हरि धनु जाप हरि धनु ताप हरि धनु भोजनु भाइआ । निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि साध संगति महि पाइआ ॥ १ ॥ माई खाटि आइओ घरि पूता ।

हरिधनु चलते हरिधनु बैसे हरिधनु जागत सूता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिधनु इसनानु हरिधनु गिआनु हरि संगि लाइ धिआना। हरिधनु तुलहा हरिधनु बेड़ी हरि हरि तारि पराना ॥ २ ॥ हरिधन मेरी चिंत विसारी हरिधनि लाहिआ धोखा। हरिधन ते मै नवनिधि पाई हाथि चरिओ हरि थोका ॥ ३ ॥ खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे। लादि खजाना गुरि नानक कउ दीआ इहु मनु हरि रंगि रंगे ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

हरि-नाम हमारा जप, तप और मन-भाता भोजन है। क्षण भर भी वह मन से अलग नहीं होता, साधु-संगति में ही हरि का साक्षात्कार सम्भव है ॥ १ ॥ धन कमाकर पुत्र घर आया है, किन्तु मेरा धन तो हरि-स्मरण है, जो चलते, बैठते, सोते, जागते निरन्तर मन में सजग रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि-नाम मेरा स्नान है, हरि-नाम ज्ञान है और हरि में ही निरन्तर ध्यान-मग्न हूँ। हरि ही मेरी नाव है, तुलहा है, (भवसागर से) पार करनेवाला साधन है ॥ २ ॥ हरि-नाम रूपी धन को पाकर मेरी चिन्ता मिट गई है, सब भ्रम दूर हो गए हैं; हरि-नाम के जाप से ही मुझे नौ निधियाँ प्राप्त हुई हैं और स्वयं परमात्मा रूपी परम धन हाथ लगा है ॥ ३ ॥ (यह ऐसा धन है कि) खाने, खर्चने से कभी कम नहीं पड़ता, लोक-परलोक में सहायक होता है। गुरुजी कहते हैं, हरि-नाम का यह कोष गुरु ने हमें दिया है, अतः यह मन प्रभु के रंग में पूरी तरह रँग गया है ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो। सो हरि हरि तुम्ह सदही जापहु जाका अंतु न पारो ॥ १ ॥ पूता माता की आसीस। निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला संत संगि तेरी प्रीति। कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥ २ ॥ अंम्रितु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता। रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥ ३ ॥ भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला। नानक दासु उन संगि लपटाइओ जिउ बूंदहि चात्रिकु मउला ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥

जिसे (प्रभु को) स्मरण करने से सब पापों का नाश होता है और पितरों (मृतक पूर्वजों) को भी मुक्ति प्राप्त होती है, उस हरि का तुम

सदैव नाम-जाप करो; उसका कोई अन्त नहीं (वह अगम, अपार है) ।।१।। पुत्र के लिए माता की कल्याणकारी आशीष (यही हो सकती है कि) तुम्हें क्षण भर के लिए भी हरि विस्मृत न हो, उस परमप्रभु को सदा भजते रहो ।। १ ।। रहाउ ।। सतिगुरु की तुम पर कृपा हो और गुरमुखों के साथ तुम्हारी नित्य प्रीति बनी रहे। परमात्मा का दिया सम्मान ही तुम्हारा कपड़ा हो और प्रभुगुण-गान ही भोजन हो ।।२।। सदैव हरि-नामामृत का पान करो, हरि-स्मरण करते हुए दीर्घायु का भोग करो, अनन्त सुख-आनन्द प्राप्त हो। जीवन में सदा खुशियाँ और उल्लास बना रहे, सब आशाएँ पूर्ण हों, चिन्ताओं का नाश हो ।। ३ ।। तुम्हारा मन हरि-चरण रूपी कमल पर भँवरे की तरह सदा मँड़राता रहे। गुरुजी कहते हैं कि तुम उनको (हरि-चरणों को) स्वाति-बूँद मानकर चातक की नाईं उन पर आसक्त रहो ।। ४ ।। ३ ।। ४ ।।

।। गूजरी महला ५ ।। मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात। खिन महि थापि उथापनहारा आपन हाथि मतात ।। १ ।। सिआनप काहू कामि न आत। जो अनरूपिओ ठाकुरि मेरै होइ रही उह बात ।। १ ।। रहाउ ।। देसु कमावन धन जोरन की मनसा बीचे निकसे सास। लसकर नेब खवास सभ तिआगे जमपुरि ऊठि सिधास ।। २ ।। होइ अनंनि मन हठ की द्रिड़ता आपस कउ जानात। जो अनिंदु निंदु करि छोडिओ सोई फिरि फिरि खात ।। ३ ।। सहज सुभाइ भए किरपाला तिसु जन की काटी फास। कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास ।। ४ ।। ४ ।। ५ ।।

[गुरु अर्जुनदेव जी अपने किसी सम्बन्धी के विवाह पर लाहौर गए थे। अपनी माताजी की ओर से वहाँ उन्होंने आशीर्वाद-रूप में यह पद कहा था। ऐसी मान्यता है।]

मनुष्य पश्चिम की ओर जाने का निर्णय करता है, परन्तु ईश्वर उसे पूर्व की ओर ले जाता है। परमात्मा क्षण भर में बनाकर ढा देनेवाला है, उसने निर्णय की शक्ति अपने ही हाथ रखी है ।। १ ।। अधिक बुद्धिमत्ता किसी काम नहीं आती। जो बात मेरे प्रभु ने निश्चित कर दी (अनुरूप समझी है), वही होकर रहती है ।। १ ।। रहाउ ।। देशों पर विजय पाने तथा दौलत लूटने की इच्छाएँ सब मिट्टी में मिल गईं और बीच में ही मृत्यु ने आ घेरा। सेनाएँ, नायब, नौकर-चाकर सब छोड़कर यमपुरी को उठ चलना पड़ा ।। २ ।। अनन्य भाव होने पर भी (मनुष्य) मन के हठ के

कारण अपने मान को दिखाता है। अनिन्द्य वस्तु को भी निन्दनीय कहकर छोड़ता और अन्ततः विवश होकर उसी को ग्रहण कर लेता है ।। ३ ।। सहज में ही जब प्रभु-कृपा हुई तो जीव के सब पाश कट जाते हैं। गुरुजी कहते हैं कि सच्चे गुरु से भेंट हो जाने से गृहस्थ हो या त्यागी, प्रभु के दरबार में सब स्वीकार्य हो जाते हैं ।। ४ ।। ४ ।। ५ ।।

।। गूजरी महला ५ ।। नामु निधानु जिनि जनि जपिओ तिन के बंधन काटे। काम क्रोध माइआ बिखु ममता इह बिआधि ते हाटे ।। १ ।। हरिजसु साधसंगि मिलि गाइओ। गुर परसादि भइओ मनु निरमलु सरब सुखा सुख पाइअउ ।। १ ।। रहाउ ।। जो किछु कीओ सोई भल मानै ऐसी भगति कमानी। मित्र सत्रु सभ एक समाने जोग जुगति नीसानी ।। २ ।। पूरन पूरि रहिओ स्रब थाई आन न कतहूं जाता। घट घट अंतरि सरब निरंतरि रंगि रविओ रंगि राता ।। ३ ।। भए क्रिपाल दइआल गुपाला ता निरभै कै घरि आइआ। कलि कलेस मिटे खिन भीतरि नानक सहजि समाइआ ।। ४ ।। ५ ।। ६ ।।

हरि-नाम (सर्वोच्च निधि) का जिन्होंने जाप किया, उनके सब बन्धन कट गए। वे लोग काम, क्रोध, माया आदि के विषैले रोगों से मुक्त हो गए ।। १ ।। जिन्होंने सत्संगति में जुटकर हरि का गुणगान किया, गुरु-कृपा से उनका चित्त निर्मल हो गया और उन्हें सर्वोत्तम सुखों की उपलब्धि हुई ।। १ ।। रहाउ ।। उन्हें ऐसी पूर्ण भक्ति मिली कि उनका प्रत्येक आचार-व्यवहार भला हो गया। वे परम योग-साधक हो गए, मित्र-शत्रु उन्हें एक-समान दिखने लगे ।। २ ।। वह परमपुरुष परमातमा, उसे सब जगह रमण करता दीख पड़ने लगा, उसके अतिरिक्त अन्य कुछ न रहा। प्रत्येक घट में (सबके भीतर) वही प्रभु आनन्द-मग्न रमता है —ऐसा अनुभव हुआ ।। ३ ।। जब धरती का स्वामी परमातमा कृपालु हुआ तो जीव को निर्भयता प्रदान की और (गुरुजी कहते हैं कि) उसके सब दुःख-अवसाद मिट गए और वह प्रकृत तथा पूर्ण आत्मिक सुख में लीन हो गया ।। ४ ।। ५ ।। ६ ।।

।। गूजरी महला ५ ।। जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ। पारब्रहमु जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ ।। १ ।। गुर हरि बिनु कोन ब्रिथा दुखु काटै। प्रभ तजि अवर सेवकु जे होईहै तितु मानु महतु जसु घाटै ।। १ ।।

रहाउ ॥ माइआ के सनबंध सैन साक कित ही कामि न आइआ। हरि का दासु नीच कुलु ऊचा तिसु संगि मन बांछत फल पाइआ ॥ २ ॥ लाख कोटि बिखिआ के बिंजन ता महि त्रिसन न बूझी। सिमरत नामु कोटि उजीआरा बसतु अगोचर सूझी ॥ ३ ॥ फिरत फिरत तुम्हरै दुआरि आइआ भै भंजन हरि राइआ। साध के चरन धूरि जनु बाछै सुखु नानक इहु पाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥

जिस मनुष्य के पास हम अपने दु:खों की प्रार्थना करते हैं, वह पहले से ही दु:खों से भरा मिलता है। जो केवल परब्रह्म की ही आराधना करते हैं, वही संसार-सागर से पार हो सकते हैं ॥ १ ॥ सच्चे गुरु तथा हरि के बिना कोई दूसरा मानवी दु:खों, क्लेशों का नाश नहीं कर सकता। (अत:) जो पूर्ण परमात्मा को छोड़ किसी अन्य की सेवा में लीन होता है, उसका सम्मान, महत्व और यश घटता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सांसारिक रिश्ते-नाते, सगे सम्बन्धी किसी काम नहीं आते। (इसके विपरीत) हरि का सेवक, चाहे वह नीची जाति का ही क्यों न हो, सर्वोत्तम है; उसकी संगति में मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है ॥ २ ॥ विषय-भोग के लाखों-करोड़ों व्यंजनों से भी तृष्णा नहीं मिटती, किन्तु हरि का नाम स्मरण करने से अज्ञानांधकार नष्ट होकर उजाला हो जाता है और (उस उजाले में) गुप्त वस्तु (परमात्मा) भी सूझने लगती है ॥ ३ ॥ हे भय-भंजन प्रभु, मैं बहुत भटक-भटककर अब तुम्हारे द्वार पर आया हूँ, (गुरुजी कहते हैं कि) मुझे साधु-चरण की धूलि-लब्धि का सुख प्रदान करो, यही मेरी माँग है ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥

गूजरी महला ५ पंचपदा घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ प्रथमे गरभ माता कै वासा ऊहा छोडि धरनि महि आइआ। चित्रसाल सुंदर बाग मंदर संगि न कछहू जाइआ ॥ १ ॥ अवर सभ मिथिआ लोभ लबी। गुरि पूरै दीओ हरिनामा जीअ कउ एहा वसतु फबी ॥१॥रहाउ॥ इसट मीत बंधप सुत भाई संगि बनिता रचि हसिआ। जब अंती अउसरु आइ बनिओ है उन पेखत ही कालि ग्रसिआ ॥ २ ॥ करि करि अनरथ बिहाझी संपै सुइना रूपा दामा। भाड़ी कउ ओहु भाड़ा मिलिआ होरु सगल भइओ बिराना ॥ ३ ॥ हैवर

गैवर रथ संबाहे गहु करि कीने मेरे । जब ते होई लांमी धाई चलहि नाही इक पैरे ।। ४ ।। नामु धनु नामु सुख राजा नामु कुटंब सहाई । नामु संपति गुरि नानक कउ दीई ओह मरै न आवै जाई ।। ५ ।। १ ।। ८ ।।

(यह मनुष्य) पहले माता के गर्भ में रहा और फिर वहाँ से छोड़कर धरती पर आया । चित्रशालाएँ, सुन्दर वाटिकाएँ, महल आदि कुछ भी संग नहीं लाया ।। १ ।। अन्य सब नाशवान लोभ मात्र है, सच्चे गुरु से प्राप्त होनेवाला हरि-नाम ही एक मात्र ऐसी वस्तु है, जो इस मनुष्य के लिए उपयुक्त है (अर्थात् चित्रशालाएँ भव्य प्रासाद आदि सब मिथ्या और नाशवान हैं, केवल प्रभु का नाम ही स्थिर है) ।। १ ।। रहाउ ।। मनुष्य प्रिय मित्र, बन्धु, पुत्र, भाई और पत्नी के संग हँसता-खेलता रहा, किन्तु जब अन्तिम समय आया, तो उनके देखते-देखते ही काल ने ग्रस लिया ।। २ ।। अन्याय और धूर्तता कर-करके सम्पत्ति प्राप्त की, सोना-चाँदी-रुपये एकत्रित किए । किन्तु (स्थिति यह है कि) भाड़ैत को तो केवल भाड़ा ही मिला, शेष सब धन बेग़ाने हाथों में गया । (अर्थात् धन एकत्रित करनेवाला तो उसमें गुज़र ही करता है, शेष माल तो दूसरे खा जाते हैं) ।। ३ ।। हाथी, घोड़े, रथ आदि इकट्ठे किए और बहुत सँभाल-सँभालकर रखे, किन्तु जब दूर की यात्रा (लम्बी चढ़ाई— अर्थात् मृत्यु आई) करने का अवसर आया तो ये चीज़ें एक भी क़दम साथ न चलीं ।। ४ ।। सब सुखों का सिरमौर हरि-नाम है, वही सम्पूर्ण परिवार का सहायक है । गुरुजी कहते हैं कि नाम की सम्पत्ति सच्चे गुरु की देन है, वह कभी नष्ट नहीं होती और न ही माया की नाईं आने-जानेवाली वस्तु है ।। ५ ।। १ ।। ८ ।।

गूजरी महला ५ तिपदे घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। दुख बिनसे सुख कीआ निवासा त्रिसना जलनि बुझाई । नामु निधानु सतिगुरू द्रिड़ाइआ बिनसि न आवै जाई ।। १ ।। हरि जपि माइआ बंधन तूटे । भए क्रिपाल दइआल प्रभ मेरे साध संगति मिलि छूटे ।। १ ।। रहाउ ।। आठ पहर हरि के गुन गावै भगति प्रेम रसि माता । हरख सोग दुहु माहि निराला करणैहारु पछाता ।। २ ।। जिस का सा तिनही रखि लीआ सगल जुगति बणि आई । कहु नानक प्रभ पुरख दइआला कीमति कहणु न जाई ।। ३ ।। १ ।। ९ ।।

दुःख नष्ट हुए, सब सुखों का आवास हुआ और तृष्णा की जलन भी शान्त हो गई। (क्योंकि) सतिगुरु ने नाम का धन प्रदान कर उसमें दृढ़ श्रद्धा पैदा कर दी है, यह सम्पत्ति स्थिर है (आनी-जानी वस्तु नहीं) ॥ १ ॥ हरि-नाम जपने से माया के बन्धन टूट गए। मेरे दयालु परमात्मा ने ऐसी कृपा की है कि (मैं) बन्धन-मुक्त हो गया हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (अब जीव) आठों पहर प्रेम और भक्ति में रत प्रभु के गुण गाता है। (उसने) हर्ष-शोक से अलग रहनेवाले सर्वकर्ता को पहचान लिया ॥ २ ॥ जिस स्वामी का दास था, उसी ने रक्षा की और सब युक्तियाँ आन बनीं (अर्थात् सब मनोवांछित सम्पन्न हो गया)। गुरुजी कहते हैं कि प्रभु बड़ा दयावान है, उसका पूर्ण यशोगान सम्भव नहीं हो पाता ॥ ३ ॥ १ ॥ ९ ॥

गूजरी महला ५ दुपदे घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पतित पवित्र लीए करि अपुने सगल करत नमसकारो। बरनु जाति कोऊ पूछै नाही बाछहि चरन रवारो ॥ १ ॥ ठाकुर ऐसो नामु तुम्हारो। सगल स्रिसटि को धणी कहीजै जन को अंगु निरारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगि नानक बुधि पाई हरि कीरतनु आधारो। नामदेउ त्रिलोचनु कबीर दासरो मुकति भइओ चंमिआरो ॥२॥२॥१०॥

(प्रभु कृपापूर्वक नीचों को भी ऊँचा उठाता और उन्हें समादृत करता है) प्रभु ने पतितों, पापियों को भी अपनाकर पवित्र कर लिया; अब सब लोग उन्हें नमन करते हैं। अब कोई उनकी जाति-पाँति नहीं पूछता, बल्कि लोग उनकी चरण-धूलि के इच्छुक रहते हैं ॥ १ ॥ हे ठाकुर, तुम्हारा नाम ऐसा भव्य है कि साधक (तुम्हारा सेवक) का पक्ष लेकर उसे सृष्टि की निधियों का स्वामी बना देता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधु-संगति में, गुरु-कथन है, विवेक जागृत होता है और जीव को परमात्मा के यशोगान का ही एक मात्र आश्रय रहता है— नामदेव, त्रिलोचन, कबीरदास तथा चमार (रविदास) की मुक्ति इसी से हुई ॥ २ ॥ २ ॥ १० ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ है नाही कोऊ बूझनहारो जानै कवनु भता। सिव बिरंचि अरु सगल मोनि जन गहि न सकाहि गता ॥ १ ॥ प्रभ की अगम अगाधि कथा। सुनीऐ अवर अवर बिधि बुझीऐ बकन कथन रहता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे भगता

आपि सुआमी आपन संगि रता। नानक को प्रभु पूरि रहिओ है पेखिओ जत्र कता ॥ २ ॥ ३ ॥ ११ ॥

परमेश्वर की गति को कोई नहीं जानता, उसकी युक्ति को कोई नहीं जान सकता। शिव, ब्रह्मा तथा ऋषि-मुनि, कोई उसकी स्थिति-गति की जानकारी नहीं पा सके ॥ १ ॥ प्रभु की कथा अगम्य-अगाध है; वह सुनने में और है, समझने में और है— कहने या वर्णन करने से परे का तत्व है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरुजी कहते हैं कि मेरा मालिक स्वयं ही भक्त है, स्वयं परमेश्वर भी है और अपने पर आप ही आसक्त रहता है। मेरा स्वामी सम्पूर्ण है, मैं उसे यत्र-तत्र-सर्वत्र देखता हूँ ॥ २ ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ मता मसूरति अवर सिआनप जन कउ कछू न आइओ। जह जह अउसरु आइ बनिओ है तहा तहा हरि धिआइओ ॥ १ ॥ प्रभ को भगति वछलु बिरदाइओ। करे प्रतिपाल बारिक की निआई जन कउ लाड लडाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जप तप संजम करम धरम हरि कीरतनु जनि गाइओ। सरनि परिओ नानक ठाकुर की अभैदानु सुखु पाइओ ॥ २ ॥ ४ ॥ १२ ॥

विचार-विमर्श करना अथवा तर्क-वितर्क करना प्रभु के दास के लिए व्यर्थ है। जहाँ-कहीं भी (मुसीबत का) अवसर आता है, वहाँ-वहाँ वह हरि को याद करता है (उसी से उसका कार्य निकलता है) ॥ १ ॥ प्रभु का तो विरद भक्त-वत्सलता है, वह अपने सेवकों का बालक की तरह पालन करता और उन्हें लाड़-प्यार करता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवक के लिए हरि का गुणगान ही जप, तप, इन्द्रिय-निग्रह तथा धर्म-कर्म आदि के समान है। गुरुजी कहते हैं कि सेवक जब एक बार स्वामी की शरण ग्रहण कर लेता है, तो निर्भय हो जाता है और परमसुख का भोग करता है ॥ २ ॥ ४ ॥ १२ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला। संत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥ १ ॥ मोहनु प्रान मान रागीला। बासि रहिओ हीअरे कै संगे पेखि मोहिओ मनु लीला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु सिमरत मनि होत अनंदा उतरै मनहु जंगीला। मिलबे की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥ २ ॥ ५ ॥ १३ ॥

हे प्रिय मानव, रात-दिन प्रभु-प्रियतम की आराधना करो, क्षण भर के लिए भी इसमें ढील न करो। हठ और अभिमान त्यागकर

सन्तों की सेवा करते हुए परमात्मा में प्रीति लगाओ ॥ १ ॥ जीवन-प्राणों का शृंगार प्रभु (मोहन) बड़ा रँगीला है, सदा मन के संग-संग रहता है; उसके कौतुक देख-देखकर मन मोहित हो गया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसे (परमात्मा के) स्मरण करने से मन परमानन्द को प्राप्त करता है और निर्मल हो जाता है (ज़ंग उतर जाता है), ऐसे मोहन के मिलन की महत्ता का वर्णन सम्भव नहीं; गुरुजी कहते हैं कि उसकी महत्ता परे से परे है ॥ २ ॥ ५ ॥ १३ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ मुनि जोगी सासत्रगि कहावत सभ कीन्हे बसि अपनही । तीनि देव अरु कोड़ि तेतीसा तिन की हैरति कछु न रही ॥ १ ॥ बलवंति बिआपि रही सभ मही । अवरु न जानसि कोऊ मरमा गुर किरपा ते लही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीति जीति जीते सभि थाना सगल भवन लपटही । कहु नानक साध ते भागी होइ चेरी चरन गही ॥ २ ॥ ६ ॥ १४ ॥

मुनि, योगी, शास्त्रज्ञ आदि सब माया ने अपने वश में किए हैं। तीनों देवता (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) तथा अन्य छोटे तेंतीस कोटि देवताओं के आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही ॥ १ ॥ यह बलवान माया सबको चिपटी है, अन्य कोई उसका भेद नहीं जानता, केवल गुरु-कृपा से ही उसे जाना जा सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (माया ने) सब स्थानों पर विजय पा ली है और सबको लिपटी है । गुरुजी कहते हैं कि वह (माया) केवल साधु से ही दूर रही, बल्कि उसकी दासी बनकर चरण पकड़ लिये ॥२॥६॥१४॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ दुइ कर जोड़ि करी बेनंती ठाकुरु अपना धिआइआ । हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ ठाकुर होए आपि दइआल । भई कलिआण आनंद रूप हुईहै उबरे बाल गुपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि वर नारी मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु । कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥ २ ॥ ७ ॥ १५ ॥

दोनों हाथ जोड़कर अपने स्वामी का ध्यान करते हुए प्रार्थना की । परमात्मा ने भी हाथ देकर (सहारा देकर) रक्षा की और पापों का नाश किया ॥ १ ॥ प्रभु स्वयं दयालु हो गए, सब ओर कल्याण हुआ, हर्षोल्लास छा गया और परमात्मा के सेवकों को चिर-सुख की प्राप्ति हुई ॥१॥रहाउ॥ परमात्मा-पति से मिलकर आत्मा-स्त्री ने सौभाग्य-गीत गाए और अपने स्वामी का जय-जयकार किया । गुरुजी कहते हैं कि मैं उस गुरु पर नित्य

बलिहार हूँ, जो सबका मोक्ष-दाता है (तात्पर्य यह कि आत्मा को उपर्युक्त उपलब्धियाँ तभी हुईं, जब उस पर गुरु-कृपा हुई; इसलिए हम गुरु पर बलिहार हैं) ॥ २ ॥ ७ ॥ १५ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ मात पिता भाई सुत बंधप तिन का बलु है थोरा। अनिक रंग माइआ के पेखे किछु साथि न चालै भोरा ॥ १ ॥ ठाकुर तुझ बिनु आहि न मोरा। मोहि अनाथ निरगुन गुणु नाही मै आहिओ तुम्हरा धोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि बलि बलि बलि चरण तुम्हारे ईहा ऊहा तुम्हारा जोरा। साध संगि नानक दरसु पाइओ बिनसिओ सगल निहोरा ॥ २ ॥ ८ ॥ १६ ॥

माता-पिता, भाई-बन्धु, सुत-दारा, इन सबका बल थोड़ा है, अर्थात् अध्यात्म-पथ पर सहयोग देने में ये असमर्थ हैं। माया के अनेक रंग हैं, संसार की रत्ती भर वस्तु भी कभी साथ नहीं देती ॥ १ ॥ हे प्रभु, तुम्हारे बिना मेरा कोई आश्रय नहीं हैं। मैं अनाथ हूँ, गुण-हीन हूँ, इसीलिए तुम्हारी शरण चाहता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैं नित्य तुम्हारे चरणों पर बलिहार हूँ और मुझे लोक-परलोक सब जगह नित्य तुम्हारा ही सहारा है। गुरुजी कहते हैं कि सत्संगति में ही प्रभु के दर्शन मिलते हैं और दूसरों का अनुग्रह सब शून्य हो जाता है ॥ २ ॥ ८ ॥ १६ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ आल जाल भ्रम मोह तजावै प्रभ सेती रंगु लाई। मन कउ इह उपदेसु द्रिड़ावै सहजि सहजि गुण गाई ॥ १ ॥ साजन ऐसो संतु सहाई। जिसु भेटे तूटहि माइआ बंध बिसरि न कबहूं जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करत करत अनिक बहु भाती नीकी इह ठहराई। मिलि साधू हरि जसु गावै नानक भवजलु पारि पराई ॥ २ ॥ ९ ॥ १७ ॥

(सच्चा गुरु) घर-जंजाल तथा सांसारिक मोह-भ्रम चुकता कर देता है, वह प्रभु से प्रेम डालता है और मन को यह निश्चित प्रशिक्षण देता है कि हरि के गुणगान के लिए स्वाभाविक सहज प्रेम की अपेक्षा होती है ॥ १ ॥ हे सज्जनो, सतिगुरु ऐसा सहायक है कि उसके दर्शन मात्र से ही माया-बन्धन टूट जाते हैं और परमात्मा कभी विस्मृत नहीं होता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनेक कर्म-काण्ड करते हुए अन्ततः इस उत्तम निष्कर्ष पर पहुँचे कि सतिगुरु के सम्पर्क में आने तथा हरि का यशोगान करने से संसार-सागर से तिरा जा सकता है ॥ २ ॥ ९ ॥ १७ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ खिन महि थापि उथापनहारा कीमति जाइ न करी । राजा रंकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥ १ ॥ धिआईऐ अपनो सदा हरी । सोच अंदेसा ताका कहा करीऐ जा महि एक घरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी टेक पूरे मेरे सतिगुर मन सरनि तुम्हारै परी । अचेत इआने बारिक नानक हम तुम राखहु धारि करी ॥ २ ॥ १० ॥ १८ ॥

परमात्मा क्षण भर में बनाने-गिराने में समर्थ है, उसकी बड़ाई कही नहीं जा सकती । वह पल भर में राजा को रंक बना देता है और नीच व्यक्ति में उत्तमता की ज्योति स्थापित करता है ॥ १ ॥ (इसलिए हमें) सदा हरि का स्मरण करना चाहिए, उस संसार या जीवन की क्या चिन्ता, जिसमें घड़ी भर के लिए रहना है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे सतिगुरु, मुझे तुम्हारा ही सहारा है, मन तुम्हारी शरण में है । हम नासमझ बालक हैं, तुम स्वयं सहारा देकर हमारी रक्षा करो ॥ २ ॥ १० ॥ १८ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ तूं दाता जीआ सभना का बसहु मेरे मन माही । चरण कमल रिद माहि समाए तह भरमु अंधेरा नाही ॥ १ ॥ ठाकुर जा सिमरा तूं ताही । करि किरपा सरब प्रतिपालक प्रभ कउ सदा सलाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासि सासि तेरा नामु समारउ तुमही कउ प्रभ आही । नानक टेक भई करते की होर आस बिडाणी लाही ॥ २ ॥ ११ ॥ १९ ॥

हे हरि, तुम सब जीवों के पालक हो, मेरे मन में भी निवास करो । तुम्हारे निर्मल कमल-चरणों को मैंने हृदय में धारण किया है, जिससे अब मुझे अज्ञान या कोई भ्रम नहीं रह गया है ॥ १ ॥ हे मेरे स्वामी, मैं जहाँ भी तुम्हारा स्मरण करता हूँ, वहीं सदैव तुम्हें मौजूद देखता हूँ । हे सबके पालनहार प्रभु, मैं तुम्हारा गुणगान करता हूँ, तुम मुझ पर भी कृपा करो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैं श्वास-श्वास पर तुम्हारा नाम स्मरण करता हूँ और सदैव तुम्हीं को चाहता हूँ । गुरुजी कहते हैं कि मुझे एक मात्र परमात्मा का सहारा है, अन्य कोई भी बेगानी आशा-तृष्णा मैंने त्याग दी है ॥ २ ॥ ११ ॥ १९ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ करि किरपा अपना दरसु दीजै जसु गावउ निसि अरु भोर । केस संगि दास पग झारउ इहै मनोरथ मोर ॥ १ ॥ ठाकुर तुझ बिनु बीआ न होर । चिति चितवउ हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी ओर ॥ १ ॥ रहाउ ॥

दइआल पुरख सरब के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि। नामु जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर ॥ २ ॥ १२ ॥ २० ॥

हे प्रभु, मैं रात-दिन तुम्हारा यशोगान करता हूँ, कृपा करके दर्शन दो। मेरी मनोकामना है कि मैं अपने केशों (लम्बे बालों) से हरि के सेवकों के चरण साफ़ करूँ (अर्थात् अति विनम्र होकर उनकी सेवा करूँ) ॥ १ ॥ हे मेरे स्वामी, तुम्हारे समान दूसरा कोई नहीं; (इसलिए) मैं मन से तुम्हारा ध्यान करता हूँ, जिह्वा से यशगान करता हूँ और आँखों से अपलक तुम्हें निहारता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे दयालु, सर्वस्वामी, मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूँ। गुरु-कथन है कि जो तुम्हारा नाम स्मरण करता है, पलक झपकने मात्र के समय में उसका उद्धार हो जाता है ॥ २ ॥ १२ ॥ २० ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ ब्रहम लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाइ। साध संगति कउ जोहि न साकै मलि मलि धोवै पाइ ॥ १ ॥ अब मोहि आइ परिओ सरनाइ। गुहज पावको बहुतु प्रजारै मोकउ सतिगुरि दीओ है बताइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिध साधिक अरु जख्य किंनर नर रही कंठि उरझाइ। जन नानक अंगु कीआ प्रभि करतै जाकै कोटि ऐसी दासाइ ॥ २ ॥ १३ ॥ २१ ॥

माया ब्रह्मलोक, रुद्रलोक और इन्द्रलोक आदि पर विजय पाकर आगे से आगे बढ़ती चली है, किन्तु साधु-संगति की ओर वह कुदृष्टि नहीं डाल सकती— बल्कि उनके तो चरण धोती है ॥ १ ॥ अब मैं (गुरु की) शरण में आ पड़ा हूँ और मुझे सतिगुरु ने सावधान कर दिया है कि यह गुप्त अग्नि (माया) सबको जलाती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिद्धों, साधकों, यक्षों, किन्नरों और मनुष्यों, माया सबके गले पड़ी है। गुरुजी कहते हैं कि परमात्मा ने (इससे बचाव के लिए) मेरी सहायता की है —ऐसी (माया जैसी) करोड़ों उसकी दासियाँ हैं ॥ २ ॥ १३ ॥ २१ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ अपजसु मिटै होवै जगि कीरति दरगह बैसणु पाईऐ। जम की त्रास नास होइ खिन महि सुख अनद सेती घरि जाईऐ ॥ १ ॥ जा ते घाल न बिरथी जाईऐ। आठ पहर सिमरहु प्रभु अपना मनि तनि सदा धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि सरनि दीन दुख भंजन तूं देहि

सोई प्रभ पाईऐ । चरण कमल नानक रंगि राते हरि दासह पैज रखाईऐ ॥ २ ॥ १४ ॥ २२ ॥

(नाम स्मरण करने से) अपयश नष्ट होता है, संसार में कीर्ति और प्रतिष्ठा मिलती है तथा परमात्मा के दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। क्षण भर में यम का भय नष्ट हो जाता है और सुख-आनन्द सहित प्रभु की शरण मिलती है (परमात्मा के घर में जगह मिलती है) ॥ १ ॥ जिससे श्रम व्यर्थ न हो, ऐसे तन-मन से आठों प्रहर प्रभु का स्मरण करना चाहिए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे दीनों के दुःख-भंजक प्रभु, मुझे शरण दो। (गुरुजी कहते हैं कि) हे हरि, मैं तुम्हारे चरण-कमल के प्यार में रत हूँ, दास की लाज रख लो ॥ २ ॥ १४ ॥ २२ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ बिस्वंभर जीअन को दाता भगति भरे भंडार । जा की सेवा निफल न होवत खिन महि करे उधार ॥ १ ॥ मन मेरे चरन कमल संगि राचु । सगल जीअ जाकउ आराधहि ताहू कउ तूं जाचु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक सरणि तुम्हारी करते तूं प्रभ प्रान अधार । होइ सहाई जिसु तूं राखहि तिसु कहा करे संसारु ॥ २ ॥ १५ ॥ २३ ॥

वह प्रभु विश्व का पालक, सर्व-प्रदाता है, उसके कोष सदैव भक्ति-भाव से भरे रहते हैं। उसकी सेवा कभी निष्फल नहीं जाती, क्षण भर में ही वह उद्धार करता है ॥ १ ॥ हे मेरे मन, तू हरि के चरण-कमल में प्रीति कर; सब जीव जिसकी आराधना करते हैं, तू उसी से याचना कर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरुजी कहते हैं कि हम तुम्हारी शरण में हैं, प्रभु, तू हम सबका प्राणाधार है। जिसका सहायक बनकर तू रक्षा करता है, संसार उसका क्या बिगाड़ेगा ? ॥ २ ॥ १५ ॥ २३ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ जन की पैज सवारी आप । हरि हरि नामु दीओ गुरि अवखधु उतरि गइओ सभु ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिगोबिंदु रखिओ परमेसरि अपुनी किरपा धारि । मिटी बिआधि सरब सुख होए हरि गुण सदा बीचारि ॥ १ ॥ अंगीकारु कीओ मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई । अबिचल नीव धरी गुर नानक नित नित चड़ै सवाई ॥ २ ॥ १६ ॥ २४ ॥

परमात्मा अपने सेवकों की लाज स्वयं रखता है। सतिगुरु ने हरि-नाम की ऐसी औषधि दी है कि सब ज्वर-ताप जाता रहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमेश्वर ने विशेष कृपा करके हरिगोबिन्द (छठी पातशाही) को बचा

लिया। सदा हरिगुण-गान करने से सब रोग नष्ट हो गया, जीवन में सुख हुआ ॥ १ ॥ यह पूर्णगुरु की हम पर कृपा है, जो उस परमात्मा ने हमें शरण दी है। गुरु ने ऐसा स्थायित्व प्रदान किया, जो अनश्वर है और नित्य बढ़ता-फूलता रहता है ॥ २ ॥ १६ ॥ २४ ॥

[कहते हैं कि यह पद गुरु अर्जुनदेव जी ने अपने सुपुत्र हरिगोबिन्द जी के रोग-मुक्त होने पर गान किया था।]

॥ गूजरी महला ५ ॥ कबहू हरि सिउ चीतु न लाइओ। धंधा करत बिहानी अउधहि गुणनिधि नामु न गाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउडी कउडी जोरत कपटे अनिक जुगति करि धाइओ। बिसरत प्रभ केते दुख गनीअहि महा मोहनी खाइओ ॥ १ ॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइओ। गोबिंद दइआल क्रिपाल सुख सागर नानक हरि सरणाइओ ॥ २ ॥ १७ ॥ २५ ॥

(जिस जीव ने) कभी प्रभु से मन नहीं लगाया, उसकी आयु संसार के काम-धन्धे में बीत गई, वह कभी गुणागार परमात्मा का नाम स्मरण नहीं कर सका ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (हम) कपटी जन कौड़ी-कौड़ी जोड़ते हैं तथा अनेक तरह भागे-दौड़े फिरते हैं। प्रभु को विस्मृत करने से असंख्य दुःख मिलते हैं और वह महामोहिनी माया जकड़ लेती है ॥ १ ॥ हे मेरे स्वामी, मुझ पर दया करके मेरे कर्मों को न गिनें— (गुरुजी कहते हैं कि) तुम कृपालु, दयालु और सुख-सागर हो; मैं तुम्हारी शरण आया हूँ (मुझे सहारा दो) ॥ २ ॥ १७ ॥ २५ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ रसना राम राम रवंत। छोडि आन बिउहार मिथिआ भजु सदा भगवंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु एकु अधारु भगता ईत आगै टेक। करि क्रिपा गोबिंद दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥ १ ॥ करण कारण संम्रथ स्रीधर सरणि ताकी गही। मुकति जुगति रवाल साधू नानक हरि निधि लही ॥ २ ॥ १८ ॥ २६ ॥

जिह्वा राम-राम जपती रहे। (जीव) अन्य सब मिथ्या व्यवहार छोड़कर सदा भगवान का भजन करे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि-नाम ही भक्तों का एक मात्र आधार है, इहलोक तथा परलोक, दोनों जगह वही सहारा है। (इसी कारण) परमात्मा कृपा करके गुरु-ज्ञान और विवेक-बुद्धि (की निधियाँ) प्रदान करता है ॥१॥ हरि सर्व-कर्ता है, हमें उसी की शरण

ग्रहण करनी चाहिए । (गुरुजी कहते हैं) मुक्ति और सांसारिक युक्ति, दोनों ही सतिगुरु की चरण-धूलि हैं, मैंने हरि से ये निधियाँ पाई हैं ।।२।।१८।।२६।।

गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ । पारब्रहम परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ।। १ ।। रे चित चरण कमल अराधि । सरब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ।। १ ।। रहाउ ।। मात पिता सुत मीत भाई तिसु बिना नही कोइ । ईत उत जीअ नालि संगी सरब रविआ सोइ ।। २ ।। कोटि जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै कामि । सरणि साधू निरमला गति होइ प्रभ कै नामि ।। ३ ।। अगम दइआल प्रभू ऊचा सरणि साधू जोगु । तिसु परापति नानका जिसु लिखिआ धुरि संजोगु ।। ४ ।। १ ।। २७ ।।

सब प्रकार की बौद्धिक ऊहापोह को छोड़कर जीव को गुरु की शरण लेना चाहिए । (गुरु के आदेशानुसार) परब्रह्म परमात्मा का गुणगान करना चाहिए ।। १ ।। हे मन, हरि के चरण-कमल का स्मरण करो, (इससे) सब सुख, कल्याण की उपलब्धि होगी और समस्त व्याधियों का नाश हो जायगा ।। १ ।। रहाउ ।। उसके (परमात्मा के) अतिरिक्त माता-पिता, पुत्र-बन्धु, कोई सहायक नहीं होता । वही इहलोक और परलोक में आत्मा का सहयोगी है, वह सर्वव्याप्त है ।। २ ।। करोड़ों उपाय भी मिथ्या हैं, (उसकी इच्छा के विपरीत) कोई काम नहीं आता । गुरु की शरण में निर्मलता होती है और प्रभुनाम-स्मरण से मुक्ति मिलती है ।।३।। (वह परमात्मा) अगम्य, दयालु और उच्चतर है, वह साधुओं को भी शरण देने योग्य है । वह (परमात्मा) उसी को प्राप्त होता है (गुरुजी कहते हैं), जिसके प्रारब्ध में प्रभु-मिलन निश्चित होता है ।। ४ ।। १ ।। २७ ।।

।। गूजरी महला ५ ।। आपना गुरु सेवि सदही रमहु गुण गोबिंद । सासि सासि अराधि हरि हरि लहि जाइ मन की चिंद ।। १ ।। मेरे मन जापि प्रभ का नाउ । सूख सहज अनंद पावहि मिली निरमल थाउ ।। १ ।। रहाउ ।। साध संगि उधारि इहु मनु आठ पहर आराधि । कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिटै सगल उपाधि ।। २ ।। अटल अछेद अभेद सुआमी सरणि ताकी

आउ । चरण कमल अराधि हिरदै एक सिउ लिव लाउ ।। ३ ।। पारब्रहमि प्रभि दइआ धारी बखसि लीन्हे आपि । सरब सुख हरि नामु दीआ नानक सो प्रभु जापि ।। ४ ।। २ ।। २८ ।।

(हार्दिक श्रद्धा से इष्ट धारण किए गए) अपने गुरु की सदैव सेवा करो और परमात्मा का गुणगान करो । श्वास-श्वास पर हरि-स्मरण करो तो मन की सब चिन्ताएँ दूर होंगी ।। १ ।। हे मेरे मन, सदा प्रभु का नाम जपो । तुम्हें शान्ति एवं ज्ञान का पूर्ण सुख तथा प्रभु की शरण (निर्मल स्थान) प्राप्त होगी ।। १ ।। रहाउ ।। सत्संगति में मन को रमाकर आठों प्रहर भगवान की आराधना करो । (ऐसा करने से) काम, क्रोध, अहंकार आदि सब व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं ।। २ ।। परमात्मा अटल है, अविभाज्य है, अभेद है, उसकी शरण लो । उसके चरण-कमल को हृदय में धारण करके, एक मात्र उसी से प्रीति करो ।। ३ ।। (इस पर) स्वयं परब्रह्म प्रभु कृपा करके तुम्हारा उद्धार करेगा । गुरुजी कहते हैं कि सब सुखों के स्रोत परमात्मा का स्मरण करो ।। ४ ।। २ ।। २८ ।।

।। गूजरी महला ५ ।। गुर प्रसादी प्रभु धिआइआ गई संका तूटि । दुख अनेरा भै बिनासे पाप गए निखूटि ।। १ ।। हरि हरि नाम की मनि प्रीति । मिलि साध बचन गोबिंद धिआए महा निरमल रीति ।। १ ।। रहाउ ।। जाप ताप अनेक करणी सफल सिमरत नाम । करि अनुग्रहु आपि राखे भए पूरन काम ।। २ ।। सासि सासि न बिसरु कबहूं ब्रहम प्रभ समरथ । गुण अनिक रसना किआ बखानै अगनत सदा अकथ ।। ३ ।। दीन दरद निवारि तारण दइआल किरपा करण । अटल पदवी नाम सिमरण द्रिड़ु नानक हरि हरि सरण ।। ४ ।। ३ ।। २९ ।।

गुरु की कृपा से (परमात्मा के भेद पाकर) उसका स्मरण किया तो सब शंकाएँ मिट गईं । दुःख, अज्ञानांधकार, भय और पाप, सब नष्ट हो गए ।। १ ।। हे मन, हरि-नाम में निश्चल प्रीति बनाओ । साधु-वचनों (गुरु के आदेश) के अनुसार पवित्र युक्ति से परमात्मा का भजन करो ।।१।। रहाउ ।। फलदायक हरिनाम-स्मरण से सब प्रकार के जप-तप और शुभ-कर्म हस्तामलक होते हैं । कृपापूर्वक प्रभु स्वयं हमारी रक्षा करता है और हमारी कामनाएँ पूर्ण होती हैं ।। २ ।। श्वास-श्वास में उसे (समर्थ परब्रह्म प्रभु को) कभी विस्मृत नहीं करना, उसके अनेक अकथनीय गुणों का वर्णन जिह्वा क्योंकर करेगी ! ।। ३ ।। परमात्मा दीनों के दुःखों को दूर कर उन्हें मोक्ष देनेवाला दयालु कर्णधार है । नाम-स्मरण एक अटल

पद है; (गुरुजी कहते हैं) इससे दृढ़तापूर्वक हरि-शरण प्राप्त होती है ॥ ४ ॥ ३ ॥ २९ ॥

॥ गूजरी महला ५ ॥ अहंबुधि बहु सघन माइआ महा दीरघ रोगु । हरि नामु अउखधु गुरि नामु दीनो करण कारण जोगु ॥ १ ॥ मनि तनि बाछीऐ जन धूरि । कोटि जनम के लहहि पातिक गोबिंद लोचा पूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि अंते मधि आसा कूकरी बिकराल । गुर गिआन कीरतन गोबिंद रमणं काटीऐ जम जाल ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मोह मूठे सदा आवा गवण । प्रभ प्रेम भगति गुपाल सिमरण मिटत जोनी भवण ॥३॥ मित्र पुत्र कलत्र सुररिद तीनि ताप जलंत । जपि राम रामा दुख निवारै मिलै हरि जन संत ॥ ४ ॥ सरब बिधि भ्रमते पुकारहि कतहि नाही छोटि । हरि चरण सरण अपार प्रभ के द्रिड़ु गही नानक ओट ॥ ५ ॥ ४ ॥ ३० ॥

अहम्-भाव तथा माया से सघन प्रीति विकट व्याधियाँ हैं । (इनके लिए) गुरु ने समर्थ (सर्वशक्तिमान) प्रभु का नाम औषधि के रूप में दिया है ॥ १ ॥ तन, मन से हम प्रभु के सच्चे सेवकों (साधुजनों) की चरण-धूलि चाहते हैं; उससे करोड़ों जन्मों के पाप धुल जाते हैं, परमात्मा मनोकामनाओं का पूरक है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमें आदि, मध्य एवं अन्त, सब समय तृष्णा रूपी कुतिया डराती है, किन्तु गुरु-प्रदत्त ज्ञान एवं हरि-नाम का यशोगान करने से मृत्यु-भय भी दूर हो जाता है ॥ २ ॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि द्वारा ठगा जीव सदा आवागमन में रहता है । किन्तु परमात्मा की रागात्मिका भक्ति तथा हरि-स्मरण से जन्म-मरण का चक्कर कट जाता है ॥ ३ ॥ मित्र, पुत्र, स्त्री तथा सहृदयीजन, सब तीन ताप (आधि, व्याधि, उपाधि) में जल रहे हैं । किन्तु किसी हरि-जन सन्त के सम्पर्क में आने तथा परमात्मा का भजन करने से सब दुःखों का अन्त हो जाता है ॥ ४ ॥ जीव सब तरह भटकते और पुकारते हैं कि उनका कहीं छुटकारा नहीं । (अब तो) हरि-चरणों का ही एक मात्र सहारा है । (गुरुजी कहते हैं कि) हमने यही पक्का सहारा पकड़ लिया है ॥५॥४॥३०॥

गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आराधि स्री धर सफल मूरति करण कारण जोगु । गुण रमण स्रवण अपार महिमा फिरि न

होत बिओगु ।। १ ।। मन चरणारबिंद उपास । कलि कलेस मिटंत सिमरणि काटि जमदूत फास ।। १ ।। रहाउ ।। सत्रु दहन हरिनाम कहन अवर कछु न उपाउ । करि अनुग्रहु प्रभू मेरे नानक नाम सुआउ ।। २ ।। १ ।। ३१ ।।

(हे जीवो !) हरि की आराधना करो, वह करने-कराने योग्य है; उसके दर्शनों से सब वाञ्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। (हरि की) अपार महिमा के सुनने तथा गुणगान करने से (परम मिलन होता है) फिर कभी वियोग नहीं होता ।। १ ।। हे मन, (हरि के) चरणारविन्द की उपासना कर। उसके स्मरण से कलिमल-व्याधि नष्ट हो जाती है और जीवन-मृत्यु के बन्धन कट जाते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। (मायादि) शत्रु के दहन के लिए हरिनाम-स्मरण ही (एक मात्र साधन है) और कोई ढंग नहीं। गुरुजी कहते हैं कि हे मेरे प्रभु, मुझ पर कृपा करो, जिससे मुझे हरिनाम-रस का आस्वादन प्राप्त हो ।। २ ।। १ ।। ३१ ।।

।। गूजरी महला ५ ।। तूं समरथु सरनि को दाता दुख भंजनु सुख राइ । जाहि कलेस मिटे भै भरमा निरमल गुण प्रभ गाइ ।। १ ।। गोविंद तुझ बिनु अवरु न ठाउ । करि किरपा पारब्रहम सुआमी जपी तुमारा नाउ ।। रहाउ ।। सतिगुर सेवि लगे हरि चरनी वडै भागि लिवलागी । कवल प्रगास भए साध संगे दुरमति बुधि तिआगी ।। २ ।। आठ पहर हरि के गुण गावै सिमरै दीन दैआला । आपि तरै संगति सभ उधरै बिनसे सगल जंजाला ।। ३ ।। चरण अधारु तेरा प्रभ सुआमी ओति पोति प्रभु साथि । सरनि परिओ नानक प्रभ तुमरी दे राखिओ हरि हाथ ।। ४ ।। ३२ ।।

(हे प्रभु !) तुम सर्वशक्तिमान हो, शरण देने योग्य हो (रक्षा करने योग्य हो) तथा दुःखों को दूर करके सुखों के प्रदाता हो। तुम्हारा निर्मल गुणगान करने से भय-भ्रमादि के क्लेश नष्ट हो जाते हैं ।। १ ।। हे स्वामी, तुम्हारे अतिरिक्त और कोई सहारा नहीं। हे परब्रह्म प्रभु, मुझ पर कृपा करो, ताकि तुम्हारा नाम जप सकूँ ।। रहाउ ।। सतिगुरु के सेवा के माध्यम से ही जीव हरि-चरणों में प्रीति लगा सकता है; साधु-संगति में ही हृदय-कमल आलोकित होता है और (जीव) दुर्मति के मल से मुक्त होता है ।। २ ।। (यदि जीव) आठों पहर उस दीन-दयाल का स्मरण करे तथा प्रभु का गुणगान करता रहे, तो वह स्वयं तो मुक्त होता ही है, अपने

सम्पर्क में आनेवालों का भी उद्धार करता एवं मोह-माया के बन्धनों को तोड़ देता है ॥ ३ ॥ हे मालिक, मुझे तुम्हारे ही चरणों का सहारा है, लोक-परलोक में तुम्हीं सहायी हो। (गुरु-कथन है कि) मैं तुम्हारी ही शरण में हूँ; हे दाता, हाथ देकर मेरी रक्षा करना ॥ ४ ॥ ३२ ॥

गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ एक नगरी पंच चोर बसीअले बरजत चोरी धावैं। त्रिहदस माल रखै जो नानक मोख मुकति सो पावै ॥ १ ॥ चेतहु बासुदेउ बनवाली। रामु रिदै जपमाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उरध मूल जिसु साख तलाहा चारि बेद जितु लागे। सहज भाइ जाइ ते नानक पारब्रहम लिव जागे ॥ २ ॥ पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला। सरब जोति निरंजन संभू छोडहु बहुतु जंजाला ॥ ३ ॥ सुणि सिखवंते नानकु बिनवै छोडहु माइआ जाला। मनि बीचारि एक लिव लागी पुनरपि जनमु न काला ॥ ४ ॥ सो गुरू सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी। तिसु कारणि कंमु न धंधा नाही धंधै गिरही जोगी ॥ ५ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु तजीअले लोभु मोहु तिस माइआ। मनि ततु अविगतु धिआइआ गुर परसादी पाइआ ॥ ६ ॥ गिआनु धिआनु सभ दाति कथीअले सेत बरन सभि दूता। ब्रहम कमल मधु तासु रसादं जागत नाही सूता ॥ ७ ॥ महा गंभीर पत्र पाताला नानक सरब जु आइआ। उपदेस गुरू मम पुनहि न गरभं बिखु तजि अंम्रितु पीआइआ ॥ ८ ॥ १ ॥

एक नगरी (शरीर) में पाँच चोर (काम, क्रोधादि) रहते हैं, रोकने पर भी वे अपनी आदत से नहीं टलते। (ऐसे में) जो जीव तेरह से (माया के तीन गुण, पंच विकार तथा पाँच इन्द्रिय-भोग = कुल तेरह) अपने आत्मिक सामान को बचा सकेगा, वह मुक्त होगा ॥१॥ (इसलिए) ऐ जीव, परमात्मा (वासुदेव, बनमाली) को याद करो, उसके नाम-स्मरण को हृदय में धारण कर लेना ही 'जपमाला' है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (परब्रह्म) एक ऐसा पेड़ है, जिसकी जड़ें ऊपर को हैं और शाखाएँ नीचे को लटकती हैं; चारों वेद उसके पत्ते हैं। (तात्पर्य यह कि परब्रह्म के

पेड़ की जड़ें माया में हैं, तीनों गुण शाखाएँ हैं और वेद पत्ते हैं— अर्थात् वेद भी माया के तीनों गुणों के ज्ञान का विस्तार करते हैं, परा-विद्या के अन्तर्गत हैं) । गुरुजी कहते हैं कि यदि जीव तीनों गुणों की तीनों अवस्थाओं से आगे चौथी अवस्था (तुरीया पद) 'सहजावस्था' का पा ले, तो प्रभु से अमर प्रीति जागृत होती है ।। २ ।। हरि स्वयं पारिजात (कल्पवृक्ष) के समान है, जो मेरे आँगन में लगा है, अर्थात् हर समय मेरे निकट है और एक मात्र सत्य ही उसके फूल, पत्र और शाखाएँ हैं । वह स्वयंभू हरि माया-रहित है, उसकी ज्योति का आलोक सर्वव्यापक है; (इसलिए उसी का भजन करो) अन्य व्यर्थ के बन्धन-पाशों का त्याग करो ।। ३ ।। हे साधको ! सुनो, (गुरुजी कहते हैं,) मेरी विनती है कि तुम लोग माया-जाल से विरत हो जाओ और बुद्धि-विवेक से विचार कर उस एक प्रभु से प्रीति करो, ताकि दोबारा जन्म-मरण के बन्धन न पड़ सकें ।। ४ ।। जो गुरु है, वही सिक्ख (शिष्य) कहलाता है । वही सच्चा वैद्य है, जो रोग का निदान जानता हो अर्थात् जो संसार के मोह-मायादि रोगों को पहचानकर उसका उपचार कर सके । (उसके लिए) जीवन क्रियाशील है, वह काम-धन्धे में लिप्त नहीं होता, वह (कीचड़ में कमल की नाईं) काम-धन्धा करता हुआ गृहस्थ होकर भी इस सबसे निर्लिप्त होता है ।। ५ ।। (अतः) काम, क्रोधादि एवं लोभ-मायादि का बहिष्कार करो और गुरु-कृपा से मन में अविनाशी तत्व का स्मरण करो ।। ६ ।। ज्ञान-ध्यान को प्रभु-कृपा की देन समझो, (जिसे यह देन उपलब्ध हो) उसके विकार सब सतोगुणी हो जाते हैं (अर्थात् विकार विकृतियों को छोड़ देते हैं) । वह परब्रह्म रूपी कमल का रस-पान कर लेता है, वह सदैव जागृत रहता है, कभी आलस्य-तन्द्रा का शिकार नहीं होता । (अर्थात् एक बार ब्रह्म-कमल का रस चखने पर वह कभी अज्ञानांधकार में नहीं भटकता) ।। ७ ।। वह ब्रह्म-कमल बड़ा गहरा है, उसके पत्र पाताल हैं, (गुरुजी कहते हैं कि) वह समूची सृष्टि से जुड़ा हुआ है । उसकी उपलब्धि केवल गुरु-उपदेश से ही सम्भव है— अब मुझे दोबारा जन्म-मरण में नहीं पड़ना, क्योंकि मैंने (गुरु-कृपा से) विकारों की विष को छोड़कर हरि-नाम का अमृत पान कर लिया है ।। ८ ।। १ ।।

।। गूजरी महला १ ।। कवन कवन जाचहि प्रभ दाते ता के अंत न परहि सुमार । जैसी भूख होइ अभ अंतरि तूं समरथु सचु देवणहार ।। १ ।। ऐजी जपु तपु संजमु सचु अधार । हरि हरि नामु देहि सुखु पाईऐ तेरी भगति भरे भंडार ।। १ ।। रहाउ ।। सुंन समाधि रहहि लिव लागे एका एकी सबदु बीचार ।

जलु थलु धरणि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार ॥ २ ॥ ना तदि माइआ मगनु न छाइआ ना सूरज चंद न जोति अपार । सरब द्रिसटि लोचन अभ अंतरि एका नदरि सु त्रिभवण सार ॥३॥ पवणु पाणी अगनि तिनि कीआ ब्रहमा बिसनु महेस अकार । सरबे जाचिक तूं प्रभु दाता दाति करे अपुनै बीचार ॥ ४ ॥ कोटि तेतीस जाचहि प्रभ नाइक दे दे तोटि नाही भंडार । ऊधै भांडै कछु न समावै सीधै अंम्रितु परै निहार ॥ ५ ॥ सिध समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि जाचि करहि जैकार । जैसी पिआस होइ मन अंतरि तैसो जलु देवहि परकार ॥ ६ ॥ बडे भाग गुरु सेवहि अपुना भेदु नाही गुरदेव मुरार । ताकउ कालु नाही जमु जोहै बूझहि अंतरि सबदु बीचार ॥ ७ ॥ अब तब अवरु न मागउ हरि पहि नामु निरंजन दीजै पिआरि । नानक चात्रिकु अंम्रित जलु मागै हरि जसु दीजै किरपा धारि ॥ ८ ॥ २ ॥

उस प्रभु दातार से कौन-कौन याचना कर रहा है, इसकी कोई गिनती ही नहीं। किन्तु जैसी जिसकी कामना होती है, समर्थ परमात्मा उसे पूर्ण करता है ॥१॥ हे जीवो, जप, तप, संयम आदि सत्य (सज्जीवन) के आधार हैं। हरिनाम-स्मरण से परमसुख का लाभ मिलता है और भक्ति के भण्डार उपलब्ध होते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (कई) शून्य में समाधि लगाते तथा केवल नाम-विचार करते हैं। ऐसी अवस्था में जल, थल, धरती आदि विस्मृत हो जाते हैं और केवल परमात्मा ही चतुर्दिक् विचरता है ॥ २ ॥ उस समय न माया-मोह रहता है, न अज्ञानांधकार बचता है और न सूर्य, चन्द्र अथवा आश्चर्यजनक चाँदनी का ध्यान रहता है। सबको देखनेवाली आँखें अन्तर्मुखी देखती हैं (ज्ञान होता है) तथा एक ही दृष्टि में तीनों लोकों की सूझ होती है ॥ ३ ॥ उस परमात्मा ने पवन, पानी, अग्नि आदि की रचना की है और ब्रह्मा, विष्णु, महेश उसी की सृष्टि हैं। ये सब तुम्हारे द्वार के भिखारी हैं, तुम दाता हो और अपनी इच्छानुसार योग्य पात्र को यथानुकूल देते हो ॥ ४ ॥ तेंतीस कोटि देवता तुमसे याचना करते हैं, देते-देते तुम्हारे भण्डार में कभी कमी नहीं आती। उलटे रखे बर्तन में कुछ नहीं पड़ता, सीधे बर्तन में अमृत-रस झरता है अर्थात् मनःद्वार खोलकर नाम स्मरण करने से अमर जीवन की लब्धि होती है ॥ ५ ॥ सिद्ध लोग अन्तर्मुखी समाधि लगाते और प्रभु से ऋद्धि-सिद्धि (चमत्कारों) का दान माँगकर उसका जयकार करते हैं— वह प्रभु भी जीव की मनःपिपासा की जाँच करके ही उसकी उपयुक्त पूर्ति करता है ॥ ६ ॥

सौभाग्य से ही कोई जीव सही अर्थों में गुरु-सेवा में लीन होता है और गुरु तथा परमात्मा के अभेद की जानकारी प्राप्त करता है। जो जीव मन में शब्द पर विचार करते तथा उसकी पहचान करते हैं, उन्हें काल की घातक दृष्टि भी नष्ट नहीं कर सकती ॥ ७ ॥ मैं (गुरुजी कहते हैं कि) हरि से कभी (और कुछ) नहीं माँगता, मुझे तो केवल हरि-नाम का प्यार प्रदान करो। मैं नाम-अमृत का याचक हूँ, हे प्रभु ! कृपा धारण कर मेरी कामना पूरी करो ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ गूजरी महला १ ॥ ऐ जी जनमि मरै आवै फुनि जावै बिनु गुर गति नही काई। गुरमुखि प्राणी नामे राते नामे गति पति पाई ॥ १ ॥ भाई रे राम नामि चितु लाई। गुर परसादी हरि प्रभ जाचे ऐसी नाम बडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐ जी बहुते भेख करहि भिखिआ कउ केते उदरु भरन कै ताई। बिनु हरि भगति नाही सुखु प्रानी बिनु गुर गरबु न जाई ॥ २ ॥ ऐ जी कालु सदा सिर ऊपरि ठाढे जनमि जनमि वैराई। साचै सबदि रते से बाचे सतिगुर बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ गुर सरणाई जोहि न साकै दूतु न सकै संताई। अविगत नाथ निरंजनि राते निरभउ सिउ लिव लाई ॥ ४ ॥ ऐ जीउ नामु दिड़हु नामे लिव लावहु सतिगुर टेक टिकाई। जो तिसु भावै सोई करसी किरतु न मेटिआ जाई ॥ ५ ॥ ऐ जी भागि परे गुर सरणि तुम्हारी मै अवर न दूजी भाई। अब तब एको एकु पुकारउ आदि जुगादि सखाई ॥ ६ ॥ ऐ जी राखहु पैज नाम अपुने की तुझ ही सिउ बनि आई। करि किरपा गुर दरसु दिखावहु हउमै सबदि जलाई ॥ ७ ॥ ऐ जी किआ मागउ किछु रहै न दीसै इसु जग महि आइआ जाई। नानक नामु पदारथु दीजै हिरदै कंठि बणाई ॥ ८ ॥ ३ ॥

हे मन, जन्म-मरण तथा आवागमन में पड़े हो, गुरु के बिना कभी किसी की गति नहीं। जिन्हें गुरु प्राप्त हुआ है, वे हरि-नाम में प्रीति करते हैं और नाम-जाप से ही मुक्ति तथा सम्मान के अधिकारी बनते हैं ॥ १ ॥ (इसलिए) ऐ भाई, हरि-नाम में चित्त लगाओ; गुरु की कृपा से हरि को पा लोगे —नाम की यही बड़ाई है। (स्मरण रहे गुरुवाणी में 'नाम' केवल संज्ञा के लिए प्रयुक्त शब्द न होकर, यह आत्मा और परमात्मा को मिलानेवाला सूत्र है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मन, भिक्षा पाने के लिए

लोग अनेक वेष बनाते हैं, कितने ही लोग केवल पेट भरने के लिए भेष करते (आडम्बर रचते) हैं। (किन्तु, ऐ प्राणी, याद रखो कि) हरि-भक्ति के बिना सुखोपलब्धि नहीं होती, न ही गुरु-प्राप्ति के बिना अहम् का नाश होता है ॥ २ ॥ हे मन, मृत्यु सदा हमारे सिर पर विद्यमान है, जन्म-जन्म की हमारी शत्रु है— केवल सतिगुरु की शरण में आनेवाले सूझवान जीव ही सच्चे नाम से प्यार करके उसके चंगुल से बच सकते हैं ॥ ३ ॥ गुरु की शरण में आए जीव की ओर काल नज़र नहीं उठाता, न ही उसका कोई दूत उसे कष्ट पहुँचा सकता है। अविनाशी प्रभु, मायातीत हरि, निर्भय स्वामी से प्रीति होने से (स्वयं काल जीव से डरने लगता है) ॥४॥ (इसलिए) ऐ जीवो, नाम दृढ़ करो, नाम में प्रीति लगाओ और सतिगुरु की शरण लो; जो उसे रुचेगा, वही करेगा, उसका किया कोई बदल नहीं सकता ॥ ५ ॥ ऐ मन, सौभाग्य से मैं सद्गुरु की शरण में हूँ, मुझे अन्य किसी का सहारा अपेक्षित नहीं है; मैं सदा-सदा उसी एक (परमात्मा) को पुकारता हूँ, जो युग-युग से मेरा सहायक मित्र है ॥ ६ ॥ ऐ परमात्मा, अपने नाम की लाज रखो, मेरे तो तुम्हीं एक मात्र सहारे हो। विशेष कृपा करके मुझे सद्गुरु से मिला दो, जिसकी वाणी से मेरा अहम् नष्ट हो सके ॥ ७ ॥ ऐ प्रभु, इस संसार में कुछ भी स्थायी नहीं दीखता, सब आने-जानेवाला है, तुमसे क्या याचना करूँ। (इसलिए गुरुजी कहते हैं कि) मुझे नाम-निधि का दान दो, जिसे मैं सदा अपने हृदय और कंठ में सँजोकर रखूँगा (अर्थात् हृदय से प्रीति करूँगा और कण्ठ से हरि-नाम का स्मरण करूँगा।) ॥ ८ ॥ ३ ॥

॥ गूजरी महला १ ॥ ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग। नाम रते केवल बैरागी सोग बिजोग बिसरजित रोग ॥ १ ॥ भाई रे गुर किरपा ते भगति ठाकुर की। सतिगुर वाकि हिरदै हरि निरमलु ना जम काणि न जम की बाकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण रसन रवहि प्रभ संगे जो तिसु भावै सहजि हरी। बिनु हरि नाम ब्रिथा जगि जीवनु हरि बिनु निहफलमेक घरी ॥ २ ॥ ऐजी खोटे ठउर नाही घरि बाहरि निंदक गति नही काई। रोसु करै प्रभु बखस न मेटै नित नित चड़ै सवाई ॥ ३ ॥ ऐजी गुर की दाति न मेटै कोई मेरै ठाकुरि आपि दिवाई। निंदक नर काले मुख निंदा जिन्ह गुर की दाति न भाई ॥ ४ ॥ ऐजी सरणि परे प्रभु बखसि मिलावै बिलम न अधूआ राई। आनद मूलु नाथु सिरि नाथा

सतिगुरु मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ ऐजी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई । पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ॥ ६ ॥ हरि जलु निरमलु मनु इसनानी मजनु सतिगुरु भाई । पुनरपि जनमु नाही जन संगति जोती जोति मिलाई ॥ ७ ॥ तूं वड पुरखु अगंम तरोवरु हम पंखी तुझ माही । नानक नामु निरंजन दीजै जुगि जुगि सबदि सलाही ॥ ८ ॥ ४ ॥

ऐ लोगो, हम उत्तम, नीच या मध्यम जाति के नहीं हैं, हम तो प्रभु की शरण लेनेवाले, परमात्मा के दास मात्र हैं (अर्थात् प्रभु का आश्रय लेनेवाले हैं, हमें जाति की ऊँच-नीच से क्या लेना है) । प्रभु-नाम के रंग में लीन होने के कारण हम सांसारिकता से विरक्त हैं, हमने दुःख, रोग, वियोग की अनुभूतियों को विसर्जित कर दिया है ॥ १ ॥ हे भाई, परमात्मा की भक्ति गुरु-कृपा से प्राप्त होती है । जब सतिगुरु के वचनों से हृदय में प्रभु का वास होता है, तो यमराज का लेन-देन चुक जाता है (क्योंकि प्रभुनाम-स्मरण एवं गुरु-कृपा से पूर्व-कर्म दग्ध हो जाते हैं) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसे (भक्ति-लब्ध) जीव सदैव प्रभु के ध्यान में रहते हैं, जिह्वा से हरि का गुण गाते हैं और सदैव प्रभु-इच्छा को शिरोधार्य करते हैं । (उनके लिए) हरि-नाम के बिना जीवन वृथा है और उसके अभाव में घड़ी भर समय गुज़ारना भी जीवन को निष्फल करने के बराबर है ॥ २ ॥ ऐ लोगो, खोटे जीव को घर-बाहर, कहीं सहारा नहीं, निन्दक जीवों की गति नहीं होती । (खोटे और निन्दक लोगों के व्यवहार के होते हुए भी) परमात्मा अपने भक्त जीवों पर दया के द्वार बन्द नहीं करता, वरन निरन्तर अधिक कृपा करता है ॥ ३ ॥ ऐ लोगो, गुरु की देन को कोई नहीं मिटा सकता, वह तो परमात्मा की दया से मिली होती है— निन्दकजनों को (ईर्ष्यावश) गुरु की देन नहीं सुहाती, इसीलिए वे अपने कलंकित मुख से निन्दा करते हैं ॥ ४ ॥ ऐ लोगो, परमात्मा शरण में आनेवाले को कृपापूर्वक अपने में लीन कर लेता है, आधी राई भर भी विलम्ब नहीं लगाता । आनन्द का स्रोत, नाथों का नाथ (परमस्वामी) वह परमात्मा सतिगुरु की दया से प्राप्त हो जाता है ॥ ५ ॥ ऐ लोगो, प्रभु सदा दयालु है, दयापूर्वक सबको आश्रय देता है और गुरु-कृपा होने पर जीव की सब भ्रम-भटकन मिटा देता है । सत्संगति का गुण पारस के समान है, जिसके सम्पर्क में आनेवाला लोहा स्वर्ण बन जाता है ॥ ६ ॥ निर्मल मन से हरि रूपी जल में मज्जन-स्नान ही सतिगुरु को भाता है; (ऐसा करनेवाले जीवों को) जन्म-मरण से मुक्ति मिलती है और वे प्रभु

की ज्योति में विलीन हो जाते हैं ॥७॥ हे परमात्मा ! तुम (सबके स्वामी हो) बहुत बड़े पेड़ के समान हो और हम जीव (उसमें आश्रय लेनेवाले) पक्षी मात्र हैं। गुरु नानक कहते हैं कि कृपा करके हमें अपना पावन नाम प्रदान करो ताकि हम (पक्षी) सदा तुम्हारे गुण गाते रहें ॥ ८ ॥ ४ ॥

गूजरी महला १ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भगति प्रेम आराधितं सचु पिआस परम हितं। बिललाप बिलल बिनंतीआ सुख भाइ चित हितं ॥ १ ॥ जपि मन नामु हरि सरणी। संसार सागर तारि तारण रम नाम करि करणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ए मन मिरत सुभ चिंतं गुर सबदि हरि रमणं। मति ततु गिआनं कलिआण निधानं हरि नाम मनि रमणं ॥ २ ॥ चल चित वित भ्रमाभ्रमं जगु मोह मगन हितं। थिरु नाम भगति दिड़ंमती गुर वाकि सबद रतं ॥ ३ ॥ भरमाति भरमु न चूकई जगु जनमि बिआधि खपं। असथानु हरि निहकेवलं सतिमती नाम तपं ॥ ४ ॥ इहु जगु मोह हेत बिआपितं दुखु अधिक जनम मरणं। भजु सरणि सतिगुर ऊबरहि हरि नामु रिद रमणं ॥ ५ ॥ गुरमति निहचल मनि मनु मनं सहज बीचारं। सो मनु निरमलु जितु साचु अंतरि गिआन रतनु सारं ॥ ६ ॥ भै भाइ भगति तरु भवजलु मना चितु लाइ हरि चरणी। हरि नामु हिरदै पवित्रु पावनु इहु सरीरु तउ सरणी ॥ ७ ॥ लब लोभ लहरि निवारणं हरिनाम रासि मनं। मनु मारि तुही निरंजना कहु नानका सरनं ॥ ८ ॥ १ ॥ ५ ॥

(जो जीव) रागात्मिका भक्ति से अभिभूत होकर ईश्वर की आराधना करते हैं तथा केवल सच्चे प्रेम के पिपासु हैं, वे प्रभु की शरण में विलाप-भरी प्रार्थना करते हैं और मन के प्रेम-भाव के कारण उन्हें सब सुख प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥ (इसलिए) ऐ मन, प्रभु का नाम जपो और परमात्मा की शरण लो। यह (नाम) संसार-सागर को पार करनेवाला जहाज है, (अतः) रामनाम-जाप का आचरण करो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐ मन, यदि हम गुरु-आदेशानुसार हरि-स्मरण करें, तो मृत्यु भी हमारी शुभचिन्तक हो जाती है। मन में हरि-नाम के बसने से बुद्धि विवेकशील बनती और सुख-निधि की प्राप्ति होती है ॥ २ ॥ चंचला लक्ष्मी (वित्त)

तो अस्थिर वस्तु है, जगत उसके मोह में बँधा मुग्ध हुआ है। शब्द (नाम) में रत जीवों का यह दृढ़ मत है कि नाम-भक्ति ही स्थिर है (इसी में चित्त लगाना चाहिए) ॥ ३ ॥ संसार में जन्म-मरण का रोग व्याप्त है, वह इसी में भटक रहा है, किन्तु यह भटकन अनन्त है। हरि-स्थान ही उक्त रोग से मुक्त है, (इसलिए) उसके नाम का स्मरण ही उत्तम मति है ॥ ४ ॥ यह जगत मोह-माया के पाश में बँधा हुआ है, इसीलिए यह जन्म-मरण के व्यापक दुःख से पीड़ित है। (ऐ मनुष्य !) तुम प्रभु का भजन करो और सतिगुरु की शरण लो; वही हरि-नाम हृदय में बसने से मुक्ति सम्भव होगी ॥ ५ ॥ गुरु की निश्छल शिक्षा धारण करके ही मन ज्ञान को स्वीकार करता है। जिस मन में सत्य तथा ज्ञान-रत्न विद्यमान है, वही मन निर्मल है ॥ ६ ॥ (इसलिए) ऐ मन, संसार-सागर को प्रभु के भय तथा भक्ति-भाव से पार कर लो और हरि-चरणों में चित्त रमाओ। हृदय में पवित्र हरि-नाम धारण करके (उस परमात्मा से विनती करो कि) यह शरीर उसकी शरण में समर्पित है ॥ ७ ॥ हरि-नाम की राशि मन में आने से लोभ-लालसा की तृष्णा का प्रवाह नष्ट हो जाता है (और तब जीव पुकारता है— ऐ नानक !) 'तुम मायातीत हो, मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ, मेरे मन को तुम्हीं संयमित कर दो' ॥ ८ ॥ १ ॥ ५ ॥

गूजरी महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ निरति करी इहु मनु नचाई। गुर परसादी आपु गवाई। चितु थिरु राखै सो मुकति होवै जो इछी सोई फलु पाई ॥ १ ॥ नाचु रे मन गुर कै आगै। गुर कै भाणै नाचहि ता सुखु पावहि अंते जम भउ भागै ॥ रहाउ ॥ आपि नचाए सो भगतु कहीऐ आपणा पिआरु आपि लाए। आपे गावै आपि सुणावै इसु मन अंधे कउ मारगि पाए ॥ २ ॥ अनदिनु नाचै सकति निवारै सिव घरि नीद न होई। सकती घरि जगतु सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई ॥ ३ ॥ सुरि नर विरति पखि करमी नाचे मुनिजन गिआन बीचारी। सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि वीचारी ॥ ४ ॥ खंड ब्रहमंड त्रैगुण नाचे जिन लागी हरि लिव तुमारी। जीअ जंत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी ॥ ५ ॥ जो तुधु भावहि सेई नाचहि जिन गुरमुखि सबदि लिव लाए।

से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु मनाए ॥ ६ ॥ एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई । जीवतु मरै ता सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई ॥ ७ ॥ माइआ कै अरथि बहुतु लोक नाचे को विरला ततु बीचारी । गुर परसादी सोई जनु पाए जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ ८ ॥ इकु दमु साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाइ । साहि साहि सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाइ ॥ ६ ॥ सेई नाचहि जो तुधु भावहि जि गुरमुखि सबदु वीचारी । कहु नानक से सहज सुखु पावहि जिन कउ नदरि तुमारी ॥ १० ॥ १ ॥ ६ ॥

[इस पद में रास-नृत्य आदि की व्यर्थता बतलाकर मानसिक शुद्धि को सर्वोपरि बतलाया है । रास रचानेवाले नृत्य करके भक्त कहलाते हैं, लेकिन अहंकारग्रस्त होने के कारण मानसिक टिकाव महसूस नहीं कर पाते ।]

मैं भी नाचता हूँ (लेकिन) मैं इस मन को नचाता हूँ, अर्थात् गुरु-कृपा से अहंभाव दूर करता हूँ । इस प्रकार मैं जो चाहता हूँ, वही फल प्राप्त कर लेता हूँ । (वास्तव में जो मनुष्य अपने हृदय को प्रभु-चरणों में टिकाता है, वह माया के बन्धनों से मुक्त हो जाता है) ॥ १ ॥ हे मन ! गुरु की सेवा में नृत्य कर (अर्थात् उनकी शिक्षा का अनुसरण कर) । हे मन ! यदि तू उसी प्रकार नृत्य करेगा जैसे गुरु चाहेंगे, तो आनन्दानुभव करेगा और अन्तिम समय में मृत्यु का भय भी तुझसे दूर दौड़ जायगा ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य को परमात्मा अपने निर्देश से अग्रसर करता है, जिसे अपने चरणों में जगह देता है, वह मनुष्य ही भक्त कहा जा सकता है । परमात्मा आप ही गाता है, आप ही सुनाता है और माया-मोह में अन्धे इस मन को सन्मार्ग पर लगाता है ॥२॥ हे भाई ! जो मनुष्य प्रतिपल परमात्मा की रज़ा का अनुसरण करता है, वह अपने भीतर से माया का प्रभाव मिटा लेता है । कल्याण-रूप प्रभु के चरणों में जगह पाने पर माया-मोह का निद्रा असर नहीं कर सकती । जगत माया-मोह में सोता हुआ भागता-दौड़ता रहता है । स्वेच्छाचारी मनुष्य से परमात्मा की भक्ति नहीं हो सकती ॥ ३ ॥ हे भाई ! दैवी स्वभाव वाले मनुष्य लौकिक कामकाज करते हुए भी, ऋषि-मुनियों की तरह आत्मिक जीवन की सूझ प्राप्त कर, परमात्मा की कृपा से नृत्य करते हैं । आत्मिक जीवन की खोज के लिए साधन करनेवाले जो मनुष्य गुरु के द्वारा उत्तम बुद्धि प्राप्त कर विचारक हो जाते हैं, उनकी सुरति प्रभु-चरणों में लगी रहती है; वे (परमात्मा की रज़ा के अनुसार) नृत्य करते हैं ॥४॥ हे प्रभु ! सारे जीव-जन्तु नृत्य-मग्न हैं, खण्डों, ब्रह्माण्डों के सारे जीव

त्रिगुणात्मक माया के प्रभाव में नाच रहे हैं; लेकिन हे प्रभु ! जिन्हें तुम्हारे चरणों में प्रीति है, वे तुम्हारी रज़ा में चलने का नृत्य करते हैं ॥५॥ हे प्रभु ! जो तुम्हें प्रिय हैं, वही तुम्हारे संकेतों पर अग्रसर होते हैं। हे भाई ! जिन मनुष्यों को गुरु के सान्निध्य में लाकर, उसी के ज्ञान में प्रवृत्त कर प्रभु अपने चरणों की प्रीति देता है, जिन्हें अपना 'भाणा, प्रभु-इच्छा' प्रसन्नतापूर्वक मनवाता है, वही मनुष्य वास्तविक भक्त हैं, वही मनुष्य समस्त जगत के मूल परमात्मा के साथ अभिन्नता बनाए रखते हैं ॥ ६ ॥ हे भाई ! वही प्रयास भक्ति है, जिससे सत्यस्वरूप प्रभु के साथ प्रेम-निर्वाह हो सके, ऐसी भक्ति सेवा के बिना सम्पन्न नहीं हो सकती । जब मनुष्य लौकिक कामकाज करता हुआ ही माया-मोह से असम्पृक्त हो जाता है, तब वह गुरु के ज्ञान को अपने मस्तिष्क में टिकाए रखता है और तभी मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा का मिलाप प्राप्त करता है ॥ ७ ॥ हे भाई ! माया कमाने के लिए तो तमाम दुनिया नाच रही है, कोई विरला मनुष्य है, जो वास्तविक आत्मिक जीवन को पहचानता है । केवल वही मनुष्य गुरु की कृपा से तुम्हारा मिलाप पाता है, जिस पर तुम्हारी कृपा होती है ॥ ८ ॥ हे भाई ! जिस क्षण में सत्यस्वरूप परमात्मा विस्मृत रहे, वह समय व्यर्थ बीत जाता है । हरेक श्वास के साथ हमेशा परमात्मा को अपने हृदय में टिकाए रखना चाहिए, (लेकिन यह स्थिति उसी की होती है, जिस पर) प्रभु स्वयं कृपा करे ॥ ९ ॥ हे प्रभु ! जो मनुष्य तुम्हें भले लगते हैं, वही तुम्हारी 'रज़ा' को स्वीकारते हैं, क्योंकि वे गुरु की शरण लेकर गुरु के ज्ञान को अपने मस्तिष्क में टिका लेते हैं । गुरु नानक का कथन है कि हे प्रभु ! जिन पर तुम्हारी कृपा-दृष्टि होती है, वे मनुष्य आत्मिक स्थिरता का आनन्द प्राप्त करते हैं ॥ १० ॥ १ ॥ ६ ॥

गूजरी महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि बिनु जीअरा रहि न सकै जिउ बालकु खीर अधारी । अगम अगोचर प्रभु गुरमुखि पाईऐ अपुने सतिगुर कै बलिहारी ॥ १ ॥ मन रे हरि कीरति तरु तारी । गुरमुखि नामु अंम्रित जलु पाईऐ जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ रहाउ ॥ सनक सनंदन नारद मुनि सेवहि अनदिनु जपत रहहि बनवारी । सरणागति प्रहलाद जन आए तिन की पैज सवारी ॥ २ ॥ अलख निरंजनु एको वरतै एका जोति मुरारी । सभि जाचिक तू एको दाता मागहि हाथ पसारी ॥ ३ ॥

भगत जना की ऊतम बाणी गावहि अकथ कथा नित निआरी। सफल जनमु भइआ तिन केरा आपि तरे कुल तारी ॥ ४ ॥ मनमुख दुबिधा दुरमति बिआपे जिन अंतरि मोह गुबारी। संत जना की कथा न भावै ओइ डूबे सणु परवारी ॥ ५ ॥ निंदकु निंदा करि मलु धोवै ओहु मलभखु माइआधारी। संत जना की निंदा विआपे ना उरवारि न पारी ॥ ६ ॥ एहु परपंचु खेलु कीआ सभु करतै हरि करतै सभ कल धारी। हरि एको सूतु वरतै जुग अंतरि सूतु खिचै एकंकारी ॥ ७ ॥ रसनि रसनि रसि गावहि हरि गुण रसना हरि रसु धारी। नानक हरि बिनु अवरु न मागउ हरि रस प्रीति पिआरी ॥ ८ ॥ १ ॥ ७ ॥

हे भाई ! मेरी दुर्बल आत्मा परमात्मा के बिना धैर्य धारण नहीं कर सकती, जैसे छोटे बच्चे के लिए दूध के सहारे की ज़रूरत होती है। हे भाई ! वह प्रभु जो अगम्य है, जो मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच से परे है, वह गुरु के शरणागत होकर ही मिलता है। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ ॥ १ ॥ हे मन ! परमात्मा की गुणस्तुति के द्वारा पार होने का प्रयास किया कर। आतिमक जीवन का दाता हरिनाम-जल गुरु की शरण में आने से ही मिलता है। (यह नाम-जल उन्हें ही मिलता है), जिन पर तुम्हारी कृपा हो ॥ रहाउ ॥ सनक, सनन्दन, नारद जैसे ऋषि-मुनि भी जगत के स्वामी की ही सेवा-भक्ति करते हैं, (वे) प्रतिपल नाम ही जपते हैं, प्रह्लाद (जैसे भक्त भी) परमात्मा की शरण में आए, परमात्मा उनकी लाज बचाता रहा ॥ २ ॥ हे भाई ! समस्त सृष्टि में एक ही अप्रत्यक्ष तथा निर्लिप्त परमात्मा व्याप्त है, सर्वत्र उसी परमात्मा का प्रकाश प्रकाशमान है। हे प्रभु ! एक आप ही देनेवाले हो, सब जीव भिक्षुक हैं,हाथ पसारकर याचना कर रहे हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! परमात्मा की भक्ति करनेवाले व्यक्तियों के वचन अमूल्य हो जाते हैं, वे हमेशा ईश्वर की अद्भुत गुणस्तुति के गीत गाते हैं। जिसका स्वरूप अव्यक्त है, उनका मनुष्य-जन्म सफल हो जाता है, वे आप-पार उतर जाते हैं और अपने वंशों को भी मुक्त कर लेते हैं ॥ ४ ॥ हे भाई ! स्वेच्छाचारी मनुष्य द्विधा तथा दुश्चिन्ता में फँसे रहते हैं, क्योंकि उनके हृदय में मोह का अँधेरा पड़ा रहता है। स्वेच्छाचारी व्यक्तियों को सन्तों का परामर्श नहीं रुचता, वे सपरिवार (संसार-समुद्र) में डूब जाते हैं ॥ ५ ॥ हे भाई ! निन्दक परनिन्दा करके दूसरों के मैल तो धो देता है, लेकिन आप मायाग्रस्त होकर पराया मैल भक्षण करने का आदी हो जाता है। हे भाई ! जो मनुष्य सन्तों की निन्दा में फँसे रहते हैं, वे न इधर के रहते हैं और न ही पार हो

सकते हैं ॥ ६ ॥ (वास्तव में) यह सारा जगत-तमाशा कर्तार ने आप बनाया है, कर्तार ने ही इसमें अपनी सत्ता टिकाई हुई है। समस्त जगत केवल परमात्मा की सत्ता के धागे से बँधा है। जब वह इस धागे को खींच लेता है, तो (सब कुछ मिट जाता है और) प्रभु आप ही आप रह जाता है ॥ ७ ॥ (मोक्ष-लाभ के इच्छुक मनुष्य) हमेशा प्रेमपूर्वक प्रभु के गीत गाते रहते हैं, उनकी जिह्वा परमात्मा के नाम-रस का आस्वादन करती रहती है। नानक का कथन है कि मैं परमात्मा के नाम के अतिरिक्त कुछ नहीं माँगता (मेरी चाह है कि) प्रभु के नाम का अनुराग अनवरत बना रहे ॥ ८ ॥ १ ॥ ७ ॥

गूजरी महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ राजन महि तूं राजा कहीअहि भूमन महि भूमा। ठाकुर महि ठकुराई तेरी कोमन सिरि कोमा ॥ १ ॥ पिता मेरो बडो धनी अगमा। उसतति कवन करीजै करते पेखि रहे बिसमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखीअन महि सुखीआ तूं कहीअहि दातन सिरि दाता। तेजन महि तेजवंसी कहीअहि रसीअन महि राता ॥ २ ॥ सूरन महि सूरा तूं कहीअहि भोगन महि भोगी। ग्रसतन महि तूं बडो ग्रिहसती जोगन महि जोगी ॥ ३ ॥ करतन महि तूं करता कहीअहि आचारन महि आचारी। साहन महि तूं साचा साहा वापारन महि वापारी ॥ ४ ॥ दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका। लखिमी केतक गनी न जाईऐ गनि न सकउ सीका ॥ ५ ॥ नामन महि तेरो प्रभ नामा गिआनन महि गिआनी। जुगतन महि तेरी प्रभ जुगता इसनानन महि इसनानी ॥ ६ ॥ सिधन महि तेरी प्रभ सिधा करमन सिरि करमा। आगिआ महि तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिरि हुकमा ॥ ७ ॥ जिउ बोलावहि तिउ बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी। साधसंगि नानक जसु गाइओ जो प्रभ की अति पिआरी ॥ ८ ॥ १ ॥

हे कर्तार ! राजाओं में तुम राजा कहलाते हो और भूमिपतियों में भूमिपति हो। हे कर्तार ! ठाकुरों में तुम्हारी ही ठकुराई है और कुलीनों में तुम सर्वोपरि हो ॥ १ ॥ हे कर्तार ! तुम मेरे पिता हो, तुम अगम्य हो। हे कर्तार ! तुम्हारी कौन-कौन सी विशेषता बखानें ?

(क्योंकि) यह सब देख-देखकर हम आश्चर्यचकित हैं ।। १ ।। रहाउ ।। हे कर्तार ! सुखी व्यक्तियों में सर्वोपरि सुखी हो, दानियों में तुम (सर्वाधिक) तेजस्वी हो और रसों के उपभोग करनेवालों में तुम शिरोमणि रसिया हो ।। २ ।। हे कर्तार ! बहादुरों में अप्रतिम बहादुर कहलाने के अधिकारी हो, भोगियों में तुम भोगी हो, गृहस्थियों में तुम सर्वोच्च गृहस्थी हो और योगियों में सर्वोपरि योगी हो ।। ३ ।। हे कर्तार ! नये काम करनेवाले सृजनहारों में तुम अग्रगण्य हो, धार्मिकों में भी तुम शिरोमणि हो । हे कर्तार ! साहूकारों में तुम सत्यस्वरूप साहूकार हो और व्यापारियों में सर्वोच्च व्यापारी हो ।। ४ ।। हे प्रभु ! समस्त दरबारों में तुम्हारा दरबार उत्तम है, शरणागतों की लाज रखनेवालों में तुम सर्वोपरि हो । तुम्हारे घर में कितनी राशि है, इसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता । मैं तुम्हारे भण्डारों की गणना नहीं कर सकता ।। ५ ।। हे स्वामी ! प्रसिद्धि-प्राप्त (लोकप्रियता अर्जित करनेवाले) व्यक्तियों में तुम्हारी प्रसिद्धि सर्वोपरि है, ज्ञानियों में भी तुम अग्रगण्य हो । हे प्रभु ! सदाचारी व्यक्तियों में तुम्हारे आचरण उत्तम हैं, तीर्थ-स्थान पर स्नान करनेवाले व्यक्तियों में तुम्हीं श्रेष्ठ हो ।। ६ ।। हे ईश्वर ! चमत्कारिक शक्ति रखनेवाले व्यक्तियों में तुम्हारी चमत्कारिक शक्ति प्रबल है, उद्यमी व्यक्तियों में तुम सर्वाधिक उद्यमी हो । अधिकारी व्यक्तियों में तुम्हारा अधिकार सर्वोपरि है, हुक्म चलानेवाले हुक्मरानों में तुम सर्वाधिक शक्ति-सम्पन्न हो ।। ७ ।। हे कर्तार, हे स्वामी ! हमारी क्या सामर्थ्य है ? जिस प्रकार तुम बुलाते हो, उसी प्रकार हम बोलते हैं । गुरु नानक का कथन है कि (ईश्वरीय कृपा के फलस्वरूप ही) मनुष्य ने सत्संगति में टिककर प्रभु की गुणस्तुति की है, यह गुणस्तुति प्रभु को अत्यन्त प्रिय है ।। ८ ।। १ ।।

गूजरी महला ५ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। नाथ नरहर दीनबंधव पतितपावन देव । भै त्रास नास क्रिपाल गुणनिधि सफल सुआमी सेव ।। १ ।। हरि गोपाल गुर गोबिंद । चरण सरण दइआल केसव तारि जग भवसिंध ।। १ ।। रहाउ ।। काम क्रोध हरन मद मोह दहन मुरारि मन मकरंद । जनम मरण निवारि धरणीधर पति राखु परमानंद ।। २ ।। जलत अनिक तरंग माइआ गुर गिआन हरि रिद मंत । छेदि अहंबुधि करुणामै चिंत मेटि पुरख

अनंत ॥ ३ ॥ सिमरि समरथ पल महूरत प्रभ धिआनु सहज समाधि । दीनदइआल प्रसंन पूरन जाचीऐ रज साध ॥ ४ ॥ मोह मिथन दुरंत आसा बासना बिकार । रखु धरम भरम बिदारि मन ते उधरु हरि निरंकार ॥ ५ ॥ धनाढि आढि भंडार हरि निधि होत जिना न चीर । खल मुगध मूड़ कटाख्य स्रीधर भए गुणमति धीर ॥ ६ ॥ जीवन मुकत जगदीस जपि मन धारि रिद परतीति । जीअ दइआ मइआ सरबत्र रमणं परमहंसह रीति ॥ ७ ॥ देत दरसनु स्रवन हरि जसु रसन नाम उचार । अंग संग भगवान परसन प्रभ नानक पतित उधार ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥ ५ ॥ १ ॥ १ ॥ २ ॥ ५७ ॥

हे जगत के स्वामी, नरहरि, दीनदयालु, पतितपावन, ज्योतिस्वरूप प्रभु ! हे भयनाशक, कृपालु, गुणों के कोष, स्वामी-प्रभु ! तुम्हारी सेवा-भक्ति जीवन को सफल बना देती है ॥ १ ॥ हे हरि, गोपाल, वाहिगुरु, गोविन्द, दयालु, केशव ! अपने चरणों में जगह देकर मुझे इस संसार-सागर से पार कर लो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे काम-क्रोध के विनाशक, मोह के नशे को जलानेवाले, मन को सुगन्धित करनेवाले मुरारी प्रभु ! हे धरती के सहारे, सर्वाधिक श्रेष्ठ आनन्द के स्वामी ! मेरी लाज रखो और मेरा जन्म-मरण का चक्र समाप्त करो ॥ २ ॥ हे हरि ! माया-अग्नि की अनन्त लपटों में जलते हुए जीवों के हृदय में गुरु के ज्ञान का मन्त्र फूँको । हे दयास्वरूप हरि, सर्वव्यापक अनन्त प्रभु ! अहंत्व दूर करो और चिन्ता मिटाओ ॥ ३ ॥ हे समर्थ प्रभु ! प्रत्येक क्षण तुम्हें स्मरण कर मैं अपनी सुरति आत्मिक स्थिरता की समाधि में लगाए रखूँ । हे दीनदयालु, पूर्णप्रसन्न, सर्वव्यापक प्रभु ! तुमसे सन्तजनों के चरणों की धूलि माँगता हूँ ॥ ४ ॥ हे निरंकार हरि ! मुझे बचा लो, मेरी मानसिक दुविधा मिटा दो । हे दाता ! मिथ्या मोह, दुखदायक इच्छाओं तथा विकारजन्य वासनाओं से मेरी रक्षा करो ॥ ५ ॥ हे हरि ! जिनके पास कपड़े की एक कतरन भी नहीं होती, वे तेरे गुणों के खज़ाने पाकर अत्यन्त धनी बन गए हैं । हे लक्ष्मीपति ! महामूर्ख और दुष्ट तुम्हारी कृपादृष्टि से गुणवान, बुद्धिमान, धैर्यवान बन जाते हैं ॥ ६ ॥ (इसलिए) हे मन ! जीवनमुक्त करनेवाले जगदीश का नाम जपो, हृदय में उसके लिए श्रद्धा धारण करो, सबके साथ दया-स्नेह का व्यवहार करो, प्रभु को सर्वव्यापक जानो, सदाचारी हंस (मनुष्यात्मा) की यही जीवन-युक्ति है ॥ ७ ॥ हे भाई ! परमात्मा आप ही अपना दर्शन देता है, कानों में गुणस्तुति का श्रवण कराता है, जीव को अपने नाम का उच्चारण देता है और सदा साथ-साथ रहता

है। हे हरि, हे भगवान ! तेरा स्पर्श विकारी जीवों का भी उद्धार करनेवाला है ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥ ५ ॥ १ ॥ १ ॥ २ ॥ ५७ ॥

गूजरी की वार महला ३ सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु म० ३ ॥ इहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि । गुर कै भाणै जो चलै तां जीवण पदवी पाहि । ओइ सदा सदा जन जीवते जो हरि चरणी चितु लाहि । नानक नदरी मनि वसै गुरमुखि सहजि समाहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ अंदरि सहसा दुखु है आपै सिरि धंधै मार । दूजे भाइ सुते कबहि न जागहि माइआ मोह पिआर । नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का आचारु । हरि नामु न पाइआ जनमु बिरथा गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई । मता मसूरति आपि करे जो करे सु होई । तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई । तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति होई । जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ १ ॥

[इसे सिकन्दर बिराहिम की वार की ध्वनि में गाना]

॥ सलोकु महला ३ ॥ यह जगत मोह-माया में इतना ग्रस्त है कि इसे जीने की समझ ही नहीं रही। जो मनुष्य सतिगुरु के संकेतानुसार आचरण करते हैं, वे जीवन-युक्ति सीख लेते हैं, जो मनुष्य प्रभु के चरणों में मन लगाते हैं, वे मानो हमेशा जीवित रहते हैं। हे नानक ! गुरु के सान्निध्य में होने पर कृपालु प्रभु मन में टिक जाता है और गुरमुख उस अवस्था में जा पहुँचते हैं, जहाँ लौकिक पदार्थों की ओर मन आकर्षित नहीं होता ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिन मनुष्यों का माया के साथ लगाव है, जो माया के प्रेम में संलग्न हैं, वे कभी सजग नहीं होते, उनके मन में दुविधा और क्लेश चलता रहता है, उन्होंने दुनियावी झंझटों के साथ निबटना आप स्वीकार किया हुआ है। स्वेच्छाचारी व्यक्तियों का आचरण यह है कि वे कभी भी गुरु के ज्ञान का ध्यान नहीं करते। हे नानक ! उन्हें परमात्मा का नाम प्राप्त नहीं हुआ, वे जन्म व्यर्थ गवाँते हैं और यमराज उन्हें मारकर दुखी करता है ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ जब प्रभु ने अपना आप उत्पादित किया था, तब कोई दूसरा नहीं था, सलाह-मशवरा भी

आप ही करता था, जो करता था सो होता था। उस वक्त न आकाश, न पाताल और न तीनों लोक थे, कोई भी सृजना अभी नहीं हुई थी, निराकार परमात्मा ही अपने आप में विचरता था। जो प्रभु को भला लगता है वही करता है, उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है ॥ १ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु कमाइ। ओहु अउहाणी कदे नाहि ना आवै ना जाइ। सदा सदा सो सेवीऐ जो सभ महि रहै समाइ। अवरु दूजा किउ सेवीऐ जंमै तै मरि जाइ। निहफलु तिन का जीविआ जि खसमु न जाणहि आपणा अवरी कउ चितु लाइ। नानक एव न जापई करता केती देइ सजाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सचा नामु धिआईऐ सभो वरतै सचु। नानक हुकमु बुझि परवाणु होइ ता फलु पावै सचु। कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूलि न बुझई अंधा कचु निकचु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ संजोगु विजोगु उपाइओनु स्रिसटी का मूलु रचाइआ। हुकमी स्रिसटि साजीअनु जोती जोति मिलाइआ। जोती हूं सभु चानणा सतिगुरि सबदु सुणाइआ। ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धंधै लाइआ। माइआ का मूलु रचाइओनु तुरीआ सुखु पाइआ ॥ २ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ मेरा प्रभु सदा मौजूद है, लेकिन उसका साक्षात्कार 'शब्द' की साधना से होता है। वह कभी नष्ट होनेवाला नहीं, न वह जन्मता है और न मरता है। वह प्रभु सब जीवों में मौजूद है, उसे सदा स्मरण करना चाहिए। उस दूसरे व्यक्ति की भक्ति क्यों करें, जो जन्मता है, मरता है। उन व्यक्तियों का जीना व्यर्थ है, जो किसी अन्य में चित्त लगाकर अपने पति-प्रभु को नहीं पहचानते। हे नानक! ऐसे व्यक्तियों को कर्तार कितनी सज़ा देता है, इस बात का इस प्रकार अनुमान नहीं लगाया जा सकता ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जो सत्यस्वरूप प्रभु सर्वत्र विद्यमान है, उसका नाम स्मरण करना चाहिए। हे नानक! यदि मनुष्य प्रभु की रज़ा को समझे तो उसकी सेवा में स्वीकृत होता है और एक शाश्वत (स्थायी) फल प्राप्त कर लेता है। लेकिन जो मनुष्य केवल बातें करता है, प्रभु की रज़ा को बिल्कुल नहीं समझता, वह अन्धा है और मात्र अनर्गल प्रलाप करनेवाला है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु ने संयोग और वियोग का नियम बनाया और सृष्टि की सर्जना कर डाली। उसने अपने हुक्म-अनुसार सृष्टि का सृजन किया और जीवों में अपनी ज्योति आलोकित की। यह समस्त प्रकाश प्रभु की ज्योति से ही उत्पादित है —यह वचन सतिगुरु

ने सुनाया है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव पैदा करके उन्हें तीनों गुणों के धन्धे में लगा दिया (तात्पर्य यह कि ब्रह्मा सतोगुण, विष्णु रजोगुण एवं शिव तमोगुण का धारक है)। परमात्मा ने (संयोग, वियोग रूपी) माया का सृजन कर दिया। इस माया में उस मनुष्य ने सुख पाया है, जो तुरीयावस्था में पहुँचा है ॥ २ ॥

॥ सलोकु ३ ॥ सो जपु सो तपु जि सतिगुर भावै। सतिगुर कै भाणै वडिआई पावै। नानक आपु छोडि गुर माहि समावै॥ १॥ म० ३ ॥ गुर की सिख को विरला लेवै। नानक जिसु आपि वडिआई देवै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु अगिआनु है बिखमु अति भारी। पथर पाप बहु लदिआ किउ तरीऐ तारी। अनदिनु भगती रतिआ हरि पारि उतारी। गुरसबदी मनु निरमला हउमै छडि विकारी। हरि हरि नामु धिआईऐ हरि हरि निसतारी ॥ ३ ॥

॥ सलोकु ३ ॥ सतिगुरु को जो प्रिय है, वही जप है, वही तप है; मनुष्य सतिगुरु की रज़ा में रहकर सम्मान पाता है। हे नानक! अहंत्वभाव का त्याग करके ही मनुष्य सतिगुरु में लीन हो जाता है ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ कोई विरला मनुष्य ही सतिगुरु की शिक्षा लेता है। हे नानक! गुरु की शिक्षा पर चलने की प्रशंसा उसे मिलती है, जिसे प्रभु स्वयं देता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माया-मोह और अज्ञान (का समुद्र) अत्यन्त भारी एवं दुस्तर हैं; यदि हम अत्यन्त भारी पाप रूपी पत्थरों से लदे हों, तो समुद्र से कैसे पार हुआ जा सकता है? प्रभु उन मनुष्यों को पार उतारता है, जो प्रतिपल उसकी भक्ति में रँगे हुए हैं, जिनका मन सतिगुरु के ज्ञान के द्वारा अहंत्व आदि विकृतियाँ त्यागकर पवित्र हो जाता है, (इसलिए) प्रभु का नाम स्मरण करना चाहिए, प्रभु ही मोह रूपी समुद्र से पार कराता है ॥ ३ ॥

॥ सलोकु ॥ कबीर मुकति दुआरा संकुड़ा राई दसवै भाइ। मनु तउ मैगलु होइ रहा निकसिआ किउकरि जाइ। ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ। मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥ १ ॥ ३ ॥ नानक मुकति दुआरा अति नीका नान्हा होइ सु जाइ। हउमै मनु असथूलु है किउकरि विचुदे जाइ। सतिगुर मिलिऐ हउमै गई जोति रही सभ आइ। इहु जीउ सदा मुकतु है सहजे रहिआ समाइ ॥ २ ॥

।। पउड़ी ।। प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता। गणतै प्रभू न पाईऐ दूजै भरमीता। सतिगुर मिलिऐ जीवतु मरै बुझि सचि समीता। सबदे हउमै खोईऐ हरि मेलि मिलीता। सभ किछु जाणै करे आपि आपे विगसीता ।। ४ ।।

।। सलोकु ।। हे कबीर ! मुक्ति का द्वार इतना तंग है कि राई के दाने का भी दसवाँ भाग है, लेकिन मन (अहंत्व द्वारा) मस्त हाथी बना पड़ा है, (तब) इसमें से कैसे गुज़रा जा सके ? यदि कोई ऐसा गुरु मिले जो प्रसन्न होकर कृपा करे, तो मुक्ति का मार्ग बड़ा खुला हो जाता है और उसमें से आसानी से आया-जाया जा सकता है ।। १ ।। ३ ।। हे नानक ! माया-मोह से बचकर गुज़रने का रास्ता अत्यन्त तंग है। उसमें से वही गुज़र सकता है, जो बहुत छोटा हो; लेकिन यदि मन अहंत्व के कारण मोटा हो गया, तो इसमें से कैसे गुज़रा जा सके ? जब गुरु मिलने पर अहंत्व दूर हो जाए, तो भीतर प्रकाश हो जाता है। तदन्तर यह जीवात्मा सदा स्वतन्त्र रहता है और स्थिर अवस्था में टिका रहता है (छोटा होने से विनम्रता का भाव है) ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु ने विश्व पैदा कर अपने अधीन रखा हुआ है (इसलिए) माया सम्बन्धी विचार करने से प्रभु नहीं मिलता, माया में ही भटका जाता है। गुरु की प्राप्ति होने पर यदि मनुष्य जीवित ही (माया के त्याग से) मर जाए तो इस रहस्य को समझकर वह प्रभु में ही विलीन हो जाता है। प्रभु आप ही सर्वज्ञ है, आप ही कर्ता है और आप ही प्रसन्न होता है ।। ४ ।।

।। सलोकु म० ३ ।। सतिगुर सिउ चितु न लाइओ नामु न वसिओ मनि आइ। ध्रिगु इवेहा जीविआ किआ जुग महि पाइआ आइ। माइआ खोटी रासि है एक चसे महि पाजु लहि जाइ। हथहु छुड़की तनु सिआहु होइ बदनु जाइ कुमलाइ। जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ तिन्ह सुखु वसिआ मनि आइ। हरि नामु धिआवहि रंग सिउ हरिनामि रहे लिव लाइ। नानक सतिगुर सो धनु सउपिआ जि जीअ महि रहिआ समाइ। रंगु तिसै कउ अगला वंनी चड़ै चड़ाइ ।। १ ।। म० ३ ।। माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ। इस की सेवा जो करे तिसही कउ फिरि खाइ। गुरमुखि कोई गारड़ू तिनि मलिदलि लाई पाइ। नानक सेई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ ।। २ ।। ।। पउड़ी ।। ढाढी करे पुकार प्रभू सुणाइसी। अंदरि धीरक होइ

पूरा पाइसी । जो धुरि लिखिआ लेखु से करम कमाइसी । जा होवै खसमु दइआलु ता महलु घरु पाइसी । सो प्रभु मेरा अति वडा गुरमुखि मेलाइसी ।। ५ ।।

।। सलोकु महला ३ ।। यदि गुरु में श्रद्धा न रखी और प्रभु का नाम स्मरण न किया तो जीने को धिक्कार है। मनुष्य-जन्म में आकर क्या पाया ? माया तो खोटी पूँजी है, इसका भेद तो एक निमिष मात्र में प्रकट हो जाता है और मुँह कुम्हला जाता है। जिन मनुष्यों ने गुरु के साथ हृदय लगाया, उनके मन में शान्ति आ जाती है। वे सप्रेम प्रभु का नाम लेते हैं और प्रभु के नाम में सुरति लगाए रखते हैं। हे नानक ! यह नाम-धन प्रभु ने सतिगुरु को सौंपा है। यह धन गुरु की आत्मा में मिला हुआ है। (गुरु के प्रति श्रद्धा रखनेवाले) व्यक्ति को नाम-रंग बहुत चढ़ता है और यह रंग नित्य चमकता है ।। १ ।। म० ३ ।। माया सर्पिणी है, (जो) जगत में प्रत्येक जीव को चिपटी हुई है, जो इसका ग़ुलाम बनता है, उसे ही यह समाप्त कर डालती है। कोई विरला गुरमुख होता है, जो इस माया-सर्पिणी के विष का मन्त्र जानता है। उसने इसे बहुत मसलकर अथवा पीटकर पैरों के नीचे डाल लिया है। हे नानक ! इस माया-सर्पिणी से वही बचे हैं, जो सच्चे प्रभु में मन लगाते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। जब मनुष्य चारण बनकर प्रार्थना करता है और प्रभु को सुनाता है, तब इसके भीतर धैर्य पैदा होता है और पूर्णप्रभु इसे मिलता है। प्रभु के द्वार से जो लेख (व्यक्ति के) मस्तक पर प्रकट होता है, वैसे ही कर्म व्यक्ति करता है। इस तरह जब स्वामी दयालु होता है, तो जीव-पत्नी को प्रभु का महल रूपी वास्तविक घर मिल जाता है। लेकिन मेरा वह प्रभु बहुत बड़ा है और वह गुरु के माध्यम से ही मिलता है ।। ५ ।।

।। सलोक म० ३ ।। सभना का सहु एकु है सदही रहै हजूरि । नानक हुकमु न मंनई ता घर ही अंदरि दूरि । हुकमु भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदरि करेइ । हुकमु मंनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होइ ।। १ ।। म० ३ ।। रैणि सबाई जलि मुई कंत न लाइओ भाउ । नानक सुखि वसनि सोहागणी जिन्ह पिआरा पुरखु हरि राउ ।। २ ।। पउड़ी ।। सभु जगु फिरि मै देखिआ हरि इको दाता । उपाइ कितै न पाईऐ हरि करम बिधाता । गुरसबदी हरि मनि वसै हरि सहजे जाता । अंदरहु त्रिसना अगनि बुझी हरि अंम्रितसरि नाता । वडी वडिआई वडे की गुरमुखि बोलाता ।। ६ ।।

॥ सलोक महला ३ ॥ सबका मालिक परमात्मा है, जो सदा ही इनके साथ-साथ रहता है लेकिन, हे नानक ! जो जीव-स्त्री उसकी आज्ञा नहीं स्वीकारती, उसे मालिक-प्रभु हृदय में स्थित होकर भी कहीं दूर रहता हुआ लगता है। प्रभु-मालिक अपनी आज्ञा भी उनसे ही मनवाते हैं, जिन पर उनकी कृपादृष्टि होती है। जिसने हुक्म मानकर सुख अनुभव किया है, वह जीवात्मा प्रेमपूरित तथा भाग्यशाली हो जाता है ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ जिस जीव-स्त्री ने पति-प्रभु के साथ नेह नहीं किया, वह तमाम जीवन रूपी रात्रि में विरह में जलती हुई मृत्यु को प्राप्त हुई। लेकिन जिन जीव-स्त्रियों का सच्चा प्यार अकालपुरुष से है, वे भाग्यशालिनी सुखपूर्वक शयन करती हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मैंने समस्त जगत छानबीन कर देख लिया है कि परमात्मा ही सब जीवों का दाता है, जीवों को कर्मों की स्थिति के अनुसार जन्म देनेवाला प्रभु किसी चतुराई द्वारा प्राप्त नहीं होती। वह प्रभु केवल गुरु के ज्ञान द्वारा हृदय में टिकता है और सहज रूप में पहचाना जा सकता है। जो मनुष्य प्रभु के नाम-अमृत के सरोवर में स्नान करता है, उसके भीतर से तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है। यह उस महान प्रभु की ही महानता है कि वह जीव से गुरु के द्वारा अपना गुणगान कराता है ॥ ६ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ काइआ हंस किआ प्रीति है जि पइआ ही छडि जाइ। एसनो कूड़ु बोलि कि खवालीऐ जि चलदिआ नालि न जाइ। काइआ मिटी अंधु है पउणै पुछहु जाइ। हउ ता माइआ मोहिआ फिरि फिरि आवा जाइ। नानक हुकमु न जातो खसम का जि रहा सचि समाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ। इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ। इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले जाइ। पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ। धनु वापारी नानका जिन्हा नाम धनु खटिआ आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मेरा साहिबु अति वडा सचु गहिर गंभीरा। सभु जगु तिसकै वसि है सभु तिस का चीरा। गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा। किरपा ते हरि मनि वसै भेटै गुरु सूरा। गुण वंती सालाहिआ सदा थिरु निहचलु हरि पूरा ॥ ७ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ शरीर और आत्मा का प्रेम अस्थायी है, अन्तिम समय में गिरे हुए शरीर को छोड़कर आत्मा चली जाती है।

अन्तिम समय में प्रयाण के वक्त जब यह शरीर साथ नहीं जाता, तो इसे मिथ्या आचरणों द्वारा पालने का क्या लाभ ? शरीर तो मिट्टी है, ज्योति-हीन है; जीवात्मा को जो पूछो (तो उसका उत्तर यह है कि) मैं माया के मोह में फँसा पुनः जन्म-मरण में पड़ा रहा। हे नानक ! खेद है कि मैंने पति-प्रभु का हुक्म न पहचाना, जिसके प्रभाव से मैं सच्चे प्रभु में लीन रह सकता था ॥ १ ॥ म० ३ ॥ परमात्मा का नाम ही एक ऐसा धन है, जो शाश्वत है। दूसरे सांसारिक धन मिले और नष्ट हो गए, लेकिन इस धन की ओर कोई चोर आँख उठाकर देख नहीं सकता, कोई उचक्का इसे छीन नहीं सकता। परमात्मा का नाम रूपी यह धन आत्मा के साथ ही रहता है और आत्मा के साथ ही जाता है। यह धन पूर्णगुरु द्वारा मिलता है, स्वेच्छाचारी मनुष्य को यह धन नहीं मिलता। हे नानक ! वे वणजारे भाग्यशाली हैं, जिन्होंने जगत में आकर परमात्मा के नाम रूपी धन का अर्जन किया है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मेरा मालिक-प्रभु बहुत महान है, सत्यस्वरूप है, गहन-गम्भीर और धैर्यवान है, समस्त जगत उसके अधीन है। उस प्रभु का नाम-धन सत्यस्वरूप है, अटल है और गुरु की कृपा द्वारा मिलता है। प्रभु की कृपा द्वारा शूरवीर गुरु प्राप्त होता है और हरि का नाम मन में टिकता है। उस सत्यस्वरूप पूर्णप्रभु को केवल आध्यात्मिक गुण वालों ने ही सराहा है ॥ ७ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ ध्रिगु तिन्हा दा जीविआ जो हरि सुखु परहरि तिआगदे दुखु हउमै पाप कमाइ। मनमुख अगिआनी माइआ मोहि विआपे तिन्ह बूझ न काई पाइ। हलति पलति ओइ सुखु न पावहि अंति गए पछुताइ। गुर परसादी को नामु धिआए तिसु हउमै विचहु जाइ। नानक जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो गुर चरणी आइ पाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुखु ऊधा कउलु है ना तिसु भगति न नाउ। सकती अंदरि वरतदा कूड़ु तिस का है उपाउ। तिस का अंदरु चितु न भिजई मुखि फीका आलाउ। ओइ धरमि रलाए ना रलन्हि ओना अंदरि कूड़ु सुआउ। नानक करतै बणत बणाई मनमुख कूड़ु बोलि बोलि डुबे गुरमुखि तरे जपि हरि नाउ॥ २॥ पउड़ी॥ बिनु बूझे वडा फेरु पइआ फिरि आवै जाई। सतिगुर की सेवा न कीतीआ अंति गइआ पछुताई। आपणी किरपा करे गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाई। त्रिसना भुख विचहु उतरै सुखु वसै मनि आई। सदा सदा सालाहीऐ हिरदै लिव लाई ॥ ८ ॥

।। सलोकु महला ३ ।। उनके जीवन को धिक्कार है, जो परमात्मा के नाम का आनन्द सर्वथा त्याग देते हैं और अहंकारवश पाप करके दुख पाते हैं। ऐसे मनमुख स्वेच्छाचरण करते हैं और माया-मोह में जकड़े रहते हैं, उन्हें कोई समझ नहीं होती, उन्हें लोक-परलोक कहीं भी सुख नहीं मिलता, मृत्यु के समय भी वे पश्चाताप करते जाते हैं। जो मनुष्य गुरु-कृपा द्वारा प्रभु का नाम स्मरण करता है, उसके भीतर से अहंत्व मिट जाता है। हे नानक ! जिसके मस्तक पर प्रभु द्वारा सौभाग्य लिखा हो, वह मनुष्य सतिगुरु के चरणों में जगह पा लेता है ।। १ ।। म० ३ ।। स्वेच्छाचारी मनुष्य उलटे कमल के समान है, इसमें न भक्ति है न स्मरण, यह माया के प्रभाव में ही कार्य करता है। मिथ्या ही इसका जीवन-लक्ष्य है। स्वेच्छाचारी मनुष्य का हृदय संवेदनशील नहीं होता, मन तृप्त नहीं होता और मुँह से भी वह फीके बोल ही बोलता है। ऐसे व्यक्ति धर्म में प्रवृत्त नहीं होते, क्योंकि उनके भीतर मिथ्यापन और स्वार्थ-लिप्सा होते हैं। हे नानक ! कर्तार ने ऐसी रचना रची है कि स्वेच्छाचारी व्यक्ति तो मिथ्या बोल-बोलकर समाप्त-नष्ट हो जाते हैं और गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले नाम जपकर पार हो जाते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। (गुरु-कृपा द्वारा ही मनुष्य-जन्म की लक्ष्य-प्राप्ति सम्भव है), यह समझे बिना जन्म-मरण का लम्बा चक्र लगाना पड़ता है, व्यक्ति बार-बार जन्मता-मरता है। गुरु की सेवा नहीं करता और अन्त में पश्चाताप करता हुआ जाता है। जब प्रभु कृपा करता है तो गुरु से भेंट होती है, अन्तर्मन से अहंकार मिटता है, माया की तृष्णा-भूख दूर हो जाती है, मन में सुख का टिकाव होता है और जीव प्रभु में सुरति लगाकर हमेशा प्रभु के स्मरण में लीन हो सकता है ।। ८ ।।

।। सलोकु म० ३ ।। जि सतिगुरु सेवे आपणा तिसनो पूजे सभु कोइ। सभना उपावा सिरि उपाउ है हरिनामु परापति होइ। अंतरि सीतल साति वसै जपि हिरदै सदा सुखु होइ। अंम्रितु खाणा अंम्रितु पैनणा नानक नामु वडाई होइ ।। १ ।। ।। म० ३ ।। ए मन गुर की सिख सुणि हरि पावहि गुणी निधानु। हरि सुख दाता मनि वसै हउमै जाइ गुमानु। नानक नदरी पाईऐ ता अनदिनु लागै धिआनु ।। २ ।। पउड़ी ।। सतु संतोखु सभु सचु है गुरमुखि पविता। अंदरहु कपटु विकारु गइआ मनु सहजे जिता। तह जोति प्रगासु अनंद रसु अगिआनु गविता। अनदिनु हरि के गुण रवै गुण परगटु किता। सभना दाता एकु है इको हरि मिता ।। ९ ।।

॥ सलोकु महला ३ ॥ जो व्यक्ति गुरु के उपदेश का आचरण करता है, प्रत्येक व्यक्ति उसका आदर करता है। इसलिए सर्वोपरि उपाय यही है कि प्रभु का नाम प्राप्त हो जाए। नाम जपने से हृदय में हमेशा सुख अनुभव होता है, मन में शीतलता और शान्ति होती है। उसकी ख़ुराक और पोशाक केवल अमृत रूपी नाम ही होती है। हे नानक ! ऐसे प्राणी के लिए नाम ही आदर-सम्मान है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हे मेरे मन ! सतिगुरु का उपदेश सुन, तुझे गुणों के भण्डार स्वयं प्रभु मिल जाएँगे। सुखों के दाता प्रभु मन में बस जाएँगे और तेरा (अहंकार) अहंत्व समाप्त हो जायगा। हे नानक ! जब प्रभु की कृपादृष्टि से पहुँच मिलती है, तो प्रत्येक पल सुरति उसी में लगी रहती है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो मनुष्य गुरु का होकर रहता है वह पवित्र हो जाता है, उसे सत्य-सन्तोष प्राप्त होता है, उसे सर्वत्र प्रभु दिखता है, उसके अन्तर्मन से खोट और विकार दूर हो जाता है। वह सहज ही मन को नियन्त्रित कर लेता है। इस अवस्था में उसके भीतर परमात्म-ज्योति का प्रकाश हो जाता है। उसे आत्मिक आनन्द की ललक होती है और अज्ञान दूर हो जाता है। वह प्रतिपल परमात्मा के गुण गाता है, ईश्वरीय गुण उसके भीतर प्रकट हो जाते हैं; (वह यह समझ लेता है कि) एक प्रभु ही समस्त जीवों का दाता और मित्र है ॥ ९ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु कहीऐ जि अनदिनु हरि लिव लाए। सतिगुर पुछै सचु संजमु कमावै हउमै रोगु तिसु जाए। हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाए। इसु जुग महि को विरला ब्रहमगिआनी जि हउमै मेटि समाए। नानक तिसनो मिलिआ सदा सुखु पाईऐ जि अनदिनु हरिनामु धिआए ॥ १ ॥ म० ३ ॥ अंतरि कपटु मनमुख अगिआनी रसना झूठु बोलाइ। कपटि कीतै हरि पुरखु न भीजै नित वेखै सुणै सुभाइ। दूजै भाइ जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ। इतु कमाणै सदा दुखु पावै जंमै मरै फिरि आवै जाइ। सहसा मूलि न चुकई विचि विसटा पचै पचाइ। जिसनो क्रिपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ। हरि नामु धिआवै हरि नामो गावै हरि नामो अंति छडाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना हुकमु मनाइओनु ते पूरे संसारि। साहिबु सेवन्हि आपणा पूरै सबदि वीचारि। हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि।

हरि का महलु तिनी पाइआ जिन्ह हउमै विचहु मारि । नानक गुरमुखि मिलि रहे जपि हरि नामा उरधारि ।। १० ।।

।। सलोकु महला ३ ।। जो मनुष्य ब्रह्म को पहचानता है, जो प्रति पल परमात्मा में मन लगाता है, उसे ब्राह्मण कहना चाहिए । वह सतिगुरु के परामर्श-अनुसार आचरण करता है और सत्य रूपी संयम धारण करता है। (इस प्रकार) उसका अहंत्व रोग दूर हो जाता है । वह हरि के गुण गाता है और परमज्योति में अपनी आत्मा जोड़े रखता है । मनुष्य-जन्म में कोई विरला मनुष्य ही ब्रह्म को पहचानता है, वही अहंत्व दूर कर ब्रह्म में लीन रहता है । हे नानक ! जो प्रतिपल नाम-स्मरण करता है, उससे भेंट होने पर हमेशा सुख अनुभूत होता है ।। १ ।। म० ३ ।। स्वेच्छाचारी मनुष्य मनमुख है, उसके अन्तर्मन में खोट है, वह जिह्वा द्वारा मिथ्याभाषण करता है, (लेकिन) इस प्रकार धोखेबाज़ी से प्रभु प्रसन्न नहीं होता । वह स्वयं ही सब कुछ देखता है और सुनता है । मनमुख स्वयं तो माया-मोह में डूबा रहता है, लेकिन लोगों को उपदेश देता है । इस कुकर्म से वह सदा दुख पाता है, जन्मता-मरता है, उसका भीतरी भय समाप्त नहीं होता । वह मानो, गन्दगी में पड़ा सड़ता रहता है । लेकिन जिस मनुष्य पर मेरा प्रभु कृपा करता है, उसे गुरु का उपदेश प्राप्त होता है । वह मनुष्य प्रभु का नाम स्मरण करता है, नाम का गुणगान करता है और नाम ही आख़िर में उसे मुक्त कराता है ।। २ ।। पउड़ी ।। वे मनुष्य सर्वगुणसम्पन्न हैं, जिनसे प्रभु अपना हुक्म मनवाता है, वे मनुष्य पूर्णगुरु के ज्ञान में प्रवृत्त होकर अपने प्रभु की वन्दना करते हैं । प्रभु की वन्दना हो ही तब सकती है, जब (गुरु के द्वारा दिए गए) पवित्र ज्ञान में संलग्न हुआ जाए । जो मनुष्य भीतर से अहंत्व मिटाते हैं, उन्हें परमात्मा की सेवा प्राप्त होती है । हे नानक ! गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले व्यक्ति परमात्मा का नाम हृदय में पिरोकर परमात्मा में लीन रहते हैं ।। १० ।।

।। सलोकु म० ३ ।। गुरमुखि धिआन सहज धुनि उपजै सचि नामि चितु लाइआ । गुरमुखि अनदिनु रहै रंगि राता हरि का नामु मनि भाइआ । गुरमुखि हरि वेखहि गुरमुखि हरि बोलहि गुरमुखि हरि सहजि रंगु लाइआ । नानक गुरमुखि गिआनु परापति होवै तिमर अगिआनु अधेरु चुकाइआ । जिसनो करमु होवै धुरि पूरा तिनि गुरमुखि हरिनामु धिआइआ ।। १ ।। ।। म० ३ ।। सतिगुरु जिना न सेविओ सबदि न लगो पिआरु । सहजे नामु न धिआइआ कितु आइआ संसारि । फिरि फिरि

जूनी पाईऐ विसटा सदा खुआरु। कूड़ै लालचि लगिआ ना उरवारु न पारु। नानक गुरमुखि उबरे जि आपि मेले करतारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भगत सचै दरि सोहदे सचै सबदि रहाए। हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाए। हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते रसना हरि रसु पिआए। सफलु जनमु जिन्ही गुरमुखि जाता हरि जीउ रिदै वसाए। बाझु गुरू फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआए ॥ ११ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहता है, उसके भीतर सुरति और टिकाव की सहज ध्वनि होने लगती है, वह सच्चे नाम में मन लगाए रखता है और प्रतिपल प्रभु का नाम उसे मन में मीठा लगता है। गुरमुख व्यक्ति तो सर्वत्र प्रभु को ही देखते हैं, प्रभु की ही गुण-स्तुति में लगे रहते हैं और ईश्वरीय मेल वाली स्थिरता में लगाव रखते हैं। हे नानक ! गुरमुख को ही ज्ञान प्राप्त होता है, उसका अज्ञान रूपी घोर अन्धकार दूर हो जाता है; उसी गुरमुख व्यक्ति ने नाम-स्मरण किया है, जिस पर प्रभु की कृपा हुई है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिन मनुष्यों ने गुरु का हुक्म नहीं माना, जिनका प्रेम गुरु के उपदेश में नहीं बना, जिन्होंने शान्तचित्त होकर नाम-स्मरण नहीं किया, वे जगत में किसलिए आए ? ऐसा व्यक्ति बार-बार योनियों में पड़ता है। वह मानो गन्दगी में पड़कर दुखी हो रहा है। (गुरु और प्रभु को विस्मृत कर) जीव मिथ्या लोभ में फँसा रहता है (लेकिन इस लोभ का) ओर-छोर प्राप्त नहीं होता। हे नानक ! जिन गुरमुखों को कर्तार ने आप अपने साथ लगाया है, वही मनुष्य इस मोह-समुद्र से बचकर निकलते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रार्थना करनेवाले सच्चे व्यक्ति प्रभु की सेवा में शोभा पाते हैं, वे सच्चे ज्ञान के द्वारा प्रभु की सेवा में टिके रहते हैं, उनके भीतर प्रभु का प्रेम पैदा होता है। प्रभु के प्रेम में खिंचे वे हमेशा प्रभु-प्रेम में (ही) लीन रहते हैं, प्रभु के प्रेम में अनुरक्त होकर जिह्वा द्वारा प्रभु का नाम-रस पान करते रहते हैं। जिन्होंने गुरु के सान्निध्य में रहकर परमात्मा को पहचाना है और हृदय में बसाया है, उनका जन्मना सफल है। गुरु के बिना दुनिया अन्य सांसारिक आकर्षणों में फँस, पथभ्रष्ट हो दुखी हुई फिरती है ॥ ११ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ हरि उतम पदु पाइआ। सतिगुर सेवि हरिनामु मनि वसाइआ अनदिनु नामु धिआइआ। विचे ग्रिह गुर बचनि उदासी हउमै मोहु जलाइआ। आपि तरिआ कुल जगतु

तराइआ धंनु जणेदी माइआ। ऐसा सतिगुरु सोई पाए जिसु धुरि मसतकि हरि लिखि पाइआ। जन नानक बलिहारी गुर आपणे विटहु जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ॥ १॥ ॥ म० ३॥ त्रै गुण माइआ वेखि भुले जिउ देखि दीपकि पतंग पचाइआ। पंडित भुलि भुलि माइआ वेखहि दिखा किनै किहु आणि चड़ाइआ। दूजै भाइ पड़हि नित बिखिआ नावहु दयि खुआइआ। जोगी जंगम संनिआसी भुले ओन्हा अहंकारु बहु गरबु वधाइआ। छादनु भोजनु न लैही सत भिखिआ मन हठि जनमु गवाइआ। एतड़िआ विचहु सो जनु समधा जिनि गुरमुखि नामु धिआइआ। जन नानक किसनो आखि सुणाईऐ जा करदे सभि कराइआ॥ २॥ पउड़ी॥ माइआ मोहु परेतु है कामु क्रोधु अहंकारा। एह जमकी सिरकार है एन्हा उपरि जम का डंडु करारा। मनमुख जम मगि पाईअन्हि जिन्ह दूजा भाउ पिआरा। जमपुरि बधे मारीअनि को सुणै न पूकारा। जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै गुरमुखि निसतारा॥ १२॥

॥ सलोकु महला ३॥ इस कलह से परिपूर्ण विश्व में परमात्मा का नाम ही (सच्चा) भण्डार है; जिसने प्रार्थना के द्वारा यह पा लिया है, उसने प्रभु रूपी उच्चस्थिति प्राप्त कर ली है। गुरु के आदेश को स्वीकार कर उसने प्रभु का नाम हृदय में बसाया है और प्रतिपल नाम-स्मरण किया है। सतिगुरु की शिक्षा का अनुसरण कर वह गृहस्थ में भी उदासी है क्योंकि उसने अहंत्व तथा मोह जला दिया है। वह (सांसारिक झंझटों से) आप पार हो गया है और समस्त जगत को भी पार कराता है। उसे जन्म देनेवाली माँ धन्य है। ऐसे गुरु की प्राप्ति उस प्राणी को होती है, जिनके मस्तक पर स्वयं कर्तार ने (प्रार्थना करने का लेख) लिखा है। दास नानक का कथन है कि मैं अपने गुरु पर बलिहारी हूँ, जिसने भ्रम में भटके हुए को सन्मार्ग दिखाया है॥ १॥ म० ३॥ समस्त जीव त्रिगुणात्मक माया को देखकर पथभ्रष्ट हो रहे हैं, जैसे पतंगे दीपक को देखकर उस पर जल मरते हैं। पण्डित (कथा-पाठ करते हुए भी) बार-बार पथविचलित होकर माया की ओर देखते हैं कि किसी ने कुछ भेंट लाकर रखी है (अथवा नहीं), इसलिए माया-मोह के परिणामस्वरूप वे सदा माया ही पढ़ते हैं, परमात्मा ने उन्हें अपने नाम से विच्छिन्न कर दिया है। योगी, यती और संन्यासी (वीतरागी होकर भी) पथभ्रष्ट हैं। उन्होंने व्यर्थ ही अहंत्व, अभिमान बढ़ाया हुआ है। गृहस्थियों से आदरपूर्वक मिला कपड़ा और भोजन रूपी भिक्षा नहीं

लेते अर्थात् उसे थोड़ी समझकर अस्वीकृत कर देते हैं, (इसलिए) इन्होंने भी दुराग्रह करके अपनी ज़िन्दगी व्यर्थ गवाँ दी है। इन सब प्राणियों में वह प्राणी पूर्ण अवस्था वाला है, जिसने सान्निध्य में रहकर नाम स्मरण किया है। पर, हे दास! (माया से बचाव के लिए) किसके समक्ष प्रार्थना करें? सब प्रभु द्वारा प्रेरित होकर ही कार्य कर रहे हैं (इसलिए प्रभु-प्रार्थना ही इस पक्ष में बचाव का माध्यम है) ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माया का मोह, काम, क्रोध और अहंकार भूत हैं। ये सब यमराज की प्रजा हैं, इन पर यमराज का आदेश चलता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य जिन्हें माया का प्रेम मीठा लगता है, यमराज के मार्ग पर पाए जाते हैं अर्थात् यमराज की प्रजा के अधीन हो जाते हैं। वे मनमुख यमपुरी में बँधे हुए मारे जाते हैं, कोई भी उनकी पुकार नहीं सुनता (अर्थात् कोई उनकी रक्षा नहीं कर सकता)। जिस मनुष्य पर प्रभु स्वयं कृपा करे, उसे गुरु मिलता है; गुरु के द्वारा इन्हें भूतों से छुटकारा होता है ॥ १२ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो गई खाइ । जो मोहि दूजै चितु लाइदे तिना विआपि रही लपटाइ । गुर कै सबदि परजालीऐ ता एह विचहु जाइ । तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ । नानक माइआ का मारणु हरिनामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इहु मनु केतड़िआ जुग भरमिआ थिरु रहै न आवै जाइ । हरि भाणा ता भरमाइअनु करि परपंचु खेलु उपाइ । जा हरि बखसे ता गुर मिलै असथिरु रहै समाइ । नानक मन ही ते मनु मानिआ ना किछु मरै न जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ काइआ कोटु अपारु है मिलणा संजोगी । काइआ अंदरि आपि वसि रहिआ आपे रस भोगी । आपि अतीतु अलिपतु है निरजोगु हरि जोगी । जो तिसु भावै सो करे हरि करे सु होगी । हरि गुरमुखि नामु धिआईऐ लहि जाहि विजोगी ॥ १३ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ अहंत्व एवं ममत्व (वाली माया) चुड़ैल है, जो स्वेच्छाचारियों का भक्षण कर जाती है। जो मनुष्य दूसरों के मोह में मन लगाते हैं, उन्हें चिपटकर माया अपने वश में कर लेती है। यदि गुरु के ज्ञान द्वारा इसे भली प्रकार जलाएँ, तभी यह भीतर से निकलती है। शरीर और मन स्वच्छ हो जाता है और प्रभु का नाम मन में आ बसता है। हे नानक! इस माया की मारक बूटी (राम-बाण इलाज) एक मात्र हरि-नाम ही है, जो गुरु से ही प्राप्त हो सकता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ यह

मन कई युग भटकता रहता है, निश्चिन्त नहीं होता और जन्मता-मरता रहता है; लेकिन यह बात प्रभु से ही होती है क्योंकि उसी ने यह ठगने वाला खेल बनाकर जीवों को इसमें भटकाया हुआ है। जब प्रभु कृपा करता है, तब गुरु मिलता है और फिर यह मन प्रभु में लीन होकर स्थिर रहता है। हे नानक ! मन (इस प्रकार) प्रभु के नाम में विश्वस्त हो जाता है; तदन्तर इसका न कुछ मरता है, न जन्मता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनुष्य-शरीर एक बड़ा किला है, जो मनुष्य को सौभाग्यवश प्राप्त होता है। इस शरीर में प्रभु आप विद्यमान है और रस भोग रहा है। कहीं योगीप्रभु विरक्त है, माया से निर्लिप्त और तटस्थ है। जो उसे भला लगता है, वही करता है। जो कुछ प्रभु करता है, वही होता है। यदि गुरु के सान्निध्य में रहकर प्रभु का नाम स्मरण करें, तो समस्त बिछोह दूर हो जाते हैं ॥ १३ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ वाहु वाहु आपि अखाइदा गुर सबदी सचु सोइ। वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ। वाहु वाहु बाणी सचु है सचि मिलावा होइ। नानक वाहु वाहु करतिआ प्रभु पाइआ करमि परापति होइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ वाहु वाहु करती रसना सबदि सुहाई। पूरै सबदि प्रभु मिलिआ आई। वडभागीआ वाहु वाहु मुहहु कढाई। वाहु वाहु करहि सेई जन सोहणे तिन्ह कउ परजा पूजण आई। वाहु वाहु करमि परापति होवै नानक दरि सचै सोभा पाई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बजर कपाट काइआ गढ़ भीतरि कूड़ु कुसतु अभिमानी। भरमि भूले नदरि न आवनी मनमुख अंध अगिआनी। उपाइ कितै न लभनी करि भेख थके भेखवानी। गुरसबदी खोलाईअन्हि हरिनामु जपानी। हरि जीउ अंम्रित बिरखु है जिन पीआ ते त्रिपतानी ॥ १४ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ कोई गुरमुख व्यक्ति ही समझता है कि 'वाह-वाह' करना परमात्मा की गुणस्तुति है। वह सच्चा प्रभु आप ही सतिगुरु के ज्ञान द्वारा प्राणी से 'वाह-वाह' कहलाता है। परमात्मा की गुणस्तुति की वाणी परमात्मा का रूप है, इसके द्वारा परमात्मा से मिलाप होता है। हे नानक ! गुणस्तुति करने से प्रभु मिल जाता है, लेकिन वह भी प्रभु-कृपा द्वारा मिलती है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुरु के ज्ञान द्वारा 'वाह-वाह' कहती जिह्वा सुन्दर लगती है, प्रभु गुरु के पूर्णज्ञान द्वारा ही मिलता है। सौभाग्यशालियों के मुख से प्रभु 'वाह-वाह' कहलाता है, जो मनुष्य 'वाह-वाह' करते हैं, वे सुशोभित होते हैं और सारी दुनिया उनके चरण

स्पर्श करने के लिए आती है। हे नानक ! प्रभु की कृपा द्वारा ही प्रभु की गुणस्तुति होती है और उसके सच्चे दरबार में शोभा मिलती है ।। २ ।। पउड़ी ।। अहंकारी मनुष्यों के शरीर रूपी किले में मिथ्या और असत्य रूपी कड़े फ़ाटक लगे हुए हैं, लेकिन अन्धे और अज्ञानी मनमुखों को भ्रम में भटके होने के कारण दिखाई नहीं देते। (अलग-अलग वेश धारण करनेवाले) आडम्बर रचानेवाले लोग थक गए हैं, उन्हें किसी भी उपाय से ये फ़ाटक दिखाई नहीं दिए; (लेकिन) जो मनुष्य हरि का नाम जपते हैं, उनके कपाट सतिगुरु के ज्ञान के प्रभाव द्वारा खुलते हैं। प्रभु का नाम अमृत-वृक्ष है, जिन्होंने उसका फल पान किया है, वे तृप्त हो गए हैं ।। १४ ।।

।। सलोकु म० ३ ।। वाहु वाहु करतिआ रैणि सुखि विहाइ। वाहु वाहु करतिआ सदा अनंदु होवै मेरी माइ। वाहु वाहु करतिआ हरि सिउ लिव लाइ। वाहु वाहु करमी बोलै बोलाइ। वाहु वाहु करतिआ सोभा पाइ। नानक वाहु वाहु सति रजाइ ।। १ ।। म० ३ ।। वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि। वाहु वाहु सबदे उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि। वाहु वाहु करतिआ हरि पाइआ सहजे गुरमुखि भालि। से वडभागी नानका हरि हरि रिदै समालि ।।२।। पउड़ी ।। ए मना अति लोभीआ नित लोभे राता। माइआ मनसा मोहणी दहदिस फिराता। अगै नाउ जाति न जाइसी मनमुखि दुखु खाता। रसना हरिरसु न चखिओ फीका बोलाता। जिना गुरमुखि अंम्रितु चाखिआ से जन त्रिपताता ।। १५ ।।

।। सलोकु महला ३ ।। हे मेरी माँ ! प्रभु की गुणस्तुति द्वारा (जीवन रूपी) रात्रि सुखपूर्वक बीत जाती है और सदा आनन्द बना रहता है। प्रभु की गुणस्तुति करते हुए प्रभु में सुरति लगी रहती है, लेकिन कोई विरला मनुष्य प्रभु की कृपा द्वारा प्रभु से प्रेरित होकर 'वाह-वाह' की वाणी उच्चरित करता है। प्रभु की गुणस्तुति करते हुए शोभा मिलती है। हे नानक ! यह गुणस्तुति ही (मनुष्य को) प्रभु की रज़ा में विश्वस्त करती है ।। १ ।। म० ३ ।। प्रभु की गुणस्तुति की वाणी प्रभु (रूप ही) है, जो मनुष्य सतिगुरु के सान्निध्य में हैं, उसने इसे खोज लिया है। गुरु के ज्ञान द्वारा वह 'वाह-वाह' कहता है और उसे हृदय में सँजोकर रखता है। गुरमुखों ने स्वतः ही खोज करके, प्रभु की गुणस्तुति करते हुए प्रभु को प्राप्त कर लिया है। हे नानक ! वे मनुष्य भाग्यवान हैं, जो प्रभु के

नाम को हृदय में स्मरण करते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे मनमुख ! प्रभु के दरबार में बड़ा नाम और कुलीनता साथ नहीं जाएँगे । (वहाँ तू) दुख पाएगा, तूने जिह्वा द्वारा प्रभु के नाम का आस्वादन नहीं किया और फीका ही बोलता है । हे हमेशा लोभ में डूबे महालोभी मन ! मोहक माया के चाह के फलस्वरूप तू चारों दिशाओं में दौड़ता फिरता है । जिन मनुष्यों ने गुरु के सान्निध्य में रहकर नाम रूपी अमृत का आस्वादन किया है, वे तृप्त हो गए हैं ॥ १५ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ वाहु वाहु तिसनो आखीऐ जि सचा गहिर गंभीरु । वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि गुणदाता मति धीरु । वाहु वाहु तिसनो आखीऐ जि सभ महि रहिआ समाइ । वाहु वाहु तिसनो आखीऐ जि देदा रिजकु सबाहि । नानक वाहु वाहु इको करि सालाहीऐ जि सतिगुर दीआ दिखाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ वाहु वाहु गुरमुख सदा करहि मनमुख मरहि बिखु खाइ । ओना वाहु वाहु न भावई दुखे दुखि विहाइ । गुरमुखि अंम्रितु पीवणा वाहु वाहु करहि लिवलाइ । नानक वाहु वाहु करहि से जन निरमले त्रिभवण सोझी पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि कै भाणै गुरु मिलै सेवा भगति बनीजै । हरि कै भाणै हरि मनि वसै सहजे रसु पीजै । हरि कै भाणै सुखु पाईऐ हरि लाहा नित लीजै । हरि कै तखति बहालीऐ निज घरि सदा वसीजै । हरि का भाणा तिनी मंनिआ जिना गुरू मिलीजै ॥ १६ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जो प्रभु सत्यस्वरूप और गहन-गम्भीर है, गुणदाता और स्थिर बुद्धि वाला है; जो सारे जीवों में व्यापक है और सबको भोजन देता है, उसकी गुणस्तुति करनी चाहिए । हे नानक ! उसे अद्वितीय जानकर उसकी प्रशंसा करें, उसका दर्शन सतिगुरु ही कराता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहते हैं, वे सदा प्रभु की गुणस्तुति करते हैं; लेकिन स्वेच्छाचारी मनुष्य माया रूपी विष खाकर मरते हैं । उन्हें प्रभु की गुणस्तुति भली नहीं लगती, इसलिए उनकी सारी उम्र दुख में ही बीतती है । गुरमुखों का जलपान ही नाम-अमृत है, वे (प्रभु के नाम-स्मरण में) सुरति जोड़कर गुणगान करते हैं । हे नानक ! जो मनुष्य प्रभु की गुणस्तुति करते हैं, वे पवित्र हो जाते हैं, उन्हें तीनों लोकों में व्यापक प्रभु की समझ हो जाती है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ यदि प्रभु की रज़ा हो तो गुरु की प्राप्ति होती है और उसके लिए प्रभु-स्मरण तथा भक्ति बनती है । प्रभु मन में टिक जाता है और स्थिर अवस्था में

नाम-रस का पान करता है, आत्मा को सुख मिलता है, (जीव-व्यापारी को) सदा नाम रूपी लाभ प्राप्त होता है। जिन मनुष्यों को सतिगुरु मिलता है, वे मनुष्य परमात्मा की रज़ा को स्वीकारते हैं ॥ १६ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ वाहु वाहु से जन सदा करहि जिन्ह कउ आपे देइ बुझाइ। वाहु वाहु करतिआ मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ। वाहु वाहु गुरसिखु जो नित करे सो मन चिंदिआ फलु पाइ। वाहु वाहु करहि से जन सोहणे हरि तिन्ह कै संगि मिलाइ। वाहु वाहु हिरदै उचरा मुखहु भी वाहु वाहु करेउ। नानक वाहु वाहु जो करहि हउ तनु मनु तिन्ह कउ देउ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ वाहु वाहु साहिबु सचु है अंम्रितु जाका नाउ। जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ हउ तिन बलिहारै जाउ। वाहु वाहु गुणी निधानु है जिसनो देइ सु खाइ। वाहु वाहु जलि थलि भरपूरु है गुरमुखि पाइआ जाइ। वाहु वाहु गुरसिख नित सभ करहु गुर पूरे वाहु वाहु भावै। नानक वाहु वाहु जो मनि चिति करे तिसु जम कंकरु नेड़ि न आवै ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी। सतिगुर ते सचु पछाणीऐ सचि सहजि समाणी। अनदिनु जागहि ना सवहि जागत रैणि विहाणी। गुरमती हरि रसु चाखिआ से पुंन पराणी। बिनु गुर किनै न पाइओ पचि मुए अजाणी ॥ १७ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जिन्हें प्रभु बुद्धिमान समझता है, वे सदा उस प्रभु की गुणस्तुति करते हैं। प्रभु की गुणस्तुति से मन पवित्र होता है और मन से अहंभावना दूर होती है। जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहकर प्रभु की गुणस्तुति करता है, उसे मनोवांछित फल मिलता है। जो मनुष्य गुणस्तुति करते हैं, वे सुन्दर लगते हैं। हे प्रभु ! मुझे उनकी संगति में रख, ताकि मैं अपने हृदय में तुम्हारी गुणस्तुति करूँ और मुख से भी तुम्हारा गुणगान करूँ। हे नानक ! जो मनुष्य प्रभु की गुणस्तुति करते हैं, मैं अपना तन-मन उनके समक्ष न्यौछावर कर दूँ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिस मालिक-प्रभु का नाम आत्मिक जीवन का दाता है, उसकी गुणस्तुति उसी सत्यस्वरूप प्रभु का स्वरूप है। जिस-जिस मनुष्य ने प्रभु का स्मरण किया है, उस-उस मनुष्य ने नाम-फल प्राप्त कर लिया है, मैं ऐसे गुरमुखों पर बलिहारी हूँ। गुणों के भण्डार प्रभु की गुणस्तुति उस प्रभु का ही रूप है। प्रभु जिसे यह ख़ज़ाना देता है, वही इसे प्रयुक्त करता है। गुणस्तुति

का स्वामी-प्रभु पानी, पृथ्वी पर सर्वत्र व्यापक है; गुरु द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलने से वह प्रभु मिलता है। हे गुरमुखो! सब प्रभु के गुण गाओ, सतिगुरु को प्रभु की गुणस्तुति प्रिय लगती है। हे नानक! जो मनुष्य एकाग्रचित्त होकर प्रभु का गुणस्तवन करता है, उसे मृत्यु का भय स्पर्श नहीं कर सकता ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु सत्यस्वरूप है, गुरु की वाणी उस सत्यस्वरूप प्रभु की स्तुति में है, गुरु द्वारा ही उस प्रभु से जान-पहचान होती है और सत्य स्थिर अवस्था में टिका जा सकता है। वे मनुष्य भाग्यशाली हैं, जिन्होंने गुरु का परामर्श स्वीकार कर प्रभु का नाम-रस चखा है। वे प्रत्येक क्षण जाग्रत रहते हैं, कभी (माया-मोह में) नहीं सोते, उनकी ज़िन्दगी रूपी तमाम रात्रि सचेत रहकर बीतती है। लेकिन गुरु का शरणागत हुए बिना किसी को प्रभु नहीं मिला, मूर्ख लोग (व्यर्थ ही) खप-खपकर दुखी होते हैं ॥ १७ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ। वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ। वाहु वाहु वेपरवाहु है वाहु वाहु करे सु होइ। वाहु वाहु अंम्रित नामु है गुरमुखि पावै कोइ। वाहु वाहु करमी पाईऐ आपि दइआ करि देइ। नानक वाहु वाहु गुरमुखि पाईऐ अनदिनु नामु लएइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे साति न आवई दूजी नाही जाइ। जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमै न पाइआ जाइ। जिन्हा अंतरि लोभ विकारु है दूजै भाइ खुआइ। जंमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ। जिन्हा सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि। तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि। नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ढाढी तिसनो आखीऐ जि खसमै धरे पिआरु। दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु। ढाढी दरु घरु पाइसी सचु रखै उरधारि। ढाढी का महलु अगला हरि कै नाइ पिआरि। ढाढी की सेवा चाकरी हरि जपि हरि निसतारि ॥ १८ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जो प्रभु निराकार, अप्रतिम, अगम्य, गहन-गम्भीर और स्वाधीन है, जिसका किया हुआ ही सब कुछ हो रहा है, उसकी गुणस्तुति उसी का रूप है। उसका नाम जीवों को आत्मिक जीवन देनेवाला है, लेकिन उसकी प्राप्ति किसी गुरमुख को ही होती है। गुणस्तुति की देन भाग्यवश ही मिलती है, जिसे कृपा करके प्रभु आप ही

देता है। हे नानक ! जो मनुष्य गुरु के आदेश का पालन करता है, उसे गुणस्तुति की देन मिलती है, वह प्रतिपल प्रभु का नाम जपता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरु की सेवा किए बिना शान्ति नहीं मिलती। सतिगुरु के अतिरिक्त शान्तिदायक दूसरा कोई स्थान नहीं। चाहे कितनी ही आकांक्षा करें, प्रभु-कृपा के बिना उसकी प्राप्ति नहीं होती। जिन मनुष्यों के हृदय में लोभ का अवगुण है, वे माया-मोह में भटके हुए हैं। उनका जन्मना-मरना समाप्त नहीं होता, वे अहंकारवश दुख उठाते हैं। जिन मनुष्यों ने सतिगुरु में अपना मन लगाया है, उनमें से प्रभु-मिलाप के बग़ैर कोई नहीं रहा। न उन्हें यमराज का बुलावा आता है और न वे दुख सहते हैं। हे नानक ! जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहे हैं, वे दुखों से बच गए हैं और सच्चे शब्द में लीन रहते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो मनुष्य अपने मालिक-प्रभु के साथ प्रेम करता है, वही प्रभु का भाट कहलवा सकता है। वह मनुष्य प्रभु की सेवा में रहकर उसका स्मरण करता है और गुरु के शब्द द्वारा उस प्रभु के गुणों का चिन्तन करता है। ज्यों-ज्यों वह प्रभु का स्मरण करता है, (उसी रूप में) वह प्रभु के चरणों में जगह पा लेता है। प्रभु के नाम में अनुरक्त होने से उसके मन की अवस्था बहुत ऊँची हो जाती है। बस, वह भाट यही सेवा करता है, यही नौकरी करता है कि वह प्रभु का नाम स्मरण करता है और प्रभु उसे संसार-समुद्र से पार उतार देता है ॥ १८ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ गूजरी जाति गवारि जा सहु पाए आपणा। गुर कै सबदि बीचारि अनदिनु हरि जपु जापणा। जिसु सतिगुरु मिलै तिसु भउ पवै सा कुलवंती नारि। सा हुकमु पछाणै कंत का जिसनो क्रिपा कीती करतारि। ओह कुचजी कुलखणी परहरि छोडी भतारि। भै पइऐ मलु कटीऐ निरमल होवै सरीरु। अंतरि परगासु मति ऊतम होवै हरि जपि गुणी गहीरु। भै विचि बैसै भै रहै भै विचि कमावै कार। ऐथै सुखु वडिआईआ दरगह मोख दुआर। भै ते निरभउ पाईऐ मिलि जोती जोति अपार। नानक खसमै भावै सा भली जिसनो आपे बखसे करतारु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सदा सदा सालाहीऐ सचे कउ बलि जाउ। नानक एकु छोडि दूजै लगै सा जिहवा जलि जाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंसा अउतारु उपाइओनु भाउ दूजा कीआ। जिउ राजे राजु कमावदे दुख सुख भिड़ीआ। ईसरु ब्रहमा सेवदे अंतु तिन्ही न लहीआ। निरभउ निरंकारु अलखु है

गुरमुखि प्रगटीआ। तिथै सोगु विजोगु न विआपई असथिरु जगि थीआ ॥ १९ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ गँवारिन गूजरी कुलीना हो गई, जब उसने अपना पति प्राप्त कर लिया। (उसी प्रकार) वह जीव-स्त्री कुलीना हो जाती है, जो सतिगुरु के उपदेश द्वारा सोच-विचारकर प्रतिदिन प्रभु का स्मरण करती है। जिसे गुरु मिल जाता है, उसके भीतर ईश्वर-भय पैदा हो जाता है और वह पति-प्रभु का हुक्म समझ लेती है। (पर ऐसा वही जीव-स्त्री करती है), जिस पर प्रभु ने आप कृपा की हो। जिस स्त्री को पति ने परित्यक्त कर दिया हो, वह स्त्री मूर्ख और खोटे लक्षणों वाली होती है। यदि हृदय में प्रभु का भय आ बसे, तो मन का मैल काटा जाता है, शरीर भी पवित्र हो जाता है; गुणों के भण्डार परमात्मा का स्मरण करके भीतर प्रकाश हो जाता है और बुद्धि शुद्ध हो जाती है। ऐसी जीव-स्त्री ईश्वर के भय में बैठती है, भय में रहती है, भय में ही कामकाज करती है। उसे इस जीवन में आदर तथा सुख मिलता है और प्रभु की सेवा का द्वार उसके लिए खुल जाता है। अनन्त प्रभु की ज्योति में आत्मा जोड़ने से और उसके भय में रहने से वह निर्भय प्रभु मिल जाता है। लेकिन, हे नानक ! जिस पर कर्तार आप कृपा करे, वही जीव-स्त्री पति-प्रभु को प्रिय लगती है और वही श्रेष्ठ है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सत्यस्वरूप प्रभु की ही सदा गुणस्तुति करनी चाहिए। मैं उस प्रभु पर बलिहारी हूँ; लेकिन, हे नानक ! वह जिह्वा जल जाए, जो एक प्रभु को छोड़कर किसी और की (पूजा) में लगे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ देवता आदि का जन्म प्रभु ने आप ही किया और माया का मोह भी आप ही बनाया। देवता भी राजाओं के तुल्य राज्य करते रहे और दुखों-सुखों के लिए लड़ते रहे। ब्रह्मा और शिव (प्रभु) का स्मरण करते रहे, पर उनको भी भेद न प्राप्त हो सका। प्रभु निर्भय, निराकार और अलक्ष्य है। वह गुरमुख के भीतर प्रकट होता है, गुरमुख अवस्था में चिन्ता और विछोह दबाव नहीं डाल सकते। गुरमुख जगत में निर्लिप्त रहता है ॥ १९ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ एहु सभु किछु आवणजाणु है जेता है आकारु। जिनि एहु लेखा लिखिआ सो होआ परवाणु। नानक जे को आपु गणाइदा सो मूरखु गावारु ॥१॥ म० ३ ॥ मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा जह खिचे तह जाइ। नानक हसती कुंडे बाहरा फिरि फिरि उझड़ि पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसु अगै अरदासि जिनि उपाइआ। सतिगुरु अपणा सेवि सभ फल पाइआ। अंम्रित हरि का नाउ सदा धिआइआ। संत जना

कै संगि दुखु मिटाइआ । नानक भए अचिंतु हरि धनु निहचलाइआ ॥ २० ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जितना यह गोचर जगत है, सब आने-जानेवाला है । जिस मनुष्य ने यह बात समझ ली, वह सम्मानित होता है । लेकिन, हे नानक ! जो अपने आप को बड़ा कहलवाता है, वह मूर्ख है, गँवार है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मन हाथी है (यदि) गुरु महावत बने और गुरु की शिक्षा इस पर अंकुश होवे, तो यह मन उस ओर जाता है, जिस ओर गुरु प्रेरित करता है । पर, हे नानक ! अंकुश के बिना हाथी बार-बार कुमार्गगामी होता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस प्रभु ने द्वैत-भाव पैदा किया है, यदि उसकी सेवा में प्रार्थना करें, यदि उसके आदेश का पालन करें, तो समस्त फल मिल जाते हैं । हमेशा प्रभु का नाम-अमृत स्मरण किया जा सकता है, गुरमुखों की संगति में रहकर दुख मिटाया जा सकता है और, हे नानक ! अनश्वर नाम-धन पाकर निश्चिन्त हुआ जा सकता है ॥ २० ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ खेति मिआला उचीआ घरु उचा निरणउ । महल भगती घरि सरै सजण पाहुणिअउ । बरसना त बरसु घना बहुड़ि बरसहि काहि । नानक तिन्ह बलिहारणै जिन्ह गुरमुखि पाइआ मन माहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मिठा सो जो भावदा सजणु सो जि रासि । नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा सांई । तू रखवाला सदा सदा हउ तुधु धिआई । जीअ जंत सभि तेरिआ तू रहिआ समाई । जो दास तेरे की निंदा करे तिसु मारि पचाई । चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई ॥ २१ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ बादल देखकर (किसान) खेती में मेंड़ ऊँची कर देता है (और पानी खेती में टिक जाता है), वैसे ही जिस जीव-स्त्री के हृदय में भक्ति (का प्रवाह) उभरता है, वहाँ प्रभु मेहमान बनकर आता है । हे मेघ रूपी सतिगुरु ! यदि वर्षा करनी है, तो (नाम की) वर्षा करो । (उम्र समाप्त होने पर) फिर वर्षा का उपयोग क्या होगा ? हे नानक ! मैं उन पर बलिहारी हूँ, जिन्होंने गुरु के द्वारा प्रभु को हृदय में पा लिया है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ प्रिय पदार्थ वह है जो हमेशा भला लगता रहे, मित्र वह है जिससे हमेशा मधुर सम्बन्ध बने रहे । हे नानक ! जिसके भीतर प्रभु आप प्रकाश करे, उसे गुरु के द्वारा यह समझ होती

है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु के सेवक की प्रार्थना प्रभु की सेवा में इस प्रकार है कि हे प्रभु ! तुम सत्यस्वरूप हो, तुम सदा ही रक्षक हो, मैं तुम्हें स्मरण करता हूँ, सब जीव-जन्तु तुम्हारे हैं, तुम सबमें मौजूद हो। जो मनुष्य तुम्हारे भक्त की निन्दा करता है, तुम उसे (आत्मिक मृत्यु) देकर दुखी करते हो। हे नानक ! तू भी प्रभु के चरण स्पर्श कर और चिन्ता-रहित होकर निश्चिन्त रह ॥ २१ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ आसा करता जगु मुआ आसा मरै न जाइ । नानक आसा पूरीआ सचे सिउ चितु लाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ आसा मनसा मरि जाइसी जिनि कीती सो लै जाइ । नानक निहचलु को नही बाझहु हरि कै नाइ ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइओनु करि पूरा थाटु । आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु । आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु । आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु । जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख काटु ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु

॥ सलोक महला ३ ॥ जगत सांसारिक लालसाओं में प्रवृत्त होकर अर्थात् इच्छाएँ कर-करके मर जाता है, लेकिन लालसा नहीं मरती, कभी समाप्त नहीं होती। हे नानक ! सत्यस्वरूप प्रभु में मन लगाने से मनुष्य की इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ यह दुनिया की लालसा, माया-मोह तब ही समाप्त होंगे, जब वह प्रभु आप समाप्त करेगा, जिसने यह पैदा किए हैं। (इसका कारण यह है कि) परमात्मा के नाम के अतिरिक्त दूसरा कोई सर्वदा स्थिर रहनेवाला नहीं (फिर नश्वर वस्तुओं से लगाव कैसा ?) ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पूर्ण ढाँचा बनाकर प्रभु ने आप ही जगत पैदा किया, आप ही बाज़ार हैं और आप ही वणिक, बनजारा हैं। यहाँ प्रभु आप ही समुद्र है, आप ही जहाज़ है और आप ही मल्लाह है। यहाँ आप ही गुरु है, आप ही सिक्ख है और आप ही ओर-छोर दिखाता है। हे दास नानक ! तू उस प्रभु का नाम स्मरण कर और अपने सारे पाप दूर कर ले ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु

रागु गूजरी वार महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु म० ५ ॥ अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ । नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ । सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ । कहु नानक किरपा करे जिसनो एह वथ देइ । जग महि उतम

कै संगि दुखु मिटाइआ । नानक भए अचिंतु हरि धनु निहचलाइआ ।। २० ।।

।। सलोकु महला ३ ।। जितना यह गोचर जगत है, सब आने-जानेवाला है । जिस मनुष्य ने यह बात समझ ली, वह सम्मानित होता है । लेकिन, हे नानक ! जो अपने आप को बड़ा कहलवाता है, वह मूर्ख है, गँवार है ।। १ ।। म० ३ ।। मन हाथी है (यदि) गुरु महावत बने और गुरु की शिक्षा इस पर अंकुश होवे, तो यह मन उस ओर जाता है, जिस ओर गुरु प्रेरित करता है । पर, हे नानक ! अंकुश के बिना हाथी बार-बार कुमार्गगामी होता है ।। २ ।। पउड़ी ।। जिस प्रभु ने द्वैत-भाव पैदा किया है, यदि उसकी सेवा में प्रार्थना करें, यदि उसके आदेश का पालन करें, तो समस्त फल मिल जाते हैं । हमेशा प्रभु का नाम-अमृत स्मरण किया जा सकता है, गुरमुखों की संगति में रहकर दुख मिटाया जा सकता है और, हे नानक ! अनश्वर नाम-धन पाकर निश्चिन्त हुआ जा सकता है ।। २० ।।

।। सलोक म० ३ ।। खेति मिआला उचीआ घरु उचा निरणउ । महल भगती घरि सरै सजण पाहुणिअउ । बरसना त बरसु घना बहुड़ि बरसहि काहि । नानक तिन्ह बलिहारणै जिन्ह गुरमुखि पाइआ मन माहि ।। १ ।। म० ३ ।। मिठा सो जो भावदा सजणु सो जि रासि । नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा सांई । तू रखवाला सदा सदा हउ तुधु धिआई । जीअ जंत सभि तेरिआ तू रहिआ समाई । जो दास तेरे की निंदा करे तिसु मारि पचाई । चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई ।। २१ ।।

।। सलोक महला ३ ।। बादल देखकर (किसान) खेती में मेंड़ ऊँची कर देता है (और पानी खेती में टिक जाता है), वैसे ही जिस जीव-स्त्री के हृदय में भक्ति (का प्रवाह) उभरता है, वहाँ प्रभु मेहमान बनकर आता है । हे मेघ रूपी सतिगुरु ! यदि वर्षा करनी है, तो (नाम की) वर्षा करो । (उम्र समाप्त होने पर) फिर वर्षा का उपयोग क्या होगा ? हे नानक ! मैं उन पर बलिहारी हूँ, जिन्होंने गुरु के द्वारा प्रभु को हृदय में पा लिया है ।। १ ।। म० ३ ।। प्रिय पदार्थ वह है जो हमेशा भला लगता रहे, मित्र वह है जिससे हमेशा मधुर सम्बन्ध बने रहे । हे नानक ! जिसके भीतर प्रभु आप प्रकाश करे, उसे गुरु के द्वारा यह समझ होती

है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु के सेवक की प्रार्थना प्रभु की सेवा में इस प्रकार है कि हे प्रभु ! तुम सत्यस्वरूप हो, तुम सदा ही रक्षक हो, मैं तुम्हें स्मरण करता हूँ, सब जीव-जन्तु तुम्हारे हैं, तुम सबमें मौजूद हो। जो मनुष्य तुम्हारे भक्त की निन्दा करता है, तुम उसे (आत्मिक मृत्यु) देकर दुखी करते हो। हे नानक ! तू भी प्रभु के चरण स्पर्श कर और चिन्ता-रहित होकर निश्चिन्त रह ॥ २१ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ आसा करता जगु मुआ आसा मरै न जाइ। नानक आसा पूरीआ सचे सिउ चितु लाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ आसा मनसा मरि जाइसी जिनि कीती सो लै जाइ। नानक निहचलु को नही बाझहु हरि कै नाइ ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइओनु करि पूरा थाटु। आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु। आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु। आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु। जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलिविख काटु ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु

॥ सलोक महला ३ ॥ जगत सांसारिक लालसाओं में प्रवृत्त होकर अर्थात् इच्छाएँ कर-करके मर जाता है, लेकिन लालसा नहीं मरती, कभी समाप्त नहीं होती। हे नानक ! सत्यस्वरूप प्रभु में मन लगाने से मनुष्य की इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ यह दुनिया की लालसा, माया-मोह तब ही समाप्त होंगे, जब वह प्रभु आप समाप्त करेगा, जिसने यह पैदा किए हैं। (इसका कारण यह है कि) परमात्मा के नाम के अतिरिक्त दूसरा कोई सर्वदा स्थिर रहनेवाला नहीं (फिर नश्वर वस्तुओं से लगाव कैसा ?) ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पूर्ण ढाँचा बनाकर प्रभु ने आप ही जगत पैदा किया, आप ही बाज़ार हैं और आप ही वणिक, बनजारा हैं। यहाँ प्रभु आप ही समुद्र है, आप ही जहाज़ है और आप ही मल्लाह है। यहाँ आप ही गुरु है, आप ही सिक्ख है और आप ही ओर-छोर दिखाता है। हे दास नानक ! तू उस प्रभु का नाम स्मरण कर और अपने सारे पाप दूर कर ले ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु

रागु गूजरी वार महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु म० ५ ॥ अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ। नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ। सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ। कहु नानक किरपा करे जिसनो एह वथ देइ। जग महि उतम

काढीअहि विरले केई केइ ।। १ ।। म० ५ ।। रखे रखणहारि आपि उबारिअनु । गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु । होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु । साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु । साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु । तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि । जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ।। २ ।। पउड़ी ।। अकुल निरंजन पुरखु अगमु अपारीऐ । सचो सचा सचु सचु निहारीऐ । कूड़ु न जापै किछु तेरी धारीऐ । सभसै दे दातारु जेत उपारीऐ । इकतु सूति परोइ जोति संजारीऐ । हुकमे भवजल मंझि हुकमे तारीऐ । प्रभ जीउ तुधु धिआए सोइ जिसु भागु मथारीऐ । तेरी गति मिति लखी न जाइ हउ तुधु बलिहारीऐ ।। १ ।।

।। सलोकु महला ५ ।। यदि अपने गुरु के प्रेम में रँगा जाए, तो प्रभु की सेवा में स्थान मिलता है । मन में गुरु को स्मरण करना, जिह्वा से गुरु का नाम जपना, आँखों से गुरु को देखना, कानों से गुरु का नाम सुनना —ये देन प्रभु ही उस मनुष्य को देता है, जिस पर कृपा करता है; ऐसे व्यक्ति जगत में श्रेष्ठ कहलाते हैं, (लेकिन) ऐसे कुछ विरले ही हैं ।। १ ।। ।। म० ५ ।। रक्षक प्रभु ने जिन व्यक्तियों की मदद की, उन्हें प्रभु ने आप बचा लिया है, उन्हें गुरु के चरणों में जगह देकर उनके सब कार्य सँवार दिए हैं । जिन पर प्रभु आप दयालु है, उन्हें उस प्रभु ने भुलाया नहीं है और उन्हें गुरमुखों की संगति में रखकर संसार-समुद्र पार करा दिया । जो उसके चरणों से अलग हैं, जो निन्दा में संलग्न हैं, जो दुराचारी हैं, उन्हें एक पल में ही उस प्रभु ने समाप्त कर दिया है । नानक के मन में भी उस मालिक-प्रभु का आसरा है, जिसे स्मरण करने से सुख मिलता है और सारे दुख दूर हो जाते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। हे परमात्मा ! तुम्हारा कोई विशेष वंश नहीं, माया की कालिख तुम्हें स्पर्श नहीं कर सकती, तुम सर्वव्यापक, अपहुँच और अनन्त हो । तुम सत्यस्वरूप तथा वास्तविक रूप में अस्तित्व रखनेवाले हो, समस्त सृष्टि तुम्हारे द्वारा उत्पादित है, कोई भी वस्तु काल्पनिक नहीं लगती । जितनी भी सृष्टि प्रभु ने पैदा की है, उसमें सब जीवों को दानी प्रभु ही देनें देता है । सबको एक ही हुक्म रूपी धागे में पिरोकर सबमें अपनी ज्योति प्रकाशमान की हुई है । अपने हुक्म-अनुसार ही उस प्रभु ने संसार-समुद्र में फँसाया हुआ है और हुक्म-अनुसार ही इस संसार-समुद्र से पार करता है । हे प्रभु ! तुम्हें वही व्यक्ति स्मरण करता है, जो भाग्यशाली हो । यह बात कथन से परे है कि तुम कैसे हो, कितने बड़े हो ? मैं तुम पर बलिहारी हूँ ।। १ ।।

॥ सलोकु म० ५ ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान अचिंतु वसहि मन माहि। जा तूं तुसहि मिहरवान नउनिधि घर महि पाहि। जा तूं तुसहि मिहरवान ता गुर का मंत्रु कमाहि। जा तूं तुसहि मिहरवान ता नानक सचि समाहि ॥ १ ॥ ॥ म० ५ ॥ किती बैहन्हि बैहणे मुचु वजाइनि वज। नानक सचे नाम विणु किसै न रहीआ लज ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु धिआइन्हि बेद कतेबा सणु खड़े। गणती गणी न जाइ तेरै दरि पड़े। ब्रहमे तुधु धिआइन्हि इंद्र इंद्रासणा। संकर बिसन अवतार हरि जसु मुखि भणा। पीर पिकाबर सेख मसाइक अउलीए। ओति पोति निरंकार घटि घटि मउलीऐ। कूड़हु करे विणासु धरमे तगीऐ। जितु जितु लाइहि आपि तितु तितु लगीऐ ॥ २ ॥

॥ सलोकु महला ५ ॥ हे कृपालु प्रभु ! यदि तुम प्रसन्न हो जाओ, तो सहज स्वभाव ही जीवों के भीतर टिक जाते हो। जीव, मानो नौ ख़ज़ाने हृदय रूपी घर में ही प्राप्त कर लेते हैं, सतिगुरु के शब्द की साधना करने लगते हैं और सत्य में लीन हो जाते हैं ॥ १ ॥ म० ५ ॥ हे नानक ! (इस जगत में) अनन्त जीव इन स्थानों पर बैठ गए हैं और बहुत बाजे बजा गए हैं, लेकिन सच्चे नाम से ख़ाली रहकर किसी की प्रतिष्ठा नहीं रही ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे प्रभु ! अन्य धार्मिक पुस्तकों (क़ुरान, बाइबिल आदि) के साथ वेद तुम्हें खड़े होकर स्मरण कर रहे हैं, इतने जीव तुम्हारे द्वार पर गिरे हैं कि उनकी गणना नहीं की जा सकती, कितने ही ब्रह्मा और सिंहासन पर आरूढ़ इन्द्र तुम्हें स्मरण करते हैं। हे हरि ! कितने ही शिव और विष्णु के अवतार तुम्हारा यश मुँह से उच्चरित कर रहे हैं, कई पीर, पैग़म्बर, असंख्य शेख़ और वली तुम्हारा गुणगान कर रहे हैं। हे निरंकार ! ताने-पेटे के समान हर शरीर में तुम ओत-प्रोत हो। हे प्रभु ! झूठ के कारण जीव अपना नाश कर लेता है, धर्म के द्वारा तुम्हारे साथ जीवों का निर्वाह हो जाता है; लेकिन जिस-जिस दिशा में तुम लगाते हो, उस-उस ओर ही लगा जा सकता है ॥ २ ॥

॥ सलोकु म० ५ ॥ चंगिआईं आलकु करे बुरिआई होइ सेरु। नानक अजु कलि आवसी गाफल फाही पेरु ॥ १ ॥ ॥ म० ५ ॥ कितीआ कुढंग गुझा थीऐ न हितु। नानक तै सहि ढकिआ मन महि सचा मितु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ मागउ तुझै

दइआल करि दासा गोलिआ। नउनिधि पाई राजु जीवा बोलिआ। अंम्रित नामु निधानु दासा घरि घणा तिन कै संगि निहालु स्रवणी जसु सुणा। कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ। पखा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ। आपहु कछू न होइ प्रभ नदरि निहालीऐ। मोहि निरगुण दिचै थाउ संत धरमसालीऐ॥ ३॥

॥ सलोकु महला ५॥ मूर्ख जीव शुभ कार्यों में आलस्य करता है और कुकर्मों में अत्यन्त लगाव रखता है अर्थात् उन्हें करने में शेर होता है। लेकिन, हे नानक! मूर्ख मनुष्य का पैर शीघ्र ही मृत्यु के बन्धन में आ जाता है अर्थात् उसे मृत्यु आ दबोचती है॥ १॥ म० ५॥ हे नानक के प्रभु! हमारे कई खोटे कर्म और खोटे कर्मों का मोह तुमसे छिपा हुआ नहीं है, तुम ही हमारे भीतर सच्चे मित्र हो, तुमने ही हमारे उन खोटे कर्मों पर पर्दा डाल रखा है अर्थात् उन्हें लोगों में प्रकट होने से बचा रखा है॥ २॥ पउड़ी॥ हे दयानिधि प्रभु! मैं तुमसे यह माँगता हूँ कि मुझे अपने दासों का दास बना लो; तुम्हारा नाम लेने से ही जीवित हूँ और नाम-स्मरण में ही नौ ख़ज़ाने और (पृथ्वी का) राज्य पा लेता हूँ। यह अमृत-नाम रूपी ख़ज़ाना तुम्हारे सेवकों के घर में बहुत है। जब मैं उनकी संगति में बैठकर कानों से तुम्हारा यश श्रवण करता हूँ, तो मैं गद्‌गद हो उठता हूँ। ज्यों-ज्यों मैं उनकी सेवा करता हूँ, मेरा शरीर पवित्र होता है। उन्हें पंखा करके, (उनके लिए) पानी लाकर, चक्की पीसकर और उनके पैर धो-धोकर मैं ख़ुश होता हूँ। लेकिन, हे प्रभु! मुझसे अपने आप से कुछ नहीं हो सकता, तुम ही मेरी ओर कृपादृष्टि से देखो और मुझ गुणहीन को सन्तों की संगति में जगह दो॥ ३॥

॥ सलोक म० ५॥ साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि। नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि॥ १॥ ॥ म० ५॥ पतित पुनीत असंख होहि हरि चरणी मनु लाग। अठसठि तीरथ नामु प्रभ जिसु नानक मसतकि भाग॥ २॥ ॥ पउड़ी॥ नित जपीऐ सासि गिरासि नाउ परवदिगार दा। जिसनो करे रहंम तिसु न विसारदा। आपि उपावणहार आपे ही मारदा। सभु किछु जाणै जाणु बुझि वीचारदा। अनिक रूप खिन माहि कुदरति धारदा। जिसनो लाए सचि तिसहि उधारदा। जिसदै होवै वलि सु कदे न हारदा। सदा अभगु दीबाणु है हउ तिसु नमसकारदा॥ ४॥

।। सलोक महला ५ ।। नानक का कथन है कि हे सज्जन ! मैं सदा तुम्हारे चरणों की धूलि बना रहूँ, मैं तुम्हारी शरण में रहूँ और केवल तुम्हें ही इर्द-गिर्द देखूँ ।। १ ।। म० ५ ।। विकार-ग्रस्त असंख्य जीव पवित्र हो जाते हैं, यदि उनका मन प्रभु के चरणों में लग जाए। प्रभु का नाम ही अठसठ तीर्थों (के तुल्य) है; लेकिन, हे नानक ! (यह नाम उस प्राणी को प्राप्त होता है), जिसके मस्तक पर सौभाग्य लिखे हैं ।। २ ।। ।। पउड़ी ।। सृजनहार प्रभु का नाम साँस लेते, भोजन करते समय प्रतिपल जपना चाहिए। वह प्रभु जिस व्यक्ति पर कृपा करता है, उसे विस्मृत नहीं करता। वह आप जीवों का उत्पादक है और आप ही विनाशक है। वह अन्तर्यामी प्रभु प्रत्येक बात जानता है और उसे समझकर उस पर विचार भी करता है। वह प्रभु एक पलक में प्रकृति के अनेक रूप बना देता है। जिस मनुष्य को वह सत्य में लगाता है, उसे विकारों से बचा लेता है। प्रभु जिस जीव के पक्ष में हो जाता है, वह जीव कभी हारता नहीं। उस प्रभु का दरबार सदा सत्य है, मैं उसे नमस्कार करता हूँ ।। ४ ।।

।। सलोक म० ५ ।। कामु क्रोधु लोभु छोडीऐ दीजै अगनि जलाइ। जीवदिआ नित जापीऐ नानक साचा नाउ ।। १ ।। सिमरत सिमरत प्रभु आपणा सभ फल पाए आहि। नानक नामु अराधिआ गुर पूरै दीआ मिलाइ ।। २ ।। पउड़ी ।। सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ। तिस की गई बलाइ मिटे अंदेसिआ। तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ। जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइ। अंम्रितु साचा नाउ ओथै जापीऐ। मन कउ होइ संतोखु भुखा ध्रापीऐ। जिसु घटि वसिआ नाउ तिसु बंधन काटीऐ। गुरपरसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीऐ ।। ५ ।।

।। सलोक महला ५ ।। हे नानक ! काम, क्रोध और लोभ छोड़ देने चाहिए, आग में जला दें; जब तक जीवित रहें, प्रभु का सच्चा नाम सदा स्मरण करते रहें ।। १ ।। हे नानक ! जिस मनुष्य ने पूर्णगुरु के माध्यम से प्रभु का नाम स्मरण किया है, गुरु ने उसे प्रभु के साथ मिला दिया है और प्यारा प्रभु स्मरण कर-करके उसने सारे फल प्राप्त कर लिये हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। जिस मनुष्य को सतिगुरु ने उपदेश दिया है, वह जगत में रहता हुआ भी माया के बन्धनों से स्वतन्त्र है। उसकी विपत्ति दूर हो जाती है, उसकी चिन्ताएँ मिट जाती हैं, उसके दर्शन

से जगत धन्य हो उठता है, उस प्राणी के संसर्ग में जीव पापों का मैल धोकर धन्य हो उठता है, उसकी संगति में अमरत्व देनेवाला सच्चा नाम स्मरण किया जाता है, तृष्णा द्वारा मृत व्यक्ति भी वहाँ सन्तुष्ट हो जाता है और उसके मन में सन्तोष आ जाता है। जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु का नाम होता है, उसके समस्त बन्धन काटे जाते हैं; लेकिन किसी विरले मनुष्य ने गुरु की कृपा से नाम-धन प्राप्त किया है ॥ ५ ॥

॥ सलोक म० ५ ॥ मन महि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि नीत। हरि कीरतन का आहरो हरि देहु नानक के मीत ॥ १ ॥ म० ५ ॥ द्रिसटि धारि प्रभि राखिआ मनु तनु रता मूलि। नानक जो प्रभ भाणीआ मरउ विचारी सूलि ॥२॥ ॥ पउड़ी ॥ जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि। छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि। पूजहु गुर के पैर दुरमति जाइ जरि। साध जना कै संगि भवजलु बिखमु तरि। सेवहु सतिगुर देव अगै न मरहु डरि। खिन महि करे निहालु ऊणे सुभर भरि। मन कउ होइ संतोखु धिआईऐ सदा हरि। सो लगा सतिगुर सेव जाकउ करमु धुरि ॥ ६ ॥

॥ सलोक महला ५ ॥ मैं अपने में सोचता हूँ कि नित्य उठकर उद्यम करूँ। हे नानक के मित्र! मुझे अपनी गुणस्तुति का कामकाज प्रदान करो ॥ १ ॥ म० ५ ॥ हे नानक! जो जीव-स्त्रियाँ प्रभु को भली लगी हैं, जिन्हें प्रभु ने कृपादृष्टि करके रख लिया है, उनका मन और तन प्रभु में परितृप्त रहता है; लेकिन मैं अभागिन दुख में मर रही हूँ ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ जो तुम्हारा आन्तरिक दुख है, उसे अपने सतिगुरु के समक्ष कह। अपनी सब चतुराई छोड़ दे और मन-तन गुरु के हवाले कर दे। सतिगुरु के चरण पूज, (इस प्रकार) कुबुद्धि मर जाती है और गुरमुखों की संगति में यह दुस्तर संसार-समुद्र पार कर लिया जाता है। हे भाई! गुरु द्वारा बतलाए मार्ग पर चलो, इससे परलोक में डर-डरकर नहीं मरोगे। गुरु गुणहीन व्यक्तियों को गुणों से आपूरित कर एक पलक में कृतकृत्य कर देता है। यदि हमेशा प्रभु का स्मरण किया जाए, तो मन में सन्तोष आता है; परन्तु गुरु की शिक्षा में वही मनुष्य प्रवृत्त होता है, जिस पर प्रभु की कृपा हो ॥ ६ ॥

॥ सलोक म० ५ ॥ लगड़ी सु थानि जोड़णहारै जोड़ीआ। नानक लहरी लख सैआन डुबण देइ न मापिरी ॥ १ ॥ ॥ म० ५ ॥ बनि भीहावलै हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि

नामा । बलि बलि जाई संत पिआरे नानक पूरन कामां ।। २ ।। ।। पउड़ी ।। पाईअनि सभि निधान तेरै रंगि रतिआ । न होवी पछोताउ तुधनो जपतिआ । पहुचि न सकै कोइ तेरी टेक जन । गुर पूरे वाहु वाहु सुख लहा चितारि मन । गुर पहि सिफति भंडारु करमी पाईऐ । सतिगुर नदरि निहाल बहुड़ि न धाईऐ । रखै आपि दइआलु करि दासा आपणे । हरि हरि हरि हरि नामु जीवा सुणि सुणे ।। ७ ।।

।। सलोक महला ५ ।। मेरी प्रीति अच्छे ठिकाने अर्थात् प्रभु के चरणों में लग गई है, इसे मिलानेवाले प्रभु ने आप मिलाया है । दुनिया में सैकड़ों, लाखों (विकारों की) लहरें (प्रवहमान) हैं, लेकिन मेरा प्यार प्रभु उन लहरों में डूबने नहीं देता ।। १ ।। म० ५ ।। इस भयावह जंगल में मुझे हरि-नाम रूपी एक साथी मिला है, जो दुखों का विनाशक है । हे नानक ! मैं प्यारे गुरु पर बलिहारी हूँ, जिसने मेरा यह कार्य सम्पन्न किया है ।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु ! यदि तुम्हारे रंग में रँग जाएँ, तो मानो, सारे ख़ज़ाने मिल जाते हैं । तुम्हें स्मरण करते हुए पश्चाताप नहीं करना पड़ता । जिन सेवकों को तुम्हारा सहारा होता है, उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता । लेकिन, हे मन ! पूर्णगुरु को वाह-वाह समझकर सुख प्राप्त होता है । गुणस्तुति का भण्डार सतिगुरु के पास है, (लेकिन) मिलता है प्रभु-कृपा द्वारा । यदि सतिगुरु कृपादृष्टि से देखे, तो बार-बार भटका नहीं जाता । दया का घर प्रभु स्वयं अपने सेवक बनाकर इस भटकाव से बचाता है । मैं भी उस प्रभु का नाम सुन-सुनकर जीवित हूँ ।। ७ ।।

।। सलोक म० ५ ।। प्रेम पटोला तै सहि दिता ढकण कू पति मेरी । दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ।। १ ।। म० ५ ।। तैडै सिमरणि हभु किछु लधमु बिखमु न डिठमु कोई । जिसु पति रखै सचा साहिबु नानक मेटि न सकै कोई ।। २ ।। पउड़ी ।। होवै सुखु घणा दयि धिआइऐ । वंञै रोगा घाणि हरि गुण गाइऐ । अंदरि वरतै ठाढि प्रभि चिति आइऐ । पूरन होवै आस नाइ मंनि वसाइऐ । कोइ न लगै बिघनु आपु गवाइऐ । गिआन पदारथु मति गुर ते पाइऐ । तिनि पाए सभे थोक जिसु आपि दिवाइऐ । तूं सभना का खसमु सभ तेरी छाइऐ ।। ८ ।।

॥ सलोक महला ५ ॥ मुझ नानक की प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए तुमने अपना प्रेम रूपी रेशमी कपड़ा दिया है। तुम मेरे पति (होने के नाते) मेरे भीतर की जाननेवाले हो, (लेकिन) मैंने तुम्हारी प्रतिष्ठा नहीं पहचानी ॥ १ ॥ म० ५ ॥ तुम्हारे स्मरण द्वारा मैंने प्रत्येक पदार्थ पा लिया है और ज़िन्दगी में कोई कठिनाई नहीं देखी। हे नानक ! जिस प्राणी की प्रतिष्ठा प्रभु आप बचाए, उसकी प्रतिष्ठा को दूसरा कोई मिटा नहीं सकता ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ यदि प्रिय प्रभु को स्मरण करें तो बहुत ही सुख होता है, यदि हरि के गुण गाएँ तो रोगों के समूह नष्ट हो जाते हैं, यदि प्रभु चित्त में आ बसे तो भीतर ठंडक पड़ जाती है, यदि प्रभु का नाम मन में बस जाए तो आकांक्षा पूर्ण हो जाती है, यदि अहंत्व-भाव मिटा दें तो कोई कठिनाई सामने नहीं आती। यदि सतिगुरु से ज्ञान प्राप्त करें, तो प्रभु के ज्ञान का ख़ज़ाना मिल जाता है; लेकिन ये सारे पदार्थ उस मनुष्य ने प्राप्त किए हैं, जिसे प्रभु ने आप दिलाए हैं। हे प्रभु ! तुम सब जीवों के स्वामी हो, समस्त सृष्टि तुम्हारी छाया में है ॥ ८ ॥

॥ सलोक म० ५ ॥ नदी तरंदड़ी मैडा खोजु न खुंभै मंझि मुहबति तेरी। तउ सह चरणी मैडा हीअड़ा सीतमु हरि नानक तुलहा बेड़ी ॥ १ ॥ म० ५ ॥ जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई। हउ ढूढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले केई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आवै साहिबु चिति तेरिआ भगता डिठिआ। मन की कटीऐ मैलु साध संगि वुठिआ। जनम मरण भउ कटीऐ जन का सबदु जपि। बंधन खोलन्हि संत दूत सभि जाहि छपि। तिसु सिउ लाइन्हि रंगु जिस दी सभ धारीआ। ऊची हूं ऊचा थानु अगम अपारीआ। रैणि दिनसु कर जोड़ि सासि सासि धिआईऐ। जा आपे होइ दइआलु तां भगत संगु पाईऐ ॥ ९ ॥

॥ सलोक महला ५ ॥ संसार रूपी नदी में तैरती हुई मेरा पैर नहीं धँसता, क्योंकि मेरे हृदय में तुम्हारी प्रीति है। हे पति-प्रभु ! मैंने अपना यह तुच्छ हृदय तुम्हारे चरणों में पिरो दिया है (क्योंकि) संसार-समुद्र से पार होने के लिए तुम ही नानक की नाव हो, तुलहा हो ॥ १ ॥ म० ५ ॥ हमारे वास्तविक मित्र वही मनुष्य हैं, जिनका दर्शन होने पर दुर्बुद्धि दूर हो जाती है; लेकिन, हे नानक ! मैंने सारा जगत खोज लिया है, कोई विरले ही (ऐसे हैं) ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुम्हारे भक्तों का दर्शन करने से तुम स्वयं हमारे भीतर बस जाते हो। सत्संगति में

सम्मिलित होने पर मन का मैल काटा जाता है। प्रभु की गुणस्तुति की वाणी पढ़ने से सेवक का जन्म-मरण का भय नष्ट हो जाता है, क्योंकि सन्त-जन माया सम्बन्धी बन्धन खोलते हैं, जिससे तमाम भूत-प्रेत छिप जाते हैं। यह सारी सृष्टि जिस प्रभु द्वारा स्थिर है, जिसका स्थान सर्वोच्च है, जो अपहुँच तथा अनन्त है; सन्त उस परमात्मा के साथ हमारा नेह पैदा कर देते हैं। हे प्रभु ! दिन-रात, प्रत्येक श्वास हाथ जोड़कर प्रभु का स्मरण करना चाहिए। जब प्रभु आप दयालु होता है, तो उसके भक्तों की संगति प्राप्त होती है ॥ ९ ॥

॥ सलोक म० ५ ॥ बारि विडानड़ै हुंमस धुंमस कूका पईआ राही। तउ सह सेती लगड़ी डोरी नानक अनद सेती बनु गाही ॥ १ ॥ म० ५ ॥ सची बैसक तिन्हा संगि जिन संगि जपीऐ नाउ। तिन्ह संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सा वेला परवाणु जितु सतिगुरु भेटिआ। होआ साधू संगु फिरि दूख न तेटिआ। पाइआ निहचलु थानु फिरि गरभि न लेटिआ। नदरी आइआ इकु सगल ब्रहमेटिआ। ततु गिआनु लाइ धिआनु द्रिसटि समेटिआ। सभो जपीऐ जापु जि मुखहु बोलेटिआ। हुकमे बुझि निहालु सुखि सुखेटिआ। परखि खजानै पाए से बहुड़ि न खोटिआ ॥ १० ॥

सलोक महला ५ ॥ जगत रूपी इस परायी सराय में आग के ताप के फलस्वरूप मार्गों में लोग त्राहि-त्राहि कर रहे हैं अर्थात् सब जीव सन्त्रस्त हैं; लेकिन, हे पति-प्रभु ! मुझ नानक के हृदय की डोर तुम्हारे चरणों में लगी है, इसलिए मैं आनन्दपूर्वक इस संसार रूपी जंगल से गुज़र रही हूँ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ उन मनुष्यों के साथ सच्ची प्रीति करनी चाहिए, जिनके साथ बैठकर परमात्मा का नाम स्मरण किया जा सके। हे नानक ! जिन्हें प्रतिपल अपनी ही स्वार्थ-लिप्सा हो, उनका संसर्ग नहीं करना चाहिए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वह घड़ी सफल जानो, जब मनुष्य को सतिगुरु मिले। जिस मनुष्य को गुरु का सान्निध्य मिल गया, वह दोबारा दुखों की मृत्यु में नहीं आता। जिस प्राणी को निश्चित ठिकाना मिल गया, वह फिर योनियों के चक्र में नहीं पड़ता, उसे सर्वत्र एक ब्रह्म ही ब्रह्म दिखता है। सब ओर से दृष्टि समेटकर, प्रभु में ध्यान लगाकर वह वास्तविक, उच्च समझ पा लेता है। वह जो कुछ मुँह से बोलता है, प्रभु की गुणस्तुति का जाप ही करता है, प्रभु की रज़ा को समझकर वह प्रसन्न रहता है और सुखी ही सुखी रहता है। जिन मनुष्यों को परखकर प्रभु ने अपने ख़ज़ाने में डाला है, वे दोबारा खोटे नहीं होते ॥ १० ॥

॥ सलोकु ॥ विछोहे जंबूर खवे न वंञनि गाखड़े। जे सो धणी मिलंनि नानक सुख सबूह सचु ॥१॥ म० ५॥ जिमी वसंदी पाणीऐ ईधणु रखै भाहि। नानक सो सहु आहि जा कै आढलि हभु को ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तेरे कीते कंम तुधै ही गोचरे। सोई वरतै जगि जि कीआ तुधु धुरे। बिसमु भए बिसमाद देखि कुदरति तेरीआ। सरणि परे तेरी दास करि गति होइ मेरीआ। तेरै हथि निधानु भावै तिसु देहि। जिसनो होइ दइआलु हरिनामु सेइ लेहि। अगम अगोचर बेअंत अंतु न पाईऐ। जिस नो होहि क्रिपालु सु नामु धिआईऐ ॥ ११ ॥

॥ सलोकु महला ५ ॥ हे नानक ! प्रभु के चरणों से विछोह के दुख ज़ंबूर (द्वारा दिए दुख के तुल्य) असह्य हैं, बरदाश्त नहीं किए जा सकते। यदि वह प्रभु-मालिक मिल जाए, तो निश्चित रूप से सारे सुख ही सुख हो जाते हैं ॥ १ ॥ म० ५ ॥ हे नानक ! जैसे धरती पानी में टिकी है और पानी को सहारा भी देती है, जैसे लकड़ी अपने भीतर आग छिपाकर रखती है, (उसी प्रकार) पति-प्रभु (है) जिसके सहारे हर एक जीव है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे प्रभु ! जो-जो तुमने किए हैं, वह तुम ही कर सकते हो, जगत में वही कुछ हो रहा है जिसे करने के लिए तुमने अपने दरबार से हुक्म कर दिया है, तुम्हारी सृजना देख-देखकर हम हैरान हो रहे हैं। तुम्हारे सेवक तुम्हारा आश्रय लेते हैं। हे प्रभु ! कृपा करो, जिससे मेरी भी आत्मिक अवस्था ऊँची हो जाए। नाम का खज़ाना तुम्हारे हाथ में है; जो तुम्हें भला लगता है, उसे तुम यह खज़ाना देते हो। जिस-जिसको तुम दयालु होकर हरि-नाम देते हो, वही जीव तुम्हारा नाम-खज़ाना प्राप्त करते हैं। हे अपहुँच, अगोचर और अनन्त प्रभु ! तुम्हारा अन्त नहीं पाया जा सकता। तुम जिस मनुष्य पर प्रसन्न होते हो, वह तुम्हारा नाम स्मरण करता है ॥ ११ ॥

॥ सलोक म० ५ ॥ कड़छीआ फिरंन्हि सुआउ न जाणन्हि सुञीआ। सेई मुख दिसंन्हि नानक रते प्रेम रसि ॥ १ ॥ ॥ म० ५ ॥ खोजी लधमु खोजु छडीआ उजाड़ि। तै सहि दिती वाड़ि नानक खेतु न छिजई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि। दुहा सिरिआ खसमु आपि खिन महि करे रासि। तिआगहु सगल उपाव तिस की ओट गहु। पउ सरणाई भजि सुखी हूं सुख लहु। करम धरम ततु गिआनु संता संगु होइ। जपीऐ अंम्रित नामु बिघनु न लगै कोइ।

जिसनो आपि दइआलु तिसु मनि वुठिआ। पाईअन्हि सभि निधान साहिबि तुठिआ ।। १२ ।।

।। सलोक महला ५ ।। जैसे कलछियाँ (चमचा) (दाल के बर्तन में) फिरती हैं, परन्तु उसका स्वाद नहीं जानतीं (क्योंकि वे) ख़ाली रहती हैं। (वास्तव में) वही मुँह सुशोभित होते हैं, जो प्रभु-प्रेम के रंग में रँगे हैं ।। १ ।। म० ५ ।। (जिन कामादिक शत्रुओं ने) मेरी खेती उजाड़ दी थी, उनका पता मैंने खोज करनेवाले गुरु के द्वारा कर लिया है। तुमने (प्रभु ने) मेरी खेती को वाड़ दे दी है (गुरु के रूप में सुरक्षा दे दी है), अब नानक की खेती नहीं उजड़ती ।। २ ।। पउड़ी ।। हे भाई ! उस सत्य-स्वरूप प्रभु का स्मरण करो, जिसके वश में प्रत्येक पदार्थ है, जो दोनों ओर का पति है (जो माया-मोह में ग्रस्त करनेवाला भी है और नाम-रस की देन देनेवाला भी है), जो जीवों के काम एक पल में पूर्ण कर देता है। (हे भाई !) दूसरे सब सहारे छोड़ उस परमात्मा का आसरा लो, दौड़ कर उस प्रभु की शरण लो और सर्वोत्तम सुख अनुभूत करो। यदि सन्तों की संगति मिले तो यह सुबुद्धि समस्त कर्मों-धर्मों का सार है; यदि प्रभु का अमृत-नाम स्मरण किया जाए, तो कोई रुकावट नहीं होती। जिस मनुष्य पर प्रभु स्वयं दयालु हो, वह प्रभु उसके भीतर आ टिकता है। प्रभु-मालिक के प्रसन्न होने पर समस्त ख़ज़ाने प्राप्त कर लिये जाते हैं ।। १२ ।।

।। सलोक म० ५ ।। लधमु लभणहारु करमु करंदो मा पिरी। इको सिरजणहारु नानक बिआ न पसीऐ ।। १ ।। ।। म० ५ ।। पापड़िआ पछाड़ि बाणु सचावा संन्हि कै। गुर मंत्रड़ा चितारि नानक दुखु न थीवई ।। २ ।। पउड़ी ।। वाहु वाहु सिरजणहार पाईअनु ठाढि आपि। जीअ जंत मिहरवानु तिसनो सदा जापि। दइआ धारी समरथि चुके बिलबिलाप। नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रतापि। कीतीअनु आपणी रख गरीब निवाजि थापि। आपे लइअनु छडाइ बंधन सगल कापि। तिसन बुझी आस पुंनी मन संतोखि ध्रापि। वडी हूं वडा अपार खसमु जिसु लेपु न पुंनि पापि ।। १३ ।।

।। सलोक महला ५ ।। जब मेरे प्यारे पति ने मुझ पर कृपा की, तो मैंने प्राप्तव्य प्रभु को पा लिया। (अब) हे नानक ! एक कर्तार ही सर्वत्र दृष्टिगत होता है, दूसरा कोई नहीं दिखता ।। १ ।। म० ५ ।। हे नानक ! सत्य का तीर तानकर दुष्ट पापों को भगा दो, सतिगुरु का सुन्दर मन्त्र स्मरण करो (इस प्रकार) दुख व्याप्त नहीं होता ।। २ ।।

।। पउड़ी ।। (हे भाई !) उस सृजनहार को 'धन्य-धन्य' कहो, जिसने तेरे भीतर ठंडक दी है। उस प्रभु को याद करो, जो सब जीवों पर कृपालु है। समर्थ प्रभु ने जिस पर कृपा की है, उसके सब क्लेश समाप्त हो गए, पूर्णगुरु के प्रताप से उसके सब झंझट, दुख और रोग दूर हो गए। जिन ग़रीबों को उपकृत करके, प्रतिष्ठित करके उनकी रक्षा उस प्रभु ने आप की है, उनके सारे बन्धन काटकर उन्हें उसने आप छुड़ा लिया है, सन्तोष द्वारा परितृप्त होकर उनके मन की आशा पूरी हो गई है, उनकी तृष्णा मिट गई है। अनन्त प्रभु-पति सर्वोच्च है, उसे जीवों के पाप अथवा पुण्य से कोई लगाव नहीं होता ।। १३ ।।

।। सलोक म० ५ ।। जाकउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात। नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध संगात ।। १ ।। म० ५ ।। रामु रमहु बडभागीहो जलि थलि महीअलि सोइ। नानक नामि अराधिऐ बिघनु न लागै कोइ ।। २ ।। पउड़ी ।। भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाइ। भगता तेरी टेक रते सचि नाइ। जिसनो होइ क्रिपालु तिस का दूखु जाइ। भगत तेरे दइआल ओन्हा मिहर पाइ। दूखु दरदु वडरोगु न पोहे तिसु माइ। भगता एहु अधारु गुण गोविंद गाइ। सदा सदा दिनु रैणि इको इकु धिआइ। पीवति अंम्रित नामु जन नामे रहे अघाइ ।। १४ ।।

।। सलोक महला ५ ।। हे नानक ! जिन मनुष्यों पर प्रभु कृपा करते हैं, सत्संगति में मिलने पर परमात्मा के साथ उनकी प्रीति हो जाती है ।। १ ।। म० ५ ।। हे भाग्यशालियो ! उस परमात्मा का स्मरण करो, जो पानी, धरती के भीतर और धरती के बाहर सर्वत्र मौजूद है। हे नानक ! यदि प्रभु का नाम स्मरण करें, तो जीवन-मार्ग में कोई रुकावट नहीं होती ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रार्थना करनेवाले मनुष्यों का कथन स्वीकार्य होता है, प्रभु के दरबार में भी स्वीकार्य होता है। हे प्रभु ! भक्तों को तेरा आसरा होता है, वे सच्चे नाम में रँगे रहते हैं। प्रभु जिस मनुष्य पर कृपा करता है, उसका दुख दूर हो जाता है। हे दयालु प्रभु ! प्रार्थना करनेवाले प्राणी तुम्हारे होकर रहते हैं, तुम उन पर कृपा करते हो। (तुम्हारे भक्त को) कोई माया स्पर्श नहीं कर सकती, कोई दुख-दर्द, कोई बड़े से बड़ा रोग उसे स्पर्श नहीं कर सकता। गोविन्द के गुण गा-गाकर यह गुणस्तुति भक्तों का आसरा बन जाती है, दिन-रात सदा ही एक प्रभु को स्मरण कर और नाम रूपी अमृत पान कर सेवक नाम में ही तृप्त रहते हैं ।। १४ ।।

॥ सलोक म० ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिसनो विसरै नाउ। नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥१॥ ॥ म० ५ ॥ पिरी मिलावा जा थीऐ साई सुहावी रुति। घड़ी मुहतु नह वीसरै नानक रवीऐ नित ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सूरबीर वरीआम किनै न होड़ीऐ। फउज सताणी हाठ पंचा जोड़ीऐ। दस नारी अउधूत देनि चमोड़ीऐ। जिणि जिणि लैन्हि रलाइ एहो एना लोड़ीऐ। त्रै गुण इन कै वसि किनै न मोड़ीऐ। भरमु कोटु माइआ खाई कहु कितु बिधि तोड़ीऐ। गुरु पूरा आराधि बिखम दलु फोड़ीऐ। हउ तिसु अगै दिन राति रहा कर जोड़ीऐ ॥ १५ ॥

॥ सलोक महला ५ ॥ जिस मनुष्य को परमात्मा का नाम विस्मृत हो जाता है, उसे करोड़ों विघ्न आकर घेर लेते हैं। हे नानक ! ऐसे लोग प्रतिदिन ऐसे रोते हैं, जैसे सूने घर में कौआ बोलता है ॥ १ ॥ ॥ म० ५ ॥ वही ऋतु सुन्दर है, जब प्यारे प्रभु-पति का मिलाप होता है। इसलिए, हे नानक ! उसे प्रतिपल याद करो, कभी घड़ी, आधा घड़ी भी वह प्रभु विस्मृत न हो ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कामादिक शूरवीर बहुत शूरवीर तथा बहादुर हैं, किसी ने इन्हें रोका नहीं। इन पाँचों ने अत्यन्त ताक़तवर तथा हठीली फ़ौज एकत्रित की हुई है। त्यागी पुरुषों को भी यह दस इन्द्रियाँ चिपटा देते हैं, सबको जीत-जीतकर अपने पीछे लगाते जाते हैं, ये यही बात ज़रूरी समझते हैं। समस्त त्रिगुणात्मक जीव इनके अधीन हैं, किसी ने इनको नहीं रोका। (माया के प्रति) दुबिधा (मानो) किला है और माया का मोह (किले के इर्द-गिर्द) खाई है, (यह किला) कैसे तोड़ा जाए ? पूर्णसतिगुरु को याद करके यह भारी फ़ौज पराजित की जा सकती है, (यदि प्रभु की कृपा हो तो) मैं दिन-रात हाथ जोड़कर उस गुरु के सामने खड़ा रहूँ ॥ १५ ॥

॥ सलोक म० ५ ॥ किलविख सभे उतरनि नीत नीत गुण गाउ। कोटि कलेसा ऊपजहि नानक बिसरै नाउ ॥ १ ॥ ॥ म० ५ ॥ नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति। हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ सो सतिगुरु धनु धंनु जिनि भरम गड़ु तोड़िआ। सो सतिगुरु वाहु वाहु जिनि हरि सिउ जोड़िआ। नामु निधानु अखुटु गुरु देइ दारूओ। महा रोगु बिकराल तिनै बिदारूओ।

पाइआ नामु निधानु बहुतु खजानिआ। जिता जनमु अपारु आपु पछानिआ। महिमा कही न जाइ गुर समरथ देव। गुर पारब्रहम परमेसुर अपरंपर अलख अभेव ॥ १६ ॥

॥ सलोक महला ५ ॥ हे नानक ! सदा ही प्रभु की गुणस्तुति करो। (इससे) समस्त पाप उतर जाते हैं। यदि प्रभु का नाम विस्मृत हो जाए तो करोड़ों दुख लग जाते हैं ॥ १ ॥ म० ५ ॥ हे नानक ! यदि सतिगुरु मिल जाए, तो जीने की ठीक जाँच आ जाती है और हँसते, खेलते, खाते-पहनते हुए माया में लिप्त हो कामकाज करते हुए ही कामादिक विकारों से बचे रहते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वह सतिगुरु धन्य है, जिसने भ्रम का किला तोड़ दिया है; वह गुरु आश्चर्यजनक महिमा वाला है, जिसने हमें परमात्मा के साथ मिला दिया है। गुरु अक्षुण्ण नाम-ख़ज़ाना रूपी औषधि देता है। उस गुरु ने हमारा यह भयानक रोग दूर कर दिया है। जिसने गुरु से प्रभु का नाम रूपी बड़ा ख़ज़ाना प्राप्त किया है, उसने स्वयं को पहचान लिया है और मनुष्य-जन्म की अपार बाज़ी जीत ली है। सामर्थ्यवान गुरु की महिमा अकथ्य है। सतिगुरु उस अनन्त, अलक्ष्य और अभेद प्रभु का रूप है ॥ १६ ॥

॥ सलोकु म० ५ ॥ उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु। धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥ १ ॥ ॥ म० ५ ॥ सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग। नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ तेरा कीता होइ त काहे डरपीऐ। जिसु मिलि जपीऐ नाउ तिसु जीउ अरपीऐ। आइऐ चिति निहालु साहिब बेसुमार। तिसनो पोहे कवणु जिसु वलि निरंकार। सभु किछु तिस कै वसि न कोई बाहरा। सो भगता मनि वुठा सचि समाहरा। तेरे दास धिआइनि तुधु तूं रखण वालिआ। सिरि सभना समरथु नदरि निहालिआ ॥ १७ ॥

॥ सलोकु महला ५ ॥ हे नानक ! प्रभु-भक्ति का उद्यम करने से आत्मिक जीवन मिलता है, इस नाम की साधना करने से सुख मिलता है। नाम-स्मरण करने से परमात्मा से भेंट हो जाती है और चिन्ता मिट जाती है ॥ १ ॥ म० ५ ॥ हे भगवान ! मुझ नानक पर कृपा कर, मैं एक घड़ी भर भी तुम्हारा नाम न भुलाऊँ, पवित्र सत्संग करूँ, गोविन्द का स्मरण करूँ और शुभ कल्पनाएँ कल्पित करूँ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे प्रभु ! जो कुछ घटित होता है वह तुम्हारे द्वारा ही होता है, इसलिए हम क्यों डरें ?

जिसे मिलकर प्रभु का नाम जपा जाए, उसके समक्ष स्वयं को न्यौछावर कर देना चाहिए क्योंकि यदि अनन्त प्रभु हृदय में आ बसे तो कृतकृत्य हो जाते हैं। जिसके समर्थक निरंकार प्रभु हों, उस पर कोई दबाव नहीं डाल सकता; क्योंकि हर एक चीज़ उस परमात्मा के वश में है, कोई भी उसके हुक्म से परे नहीं जा सकता। स्मरण द्वारा वह प्रभु भक्तों के मन में आ बसता है, भीतर समा जाता है। हे प्रभु ! तेरे दास तुझे स्मरण करते हैं, तुम उनकी रक्षा करते हो, तुम सब जीवों के सिर पर हाकिम हो और कृपादृष्टि करके जीवों को सुख देनेवाले हो ।। १७ ।।

।। सलोक म० ५ ।। काम क्रोध मद लोभ मोह दुसट बासना निवारि। राखि लेहु प्रभ आपणे नानक सद बलिहारि ।। १ ।। ।। म० ५ ।। खांदिआ खांदिआ मुहु घठा पैनंदिआ सभु अंगु। नानक ध्रिगु तिना दा जीविआ जिन सचि न लगो रंगु ।। २ ।। ।। पउड़ी ।। जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा। जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा। नाम तेरै कै रंगि दुरमति धोवणा। जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा। जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा। अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा। जिन्ही पछाता हुकमु तिन्ह कदे न रोवणा। नाउ नानक बखसीस मन माहि परोवणा ।। १८ ।।

।। सलोक महला ५ ।। हे नानक ! प्रभु पर सदा बलिहारी होओ (और कहो कि) हे मेरे प्रभु ! मेरी रक्षा करो और मेरे भीतर से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की मस्ती और बुरी वासनाएँ दूर करो ।। १ ।। ।। म० ५ ।। मीठे पदार्थ खाते-खाते मुँह भी घिस गया और कपड़े पहनते-पहनते शरीर भी कमज़ोर हो गया; (लेकिन फिर भी) हे नानक ! जिन मनुष्यों का प्रेम परमात्मा में न बना, उनका जीवन धिक्कार योग्य है ।। २ ।। ।। पउड़ी ।। दुनिया में उसी प्रकार व्यवहार होता है, जिस प्रकार तुम्हारा हुक्म होता है। जहाँ-जहाँ तुम जीवों को रखते हो, वे वहीं जा खड़े होते हैं। जो जीव तुम्हारे नाम के प्रेम में रहते हैं, वे दुर्बुद्धि धो लेते हैं। हे निरंकार ! तुम्हें स्मरण कर-करके दुबिधा और डर दूर कर लेते हैं। जो मनुष्य तुम्हारे प्रेम में अनुरक्त हैं, वे योनियों में नहीं भटकते, वे भीतर-बाहर एक तुम्हें ही देखते हैं। हे नानक ! जिन्होंने प्रभु का हुक्म पहचाना है, वे कभी पश्चाताप नहीं करते। (वे तो) प्रभु का नाम रूपी दान मन में पिरोए रखते हैं ।। १८ ।।

।। सलोक म० ५ ।। जीवदिआ न चेतिओ मुआ रलंदड़ो

खाक । नानक दुनीआ संगि गुदारिआ साकत मूड़ नपाक ॥ १ ॥ ॥ म० ५ ॥ जीवंदिआ हरि चेतिआ मरंदिआ हरि रंगि । जनमु पदारथु तारिआ नानक साधू संगि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आदि जुगादी आपि रखण वालिआ । सचु नामु करतारु सचु पसारिआ । ऊणा कही न होइ घटे घटि सारिआ । मिहरवान समरथ आपे ही घालिआ । जिन्ह मनि वुठा आपि से सदा सुखालिआ । आपे रचनु रचाइ आपे ही पालिआ । सभु किछु आपे आपि बेअंत अपारिआ । गुर पूरे की टेक नानक संम्हालिआ ॥ १६ ॥

॥ सलोक महला ५ ॥ जब तक जीवित रहा, प्रभु को स्मरण न किया, मर गया तो मिट्टी में मिल गया । हे नानक ! परमात्मा से विक्षुण्ण ऐसे मूर्ख एवं गन्दे आदमी ने दुनिया के साथ ही व्यर्थ में जीवन बिता दिया ॥ १ ॥ म० ५ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य ने सत्संग में रहकर जीते हुए परमात्मा को स्मरण रखा और मृत्यु के वक्त भी प्रभु को स्मरण रखा, उसने यह मनुष्य-जीवन रूपी अमूल्य वस्तु (संसार-समुद्र से) बचा ली है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ परमात्मा हमेशा से स्वयं रक्षा करता आया है, उस कर्तार का नाम सत्यस्वरूप है, वह सर्वत्र मौजूद है, कोई जगह उससे खाली नहीं, वह प्रत्येक देह के भीतर व्याप्त होकर रक्षा करता है, सब जीवों पर कृपा करता है, सब कुछ करने में समर्थ है और वह आप ही जीवों से स्मरण की साधना कराता है। वह जिन व्यक्तियों के भीतर आ बसता है, वे सुखी रहते हैं। प्रभु आप ही जगत पैदा कर इसकी रक्षा कर रहा है। वह अनन्त है, अपार है और सब कुछ आप ही आप है। हे नानक ! जिसने सतिगुरु का आसरा लिया है, वही उस प्रभु को स्मरण करता है ॥ १९ ॥

॥ सलोक म० ५ ॥ आदि मधि अरु अंति परमेसरि रखिआ । सतिगुरि दिता हरिनामु अंम्रितु चखिआ । साधा संगु अपारु अनदिनु हरि गुण रवै । पाए मनोरथ सभि जोनी नह भवै । सभु किछु करते हथि कारणु जो करै । नानकु मंगै दानु संता धूरि तरै ॥ १ ॥ म० ५ ॥ तिसनो मंनि वसाइ जिनि उपाइआ । जिनि जनि धिआइआ खसमु तिनि सुखु पाइआ । सफलु जनमु परवानु गुरमुखि आइआ । हुकमै बुझि निहालु खसमि फुरमाइआ । जिसु होआ आपि क्रिपालु सु नह भरमाइआ । जो जो दिता खसमि सोई सुखु पाइआ । नानक

जिसहि दइआलु बुझाए हुकमु मित । जिसहि भुलाए आपि मरि मरि जमहि नित ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ निंदक मारे ततकालि खिनु टिकण न दिते । प्रभ दास का दुखु न खवि सकहि फड़ि जोनी जुते । मथे वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते । दुखि लगै बिललाणिआ नरकि घोरि सुते । कंठि लाइ दास रखिअनु नानक हरि सते ॥ २० ॥

॥ सलोक महला ५ ॥ परमेश्वर ने आप अपने सेवक को सदा ही बचाया है। सतिगुरु ने उसे प्रभु का नाम दिया है, (उस सेवक ने) नाम-अमृत का आस्वादन किया है। उसे अमूल्य सत्संग मिला है, जहाँ प्रतिपल हरि के गुण स्मरण करता है, उसके समस्त मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। वह योनियों में नहीं भटकता। लेकिन यह सारी कृपा कर्तार के हाथ में है, जो वही आप स्मरण का संयोग पैदा करता है। नानक दान माँगता है कि नानक भी सन्तों की चरण-धूलि लेकर (संसार-समुद्र से) पार उतर जाए ॥ १ ॥ म० ५ ॥ (हे भाई!) उस प्रभु को मन में बसा, जिसने तुझे उत्पादित किया है। जिस मनुष्य ने प्रभु-पति को स्मरण किया है, उसने सुख पाया है। उस गुरमुख का आना सफल है, उसकी ज़िन्दगी कामयाब हो गई है। पति-प्रभु ने उसे जो हुक्म दिया, उस हुक्म को समझकर वह गुरमुख सदा प्रसन्न रहता है। जिस मनुष्य पर प्रभु आप कृपालु हुआ है, वह दुविधा में नहीं पड़ता; पति-प्रभु ने जो कुछ उसे दिया, वह उसे सुख ही प्रतीत हुआ है। हे नानक! जिस मनुष्य पर मित्र-प्रभु कृपालु होता है, उसे अपने हुक्म की सूझ देता है; लेकिन जिस-जिस जीव को भ्रम में डालता है, वह नित्य बार-बार जन्मते-मरते हैं ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ जो मनुष्य गुरमुखों की निन्दा करते हैं, वे तो प्रभु ने उसी समय मार दिए। (निन्दा के फलस्वरूप) एक पल भर भी शान्ति नहीं महसूस होने दी। प्रभुजी अपने दासों का दुख नहीं सह सकते अर्थात् प्रभु की प्रार्थना करनेवालों को कोई दुख स्पर्श नहीं करता, लेकिन निन्दकों को उसने योनि में डाल दिया है। (निन्दक व्यक्तियों को) उसने केशों से पकड़कर धरती पर पटक दिया है और यम के मार्ग पर (निराश्रित) छोड़ दिया है —इस प्रकार दुख होने से वे बिलखते हैं और मानो, घोर नरक में जा पड़ते हैं। लेकिन, हे नानक! सच्चे प्रभु ने अपने सेवकों को गले लगाकर बचा लिया है ॥ २० ॥

॥ सलोक म० ५ ॥ रामु जपहु वडभागीहो जलि थलि पूरनु सोइ । नानक नामि धिआइऐ बिघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥ ॥ म० ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिसनो विसरै नाउ ।

नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ सिमरि सिमरि दातारु मनोरथ पूरिआ । इछ पुंनी मनि आस गए विसूरिआ । पाइआ नामु निधानु जिसनो भालदा । जोति मिली संगि जोति रहिआ घालदा । सूख सहज आनंद वुठे तितु घरि । आवण जाण रहे जनमु न तहा मरि । साहिबु सेवकु इकु इकु द्रिसटाइआ । गुरप्रसादि नानक सचि समाइआ ॥ २१ ॥ १ ॥ २ ॥ सुधु

॥ सलोक महला ५ ॥ हे सौभाग्यशालियो ! उस प्रभु को जपो, जो पानी, पृथ्वी पर सर्वत्र मौजूद है । हे नानक ! यदि प्रभु का नाम स्मरण किया जाए, तो कोई भी रुकावट नहीं होती ॥ १ ॥ म० ५ ॥ जिस मनुष्य को परमात्मा का नाम विस्मृत हो जाता है, उसे करोड़ों विघ्न आ घेरते हैं । ऐसे लोग इस प्रकार विलखते हैं, जैसे सूने घर में कौआ बोलता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सब देन देने में समर्थ प्रभु का स्मरण कर, मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं । मन की आशाएँ तथा इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं, सांसारिक सन्ताप मिट जाते हैं (और इस स्थिति से हटकर) गुरमुख जिस नाम-ख़ज़ाने की खोज में लगता है, वह इसे प्राप्त हो जाता है । मनुष्य की आत्मा प्रभु की ज्योति में लीन हो जाती है और माया की ख़ातिर होनेवाली भाग-दौड़, दुबिधा समाप्त हो जाती है । (स्मरण की साधना करनेवाले प्राणी के) हृदय-घर में सुख, स्थिरता और आनन्द आ बसते हैं, उसके जन्म-मरण समाप्त हो जाते हैं; वहाँ जन्म-मरण नहीं रह जाते क्योंकि वहाँ सेवक और स्वामी-प्रभु एक जैसे दृष्टिगत होते हैं । हे नानक ! ऐसा सेवक सतिगुरु की कृपा द्वारा सत्यस्वरूप प्रभु में लीन हो जाता है ॥ २१ ॥ १ ॥ २ ॥ सुधु

रागु गूजरी भगता की बाणी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ स्री कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥ चारि पाव दुइ सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गईहै । ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत मूड लुकईहै ॥ १ ॥ हरि बिनु बैल बिराने हुईहै । फाटे नाकन टूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सारो दिनु डोलत बन महीआ अजहु न पेट अघईहै । जन भगतन को कहो न मानो कीओ अपनो पईहै ॥ २ ॥ दुख सुख करत महा भ्रमि बूडो अनिक जोनि

भरमईहै। रतन जनमु खोइओ प्रभु बिसरिओ इहु अउसरु कत पईहै ॥ ३ ॥ भ्रमत फिरत तेलक के कपि जिउ गति बिनु रैनि बिहईहै। कहत कबीर रामनाम बिनु मूंड धुने पछुतईहै ॥ ४ ॥ १ ॥

(पशु की योनि में पड़कर) जब तेरे चार पैर, दो सींग होंगे, मुख से गूँगा होगा, तब तू प्रभु के गुण कैसे गाएगा? उठते-बैठते तुझ पर डण्डा का प्रहार होगा, तब तू सिर कहाँ छुपाएगा? ॥१॥ प्रभु का स्मरण किए बिना बैल बनकर पराधीन हो जायगा। (तेरा) नाक बींधा जायगा, कान फटे हुए होंगे और बाजरे का भोजन खाएगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जंगल में सारा दिन घूमकर भी पेट नहीं भरेगा। अब इस वक्त तू भक्तजनों के परामर्श को नहीं मानता, (परलोक में) इसका परिणाम भोगेगा ॥ २ ॥ अब बुरे हाल में कुमार्गगामी होकर बर्बाद हो रहा है, (अन्त में) अनेक योनियों में भटकेगा। तूने प्रभु को भुला दिया है और श्रेष्ठ मनुष्य-जन्म गवाँ लिया है, यह वक्त फिर कहीं नहीं मिलेगा ॥ ३ ॥ तेरी जिन्दगी रूपी समस्त रात्रि तेली के बैल और बन्दर की तरह भटकते हुए विकारों से छुटकारा पाए बिना ही बीत जायगी। कबीर का कथन है कि प्रभु का नाम भुलाकर आखिर में सिर पटक-पटककर पश्चाताप करेगा ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ गूजरी घरु ३ ॥ मुसि मुसि रोवै कबीर की माई। ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥ १ ॥ तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर। हरि का नामु लिखि लीओ सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु तागा बाहउ बेही। तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥ २ ॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा। हरि का नामु लहिओ मै लाहा ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु मेरी माई। हमरा इन का दाता एकु रघुराई ॥ ४ ॥ २ ॥

कबीर की माँ सुबक-सुबककर रोती है (और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि) हे प्रभु! कबीर के बाल-बच्चे कैसे जीवित रहेंगे? ॥ १ ॥ (क्योंकि) कबीर ने ताना तानना और कपड़ा बुनना सब कुछ त्याग दिया है, प्रतिपल हरि का नाम जपता रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब तक मैं नली के सुराख में धागा पिरोता हूँ, तब तक मुझे मेरा प्रिय प्रभु विस्मृत हो जाता है ॥ २ ॥ मेरी बुद्धि छोटी है और मैं जाति का जुलाहा हूँ; लेकिन मैंने परमात्मा का नाम रूपी लाभ प्राप्त कर लिया है, (इसलिए मैं अब नीच न रहकर परमात्म-नाम के बल पर कुलीन हो गया हूँ) ॥ ३ ॥ कबीर का कथन है कि हे मेरी माँ! सुनो, हमें और हमारे इन बच्चों को

भोजन देनेवाला एक ही परमात्मा है, अर्थात् ईश्वर ही सबका रक्षक है ॥ ४ ॥ २ ॥

गूजरी स्री नामदेव जी के पदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जौ राजु देहि त कवन बडाई । जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥ १ ॥ तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु । बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तै उपाई भरम भुलाई । जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई ॥ २ ॥ सतिगुरु मिलै त सहसा जाई । किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई ॥ ३ ॥ एकै पाथर कीजै भाउ । दूजै पाथर धरीऐ पाउ । जे ओहु देउ त ओहु भी देवा । कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥ ४ ॥ १ ॥

(हे मन ! प्रभु के द्वार पर इस प्रकार प्रार्थना करो कि) हे प्रभु ! यदि तुम मुझे राज्य भी दो, तो मैं किसी रूप में बड़ा नहीं हो जाऊँगा और यदि तुम मुझे कंगाल कर दो, तो मेरा कुछ कम नहीं हो जाता ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! तू एक प्रभु को ही स्मरण कर, वही वासनारहित स्थिति का दाता है; उसके स्मरण करने से तुम्हारा जन्मना-मरना मिट जाएगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सारी सृष्टि तुमने आप ही पैदा की है और भ्रमों में भटकाई हुई है। जिस जीव को तुमने सुबुद्धि प्रदान की है, उसी को सुबुद्धि आती है ॥ २ ॥ जिसे सतिगुरु मिल जाए, उसके भीतर की घबराहट दूर हो जाती है। मुझे प्रभु के अतिरिक्त दूसरा कोई सुखदाता दिखता ही नहीं (इसलिए) मैं किसी और की पूजा नहीं करता ॥ ३ ॥ कितनी विचित्र बात है कि एक पत्थर के साथ प्रेम किया जाता है और दूसरे पत्थरों पर पैर रखा जाता है। यदि (पूजा जानेवाला) पत्थर देवता है, तो दूसरा पत्थर भी देवता है। नामदेव कहते हैं कि हम किसी पत्थर की पूजा करने को तैयार नहीं, हम तो केवल परमात्मा की प्रार्थना करते हैं ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ गूजरी घरु १ ॥ मलै न लाछै पारमलो परमलीओ बैठो री आई । आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥ १ ॥ कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई । जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥२॥

जिउ आकासै घड़ूअलो म्रिगत्रिसना भरिआ। नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥ ३ ॥ २ ॥

हे बहन ! उस सुन्दर राम में मैल का दाग़ तक नहीं है, वह मैल से परे है, वह राम तो सुगन्धि के तुल्य सब जीवों में आकर टिकता है। हे बहन ! उस सुन्दर राम को कभी किसी ने उत्पन्न होते नहीं देखा, कौन नहीं जानता कि वह कैसा है ॥ १ ॥ हे बहन ! मेरा सुन्दर राम सर्वत्र व्यापक है परन्तु कोई भी जीव उसका पूर्णस्वरूप व्यक्त नहीं कर सकता, किसी ने उसके स्वरूप को नहीं समझा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे आकाश में पक्षी उड़ता है, लेकिन उसका मार्ग (उड़नेवाला) देखा नहीं जा सकता; जैसे मछली पानी में तैरती है, लेकिन उसका मार्ग देखा नहीं जा सकता (उसी प्रकार प्रभु के पूर्णस्वरूप का वर्णन कथन से परे है) ॥ २ ॥ जिस प्रकार खुले स्थान पर मृगतृष्णा का जल दिखता है (लेकिन उसका निश्चित ठिकाना नहीं मिलता, उसी प्रकार प्रभु का निश्चित ठिकाना पाना असम्भव है)। वैसे नामदेव के स्वामी बिट्ठलजी ऐसे हैं, जिन्होंने उनके तीनों सन्ताप समाप्त कर दिए हैं ॥ ३ ॥ २ ॥

गूजरी स्री रविदास जी के पदे घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ। फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥ १ ॥ माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ। अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैलागर बेर्हे है भुइअंगा। बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा ॥ २ ॥ धूप दीप नईबेदहि बासा। कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥ ३ ॥ तनु मनु अरपउ पूज चरावउ। गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥ ४ ॥ पूजा अरचा आहि न तोरी। कहि रविदास कवन गति मोरी ॥ ५ ॥ १ ॥

दूध तो थनों में ही बछड़े ने जूठा कर दिया, पुष्प भौंरे ने और पानी मछली ने ख़राब कर दिया, (इसलिए दूध, पुष्प आदि प्रभु के समक्ष भेंट करने योग्य नहीं रहे) ॥ १ ॥ हे माँ ! गोविन्द प्रभु की पूजा करने के लिए मैं कहाँ से कोई वस्तु लेकर भेंट करूँ ? कोई दूसरा पवित्र पुष्प आदि नहीं मिल सकता। क्या मैं इस कमी के कारण उस सुन्दर प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकूँगा ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चन्दन के वृक्षों को सर्प लिपटे रहते हैं (अर्थात् उन्होंने चन्दन जूठा कर दिया है), विष और अमृत भी

समुद्र में इकट्ठे ही रहते हैं ।। २ ।। सुगन्धि के फलस्वरूप धूप-दीप-नैवेद्य भी जूठे हैं (इसलिए इन जूठे पदार्थों से यदि प्रभु की पूजा होती हो, तो फिर ये जूठी चीज़ें तुम्हारे समक्ष रखकर) तुम्हारे भक्त किस प्रकार तुम्हारी पूजा करें ? ।। ३ ।। तन और मन को प्रभु पर अर्पण करके उसी की पूजा करो, तब गुरू-कृपा से अलख निरञ्जन की प्राप्ति होगी ।। ४ ।। रैदास कहते हैं कि हे प्रभु ! जब तेरी पूजा-अर्चना नहीं, तब मेरी क्या गति होगी ।। ५ ।। १ ।।

गूजरी स्री त्रिलोचन जीउ के पदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी । हिरदै कमलु घटि ब्रहमु न चीन्हा काहे भइआ संनिआसी ।। १ ।। भरमे भूली रे जै चंदा । नही नही चीन्हिआ परमानंदा ।। १ ।। रहाउ ।। घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ खिथा मुंदा माइआ । भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइआ ।। २ ।। काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी । लख चउरासीह जिन्हि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ।। ३ ।। काइ कमंडलु कापड़ीआ रे अठसठि काइ फिराही । बदति त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ।। ४ ।। १ ।।

मन का मैल तो दूर नहीं किया, और बाहरी मैल की चिन्ता करता है । हृदय रूपी कमल-घट में स्थित ब्रह्म को न पहचानकर केवल संन्यासी का रूप बना (कर ब्रह्मज्ञानी बना फिरता) है ।। १ ।। सांसारिक भ्रमजाल में फँसा हुआ परमानन्द की अनुभूति नहीं पाता ।। १ ।। रहाउ ।। कुण्डल, माला धारण करके घर-घर खाता, पेट की झोली भरता घूमता है । स्मशान की भभूति तन में मल रखी है, परन्तु गुरु के प्रसाद बिना असली तत्व को नहीं पहचाना ।। २ ।। किसे जपता है, कैसा तप है और किस मंथन में पड़ा है । चौरासी लाख योनि के चक्कर से बचने और निर्वाण पाने का उपाय खोज ।। ३ ।। हे कापालिक ! हाथ में खप्पर पकड़ने का कोई लाभ नहीं, अठसठ तीर्थों पर भटकने का कोई लाभ नहीं । त्रिलोचन का कथन है कि हे मनुष्य ! सुन, यदि अन्न के दाने ही नहीं तो गहाने का कोई लाभ नहीं ।। ४ ।। १ ।।

।। गूजरी ।। अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता

महि जे मरै। सरप जोनि वलि वलि अउतरै ॥ १ ॥ अरी बाई गोबिद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥ अंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै। बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै ॥ २ ॥ अंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै। सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ॥ ३ ॥ अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै। प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥ ४ ॥ अंति कालि नाराइणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै। बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीतंबरु वाके रिदै बसै ॥ ५ ॥ २ ॥

जो मनुष्य मृत्यु के वक्त धन-पदार्थ स्मरण करता है और इसी चिन्ता में मर जाता है, वह मनुष्य बार-बार सर्प की योनि में पड़ता है ॥ १ ॥ हे बहन ! (प्रार्थना करो कि) मुझे कभी परमात्मा का नाम विस्मृत न हो (ताकि मृत्यु के क्षणों में भी परमात्मा स्मरण रहें) ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य मृत्यु के क्षणों में अपनी स्त्री को स्मरण करता है और इसी स्मृति में प्राण त्याग देता है, वह मनुष्य बार-बार वैश्या का जन्म लेता है ॥ २ ॥ जो मनुष्य अन्तिम समय में बेटों को ही याद करता है और उन्हें याद करता हुआ ही मर जाता है, वह बार-बार सूअर की योनि में पड़ता है ॥ ३ ॥ जो मनुष्य अन्तिम समय में घर, महल, अटारियों की स्मृति में छटपटाता है और इस छटपटाहट में ही शरीर छोड़ जाता है, वह बार-बार प्रेत बनता है ॥ ४ ॥ त्रिलोचन का कथन है कि जो मनुष्य अन्तिम समय में परमात्मा को स्मरण करता है और स्मरण करता हुआ ही देह त्यागता है, वह मनुष्य (मोह-माया से) स्वतन्त्र हो जाता है, उसके हृदय में परमात्मा स्वयं आकर टिक जाता है ॥ ५ ॥ २ ॥

गूजरी स्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं। परमदभुतं परक्रिति परं जदि चिंति सरब गतं ॥ १ ॥ केवल राम नाम मनोरमं। बदि अंम्रित ततमइअं। न दनोति जसमरणेन जनम जराधि मरण भइअं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इछसि जमादि पराभयं जसु स्वसति सुक्रित क्रितं। भव भूत भाव समब्यिअं परमं प्रसंनमिदं ॥ २ ॥ लोभादि द्रिसटि परग्रिहं जदि बिधि आचरणं। तजि सकल दुहक्रित दुरमती भजु चक्रधर

सरणं ।। ३ ।। हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा । जोगेन किं जगेन किं दानेन किं तपसा ।। ४ ।। गोबिंद गोबिंदेति जपि नर सकल सिधि पदं । जैदेव आइउ तस सफुटं भव भूत सरब गतं ।। ५ ।। १ ।।

परमात्मा सर्वोपरि अर्थात् सबसे बड़ी हस्ती वाला है, सबका मूल है, सबमें परिव्याप्त है, अद्वितीय है और वह सत्य आदि गुणों से सम्पन्न है । वह प्रभु अत्यन्त अद्भुत, निर्लेप, अचिन्त्य (अकल्पनीय) एवं सर्वत्र पहुँचा हुआ है ।। १ ।। केवल परमात्मा का सुन्दर नाम स्मरण कर, जो अमृत से परिपूरित है, जो यथार्थ रूप है और जिसके स्मरण से जन्म-मरण, बुढ़ापा, चिन्ता, फ़िक्र एवं मृत्यु का भय दुख नहीं देता ।। १ ।। रहाउ ।। (हे भाई !) यदि तू यम आदि को जीतना चाहता है, यदि तू शोभा और सुख का इच्छुक है, तो लोभ आदि विकार छोड़ दे, पराए घर की ओर ताकना छोड़ दे, दुर्बुद्धि त्याग दे; और उस प्रभु की शरण ले, जो सबको नष्ट करने में समर्थ है, जो वर्तमान, भूतकाल और भविष्य में सदा ही पूर्व तौर पर नाशरहित है, जो सर्वोपरि है और जो सदा प्रसन्न रहता है ।। २-३ ।। परमात्मा के प्यारे भक्त मन, वचन और कर्म से पवित्र होते हैं, उन्हें योग से क्या लगाव ? उन्हें यज्ञ से क्या प्रयोजन ? उन्हें दान तथा तप से क्या प्रयोजन ? (अर्थात् वे लोग योग, यज्ञ, दान, तप आदि तपस्या के रूपों की अपेक्षा प्रभु-भक्ति को श्रेय देते हैं) ।। ४ ।। हे भाई ! गोविन्द का भजन करो, उसका जाप करो, वही समस्त सिद्धियों का भण्डार है, जयदेव भी शेष सब सहारे त्यागकर उसी प्रभु की शरण आया है, वह अब भी, पिछले समय भी (भविष्य में भी) प्रतिपल सर्वत्र मौजूद है ।। ५ ।। १ ।।

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु देव गंधारी महला ४ घरु १ ।। सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे । जो तुमरा जसु कहते गुरमति तिन मुख भाग सभागे ।। १ ।। रहाउ ।। टूटे माइआ के बंधन फाहे हरि राम नाम लिव लागे । हमरा मनु मोहिओ गुर मोहनि हम बिसम भई मुखि लागे ।। १ ।। सगली रैणि सोई अंधिआरी गुर किंचत

किरपा जागे । जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहि तुम सरि अवरु न लागे ॥ २ ॥ १ ॥

जिन मनुष्यों का लगाव ठाकुर प्रभु से हो जाता है, वे मालिक के सेवक बन जाते हैं। जो मनुष्य गुरु की शिक्षा पर चलकर तुम्हारी गुण-स्तुति करते हैं, उनके मुख ज्योतिर्मान हो जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन मनुष्यों की लग्न परमात्मा के नाम में लग जाती है, उनके माया के बन्धन टूट जाते हैं। और सांसारिक बाधाएँ नष्ट हो जाती हैं। मन-मोहन गुरु ने मेरा मन प्रेम में बाँध लिया है और उस सुन्दर गुरु का दर्शन करके मैं मस्त हो गई हूँ ॥ १ ॥ हे सखी ! मैं तमाम रात्रि माया-मोह के अन्धकार में सोई रही अर्थात् परमात्म-भक्ति से असम्पृक्त रही, (लेकिन) अब तनिक सी कृपा से मैं जाग गई हूँ। हे दास नानक के सुन्दर स्वामी-प्रभु ! मुझे तुम्हारे जैसा कोई दिखाई नहीं देता ॥ २ ॥ १ ॥

॥ देव गंधारी ॥ मेरो सुंदरु कहहु मिलै कितु गली । हरि के संत बतावहु मारगु हम पीछै लागि चली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रिअ के बचन सुखाने हीअरै इह चाल बनी है भली । लटुरी मधुरी ठाकुर भाई ओह सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥ १ ॥ एको प्रिउ सखीआ सभ प्रिअ की जो भावै पिर सा भली । नानकु गरीबु किआ करै बिचारा हरि भावै तितु राहि चली ॥ २ ॥ २ ॥

हे प्रभु के सन्तजनो ! मुझे कहो, मेरा मनमोहन प्रियतम किस गली में मिलेगा ? मुझे वह रास्ता बताइए (ताकि) मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे चली चलूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसे प्रिय प्रभु के गुणस्तुति के वचन हृदय में भले लगते हैं, जिसे (जिस जीवात्मा को) यह जीवन-युक्ति भली लगने लगती है, वे स्वेच्छाचारी तथा निम्नस्तरीय होती हुई भी मालिक-प्रभु को प्रिय लगने लगती है, वह सुन्दर जीव-स्त्री विनम्र होकर प्रभु-चरणों को पकड़ लेती है ॥ १ ॥ एक परमात्मा सबका स्वामी है, सब सुखी जीव-स्त्रियाँ उस प्रभु की ही हैं; लेकिन जो प्रभु को प्रिय लगती है, वही भाग्यशाली बन जाती है। बेचारा ग़रीब नानक क्या कर सकता है ? जो जीव-स्त्री प्रभु को भाए, वही उस मार्ग पर चल सकती है ॥ २ ॥ २ ॥

॥ देव गंधारी ॥ मेरे मन मुखि हरि हरि हरि बोलीऐ । गुरमुखि रंगि चलूलै राती हरि प्रेम भीनी चोलीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ फिरउ दिवानी आवल बावल तिसु कारणि हरि ढोलीऐ । कोई मेलै मेरा प्रीतमु पिआरा हम तिस की गुल गोलीऐ ॥ १ ॥

सतिगुरु पुरखु मनावहु अपुना हरि अंम्रितु पी झोलीऐ । गुर प्रसादि जन नानक पाइआ हरि लाधा देह टोलीऐ ।। २।। ३।।

हे मेरे मन ! मुख से हमेशा परमात्मा का नाम स्मरण करना। हे भाई ! गुरु की शरण लेकर जो जीव-स्त्री प्रभु-प्रेम में रँग जाती है, उसकी हृदय रूपी चोली प्रभु-प्रेम में सराबोर रहती है ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! मैं उस हरि-प्रभु से मिलने के लिए दीवानी हुई फिरती हूँ। यदि कोई मुझे मेरा प्रियतम प्यारा मिला दे, तो मैं उसकी दासियों की दासी (बनने को तैयार हूँ) ।। १ ।। हे जीव-स्त्री ! तू अपने गुरु सतिपुरुष को प्रसन्न कर ले और आत्मिक जीवन का दाता हरि-नाम रूपी जल प्रेम-पूर्वक पीती रह (यही तरीक़ा है हरि-प्रभु को मिलने का)। हे दास नानक ! गुरु की कृपा से ही परमात्मा मिलता है, और, हृदय में खोज करने से ही उसे पाया जा सकता है ।। २ ।। ३ ।।

।। देव गंधारी ।। अब हम चली ठाकुर पहि हारि । जब हम सरणि प्रभू की आई राखु प्रभू भावै मारि ।। १ ।। रहाउ ।। लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंतरि जारि । कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ हम तनु दीओ है ढारि ।। १ ।। जो आवत सरणि ठाकुर प्रभु तुमरी तिसु राखहु किरपा धारि । जन नानक सरणि तुमारी हरि जीउ राखहु लाज मुरारि ।। २ ।। ४ ।।

अब मैं सब सहारे छोड़कर प्रभु का शरणागत हूँ। इसलिए अब, मैं तुम्हारा शरणागत हूँ चाहे मुझे मारो या छोड़ो (यह तुम्हारी इच्छा पर है) ।। १ ।। रहाउ ।। लौकिक चतुराई और लौकिक महानता —इनको मैंने आग में जला दिया है। मुझे कोई भला कहे अथवा बुरा, मैंने तो अपना शरीर (परमात्मा के चरणों में) बलिहारी कर दिया है ।। १ ।। हे मालिक-प्रभु ! जो भी भाग्यशाली तेरी शरण में आ जाता है, तुम कृपा करके उसकी रक्षा करते हो। हे दास नानक ! हे हरि, मुरारी ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, मेरी प्रतिष्ठा रखो ।। २ ।। ४ ।।

।। देव गंधारी ।। हरिगुण गावै हउ तिसु बलिहारी । देखि देखि जीवा साध गुर दरसनु जिसु हिरदै नामु मुरारी ।। १ ।। रहाउ ।। तुम पवित्र पावन पुरख प्रभ सुआमी हम किउकरि मिलह जूठारी । हमरै जीइ होरु मुखि होरु होत है हम करमहीण कूड़िआरी ।। १ ।। हमरी मुद्र नामु हरि सुआमी रिद अंतरि

दुसट दुसटारी । जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरणि तुम्हारी ॥ २ ॥ ५ ॥

मैं उस पर बलिहारी हूँ, जो परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता रहता है। उस गुरु का, साधु का दर्शन कर-करके मेरे भीतर आत्मिक जीवन पैदा होता है, जिसके हृदय में सदा परमात्मा का नाम बसता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे स्वामी, सर्वव्यापक प्रभु ! तुम हमेशा पवित्र हो, लेकिन हम विकृत हैं (इसलिए) हम तुम्हें कैसे मिल सकते हैं ? हमारे मन में कुछ और होता है और मुँह में कुछ और होता है। हम अभागे हैं, हम सदा झूठी माया के ग्राहक बने रहते हैं ॥ १ ॥ हे हरि-प्रभु ! तेरा नाम हमारे लिए दिखावा है अर्थात् हम दिखावे के लिए नाम-स्मरण करते हैं (क्योंकि नाम जपने पर भी) हमारे भीतर निम्न विचार भरे रहते हैं। हे दास नानक ! (कह—) हे स्वामी ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, जिस तरह भी हो सके, मुझे बचा लो ॥ २ ॥ ५ ॥

॥ देव गंधारी ॥ हरि के नाम बिना सुंदरि है नकटी । जिउ बेसुआ के घरि पूतु जमतु है तिसु नामु परिओ है ध्रकटी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कै हिरदै नाहि हरि सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी । जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओहु हरि दरगह है भ्रसटी ॥ १ ॥ जिन कउ दइआलु होआ मेरा सुआमी तिना साध जना पग चकटी । नानक पतित पवित मिलि संगति गुर सतिगुर पाछै छुकटी ॥ २ ॥ ६ ॥ छका १

हे भाई ! परमात्मा के नाम के बिना यह सुन्दर देह असुन्दर ही जानो। जैसे किसी वैश्या के घर जन्मा पुत्र हरामी कहलाता है, चाहे वह सुन्दर ही क्यों न हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन मनुष्यों के हृदय में मालिक-प्रभु नहीं, वे मनुष्य असुन्दर हैं; वे कोढ़ी हैं। जैसे कोई गुरु के प्रति उदासीन रहनेवाला मनुष्य बहुत बातें करना जानता हो, लेकिन वह परमात्मा के दरबार में अपमानित ही (माना जाता है) ॥ १ ॥ हे नानक ! जिन मनुष्यों पर प्यारा प्रभु दयालु होता है, वे मनुष्य सन्तजनों के पैर छूते रहते हैं। गुरु की संगति में मिलकर विकारी मनुष्य भी सदाचारी बन जाते हैं; गुरु द्वारा बताए मार्ग पर चलकर वे विकारों के पंजे से बच निकलते हैं ॥ २ ॥ ६ ॥ छका १

देव गंधारी महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। माई गुर चरणी चितु लाईऐ । प्रभु होइ क्रिपालु कमलु परगासे सदा सदा हरि धिआईऐ ।। १ ।। रहाउ ।। अंतरि एको बाहरि एको सभ महि एकु समाईऐ । घटि अवघटि रविआ सब ठाई हरि पूरन ब्रहमु दिखाईऐ ।। १ ।। उसतति करहि सेवक मुनि केते तेरा अंतु न कतहू पाईऐ । सुखदाते दुखभंजन सुआमी जन नानक सद बलि जाईऐ ।। २ ।। १ ।।

हे माँ ! गुरु के चरणों में हृदय लगाना चाहिए (क्योंकि) जब प्रभु कृपा करता है, तब हृदय का कमल खिल उठता है। हे माँ ! सदा परमात्मा का स्मरण करना चाहिए ।। १ ।। रहाउ ।। हे माँ ! शरीरों के भीतर एक परमात्मा व्याप्त है, बाहर समस्त जगत के प्रसार में भी एक परमात्मा ही विद्यमान है, सारी सृष्टि में वही एक परिव्याप्त है । हरेक शरीर में सर्वत्र सर्वव्यापक परमात्मा ही परिलक्षित होता है ।। १ ।। हे प्रभु ! अनन्त ऋषि और सेवकगण तेरी प्रशंसा करते आ रहे हैं, किसी भी ओर से तेरे गुणों का अन्त न पाया जा सका । हे दास नानक ! हे सुखदाता, हे दुखनाशक ! तुझ पर सदा बलिहारी होना चाहिए ।।२।।१।।

।। देव गंधारी ।। माई होनहार सो होईऐ। राचि रहिओ रचना प्रभु अपनी कहा लाभु कहा खोईऐ ।। १ ।। रहाउ ।। कह फूलहि आनंद बिखै सोग कब हसनो कब रोईऐ । कबहू मैलु भरे अभिमानी कब साधू संगि धोईऐ ।। १ ।। कोइ न मेटै प्रभ का कीआ दूसर नाही अलोईऐ । कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिह प्रसादि सुखि सोईऐ ।। २ ।। २ ।।

हे माँ ! वही कुछ हो रहा है, जो अवश्य घटित होना है । परमात्मा आप अपनी इस जगत-क्रीड़ा में व्यस्त है, कहीं लाभ कर रहा है और कहीं कुछ छीन रहा है ।। १ ।। रहाउ ।। हे माँ । कहीं ख़ुशियाँ बढ़ रही हैं, कहीं विषयादि विकारों के कारण दुख, चिन्ताएँ बढ़ रही हैं । कहीं हास्य है और कहीं रुदन । कहीं कोई अहंकारी मनुष्य अहंकार के मैल से लिपटे हैं, कहीं गुरु की संगति में बैठकर (अहंकार के मैल को) धोया जा रहा है ।। १ ।। (हे माँ ! जगत में परमात्मा के अतिरिक्त) कोई दूसरा परिलक्षित नहीं होता, कोई जीव उस परमात्मा का किया हुआ मिटा नहीं सकता । हे नानक ! कह— मैं उस गुरु पर बलिहारी हूँ, जिसकी कृपा से आत्मिक आनन्द में लीन रहा जा सकता है ।। २ ।। २ ।।

।। देव गंधारी ।। माई सुनत सोच भै डरत । मेर तेर तजउ अभिमाना सरनि सुआमी की परत ।। १ ।। रहाउ ।। जो जो कहै सोई भल मानउ नाहिन काबोल करत । निमख न बिसरउ हीए मोरे ते बिसरत जाई हउ मरत ।। १ ।। सुखदाई पूरन प्रभु करता मेरी बहुतु इआनप जरत । निरगुनि करूपि कुलहीण नानक हउ अनद रूप सुआमी भरत ।। २ ।। ३ ।।

हे माँ ! (नाम-हीनों की स्थिति) सुनकर मैं चिन्ताओं में घिर जाती हूँ, मुझे भय-आतंक सताते हैं, मैं भयभीत होती हूँ (कि कहीं मैं भी ऐसी न हो जाऊँ) । मैं चाहती हूँ कि मालिक-प्रभु की शरणागत हो मैं मेर-तेर गवाँ दूँ और अहंकार त्याग दूँ ।। १ ।। रहाउ ।। हे माँ ! प्रभु-स्वामी जो-जो आदेश करता है, मैं उसे भला मानती हूँ, मैं उसके विपरीत कुछ नहीं कहती । (मैं चाहती हूँ कि) निमिष मात्र के लिए भी वह प्रभु-पति मेरे हृदय से न निकले, (उसके) भुलाने से मुझे आत्मिक मौत आ जाती है ।। १ ।। हे माँ ! वह सर्वव्यापक कर्तार प्रभु सारे सुख देनेवाला है, मेरी मूर्खता को वह बहुत सहता है । नानक का कथन है कि हे माँ ! मैं गुणहीन हूँ, मैं कुरूप हूँ, मैं कुलीन भी नहीं हूँ; लेकिन मेरा पति-प्रभु सदा प्रसन्न रहनेवाला है ।। २ ।। ३ ।।

।। देव गंधारी ।। मन हरि कीरति करि सदहूं । गावत सुनत जपत उधारै बरन अबरना सभहूं ।। १ ।। रहाउ ।। जह ते उपजिओ तही समाइओ इह बिधि जानी तबहूं । जहा जहा इह देही धारी रहनु न पाइओ कबहूं ।। १ ।। सुखु आइओ भै भरम बिनासे क्रिपाल हूए प्रभ जबहू । कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ साध संगि तजि लबहूं ।। २ ।। ४ ।।

हे मन ! सदा ही परमात्मा की गुणस्तुति करता रह । (गुणस्तुति के) गायकों को, श्रोताओं को, नाम जपनेवालों को, सभी को (चाहे वे) कुलीन हों या नीची जाति वाले —सबको परमात्मा संसार-समुद्र से बचा लेता है ।। १ ।। रहाउ ।। (गुणस्तुति करते रहें) तब ही यह विधि समझ में आती है कि जिस प्रभु से जीव पैदा होता है, वह उसी में लीन हो जाता है । जहाँ-जहाँ भी परमात्मा ने यह भौतिक शरीर-रचना की है, कहीं भी कोई हमेशा नहीं रह सकता ।। १ ।। परमातमा जब कृपा करता है, तब हृदय में आनन्द पैदा हो जाता है और समस्त भय, भ्रम नष्ट हो जाते हैं । नानक का कथन है कि सत्संगति में लोभ से मुक्त होने पर मेरे सारे मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं ।। २ ।। ४ ।।

॥ देव गंधारी ॥ मन जिउ अपुने प्रभ भावउ । नीचहु नीचु नीचु अति नान्हा होइ गरीबु बुलावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक अडंबर माइआ के बिरथे ता सिउ प्रीति घटावउ । जिउ अपुनो सुआमी सुखु मानै ता महि सोभा पावउ ॥ १ ॥ दासन दास रेणु दासन की जन की टहल कमावउ । सरब सूख बडिआई नानक जीवउ मुखहु बुलावउ ॥ २ ॥ ५ ॥

हे मेरे मन ! मैं नम्र से अधिक विनम्र होकर, अत्यन्त निम्न, तुच्छ एवं ग़रीब होकर प्रभु से प्रार्थना करता रहता हूँ (ताकि) जैसे भी हो सके, प्रभु को भला लगूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे मन ! माया के ये अनेक प्रसार व्यर्थ हैं, मैं इनके प्रति अपना लगाव कम करता जा रहा हूँ । जिस प्रकार मेरा मालिक-प्रभु सुख महसूसता है, मैं भी उसी में सुख अनुभव कर प्रतिष्ठा प्राप्त करता हूँ ॥ १ ॥ नानक का कथन है कि मैं प्रभु के दासों के भी दासों की चरण-धूलि माँगता हूँ, मैं प्रभु के सेवकों की सेवा करता हूँ, समस्त सुख, समस्त महानताएँ मैं इसी में मानता हूँ । जब मैं अपने मालिक-प्रभु का मुँह-बोला होता हूँ, तब मैं आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेता हूँ ॥ २ ॥ ५ ॥

॥ देव गंधारी ॥ प्रभ जी तउ प्रसादि भ्रमु डारिओ । तुमरी क्रिपा ते सभु को अपना मन महि इहै बीचारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटे तेरी सेवा दरसनि दूखु उतारिओ । नामु जपत महा सुखु पाइओ चिंता रोगु बिदारिओ ॥ १ ॥ कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिसारिओ । माइआ बंध काटे किरपा निधि नानक आपि उधारिओ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे प्रभु ! तुम्हारी कृपा से मैंने अपने मन की दुबिधा दूर कर ली है, तुम्हारी ही कृपा से मैंने यह विश्वास बना लिया है कि प्रत्येक प्राणी मेरा अपना ही है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारी सेवा-भक्ति से मेरे करोड़ों ही पाप मिट गए हैं, तुम्हारे दर्शन से मैंने तमाम दुख मिटा लिया है । तुम्हारा नाम जपते हुए मुझे बड़ा आनन्द मिला है और मैंने चिन्ता का रोग दूर कर लिया है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! गुरु की संगति में टिककर मैंने काम, क्रोध, चिन्ता, लोभ, झूठ, निन्दा आदि को भुला ही लिया है । नानक का कथन है कि हे कृपा के भण्डार प्रभु ! तुमने मेरे माया के बन्धन काट दिए हैं, तुमने आप ही मुझे बचा लिया है ॥ २ ॥ ६ ॥

॥ देव गंधारी ॥ मन सगल सिआनप रही । करन करावनहार सुआमी नानक ओट गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु

मेटि पए सरणाई इह मति साधू कही । प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ भरमु अधेरा लही ॥ १ ॥ जान प्रबीन सुआमी प्रभ मेरे सरणि तुमारी अही । खिन महि थापि उथापनहारे कुदरति कीम न पही ॥ २ ॥ ७ ॥

जो मनुष्य सब कुछ कर सकनेवाले तथा करा सकनेवाले परमात्मा-मालिक का सहारा लेता है, उसकी सारी चतुराई समाप्त हो जाती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे मन ! गुरु द्वारा बतलाई यह शिक्षा जिस आदमी ने स्वीकारी और जो अहंत्व मिटाकर प्रभु की शरण में आ गए, उन्होंने ईश्वरेच्छा मानकर आनन्द महसूस किया और उनके भीतर से भ्रम रूपी अँधेरा दूर हो गया ॥ १ ॥ हे बुद्धिमान तथा सूक्ष्मदर्शी मालिक ! हे मेरे प्रभु ! मैं तेरा शरणागत हूँ । हे क्षण भर में उत्पन्न करके विनष्ट करने की सामर्थ्य रखनेवाले प्रभु ! तुम्हारी शक्ति का मूल्यांकन नहीं हो सकता ॥ २ ॥ ७ ॥

॥ देव गंधारी महला ५ ॥ हरि प्रान प्रभू सुखदाते । गुर प्रसादि काहू जाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत तुमारे तुमरे प्रीतम तिन कउ काल न खाते । रंगि तुमारै लाल भए है रामनाम रसि माते ॥ १ ॥ महा किलबिख कोटि दोख रोगा प्रभ द्रिसटि तुहारी हाते । सोवत जागि हरि हरि हरि गाइआ नानक गुर चरन पराते ॥ २ ॥ ८ ॥

हे प्राणदाता, सुखदाता हरि-प्रभु ! किसी विरले पुरुष ने गुरु के माध्यम से तुम्हारे साथ मिलाप किया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रियतम प्रभु ! तुम्हारे जो सन्त तुम्हारे ही बने रहते हैं, आत्मिक मृत्यु उनके पवित्र जीवन को समाप्त नहीं कर सकती । हे प्रभु ! वे तुम्हारे सन्त तुम्हारे प्रेम-रंग में अनुरक्त हुए रहते हैं, वे तुम्हारे नाम-रस में मस्त रहते हैं ॥१॥ हे प्रभु ! बड़े-बड़े पाप, करोड़ों दोष तथा रोग तुम्हारी कृपादृष्टि से नष्ट हो जाते हैं । नानक का कथन है कि जो मनुष्य गुरु के चरण छूते हैं, वे सोते-जागते प्रतिपल परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाते रहते हैं ॥२॥८॥

॥ देव गंधारी ५ ॥ सो प्रभु जत कत पेखिओ नैणी । सुखदाई जीअन को दाता अंम्रितु जाकी बैणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगिआनु अधेरा संती काटिआ जीअ दानु गुर दैणी । करि किरपा करि लीनो अपुना जल ते सीतल होणी ॥ १ ॥ करमु

**धरमु किछु उपजि न आइओ नह उपजी निरमल करणी ।
छाडि सिआनप संजम नानक लागो गुर की चरणी ।। २ ।। ९ ।।**

जो परमात्मा सब प्राणियों को देन देनेवाला है, समस्त सुखों का दाता है, जिस परमात्मा की गुणस्तुति भरे गुरु-शब्दों में आत्मिक जीवन की देन देनेवाला नाम-जल है, उस प्रभु को सर्वत्र मैंने अपनी आँखों से देख लिया ह ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! सन्तों ने अज्ञान-अँधेरा समाप्त कर दिया है, देन देनेवाले गुरु ने आत्मिक जीवन की देन प्रदान की है । प्रभु ने कृपा करके मुझे अपना सेवक बना लिया है और मैं तृष्णा-अग्नि में जलता हुआ सर्वथा शान्त हो गया हूँ ।। १ ।। हे नानक ! कह कि कोई धार्मिक काम मुझसे नहीं हो सका, अपनी चतुराई त्यागकर मैं गुरु के चरणों में आ गया हूँ ।। २ ।। ९ ।।

।। देव गंधारी ५ ।। हरि राम नामु जपि लाहा । गति पावहि सुख सहज अनंदा काटे जम के फाहा ।। १ ।। रहाउ ।। खोजत खोजत खोजि बीचारिओ हरि संत जना पहि आहा । तिन्हा परापति एहु निधाना जिन्ह कै करमि लिखाहा ।। १ ।। से बडभागी से पतिवंते सेई पूरे साहा । सुंदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन्ह हरि हरि नामु विसाहा ।। २ ।। १० ।।

हे भाई ! परमात्मा का नाम जप-जपकर मनुष्य-जन्म का लाभ प्राप्त कर । इस प्रकार तू उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त कर लेगा, आत्मिक स्थिरता के सुख-आनन्द प्राप्त करेगा और तेरी मृत्यु सम्बन्धी फाँसियाँ कट जाएँगी ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! खोज करते हुए मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यह उपलब्धि प्रभु के सन्तों के पास है और यह नाम-ख़ज़ाना उन मनुष्यों को मिलता है, जिनके मस्तक पर ईश्वर-कृपा द्वारा इसकी प्राप्ति का लेख लिखा है ।। १ ।। नानक का कथन है कि वही मनुष्य भाग्यशाली हैं, वही प्रतिष्ठित हैं, वही शाह, सुन्दर, बुद्धिमान तथा मनमोहन हैं, जिन्होंने परमात्मा का नाम-सौदा ख़रीदा है ।।२।।१०।।

।। देव गंधारी ५ ।। मन कह अहंकारि अफारा । दुरगंध अपवित्र अपावन भीतरि जो दीसै सो छारा ।। १ ।। रहाउ ।। जिनि कीआ तिसु सिमरि परानी जीउ प्रान जिनि धारा । तिसहि तिआगि अवर लपटावहि मरि जनमहि मुगध गवारा ।।१।। अंध गुंग पिंगुल मति हीना प्रभ राखहु राखनहारा । करन करावन हार समरथा किआ नानक जंत बिचारा ।। २ ।। ११ ।।

हे मन ! तू क्यों अहंकार में फूला हुआ है ? तेरे भीतर बदबू तथा गन्दगी है और तेरा यह शरीर दृश्यमान है, यह भी क्षणभंगुर है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्राणी ! जिस परमात्मा ने तुझे जन्मा है, जिसने तेरी आत्मा और प्राणों को आश्रय दिया है, उसे स्मरण किया कर । हे मूर्ख गँवार ! तू उस परमात्मा को भुलाकर दूसरे पदार्थों से चिपटा रहता है और (इसी कारण) जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहेगा ॥ १ ॥ हे समस्त जीवों की रक्षा करने में समर्थ प्रभु ! जीव माया-मोह में अन्धे हुए पड़े हैं, तुम्हारे गुणस्तवन से उदासीन अर्थात् गूँगे हो रहे हैं, तुम्हारे मार्ग पर चलने में लूले-लँगड़े हैं, मूर्ख हो गए हैं, इन्हें तुम आप बचा लो । नानक का कथन है कि सब कुछ कर सकनेवाले और जीवों से सब कुछ कराने की सामर्थ्य वाले प्रभु ! इन जीवों के वश कुछ भी नहीं ॥ २ ॥ ११ ॥

॥ देव गंधारी ५ ॥ सो प्रभु नेरै हू ते नेरै । सिमरि धिआइ गाइ गुन गोबिंद दिनु रैनि साझ सवेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उधरु देह दुलभ साधू संगि हरि हरि नामु जपेरै । घरी न मुहतु न चसा बिलंबहु कालु नितहि नित हेरै ॥ १ ॥ अंध बिला ते काढहु करते किआ नाही घरि तेरै । नामु अधारु दीजै नानक कउ आनद सूख घनेरै ॥ २ ॥ १२ ॥ छके २

हे भाई ! दिन-रात्रि, सुबह-शाम परमात्मा के गुण गाता रह, परमात्मा का नाम स्मरण करता रह, परमात्मा का ध्यान धारण करता रह । वह परमात्मा तेरे साथ ही बसता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरु की संगति में टिककर परमात्मा का नाम जपा कर और अपनी इस मनुष्य-देह की रक्षा कर, जो बड़ी कठिनाइयों से तुझे प्राप्त हुई है । हे भाई ! मृत्यु तुझे हमेशा ताक रही है (इसलिए) नाम-स्मरण में एक घड़ी भी असावधानी न कर, आधी घड़ी या पल मात्र भी ढील न कर ॥ १ ॥ हे कर्तार ! तेरे घर में किसी वस्तु की कमी नहीं, इसलिए मुझे इस घोर अन्धकार से परिपूरित बिल से निकाल ले । हे कर्तार ! नानक को अपना नाम-आसरा दो (क्योंकि) तुम्हारे नाम में अनन्त सुख तथा आनन्द हैं ॥ २ ॥ १२ ॥ छके २

॥ देव गंधारी ५ ॥ मन गुर मिलि नामु अराधिओ । सूख सहज आनंद मंगल रस जीवन का मूलु बाधिओ ॥१॥रहाउ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो काटे माइआ फाधिओ । भाउ भगति गाइ गुण गोबिद जम का मारगु साधिओ ॥ १ ॥

भइओ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा अमोल पदारथु लाधिओ ।
बलिहारै नानक लख बेरा मेरे ठाकुर अगम अगाधिओ ।।२।।१३।।

हे मन ! जिस व्यक्ति ने गुरु को मिलकर परमात्मा का नाम स्मरण किया, उसने मानो आत्मिक टिकाव के सुख, आनन्द तथा ख़ुशियों से भरी ज़िन्दगी की शुरुआत कर ली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा कृपा करके जिस मनुष्य को अपना सेवक बना लेता है, उसके माया-मोह वाले बन्धन काट देता है। वह मनुष्य प्रेम तथा भक्ति द्वारा गोविन्द प्रभु के गुण गाकर मृत्यु के मार्ग को अपने वश में कर लेता है ॥ १ ॥ हे मन ! जिस प्राणी पर परमात्मा की कृपा हुई, उसके भीतर से (माया-मोह का) जंजाल मिट गया और उसने परमात्मा का बहुमूल्य नाम-पदार्थ प्राप्त कर लिया। नानक का कथन है कि मैं उस मालिक-प्रभु पर लाख बार बलिहारी जाता हूँ, जो जीवों की पहुँच से परे है तथा अपरिमित गुणों वाला है ।।२।।१३।।

।। देव गंधारी ५ ।। माई जो प्रभ के गुन गावै । सफल आइआ जीवन फलु ताको पारब्रहम लिव लावै ।। १ ।। रहाउ ।। सुंदरु सुघड़ु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै । नामु उचारु करे हरि रसना बहुड़ि न जोनी धावै ।। १ ।। पूरन ब्रहमु रविआ मन तन महि आन न द्रिसटी आवै । नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लड़ि लावै ।। २ ।। १४ ।।

हे माँ ! जो मनुष्य परमात्मा का गुणगान करता है, परमात्मा के चरणों में मन लगाता है, उसका संसार में आना सफल हो जाता है और उसे ज़िन्दगी का फल मिल जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे माँ ! जो मनुष्य गुरु का साथ प्राप्त कर लेता है, वह मनुष्य सुन्दर जीवन वाला बुद्धिमान शूरवीर बन जाता है, वह अपनी जिह्वा द्वारा परमात्मा का नाम उच्चरित करता है और बार-बार योनियों में नहीं भटकता ॥ १ ॥ नानक का कथन है कि जिस मनुष्य को परमात्मा सन्तजनों के साथ लगा देता है, उसे सत्संगति में नरक के रोग नहीं लगते; सर्वव्यापक प्रभु उसके भीतर बसा रहता है और उसे प्रभु के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं दिखता ॥ २ ॥ १४ ॥

।।देव गंधारी ५।। चंचलु सुपनै ही उरझाइओ । इतनी न बूझै कबहू चलना बिकल भइओ संगि माइओ ।। १ ।। रहाउ ।। कुसम रंग संग रसि रचिआ बिखिआ एक उपाइओ । लोभ सुनै मनि सुखु करि मानै बेगि तहा उठि धाइओ ।। १ ।। फिरत फिरत बहुतु स्रमु पाइओ संत दुआरै आइओ । करी क्रिपा पारब्रहमि सुआमी नानक लीओ समाइओ ।। २ ।। १५ ।।

हे भाई ! अस्थिर मानवीय मन स्वप्न में उलझा रहता है। कभी इतनी बात भी नहीं समझता कि यहाँ से अन्त में गमन करना है। (वह) माया-मोह में मूर्ख बना रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मनुष्य पुष्पों के रंग तथा सम्पर्क के आस्वादन में मस्त रहता है, हमेशा माया (एकत्रित करने) का ही ढंग खोजता फिरता है। जब यह लोभ की बात सुनता है, तो मन में खुशी मनाता है और (माया की दिशा में) शीघ्र उठकर दौड़ता है ॥ १ ॥ नानक का कथन है कि मनुष्य भटकता हुआ जब बहुत थक गया और गुरु के द्वार पर आया, तब मालिक-परमात्मा ने इस पर कृपा की और अपने चरणों में स्थान दिया ॥ २ ॥ १५ ॥

॥ देव गंधारी ५ ॥ सरब सुखा गुरचरना। कलिमल डारन मनहि सधारन इह आसर मोहि तरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा अरचा सेवा बंदन इहै टहल मोहि करना। बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥ १ ॥ सफल मूरति परसउ संतन की इहै धिआना धरना। भइओ क्रिपालु ठाकुरु नानक कउ परिओ साध की सरना ॥ २ ॥ १६ ॥

हे भाई ! गुरु के चरणों में अनुरक्ति से समस्त सुखों की प्राप्ति हो जाती है। गुरु के चरण समस्त पाप दूर कर देते हैं, मन को आश्वस्त करते हैं। मैं गुरु के चरणों का सहारा लेकर ही संसार-समुद्र से पार उतर रहा हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मैं गुरु के चरणों की ही सेवा करता हूँ —यही मेरी पूजा है, यही देव-मूर्तियों के समक्ष चन्दन आदि की भेंट है, यही देव-सेवा है और यही देव-मूर्ति के समक्ष प्रणाम है। गुरु-सेवा से मन प्रसन्न हो जाता है, आत्मिक जीवन की सूझ हो जाती है और बार-बार योनियों के चक्र में नहीं पड़ा जाता ॥ १ ॥ मैं सन्तों के चरण स्पर्श करता हूँ —यही मेरे लिए फलदायक मूर्ति है, यही मेरे लिए मूर्ति का स्मरण है। हे भाई ! जबसे मालिक-प्रभु मुझ नानक पर दयालु हुआ है, तबसे मैं गुरु का शरणागत हूँ ॥ २ ॥ १६ ॥

॥ देव गंधार महला ५ ॥ अपुने हरि पहि बिनती कहीऐ। चारि पदारथ अनद मंगल निधि सूख सहज सिधि लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानु तिआगि हरि चरनी लागउ तिसु प्रभ अंचलु गहीऐ। आंच न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की अहीऐ ॥ १ ॥ कोटि पराध महा अक्रितघन बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ। करुणामै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीऐ ॥ २ ॥ १७ ॥

हे भाई ! अपने परमात्मा के पास ही प्रार्थना करनी चाहिए । ये चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष), आनन्द खुशियों के खज़ाने, आत्मिक स्थिरता के सुख, करामाती शक्तियाँ —हरेक चीज़ परमात्मा से मिल जाती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मैं तो अहंकार त्यागकर परमात्मा के चरणों में मन लगाए रहता हूँ । हे भाई ! उस प्रभु का आश्रय लेना चाहिए । (इस प्रकार) विकारों की अग्नि के समुद्र का ताप नहीं लगता । मालिक-प्रभु की शरण ही माँगनी चाहिए ॥ १ ॥ हे भाई ! बड़े-बड़े कृतघ्न मनुष्यों के करोड़ों पाप परमात्मा बार-बार सहता है । हे नानक ! परमात्मा पूर्णतौर से दयास्वरूप है (इसलिए) उसी का शरणागत होना चाहिए ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ देव गंधारी ५ ॥ गुर के चरन रिदै परवेसा । रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना । नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि धिआना ॥ १ ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो बंधन तोरि निरारे । जपि जपि नामु जीवा तेरी बाणी नानक दास बलिहारे ॥ २ ॥ १८ ॥ छके ३

हे भाई ! जिसके हृदय में गुरु के चरणों का लगाव होता है, उस मनुष्य के समस्त रोग, दुख नष्ट हो जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु के चरणों में अनुरक्ति से जन्म-जन्मान्तरों के पाप नष्ट हो जाते हैं । (हृदय में चरणों का स्मरण) करोड़ों तीर्थों का स्नान है, करोड़ों तीर्थों के जल में डुबकी लगाना है । उस गोविन्द के गुणगान करने से नाम-खज़ाना मिल जाता है और आत्मिक स्थिरता में सुरति जुड़ी रहती है ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा कृपा करके जिस मनुष्य को अपना दास बना लेता है, वह उसके माया के बन्धन भंग कर माया-मोह से निर्लिप्त कर लेता है । दास नानक का कथन है कि तुम पर बलिहारी हूँ, तुम्हारी गुणस्तवन की वाणी उच्चरित करके और तुम्हारा नाम जपकर मैं आत्मिक जीवन प्राप्त कर रहा हूँ ॥ २ ॥ १८ ॥ छके ३

॥ देव गंधारी महला ५ ॥ माई प्रभ के चरन निहारउ । करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे मन ते कबहु न डारउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू धूरि लाई मुखि मसतकि काम क्रोध बिखु जारउ । सभ ते नीचु आतम करि मानउ मन महि इहु सुखु धारउ ॥ १ ॥ गुन गावह ठाकुर अबिनासी कलमल सगले झारउ । नामु निधानु नानक दानु पावउ कंठि लाइ उरिधारउ ॥ २ ॥ १९ ॥

हे माँ ! मैं सदा प्रभु के चरणों की ओर देखता रहता हूँ। हे मेरे मालिक ! मुझ पर कृपा कर, (ताकि) मैं अपने मन से तुम्हें कभी भी विस्मृत न करूँ ।। १ ।। रहाउ ।। (मेरी प्रार्थना है कि) मैं प्रभु के चरणों की धूलि अपने मुँह तथा मस्तक पर लगाता रहूँ और अपने भीतर से काम, क्रोध का विष जलाता रहूँ; मैं स्वयं को सबसे छोटा समझता रहूँ और अपने मन में विनम्रता का यह सुख टिकाए रखूँ ।। १ ।। हे भाई ! आइए, मिलकर ठाकुर प्रभु के गुण गाएँ, इससे ही मैं अपने पाप मिटा रहा हूँ। नानक प्रभु से यह दान माँगता है कि मैं तुम्हारा नाम-ख़ज़ाना प्राप्त कर लूँ और इसे अपने गले से लगाकर अपने भीतर टिकाए रखूँ ।। २ ।। १९ ।।

।। देव गंधारी महला ५ ।। प्रभ जीउ पेखउ दरसु तुमारा । सुंदर धिआनु धारु दिनु रैनी जीअ प्रान ते पिआरा ।। १ ।। रहाउ ।। सासत्र बेद पुरान अविलोके सिम्रिति ततु बीचारा । दीनानाथ प्रान पति पूरन भवजल उधरनहारा ।। १ ।। आदि जुगादि भगत जन सेवक ताकी बिखै अधारा । तिन जन की धूरि बाछै नित नानकु परमेसरु देवनहारा ।। २ ।। २० ।।

हे प्रभु ! (मेरी कामना है कि) हमेशा तुम्हारा दर्शन करता रहूँ, दिन-रात तुम्हारे सुन्दर रूप का स्मरण करता रहूँ। तुम्हारा दर्शन मुझे अपने प्राणों और आत्मा से प्रिय लगे ।। १ ।। रहाउ ।। हे दीनानाथ, प्राणपति, सर्वव्यापक प्रभु ! मैं शास्त्र, वेद, पुराण देख चुका हूँ, मैं स्मृतियों का तत्व भी परख चुका हूँ, (मेरा विश्वास है कि) केवल तुम ही संसार-समुद्र से पार करने की सामर्थ्य रखते हो ।। १ ।। हे प्रभु ! तेरे सेवक सृष्टि के आदिम काल से विषय-विकारों से बचने के लिए तुम्हारा ही सहारा ताकते आए हैं। नानक उन भक्तजनों के चरणों की धूलि माँगता है, तुम परमेश्वर ही यह देन देने की सामर्थ्य रखते हो ।। २ ।। २० ।।

।। देव गंधारी महला ५ ।। तेरा जनु राम रसाइणि माता । प्रेम रसा निधि जाकउ उपजी छोडि न कतहू जाता ।।१।।रहाउ।। बैठत हरि हरि सोवत हरि हरि हरि रसु भोजनु खाता । अठसठि तीरथ मजनु कीनो साधू धूरी नाता ।। १ ।। सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता । सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहमु पछाता ।। २ ।। २१ ।।

हे प्रभु ! तुम्हारा भक्त तुम्हारे नाम-रसायन में मस्त रहता है। जिस मनुष्य को तुम्हारे प्रेम-रस का ख़ज़ाना मिल जाए, वह उस ख़ज़ाने को

छोड़कर किसी दूसरी जगह नहीं जाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (नाम-स्मरण में लीन मनुष्य) बैठने पर भी हरि-नाम उच्चरित करता है, सोते हुए भी हरि-नाम में सुरति रखता है। वह मनुष्य हरिनाम-रस को खुराक स्वीकार कर खाता रहता है। वह मनुष्य सन्तों की चरण-धूलि में स्नान करता है, (ऐसा करते हुए मानो) वह अड़सठ तीर्थों का स्नान कर रहा है ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा के भक्त का जीवन सफल हो जाता है, उस भक्तजन ने मानो ईश्वर को पुत्रवान बना दिया। हे नानक ! वह मनुष्य सर्वव्यापक प्रभु के साथ गहरा मेल बना लेता है और वह अपने समस्त मित्रों को भी संसार-समुद्र से पार कर लेता है ॥ २ ॥ २१ ॥

॥ देव गंधारी महला ५ ॥ माई गुर बिनु गिआनु न पाईऐ। अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ मोह रोग सोग तनु बाधिओ बहु जोनी भरमाईऐ। टिकनु न पावै बिनु सत संगति किसु आगै जाइ रूआईऐ ॥ १ ॥ करै अनुग्रहु सुआमी मेरा साध चरन चितु लाईऐ। संकट घोर कटे खिन भीतरि नानक हरि दरसि समाईऐ ॥ २ ॥ २२ ॥

हे माँ ! गुरु के बिना परमात्मा से गहरा मेल-मिलाप नहीं हो सकता। दूसरे अनेक प्रकार के उद्यम करते हुए मनुष्य दुखी होते फिरते हैं, लेकिन वे परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा शरीर मोह, रोग तथा दुखों से जकड़ा रहता है, अनेक योनियों में भटकता रहता है। सत्संगति के बिना ठिकाना प्राप्त नहीं कर सकता। (गुरु के अतिरिक्त) किसी दूसरे के पास (इस दुख की निवृत्ति के लिए) प्रार्थना भी नहीं की जा सकती ॥ १ ॥ हे माँ ! जब मेरा मालिक-प्रभु कृपा करता है, तो गुरु के चरणों में हृदय जोड़ा जा सकता है। हे नानक ! गुरु-कृपा से भयंकर दुख क्षण भर में मिट जाते हैं और परमात्मा के दर्शन में लीन हो जाते हैं ॥ २ ॥ २२ ॥

॥ देव गंधारी महला ५ ॥ ठाकुर होए आपि दइआल। भई कलिआण अनंद रूप होई है उबरे बाल गुपाल ॥ रहाउ ॥ दुइ कर जोड़ि करी बेनंती पारब्रहमु मनि धिआइआ। हाथु देइ राखे परमेसुरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ वरनारी मिलि मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु। कहु नानक जन कउ बलि जाईऐ जो सभना करे उधारु ॥ २ ॥ २३ ॥

हे भाई ! अपने जिस सेवक पर प्रभु दयालु होते हैं, उसके भीतर

पूर्ण शान्ति पैदा हो जाती है; वह प्रभु-कृपा द्वारा आनन्दमय हो जाता है। सृष्टि के पालक-पिता का सहारा लेनेवाले बच्चे संसार-समुद्र में डूबने से बच जाते हैं ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिन सौभाग्यशालियों ने दोनों हाथ जोड़कर परमात्मा के समक्ष प्रार्थना की, परमात्मा को अपने मन में स्मरण किया, परमात्मा ने अपनी सुरक्षा देकर उन्हें बचा लिया और उनका समस्त पाप दूर कर दिया ॥ १ ॥ (जिस पर प्रभु की कृपा हो उसकी) ज्ञानेन्द्रियों ने प्रभु-पति को मिलकर उसकी गुणस्तुति का गीत गाना शुरू कर दिया। नानक का कथन है कि प्रभु के उस भक्त पर बलिहारी होना चाहिए, जो दूसरे अन्य जीवों का भी उद्धार कर लेता है ॥ २ ॥ २३ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ देव गंधारी महला ५ ॥ अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ। भए क्रिपाल दइआल दुखभंजन मेरा सगल अंदेसरा गइआ ॥ रहाउ ॥ हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुनु अवगुनु सभु सहिआ। करु मसतकि धारि साजि निवाजे मुए दुसट जो खइआ ॥ १ ॥ परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ। कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उरधरिआ ॥ २ ॥ २४ ॥

हे भाई ! जब मैंने अपने गुरु के पास प्रार्थना करनी आरम्भ की, तो दुखनाशक प्यारे प्रभु मुझ पर दयालु हुए और मेरा तमाम फ़िक्र दूर हो गया ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! हम जीव पापी, पाखण्डी और लोभी हैं, लेकिन वह परमात्मा हमारा प्रत्येक गुण-अवगुण सहन करता है। वह जीवों को उत्पन्न कर उनके मस्तक पर हाथ रख उनका जीवन सँवारता है, जिससे आत्मिक जीवन के नष्ट करनेवाले वैरी समाप्त हो जाते हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! प्रभु परोपकारी हैं, सबको सहारा देनेवाले हैं, उनका दर्शन मनुष्य-जीवन का फल देनेवाला है, आत्मिक स्थिरता की देन देनेवाला है। नानक का कथन है कि प्रभु गुणहीन जीवों को भी देन देनेवाला है; मैंने उसके सुन्दर कोमल चरण हृदय में टिका लिये हैं ॥ २ ॥ २४ ॥

॥ देव गंधारी महला ५ ॥ अनाथ नाथ प्रभ हमारे। सरनि आइओ राखनहारे ॥ रहाउ ॥ सरब पाख राखु मुरारे। आगै पाछै अंती वारे ॥ १ ॥ जब चितवउ तब तुहारे। उन सम्हारि मेरा मनु सधारे ॥ २ ॥ सुनि गावउ गुर बचनारे। बलि बलि जाउ साध दरसारे ॥ ३ ॥ मन महि राखउ एक असारे। नानक प्रभ मेरे करनैहारे ॥ ४ ॥ २५ ॥

हे अनाथों के नाथ, हे मेरे रक्षक प्रभु ! मैं तेरा शरणागत हूँ ।।रहाउ।। हे मुरारी ! लोक, परलोक सर्वत्र अन्तिम समय में मेरी सहायता कर ।।१।। हे प्रभु ! मैं जब भी स्मरण करता हूँ, तेरे गुण ही स्मरण करता हूँ; उन्हें स्मरण कर मेरा मन धैर्य धारण करता है ।। २ ।। हे प्रभु ! मैं गुरु के दर्शन पर बलिहारी हूँ, क़ुरबान हूँ। गुरु के वचन सुनकर ही मैं प्रभु की गुणस्तुति के गीत गाता हूँ ।। ३ ।। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! हे मेरे कर्तार ! मैं अपने मन में तेरी ही सहायता की आशा रखता हूँ ।। ४ ।। २५ ।।

।। देव गंधारी महला ५ ।। प्रभ इहै मनोरथु मेरा । क्रिपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ।। रहाउ ।। प्रातहकाल लागउ जन चरनी निसबासुर दरसु पावउ । तनु मनु अरपि करउ जन सेवा रसना हरि गुन गावउ ।। १ ।। सासि सासि सिमरउ प्रभु अपुना संत संगि नित रहीऐ । एकु अधारु नामु धनु मोरा अनदु नानक इहु लहीऐ ।। २ ।। २६ ।।

हे कृपा के भण्डार प्रभु ! हे दयालु प्रभु ! मेरी इच्छा है कि मुझे यह दान दीजिए, मुझे अपने सन्तों का सेवक बनाए रखो ।। रहाउ ।। हे प्रभु ! सवेरे उठकर मैं तेरे सन्तजनों के चरण स्पर्श करूँ, दिन-रात्रि तेरे सन्तों का दर्शन करता रहूँ । अपना तन, मन भेंट देकर मैं सन्तजनों की सेवा करता रहूँ और अपनी जिह्वा से मैं हरि के गुण गाता रहूँ ।। १ ।। मेरी इच्छा है कि मैं हर श्वास के साथ प्रभु का स्मरण करता रहूँ । हे भाई ! सन्तजनों की संगति में टिके रहना चाहिए । नानक की इच्छा है कि परमात्मा का नाम-धन ही जीवन-आसरा बना रहे । हे भाई ! नाम-स्मरण का यह सुख सदा महसूस करना चाहिए ।। २ ।। २६ ।।

रागु देव गंधारी महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। मीता ऐसे हरि जीउ पाए । छोडि न जाई सद ही संगे अनदिनु गुर मिलि गाए ।। १ ।। रहाउ ।। मिलिओ मनोहरु सरब सुखैना तिआगि न कतहू जाए । अनिक अनिक भाति बहु पेखे प्रिअ रोम न समसरि लाए ।। १ ।। मंदरि भागु सोभ दुआरै अनहत रुणु झुणु लाए । कहु नानक सदा रंगु माणे ग्रिह प्रिअ थीते सद थाए ।। २ ।। १ ।। २७ ।।

हे भाई ! मैंने ऐसे मित्र-प्रभु को पा लिया है, जो मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाते, सदा मेरे साथ रहते हैं। मैं गुरु के मिलाप द्वारा सदा उस प्रभु के गुण गाता रहता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मनमोहन, सर्व सुखदाता प्रभु मिल गया है, मुझे त्यागकर वे कहीं नहीं जाते। मैंने अनेक प्रकार के व्यक्ति देख लिये हैं, लेकिन कोई भी प्यारे प्रभु के एक बाल की भी बराबरी नहीं कर सकता ॥ १ ॥ नानक का कथन है— जिस जीव के हृदय में प्रभु का शाश्वत निवास हो जाता है, वह हमेशा आत्मिक आनन्द महसूसता है, उसके हृदय रूपी घर में भाग्य उदय हो जाता है, उसके हृदय में अनहद नाद होता रहता है और उसे प्रभु के द्वार पर शोभा प्राप्त होती है ॥ २ ॥ १ ॥ २७ ॥

॥ देव गंधारी ५ ॥ दरसन नाम कउ मनु आछै। भ्रमि आइओ है सगल थान रे आहि परिओ संत पाछै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किसु हउ सेवी किसु आराधी जो दिसटै सो गाछै। साध संगति की सरनी परीऐ चरण रेनु मनु बाछै ॥ १ ॥ जुगति न जाना गुनु नही कोई महा दुतरु माइआछै। आइ पइओ नानक गुर चरनी तउ उतरी सगल दुराछै ॥ २ ॥ २ ॥ २८ ॥

हे भाई ! परमात्मा का दर्शन करने, उसका नाम जपने के लिए मेरा हृदय व्याकुल है। मेरा हृदय सर्वत्र भटककर हो आया है, अब दुखी होकर सन्तों के चरणों में आ गया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो कुछ परिलक्षित है, वह नाशमान है इसलिए मैं किसकी सेवा करूँ ? मैं किसकी आराधना करूँ ? हे भाई ! सत्संगति की शरण लेनी चाहिए। मेरा मन सन्तजनों के चरणों की धूलि माँगता है ॥ १ ॥ हे भाई ! इस माया रूपी समुद्र से पार होना अत्यन्त दुःसाध्य है, मुझे इससे पार उतरने का कोई तरीक़ा नहीं आता। मेरे भीतर ऐसा कोई भी गुण नहीं (जिसके माध्यम से मेरा कल्याण हो)। हे नानक ! जब मनुष्य गुरु के चरण पकड़ता है, तब समस्त नीच कामनाएँ समाप्त हो जाती है (और जीव का उद्धार हो जाता है) ॥ २ ॥ २ ॥ २८ ॥

॥ देव गंधारी ५ ॥ अंम्रिता प्रिअ बचन तुहारे। अति सुंदर मन मोहन पिआरे सभ हू मधि निरारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे। ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा मोहि ठाकुर ही दरसारे ॥ १ ॥ दीनु दुआरै आइओ ठाकुर सरनि परिओ संत हारे। कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥ २ ॥ ३ ॥ २९ ॥

हे अत्यन्त सुन्दर, मनमोहन, प्यारे प्रभु ! हे सब जीवों में रहकर भी सबसे असम्पृक्त रहनेवाले प्रभु ! तुम्हारी गुणस्तुति के शब्द आत्मिक जीवन के दाता हैं ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्यारे प्रभु ! मैं राज्य नहीं माँगता, मुक्ति नहीं माँगता (केवल मेरी अभिलाषा यही है कि प्रभु के) सुन्दर कोमल चरणों का प्रेम मेरे भीतर टिका रहे । सांसारिक मनुष्य ब्रह्मा, शिव, करामाती योगी, ऋषि, मुनि, इन्द्र आदि के दर्शनों के अभिलाषी हैं, लेकिन मुझे तो मालिक-प्रभु के दर्शनों की ही इच्छा है ।। १ ।। हे ठाकुर ! मैं ग़रीब तुम्हारे द्वार पर आया हूँ, मैं पराजित होकर तुम्हारे सन्तों का शरणागत हूँ । नानक का कथन है कि जिस मनुष्य को मनमोहन प्रभु के दर्शन हो जाते हैं, उसका मन शान्त हो जाता है और वह खिल उठता है ।। २ ।। ३ ।। २९ ।।

।। देव गंधारी महला ५ ।। हरि जपि सेवकु पारि उतारिओ । दीन दइआल भए प्रभ अपने बहुड़ि जनमि नही मारिओ ।। १ ।। रहाउ ।। साध संगमि गुण गावह हरि के रतन जनमु नही हारिओ । प्रभ गुन गाइ बिखै बनु तरिआ कुलह समूह उधारिओ ।। १ ।। चरन कमल बसिआ रिद भीतरि सासि गिरासि उचारिओ । नानक ओट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिओ ।। २ ।। ४ ।। ३० ।।

हे भाई ! परमात्मा का नाम जपकर उसका सेवक पार उतार लिया जाता है । दीनदयालु प्रभु उस सेवक के अपने हो जाते हैं और प्रभु उसे बार-बार आवागमन के चक्र में नहीं डालता ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! आइए, हम गुरु की संगति में बैठकर परमात्मा के गुण गाएँ । हे भाई ! प्रभु का सेवक अपना उत्तम मनुष्य-जन्म व्यर्थ नहीं गवाँता । प्रभु के गुण गाकर सेवक विषयों के जल से आपूरित संसार-समुद्र से आप पार उतर जाता है और अपनी तमाम वंशावलियों को भी बचा लेता है ।। १ ।। हे भाई ! सेवक के हृदय में परमात्मा के सुन्दर चरण सदा टिके रहते हैं, वह प्रत्येक श्वास, प्रत्येक ग्रास के साथ परमात्मा का नाम स्मरण करता रहता है । हे नानक ! जो सेवक जगत के स्वामी परमात्मा का आसरा लेता है, मैं उस सेवक पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ ।। २ ।। ४ ।। ३० ।।

रागु देव गंधारी महला ५ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। करत फिरे बन भेख मोहन रहत निरार ।। १ ।। रहाउ ।। कथन सुनावन गीत नीके गावन मन

महि धरते गार ।। १ ।। अति सुंदर बहु चतुर सिआने बिदिआ रसना चार ।। २ ।। मान मोह मेर तेर बिबरजित एहु मारगु खंडेधार ।। ३ ।। कहु नानक तिनि भवजलु तरीअले प्रभ किरपा संत संगार ।। ४ ।। १ ।। ३१ ।।

जो दिखावटी वेष बनाकर जंगल में घूमते-फिरते हैं, सुन्दर प्रभु उनसे अलग ही रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। जो मनुष्य दूसरों को उपदेश करने तथा सुनानेवाले हैं, जो सुन्दर-सुन्दर गीत भी गाते हैं, वे मन में अहंकार बनाए रखते हैं (परमात्मा उन पर कृपा नहीं करता) ।। १ ।। हे भाई ! विद्या के प्रभाव से जिनकी जिह्वा सुन्दर अर्थात् प्रभावी वक्ता है, जो देखने में मनमोहन तथा चतुर हैं (परमात्मा उनसे भी असम्पृक्त रहता है) ।। २ ।। हे भाई ! अहंकार, मोह, अपना-पराया आदि विकृतियों से बचे रहना —यह मार्ग तलवार की धार जैसा सूक्ष्म है, जिस पर चलना अत्यन्त दुःसाध्य है ।। ३ ।। हे नानक ! उस मनुष्य ने संसार-समुद्र पार कर लिया है, जो प्रभु-कृपा द्वारा सत्संगति में वास करता है ।। ४ ।। १ ।। ३१ ।।

रागु देव गंधारी महला ५ घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। मै पेखिओ री ऊचा मोहनु सभ ते ऊचा । आन न समसरि कोऊ लागै ढूढि रहे हम मूचा ।। १ ।। रहाउ ।। बहु बेअंतु अति बडो गाहरो थाह नही अगहूचा । तोलि न तुलीऐ मोलि न मुलीऐ कत पाईऐ मन रूचा ।। १ ।। खोज असंखा अनिकत पंथा बिनु गुर नही पहूचा । कहु नानक किरपा करी ठाकुर मिलि साधू रस भूंचा ।। २ ।। १ ।। ३२ ।।

हे सखी ! मैंने देख लिया है कि सुन्दर प्रभु बहुत ऊँचा है, सबसे ऊँचा है । मैं बहुत छानबीन करके थक गया हूँ, कोई दूसरा उसकी समता नहीं कर सकता ।। १ ।। रहाउ ।। वह परमात्मा अनन्त है, अत्यन्त गम्भीर है, उसकी गहराई अमाप्य है । वह इतना ऊँचा है कि अपहुँच है । किसी बाट से उसे आँका नहीं जा सकता, किसी क़ीमत पर उसे ख़रीदा नहीं जा सकता, यह पता नहीं लगता कि उसे कहाँ पाएँ ।। १ ।। अनेक बार खोज करें, अनेक रास्तें देखें (लेकिन सब व्यर्थ है), गुरु की शरण लिये बिना प्रभु के चरणों तक नहीं पहुँचा जा सकता । नानक का कथन है कि प्रभु ने जिस मनुष्य पर कृपा की, वह गुरु के द्वारा उस प्रभु के नाम का आनन्द महसूस करता है ।। २ ।। १ ।। ३२ ।।

॥ देव गंधारी महला ५ ॥ मै बहु बिधि पेखिओ दूजा नाही री कोऊ। खंड दीप सभ भीतरि रविआ पूरि रहिओ सभ लोऊ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगंमा कवन महिमा मनु जीवै सुनि सोऊ। चारि आसरम चारि बरंना मुकति भए सेव तोऊ ॥ १ ॥ गुरि सबदु द्रिड़ाइआ परम पदु पाइआ दुतीअ गए सुख होऊ। कहु नानक भवसागरु तरिआ हरि निधि पाई सहजोऊ ॥ २ ॥ २ ॥ ३३ ॥

हे बहन ! मैंने इस बहुरंगी विश्व को देख लिया है, मुझे इसमें परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं दिखता। हे बहन ! पृथ्वी के समस्त खण्डों, देशों तथा समस्त प्राणियों में परमात्मा ही मौजूद है, समस्त लोकों में परमात्मा व्यापक है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा अपहुँच है, सब जीवों की बुद्धि उस तक नहीं पहुँच सकती; उसकी महानता कोई भी वर्णन नहीं कर सकता। हे बहन ! उसकी शोभा सुन-सुनकर मेरे मन को आत्मिक जीवन मिल गया है। चारों आश्रमों तथा चारों वर्णों के जीव उसकी सेवा-भक्ति करके माया के जंजाल से मुक्त हो जाते हैं ॥ १ ॥ नानक का कथन है कि जिस मनुष्य के भीतर गुरु ने अपना ज्ञान दृढ़ कर टिका दिया, उस मनुष्य ने सर्वोच्च आत्मिक स्थान प्राप्त कर लिया। उसके भीतर से अपने-पराए की भावना समाप्त हो गई, उसने परमात्मा का नाम-भण्डार प्राप्त कर लिया और उसे आत्मिक स्थिरता प्राप्त हो गई ॥ २ ॥ २ ॥ ३३ ॥

रागु देव गंधारी महला ५ घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ एकै रे हरि एकै जान। एकै रे गुरमुखि जान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहे भ्रमत हउ तुम भ्रमहु न भाई रविआ रे रविआ स्रब थान ॥ १ ॥ जिउ बैसंतरु कासट मझारि। बिनु संजम नही कारज सारि। बिनु गुर न पावैगो हरि जी को दुआर। मिलि संगति तजि अभिमान कहु नानक पाए है परम निधान ॥ २ ॥ १ ॥ ३४ ॥

हे भाई ! सर्वत्र एक परमात्मा को ही परिव्याप्त समझ। (गुरु की शरण लेकर एक परमात्मा को ही सर्वत्र मान) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई। तुम क्यों परेशान होते हो ? दुविधा छोड़ दो। हे भाई ! परमात्मा सर्वत्र परिव्याप्त है ॥ १ ॥ हे भाई ! जैसे लकड़ी में आग है,

लेकिन बिना किसी युक्ति के अग्नि तथा उसके द्वारा किए जानेवाले कार्य पूर्ण नहीं किए जा सकते; इसी प्रकार परमात्मा सर्वत्र है, लेकिन गुरु के मिले बिना कोई मनुष्य परमात्मा का द्वार प्राप्त नहीं कर सकेगा। नानक का कथन है कि सत्संगति में रहकर और अपना अहंकार त्यागकर सर्वश्रेष्ठ नाम-भण्डार मिल जाता है ॥ २ ॥ १ ॥ ३४ ॥

॥ देव गंधारी ५ ॥ जानी न जाई ताकी गाति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कह पेखारउ हउ करि चतुराई बिसमन बिसमे कहन कहाति ॥ १ ॥ गण गंधरब सिध अरु साधिक। सुरि नर देव ब्रहम ब्रहमादिक। चतुर बेद उचरत दिनु राति। अगम अगम ठाकुरु आगाधि। गुन बेअंत बेअंत भनु नानक। कहनु न जाई परै पराति ॥ २ ॥ २ ॥ ३५ ॥

हे भाई! उस परमात्मा की आत्मिक अवस्था नहीं समझी जा सकती (कि वे कैसे है?) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! मैं अपनी बुद्धि का बल लगाकर उस परमात्मा को कहाँ दिखाऊँ? जो मनुष्य उस प्रभु को अभिव्यक्त करने का यत्न करते हैं, वे भी हैरान ही रह जाते हैं ॥ १। हे भाई! शिवजी के गण, देव-गायक (गन्धर्व), करामाती योगी, योग-साधना करनेवाले, दैवी गुणों वाले मनुष्य, देवता, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मा आदि बड़े देवता तथा चारों वेद रात-दिन उस प्रभु का वर्णन करते हैं। फिर भी उस परमात्मा तक पहुँच नहीं हो सकती, वह अगम्य और अथाह है। नानक का कथन है कि हरि के गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। वह अनन्त, अव्यक्त और अपरम्पार है ॥ २ ॥ २ ॥ ३५ ॥

॥ देव गंधारी महला ५ ॥ धिआए गाए करनैहार। भउ नाही सुख सहज अनंदा अनिक ओही रे एक समार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल मूरति गुरु मेरै माथै। जत कत पेखउ तत तत साथै। चरन कमल मेरे प्रान अधार ॥ १ ॥ समरथ अथाह बडा प्रभु मेरा। घट घट अंतरि साहिबु नेरा। ताकी सरनि आसर प्रभ नानक। जाका अंतु न पारावार ॥२॥३॥३६॥

हे भाई! जो मनुष्य सृजनहार कर्तार का चिन्तन करता है और उसके गुण गाता है, उस मनुष्य को कोई भय स्पर्श नहीं कर सकता और उसे आत्मिक स्थिरता के सुख तथा आनन्द मिले रहते हैं। हे भाई! तू उस कर्तार को अपने हृदय में सँभालकर रख, वही एक है और वही अनेक रूपों वाला है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! जिस गुरु का दर्शन जीवन

का फल देनेवाला है, वही मेरी रक्षा करनेवाला है। मैं जिधर देखता हूँ, उधर ही परमात्मा मुझे अपने साथ बसता हुआ प्रतीत होता है, उस परमात्मा के सुन्दर चरण मेरी आत्मा का आसरा बन गए हैं ॥ १ ॥ नानक का कथन है कि मैंने उस प्रभु की शरण देखी है, उस प्रभु का आसरा देखा है, जिसके स्वरूप का ओर-छोर नहीं मिल सकता ॥ २ ॥ ३ ॥ ३६ ॥

॥ देव गंधारी महला ५ ॥ उलटी रे मन उलटी रे। साकत सिउ करि उलटी रे। झूठै की रे झूठु परीति छुटकी रे मन छुटकी रे साकत संगि न छुटकी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ काजर भरि मंदरु राखिओ जो पैसे कालूखी रे। दूरहु ही ते भागि गइओ है जिसु गुर मिलि छुटकी त्रिकुटी रे ॥ १ ॥ मागउ दानु क्रिपाल क्रिपानिधि मेरा मुखु साकत संगि न जुटसी रे। जन नानक दास दास को करीअहु मेरा मूंडु साध पगा हेठि रुलसी रे ॥ २ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

हे मेरे मन! जो मनुष्य परमात्मा से हमेशा टूटे रहते हैं, उनसे अपने आप को सदा अलग रख। हे मन! शाक्त मनुष्य के प्रेम को मिथ्या ही समझ, इसका निर्वाह अन्त तक कभी नहीं होता; अवश्य ही यह विच्छिन्न हो जाता है। फिर शाक्त की संगति में रहते हुए विकारों से कभी मुक्ति नहीं होती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मन! जिस प्रकार कोई घर काजल से भर लिया जाए, उसमें जो भी मनुष्य प्रविष्ट होगा, वह कालिख से भर जाएगा (उसी प्रकार प्रभु से वियुक्त मनुष्य के मुख पर कालिख ही लगेगी)। गुरु को मिलकर जिस मनुष्य के मस्तक की टेढ़ी भृकुटी सीधी हो जाती है, वह दूर से ही शाक्त (नास्तिक) मनुष्य से अलग रहता है ॥ १ ॥ हे कृपा के घर प्रभु! हे कृपा के भण्डार प्रभु! मैं तुमसे एक याचना करता हूँ कि मेरा किसी नास्तिक से सम्पर्क न हो। दास नानक का कथन है कि हे प्रभु! मुझे अपने दासों का दास बना लो, मेरा सिर तुम्हारे सन्तों के चरणों के नीचे पड़ा रहे ॥ २ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

राग देव गंधारी महला ५ घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सभ दिन के समरथ पंथ बिठुले हउ बलि बलि जाउ। गावन भावन संतन तोरै चरन उवा कै पाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जासन बासन सहज केल करुणामै एक अनंत अनूपै ठाउ ॥ १ ॥ रिधि सिधि निधि कर तल जग जीवन

स्रब नाथ अनेकै नाउ । दइआ मइआ किरपा नानक कउ सुनि सुनि जसु जीवाउ ।। २ ।। १ ।। ३८ ।। ६ ।। ४४ ।।

हे माया के प्रभाव से अलग रहनेवाले प्रभु ! मैं उन सन्तों के चरणों में पड़ा रहूँ और उन सन्तों पर बलिहारी जाता रहूँ, जो तुम्हारी गुणस्तुति के गीत गाते रहते हैं; जो तुम्हें भले लगते हैं और जो हमेशा जीवनमार्ग बतलाने के योग्य हैं ।। १ ।। रहाउ ।। हे दयास्वरूप प्रभु ! (मैं उन सन्तों के चरणों में पड़ा रहूँ), जिन्हें कोई दूसरी इच्छा नहीं, जो-सदा आत्मिक स्थिरता का आनन्द महसूस करते हैं और जो सदा तुम्हारे अनन्त तथा सुन्दर स्वरूप में टिके रहते हैं ।। १ ।। हे जगत के जीवन, सर्वेश्वर और अनेक नामों वाले प्रभु ! ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ और निधियाँ तेरी हथेलियों पर सदा टिकी रहती हैं । हे प्रभु ! अपने दास नानक पर दया करो, कृपा करो ताकि तुम्हारी गुणस्तुति सुन-सुनकर मैं नानक आत्मिक जीवन प्राप्त करता रहूँ ।। २ ।। १ ।। ३८ ।। ६ ।। ४४ ।।

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। रागु देव गंधारी महला ९ ।।

यह मनु नैक न कहिओ करै । सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ।। १ ।। रहाउ ।। मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै । करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरे ।। १ ।। सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै । कहु नानक भजु राम नाम नित जाते काजु सरै ।। २ ।। १ ।।

हे भाई ! यह मन तनिक मात्र भी मेरा कहना नहीं मानता । मैं अपनी ओर से इसे शिक्षा देकर थक गया हूँ, लेकिन फिर भी यह दुर्बुद्धि से हटता नहीं ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! माया के नशे में यह मन पागल हुआ पड़ा है, कभी यह परमात्मा की गुणस्तुति की वाणी नहीं उच्चरित करता, दिखावा करके दुनिया को ठगता रहता है और (ठगी द्वारा) अपना पेट भरता रहता है ।। १ ।। हे भाई ! कुत्ते की पूँछ की तरह यह मन कभी भी सीधा नहीं होता और दी हुई शिक्षा को ध्यानपूर्वक नहीं सुनता । नानक का कथन है कि हे मन ! परमात्मा के नाम का भजन किया कर, जिसके प्रभावस्वरूप जन्म-मनोरथ पूर्ण हो जाए ।। २ ।। १ ।।

।। देव गंधारी महला ९ ।। सभि किछु जीवत को बिवहार । मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ।। १ ।। रहाउ ।।

तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि । आध घरी कोऊ नहि राखै घरि ते देत निकारि ॥ १ ॥ म्रिगत्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि । कहु नानक भजु राम नाम नित जाते होत उधार ॥ २ ॥ २ ॥

हे भाई ! माँ, बाप, भाई, पुत्र, रिश्तेदार तथा पत्नी भी —सब कुछ जीवित रहते हुए (व्यक्तियों का) मेल-मिलाप है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जब आत्मा शरीर से अलग हो जाती है, तो सगे-सम्बन्धी उच्च स्वर से कहते हैं कि यह मर चुका है, गुज़र चुका है । कोई भी सम्बन्धी आधी घड़ी के लिए भी घर में नहीं रखता, घर से बाहर निकाल देते हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! अपने हृदय में विचार कर देख लो, यह सांसारिक क्रीड़ा मृगतृष्णा के तुल्य है । नानक का कथन है कि हे भाई ! सदा परमात्मा के नाम का भजन किया करो, जिसके प्रभाव से संसार से उद्धार होता है ॥ २ ॥ २ ॥

॥ देव गंधारी महला ९ ॥ जगत मै झूठी देखी प्रीति । अपने ही सुख सिउ सभि लागे किआ दारा किआ मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत । अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥ १ ॥ मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत । नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥ ३८ ॥ ४७ ॥

हे भाई ! दुनिया में सम्बन्धियों का प्रेम मैंने मिथ्या ही देखा है । चाहे स्त्री हो या मित्र —सब अपने-अपने सुख की ख़ातिर आदमी के साथ लगे हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! सबका हृदय मोह से बँधा हुआ है । प्रत्येक यही कहता है कि 'यह मेरा है', 'यह मेरा है' लेकिन अन्तिम समय में कोई मित्र नहीं बनता । यह आश्चर्य मर्यादा सदा से चली आ रही है ॥ १ ॥ हे मूर्ख मन ! तुझे मैं कह-कहकर थक गया हूँ, तू अभी भी नहीं समझता । नानक का कथन है कि जब मनुष्य परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता है, तब संसार-सागर से उसका उद्धार हो जाता है ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥ ३८ ॥ ४७ ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु बिहागड़ा चउपदे महला ५ घरु २ ॥ दूतन संगरीआ। भुइअंगनि बसरीआ। अनिक उपरीआ ॥ १ ॥ तउ मै हरि हरि करीआ। तउ सुख सहजरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथन मोहरीआ। अनक उमेरीआ। विचि घूमन घिरीआ ॥ २ ॥ सगल बटरीआ। बिरख इकतरीआ। बहु बंधहि परीआ ॥३॥ थिरु साध सफरीआ। जह कीरतनु हरीआ। नानक सरनरीआ ॥ ४ ॥ १ ॥

हे भाई ! कामादिक वैरियों की संगति सर्पों के साथ रहने के बराबर है, इन्होंने अनेकों मनुष्यों के जीवन को बरबाद किया है ॥ १ ॥ इसीलिए मैं सदा परमात्मा का स्मरण करता हूँ तभी (नाम-स्मरण से) मुझे आत्मिक टिकाव के सुख प्राप्त हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जीव को मिथ्या मोह चिपटा है, सब पदार्थों को 'मेरे-मेरे' समझता रहता है, सारी उम्र मोह के उलझाव में फँसा रहता है ॥ २ ॥ हे भाई ! समस्त जीव यात्री ही हैं, संसार-वृक्ष के नीचे एकत्रित हैं, लेकिन माया के असंख्य बन्धनों में फँसे हुए हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! केवल गुरु की संगति ही शाश्वत ठिकाना है क्योंकि परमात्मा की गुणस्तुति होती रहती है। नानक का कथन है कि मैं सत्संगति का शरणागत हूँ ॥ ४ ॥ १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बिहागड़ा महला ९ ॥ हरि की गति नहि कोऊ जानै। जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे। रीते भरे भरे सखनावै यह ताको बिवहारे ॥ १ ॥ अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखन हारा। नाना रूपु धरे बहुरंगी सभ ते रहै निआरा ॥ २ ॥ अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ। सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥३॥१॥२॥

हे भाई ! अनेक योगी, तपस्वी तथा अन्य बहुत से बुद्धिमान मनुष्य

साधना करके हार गए हैं, लेकिन कोई भी मनुष्य यह नहीं जान सकता कि परमात्मा कैसा है ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! वह परमात्मा एक क्षण में निर्धन को राजा बना देता है और राजा को निर्धन बना देता है । खाली बर्तनों को भर देता है और भरे हुए बर्तनों को खाली कर देता है —यह उसका नित्यप्रति का कार्य है ।। १ ।। इस दृश्यमान जगत रूपी तमाशे में परमात्मा ने अपनी माया फैलाई हुई है, वह आप ही इसकी देखभाल कर रहा है । वह अनेक रंगों का स्वामी-प्रभु कई प्रकार के रूप धारण कर लेता है और सब रूपों से अलग भी रहता है ।। २ ।। हे भाई ! उस परमात्मा के गुण गणना से परे हैं, वह अनन्त, अदृश्य तथा निर्लिप्त है, उस परमात्मा ने ही सारे जगत को दुबिधा में डाला हुआ है । नानक का कथन है कि जिस मनुष्य ने उसके चरणों में मन लगाया है, वह माया की दुबिधाएँ त्यागकर ही लगाया है ।। ३ ।। १ ।। २ ।।

रागु बिहागड़ा छंत महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि । हरि हरि नामु धिआईऐ मेरी जिंदुड़ीए गुरमुखि नामु अमोले राम । हरि रसि बीधा हरि मनु पिआरा मनु हरि रसि नामि झकोले राम । गुरमति मनु ठहराईऐ मेरी जिंदुड़ीए अनत न काहू डोले राम । मन चिंदिअड़ा फलु पाइआ हरि प्रभु गुण नानक बाणी बोले राम ।।१।। गुरमति मनि अंम्रितु वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीए मुखि अंम्रित बैण अलाए राम । अंम्रित बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीए मनि सुणीऐ हरि लिव लाए राम । चिरी विछुंना हरि प्रभु पाइआ गलि मिलिआ सहजि सुभाए राम । जन नानक मनि अनदु भइआ है मेरी जिंदुड़ीए अनहत सबद वजाए राम ।। २ ।। सखी सहेली मेरीआ मेरी जिंदुड़ीए कोई हरि प्रभु आणि मिलावै राम । हउ मनु देवउ तिसु आपणा मेरी जिंदुड़ीए हरि प्रभ की हरि कथा सुणावै राम । गुरमुखि सदा अराधि हरि मेरी जिंदुड़ीए मन चिंदिअड़ा फलु पावै राम । नानक भजु हरि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए वडभागी नामु धिआवै राम ।। ३ ।। करि किरपा प्रभ आइ मिलु मेरी जिंदुड़ीए गुरमति नामु परगासे राम । हउ हरि बाझु उडीणीआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ जल बिनु कमल उदासे राम । गुरि पूरै मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सजणु हरि प्रभु पासे राम ।

धनु धनु गुरू हरि दसिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि बिगासे राम ॥ ४ ॥ १ ॥

हे मेरी सुन्दर आत्मा ! सदा परमात्मा का नाम स्मरण करना चाहिए, उसका अमूल्य नाम गुरु के माध्यम से मिलता है। जो मन परमात्मा के नाम-रस में लग जाता है, वह मन परमात्मा को प्रिय लगता है और वह आनन्दपूर्वक प्रभु के नाम में डुबकी लगाए रखता है। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! गुरु की शिक्षा का अनुसरण कर इस मन को टिकाना चाहिए क्योंकि गुरु के ज्ञान द्वारा यह किसी तरफ़ भी आकर्षित नहीं होता। हे नानक ! जो मनुष्य प्रभु के गुणों से भरपूर वाणी का उच्चारण करता है, वह मनोवांछित फल पा लेता है ॥ १ ॥ हे जीवात्मा ! गुरु की शिक्षा के प्रभाव से जिस मनुष्य के मन में आत्मिक जीवन के देनेवाले नाम-जल का टिकाव हो जाता है, वह अपने मुँह द्वारा आत्मिक जीवन प्रदान करनेवाली वाणी उच्चरित करता रहता है। हे आत्मा ! परमात्मा की भक्ति करनेवाले मनुष्यों की वाणी आत्मिक जीवन देनेवाली है, परमात्मा के चरणों में सुरति जोड़कर वह वाणी ध्यानपूर्वक सुननी चाहिए। वाणी के श्रोता मनुष्य को चिरकाल का बिछुड़ा हुआ परमात्मा आ मिलता है, आत्मिक स्थिरता तथा प्रेम के कारण उसके गले लग जाता है। दास नानक का कथन है कि हे आत्मा ! उस मनुष्य के मन में आत्मिक आनन्द बना रहता है और वह अपने भीतर निरन्तर गुणस्तुति की वाणी का बाजा बजाता रहता है ॥ २ ॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा ! (तू यह कह कि) यदि कोई पक्ष मेरा हरि-प्रभु लाकर मुझे मिला दे, यदि कोई मुझे परमात्मा की गुणस्तुति की बातें सुनाया करे, तो मैं अपना मन उसके हवाले कर दूँ। हे मेरी आत्मा ! गुरु का शरणागत हो परमात्मा का नाम स्मरण किया कर (क्योंकि नाम-स्मरण करनेवाला मनुष्य) मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! परमात्मा की शरण में रह। सौभाग्यशाली मनुष्य ही परमात्मा का नाम स्मरण करता है ॥ ३ ॥ (प्रभु से प्रार्थना कर कि) हे प्रभु ! कृपा करके मुझे मिल। गुरु की शिक्षा पर चलकर ही हरि-नाम हृदय में चमकता है। हे मेरी आत्मा ! (यह कह कि) परमात्मा के बिना कुम्हलाई हुई हूँ, जैसे पानी के बिना कमल-पुष्प कुम्हलाया रहता है। जिसे पूर्णगुरु ने सज्जन हरि मिला दिया, उसे हरि-प्रभु अपने साथ-साथ बसता हुआ दिखाई दे जाता है। दास नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! गुरु प्रशंसनीय है, हमेशा प्रशंसनीय है। गुरु ने जिसे परमात्मा का पता बता दिया, वह नाम के प्रभाव से सुखी हो जाता है अर्थात् उसका हृदय खिल उठता है ॥ ४ ॥ १ ॥

।। रागु बिहागड़ा महला ४ ।। अंम्रितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए अंम्रितु गुरमति पाए राम । हउमै माइआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीए हरि अंम्रिति बिखु लहि जाए राम । मनु सुका हरिआ होइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हरि नामु धिआए राम । हरि भाग वडे लिखि पाइआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि समाए राम ।। १ ।। हरि सेती मनु बेधिआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक लगि दुध खीरे राम । हरि बिनु सांति न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए जिउ चात्रिकु जल बिनु टेरे राम । सतिगुर सरणी जाइ पउ मेरी जिंदुड़ीए गुण दसे हरि प्रभ केरे राम । जन नानक हरि मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए घरि वाजे सबद घणेरे राम ।। २ ।। मनमुखि हउमै विछुड़े मेरी जिंदुड़ीए बिखु बाधे हउमै जाले राम । जिउ पंखी कपोति आपु बन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए तिउ मनमुख सभि वसि काले राम । जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से मनमुख मूड़ बिताले राम । जन त्राहि त्राहि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए गुर नानक हरि रखवाले राम ।। ३ ।। हरि जन हरि लिव उबरे मेरी जिंदुड़ीए धुरि भाग वडे हरि पाइआ राम । हरि हरि नामु पोतु है मेरी जिंदुड़ीए गुर खेवट सबदि तराइआ राम । हरि हरि पुरखु दइआलु है मेरी जिंदुड़ीए गुर सतिगुर मीठ लगाइआ राम । करि किरपा सुणि बेनती हरि हरि जन नानक नामु धिआइआ राम ।। ४ ।। २ ।।

हे मेरी सुन्दर आत्मा ! परमात्मा का नाम आत्मिक जीवन देनेवाला जल है, यह नाम-जल गुरु की शिक्षा पर चलने से ही मिलता है । अहंकार विष है, माया (का आकर्षण) विष है, यह विष नाम-जल से उतर जाता है । हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जो मनुष्य सदा परमात्मा का नाम स्मरण करता रहता है, उसका सूखा हुआ मन हरा हो जाता है । दास नानक का कथन है कि हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जिस मनुष्य को पूर्वकृत कर्मों के अनुसार सौभाग्यवश परमात्मा मिल जाता है, वह सदा परमात्मा के नाम में लीन रहता है ।। १ ।। हे मेरी आत्मा ! जिस मनुष्य का मन परमात्मा में ऐसे रम जाता है, जैसे बच्चे का मन दूध का अभ्यस्त हो जाता है, हे मेरी सुन्दर आत्मा ! उस मनुष्य को परमात्मा के मिलाप के बिना शान्ति नहीं होती । (वह प्रभु से अलग हो ऐसे व्याकुल रहता है), जैसे चातक स्वाति की बूंद को पुकारता रहता है । हे आत्मा ! गुरु का शरणागत हो, गुरु ही परमात्मा के गुणों का पता बतलाता है । दास

नानक का कथन है कि हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जिस मनुष्य को गुरु ने परमात्मा मिला दिया, उसके हृदय-घर में (मानो) अनेक सुन्दर बाजे बजते रहते हैं ।। २ ।। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! स्वेच्छाचारी मनुष्य अहंत्व के कारण परमात्मा से अलग हो जाते हैं, माया का विष (उन्हें भीतरी रूप से समाप्त कर देता है), वे अहंकार के जाल में बँधे रहते हैं । हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जैसे कबूतर आदि अपने आप को जाल में फँसा देते हैं, वैसे ही स्वेच्छाचारी मनुष्य आत्मिक मृत्यु के वश में आए रहते हैं । जो मनुष्य माया-मोह में अपना हृदय लगाए रखते हैं, वे स्वेच्छाचारी मनुष्य मूर्ख होते हैं, वे जीवन के सही आचरण से भ्रष्ट रहते हैं । नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! परमात्मा के सेवक परमात्मा की शरण आते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हमें बचा लो । गुरु तथा परमात्मा उनके रक्षक बनते हैं ।। ३ ।। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! परमात्मा के भक्त उनके चरणों में मन लगाकर संसार-समुद्र से बच निकलते हैं, परमात्मा के दरबार से ही लिखे लेख के अनुसार सौभाग्यवश वे परमात्मा को मिलते हैं । हे मेरी सुन्दर आत्मा ! परमात्मा का नाम जहाज़ है, गुरु रूपी मल्लाह के शब्द ने भक्तों को संसार-समुद्र से पार उतार दिया । हे मेरी सुन्दर आत्मा ! सर्वव्यापक परमात्मा सदा ही दयालु है, सतिगुरु की शरण लेने से वह परमात्मा प्यारा महसूस होने लगता है । दास नानक का कथन है कि हे हरि ! कृपा करो, मेरी प्रार्थना सुनो । (मैं तुम्हारा नाम स्मरण करूँ क्योंकि वे सभी पार उतर गए जिन्होंने) तुम्हारा नाम स्मरण किया ।।४।।२।।

।। बिहागड़ा महला ४ ।। जगि सुक्रितु कीरति नामु है मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरति हरि मनि धारे राम । हरि हरि नामु पवितु है मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि नामु उधारे राम । सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिंदुड़ीए मलु गुरमुखि नामि उतारे राम । वडपुंनी हरि धिआइआ जन नानक हम मूरख मुगध निसतारे राम ।। १ ।। जो हरि नामु धिआइदे मेरी जिंदुड़ीए तिना पंचे वसगति आए राम । अंतरि नव निधि नामु है मेरी जिंदुड़ीए गुरु सतिगुरु अलखु लखाए राम । गुरि आसा मनसा पूरीआ मेरी जिंदुड़ीए हरि मिलिआ भुख सभ जाए राम । धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक हरि गुण गाए राम ।। २ ।। हम पापी बलवंचीआ मेरी जिंदुड़ीए परद्रोही ठग माइआ राम । वडभागी गुरु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए गुरि पूरै गति मिति पाइआ राम । गुरि अंम्रितु हरि मुखि

चोइआ मेरी जिंदुड़ीए फिरि मरदा बहुड़ि जीवाइआ राम। जन नानक सतिगुर जो मिले मेरी जिंदुड़ीए तिन के सभ दुख गवाइआ राम ॥ ३ ॥ अति ऊतमु हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए जितु जपिऐ पाप गवाते राम। पतित पवित्र गुरि हरि कीए मेरी जिंदुड़ीए चहु कुंडी चहु जुगि जाते राम। हउमै मैलु सभ उतरी मेरी जिंदुड़ीए हरि अंम्रिति हरिसरि नाते राम। अपराधी पापी उधरे मेरी जिंदुड़ीए जन नानक खिनु हरि राते राम ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मेरी सुन्दर आत्मा ! परमात्मा की गुणस्तुति करना और नाम जपना संसार में सर्वोत्तम कर्म है। तू भी परमात्मा की गुणस्तुति किया कर और परमात्मा का नाम अपने भीतर टिकाए रख। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! परमात्मा का नाम पवित्र करनेवाला है, तू भी उसका नाम जपा कर क्योंकि नाम (संसार-समुद्र में डूबने से) बचा लेता है। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! (नाम-स्मरण करनेवाले मनुष्य ने) अपने सारे पाप, सारे दुख दूर कर लिये, वह मनुष्य गुरु की शरण लेकर हरि-नाम के प्रभाव से विकारों का मैल उतार देता है। दास नानक का कथन है कि सौभाग्यवश ही परमात्मा का नाम स्मरण किया जा सकता है। परमात्मा का नाम हमारे जैसे मूर्खों, महामूर्खों को भी संसार-समुद्र से पार उतार लेता है ॥१॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जो मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं, कामादिक पाँचों वैरी उनके अधीनस्थ हो जाते हैं, दुनिया के नौ ख़ज़ानों की बराबरी करनेवाला हरि-नाम उनके मन में आ बसता है। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! गुरु उन्हें उस परमात्मा की समझ दे देता है, जिस तक मनुष्य की अपनी समझ नहीं पहुँच सकती। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! गुरु ने जिन मनुष्य की इच्छा तथा मन का स्वप्न पूर्ण कर दिया, उन्हें परमात्मा मिल गया और उनकी माया सम्बन्धी सारी भूख उतर जाती है। दास नानक का कथन है कि परमात्मा ने अपनी दरबार से ही जिस मनुष्य के मस्तक पर लेख लिख दिया, वह सदा परमात्मा के गुण गाता रहता है ॥२॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा ! हम जीव पापी हैं, छल-फ़रेब करनेवाले हैं, दूसरों के साथ धोखा करनेवाले हैं, माया के लिए ठगी करनेवाले हैं। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जिस भाग्यशाली ने गुरु पा लिया, उसने पूर्णगुरु के माध्यम से उच्च आत्मिक जीवन की मर्यादा प्राप्त कर ली। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जिस मनुष्य के मुँह में गुरु ने आत्मिक जीवन का दाता नाम-जल गिरा दिया, उस आत्मिक मृत्यु को मरते हुए मनुष्य को गुरु ने आत्मिक जीवन प्रदान कर दिया। दास नानक का कथन है कि हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जो मनुष्य गुरु को मिले, उनके समस्त दुख गुरु ने दूर कर दिए ॥ ३ ॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा ! परमात्मा का नाम अत्यन्त श्रेष्ठ

है, इस नाम के जपने से सारे पाप मिट जाते हैं। हे मेरी सुन्दर आत्मा! गुरु ने हरि-नाम देकर विकार-ग्रस्त मनुष्यों को भी पवित्र बना दिया, वे सारे संसार में हमेशा के लिए प्रसिद्ध हो गए। हे मेरी सुन्दर आत्मा! जिन मनुष्यों ने आत्मिक जीवन के दाता हरिनाम-जल में, हरिनाम-सरोवर में स्नान किया, उन मनुष्यों के अहंत्व का सारा मैल उतर गया। दास नानक का कथन है कि हे मेरी सुन्दर आत्मा! जो विकारी तथा पापी व्यक्ति भी क्षण मात्र के लिए हरिनाम-रंग में रँग गए, वे संसार-समुद्र में डूबने से बच गए ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ हउ बलिहारी तिन्ह कउ मेरी जिंदुड़ीए जिन्ह हरि हरि नामु अधारो राम। गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मेरी जिंदुड़ीए बिखु भउजलु तारणहारो राम। जिन इक मनि हरि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए तिन संत जना जैकारो राम। नानक हरि जपि सुखु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए सभि दूख निवारणहारो राम ॥ १ ॥ सा रसना धनु धंनु है मेरी जिंदुड़ीए गुण गावै हरि प्रभ केरे राम। ते स्रवन भले सोभनीक हहि मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम। सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिंदुड़ीए जो जाइ लगै गुर पैरे राम। गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि हरि हरि नामु चितेरे राम ॥ २ ॥ ते नेत्र भले परवाणु हहि मेरी जिंदुड़ीए जो साधू सतिगुरु देखहि राम। ते हसत पुनीत पवित्र हहि मेरी जिंदुड़ीए जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम। तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिंदुड़ीए जो मारगि धरम चलेसहि राम। नानकु तिन विटहु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सुणि हरिनामु मनेसहि राम ॥ ३ ॥ धरति पातालु आकासु है मेरी जिंदुड़ीए सभ हरि हरि नामु धिआवै राम। पउणु पाणी बैसंतरो मेरी जिंदुड़ीए नित हरि हरि हरि जसु गावै राम। वणु त्रिणु सभु आकारु है मेरी जिंदुड़ीए मुखि हरि हरि नामु धिआवै राम। नानक ते हरि दरि पैन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए जो गुरमुखि भगति मनु लावै राम ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे मेरी सुन्दर आत्मा! तू यह कह कि मैं उन पर बलिहारी हूँ, जिन्होंने परमात्मा के नाम को अपना आश्रय बनाया है। हे आत्मा! गुरु ने उनके हृदय में परमात्मा का नाम दृढ़ कर दिया है। गुरु विष से

आपूरित संसार-समुद्र से पार उतारने की सामर्थ्य रखता है। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जिन सन्तजनों ने एकाग्रचित होकर परमात्मा का नाम स्मरण किया है, उनकी शोभा-प्रशंसा होती है। नानक का कथन है कि हे मेरी सुन्दर आत्मा ! परमात्मा का नाम जपकर सुख मिलता है और वह समस्त दुख दूर करने की सामर्थ्य रखनेवाला है ॥ १ ॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा ! वह जिह्वा भाग्यशाली है, जो परमात्मा का गुणगान करती रहती है। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! वे कर्ण सुन्दर हैं, जो प्रभु का कीर्तन सुनते हैं, वह शीश भाग्यशाली है, पवित्र है, जो परमात्मा के चरणों का स्पर्श करता है। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! नानक उस गुरु पर बलिहारी है, जिसने परमात्मा का नाम स्मरण कराया है ॥२॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा ! वे आँखें भाग्यशाली हैं, जो गुरु के दर्शन करती रहती हैं, वे हाथ पवित्र हैं, जो परमात्मा की गुणस्तुति लिखते रहते हैं। उस मनुष्य के पैर सदा पूज्य हैं, जो धर्म के मार्ग का अनुसरण करते रहते हैं। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! नानक उन मनुष्यों पर बलिहारी है, जो परमात्मा का नाम सुनकर नाम को आधार बनाते हैं ॥ ३ ॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा ! धरती, पाताल, आकाश —प्रत्येक परमात्मा का नाम स्मरण कर रहा है। हवा, पानी, अग्नि —प्रत्येक तत्व भी परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गा रहा है। जंगल, घास, यह समस्त दृश्यमान जगत —अपने मुख द्वारा प्रत्येक परमात्मा का नाम जप रहा है। नानक का कथन है कि हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जो जीव गुरु की शरण लेकर परमात्मा की भक्ति में अपना मन लगाते हैं, वे परमात्मा के द्वार पर सत्कृत होते हैं ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ मेरी जिंदुड़ीए ते मनमुख मूड़ इआणे राम। जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से अंति गए पछुताणे राम। हरि दरगह ढोई ना लहन्हि मेरी जिंदुड़ीए जो मनमुख पापि लुभाणे राम। जन नानक गुर मिलि उबरे मेरी जिंदुड़ीए हरि जपि हरि नामि समाणे राम ॥ १ ॥ सभि जाइ मिलहु सतिगुरू कउ मेरी जिंदुड़ीए जो हरि हरि नामु द्रिड़ावै राम। हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिंदुड़ीए मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम। सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु है मेरी जिंदुड़ीए जितु हरि मेरा चिति आवै राम। जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए जम कंकरु नेड़ि न आवै राम ॥ २ ॥ हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिंदुड़ीए सो डरै जिनि पाप

कमते राम। जिसु अंतरु हिरदा सुधु है मेरी जिंदुड़ीए तिनि जनि सभि डर सुटि घते राम। हरि निरभउ नामि पतीजिआ मेरी जिंदुड़ीए सभि झख मारनु दुसट कुपते राम। गुरु पूरा नानकि सेविआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि पैरी आणि सभि घते राम ॥ ३ ॥ सो ऐसा हरि नित सेवीऐ मेरी जिंदुड़ीए जो सभदू साहिबु वडा राम। जिन्ही इक मनि इकु अराधिआ मेरी जिंदुड़ीए तिना नाही किसै दी किछु चडा राम। गुर सेविऐ हरि महलु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए झख मारनु सभि निंदक घंडा राम। जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए धुरि मसतकि हरि लिखि छडा राम ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जिन मनुष्यों ने परमात्मा का नाम स्मरण नहीं किया, वे स्वेच्छाचारी मनुष्य मूर्ख एवं अज्ञानी हैं। जो मनुष्य माया-मोह में अपने मन लगाए रखते हैं, वे अन्तिम समय में हाथ मलते रह जाते हैं। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जो स्वेच्छाचारी मनुष्य पापकर्म में फँसे रहते हैं, वे परमात्मा के दरबार में सहारा प्राप्त नहीं कर सकते। दास नानक का कथन है कि हे सुन्दर आत्मा ! सौभाग्यशाली मनुष्य संसार-समुद्र में डूबने से बच जाते हैं क्योंकि वे परमात्मा का नाम जपकर उसके नाम में तल्लीन रहते हैं ॥ १ ॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा ! यह कह कि सब गुरु को जाकर मिलो क्योंकि वह परमात्मा का नाम हृदय में दृढ़ कर देता है। परमात्मा का नाम जपने में तनिक मात्र भी देर नहीं करनी चाहिए। क्या पता है, अगला श्वास लिया जाय या नहीं। हे सुन्दर आत्मा ! वह समय सौभाग्यपूर्ण है, वह घड़ी भाग्यशाली है, वह वक्त शुभ अथवा कल्याणकारी है, जब प्यारा परमात्मा हृदय में आ बसता है। दास नानक का कथन है कि हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम स्मरण किया है, यमदूत उसके निकट नहीं जाता (मृत्यु का भय उसे स्पर्श नहीं कर सकता) ॥ २ ॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा ! परमात्मा सब कुछ देखता रहता है और सुनता रहता है। जिस मनुष्य ने सारी उम्र पाप कमाए हुए है, वह भयभीत होता है। (लेकिन) हे मेरी सुन्दर आत्मा ! जिस मनुष्य का भीतरी हृदय पवित्र है, वह मनुष्य सारे भय दूर कर देता है। जो मनुष्य निर्भय परमात्मा के नाम में खो जाता है, चाहे तमाम लड़ाकू वैरी अपनी कोशिश करें, लेकिन उसका नुक़सान नहीं कर सकते। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! नानक ने उस पूर्णगुरु की शरण ली है, जिसने सभी को पैरों में लाकर रखा है अर्थात् अधीनस्थ कर रखा है ॥ ३ ॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा ! सदा उस परमात्मा की सेवा-भक्ति करनी चाहिए,

जो सर्वोपरि स्वामी है। जिन मनुष्यों ने मन लगाकर एक परमात्मा का स्मरण किया, उन्हें किसी चीज़ की कोई ललक नहीं रह जाती। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! गुरु का शरणागत होकर परमात्मा का द्वार प्राप्त हो जाता है। तब चाहे समस्त निन्दक अपना बल लगाएँ (उसका नुक़्सान नहीं कर सकते)। दास नानक का कथन है कि हे सुन्दर आत्मा ! उन मनुष्यों ने ही परमात्मा का नाम स्मरण किया है, जिनके मस्तक पर परमात्मा के दरबार से ही स्मरण का लेख लिखा है ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ सभि जीअ तेरे तूं वरतदा मेरे हरि प्रभ तूं जाणहि जो जीइ कमाईऐ राम। हरि अंतरि बाहरि नालि है मेरी जिंदुड़ीए सभ वेखै मनि मुकराईऐ राम। मनमुखा नो हरि दूरि है मेरी जिंदुड़ीए सभ बिरथी घाल गवाईऐ राम। जन नानक गुरमुखि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हाजरु नदरी आईऐ राम ॥ १ ॥ से भगत से सेवक मेरी जिंदुड़ीए जो प्रभ मेरे मन भाणे राम। से हरि दरगह पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीए अहिनिसि साचि समाणे राम। तिन कै संगि मलु उतरै मेरी जिंदुड़ीए रंगि राते नदरि नीसाणे राम। नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीए मिलि साधू संगि अघाणे राम ॥ २ ॥ हे रसना जपि गोबिंदो मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि त्रिसना जाए राम। जिसु दइआ करे मेरा पारब्रहमु मेरी जिंदुड़ीए तिसु मनि नामु वसाए राम। जिसु भेटे पूरा सतिगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हरि धनु निधि पाए राम। वडभागी संगति मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हरि गुण गाए राम ॥ ३ ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रहमु प्रभु दाता राम। ताका अंतु न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु बिधाता राम। सरब जीआ प्रतिपालदा मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक पित माता राम। सहस सिआणप नह मिलै मेरी जिंदुड़ीए जन नानक गुरमुखि जाता राम ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १

हे मेरे हरि-प्रभु ! सृष्टि के समस्त जीव तुम्हारे हैं, तुम सभी जीवों में विद्यमान हो, जो कुछ मन में सोचा हुआ होता है, तुम सब जानते हो। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! परमात्मा हमारे भीतर-बाहर साथ-साथ है। जो कुछ हमारे भीतर होता है, वह सब कुछ देखता है, लेकिन हम फिर भी उससे विमुख रहते हैं। हे मेरी सुन्दर आत्मा ! स्वेच्छाचारी मनुष्यों को

परमात्मा दूर रहता हुआ दिखाई देता है, उनकी की हुई साधना व्यर्थ चली जाती है। दास नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा! जिन मनुष्यों ने गुरु का शरणागत हो परमात्मा का नाम स्मरण किया है, उन्हें परमात्मा सर्वत्र बसता दिखाई देता है ॥ १ ॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा! वे मनुष्य भक्त हैं और वही सेवक हैं, जो प्यारे परमात्मा को भले लगते हैं। हे मेरी सुन्दर आत्मा! वे मनुष्य परमात्मा की सेवा में सत्कृत होते हैं और वे ही दिन-रात सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन रहते हैं। हे मेरी सुन्दर आत्मा! उनकी संगति में रहने से विकारों का मैल उतर जाता है, वे सदा प्रभु के प्रेम-रंग में रँगे रहते हैं, उनके मस्तक पर प्रभु की कृपा-दृष्टि का चिह्न होता है। हे मेरी सुन्दर आत्मा! नानक की प्रभु से यह विनती है कि गुरु के सान्निध्य में रहकर माया की तृष्णाओं से उदासीन रहा जाता है (इसलिए मुझ पर गुरु कृपा करें) ॥ २ ॥ हे मेरी जिह्वा! परमात्मा का नाम जपा कर, परमात्मा का नाम जप-जपकर ही माया का लोभ दूर होता है। हे मेरी सुन्दर आत्मा! जिस मनुष्य पर परमात्मा कृपा करता है, उसके मन में अपना नाम दृढ़ कर देता है। जिस मनुष्य को पूर्णगुरु मिल जाता है, वह प्रभु का नाम-धन, नाम-भण्डार प्राप्त कर लेता है। नानक का कथन है कि हे मेरी सुन्दर आत्मा! जिस मनुष्य को सौभाग्यवश गुरु की संगति प्राप्त हो जाती है, वह परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता रहता है ॥ ३ ॥ हे मेरी सुन्दर आत्मा! सभी जीवों को देनें प्रदान करनेवाला प्रभु-हरि प्रत्येक स्थान में बसा हुआ है, वह सृजनहार कर्तार समस्त प्राणियों में व्याप्त है। जैसे माँ-बाप अपने बच्चों को पालते हैं, वैसे ही परमात्मा सब जीवों को पालता है। दास नानक का कथन है कि हे मेरी सुन्दर आत्मा! हज़ारों चतुराइयों से वह परमात्मा प्राप्त नहीं होता, (लेकिन) गुरु का शरणागत होने से उसके साथ अभिन्नता हो जाती है ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १

बिहागड़ा महला ५ छंत घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि का एकु अचंभउ देखिआ मेरे लाल जीउ जो करे सु धरम निआए राम। हरि रंगु अखाड़ा पाइओनु मेरे लाल जीउ आवणु जाणु सबाए राम। आवणु त जाणा तिनहि कीआ जिनि मेदनि सिरजीआ। इकना मेलि सतिगुरु महलि बुलाए इकि भरमि भूले फिरदिआ। अंतु तेरा तूंहै जाणहि तूं सभ महि रहिआ समाए। सचु कहै नानकु सुणहु

संतहु हरि वरतै धरम निआए ।। १ ।। आवहु मिलहु सहेलीहो मेरे लाल जीउ हरि हरि नामु अराधे राम । करि सेवहु पूरा सतिगुरू मेरे लाल जीउ जम का मारगु साधे राम । मारगु बिखड़ा साधि गुरमुखि हरि दरगह सोभा पाईऐ । जिन कउ बिधातै धुरहु लिखिआ तिन्हा रैणि दिनु लिव लाईऐ । हउमै ममता मोहु छुटा जा संगि मिलिआ साधे । जनु कहै नानकु मुकतु होआ हरि हरि नामु अराधे ।। २ ।। कर जोड़िहु संत इकत्र होइ मेरे लाल जीउ अबिनासी पुरखु पूजेहा राम । बहु बिधि पूजा खोजीआ मेरे लाल जीउ इहु मनु तनु सभु अरपेहा राम । मनु तनु धनु सभु प्रभू केरा किआ को पूज चड़ावए । जिसु होइ क्रिपालु दइआलु सुआमी सो प्रभ अंकि समावए । भागु मसतकि होइ जिस कै तिसु गुर नालि सनेहा । जनु कहै नानकु मिलि साध संगति हरि हरि नामु पूजेहा ।। ३ ।। दहदिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइअड़ा घरि आए राम । हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु महि रहिआ समाए राम । सरबे समाणा आपि सुआमी गुरमुखि परगटु होइआ । मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि रसु चोइआ । जहा देखा तहा सुआमी पारब्रहमु सभ ठाए । जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइआ हरि पाइअड़ा घरि आए ।। ४ ।। १ ।।

हे मेरे प्यारे ! मैंने परमात्मा का आश्चर्यजनक तमाशा देखा है कि वह जो कुछ करता है, धर्म के अनुसार करता है, न्यायानुसार करता है। यह जगत उस परमात्मा ने एक अखाड़ा बना दिया है अथवा एक रंगभूमि निर्मित कर दी है, जिसमें सबके लिए जन्मना-मरना निश्चित है। जगत में जीवों का जन्मना-मरना उस परमात्मा ने बनाया है, जिसने यह जगत पैदा किया है। कितने ही जीवों को गुरु के माध्यम से परमात्मा अपनी सेवा में ले लेता है और कितने ही जीव दुबिधा में पड़कर कुमार्गगामी हो गए हैं। हे प्रभु ! तुम अपने अन्त को आप ही जानते हो (और) तुम सारी सृष्टि में व्यापक हो। हे सन्तो ! सुनो, नानक एक अटल नियम बतलाता है कि परमात्मा धर्म और न्याय के अनुसार सृष्टि का व्यापार चला रहा है ।। १ ।। हे मेरे प्यारे ! यह कहो कि हे सन्तजन रूपी सहेलियो ! आओ, मिलकर सत्संग में बैठो (क्योंकि) सत्संगी जीव परमात्मा का नाम सदा स्मरण करता है। हे मेरे प्यारे ! गुरु को अविस्मरणीय मानकर गुरु की शरण लो क्योंकि गुरु की शरण में रहनेवाला अपने जीवन-मार्ग

को सही बना लेता है। गुरु की शरण लेकर दुर्गम जीवन-मार्ग को सहज बनाकर परमात्मा की सेवा में शोभा प्राप्त की जा सकती है। जिन मनुष्यों के मस्तक पर अपने दरबार से ही कर्तार ने भक्ति का लेख लिख दिया है, उन मनुष्यों की सुरति दिन-रात प्रभु-चरणों में लगी रहती है। जब मनुष्य गुरु की संगति करता है, तब उसके भीतर से अहंभावना तथा ममता मिट जाती है और मोह समाप्त हो जाता है। दास नानक का कथन है कि सदा परमात्मा का नाम स्मरण कर मनुष्य (अहंकार के प्रभाव से) स्वतन्त्र हो जाता है ॥ २ ॥ हे सन्तजनो ! सत्संगति में एकत्रित होकर परमात्मा के समक्ष हाथ जोड़कर प्रार्थना किया करो और उस अनश्वर प्रभु की भक्ति किया करो। हे मेरे प्यारे ! मैंने सब प्रकार की पूजाएँ, भेटें खोज करके देख ली हैं, लेकिन वास्तविक आराधना यह है कि यह मन तथा शरीर सब कुछ प्रभु के प्रति अर्पण कर देना चाहिए। (क्योंकि) यह मन, शरीर, यह धन दौलत सब कुछ ईश्वरप्रदत्त है। इसलिए कोई मनुष्य अपनी कौन सी चीज़ भेंट कर सकता है ? जिस मनुष्य पर मालिक-प्रभु कृपालु होता है, दयालु होता है, वह उस परमात्मा के चरणों में लीन होता है (वास्तविक भेंट या पूजा यही है)। जिस मनुष्य के मस्तक पर भाग्य जाग जाता है, उसका अपने गुरु के साथ प्रेम बन जाता है। दास नानक का कथन है कि हे सन्तजनो ! सत्संगति में मिलकर परमात्मा का नाम स्मरण करना चाहिए ॥ ३ ॥ हे मेरे प्यारे ! हम दसों दिशाओं में खोज करते फिरे, लेकिन उस परमात्मा को हृदय-घर में ही पा लिया है। हे मेरे प्यारे ! परमात्मा ने अपने निवासार्थ देह रूपी घर बनाया हुआ है और वह इसमें टिका रहता है। मालिक-प्रभु आप ही समस्त जीवों में व्यापक हो रहा है, लेकिन उसके इस अस्तित्व का प्रकाश गुरु का शरणागत होकर होता है। गुरु जिस मनुष्य के मुँह में आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल, नाम-रस डाल देता है, उसके भीतर से (माया का) अन्धकार मिट जाता है और उसका समस्त दुख दूर हो जाता है। (गुरु-कृपा से) मैं जिधर देखता हूँ, मुझे उस ओर ही परमात्मा विद्यमान दिखाई देता है। दास नानक का कथन है कि गुरु ने मुझे परमात्मा से भेंट करा दी है और मैंने परमात्मा को अपने हृदय-घर में आकर प्राप्त कर लिया है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ रागु बिहागड़ा महला ५ ॥ अति प्रीतम मन मोहना घट सोहना प्रान अधारा राम। सुंदर सोभा लाल गोपाल दइआल की अपर अपारा राम। गोपाल दइआल गोबिंद लालन मिलहु कंत निमाणीआ। नैन तरसन दरस परसन नह नीद रैणि

विहाणीआ। गिआन अंजन नाम बिंजन भए सगल सीगारा। नानकु पइअंपै संत जंपै मेलि कंतु हमारा॥ १॥ लाख उलाहने मोहि हरि जब लगु नह मिलै राम। मिलन कउ करउ उपाव किछु हमारा नह चलै राम। चल चित बित अनित प्रिअ बिनु कवन बिधी न धीजीऐ। खान पान सीगार बिरथे हरि कंत बिनु किउ जीजीऐ। आसा पिआसी रैनि दिनीअरु रहि न सकीऐ इकु तिलै। नानक पइअंपै संत दासी तउ प्रसादि मेरा पिरु मिलै॥ २॥ सेज एक प्रिउ संगि दरसु न पाईऐ राम। अवगन मोहि अनेक कत महलि बुलाईऐ राम। निरगुनि निमाणी अनाथि बिनवै मिलहु प्रभ किरपानिधे। भ्रम भीति खोईऐ सहजि सोईऐ प्रभ पलक पेखत नवनिधे। ग्रिहि लालु आवै महलु पावै मिलि संगि मंगलु गाईऐ। नानकु पइअंपै संत सरणी मोहि दरसु दिखाईऐ॥ ३॥ संतन कै परसादि हरि हरि पाइआ राम। इछ पुंनी मनि सांति तपति बुझाइआ राम। सफला सु दिनस रैणे सुहावी अनद मंगल रसु घना। प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन कवन रसना गुण भना। भ्रम लोभ मोह बिकार थाके मिलि सखी मंगलु गाइआ। नानकु पइअंपै संत जंपै जिनि हरि हरि संजोगि मिलाइआ॥ ४॥ २॥

परमात्मा अत्यन्त प्रिय है, मनभावन है, सब प्राणियों के शरीर में सुशोभित है, सबके जीवन का अवलम्ब है; उस दया के घर, गोपाल प्यारे की अत्यन्त शोभा है, अपरिमित शोभा है। हे दयालु, हे गोपाल, हे प्यारे स्वामी! मुझ तुच्छ (जीवात्मा) को मिलो। मेरी आँखें तुम्हारे दर्शनों का स्पर्श पाने के लिए व्याकुल रहती हैं, मेरी ज़िन्दगी की रात्रि बीतती जा रही है, लेकिन (तुम्हारे मिले बिना) शान्ति नहीं मिल रही है। जिसे गुरु के दिए हुए ज्ञान का सुरमा मिल गया, जिसे आत्मिक रूप से विकसित होने के लिए हरि-नाम रूपी भोजन मिल गया, उसके समस्त शृंगार सफल हो गए। नानक सन्तों के चरण छूता है, उनके आगे प्रार्थना करता है कि मेरा पति-प्रभु मुझे मिलाइए॥ १॥ जब तक परमात्मा नहीं मिलता, तब तक मुझे लाखों उलाहने मिलते रहते हैं, मैं परमात्मा को मिलने के लिए अनेक प्रयत्न करती हूँ, लेकिन मेरा ज़ोर नहीं चलता। प्यारे प्रभु की भेंट के बिना किसी प्रकार भी मन को टिकाव नहीं मिलता; चित्त हमेशा भागता-दौड़ता फिरता है और धन भी हमेशा साथ नहीं रहता। सब खाना-पीना, शृंगार प्रभु-पति के बिना व्यर्थ हैं, प्रभु-पति के बिना

जीवन का कोई पवित्र स्थान नहीं, प्रभु-पति के बिना वासनाएँ, माया सम्बन्धी तृष्णाएँ रात-दिन लगी रहती हैं। तनिक मात्र से समय के लिए भी आत्मा टिकाव की स्थिति में नहीं आती। नानक विनती करता है कि हे गुरु! मैं तुम्हारी दासी आ बनी हूँ, तुम्हारी कृपा से ही मेरा प्रभु-पति मुझे मिल सकता है ॥ २ ॥ हृदय-सेज पर प्रभु-पति मेरे साथ है, लेकिन मुझे वह दृष्टिगोचर नहीं होता। मुझे प्रभु की सेवा में बुलाया भी कैसे जाए? मुझमें तो अनेकों अवगुण हैं। गुणहीन, तुच्छ, निराश्रित जीव-स्त्री प्रार्थना करती है कि हे कृपा के भण्डार प्रभु! मुझे मिल। हे नौ ख़ज़ानों के मालिक-प्रभु! एक निमिष मात्र तेरा दर्शन करने से दुबिधा की दीवार मिट जाती है और आत्मिक स्थिरता में लीनता हो जाती है। जब जीव-स्त्री के हृदय-घर में पति-प्रभु आ बसता है, जब वह पति-प्रभु की सेवा में आ जाती है, तभी प्रभु के साथ मिलकर ख़ुशी का गीत गाया जा सकता है। हे गुरु! नानक तुम्हारे चरणों में आ पड़ा है। तुम्हारा शरणागत है (इसलिए अब मुझे) प्रभु-पति का दर्शन कराइए ॥ ३ ॥ सतिगुरु की कृपा द्वारा मैंने परमात्मा को प्राप्त कर लिया है, मेरी कामना पूर्ण हो गई है, मेरे मन को शीतलता अर्थात् ठण्डक महसूस हुई है और मेरी जलन बुझ गई है। वह दिन शुभ है, वह रात्रि सौभाग्यशालिनी है (क्योंकि) उसके प्रभाव से अनगिनत ख़ुशियाँ आनन्द-आस्वादन अनुभूत हुए हैं, मेरे भीतर प्यारे गोपाल गोविन्दजी प्रकट हो गए हैं। मैं अपनी जिह्वा द्वारा प्रभु-मिलाप के कौन-कौन से गुण बखान करूँ? मेरे भीतर से दुबिधा, लोभ, मोह आदि विकार दूर हो गए हैं, मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ परस्पर मिलकर प्रभु की गुणस्तुति का गीत गा रही हैं। अब नानक गुरु के चरणों में गिर पड़ा है अर्थात् गुरु के चरण पकड़ लिये हैं और गुरु के समक्ष ही प्रार्थना करता रहता है क्योंकि उस गुरु ने मिलाप के लेख के माध्यम से मुझे परमात्मा से मिला दिया है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ करि किरपा गुर पारब्रहम पूरे अनदिनु नामु वखाणा राम। अंम्रित बाणी उचरा हरि जसु मिठा लागै तेरा भाणा राम। करि दइआ मइआ गोपाल गोबिंद कोइ नाही तुझ बिना। समरथ अगथ अपार पूरन जीउ तनु धनु तुम्ह मना। मूरख मुगध अनाथ चंचल बलहीन नीच अजाणा। बिनवंति नानक सरणि तेरी रखि लेहु आवण जाणा ॥ १ ॥ साधह सरणी पाईऐ हरि जीउ गुण गावह हरि नीता राम। धूरि भगतन की मनि तनि लगउ हरि जीउ सभ पतित पुनीता राम। पतिता पुनीता होहि तिन्ह संगि जिन्ह बिधाता पाइआ।

नाम राते जीअ दाते नित देहि चड़हि सवाइआ। रिधि सिधि नवनिधि हरि जपि जिनी आतमु जीता। बिनवंति नानकु वडभागि पाईअहि साध साजन मीता ॥ २ ॥ जिनी सचु वणंजिआ हरि जीउ से पूरे साहा राम। बहुतु खजाना तिंन पहि हरि जीउ हरि कीरतनु लाहा राम। कामु क्रोधु न लोभु बिआपै जो जन प्रभ सिउ रातिआ। एकु जानहि एकु मानहि राम कै रंगि मातिआ। लगि संत चरणी पड़े सरणी मनि तिना ओमाहा। बिनवंति नानकु जिन नामु पलै सेई सचे साहा॥ ३॥ नानक सोई सिमरीऐ हरि जीउ जाकी कल धारी राम। गुरमुखि मनहु न वीसरै हरि जीउ करता पुरखु मुरारी राम। दूखु रोगु न भउ बिआपै जिन्ही हरि हरि धिआइआ। संत प्रसादि तरे भवजलु पूरबि लिखिआ पाइआ। वजी वधाई मनि सांति आई मिलिआ पुरखु अपारी। बिनवंति नानकु सिमरि हरि हरि इछ पुंनी हमारी ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे सर्वोपरि, सर्वगुणसम्पन्न प्रभु! कृपा करो (ताकि) मैं प्रतिपल तुम्हारा नाम स्मरण करता रहूँ, आत्मिक जीवन देनेवाली तुम्हारी वाणी उच्चरित करता रहूँ, तुम्हारी गुणस्तुति का गीत गाता रहूँ और मुझे तुम्हारी रज़ा मीठी लगे। हे गोपाल प्रभु! दया करो, कृपा करो (क्योंकि) तुम्हारे अतिरिक्त मेरा दूसरा कोई सहारा नहीं है। हे समस्त शक्तियों के स्वामी, अकथनीय, अनन्त प्रभु! मेरी यह आत्मा, यह मन, यह शरीर और यह धन—सब कुछ तुम्हारी देन है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु! मैं मूर्ख, महामूर्ख, निराश्रित, चंचल, कमज़ोर, नीच तथा बुद्धिहीन हूँ। मैं तुम्हारा शरणागत हूँ। मुझे जन्म-मरण के चक्र से बचा लो ॥ १ ॥ गुरमुखों की शरण लेने से प्रभु-मिलाप हो जाता है और हम हमेशा प्रभु के गुण गा सकते हैं। हे प्रभुजी! तुम्हारे भक्तों की चरण-धूलि मेरे मन, मेरे मस्तक पर लगती रहे (क्योंकि उसके प्रभाव से) विकारग्रस्त मनुष्य भी पवित्र हो जाते हैं। जिन मनुष्यों ने कर्तार-प्रभु को प्राप्त कर लिया, उनकी संगति में विकारग्रस्त व्यक्ति भी पवित्र जीवन वाले बन जाते हैं। परमात्मा के नाम-रंग में रँगे हुए व्यक्ति आत्मिक जीवन की देन देने योग्य हो जाते हैं। वे यह देनें नित्य देते हैं और यह देनें बढ़ती रहती हैं। जिन मनुष्यों ने परमात्मा का नाम जप कर अपने मन को वश में कर लिया, उन्हें समस्त चामत्कारिक शक्तियों तथा दुनिया के समस्त भण्डार मिल जाते हैं। हे भाई! नानक की प्रार्थना है कि गुरमुख-सज्जन मित्र सौभाग्य के फलस्वरूप ही मिलते हैं ॥ २ ॥

जिन मनुष्यों ने सत्यस्वरूप हरि-नाम का व्यापार किया है, वे भरे भण्डारों वाले साहूकार हैं, उनके पास नाम का बहुत भारी ख़ज़ाना है और वे इस व्यापार में परमात्मा की गुणस्तुति की कमाई प्राप्त करते हैं। जो मनुष्य परमात्मा में अनुरक्त रहते हैं, उन पर काम, क्रोध, लोभ कोई भी अपना क़ब्ज़ा नहीं कर सकता। वे एक परमात्मा से ही गहरा सम्बन्ध रखते हैं, एक परमात्मा को ही मानते हैं और परमात्मा के प्रेम-रंग में मस्त रहते हैं। वे मनुष्य गुरु के चरण पकड़कर परमात्मा की शरण में रहते हैं, उनके मन में (परमात्मा की भेंट का) चाव चढ़ा रहता है। नानक विनती करता है कि जिन मनुष्यों के पास परमात्मा का नाम-धन है, वही ऐसे हैं जो साहूकार बने रहते हैं ॥ ३ ॥ हे नानक ! उस परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, जिसकी सत्ता संसार भर में सक्रिय है। गुरु की शरण लेकर सर्वव्यापक कर्तार प्रभु मन से विस्मृत नहीं होता। जिन मनुष्यों ने परमात्मा का स्मरण किया है, उन पर कोई रोग, दुख, भय आदि अपना क़ब्ज़ा नहीं कर सकता। उन्होंने गुरु की कृपा द्वारा यह संसार-समुद्र पार किया समझो, पूर्व जन्म में किए कर्मों के अनुसार लिखा हुआ लेख उन्हें प्राप्त हो गया। वे प्रोत्साहित हो गए, उनके मन में शान्ति हो गई और उन्हें अनन्त प्रभु मिल गए। नानक प्रार्थना करता है कि परमात्मा का नाम स्मरण करके मेरी भी प्रभु-मिलाप की आशा पूर्ण हो गई है ॥४॥३॥

बिहागड़ा महला ५ घरु २

१ ओं सतिनामु गुरप्रसादि ॥ वधु सुखु रैनड़ीए प्रिअ प्रेमु लगा। घटु दुख नीदड़ीए परसउ सदा पगा। पग धूरि बांछउ सदा जाचउ नाम रसि बैरागनी। प्रिअ रंगि राती सहज माती महा दुरमति तिआगनी। गहि भुजा लीन्ही प्रेम भीनी मिलनु प्रीतम सच मगा। बिनवंति नानक धारि किरपा रहउ चरणह संगि लगा ॥ १ ॥ मेरी सखी सहेलड़ीहो प्रभ कै चरणि लगह। मनि प्रिअ प्रेमु घणा हरि की भगति मंगह। हरि भगति पाईऐ प्रभु धिआईऐ जाइ मिलीऐ हरि जना। मानु मोहु बिकारु तजीऐ अरपि तनु धनु इहु मना। बडपुरख पूरन गुण संपूरन भ्रम भीति हरि हरि मिलि भगह। बिनवंति नानक सुणि मंत्रु सखीए हरिनामु नित नित नित जपह ॥ २ ॥ हरि नारि सुहागणे सभि रंग माणे। रांड न बैसई प्रभ पुरख चिराणे। नह दूख पावै

प्रभ धिआवै धंनि ते बडभागीआ । सुख सहजि सोवहि किलबिख खोवहि नाम रसि रंगि जागीआ । मिलि प्रेम रहणा हरिनामु गहणा प्रिअ बचन मीठे भाणे । बिनवंति नानक मन इछ पाई हरि मिले पुरख चिराणे ।। ३ ।। तितु ग्रिहि सोहिलड़े कोड अनंदा । मनि तनि रवि रहिआ प्रभ परमानंदा । हरि कंत अनंत दइआल स्रीधर गोबिंद पतित उधारणो । प्रभि क्रिपा धारी हरि मुरारी भै सिंधु सागर तारणो । जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा । बिनवंति नानक हरि कंतु मिलिआ सदा केल करंदा ।। ४ ।। १ ।। ४ ।।

हे आत्मिक जीवन की देनेवाली सुन्दर रात्रि ! तू लम्बी होती जा, (मेरे हृदय में) प्रिय प्रभु का प्रेम बना रहे । हे दुखदायक भ्रम-निद्रा ! तू कम होती जा, मैं हमेशा प्रभु के चरणों में लगी रहूँ, मैं प्रभु के चरणों की धूलि चाहती हूँ, मैं सदा यही माँगती हूँ कि उसके नाम के आस्वादन में विरक्त हुई रहूँ, प्यारे प्रभु के प्रेम-रंग में रँगी हुई आत्मिक स्थिरता के आनन्द में मस्त होकर मैं इस बड़ी वैरिन दुर्बुद्धि का त्याग किए रखूँ । प्रभु ने मेरी बाँह पकड़कर मुझे अपनी बना लिया है, मैं उसके प्रेम-रस में भीग गई हूँ । (सचमुच) सत्यस्वरूप प्रियतम को मिलना ही ज़िन्दगी का सही रास्ता है । नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! कृपा कर, मैं सदा तेरे चरणों से जुड़ा रहूँ ।। १ ।। हे मेरी प्यारी सहेलियो ! आओ, हम प्रभु के चरणों को स्पर्श करें । मेरे मन में प्यारे प्रभु के प्रति अत्यधिक प्रेम विद्यमान है । आओ, हम उस प्रभु से भक्ति की देन माँगें । हे सहेलियो ! हरि के सन्तजनों को जाकर मिलना चाहिए, इस प्रकार परमात्मा की भक्ति प्राप्त होती है । हे सखियो ! अपना यह मन, देह तथा धन सर्वस्व अर्पित करके भीतर से अहंकार, माया-मोह तथा विकार दूर कर देना चाहिए । हे सहेलियो ! जो प्रभु सर्वोपरि है, सर्वव्यापक है, सर्वगुणसम्पन्न है, उस प्रभु को मिलकर दुविधा की दीवार गिरा दें । नानक प्रार्थना करता है कि हे मेरी सहेलियो ! मेरी सलाह सुनो, आओ सदा ही परमात्मा का नाम जपते रहें ।। २ ।। जो जीव-स्त्री अपने आप को प्रभु-पति के हवाले कर देती है, वह भाग्यशाली बन जाती है, वह सब प्रकार के आनन्द भोगती है और कभी भी पतिहीना नहीं होती । सनातन पति-प्रभु (उसकी रक्षा करता है), उस जीव-स्त्री को कोई दुख नहीं होता, वह सदा प्रभु-पति का स्मरण करती है । जो जीव-स्त्रियाँ प्रभु के नामास्वादन में, प्रेम में सचेत रहती हैं, वे भाग्यशालिनी हैं, वे बड़ी क़िस्मत वाली हैं, वे आत्मिक आनन्द में, आत्मिक स्थिरता में लीन रहती हैं और अपने भीतर से सारे

पाप दूर कर लेती हैं। नानक विनती करता है कि जो जीव-स्त्रियाँ प्रेमपूर्वक मिलकर रहती हैं, प्रभु का नाम जिनकी ज़िन्दगी की शोभा बना रहता है, जिन्हें प्रियतम-प्रभु की गुणस्तुति के शब्द मीठे लगते हैं, उनकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है और उन्हें शाश्वत पति-प्रभु मिल जाता है ॥ ३ ॥ सर्वोपरि आनन्द का स्वामी-प्रभु जिस हृदय में रहता है, उस हृदय-घर में ख़ुशी के गीत, कौतुक-तमाशे और आनन्द (मनाए जा रहे) हैं। प्रभु-पति अनन्त है, सदा दया का घर है, लक्ष्मी का सहारा है, सृष्टि की सुधि लेनेवाला है और विकारियों को विकारों से बचानेवाला है। उस मुरारी-प्रभु ने जिस जीव पर कृपादृष्टि की, उसे (उन्होंने) अनेकों सन्तापों से भरे संसार-सागर से पार कर लिया। नानक प्रार्थना करता है कि मालिक-प्रभु का यह सनातन स्वभाव है कि जो जीव उसका शरणागत होता है, उसे अपने गले से लगा लेता है और वह सदा कौतुक करनेवाला प्रभु (उस शरणागत को) मिल जाता है ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ हरि चरण सरोवर तह करहु निवासु मना। करि मजनु हरि सरे सभि किलबिख नासु मना। करि सदा मजनु गोबिंद सजनु दुख अंधेरा नासे। जनम मरणु न होइ तिस कउ कटै जम के फासे। मिलु साध संगे नाम रंगे तहा पूरन आसो। बिनवंति नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो ॥ १ ॥ तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम। मिलि गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम। मिलि संत गावहि खसम भावहि हरि प्रेम रस रंगि भिनीआ। हरि लाभु पाइआ आपु मिटाइआ मिले चिरी विछुंनिआ। गहि भुजा लीने दइआ कीन्हे प्रभ एक अगम अपारो। बिनवंति नानक सदा निरमल सचु सबदु रुणझुणकारो ॥ २ ॥ सुणि वडभागीआ हरि अंम्रित बाणी राम। जिन कउ करमि लिखी तिसु रिदै समाणी राम। अकथ कहाणी तिनी जाणी जिसु आपि प्रभु किरपा करे। अमरु थीआ फिरि न मूआ कलि कलेसा दुख हरे। हरि सरणि पाई तजि न जाई प्रभ प्रीति मनि तनि भाणी। बिनवंति नानक सदा गाईऐ पवित्र अंम्रित बाणी ॥ ३ ॥ मन तन गलतु भए किछु कहणु न जाई राम। जिस ते उपजिअड़ा तिनि लीआ समाई राम। मिलि ब्रहम जोती ओति पोती उदकु उदकि समाइआ। जलिथलि महीअलि एकु रविआ नह दूजा

द्रिसटाइआ । बणि त्रिणि त्रिभवणि पूरि पूरन कीमति कहणु न जाई । बिनवंति नानक आपि जाणै जिनि एह बणत बणाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

हे मेरे मन ! परमात्मा के चरण सुन्दर तालाब है, उस तालाब में तू सदा टिका रह। हे मन ! परमात्मा के तालाब में स्नान किया कर, (इससे) तेरे समस्त पापों का समापन हो जायगा। हे मन ! सदा हरि-सरोवर में स्नान करता रह। स्नानकर्ता व्यक्ति के समस्त दुख मित्र-प्रभु दूर कर देता है। उस मनुष्य को जन्म-मरण का चक्र नहीं भुगतना पड़ता, मित्र-प्रभु उसके यमराज से सम्बद्ध बन्धन काट देता है। हे मन ! सत्संगति में मिलकर परमात्मा के नाम-रंग में अनुरक्त रह (क्योंकि) सत्संगति में ही तेरी आशाएँ पूर्ण होंगी। नानक विनती करता है कि हे हरि ! कृपा करो, मेरा मन हमेशा तुम्हारे सुन्दर कमल-चरणों में लगा रहे ॥ १ ॥ सत्संगति में हमेशा आत्मिक आनन्द और खुशियों का अनहद नाद होता रहता है। सत्संगति में सन्तजन मिलकर परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाते रहते हैं। सन्तजन गुणस्तुति के गीत गाते हैं, वे पति-प्रभु को प्यारे लगते हैं, उनकी सुरति परमात्मा के प्रेम-रस के रंग में डूबी रहती है। वे परमात्मा के नाम की कमाई खाते हैं, अपने भीतर से अहंत्वभाव मिटा लेते हैं, चिरकाल से वियुक्त परमात्मा को दोबारा मिल पड़ते हैं। अगम्य तथा अनन्त परमात्मा उन पर दया करता है, उनकी बाँह पकड़कर उन्हें बचा लेता है। नानक विनती करता है कि वे सन्तजन हमेशा पवित्र जीवन वाले हो जाते हैं और परमात्मा की गुणस्तुति की वाणी उनके भीतर रुनझुन-रुनझुन करती रहती है ॥ २ ॥ हे भाग्यशाली ! आत्मिक जीवन देनेवाली प्रभु की गुणस्तुति की वाणी हमेशा सुना कर। यह वाणी उस व्यक्ति के हृदय में विद्यमान रहती है, जिसके मस्तक पर प्रभु की कृपा द्वारा इसकी प्राप्ति का लेख लिखा होता है। जिस-जिस मनुष्य पर प्रभु स्वयं कृपा करता है, वे व्यक्ति अकथनीय प्रभु की गुणस्तुति से तालमेल बनाए रखते हैं। (प्रभु-भक्त) अटल आत्मिक जीवन वाला हो जाता है, वह दोबारा कभी भी आत्मिक मृत्यु नहीं पाता, वह अपने भीतर से सारे दुख, क्लेश दूर कर लेता है। वह मनुष्य उस परमात्मा की शरण प्राप्त कर लेता है, जो कभी छोड़कर नहीं जाता; उस मनुष्य को हृदय में प्रभु की प्रीति प्रिय लगने लगती है। नानक विनती करता है कि हे भाई ! आत्मिक जीवन देनेवाली गुणस्तुति की पवित्र वाणी सदा गानी चाहिए ॥ ३ ॥ (परमात्मा की पवित्र वाणी में) मन, तन ऐसा लीन हो जाता है कि कुछ कहा नहीं जा सकता, (ऐसा लगता है कि) जिस परमात्मा से वह जीव

उत्पन्न हुआ था, उस प्रभु ने ही उसे अपने मन में मिला लिया। ताने-पेटे के समान वह परमात्मा में ऐसे मिल गया है, जैसे पानी, पानी में मिल जाता है। उस मनुष्य को पानी, धरती, आकाश सर्वत्र एक परमात्मा ही मौजूद दिखता है, प्रभु के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं दिखता। उस मनुष्य को परमात्मा जंगल में, घास में, समस्त संसार में व्यापक दिखता है। उस मनुष्य की स्थिति का मूल्य व्यक्त नहीं किया जा सकता। नानक विनती करता है कि जिस परमात्मा ने यह क्रीड़ा बना दी है, वह आप ही उसे समझता है ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ खोजत संत फिरहि प्रभ प्राण अधारे राम। ताणु तनु खीन भइआ बिनु मिलत पिआरे राम। प्रभ मिलहु पिआरे मइआ धारे करि दइआ लड़ि लाइ लीजीऐ। देहि नामु अपना जपउ सुआमी हरि दरस पेखे जीजीऐ। समरथ पूरन सदा निहचल ऊच अगम अपारे। बिनवंति नानक धारि किरपा मिलहु प्रान पिआरे ॥ १ ॥ जप तप बरत कीने पेखन कउ चरणा राम। तपति न कतहि बुझै बिनु सुआमी सरणा राम। प्रभ सरणि तेरी काटि बेरी संसारु सागरु तारीऐ। अनाथ निरगुनि कछु न जाना मेरा गुणु अउगणु न बीचारीऐ। दीन दइआल गोपाल प्रीतम समरथ कारण करणा। नानक चात्रिक हरि बूंद मागै जपि जीवा हरि हरि चरणा ॥ २ ॥ अमिअ सरोवरो पीउ हरि हरि नामा राम। संतह संगि मिलै जपि पूरन कामा राम। सभ काम पूरन दुख बिदीरन हरि निमख मनहु न बीसरै। आनंद अनदिनु सदा साचा सरब गुण जगदीसरै। अगणत ऊच अपार ठाकुर अगम जाको धामा। बिनवंति नानक मेरी इछ पूरन मिले स्रीरंग रामा ॥ ३ ॥ कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम। हरि हरि नामु जपत कुल सगले तारे राम। हरिनामु जपत सोहंत प्राणी ताकी महिमा कित गना। हरि बिसरु नाही प्रानपिआरे चितवंति दरसनु सद मना। सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए प्रभ ऊच अगम अपारे। बिनवंति नानक सफलु सभु किछु प्रभ मिले अति पिआरे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥

सन्तपुरुष अपनी आतमा के सहारे परमात्मा को खोजते फिरते हैं, प्यारे प्रभु के मिले बिना उनका शरीर कमजोर हो जाता है और उनका

शारीरिक बल कम हो जाता है। हे प्यारे प्रभु ! कृपा करके मुझे मिल, दया करके मुझे अपने साथ बाँध ले। हे मेरे स्वामी ! मुझे अपना नाम दे, मैं सर्वदा जाप करता रहूँ (क्योंकि) तुम्हारा दर्शन करके मेरे भीतर आत्मिक जीवन पैदा हो जाता है। नानक की प्रार्थना है कि सब शक्तियों के स्वामी, सर्वव्यापक, सत्यस्वरूप, सर्वोच्च, अपहुँच, अनन्त, आत्मा के प्रिय प्रभु ! कृपा करके मुझे आकर मिलिए ॥ १ ॥ परमात्मा के चरणों का दर्शन करने के लिए अनेकों जप किए, धूनियाँ तपाईं और उपवास किए; लेकिन मालिक-प्रभु की शरण लिये बिना कहीं भी मन की जलन नहीं बुझती। हे प्रभु ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, मेरी माया-मोह की बेड़ियाँ काट दो और मुझे संसार-समुद्र से पार कर दो। हे प्रभु ! मेरा दूसरा कोई अवलम्ब नहीं है, मैं गुणहीन हूँ, मैं तुम्हें पाने के लिए कोई तरीक़ा नहीं जानता (इसलिए) मेरा कोई गुण और कोई अवगुण ध्यान में न लाएँ। नानक का कथन है कि हे दीनदयालु, सृष्टि के रक्षक ! हे प्रियतम, सर्वशक्तिमान, जगत के मूल ! जैसे पपीहा बूँद माँगता है, वैसे ही मैं नाम की अभिलाषा रखता हूँ। तुम्हारे चरणों का स्मरण करके मुझे आत्मिक जीवन प्राप्त होता है ॥ २ ॥ हे भाई ! परमात्मा का नाम आत्मिक जीवन के देनेवाले जल का पवित्र तालाब है। इसका जलपान करते रहा करो। यह नाम-जल सत्संगति में रहने से मिलता है। यह हरि-नाम जपकर सम्पूर्ण कार्य पूर्ण हो जाते हैं। सृष्टि के स्वामी-प्रभु में समस्त गुण हैं। वह सब जीवों के कार्य पूर्ण करनेवाला है, सबके दुख नष्ट करनेवाला है और सत्यस्वरूप है। जिसके भीतर से वह परमात्मा निमिष मात्र के लिए भी विस्मृत नहीं होता, वह मनुष्य हमेशा आत्मिक आनन्द महसूसता है। हे भाई ! प्रभु अनगिनत गुणों से सम्पन्न है, सर्वोच्च है, अनन्त है, सर्वेश्वर है और उसका ठिकाना अपहुँच है। नानक विनती करता है कि हे भाई ! मुझे लक्ष्मीपति परमात्मा मिल गया है और मेरी कामना पूर्ण हो गई है ॥ ३ ॥ प्रभु की गुणस्तुति के गीत गानेवाले मनुष्य परमात्मा का नाम सुन-सुनकर कितने ही करोड़ों युगों के फल प्राप्त कर लेते हैं। प्रभु का जप करते हुए अपनी समस्त वंशावलि का उद्धार भी कर लेते हैं। परमात्मा का नाम स्मरण करते हुए मनुष्य पवित्र जीवन वाले बन जाते हैं —मैं उन प्रभु-भक्तों की कितनी महानता कहूँ ? वे सदा अपने भीतर परमात्मा के दर्शन की कामना करते रहते हैं। (उनकी प्रबल कामना यही होती है कि) हे प्राणप्यारे ! तुम कभी भी हमारे भीतर से विस्मृत न होओ। उन्हें सर्वोच्च, अपहुँच तथा अनन्त प्रभु पकड़कर अपने गले से लगा लेता है, उनके सौभाग्यपूर्ण दिन आ जाते हैं। नानक विनती करता है कि जिन मनुष्यों को प्रिय परमात्मा मिल जाता है, उनका हरेक कार्य पूर्ण हो जाता है ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥

।। बिहागड़ा महला ५ छंत ।। अनकाए रातड़िआ वाट दुहेली राम। पाप कमावदिआ तेरा कोइ न बेली राम। कोए न बेली होइ तेरा सदा पछोतावहे। गुन गुपाल न जपहि रसना फिरि कदहु से दिह आवहे। तरवर विछुंने नह पात जुड़ते जम मगि गउनु इकेली। बिनवंत नानक बिनु नाम हरि के सदा फिरत दुहेली ।। १ ।। तूं वलवंच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम। लेखा धरम भइआ तिल पीड़े घाणी राम। किरत कमाणे दुख सहु पराणी अनिक जोनि भ्रमाइआ। महा मोहनी संगि राता रतन जनमु गवाइआ। इकसु हरि के नाम बाझहु आन काज सिआणी। बिनवंत नानक लेखु लिखिआ भरमि मोहि लुभाणी ।। २ ।। बीचु न कोइ करे अक्रितघणु विछुड़ि पइआ। आए खरे कठिन जम कंकरि पकड़ि लइआ। पकड़े चलाइआ अपणा कमाइआ महा मोहनी रातिआ। गुन गोविंद गुरमुखि न जपिआ तपत थंम्ह गलि लातिआ। काम क्रोधि अहंकारि मूठा खोइ गिआनु पछुतापिआ। बिनवंत नानक संजोगि भूला हरि जापु रसन न जापिआ ।। ३ ।। तुझ बिनु को नाही प्रभ राखन हारा राम। पतित उधारण हरि बिरदु तुमारा राम। पतित उधारन सरनि सुआमी क्रिपानिधि दइआला। अंध कूप ते उधरु करते सगल घट प्रतिपाला। सरनि तेरी कटि महा बेड़ी इकु नामु देहि अधारा। बिनवंत नानक कर देइ राखहु गोबिंद दीन दइआरा ।। ४ ।। सो दिनु सफलु गणिआ हरि प्रभू मिलाइआ राम। सभि सुख परगटिआ दुख दूरि पराइआ राम। सुख सहज अनदबिनोद सदही गुन गुपाल नित गाईऐ। भजु साधसंगे मिले रंगे बहुड़ि जोनि न धाईऐ। गहि कंठि लाए सहजि सुभाए आदि अंकुरु आइआ। बिनवंत नानक आपि मिलिआ बहुड़ि कतहू न जाइआ ।। ५ ।। ४ ।। ७ ।।

हे तुच्छ पदार्थों में अनुरक्त मनुष्य! तेरा जीवन-मार्ग दुखों से भरता जा रहा है। हे पापी! कोई भी तेरा साथी नहीं। किए पापों की सजा भुगतने के लिए कोई साथी नहीं बनेगा, तू हमेशा हाथ मलता रह जायगा। तू अपनी जिह्वा द्वारा सृष्टि के मालिक-प्रभु के गुण नहीं जपता, ज़िन्दगी के ये दिन फिर कभी वापस नहीं आएँगे, जैसे वृक्षों से अलग हुए पत्ते दोबारा नहीं जुड़ सकते। पूर्वकृत पापों के कारण मनुष्य की आत्मा

आत्मिक मृत्यु के मार्ग पर अकेली ही गतिमान रहती ह। नानक प्रार्थना करता है कि परमात्मा के नाम-स्मरण के बिना मनुष्य की आत्मा हमेशा दुखों से घिरी हुई भटकती रहती है ॥ १ ॥ हे भाई ! तू लुक-छिपकर पापकर्म करता रहता है, लेकिन अन्तर्यामी परमात्मा तेरी करतूत को जानता है। जब धर्मराज का हिसाब होता है, तो कुकर्मी ऐसे पेरे जाते हैं, जैसे तिल पेरे जाते हैं। हे भाई ! अपने किए कर्मों के अनुसार तू भी दुख सहन कर। कुकर्मी जीव अनेक योनियों में भटकाया जाता है। जो मनुष्य सदा इस अत्यन्त मोहक माया में मस्त रहता है, वह श्रेष्ठ मनुष्य-जन्म गवाँ लेता है। नानक विनती करते हैं कि आत्मा एक परमात्मा के नाम के बिना दूसरे तमाम कामों में चतुर बनी फिरती है। (उसके मस्तक पर) लेख लिखा जा रहा है, इसलिए माया की दुबिधा में, माया-मोह में फँसी रहती है ॥ २ ॥ परमात्मा के प्रति कृतघ्न व्यक्ति परमात्मा के चरणों से बिछुड़ा रहता है, कोई उसका मध्यस्थ नहीं बनता, अन्त में अत्यन्त क्रूर यमदूत उसे आ पकड़ता है। यमदूत उसे पकड़कर आगे लगा लेता है, तमाम उम्र दुष्ट माया में मस्त रहने से वह अपना किया भोगता है। गुरु-विमुख होकर वह परमात्मा के गुण कभी याद नहीं करता। (उसकी तमाम उम्र विकारों की जलन में इस प्रकार समाप्त हो जाती है जैसे) वह जलते हुए स्तम्भ से बाँधा हुआ हो। वह काम, क्रोध, अहंकार में फँसकर अपना आत्मिक जीवन लुटा बैठता है, आत्मिक जीवन की सूझ-बूझ गवाँकर पश्चाताप करता है। नानक विनती करता है कि कामादिक विकारों के संजोग के कारण मनुष्य कुमार्गगामी हो जाता है और कभी अपनी जिह्वा से परमात्मा का नाम नहीं जपता ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारे अतिरिक्त विकारों से बचा सकनेवाला कोई नहीं है, विकारग्रस्त व्यक्तियों को बचाना तुम्हारा विरद है। हे विकारग्रस्त व्यक्तियों को बचानेवाले स्वामी ! हे कृपा के भण्डार, दया के घर, कर्तार, सर्वरक्षक प्रभु ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, मुझे माया-मोह के अन्धे कुएँ से बचा लो। नानक विनती करता है कि हे गोविन्द, दीनदयालु ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, मेरी माया-मोह की बेड़ियाँ काट दो, मुझे अपने नाम का आसरा दो और अपना हाथ देकर मुझे माया-मोह में डूबने से बचा लो ॥ ४ ॥ हे भाई ! वह दिन भाग्यशाली समझना चाहिए, जब हरि-प्रभु गुरु द्वारा मिलाया हुआ मिल जाता है। समस्त सुख प्रकट हो जाते हैं और समस्त दुख दूर हो जाते हैं। हे भाई ! आओ, जगतपालक प्रभु के गुण नित्य गाते रहें, (इस प्रकार) हमेशा ही आत्मिक स्थिरता के सुख आनन्द बने रहते हैं, खुशियाँ बनी रहती हैं। हे भाई ! गुरु की संगति में प्रेमपूर्वक मिलकर परमात्मा का भजन किया कर, (भजन के प्रभाव से) बारम्बार योनियों में नहीं पड़ा जाता, परमात्मा उसे अपनाकर गले से लगा लेता है, आत्मिक स्थिरता में, प्रेम में लीन कर

लेता है और हृदय में भक्ति का अंकुर फूट पड़ता है। नानक विनती करता है कि सत्संगति में आने से, प्रभु आप आ मिलता है फिर और कहीं भी नहीं भटका जाता ॥ ५ ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ सुनहु बेनंतीआ सुआमी मेरे राम। कोटि अप्राध भरे भी तेरे चेरे राम। दुखहरन किरपाकरन मोहन कलिकलेसह भंजना। सरनि तेरी रखि लेहु मेरी सरबमै निरंजना। सुनत पेखत संगि सभ कै प्रभ नेर हू ते नेरे। अरदासि नानक सुनि सुआमी रखि लेहु घर के चेरे ॥१॥ तू समरथु सदा हम दीन भेखारी राम। माइआ मोहि मगनु कढि लेहु मुरारी राम। लोभि मोहि बिकारि बाधिओ अनिक दोख कमावने। अलिपत बंधन रहत करता कीआ अपना पावने। करि अनुग्रहु पतितपावन बहु जोनि भ्रमते हारी। बिनवंति नानक दासु हरि का प्रभ जीअ प्रान अधारी ॥ २ ॥ तू समरथु वडा मेरी मति थोरी राम। पालहि अकिरतघना पूरन द्रिसटि तेरी राम। अगाधि बोधि अपार करते मोहि नीचु कछू न जाना। रतनु तिआगि संग्रहन कउडी पसू नीच इआना। तिआगि चलती महा चंचलि दोख करि करि जोरी। नानक सरनि समरथ सुआमी पैज राखहु मोरी ॥ ३ ॥ जाते वीछुड़िआ तिनि आपि मिलाइआ राम। साधू संगमे हरि गुण गाइआ राम। गुण गाइ गोविद सदा नीके कलिआणमै परगट भए। सेजा सुहावी संगि प्रभ कै आपणे प्रभ करि लए। छोडि चिंत अचिंत होए बहुड़ि दूखु न पाइआ। नानक दरसनु पेखि जीवे गोविंद गुणनिधि गाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥

हे मेरे मालिक! मेरी विनती सुनिए। हम करोड़ों पापों से भरे हैं, लेकिन फिर भी तुम्हारे सेवक हैं। हे दुखों के नाशक, हे कृपालु मोहन, हे हमारे दुख एवं विपत्तियों के विनाशक, सर्वव्यापक, निर्लिप्त प्रभु! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, मेरी लाज बचाओ। हे प्रभु! तुम जीवों के अत्यन्त निकट हो, तुम सब जीवों के साथ-साथ रहते हो, तुम सब जीवों की प्रार्थनाएँ सुनते हो और सब जीवों के किए काम देखते हो। हे मेरे स्वामी! नानक की प्रार्थना सुन। मैं तुम्हारे घर का सेवक हूँ, मेरी प्रतिष्ठा बचाइए ॥ १ ॥ हे प्रभु! तुम सर्वशक्तिमान हो, हम तुच्छ भिखारी हैं। हे प्रभु! मैं माया-मोह में डूबा रहता हूँ, तुम मुझे

उबारो। मैं लोभ, मोह तथा विकारों से बँधा रहता हूँ। हे प्रभु ! हम जीव अनेक पाप कमाते रहते हैं। एक कर्तार प्रभु ही (पापों से) निर्लिप्त रहता है और बन्धनों से स्वतन्त्र है, हम जीव तो अपने कृत कर्मों का फल पाते रहते हैं। हे विकारी जीवों को पवित्र करनेवाले प्रभु ! कृपा कर, अनेक योनियों में भटक-भटककर मेरी आत्मा थक गई है। नानक विनती करता है कि नानक उस हरि-परमेश्वर का सेवक है, जो आत्मा का, प्राणों का अवलम्ब है ॥ २ ॥ हे राम ! तुम अत्यन्त सामर्थ्यवान हो और मेरी बुद्धि साधारण है (फिर तुम्हारा मूल्यांकन कैसे कर सकती है ?) हे प्रभु ! तुम्हारी दृष्टि सर्वदा एक समान है, तुम कृतघ्न व्यक्तियों का भी पालन करते हो। हे कर्तार, अनन्त प्रभु ! तुम जीवों की समझ से परे अथाह हो, मैं नीच तुम्हारे विषय में कुछ भी नहीं जान सकता। हे प्रभु ! तुम्हारा क़ीमती नाम छोड़कर मैं कौड़ियाँ एकत्रित करता रहता हूँ। मैं पशु स्वभाव वाला हूँ, नीच हूँ, मूर्ख हूँ। मैं पाप कर-करके उस माया को संचित करता रहा, जो चंचल है, जो जीवों का साथ छोड़ देती है। नानक का कथन है कि हे सर्वशक्तिमान, स्वामी-प्रभु ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, मेरी प्रतिष्ठा बचाइए ॥ ३ ॥ जिस मनुष्य ने गुरु के सान्निध्य में रहकर परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाने शुरू कर दिए, उसे परमात्मा ने अपने चरणों में जगह दे दी, जिनसे वह बहुत समय से अलग था। परमात्मा की गुणस्तुति के सुन्दर गीत गाने से आनन्दस्वरूप प्रभु प्रकट हो जाता है। प्रभु के सान्निध्य से उसकी हृदय रूपी सेज आनन्दमग्न हो जाती है और प्रभु उसे अपना सेवक बना लेता है। नानक का कथन है कि जो मनुष्य प्रभु की गुणस्तुति के गीत गाते हैं, वे परमात्मा का दर्शन करके पवित्र जीवन वाले बन जाते हैं, वे लौकिक चिन्ताएँ त्यागकर शान्तचित्त हो जाते हैं और उन्हें दोबारा कोई दुख स्पर्श नहीं कर सकता ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥

॥ बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ बोलि सुधरमीड़िआ मोनि कत धारी राम। तू नेत्री देखि चलिआ माइआ बिउहारी राम। संगि तेरै कछु न चालै बिना गोबिंद नामा। देस वेस सुवरन रूपा सगल ऊणे कामा। पुत्र कलत्र न संगि सोभा हसत घोरि विकारी। बिनवंत नानक बिनु साध संगम सभ मिथिआ संसारी ॥ १ ॥ राजन किउ सोइआ तू नीद भरे जागत कत नाही राम। माइआ झूठु रुदनु केते बिललाही राम। बिललाहि केते महा मोहन बिनु नाम हरि के सुखु नही। सहस सिआणप उपाव थाके जह भावत तह जाही। आदि अंते मधि पूरन

सरबत्र घटि घटि आही। बिनवंत नानक जिन साध संगमु से पति सेती घरि जाही ॥ २ ॥ नरपति जाणि ग्रहिओ सेवक सिआणे राम। सरपर वीछुड़णा मोहे पछुताणे राम। हरिचंदउरी देखि भूला कहा असथिति पाईऐ। बिनु नाम हरि के आन रचना अहिला जनमु गवाईऐ। हउ हउ करत न त्रिसन बूझै नह कांम पूरन गिआने। बिनवंति नानक बिनु नाम हरि के केतिआ पछुताने ॥ ३ ॥ धारि अनुग्रहो अपना करि लीना राम। भुजा गहि काढि लीओ साधू संगु दीना राम। साध संगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले। महा धरम सु दान किरिआ संगि तेरै से चले। रसना अराधै एकु सुआमी हरि नामि मनु तनु भीना। नानक जिसनो हरि मिलाए सो सरब गुण परबीना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

हे उत्तम आचरण वाले अथवा समस्त योनियों में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य-जीव ! परमात्मा की गुणस्तुति किया कर। तू चुप किसलिए है ? अपनी आँखों से देख; (क्योंकि) केवल मात्र माया का व्यवहार करनेवाला यहाँ से ख़ाली हाथ चला जाता है। हे भाई ! परमात्मा के नाम के अतिरिक्त कोई चीज़ तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। देशों के राज्य, कपड़े, सोना, चाँदी आदि के लिए किए उद्यम व्यर्थ हो जाते हैं। हे भाई ! पुत्र, स्त्री, दुनियावी शोभा कुछ भी आदमी के साथ नहीं जाता। हाथी, घोड़े आदि बहुमूल्य जीवों के प्रति लालसा भी विकारों की ओर प्रेरित करती है। नानक विनती करता है कि सत्संगति के अतिरिक्त दुनिया के समस्त उद्यम क्षणभंगुर हैं ॥ १ ॥ हे राजन ! तू क्यों माया-मोह की गहरी निद्रा में सो रहा है ? तू क्यों जाग्रत नहीं होता ? इस माया की ख़ातिर मनुष्य मिथ्या रोदन-क्रन्दन करते आ रहे हैं, दुखी होते आ रहे हैं। अनगिनत प्राणी इस दुष्टा मनमोहिनी माया के लिए प्रार्थना करते आ रहे हैं, लेकिन परमात्मा के नाम के बिना किसी को सुख प्राप्त नहीं हुआ। जीव हज़ारों चतुराइयाँ, हज़ारों प्रयास करते थक जाते हैं (लेकिन जीव को मन:शान्ति प्राप्त नहीं होती)। वास्तव में जिधर परमात्मा की रज़ा होती है, उधर ही जीव जा सकते हैं। वह परमात्मा हमेशा के लिए सर्वव्यापक है, सर्वत्र विद्यमान है, प्रत्येक शरीर में अवस्थित है। नानक विनती करता है कि जिन मनुष्यों को गुरु का मिलाप होता है, वे प्रतिष्ठापूर्वक परमात्मा की सेवा में जाते हैं ॥ २ ॥ राजा अपने बुद्धिमान सेवकों को अपने जानकर मोह में फँस जाता है, लेकिन दुनियावी पदार्थों से अलग होना निश्चित है; इसलिए जो मोहग्रस्त होते हैं, वे आख़िर हाथ मलते रह

जाते हैं। मनुष्य शून्य प्रदेश में स्थित काल्पनिक शहर जैसे जगत को देखकर कुमार्गगामी हो जाता है, लेकिन यहाँ कही भी शाश्वत ठिकाना नहीं मिल सकता। परमात्मा के नाम से खाली होकर, जगत-रचना के दूसरे पदार्थों में फँसकर श्रेष्ठ मनुष्य-जन्म गवाँ लिया जाता है। मैं, मैं (अर्थात् अहंकारवश अपना विस्तार चाहते हुए) करते हुए कभी माया की तृष्णा समाप्त नहीं होती, मनुष्य-जन्म का मनोरथ प्राप्त नहीं हो सकता और आत्मिक जीवन की समझ भी नहीं होती। नानक विनती करता है कि परमात्मा के नाम से खाली होकर अनेकों जीव पश्चाताप करते हुए जाते हैं ॥३॥ जिसे परमात्मा दया करके अपना बना लेता है, उसे ही गुरु की भेंट बख्शता है और उसी को बाँह से पकड़कर मोह-कूप से निकाल लेता है। जो मनुष्य गुरु की संगति में टिककर परमात्मा का नाम स्मरण करता रहता है, उसके सारे पाप, सारे दुख जल जाते हैं। हे भाई! सर्वोत्तम धर्म, नाम-जाप और सर्वोत्तम दान, नाम-दान —यही काम तेरे साथ जा सकते हैं। नानक का कथन है कि जो मनुष्य अपनी जिह्वा से मालिक-प्रभु की आराधना करता है, उसका तन, मन परमात्मा के नाम-जल में भीगा रहता है। जिस मनुष्य को परमात्मा अपने चरणों में जगह देता है, वह सभी गुणों में पारंगत हो जाता है ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

बिहागड़े की वार महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक म० ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होरथै सुखु न भालि। गुर कै सबदि मनु भेदीऐ सदा वसै हरि नालि। नानक नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सिफति खजाना बखस है जिसु बखसै सो खरचै खाइ। सतिगुर बिनु हथि न आवई सभ थके करम कमाइ। नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ तेरी तू सभस दा सभ तुधु उपाइआ। सभना विचि तू वरतदा तू सभनी धिआइआ। तिसदी तू भगति थाइ पाइहि जो तुधु मनि भाइआ। जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ सभि करनि तेरा कराइआ। सलाहिहु हरि सभना ते वडा जो संत जनां की पैज रखदा आइआ ॥ १ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ हे प्राणी! सुख सतिगुरु की सेवा से ही प्राप्त होता है, किसी दूसरी जगह सुख की छानबीन न कर। सतिगुरु के शब्द में मन को बींध दे, तभी यह ज्ञान होता है कि हरि सदा साथ-साथ

विद्यमान है। हे नानक ! प्रभु का नाम उन्हें मिलता है, जिन्हें वह कृपादृष्टि से देखता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हरि की गुणस्तुति रूपी ख़ज़ाना उसकी देन है। जिसे वह देता है, वह आप खाता है और ख़र्च करता है। यह देन सतिगुरु के बिना नहीं मिलती (क्योंकि सतिगुरु की शरण के अतिरिक्त) लोग बहुत से कर्म कर-करके थक गए हैं (लेकिन सब व्यर्थ है)। हे नानक ! स्वेच्छाचारी संसार प्रभु की गुणस्तुति रूपी धन से ख़ाली है, यह भूखा आगे क्या खाएगा ? (जो मनुष्य इस जन्म में प्रभु का गुणगान नहीं करेंगे, वे यह मनुष्य-जन्म गवाँकर क्या जपेंगे ?) ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ हे प्रभु ! सारी सृष्टि तुम्हारी है, तुम सबके स्वामी हो, सबको तुमने ही उत्पादित किया है, समस्त जीवों में तुम ही सर्वव्यापक हो और सब तुम्हारा स्मरण करते हैं। जो मनुष्य तुम्हें प्यारा लगता है, उसकी भक्ति को तुम स्वीकार करते हो। हे प्रभु ! जो तुम्हें भला लगता है वही होता है, सब जीव तुम्हारा कराया हुआ करते हैं। जो हरि आदिकाल से भक्तों की लाज बचाता आया है और सर्वोपरि है, उस प्रभु की गुणस्तुति करो ॥ १ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ नानक गिआनी जगु जीता जगि जीता सभु कोइ। नामे कारज सिधि है सहजे होइ सु होइ। गुरमति मति अचलु है चलाइ न सकै कोइ। भगता का हरि अंगीकारु करे कारजु सुहावा होइ। मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अहंकारु। झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु। सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु। दितै कितै न संतोखीअनि अंतरि त्रिसना बहुतु अज्ञानु अंधारु। नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली जिना माइआ मोहि पिआरु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ तिन्ह भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु। धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु। मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि। नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीअ जंत सभि तेरिआ तू सभना रासि। जिस नो तू देहि तिसु सभु किछु मिलै कोई होरु सरीकु नाही तुधु पासि। तू इको दाता सभस दा हरि पहि अरदासि। जिसदी तुधु भावै तिसदी तू मंनि लैहि सो जनु साबासि। सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु सुखु तुधु पासि ॥ २ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ हे नानक ! ज्ञानी पुरुष ने संसार को जीत

लिया है जब कि ज्ञानरहित प्रत्येक मनुष्य को संसार ने जीत लिया है अर्थात् अज्ञानी मनुष्य को संसार में पराजय मिलती है। वास्तविक करणीय कर्मों की सफलता नाम जपने से ही होती है, उसे (प्रभु-भक्त को) ऐसे लगता है कि जो कुछ हो रहा है, प्रभु की इच्छानुसार हो रहा है। सतिगुरु की शिक्षा पर चलकर मनुष्य की बुद्धि दृढ़ हो जाती है, कोई भी (लौकिक आर्कषण) उसे पथविचलित नहीं कर सकता। (वास्तव में) प्रभु भक्तों का साथ निभाता है और भक्तों का प्रत्येक कार्य पूर्ण हो जाता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य प्रभु द्वारा विस्मृत हैं क्योंकि उनके भीतर मिथ्या, लोभ तथा अहंकार है। उनका प्रत्येक दिन झगड़ा करते हुए बीतता है, वे गुरु की शिक्षा का अनुसरण नहीं करते। कर्तार ने उन मनुष्यों की समझ और बुद्धि (चिन्तना) छीन ली है, वे केवल मात्र विकारों के वचन बोलते हैं, वे किसी भी देन के मिलने से तृप्त नहीं होते क्योंकि उनके भीतर अत्यन्त तृष्णा, अज्ञान एवं अँधेरा रहता है। हे नानक ! ऐसे मनमुख जीवों के साथ सम्बन्ध टूटा हुआ ही श्रेयस्कर है क्योंकि उनका लगाव तो माया-मोह में है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिनके सिर पर प्रभु तथा गुरु हैं अर्थात् जिनके रक्षक प्रभु तथा गुरु हैं, भय तथा चिन्ता उनका क्या बिगाड़ सकते हैं ? रक्षक प्रभु आप उनकी लाज सदा से बचाता आया है। हे नानक ! जो सुखदाता प्रभु स्वयं ही सबकी जाँच-पड़ताल करनेवाला है, उस प्रभु की वे सेवा करते हैं और सच्चे शब्द के द्वारा विचार करके एवं हरि-प्रियतम को मिलकर सुख पाते हैं ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ हे हरि ! समस्त जीव-जन्तु तुम्हारे हैं, तुम सबके भण्डार हो। जिस मनुष्य को तुम देन देते हो, उसे मानो प्रत्येक वस्तु मिल जाती है क्योंकि दूसरा कोई तुम्हें रोकने-टोकनेवाला तुम्हारे पास नहीं है, तुम अकेले सबके दाता हो। (इसलिए) हे हरि ! सब जीव तुम्हारे समक्ष प्रार्थना करते हैं; जिस जीव की प्रार्थना तुम्हें भली लगे, उसकी प्रार्थना तुम स्वीकार कर लेते हो और उस मनुष्य को प्रशंसा मिलती है। यह सब तुम्हारा ही कौतुक परिचालित है, सब अपने सुख तथा दुख तुम्हारे पास ही प्रकट करते हैं ॥ २ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ गुरमुखि सचै भावदे दरि सचै सचिआर। साजन मनि आनंदु है गुर का सबदु वीचार। अंतरि सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि। नानक रखणहारा रखसी आपणी किरपा धारि॥१॥ म० ३॥ गुर की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ। जेहा सेवै तेहो होवै जे चले तिसै रजाइ। नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी

जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तेरी वडिआई तूहै जाणदा तुधु जेवडु अवरु न कोई । तुधु जेवडु होरु सरीकु होवै ता आखीऐ तुधु जेवडु तूहै होई । जिनि तू सेविआ तिनि सुखु पाइआ होरु तिसदी रीस करे किआ कोई । तू भंनण घड़ण समरथु दातारु हहि तुधु अगै मंगण नो हथ जोड़ि खली सभ होई । तुधु जेवडु दातारु मै कोई नदरि न आवई तुधु सभसै नो दानु दिता खंडी वरभंडी पाताली पुरई सभ लोई ॥ ३ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ सतिगुरु के सान्निध्य में रहनेवाले भले पुरुष सच्चे प्रभु को भले लगते हैं और परमात्मा के द्वार पर सत्य के व्यापारी माने जाते हैं। सतिगुरु के ज्ञान पर विचार करनेवाले उन सज्जनों के मन में सदा उल्लास होता है। सतिगुरु का ज्ञान उन्होंने हृदय में बसाया है इसलिए सृजनहार प्रभु ने उनका दुख समाप्त कर दिया है और उनके हृदय में प्रकाश किया है। हे नानक ! रक्षक प्रभु अपनी कृपा से उनकी हमेशा रक्षा करता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ यदि मनुष्य प्रभु के भय में रहकर गुरु द्वारा बतलाई सेवा करे और उस प्रभु की रज़ा में रहे, तो वह उस प्रभु जैसा ही हो जाता है, जिसे वह स्मरण करता है; फिर, हे नानक ! ऐसे मनुष्य को सर्वत्र ईश्वर ही प्रतिभाषित होता है, प्रभु के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं दिखता और न कोई आश्रय की जगह ही दिखाई देती है ॥२॥ ॥ पउड़ी ॥ तुम कितने महान हो ? —यह तुम स्वयं ही जानते हो क्योंकि तुम्हारे बराबर दूसरा कोई नहीं है। यदि तुम्हारे बराबर तुम्हारा कोई प्रतिद्वन्दी हो तो ही बतलाया जा सकता है कि तुम कितने महान हो। (वास्तव में) तुम्हारे समान तुम स्वयं ही हो। जिस मनुष्य ने तुम्हें स्मरण किया है, उसने सुख पाया है, दूसरा कोई उसकी क्या बराबरी कर सकता है ? शरीरों को नष्ट भी तुम स्वयं कर सकते हो और बना भी स्वयं सकते हो। सब देन भी देनेवाले हो और समस्त सृष्टि तुम्हारे समक्ष देन माँगने के लिए हाथ जोड़कर खड़ी हुई है। मुझे तुम्हारे जैसा दूसरा दानी नज़र नहीं आता। खण्डों, ब्रह्माण्डों, पातालों और पुरियों तथा समस्त लोकों में तुमने ही सब जीवों को दान दिया है ॥ ३ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ मनि परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ । सबदै सादु न पाइओ मनहठि किआ गुण गाइ । नानक आइआ सो परवाणु है जि गुरमुखि सचि समाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ आपणा आपु न पछाणै मूड़ा अवरा आखि दुखाए । मुंढै दी खसलति न गईआ अंधे विछुड़ि चोटा खाए । सतिगुर कै

भै भंनि न घड़िओ रहै अंकि समाए । अनदिनु सहसा कदे न चूकै बिनु सबदै दुखु पाए । कामु क्रोधु लोभु अंतरि सबला नित धंधा करत विहाए । चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेड़ै आए । सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि नवनिधि पाए । जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतरु पाए । धुरि करमु न पाइओ पराणी विणु करमा किआ पाए । गुर का सबदु समालि तू मूड़े गतिमति सबदे पाए । नानक सतिगुरु तद ही पाए जां विचहु आपु गवाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसदै चिति वसिआ मेरा सुआमी तिस नो किउ अंदेसा किसै गलै दा लोड़ीऐ । हरि सुखदाता सभना गला का तिस नो धिआइदिआ किव निमख घड़ी मुहु मोड़ीऐ । जिनि हरि धिआइआ तिस नो सरब कलिआण होए नित संत जना की संगति जाइ बहीऐ मुहु जोड़ीऐ । सभि दुख भुख रोग गए हरि सेवक के सभि जन के बंधन तोड़ीऐ । हरि किरपा ते होआ हरि भगतु हरि भगत जना कै मुहि डिठै जगतु तरिआ सभु लोड़ीऐ ॥ ४ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ यदि मन प्रभु के अस्तित्व के प्रति विश्वस्त न हुआ और आत्मिक टिकाव में लगाव न हुआ, यदि शब्द का रस न पाया तो मन के हठ से प्रभु की गुणस्तुति का क्या लाभ ? हे नानक ! संसार में उसी जीव का जन्मना मुबारक है, जो सतिगुरु के सम्मुख रहकर सत्य में लीन हो जाए ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मूर्ख मनुष्य स्वयं को नहीं पहचानता और दूसरों को कह-कहकर दुखी करता है । अन्धे व्यक्ति की प्रारम्भिक प्रवृत्ति (दूसरों को दुख पहुँचाने की) दूर नहीं होती और परमात्मा से अलग रहकर दुख पाता है । मूर्ख जीव के हृदय में काम, क्रोध और लोभ प्रबल रहता है और हमेशा धन्धों में उलझे हुए ही उम्र बीत जाती है; हाथ, पैर, देख-देखकर और सुन-सुनकर थक गए हैं, उम्र के दिन समाप्त हो गए हैं । जिस नाम के द्वारा नौ निधियाँ प्राप्त हो जाएँ, वह सच्चा नाम मूर्ख को प्यारा नहीं लगता । (वास्तव में) सांसारिक काम-काज करते हुए (सांसारिक आकर्षणों से तटस्थ रह) मृत हो जाए और तदन्तर प्रभु-स्मरण द्वारा जीवन्त हो जाए, तभी मुक्ति का रहस्य प्राप्त होता है । लेकिन जिस प्राणी को परमात्मा के द्वार से उसकी कृपा प्राप्त न हुई, वह (पूर्वकृत कर्मों के परिणामस्वरूप शुभ संस्कारों से) उपजे शुभ कर्मों के बिना अब ईश्वर-भजन के संस्कार कहाँ से पाए ? हे मूर्ख ! सतिगुरु के शब्द को हृदय में सँभाल (क्योंकि) उच्च आत्मिक अवस्था तथा सुबुद्धि

शब्द द्वारा ही प्राप्त होती है। हे नानक! सतिगुरु भी तभी मिलता है, जब मनुष्य हृदय से अहंकार दूर करता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस मनुष्य के हृदय में प्रिय प्रभु वास करे, उसे किसी बात की चिन्ता नहीं रह जाती। प्रभु प्रत्येक प्रकार का सुख देनेवाला है, उसका स्मरण करने से एक क्षण भी नहीं चूकना चाहिए। जिस मनुष्य ने हरि को स्मरण किया है, उसे सारे सुख प्राप्त हो जाते हैं; इसलिए सदा सत्संगति में जाकर बैठना चाहिए और प्रभु के गुणों पर विचार करना चाहिए। हरि के भक्त के समस्त क्लेश, भूख और रोग दूर हो जाते हैं और सारे बन्धन समाप्त हो जाते हैं, (क्योंकि) हरि का भक्त हरि की अपनी कृपा द्वारा बनता है। लोगों को चाहिए कि हरि के भक्तों का दर्शन करके पार उतर जाएँ (लेकिन यह सांसारिक व्यक्तियों को भला नहीं लगता) ॥ ४ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का सुआउ न पाइआ। नानक रसना सबदि रसाइ जिनि हरि हरि मंनि वसाइआ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ। नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइ पिआरिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि आपे ठाकुरु सेवकु भगतु हरि आपे करे कराए। हरि आपे वेखै विगसै आपे जितु भावै तितु लाए। हरि इकना मारगि पाए आपे हरि इकना उझड़ि पाए। हरि सचा साहिबु सचु तपावसु करि वेखै चलत सबाए। गुर परसादि कहै जनु नानकु हरि सचे के गुण गाए ॥ ५ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ जिस जिह्वा ने हरि-नाम का आस्वादन नहीं किया, वह जिह्वा जल जाए अर्थात् वह जिह्वा व्यर्थ है। हे नानक! वह जिह्वा गुरु के शब्द में रसमग्न हो जाती है, जिसने प्रभु को मन में बसाया है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिस जिह्वा ने प्रभु-नाम को विस्मृत किया है, वह जिह्वा जल जाए। हे नानक! सतिगुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य की जिह्वा हरि का नाम जपती है और हरि के नाम में लगाव रखती है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु स्वयं ही ठाकुर और स्वयं ही सेवक तथा भक्त है। आप कार्य करता है और आप ही जीवों से करवाता है, आप ही देखता है और आप ही प्रसन्न होता है, जिस ओर चाहता है, उस ओर ही जीवों को प्रवृत्त करता है। एक जीव को आप ही सन्मार्ग पर लगाता है और एक को आप ही कुमार्गगामी बनाता है। हरि सच्चा मालिक है, उसका न्याय भी अविस्मरणीय है, वह आप ही समस्त तमाशे करके देख

रहा है। दास नानक का कथन है कि सतिगुरु की कृपा से ही मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु के गुण गाता है ॥ ५ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेसु। जे घरि घरि हंढै मंगदा धिगु जीवणु धिगु वेसु। जे आसा अंदेसा तजि रहै गुरमुखि भिखिआ नाउ। तिस के चरन पखालीअहि नानक हउ बलिहारै जाउ॥१॥ म० ३॥ नानक तरवरु एकु फलु दुइ पंखेरू आहि। आवत जात न दीसही ना पर पंखी ताहि। बहु रंगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु। हरि रसि फलि राते नानका करमि सचा नीसाणु ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ आपे धरती आपे है राहकु आपि जंमाइ पीसावै। आपि पकावै आपि भांडे देइ परोसै आपे ही बहि खावै। आपे जलु आपे दे छिंगा आपे चुली भरावै। आपे संगति सदि बहालै आपे विदा करावै। जिस नो किरपालु होवै हरि आपे तिस नो हुकमु मनावै ॥ ६ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ कोई विरला फ़क़ीर ही फ़क़ीरी के आदर्श को समझता है। यदि कोई व्यक्ति फ़क़ीर होकर घर-घर माँगता फिरे, तो उसके जीवन को धिक्कार है और उसके फ़क़ीरी पहनावे को धिक्कार है। यदि कोई प्राणी फ़क़ीर बनकर आशा और चिन्ता को छोड़ दे और सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर नाम की भिक्षा माँगे तो, हे नानक ! मैं उस पर बलिहारी हूँ, उसके चरण धोने चाहिए ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हे नानक ! संसार रूपी वृक्ष पर माया-मोह का फल लगा है, उस पर गुरमुख तथा मनमुख दो प्रकार के पक्षी हैं; वे पक्षी पंखहीन हैं, वे आते-जाते दिखाई नहीं देते। बहुत से रंगों में आस्वादन लेनेवाले ने रसों को चखा है और निरेच्छ पक्षी शब्द में लीन रहता है। हे नानक ! हरि की कृपा से जिनके मस्तक पर सच्चा टीका है, वे नाम के रस रूपी फल में मस्त हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु आप ही भूमि है और आप ही उसे जोतनेवाला है, आप ही उगाता है और आप ही पिसाता है, आप ही पकाता है और आप ही बर्तनों से बाँटता है और आप ही चुल्ली कराता है। हरि आप ही संगति को बुलाकर बिठाता है और आप ही विदा करता है। जिस पर प्रभु कृपालु होता है, उसे अपनी रज़ा में मनाता है ॥ ६ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबंधु। ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु।

जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु । नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु ।। १ ।। म० ४ ।। अंधे चानणु ता थीऐ जा सतिगुरु मिलै रजाइ । बंधन तोड़ै सचि वसै अगिआनु अधेरा जाइ । सभु किछु देखै तिसै का जिनि कीआ तनु साजि । नानक सरणि करतार की करता राखै लाज ।। २ ।। पउड़ी ।। जदहु आपे थाटु कीआ बहि करतै तदहु पुछि न सेवकु बीआ । तदहु किआ को लेवै किआ को देवै जां अवरु न दूजा कीआ । फिरि आपे जगतु उपाइआ करतै दानु सभना कउ दीआ । आपे सेव बणाईअनु गुरमुखि आपे अंम्रितु पीआ । आपि निरंकार आकारु है आपे आपे करै सु थीआ ।। ७ ।।

।। सलोक महला ३ ।। समस्त कर्मकाण्ड बन्धनरूप हैं और शुभ-अशुभ कर्म भी संसार से जोड़े रखने का माध्यम हैं। ममता और मोह भी बन्धन हैं; पुत्र और स्त्री (का लगाव भी) दुख का हेतु है। जिधर भी देखता हूँ, उधर ही माया-मोह रूपी रस्सी है। हे नानक ! सच्चे नाम के बिना अन्धा मनुष्य माया का ही प्रयोग करता है ।। १ ।। ।। म० ४ ।। अन्धे मनुष्य को प्रकाश तभी होता है, यदि प्रभु की रज़ा स्वीकारते हुए उसे सतिगुरु मिल जाए क्योंकि सतिगुरु के मिलने से ही वह माया के बन्धन तोड़ लेता है, सत्यस्वरूप हरि में लीन हो जाता है और उसका अज्ञान रूपी अँधेरा दूर हो जाता है। जिसने शरीर बनाकर पैदा किया है, मनुष्य सब कुछ उसी का ही समझता है और हे नानक ! वह मनुष्य सृजनहार की शरण लेता है और सृजनहार प्रभु उसकी लाज बचाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। जब प्रभु ने आप ही बैठकर सृजना की, तब उसने दूसरे किसी सेवक से परामर्श नहीं किया था, तब कोई दूसरा उत्पन्न नहीं किया था; (इसलिए) तब किसी को किसी से लेना क्या था और देना क्या था ? फिर हरि ने आप ही संसार को उत्पन्न किया और सब जीवों को रोज़ी दी। गुरु के द्वारा स्मरण की युक्ति प्रभु ने आप ही बनाई और उसने आप ही नाम रूपी अमृत पान किया। प्रभु आप ही निराकार है और आप ही साकार है; जो वह आप करता है, वही होता है ।। ७ ।।

।। सलोक म० ३ ।। गुरमुखि प्रभु सेवहि सद साचा अनदिनु सहजि पिआरि । सदा अनंदि गावहि गुण साचे अरधि उरधि उरिधारि । अंतरि प्रीतमु वसिआ धुरि करमु लिखिआ करतारि । नानक आपि मिलाइअनु आपे किरपा धारि ।। १ ।।

।। म० ३ ।। कहिऐ कथिऐ न पाईऐ अनदिनु रहै सदा गुण गाइ । विणु करमै किनै न पाइओ भउकि मुए बिललाइ । गुर कै सबदि मनु तनु भिजै आपि वसै मनि आइ । नानक नदरी पाईऐ आपे लए मिलाइ ।। २ ।। पउड़ी ।। आपे वेद पुराण सभि सासत आपि कथै आपि भीजै । आपे ही बहि पूजे करता आपि परपंचु करीजै । आपि परविरति आपि निरविरती आपे अकथु कथीजै । आपे पुंनु सभु आपि कराए आपि अलिपतु वरतीजै । आपे सुखु दुखु देवै करता आपे बखस करीजै ।। ८ ।।

।। सलोक महला ३ ।। सतिगुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य हर समय सहज अवस्था में लौ लगाकर अर्थात् एकाग्रचित्त होकर सच्चे प्रभु को स्मरण करते हैं और नीचे-ऊपर सर्वत्र व्यापक हरि को हृदय में पिरोकर उत्साहपूर्वक सत्यस्वरूप हरि की गुणस्तुति करते हैं । आदिकाल से ही कर्तार ने दान का सन्देश लिख दिया है, जिससे उनके (भक्तों के) हृदय में प्यारा प्रभु बसता है । हे नानक ! उस प्रभु ने आप ही कृपा करके उन्हें अपने में मिला लिया है ।। १ ।। म० ३ ।। (प्रभु के प्रति जब तक पूर्ण समर्पण नहीं होता, तब तक) मनुष्य चाहे सर्वदा हर समय गुणगान करता रहे, लेकिन इस प्रकार कहते रहने से प्रभु नहीं मिलता; प्रभु-कृपा के बिना वह किसी को नहीं मिला, (जब कि) कितने ही मनुष्य रोते-पीटते मर गए हैं । सतिगुरु के शब्द द्वारा तन, मन भीगता है और प्रभु हृदय में बसता है । हे नानक ! प्रभु अपनी कृपादृष्टि द्वारा ही मिलता है और वह आप ही जीव को अपने साथ मिलाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। समस्त वेद, पुराण और शास्त्रों का सृजन प्रभु आप ही करता है, आप ही इनकी कथा कहता है और आप ही (सुनकर) प्रसन्न होता है । हरि आप ही बैठकर पूजा करता है और आप ही दूसरा प्रसार प्रसारित करता है । वह आप ही संसार में प्रवृत्त है और आप ही इससे तटस्थता लिये बैठा है और अपना अकथनीय व्यक्तित्व आप ही व्यक्त करता है । वह पुण्य भी आप ही कराता है, तदन्तर (पाप) पुण्य से निर्लिप्त भी आप ही रहता है, प्रभु आप ही सुख-दुख देता है और आप ही कृपा करता है ।। ८ ।।

।। सलोक म० ३ ।। सेखा अंदरहु जोरु छडि तू भउ करि झलु गवाइ । गुर कै भै केते निसतरे भै विचि निरभउ पाइ । मनु कठोरु सबदि भेदि तूं सांति वसै मनि आइ । सांती विचि कार कमावणी सा खसमु पाए थाइ । नानक कामि क्रोधि किनै न पाइओ पुछहु गिआनी जाइ ।। १ ।।

।। म० ३ ।। मनमुख माइआ मोहु है नामि न लगो पिआरु। कूड़ु कमावै कूड़ु संग्रहै कूड़ु करे आहारु। बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंते होइ सभु छारु। करम धरम सुच संजम करहि अंतरि लोभु विकारु। नानक जि मनमुखु कमावै सु थाइ ना पवै दरगहि होइ खुआरु ।। २ ।। पउड़ी ।। आपे खाणी आपे बाणी आपे खंड वरभंड करे। आपि समुंदु आपि है सागरु आपे ही विचि रतन धरे। आपि लहाए करे जिसु किरपा जिस नो गुरमुखि करे हरे। आपे भउजलु आपि है बोहिथा आपे खेवटु आपि तरे। आपे करे कराए करता अवरु न दूजा तुझै सरे ।। ६ ।।

।। सलोक महला ३ ।। हे शेख़ ! हृदय से हठ छोड़ दे, यह पागलपन दूर कर और सतिगुरु का भय हृदय में बसा। सतिगुरु के सम्मान में रहकर निर्भय प्रभु को प्राप्त करके उसके भय को स्वीकार कर कई लोग पार उतर गए हैं। अपने कठोर मन को सतिगुरु के शब्द द्वारा बींध, ताकि तेरे मन में शान्ति तथा ठण्डक आकर बसे, तदन्तर इसमें से जो भी धन्धा करेगा, मालिक उसे स्वीकार करेगा। हे नानक ! किसी ज्ञानी पुरुष को जाकर पूछो, काम-क्रोध के अधीनस्थ होकर किसी ने भी परमात्मा को प्राप्त न क़िया ।। १ ।। म० ३ ।। मनमुख का माया में मोह होता है इसलिए नाम में उसका लगाव नहीं होता। वह झूठ कमाता है, झूठ एकत्रित करता है और झूठ को ही अपनी ख़ुराक बनाता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य विष रूपी माया-धन को एकत्रित कर-करके खपते-मरते हैं और वह सारा धन अन्त में राख हो जाता है। वे अपनी ओर से आत्मिक कार्य भी करते हैं, कर्म-धर्म पवित्रता के साधन और दूसरे संयम करते हैं, लेकिन उनके हृदय में लोभ तथा विकार ही रहता है। हे नानक ! स्वेच्छाचारी मनुष्य जो कुछ भी करता है, वह सत्कृत (स्वीकृत) नहीं होता और प्रभु की सेवा में वह दुखी होता है ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु स्वयं ही सबकी खान हैं, आप ही बाणी हैं, खण्ड और ब्रह्माण्ड आप ही बनाते हैं। प्रभु आप ही समुद्र है और उसने आप ही इसमें गुणस्तुति रूपी रत्न छिपा रखे हैं; जिस पर कृपा करता है और जिसे सतिगुरु के समीपस्थ करता है, उसे वह आप ही वह रत्न प्राप्त करा देता है। प्रभु आप ही समुद्र है, आप ही जहाज है, आप ही मल्लाह है, आप ही पार उतरता है, आप ही सब कुछ करता-कराता है। हे प्रभु ! तुम्हारे जैसा दूसरा कोई नहीं है ।। ९ ।।

॥ सलोक म० ३ ॥ सतिगुर की सेवा सफल है जे को करे चितु लाइ। नामु पदारथु पाईऐ अचिंतु वसै मनि आइ। जनम मरन दुखु कटीऐ हउमै ममता जाइ। उतम पदवी पाईऐ सचे रहै समाइ। नानक पूरबि जिन कउ लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ नामि रता सतिगुरू है कलिजुग बोहिथु होइ। गुरमुखि होवै सु पारि पवै जिना अंदरि सचा सोइ। नामु सम्हाले नामु संग्रहै नामे ही पति होइ। नानक सतिगुरु पाइआ करमि परापति होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे पारसु आपि धातु है आपि कीतोनु कंचनु। आपे ठाकुरु सेवकु आपे आपे ही पाप खंडनु। आपे सभि घट भोगवै सुआमी आपे ही सभु अंजनु। आपि बिबेकु आपि सभु बेता आपे गुरमुखि भंजनु। जनु नानकु सालाहि न रजै तुधु करते तू हरि सुखदाता वडनु ॥ १० ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ यदि मनुष्य मन टिकाकर सतिगुरु का बताया धन्धा करे, तो वह सेवा अवश्य फलदायक होती है। उसे नाम-धन मिल जाता है और चिन्तारहित प्रभु मन में आ बसता है, अहंत्व, ममत्व दूर हो जाता है और यह सारी उम्र का दुख काटा जाता है। प्रभु की सेवा में अत्यन्त सम्मान मिलता है और मनुष्य सच्चे हरि में समाया रहता है। हे नानक! पूर्वकृत शुभ कर्मों के अनुसार जिनके हृदय में शुभ संस्कार लिखे हैं, उन्हें ही सतिगुरु आ मिलता है ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरु प्रभु के नाम में अनुरक्त रहता है और कलियुग के जीवों को पार करने के लिए जहाज़ बनता है क्योंकि वह नाम को सँभालता है और नाम-धन एकत्रित करता है; (हरि के दरबार में) आदर भी नाम से ही होता है। हे नानक! सतिगुरु को मिलकर प्रभु की कृपादृष्टि से नाम की प्राप्ति होती है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ स्वामी-प्रभु आप ही पारस है, आप ही लोहा है और उसने आप ही सोना बनाया है। आप ही ठाकुर है, आप ही सेवक है और आप ही पाप दूर करनेवाला है। सब जीवों में आप ही व्यापक होकर भौतिक पदार्थ भोगता है और सारी माया भी आप ही है। आप ही विवेक है, आप ही विवेक को जाननेवाला है और आप ही सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर माया के बन्धन तोड़नेवाला है। हे कर्तार! दास नानक तुम्हारी गुणस्तुति करता हुआ तृप्त नहीं होता। (मैं तुम्हारी क्या-क्या गुणस्तुति करूँ?) तुम सर्वोपरि सुखों के दाता हो ॥ १० ॥

।। सलोकु म० ४ ।। बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना जेते करम कमाहि । बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि । बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि आइ । नानक बिनु सतिगुर सेवे जमपुरि बधे मारीअहि मुहि कालै उठि जाहि ।। १ ।। म० ३ ।। इकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु । नानक जनमु सवारनि आपणा कुल का करनि उधारु ।। २ ।। पउड़ी ।। आपे चाटसाल आपि है पाधा आपे चाटड़े पड़ण कउ आणे । आपे पिता माता है आपे आपे बालक करे सिआणे । इकथै पड़ि बुझै सभु आपे इकथै आपे करे इआणे । इकना अंदरि महलि बुलाए जा आपि तेरै मनि सचे भाणे । जिना आपे गुरमुखि दे वडिआई से जन सची दरगहि जाणे ।। ११ ।।

।। सलोकु महला ४ ।। सतिगुरु द्वारा बतलाया काम-धन्धा न करके जीव दूसरे जितने कर्म करते हैं, वे सब उनके लिए बन्धन बनते हैं। सतिगुरु की सेवा के बिना कोई दूसरा अवलम्ब जीवों को नहीं मिलता, इसलिए वे जन्मते-मरते रहते हैं। गुरु द्वारा बतलाया स्मरणकर्म न करके मनुष्य दूसरे फीके बोल बोलता है, इसके हृदय में नाम नहीं बसता। इसलिए हे नानक ! सतिगुरु की सेवा के बिना जीव यमपुरी में बाँधे मारे जाते हैं और दुनिया से बदनामी पाकर जाते हैं ।। १ ।। म० ३ ।। कई मनुष्य सतिगुरु का बतलाया हुआ स्मरणकर्म करते हैं, उनका प्रभु के नाम में अनुराग हो जाता है। हे नानक ! वे अपना मनुष्य-जन्म सँवार लेते हैं और अपने वंश का उद्धार भी कर लेने हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु स्वयं पाठशाला है, आप ही अध्यापक है और आप ही छात्र पढ़ने के लिए लाता है; आप ही माँ-बाप है और आप ही बालकों को बुद्धिमान बनाता है। एक स्थान पर सब कुछ पढ़कर आप ही समझता है और एक स्थान पर आप ही बालकों को मूर्ख बना देता है। हे सच्चे हरि ! जब तुम्हें कोई भी स्वयं भला लगता है, तब तुम उसे अपने महल में बुला लेते हो। जिन गुरमुखों को तुम स्वयं आदर देते हो, वे सच्चे दरबार में प्रकट हो जाते हैं ।। ११ ।।

।। सलोकु मरदाना १ ।। कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु । क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहंकारु । मजलस कूड़े लब की पी पी होइ खुआरु । करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु । गुण मंडे करि सीलु घिउ सरमु मासु

आहारु। गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाहि बिकार ।। १ ।। ।। मरदाना १ ।। काइआ लाहणि आपु मदु मजलस त्रिसना धातु। मनसा कटोरी कूड़ि भरी पीलाए जम कालु। इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार। गिआनु गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु। नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु।।२।। कांयां लाहणि आपु मदु अंम्रित तिस की धार। सतसंगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी अंम्रित भरी पी पी कटहि बिकार।। ३।। ।। पउड़ी ।। आपे सुरि नर गण गंधरबा आपे खट दरसन की बाणी। आपे सिव संकर महेसा आपे गुरमुखि अकथ कहाणी। आपे जोगी आपे भोगी आपे संनिआसी फिरै बिबाणी। आपै नालि गोसटि आपि उपदेसै आपे सुघड़ु सरूपु सिआणी। आपणा चोजु करि वेखै आपे आपे सभना जीआ का है जाणी।। १२ ।।

।। सलोकु मरदाना १ ।। कलियुगी स्वभाव शराब निकालनेवाली भट्ठी है, काम शराब है और इसे पीनेवाला मन है, मोह से लबालब भरी हुई क्रोध की कटोरी है और अहंकार मानो पिलानेवाला है, झूठ-फ़रेब की मानो महफ़िल है, जहाँ मन शराब पी-पीकर दुखी होता है। शुभ कर्म को (शराब निकालनेवाली) मटकी, सत्य बोलने को गुड़ बनाकर सच्चे नाम को श्रेष्ठ शराब बना। गुणों को रोटियाँ, शीतल स्वभाव को घी और लज्जा को मांस (के रूप में) ख़ुराक बना। हे नानक! यह ख़ुराक सतिगुरु के सान्निध्य में रहने से मिलती है और इसके खाने से समस्त विकार मिट जाते हैं।। १ ।। मरदाना १ ।। शरीर मटकी है, अहंकार शराब और तृष्णा में भटकना महफ़िल है, मिथ्या से ओत-प्रोत वासना ही कटोरी है और यमराज मानो शराब पिलाता है। हे नानक ! इस शराब के पान करने से बहुत से विकार प्राप्त होते हैं। प्रभु का ज्ञान गुड़ होवे, गुणस्तुति की रोटियाँ हों, प्रभु का भय मांस हो —यह ख़ुराक हो (तो श्रेयष्कर है)। हे नानक ! यह भोजन सच्चा है क्योंकि सच्चा नाम ही ज़िन्दगी का सहारा हो सकता है।। २ ।। यदि शरीर मटकी हो, आत्मबोध शराब और उसकी धारा अमृत हो, सत्संगति के साथ मेल हो, अमृत नाम की भरी हुई लौ कटोरी हो, (तभी मनुष्य) इस शराब को पी-पीकर सारे विकार दूर करते हैं।। ३ ।। पउड़ी ।। प्रभु स्वयं ही देव, मनुष्य, गण, गन्धर्व और आप ही छः दर्शनों की बोली बनानेवाला है, आप ही शिव, शंकर तथा महेश है, आप ही गुरु के सान्निध्य में रहकर अपने अकथनीय स्वरूप की महानता बखान करता है, आप ही योग की साधना करनेवाला है, आप ही भोगों में प्रवृत्त है और आप ही संन्यासी बनकर जंगलों में फिरता है, आप

ही अपने साथ चर्चा करता है, आप ही उपदेश करता है, आप ही बुद्धिमान तथा सुन्दर है, अपना कौतुक करके आप ही देखता है और आप ही जीवों के भीतर की बात जाननेवाला है ।। १२ ।।

।। सलोकु म० ३ ।। एहा संधिआ परवाणु है जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै । हरि सिउ प्रीति ऊपजै माइआ मोहु जलावै । गुर परसादी दुबिधा मरै मनूआ असथिरु संधिआ करे वीचारु । नानक संधिआ करै मनमुखी जीउ न टिकै मरि जंमै होइ खुआरु ।। १ ।। म० ३ ।। प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिआस न जाइ । नानक सतिगुरि मिलिऐ मेरी पिआस गई पिरु पाइआ घरि आइ ।। २ ।। पउड़ी ।। आपे तंतु परम तंतु सभु आपे आपे ठाकुरु दासु भइआ । आपे दसअठ वरन उपाइअनु आपि ब्रहमु आपि राजु लइआ । आपे मारे आपे छोडै आपे बखसे करे दइआ । आपि अभुलु न भुलै कबही सभु सचु तपावसु सचु थिआ । आपे जिना बुझाए गुरमुखि तिन अंदरहु दूजा भरमु गइआ ।। १३ ।।

।। सलोकु महला ३ ।। वह सन्ध्या प्रामाणिक है (अर्थात् वास्तविक है), जिससे प्यारा प्रभु हृदय में बस जाए, प्रभु से प्रेम हो जाए और माया-मोह जल जाए । सतिगुरु की कृपा द्वारा जिस मनुष्य की दुबिधा समाप्त हो जाए, मन विश्वस्त हो जाए, वह सन्ध्या का सही विचार करता है । हे नानक ! मनमुख सन्ध्या करता है, लेकिन उसका मन स्थिर नहीं हो पाता, (यही कारण है कि) वह जन्मता-मरता रहता है और दुखी होता है ।। १ ।। म० ३ ।। 'प्यारा, प्यारा' कहती हुई मैं सारी दुनिया में फिरी, लेकिन मैं अतृप्त ही रही । हे नानक ! सतिगुरु को मिलने से मेरी प्यास दूर हो गई है और घर में आकर प्रिय स्वामी प्राप्त कर लिया है ।। २ ।। ।। पउड़ी ।। छोटा तार, बड़ा तार अर्थात् जीव, परमेश्वर सब कुछ प्रभु स्वयं ही है, आप ही सेवक तथा स्वामी है, उस प्रभु ने आप ही अठारह वर्ण बनाए, वह आप ही ब्रह्म है और आप ही दुनिया का राज्य उसने लिया हुआ है । (प्राणियों को) आप ही मिटाता है, आप ही छोड़ता है, आप ही बख़्शता है और आप ही कृपा करता है, प्रभु आप अविस्मरणीय है, वह कभी विस्मृत नहीं होता । उसका न्याय शुद्ध सत्य है, वह सतिगुरु के माध्यम से जिन्हें आप समझा देता है, उनके हृदय से माया की दुबिधा दूर हो जाती है ।। १३ ।।

॥ सलोकु म० ५ ॥ हरिनामु न सिमरहि साध संगि तै तनि उडै खेह । जिनि कीती तिसै न जाणई नानक फिटु अलूणी देह ॥ १ ॥ म० ५ ॥ घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल । नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ आपे अठसठि तीरथ करता आपि करे इसनानु । आपे संजमि वरतै स्वामी आपि जपाइहि नामु । आपि दइआलु होइ भउखंडनु आपि करै सभु दानु । जिसनो गुरमुखि आपि बुझाए सो सदही दरगहि पाए मानु । जिस दी पैज रखै हरि सुआमी सो सचा हरि जानु ॥ १४ ॥

॥ सलोकु महला ५ ॥ जो मनुष्य सत्संगति में हरि का नाम स्मरण नहीं करते, उनके शरीर पर राख गिरती है अर्थात् वे अपमानित होते हैं । हे नानक ! प्रेमरहित उस शरीर को धिक्कार है, जो उस प्रभु को नहीं पहचानता, जिसे उसने बनाया है ॥ १ ॥ म० ५ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु के चरण-कमल रहते हैं और जिह्वा हरि का जाप करती है, वह प्रभु (उस शरीर में) स्मरण किया जाता है, उस शरीर का पालन-पोषण करो ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु स्वयं ही अड़सठ तीर्थों का निर्माता है आप ही उन तीर्थों पर स्नान करनेवाला है, स्वामी-प्रभु आप ही युक्ति में विद्यमान है और आप ही नाम जपाता है, भय दूर करनेवाला प्रभु आप ही दयालु है और आप ही सब प्रकार का दान करता है । प्रभु जिस प्राणी को सतिगुरु के माध्यम से ज्ञान देता है, वह हमेशा दरबार में सत्कृत होता है । जिसकी लाज प्रभु आप बचाता है, वह परमात्मा का प्यारा सेवक परमात्म-रूप है ॥ १४ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ नानक बिनु सतिगुर भेटे जगु अंधु है अंधे करम कमाइ । सबदै सिउ चितु न लावई जितु सुखु वसै मनि आइ । तामसि लगा सदा फिरै अहिनिसि जलतु बिहाइ । जो तिसु भावै सो थीऐ कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरू फुरमाइआ कारी एह करेहु । गुरूदुआरै होइ कै साहिबु संमालेहु । साहिबु सदा हजूरि है भरमै के छउड़ कटिकै अंतरि जोति धरेहु । हरि का नामु अंम्रितु है दारू एहु लाएहु । सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सचा नेहु । नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी अगै हरि सिउ केल करेहु ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ आपे भार अठारह बणसपति आपे ही फल लाए ।

आपे माली आपि सभु सिंचै आपे ही मुहि पाए। आपे करता आपे भुगता आपे देइ दिवाए। आपे साहिबु आपे है राखा आपे रहिआ समाए। जनु नानक वडिआई आखै हरि करते की जिसनो तिलु न तमाए ॥ १५ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ हे नानक ! गुरु के मिले बिना संसार अन्धा है और काम भी अन्धे (ग़लत) ही करता है, सतिगुरु की शिक्षा में मन नहीं लगाता, जिससे हृदय में सुख हो। तमोगुण में मस्त होकर सदा भटकता है और दिन-रात्रि तमोगुण में जलते हुए उसकी आयु बीतती है। इस सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता, जो प्रभु को रुचता है वही होता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुरु ने आदेश दिया है कि भ्रम से मुक्त होने के लिए यह करो— गुरु के द्वार पर जाकर प्रभु को स्मरण करो, मालिक सदा साथ-साथ हैं इसलिए भ्रम के जाले को दूर करके हृदय में उसकी ज्योति टिकाओ। हरि का नाम अमर करनेवाला है —यह नाम-औषधि प्रयोग करो, सतिगुरु का भाणा हृदय में स्वीकारो तथा सदाचरण ग्रहण करो। हे नानक ! यह औषधि यहाँ संसार में सुखी रखेगी और इसके द्वारा आगे परलोक में भी प्रभु-प्रेम पाओगे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु आप ही समस्त वनस्पति है, आप ही उस वनस्पति को फलित करता है, आप ही माली है, आप ही पानी देता है, आप ही फल खाता है, आप ही कर्तार है, आप ही भोक्ता है, आप ही देता है और आप ही दिलाता है, वह मालिक भी आप है, रक्षक भी आप है और आप ही सर्वत्र व्यापक है। हे नानक ! कोई विरला सेवक ही उस प्रभु की गुणस्तुति करता है, जिसे तनिक मात्र भी लोभ-लालच नहीं है ॥ १५ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ। जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ। आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ। जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ। झूठा मदु मूलि न पीचई जेका पारि वसाइ। नानक नदरी सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ। सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ इहु जगतु जीवतु मरै जा इसनो सोझी होइ। जा तिन्हि सवालिआ तां सवि रहिआ जगाए तां सुधि होइ। नानक नदरि करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ। गुरप्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस दा कीता सभु किछु होवै तिसनो परवाह नाही किसै केरी। हरि जीउ तेरा

दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी। जि तुधनो सालाहे सु सभु किछु पावै जिसनो किरपा निरंजन केरी। सोई साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरिनामु धनु तेरी। सभि तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि विडारी ढेरी॥ १६॥

॥ सलोक महला ३॥ जो मनुष्य विकृत होकर इस दुनिया में लाया गया, वह यहाँ आकर और विकारों में ग्रस्त हो जाता है अर्थात् मद्यपान आदि कुकर्मों में लग जाता है। लेकिन जिसके पान करने से बुद्धि मर जाती है और बकने का जोश आ चढ़ता है, अपने-पराए की पहचान नहीं रहती, मालिक की ओर से धक्के लगते हैं, जिसके पान करने से पति विस्मृत हो जाता है और दरबार में सज़ा मिलती है, ऐसी गुणहीन शराब जहाँ तक वश चले कभी नहीं पीनी चाहिए। हे नानक! प्रभु की कृपादृष्टि से नाम रूपी नशा मिलता है; जिसे गुरु आकर मिल जाय, वह मनुष्य सदा मालिक के रंग में रहता है और दरबार में उसे प्रतिष्ठा मिलती है॥ १॥ म० ३॥ जब इस संसार को बोध होता है, तब यह जीवित रहते हुए ही मर जाता है अर्थात् माया से तटस्थ रहता है; लेकिन यह सूझ तभी होती है, जब प्रभु आप जगाता है, जब तक उसने माया में फँसाया हुआ है तब तक सोता रहता है। हे नानक! यदि प्रभु अपनी कृपादृष्टि करे तो वह आप सतिगुरु मिलाता है और सतिगुरु की कृपा द्वारा संसार जीवित रहता हुआ ही मृत रहता है और फिर उसे मरना नहीं होता अर्थात् वह जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है॥ २॥ पउड़ी॥ उस प्रभु को किसी की चिन्ता नहीं है क्योंकि सब कुछ उसी का किया हुआ होता है। हे हरि! सारी सृष्टि को तुम्हारी ज़रूरत है क्योंकि प्रत्येक जीव तुम्हारा दिया खाता है। हे प्रभु! जो तुम्हारी गुणस्तुति करता है, उसे सब कुछ प्राप्त होता है क्योंकि उस पर माया-रहित प्रभु की कृपा होती है। हे हरि जिसने तुम्हारा नाम रूपी सौदा लादा है, वही साहूकार है और सच्चा व्यापारी है। हे सन्तो! जिस प्रभु ने माया-मोह का टीला गिराकर निकाल दिया है, तुम सब उसकी गुणस्तुति करो॥ १६॥

॥ सलोक॥ कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ। ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ॥ १॥ ॥ म० ३॥ किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइ। जेकरि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला मरणा होइ। मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै सभु कोइ। गुरपरसादी जीवतु मरै

हुकमै बूझै सोइ । नानक ऐसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जा आपि क्रिपालु होवै हरि सुआमी ता आपणां नाउ हरि आपि जपावै । आपे सतिगुरु मेलि सुखु देवै आपणां सेवकु आपि हरि भावै । आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै आपणिआ भगता की पैरी पावै । धरमराइ है हरि का कीआ हरि जन सेवक नेड़ि न आवै । जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ १७ ॥

॥ सलोक ॥ हे कबीर ! मरता, मरता तमाम संसार मर रहा है, लेकिन किसी ने भी मरने की जाँच नहीं जानी । जो मनुष्य इस प्रकार की सच्ची मृत्यु पाता है, उसे पुनःपुनः मरना नहीं पड़ता ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ मुझे यह पता नहीं कि मरण क्या होता है और मरना कैसे चाहिए ? यदि मालिक मन से भुलाया न जाए तो मरण बड़ा सहज होता है । मरण से तमाम संसार डरता है, प्रत्येक जीव जीना चाहता है, गुरु की कृपा द्वारा जो मनुष्य जीवित ही मृत्यु को अपनाता है, वह प्रभु की रज़ा को समझता है । हे नानक! इस प्रकार की मौत जो मरता है, उसे अटल जीवन मिल जाता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जब हरि-स्वामी आप मेहरबान होता है तो अपना नाम जीवों से आप जपाता है, अपना सेवक हरि को प्यारा लगाता है । उस सेवक को सतिगुरु मिलाकर सुख देता है । प्रभु अपने सेवकों की लाज आप रखता है, दुनिया को भी अपने भक्तों के चरणों में जगह दिलवाता है; धर्मराज भी जो प्रभु द्वारा ही बनाया हुआ है, प्रभु के सेवक के निकट नहीं आता । जो मनुष्य प्रभु का प्यारा है, वह सबका प्यारा है, बाक़ी सृष्टि खप-खपकर जन्मती-मरती रहती है (लेकिन प्रभु-भक्त के समान उन्हें किसी का प्रेम नहीं मिलता) ॥ १७ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ रामु रामु करता सभु जगु फिरै रामु न पाइआ जाइ । अगमु अगोचरु अति वडा अतुलु न तुलिआ जाइ । कीमति किनै न पाईआ कितै न लइआ जाइ । गुर कै सबदि भेदिआ इन बिधि वसिआ मनि आइ । नानक आपि अमेउ है गुर किरपा ते रहिआ समाइ । आपे मिलिआ मिलि रहिआ आपे मिलिआ आइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ ए मन इहु धनु नामु है जितु सदा सदा सुखु होइ । तोटा मूलि न आवई लाहा सदही होइ । खाधै खरचिऐ तोटि न आवई सदा सदा ओहु देइ । सहसा मूलि न होवई हाणत कदे न होइ । नानक गुरमुखि पाईऐ जाकउ नदरि करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे सभ

घट अंदरे आपे ही बाहरि। आपे गुपतु वरतदा आपे ही जाहरि। जुग छतीह गुबारु करि वरतिआ सुंनाहरि। ओथै वेद पुरान न सासता आपे हरि नरहरि। बैठा ताड़ी लाइ आपि सभदू ही बाहरि। आपणी मिति आपि जाणदा आपे ही गउहरु॥ १८॥

॥ सलोक महला ३ ॥ सारा विश्व 'राम, राम' कहता फिरता है, लेकिन इस प्रकार राम मिल नहीं पाता। प्रभु अपहुँच है, इन्द्रियों की पकड़ से परे है, अत्यन्त महान है, अद्वितीय है और मूल्यांकन से परे है। किसी ने उसका मूल्यांकन नहीं किया और किसी जगह से उसे खरीदा भी नहीं जाता। लेकिन यदि गुरु के शब्द में मन बींधा जाए, तो इस प्रकार प्रभु मन में अवस्थित हो जाता है। हे नानक! प्रभु आप तो मूल्यांकन से परे है, लेकिन सतिगुरु की कृपा से यह विश्वास हो जाता है कि वह सर्वव्यापक है, प्रभु आप ही सर्वत्र मिला हुआ है और आप ही जीव के हृदय में आकर प्रकट होता है॥ १॥ म० ३॥ हे मन! जिस धन द्वारा हमेशा सुख होता है, वह धन 'नाम' है, इस धन को घाटा बिल्कुल ही नहीं, सदा लाभ ही लाभ है, खाने और खर्च करने से इसमें कमी नहीं होती क्योंकि प्रभु सदा ही इसको धन दिए जाता है। कभी इस धन के सम्बन्ध में कोई चिन्ता नहीं होती और प्रभु के दरबार में अपमानित नहीं होना पड़ता। (लेकिन) जिस जीव पर प्रभु की कृपादृष्टि होती है, उसे सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर यह धन मिलता है॥ २॥ पउड़ी॥ प्रभु स्वयं ही सब शरीरों में है और आप ही सबसे अलग है; आप ही सबमें छिपा है और आप ही सबमें प्रकट है। प्रभु स्वयं ही कई युग घोर अँधेरा करके शून्य स्थिति में रहता है, उस शून्य अवस्था के समस्त जीवों का मालिक प्रभु स्वयं ही होता है। वेद, पुराण, शास्त्र आदि कोई भी धार्मिक ग्रन्थ उस वक्त नही होते। प्रभु सबसे अलग होकर भी समाधि लगाकर बैठा हुआ है। प्रभु आप ही अथाह समुद्र है; वह कितना महान है —यह बात वह स्वयं ही जानता है॥ १८॥

॥ सलोक म० ३॥ हउमै विचि जगतु मुआ मरदो मरदा जाइ। जिचरु विचि दंमु है तिचरु न चेतई कि करेगु अगै जाइ। गिआनी होइ सु चेतंनु होइ अगिआनी अंधु कमाइ। नानक एथै कमावै सो मिलै अगै पाए जाइ॥ १॥ म० ३॥ धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ। सतिगुरि मिलिऐ अंतरि रवि रहिआ सदा रहिआ लिवलाइ। दमि दमि सदा सम्हालदा दंमु न बिरथा जाइ। जनम मरन का भउ गइआ

जीवन पदवी पाइ । नानक इहु मरतबा तिसनो देइ जिसनो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे दानां बीनिआ आपे परधानां । आपे रूप दिखालदा आपे लाइ धिआनां । आपे मोनी वरतदा आपे कथै गिआनां । कउड़ा किसै न लगई सभना ही भाना । उसतति बरनि न सकीऐ सद सद कुरबाना ॥ १९ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ संसार अहंत्व में मृत हुआ है, नित्यप्रति अधोगति को ही प्राप्त होता रहता है; जब तक शरीर में प्राण है, वह प्रभु को स्मरण नहीं करता। (ऐसी स्थिति में) जीव का आगे जाकर क्या हाल होगा। जो मनुष्य ज्ञानी होता है, वह सचेत रहता है और अज्ञानी जीव अज्ञानता का काम ही करता है। हे नानक ! मनुष्य-जन्म में मनुष्य जो कुछ उपलब्धि करता है, वही मिलती है। (यहाँ तक कि) परलोक में जाकर भी वही प्राप्त होती है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ चिरकाल से (सृष्टि के आदिकाल से) प्रभु का हुक्म परिचालित है कि सतिगुरु के बिना प्रभु का स्मरण नहीं किया जा सकता, सतिगुरु के मिलने पर ही प्रभु मनुष्य के हृदय में अवस्थित होता है और मनुष्य अपनी वृत्ति उसमें लगाए रखता है। प्रत्येक श्वास में उसे स्मरण रखता है, एक भी श्वास ख़ाली नहीं जाता; (इस प्रकार उसका) जन्म-मरण का भय समाप्त हो जाता है और उसे वास्तविक जीवन का स्थान (सम्मान) मिल जाता है। हे नानक ! प्रभु यह स्थान उस मनुष्य को देता है, जिस पर अपनी रज़ा अनुसार कृपा करता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु आप ही बुद्धिमान है, आप ही चतुर है, आप ही नेता है, आप ही अपने दर्शन देता है, आप ही वृत्ति जोड़ता है, आप ही मौनी है और आप ही ज्ञान की बातें करनेवाला है; किसी को कटु नहीं लगता, सबको प्रिय लगता है। ऐसे प्रभु पर मैं बलिहारी हूँ, उसके गुण अव्यक्त हैं ॥ १९ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ कली अंदरि नानका जिंनां दा अउतारु । पुतु जिनूरा धीअ जिंनूरी जोरू जिंना दा सिकदारु ॥१॥ ॥ म० १ ॥ हिंदू मूले भूले अखुटी जांही । नारदि कहिआ सि पूज करांही । अंधे गुंगे अंध अंधारु । पाथरु ले पूजहि मुगध गवार । ओहि जा आपि डुबे तुम कहा तरणहारु ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ सभु किहु तेरै वसि है तू सचा साहु । भगत रते रंगि एक कै पूरा वेसाहु । अंम्रितु भोजनु नामु हरि रजि रजि जन खाहु । सभि पदारथ पाईअनि सिमरणु सचु लाहु । संत पिआरे पारब्रहम नानक हरि अगम अगाहु ॥ २० ॥

॥ सलोक महला १ ॥ हे नानक ! कलियुग में (विकारों में उलझे) सब मनुष्य भूत-प्रेत हैं, पुत्र भूत, बेटी भूतनी और इन सबकी स्वामिनी है ॥ १ ॥ म० १ ॥ हिन्दू लोग बिल्कुल ही पथभ्रष्ट हुए जा रहे हैं, जो नारद ने कहा वही पूजा करते हैं, इन अन्धे-गूँगों के लिए घोर अँधेरा बना हुआ है। ये मूर्ख गँवार पत्थर लेकर पूज रहे हैं। हे भाई ! जब पत्थर आप डूब जाते हैं, तो तुम उनकी पूजा द्वारा किस प्रकार (संसार-समुद्र) पार कर सकते हो ? ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे प्रभु ! तुम सच्चे साहूकार हो और सब कुछ तेरे अधीनस्थ है। भजन करनेवाले दास एक हरि के रंग में रँगे हुए हैं और उस पर उन्हें पूर्ण विश्वास है। वे सेवक प्रभु का नाम रूपी अमृत-भोजन पेट भर कर खाते हैं, समस्त पदार्थ उन्हें मिलते हैं और वे नाम-स्मरण रूपी सच्चा लाभ प्राप्त करते हैं। हे नानक ! जो पारब्रह्म प्रभु अपहुँच है और अगाध है, भक्त उस प्रभु के प्यारे हैं ॥ २० ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ सभु किछु हुकमे आवदा सभु किछु हुकमे जाइ। जेको मूरखु आपहु जाणै अंधा अंधु कमाइ। नानक हुकमु को गुरमुखि बुझै जिसनो किरपा करे रजाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ सो जोगी जुगति सो पाए जिसनो गुरमुखि नामु परापति होइ। तिसु जोगी की नगरी सभु को वसै भेखी जोगु न होइ। नानक ऐसा विरला को जोगी जिसु घटि परगटु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे जंत उपाइअनु आपे आधारु। आपे सूखमु भालीऐ आपे पासारु। आपि इकाती होइ रहै आपे वड परवारु। नानकु मंगै दानु हरि संता रेनारु। होरु दातारु न सुझई तू देवणहारु ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु

॥ सलोक महला ३ ॥ प्रत्येक वस्तु प्रभु के हुक्म अनुसार आती है और हुक्म अनुसार ही चली जाती है। यदि कोई मूर्ख अपने आप को कुछ समझ लेता है, तो वह अन्धा अन्धों वाले काम करता है। हे नानक ! जिस मनुष्य पर अपनी रज़ा अनुसार प्रभु कृपा करता है, वह कोई विरला गुरमुख ही प्रभु के हुक्म की पहचान करता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिस मनुष्य को सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर नाम की प्राप्ति होती है, वह सच्चा योगी है और उसे योग की जाँच आई है, उस योगी के शरीर रूपी नगर में प्रत्येक गुण बसता है। केवल मात्र पहनावे से ही परमात्मा के साथ मिलाप नहीं होता। हे नानक ! जिसके हृदय में प्रभु प्रत्यक्ष हो जाता है, ऐसा कोई विरला योगी होता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ उसने आप ही जीवों को उत्पन्न किया है और आप ही उनका आसरा है, आप ही हरि को सूक्ष्म

रूप में देखा जाता है और आप ही प्रपंचरूप है; वह आप ही अकेला होकर रहता है और आप बड़े परिवार वाला है। हे हरि ! नानक तुम्हारे सन्तों की चरण-धूलि रूपी दान माँगता है, तुम ही देनेवाले हो, मुझे दूसरा कोई दाता दिखाई नहीं देता ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु वडहंसु महला १ घरु १ ॥ अमली अमलु न अंबड़ै मछी नीरु न होइ। जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥ १ ॥ हउ वारी वंञा खंनीऐ वंञा तउ साहिब के नावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहिबु सफलिओ रुखड़ा अंम्रितु जाका नाउ। जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ २ ॥ मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि। तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि ॥ ३ ॥ नानकु तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि। मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥ ४ ॥ १ ॥

अगर किसी नशेबाज़ को नशे की सामग्री न मिले, यदि मछली को पानी न मिले (तो वे अत्यन्त दुखी होते हैं), इसी प्रकार, हे प्रभु ! तेरा नाम जिनकी ज़िन्दगी का सहारा बन गया है, वे तुम्हारी स्मृति के बिना नहीं रह सकते। उन्हें और कुछ भी अच्छा नहीं लगता। जो व्यक्ति अपने पति-प्रभु के प्रेम में रँगे हुए हैं, उन्हें सभी भले लगते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मालिक-प्रभु फलों वाला एक सुन्दर वृक्ष (समझ लो), इस वृक्ष का फल है उस प्रभु का नाम, जो जीव को अटल आत्मिक जीवन देनेवाला है; जिन व्यक्तियों ने यह जीवनदायक रस पिया है, वे तृप्त हो जाते हैं। मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ ॥ २ ॥ हे प्रभु ! तुम सब जीवों के साथ-साथ रहते हो, परन्तु तुम मुझे दिखाई नहीं देते। (जीव अज्ञानवश अपने भीतर अवस्थित सरोवर को नहीं जान पाता और दुखी होता फिरता है।) प्यास से व्याकुल व्यक्ति को पानी मिले भी कैसे ? जब उसके और उसके भीतर अवस्थित सरोवर के मध्य दीवार बनी हो ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! कृपा करो, ताकि नानक तुम्हारे नाम का व्यापारी बन जाए, तुम मेरे साहूकार होओ और तुम्हारा नाम मेरी पूँजी बने। मेरे भीतर से दुनिया वाला भय तब ही

दूर हो सकता है, यदि मैं हमेशा प्रभु की गुणस्तुति करता रहूँ और यदि उसके द्वार पर प्रार्थना, विनय करता रहूँ ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वडहंसु महला १ ॥ गुणवंती सहु राविआ निरगुणि कूके काइ । जे गुणवंती थी रहै ता भी सहु रावण जाइ ॥ १ ॥ मेरा कंतु रीसालू की धन अवरा रावे जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करणी कामण जे थीऐ जे मनु धागा होइ । माणकु मुलि न पाईऐ लीजै चिति परोइ ॥ २ ॥ राहु दसाई न जुलां आखां अंमड़ीआसु । तै सह नालि अकूअणा किउ थीवै घर वासु ॥ ३ ॥ नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ । तै सह लगी जे रहै भी सहु रावै सोइ ॥ ४ ॥ २ ॥

जिस जीव-स्त्री के पास (प्रभु के प्रति आस्था) यह गुण है, वह प्रभु-पति का आसरा लेकर उसे प्रसन्न कर लेती है; लेकिन जिसके पास यह गुण नहीं है, वह व्यर्थ ही तड़पती फिरती है । हाँ, यदि उसके भीतर भी यह गुण आ जाए तो वह पति-प्रभु को प्रसन्न करने का सफल उद्यम कर सकती है ॥ १ ॥ जिस जीव-स्त्री को यह विश्वास हो जाए कि मेरा पति-प्रभु समस्त सुखों का स्रोत है, तो वह दूसरों को (सुख-प्राप्ति की लालसा से) प्रसन्न नहीं करती फिरती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि जीव-स्त्री का सदाचरण टोने-टोटके (विवाह के वक्त वर को वश में करने के उद्देश्य से किए जानेवाले टोने) का काम दे, यदि उसका मन धागा बने तो वह मन-धागे के द्वारा उस नाम-मोती को अपने चित्त में पिरो ले, जो किसी भी मूल्य पर नहीं मिल सकता ॥ २ ॥ हे पति-प्रभु ! यदि मैं तुम्हारे देश का मार्ग ही पूछती रहूँ, लेकिन उस मार्ग पर कभी भी न चलूँ, मुख से भी कहे जाऊँ कि मैं तुम्हारे देश पहुँच गई हूँ, वैसे यथार्थ रूप में तुम्हारे साथ कभी बातचीत न की हो, तो इस प्रकार (की मिथ्या कल्पनाओं से) तुम्हारे चरणों में जगह नहीं मिल सकती ॥ ३ ॥ हे नानक ! एक परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई भी सुखदाता नहीं । (इसलिए उस प्रभु के द्वार पर प्रार्थना करो और कहो कि) हे पति-प्रभु ! जो जीव-स्त्री तुम्हारे चरणों में लगाव रखती है, वह तुम्हें प्रसन्न कर लेती है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ वडहंसु महला १ घरु २ ॥ मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ । तेरे मुंध कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लुभाइआ । तेरे दरसन विटहु खंनीऐ वंञा तेरे नाम विटहु कुरबाणो । जा तू ता मै माणु कीआ है तुधु बिनु केहा मेरा

माणो। चूड़ा भंनु पलंघ सिउ मुंधे सणु बाही सणु बाहा। एते वेस करेदीए मुंधे सहु रातो अवराहा। ना मनीआरु न चूड़ीआ ना से वंगुड़ीआहा। जो सह कंठि न लगीआ जलनु सि बाहड़ीआहा। सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा। अंमाली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा। माठि गुंदाईं पटीआ भरीऐ माग संधूरे। अगै गई न मंनीआ मरउ विसूरि विसूरे। मै रोवंदी सभु जगु रुना रुंनड़े वणहु पंखेरू। इकु न रुना मेरे तनुका बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी। सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ। आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ। आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ। तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै। सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै। किउ न मरीजै जीअड़ा न दीजै जा सहु भइआ विडाणा ॥ १ ॥ ३ ॥

हे बहन! सावन आ गया है, जिसे देखकर मोरों ने मीठे गीत बोलने शुरू कर दिए हैं। हे प्रभु! तुम्हारी यह सुन्दर प्रकृति मुझ जीव-स्त्री के लिए मानो कटार है, फाँसी है, जिसने तुम्हारे दर्शनों की इच्छुक मुझे मोहित कर लिया है। हे प्रभु! तुम्हारे इस सुन्दर स्वरूप पर जो कि प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है, मैं बलिहारी हूँ। मैं तुम्हारे नाम पर बलिहारी हूँ। हे प्रभु! तुम दृष्टिगोचर हो इसलिए मैंने यह कहने का साहस किया है कि यह प्रकृति सुहागिन है। यदि इस प्रकृति में तुम न दिखाई दो तो यह कहने में क्या आनन्द रह जाय कि यह प्रकृति सुन्दर है? हे भोली स्त्री! हे अत्यन्त शृंगार में रुचि रखनेवाली नारी! यदि दूसरी अन्य स्त्रियों के साथ भी प्रेम करता रहा (तो इस शृंगार का क्या लाभ?) पलंग के साथ मारकर अपनी चूड़ियाँ तोड़ दे, पलंग की बाँही भी तोड़ दे और अपनी सुसज्जित बाँह भी तोड़ दे क्योंकि न तो इन बाँहों को अलंकृत करनेवाला मनिहार ही तेरा भला कर सकेगा और न उसकी दी हुई चूड़ियाँ ही किसी काम आएँगी। वे बाँहें जल जाएँ, जो प्रियतम के गले से न लग सकीं (आशय यह है कि बाह्य धार्मिक दिखावे व्यर्थ हैं, यदि प्रियतम-प्रभु के प्रेम में जीव-स्त्री अनुरक्त न हो सकी)। प्रभु-चरणों में अनुरक्त सभी सहेलियाँ प्रभु-पति को प्रसन्न करने के यत्न कर रही हैं, लेकिन मैं नीच कर्म करनेवाली किसके द्वार पर जाऊँ? हे सखी! मैं अपनी ओर से तो अत्यन्त शुभ कर्मों की कर्ता हूँ, लेकिन, हे प्रभु-पति! किसी एक भी गुण के बल पर मैं तुम्हें पसन्द नहीं आ

रही। मैं सँवार-सँवारकर पट्टियाँ गुँथवाती हूँ, मेरी पट्टियों की माँग में सिन्दूर भी भरा जाता है, लेकिन तुम्हारी सेवा में फिर भी स्वीकृत नहीं हो रही, (इसलिए) दुखी होकर मर रही हूँ। (प्रभु-पति से बिछुड़कर) मैं इतनी दुखी हो रही हूँ कि सारा जगत मुझ पर दया कर रहा है, जंगल के पक्षी भी (संवेदनशील होकर) दया कर रहे हैं। केवल यह मेरे भीतर वाला वियोग ही है, जो द्रवीभूत नहीं होता। इसी वियोग ने मुझे प्रभु-पति से वियुक्त किया है। हे प्रभु ! मुझे तुम स्वप्न में मिले लेकिन फिर चले गए, इसी कारण मैं वियोग के दुख में आँसू भरकर रोई। हे प्यारे ! मैं तुम्हारे पास नहीं पहुँच सकती। मैं किसी को तुम्हारे पास भेज नहीं सकती। (इसलिए मैं सोना चाहूँगी कि) हे सौभाग्य से परिपूरित सुन्दर नींद ! तू मेरे पास आ, शायद मैं अपने पति-प्रभु का दर्शन कर सकूँ। हे नानक ! प्रभु-द्वार पर कहो कि हे मेरे मालिक ! यदि कोई गुरमुख मुझे तेरी कोई बात सुनाए तो मैं उसके समक्ष कौन सी भेंट अर्पित करूँ। अपना सिर काटकर मैं उसके बैठने के लिए आसन बना दूँ, अहंत्वभाव दूर करके मैं उसकी सेवा करूँ। जब हमारा प्रभु-पति मूर्खतावश हमसे अपरिचित हो जाए, (तब प्रभु-पति को अपना बनाने का तरीक़ा यह है कि) हम अहंत्वभाव मार दें और अपनी आत्मा उस पर बलिहारी कर दें ॥ १ ॥ ३ ॥

वडहंसु महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ। इह जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥ १ ॥ जपि मन मेरे तू एको नामु। सतगुरि दीआ मोकउ एहु निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधा के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाइ। मन की मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ ॥ २ ॥ इसु मन कउ होरु संजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ। सतगुरि मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाइ ॥ ३ ॥ भणति नानकु सतिगुर कउ मिलदो मरै गुर कै सबदि फिरि जीवै कोइ। ममता की मलु उतरै इहु मनु हछा होइ ॥ ४ ॥ १ ॥

हे भाई ! यदि मनुष्य का मन मैल से परिपूरित रहे, (उस स्थिति में मनुष्य जो करता है) विकार ही करता है, देह को स्नान करने से मन पवित्र नहीं हो सकता। परन्तु यह संसार भ्रम में फँसकर कुमार्गगामी हो रहा है। कोई विरला मनुष्य इस सच्चाई को समझता है ॥ १ ॥ हे मेरे

मन ! तू विकारों से बचने के लिए केवल परमात्मा का नाम जपा कर। यह नाम-भण्डार मुझे गुरु ने दिया है ।। १ ।। रहाउ ।। यदि मनुष्य करामाती योगियों वाले आसन करने सीख ले, यदि कामवासना को जीत कर योग-साधना करने लगे, तो भी मन का मैल नहीं उतरता और मन से अहंत्व का मैल नहीं जाता ।। २ ।। हे भाई ! गुरु की शरण के अतिरिक्त कोई इस मन को पवित्र नहीं कर सकता। यदि गुरु मिल जाए तो मन की वृत्ति संसार से असम्पृक्त हो जाती है और मन की स्थिति व्यक्त नहीं की जा सकती ।। ३ ।। नानक का कथन है कि जो मनुष्य गुरु को मिलकर विकारों से निर्लिप्त हो जाता है और फिर गुरु के शब्द में जुड़कर आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेता है, उसके भीतर से ममता का मैल उतर जाता है और उसका यह मन पवित्र हो जाता है ।। ४ ।। १ ।।

।। वडहंसु महला ३ ।। नदरी सतगुरु सेवीऐ नदरी सेवा होइ। नदरी इहु मनु वसि आवै नदरी मनु निरमलु होइ ।। १ ।। मेरे मन चेति सचा सोइ। एको चेतहि ता सुखु पावहि फिरि दूखु न मूले होइ ।। १ ।। रहाउ ।। नदरी मरि कै जीवीऐ नदरी सबदु वसै मनि आइ। नदरी हुकमु बुझीऐ हुकमे रहै समाइ ।। २ ।। जिनि जिहवा हरि रसु न चखिओ सा जिहवा जलि जाउ। अनरस सादे लगि रही दुखु पाइआ दूजै भाइ ।।३।। सभना नदरि एक है आपे फरकु करेइ। नानक सतगुरि मिलिऐ फलु पाइआ नामु वडाई देइ ।। ४ ।। २ ।।

हे भाई ! परमात्मा की कृपादृष्टि से ही गुरु की शरण में जाया जा सकता है, कृपादृष्टि से ही परमात्मा की सेवा-भक्ति हो सकती है, कृपादृष्टि से ही यह मन नियन्त्रण में आता है और पवित्र हो जाता है ।। १ ।। हे मन ! उस सत्यस्वरूप परमात्मा को स्मरण किया कर। यदि तू उस एक परमात्मा को याद करता रहेगा तो सुख प्राप्त करेगा और तुझे कभी कोई दुख स्पर्श नहीं कर सकेगा ।। १ ।। रहाउ ।। परमात्मा की कृपादृष्टि से ही विकारों से हटकर आत्मिक जीवन प्राप्त किया जाता है और गुरु की शिक्षा मन में बस जाती है। कृपादृष्टि के द्वारा ही परमात्मा की रज़ा को समझा जा सकता है और उस परमात्मा की रज़ा में ही टिके रहना चाहिए ।। २ ।। हे भाई ! जिस जिह्वा ने कभी परमात्मा के नाम का आस्वादन नहीं किया, वह जिह्वा जलने योग्य ही है। क्योंकि जिसकी जिह्वा और दूसरे रसों के आस्वादन में लगी रहती है, वह मनुष्य माया के मोह में फँसकर दुख पाता रहता है ।। ३ ।। वैसे तो सब जीवों पर एक परमात्मा की ही कृपादृष्टि रहती है, लेकिन कोई जीव भला और कोई बुरा

होता है; मनुष्यों में महसूस होनेवाला यह भेद परमात्मा आप बनाता है। हे नानक ! यदि गुरु मिल जाय तो ही प्रभु-कृपा का फल मिलता है। प्रभु अपना नाम देता है, जो सबसे बड़ी प्रतिष्ठा है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ माइआ मोहु गुबारु है गुर बिनु गिआनु न होई। सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई ॥ १ ॥ मन मेरे गुरमति करणी सारु। सदा सदा हरि प्रभु रवहि ता पावहि मोख दुआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुणा का निधानु एकु है आपे देइ ता को पाए। बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाए ॥ २ ॥ मेरी मेरी करदे घटि गए तिना हथि किहु न आइआ। सतगुरि मिलिऐ सचि मिले सचि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ आसा मनसा एहु सरीरु है अंतरि जोति जगाए। नानक मनमुखि बंधु है गुरमुखि मुकति कराए ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे भाई ! माया-मोह घोर अन्धकार है। गुरु का शरणागत हुए बिना आत्मिक जीवन की सूझ नहीं हो सकती। जो मनुष्य गुरु की शिक्षा का अनुसरण करते हैं, उन्हें यह सूझ हो जाती है नहीं तो माया-मोह में फँसकर सृष्टि दुखी होती रहती है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! गुरु की शिक्षा पर चलकर जीवन-कर्म कर अर्थात् कर्तव्य निर्वाह कर। यदि तू सदा परमात्मा का नाम स्मरण करता रहे तो मुक्ति का मार्ग प्राप्त कर लेगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! एक हरि-नाम ही सारे गुणों का भण्डार है, लेकिन इस भण्डार को कोई आदमी तभी प्राप्त करता है, जब प्रभु आप ही यह नाम-खज़ाना देता है। परमात्मा का नाम स्मरण किए बिना तमाम सृष्टि परमात्मा से बिछुड़ी रहती है। गुरु की शिक्षा में प्रवृत्त करके प्रभु जीव को अपने चरणों में जगह देता है ॥ २ ॥ माया के प्रति अपनी लिप्सा सम्बन्धी बातें कर-करके जीव अपने आत्मिक जीवन में कमज़ोर होते रहते हैं। लेकिन यदि गुरु मिल जाए तो जीव सत्यस्वरूप प्रभु में अनुरक्त रहते हैं, सत्यस्वरूप प्रभु के नाम में लीन रहते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! मनुष्य का यह शरीर आशा-आकांक्षाओं में बँधा रहता है, गुरु इसके भीतर आत्मिक जीवन की रोशनी पैदा करता है। हे नानक ! स्वेच्छाचारी मनुष्य के मार्ग में आशा-आकांक्षाओं की रुकावट पड़ी रहती है, गुरु शरण में आए हुए मनुष्य को सांसारिक वासनाओं से मुक्ति दिला देता है ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ सोहागणी सदा मुखु उजला गुर

कै सहजि सुभाइ। सदा पिरु रावहि आपणा विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइ। सतगुरि मोकउ हरि दीआ बुझाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइ। दूजै भाइ करूपी दूखु पावहि आगै जाइ ॥ २ ॥ गुणवंती नित गुण रवै हिरदै नामु वसाइ। अउगणवंती कामणी दुखु लागै बिललाइ ॥ ३ ॥ सभना का भतारु एकु है सुआमी कहणा किछू न जाइ। नानक आपे वेक कीतिअनु नामे लइअनु लाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे प्रभु ! सौभाग्यवती जीव-स्त्रियों का मुँह सदा उजला रहता है, गुरु की शिक्षा द्वारा वह आत्मिक स्थिरता तथा प्रभु-प्रेम में टिकी रहती हैं। वे अपने भीतर से अहंत्वभाव दूर करके अपने प्रभु-पति को सँभालकर रखती हैं ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! तू सदा हरि-नाम स्मरण करता रह। गुरु ने मुझे हरि-नाम स्मरण की सूझ दे दी है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परित्यक्ताएँ बहुत दुखी रहती हैं, उन्हें प्रभु की सेवा (की स्वीकृति) नहीं मिलती। माया-मोह में डूबे रहने के कारण वे विकारग्रस्त आत्मिक जीवन वाली ही रहती हैं और परलोक में जाकर भी वे दुख ही सहती हैं ॥ २ ॥ गुणवती जीव-स्त्री अपने हृदय में प्रभु-नाम बसाकर सदा प्रभु के गुण स्मरण करती रहती है, लेकिन अवगुणों से परिपूरित जीव-स्त्री को दुख चिपटा रहता है और वह सदा दुखी होती रहती है ॥ ३ ॥ (लेकिन प्रभु की इस आश्चर्यजनक क्रीड़ा) के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। सबका स्वामी एक परमात्मा ही है। हे नानक ! प्रभु ने आप ही जीवों को अलग-अलग स्वभाव वाले बना दिया है और उसने आप ही जीव अपने नाम में लगाए हुए हैं ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ अंम्रित नामु सद मीठा लागा गुरसबदी सादु आइआ। सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइआ ॥ १ ॥ हरि करि किरपा सतगुरू मिलाइआ। पूरै सतगुरि हरिनामु धिआइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमै बेद बाणी परगासी माइआ मोह पसारा। महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु बहुतु अहंकारा ॥ २ ॥ किसनु सदा अवतारी रूधा कितु लगि तरै संसारा। गुरमुखि गिआनि रते जुग अंतरि चूकै मोह गुबारा ॥ ३ ॥ सतगुर सेवा ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा। साचै नाइ रते बैरागी पाइनि मोखदुआरा ॥ ४ ॥

एको सचु वरतै सभ अंतरि सभना करे प्रतिपाला। नानक इकसु बिनु मै अवरु न जाणा सभना दीवानु दइआला ॥ ५ ॥ ५ ॥

जिसे गुरु का सान्निध्य मिल गया, उसे आत्मिक जीवन का दाता हरि-नाम मीठा लगने लगा। गुरु की शिक्षा के प्रभाव से उसे हरि-नाम में स्वाद अर्थात् आनन्द आने लगा। सत्यस्वरूप प्रभु के गुणगान से उसका आत्मिक स्थिरता में टिकाव हो गया और उसने परमात्मा को अपने मन में पिरो लिया ॥ १ ॥ परमात्मा ने कृपा करके जिसे गुरु मिला दिया, उसने पूर्णगुरु के द्वारा परमात्मा का नाम स्मरण करना आरम्भ कर दिया ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रह्मा ने वेदों की वाणी प्रकट की, लेकिन उसने भी इससे माया का फैलाव ही फैलाया। महादेव आत्मिक जीवन की सूझ वाला है और वह अपने हृदय-घर में मस्त रहता है, लेकिन उसके भीतर भी अत्यन्त क्रोध और अहंकार है ॥ २ ॥ विष्णु सदा अवतार धारण करने में लगा हुआ है। (इसलिए प्रश्न पैदा होता है कि) संसार किसके चरण पकड़ संसार-सागर से पार उतरे ? जो मनुष्य दुनिया में गुरु की शरण लेकर आत्मज्ञान में रँगे रहते हैं, उनके भीतर से मोह का घोर अँधेरा दूर हो जाता है ॥३॥ हे भाई ! गुरु द्वारा बतलाई सेवा-भक्ति के द्वारा ही उद्धार होता है। गुरु का शरणागत होकर ही जगत संसार-समुद्र से पार उतरता है। सत्यस्वरूप प्रभु के नाम में रँगे हुए मनुष्य माया-मोह से निर्लिप्त हो जाते हैं और माया-मोह से मुक्ति का द्वार प्राप्त कर लेते हैं ॥ ४ ॥ गुरु की शरण में आने पर यह समझ आ जाती है कि सारी सृष्टि में सत्यस्वरूप परमात्मा ही बसता है, सब जीवों का पालन-पोषण करता है। नानक का कथन है कि मैं एक परमात्मा के अतिरिक्त मैं किसी दूसरे को नहीं जानता, वही दया का घर प्रभु सब जीवों का आसरा है ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ गुरमुखि सचु संजमु ततु गिआनु। गुरमुखि साचे लगै धिआनु ॥ १ ॥ गुरमुखि मन मेरे नामु समालि। सदा निबहै चलै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि जाति पति सचु सोइ। गुरमुखि अंतरि सखाई प्रभु होइ ॥ २ ॥ गुरमुखि जिसनो आपि करे सो होइ। गुरमुखि आपि वडाई देवै सोइ ॥ ३ ॥ गुरमुखि सबदु सचु करणी सारु। गुरमुखि नानक परवारै साधारु ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे भाई ! गुरु का शरणागत हो सत्यस्वरूप प्रभु का नाम-स्मरण ही इन्द्रियों को नियन्त्रित करने का सही प्रयास है और आत्मिक जीवन की सूझ का मूल है। गुरु का शरणागत हो सत्यस्वरूप परमात्मा में सुरति

जुड़ी रहती है ॥ १ ॥ हे मन ! गुरु का शरणागत हो परमात्मा का नाम स्मरण करता रह। यह नाम ही तेरे साथ जानेवाला है और साथ निभानेवाला है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरु का शरणागत हो, उस सत्यस्वरूप हरि का नाम-स्मरण ऊँची जाति और ऊँचा कुल है। गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य के भीतर परमात्मा आ बसता है और उसका साथी बन जाता है ॥ २ ॥ परन्तु वही मनुष्य गुरु के सम्मुख हो सकता है, जिसे परमात्मा आप इस योग्य बनाता है। वह परमात्मा आप मनुष्य को गुरु के सम्मुख करके प्रतिष्ठा देता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! गुरु का शरणागत होकर सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति की वाणी सँभाल —यही करणीय कर्म है। हे नानक ! गुरु के सम्मुख रहनेवाला मनुष्य अपने परिवार के लिए भी सहारा देने योग्य हो जाता है ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ रसना हरि सादि लगी सहजि सुभाइ। मनु त्रिपतिआ हरिनामु धिआइ ॥ १ ॥ सदा सुखु साचै सबदि वीचारी। आपणे सतगुर विटहु सदा बलिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ अखी संतोखीआ एक लिव लाइ। मनु संतोखिआ दूजा भाउ गवाइ ॥ २ ॥ देह सरीरि सुखु होवै सबदि हरि नाइ। नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ नानक मसतकि जिसु वडभागु। गुर की बाणी सहज बैरागु ॥ ४ ॥ ७ ॥

जिस मनुष्य की जिह्वा परमात्मा के नाम-आस्वादन में लगती है, वह मनुष्य आत्मिक स्थिरता को पा लेता है, प्रभु-प्रेम में लीन हो जाता है। परमात्मा का नाम स्मरण करके उसका मन तृप्त हो जाता है ॥ १ ॥ मैं अपने गुरु पर सदा बलिहारी हूँ, जिसके सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति करनेवाले शब्द में लग्न लगाने से जीव ज्ञानी हो जाता है और हमेशा आत्मिक आनन्द में मग्न रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (गुरु का शरणागत होकर) एक परमात्मा में सुरति जोड़कर मनुष्य की आँखें रूपाकर्षण से तृप्त हो जाती हैं, माया-मोह दूर कर मनुष्य का मन तृष्णाओं से तृप्त हो जाता है ॥ २ ॥ गुरु की शिक्षा द्वारा परमात्मा के नाम में अनुरक्त होने से शरीर में आनन्द पैदा होता है और गुरु की कृपा से आत्मिक जीवन की सुगन्धि देनेवाला हरि-नाम मनुष्य के हृदय में सदा टिका रहता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य के मस्तक पर सौभाग्य जाग्रत होता है, वह मनुष्य गुरु की वाणी में मन लगाता है और उसके भीतर आत्मिक स्थिरता पैदा करनेवाला वैराग्य पैदा होता है ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ।

सचै सबदि सचि समाइ ॥ १ ॥ ए मन नामु निधानु तू पाइ । आपणे गुर की मंनि लै रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै सबदि विचहु मैलु गवाइ । निरमलु नामु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ भरमे भूला फिरै संसारु । मरि जनमै जमु करे खुआरु ॥ ३ ॥ नानक से वडभागी जिन हरिनामु धिआइआ । गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥

पूर्णगुरु द्वारा ही परमात्मा का नाम-भण्डार मिल सकता है। जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति वाली गुरु की शिक्षा में लगता है, वह सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन हो जाता है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! तू अपने गुरु का हुक्म स्वीकार कर और गुरु से नाम-खज़ाना प्राप्त कर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य गुरु की शिक्षा में लगता है, वह अपने भीतर से विकारों का मैल दूर कर लेता है, परमात्मा का पवित्र नाम उसके मन में आ बसता है ॥ २ ॥ गुरु से अलग रहकर जगत दुबिधावश भूला-भटका फिरता है, जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है, यमराज उसे हमेशा दुखी करता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! जिन मनुष्यों ने गुरु-कृपा से परमात्मा का नाम-स्मरण शुरू किया, परमात्मा का नाम अपने हृदय में बसाया, वे सौभाग्यशाली बन गए ॥ ४ ॥ ८ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ । हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥ १ ॥ हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ । हुकमु मंनहि ता हरि मिलै ता विचहु हउमै जाइ ॥ रहाउ ॥ हउमै सभु सरीरु है हउमै ओपति होइ । हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुझि न सकै कोइ ॥ २ ॥ हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइ । हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइ । सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ १२ ॥

अहंकार का परमात्मा के नाम के साथ वैर है, ये दोनों एक साथ नहीं रह सकते। अहंत्व में टिके रहने से परमात्मा की सेवा-भक्ति नहीं हो सकती। (अहंत्व से ग्रस्त होने से भक्ति करने पर भी) मनुष्य का मन रिक्त रहता है ॥१॥ हे मेरे मन ! तू गुरु का शब्द अपने भीतर बसाने की कमाई कर और परमात्मा का नाम स्मरण करता रह। यदि तू परमात्मा

का हुक्म स्वीकारेगा, तो तुझे परमात्मा मिल जायगा और तेरे भीतर से अहंभावना दूर हो जाएगी ।। रहाउ ।। हे भाई ! शरीर धारण करने का सारा सिलसिला अहंत्व के कारण ही है, अहंत्व के कारण जन्म-मरण का चक्र बना रहता है। (आत्मिक जीवन के मार्ग में) अहंकार अत्यन्त घोर अँधेरा है और अहंकार के घोर अँधेरे में कोई मनुष्य आत्मिक जीवन का मार्ग नहीं समझ सकता ।। २ ।। हे भाई ! अहंकार के घोर अँधेरे में परमात्मा की भक्ति नहीं हो सकती, परमात्मा की रज़ा समझी नहीं जा सकती; अहंभावना जीवात्मा के मार्ग में रुकावट बनी रहती है, परमात्मा का नाम मनुष्य के मन में आकर नहीं टिक सकता ।। ३ ।। हे नानक ! यदि गुरु मिल जाए तो अहंभावना दूर हो जाती है, तब सत्यस्वरूप प्रभु मनुष्य के मन में आ बसता है, तब मनुष्य सदा सत्यस्वरूप हरि-नाम के स्मरण की साधना करता है; सत्यस्वरूप नाम में टिका रहता है और सेवा-भक्ति करके सत्यस्वरूप हरि में लीन हो जाता है ।।४।।९।।१२।।

वडहंसु महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। सेज एक एको प्रभु ठाकुरु । गुरमुखि हरि रावे सुख सागरु ।। १ ।। मै प्रभ मिलण प्रेम मनि आसा । गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरू कउ जासा ।। १ ।। रहाउ ।। मै अवगण भरपूरि सरीरे । हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ।। २ ।। जिनि गुणवंती मेरा प्रीतमु पाइआ । से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ।। ३ ।। हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे । नानक गरीब राखहु हरि मेरे ।। ४ ।। १ ।।

गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य का हृदय एक सेज है, जिस पर ठाकुर-प्रभु ही (शयन करता है) । गुरु के सान्निध्य में रहनेवाला मनुष्य सुखों के समुद्र हरि को अपने हृदय में बसाए रखता है ।।१।। हे मेरी माँ ! मेरे मन में प्रभु को मिलने के लिए ललक है, इच्छा है । पूर्णगुरु ही मेरा प्रियतम रूपी प्रभु मिला सकता है । इसलिए मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाऊँगा ।। १ ।। रहाउ ।। हे माँ ! मेरे शरीर में अवगुण ही अवगुण भरे पड़े हैं । मैं अपने उस प्रियतम को कैसे मिल सकूँ, जो समस्त गुणों से भरपूर है ।। २ ।। हे मेरी माँ ! जिस गुणवती ने प्रभु को प्राप्त कर लिया (उस प्राप्ति के मूल में उसके आत्मिक गुण ही सहायक हुए, लेकिन) मेरे भीतर वे गुण नहीं हैं । मैं किस प्रकार प्रभु को मिल सकती हूँ ? ।। ३ ।।

मैं अनेक उपाय कर-करके थक गया हूँ (लेकिन सब व्यर्थ हो गए हैं)। नानक का कथन है कि हे मेरे हरि ! मुझ ग़रीब को अपने चरणों में जगह दिए रखो ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वडहंसु महला ४ ॥ मेरा हरि प्रभु सुंदरु मै सार न जाणी। हउ हरि प्रभ छोडि दूजै लोभाणी ॥ १ ॥ हउ किउकरि पिर कउ मिलउ इआणी। जो पिर भावै सा सोहागणि साई पिर कउ मिलै सिआणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै विचि दोस हउ किउकरि पिरु पावा। तेरे अनेक पिआरे हउ पिर चिति न आवा ॥ २ ॥ जिनि पिरु राविआ सा भली सुहागणि। से मै गुण नाही हउ किआ करी दुहागणि ॥ ३ ॥ नित सुहागणि सदा पिरु रावै। मै करमहीण कबही गलि लावै ॥ ४ ॥ तू पिरु गुणवंता हउ अउगुणिआरा। मै निरगुण बखसि नानकु वेचारा ॥ ५ ॥ २ ॥

मेरा हरि-प्रभु सुन्दर है, लेकिन मैंने उसके सौन्दर्य की प्रतिष्ठा न पहचानी और मैं उस हरि को, प्रभु को त्यागकर माया-मोह में ही फँसी रही ॥ १ ॥ मैं मूर्ख हूँ। मैं प्रभु-पति को कैसे मिल सकती हूँ ? जो जीव-स्त्री प्रभु-पति को पसन्द आती है वह सौभाग्यवती है, वही बुद्धिमान है, वही प्रभु-पति को मिल सकती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे भीतर अनेक दोष हैं, इसलिए मैं पति-प्रभु को मिल नहीं सकती। हे प्रभु-पति ! तुम्हारे साथ प्रेम करनेवाले अनेक हैं, मैं तुम्हारे हृदय में नहीं आ सकती ॥ २ ॥ जिस जीव-स्त्री ने प्रभु-पति को हृदय में बसा लिया, वह भली है, वह सौभाग्यवती है। उस सुहागिन वाले गुण मेरे भीतर नहीं हैं। मैं परित्यक्ता उस प्रभु के मिलने के लिए क्या कर सकती हूँ ? ॥ ३ ॥ जो जीव-स्त्री सदा प्रभु-पति को हृदय में बसाए रखती है, वह सदा सौभाग्यवती है। मुझ जैसी मन्दभाग्या को वह प्रभु कभी ही अपने गले से लगाता है ॥ ४ ॥ हे प्रभु-पति ! तुम गुणों से भरपूर हो, लेकिन मैं अवगुणों से परिपूरित हूँ। (मेरी प्रार्थना है कि) मुझ गुणहीन तुच्छ नानक को क्षमा कीजिए ॥ ५ ॥ २ ॥

वडहंसु महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मै मनि वडी आस हरे किउ करि हरि दरसनु पावा। हउ जाइ पुछा अपने सतगुरै गुर पुछि

मनु मुगधु समझावा । भूला मनु समझै गुरसबदी हरि हरि सदा धिआए । नानक जिसु नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि चरणी चितु लाए ।। १ ।। हउ सभि वेस करी पिर कारणि जे हरि प्रभ साचे भावा । सो पिरु पिआरा मै नदरि न देखै हउ किउ करि धीरजु पावा । जिसु कारणि हउ सीगारु सीगारी सो पिरु रता मेरा अवरा। नानक धनु धंनु धंनु सोहागणि जिनि पिरु राविअड़ा सचु सवरा ।। २ ।। हउ जाइ पुछा सोहाग सुहागणि तुसी किउ पिरु पाइअड़ा प्रभु मेरा । मै ऊपरि नदरि करी पिरि साचै मै छोडिअड़ा मेरा तेरा । सभु मनु तनु जीउ करहु हरि प्रभ का इतु मारगि भैणे मिलीऐ । आपनड़ा प्रभु नदरि करि देखै नानक जोति जोती रलीऐ ।। ३ ।। जो हरि प्रभ का मै देइ सनेहा तिसु मनु तनु अपणा देवा । नित पखा फेरी सेव कमावा तिसु आगै पाणी ढोवां । नित नित सेव करी हरि जन की जो हरि हरि कथा सुणाए । धनु धंनु गुरू गुर सतिगुरु पूरा नानक मनि आस पुजाए ।। ४ ।। गुरु सजणु मेरा मेलि हरे जितु मिलि हरि नामु धिआवा । गुर सतिगुर पासहु हरि गोसटि पूछां करि सांझी हरि गुण गावां । गुण गावा नित नित सद हरि के मनु जीवै नामु सुणि तेरा । नानक जितु वेला विसरै मेरा सुआमी तितु वेलै मरि जाइ जीउ मेरा ।। ५ ।। हरि वेखण कउ सभु कोई लोचै सो वेखै जिसु आपि विखाले । जिसनो नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि हरि सदा समाले । सो हरि हरि नामु सदा सदा समाले जिसु सतगुरु पूरा मेरा मिलिआ । नानक हरि जन हरि इके होए हरि जपि हरि सेती रलिआ ।। ६ ।। १ ।। ३ ।।

मेरे मन में प्रबल आकांक्षा है कि मैं किसी न किसी प्रकार तुम्हारा दर्शन कर सकूँ। इसलिए मैं अपने गुरु के पास जाकर पूछती हूँ और पूछकर अपने मूर्ख मन को समझाती रहती हूँ। कुमार्गगामी मन गुरु के शब्द में जुड़कर ही ज्ञान ग्रहण करता है। तदन्तर वह हमेशा प्रभु का नाम-स्मरण याद करता रहता है। हे नानक ! जिस मनुष्य पर मेरा प्यारा प्रभु कृपादृष्टि करता है, वह प्रभु के चरणों में अपना हृदय लगाए रखता है ।। १ ।। मैं प्रभु-पति को मिलने के लिए तमाम वेश धारण करती हूँ, ताकि मैं उस सत्यस्वरूप प्रभु को पसन्द आ जाऊँ; लेकिन वह प्यारा प्रभु मेरी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता, (इस प्रकार) मैं कैसे

शान्ति प्राप्त कर सकती हूँ ? जिस प्रभु के लिए मैं शृंगार करती हूँ, मेरा वह पति-प्रभु तो दूसरे (आत्मिक रूप से विकसित जीव-स्त्रियों) में प्रसन्न होता है। नानक का कथन है कि वह जीव-स्त्री प्रशंसनीय है, श्लाघा योग्य है, जिसने उस सत्यस्वरूप सुन्दर प्रभु-पति को अपने हृदय में बसा लिया है ॥ २ ॥ प्रभु-पति की प्यारी जीव-स्त्री को मैं जाकर पूछती हूँ कि तूने प्रभु-पति को कैसे प्राप्त किया ? उसने बताया है कि सत्यस्वरूप प्रभु-पति ने मेरे ऊपर कृपादृष्टि की इसलिए मैंने अपना-पराया की वृत्ति को त्याग दिया। हे बहन ! अपना मन, तन और प्राण —सब कुछ प्रभु के हवाले कर दो। इस मार्ग पर चलकर ही उसे मिला जा सकता है। हे नानक ! प्यारा प्रभु जिस जीव को कृपादृष्टि से देखता है, उसकी आत्मा प्रभु के साथ एकाकार हो जाती है ॥ ३ ॥ जो गुरमुख मुझे हरि-प्रभु का सन्देश दे, मैं अपना मन, तन उसके अधीन करने को तैयार हूँ, मैं सदा उसे पंखा करने को तैयार हूँ, उसकी सेवा करने को तत्पर हूँ और उसके लिए पानी ढोने को तैयार हूँ। परमात्मा का जो भक्त मुझे परमात्मा की गुणस्तुति की बातें सुनाए, मैं उसकी सेवा करने के लिए हमेशा तैयार हूँ। नानक का कथन है कि मेरा गुरु धन्य है, धन्य है पूर्णसतिगुरु, जो मेरे भीतर प्रभु से मिलन की इच्छा को पूर्ण करता है ॥ ४ ॥ हे हरि ! मुझे मेरा मित्र गुरु मिला, जिसके चरणों में लीन होकर मैं हरि का नाम स्मरण करता रहूँ, गुरु से मैं हरि-मिलाप की बातें पूछता रहूँ, गुरु के सान्निध्य में रहकर मैं हरि-गुण गाता रहूँ। मैं हमेशा हरि-गुण स्मरण करता रहूँ। हे हरि ! तुम्हारा नाम सुनकर मेरा मन आत्मिक जीवन प्राप्त करता है। नानक का कथन है कि जब मुझे मेरा मालिक-प्रभु विस्मृत हो जाता है, उस समय मेरी आत्मा आत्मिक मौत मर जाती है अर्थात् मेरे भीतर प्रभु से जोड़नेवाले गुण समाप्त होने पर मेरा आत्मिक विकास रुक जाता है ॥ ५ ॥ परमात्मा का दर्शन करने के लिए मनुष्य हर एक आकांक्षा तो कर लेता है, लेकिन दर्शन वही कर सकता है, जिसे परमात्मा आप दर्शन कराता है। प्यारा प्रभु जिस मनुष्य पर कृपादृष्टि करता है, वह मनुष्य सदा परमात्मा को अपने हृदय में टिकाए रखता है। जिस मनुष्य को पूर्णगुरु मिल जाता है, वह मनुष्य परमात्मा का नाम सदा अपने हृदय में बसाता है। हे नानक ! मनुष्य परमात्मा का नाम जप-जपकर परमात्मा के साथ मिल जाता है। इस प्रकार परमात्मा तथा परमात्मा के भक्त एकाकार हो जाते हैं ॥६॥१॥३॥

वडहंसु महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अति ऊचा ताका दरबारा।
अंतु नाही किछु पारावारा। कोटि कोटि कोटि लख धावै।

इकु तिलु ताका महलु न पावै ।। १ ।। सुहावी कउणु सु वेला जितु प्रभ मेला ।। १ ।। रहाउ ।। लाख भगत जाकउ आराधहि । लाख तपीसर तपु ही साधहि । लाख जोगीसर करते जोगा । लाख भोगीसर भोगहि भोगा ।। २ ।। घटि घटि वसहि जाणहि थोरा । है कोई साजणु परदा तोरा । करउ जतन जे होइ मिहरवाना । ताकउ देई जीउ कुरबाना ।। ३ ।। फिरत फिरत संतन पहि आइआ । दूख भ्रमु हमारा सगल मिटाइआ । महलि बुलाइआ प्रभ अंम्रितु भूंचा । कहु नानक प्रभु मेरा ऊचा ।। ४ ।। १ ।।

हे भाई ! परमात्मा का दरबार बहुत ऊँचा है, उसके ओर-छोर का कुछ पता नहीं लग सकता । मनुष्य लाखों बार यत्न करे, करोड़ों बार प्रयास करे, लेकिन परमात्मा की सेवा तनिक मात्र भी प्राप्त नहीं कर सकता ।। १ ।। हे भाई ! वह कैसा सुन्दर समय होता है ! वह कैसी सुहावनी घड़ी होती है, जब परमात्मा का मिलाप हो जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! लाखों भक्त जिस परमात्मा का पूजन करते रहते हैं, लाखों तपस्वी तपस्या करते रहते हैं, लाखों ही महान योगी योग-साधना करते रहते हैं, लाखों ही महान भोक्ता जिसके दिए पदार्थ भोगते रहते हैं ।। २ ।। हे प्रभु ! तुम प्रत्येक शरीर में विद्यमान हो, लेकिन बहुत थोड़े मनुष्य इस बात को जानते हैं । कोई विरला ही गुरमुख होता है, जो आत्मा-परमात्मा के मध्य की दूरी को मिटाता है । मैं उस गुरमुख के समक्ष अपनी भेंट करने को तैयार हूँ । मैं यत्न करता हूँ कि वह गुरमुख मुझ पर दयाभाव रखे ।। ३ ।। हे भाई ! परमात्मा की खोज करता हुआ मैं गुरु के पास पहुँचा, जिसने मेरा सारा दुख तथा भ्रम दूर कर दिया । मुझे अपनी सेवा में बुला लिया, जहाँ मैंने प्रभु का आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-रस पान किया । नानक का कथन है कि मेरा प्रभु सर्वोच्च है ।। ४ ।। १ ।।

।। वडहंसु महला ५ ।। धनु सु वेला जितु दरसनु करणा । हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ।। १ ।। जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे । मनु जीवै प्रभ नामु चितेरे ।। १ ।। रहाउ ।। सचु मंत्रु तुमारा अंम्रित बाणी । सीतल पुरख द्रिसटि सुजाणी ।। २ ।। सचु हुकमु तुमारा तखति निवासी । आइ न जावै मेरा प्रभु अबिनासी ।। ३ ।। तुम मिहरवान दास हम दीना । नानक साहिबु भरपुरि लीणा ।। ४ ।। २ ।।

हे भाई ! वह समय सौभाग्यपूर्ण होता है, जिस समय प्रभु का दर्शन किया जाता है। (जिस गुरु की कृपा से यह सम्भव हुआ है), मैं उस गुरु के चरणों पर बलिहारी जाता हूँ ॥ १ ॥ हे प्राणदाता प्रभु ! हे मेरे प्रियतम-प्रभु ! तुम्हारा नाम स्मरण करके मेरा मन आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा नाम-मन्त्र शाश्वत है, तुम्हारी गुणस्तुति की वाणी आत्मिक जीवन को देनेवाली है। हे शान्त अकालपुरुष ! तुम्हारी दृष्टि सूक्ष्मदर्शी है ॥ २ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा हुक्म सत्यस्वरूप है, तुम सिंहासन पर बैठनेवाले हो। मेरा प्रभु अनश्वर है, वह कभी जन्मता-मरता नहीं ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! हम जीव तुम्हारे तुच्छ सेवक हैं, तुम हम पर दया करनेवाले हो। नानक का कथन है कि हमारा मालिक-प्रभु सर्वत्र मौजूद है, सबमें व्यापक है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ वडहंसु महला ५ ॥ तू बेअंतु को विरला जाणै। गुरप्रसादि को सबदि पछाणै ॥ १ ॥ सेवक की अरदासि पिआरे। जपि जीवा प्रभ चरण तुमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दइआल पुरख मेरे प्रभ दाते। जिसहि जनावहु तिनहि तुम जाते ॥ २ ॥ सदा सदा जाई बलिहारी। इत उत देखउ ओट तुमारी ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण गुणु किछू न जाता। नानक साधू देखि मनु राता ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे प्रभु ! तुम्हारे गुण अनन्त हैं, कोई विरला मनुष्य तुम्हारे साथ मेल कर पाता है। गुरु की कृपा से उसकी शिक्षा में जुड़कर कोई विरला तुम्हारे साथ जान-पहचान कर लेता है ॥ १ ॥ हे प्यारे प्रभु ! मुझ सेवक की प्रार्थना है कि हे प्रभु ! तुम्हारे चरण हृदय में बसाकर मैं आत्मिक जीवन प्राप्त करूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे दाता-प्रभु ! हे दया के घर अकालपुरुष ! तुम जिस मनुष्य को आप सूझ देते हो, उसने ही तुम्हारे साथ मेल किया है ॥ २ ॥ हे प्रभु ! मैं हमेशा तुझ पर बलिहारी जाता हूँ। इस लोक तथा परलोक में मैं तुम्हारा ही आसरा देखता हूँ ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! मैं गुणहीन हूँ, मैं तुम्हारा उपकार तनिक भी नहीं समझ सका। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! गुरु का दर्शन करके मेरा मन तुम्हारे प्रेम में रँग गया है ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ वडहंसु म० ५ ॥ अंतरजामी सो प्रभु पूरा। दानु देइ साधू की धूरा ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला। तेरी ओट पूरन गोपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरे। निकटि वसै नाही प्रभु दूरे ॥ २ ॥ जिसनो

नदरि करे सो धिआए। आठ पहर हरि के गुण गाए ॥ ३ ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे। सरनि परिओ नानक हरि दुआरे ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे भाई! वह प्रभु अन्तर्यामी है, सर्वगुणसम्पन्न है, (वही प्रभु प्रसन्न होकर) गुरु के चरणों की धूलि देन-रूप में देता है ॥ १ ॥ हे दीनदयालु प्रभु! कृपा कीजिए। हे सर्वव्यापक, सृष्टिपालक प्रभु! मुझे तुम्हारा ही सहारा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! प्रभु पानी, धरती, आकाश में सर्वत्र कण-कण में विद्यमान है, वह प्रत्येक जीव के निकट रहता है, किसी से दूर नहीं है ॥ २ ॥ हे भाई! जिस मनुष्य पर प्रभु कृपादृष्टि करता है, वह मनुष्य उसका स्मरण करता रहता है, वह मनुष्य आठों प्रहर परमात्मा के गुण गाता रहता है ॥ ३ ॥ हे भाई! परमात्मा समस्त जीवों का पालन करता है। हे हरि! मैं तुम्हारे द्वार पर आया हूँ, मैं तुम्हारा शरणागत हूँ (मुझे गुरु के चरणों में आश्रय दिलाएँ) ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ वडहंसु महला ५ ॥ तू वडदाता अंतरजामी। सभ महि रविआ पूरन प्रभ सुआमी ॥ १ ॥ मेरे प्रभ प्रीतम नामु अधारा। हउ सुणि सुणि जीवा नामु तुमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी सरणि सतिगुर मेरे पूरे। मनु निरमलु होइ संता धूरे ॥ २ ॥ चरन कमल हिरदै उरिधारे। तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे ॥ ३ ॥ करि किरपा तेरे गुण गावा। नानक नामु जपत सुखु पावा ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मेरे स्वामी, हे सर्वव्यापक प्रभु! तुम सर्वोपरि दाता हो, तुम अन्तर्यामी हो और तुम सबके भीतर अवस्थित हो ॥ १ ॥ हे मेरे प्रियतम-प्रभु! तुम्हारा नाम मेरा आसरा है। तुम्हारा नाम सुन-सुनकर मैं आत्मिक जीवन प्राप्त करता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे पूर्णसतिगुरु! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, तुम्हारे सन्तजनों के चरणों की धूलि से मन पवित्र हो जाता है ॥ २ ॥ हे प्रभु! मैं तुम्हारे दर्शन पर बलिहारी हूँ, तुम्हारे सुन्दर कोमल चरण मैंने अपने हृदय में टिकाए हुए हैं ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि हे प्रभु! कृपा करो, मैं तुम्हारे गुण गाता रहूँ और तुम्हारा नाम जपते हुए आत्मिक आनन्द प्राप्त करता रहूँ ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ वडहंसु महला ५ ॥ साध संगि हरि अंम्रितु पीजै। ना जीउ मरै न कबहू छीजै ॥ १ ॥ वडभागी गुरु पूरा पाईऐ। गुर किरपा ते प्रभू धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रतन जवाहर

हरि माणक लाला । सिमरि सिमरि प्रभ भए निहाला ॥ २ ॥ जत कत पेखउ साधू सरणा । हरि गुण गाइ निरमल मनु करणा ॥ ३ ॥ घट घट अंतरि मेरा सुआमी वूठा । नानक नामु पाइआ प्रभु तूठा ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे भाई ! गुरु के सान्निध्य में ही आत्मिक जीवन का दाता हरिनाम-जल पान किया जा सकता है; (इस जल के प्रभाव से) आत्मा न कभी आत्मिक मृत्यु प्राप्त करती है और न कभी आत्मिक जीवन में कमज़ोर होती है ॥ १ ॥ हे भाई ! पूर्णगुरु सौभाग्यवश मिलता है और गुरु की कृपा से ही परमात्मा का नाम स्मरण किया जा सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा की गुणस्तुति के शब्द रत्न, जवाहर, मोती और लाल हैं । प्रभु का नाम स्मरण करके सदा प्रसन्न रहा जा सकता है ॥ २ ॥ हे भाई ! मैं जिधर भी देखता हूँ, गुरु की शरण द्वारा ही प्रभु की गुणस्तुति के गीत गा-गाकर मन को पवित्र किया जा सकता है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि मेरा मालिक-प्रभु हर एक शरीर में अवस्थित है; लेकिन वह प्रभु जिस पर प्रसन्न होता है, वही उसका नाम-स्मरण प्राप्त करता है ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ वडहंसु महला ५ ॥ विसरु नाही प्रभ दीन दइआला । तेरी सरणि पूरन किरपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह चिति आवहि सो थानु सुहावा । जितु वेला विसरहि ता लागै हावा ॥ १ ॥ तेरे जीअ तू सदही साथी । संसार सागर ते कढु दे हाथी ॥ २ ॥ आवणु जाणा तुम ही कीआ । जिसु तू राखहि तिसु दूखु न थीआ ॥ ३ ॥ तू एको साहिबु अवरु न होरि । बिनउ करै नानकु कर जोरि ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे दीनदयालु, सर्वव्यापक, कृपा के घर प्रभु ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, मुझे कभी न भूलो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! जिस हृदय में तुम्हारा निवास होता है, वह सुन्दर बन जाता है । जब मैं प्रभु को भूल जाता हूँ, तो मुझे दुख होता है ॥ १ ॥ ये सब जीव तुम्हारे द्वारा ही उत्पादित हैं, तुम इन सबकी सहायता करनेवाले हो । हे प्रभु ! अपना सहारा देकर जीवों को संसार-समुद्र से निकाल लो ॥ २ ॥ तुमने ही जीवों के लिए जन्म-मरण का चक्र बनाया हुआ है; जिस जीव को तुम बचा लेते हो, उसे कोई दुख स्पर्श नहीं कर सकता ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तुम ही स्वामी हो, दूसरे अनेक जीवों में कोई तुम्हारे जैसा नहीं । इसलिए नानक तुम्हारे समक्ष ही हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ वडहंसु म० ५ ॥ तू जाणाइहि ता कोई जाणै ।

तेरा दीआ नामु वखाणै ॥ १ ॥ तू अचरजु कुदरति तेरी बिसमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु आपे कारणु आपे करणा । हुकमे जंमणु हुकमे मरणा ॥ २ ॥ नामु तेरा मन तन आधारी । नानक दासु बखसीस तुमारी ॥ ३ ॥ ८ ॥

हे प्रभु ! जब तुम किसी को ज्ञान देते हो, तभी कोई तुम्हारे साथ गहरा मेल जोड़ता है और तुम्हारा दिया हुआ नाम उच्चरित करता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा अस्तित्व हैरान करनेवाला है । तुम्हारी बनाई रचना भी आश्चर्योत्पादक है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम स्वयं ही सृष्टि के उत्पादक हो, तुम स्वयं जगत हो । तुम्हारे हुक्म अनुसार ही जन्म होता है और तुम्हारे हुक्म अनुसार ही मरण होता है ॥२॥ हे प्रभु ! तुम्हारा नाम मेरे मन, तन का आसरा है । नानक का कथन है कि तुम्हारा दास तुम्हारे नाम की देन (माँगता है) ॥ ३ ॥ ८ ॥

वडहंसु महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मेरै अंतरि लोचा मिलण की पिआरे हउ किउ पाई गुर पूरे । जे सउ खेल खेलाईऐ बालकु रहि न सकै बिनु खीरे । मेरै अंतरि भुख न उतरै अंमाली जे सउ भोजन मै नीरे । मेरै मनि तनि प्रेमु पिरंम का बिनु दरसन किउ मनु धीरे ॥ १ ॥ सुणि सजण मेरे प्रीतम भाई मै मेलिहु मित्रु सुखदाता । ओहु जीअ की मेरी सभ बेदन जाणै नित सुणावै हरि कीआ बाता । हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सका जिउ चात्रिकु जल कउ बिललाता । हउ किआ गुण तेरे सारि समाली मै निरगुण कउ रखि लेता ॥ २ ॥ हउ भई उडीणी कंत कउ अंमाली सो पिरु कदि नैणी देखा । सभि रस भोगण विसरे बिनु पिर कितै न लेखा । इहु कापड़ु तनि न सुखावई करि न सकउ हउ वेसा । जिनी सखी लालु राविआ पिआरा तिन आगै हम आदेसा ॥ ३ ॥ मै सभि सीगार बणाइआ अंमाली बिनु पिर कामि न आए । जा सहि बात न पुछीआ अंमाली ता बिरथा जोबनु सभु जाए । धनु धनु ते सोहागणी अंमाली जिन सहु रहिआ समाए । हउ वारिआ तिन सोहागणी अंमाली तिन के धोवा सद पाए ॥ ४ ॥ जिचरु दूजा भरमु सा अंमाली तिचरु मै

जाणिआ प्रभु दूरे। जा मिलिआ पूरा सतिगुरू अंमाली ता आसा मनसा सभ पूरे। मै सरब सुखा सुख पाइआ अंमाली पिरु सरब रहिआ भरपूरे। जन नानक हरि रंगु माणिआ अंमाली गुर सतिगुर कै लगि पैरे ॥ ५ ॥ १ ॥ ९ ॥

हे प्यारे ! मेरे भीतर गुरु से मिलने की उत्कण्ठा है। मैं पूर्णगुरु को कैसे प्राप्त करूँ ? हे सखी ! यदि बच्चे को सौ प्रकार के खेलों से खिलाया जाए तो भी वह दूध के बिना नहीं रह सकता। वैसे ही यदि मुझे सौ प्रकार के व्यंजन भी दिए जाएँ तो भी मेरे भीतर प्रभु-मिलन की भूख शान्त नहीं हो सकती। हे सखी ! मेरे मन, तन में प्यारे प्रभु का प्रेम अवस्थित है। उसके दर्शन किए बिना मेरा मन शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता ॥ १ ॥ हे मेरे सज्जन, हे मेरे प्यारे भाई ! सुनो। मुझे आत्मिक आनन्द का दाता गुरु मिला दीजिए। वह मेरी आत्मा की सारी पीड़ा जानता है और मुझे परमात्मा की गुणस्तुति की बातें सुनाता है। मैं उस प्रभु के बिना पल भर भी नहीं रह सकता। जैसे पपीहा वर्षा की बूँद के लिए बिलखता है (वैसे ही मैं प्रभु की प्राप्ति के लिए बिलखता हूँ)। हे प्रभु ! तुम्हारे कौन-कौन से गुण स्मरण कर अपने हृदय में बसाऊँ ? तुम मुझ गुणहीन को हमेशा बचा लेते हो ॥ २ ॥ हे सखी ! मैं प्रभु-पति को मिलने के लिए उतावली हो रही हूँ। मैं उस स्वामी को अपनी आँखों से कब देखूँगी ? प्रभु-पति के मिलाप के बिना मुझे तमाम पदार्थों के आस्वाद विस्मृत हो चुके हैं, ये पदार्थ प्रभु-पति के बिना मेरे लिए व्यर्थ हैं। हे सखी ! मुझे तो अपने शरीर पर यह वस्त्र भी नहीं भाता, इसलिए मैं कोई पहनावा नहीं कर सकती। जिन स्त्रियों ने प्यारे प्रभु को प्रसन्न कर लिया है, मैं उनके समक्ष प्रार्थना करती हूँ (कि मुझे भी प्रियतम-प्रभु से मिलाएँ) ॥ ३ ॥ हे सखी ! यदि मैंने तमाम श्रृंगार कर भी लिये, तो भी प्रभु-पति के मिलाप के बिना ये किसी काम नहीं आते। हे सखी ! यदि प्रभु-पति ने मेरी बात न पूछी तो मेरा समूचा यौवन व्यर्थ हो जायगा। हे सखी ! वे सुहागिनें सौभाग्यवती हैं, जिनके हृदय में पति-प्रभु सदा अवस्थित रहता है। हे सखी ! मैं उन सुहागिनों पर बलिहारी हूँ, मैं सदा उनके चरण धोती हूँ (अर्थात् उनकी सेवा करने को तत्पर हूँ) ॥४॥ हे सहेली ! जब तक मुझे किसी दूसरे (के आश्रय का) भ्रम था, तब तक मैं प्रभु को दूर जानती रही; लेकिन जब मुझे पूर्णगुरु मिल गया तो मेरी प्रत्येक आशा-आकांक्षा पूर्ण हो गई। हे सखी ! मैंने सर्वोत्तम सुख (प्रभु-मिलाप) पा लिया। मुझे वह पति-प्रभु सबमें दृष्टिगोचर होने लगा। दास नानक का कथन है कि हे सहेली ! गुरु की शरण लेकर मैंने परमात्मा के मिलाप का आनन्द प्राप्त कर लिया है ॥ ५ ॥ १ ॥ ९ ॥

वडहंसु महला ३ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा । अनदिनु सचु सलाहणा धनु धनु वडभाग हमारा ॥१॥ मन मेरे साचे नाम विटहु बलि जाउ । दासनि दासा होइ रहहि ता पावहि सचा नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा सची सचि रती तनु मनु सचा होइ । बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइ ॥ २ ॥ सचु खेती सचु बीजणा साचा वापारा । अनदिनु लाहा सचु नामु धनु भगति भरे भंडारा ॥ ३ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचु टेक हरिनाउ । जिसनो बखसे तिसु मिलै महली पाए थाउ ॥ ४ ॥ आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि । गुरमुखि दरि साचै सचिआर हहि साचे माहि समाहि ॥ ५ ॥ अंतरु सचा मनु सचा सची सिफति सनाइ । सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुर बलिहारै जाउ ॥ ६ ॥ सचु वेला मूरतु सचु जितु सचे नालि पिआरु । सचु वेखणा सचु बोलणा सचा सभु आकारु ॥ ७ ॥ नानक सचै मेले ता मिले आपे लए मिलाइ । जिउ भावै तिउ रखसी आपे करे रजाइ ॥ ८ ॥ १ ॥

हे भाई ! मेरे महा भाग्य जाग गए क्योंकि सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति की वाणी (हृदय में अवस्थित हो गई है), सत्यस्वरूप हरि-नाम की ललक (मेरे भीतर उद्‌भूत हो चुकी है), सत्यस्वरूप हरि की गुणस्तुति वाला गुरु-मन्त्र मेरी चिन्तना (का विषय बन गया है) । मैं प्रत्येक पल सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति करता हूँ ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! सत्यस्वरूप हरि-नाम पर बलिहारी जाया कर । लेकिन यह सत्यस्वरूप हरि-नाम तू तभी प्राप्त कर सकेगा, यदि तू परमात्मा के सेवकों का सेवक बना रहेगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जिह्वा सत्यस्वरूप हरि के प्रेम में अनुरक्त हो जाती है, वह जिह्वा सफल हो जाती है । ऐसे प्रभु-भक्त का मन, तन सफल हो जाता है, (इसलिए) यदि तू सत्यस्वरूप प्रभु को छोड़ अन्य किसी की सराहना करता रहेगा, तो अपने जन्म गवाँकर यहाँ से जाएगा ॥ २ ॥ जो मनुष्य सत्यस्वरूप हरि-नाम को अपनी खेती बनाता है, जो सत्यस्वरूप नाम-बीज बोता है, जो सत्यस्वरूप हरि-नाम का व्यापार करता है, उसे हर वक्त सत्यस्वरूप हरि-नाम रूपी धन लाभ के रूप में प्राप्त होता रहता है और उसके हृदय में भक्ति के ख़ज़ाने भर जाते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! जिस

मनुष्य पर परमात्मा कृपा करता है, उसे सत्यस्वरूप हरि-नाम की खुराक, हरि-नाम की पोशाक और हरि-नाम का सहारा मिल जाता है। वह मनुष्य परमात्मा की सेवा में जगह प्राप्त कर लेता है ॥ ४ ॥ हे भाई ! गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले व्यक्ति हरि-नाम में लीन होकर यहाँ आते हैं, हरि-नाम में लीन होकर ही यहाँ से जाते हैं, वे दोबारा कभी भी योनियों के चक्र में नहीं पड़ते (अर्थात् वे जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाते हैं)। गुरु के सम्मुख रहनेवाले व्यक्ति सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर निश्चिन्त अर्थात् सर्वथा मुक्त हो जाते हैं और वे सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन हो जाते हैं ॥ ५ ॥ मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसकी कृपा से मेरा तन, मन सफल हो गया है और मैं सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति करता रहता हूँ। हे भाई ! जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति करता है, उसे सत्यस्वरूप हरि की सेवा में जगह मिल जाती है ॥ ६ ॥ हे भाई ! वह समय, मुहूर्त भाग्यशाली है, जब किसी मनुष्य का प्रेम सत्यस्वरूप परमात्मा के साथ हो जाता है। (ऐसा प्रभु-भक्त) सत्यस्वरूप प्रभु को ही सर्वत्र देखता है, सत्यस्वरूप प्रभु का नाम ही जपता है और यह संसार उसे सत्यस्वरूप प्रभु का स्वरूप ही प्रतिभाषित होता है ॥ ७ ॥ नानक का कथन है कि जब सत्यस्वरूप प्रभु जीवों को अपने साथ मिलाता है, तब ही जीव मिल पाते हैं। वह प्रभु जीवों को आप ही अपने साथ मिला लेता है। उसे जैसे भला लगता है, वह आप ही हुक्म करता है और भक्तों को चरणों में स्थान दिए रखता है ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ मनूआ दहदिस धावदा ओहु कैसे हरि गुण गावै। इंद्री विआपि रही अधिकाई कामु क्रोधु नित संतावै ॥ १ ॥ वाहु वाहु सहजे गुण रवीजै। रामनामु इसु जुग महि दुलभु है गुरमति हरि रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदु चीनि मनु निरमलु होवै ता हरि के गुण गावै। गुरमती आपै आपु पछाणै ता निजघरि वासा पावै ॥ २ ॥ ए मन मेरे सदा रंगि राते सदा हरि के गुण गाउ। हरि निरमलु सदा सुखदाता मनि चिंदिआ फलु पाउ ॥ ३ ॥ हम नीच से ऊतम भए हरि की सरणाई। पाथरु डुबदा काढि लीआ साची वडिआई ॥ ४ ॥ बिखु से अंम्रित भए गुरमति बुधि पाई। अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई ॥ ५ ॥ माणस जनमु दुलंभु है जग महि खटिआ आइ। पूरै भागि सतिगुरु मिलै हरिनामु धिआइ ॥ ६ ॥ मनमुख भूले बिखु लगे अहिला जनमु

गवाइआ। हरि का नामु सदा सुख सागरु साचा सबदु न भाइआ ॥ ७ ॥ मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ। नानक जिनकै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन्ह पाइआ ॥ ८ ॥ २ ॥

वह मनुष्य परमात्मा का गुणस्तवन नहीं कर सकता, जिसका नीच मन इधर-उधर भटकता फिरता है, जिस पर कामवासना प्रभाव जमाए रहती है, जिसे काम सताता रहता है और क्रोध दुखी करता रहता है ॥१॥ हे भाई ! आत्मिक रूप से स्थिर होकर ही परमात्मा के गुणों की स्तुति की जा सकती है। मनुष्य-जन्म में परमात्मा का नाम एक दुर्लभ वस्तु है। गुरु की शिक्षा पर चलकर ही परमात्मा के नाम का रस पान किया जा सकता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जब गुरु के ज्ञान द्वारा मनुष्य का मन पवित्र हो जाता है, तब ही वह परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता है। जब मनुष्य गुरु के उपदेश को स्वीकार कर अपने आत्मिक जीवन की छानबीन करता है, तब वह परमात्मा के चरणों में जगह प्राप्त कर लेता हैं ॥ २ ॥ हे मन ! हमेशा परमात्मा के रंग में रँगा रह। परमात्मा सर्वदा पवित्र है, सुखदायक है। (उसकी गुणस्तुति करने से) मनोवांछित फल प्राप्त कर सकोगे ॥ ३ ॥ हे भाई ! परमात्मा का शरणागत होने से हम जीव अधम से उत्तम बन जाते हैं। परमात्मा प्रस्तरमना मनुष्य को भी डूबने से उबार लेता है और हमेशा रहनेवाली प्रतिष्ठा देता है ॥ ४ ॥ जो मनुष्य गुरु की शिक्षा पर चलकर सुबुद्धि प्राप्त कर लेते हैं, वे मानो विष से अमृत बन जाते हैं, वे आक से चन्दन बन जाते हैं और उनमें आत्मिक जीवन की सुगन्धि आ जाती है ॥ ५ ॥ हे भाई ! मनुष्य-जन्म बड़ी कठिनाई से मिलता है। दुनिया में आकर उसी के द्वारा कुछ प्राप्त किया जानो, जिसे पूर्ण भाग्य द्वारा सतिगुरु मिल जाता है और जो परमात्मा का नाम स्मरण करता है ॥६॥ स्वेच्छाचारी मनुष्य कुमार्गगामी हुए रहते हैं, विकारों के विष में मस्त रहते हैं और बहुमूल्य मनुष्य-जन्म गवाँ लेते हैं। सदा ही सुखों से भरपूर हरि-नाम उन्हें पसन्द नहीं आता और सत्यस्वरूप हरि की गुणस्तुति वाला गुरु का उपदेश उन्हें श्रेयस्कर नहीं लगता ॥ ७ ॥ हे भाई ! मुख द्वारा तो हर एक मनुष्य परमात्मा का नाम लेता है, लेकिन अपने हृदय में किसी विरले व्यक्ति ने ही हरि-नाम बसाया है। नानक का कथन है कि जिन मनुष्यों के हृदय में परमात्मा का नाम आ टिकता है, वे मनुष्य विकारों से मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं ॥ ८ ॥ २ ॥

वडहंसु महला १ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ । नाता सो परवाणु सचु कमाईऐ । जब साच अंदरि होइ साचा तामि साचा पाईऐ । लिखे बाझहु सुरति नाही बोलि बोलि गवाईऐ । जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ सुरति सबदु लिखाईऐ । काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥ १ ॥ ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ । अंम्रितु हरि का नामु मेरै मनि भाइआ । नामु मीठा मनहि लागा दूखि डेरा ढाहिआ । सूखु मन महि आइ वसिआ जामि तै फुरमाइआ । नदरि तुधु अरदासि मेरी जिंनि आपु उपाइआ । तामै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ २ ॥ वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा । मंदा किसै न आखि झगड़ा पावणा । नह पाइ झगड़ा सुआमि सेती आपि आपु वञावणा । जिसु नालि संगति करि सरीकी जाइ किआ रूआवणा । जो देइ सहणा मनहि कहणा आखि नाही वावणा । वारी खसमु कढाऐ किरतु कमावणा ॥ ३ ॥ सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे । कउड़ा कोइ न मागै मीठा सभ मागै । सभु कोइ मीठा मंगि देखै खसम भावै सो करे । किछु पुंन दान अनेक करणी नाम तुलि न समसरे । नानका जिन नामु मिलिआ करमु होआ धुरि कदे । सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥ ४ ॥ १ ॥

शरीर को माया-मोह में विकृत करके स्नान करने का कोई लाभ नहीं है (क्योंकि) वही मनुष्य नहाया हुआ है, वही परमात्मा की सेवा में स्वीकृत है, जो हमेशा प्रभु के नाम-स्मरण की साधना करता है। जब सत्यस्वरूप प्रभु के चरणों में रहकर जीव प्रभु से एकाकार हो जाता है, तब सत्यस्वरूप परमात्मा उसे मिल जाता है। लेकिन प्रभु के हुक्म के बिना मनुष्य की सुरति उदात्त नहीं हो सकती। केवल मात्र मौखिक बातों से तो आत्मिक जीवन और अधिक विकृत होता है। जहाँ भी जाकर बैठें, प्रभु की गुणस्तुति करनी चाहिए। अपनी सुरति में प्रभु की गुणस्तुति की वाणी अंकित रखनी चाहिए, (नहीं तो) माया के मोह में हृदय को मैला करके तीर्थस्नान का क्या लाभ ? ॥ १ ॥ लेकिन, हे प्रभु ! मैं तभी तुम्हारी गुणस्तुति कर सकता हूँ, जब तुम आप प्रेरित करते हो। (प्रभु-कृपा द्वारा ही) आत्मिक जीवन देनेवाला प्रभु-नाम मुझे हृदय में भला लग सकता है।

जब प्रभु का नाम मन में मीठा लगता है, तब दुख ने अपना डेरा उठाया समझो। हे प्रभु! जब तुमने हुक्म किया, तब आत्मिक आनन्द मेरे भीतर आ बसता है। (जिस) प्रभु ने स्वयं ही अपने आप को प्रकट किया है, इसलिए जब तुम प्रेरित करते हो, तब ही मैं तुम्हारी गुणस्तुति करता हूँ। मेरी तो तुम्हारे द्वार पर प्रार्थना ही होती है, कृपादृष्टि तो तुम आप ही करते हो ॥ २ ॥ जीवों के कर्मानुसार पति-प्रभु प्रत्येक जीव को मनुष्य-जन्म की बारी देता है, इसलिए (पूर्वकृत कर्मों का परिणाम समझकर) किसी मनुष्य को बुरा-बुरा कहकर झगड़ा नहीं करना चाहिए। किसी नीच मनुष्य की निन्दा करना परमात्मा के साथ झगड़ा करना है (क्योंकि सब कुछ ईश्वरेच्छानुसार घटित होता है)। मालिक-प्रभु से झगड़ा नहीं करना चाहिए, इस प्रकार तो अपने आप को आप ही बरबाद करना है। जिस मालिक के सहारे हमेशा जीना है, उसके साथ बराबरी करके, बाद में उसी के पास जाकर प्रार्थना करने का कोई लाभ नहीं हो सकता। परमात्मा जो देता है, उसे सहर्ष सहना चाहिए। गिला-शिकवा नहीं करना चाहिए, गिला-शिकवा करके व्यर्थ झगड़ा नहीं करना चाहिए। वास्तव में हमारे कृत कर्मों के अनुसार पति-प्रभु हमें मनुष्य-जन्म की बारी देता है ॥ ३ ॥ सारी सृष्टि परमात्मा द्वारा उत्पादित है, वह आप ही हरेक जीव पर कृपादृष्टि करता है। (परमात्मा से) कड़वी चीज़ कोई भी नहीं माँगता, हर एक जीव मीठी तथा सुखदायक चीज़ें ही माँगता है, लेकिन पति-प्रभु वही कुछ करता है, जो उसे उचित लगता है। जीव दान-पुण्य करते हैं, ऐसे (दान-पुण्य के समान ही) दूसरे और भी धार्मिक कार्य करते हैं, लेकिन परमात्मा के नाम के बराबर कोई यत्न नहीं है। हे नानक! जिन व्यक्तियों पर मूलतः प्रभु-कृपा होती है, उन्हें ही नाम की देन मिलती है। यह सारा जगत प्रभु ने आप उत्पन्न किया है और वह आप ही सब पर कृपादृष्टि करता है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वडहंसु महला १ ॥ करहु दइआ तेरा नामु वखाणा। सभ उपाईऐ आपि आपे सरब समाणा। सरबे समाणा आपि तू है उपाइ धंधै लाईआ। इकि तुझही कीए राजे इकना भिख भवाईआ। लोभु मोहु तुझु कीआ मीठा एतु भरमि भुलाणा। सदा दइआ करहु अपणी तामि नामु वखाणा ॥ १ ॥ नामु तेरा है साचा सदा मै मनि भाणा। दूखु गइआ सुखु आइ समाणा। गावनि सुरि नर सुघड़ सुजाणा। सुरि नर सुघड़ सुजाण गावहि जो तेरै मनि भावहे। माइआ मोहे चेतहि नाही अहिला जनमु गवावहे। इकि मूड़ मुगध न चेतहि मूले जो आइआ तिसु जाणा।

नामु तेरा सदा साचा सोइ मै मनि भाणा ।। २ ।। तेरा वखतु सुहावा अंम्रितु तेरी बाणी । सेवक सेवहि भाउ करि लागा साउ पराणी । साउ प्राणी तिना लागा जिनी अंम्रितु पाइआ । नामि तेरै जोइ राते नित चड़हि सवाइआ । इकु करमु धरमु न होइ संजमु जामि न एकु पछाणी । वखतु सुहावा सदा तेरा अंम्रित तेरी बाणी ।। ३ ।। हउ बलिहारी साचे नावै । राजु तेरा कबहु न जावै । राजो त तेरा सदा निहचलु एहु कबहु न जावए । चाकरु त तेरा सोइ होवै जोइ सहजि समावए । दुसमनु त दूखु न लगै मूले पापु नेड़ि न आवए । हउ बलिहारी सदा होवा एक तेरे नावए ।। ४ ।। जुगह जुगंतरि भगत तुमारे । कीरति करहि सुआमी तेरै दुआरे । जपहि त साचा एकु मुरारे । साचा मुरारे तामि जापहि जामि मंनि वसावहे । भरमो भुलावा तुझहि कीआ जामि एहु चुकावहे । गुरपरसादी करहु किरपा लेहु जमहु उबारे । जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ।। ५ ।। वडे मेरे साहिबा अलख अपारा । किउकरि करउ बेनंती हउ आखि न जाणा । नदरि करहि ता साचु पछाणा । साचो पछाणा तामि तेरा जामि आपि बुझावहे । दूख भूख संसारि कीए सहसा एहु चुकावहे । बिनवंति नानकु जाइ सहसा बुझै गुर बीचारा । वडा साहिबु है आपि अलख अपारा ।। ६ ।। तेरे बंके लोइण दंत रीसाला । सोहणे नक जिन लंमड़े वाला । कंचन काइआ सुइने की ढाला । सोवंन ढाला क्रिसन माला जपहु तुसी सहेलीहो । जम दुआरि न होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो । हंस हंसा बग बगा लहै मन की जाला । बंके लोइण दंत रीसाला ।। ७ ।। तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी । कुहकनि कोकिला तरल जुआणी । तरला जुआणी आपि भाणी इछ मन की पूरीए । सारंग जिउ पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु संधूरए । स्री रंग राती फिरै माती उदकु गंगावाणी । बिनवंति नानकु दासु हरि का तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ।। ८ ।। २ ।।

हे प्रभु ! कृपा करो, मैं तुम्हारा नाम स्मरण कर सकूँ । तुमने सारी सृष्टि आप उत्पन्न की है और समस्त जीवों में आप ही व्यापक हो । तुम आप ही जीवों में समाए हुए हो और सृष्टि को पैदा करके तुमने स्वयं

ही माया की भाग-दौड़ में लगाया हुआ है। कितने जीवों को तुमने आप राजा बना दिया है और कितने ही जीवों को भिक्षा माँगने के लिए द्वार-द्वार घुमा रहे हो। हे प्रभु! तुमने लोभ और मोह को मीठा बना दिया है, जगत इस दुबिधा में पड़कर कुमार्गगामी हो गया है। यदि तुम कृपा करते रहो, तभी मैं तुम्हारा नाम स्मरण कर सकता हूँ ॥१॥ हे प्रभु! तुम्हारा नाम सत्यस्वरूप है, तुम्हारा नाम मुझे मन में प्यारा लगता है। जो मनुष्य तुम्हारा नाम स्मरण करता है, उसका दुख मिट जाता है और आत्मिक आनन्द उसके भीतर टिक जाता है। सौभाग्यशाली बुद्धिमान मनुष्य तेरी गुणस्तुति के गीत गाते हैं। हे प्रभु! जो व्यक्ति तुझे प्यारे लगते हैं, वे सौभाग्यशाली, बुद्धिमान तुम्हारे गीत गाते हैं। लेकिन जो मनुष्य माया में आबद्ध हैं, वे तुम्हें स्मरण नहीं करते और वे अपना अमूल्य जन्म गवाँ लेते हैं। ऐसे अनेक मूर्ख मनुष्य हैं, जो तुम्हें स्मरण नहीं करते। (वे यह नहीं समझते कि) जो जगत में उत्पन्न हुआ है, उसे अवश्य चले जाना है। हे प्रभु! तुम्हारा नाम ही सत्यस्वरूप है, तुम्हारा नाम ही मुझे मन में प्यारा लग रहा है ॥ २ ॥ हे प्रभु! तुम्हारी गुणस्तुति की वाणी अमृत है, वह समय अत्यन्त सुहावना लगता है, जब तुम्हारा नाम स्मरण किया जाता है। जिन व्यक्तियों को तुम्हारे नाम में आनन्द महसूस होता है, वे सेवक प्रेमपूर्वक तुम्हारा नाम स्मरण करते हैं। उन व्यक्तियों को ही नाम का आनन्द महसूस होता है, जिन्हें यह नाम-अमृत प्राप्त होता है। हे प्रभु! जो व्यक्ति तुम्हारे नाम-स्मरण में लगे हैं, वे सदा फलते-फूलते रहते हैं। हे प्रभु! जब तक एक तुम्हारे साथ मैं मेल-मिलाप नहीं करता, तब तक कोई भी धर्म या कोई भी संयम अपनाना व्यर्थ है। तुम्हारी गुणस्तुति की वाणी आत्मिक जीवन की दाता है। वह समय अत्यन्त सुहावना लगता है, जब तेरा नाम स्मरण किया जाता है ॥३॥ हे प्रभु! मैं तेरे सत्यस्वरूप नाम पर बलिहारी हूँ। तुम्हारा राज्य अनश्वर है। हे प्रभु! तुम्हारा राज्य शाश्वत है, यह कभी भी नष्ट नहीं हो सकता। वही मनुष्य तुम्हारा वास्तविक भक्त-सेवक है, जो आत्मिक स्थिरता में टिका रहता है। कोई शत्रु, कोई दुख उस पर प्रभाव नहीं कर सकता, कोई पाप उसके निकट नहीं जा सकता। हे प्रभु! मैं सदा तुम्हारे नाम पर बलिहारी जाता हूँ ॥ ४ ॥ हे प्रभु! हर एक युग में तुम्हारे भक्त मौजूद रहे हैं, जो तुम्हारे द्वार पर तुम्हारी गुणस्तुति करते हैं, जो सदा तुम्हें, सत्यस्वरूप प्रभु को स्मरण करते हैं। हे प्रभु! तुझ सत्यस्वरूप को वे तब ही जप सकते हैं, जब तुम आप उनके मन में अपना नाम बसाते हो, जब तुम उनके मन से मायाजन्य दुबिधा मिटाते हो, जो तुमने स्वयं पैदा की है। हे प्रभु! गुरु-कृपा द्वारा तुम अपने भक्तों पर कृपा करते हो और उन्हें यमराज से बचा लेते हो। हर एक युग में ही तुम्हारे भक्त-सेवक मौजूद रहे हैं ॥ ५ ॥

हे मेरे महान, अदृश्य, अनन्त स्वामी ! मैं किस प्रकार तुम्हारी विनती करूँ ? मुझे तो विनती करनी भी नहीं आती । यदि तुम आप कृपादृष्टि करो, तभी मैं तुम्हारे सत्यस्वरूप नाम के साथ मेल कर सकता हूँ । तुम्हारा सत्यस्वरूप नाम मैं तभी पहचान सकता हूँ, यदि तुम स्वयं मुझे यह सूझ दो । जब तुम मेरे मन से माया की तृष्णा तथा उससे उपजनेवाले दुखों का भय दूर करो, जो कि जगत में तुमने स्वयं पैदा किए हुए हैं । नानक प्रार्थना करता है कि जब मनुष्य गुरु के ज्ञान का सार समझता है, तो उसका भय दूर हो जाता है और उसे विश्वास हो जाता है कि अगोचर एवं अनन्त प्रभु स्वयं सर्वोपरि मालिक है ॥ ६ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारे नयन बाँके हैं, दाँत सुन्दर हैं, नाक आकर्षक है, तुम्हारे केश लम्बे हैं (जिन जीवों में सुन्दरता दृष्टिगत है, वह तुम्हारी ही कृपा का परिणाम है) । हे प्रभु ! तुम्हारा शरीर सोने जैसा शुद्ध निरोग एवं सुडौल है, मानो सोने में ही ढला हुआ है। हे सखियो ! तुम उस परमात्मा के नाम की माला जपो, जिसका शरीर निरोग तथा सुगठित है और मानो सोने में ढला हुआ है । हे सहेलियो ! मेरी शिक्षा सुनो । प्रभु का नाम जपने से तुम उस यमराज के द्वार पर खड़ी नहीं रहोगी । प्रभु-भक्तों के मन से विकारों का मैल उतर जाता है और नाम-स्मरण के प्रभाव से जीव पाखण्डी बगुलों से श्रेष्ठ हंस बन जाते हैं । हे सहेलियो ! उस प्रभु के सुन्दर नेत्र हैं, सुन्दर दाँत हैं ॥ ७ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारी चाल मन को सुख देनेवाली है, तुम्हारी बोली मीठी-मीठी मनभावन है । तुम्हारी ही उत्पादित कोयलें मीठी, वैराग्यमयी वाणी में बोल रही हैं और तुम्हारे द्वारा उत्पादित चंचलयौवना मदमत्त सुन्दरियाँ हैं । यह चंचल यौवन प्रभु ने स्वयं उत्पन्न किया, उसे स्वयं ही इसका पैदा करना भला लगा, (इस प्रकार) उसने स्वय ही अपनी इच्छा पूर्ण की । प्रभु स्वयं ही मस्त हाथी के समान मटक-मटककर चरण रखता है, वह स्वयं ही अपने आप को मदमत्त कर रहा है । प्रभु-कृपा से ही कोई जीव-स्त्री उस लक्ष्मीपति के प्रेम में रँगी हुई मदमत्त फिरती है, उसका जीवन (ऐसे पवित्र हो जाता है जैसे) गंगा का पानी । हरि का दास नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! तुम्हारी चाल सुहावनी है और तुम्हारी बोली मीठी है ॥८॥२॥

वडहंसु महला ३ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आपणे पिर कै रंगि रती मुईए सोभावंती नारे । सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाइ पिआरे । सचै भाइ पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाइआ । आपु गवाइआ ता पिरु पाइआ गुर कै सबदि

समाइआ। सा धन सबदि सुहाई प्रेम कसाई अंतरि प्रीति पिआरी। नानक सा धन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी॥ १॥ निरगुणवंतड़ीए पिरु देखि हदूरे राम। गुरमुखि जिनी राविआ मुईए पिरु रवि रहिआ भर पूरे राम। पिरु रवि रहिआ भरपूरे वेखु हजूरे जुगि जुगि एको जाता। धन बाली भोली पिरु सहजि रावै मिलिआ करम बिधाता। जिनि हरि रसु चाखिआ सबदि सुभाखिआ हरि सरि रही भरपूरे। नानक कामणि सा पिर भावै सबदे रहै हदूरे॥ २॥ सोहागणी जाइ पूछहु मुईए जिनी विचहु आपु गवाइआ। पिर का हुकमु न पाइओ मुईए जिनी विचहु आपु न गवाइआ। जिनी आपु गवाइआ तिनी पिरु पाइआ रंग सिउ रलीआ माणै। सदा रंगि राती सहजे माती अनदिनु नामु वखाणै। कामणि वडभागी अंतरि लिवलागी हरि का प्रेमु सुभाइआ। नानक कामणि सहजे राती जिनि सचु सीगारु बणाइआ॥ ३॥ हउमै मारि मुईए तू चलु गुर कै भाए। हरिवरु रावहि सदा मुईए निज घरि वासा पाए। निज घरि वासा पाए सबदु वजाए सदा सुहागणि नारी। पिरु रलीआला जोबनु बाला अनदिनु कंति सवारी। हरिवरु सोहागो मसतकि भागो सचै सबदि सुहाए। नानक कामणि हरि रंगि राती जा चलै सतिगुर भाए॥ ४॥ १॥

हे माया-मोह से निर्लिप्त जीव-स्त्री! तू शोभा वाली हो गई है क्योंकि तू अपने पति-प्रभु के प्रेम-रंग में रँग गई है। गुरु के ज्ञान के प्रभाव से तू सत्यस्वरूप प्रभु में लीन रहती है। तेरे इस प्रेम के कारण प्रभु-स्वामी तुझे अपने चरणों में जगह दिए रखते हैं। जिस जीव-स्त्री ने सत्यस्वरूप प्रभु से प्रेम किया, उसका जीवन प्रभु-पति ने सुन्दर बना दिया। जब जीव-स्त्री ने अहंत्वभाव दूर किया, तभी उसने प्रभु-पति को पा लिया। गुरु की शिक्षा के प्रभाव से उसका मन प्रभु में लीन हो गया। प्रभु-प्रेम में आकृष्ट बुद्धिमान जीव-स्त्री गुरु की शिक्षा के द्वारा सुन्दर जीवन वाली बन जाती है और उसके हृदय में प्रभु-चरणों की प्रीति टिकी रहती है। नानक का कथन है कि ऐसी कुशल जीव-स्त्री को प्रभु-पति ने आप ही अपने साथ मिला लिया है और सत्यस्वरूप साहूकार ने उसका जीवन सँवार दिया है॥ १॥ हे गुणहीन आत्मा! प्रभु-पति को अपने साथ-साथ बसा हुआ देखा कर। हे आत्मा! प्रभु-पति कण-कण में व्यापक है। उसे सर्वत्र विद्यमान देख। वह प्रभु ही प्रत्येक युग में प्रसिद्ध है। जो जीव-स्त्री भोले

स्वभाव को अपनाकर आत्मिक स्थिरता में रहती हुई उस प्रभु-पति का स्मरण करती है, उसे वह सृजनहार प्रभु मिल जाता है। हे आत्मा ! जिस जीव-स्त्री ने हरि-नाम का आस्वादन कर लिया है, जिसने गुरु के ज्ञान द्वारा उस प्रभु की गुणस्तुति करनी शुरू कर दी, वह उस सरोवर-प्रभु में डुबकी लगाए रखती है। नानक का कथन है कि वही जीव-स्त्री प्रभु-पति को प्यारी लगती है, जो गुरु के ज्ञान द्वारा प्रतिपल प्रभु के चरणों में रहती है ॥ २ ॥ हे आत्मिक मृत्यु को प्राप्त आत्मा ! जाकर उन सुहागिनों से पूछ, जिन्होंने अपने भीतर से अहंत्वभाव दूर कर लिया है; लेकिन जिन्होंने अपने भीतर से अहंत्वभाव दूर नहीं किया, उन्होंने प्रभु की रज़ा नहीं सीखी। जिन्होंने अहंत्वभाव दूर कर लिया, उन्होंने प्रभु-पति को प्राप्त कर लिया, प्रभु-पति प्रेमपूर्वक उन्हें अपने मिलाप की देन देता है। जो जीव-स्त्री सदा प्रभु के प्रेम-रंग में रँगी रहती है, आत्मिक टिकाव में मस्त रहती है, वह हर समय प्रभु-पति का स्मरण करती रहती है। वह जीव-स्त्री सौभाग्यशालिनी है, उसके हृदय में प्रभु-चरणों की लगन बनी रहती है, उसे प्रभु का प्रेम भला लगता है। हे नानक ! जिस जीव-स्त्री ने सत्यस्वरूप प्रभु के नाम को अपनी ज़िन्दगी का श्रृंगार बनाया है, वह सदा आत्मिक स्थिरता में लीन रहती है ॥३॥ हे आत्मिक रूप से मृत आत्मा ! तू अहंत्व दूर कर और गुरु की शिक्षानुसार आचरण कर, इस प्रकार प्रभु की सेवा में स्थान पाकर तू सदा के लिए प्रभु-पति का मिलाप भोगती रहेगी। जो जीव-स्त्री अपने हृदय में गुरु का ज्ञान टिका लेती है, वह प्रभु की सेवा में जगह प्राप्त कर लेती है, वह सदा के लिए भाग्यशालिनी हो जाती है। (वास्तव में) प्रभु-पति आनन्द का स्रोत है, प्रभु-पति का यौवन शाश्वत है, उस जीव-स्त्री को प्रभु-पति ने हमेशा के लिए सुन्दर जीवन वाली बना दिया। हे नानक ! जब जीव-स्त्री गुरु के अनुसार आचरण करती है, तो वह प्रभु के प्रेम-रंग में रँगी जाती है, उसे प्रभु-पति का सुहाग मिल जाता है, उसके मस्तक पर सौभाग्य जाग्रत हो जाता है और गुरु की शिक्षा के द्वारा वह सत्यस्वरूप प्रभु में लीन होकर सुन्दर आत्मिक जीवन वाली बन जाती है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ गुरमुखि सभु वापारु भला जे सहजे कीजै राम। अनदिनु नामु वखाणीऐ लाहा हरि रसु पीजै राम। लाहा हरि रसु लीजै हरि रावीजै अनदिनु नामु वखाणै। गुण संग्रहि अवगण विकणहि आपै आपु पछाणै। गुरमति पाई वडी वडिआई सचै सबदि रसु पीजै। नानक हरि की भगति निराली गुरमुखि विरलै कीजै ॥ १ ॥ गुरमुखि खेती हरि अंतरि

बीजीऐ हरि लीजै सरीरि जमाए राम। आपणे घर अंदरि रसु भुंचु तू लाहा लै परथाए राम। लाहा परथाए हरि मंनि वसाए धनु खेती वापारा। हरिनामु धिआए मंनि वसाए बूझै गुर बीचारा। मनमुख खेती वणजु करि थाके त्रिसना भुख न जाए। नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाए ॥ २ ॥ हरि वापारि से जन लागे जिना मसतकि मणी वडभागो राम। गुरमती मनु निज घरि वसिआ सचै सबदि बैरागो राम। मुखि मसतकि भागो सचि बैरागो साचि रते वीचारी। नाम बिना सभु जगु बउराना सबदे हउमै मारी। साचै सबदि लागि मति उपजै गुरमुखि नामु सोहागो। नानक सबदि मिलै भउभंजनु हरि रावै मसतकि भागो ॥ ३ ॥ खेती वणजु सभु हुकमु है हुकमे मंनि वडिआई राम। गुरमती हुकमु बूझीऐ हुकमे मेलि मिलाई राम। हुकमि मिलाई सहजि समाई गुर का सबदु अपारा। सची वडिआई गुरते पाई सचु सवारणहारा। भउभंजनु पाइआ आपु गवाइआ गुरमुखि मेलि मिलाई। कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥ ४ ॥ २ ॥

हे भाई ! यदि गुरु के द्वारा आत्मिक स्थिरता में टिककर हरि-नाम का व्यापार किया जाए, तो यह सारा व्यापार मनुष्य के लिए भला होता है। हे भाई ! परमात्मा का नाम प्रतिपल उच्चारण करना चाहिए, प्रभु के नाम का रस पान करना चाहिए —यही मनुष्य-जन्म की कमाई है। हरि-नाम का आस्वादन करना चाहिए, हरि-नाम हृदय में बसाना चाहिए —यही मनुष्य-जन्म का लाभ है। जो मनुष्य प्रत्येक समय प्रभु का नाम लेता है, वह गुण एकत्रित करके अपने आत्मिक जीवन को परखता रहता है, (इस प्रकार) उसके अवगुण दूर हो जाते हैं। हे भाई ! जिस मनुष्य ने गुरु की शिक्षा प्राप्त कर ली, उसे बड़ी प्रतिष्ठा मिली। हे भाई ! सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति के शब्द में निरत रहकर हरिनाम-रस पान करना चाहिए। हे नानक ! परमात्मा की भक्ति एक आश्चर्यजनक देन है, लेकिन किसी विरले मनुष्य ने गुरु की शरण लेकर भक्ति की है ॥ १ ॥ हे भाई ! गुरु के सान्निध्य में रहकर हरि-नाम की खेती अपने मन में बोनी चाहिए, हरि-नाम रूपी बीज अपने हृदय में उगाना चाहिए। हे भाई ! तू अपने हृदय में हरि-नाम का स्वाद चखाकर और इस प्रकार परलोक का लाभ प्राप्त कर। जो मनुष्य परमात्मा का नाम अपने मन में लेता है,

वह परलोक का लाभ प्राप्त कर लेता है, उसकी नाम-खेती, उसका नाम-व्यापार सराहना के योग्य है। जो मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करता है, जो हरि-नाम अपने मन में टिकाता है, वह गुरु-शब्द के प्रभाव से आत्मिक जीवन को समझ लेता है। हे भाई ! स्वेच्छाचारी मनुष्य केवल मात्र सांसारिक खेती और सांसारिक व्यापार करके थक गए हैं, उनकी माया की तृष्णा नहीं मिटती, माया की भूख दूर नहीं होती। नानक का कथन है कि हे भाई ! तू प्रेमपूर्वक सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति में लगकर अपने मन में परमात्मा का नाम-बीज बोया कर ॥ २ ॥ हरि के नाम-स्मरण के व्यापार में वे मनुष्य ही लगते हैं, जिनके मस्तक पर सौभाग्य की मणि चमक पड़ती है। गुरु की शिक्षा के प्रभाव से उनका मन प्रभु की सेवा में टिक जाता है, सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति के द्वारा हरि-नाम की लगन लग जाती है। जिन मनुष्यों के मुख, मस्तक पर भाग्य जाग जाता है, सत्यस्वरूप हरि में उनकी लगन लग जाती है, सत्यस्वरूप प्रभु के प्रेम-रंग में रँगकर वे विद्वान बन जाते हैं। लेकिन, हे भाई ! परमात्मा के नाम के बिना सारा जगत अहंकार में पागल हुआ फिरता है, अहंत्वभावना गुरु के ज्ञान के द्वारा ही दूर की जा सकती है। सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति के ज्ञान में लगकर सुबुद्धि पैदा होती है, गुरु की शरण लेने से हरि-नाम का सौभाग्य मिल जाता है। हे नानक ! जिस मनुष्य के मस्तक पर भाग्य पैदा हो जाता है, उसे गुरु-ज्ञान के द्वारा भयनाशक परमात्मा मिल जाता है, वह मनुष्य सदा हरि-नाम को हृदय में बसाए रखता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य ने परमात्मा की रज़ा को अपनी खेती बनाया है, अपना व्यापार बनाया है, वह प्रभु-रज़ा में रहकर, उसे स्वीकार कर लोक-परलोक में प्रतिष्ठा पाता है। हे भाई ! गुरु की शिक्षा स्वीकारने से परमात्मा की रज़ा को समझा जा सकता है। रज़ा को स्वीकारने पर ही प्रभु-चरणों में स्थान मिलता है। जिस मनुष्य को गुरु की शिक्षा प्रभु की रज़ा में रहना सिखाती है, आत्मिक स्थिरता में लीन करता है, वह अपरम्पार परमात्मा को प्राप्त कर लेता है। वह मनुष्य गुरु के माध्यम से शाश्वत प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है, गुरु के माध्यम से सत्यस्वरूप प्रभु को, जीवन सुन्दर बनानेवाले प्रभु को मिल जाता है। जो मनुष्य गुरु का शरणागत हो अहंत्वभाव दूर करता है, वह प्रत्येक भय नष्ट करनेवाले प्रभु को मिल जाता है और प्रभु-चरणों में लीन हो जाता है। हे नानक ! तू भी उस प्रभु का नाम स्मरण कर, जो माया के प्रभाव से रहित है, जो अपहुँच है, जिस तक ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच नहीं हो सकती और जो अपनी रज़ा अनुसार सर्वत्र व्यापक है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ मन मेरिआ तू सदा सचु समालि जीउ। आपणै घरि तू सुखि वसहि पोहि न सकै जमु कालु

जीउ। कालु जालु जमु जोहि न साकै साचै सबदि लिव लाए। सदा सचि रता मनु निरमलु आवणु जाणु रहाए। दूजै भाइ भरमि विगुती मनमुखि मोही जमकालि। कहै नानकु सुणि मन मेरे तू सदा सचु समालि ॥ १ ॥ मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है बाहरि वसतु न भालि। जो भावै सो भुंचि तू गुरमुखि नदरि निहालि। गुरमुखि नदरि निहालि मन मेरे अंतरि हरि नामु सखाई। मनमुख अंधुले गिआन विहूणे दूजै भाइ खुआई। बिनु नावै को छूटै नाही सभ बाधी जमकालि। नानक अंतरि तेरै निधानु है तू बाहरि वसतु न भालि ॥ २ ॥ मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइकै इकि सचि लगे वापारा। सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा। अंतरि सबदु अपारा हरि नामु पिआरा नामे नउनिधि पाई। मनमुख माइआ मोह विआपे दूखि संतापे दूजै पति गवाई। हउमै मारि सचि सबदि समाणे सचि रते अधिकाई। नानक माणस जनमु दुलंभु है सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ मन मेरे सतिगुरु सेवनि आपणा से जन वडभागी राम। जो मनु मारहि आपणा से पुरख बैरागी राम। से जन बैरागी सचि लिव लागी आपणा आपु पछाणिआ। मति निहचल अति गूड़ी गुरमुखि सहजे नामु वखाणिआ। इक कामणि हितकारी माइआ मोहि पिआरी मनमुख सोइ रहे अभागे। नानक सहजे सेवहि गुरु अपणा से पूरे वडभागे ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मेरे मन ! सत्यस्वरूप परमात्मा को तू सदा अपने भीतर बसाए रख, इसके परिणामस्वरूप तू अपने भीतर आनन्दपूर्वक स्थिर रहेगा, आत्मिक मृत्यु तुझ पर कोई प्रभाव नहीं कर सकेगी। जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु में, गुरु के ज्ञान में सुरति लगाए रखता है, मृत्यु उस तरफ़ देख भी नहीं सकती, उसका मन सत्यस्वरूप प्रभु के रंग में रँगा रहकर पवित्र हो जाता है, उस मनुष्य का जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है। लेकिन (इसके विपरीत) स्वेच्छाचारी दुनिया माया के प्रेम में, माया की दुबिधा में दुखी होती रहती है, आत्मिक मृत्यु द्वारा वह माया के मोह में आबद्ध रहती है। नानक का कथन है कि हे मेरे मन ! (मेरा परामर्श) सुन, तू सत्यस्वरूप प्रभु को अपने हृदय में टिकाए रख ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! सुखों का भण्डार तेरे भीतर विद्यमान है, (लेकिन) तू इस पदार्थ को बाहर खोजता फिरता है। तू इस पदार्थ को बाहर जंगल में न ढूँढ़ता फिर। हे मन ! परमात्मा की रज़ा को अपनी ख़ुराक बना और गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले

व्यक्तियों की दृष्टि से देख। हे मेरे मन ! गुरमुखों की दृष्टि से देख, तुम्हें अपने भीतर हरि-नाम रूपी मित्र मिल जाएगा। आत्मिक जीवन की सूझ से रहित, माया-मोह में अन्धे हुए, स्वेच्छाचारी मनुष्यों को माया-मोह के कारण परेशानी ही होती है। नानक का कथन है कि आत्मिक मृत्यु ने सारी दुनिया को बाँध रखा है, परमात्मा के नाम के बिना कोई जीव छुटकारा प्राप्त नहीं कर सकता। हे मन ! तेरे भीतर ही नाम-भण्डार अवस्थित है। तू इस नाम-भण्डार को बाहर जंगल में न ढूँढ़ता फिर ॥ २ ॥ हे मेरे मन ! कितने ही ऐसे व्यक्ति हैं, जो यह क़ीमती मनुष्य-जन्म प्राप्त करके सत्यस्वरूप परमात्मा के स्मरण के व्यापार में लग पड़ते हैं। वे अपने गुरु की बतलाई सेवा करते हैं और अनन्त प्रभु की गुणस्तुति का शब्द अपने हृदय में लेते हैं। वह मनुष्य अनन्त हरि की गुणस्तुति की वाणी अपने हृदय में उच्चरित करते हैं, परमात्मा का नाम उन्हें प्यारा लगता है और प्रभु के नाम-स्मरण में ही वे दुनिया के नौ ख़ज़ानों की प्राप्ति महसूस करते हैं। लेकिन स्वेच्छाचारी मनुष्य माया के मोह में फँसे रहते हैं, दुख में व्याकुल रहते हैं, माया के मोह में फँसकर वे अपनी प्रतिष्ठा गवाँ देते हैं। हे नानक ! जिन मनुष्यों को सतिगुरु ने यह समझ दी हुई है कि मनुष्य-जन्म बड़ी कठिनाई से मिलता है, वे मनुष्य अहंत्व-भाव दूर कर सत्यस्वरूप हरि की गुणस्तुति के शब्द में लीन रहते हैं और सत्यस्वरूप प्रभु के प्रेम में अनुरक्त रहते हैं ॥ ३ ॥ वे मनुष्य भाग्यशाली हैं, जो गुरु की बतलाई सेवा करते हैं, जो अपने मन को नियन्त्रण में रखते हैं। वे मनुष्य निर्लिप्त रहते हैं, वे दुनिया की ओर से विरक्त रहते हैं, सत्यस्वरूप परमात्मा में उनकी सुरति लगी रहती है, अपने आत्मिक जीवन को वे परखते रहते हैं, गुरु की शरणागति होकर उनकी बुद्धि स्थिर रहती है, प्रेम-रंग में भली प्रकार से रँगी रहती है और सहजावस्था में टिककर परमात्मा का नाम स्मरण करते रहते हैं। कई ऐसे अभागे होते हैं, जिनका स्त्री के साथ लगाव होता है, जो माया-मोह में मगन रहते हैं और जो स्वेच्छाचारी होकर सोते रहते हैं। नानक का कथन है कि वे मनुष्य सौभाग्यशाली होते हैं, जो सहजावस्था में टिककर अपने गुरु की सेवा करते रहते हैं ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ रतन पदारथ वणजीअहि सतिगुरि दीआ बुझाई राम। लाहा लाभु हरि भगति है गुण महि गुणी समाई राम। गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे। बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई गुरमति नामु अधारे। वखरु नामु सदा लाभु है जिसनो एतु वापारि

लाए । रतन पदारथ वणजीअहि जां सतिगुरु देइ बुझाए ॥ १ ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा राम । कूड़ु बोलि बिखु खावणी बहु वधहि विकारा राम । बहु वधहि विकारा सहसा इहु संसारा बिनु नावै पति खोई । पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न होई । आवण जाणा कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा । माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा ॥ २ ॥ खोटे खरे सभि परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम । खोटे दरगह सुटीअनि ऊभे करनि पुकारा राम । ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनमु गवाइआ । बिखिआ माइआ जिनि जगतु भुलाइआ साचा नामु न भाइआ । मनमुख संता नालि वैरु करि दुखु खटे संसारा । खोटे खरे परखीअनि तितु सचै दरबारा राम ॥ ३ ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई राम । जितु भावै तितु लाइसी जिउ तिसदी वडिआई राम । जिउ तिसदी वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई । जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बखसे सोई । गुरपरसादी आपु गवाईऐ नानक नामि पति पाई । आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे भाई ! जिस मनुष्य को गुरु ने समझ दे दी (उसके अन्तर्मन में) क़ीमती रत्नों का व्यापार होता रहता है, उसे परमात्मा की भक्ति की कमाई प्राप्त होती रहती है और परमात्मा की गुणस्तुति में लगकर उसकी लीनता गुणों के मालिक-प्रभु में हो जाती है । हे भाई ! जिस मनुष्य को परमात्मा आप समझ देता है, वह मनुष्य प्रभु की गुणस्तुति में टिककर गुणों के स्वामी प्रभु में लीन हो जाता है, वह दुनिया में आकर प्रभु-भक्ति का लाभ प्राप्त करता है । गुरु की शिक्षा पर चलकर वह हरि-नाम को सहारा बनाए रखता है । वह विश्वस्त हो जाता है कि भक्ति के बिना आत्मिक आनन्द नहीं मिल सकता, माया-मोह में फँसनेवाले ने अपनी प्रतिष्ठा गवाँ ली । हे भाई! जिसे परमात्मा नाम-व्यापार में लगा देता है, वह सदा नाम-सौदा ख़रीदता है, नाम का ही लाभ प्राप्त करता है । हे भाई ! जब गुरु ज्ञान देता है, तो मनुष्य (के हृदय-नगर में) प्रभु की गुणस्तुति के क़ीमती रत्नों का व्यापार होने लगता है ॥ १ ॥ हे भाई ! माया-मोह निरा दुख ही है, यह आत्मिक जीवन में घाटा पैदा करनेवाला व्यापार है । मिथ्या बोल-बोलकर (तो) विष भक्षण करना है, जिससे मनुष्य के भीतर अनेक विकार बढ़ते जाते हैं । यह दुनिया भी निरा

भय है, जहाँ मनुष्य परमात्मा के नाम से ख़ाली होकर अपनी प्रतिष्ठा गवाँ लेता है। जिस मनुष्य को माया-मोह प्रिय लगता है, उसका जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं होता। हे भाई ! माया-मोह केवल मात्र दुख है, (माया के प्रति भाग-दौड़) आत्मिक जीवन में घाटा पैदा करनेवाला व्यापार है ॥ २ ॥ हे भाई ! भले तथा बुरे उस सत्यस्वरूप परमात्मा के दरबार में परखे जाते हैं, बुरे व्यक्ति तो दरबार में अपमानित होते हैं, वे वहाँ खड़े होकर पुकार करते हैं। जिन मनुष्यों ने स्वेच्छाचारी होकर मनुष्य-जन्म गवाँ लिया, वे मूर्ख गवाँर वहाँ खड़े प्रार्थना करते रहते हैं। जिस विष रूपी माया ने जगत को कुमार्गगामी किया हुआ है, (उस माया में आबद्ध जीव को) सत्यस्वरूप हरि का नाम भला नहीं लगता। स्वेच्छाचारी जगत सन्तजनों के साथ वैर करके दुख ख़रीदता रहता है। हे भाई ! भले और बुरे उस सत्यस्वरूप दरबार में परखे जाते हैं ॥ ३ ॥ (परमात्मा स्वेच्छापूर्वक) जीवों को आप ही बनाता है, (इसलिए भले-बुरे होने का गिला) किसी के पास नहीं किया जा सकता। प्रभु की रज़ा के विपरीत कुछ भी नहीं किया जा सकता। जिस कार्य में लगाने के लिए प्रभु की इच्छा होती है, उस कार्य में लगा देता है। जिस प्रकार उसकी इच्छा होती है, उसी प्रकार कराता है। जिस प्रकार उस प्रभु की रज़ा होती है, उसी प्रकार वह जीवों से काम कराता है। न कोई जीव शूरवीर है न कोई कमज़ोर है। दुनिया का दाता जो जीवों के कृत कर्मों के अनुसार जीवों को उत्पन्न करता है, वह आप ही जीवों को देनें देता है अर्थात् जीवों पर कृपा करता है। नानक का कथन है कि गुरु की कृपा से अहंत्वभाव दूर किया जा सकता है। अहंत्वहीन होकर परमात्मा के नाम में लगकर (प्रभु-भक्त ने) प्रतिष्ठा अर्जित कर ली। हे भाई ! जीवों को भले-बुरे परमात्मा आप ही बनाता है (इस सम्बन्ध में) किसी के पास गिला नहीं किया जा सकता। प्रभु की इच्छा के विपरीत कुछ नहीं किया जा सकता ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम। गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम। अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी। अंतरि बाहरि भगती राते सचि नामि लिव लागी। नदरि करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि वीचारा। नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइआ साचै के वापारा ॥ १ ॥ हंउमै माइआ मैलु है माइआ मैलु भरीजै राम। गुरमती मनु निरमला रसना हरिरसु पीजै राम। रसना हरिरसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि

बीचारी। अंतरि खूहटा अंम्रिति भरिआ सबदे काढि पीऐ पनिहारी। जिसु नदरि करे सोई सचि लागै रसना रामु रवीजै। नानक नामि रते से निरमल होर हउमै मैलु भरीजै ॥ २ ॥ पंडित जोतकी सभि पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम। माइआ मोहु अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम। माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि दुखु पाई। बिखु का कीड़ा बिखु सिउ लागा बिस्टा माहि समाई। जो धुरि लिखिआ सोइ कमावै कोइ न मेटणहारा। नानक नामि रते तिन सदा सुखु पाइआ होरि मूरख कूकि मुए गावारा ॥ ३ ॥ माइआ मोहि मनु रंगिआ मोहि सुधि न काई राम। गुरमुखि इहु मनु रंगीऐ दूजा रंगु जाई राम। दूजा रंगु जाई साचि समाई सचि भरे भंडारा। गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा। आपे मेले सो हरि मिलै होरु कहणा किछू न जाए। नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंगु लाए ॥ ४ ॥ ५ ॥

परमातमा का नाम ही सच्चा सौदा है, व्यापार है। इस हरि-नाम का व्यापार गुरु की शिक्षा पर चलकर किया जा सकता है। इसका मूल्य बहुत ही अधिक है। सत्यस्वरूप प्रभु के नाम का व्यापार बहुत क़ीमत बढ़ाता है; जो मनुष्य इस व्यापार में लगते हैं, वे सौभाग्यशाली हो जाते हैं। वे मनुष्य अन्तर्मन में भक्ति-रंग से रँगे रहते हैं, लौकिक कार्य-व्यवहार करते हुए भी वे भक्ति-रंग में रँगे रहते हैं, सत्यस्वरूप हरि-नाम में उनकी लगन लगी रहती है। लेकिन, हे भाई! वही मनुष्य गुरु के उपदेश द्वारा विचार करके सत्यस्वरूप हरि-नाम का सौदा प्राप्त करता है, जिस पर परमात्मा कृपादृष्टि करता है। नानक का कथन है कि जो मनुष्य परमात्मा के नाम-रंग में रँगे जाते हैं, उन्होंने ही सत्यस्वरूप प्रभु के नाम-व्यापार में आत्मिक आनन्द प्राप्त किया है ॥ १ ॥ हे भाई! अहंत्व तथा माया मैल है। मनुष्य का हृदय माया के मैल से मैला रहता है। गुरु की शिक्षा पर आचरण करने से मन पवित्र हो जाता है। हमेशा जिह्वा द्वारा परमात्मा का नाम-जल पीते रहना चाहिए, जिससे हृदय भीग जाता है और सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति के द्वारा बुद्धिमान हो जाता है। हे भाई! आत्मिक जीवन के दाता नाम-जल का भरा हुआ झरना मनुष्य के भीतर ही है। जिस मनुष्य की सुरति गुरु के ज्ञान द्वारा यह नाम-जल भरना जानती है, वह अपने भीतरी चश्मे से नाम-जल निकालकर पीता रहता है। वही मनुष्य सत्यस्वरूप हरि-नाम में लगता है, जिस पर

परमात्मा कृपादृष्टि करता है। जिह्वा द्वारा परमात्मा का स्मरण करते रहना चाहिए। हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा के नाम-रंग में रँगे जाते हैं, वे पवित्र हो जाते हैं, शेष दुनिया अहंकार के मैल से मैली हुई रहती है ॥ २ ॥ पंडित और ज्योतिषी, ये सब पढ़-पढ़कर ऊँची आवाज़ में दूसरों को उपदेश करते हैं, लेकिन यह ऊँची आवाज़ में किसे सुनाते हैं ? इनके भीतर तो प्रबल माया-मोह है, माया का मैल लगा रहता है और इनके तमाम व्यापार माया से सम्बद्ध हैं। दुनिया में इनके उपदेश माया के व्यापार की तरह प्यारे हैं, लेकिन ये जन्म-मरण के चक्र में दुख पाते रहते हैं। ऐसा मनुष्य मोह रूपी विष का कीड़ा बना रहता है, इसी विष के साथ चिपटा रहता है और इसी गन्दगी में जीवन समाप्त कर लेता है। परमात्मा ने जो कुछ दरबार से उसके मस्तक पर लिख दिया है, (दुनिया में आकर) वह वही कुछ कमाता रहता है। कोई मनुष्य (परमात्मा द्वारा लिखे लेखों को) मिटा नहीं सकता। हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा के नाम-रंग में रँगे रहते हैं, वे हमेशा आनन्द अनुभव करते हैं; शेष वे मूर्ख गँवार हैं, जो दूसरों को ही शिक्षा दे-देकर आप आत्मिक मृत्यु पाते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! माया-मोह में जिसका मन रँग जाता है, उसे मोहग्रस्त होकर (आत्मिक जीवन को विकसित करने की) कोई समझ नहीं आती। यदि मन को गुरु की शरणागति होकर नाम-रंग द्वारा रँग लिया जाए, तो माया-मोह का रंग उतर जाता है। जब माया-मोह का रंग उतर जाता है, तब मनुष्य सत्यस्वरूप हरि-नाम में लीन हो जाता है। और सत्यस्वरूप हरि-नाम के धन से आत्मिक भण्डार भर जाते हैं हे भाई ! जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहता है, वही इस (रहस्य को) समझता है। वह सत्यस्वरूप हरि-नाम से अपने जीवन को सुन्दर बना लेता है। लेकिन जिसे परमात्मा स्वयं अपने साथ मिलाता है, वही उसे मिल सकता है। परमात्मा की कृपा के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय बतलाया नहीं जा सकता। हे नानक ! जगत नाम के बिना दुबिधाग्रस्त हुआ रहता है। कितने ही ऐसे भी जीव हैं, जो प्रभु-चरणों से प्रीति करके प्रभु के नाम-रंग में रँगे रहते हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ ए मन मेरिआ आवागउणु संसारु है अंति सचि निबेड़ा राम। आपे सचा बखसि लए फिरि होइ न फेरा राम। फिरि होइ न फेरा अंति सचि निबेड़ा गुरमुखि मिलै वडिआई। साचै रंगि राते सहजे माते सहजे रहे समाई। सचा मनि भाइआ सचु वसाइआ सबदि रते अंति निबेरा। नानक नामि रते से सचि समाणे बहुरि न भवजलि फेरा ॥ १ ॥

माइआ मोहु सभु बरलु है दूजै भाइ खुआई राम । माता पिता सभु हेतु है हेते पलचाई राम । हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सकै कोई । जिनि स्रिसटि साजी सो करि वेखै तिसु जेवडु अवरु न कोई । मनमुखि अंधा तपि तपि खपै बिनु सबदै सांति न आई । नानक बिनु नावै सभु कोई भुला माइआ मोहि खुआई ॥ २ ॥ एहु जगु जलता देखि कै भजि भए हरि सरणाई राम । अरदासि करीं गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई राम । रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुधु जेवडु अवरु न दाता । सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि एको जाता । जतु सतु संजमु करम कमावै बिनु गुर गति नही पाई । नानक तिसनो सबदु बुझाए जो जाइ पवै हरि सरणाई ॥ ३ ॥ जो हरि मति देइ सा ऊपजै होर मति न काई राम । अंतरि बाहरि एकु तू आपे देहि बुझाई राम । आपे देहि बुझाई अवर न भाई गुरमुखि हरि रसु चाखिआ । दरि साचै सदा है साचा साचै सबदि सुभाखिआ । घर महि निजघरु पाइआ सतिगुरु देइ वडाई । नानक जो नामि रते सेई महलु पाइनि मति परवाणु सचु साई ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे मेरे मन ! जगत जन्म-मरण का चक्र है । अन्त में सत्यस्वरूप परमात्मा से प्रीति करने पर यह चक्र समाप्त हो जाता है । जिस मनुष्य को सत्यस्वरूप प्रभु आप ही बख्श देता है, उसे दुनिया में बार-बार चक्कर नहीं लगाना पड़ता । उसे बार-बार आवागमन का चक्कर नहीं लगाना पड़ता, सत्यस्वरूप हरि-नाम में लीन होने के कारण अन्त में उसके जन्म-मरण का समापन हो जाता है, गुरु का शरणागत हो उसे प्रतिष्ठा मिलती है । जो मनुष्य सत्यस्वरूप हरि के प्रेम-रंग में रँगे जाते हैं, वे आत्मिक स्थिरता में मस्त रहते हैं और इसी आत्मिक स्थिरता के द्वारा ही परमात्मा में लीन हो जाते हैं । हे मेरे मन ! जिन मनुष्यों को सत्यस्वरूप प्रभु मन में प्यारा लगने लगता है, जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु को अपने मन में टिका लेते हैं, जो मनुष्य गुरु के ज्ञान में रँगे जाते हैं, उनके जन्म-मरण का आखिर समापन हो जाता है । हे नानक ! प्रभु के नाम-रंग में रँगे हुए मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु में लीन हो जाते हैं, उन्हें संसार-समुद्र में बारम्बार चक्कर नहीं लगाना पड़ता ॥ १ ॥ माया का मोह निरा पागलपन है, (तमाम दुनिया) माया-मोह में सही जीवन-मार्ग से भ्रष्ट होती जा रही है । माता, पिता आदि का भी निरा मोह है, इस मोह में ही दुनिया उलझी पड़ी है । पूर्व जन्म में किए कर्मों के अनुसार (दुनिया) मोहग्रस्त रहती है, (चतुराई

द्वारा) पूर्व कृत संस्कारों को कोई मिटा नहीं सकता। जिस कर्तार ने यह सृष्टि उत्पन्न की है, वह यह माया का मोह रचकर देख रहा है, कोई उसकी समानता करनेवाला नहीं है। स्वेच्छाचारी मनुष्य माया के मोह में अन्धा होकर जल-जलकर दुखी होता है, गुरु के ज्ञान के बिना उसे शान्ति नहीं मिल सकती। हे नानक ! परमात्मा के नाम के बिना हर एक कुमार्गगामी है, माया-मोह के कारण सही जीवन-मार्ग से विचलित रहता है ॥ २ ॥ हे भाई ! इस संसार को विकारों में जलता देखकर जो मनुष्य दौड़कर परमात्मा की शरण ले लेते हैं (वे जलने से बच जाते हैं)। मैं पूर्णगुरु से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे विकारों की जलन से बचा ले, मुझे यह महानता दे। मुझे अपनी शरण में रख, परमात्मा का नाम जपने की महानता दे। यह देन देने की सामर्थ्य रखनेवाला तुम्हारे जैसा कोई नहीं। हे भाई ! जो मनुष्य परमात्मा की सेवा-भक्ति में लगते हैं, वे भाग्यशाली हैं, वे उस परमात्मा के साथ मेल कर लेते हैं, जो हर एक युग में एक आप ही आप है। यदि कोई मनुष्य उच्च आचरण अपनाता है, (उसका यह सब प्रयास निष्फल हो जाता है) क्योंकि गुरु की शरण में जाए बिना उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा की शरण लेता है, परमात्मा उसे गुरु का ज्ञान समझने की देन देता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! परमात्मा जो बुद्धि मनुष्य को देता है, उसके भीतर वही बुद्धि प्रकट हो जाती है। परमात्मा-प्रदत्त बुद्धि के अतिरिक्त दूसरी कोई बुद्धि नहीं है। हे प्रभु ! जीव के भीतर और बाहर तुम ही विद्यमान हो, तुम स्वयं ही जीवों को समझ देते हो, तुम स्वयं ही ज्ञान देते हो, कोई दूसरी बुद्धि जीव को पसन्द ही नहीं आ सकती। गुरु की शरण लेनेवाला मनुष्य परमात्मा के नाम का आस्वादन करता है। गुरु की शिक्षा के द्वारा जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति करता है, वह सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर स्थिरचित्त होकर टिका रहता है। हे भाई ! जिस मनुष्य को सतिगुरु महानता देता है, वह अपने हृदय में ही प्रभु की सेवा प्राप्त कर लेता है। हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा के नाम-रंग में रँगे जाते हैं, वही परमात्मा की सेवा प्राप्त करते हैं, सत्यस्वरूप प्रभु उनकी वह नाम-स्मरण की सुबुद्धि स्वीकार करता है ॥ ४ ॥ ६ ॥

वडहंसु महला ४ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम। हरि हरि हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई राम। हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई सभि दूख विसारणहारा।

वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धनु सतिगुरु हमारा। ऊठत बैठत सतिगुरु सेवह जितु सेविऐ सांति पाई। मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर प्रीति लगाई ॥ १ ॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे राम। हरिनामो हरिनामु द्रिड़ाए जपि हरि हरि नामु विगसे राम। जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरि नामु नवंनिधि पाई। हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा हरि सहजि समाधि लगाई। हरिनामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतिगुर देव मनु परसे। हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे ॥ २ ॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा राम। हउ मनु तनु हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम। हउ मनु तनु काटि काटि तिसु देई जो सतिगुर बचन सुणाए। मेरै मनि बैरागु भइआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु पाए। हरि हरि क्रिपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा। कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा ॥ ३ ॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै\अवरु न कोई राम। हरि दानो हरि दानु देवै हरि पुरखु निरंजनु सोई राम। हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन का दुखु भरमु भउ भागा। सेवक भाइ मिले वडभागी जिन गुरचरनी मनु लागा। कहु नानक हरि आपि मिलाए मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई। गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई ॥ ४ ॥ १ ॥

हे भाई! गुरु ने मेरे मन में अपने चरणों की प्रीति पैदा की है। गुरु ने मेरे मन में परमात्मा का नाम टिका दिया है। गुरु ने मेरे मन में हरि-नाम टिका दिया है, जो समस्त दुखों को दूर करने की सामर्थ्य रखता है। सौभाग्यवश मैंने गुरु का दर्शन कर लिया है। मेरा गुरु अत्यन्त श्लाघा योग्य है। अब मैं उठता-बैठता प्रतिपल गुरु द्वारा बतलाई सेवा करता हूँ, जिसके प्रभाव से मैंने आत्मिक शान्ति प्राप्त कर ली है। हे भाई! मेरे हृदय में गुरु का प्रेम पैदा हो गया है ॥ १ ॥ हे भाई! गुरु का दर्शन करके मुझे आत्मिक जीवन मिल जाता है और मेरा मन रस से ओत-प्रोत हो जाता है। गुरु मेरे मन में परमात्मा का नाम दृढ़ करके टिका देता है, उस हरि-नाम को जप-जपकर मेरा मन खिला रहता है। परमात्मा का नाम जप-जपकर मेरा हृदय कमल-पुष्प की तरह खिल पड़ता है। हरि-नाम पाकर मैंने दुनिया के नौ ख़ज़ाने प्राप्त कर लिये हैं। मेरे भीतर अहंत्वरोग दूर हो गया है, मेरा सारा दुख दूर हो गया है, हरि-नाम ने

आत्मिक स्थिरता में मेरी सुरति दृढ़ रूप से लगा दी है। हे भाई ! यह हरि-नाम प्रतिष्ठा है, जो गुरु द्वारा प्राप्त हुई है, गुरु को स्पर्श करके मेरा मन आनन्द अनुभव करता है। हे भाई ! गुरु का दर्शन करके मुझे आत्मिक जीवन मिल जाता है और मेरा मन रस के ओत-प्रोत हो जाता है ॥ २ ॥ जो गुरमुख मुझे पूर्णगुरु लाकर मिला दे, मैं अपना तन, मन उसके हवाले कर दूँ, अपना शरीर काटकर उसे सौंप दूँ। जो कोई गुरमुख मुझे गुरु के वचन सुनाए, मैं अपना तन, मन काटकर उसके हवाले कर दूँ। मेरे उत्कण्ठित हृदय में गुरु के दर्शनों की इच्छा पैदा हो रही है। गुरु को मिलकर, उसके दर्शनों से मेरा मन सुख अनुभव करता है। हे हरि ! हे सुखदाता हरि ! कृपा कर। मुझे पूर्णगुरु के चरणों की धूलि दे। (कोई गुरमुख) मुझे पूर्णसतिगुरु लाकर मिला दे ॥ ३ ॥ हे भाई ! गुरु के बराबर का दाता मुझे दूसरा कोई नहीं दिखता (क्योंकि) गुरु परमात्मा के नाम का दान देता है, जो सर्वव्यापक है और जो माया के प्रभाव के परे है। जिन मनुष्यों ने परमात्मा का नाम स्मरण किया है, उनका प्रत्येक प्रकार का भय दूर हो गया। जिन भाग्यशाली मनुष्यों का मन गुरु के चरणों में लग गया, वे सेवक भावना के माध्यम से परमात्मा में मिल गए। नानक का कथन है कि परमात्मा आप ही जीवों को अपने साथ मिलाता है और गुरु के मिलाप से, परमात्मा के मिलाप से जीव के भीतर आत्मिक आनन्द पैदा होता है। हे भाई ! गुरु के समकक्ष दूसरा कोई दाता मुझे दिखाई नहीं देता ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वडहंसु महला ४ ॥ हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी राम। जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम। सतिगुरु मेलि हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआइआ। जिसु कारणि हंउ ढूंढि ढूढेदी सो सजणु हरि घरि पाइआ। एक द्रिस्टि हरि एको जाता हरि आतम रामु पछाणी। हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी ॥ १ ॥ जिना सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए राम। तिन चरण तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाए राम। हरि हरि चरण सरेवह तिनके जिन सतिगुरु पुरखु प्रभु ध्याइआ। तू वडदाता अंतरजामी मेरी सरधा पूरि हरि राइआ। गुरसिख मेलि मेरी सरधा पूरी अनदिनु राम गुण गाए। जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए ॥ २ ॥ हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख

मीत पिआरे राम। हरि नामो हरि नामु सुणाए मेरा प्रीतमु नामु अधारे राम। हरि हरि नामु मेरा प्रान सखाई तिसु बिनु घड़ी निमख नही जीवां। हरि हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि अंम्रितु पीवां। हरि आपे सरधा लाइ मिलाए हरि आपे आपि सवारे। हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे ॥ ३ ॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई राम। हरि आपे हरि आपे मेलै करै सो होई राम। जो हरि प्रभ भावै सोई होवै अवरु न करणा जाई। बहुतु सिआणप लइआ न जाई करि थाके सभि चतुराई। गुरप्रसादि जन नानक देखिआ मै हरि बिनु अवरु न कोई। हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई ॥ ४ ॥ २ ॥

गुरु के बिना मैं बहुत तुच्छ थी। गुरु के मिलने के पश्चात् जगत का जीवन-दाता प्रभु मिल गया, गुरु के मिलाप के प्रभाव से मैं प्रभु में लीन हो गई। जब गुरु (से भेंट हुई) तब मैं परमात्मा के मिलाप में, परमात्मा के नाम में लीन हो गई (और) मैंने परमात्मा का नाम जपना आरम्भ कर दिया, नाम-स्मरण शुरू कर दिया। जिस सज्जन प्रभु को मिलने के लिए मैं इतनी खोज कर रही थी, उस सज्जन हरि को मैंने अपने हृदय में प्राप्त कर लिया। मैंने एक दृष्टि में परमात्मा को पहचान लिया। मैंने सर्वव्यापक राम को पहचान लिया। गुरु के बिना मैं बहुत ही तुच्छ थी ॥ १ ॥ हे भाई ! जिन्होंने गुरु को प्राप्त कर लिया, उन्हें हरि-प्रभु अपने चरणों में जगह दे देता है। मैं उनके चरणों की सेवा करने के लिए तैयार हूँ, उनके चरणों को स्पर्श करने को तत्पर हूँ। हे हरि ! जिन मनुष्यों ने गुरु को अपने हृदय में टिका लिया है, उन्होंने प्रभु को हृदय में टिका लिया है। उनकी सेवा करना चाहता हूँ। हे प्रभु बादशाह ! तुम बड़े दानी हो, तुम अन्तर्यामी हो, मेरी यह इच्छा पूर्ण करो। हे भाई ! मेरी यह इच्छा गुरमुखों की संगति में ही पूर्ण हो सकती है। (सत्संगी जीव) प्रतिपल परमात्मा के गुण गाने लगता है। जिन भाग्यशालियों ने गुरु को प्राप्त कर लिया, उन्हें हरि-प्रभु अपने चरणों में जगह देता है ॥ २ ॥ मैं उस प्यारे मित्र गुरसिख पर बलिहारी हूँ, जो मुझे हमेशा परमात्मा का नाम सुनाता रहे। परमात्मा का नाम ही मेरा मित्र है, अवलम्ब है। परमात्मा का नाम मेरी आत्मा का साथी है, उसके बिना मैं निमिष मात्र के लिए भी नहीं रह सकता। सुखदाता प्रभु यदि कृपा करे, तभी मैं गुरु के सान्निध्य में रहकर आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल पान कर सकता हूँ। हे भाई ! परमात्मा आप ही अपने मिलन की इच्छा पैदा करता है, आप ही चरणों में जगह देता है। आप ही परमात्मा मनुष्य का जीवन

सुन्दर बनाता है; मैं गुरसिख पर, प्यारे मित्र पर बलिहारी जाता हूँ ॥ ३ ॥ हे भाई ! सर्वव्यापक और माया के प्रभाव से रहित परमात्मा आप ही आप है। वह परमात्मा आप ही जीवों को अपने चरणों में जगह देता है, जो कुछ वह करता है, वही घटित होता है। हे भाई ! जो परमात्मा को भला लगता है, वही होता है, उसके विपरीत कुछ भी नहीं किया जा सकता। दास नानक का कथन है कि मैंने गुरु की कृपा से परमातमा का दर्शन किया है। मुझे परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई सहारा नहीं दिखता। हे भाई ! सर्वव्यापक तथा माया के प्रभाव से परे परमात्मा सब कुछ आप ही करने योग्य है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ वडहंसु महला ४ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ राम। तिमर अगिआनु गवाइआ गुर गिआनु अंजनु गुरि पाइआ राम। गुरगिआन अंजनु सतिगुरू पाइआ अगिआन अंधेर बिनासे। सतिगुर सेवि परमपदु पाइआ हरि जपिआ सास गिरासे। जिन कंउ हरि प्रभि किरपा धारी ते सतिगुर सेवा लाइआ। हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ ॥ १ ॥ मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई राम। हरि नामो हरि नामु देवै मेरा अंति सखाई राम। हरि हरि नामु मेरा अंति सखाई गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ। जिथै पुतु कलत्रु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि नामि छडाइआ। धनु धनु सतिगुरु पुरखु निरंजनु जितु मिलि हरि नामु धिआई। मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई ॥ २ ॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ राम। तिन निहफलु तिन निहफलु जनमु सभु ब्रिथा गवाइआ राम। निहफलु जनमु तिन ब्रिथा गवाइआ ते साकत मुए मरि झूरे। घरि होदै रतनि पदारथि भूखे भाग हीण हरि दूरे। हरि हरि तिन का दरसु न करीअहु जिनी हरि हरि नामु न धिआइआ। जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ ॥ ३ ॥ हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती राम। गुर मिलि गुर मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती राम। हरि हरि सतिगुर करह भगती जां हरि प्रभु किरपा धारे। मै गुर बिनु अवरु न कोई बेली गुरु सतिगुरु प्राण हम्हारे। कहु

नानक गुरि नामु द्रिड़ाइआ हरि हरि नामु हरि सती। हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे हरि ! मुझे गुरु के चरणों में जगह दो, मुझे गुरु के चरणों में जगह दो, गुरु के चरण मुझे प्यारे लगते हैं। जिसने गुरु के माध्यम से आत्मिक जीवन की सूझ का सुरमा प्राप्त कर लिया, उसने आत्मिक जीवन के प्रति अज्ञानता का अँधेरा दूर कर लिया। जिस मनुष्य ने गुरु से ज्ञान का सुरमा ले लिया, उस मनुष्य के अज्ञान के अँधेरे नष्ट हो जाते हैं। गुरु द्वारा बतलाई सेवा करके वह मनुष्य सर्वोच्च आत्मिक स्थान प्राप्त कर लेता है और वह प्रत्येक श्वास, प्रत्येक ग्रास के साथ परमात्मा का नाम जपता रहता है। हे भाई ! हरि-प्रभु ने जिन मनुष्यों पर कृपा की, उन्हें उसने गुरु की सेवा में लगा दिया। हे हरि ! मुझे गुरु के चरणों में जगह दो, मुझे गुरु के चरणों में जगह दो, गुरु के चरण मुझे प्यारे लगते हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! मुझे मेरा गुरु बहुत प्यारा लगता है, गुरु के बिना मुझसे रहा नहीं जा सकता। गुरु मुझे वह हरि-नाम देता है, जो अन्तिम समय में मेरा साथी रहेगा। गुरु ने यह हरि-नाम मेरे हृदय में दृढ़ कर दिया है, जो अन्तिम समय में मेरा मित्र बननेवाला है। जिस जगह पुत्र, स्त्री कोई भी सहायक नहीं बनता, वहाँ हरि-नाम ही जीवों को मुक्ति दिलानेवाला है। गुरु धन्य है, गुरु निर्लिप्त परमात्मा का रूप है, उस गुरु में लीन होकर मैं परमात्मा का नाम स्मरण करता हूँ। हे भाई ! मुझे गुरु बहुत प्यारा लगता है, उसके बिना मैं रह नहीं सकता ॥ २ ॥ हे भाई ! जिन मनुष्यों ने गुरु-महापुरुष का दर्शन नहीं किया, उनका जन्म व्यर्थ गया, उन्होंने सारा मनुष्य-जीवन व्यर्थ गवाँ दिया। उन्होंने अपना जन्म व्यर्थ में ही गवाँ लिया, परमात्मा से टूटे हुए वे मनुष्य आत्मिक मृत्यु को प्राप्त कर गए, आत्मिक मृत्यु पाकर वे दुखी ही रहे। हृदय-घर में बहुमूल्य नाम-रत्न होते हुए भी वे अभागे 'मरा, मरा' करते रहे और परमात्मा से बिछुड़े रहे। हे भाई ! जिन मनुष्यों ने परमात्मा का नाम स्मरण नहीं किया, जिन्होंने गुरु-महापुरुष का दर्शन नहीं किया, उनका दर्शन तुम न करना ॥ ३ ॥ हम तुच्छ पपीहे हैं (और प्रभु बादल), इसलिए मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे प्यारा गुरु मिला, गुरु सतिगुरु को मिलकर मैं परमात्मा की भक्ति करूँगा। हे भाई ! गुरु को मिलकर परमात्मा की भक्ति हम तब ही कर सकते हैं, जब परमात्मा कृपा करता है। गुरु के अतिरिक्त मुझे दूसरा कोई सहायक नहीं दिखाई देता, गुरु ही मेरी ज़िन्दगी है। नानक का कथन है कि गुरु ने ही परमात्मा का सत्यस्वरूप नाम हृदय में दृढ़ किया है। मैं पपीहा हूँ और परमात्मा के समक्ष विनती करता हूँ (कि मुझे गुरु का दर्शन कराओ) ॥ ४ ॥ ३ ॥

।। वडहंसु महला ४ ।। हरि किरपा हरि किरपा करि सतिगुरु मेलि सुख दाता राम। हम पूछह हम पूछह सतिगुर पासि हरि बाता राम। सतिगुर पासि हरि बात पूछह जिनि नामु पदारथु पाइआ। पाइ लगह नित करह बिनंती गुरि सतिगुरि पंथु बताइआ। सोई भगतु दुखु सुखु समतु करि जाणै हरि हरि नामि हरि राता। हरि किरपा हरि किरपा करि गुरु सतिगुरु मेलि सुखदाता ।। १ ।। सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामि सभि बिनसे हंउमै पापा राम। जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु लथिअड़े जगि तापा राम। हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन के दुख पाप निवारे। सतिगुरि गिआन खड़गु हथि दीना जम कंकर मारि बिदारे। हरि प्रभि क्रिपा धारी सुख दाते दुख लाथे पाप संतापा। सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामु सभि बिनसे हंउमै पापा ।। २ ।। जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ राम। मुखि गुरमुखि मुखि गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ राम। गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ अरोगत भए सरीरा। अनदिनु सहज समाधि हरि लागी हरि जपिआ गहिर गंभीरा। जाति अजाति नामु जिन धिआइआ तिन परम पदारथु पाइआ। जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ ।। ३ ।। हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम। हम पापी हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे राम। हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे हरि दैआल सरणाइआ। तू दुखभंजनु सरब सुखदाता हम पाथर तरे तराइआ। सतिगुर भेटि राम रसु पाइआ जन नानक नामि उधारे। हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ।। ४ ।। ४ ।।

हे हरि ! कृपा कर, मुझे आत्मिक आनन्द देनेवाला गुरु मिला। मैं गुरु से परमात्मा की गुणस्तुति की बातें पूछा करूँगा। जिस गुरु के पास परमात्मा का अमूल्य नाम-रत्न है, उस गुरु से मैं परमात्मा की गुणस्तुति की बातें पूछा करूँगा। जिस गुरु ने सन्मार्ग इंगित किया है, मैं उस गुरु के चरण स्पर्श करूँगा, मैं उस गुरु के समक्ष प्रार्थना करूँगा कि मुझे मार्ग प्रदर्शन करो। वह गुरु ही वास्तविक भक्त है, वह सुख-दुख एक समान मानता है, वह सदा परमात्मा के नाम-रंग में रँगा रहता है। हे हरि !

कृपा करो और मुझे आत्मिक आनन्द के देनेवाले गुरु के दर्शन कराओ ॥१॥ हे भाई ! गुरु की शरण लेकर परमात्मा का नाम सुन, क्योंकि नाम के द्वारा अहंत्व आदि समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। हे भाई ! सदा परमात्मा का नाम जपा कर (इससे) जागतिक दुख, क्लेश दूर हो जाते हैं। जिन मनुष्यों ने परमात्मा का नाम स्मरण किया है, वह (नाम) उनके सारे दुख-पाप दूर कर देता है। गुरु ने जिस मनुष्य के हाथ में सूझ-बूझ की तलवार दे दी, उसने यमराज के दूत समाप्त कर दिए। सुखों के दाता हरि ने जिस मनुष्य पर कृपा की, उसके समस्त दुख, पाप, क्लेश दूर हो गए। हे भाई ! गुरु की शरण लेकर परमात्मा का नाम सुना कर (जिसके श्रवण से) अहंत्व आदि समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! सदा परमात्मा का नाम जपा कर, मुझे तो परमात्मा का नाम प्यारा लग रहा है। हे भाई ! गुरु का शरणागत होकर मुख से हरि का नाम जपा कर, यह हरि-नाम सारे रोग दूर कर देता है। गुरु के माध्यम से हरि-नाम जपा कर, जो समस्त रोग दूर कर देता है, शरीर निरोग हो जाता है। अथाह और विशाल हृदय वाले हरि का नाम जपने से सहजावस्था में सुरति लगी रहती है। ऊँची जाति से हों या नीची जाति से, जिन्होंने हरि-नाम स्मरण किया है, उन्होंने यह सर्वश्रेष्ठ नाम-पदार्थ प्राप्त कर लिया है। हे भाई ! सदा परमात्मा का नाम जपा कर। मुझे तो अन्तर्मन में परमात्मा का नाम प्यारा लग रहा है ॥ ३ ॥ हे हरि ! कृपा करो, हमें विकारों से बचा लो। हम पापी, गुणहीन तुच्छ हैं, लेकिन फिर भी तुम्हारे हैं। हे दया के घर हरि ! हम विकारी हैं, गुणों से ख़ाली हैं, निर्धन हैं, हम तुम्हारे हैं और तुम्हारी शरण में आए हैं। तुम दुखों के नाशक हो, सुखों के दाता हो। हम कठोर हृदय हैं, तुम्हारे द्वारा पार किए ही पार उतर सकते हैं। नानक का कथन है कि गुरु को मिलकर जिन्होंने परमात्मा का नामास्वादन किया है, उन्हें हरि-नाम ने बचा लिया है। हे हरि ! कृपा करो, हमें विकारों से बचा लो ॥ ४ ॥ ४ ॥

वडहंसु महला ४ घोड़ीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ देह तेजणि जी रामि उपाईआ राम। धंनु माणस जनमु पुंनि पाईआ राम। माणस जनमु वड पुंने पाइआ देह सु कंचन चंगड़ीआ। गुरमुखि रंगु चलूला पावै हरि हरि हरि नवरंगड़ीआ। एह देह सु बांकी जितु हरि जापी हरि हरि नामि सुहावीआ। वडभागी पाई नामु सखाई जन नानक रामि उपाईआ ॥ १ ॥ देह पावउ जीनु बुझि चंगा राम।

चड़ि लंघा जी बिखमु भुइअंगा राम। बिखमु भुइअंगा अनत तरंगा गुरमुखि पारि लंघाए। हरि बोहथि चड़ि वडभागी लंघै गुरु खेवटु सबदि तराए। अनदिनु हरि रंगि हरि गुण गावै हरि रंगी हरि रंगा। जन नानक निरबाण पदु पाइआ हरि उतमु हरि पदु चंगा ॥ २ ॥ कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ राम। तनि प्रेमु हरि चाबकु लाइआ राम। तनि प्रेमु हरि हरि लाइ चाबकु मनु जिणै गुरमुखि जीतिआ। अघड़ो घड़ावै सबदु पावै अपिउ हरि रसु पीतिआ। सुणि स्रवण बाणी गुरि बखाणी हरि रंगु तुरी चड़ाइआ। महामारगु पंथु बिखड़ा जन नानक पारि लंघाइआ ॥ ३ ॥ घोड़ी तेजणि देह रामि उपाईआ राम। जितु हरि प्रभु जापै सा धनु धंनु तुखाईआ राम। जितु हरि प्रभु जापै सा धंनु साबासै धुरि पाइआ किरतु जुड़ंदा। चड़ि देहड़ि घोड़ी बिखमु लघाए मिलु गुरमुखि परमानंदा। हरि हरि काजु रचाइआ पूरै मिलि संत जना जंञ आई। जन नानक हरि वरु पाइआ मंगलु मिलि संत जना वाधाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

हे भाई ! यह देह मानो घोड़ी है, जिसे परमात्मा ने पैदा किया है। मनुष्य-जन्म धन्य है और सौभाग्य के फलस्वरूप ही यह देह प्राप्त की है। हे भाई ! मनुष्य-जन्म सौभाग्यवश मिलता है। लेकिन उसी मनुष्य की देह स्वर्णवत तथा सुन्दर है, जो गुरु का शरणागत होकर हरि-नाम का गहरा रंग प्राप्त करता है। उस मनुष्य की काया हरि-नाम के नये रंग से रँगी जाती है। हे भाई ! यह देह सुन्दर है क्योंकि इसके द्वारा ही मैं परमात्मा का नाम जप सकता हूँ, हरि-नाम के प्रभाव से यह देह सुन्दर बन जाती है। हे भाई ! उस सौभाग्यशाली मनुष्य द्वारा ही यह देह प्राप्त की हुई मानो, जिस मनुष्य का मित्र परमात्मा का नाम बन जाता है। हे दास नानक ! यह देह परमात्मा ने ही उत्पन्न की है ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा के गुणों को विचारकर मैं गुणस्तुति की काठी (शरीर रूपी घोड़ी पर) रखता हूँ और इस पर चढ़कर मैं संसार रूपी दुस्तर संसार-सागर से पार उतरता हूँ। हे भाई ! गुरु के सान्निध्य में रहनेवाला कोई विरला मनुष्य ही इस दुस्तर संसार-सागर से पार उतरता है, जिसमें अनगिनत लहरें तरंगित हो रही हैं। कोई विरला भाग्यशाली मनुष्य हरि-नाम के जहाज़ में चढ़कर पार उतरता है और गुरु रूपी मल्लाह अपने ज्ञान में प्रवृत्त कर पार उतार देता है। हे नानक ! जो मनुष्य प्रतिपल परमात्मा के प्रेम-रंग में रँगकर परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता है, वह हरि-नाम के रंग में रँग जाता

है। वह मनुष्य उत्तम तथा पवित्र आत्मिक स्थान प्राप्त कर लेता है, जहाँ वासना स्पर्श नहीं कर सकती ॥ २ ॥ जिस मनुष्य के हृदय में गुरु ने आत्मिक जीवन की सूझ दृढ़ कर दी, उस मनुष्य ने यह सूझ देह रूपी घोड़ी के मुँह में मानो लगाम लगा दी है, उस मनुष्य के हृदय में प्रभु-प्रेम पैदा होता है। वह मनुष्य इस प्रभु-प्रेम को अपनी काया-घोड़ी पर चाबुक के रूप में इस्तेमाल करता है। हृदय में उपजे हरि-नाम के प्रेम से वह मनुष्य अपनी काया-घोड़ी को चाबुक मारता रहता है और अपने मन को नियन्त्रित करता है। लेकिन यह मन गुरु का शरणागत होकर ही जीता जा सकता है। वह मनुष्य गुरु का ज्ञान प्राप्त करता है, आत्मिक जीवन का दाता हरिनाम-रस पान करता रहता है और अल्हड़ मन को दृढ़ बना लेता है। गुरु की जो वाणी उच्चरित की हुई है, उसे अपने कानों से सुनकर प्रभु-प्रेम पैदा करता है और इस प्रकार देह रूपी घोड़ी पर सवार होता है। हे दास नानक ! मनुष्य-जीवन दुर्गम रास्ता है, गुरु (शरणागत मनुष्य को) पार उतार लेता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! यह मनुष्य शरीर रूपी घोड़ी परमात्मा ने पैदा की है (ताकि मनुष्य जीवन-यात्रा को सफलता से तय कर सके)। जिस शरीर रूपी घोड़ी के द्वारा मनुष्य परमात्मा का नाम लेता है, वह धन्य है, उसे प्रशंसा मिलती है, (इससे ही) पूर्व कृत कर्मों के संस्कारों का समूह प्रकट हो जाता है। हे भाई ! इस सुन्दर देह रूपी घोड़ी पर चढ़, (जो) दुस्तर संसार-समुद्र से पार उतार देती है। इसके द्वारा गुरु का शरणागत हो परमानन्द के मालिक-प्रभु को मिल। पूर्ण परमात्मा ने जिस जीव-स्त्री का विवाह रचा दिया, सत्संगियों के साथ मिलकर मानो उसकी बरात आ गई। हे दास नानक ! सन्तजनों को मिलकर उस जीव-स्त्री ने प्रभु-पति को पा लिया, उसने आत्मिक आनन्द पा लिया और उसके भीतर आत्मिक आनन्द के गीत गाए जाने लगे ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

॥ वडहंसु महला ४ ॥ देह तेजनड़ी हरि नवरंगीआ राम। गुर गिआनु गुरू हरि मंगीआ राम। गिआन मंगी हरि कथा चंगी हरि नामु गति मिति जाणीआ। सभु जनमु सफलिओ कीआ करतै हरि राम नामि वखाणीआ। हरि राम नामु सलाहि हरि प्रभ हरि भगति हरि जन मंगीआ। जनु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि भगति गोविंद चंगीआ ॥ १ ॥ देह कंचन जीनु सुविना राम। जड़ि हरि हरि नामु रतंना राम। जड़ि नाम रतनु गोविंद पाइआ हरि मिले हरिगुण सुख घणे। गुरसबदु पाइआ हरि नामु धिआइआ वडभागी हरि रंग हरि बणे।

हरि मिले सुआमी अंतरजामी हरि नवतन हरि नव रंगीआ। नानकु वखाणै नामु जाणै हरिनामु हरि प्रभ मंगीआ ॥ २ ॥ कड़ीआलु मुखे गुरि अंकसु पाइआ राम। मनु मैगलु गुरसबदि वसि आइआ राम। मनु वसगति आइआ परमपदु पाइआ सा धन कंति पिआरी। अंतरि प्रेमु लगा हरि सेती घरि सोहै हरि प्रभ नारी। हरि रंगि राती सहजे माती हरिप्रभु हरि हरि पाइआ। नानक जनु हरिदासु कहतु है वडभागी हरि हरि धिआइआ ॥ ३ ॥ देह घोड़ी जी जितु हरि पाइआ राम। मिलि सतिगुर जी मंगलु गाइआ राम। हरि गाइ मंगलु रामनामा हरि सेव सेवक सेवकी। प्रभ जाइ पावै रंग महली हरिरंगु माणे रंग की। गुण राम गाए मनि सुभाए हरि गुरमती मनि धिआइआ। जन नानक हरि किरपा धारी देह घोड़ी चड़ि हरि पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे भाई ! वह देह सुन्दर घोड़ी है, जो परमात्मा के प्रेम के नये रंग में रँगी रहती है, जो गुरु से आत्मिक जीवन की श्रेष्ठ सूझ माँगती रहती है। जो गुरु से आत्मिक जीवन का ज्ञान माँगती है, परमात्मा की सुन्दर गुणस्तुति करती है, परमात्मा का नाम जपती है। जो यह समझने का यत्न करती है कि परमात्मा कैसा है और कितना महान है। कर्तार-प्रभु ने उस देह रूपी घोड़ी का जन्म सफल कर दिया है, क्योंकि वह परमात्मा के नाम में लीन रहती है और परमात्मा की गुणस्तुति उच्चरित करती रहती है। हे भाई ! परमात्मा के भक्त परमात्मा के नाम की प्रशंसा करके उस प्रभु की भक्ति माँगते रहते हैं। दास नानक का कथन है कि हे सन्तजनो ! परमात्मा की सुन्दर भक्ति करो ॥१॥ वह देह स्वर्ण की है, जिस पर परमात्मा का नाम-रत्न जड़कर सोने की काठी रखी जाती है। हे भाई ! जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम-रत्न जड़कर गुरु-ज्ञान की काठी डाल दी, उसे परमात्मा मिल गया, उसने परमात्मा के गुण (अङ्गीकृत कर लिये), उसे सुख ही सुख प्राप्त हो गए। हे भाई! जिस मनुष्य ने गुरु का ज्ञान प्राप्त कर लिया, जिसने परमात्मा का नाम स्मरण करना शुरु कर दिया, वह सौभाग्यशाली बन गया और उसके भीतर परमात्मा का प्रेम प्रकट हो गया। नानक का कथन है कि जो मनुष्य परमात्मा के नाम के साथ मेल जोड़ता है, जो मनुष्य प्रतिपल परमात्मा का नाम माँगता है, उसे मालिक-हरि मिल जाता है। जो अन्तर्यामी है, जो हमेशा नितनवीन है और जो नये कौतुकों का स्वामी है ॥ २ ॥ हे भाई ! गुरु ने जिस देह रूपी घोड़ी के मुँह में लगाम लगा दी, अंकुश रख दिया, उसका मन रूपी हाथी

गुरु के ज्ञान के प्रभाव से वश में आ गया। जिस जीव-स्त्री का मन नियन्त्रित हो गया, उसने सर्वोच्च आत्मिक स्थान प्राप्त कर लिया, प्रभु-स्वामी ने उस जीव-स्त्री को प्रेम करना शुरू कर दिया, उसके भीतर परमात्मा के प्रति प्रेम पैदा हो गया, वह जीव-स्त्री प्रभु की सेवा में सुन्दर लगती है। जो जीव-स्त्री प्रभु के प्रेम-रंग में रँगी जाती है, जो सहजावस्था में मस्त रहती है, वह परमात्मा का मिलाप प्राप्त कर लेती है। परमात्मा का सेवक नानक दास का कथन है कि हे भाई! सौभाग्यशाली जीव ही परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई! वह देह घोड़ी है, जिसके द्वारा मनुष्य परमात्मा का मिलाप प्राप्त कर लेता है और गुरु को मिलकर परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाता रहता है। सेवक-भाव से जो मनुष्य परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाकर परमात्मा की सेवा-भक्ति करता है, वह परमात्मा की आनन्द-भरपूर सेवा में जा पहुँचता है और परमात्मा के मिलाप का आनन्द प्राप्त करता है। वह मनुष्य प्रेमपूर्वक अपने भीतर परमात्मा के गुण गाता है, गुरु की शिक्षा पर चलकर मन में परमात्मा का स्मरण करता है। हे नानक! जिस दास पर परमात्मा कृपा करता है, वह अपनी काया-घोड़ी पर चढ़कर परमात्मा को मिल लेता है ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

रागु वडहंसु महला ५ छंत घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गुर मिलि लधा जी रामु पिआरा राम। इहु तनु मनु दितड़ा वारोवारा राम। तनु मनु दिता भवजलु जिता चूकी काणि जमाणी। असथिरु थीआ अंम्रितु पीआ रहिआ आवण जाणी। सो घरु लधा सहजि समधा हरि का नामु अधारा। कहु नानक सुखि माणे रलीआं गुर पूरे कंउ नमसकारा ॥ १ ॥ सुणि सजण जी मैडड़े मीता राम। गुरिमंत्रु सबदु सचु दीता राम। सचु सबदु धिआइआ मंगलु गाइआ चूके मनहु अदेसा। सो प्रभु पाइआ कतहि न जाइआ सदा सदा संगि बैसा। प्रभ जी भाणा सचा माणा प्रभि हरि धनु सहजे दीता। कहु नानक तिसु जन बलिहारी तेरा दानु सभनी है लीता ॥ २ ॥ तउ भाणा तां त्रिपति अघाए राम। मनु थीआ ठंढा सभ त्रिसन बुझाए राम। मनु थीआ ठंढा चूकी डंझा पाइआ बहुतु खजाना। सिख सेवक सभि

भुंचण लगे हंउ सतगुर कै कुरबाना । निरभउ भए खसम रंगि राते जमकी त्रास बुझाए । नानक दासु सदा संगि सेवकु तेरी भगति करंउ लिव लाए ॥ ३ ॥ पूरी आसा जी मनसा मेरे राम । मोहि निरगुण जीउ सभि गुण तेरे राम । सभि गुण तेरे ठाकुर मेरे कितु मुखि तुधु सालाही । गुणु अवगुणु मेरा किछु न बीचारिआ बखसि लीआ खिन माही । नउनिधि पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे । कहु नानक मै वरु घरि पाइआ मेरे लाथे जी सगल विसूरे ॥ ४ ॥ १ ॥

हे भाई ! गुरु को मिलकर ही प्यारा प्रभु मिलता है । (प्रभु-भक्त) अपना यह शरीर, मन गुरु के हवाले करता है । जो मनुष्य अपना तन, मन गुरु के हवाले करता है, वह संसार-समुद्र को जीत लेता है, उसके लिए यमराज की पराधीनता समाप्त हो जाती है । वह मनुष्य आत्मिक जीवन का दाता नाम-जल पीता है और स्थिरचित्त हो जाता है, उसका जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है । उस मनुष्य को वह घर (प्रभु-चरणों में ठिकाना) मिल जाता है । उसके प्रभाव से सहजावस्था में लीन रहता है, परमात्मा का नाम उसका आसरा बन जाता है । नानक का कथन है कि वह मनुष्य सुख में रहकर आत्मिक आनन्द महसूस करता है, इसलिए पूर्णगुरु को प्रणाम करना चाहिए ॥ १ ॥ हे मेरे मित्र ! हे सज्जन ! सुन, गुरु ने सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति करनेवाला शब्द-मन्त्र दिया है । जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति वाले शब्द को सदा हृदय में टिकाता है, जो मनुष्य प्रभु की गुणस्तुति का गीत गाता है, उसके मन से चिन्ताएँ, दुबिधाएँ दूर हो जाती हैं, वह मनुष्य परमात्मा का मिलाप प्राप्त कर लेता है, प्रभु को छोड़ वह कहीं दूसरी जगह नहीं भटकता वह सदा ही प्रभु-चरणों में लीन रहता है । वह मनुष्य प्रभु को प्यारा लगता है, उसे सत्यस्वरूप प्रभु का ही आसरा रहता है, परमात्मा ने उसे सहजावस्था में टिकाकर अपना नाम दे दिया है । नानक का कथन है कि मैं उस सेवक पर बलिहारी जाता हूँ, तुम्हारे नाम की देन सब जीव उससे लेते हैं ॥ २ ॥ हे प्रभु ! मैं गुरु पर बलिहारी जाता हूँ । यदि तेरी रज़ा होवे तो जीव माया की तृष्णा से पूर्ण तौर पर तृप्त हो जाता है । गुरु की शरण में रहनेवाले मनुष्य का मन शान्त हो जाता है, अक्षुण्ण माया की प्यास उसके भीतर से बुझ जाती है । वह नाम रूपी खज़ाना प्राप्त कर लेता है । गुरु की शरण में आए समस्त सिक्ख सेवक नाम-खज़ाने को प्रयुक्त करने लगते हैं, (वे तमाम आतंकों से) निर्भय हो जाते हैं, प्रभु-पति के प्रेम-रंग में रँगे जाते हैं और यमों का भय मिटा लेते हैं । नानक का कथन है कि मैं दास सदा गुरु के

चरणों में टिका रहूँ, उसका सेवक बना रहूँ और सुरति लगाकर तेरी भक्ति करता रहूँ ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! मेरी प्रत्येक आशा, आकांक्षा पूर्ण हो गई है। मैं गुणहीन था, लेकिन तुम्हारे भीतर समस्त गुण हैं। हे मेरे मालिक ! तुम सर्वगुणसम्पन्न हो। मैं किस मुँह से तुम्हारी प्रशंसा करूँ ? तुमने मेरे किसी अवगुण को मस्तिष्क में नहीं रखा, तुमने मेरा कोई गुण नहीं देखा और एक क्षण मात्र में ही तुमने मुझ पर कृपा कर दी। तुम्हारी कृपा से मानो मैंने नौ ख़ज़ाने प्राप्त कर लिये हैं, मेरे भीतर आत्मिक आनन्द संवृद्धि की ओर गतिमान है और मेरे भीतर आत्मिक आनन्द के अनहद नाद होने लगे हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभुजी ! मैंने तुम्हें अपने हृदय-घर में ही पा लिया है और मेरे सब फ़िक्र समाप्त हो गए हैं ॥४॥१॥

॥ सलोकु ॥ किआ सुणेदो कूड़ु वंञनि पवण झुलारिआ। नानक सुणीअर ते परवाणु जो सुणेदे सचु धणी ॥ १ ॥ छंतु ॥ तिन घोलि घुमाई जिन प्रभु स्रवणी सुणिआ राम। से सहजि सुहेले जिन हरि हरि रसना भणिआ राम। से सहजि सुहेले गुणह अमोले जगत उधारण आए। भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पारि लघाए। जिन कंउ क्रिपा करी मेरै ठाकुरि तिन का लेखा न गणिआ। कहु नानक तिसु घोलि घुमाई जिनि प्रभु स्रवणी सुणिआ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी। नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥ १ ॥ छंतु ॥ जिनी हरि प्रभु डिठा तिन कुरबाणे राम। से साची दरगह भाणे राम। ठाकुरि माने से परधाने हरि सेती रंगि राते। हरि रसहि अघाए सहजि समाए घटि घटि रमईआ जाते। सेई सजण संत से सुखीए ठाकुर अपणे भाणे। कहु नानक जिन हरि प्रभु डिठा तिन कै सद कुरबाणे ॥ २ ॥ ॥ सलोकु ॥ देह अंधारी अंध सुंञी नाम विहूणीआ। नानक सफल जनंमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥ १ ॥ छंतु ॥ तिन खंनीऐ वंञां जिन मेरा हरि प्रभु डीठा राम। जन चाखि अघाणे हरि हरि अंम्रितु मीठा राम। हरि मनहि मीठा प्रभू तूठा अमिउ वूठा सुख भए। दुख नास भरम बिनास तन ते जपि जगदीस ईसह जैजए। मोह रहत बिकार थाके पंच ते संगु तूटा। कहु नानक तिन खंनीऐ वंञा जिन घटि मेरा हरि प्रभु वूठा ॥ ३ ॥ ॥ सलोकु ॥ जो लोड़ीदे राम सेवक सेई कांढिआ। नानक जाणे

सति सांई संत न बाहरा ।। १ ।। छंतु ।। मिलि जलु जलहि खटाना राम । संगि जोती जोति मिलाना राम । समाइ पूरन पुरख करते आपि आपहि जाणीऐ । तह सुंनि सहजि समाधि लागी एकु एकु वखाणीऐ । आपि गुपता आपि मुकता आपि आपु वखाना । नानक भ्रम भै गुण बिनासे मिलि जलु जलहि खटाना ।। ४ ।। २ ।।

।। सलोकु ।। हे भाई ! नश्वर पदार्थों की बात क्या सुनता है ? ये लौकिक पदार्थ हवा के झोंकों की तरह चले जाते हैं। हे नानक ! वे कान प्रभु की सेवा में सत्कृत होते हैं, जो सत्यस्वरूप मालिक-प्रभु की गुणस्तुति सुनते हैं ।। १ ।। छंतु ।। जिन मनुष्यों ने अपने कानों से प्रभु का नाम सुना है, उन पर मैं बलिहारी जाता हूँ। जो मनुष्य अपनी जिह्वा से परमात्मा का नाम जपते हैं, वे सहजावस्था में टिककर सुखी रहते हैं। वे मनुष्य सहजावस्था में टिककर सुखी जीवन जीते हैं, वे अमूल्य गुणों वाले हो जाते हैं, वे तो जगत को संसार-समुद्र से पार उतारने के लिए आते हैं। हे भाई ! इस भयानक संसार-समुद्र से पार होने के लिए परमात्मा के चरण जहाज़ हैं। (भक्त मनुष्य) अनेकों को पार उतार देते हैं। मेरे मालिक-प्रभु ने जिन पर कृपा की, उनके कर्मों का हिसाब करना उसने छोड़ दिया। नानक का कथन है कि मैं उस मनुष्य पर बलिहारी हूँ, जिसने अपने कानों से परमात्मा की गुणस्तुति को सुना है ।। १ ।। सलोकु ।। मैंने अपनी आँखों से दुनिया को देखा है, अभी भी दुनिया देखने की बहुत ललक है, यह तृष्णा तृप्त नहीं होती। हे नानक ! जिन आँखों ने प्यारे प्रभु को देखा है, वे आँखें दूसरी प्रकार की हैं अर्थात् लौकिक पदार्थों को देखने की ललक उनमें नहीं होती ।। १ ।। छंतु ।। मैं उन पर बलिहारी हूँ, जिन्होंने परमात्मा का दर्शन किया है, वे सौभाग्यशाली सत्यस्वरूप प्रभु की सेवा में सत्कृत होते हैं। जिन जीवों को मालिक-प्रभु ने सत्कृत किया है, वे सर्वत्र सत्कृत होते हैं, वे परमात्मा के चरणों में जगह पा लेते हैं, परमात्मा के प्रेम-रंग में रँगे रहते हैं। वे मनुष्य परमात्मा के नाम-रस द्वारा तृप्त रहते हैं, वे सहजावस्था में लीन रहते हैं और वे परमात्मा को प्रत्येक शरीर में विद्यमान जानते हैं। हे भाई ! वही मनुष्य भले हैं, सन्त हैं, सुखी हैं, जो अपने मालिक-प्रभु को भले लगते हैं। नानक का कथन है कि जिन मनुष्यों ने हरि-प्रभु का दर्शन कर लिया है, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ ।। २ ।। सलोकु ।। हे भाई ! जो शरीर परमात्मा के नाम से ख़ाली रहता है, वह माया-मोह के अँधेरे में अन्धा हुआ रहता है। हे नानक ! उस मनुष्य का जीवन सफल है, जिसके हृदय में सत्यस्वरूप प्रभु आ टिकता है ।। १ ।। छंतु ।। मैं उन मनुष्यों पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने मेरे हरि-प्रभु का दर्शन कर लिया है। वे मनुष्य

नाम-रस का आस्वादन कर तृप्त हो जाते हैं, उन्हें आत्मिक जीवन देनेवाला परमात्मा का नाम-जल मीठा लगता है। परमात्मा उन्हें अपने मन में प्यारा लगता है, परमात्मा उन पर प्रसन्न हो जाता है, उनके भीतर आत्मिक जीवन का दाता नाम-जल आकर टिक जाता है और उन्हें समस्त आनन्द प्राप्त हो जाते हैं। जगत के मालिक-प्रभु की जय-जयकार करते हुए उनके शरीर से दुख और भ्रम दूर हो जाते हैं। वे मनुष्य मोहरहित हो जाते हैं, उनके भीतर से विकार समाप्त हो जाते हैं, कामादिक शत्रुओं से उनका साथ टूट जाता है। नानक का कथन है कि जिन मनुष्यों के हृदय में मेरा हरि-प्रभु आ बसा है, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा को प्यारे लगते हैं, वही सेवक कहलाते हैं। हे भाई ! सच जान, मालिक-प्रभु सन्तों से अलग नहीं हैं ॥ १ ॥ छंतु ॥ जैसे पानी, पानी में मिलकर उस जैसा हो जाता है, वैसे ही आत्मा परमात्मा के साथ मिली रहती है। पूर्ण सर्वव्यापक कर्तार ने जिस सेवक को अपने में लीन कर लिया, उसके भीतर यह ज्ञान पैदा हो जाता है कि परमात्मा सर्वत्र स्वयं ही है, उसके हृदय में विकारों से निर्लिप्तता हो जाती है, सहजावस्था में उसकी समाधि लगी रहती है, उसके हृदय में एक परमात्मा की ही गुणस्तुति होती रहती है। उसे विश्वास हो जाता है कि परमात्मा समस्त संसार में आप ही छिपा हुआ है, फिर भी वह आप माया-मोह से रहित है। सर्वत्र व्याप्त होने के कारण वह आप ही आप को स्मरण कर रहा है। हे नानक ! उस मनुष्य के भीतर से भ्रम, भय और माया के तीन गुण नष्ट हो जाते हैं, (वह परमात्मा से इस प्रकार मिल जाता है, जैसे) पानी, पानी में मिलकर उस जैसा हो जाता है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ वडहंसु महला ५ ॥ प्रभ करण कारण समरथा राम। रखु जगतु सगल दे हथा राम। समरथ सरणा जोगु सुआमी क्रिपानिधि सुखदाता। हंउ कुरबाणी दास तेरे जिनी एकु पछाता। वरनु चिहनु न जाइ लखिआ कथन ते अकथा। बिनवंति नानक सुणहु बिनती प्रभ करण कारण समरथा ॥ १ ॥ एहि जीअ तेरे तू करता राम। प्रभ दूख दरद भ्रम हरता राम। भ्रम दूख दरद निवारि खिन महि रखि लेहु दीन दैआला। मात पिता सुआमि सजणु सभु जगतु बाल गोपाला। जो सरणि आवै गुण निधान पावै सो बहुड़ि जनमि न मरता। बिनवंति नानक दासु तेरा सभि जीअ तेरे तू करता ॥ २ ॥ आठ पहर हरि धिआईऐ राम। मन इछिअड़ा फलु पाईऐ राम। मन इछ

पाईऐ प्रभु धिआईऐ मिटहि जमके त्रासा। गोबिदु गाइआ साध संगाइआ भई पूरन आसा। तजि मानु मोहु विकार सगले प्रभू कै मनि भाईऐ। बिनवंति नानक दिनसु रैणी सदा हरि हरि धिआईऐ ॥ ३ ॥ दरि वाजहि अनहत वाजे राम। घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम। गोविद गाजे सदा बिराजे अगम अगोचरु ऊचा। गुण बेअंत किछु कहणु न जाई कोइ न सकै पहूचा। आपि उपाए आपि प्रतिपाले जीअ जंत सभि साजे। बिनवंति नानक सुखु नामि भगती दरि वजहि अनहद वाजे ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे सृष्टि के मालिक, सर्वशक्तिमान प्रभु! अपना हाथ देकर समस्त जगत की रक्षा कर। हे सर्वशक्तिमान, शरणागत की सहायता कर सकनेवाले, कृपा के भण्डार, सुखदाता! मैं तुम्हारे उन सेवकों पर बलिहारी हूँ, जिन्होंने तुम्हारे साथ मेल किया है। हे प्रभु! तुम्हारा कोई रंग, कोई निशान नहीं बताया जा सकता, तुम्हारा स्वरूप अभिव्यक्ति से परे है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, जगत के मूल, सर्वशक्तिमान परमात्मा! मेरी विनती सुन ॥ १ ॥ हे प्रभु! ये समस्त जीव तुम्हारे हैं, तुम इनके उत्पादक हो, तुम सब जीवों को दुखों, क्लेशों और भ्रमों से बचानेवाले हो। हे दीनदयालु प्रभु! तुम भ्रम, दुख, क्लेश क्षण भर में दूर करके जीवों को बचा लेते हो। हे गोपाल! तुम सबके माँ-बाप, मालिक और मित्र हो, सारी दुनिया तुम्हारे बच्चों के तुल्य है। हे प्रभु! जो जीव तुम्हारी शरण जाता है, वह गुणों के भण्डार प्राप्त कर लेता है, वह पुनः न जन्मता है, न मरता है। हे प्रभु! तुम्हारा दास नानक विनती करता है कि जगत के समस्त जीव तुम्हारे हैं और तुम सबके उत्पादक हो ॥ २ ॥ हे भाई! आठों प्रहर परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, इसके द्वारा ही मनोवांछित फल प्राप्त किया जाता है। हे भाई! परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, स्मरण करने से ही मनोकामना प्राप्त की जाती है, यमराज के समस्त भय भी समाप्त हो जाते हैं। हे भाई! जिस मनुष्य ने सत्संगति में जाकर परमात्मा की गुणस्तुति की, उसकी प्रत्येक कामना पूर्ण हो गई। हे भाई! अहंकार, मोह, समस्त विकार दूर करके जीव परमात्मा के मन में स्वीकारा जाता है। नानक विनती करता है कि हे भाई! दिन-रात्रि सदा परमात्मा का स्मरण करना चाहिए ॥ ३ ॥ हे भाई! जिसके हृदय में परमात्मा की गुणस्तुति के बाजे बजते रहते हैं, उसे परमात्मा प्रत्येक शरीर में दृष्टिगत होता है। हे भाई! परमात्मा सदा प्रत्येक शरीर में प्रतिभासित है, लेकिन उस तक पहुँच नहीं हो सकती,

उस तक मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच नहीं है, वह सर्वोच्च है। हे भाई ! परमात्मा में अनगिनत गुण हैं, उसके स्वरूप के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, कोई मनुष्य उसके गुणों की तह तक नहीं पहुँच सकता। हे भाई ! परमात्मा आप सबको पैदा करता है, आप ही पालन करता है, समस्त जीव-जन्तु उसने आप बनाए हैं। नानक विनती करता है कि परमात्मा का नाम स्मरण करने से, भक्ति करने से आनन्द प्राप्त होता है, हृदय में परमात्मा की गुणस्तुति के अनहद नाद होते रहते हैं ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु बंडहंसु महला १ घरु ५ अलाहणीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ। मुहलति पुनी पाई भरी जानीअड़ा घति चलाइआ। जानी घति चलाइआ लिखिआ आइआ रुंने वीर सबाए। कांइआ हंस थीआ वेछोड़ा जां दिन पुंने मेरी माए। जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पुरबि कमाइआ। धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥ १ ॥ साहिबु सिमरहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा। एथै धंधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा। आगै सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै। जितु सेविऐ दरगह सुखु पाईऐ नामु तिसै का लीजै। आगै हुकमु न चलै मूले सिरि सिरि किआ विहाणा। साहिबु सिमरिहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥२॥ जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो। जलि थलि महीअलि रवि रहिआ साचड़ा सिरजण हारो। साचा सिरजणहारो अलख अपारो ता का अंतु न पाइआ। आइआ तिनका सफलु भइआ है इक मनि जिनी धिआइआ। ढाहे ढाहि उसारे आपे हुकमि सवारणहारो। जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ ३ ॥ नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो। वालेवे कारणि बाबा रोईऐ रोवणु सगल बिकारो। रोवणु सगल बिकारो गाफलु संसारो माइआ कारणि रोवै। चंगा मंदा किछु सूझै नाही इहु तनु एवै खोवै। ऐथै आइआ सभु को जासी कूड़ि करहु अहंकारो। नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥ ४ ॥ १ ॥

जिस प्रभु ने जगत को माया के धन्धे में लगा रखा है, वही सृजनहार बादशाह प्रशंसनीय है। वही सत्यस्वरूप है। जब जीव को परमात्मा से मिला समय समाप्त हो जाता है, जब इसकी उम्र की प्याली भर जाती है, तो इसके प्यारे मित्र (शरीर) को पकड़कर सामने कर दिया जाता है। जब परमात्मा का हुक्म होता है, शरीर के प्यारे मित्र जीवात्मा को पकड़कर आगे कर लिया जाता है और समस्त सज्जन सम्बन्धी रोना-पीटना करते हैं। हे मेरी माँ! जब उम्र के दिन पूरे हो जाते हैं, तो शरीर और आत्मा का विछोह हो जाता है। पूर्वकाल में जीव जो कर्म करता है, तदनुसार जैसा संस्कारों का लेख लिखा जाता है, वैसा फल जीव पाता है। जिस प्रभु ने जगत को माया के धन्धे में लगाया हुआ है, वही सृजनहार बादशाह सराहना के योग्य है, वही सत्यस्वरूप है ॥ १ ॥ हे मित्रो! मालिक-प्रभु का स्मरण करो। दुनिया से प्रत्येक जीव को प्रयाण करना है, दुनिया में माया का झूठा धन्धा क्षणभंगुर है, प्रत्येक को यहाँ से अवश्य जाना है। यहाँ से अवश्य जाना है, यहाँ हम अतिथियों के तुल्य हैं, यहाँ किसी का अभिमान करना व्यर्थ है। उस परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, जिसके स्मरण से परमात्मा की सेवा में आत्मिक आनन्द मिलता है। परलोक में किसी का भी हुक्म नहीं चल सकता, वहाँ प्रत्येक जीवात्मा को अपना किया हुआ भोगना पड़ता है। हे मेरे भाइयो! मालिक-प्रभु का स्मरण करो। दुनिया में से प्रत्येक प्राणी को ही कूच करना है ॥ २ ॥ लौकिक प्राणियों का प्रयास तो एक बहाना मात्र है, होता वही है, जो उस सर्वशक्तिमान प्रभु को भला लगता है। वह सत्यस्वरूप सृजनहार पानी, पृथ्वी, आकाश सर्वत्र मौजूद है। वह प्रभु सत्यस्वरूप है, सबका पैदा करनेवाला है, अदृश्य, अनन्त है, कोई भी जीव उसके गुणों का अन्त नहीं पा सकता। जगत में जन्मना उन्हीं का सफल है, जिन्होंने उस अनन्त प्रभु को सुरति लगाकर स्मरण किया है। वह परमात्मा आप ही जगत-रचना को गिराता है, गिराकर आप ही दोबारा बना लेता है। वह अपने हुक्म अनुसार ही जीवों को सदाचारी बनाता है। जगत के जीवों का उद्यम तो एक बहाना मात्र है; होता वही कुछ है, जो उस सर्वव्यापक प्रभु को भला लगता है ॥ ३ ॥ हे भाई! उसी मनुष्य को सही रूप से वैराग्य में आया समझो, जो प्रेमपूर्वक (परमात्मा के मिलाप की खातिर) वैराग्य धारण करता है। हे भाई! लौकिक धन अथवा पदार्थ के लिए जो रोना है, वह तमाम व्यर्थ है। परमात्मा की ओर से विस्मृत जगत माया के लिए रोता है, यह तमाम रुदन व्यर्थ है। इस रुदन से मनुष्य को भले-बुरे काम की पहचान नहीं आती, (वह) इस शरीर को व्यर्थ ही नष्ट कर लेता है। हे भाई! हर जीव जो जगत में आता है, (कालान्तर) में चला जायगा, नश्वर जगत के मोह में फँसकर व्यर्थ अभिमान करते हो। नानक

का कथन है कि हे भाई ! उसी मनुष्य को वैराग्य में आया समझो, जो ईश्वर-प्रेम के फलस्वरूप वैराग्य में आता है ।। ४ ।। १ ।।

।। वडहंसु महला १ ।। आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहां । रोवह बिरहा तनका आपणा साहिबु संम्हालेहा । साहिबु सम्हालिह पंथु निहालिह असा भि ओथै जाणा । जिस का कीआ तिन ही लीआ होआ तिसै का भाणा । जो तिनि करि पाइआ सु आगै आइआ असी कि हुकमु करेहा । आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहा ।। १ ।। मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे मरि जाणै ऐसा कोइ । सेविहु साहिबु संम्रथु आपणा पंथु सुहेला आगै होइ । पंथि सुहेलै जावहु तां फलु पावहु आगै मिलै वडाई । भेटै सिउ जावहु सचि समावहु तां पति लेखै पाई । महली जाइ पावहु खसमै भावहु रंग सिउ रलीआ माणै । मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे कोई मरि जाणै ।। २ ।। मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो । सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो । दरगह माणु पावहि पति सिउ जावहि आगै दूखु न लागै । करि एकु धिआवहि तां फलु पावहि जितु सेविऐ भउ भागै । ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै जाणो । मरणु मुणसां सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो ।। ३ ।। नानक किसनो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो । कीता वेखै साहिबु आपणा कुदरति करे बीचारो । कुदरति बीचारे धारण धारे जिनि कीआ सो जाणै । आपे वेखै आपे बूझै आपे हुकमु पछाणै । जिनि किछु कीआ सोई जाणै ताका रूपु अपारो । नानक किसनो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ।। ४ ।। २ ।।

हे सहेलियो ! आओ, मिलकर बैठें और परमात्मा का सत्यस्वरूप नाम स्मरण करें। आओ, प्रभु से अपने विछोह का बार-बार दुखपूर्वक स्मरण करें और मालिक-प्रभु को याद करें। आओ, हम मालिक-प्रभु को हृदय में बसाएँ और उस मार्ग को देखें (जो प्रभु-प्राप्ति का मार्ग है)। हमें भी अन्त में परलोक जाना है (किसी की मृत्यु पर रोना व्यर्थ है)। जिस प्रभु का यह संसार पैदा किया हुआ था, उसी ने आत्मा वापस ले ली है, यह प्रभु की रज़ा अनुसार हुआ है। यहाँ जगत में जीव ने जो कुछ किया, (मरणोपरांत) उसी के सामने आ जाता है। (परमात्मा के इच्छा

के सामने) हमारा कोई वश नहीं चलता। हे सहेलियो ! आओ, मिलकर बैठें और सत्यस्वरूप प्रभु का नाम स्मरण करें ॥ १ ॥ हे लोगो ! मृत्यु को बुरा मत कहो। (मृत्यु श्रेयष्कर है यदि) कोई मनुष्य उस तरीके से मरना जानता हो। (मृत्यु से पहले) अपने सर्वशक्तिमान मालिक को स्मरण करो, ताकि जीवन-मार्ग सहज हो जाए। सहज जीवन-मार्ग पर चलोगे तो इसका फल भी मिलेगा और प्रभु की सेवा में प्रतिष्ठा भी मिलेगी। यदि प्रभु के नाम की भेंट लेकर जाओगे, तो उस सत्यस्वरूप प्रभु में एक रूप हो जाओगे, कृत कर्मों की गणना होते वक्त प्रतिष्ठा मिलेगी, प्रभु की सेवा में स्थान प्राप्त करोगे और पति-प्रभु को भले लगोगे। (प्रभु-प्रेमी जीव) प्रेम द्वारा आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है। हे लोगो ! मृत्यु को बुरा न कहो। (यह अलग बात है कि इसे वही समझता है), जो इस प्रकार मरना जानता हो ॥ २ ॥ जो मनुष्य प्रभु की (सेवा में) सत्कृत होकर मरते हैं, वे शूरवीर हैं, उनका मरना भी सराहा जाता है। प्रभु की सेवा में वही जीव शूरवीर कहलाते हैं और वही जीव सत्यस्वरूप प्रभु के दरबार में आदर पाते हैं। वे दरबार में प्रतिष्ठित होते हैं, प्रतिष्ठा के साथ यहाँ से जाते हैं और आगे परलोक में उन्हें कोई दुख नहीं होता। वे व्यक्ति परमात्मा को व्यापक जानकर स्मरण करते हैं, उस प्रभु के द्वार से फल प्राप्त करते हैं, जिसका स्मरण करने से भय दूर हो जाता है। हे भाई ! अहंकार का बोल नहीं बोलना चाहिए, स्वयं को नियन्त्रण में रखना चाहिए, वह अन्तर्यामी प्रभु हरेक के हृदय की आप ही जानता है। जो मनुष्य प्रभु की दृष्टि में सत्कृत होकर मरते हैं, वे शूरवीर हैं, उनका मरना सराहा जाता है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि हे भाई ! यह जगत एक क्रीड़ा है, किसी के मरण पर रोना व्यर्थ है। मालिक-प्रभु अपने द्वारा उत्पादित जगत की देखभाल आप करता है, अपनी रची रचना का आप ध्यान रखता है। प्रभु अपनी रची रचना का आप ध्यान रखता है, इसे आसरा देता है। जिसने जगत बनाया है, वही इसकी ज़रूरतें भी जानता है। प्रभु आप ही सबके किए कर्मों को देखता है, आप ही सबके दिलों की समझता है और आप ही अपने हुक्म को पहचानता है। जिस प्रभु ने यह जगत-रचना की है, वही इसकी ज़रूरतें भी जानता है। उस प्रभु का स्वरूप अनन्त है। नानक का कथन है कि हे भाई ! यह जगत एक क्रीड़ा है (यहाँ जन्म-मरण अनिवार्य क्रम है) यहाँ किसी के मरने पर रोना व्यर्थ है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ वडहंसु महला १ दखणी ॥ सचु सिरंदा सचा जाणीऐ सचड़ा परवदगारो। जिनि आपीनै आपु साजिआ सचड़ा अलख अपारो। दुइ पुड़ जोड़ि विछोड़िअनु गुर बिनु घोरु अंधारो। सूरजु चंदु सिरजिअनु अहिनिसि चलतु वीचारो ॥ १ ॥ सचड़ा

साहिबु सचु तू सचड़ा देहि पिआरो ।। रहाउ ।। तुधु सिरजी मेदनी दुखु सुखु देवणहारो । नारी पुरख सिरजिऐ बिखु माइआ मोहु पिआरो । खाणी बाणी तेरीआ देहि जीआ आधारो । कुदरति तखतु रचाइआ सचि निबेड़णहारो ।। २ ।। आवागवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो । जंमणु मरणा आइ गइआ बधिकु जीउ बिकारो । भूडड़ै नामु विसारिआ बूडड़ै किआ तिसु चारो । गुण छोडि बिखु लदिआ अवगुण का वणजारो ।। ३ ।। सदड़े आए तिना जानीआ हुकमि सचे करतारो । नारी पुरख विछुंनिआ विछुड़िआ मेलणहारो । रूपु न जाणै सोहणीऐ हुकमि बधी सिरिकारो । बालक बिरधि न जाणनी तोड़नि हेतु पिआरो ।। ४ ।। नउ दर ठाके हुकमि सचै हंसु गइआ गैणारे । सा धन छुटी मुठी झूठि विधणीआ मिरतकड़ा अंङनड़े बारे । सुरति मुई मरु माईए महल रुंनी दरबारे । रोवहु कंत महेलीहो सचे के गुण सारे ।। ५ ।। जलि मलि जानी नावालिआ कपड़ि पटि अंबारे । वाजे वजे सची बाणीआ पंच मुए मनु मारे । जानी विछुंनड़े मेरा मरणु भइआ ध्रिगु जीवणु संसारे । जीवतु मरै सु जाणीऐ पिर सचड़ै हेति पिआरे ।। ६ ।। तुसी रोवहु रोवण आईहो झूठि मुठी संसारे । हउ मुठड़ी धंधै धावणीआ पिरि छोडिअड़ी विधणकारे । घरि घरि कंतु महेलीआ रूड़ै हेति पिआरे । मै पिरु सचु सालाहणा हउ रहसिअड़ी नामि भतारे ।। ७ ।। गुरि मिलिऐ वेसु पलटिआ साधन सचु सीगारो । आवहु मिलहु सहेलीहो सिमरहु सिरजणहारो । बईअरि नामि सोहागणी सचु सवारणहारो । गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रहम बीचारो ।। ८ ।। ३ ।।

हे भाई ! यह निश्चय करो कि सृष्टि का उत्पादक परमात्मा ही सत्यस्वरूप है, वह सत्यस्वरूप प्रभु जीवों का पालक है, जिस सत्यस्वरूप प्रभु ने आप ही अपने आप को प्रकट किया हुआ है, वह अदृश्य है और अनन्त है। उस प्रभु ने धरती और आकाश जोड़कर अर्थात् जगत सृजना करके जीवों को माया-मोह में फँसाकर अपने से अलग कर दिया है। गुरु के बिना (यह जगत मोह का) घोर अँधेरा है। उस परमात्मा ने ही सूर्य और चन्द्र बनाए हैं, सूर्य दिन में और चन्द्रमा रात्रि में प्रकाश देता है। स्मरण रखो कि प्रभु का बनाया यह जगत तमाशा है ।। १ ।।

हे प्रभु ! तुम सदा ही स्थिर रहनेवाले मालिक हो, तुम आप ही सब जीवों को सत्यस्वरूप प्रेम की देन देते हो ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुमने ही सृष्टि पैदा की है, जीवों को दुख और सुख देनेवाले भी तुम हो । औरतें और पुरुष भी तुमने ही उत्पन्न किए हैं, माया-विष का मोह और प्रेम भी तुमने ही बनाया है । जीव उत्पत्ति की चार कोटियाँ और जीवों की बोलियाँ भी तुम्हारी बनाई हुई हैं । सब जीवों को तुम ही सहारा देते हो । हे प्रभु ! यह तमाम सृजना रूपी तख़्त तुमने ही बनाया है और अपने सत्यस्वरूप नाम में (जीवों को प्रवृत्त कर उनके कर्मों के लेख भी) तुम स्वयं ही समाप्त करनेवाले हो ॥ २ ॥ हे कर्तार ! यह जन्म-मरण का चक्र तुमने ही पैदा किया है, लेकिन तुम सत्यस्वरूप हो । (माया-मोहवश) विकारग्रस्त जीव नित्य जन्मता है, नित्य मरता है, इसे जन्म-मरण का चक्र लगा ही रहता है । विकारग्रस्त दुरात्मा जीव ने तुम्हारा नाम भुला दिया है । मोहबद्ध जीव का वश नहीं चलता । गुणों को छोड़कर विकारों का विष इस जीव ने एकत्रित कर लिया है, (जन्म लेकर) वह अवगुणों का ही व्यापार करता रहता है ॥ ३ ॥ जब सत्यस्वरूप कर्तार के हुक्म अनुसार उन प्यारों को बुलावे आते हैं, तो हमेशा साथ रहनेवाले आदमी औरतों के विछोह आते हैं । बिछुड़े हुए व्यक्तियों को परमात्मा आप ही मिलाने के योग्य है । यमराज के सिर पर भी परमात्मा के हुक्म अनुसार ही ज़िम्मेवारी सम्हाली गई है । कोई भी यमराज किसी सुन्दरी के रूप की परवाह नहीं कर सकता । वे बच्चों और वृद्धों की भी परवाह नहीं करते (वस्तुतः) यमराज सबका पारस्परिक मोह-प्रेम तोड़ देते हैं ॥ ४ ॥ जब सत्यस्वरूप परमात्मा के हुक्म अनुसार शरीर के नौ दरवाज़े बन्द हो जाते हैं (अर्थात् मृत्यु हो जाती है तो) जीवात्मा कहीं आकाश में चला जाता है । (जिस स्त्री का पति मृत्यु को प्राप्त हो जाता है), वह स्त्री अकेली रह जाती है, वह माया-मोह में लूटी जाती है, वह विधवा हो जाती है । उसके पति की मृत देह आँगन में पड़ी होती है, जिसे देख वह स्त्री देहरी पर बैठी रोती है और कहती है कि हे माँ ! इस मृत्यु को देखकर मेरी बुद्धि ठिकाने नहीं रह गई । हे प्रभु-पति की स्त्रियो ! तुम सब सत्यस्वरूप परमात्मा की गुणस्तुति हृदय में सम्हालकर वैराग्य-अवस्था में आओ (वैराग्यवृत्ति धारण करने पर ही जीवन सफल होगा) ॥ ५ ॥ सगे-सम्बन्धी मृत देह को पानी से मल-मलकर स्नान कराते हैं और रेशम आदि के कपड़े लपेटते हैं । तदन्तर दाह संस्कार के लिए 'राम-नाम सति है' के बोल शुरू हो जाते हैं । समस्त निकटवर्ती सम्बन्धी मुर्दों जैसे हो जाते हैं (पति की मृत्योपरांत स्त्री कहती है कि) जीवन-साथी की मृत्यु होने पर मैं भी मुर्दों जैसी हो गई हूँ, अब संसार में मेरे जीवन को धिक्कार है ।

जो जीव सत्यस्वरूप परमात्मा के प्रेम में टिककर जगत में लौकिक काम-काज करता हुआ ही निर्लिप्त रहता है, वह परमात्मा की सेवा में आदर पाता है ।। ६ ।। हे जीव-स्त्रियो ! जब तक संसार में तुम्हें माया-मोह ने ठगा हुआ है, तुम दुखी ही रहोगी । (यह सर्वथा सही माना जायगा कि) तुम दुखी होने के लिए ही जगत में आई हो । जब तक मैं माया के काम-धन्धे में, माया की भाग-दौड़ में ठगी जा रही हूँ, तब तक निराश्रयों वाले कामकाज के कारण पति-प्रभु ने मुझे छोड़ा हुआ है । पति-प्रभु तो हर एक जीव-स्त्री के हृदय में विद्यमान है । उसकी वास्तविक स्त्रियाँ वे ही हैं, जो उस सुन्दर प्रभु के प्रेम में लीन रहती हैं । जब तक मैं सत्यस्वरूप प्रभु-पति की गुणस्तुति करती हूँ, उस पति के नाम में लगे रहने के कारण मेरा तन-मन प्रसन्न रहता है ।। ७ ।। यदि गुरु मिल जाए तो जीव-स्त्री की काया ही पलट जाती है, जीव-स्त्री सत्यस्वरूप प्रभु के नाम को अपना श्रृंगार बना लेती है । हे सखियो ! आओ, मिलकर बैठें । मिल-जुलकर सृजनहार का स्मरण करें । जो जीव-स्त्री प्रभु के नाम में लगती है, वह सौभाग्यशालिनी हो जाती है, सत्यस्वरूप प्रभु उसके जीवन को सुन्दर बना देता है । हे नानक ! (हे जीव-स्त्रियो !) प्रभु-पति की गुणस्तुति के गीत गाओ, प्रभु के गुणों को अपने हृदय में बसाओ फिर कभी उससे विछोह नहीं होगा ।। ८ ।। ३ ।।

।। वडहंसु महला १ ।। जिनि जगु सिरजि समाइआ सो साहिबु कुदरति जाणोवा । सचड़ा दूरि न भालीऐ घटि घटि सबदु पछाणोवा । सचु सबदु पछाणहु दूरि न जाणहु जिनि एह रचना राची । नामु धिआए ता सुखु पाए बिनु नावै पिड़ काची । जिनि थापी बिधि जाणै सोई किआ को कहै वखाणो । जिनि जगु थापि वताइआ जालो सो साहिबु परवाणो ।। १ ।। बाबा आइआ है उठि चलणा अधपंधै है संसारोवा । सिरि सिरि सचड़ै लिखिआ दुखु सुखु पुरबि वीचारोवा । दुखु सुखु दीआ जेहा कीआ सो निबहै जीअ नाले । जेहे करम कराए करता दूजी कार न भाले । आपि निरालमु धंधै बाधी करि हुकमु छडावणहारो । अजु कलि करदिआ कालु बिआपै दूजै भाइ विकारो ।। २ ।। जम मारग पंथु न सुझई उझड़ु अंध गुबारोवा । ना जलु लेफ तुलाईआ ना भोजन परकारोवा । भोजन भाउ न ठंढा पाणी ना कापड़ु सीगारो । गलि संगलु सिरि मारे ऊभौ ना दीसै घर बारो । इबके राहे जंमनि नाही पछुताणे सिरि

भारो। बिनु साचे को बेली नाही साचा एहु बीचारो ॥ ३ ॥ बाबा रोवहि रवहि सुजाणीअहि मिलि रोवै गुण सारेवा। रोवै माइआ मुठड़ी धंधड़ा रोवणहारेवा। धंधा रोवै मैलु न धोवै सुपनंतरु संसारो। जिउ बाजीगरु भरमै भूलै झूठि मुठी अहंकारो। आपे मारगि पावण हारा आपे करम कमाए। नामि रते गुरि पूरै राखे नानक सहजि सुभाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

जिस परमात्मा ने जगत उत्पादित कर इसे अपने में लीन करने की शक्ति भी अपने पास रखी है, उस मालिक को इस प्रकृति में विद्यमान समझ। सत्यस्वरूप परमात्मा को इस प्रकृति से अलग कहीं प्राप्त करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। हर एक शरीर में उसी का हुक्म व्यवहृत होता हुआ समझ। जिस परमात्मा ने यह सृजना की है, उसे इससे दूर न समझो, हरेक शरीर में उसका अटल हुक्म व्यवहृत हुआ पहचानो। जब मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करता है, तब आत्मिक आनन्द महसूस करता है। (इसके विपरीत) प्रभु के नाम के बिना दुनिया विकारों के मुक़ाबले पर विजयी होने में असमर्थ हो जाती है। जिस परमात्मा ने सृष्टि रची है, वही इसकी रक्षा की विधि भी जानता है, कोई जीव उसके विपरीत कोई उपदेश नहीं कर सकता। जिस प्रभु ने जगत पैदा करके माया का जाल बिछा रखा है, वही प्रसिद्ध मालिक है ॥ १ ॥ हे भाई ! जो जीव आया है, उसे यहाँ से अवश्य जाना है। (नाम के बिना) जगत जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है। सत्यस्वरूप परमात्मा ने हर एक जीव के सिर पर उसके पूर्वकृत कर्मों के विचारानुसार दुख और सुख के लेख लिख दिए हैं। जैसा कर्म जीव ने किया, वैसा ही दुख-सुख परमात्मा ने उसे दे दिया है। प्रत्येक जीव के कृत कर्मों का समूह उसके साथ ही निभता है। कर्तार-प्रभु जैसे कर्म जीवों से कराता है, कोई भी कर्म जीव उन कर्मों से अलग नहीं कर सकता। परमात्मा आप तो निर्लिप्त है, दुनिया (अपने-अपने कर्मों के अनुसार माया के) धन्धे में बँधी पड़ी है। परमात्मा आप ही हुक्म करके छुड़ाने के समर्थ है। (जीव आलस्यवश नाम-स्मरण से कतराता रहता है कि) आज स्मरण करता हूँ, कल स्मरण करूँगा —ऐसा करते हुए ही उसे मृत्यु आ जाती है। प्रभु को भुलाकर दूसरों के मोह में फँसा जीव व्यर्थ काम करता रहता है ॥२॥ जीव मृत्यु आने पर यमराज वाला मार्ग स्वीकारता है, जो उसके लिए उजाड़ ही उजाड़ है, जहाँ इसे घोर अँधेरा दिखाई देता है। जीव को कुछ नहीं सूझता कि वह क्या करे ? मृत्यु के उपरान्त जीव को न पानी, न ओढ़ने के वस्त्र, न किसी क़िस्म का भोजन, न ठण्डा पानी, न कोई सुन्दर वस्त्र (कुछ भी नहीं मिला)। यमराज जीव के गले में मोह की जंजीर डालकर इसके सिर पर खड़े होकर

चोटें मारता है, इससे बचने के लिए इसे कोई आसरा नहीं दिखता। (जब यमराज द्वारा चोटें पड़ती हैं), उस वक्त के बोए बीज उग नहीं सकते। वह पश्चाताप करता है, किए हुए पापों का भार सिर पर पड़ा रहता है। हे भाई ! इस अटल विचार को स्मरण रखो कि सत्यस्वरूप परमात्मा के बिना दूसरा कोई साथी नहीं बनता ॥३॥ हे भाई ! जो मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं और वैराग्यवान होते हैं, वे आदर पाते हैं। जो भी जीव सत्संगति में रहकर प्रभु के गुण हृदय में टिकाता है और वैराग्यवान होता है (वह आदर पाता है), लेकिन जिस जीव-स्त्री को माया-मोह ने लूट लिया है, वह दुखी होती है। मोहबद्ध होकर धन्धा ही पीटते हैं और दुखी होते हैं। जो जीव माया से सम्बद्ध कामकाज करता हुआ दुखी रहता है और कभी अपने भीतर के मैल नहीं धोता, उसके लिए संसार एक स्वप्न ही बना रहा। जैसे बाजीगर (झूठा तमाशा दिखाकर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है, वैसे ही) झूठे मोह में ठगी हुई जीव-स्त्री दुबिधा में पड़कर कुमार्गगामी हुई रहती है। (वैसे) परमात्मा आप ही सन्मार्ग पर लगाता है और आप ही उनमें अन्तर्निहित होकर कर्म करता रहता है। हे नानक ! जो व्यक्ति परमात्मा के नाम-रंग में रँगे रहते हैं, उन्हें पूर्णगुरु ने माया से बचा लिया है, वे सहजावस्था में टिके रहते हैं और प्रभु के प्रेम में लगे रहते हैं ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ वडहंसु महला १ ॥ बाबा आइआ है उठि चलणा इहु जगु झूठु पसारोवा। सचा घरु सचड़ै सेवीऐ सचु खरा सचिआरोवा। कूड़ि लबि जां थाइ न पासी अगै लहै न ठाओ। अंतरि आउ न बैसहु कहीऐ जिउ सुंञै घरि काओ। जंमणु मरणु वडा वेछोड़ा बिनसै जगु सबाए। लबि धंधै माइआ जगतु भुलाइआ कालु खड़ा रूआए ॥ १ ॥ बाबा आवहु भाईहो गलि मिलह मिलि मिलि देह आसीसा हे। बाबा सचड़ा मेलु न चुकई प्रीतम कीआ देह असीसा हे। आसीसा देवहो भगति करेवहो मिलिआ का किआ मेलो। इकि भूले नावहु थेहहु थावहु गुरसबदी सचु खेलो। जम मारगि नही जाणा सबदि समाणा जुगि जुगि साचै वेसे। साजन सैण मिलहु संजोगी गुर मिलि खोले फासे ॥ २ ॥ बाबा नांगड़ा आइआ जग महि दुखु सुखु लेखु लिखाइआ। लिखिअड़ा साहा ना टलै जेहड़ा पुरबि कमाइआ। बहि साचै लिखिआ अंम्रितु बिखिआ जितु लाइआ तितु लागा। कामणिआरी कामण पाए बहुरंगी गलि तागा। होछी मति

भइआ मनु होछा गुड़ु सा मखी खाइआ। नामरजादु आइआ कलि भीतरि नांगो बंधि चलाइआ ॥ ३ ॥ बाबा रोवहु जे किसै रोवणा जानीअड़ा बंधि पठाइआ है। लिखिअड़ा लेखु न मेटीऐ दरि हाकारड़ा आइआ है। हाकारा आइआ जा तिसु भाइआ रुंने रोवणहारे। पुत भाई भातीजे रोवहि प्रीतम अति पिआरे। भै रोवै गुण सारि समाले को मरै न मुइआ नाले। नानक जुगि जुगि जाण सिजाणा रोवहि सचु समाले ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे भाई ! जो जीव आया है, उसको अन्त में यहाँ से कूच करना है। यह जगत है ही नाशमान, विस्तार। यदि सत्यस्वरूप परमात्मा का स्मरण करें, तो सत्यस्वरूप शाश्वत ठिकाना मिल जाता है। जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु का स्मरण करता है, वह पवित्र जीवन वाला हो जाता है और वह सत्यस्वरूप प्रभु के प्रकाश के योग्य बन जाता है। जो मनुष्य माया-मोह में अथवा माया के लालच में फँसा रहता है, वह परमात्मा के दरबार में सत्कृत नहीं होता, उसे प्रभु की सेवा में स्थान नहीं मिलता। जैसे सूने घर में कौए को (कोई भी रोटी का टुकड़ा नहीं मिलता), वैसे ही मनमुख जीव को प्रभु की सेवा में यह कोई नहीं कहता कि आइए, भीतर आ जाइए और विराजिए। उस मनुष्य को जन्म-मरण का चक्र भुगतना पड़ता है, प्रभु-चरणों से उसका लम्बा विछोह हो जाता है। (माया-मोह में फँसकर) जगत आत्मिक मृत्यु पा रहा है और सारे जीव (आत्मिक रूप से मृततुल्य हैं)। लोभवश माया के धन्धे में फँसा हुआ जगत जीवन-मार्ग से भटका रहता है। उसके सिर पर खड़ा काल उसे दुखी करता रहता है ॥ १ ॥ हे भाइयो ! आइए, हम मिलकर बैठें और मिलकर अपने साथी को आशीष दें, उसे प्रियतम-प्रभु से मिलने के लिए आशीष दें। (प्रभु से प्रार्थना करने से) उसके साथ सम्पन्न होनेवाला मिलाप कभी समाप्त नहीं होता। हे सत्संगी भाइयो ! प्रार्थना करो और परमात्मा की भक्ति करो। जो एक बार प्रभु-चरणों में जगह पा लेते हैं, उनका दोबारा बिछुड़न नहीं होता। लेकिन कितने ही जीव ऐसे हैं, जो परमात्मा के नाम से ख़ाली होकर फिरते हैं, जो शाश्वत ठिकाने से उखड़े फिरते हैं। सत्यस्वरूप प्रभु का नाम स्मरण करना सही जीवन-क्रीड़ा है, जो गुरु के ज्ञान में लगकर खेली जा सकती है। जो मनुष्य गुरु के ज्ञान में लीन रहते हैं, वे यमराज के मार्ग पर नहीं जाते। वे हमेशा के लिए उस परमात्मा में लीन रहते हैं, जिसका स्वरूप शाश्वत है। हे सत्संगियो मित्रो ! सत्संग में मिलकर बैठो। जो व्यक्ति सत्संग में आए हैं, उन्होंने गुरु को मिलकर माया-मोह के बन्धन समाप्त कर दिए हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! (पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप) जीव

दुख और सुख रूपी लेख लिखाकर जगत में नंगा ही आता है और (यहाँ आकर जीवित रहने तथा मृत्यु के बाद प्रयाण करने का समय) वह निश्चित किया हुआ समय आगे-पीछे नहीं हो सकता, (वह सुख-दुख भी अवश्य घटित होगा), जो पूर्वकृत कर्मों के परिणामस्वरूप पाया है। जीव के कर्मों के अनुसार सत्यस्वरूप परमात्मा सोच-विचारकर लिख देता है कि जीव को नये जीवन-मार्ग में नाम-अमृत का व्यापार करना है या माया रूपी ज़हर पाना है। परमात्मा जीव को जिस ओर प्रवृत्त करता है, उधर ही वह लग जाता है। जादू-टोने करनेवाली माया जीव पर जादू करती है और इसके गले में रंग-बिरंगा धागा डाल देती है। (माया के प्रभाव से) जीव की बुद्धि ओछी हो जाती है, उसका मन ओछा हो जाता है (उसका सोचने का दायरा अत्यन्त संकुचित हो जाता है)। जैसे मक्खी गुड़ खाती है और उसमें चिपटकर मर जाती है, वैसी ही स्थिति जीव की होती है। जीव जगत में नंगा ही आता है और नंगा ही बाँधकर आगे कर लिया जाता है ॥३॥ हे भाई ! (रोकर मृत्यु का बुलावा टाला नहीं जा सकता), यदि किसी को रोना ही है तो रोकर देख लो। प्यारा सम्बन्धी बाँधकर आगे कर लिया जाता है। परमात्मा का लिखा हुक्म (यहाँ से जाने के लिए किया आदेश) जीव मिटा नहीं सकता, प्रभु के द्वार से बुलावा आ जाता है (वह बुलावा अमिट है)। जब परमात्मा को उपयुक्त लगता है, तो जीव के लिए कूच का बुलावा आ जाता है, रोनेवाले सम्बन्धी रोते हैं। पुत्र, भाई, भतीजे अत्यन्त निकटवर्ती सम्बन्धी रोते हैं। जीव (सम्बन्धी की मौत के बाद होनेवाले दुखों के) भयवश रोता है और उसके गुणों को बार-बार स्मरण करता है, लेकिन कभी भी कोई जीव मृत प्राणियों के साथ मरता नहीं है (तमाम दिखावा जीवित व्यक्ति के साथ ही किया जाता है)। हे नानक ! वे व्यक्ति सदा ही बुद्धिमान हैं, जो सत्यस्वरूप प्रभु के गुण हृदय में टिकाकर माया-मोह से निर्लिप्त रहते हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥

वडहंसु महला ३ महला तीजा

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ प्रभु सचड़ा हरि सालाहीऐ कारजु सभु किछु करणै जोगु। सा धन रंड न कबहू बैसई ना कदे होवै सोगु। ना कदे होवै सोगु अनदिनु रस भोग सा धन महलि समाणी। जिनि प्रिउ जाता करम बिधाता बोले अंम्रित बाणी। गुणवंतीआ गुण सारहि अपणे कंत समालहि ना कदे लगै विजोगो। सचड़ा पिरु सालाहीऐ सभु किछु करणै जोगो ॥ १ ॥

सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए। सा धन प्रिअ कै रंगि रती विचहु आपु गवाए। विचहु आपु गवाए फिरि कालु न खाए गुरमुखि एको जाता। कामणि इछ पुंनी अंतरि भिनी मिलिआ जगजीवनु दाता। सबद रंगि राती जोबनि माती पिरकै अंकि समाए। सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥ २ ॥ जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए। आपु छोडि सेवा करी पिरु सचड़ा मिलै सहजि सुभाए। पिरु सचा मिलै आए साचु कमाए साचि सबदि धन राती। कदे न रांड सदा सोहागणि अंतरि सहज समाधी। पिरु रहिआ भरपूरे वेखु हदूरे रंगु माणे सहजि सुभाए। जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ ३ ॥ पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए। सतिगुरु सदा दइआलु है अवगुण सबदि जलाए। अउगुण सबदि जलाए दूजा भाउ गवाए सचे ही सचि राती। सचै सबदि सदा सुखु पाइआ हउमै गई भराती। पिरु निरमाइलु सदा सुखदाता नानक सबदि मिलाए। पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ ४ ॥ १ ॥

हे भाई! सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति करनी चाहिए, वह सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला है। हे भाई! जिस जीव-स्त्री ने सृजनहार प्रियतम-प्रभु के साथ मेल कर लिया, जो जीव-स्त्री उस प्रभु की आत्मिक जीवन देनेवाली वाणी उच्चरित करती है, वह जीव-स्त्री कभी पतिहीना नहीं होती, न ही उसे कोई चिन्ता होती है, उसे कभी कोई दुख नहीं होता, वह प्रतिपल परमात्मा का नाम-रस महसूस करती है और सदा प्रभु के चरणों में लीन रहती है। हे भाई! गुणसम्पन्न जीव-स्त्रियाँ परमात्मा के गुण स्मरण करती रहती हैं, प्रभु-पति को अपने हृदय में टिकाए रखती हैं, उनका परमात्मा से कभी विछोह नहीं होता। हे भाई! उस सत्यस्वरूप प्रभु-पति की गुणस्तुति करनी चाहिए, वह प्रभु सब कुछ करने की सामर्थ्य रखता है ॥ १ ॥ हे भाई! गुरु के ज्ञान में लगकर सत्यस्वरूप मालिक-प्रभु के साथ ऐक्य हो सकता है, प्रभु स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है। हे भाई! जो जीव-स्त्री अपने भीतर से अहंत्वभाव दूर कर लेती है, वह प्रभु-पति के प्रेम-रंग में रँगी रहती है। जो जीव-स्त्री अपने भीतर से अहंत्वभाव गवाँती है, उसे दोबारा आत्मिक मृत्यु प्राप्त नहीं होती। गुरु की शरण लेकर वह जीव-स्त्री एक परमात्मा के साथ मेल बनाए रखती

है, उस जीव-स्त्री की इच्छा पूर्ण हो जाती है, वह भीतर से नाम-रस से भीग जाती है और उसे जगत का जीवन-दाता प्रभु मिल जाता है। हे भाई ! जो जीव-स्त्री गुरु के ज्ञान के रंग में रँगी जाती है, वह नाम के चढ़ते हुए यौवन में मस्त रहती है, वह प्रभु-पति की गोद में लीन रहती है। हे भाई ! गुरु के ज्ञान के द्वारा ही सत्यस्वरूप मालिक-प्रभु के साथ जान-पहचान बनती है। प्रभु स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है ॥ २ ॥ हे सहेली ! जिन सन्तों ने अपने पति-प्रभु के साथ एकत्व प्राप्त कर लिया है, मैं जाकर उन्हें पूछती हूँ। अहंत्वभाव त्यागकर मैं उनकी सेवा करती हूँ। हे सखी ! सत्यस्वरूप प्रभु-पति सहजावस्था में टिकने पर, प्रेम द्वारा मिलता है। सत्यस्वरूप प्रभु आकर उस जीव-स्त्री को मिलता है, जो सत्यस्वरूप हरिनाम-स्मरण की साधना करती है, जो सत्यस्वरूप हरि-नाम में लगी रहती है और गुरु के ज्ञान में रँगी रहती है। हे सहेली ! प्रभु-पति सर्वत्र मौजूद है, उसे तू अपने साथ-साथ बसता हुआ समझ और सहजावस्था में टिककर, प्रेममय होकर उसके मिलन का आनन्द महसूस कर। हे सहेली ! जिन सन्तजनों ने पति-प्रभु के साथ मेल कर लिया है, मैं जाकर उन्हें पूछती हूँ (कि प्रभु के साथ मिलाप कैसे हो सकता है ?) ॥३॥ हे सहेली ! हम जीव-स्त्रियाँ प्रभु से वियुक्त होकर भी उसे मिल सकती हैं, यदि हम सच्चे सतिगुरु के चरणों में जगह पाएँ। गुरु सदा दयालु है, वह जीवों के अवगुण अपने ज्ञान में प्रवृत्त कर जला देता है। (वह) अवगुण शब्द (ज्ञान) के माध्यम से जला देता है, माया का प्रेम दूर कर देता है। (तदन्तर) जीव-स्त्री सत्यस्वरूप परमात्मा की स्मृति में अनुरक्त रहती है। सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति के ज्ञान में लगकर वह सदा आनन्द महसूस करती है, उसकी अहंभावना, उसकी दुबिधा दूर हो जाती है। हे नानक ! प्रभु-पति पवित्र करनेवाला है, सदा सुख देनेवाला है। (गुरु) अपने ज्ञान के द्वारा उससे मिला देता है। हे सहेली ! हम जीव-स्त्रियाँ प्रभु-पति से वियुक्त होकर भी उसे मिल सकती हैं, यदि हम सच्चे सतिगुरु के चरणों में जगह पाएँ ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारि। अवगणवंती पिरु न जाणई मुठी रोवै कंत विसारि। रोवै कंत संमालि सदा गुण सारि ना पिरु मरै न जाए। गुरमुखि जाता सबदि पछाता साचै प्रेमि समाए। जिनि अपणा पिरु नही जाता करम बिधाता कूड़ि मुठी कूड़िआरे। सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारे ॥ १ ॥ सभु जगु आपि उपाइओनु आवण जाणु संसारा। माइआ मोहु

खुआइअनु मरि जंमै वारो वारा । मरि जंमै वारो वारा वधहि बिकारा गिआन विहूणी मूठी । बिनु सबदै पिरु न पाइओ जनमु गवाइओ रोवै अवगुणिआरी झूठी । पिरु जगजीवनु किसनो रोईऐ रोवै कंतु विसारे । सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारे ॥ २ ॥ सो पिरु सचा सद ही साचा है ना ओहु मरै न जाए । भूली फिरै धन इआणीआ रंड बैठी दूजै भाए । रंड बैठी दूजै भाए माइआ मोहि दुखु पाए आव घटै तनु छीजै । जो किछु आइआ सभु किछु जासी दुखु लागा भाइ दूजै । जम कालु न सूझै माइआ जगु लूझै लबि लोभि चितु लाए । सो पिरु साचा सद ही साचा ना ओहु मरै न जाए ॥ ३ ॥ इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी ना जाणै पिरु नाले । गुरपरसादी साचा पिरु मिलै अंतरि सदा समाले । पिरु अंतरि समाले सदा है नाले मनमुखि जाता दूरे । इहु तनु रुलै रुलाइआ कामि न आइआ जिनि खसमु न जाता हदूरे । नानक सा धन मिलै मिलाई पिरु अंतरि सदा समाले । इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी न जाणै पिरु है नाले ॥ ४ ॥ २ ॥

हे प्रभु-पति की जीव-स्त्रियो ! मेरी यह बात सुनना कि गुरु के ज्ञान के द्वारा प्रभु के गुणों का चिन्तन करके प्रभु-पति की सेवा-भक्ति किया करो । जो जीव-स्त्री प्रभु-पति के साथ तादात्म्य नहीं करती, वह अवगुणों से भरी रहती है, प्रभु-पति को विस्मृत कर वह आत्मिक जीवन लुटा बैठती है और दुखी होती है । लेकिन जो जीव-स्त्री पति को हृदय में टिकाकर प्रभु के गुण स्मरण करते हुए प्रार्थना करती रहती है, उसका पति-प्रभु कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता, उसे कभी परित्याग करके नहीं जाता । जो जीव-स्त्री गुरु की शरणागत हो प्रभु के साथ तादात्म्य पैदा करती है, गुरु के ज्ञान द्वारा उस प्रभु के साथ परिचय करती है, वह सत्यस्वरूप प्रभु के प्रेम में लीन रहती है । जिस जीव-स्त्री ने अपने उस पति-प्रभु के साथ तादात्म्य पैदा नहीं किया, जो सब जीवों का कर्मानुसार उत्पादक है, उस झूठ की बनजारिन को माया-मोह ठगे रखता है । हे प्रभु-पति की जीव-स्त्रियो ! मेरी यह बात सुनना कि गुरु के ज्ञान के द्वारा प्रभु के गुणों का विचार करके प्रभु की सेवा-भक्ति करो ॥ १ ॥ हे भाई ! समस्त जगत और जगत का जन्म-मरण परमात्मा ने स्वयं बनाया है । माया का मोह उपजाकर स्वयं ही जगत को विस्मृत (भी) किया हुआ है । इसलिए जगत बार-बार जन्मता-मरता रहता है । जीव (विकारग्रस्त होकर)

बार-बार जन्मता-मरता रहता है और इस प्रकार विकार बढ़ते रहते हैं। आत्मिक जीवन की सूझ के बिना दुनिया आत्मिक जीवन की राशि-पूँजी लुटा बैठती है। गुरु के शब्द के बिना जीव-स्त्री प्रभु-पति का मिलाप प्राप्त नहीं कर सकती। अपना जन्म व्यर्थ गवाँ लेती है। अवगुणों से भरी हुई और मिथ्या मोह में डूबी हुई दुखी होती रहती है। लेकिन, हे भाई! प्रभु आप ही जगत का जीवन है, किसी की आत्मिक रूप से मृत्यु पर रोना भी किसलिए? जीव-स्त्री प्रभु-पति को भुलाकर दुखी होती रहती है। समस्त जगत को प्रभु ने स्वयं उत्पादित किया है और जगत का जन्म-मरण प्रभु ने आप बनाया है ॥ २ ॥ हे भाई! वह प्रभु-पति सदा जीता है, सदा ही जीता है, वह न जन्मता है न मरता है। मूर्ख जीव-स्त्री उससे ख़ाली फिरती है, माया-मोह में फँसकर प्रभु से वियुक्त रहती है। दूसरे आकर्षणों में कारण प्रभु से वियुक्त रहती है, माया-मोह में फँसकर दुख सहती है। इस मोह में ही इस की उम्र बीतती जाती है और देह कमज़ोर होता जाता है। जो कुछ यहाँ जन्मा है, वह सब कुछ नष्ट हो जाता है, लेकिन माया-मोह के कारण दुख होता है। जगत सदा माया के लिए लड़ता-झगड़ता है, इसे मृत्यु स्मरण नहीं रहती, मिथ्या मोह में आबद्ध रहता है। हे भाई! वह प्रभु-पति सदा जीता है, सदा ही जीता है, वह न मरता है न जन्मता है ॥ ३ ॥ कितनी ही जीव-स्त्रियाँ ऐसी हैं, जो प्रभु-पति से बिछुड़कर दुखी रहती हैं। माया-मोह में अन्धी हुई जीव-स्त्री यह नहीं समझती कि प्रभु-पति हमेशा साथ रहता है। गुरु की कृपा से जो जीव-स्त्री प्रभु-पति को सदा अपने हृदय में टिकाए रखती है, उसे सदा जीता-जागता प्रभु मिल जाता है। वह जीव-स्त्री सदा प्रभु-पति को अपने हृदय में टिकाए रखती है, उसे वह प्रभु सदा साथ-साथ दृष्टिगत होता है। लेकिन स्वेच्छाचारिणी जीव-स्त्री प्रभु को दूर समझती है। हे भाई! जिस-जिस जीव-स्त्री ने प्रभु-पति को साथ-साथ रहता हुआ न समझा, उसका यह शरीर विकारों में विकृत रहता है और किसी काम नहीं आता। हे नानक! जो जीव-स्त्री प्रभु-पति को सदा अपने हृदय में टिकाए रखती है, वह गुरु द्वारा मिलाए जाने पर प्रभु को मिल पड़ती है, कितनी ही जीव-स्त्रियाँ ऐसी हैं, जो प्रभु-पति से वियुक्त होकर दुख पाती हैं। माया-मोह में अन्धी जीव-स्त्री यह नहीं समझती कि प्रभु-पति प्रतिपल साथ रहता है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ वडहंसु म० ३ ॥ रोवहि पिरहि विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले। जिनी चलणु सही जाणिआ सतिगुरु सेवहि नामु समाले। सदा नामु समाले सतिगुरु है नाले सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ। सबदे कालु मारि सचु उरिधारि फिरि

आवण जाणु न होइआ। सचा साहिबु सची नाई वेखै नदरि निहाले। रोवहि पिरहु विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ १ ॥ प्रभु मेरा साहिबु सभदू ऊचा है किव मिलां प्रीतम पिआरे। सतिगुरि मेली तां सहजि मिली पिरु राखिआ उरधारे। सदा उरधारे नेहु नालि पिआरे सतिगुर ते पिरु दिसै। माइआ मोह का कचा चोला तितु पैधै पगु खिसै। पिर रंगि राता सो सचा चोला तितु पैधै तिखा निवारे। प्रभु मेरा साहिबु सभदू ऊचा है किउ मिला प्रीतम पिआरे ॥ २ ॥ मै प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे। मै सदा रावे पिरु आपणा सचड़ै सबदि वीचारे। सचै सबदि वीचारे रंगि राती नारे मिलि सतिगुर प्रीतमु पाइआ। अंतरि रंगि राती सहजे माती गइआ दुसमनु दूखु सबाइआ। अपने गुर कंउ तनु मनु दीजै तां मनु भीजै त्रिसना दूख निवारे। मै पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ ३ ॥ सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो। आपि मिलाए आपि मिलै आपे देइ पिआरो। आपे देइ पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु सवारे। धनु जग महि आइआ आपु गवाइआ दरि साचै सचिआरो। गिआनि रतनि घटि चानणु होआ नानक नाम पिआरो। सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ ४ ॥ ३ ॥

प्रभु-पति से वियुक्त जीव-स्त्रियाँ सदा दुखी होती रहती हैं। (वे नहीं जानतीं कि) प्रभु-पति सदा जीता-जागता है और सदा साथ रहता है। हे भाई! जिन जीवों ने जगत से जाने को सही मान लिया है, वे परमात्मा का नाम हृदय में बसाकर गुरु की बतलाई सेवा करते हैं। जो मनुष्य प्रभु के नाम को हृदय में टिकाए रखता है, गुरु उसके साथ-साथ बसता है, वह गुरु की बतलाई सेवा करके सुख पाता है। गुरु के ज्ञान के प्रभाव से मृत्यु के भय को मिटाकर वह मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु को हृदय में टिकाता है, जन्म-मरण का चक्र उसे नहीं भोगना पड़ता। हे भाई! मालिक-प्रभु सदा सत्यस्वरूप है, उसकी महानता सदा सत्यस्वरूप है, वह कृपादृष्टि करके सब जीवों की सँभाल करता है। लेकिन प्रभु-पति से वियुक्त जीव-स्त्रियाँ हमेशा दुखी रहती हैं। (वे यह नहीं पहचानतीं कि) प्रभु-पति सदा जीता-जागता है और हमेशा साथ-साथ रहता है॥ १॥ हे भाई! मेरा मालिक-प्रभु सर्वोच्च है, (लेकिन मैं नीच) उस प्यारे प्रियतम को कैसे मिल

सकती हूँ ? जब गुरु ने (जीव-स्त्री को प्रभु-पति में) मिलाया, तो वह सहजावस्था में टिककर प्रभु के साथ मिल गई। उस जीव-स्त्री ने प्रभु-पति को अपने हृदय में बसा लिया। वह जीव-स्त्री सदा प्रभु को अपने हृदय में बसाए रखती है, वह सदा प्यारे प्रभु के साथ प्रेम बनाए रखती है। गुरु के द्वारा ही प्रभु-पति का दर्शन होता है। माया का मोह, मानो, कच्चे रंग वाला चोला है; यदि यह चोला पहने रखें, तो मनुष्य के चरण विचलित ही रहते हैं। प्रभु-पति के प्रेम-रंग में रँगा हुआ चोला पक्के रंग वाला है। यदि यह चोला पहनें तो (प्रभु-प्रेम) तृष्णा दूर कर देता है। हे भाई ! मेरा मालिक-प्रभु सर्वोच्च है, (लेकिन मैं नीच जीव-स्त्री) उस प्रियतम-प्रभु को कैसे मिल सकती हूँ ? ॥ २ ॥ (गुरु-कृपा द्वारा) मैंने सत्यस्वरूप परमात्मा के साथ तादात्म्य कर लिया। जिसे गुरु का मिलाप न हो सका, वह अवगुणों में फँसी रही और प्रभु-चरणों से अलग रही। गुरु के ज्ञान के द्वारा सत्यस्वरूप परमात्मा के गुणों का विचार करके मेरा प्रभु-पति मुझे अपने चरणों में जगह दे देता है। जो जीव-स्त्री गुरु के उपदेश द्वारा सत्यस्वरूप प्रभु के गुणों को अपने मन में टिकाती है, वह प्रभु के प्रेम-रंग में रँगी रहती है। गुरु को पाकर वह प्रियतम-प्रभु को प्राप्त कर लेती है, वह अपने अन्तर्मन में परमात्म-प्रेम में रँगी रहती है, वह सदा सहजावस्था में मस्त रहती है, उसका हर एक वैरी तथा दुख समाप्त हो जाता है। हे भाई ! यह तन, मन गुरु के अर्पण कर देना चाहिए, (ऐसा करने पर) मन हरि-नाम के रस से भीग जाता है। गुरु (उसके भीतर से) तृष्णा आदि दुख दूर कर देता है। गुरु-कृपा द्वारा मैंने सत्यस्वरूप परमात्मा से तादात्म्य कर लिया। जिसे गुरु का मिलाप न हुआ, वह अवगुणों में फँसी रही और प्रभु-चरणों से अलग रही ॥ ३ ॥ हे भाई ! सत्यस्वरूप परमात्मा ने स्वयं यह जगत पैदा किया है, लेकिन गुरु का शरणागत हुए बिना जीव के लिए यह घोर अन्धकार है। (गुरु से भेंट कराकर) परमात्मा आप ही जीव को अपने साथ मिलाता है, आप ही मिलता है, आप ही उसे प्रेम प्रदान करता है। प्रभु आप ही अपना प्रेम देता है, जीव को सहजावस्था में टिकाकर अपने नाम का व्यापार कराता है और गुरु की शरण लेकर जीव सवाँरता है। जो मनुष्य अपने भीतर से अहंत्वभाव दूर करता है, उसका जगत में आना सफल हो जाता है। हे नानक ! ज्ञान-रत्न के प्रभाव से उसके हृदय में प्रकाश हो जाता है। हे भाई ! सत्यस्वरूप परमात्मा ने आप जगत उत्पादित किया है, लेकिन गुरु का शरणागत हुए बिना घोर अँधेरा रहता है ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ वडहंसु महला ३ ॥ इहु सरीरु जजरी है इसनो जरु पहुचै आए। गुरि राखे से उबरे होरु मरि जंमै आवै जाए।

होरि मरि जंमहि आवहि जावहि अंति गए पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई । ऐथै कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति खोई । जमपुरि घोर अंधारु महा गुबारु ना तिथै भैण न भाई । इहु सरीरु जजरी है इसनो जरु पहुचै आई ॥ १ ॥ काइआ कंचनु तां थीऐ जां सतिगुरु लए मिलाए । भ्रमु माइआ विचहु कटीऐ सचड़ै नामि समाए । सचै नामि समाए हरि गुण गाए मिलि प्रीतम सुखु पाए । सदा अनंदि रहै दिनु राती विचहु हंउमै जाए । जिनी पुरखी हरि नामि चितु लाइआ तिन कै हंउ लागउ पाए । कांइआ कंचनु तां थीऐ जा सतिगुरु लए मिलाए ॥ २ ॥ सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए । बिनु सतिगुर भरमि भुलाणीआ किआ मुहु देसनि आगै जाए । किआ देनि मुहु जाए अवगुणि पछुताए दुखो दुखु कमाए । नामि रतीआ से रंगि चलूला पिर कै अंकि समाए । तिसु जेवडु अवरु न सूझई किसु आगै कहीऐ जाए । सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ ३ ॥ जिनी सचड़ा सचु सलाहिआ हंउ तिन लागउ पाए । से जन सचे निरमले तिन मिलिआ मलु सभ जाए । तिन मिलिआ मलु सभ जाए सचै सरि नाए सचै सहजि सुभाए । नामु निरंजनु अगमु अगोचरु सतिगुरि दीआ बुझाए । अनदिनु भगति करहि रंगि राते नानक सचि समाए । जिनी सचड़ा सचु धिआइआ हंउ तिनकै लागउ पाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे भाई ! यह शरीर पुराना हो जाता है, इसे बुढ़ापा आ दबाता है, (लेकिन मनुष्य मोह से मुक्त नहीं हो पाता) ; जिन मनुष्यों की गुरु ने रक्षा की, वे (मोहग्रस्त होने से) बच जाते हैं । जो मनुष्य गुरु की शरण में नहीं आता, वह मरता है जन्मता है, जन्मता है मरता है । गुरु का शरणागत न होनेवाले मनुष्य बार-बार जन्मते रहते हैं, वे अन्तिम समय पश्चाताप करते हुए जाते हैं, परमात्मा का नाम स्मरण किए बिना उन्हें सुख नहीं मिलता । हे भाई ! इस लोक में मनुष्य जो कमाई कमाता है, वही फल भोगता है । स्वेच्छाचारी मनुष्य अपनी प्रतिष्ठा गवाँ लेता है । यमलोक में भी इसके लिए घोर अँधेरा ही बना रहता है । उस लोक में बहन, भाई कोई भी सहायता नहीं कर सकता । हे भाई ! यह शरीर पुराना हो जानेवाला है, इसे बुढ़ापा आ जाता है (लेकिन मनुष्य मोह-मुक्त नहीं हो पाता) ॥ १ ॥ हे भाई ! यह शरीर उस समय सोने-सा पवित्र होता है, जब गुरु परमात्मा के चरणों में मनुष्य को जगह दिला देता है ।

तब मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा के नाम में लीन हो जाता है और इसके भीतर माया के प्रति उभरनेवाली दुबिधा दूर हो जाती है। मनुष्य परमात्मा के नाम में लीन हो जाता है, परमात्मा के गुण गाता रहता है, प्रभु-प्रियतम को पाकर आनन्द अनुभूत करता है। इस आनन्द में वह दिन-रात सदा टिका रहता है और इसके भीतर से अहंत्वभावना दूर हो जाती है। हे भाई ! जिन मनुष्यों ने परमात्मा के नाम में मन लगाया हुआ है, मैं उनके चरण छूता हूँ। यह शरीर तब सोने के तुल्य पवित्र हो जाता है, जब गुरु मनुष्य को परमात्मा के चरणों में जगह दिला देता है ॥२॥ हे भाई ! उस सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति तब ही की जा सकती है, यदि गुरु सुबुद्धि प्रदान करे। गुरु का शरणागत हुए बिना जीव-स्त्रियाँ दुबिधाग्रस्त होकर कुमार्गगामी हो जाती हैं और परलोक में जाकर लज्जित होती हैं। परलोक में जाकर वे मुँह नहीं दिखा सकतीं। हे भाई ! जो जीव-स्त्री अवगुणों में फँस जाती है, वह आखिर में पछताती है और सदा दुख ही दुख पाती रहती है। परमात्मा के नाम में अनुरक्त जीव-स्त्रियाँ परमात्मा के चरणों में लीन होकर गहरे प्रेम-रंग में रँगी रहती हैं। हे भाई ! उस परमात्मा के बराबर का कोई दूसरा नहीं दिखता, किसी दूसरे के समक्ष कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन उस सत्यस्वरूप परमात्मा की गुणस्तुति तब ही की जा सकती है, यदि गुरु की कृपा से बुद्धि मिले ॥ ३ ॥ जिन्होंने सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति की, मैं उनके चरण छूता हूँ। वे मनुष्य स्थिरचित्त हो जाते हैं, पवित्र हो जाते हैं (और) उनके दर्शन करने से सारा मैल उतर जाता है। जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु के नाम-सरोवर में स्नान करता है, वह सत्यस्वरूप हरि में लीन हो जाता है; सहजावस्था में टिक जाता है और प्रेम-रंग में मस्त रहता है। हे भाई ! परमात्मा का नाम माया की कालिख से अलग है, लेकिन परमात्मा अपहुँच है, ज्ञानेन्द्रियों की उस तक पहुँच नहीं। जिन्हें गुरु ने ज्ञान दिया, वे सत्यस्वरूप प्रभु में लीन होकर प्रतिपल नाम-रंग में रँगे हुए प्रभु की भक्ति करते रहते हैं। हे भाई ! जिन्होंने सत्यस्वरूप परमात्मा की गुणस्तुति करने का प्रयास किया, मैं उनके चरण छूता हूँ ॥ ४ ॥ ४ ॥

वडहंस की वार महला ४

ललां बहलीमा की धुनि गावणी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक म० ३ ॥ सबदि रते वडहंस है सचु नामु उरिधारि। सचु संग्रहहि सद सचि रहहि

सचै नामि पिआरि। सदा निरमल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि। नानक हउ तिनकै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ।। १ ।। म० ३ ।। मै जानिआ वडहंसु है ता मै कीआ संगु। जे जाणा बगु बपुड़ा त जनमि न देदी अंगु ।। २ ।। ।। म० ३ ।। हंसा वेखि तरंदिआ बगां भि आया चाउ। डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ।। ३ ।। पउड़ी ।। तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ। तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ। तू करण कारण समरथु है तू करहि सु थीआ। तू अणमंगिआ दानु देवणा सभनाहा जीआ। सभि आखहु सतिगुरु वाहु वाहु जिनि दानु हरि नामु मुखि दीआ ।। १ ।।

।। सलोक महला ३ ।। जो मनुष्य सच्चे नाम को हृदय में पिरोकर सतिगुरु के ज्ञान में अनुरक्त रहते हैं, वे बड़े ही विवेकी हैं। वे सदा सच्चा नाम एकत्रित करते हैं और सच्चे नाम में प्रेम के कारण सत्य में ही लीन रहते हैं; कर्तार ने उन पर कृपा की हुई है, वे सदा पवित्र हैं, उन्हें (विकारों का) मैल नहीं लगता। नानक का कथन है कि जो मनुष्य प्रतिपल प्रभु को स्मरण करते हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ ।। १ ।। ।। म० ३ ।। मैं समझी थी कि यह कोई महान सन्त है, इसलिए मैंने इसका साथ किया था। यदि मुझे पता होता कि यह पाखण्डी मनुष्य है, तो मैं शुरू से ही इसके पास न बैठती ।। २ ।। म० ३ ।। हंसों को तैरते हुए देखकर बगुलों को चाव चढ़ा, लेकिन बगुले बेचारे सिर के बल होकर डूबकर मर गए ।। ३ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु ! संसार का आदि तुमने आप ही बनाया, (सृष्टि से पूर्व भी) तुम आप ही हो, तुम आप ही हो; तुम्हारा कोई विशेष स्वरूप नहीं है, तुम अप्रतिम हो। सृष्टि की उत्पत्ति करने में तुम ही समर्थ हो, जो कुछ तुम करते हो वही होता है, तुम ही समस्त जीवों को बिना माँगे देन दे रहे हो। हे भाई ! सब कहो— सतिगुरु धन्य है, जिसने प्रभु की नाम रूपी देन हमारे मुँह में डाली है ।। १ ।।

।। सलोकु म० ३ ।। भै विचि सभु आकारु है निरभउ हरि जीउ सोइ। सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै तिथै भउ कदे न होइ। दुसमनु दुखु तिस नो नेड़ि न आवै पोहि न सकै कोइ। गुरमुखि मनि वीचारिआ जो तिसु भावै सु होइ। नानक आपे ही पति रखसी कारज सवारे सोइ ।। १ ।। म० ३ ।। इकि सजण चले इकि चलि गए रहदे भी फुनि जाहि। जिनी सतिगुरु न

सेविओ से आइ गए पछुताहि । नानक सचि रते से न विछुड़हि सतिगुरु सेवि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसु मिलीऐ सतिगुर सजणै जिसु अंतरि हरि गुणकारी । तिसु मिलीऐ सतिगुर प्रीतमै जिनि हंउमै विचहु मारी । सो सतिगुरु पूरा धनु धंनु है जिनि हरि उपदेसु दे सभ स्रिस्टि सवारी । नित जपिअहु संतहु रामनामु भउजल बिखु तारी । गुरि पूरै हरि उपदेसिआ गुर विटड़िअहु हंउ सद वारी ॥ २ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जगत का सारा आकार भय के अधीन है, एक वह परमात्मा ही भय से रहित है । यदि गुरु के बतलाए हुए मार्ग पर चलें तो प्रभु मन में आ बसता है, फिर उस मन में कभी भय नहीं होता, कोई वैरी उसके निकट नहीं जाता, कोई दुख उसे स्पर्श नहीं कर सकता । हे नानक ! गुरमुखों के मन में यह बात पैदा होती है कि जो कुछ प्रभु को अच्छा लगता है, वही घटित होता है; हमारी लाज वह आप ही रखेगा और हमारे काम वह आप ही सवाँरता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ कुछ सज्जन जाने को तैयार हैं, कुछ जा रहे हैं और शेष चले जाएँगे । लेकिन जिन मनुष्यों ने गुरु द्वारा बतलाई सेवा नहीं की, वे जगत में आकर यहाँ से पछताते चले जाते हैं । हे नानक ! जो मनुष्य सच्चे नाम में रँगे हुए हैं, वे परमात्मा से अलग नहीं होते, वे गुरु द्वारा बतलाई सेवा करके प्रभु में अनुरक्त रहते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ उस प्यारे गुरु को मिलना चाहिए, जिसके हृदय में गुणों का स्रोत परमात्मा बस रहा है; उस प्रियतम सतिगुरु का शरणागत होना चाहिए, जिसने अपने भीतर से अहंकार दूर कर लिया है । 'हे सन्तजनो ! संसार-समुद्र के विष से पार करानेवाला हरि-नाम जपो' —प्रभु के स्मरण की यह शिक्षा देकर जिस सतिगुरु ने सारी सृष्टि को सुन्दर बना दिया है, वह सतिगुरु धन्य है, वह गुरु धन्य है । मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी हूँ, पूर्णसतिगुरु ने मुझे परमात्मा निकट दिखा दिया है ॥ २ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर की सेवा चाकरी सुखी हूं सुख सारु । ऐथै मिलनि वडिआईआ दरगह मोख दुआरु । सची कार कमावणी सचु पैनणु सचु नामु अधारु । सची संगति सचि मिलै सचै नाइ पिआरु । सचै सबदि हरखु सदा दरि सचै सचिआरु । नानक सतिगुर की सेवा सो करै जिसनो नदरि करै करतारु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ होर विडाणी चाकरी ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु । अंम्रितु छोडि बिखु लगे बिखु खटणा बिखु रासि ।

बिखु खाणा बिखु पैनणा बिखु के मुखि गिरास। ऐथै दुखो दुखु कमावणा मुइआ नरकि निवासु। मनमुख मुहि मैलै सबदु न जाणनी काम करोधि विणासु। सतिगुर का भउ छोडिआ मनहठि कंमु न आवै रासि। जमपुरि बधे मारीअहि को न सुणे अरदासि। नानक पूरबि लिखिआ कमावणा गुरमुखि नामि निवासु॥ २॥ पउड़ी॥ सो सतिगुरु सेविहु साध जनु जिनि हरि हरि नामु द्रिड़ाइआ। सो सतिगुरु पूजहु दिनसु राति जिनि जगंनाथु जगदीसु जपाइआ। सो सतिगुरु देखहु इक निमख निमख जिनि हरि का हरि पंथु बताइआ। तिसु सतिगुर की सभ पगी पवहु जिनि मोह अंधेरु चुकाइआ। सो सतगुरु कहहु सभि धंनु धंनु जिनि हरि भगति भंडार लहाइआ॥ ३॥

॥ सलोकु महला ३॥ गुरु द्वारा बतलाई सेवा करना सर्वोत्तम सुख का सार है, उससे जगत में सत्कार मिलता है और प्रभु की सेवा में मोक्ष का द्वार। यही सच्ची कमाई कमानी चाहिए, इससे मनुष्य को सच्चा नाम रूपी पोशाक मिल जाती है, सच्चा नाम रूपी आसरा मिल जाता है, सच्ची सुरति मिल जाती है, सच्चे नाम में लगाव हो जाता है और सच्चे प्रभु में समाई हो जाती है। सच्चे शब्द के प्रभाव से हमेशा खुशी बनी रहती है और प्रभु की सेवा में मनुष्य मुक्त हो जाता है। लेकिन, हे नानक! सतिगुरु की बतलाई सेवा वही मनुष्य करता है, जिस पर प्रभु स्वयं कृपा-दृष्टि करता है॥ १॥ म० ३॥ प्रभु-भक्ति के अतिरिक्त अन्य दूसरी कमाई पर जीना तथा निर्भर करना धिक्कार योग्य है। (क्योंकि) ऐसा करनेवाले मनुष्य अमृत छोड़कर माया रूपी विष एकत्रित करने में लगे हैं, विष ही उनकी उपलब्धि है, विष ही उनकी पूँजी है, विष ही उनका भोजन है और विष के ग्रास ही वे मनुष्य मुँह में डाल रहे हैं। ऐसे मनुष्य जगत में निरा दुख ही भोगते हैं और मरणोपरांत भी उनका वास नरक में ही होता है। मुँह से मैले होने के कारण, स्वेच्छाचारी मनुष्य गुरु के शब्द को नहीं पहचानते, काम-क्रोध आदि में ही उनकी मृत्यु हो जाती है। सतिगुरु का सम्मान त्यागकर, स्वेच्छाचरण द्वारा किया हुआ उनका कार्य सफल नहीं होता। मनमुख मनुष्य यमपुरी में बँधे मार खाते हैं, कोई उनकी पुकार नहीं सुनता (अर्थात् कोई उनकी सहायता नहीं करता)। लेकिन, हे नानक! सृष्टि के आदि से ही पूर्वकृत कर्मों के अनुसार लिखा लेख जीव कमाते हैं। (इसी प्रकार) गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्यों की सुरति नाम में लगी रहती है॥ २॥ पउड़ी॥ जिस सतिगुरु ने प्रभु का नाम हृदय में दृढ़ कराया है, उस साधु गुरु की सेवा करो। जिस गुरु ने जगत के मालिक

और स्वामी का नाम जपाया है, उसकी दिन-रात पूजा करो। जिस गुरु ने परमात्मा के मिलन का मार्ग बताया है, उसका हर समय दर्शन करो, जिस सतिगुरु ने मोह का अन्धकार दूर किया है, सब उसके चरण छुओ। जिस गुरु ने प्रभु की भक्ति के ख़ज़ाने प्राप्त करा दिए हैं, कहो— वह गुरु धन्य है, वह गुरु धन्य है ॥ ३ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ भुख गई भेखी भुख न जाइ। दुखि लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ। अंदरि सहजु न आइओ सहजे ही लै खाइ। मनहठि जिस ते मंगणा लैणा दुखु मनाइ। इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ। सबदि रते तिना सोझी पई दूजै भरमि भुलाइ। पइऐ किरति कमावणा कहणा कछू न जाइ। नानक जो तिसु भावहि से भले जिन की पति पावहि थाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरि सेविऐ सदा सुखु जनम मरण दुखु जाइ। चिंता मूलि न होवई अचिंतु वसै मनि आइ। अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ। मैलु गई मनु निरमलु होआ अंम्रितसरि तीरथि नाइ। सजण मिले सजणा सचै सबदि सुभाइ। घर ही परचा पाइआ जोती जोति मिलाइ। पाखंडि जमकालु न छोडई लै जासी पति गवाइ। नानक नामि रते से उबरे सचे सिउ लिवलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तितु जाइ बहहु सतसंगती जिथै हरि का हरि नामु बिलोईऐ। सहजे ही हरि नामु लेहु हरि ततु न खोईऐ। नित जपिअहु हरि हरि दिनसु राति हरि दरगह ढोईऐ। सो पाए पूरा सतगुरू जिसु धुरि मसतकि लिलाटि लिखोईऐ। तिसु गुर कंउ सभि नमसकारु करहु जिनि हरि की हरि गाल गलोईऐ ॥ ४ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ गुरु को मिलने पर ही भूख दूर हो सकती है, बाहरी दिखावे से तृष्णा शान्त नहीं होती; आडम्बरी साधु दुख में दुखी होता है, घर-घर भटकता फिरता है और परलोक में इससे भी अधिक सज़ा पाता है। आडम्बरी साधु के मन में शान्ति नहीं आती, जिसके द्वारा वह कहीं से कुछ मिलने पर खा ले (और तृप्त हो जाए); लेकिन स्वेच्छाचरण द्वारा भीख माँगने पर क्लेश पैदा करके ही भीख ली जाती है। इस वेश (आडम्बर) की अपेक्षा गृहस्थ उत्तम है, क्योंकि यहाँ से मनुष्य अपनी आशा पूर्ण कर सकता है। जो मनुष्य गुरु के शब्द में अनुरक्त

होते हैं, उन्हें ऊँची सूझ प्राप्त होती है, लेकिन माया में फँसे मनुष्य भटकते रहते हैं। इस सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता, (क्योंकि पूर्वकृत कर्मों के अनुसार) कमाई करनी पड़ती है। हे नानक! जो जीव उस प्रभु को प्यारे लगते हैं, वही भले हैं। क्योंकि, हे प्रभु! तुम ही उनकी लाज बचाते हो ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुरु द्वारा बतलाए मार्ग को स्वीकारने पर हमेशा सुख मिलता है, तमाम उम्र का दुख दूर हो जाता है, सर्वथा ही चिन्ता नहीं रहती, (क्योंकि) चिन्ता से रहित प्रभु मन में आ बसता है। मनुष्य के भीतर ही ज्ञान रूपी तीर्थ है; सतिगुरु ने इस तीर्थ की सूझ जिसे दी है, वह मनुष्य नाम-अमृत के सरोवर में, अमृत के तीर्थ पर स्नान करता है, उसका मन पवित्र हो जाता है और उसके विकारों का मैल दूर हो जाता है। सतिगुरु के सच्चे शब्द के प्रभाव से स्वतः ही सत्संगी सत्संगियों को मिलते हैं, सत्संग के द्वारा प्रभु में वृत्ति लगाकर हृदय रूपी घर में उन्हें प्रभु-स्मरण रूपी कामकाज मिल जाता है। लेकिन पाखण्ड करने पर मृत्यु का भय नहीं हटता, (पाखण्ड से उपजी थोथी) प्रतिष्ठा मिटाकर मृत्यु इसे ले जाती है। हे नानक! जो मनुष्य नाम में रँगे हुए हैं, वे सत्यस्वरूप प्रभु में मन लगाकर इस भय से बच जाते हैं ॥२॥ पउड़ी ॥ उस सत्संग में जाकर बैठो, जहाँ प्रभु के नाम का विचार होता है। (वहाँ) मन टिकाकर हरि का नाम जपो, ताकि नाम-तत्व छिन न जाए। सत्संग में हमेशा रात-दिन हरि का नाम जपो, यह नाम रूपी सहारा लेकर ही प्रभु की सेवा में पहुँचा जाता है। उसी मनुष्य को पूर्णगुरु मिलता है, जिसके मस्तक पर परमात्मा द्वारा (शुभ कर्मों का लेख) लिखा हुआ है। हे भाई! सब उस गुरु के समक्ष शीश झुकाओ, जो सदा प्रभु की गुणस्तुति की बातें करता है ॥ ४ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ सजण मिले सजणा जिन सतगुर नालि पिआरु। मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआरु। मन ही ते मनु मानिआ गुर कै सबदि अपारि। एहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि। इकना दरसन की परतीति न आईआ सबदि न करहि वीचारु। विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाइ पिआरु। मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि। इसु परीती तुटदी विलमु न होवई इतु दोसती चलनि विकार। जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआरु। नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इकि सदा इकतै रंगि रहहि तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ। तनु मनु धनु

अरपी तिन कउ निवि निवि लागउ पाइ । तिन मिलिआ मनु संतोखीऐ त्रिसना भुख सभ जाइ । नानक नामि रते सुखीए सदा सचे सिउ लिवलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसु गुर कउ हउ वारिआ जिनि हरि की हरि कथा सुणाई । तिसु गुर कउ सद बलिहारणै जिनि हरि सेवा बणत बणाई । सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लए छडाई । तिसु गुर कउ साबासि है जिनि हरि सोझी पाई । नानकु गुर विटहु वारिआ जिनि हरिनामु दीआ मेरे मन की आस पुराई ॥ ५ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ जिन सत्संगियों का गुरु के साथ प्रेम होता है, वे सत्संगियों को मिलते हैं; सत्संगियों को मिलकर वही मनुष्य प्रभु-प्रियतम को स्मरण करते हैं, क्योंकि सच्चे प्रेम में उनकी वृत्ति लगी रहती है। सतिगुरु के अपार शब्द के प्रभाव से उनका मन स्वयं प्रभु में विश्वस्त हो जाता है। ऐसे सत्संगी मनुष्य मिलनोपरान्त बिछुड़ते नहीं, क्योंकि कर्तार-प्रभु ने उन्हें स्वयं मिलाया है। कुछ लोग प्रभु के दर्शन में विश्वास नहीं रखते, क्योंकि वे गुरु के ज्ञान का कभी विचार ही नहीं करते। लेकिन जिन मनुष्यों की सुरति सदा माया-मोह में लगी रहती है, उन प्रभु-वियुक्तों का वियोग और क्या होना हुआ ? जो मनुष्य स्वेच्छाचरण करता है, उसके साथ मित्रता दो-चार दिन के लिए ही रह सकती है, इस मित्रता के टूटते देर नहीं लगती, इस मित्रता से बुराइयाँ ही पैदा होती हैं। हे नानक ! जिन मनुष्यों के हृदय में परमात्मा का भय नहीं, जो परमात्मा में अनुरक्ति नहीं रखते, उन लोगों के साथ मेल करना ही नहीं चाहिए ॥१॥ ॥ म० ३ ॥ कितने मनुष्य प्रभु-रंग में मस्त रहते हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। (मन करता है कि) अपना तन, मन, धन उनकी भेंट कर दूँ और झुक-झुककर उनके चरण स्पर्श करूँ। उन्हें मिलने से मन को ठण्ड पहुँचती है और सारी तृष्णा तथा भूख दूर हो जाती है। हे नानक ! नाम में अनुरक्त मनुष्य सच्चे प्रभु के साथ हृदय लगाकर सदा सुखी रहते हैं ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ मैं उस सतिगुरु पर बलिहारी हूँ, जिसने प्रभु की बात सुनाई है और जिसने प्रभु-भक्ति की परम्परा चलाई है। वह प्यारा सतिगुरु मेरे साथ-साथ है, सर्वत्र मुझे विकारों से छुड़ा लेता है। उस सतिगुरु को धन्य है, जिसने मुझे परमात्मा का ज्ञान दिया है। जिस गुरु ने मुझे परमात्मा का नाम दिया है और मेरे मन की आशा पूर्ण की है, मैं नानक उस पर बलिहारी हूँ ॥ ५ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ त्रिसना दाधी जलि मुई जलि जलि करे पुकार । सतिगुर सीतल जे मिलै फिरि जलै न दूजी वार ।

नानक विणु नावै निरभउ को नही जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि । वरमी मारी सापु ना मरै तिउ निगुरे करम कमाहि । सतिगुरु दाता सेवीऐ सबदु वसै मनि आइ । मनु तनु सीतलु सांति होइ त्रिसना अगनि बुझाइ । सुखा सिरि सदा सुखु होइ जा विचहु आपु गवाइ । गुरमुखि उदासी सो करे जि सचि रहै लिवलाइ । चिंता मूलि न होवई हरि नामि रजा आघाइ । नानक नाम बिना नह छूटीऐ हउमै पचहि पचाइ ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ जिनी हरि हरि नामु धिआइआ तिनी पाइअड़े सरब सुखा । सभु जनमु तिना का सफलु है जिन हरि के नाम की मनि लागी भुखा । जिनी गुर कै बचनि आराधिआ तिन विसरि गए सभि दुखा । ते संत भले गुरसिख है जिन नाही चिंत पराई चुखा । धनु धंनु तिना का गुरू है जिसु अंम्रित फल हरि लागे मुखा ॥ ६ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ दुनिया तृष्णा में जली हुई दुखी हो रही है, जल-जलकर दुखी हो रही है, यदि यह शान्ति देनेवाले गुरु को मिले तो फिर यह दूसरी बार न जले । हे नानक ! जब तक गुरु के ज्ञान के द्वारा मनुष्य प्रभु का स्मरण न करे, तब तक नाम के बिना किसी का भी भय नहीं समाप्त होता ॥ १ ॥ म० ३ ॥ बाह्य वेश धारण करने से तृष्णा की अग्नि नहीं बुझती, मन में चिन्ता टिकी रहती है । जिस प्रकार साँप का बिल बन्द करने से साँप नहीं मरता, उसी प्रकार वे मनुष्य कर्म करते हैं, जो गुरु की शरण में नहीं आते । यदि नाम की देन देनेवाले गुरु की बतलाई कमाई करें तो गुरु का ज्ञान मन में आ बसता है, मन-तन ठण्डा हो जाता है, तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है और मन में शान्ति पैदा हो जाती है । जब मनुष्य अहंत्वहीन हो जाता है, तो सर्वोत्तम सुख मिलता है । गुरु के सान्निध्य में वह मनुष्य (तृष्णाओं का) त्याग करता है, जो सच्चे नाम में सुरति लगाए रखता है; उसे तनिक भी चिन्ता नहीं रहती, वह प्रभु के साथ ही भली प्रकार तृप्त रहता है । हे नानक ! प्रभु के नाम-स्मरण के बिना तृष्णा से बचा नहीं जा सकता, नामहीन जीव अहंत्व में पड़कर जलते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन मनुष्यों ने प्रभु का नाम स्मरण किया है, उन्हें समस्त सुख मिल गए हैं; उनका समस्त मनुष्य-जीवन सफल हुआ है, जिनके मन में प्रभु के नाम की भूख लगी है । जिन्होंने गुरु के शब्द के द्वारा प्रभु का स्मरण किया है, उनके सब दुख दूर हो गए हैं । वे गुरसिक्ख भले सन्त हैं, जिन्होंने तनिक मात्र भी कामना नहीं की । उनका गुरु

भी धन्य है, भाग्यशाली है, जिसके मुँह को अमर करनेवाले फल लगे हुए हैं (अर्थात् जिसके मुख से प्रभु की गुणस्तुति के वचन निकलते हैं) ।। ६ ।।

।। सलोक म० ३ ।। कलि महि जमु जंदारु है हुकमे कार कमाइ । गुरि राखे से उबरे मनमुखा देइ सजाइ । जमकालै वसि जगु बांधिआ तिसदा फरू न कोइ । जिनि जमु कीता सो सेवीऐ गुरमुखि दुखु न होइ । नानक गुरमुखि जमु सेवा करे जिन मनि सचा होइ ।। १ ।। म० ३ ।। एहा काइआ रोगि भरी बिनु सबदै दुखु हउमै रोगु न जाइ । सतिगुरु मिलै ता निरमल होवै हरिनामो मंनि वसाइ । नानक नामु धिआइआ सुखदाता दुखु विसरिआ सहजि सुभाइ ।। २ ।। पउड़ी ।। जिनि जग जीवनु उपदेसिआ तिसु गुर कउ हउ सदा घुमाइआ । तिसु गुर कउ हउ खंनीऐ जिनि मधुसूदनु हरिनामु सुणाइआ । तिसु गुर कउ हउ वारणै जिनि हउमै बिखु सभु रोगु गवाइआ । तिसु सतिगुर कउ वड पुंनु है जिनि अवगण कटि गुणी समझाइआ । सो सतिगुरु तिन कउ भेटिआ जिन कै मुखि मसतकि भागु लिखि पाइआ ।।७।।

।। सलोक महला ३ ।। दुबिधा की स्थिति में मृत्यु का भय बना रहता है, लेकिन यमराज भी प्रभु के हुक्म अनुसार कार्य करता है । जिन्हें गुरु ने बचा लिया वे (यम के भय से) बच जाते हैं, स्वेच्छाचारी मनुष्यों को (वह प्रभु) सज़ा देता है । जगत यमकाल के अधीन है, कोई उसका रक्षक नहीं बनता; यदि गुरु के सान्निध्य में रहकर उस प्रभु की स्तुति करें, जिसने यमराज पैदा किया है, तो फिर दुख स्पर्श नहीं करता । हे नानक ! जिन गुरमुखों के मन में सच्चा प्रभु बसता है, उनकी यम भी सेवा करता है ।। १ ।। म० ३ ।। यह शरीर अहंत्व के रोग से भरा हुआ है, गुरु के ज्ञान के बिना अहंत्व रूपी रोग दूर नहीं होता । यदि गुरु मिल जाए तो मनुष्य का मन पवित्र हो जाता है (क्योंकि गुरु मिलने पर ही मनुष्य) परमात्मा का नाम मन में बसाता है । हे नानक ! जिन्होंने सुखदायक हरि-नाम स्मरण किया है, उनका अहंत्व-दुख सहज रूप में दूर हो जाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। मैं उस गुरु पर बलिहारी हूँ, जिसने जगत के आश्रय प्रभु को निकट दिखा दिया है, जिसने अहंकार-दैत्य को मारनेवाले प्रभु का नाम सुनाया है और जिसने अहंत्व रूपी विष तथा दूसरा सारा रोग दूर कर दिया है । जिस गुरु ने जीव के पाप मिटाकर गुणों के भण्डार प्रभु का ज्ञान दिया है, उसका जीवों पर यह बहुत भारी उपकार है ।

ऐसा गुरु उन्हें मिला है, जिनके मस्तक पर, मुँह पर (पूर्वकृत कर्मों के संस्कारों का) सौभाग्य लिखा है ।। ७ ।।

।। सलोकु म० ३ ।। भगति करहि मरजीवड़े गुरमुखि भगति सदा होइ । ओना कउ धुरि भगति खजाना बखसिआ मेटि न सकै कोइ । गुण निधानु मनि पाइआ एको सचा सोइ । नानक गुरमुखि मिलि रहे फिरि विछोड़ा कदे न होइ ।। १ ।। ।। म० ३ ।। सतिगुर की सेव न कीनीआ किआ ओहु करे वीचारु । सबदै सार न जाणई बिखु भूला गावारु । अगिआनी अंधु बहु करम कमावै दूजै भाइ पिआरु । अणहोदा आपु गणाइदे जमु मारि करे तिन खुआरु । नानक किसनो आखीऐ जा आपे बखसणहारु ।। २ ।। पउड़ी ।। तू करता सभु किछु जाणदा सभि जीअ तुमारे । जिसु तू भावै तिसु तू मेलि लैहि किआ जंत विचारे । तू करण कारण समरथु है सचु सिरजणहारे । जिसु तू मेलहि पिआरिआ सो तुधु मिलै गुरमुखि वीचारे । हउ बलिहारी सतिगुर आपणे जिनि मेरा हरि अलखु लखारे ।। ८ ।।

।। सलोकु महला ३ ।। सांसारिक रूप से मृत होकर जीनेवाले अर्थात् परमात्मा में सुरति लगानेवाले मनुष्य ही भक्ति करते हैं। वास्तविक भक्ति उन्हीं के द्वारा हो सकती है, जो स्वयं को गुरु के हवाले कर देते हैं। ऐसे मनुष्यों को परमात्मा ने स्वयं भक्ति के ख़ज़ाने की देन दी हुई है, कोई उस देन को मिटा नहीं सकता; उन्होंने उस गुणों के ख़ज़ाने प्रभु को अपने मन में प्राप्त कर लिया है, जो एक आप ही आप है और सत्यस्वरूप है। हे नानक ! जो मनुष्य स्वयं को गुरु के हवाले कर देते हैं, वे प्रभु-(भक्ति) में लगे रहते हैं और उन्हें फिर कभी प्रभु से विछोह नहीं होता ।। १ ।। ।। म० ३ ।। जिस मनुष्य ने गुरु द्वारा बतलाई कमाई नहीं की, वह और क्या चिन्तना कर सकता है ? वह मूर्ख ज़हर को देखकर भ्रमित हुआ गुरु के ज्ञान की क़ीमत नहीं आँकता (अर्थात् उसकी महत्ता का विचार नहीं करता)। वह अन्धा, अज्ञानी दूसरे बहुत सारे कर्म करता है, लेकिन उसकी सुरति माया के प्रेम में ही लगी रहती है। जो मनुष्य अपने भीतर कोई गुण न होते हुए अपने आप को बड़ा जताते हैं, उन्हें यमराज मारकर दुखी करता है; लेकिन, हे नानक ! किसी को क्या कहना है ? परमात्मा स्वयं ही कृपा करनेवाला है ।। २ ।। पउड़ी ।। हे सृजनहार ! तुम सब कुछ जानते हो और सारे जीव तुम्हारे हैं। जीव बेचारों के क्या वश है ? जो तुम्हें भला लगता है, उसे तुम मिला देते हो। हे सत्यस्वरूप कर्तार !

तुम सब कुछ करने की सामर्थ्य रखते हो । हे प्यारे ! जिसे तुम आप मिलाते हो, वह गुरु के माध्यम से तुम्हारे गुणों का विचार करके तुम्हें मिल पड़ता है । मैं प्यारे सतिगुरु पर बलिहारी हूँ, जिसने मुझे अदृश्य परमात्मा का ज्ञान दे दिया है ॥ ८ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ रतना पारखु जो होवै सु रतना करे वीचारु । रतना सार न जाणई अगिआनी अंधु अंधारु । रतनु गुरू का सबदु है बूझै बूझणहारु । मूरख आपु गणाइदे मरि जंमहि होइ खुआरु । नानक रतना सो लहै जिसु गुरमुखि लगै पिआरु । सदा सदा नामु उचरै हरिनामो नित बिउहारु । क्रिपा करे जे आपणी ता हरि रखा उरधारि ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु । मत तुम जाणहु ओइ जीवदे ओइ आपि मारे करतारि । हउमै वडा रोगु है भाइ दूजै करम कमाइ । नानक मनमुखि जीवदिआ मुए हरि विसरिआ दुखु पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है तिसु जन कउ सभि नमसकारी । जिसु अंदरि नामु निधानु है तिसु जन कउ हउ बलिहारी । जिसु अंदरि बुधि बिबेकु है हरिनामु मुरारी । सो सतिगुरु सभना का मितु है सभ तिसहि पिआरी । सभु आतम रामु पसारिआ गुर बुधि बीचारी ॥ ९ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ जो मनुष्य रत्नों का पारखी है, वही रत्नों की सोच-विचार करता है । लेकिन अन्धा, अज्ञानी और मूर्ख व्यक्ति रत्नों की परख नहीं कर सकता । कोई ज्ञानी व्यक्ति ही समझता है कि असली रत्न सतिगुरु का शब्द है । लेकिन मूर्ख व्यक्ति अपने आप को बड़ा जताते हैं और दुखी हो-होकर जन्मते-मरते रहते हैं । हे नानक ! वही मनुष्य रत्नों को प्राप्त करता है, जिसे गुरु के द्वारा लगन लगती है, वह मनुष्य सदा प्रभु का नाम जपता है, नाम जपना ही उसका नित्य का व्यवहार बन जाता है । यदि परमात्मा अपनी कृपा करे तो मैं भी उसका नाम हृदय में पिरोकर रखूँ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिन व्यक्तियों ने गुरु की बतलाई कमाई नहीं की, जिनकी लगन प्रभु के नाम में नहीं लगी, यह न समझो कि वे व्यक्ति जीते हैं, उन्हें कर्तार ने स्वयं ही (आत्मिक रूप से) मार दिया है । माया-मोह के कर्म कर-करके उन्हें अहंत्व का रोग है । हे नानक ! स्वेच्छाचारी मनुष्य जीवित होते हुए मृत समझो । जो मनुष्य परमात्मा को विस्मृत करता है, वह दुख पाता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसका भीतरी हृदय पवित्र है, उसे

सारे जीव प्रणाम करते हैं; जिसके हृदय में नाम-भण्डार है, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। जिसके भीतर बुद्धि है, भले-बुरे की परख है और हरि मुरारी का नाम है, वह सतिगुरु सब जीवों का मित्र है और सारी सृष्टि उसे प्यारी लगती है (क्योंकि) सतिगुरु की शिक्षा ने यह स्वीकारा है कि सर्वत्र परमात्मा ने अपना आप फैलाया हुआ है ॥ ९ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना विचि हउमै करम कमाहि। बिनु सतिगुरु सेवे ठउर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि। बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मन माहि। नानक बिनु सतिगुर सेवे जमपुरि बधे मारीअनि मुहि कालै उठि जाहि ॥ १ ॥ महला १ ॥ जालउ ऐसी रीति जितु मै पिआरा वीसरै। नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि इको दाता सेवीऐ हरि इकु धिआईऐ। हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ। जे दूजे पासहु मंगीऐ ता लाज मराईऐ। जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ तिसु जन की सभ भुख गवाईऐ। नानकु तिन विटहु वारिआ जिन अनदिनु हिरदै हरि नामु धिआईऐ ॥ १० ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ मनुष्य सतिगुरु की सेवा से अलग रहकर अहंत्व के सहारे कर्म करते हैं, लेकिन वे कर्म उनकी आत्मा के लिए बन्धन हो जाते हैं। सतिगुरु की बतलाई कमाई न करके उन्हें कहीं स्थान नहीं मिलता, वे जन्मते-मरते हैं, संसार में आते हैं और जाते हैं। सतिगुरु द्वारा बतलाई सेवा से खाली रहकर उनके बोल भी फीके होते हैं और नाम उनके मन में नहीं बसता। हे नानक ! सतिगुरु की सेवा के बिना वे काले मुँह (अपमानित) चले जाते हैं और यमपुरी में बँधे बिना मार खाते हैं ॥ १ ॥ ॥ महला १ ॥ मैं ऐसी परम्परा को जला दूँ, जिससे प्यारा प्रभु मुझे विस्मृत हो जाए। हे नानक ! वही प्रेम उत्तम है, जिसके द्वारा पति-प्रभु के साथ प्रतिष्ठा बनी रहे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ केवल एक दाता-प्रभु की सेवा करनी चाहिए, एक परमात्मा को ही स्मरण करना चाहिए, केवल एक ही दाता-हरि से दान माँगना चाहिए, जिससे मनोवांछित कामना पूरी हो जाए। यदि और किसी से माँगे तो लज्जा से मर जाना चाहिए (माँगने की अपेक्षा लज्जा से मर जाना भला है)। जिस मनुष्य ने हरि की सेवा की है, उसने फल पा लिया है और उन मनुष्य की सारी तृष्णा दूर हो गई है। नानक उन मनुष्यों पर बलिहारी है, जो हमेशा हृदय में प्रभु का नाम स्मरण करते हैं ॥ १० ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ भगत जना कंउ आपि तुठा मेरा पिआरा आपे लइअनु जन लाइ। पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु सिरि छतु सचा हरि बणाइ। सदा सुखीए निरमले सतिगुर की कार कमाइ। राजे ओइ न आखीअहि भिड़ि मरहि फिरि जूनी पाहि। नानक विणु नावै नकीं वढीं फिरहि सोभा मूलि न पाहि॥ १॥ म० ३॥ सुणि सिखिऐ सादु न आइओ जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै। सतिगुरि सेविऐ नामु मनि वसै विचहु भ्रमु भउ भागै। जेहा सतिगुर नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै। नानक नामि मिलै वडिआई हरि दरि सोहनि आगै॥ २॥ पउड़ी॥ गुरसिखां मनि हरि प्रीति है गुरु पूजण आवहि। हरिनामु वणंजहि रंग सिउ लाहा हरिनामु लै जावहि। गुर सिखा के मुख उजले हरि दरगह भावहि। गुरु सतिगुरु बोहलु हरिनाम का वडभागी सिख गुण सांझ करावहि। तिना गुरसिखा कंउ हउ वारिआ जो बहदिआ उठदिआ हरिनामु धिआवहि॥ ११॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ प्यारा प्रभु अपने भक्तों पर आप प्रसन्न होता है और आप ही उसने उन्हें अपने साथ मिला लिया है। भक्तों के सिर पर सच्चा छत्र झुलाकर उसने भक्तों को बादशाही दी है। सतिगुरु की बतलाई कमाई करके वे सदा सुखी और पवित्र रहते हैं। राजा उन्हें नहीं कहना चाहिए, जो परस्पर लड़ मरते हैं और तदन्तर योनियों में पड़ जाते हैं। हे नानक! नाम से ख़ाली राजा भी नकटे होकर फिरते हैं और कभी शोभा नहीं पाते॥ १॥ म० ३॥ जब तक सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर मनुष्य सतिगुरु के ज्ञान में नहीं लगता, तब तक केवल मात्र सतिगुरु की शिक्षा सुनकर आनन्द नहीं आता; सतिगुरु की बतलाई सेवा करने से ही नाम में टिकता है और भीतर से भ्रम और भय दूर हो जाता है। जब मनुष्य जिस प्रकार का अपने सतिगुरु को समझता है, उसी प्रकार का स्वयं बन जाए, तब उसकी वृत्ति सच्चे नाम में लगती है। हे नानक! नाम के कारण यहाँ आदर मिलता है और आगे हरि के दरबार में भी वे शोभा पाते हैं॥ २॥ पउड़ी॥ गुरमुखों के मन में हरि का प्रेम होता है और वे इसीलिए सतिगुरु की सेवा करने आते हैं। वे प्रेमपूर्वक हरि-नाम का व्यापार करते हैं और हरि-नाम का लाभ प्राप्त करके ले जाते हैं। गुरमुखों के मुँह उजले होते हैं और हरि के दरबार में वे शोभा पाते हैं। सतिगुरु हरि के नाम का भण्डार (अनाज का ढेर) है, सौभाग्यशाली सिक्ख

आकर गुणों के बल सम्बन्ध जोड़ते हैं। मैं उन गुरमुखों पर बलिहारी हूँ, जो उठते-बैठते हरि का नाम स्मरण करते हैं ॥ ११ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ। मनमुख घरि होदी वथु न जाणनी अंधे भउकि मुए बिललाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ कंचन काइआ निरमली जो सचि नामि सचि लागी। निरमल जोति निरंजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी। नानक गुरमुखि सदा सुखु पावहि अनदिनु हरि बैरागी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ से गुरसिख धनु धंनु है जिनी गुर उपदेसु सुणिआ हरि कंनी। गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ तिनि हंउमै दुबिधा भंनी। बिनु हरि नावै को मित्रु नाही वीचारि डिठा हरि जंनी। जिना गुरसिखा कउ हरि संतुसटु है तिनी सतिगुर की गल मंनी। जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिनी चड़ी चवगणि वंनी ॥ १२ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ हे नानक ! नाम ही असली खज़ाना है, जो सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर मिल सकता है; अन्धे मनमुख हृदय रूपी घर में होती हुई इस वस्तु को नहीं पहचानते और बिलखते हुए भौंक-भौंककर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जो शरीर सच्चे नाम के द्वारा सच्चे प्रभु में लीन है, वह कंचनतुल्य शुद्ध है। उसे निर्मल ज्योति रूपी माया से रहित प्रभु मिल जाता है और सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर उसका भ्रम और भय दूर हो जाता है। हे नानक ! सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर मनुष्य प्रतिपल परमात्मा के वैरागी होकर सुख पाते हैं ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ वे गुरसिख धन्य हैं, जिन्होंने सतिगुरु का उपदेश ध्यानपूर्वक सुना है, सतिगुरु ने जिसके हृदय में नाम दृढ़ किया है, उसने अहंभावना तथा दुबिधा समाप्त कर दी है। प्रभु के स्मरण करनेवालों ने यह बात विचारकर देख ली है कि परमात्मा के नाम के अतिरिक्त कोई मित्र नहीं है। जिन गुरसिखों पर प्रभु प्रसन्न होता है, वे सतिगुरु की शिक्षा पर चलते हैं। जो मनुष्य सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर प्रभु का नाम जपते हैं, उन्हें प्रभु-प्रेम का चौगुना रंग चढ़ता है ॥ १२ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ मनमुखु काइरु करूपु है बिनु नावै नकु नाहि। अनदिनु धंधै विआपिआ सुपनै भी सुखु नाहि। नानक गुरमुखि होवहि ता उबरहि नाहि त बधे दुख सहाहि ॥१॥ ॥ म० ३ ॥ गुरमुखि सदा दरि सोहणे गुर का सबदु कमाहि।

अंतरि सांति सदा सुखु दरि सचै सोभा पाहि । नानक गुरमुखि हरिनामु पाइआ सहजे सचि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि प्रहिलादि जपि हरि गति पाई । गुरमुखि जनकि हरिनामि लिव लाई । गुरमुखि बसिसटि हरि उपदेसु सुणाई । बिनु गुर हरिनामु न किनै पाइआ मेरे भाई । गुरमुखि हरि भगति हरि आपि लहाई ॥ १३ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ स्वेच्छाचारी मनुष्य आशंकित तथा कुरूप होता है, नाम के बिना उसे कहीं आदर नहीं मिलता, वह प्रतिपल माया के धन्धे में लगा रहता है और उसे स्वप्न में भी सुख नहीं होता । हे नानक ! मनमुख मनुष्य यदि सतिगुरु के सान्निध्य में हो जाएँ, तो जाल-जंजाल से बच जाते हैं, नहीं तो माया में आबद्ध होकर दुख सहते हैं ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर मनुष्य दरबार में शोभा पाते हैं क्योंकि वे सतिगुरु के शब्द की साधना करते हैं । उनके हृदय में शान्ति और सुख होता है, वे प्रभु के सच्चे दरबार में शोभा पाते हैं । हे नानक ! सतिगुरु के सान्निध्य में मनुष्यों को हरि का नाम मिला होता है, इसलिए वे स्वतः ही सच्चे (हरि-नाम) में लीन हो जाते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु के सान्निध्य में प्रह्लाद ने हरि का नाम जपकर उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त की, सतिगुर के सान्निध्य में रहकर जनक ने हरि के नाम में वृत्ति जोड़ी, सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर वशिष्ठ ने हरि का ज्ञान उन्हें सुनाया । हे मेरे भाई ! सतिगुरु के बिना किसी ने नाम नहीं प्राप्त किया । सतिगुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य को प्रभु ने अपनी भक्ति आप दी है ॥१३॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर की परतीति न आईआ सबदि न लागो भाउ । ओस नो सुखु न उपजै भावै सउ गेड़ा आवउ जाउ । नानक गुरमुखि सहजि मिलै सचे सिउ लिव लाउ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ । सहसा मूलि न होवई हउमै सबदि जलाइ । कूड़ै की पालि विचहु निकलै सचु वसै मनि आइ । अंतरि सांति मनि सुखु होइ सच संजमि कार कमाइ । नानक पूरै करमि सतिगुरु मिलै हरि जीउ किरपा करे रजाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिस कै घरि दीबानु हरि होवै तिस की मुठी विचि जगतु सभु आइआ । तिस कउ तलकी किसै दी नाही हरि दीबानि सभि आणि पैरी पाइआ । माणसा किअहु दीबाणहु कोई नसि भजि निकलै हरि दीबाणहु कोई किथै जाइआ । सो ऐसा हरि दीबानु वसिआ

भगता कै हिरदै तिनि रहदे खुहदे आणि सभि भगता अगै खलवाइआ । हरि नावै की वडिआई करमि परापति होवै गुरमुखि विरलै किनै धिआइआ ।। १४ ।।

।। सलोकु महला ३।। जिस मनुष्य को सतिगुरु पर भरोसा नहीं बना और सतिगुरु के शब्द में जिसका स्नेह नहीं उपजा, उसे कभी सुख नहीं होता चाहे गुरु के पास सौ बार आए या जाए । हे नानक ! यदि गुरु के सान्निध्य में रहकर सच्चे प्रभु में लौ लगाएँ तो प्रभु सहज ही मिल जाता है ।। १ ।। म० ३ ।। हे मेरे मन ! ऐसा सतिगुरु प्राप्त कर, जिसकी सेवा करने से तमाम उम्र का दुख दूर हो जाए; कभी बिल्कुल ही चिन्ता न हो और उस सतिगुरु के शब्द से तेरी अहंभावना जल जाए । तेरे भीतर से झूठ की दीवार दूर हो जाए और मन में सच्चा हरि आ बसे । हे मन ! (इसीलिए) सतिगुरु द्वारा बताए अनुशासन में सच्ची कमाई करके तेरे भीतर शान्ति और सुख हो जाए । हे नानक ! जब हरि अपनी रज़ा अनुसार कृपा करता है, तब ऐसा सतिगुरु पूर्ण कृपा द्वारा ही मिलता है ।। २ ।। ।। पउड़ी ।। जिस मनुष्य के हृदय में हाकिम-प्रभु विद्यमान रहे, सारा संसार उसके वश में आ जाता है । उसे कभी किसी की अधीनगी नहीं होती, बल्कि परमात्मा-मालिक समस्त लोगों को लाकर उसके चरणों में झुकाता है । मनुष्य की कचहरी में से तो मनुष्य भाग-दौड़कर कहीं खिसक सकता है, लेकिन परमात्मा की कचहरी से कोई कहाँ जा सकता है ? ऐसा हाकिम-हरि भक्तों के हृदय में बसा हुआ है, उसने सभी निकम्मे (बाक़ी बचे) तमाम जीवों को भक्तजनों के सामने खड़ा कर दिया है । प्रभु की विशेष कृपा से ही प्रभु के नाम की स्तुति करने का गुण प्राप्त होता है । सतिगुरु के सम्मुख होकर कोई विरला ही प्रभु-नाम का स्मरण करता है ।। १४ ।।

।। सलोकु म० ३ ।। बिनु सतिगुर सेवे जगतु मुआ बिरथा जनमु गवाइ । दूजै भाइ अति दुखु लगा मरि जंमै आवै जाइ । विसटा अंदरि वासु है फिरि फिरि जूनी पाइ । नानक बिनु नावै जमु मारसी अंति गइआ पछुताइ ।। १ ।। म० ३ ।। इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि सबाई । सभि घट भोगवै अलिपतु रहै अलखु न लखणा जाई । पूरै गुरि वेखालिआ सबदे सोझी पाई । पुरखै सेवहि से पुरख होवहि जिनी हउमै सबदि जलाई । तिस का सरीकु को नही ना को कंटकु वैराई । निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई । अनदिनु सेवकु सेवा करे हरि सचे के गुण गाई । नानकु वेखि विगसिआ

हरि सचे की वडिआई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनकै हरि नामु वसिआ सद हिरदै हरि नामो तिन कंउ रखणहारा । हरिनामु पिता हरि नामो माता हरि नामु सखाई मित्रु हमारा । हरिनावै नालि गला हरिनावै नालि मसलति हरिनामु हमारी करदा नित सारा । हरिनामु हमारी संगति अति पिआरी हरि नामु कुलु हरिनामु परवारा । जन नानक कंउ हरिनामु हरि गुरि दीआ हरि हलति पलति सदा करे निसतारा ॥ १५ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ सतिगुरु द्वारा इंगित मार्ग का अनुसरण किए बिना मनुष्य-जन्म व्यर्थ गवाँकर संसार मृत हुआ पड़ा है । माया के प्रेम में फँसकर भारी क्लेश भुगतना पड़ता है और इसी में ही मरता है जन्मता है, आता है तदन्तर जाता है । आजन्म विकारों की गन्दगी में टिका रहता है, पुनःपुनः योनियाँ ग्रहण करता है । हे नानक ! वह अन्तिम समय में पश्चाताप करता हुआ जाता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इस संसार में केवल परमात्मा ही एक पति है, शेष समस्त सृष्टि उसकी स्त्रियाँ हैं । परमात्मा रूपी पति सारे शरीरों में समाया है और निर्लिप्त भी है । इस अगोचर प्रभु का रहस्य विदित नहीं होता । पूर्णसतिगुरु ने जिस मनुष्य को उस अलक्ष्य प्रभु का दर्शन करा दिया, उसे सतिगुरु के शब्द द्वारा ज्ञान हो गया । जिन मनुष्यों ने शब्द के द्वारा अहंकार दूर किया है, जो प्रभु-पुरुष को जपते हैं, वे भी उस पुरुष का रूप हो जाते हैं । उस अलक्ष्य हरि का कोई बराबरी करनेवाला नहीं, न कोई दुखी करनेवाला उसका वैरी है, उसका राज्य शाश्वत है, न वह जन्मता है और न मरता है । सच्चा सेवक उस सच्चे प्रभु की गुणस्तुति करके प्रतिपल उसका स्मरण करता है, नानक भी उस सच्चे प्रभु की महानता देखकर प्रसन्न हो रहा है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन मनुष्यों के हृदय में सदा हरि का नाम रहता है, उनका रक्षक भी हरि का नाम ही होता है । (उन्हें विश्वास हो जाता है कि) परमात्मा हरि का नाम ही उनका माँ-बाप है और नाम ही सखा और मित्र है । हरि के नाम द्वारा ही हमारी बातें तथा परामर्श हैं, नाम ही हमारी सुधि लेता है, नाम ही हमारी प्यारी संगत है और नाम ही हमारा कुल तथा परिवार है । दास नानक को भी गुरु ने हरि का नाम दिया है, जो इस लोक तथा परलोक में उद्धार करता है ॥ १५ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ जिन कंउ सतिगुरु भेटिआ से हरि कीरति सदा कमाहि । अचिंतु हरि नामु तिनकै मनि वसिआ सचै सबदि समाहि । कुलु उधारहि आपणा मोख पदवी आपे पाहि । पारब्रहमु तिन कंउ संतुसटु भइआ जो गुर चरनी जन

पाहि। जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हंउमै अंदरि खड़कु है खड़के खड़कि विहाइ। हंउमै वडा रोगु है मरि जंमै आवै जाइ। जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुरु मिलिआ प्रभु आइ। नानक गुरपरसादी उबरे हउमै सबदि जलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा प्रभु अबिगतु अगोचरु अबिनासी पुरखु बिधाता। हरि नामु हम स्रेवह हरिनामु हम पूजह हरिनामे ही मनु राता। हरिनामै जेवडु कोई अवरु न सूझै हरिनामो अंति छडाता। हरि नामु दीआ गुरि परउपकारी धनु धंनु गुरू का पिता माता। हंउ सतिगुर अपुणे कंउ सदा नमसकारी जितु मिलिऐ हरिनामु मै जाता ॥ १६ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जिन्हें सतिगुरु मिला है, वे सदा हरि की गुणस्तुति करते हैं, चिन्तारहित हरि का नाम उनके मन में रहता है और वे सतिगुरु के सच्चे शब्द में लीन रहते हैं। वे मनुष्य अपनी वंशावलि का उद्धार कर लेते हैं और आप भी मुक्ति की स्थिति प्राप्त कर लेते हैं। जो मनुष्य सतिगुरु के चरणों में रहते हैं, उन पर परमात्मा प्रसन्न हो जाता है। दास नानक भी उस हरि का दास है, हरि कृपा करके अपने सेवक की लाज बचाता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ अहंत्वग्रस्त होने से मनुष्य के मन में अशान्ति बनी रहती है और उसकी उम्र अशान्ति में ही बीत जाती है। अहंकार एक भारी रोग है, (इसमें ही) मनुष्य जन्मता-मरता है, आता है और जाता है। जिनके हृदय में पूर्वकृत कर्मों के (परिणामस्वरूप) संस्कार रूपी लेख लिखा हुआ है, उन्हें सतिगुरु मिलता है (और बाद में) परमात्मा भी मिल जाता है। हे नानक ! वे मनुष्य सतिगुरु के शब्द द्वारा अहंत्व दूर कर, सतिगुरु की कृपा द्वारा (अहंत्व रोग से) बच जाते हैं ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ जो हरि अगोचर है, इन्द्रियों की पहुँच से परे है, अनश्वर है, सर्वत्र व्यापक और सृजनहार है, उसका नाम हमारा (रक्षक) है, हम उस हरि-नाम की आराधना करते हैं, नाम को पूजते हैं और नाम में ही हमारा मन अनुरक्त है। हरि के नाम के बराबर मुझे दूसरा कोई नहीं दिखता, नाम ही अन्त में मुक्त कराता है। धन्य हैं उस परोपकारी सतिगुरु के माँ-बाप, जिस गुरु ने हमें नाम दिया है। मैं अपने सतिगुरु को सदा नमस्कार करता हूँ, जिसके मिलने पर मुझे हरि के नाम की समझ हुई है ॥ १६ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ गुरमुखि सेव न कीनीआ हरिनामि न लगो पिआरु। सबदै सादु न आइओ मरि जनमै वारो वार।

मनमुखि अंधु न चेतई कितु आइआ सैसारि। नानक जिन कउ नदरि करे से गुरमुखि लंघे पारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता मोहि पिआसि। सतिगुरु सेवनि जागंनि से जो रते सचि नामि गुणतासि। मनमुखि अंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि। नानक गुरमुखि तिनी नामु धिआइआ जिन कंउ धुरि पूरबि लिखिआसि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरिनामु हमारा भोजनु छतीह परकार जितु खाइऐ हम कउ त्रिपति भई। हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि नंगे न होवह होर पैनण की हमारी सरध गई। हरिनामु हमारा वणजु हरिनामु वापारु हरि नामै की हम कंउ सतिगुरि कारकुनी दीई। हरिनामै का हम लेखा लिखिआ सभ जम की अगली काणि गई। हरि का नामु गुरमुखि किनै विरलै धिआइआ जिन कंउ धुरि करमि परापति लिखतु पई ॥ १७ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ अन्धे मनमुख ने सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर न सेवा की, न परमात्मा के नाम में ही उसका लगाव पैदा हुआ, न उसे गुरु के उपदेश में आनन्द आया, (इसलिए) बार-बार जन्मता-मरता है। यदि अन्धा मनमुख हरि को स्मरण नहीं करता, तो संसार में आने का क्या लाभ ? हे नानक ! जिन पर प्रभु कृपादृष्टि करता है, वे सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर पार उतर जाते हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ एक सतिगुरु ही जाग्रत है, शेष सारा संसार मोह एवं तृष्णा में सोया हुआ है; जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा करते हैं और गुणों के ख़ज़ाने सच्चे नाम में अनुरक्त हैं, वे जागते हैं। अन्धे मनमुख हरि को स्मरण नहीं करते, जन्म-मरण के चक्र में पड़कर बरबाद हो रहे हैं। हे नानक ! गुरु के सान्निध्य में रहकर उन्होंने नाम-स्मरण किया है, जिनके हृदय में प्रभु के दरबार से (शुभ कर्मों का लेख) लिखा है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि का नाम हमारा छत्तीस प्रकार का व्यंजन है, जिसे खाकर हम तृप्त हो गए हैं। हरि का नाम ही हमारी पोशाक है, जिसे पहनकर हम कभी भी नग्न नहीं होंगे और (इसके पहनने पर) सुन्दर-सुन्दर पोशाकें पहनने की हमारी इच्छा दूर हो गई है। हरि का नाम ही हमारा वाणिज्य, व्यापार है और सतिगुरु ने हमें नाम की ही मुख़तारी (मिल्कियत) दी है, हरि के नाम का ही हमने लेख लिखा है, (इसके द्वारा) यमराज की, की जानेवाली ख़ुशामद दूर हो गई है। लेकिन किसी विरले गुरमुख ने हरि-नाम स्मरण किया है। (वही नाम-स्मरण करते हैं), जिन्होंने प्रभु-कृपा द्वारा लेख की प्राप्ति हुई है ॥ १७ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ जगतु अगिआनी अंधु है दूजै भाइ करम कमाइ। दूजै भाइ जेते करम करे दुखु लगै तनि धाइ। गुरपरसादी सुखु ऊपजै जा गुर का सबदु कमाइ। सची बाणी करम करे अनदिनु नामु धिआइ। नानक जितु आपे लाए तितु लगे कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हम घरि नामु खजाना सदा है भगति भरे भंडारा। सतगुरु दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा। अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि अपारा। सबदु गुरू का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा। इहु मनूआ सदा सुखि वसै सहजे करे वापारा। अंतरि गुरगिआनु हरि रतनु है मुकति करावणहारा। नानक जिसनो नदरि करे सो पाए सो होवै दरि सचिआरा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जो सतिगुर चरणी जाइ पइआ। धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि हरिनामा मुखि रामु कहिआ। धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिसु हरिनामि सुणिऐ मनि अनदु भइआ। धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि सतिगुर सेवा करि हरिनामु लइआ। तिसु गुरसिख कंउ हंउ सदा नमसकारी जो गुर कै भाणै गुरसिखु चलिआ ॥ १८ ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ संसार अन्धा और अज्ञानी है, माया-मोह में (आबद्ध हो) कार्यरत है। लेकिन वह माया-मोह में जितने भी कर्म करता है, उतना ही शरीर को दुख मिलता है। यदि संसार गुरु के शब्द की साधना करे, सच्ची वाणी के द्वारा प्रतिपल नाम-स्मरण के कर्म करे, तो सतिगुरु की कृपा द्वारा सुख पैदा होता है। हे नानक! कोई भी बात कही नहीं जा सकती, जिधर स्वयं हरि जीव को लगाता है, जीव उस ओर ही लगते हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हमारे हृदय रूपी घर में सदा नाम रूपी भण्डार है और भक्ति के भण्डार आपूरित हैं क्योंकि आत्मिक जीवन का दाता सतिगुरु हमारा रक्षक है। हम सतिगुरु के अपार शब्द के द्वारा हमेशा हरि के गुण गाते हैं और प्रत्येक गुण में व्यवहृत किए जानेवाला सतिगुरु का शब्द उच्चरित करते हैं। (सतिगुरु की शिक्षा द्वारा) हमारा मन सदा सुखी रहता है और स्वतः ही नाम का व्यापार करता है, इसलिए मन के भीतर सतिगुरु का दिया हुआ ज्ञान और मुक्ति करानेवाला हरि-नाम रूपी रत्न बसता है। हे नानक! जिस पर प्रभु कृपा करता है, उसे यह देन मिलती है और वह दरबार में मुक्त हो जाता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ उस गुरसिक्ख को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जो अपने सतिगुरु के चरणों में

झुका है; उस गुरसिक्ख को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जिसने मुँह से हरि का नाम उच्चरित किया है। उस गुरसिक्ख को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जिसके मन में हरि का नाम सुनकर चाव पैदा होता है; उस गुरसिक्ख को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जिसने सतिगुरु की सेवा करके परमात्मा का नाम प्राप्त किया है। मैं सदा उस गुरसिक्ख के समक्ष अपना सिर झुकाता हूँ, जो गुरसिक्ख सतिगुरु की इच्छानुसार चलता है ॥ १८ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ मनहठि किनै न पाइओ सभ थके करम कमाइ। मनहठि भेख करि भरमदे दुखु पाइआ दूजै भाइ। रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ। गुर सेवा ते मनु निरमलु होवै अगिआनु अंधेरा जाइ। नामु रतनु घरि परगटु होआ नानक सहजि समाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु। रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु। नानक किरति पइऐ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धनु धनु सतपुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम कउ सांति आई। धनु धनु सतपुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम हरि भगति पाई। धनु धनु हरि भगतु सतिगुरू हमारा जिसकी सेवा ते हम हरिनामि लिव लाई। धनु धनु हरि गिआनी सतिगुरू हमारा जिनि वैरी मित्रु हम कउ सभ समद्रिसटि दिखाई। धनु धनु सतिगुरू मित्रु हमारा जिनि हरि नाम सिउ हमारी प्रीति बणाई ॥ १९ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ किसी मनुष्य ने हठपूर्वक परमात्मा को नहीं पाया, तमाम जीव हठपूर्वक कर्म करके थक गए हैं, स्वेच्छापूर्वक वेश धारण कर-करके भटकते हैं और माया-मोह में दुख उठाते हैं। रिद्धियाँ और सिद्धियाँ केवल मात्र मोह हैं, (उनके माध्यम से) हरि का नाम हृदय में नहीं बस सकता। सतिगुरु की सेवा से मन निर्मल होता है और अज्ञान रूपी अँधेरा दूर होता है। हे नानक! नाम रूपी रत्न हृदय में प्रत्यक्ष हो जाता है और मनुष्य सहजावस्था में लीन हो जाता है ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ जिसे सतिगुरु के उपदेश में आनन्द अनुभूत नहीं होता, नाम में प्रेम नहीं उपजता, वह मनुष्य मुँह से फीके वचन ही बोलता है और सदा दुखी होता है। हे नानक! (पूर्वकृत कर्मों के अनुसार) लिखित संस्कारों के अनुसार काम (ही) मनुष्य को करना पड़ता है। कोई मनुष्य (संस्कारों) को मिटा नहीं सकता ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हमारा सत्पुरुष सतिगुरु धन्य है, जिसके मिलने से हमारे हृदय में शीतलता होती है और

जिसके मिलने से हमने परमात्मा की भक्ति प्राप्त की है। हरि का भक्त हमारा सतिगुरु धन्य है, जिसकी सेवा करने से हमने हरि के नाम में वृत्ति लगाई है। हरि के ज्ञान वाला हमारा सतिगुरु धन्य है, जिसने वैरी और मित्र —सबको समदर्शी दृष्टि से देखकर (समदर्शिता की जाँच) सिखा ली है। हमारा सज्जन सतिगुरु धन्य है, जिसने हरि के नाम के साथ हमारा प्रेम जोड़ दिया है ॥ १९ ॥

॥ सलोकु म० १ ॥ घर ही मुंधि विदेसि पिरु नित झूरे संम्हाले। मिलदिआ ढिल न होवई जे नीअति रासि करे ॥ १॥ ॥ म० १ ॥ नानक गाली कूड़ीआ बाझु परीति करेइ। तिचरु जाणै भला करि जिचरु लेवै देइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनि उपाए जीअ तिनि हरि राखिआ। अंम्रितु सचा नाउ भोजनु चाखिआ। तिपति रहे आघाइ मिटी भभाखिआ। सभ अंदरि इकु वरतै किनै विरलै लाखिआ। जन नानक भए निहालु प्रभ की पाखिआ ॥ २० ॥

॥ सलोकु महला १ ॥ पति तो घर अर्थात् हृदय में ही अवस्थित है, लेकिन उसे परदेश में समझती हुई जीव-स्त्री हमेशा दुखी होती है और हमेशा स्मरण करती है। यदि वह अपनी वृत्ति शुद्ध करे तो प्रभु को मिलने में देर नहीं लगती ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हे नानक ! हरि-प्रेम के अतिरिक्त बाक़ी बातें मिथ्या हैं, क्योंकि तब तक जीव प्रभु को भला समझता है, जब तक प्रभु देता है और जीव लेता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस हरि ने जीव पैदा किए हैं, उसने ही उनकी रक्षा की है। जो जीव उस हरि का आत्मिक जीवन के दाता सच्चा नाम रूपी भोजन को खाते हैं और बहुत अधिक तृप्त हो जाते हैं, उनकी और कुछ खाने की इच्छा मिट जाती है। समस्त जीवों में एक प्रभु आप व्यापक है, लेकिन उसे किसी विरले ने समझा है, और, हे नानक ! वह दास प्रभु के पक्षपात द्वारा प्रसन्न रहता है ॥ २० ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु। डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु। हउमै मैलु न चुकई नामि न लगै पिआरु। इकि आपे बखसि मिलाइअनु दुबिधा तजि विकार। नानक इकि दरसनु देखि मरि मिले सतिगुर हेति पिआरि ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरू न सेविओ मूरख अंध गवारि। दूजै भाइ

बहुतु दुखु लागा जलता करे पुकार। जिन कारणि गुरू विसारिआ से न उपकरे अंती वार। नानक गुरमती सुखु पाइआ बखसे बखसणहार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे आपि आपि सभु करता कोई दूजा होइ सु अवरो कहीऐ। हरि आपे बोलै आपि बुलावै हरि आपे जलि थलि रवि रहीऐ। हरि आपे मारै हरि आपे छोडै मन हरि सरणी पड़ि रहीऐ। हरि बिनु कोई मारि जीवालि न सकै मन होइ निचिंद निसलु होइ रहीऐ। उठदिआ बहदिआ सुतिआ सदा सदा हरि नामु धिआईऐ जन नानक गुरमुखि हरि लहीऐ ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु

॥ सलोकु महला ३ ॥ जितना यह संसार है, इसमें प्रत्येक जीव सतिगुरु के दर्शन करता है। लेकिन केवल मात्र दर्शन करने से मुक्ति की प्राप्ति नहीं होती। जब तक जीव सतिगुरु के उपदेश का चिन्तन नहीं करता, तब तक अहंकार रूपी मैल दूर नहीं होता और प्रभु के नाम में प्रेम नहीं उपजता। कितने ही मनुष्यों को प्रभु ने कृपा करके (अपने में) मिला लिया है, जिन्होंने मेरा-तेरा और विकार छोड़ दिए हैं। हे नानक ! कितने ही मनुष्य सतिगुरु का दर्शन करके, सतिगुरु के प्रेम में मन लगाकर और मरकर (अर्थात् अहंत्वभाव दूर करके) हरि में मिल गए हैं ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ अन्धे, मूर्ख, गँवार व्यक्ति ने सतिगुरु की सेवा नहीं की, माया के प्रेम में जब बहुत दुखी होता है, तब जलता हुआ बचाव के लिए प्रार्थना करता है। जिनके लिए सतिगुरु को भुलाया है, वे अन्तिम समय में नहीं पहुँचे। हे नानक ! गुरु की शिक्षा द्वारा ही सुख मिलता है और क्षमा-शील हरि क्षमा करता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे हरि ! तुम आप ही आप हो और आप ही सब कुछ पैदा करते हो; किसी और दूसरे को पैदा करनेवाला तभी कहें, यदि कोई दूसरा होवे। हरि आप ही जीवों में बोलता है, आप ही सबको बुलाता है और आप ही जल, थल में परिव्याप्त है। हे मन ! हरि आप ही मारता है, आप ही बख्शता है, इसलिए हरि की शरण में रह। हरि के अतिरिक्त दूसरा कोई न मार सकता है, न जिला सकता है, इसलिए निश्चिन्त होकर रह। हे दास नानक ! यदि उठते-बैठते और सोते हुए प्रतिपल हरि का नाम स्मरण करें, तो सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर हरि मिल जाता है ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सोरठि महला १ घरु १ चउपदे ॥ सभना मरणा आइआ वेछोड़ा सभनाह । पुछहु जाइ सिआणिआ आगै मिलणु किनाह । जिन मेरा साहिबु वीसरै वडड़ी वेदन तिनाह ॥ १ ॥ भी सालाहिहु साचा सोइ । जाकी नदरि सदा सुखु होइ ॥रहाउ॥ वडा करि सालाहणा हैभी होसी सोइ । सभना दाता एकु तू माणस दाति न होइ । जो तिसु भावै सो थीऐ रंन कि रुंनै होइ ॥ २ ॥ धरती उपरि कोट गड़ केती गई वजाइ । जो असमानि न मावनी तिन नकि नथा पाइ । जे मन जाणहि सूलीआ काहे मिठा खाहि ॥ ३ ॥ नानक अउगुण जेतड़े तेते गली जंजीर । जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर । अगै गए न मंनीअनि मारि कढहु वेपीर ॥ ४ ॥ १ ॥

(प्रभु को विस्मृत करनेवाले) सब जीवों को प्रभु-चरणों से विछोह रहता है, वे जन्मते-मरते रहते हैं। किसी गुरमुख से जाकर पता लीजिए कि परमात्मा के चरणों का मिलाप किन्हें होता है ? जिन व्यक्तियों को प्यारा मालिक-प्रभु भूल जाता है, उन्हें बड़ा भारी आत्मिक क्लेश बना रहता है ॥ १ ॥ हे भाई ! बार-बार उस सत्यस्वरूप परमात्मा की गुणस्तुति करते रहो। उसी की कृपादृष्टि से स्थायी सुख मिलता है ॥ रहाउ ॥ वह परमात्मा अब भी मौजूद है, भविष्य में भी मौजूद रहेगा। उसकी गुणस्तुति करो कि तू सर्वोपरि दाता है। तू सब जीवों को सब देन देनेवाला है, मनुष्य बेचारे के क्या वश में है कि कोई देनें दे सके ! जो कुछ प्रभु को उपयुक्त लगता है, वही होता है। स्त्रियों की तरह रोने से कोई लाभ नहीं हो सकता ॥ २ ॥ इस पृथ्वी पर बहुत से आए, जो किले आदि बनाकर, ढोल बजाकर चले गए। जो अपनी शक्ति के अभिमान में इतनी कमर अकड़ाते फिरते थे कि जैसे आसमान के नीचे भी नहीं समाएँगे, वह परमात्मा उनका अभिमान भी तोड़ता है। इसलिए, हे मन ! यदि तू यह समझ ले कि दुनिया में आनन्द-मस्ती का नतीजा दुख, क्लेश ही है, तो तू दुनियावी भोगों में क्यों मस्त रहे ? ॥३॥ हे नानक ! हम जितने भी पाप-विकार करते हैं, ये सब पाप-विकार हमारे गले में बन्धन

बन जाते हैं। ये पाप-बन्धन अर्थात् जंजीर तभी काटी जा सकती हैं, यदि हमारे पास गुण हों। गुण ही वास्तविक मित्र और भाई हैं। (इस लोक से) हमारे साथ गए पाप-विकार (परलोक में) आदर नहीं पाते। इन अनियन्त्रित लोगों को मारकर अपने भीतर से निकाल दें ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ सोरठि महला १ घरु १ ॥ मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु। नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु। भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥ १ ॥ बाबा माइआ साथि न होइ। इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ रहाउ ॥ हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु। सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिसनो रखु। वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥ २ ॥ सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु। खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु। निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥ ३ ॥ लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु। बंनु बदीआ करि धावणी ताको आखै धंनु। नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वंनु ॥ ४ ॥ २ ॥

(स्थायी धन की प्राप्ति के लिए) मन को हलचालक बना, उच्च आचरण को हल जोतने का काम समझ। मेहनत (नाम रूपी फसल के लिए) पानी है और शरीर लहलहाती खेती है। सन्तोष (नाम-बीज को तृष्णा-पक्षियों से बचाने के लिए) सुहागा है, सादा जीवन (नाम-फसल की देखभाल के लिए) रक्षक है। (इस खेती में हल जोतने से शरीर-खेती में) परमात्मा की कृपा से प्रेम उपजेगा। देखो, (जिन्होंने यह खेती की) वे हृदय (नाम-धन से) धनवान हो गए ॥१॥ हे भाई! माया जीव के साथ नहीं जाती। (कैसी विचित्रता है कि) इस माया ने समस्त संसार को अपने वश में किया हुआ है। इस (रहस्य को) कोई विरला मनुष्य ही जानता है (कि यह स्थायी धन नहीं है) ॥ रहाउ ॥ उम्र के प्रत्येक श्वास को दुकान बना, इस दुकान में सत्यस्वरूप हरि-नाम रूपी सौदा बना। अपनी सुरति और वैचारिकता को बर्तनों की कतार बना। इस बर्तनों की दुकान में हरि-नाम रूपी सौदे को डाल। इन नाम-व्यापार करनेवाले सत्संगियों के साथ मिलकर तू भी हरि-नाम का व्यापार कर। इस व्यापार की कमाई होगी मन की प्रसन्नता ॥ २ ॥ हे भाई! धार्मिक पुस्तकों का उपदेश सुना कर, यह हरि-नाम की सौदागरी है। सौदागरी का माल

लादने के लिए सदाचरण को घोड़े बनाकर चल। शुभ गुणों को जीवन-यात्रा का खर्च बना। हे मन! इस व्यापार के उद्यम को कल के लिए न टाल। यदि तू इस व्यापार के द्वारा परमात्मा के देश में टिक जाए अर्थात् प्रभु के चरणों में जगह पाए, तो आत्मिक सुख में जगह बना पाएगा ॥ ३ ॥ हे भाई! पूर्ण ध्यानपूर्वक प्रभु की नौकरी कर। तू भी परमात्मा-मालिक के नाम को मन में दृढ़ कर —यही प्रभु की सेवा है। विकारों को अपने निकट आने दें —यही परमात्मा की नौकरी के लिए की जानेवाली भाग-दौड़ है। यदि तू उद्यम करेगा तो प्रत्येक व्यक्ति तुझे धन्य कहेगा। हे नानक! यह नौकरी करने से प्रभु तुझे कृपादृष्टि से देखेगा, तेरी आत्मा पर चौगुना आत्मिक रूप चढ़ेगा ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ सोरठि म० १ चउतुके ॥ माइ बाप को बेटा नीका ससुरै चतुरु जवाई। बाल कंनिआ कौ बापु पिआरा भाई कौ अति भाई। हुकमु भइआ बाहरु घरु छोडिआ खिन महि भई पराई। नामु दानु इसनानु न मनमुखि तितु तनि धूड़ि धुमाई ॥ १ ॥ मनु मानिआ नामु सखाई। पाइ परउ गुर कै बलिहारै जिनि साची बूझ बुझाई ॥ रहाउ ॥ जग सिउ झूठ प्रीति मनु बेधिआ जनसिउ वादु रचाई। माइआ मगनु अहिनिसि मगु जोहै नामु न लेवै मरै बिखु खाई। गंधण वैणि रता हितकारी सबदै सुरति न आई। रंगि न राता रसि नही बेधिआ मनमुखि पति गवाई ॥ २ ॥ साध सभा महि सहजु न चाखिआ जिहबा रसु नही राई। मनु तनु धनु अपुना करि जानिआ दर की खबरि न पाई। अखी मीटि चलिआ अंधिआरा घरु दरु दिसै न भाई। जम दरि बाधा ठउर न पावै अपुना कीआ कमाई ॥ ३ ॥ नदरि करे ता अखी वेखा कहणा कथनु न जाई। कंनी सुणि सुणि सबदि सलाही अंम्रितु रिदै वसाई। निरभउ निरंकारु निरवैरु पूरन जोति समाई। नानक गुर विणु भरमु न भागै सचि नामि वडिआई ॥ ४ ॥ ३ ॥

जो मनुष्य कभी माँ-बाप का प्रिय पुत्र था, कभी ससुर का समझदार दामाद था, कभी बेटे-बेटी के लिए प्यारा पिता था और भाई का अत्यन्त स्नेही भाई था; (लेकिन) जब अकालपुरुष का हुक्म हुआ तो उसने घरबार त्याग दिया, एक पलक में सब कुछ पराया हो गया। स्वेच्छाचारी व्यक्ति ने न नाम जपा, न सेवा की और न सदाचरण किया। इस मनुष्य-शरीर के द्वारा बरबादी करता रहा ॥ १ ॥ जिस गुरु का मन गुरु के उपदेश में

विश्वस्त होता है, वह परमात्मा के नाम को वास्तविक समझता है। मैं तो गुरु के चरण स्पर्श करता हूँ, गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने यह सुबुद्धि प्रदान की है ॥ रहाउ ॥ मनुष्य का मन जगत के प्रति मिथ्या मोह में आबद्ध है, वह सन्तों से झगड़ा किए रखता है। माया में मस्त वह दिन-रात माया का मार्ग ही ताकता रहता है, परमात्मा का नाम कभी स्मरण नहीं करता और इस प्रकार विष खा-खाकर आत्मिक मौत मर जाता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य गन्दे गीतों में मस्त रहता है, गन्दे गीतों से ही उसका लगाव होता है, परमात्मा की गुणस्तुति वाली वाणी में उसकी सुरति नहीं लगती। न वह परमात्मा के प्रेम में अनुरक्त होता है, न उसे नाम-रस में खिचाव महसूस होता है, (वह) मनमुख इसी प्रकार अपनी प्रतिष्ठा गवाँ लेता है ॥ २ ॥ सत्संगति में जाकर मनमुख कभी भी आत्मिक स्थिरता का आनन्द नहीं महसूसता, उसकी जिह्वा को नाम जपने का आस्वादन तनिक मात्र भी नहीं आता। मनमुख अपने मन, तन, धन को अपना समझ बैठता है, परमात्मा के द्वार की उसे कोई ख़बर नहीं आती। मनमुख अन्धा होकर आँखें बन्द करके मार्ग तय करता है। हे भाई! परमात्मा का द्वार, गृह उसे कभी दिखता ही नहीं। आख़िर अपने किए का यह फल पाता है कि यमराज के द्वार पर आबद्ध हो चोटें खाता है और इससे बचने के लिए उसे कोई अवलम्ब नहीं मिलता ॥ ३ ॥ यदि प्रभु आप कृपादृष्टि करे तभी मैं उसे आँखों से देख सकता हूँ, उसके गुणों का बखान नहीं किया जा सकता। (प्रभु-कृपा होने पर ही) कानों से उसकी गुणस्तुति सुन-सुनकर गुरु के उपदेश के द्वारा उसकी गुणस्तुति मैं कर सकता हूँ और स्थायी आत्मिक जीवन देनेवाला उसका नाम हृदय में बसा सकता हूँ। हे नानक! प्रभु निर्भय है, निराकार है, निर्वैर है, उसकी ज्योति सारे जगत में पूर्ण तौर पर व्यापक है, उसके सत्यस्वरूप नाम में टिकने से ही आदर मिलता है, लेकिन गुरु की शरण के बिना मन की दुबिधा दूर नहीं होती ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ सोरठि महला १ दुतुके ॥ पुड़ु धरती पुड़ु पाणी आसणु चारि कुंट चउबारा। सगल भवण की मूरति एका मुखि तेरै टकसाला ॥ १ ॥ मेरे साहिबा तेरे चोज विडाणा। जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा आपे सरब समाणा ॥ रहाउ ॥ जह जह देखा तह जोति तुमारी तेरा रूपु किनेहा। इकतु रूपि फिरहि परछंना कोइ न किसही जेहा ॥ २ ॥ अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता। एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता ॥ ३ ॥ तेरे गुण बहुते मै एकु न जाणिआ मै

मूरख किछु दीजै । प्रणवति नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजै ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे प्रभु ! यह सारी सृष्टि तेरा चौबारा है, चारों ओर उस चौबारे की दीवारें हैं, धरती उस चौबारे का फ़र्श है, आकाश उस चौबारे की छत है, इस चौबारे में तुम्हारा निवास है । सारी सृष्टि की मूर्तियाँ तुम्हारी ही श्रेष्ठ टकसाल में बनाई गई हैं ॥ १ ॥ हे मेरे मालिक ! तुम्हारे कौतुक आश्चर्यजनक हैं । तुम पानी में, पृथ्वी में और पृथ्वी के ऊपर (शून्य में) व्यापक हो । तुम स्वयं ही सर्वत्र मौजूद हो ॥ रहाउ ॥ मैं जिस ओर देखता हूँ, तुम्हारी ही ज्योति (प्रकाशित) है, लेकिन तुम्हारा स्वरूप कैसा है (यह अनिर्वचनीय है) । तुम आप ही आप होते हुए भी इन अनन्त जीवों में लुक-छिपकर वर्तमान हो, लेकिन फिर भी कोई जीव दूसरे से बिल्कुल नहीं मिलता ॥२॥ अण्डज, जेरज, उद्भिज, स्वेदज —सभी प्रकार के जीव तुम्हारे द्वारा उत्पादित हैं, लेकिन मैं तुम्हारी आश्चर्यजनक क्रीड़ा देखता हूँ कि तुम इन सब जीवों में मौजूद हो ॥३॥ नानक विनती करता है कि हे प्रभु ! तुम्हारे गुण अनेक हैं, लेकिन मुझे किसी एक की भी समझ नहीं है । हे मेरे मालिक ! सुनो, मुझ बुद्धिहीन को सुबुद्धि दीजिए, मैं विकारों में डूबा हुआ हूँ, जिस प्रकार पत्थर पानी में डूब जाता है । मुझे निकाल लो ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ सोरठि महला १ ॥ हउ पापी पतितु परम पाखंडी तू निरमलु निरंकारी । अंम्रितु चाखि परम रसि राते ठाकुर सरणि तुमारी ॥ १ ॥ करता तू मै माणु निमाणे । माणु महतु नामु धनु पलै साचै सबदि समाणे ॥ रहाउ ॥ तू पूरा हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे । तुझ ही मन राते अहिनिसि परभाते हरि रसना जपि मनरे ॥ २ ॥ तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे । अहिनिसि नामि रते से सूचे मरि जनमे से काचे ॥३॥ अवरु न दीसै किसु सालाही तिसहि सरीकु न कोई । प्रणवति नानकु दासनिदासा गुरमति जानिआ सोई ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मेरे ठाकुर ! मैं विकारी हूँ । हमेशा विकारग्रस्त रहता हूँ, बड़ा ही पाखण्डी हूँ, तुम पवित्र निरंकार हो । जो व्यक्ति तुम्हारी शरण लेते हैं, वे सत्यस्वरूप जीवन देनेवाला तुम्हारा नाम-रस चखकर उस सर्वोच्च रस में मस्त रहते हैं ॥ १ ॥ हे मेरे कर्तार ! मुझ तुच्छ जीव का तुम ही सहारा हो (लौकिक धन-वैभव या गुण मेरे पास नहीं है) । जिनके पास परमात्मा का नाम-धन है, जो गुरु-उपदेश के द्वारा सत्यस्वरूप प्रभु में लीन

रहते हैं, उन्हें ही आदर मिलता है, उन्हें ही प्रशंसा मिलती है ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम गुणों से आपूरित हो, हम जीव अधूरे हैं और ओछे हैं। तुम गम्भीर हो, हम हल्के (चंचल) हैं। लेकिन, हे प्रभु ! जिनके मन दिन-रात प्रतिपल तुम्हारे प्रेम में रँगे रहते हैं (उन्हें तुम अपने चरणों में जगह देते हो)। हे मेरे मन ! तू भी जिह्वा से परमात्मा का नाम जप (तेरे भीतर भी प्रभु-प्रेम से शुभ गुण पैदा हो जाएँगे) ॥ २ ॥ हे प्रभु ! तुम सत्यस्वरूप हो; यदि हम जीव तुम्हारी स्मृति में टिक रहें, यदि हम तेरी गुणस्तुति के ज्ञान में लीन रहें, तो हम भी स्थिरचित्त हो सकते हैं। जो मनुष्य रात-दिन तेरे नाम में रँगे रहते हैं, वे पवित्र-आत्मा हैं; (लेकिन नाम विस्मृत करके) जो जन्म-मरण के चक्र में पड़े हैं, उनके मन की बनावट दोषपूर्ण है ॥ ३ ॥ परमात्मा के तुल्य कोई नहीं है, कोई दूसरा उस जैसा मुझे नहीं दिखाई देता, जिसकी मैं गुणस्तुति कर सकूँ। नानक प्रार्थना करता है कि मैं उनके दासों का दास हूँ, जिन्होंने गुरु की शिक्षा स्वीकार कर उस परमात्मा के साथ तादात्म्य कर लिया है ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ सोरठि महला १ ॥ अलख अपार अगंम अगोचर ना तिसु कालु न करमा। जाति अजाति अजोनी संभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥ १ ॥ साचे सचिआर विटहु कुरबाणु। ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ साचै सबदि नीसाणु ॥ रहाउ ॥ ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न नारी। अकुल निरंजन अपर परंपरु सगली जोति तुमारी ॥ २ ॥ घट घट अंतरि ब्रहमु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई। बजर कपाट मुकते गुरमती निरभै ताड़ी लाई ॥ ३ ॥ जंत उपाइ कालु सिरि जंता वसगति जुगति सबाई। सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥ ४ ॥ सूचै भाडै साचु समावै विरले सूचा चारी। तंतै कउ परमतंतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥ ५ ॥ ६ ॥

वह परमात्मा अदृश्य, अनन्त और अपहुँच है, मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियाँ उसे नहीं समझ सकतीं, मृत्यु उसे स्पर्श नहीं कर सकती, कर्मों का उस पर कोई दबाव नहीं होता। उस प्रभु की कोई जाति नहीं, वह योनियों में नहीं पड़ता, उसका प्रकाश अपने आप से है। न उसे कोई मोह होता है और न उसे कोई दुबिधा है ॥ १ ॥ मैं उस परमात्मा पर सदा बलिहारी हूँ, जो सत्यस्वरूप है और सत्य का स्रोत है। उस परमात्मा का न कोई रूप है, न रंग है और न चिह्न, चक्र है। सच्चे शब्द की साधना से उसका पता

लगता है ॥ रहाउ ॥ उस प्रभु की न कोई माँ, न पिता और न उसका कोई पुत्र या रिश्तेदार है। न उसे कोई कामवासना उत्पन्न होती है और न उसकी कोई पत्नी है। उसका कोई विशेष वंश नहीं है, वह माया के प्रभाव से परे है, अनन्त और अपरम्पार है। हे प्रभु ! सर्वत्र तुम्हारी ज्योति ज्योतिर्मान है ॥ २ ॥ प्रत्येक शरीर के भीतर प्रभु गुप्त होकर बैठा हुआ है, प्रत्येक शरीर, प्रत्येक स्थान में उसकी ज्योति है। गुरुजी की शिक्षा पर चलकर जिस मनुष्य के यह सख्त दरवाज़े खुलते हैं, उसे यह समझ आती है कि हर प्राणी में व्याप्त होकर भी प्रभु निर्भय अवस्था में टिका बैठा है ॥ ३ ॥ सब जीवों को उत्पन्न करके सबके सिर पर परमात्मा ने मृत्यु टिकाई हुई है, सब जीवों की जीवनयुक्ति प्रभु ने अपने नियन्त्रण में रखी हुई है। जो मनुष्य गुरु द्वारा बतलाए मार्ग पर चलकर नाम-पदार्थ प्राप्त करते हैं, वे गुरु-ज्ञान की कमाई करके मुक्त हो जाते हैं ॥ ४ ॥ पवित्र हृदय में ही सत्यस्वरूप परमात्मा टिक सकता है, लेकिन (ऐसे) सदाचारी कुछ विरले व्यक्ति ही होते हैं। (गुरु द्वारा जीव को पवित्रमना बनाकर) परमात्मा जीव को मिलाता है। नानक की विनती है कि हे प्रभु ! मैं तेरी शरण में हूँ ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ सोरठि महला १ ॥ जिउ मीना बिनु पाणीऐ तिउ साकतु मरै पिआस। तिउ हरि बिनु मरीऐ रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥ १ ॥ मन रे राम नाम जसु लेइ। बिनु गुर इहु रसु किउ लहउ गुरु मेलै हरि देइ ॥ रहाउ ॥ संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ। अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥ २ ॥ जिउ जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु संतोखु। तिउ नामै बिनु देहुरी जमु मारै अंतरि दोखु ॥ ३ ॥ साकत प्रेमु न पाईऐ हरि पाईऐ सतिगुर भाइ। सुखदुख दाता गुरु मिलै कहु नानक सिफति समाइ ॥ ४ ॥ ७ ॥

जिस प्रकार पानी के बिना मछली (की स्थिति) है, उसी प्रकार मायाग्रस्त जीव तृष्णा के अधीन होकर दुखी होता है। इसी प्रकार, हे मन ! हरि-स्मरण के बिना जो भी श्वास बीतता है, (उसमें) आत्मिक मृत्यु द्वारा (जीव मृत हो जाता है) ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! प्रभु के नाम की गुणस्तुति कर। गुरु की शरण लिये बिना यह आनन्द नहीं मिल सकता। प्रभु जिसे गुरु मिलाता है, उसे यह (आनन्द) देता है ॥रहाउ॥ सन्तजनों की संगति में मिलकर गुरु के सान्निध्य में रहना ही (वास्तविक) स्नान है। जिसे गुरु के दर्शन हो जाते हैं, उसे अड़सठ तीर्थों का स्नान प्राप्त हो जाता है ॥ २ ॥ जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं किया,

वह योगी (असफल है); यदि भीतर सन्तोष नहीं, सदाचरण नहीं तो तप व्यर्थ है। इसी प्रकार यदि प्रभु का नाम स्मरण नहीं किया, तो यह मनुष्य-शरीर व्यर्थ है। नाम-रहित शरीर के भीतर विकार ही विकार हैं, उसे यमराज सज़ा देता है ॥ ३ ॥ मायाग्रस्त जीवों से प्रभु-प्रेम प्राप्त नहीं होता, यह प्रेम गुरु के प्रति प्रेमभाव द्वारा ही प्राप्त होता है। नानक का कथन है कि जिस मनुष्य को गुरु मिल जाता है, उसे दुख-सुख का दाता प्रभु मिल जाता है, वह हमेशा प्रभु की गुणस्तुति में लीन रहता है ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ सोरठि महला १ ॥ तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ। मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥ १ ॥ घटि घटि रवि रहिआ बनवारी। जलि थलि महीअलि गुपतो वरतै गुरसबदी देखि निहारी जीउ ॥ रहाउ ॥ मरत पइआल अकासु दिखाइओ गुरि सतिगुरि किरपा धारी जीउ। सो ब्रहमु अजोनी है भी होनी घट भीतरि देखु मुरारी जीउ ॥ २ ॥ जनम मरन कउ इहु जगु बपुड़ो इनि दूजै भगति विसारी जीउ। सतिगुरु मिलै त गुरमति पाईऐ साकत बाजी हारी जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर बंधन तोड़ि निरारे बहुड़ि न गरभ मझारी जीउ। नानक गिआन रतनु परगासिआ हरि मनि वसिआ निरंकारी जीउ ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे प्रभु ! तुम हमें सब पदार्थ देनेवाले हो, देन देने में तुम कभी भी ग़लती नहीं करते, हम तुम्हारे भिखारी हैं। मैं तुमसे कौन सी वस्तु माँगूँ? कोई वस्तु सत्य नहीं है। हे हरि ! मुझे अपना नाम दो। मैं तुम्हारे नाम को प्रेम करूँ ॥ १ ॥ परमात्मा हरेक शरीर में व्याप्त है; पानी, पृथ्वी और आकाश में सर्वत्र मौजूद है, पर छिपा हुआ है। हे मन ! गुरु के शब्द द्वारा उसे देख ॥ रहाउ ॥ जिस पर सतिगुरु ने कृपा की, उसे उसने धरती, आकाश, पाताल सर्वत्र (परमात्मा) दिखा दिया। वह परमात्मा योनियों में नहीं आता, अब भी मौजूद है और आगे भविष्य में भी रहेगा। हे भाई ! उस प्रभु को तू हृदय में विद्यमान देख ॥ २ ॥ यह अभागा जगत जन्म-मरण के चक्र में पड़ गया है क्योंकि इसने माया-मोह के वशीभूत होकर प्रभु की भक्ति को विस्मृत कर दिया है। यदि सतिगुरु मिल जाए तो गुरु के उपदेश को स्वीकारने पर प्रभु-भक्ति प्राप्त होती है, लेकिन माया-ग्रस्त जीव (मनुष्य-जन्म की) बाज़ी (प्रभु-भक्ति के बिना) हार जाते हैं ॥ ३ ॥ हे सतिगुरु ! माया के बन्धन तोड़कर जिन व्यक्तियों को तुम माया से निर्लिप्त कर देते हो, वे पुनःपुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ते।

हे नानक ! जिनके भीतर परमात्मा के ज्ञान का रत्न चमक पड़ता है, उनके मन में हरि निरंकार आप आ बसता है ॥ ४ ॥ ८ ॥

॥ सोरठि महला १ ॥ जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अंम्रितु गुर पाही जीउ । छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥ १ ॥ मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ । बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अंम्रितु घट माही जीउ ॥ रहाउ ॥ अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ । सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ॥ २ ॥ अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ । निरमल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ ॥ ३ ॥ परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुरबचनी फलु पाही जीउ । जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥

जिस अमृत-भण्डार के लिए तुम जगत में आए हो, वह अमृत गुरु से ही मिलता है । लेकिन धार्मिक वेश का पहनावा छोड़ो, मन की चालाकी भी छोड़ो । इस द्विधाग्रस्त स्थिति में यह अमृत फल प्राप्त नहीं हो सकता ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! प्रभु-चरणों में टिका रह, कहीं भी बाहर न भटकता फिर । यदि तू बाहर ढूँढ़ने चल दिया, तो बहुत दुख पाएगा । अटल आत्मिक जीवन देनेवाला रस तेरे घर में ही है, तेरे हृदय में ही है ॥ रहाउ ॥ अवगुण त्यागकर गुण प्राप्त करने का प्रयत्न करो । यदि अवगुण ही करते रहोगे, तो पश्चाताप करना पड़ेगा । हे मन ! तू बार-बार मोह के कीचड़ में डूब रहा है, तू भले-बुरे की परख करनी नहीं जानता ॥ २ ॥ यदि भीतर लोभ का मैल है और कई ठगी के काम करते हो तो बाहर (तीर्थ आदि पर) स्नान करने का क्या लाभ ? भीतरी उच्च अवस्था तब ही बनेगी, यदि गुरु के बतलाए मार्ग पर चलकर सदा प्रभु का पवित्र नाम जपोगे ॥ ३ ॥ हे मन ! लोभ, निन्दा और झूठ त्याग । गुरु के उपदेश पर चलने से ही सत्यस्वरूप अमृत-फल मिलेगा । दास नानक का कथन है कि हे हरि ! जिस प्रकार तेरी रज़ा है, उसी प्रकार मुझे रख । गुरु के उपदेश में प्रवृत्त होकर मैं तेरी गुणस्तुति करता रहूँ ॥ ४ ॥ ९ ॥

॥ सोरठि महला १ पंचपदे ॥ अपना घरु मूसत राखि न साकहि की परघरु जोहन लागा । घरु दरु राखहि जे रसु चाखहि जो गुरमुखि सेवकु लागा ॥ १ ॥ मन रे समझु कवन

मति लागा । नामु विसारि अनरस लोभाने फिरि पछुताहि अभागा ।। रहाउ ।। आवत कउ हरख जात कउ रोवहि इहु दुखु सुखु नाले लागा । आपे दुख सुख भोगि भोगावै गुरमुखि सो अनरागा ।। २ ।। हरि रस ऊपरि अवरु किआ कहीऐ जिनि पीआ सो त्रिपतागा । माइआ मोहित जिनि इहु रसु खोइआ जा साकत दुरमति लागा ।। ३ ।। मन का जीउ पवन पति देही देही महि देउ समागा । जे तू देहि त हरि रसु गाई मनु त्रिपतै हरि लिवलागा ।।४।। साध संगति महि हरि रसु पाईऐ गुरि मिलिऐ जम भउ भागा । नानक राम नामु जपि गुरमुखि हरि पाए मसतकि भागा ।। ५ ।। १० ।।

हे मन ! तेरा अपना आत्मिक जीवन लूटा जा रहा है, उसे तू बचा नहीं सकता, दूसरों के दोष क्यों खोलता फिरता है ? अपना घर-बार तभी बचा सकेगा, यदि प्रभु के नाम का स्वाद चखेगा । वही सेवक है, जो गुरु के सान्निध्य में रहकर सेवा में लगता है ।। १ ।। हे मन ! होश कर, किस दुर्बुद्धि में लग गया है ? हे अभागे ! परमात्मा का नाम भुलाकर दूसरे स्वादों में मस्त हो रहा है, समय बीतने पर पछताएगा ।। रहाउ ।। हे मन ! तू आते हुए धन को देख खुश होता है, जाते को देखकर रोता है। यह दुख और सुख तेरे साथ ही चिपटा आ रहा है । प्रभु स्वयं दुखों और सुखों के भोग में प्रवृत्त कर (दुख-सुख) कटाता है । वह मनुष्य निर्लिप्त रहता है, जो गुरु द्वारा बतलाए मार्ग पर चलता है ।। २ ।। परमात्मा के नाम-रस से श्रेष्ठ कोई दूसरा रस नहीं कहा जा सकता । जिस मनुष्य ने यह रस पान किया है, वह तृप्त हो जाता है । लेकिन जिस मनुष्य ने माया-मोह में फसकर यह रस गवाँ लिया है, वह मायाग्रस्त जीवों की दुर्बुद्धि में जा लगता है ।। ३ ।। जो प्रकाश रूपी परमात्मा हमारे मन का अवलम्ब है, प्राणों का मालिक है, शरीर का मालिक है, वह हमारे शरीर में ही मौजूद है । हे प्रभु ! यदि तुम मुझे स्वयं अपने नाम का रस दो, तभी मैं तुम्हारे गुण गा सकता हूँ । जिस मनुष्य की सुरति हरि-स्मरण में लगती है, उसका मन माया की ओर से निर्लिप्त हो जाता है ।। ४ ।। हे नानक ! सत्संगति में ही परमात्मा के नाम का रस प्राप्त हो सकता है । यदि गुरु मिल जाए तो मृत्यु का भय दूर हो जाता है । जिस मनुष्य के मस्तक पर सौभाग्य प्रकट हो जाए, वह गुरु द्वारा बतलाए मार्ग पर चलकर परमात्मा का नाम स्मरण करके तादात्म्य प्राप्त कर लेता है ।। ५ ।। १० ।।

।। सोरठि महला १ ।। सरब जीआ सिरि लेखु धुराहू

बिनु लेखै नही कोई जीउ । आपि अलेखु कुदरति करि देखै हुकमि चलाए सोई जीउ ॥ १ ॥ मन रे राम जपहु सुखु होई । अहिनिसि गुर के चरन सरेवहु हरि दाता भुगता सोई ॥ रहाउ ॥ जो अंतरि सो बाहरि देखहु अवरु न दूजा कोई जीउ । गुरमुखि एक द्रिसटि करि देखहु घटि घटि जोति समोई जीउ ॥ २ ॥ चलतौ ठाकि रखहु घरि अपनै गुर मिलिऐ इह मति होई जीउ । देखि अद्रिसटु रहउ बिसमादी दुखु बिसरै सुखु होई जीउ ॥ ३ ॥ पीवहु अपिउ परम सुखु पाईऐ निज घरि वासा होई जीउ । जनम मरण भव भंजनु गाईऐ पुनरपि जनमु न होई जीउ ॥ ४ ॥ ततु निरंजनु जोति सबाई सोहं भेदु न कोई जीउ । अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुर मिलिआ सोई जीउ ॥ ५ ॥ ११ ॥

परमात्मा द्वारा सब जीवों के मस्तक पर पूर्वकृत कर्मों के संस्कारों का लेख लिखा है । कोई जीव ऐसा नहीं है, जिस पर इस लेख का प्रभाव न हो । केवल परमात्मा इस लेख से स्वतन्त्र है, जो इस प्रकृति की सृजना कर इसकी देखभाल करता है और अपने हुक्म अनुसार जगत को चला रहा है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! सदा राम का नाम जपो, इससे आत्मिक सुख मिलेगा । दिन-रात उस सर्वोपरि मालिक के चरणों का ध्यान करो, वह हरि देन देनेवाला है और आप ही व्यापक होकर भोगनेवाला है ॥ रहाउ ॥ हे मेरे मन ! जो प्रभु मेरे भीतर विद्यमान है, उसे बाहर सर्वत्र देख । उसके अतिरिक्त उस जैसा कोई नहीं है । गुरु द्वारा बतलाए मार्ग पर चलकर उस एक को देखनेवाली नज़र बना, फिर तुम्हें दिख पड़ेगा कि हर एक शरीर में परमात्मा की ही ज्योति मौजूद है ॥ २ ॥ इस बाहर भटकते मन को रोककर अपने भीतर टिकाकर रख । लेकिन गुरु को मिलकर ही यह बुद्धि होती है । मैं तो उस अदृश्य प्रभु को देखकर विस्माद अवस्था में पहुँच जाता हूँ । जो भी यह दर्शन करता है, उसका दुख मिट जाता है, उसे आत्मिक आनन्द मिल जाता है ॥ ३ ॥ अटल आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-रस पान करो, जिसके द्वारा सर्वोत्कृष्ट आत्मिक आनन्द मिलता है और अपने घर में ठिकाना हो जाता है । हे भाई ! जन्म-मरण का चक्र नष्ट करनेवाले प्रभु की गुणस्तुति करनी चाहिए, इससे बार-बार जन्म नहीं होता ॥ ४ ॥ परमात्मा समस्त जगत का तत्व है, माया के प्रभाव से रहित है, प्रभु पारब्रह्म अपरम्पार है और सर्वोत्कृष्ट मालिक है । हे नानक ! जो मनुष्य गुरु को मिलता है, उसे उस प्रभु की ज्योति सर्वत्र सुशोभित दृष्टिगोचर होती है, जिसमें कोई दूरी या भेदभाव नहीं है ॥ ५ ॥ ११ ॥

सोरठि महला १ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। जा तिसु भावा तदही गावा । ता गावे का फलु पावा । गावे का फलु होई । जा आपे देवै सोई ।। १ ।। मन मेरे गुरबचनी निधि पाई । ताते सच महि रहिआ समाई ।। रहाउ ।। गुर साखी अंतरि जागी । ता चंचल मति तिआगी । गुर साखी का उजीआरा । ता मिटिआ सगल अंध्यारा ।। २ ।। गुरचरनी मनु लागा । ता जम का मारगु भागा । भै विचि निरभउ पाइआ । ता सहजै कै घरि आइआ ।। ३ ।। भणति नानकु बूझै को बीचारी । इसु जग महि करणी सारी । करणी कीरति होई । जा आपे मिलिआ सोई ।। ४ ।। १ ।। १२ ।।

जब मैं उसे (प्रभु को) अच्छा लगता हूँ, तभी मैं उसकी गुणस्तुति कर सकता हूँ। (और) तब ही मैं गुणस्तुति करने का फल प्राप्त कर सकता हूँ। गुणस्तुति करने का फल तभी मिल सकता है, जब वह प्रभु आप देता है ।।१।। हे मेरे मन ! जिस मनुष्य ने गुरु के उपदेशों पर चलकर गुण-कथन का खज़ाना प्राप्त कर लिया, वह उसके प्रभाव से हमेशा सत्यस्वरूप परमात्मा (की स्मृति) में टिका रहता है ।। रहाउ ।। जब जिस मनुष्य के भीतर सतिगुरु की ज्योति जग जाती है, तब वह मनुष्य वह बुद्धि छोड़ देता है, जो माया की ओर उसे भटकाती रहती है। जब मनुष्य के भीतर गुरु के उपदेश का प्रकाश होता है, तब उसके भीतर से सारा अँधेरा दूर हो जाता है ।। २ ।। जब जिस मनुष्य का मन गुरु के चरणों में लगता है, तब उस मनुष्य का वह जीवन-मार्ग समाप्त हो जाता है, जिस पर चलने से आत्मिक मृत्यु हो रही थी। परमात्मा के भय-सम्मान में रहकर जब मनुष्य निर्भय प्रभु के साथ मिलाप प्राप्त करता है, तब वह स्थिर आत्मिक अवस्था के घर में टिक जाता है ।। ३ ।। लेकिन, नानक का कथन है कि यह कोई ज्ञानी ही समझता है कि इस ज़िन्दगी में परमात्मा की गुणस्तुति ही श्रेष्ठ करणीय कर्म है। जब प्रभु आप प्रकट होता है, तब उसे गुणस्तुति का श्रेष्ठ कर्म मिल जाता है ।। ४ ।। १ ।। १२ ।।

सोरठि महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। सेवक सेव करहि सभि तेरी

जिन सबदै सादु आइआ। गुर किरपा ते निरमलु होआ जिनि विचहु आपु गवाइआ। अनदिनु गुण गावहि नित साचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर हम बारिक सरणि तुमारी। एको सचा सचु तू केवलु आपि मुरारी ॥ रहाउ ॥ जागत रहे तिनी प्रभु पाइआ सबदे हउमै मारी। गिरही महि सदा हरि जन उदासी गिआन तत बीचारी। सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि राखिआ उरधारी ॥ २ ॥ इहु मनूआ दहदिसि धावदा दूजै भाइ खुआइआ। मनमुख मुगधु हरिनामु न चेतै बिरथा जनमु गवाइआ। सतिगुरु भेटे ता नाउ पाए हउमै मोहु चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरिजन साचे साचु कमावहि गुर कै सबदि बीचारी। आपे मेलि लए प्रभि साचै साचु रखिआ उरधारी। नानक नावहु गति मति पाई एहा रासि हमारी ॥ ४ ॥ १ ॥

हे प्रभु ! तुम्हारे जिन सेवकों को गुरु के शब्द का रस आ जाता है, वही सारे तुम्हारी सेवा-भक्ति करते हैं। जिस मनुष्य ने गुरु-कृपा से अपना अहंत्वभाव दूर कर लिया, वह पवित्र हो जाता है। जो मनुष्य गुरु के शब्द में लगकर प्रतिपल सत्यस्वरूप प्रभु के गुण गाते रहते हैं, वे सुन्दर जीवन वाले बन जाते हैं ॥ १ ॥ हे मेरे मालिक-प्रभु ! हम तुम्हारे बच्चे हैं, तुम्हारे शरणागत हैं। केवल एक तुम ही सत्यस्वरूप हो ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य गुरु के शब्द द्वारा अहंत्व समाप्त कर लेते हैं, वे सचेत रहते हैं। उन्हें ही परमात्मा का मिलाप प्राप्त होता है। परमात्मा के भक्त गुरु-प्रदत्त वास्तविक ज्ञान के द्वारा ज्ञानी होकर गृहस्थ में रहते हुए ही माया से विरक्त रहते हैं। वे भक्त गुरु की बताई सेवा करके सदा आत्मिक आनन्द महसूसते हैं और परमात्मा को अपने हृदय में बसाए रखते हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! यह अल्हड़ मन माया-मोह में फँसकर दसों दिशाओं में दौड़ता रहता है और सन्मार्ग से भटका रहता है। स्वेच्छाचारी मूर्ख मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण नहीं करता, अपना जीवन व्यर्थ गवाँ जाता है। लेकिन जब उसे गुरु मिलता है, तब वह हरि-नाम की देन प्राप्त करता है और अपने भीतर से माया का मोह तथा अहंत्व दूर कर लेता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! गुरु के शब्द के द्वारा ज्ञानी बनकर परमात्मा के दास सत्यस्वरूप प्रभु के सत्यस्वरूप नाम-स्मरण की कमाई करते रहते हैं। सत्यस्वरूप परमात्मा द्वारा आप ही उन्हें अपने चरणों में जगह दी होती है। वे सत्यस्वरूप प्रभु को अपने हृदय में बसाए रखते हैं। नानक का कथन है कि परमात्मा के नाम से ही उच्च आत्मिक अवस्था तथा सुबुद्धि प्राप्त होती है। परमात्मा का नाम ही हमारा धन है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ सोरठि महला ३ ॥ भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हरि धनु सचु सोइ। अखुटु नाम धनु कदे निखुटै नाही किनै न कीमति होइ। नाम धनि मुख उजले होए हरि पाइआ सचु सोइ॥ १॥ मन मेरे गुरसबदी हरि पाइआ जाइ। बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाइ॥ रहाउ॥ इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा। अंम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा। अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा॥ २॥ हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न चलदिआ नालि। गुरमुखि होवै सु नामु धिआवै सदा हरिनामु समालि। सची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि॥ ३॥ सतिगुर गिआनु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा। अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा। नानक राम नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा॥ ४॥ २॥

गुरु भक्तजनों को परमात्मा की भक्ति का खज़ाना देता है, परमात्मा का नाम ऐसा धन है, जो सत्यस्वरूप है। हरि का नाम-धन अक्षुण्ण है, यह कभी समाप्त नहीं होता, किसी से इसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। जिन्होंने यह सत्यस्वरूप हरि-धन प्राप्त कर लिया, उन्हें इस नाम-धन द्वारा प्रतिष्ठा मिलती है॥ १॥ हे मेरे मन! गुरु के शब्द द्वारा परमात्मा मिल सकता है, शब्द के बिना जगत कुमार्गगामी हो भटकता फिरता है, (आगे परलोक में भी) प्रभु-दरबार में वह दण्ड सहता है॥ रहाउ॥ हे भाई! इस शरीर में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पाँच चोर बसते हैं, आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-धन लूटते रहते हैं, स्वेच्छाचारी मनुष्य इस (रहस्य) को समझते नहीं। (प्रभु-प्राप्ति में) कोई उनकी पुकार नहीं सुनता। माया-मोह में अन्धा जगत अन्धों वाली करतूत करता रहता है, गुरु के बिना (इस आत्मिक जीवन के मार्ग में) घोर अन्धकार छाया रहता है॥ २॥ 'मैं बड़ा हूँ', 'यह लौकिक धन, पदार्थ मेरा है'—ऐसा कह-कहकर दुखी होते रहते हैं, लेकिन जगत से विदा होते वक्त कोई वस्तु भी किसी के साथ नहीं जाती। जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहता है, वह हमेशा परमात्मा के नाम को हृदय में टिकाकर नाम-स्मरण करता रहता है, वह सत्यस्वरूप गुणस्तुति की वाणी के द्वारा परमात्मा के गुण गाता रहता है। परमात्मा की कृपादृष्टि द्वारा वह हमेशा सुखी रहता है॥ ३॥ जिनके हृदय में गुरु का दिया ज्ञान

प्रकाश किए रखता है, उनका हुक्म बादशाहों के सिर पर भी चलता है, वे हर वक्त परमात्मा की भक्ति करते रहते हैं, वे हरि-नाम का लाभ प्राप्त करते हैं, जो शाश्वत है। हे नानक ! परमात्मा के नाम के द्वारा संसार से उद्धार हो जाता है, जो मनुष्य गुरु के उपदेश द्वारा हरि-नाम के रंग में रँगे रहते हैं, प्रभु उनके निकट रहता है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ सोरठि म० ३ ॥ दासनिदासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई। भगता का कारजु हरि अनंदु है अनदिनु हरि गुण गाई। सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥ १ ॥ हरि जीउ साची नदरि तुमारी। आपणिआ दासा नो क्रिपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥ रहाउ ॥ सबदि सलाही सदा हउ जीवा गुरमती भउ भागा। मेरा प्रभु साचा अति सुआलिउ गुरु सेविआ चितु लागा। साचा सबदु सची सचु बाणी सो जनु अनदिनु जागा ॥ २ ॥ महा गंभीरु सदा सुखदाता तिस का अंतु न पाइआ। पूरे गुर की सेवा कीनी अचिंतु हरि मंनि वसाइआ। मनु तनु निरमलु सदा सुखु अंतरि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरि का मारगु सदा पंथु विखड़ा को पाए गुर वीचारा। हरि कै रंगि राता सबदे माता हउमै तजे विकारा। नानक नामि रता इक रंगी सबदि सवारणहारा ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे भाई ! जो मनुष्य अहंत्वभाव दूर कर बहुत दीन स्वभाव वाला बनता है, वह परमात्मा को मिल पड़ता है। परमात्मा के भक्तों का मुख्य काम यही होता है कि वे प्रतिपल प्रभु की गुणस्तुति के गीत गाकर उसके मिलाप का आनन्द महसूस करते हैं, भक्तजन गुरु के ज्ञान में निरन्तर रँगे रहकर परमात्मा में लीन रहते हैं ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारी कृपादृष्टि सदा टिकी रहती है। हे प्यारे ! तुम अपने दासों पर कृपा करते रहते हो (इसलिए) मेरी भी लाज रखो ॥ रहाउ ॥ (यदि प्रभु-कृपा हो तो) मैं गुरु के उपदेश को स्वीकार कर तुम्हारी गुणस्तुति करता रहूँ और सदा आत्मिक जीवन प्राप्त करता रहूँ। जो मनुष्य गुरु की शिक्षा का अनुसरण करता है, उसका भय दूर हो जाता है। हे भाई ! मेरा प्रभु सुन्दर और शाश्वत है। जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, उसका हृदय प्रसन्न रहता है। जिसके हृदय में प्रभु की गुणस्तुति का शब्द, गुणस्तुति की वाणी रहती है, वह प्रतिपल जाग्रत रहता है ॥ २ ॥ हे भाई ! परमात्मा अत्यन्त गम्भीर है, सदा सुख का दाता है, उसके गुणों का मूल्यांकन नहीं हो सकता। जो मनुष्य गुरु द्वारा बतलाई सेवा करता है, उसके भीतर परमात्मा का निवास

हो जाता है और उसे कोई चिन्ता स्पर्श नहीं कर सकती। उस मनुष्य का तन, मन पवित्र हो जाता है, उसके हृदय में सदा सुख ही सुख है, वह अपने भीतर से दुबिधा दूर कर लेता है ॥ ३ ॥ हे भाई! परमात्मा-प्राप्ति का मार्ग अत्यन्त दुर्गम है, कोई विरला व्यक्ति वह रास्ता खोजता है। जो गुरु के उपदेश को स्वीकारता है, वह मनुष्य प्रभु के प्रेम-रंग में रँगा जाता है; गुरु के शब्द में मस्त रहता है और अपने भीतर से अहंत्व आदि विकार दूर कर लेता है। हे नानक! वह मनुष्य प्रभु के नाम में निरन्तर अनुरक्त रहता है, जो गुरु के शब्द के द्वारा उसका जीवन सवाँर देता है ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ तुधुनो सदा सालाही पिआरे जिचरु घट अंतरि है सासा। इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा। हम मूड़ मुगध सदा से भाई गुर कै सबदि प्रगासा ॥ १ ॥ हरि जीउ तुम आपे देहु बुझाई। हरि जीउ तुधु विटहु वारिआ सदही तेरे नाम विटहु बलि जाई ॥ रहाउ ॥ हम सबदि मुए सबदि मारि जीवाले भाई सबदे ही मुकति पाई। सबदे मनु तनु निरमलु होआ हरि वसिआ मनि आई। सबदु गुर दाता जितु मनु राता हरि सिउ रहिआ समाई ॥ २ ॥ सबदु न जाणहि से अंने बोले से कितु आए संसारा। हरि रसु न पाइआ बिरथा जनमु गवाइआ जंमहि वारोवारा। बिसटा के कीड़े बिसटा माहि समाणे मनमुख मुगध गुबारा ॥ ३ ॥ आपे करि वेखै मारगि लाए भाई तिसु बिनु अवरु न कोई। जो धुरि लिखिआ सु कोइ न मेटै भाई करता करे सु होई। नानक नामु वसिआ मन अंतरि भाई अवरु न दूजा कोई ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे प्यारे प्रभु! जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं, मैं हमेशा तुम्हारी गुणस्तुति करती रहूँ। हे मालिक-प्रभु! जब तुम मुझे एक निमिष मात्र, पल मात्र के लिए विस्मृत हो जाते हो, तब मैं पचास साल बीते हुए समझता हूँ। हे भाई! हम सदा से मूर्ख, अज्ञानी बनकर आ रहे थे, अब गुरु-ज्ञान से हमारे भीतर आत्मिक जीवन का प्रकाश हुआ है ॥१॥ हे प्रभु! तुम स्वयं ही मुझे ज्ञान दो। हे प्रभु! मैं तुम पर बलिहारी जाऊँ, मैं तुम्हारे नाम पर बलिहारी जाऊँ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! हम गुरु के ज्ञान द्वारा (विकारों से) मर सकते हैं, गुरु-ज्ञान के द्वारा ही विकारों की ओर से मारकर गुरु आत्मिक जीवन देता है, गुरु के ज्ञान को स्वीकारने पर ही

विकारों से मुक्ति मिलती है, गुरु के ज्ञान द्वारा ही मन, तन पवित्र होता है और परमात्मा मन में आ बसता है। हे भाई! गुरु का ज्ञान नाम की देन देनेवाला है। जब शब्द में मन रँगा जाता है, तो परमात्मा में लीन हो जाता है ॥ २ ॥ हे भाई! जो मनुष्य गुरु के ज्ञान को नहीं स्वीकारते, वे अन्धे, बहरे हुए रहते हैं, संसार में आकर वे कुछ नहीं पाते। उन्हें प्रभु के नाम का स्वाद नहीं होता, वे अपना जीवन व्यर्थ गवाँ जाते हैं और वे बार-बार जन्मते-मरते रहते हैं। जैसे गन्दगी के कीड़े गन्दगी में ही टिके रहते हैं, वैसे ही स्वेच्छाचारी मूर्ख मनुष्य अज्ञानता के अँधेरे में ही मस्त रहते हैं ॥ ३ ॥ लेकिन, हे भाई! प्रभु आप ही जीवों को पैदा करके उनकी सँभाल करता है, आप ही सन्मार्ग पर लगाता है। उस प्रभु के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है, जो (मार्ग-प्रदर्शक हो सके)। हे भाई! कर्तार जो कुछ करता है, वही होता है। प्रभु दरबार से जीवों के लेख लिख देता है, उसे कोई दूसरा मिटा नहीं सकता। नानक का कथन है कि हे भाई! प्रभु-कृपा से ही नाम मनुष्य के मन में बस सकता है, कोई दूसरा यह देन देने में समर्थ नहीं है ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ सोरठि महला ३ ॥ गुरमुखि भगति करहि प्रभ भावहि अनदिनु नामु वखाणे। भगता की सार करहि आपि राखहि जो तेरै मनि भाणे। तू गुणदाता सबदि पछाता गुण कहि गुणी समाणे ॥ १ ॥ मन मेरे हरि जीउ सदा समालि। अंतकालि तेरा बेली होवै सदा निबहै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ दुसट चउकड़ी सदा कूड़ कमावहि ना बूझहि वीचारे। निंदा दुसटी ते किनि फलु पाइआ हरणाखस नखहि बिदारे। प्रहिलादु जनु सद हरि गुण गावै हरि जीउ लए उबारे ॥ २ ॥ आपस कउ बहु भला करि जाणहि मनमुखि मति न काई। साधू जन की निंदा विआपे जासनि जनमु गवाई। राम नामु कदे चेतहि नाही अंति गए पछुताई ॥ ३ ॥ सफलु जनमु भगता का कीता गुर सेवा आपि लाए। सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए। नानक दासु कहै बेनंती हउ लागा तिन कै पाए ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे भाई! गुरु की शरण लेनेवाले मनुष्य प्रतिपल प्रभु का नाम स्मरण करके भक्ति करते हैं और परमात्मा को प्यारे लगते हैं। हे प्रभु! भक्तों की देखभाल तुम आप करते हो, तुम आप ही उनकी रक्षा करते हो क्योंकि वे तुम्हें मन में प्यारे लगते हैं। तुम उन्हें अपने गुण देते हो, गुरु के ज्ञान द्वारा वे तुम्हारे साथ सम्बन्ध जोड़ते हैं। हे भाई! परमात्मा की गुणस्तुति

कर-करके वे गुणों के मालिक-प्रभु में लीन रहते हैं ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! सदा परमात्मा को स्मरण करता रह, अन्तिम समय में प्रभु ही तेरा सहायक होगा। परमात्मा सदा तेरा साथ निभाएगा ॥ रहाउ ॥ लेकिन, हे भाई ! दुष्ट मनुष्य सदा दुष्टता ही कमाते हैं, वे यह नहीं समझते कि दुष्ट निन्दा से किसी को सुफल प्राप्त नहीं हुआ। हिरण्यकशिपु नाखूनों के साथ चीरा गया (निन्दा के कारण उसे यह सब भुगतना पड़ा)। परमात्मा का भक्त प्रह्लाद परमात्मा के गुण गाता था, इसलिए प्रभु ने उसे (नरसिंह-रूप धारणकर) बचा लिया ॥ २ ॥ स्वेच्छाचारी मनुष्यों को कोई बुद्धि नहीं होती। वे स्वयं को तो भला समझते हैं, लेकिन भले व्यक्तियों की निन्दा करने में लगे रहते हैं, वे अपना जीवन व्यर्थ गवाँ देते हैं। वे परमात्मा का नाम कभी स्मरण नहीं करते, अन्तिम समय में हाथ मलते चले जाते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! परमात्मा आप ही भक्तों की ज़िन्दगी सफल बनाता है, वह आप ही उन्हें गुरु की सेवा में लगाता है। वे प्रतिपल परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाकर गुरु के ज्ञान में रँगे रहते हैं और आत्मिक स्थिरता में मस्त रहते हैं। दास नानक विनती करता है कि मैं उन भक्तों के चरण स्पर्श करता हूँ ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ सोरठि महला ३ ॥ सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै। आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै। बिनु सतिगुर सुखु कदे न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥ १ ॥ हरि के दास सुहेले भाई। जनम जनम के किलबिख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥ इहु कुटंबु सभु जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा। बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा। करम करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारोवारा ॥ २ ॥ हउ मेरा जगु पलचि रहिआ भाई कोइ न किसही केरा। गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ बसेरा। ऐथै बूझै सु आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥ ३ ॥ सतिगुरू सदा दइआलु है भाई विणु भागा किआ पाईऐ। एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ। नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाईऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥

वही मनुष्य गुरु का सिख है, उसका मित्र और रिश्तेदार है, जो गुरु की रज़ा का अनुसरण करता है। लेकिन जो मनुष्य स्वेच्छाचरण करता है, वह प्रभु से बिछुड़कर दुख सहता है। गुरु की शरण लिये बिना मनुष्य

कभी सुख नहीं पा सकता और वह बार-बार पश्चाताप करता है ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा के भक्त सुखी जीवन व्यतीत करते हैं। परमात्मा आप उनके जन्म-जन्मान्तरों के पाप काट देता है और उन्हें अपने चरणों में जगह दे देता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरु के उपदेश को स्वीकार किए बिना यह परिवार भी आत्मा के लिए केवल मोह का बन्धन बन जाता है, इसीलिए जगत (गुरु से) अलग होकर कुमार्गगामी बना रहता है। गुरु की शरण के बिना ये बन्धन टूटते नहीं। गुरु की शरण लेनेवाला मनुष्य इन बन्धनों से मुक्ति पाने का रास्ता प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य केवल मात्र लौकिक काम-धन्धे ही करते हैं, लेकिन गुरु के उपदेश का अनुसरण नहीं करते, वे बार-बार जन्मते-मरते रहते हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! 'मैं बड़ा हूँ', 'यह धन आदि मेरा है' —यह दुनिया इसी में फँसी हुई है, कोई भी किसी का सच्चा साथी नहीं बन सकता। गुरु की शरण में आए मनुष्य परमात्मा की गुणस्तुति करते हैं और परमात्मा की सेवा प्राप्त करते हैं। उनका निवास प्रभु-चरणों में रहता है। जो मनुष्य इस जीवन में ही इस रहस्य को समझता है, वह अपने आत्मिक जीवन को खोजता रहता है और प्रभु उसका सहायक बना रहता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! गुरु प्रतिपल ही दयालु रहता है। लेकिन (गुरु से) भाग्य के बिना क्या मिले ? गुरु सबको एक प्रेम की दृष्टि से देखता है। हम जीवों की जैसी भावना होती है, वैसा फल हमें (गुरु से) मिल जाता है। हे नानक ! (यदि) भीतर से अहंत्व-भाव दूर कर लें, तो परमात्मा का नाम मन में आ बसता है ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ सोरठि महला ३ चौतुके ॥ सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदै बाणी। सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए हउमै सबदि समाणी। बिनु गुर साचे भगति न होवी होर भूली फिरै इआणी। मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुए विणु पाणी ॥ १ ॥ भाई रे सदा रहहु सरणाई। आपणी नदरि करे पति राखै हरिनामो दे वडिआई ॥ रहाउ ॥ पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सचै वीचारा। हिरदै जग जीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अहंकारा। सदा हजूरि रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा। जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आइआ। हरि रसु चाखि सदा मनु त्रिपतिआ गुण गावै गुणी अघाइआ। कमलु प्रगासि सदा रंगिराता अनहद सबदु वजाइआ। तनु मनु निरमलु निरमल बाणी सचे सचि

समाइआ ॥ ३ ॥ राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै समाई । गुरमुखि होवै सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई । जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई । नानक नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे भाई ! गुरु के माध्यम से ही सत्यस्वरूप प्रभु की भक्ति हो सकती है, सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति की वाणी हृदय में टिक जाती है । जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, वह सदा सुख पाता है, उसका अहंत्व गुरु के शब्द में ही समाप्त हो जाता है । सच्चे गुरु के बिना भक्ति नहीं हो सकती । जो मूर्ख दुनिया गुरु के द्वार पर नहीं आती, वह कुमार्ग पर पड़ी रहती है । स्वेच्छाचारी मनुष्य भटकते फिरते हैं । सदा सुख पाते हैं । वे मानो बिना पानी के ही डूब मरते हैं ॥१॥ हे भाई ! सदा गुरु की शरण में टिका रह । गुरु जिस पर कृपादृष्टि करता है, उसकी लाज बचाता है; उसे प्रभु का नाम देता है, जो एक बड़ी प्रतिष्ठा है ॥ रहाउ ॥ जिस मनुष्य ने पूर्णगुरु के द्वारा अपने आत्मिक जीवन को खोजना प्रारम्भ कर दिया, उसने सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति के शब्द में लगकर प्रभु के गुणों को भुलाना शुरू कर दिया । काम, क्रोध, अहंकार त्यागने से उसके हृदय में जगत के जीवन प्रभु हमेशा के लिए आ बसे । अनन्त प्रभु का नाम हृदय में बसने के कारण प्रभु उसे हमेशा साथ-साथ बसता दिख पड़ा, सर्वत्र विद्यमान दिख पड़ा । गुरु के शब्द के द्वारा उसे यह पहचान आ गई कि प्रभु के दर्शनों का माध्यम प्रत्येक युग में गुरु की वाणी ही है, परमात्मा का नाम उसे अपने मन में प्यारा लगने लगा ॥ २ ॥ जिस मनुष्य ने गुरु की शरण लेकर परमात्मा के नाम के साथ सम्बन्ध जोड़ लिया, जगत में आकर उसका जीवन सफल हो गया । परमात्मा के नाम का आस्वादन कर उसका मन हमेशा के लिए तृप्त हो जाता है, वह परमात्मा के गुण गाता रहता है और गुणों के द्वारा माया से तृप्त हो जाता है । उसका हृदय-कमल खिलकर हमेशा प्रभु के प्रेम-रंग में रँगा रहता है, वह निरन्तर गुरु-शब्द का बाजा बजाता रहता है । पवित्र वाणी के प्रभाव से उसका तन, मन पवित्र हो जाता है और वह सत्यस्वरूप प्रभु में ही लीन रहता है ॥३॥ कोई मनुष्य नहीं समझ सकता कि परमात्मा के नाम से कितनी ऊँची आत्मिक अवस्था बन जाती है । गुरु की शिक्षा स्वीकारने पर नाम हृदय में आ बसता है । जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहता है, वह (सही) मार्ग पहचान लेता है, उसकी जिह्वा नाम-रस में रसमग्न हो जाती है । परमात्मा का नाम हृदय में आ बसता है—यही जप, तप और संयम है । हे नानक ! जो मनुष्य प्रभु का नाम हृदय में बसाए रखते हैं, वे सुन्दर

जीवन वाले बन जाते हैं, सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर उन्हें प्रतिष्ठा मिलती है ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ सोरठि म० ३ दुतुके ॥ सतिगुर मिलिऐ उलटी भई भाई जीवत मरै ता बूझ पाइ । सो गुरू सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ मन रे हरि हरि सेती लिव लाइ । मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाए हरि थाइ ॥ रहाउ ॥ बिनु गुर प्रीति न ऊपजै भाई मनमुखि दूजै भाइ । तुह कुटहि मनमुख करम करहि भाई पलै किछू न पाइ ॥ २ ॥ गुर मिलिऐ नामु मनि रविआ भाई साची प्रीति पिआरि । सदा हरि के गुण रवै भाई गुर कै हेति अपारि ॥ ३ ॥ आइआ सो परवाणु है भाई जि गुर सेवा चितु लाइ । नानक नामु हरि पाईऐ भाई गुर सबदी मेलाइ ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे भाई ! यदि गुरु मिल जाए तो मनुष्य आत्मिक जीवन की समझ प्राप्त कर लेता है, मनुष्य की सुरति विकारों से हट जाती है, लौकिक कार्य-व्यवहार करता हुआ ही मनुष्य विकारों से अछूता रहता है। हे भाई ! जिस मनुष्य की आत्मा को गुरु परमात्मा में मिला देता है, वह सिख बन जाता है ॥१॥ हे मन ! सदा परमात्मा में सुरति लगाए रख। बार-बार जपने से परमात्मा प्यारा लगने लगता है। हे भाई ! गुरु की शरण लेनेवाला मनुष्य प्रभु की सेवा में स्थान पा लेता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरु के बिना प्रभु में प्रेम नहीं उपजता। स्वेच्छाचारी मनुष्य दूसरे आकर्षणों में फँसा रहता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य जो भी धार्मिक कर्म करते हैं, वे मानो छिलके ही कूटते हैं। उन्हें उन कर्मों से कुछ प्राप्त नहीं होता ॥ २ ॥ हे भाई ! यदि मनुष्य को गुरु मिल जाए, तो परमात्मा का नाम उसके मन में टिका रहता है। मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु के प्रेम में प्रसन्न रहता है। हे भाई ! गुरु के दिए अटूट प्रेम के प्रभाव से वह सदा परमात्मा के गुण गाता रहता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य गुरु द्वारा बतलाई सेवा में प्रवृत्त होता है, उसका जगत में आना सफल हो जाता है। हे नानक ! गुरु के द्वारा परमात्मा का नाम प्राप्त हो जाता है और गुरु के आदेश के द्वारा प्रभु के साथ मिलाप हो जाता है ॥ ४ ॥ ८ ॥

॥ सोरठि महला ३ घरु १ ॥ तिही गुणी त्रिभवणु विआपिआ भाई गुरमुखि बूझ बुझाइ । राम नामि लगि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ १ ॥ मन रे त्रैगुण छोडि चउथै चितु लाइ । हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई सदा हरि के गुण

गाइ ।। रहाउ ।। नामै ते सभि ऊपजे भाई नाइ विसरिऐ मरि जाइ । अगिआनी जगतु अंधु है भाई सूते गए मुहाइ ।। २ ।। गुरमुखि जागे से उबरे भाई भवजलु पारि उतारि । जग महि लाहा हरिनामु है भाई हिरदै रखिआ उरधारि ।। ३ ।। गुर सरणाई उबरे भाई रामनामि लिव लाइ । नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जितु लगि पारि जन पाइ ।। ४ ।। ९ ।।

हे भाई ! सारा जगत माया के तीनों गुणों में फँसा पड़ा है । जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, (गुरु) उसे आत्मिक जीवन की समझ देता है । हे भाई ! परमात्मा के नाम में लीन होकर माया की पकड़ से बचा जाता है; जाकर उनसे पूछिए, जिन्हें आत्मिक जीवन की समझ आ गई है ।। १ ।। हे मेरे मन ! माया के तीनों गुणों को छोड़कर उस अवस्था में टिक, जहाँ इन तीनों का प्रभाव नहीं होता । हे भाई ! परमात्मा तुम्हारे मन में बसता है, हमेशा उसकी गुणस्तुति के गीत गाया कर ।। रहाउ ।। हे भाई ! परमात्मा के नाम में लगकर ही सारे जीव आत्मिक जीवन जी सकते हैं । यदि नाम विस्मृत हो जाए, तो मनुष्य आत्मिक रूप से मर जाता है । आत्मिक जीवन की समझ के बिना जगत माया-मोह में अन्धा हुआ रहता है । माया-मोह में सोते हुए मनुष्य आत्मिक जीवन की राशि लुटाकर जाते हैं ।। २ ।। हे भाई ! जो मनुष्य गुरु की शरण लेकर माया-मोह की निद्रा से जाग पड़ते हैं, वे संसार-समुद्र में डूबने से बच जाते हैं, गुरु उन्हें संसार-समुद्र से पार उतार देता है । हे भाई ! गुरु की शरण लेनेवाला मनुष्य अपने हृदय में परमात्मा का नाम सँभालकर रखता है, यह हरि-नाम ही जगत में असली लाभ है ।। ३ ।। हे भाई ! गुरु का शरणागत होकर परमात्मा के नाम में सुरति जोड़कर मनुष्य संसार-सागर में डूबने से बच जाते हैं । नानक का कथन है कि हे भाई ! परमात्मा का नाम ही जहाज़ है, हरि-नाम ही तराज़ू है, जिसमें चढ़कर मनुष्य संसार-समुद्र से पार उतर जाता है ।। ४ ।। ९ ।।

।। सोरठि महला ३ घरु १ ।। सतिगुरु सुख सागरु जग अंतरि होरथै सुखु नाही । हउमै जगतु दुखि रोगि विआपिआ मरि जनमै रोवै धाही ।। १ ।। प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाइ । सतिगुरु सेवहि ता सुखु पावहि नाहि त जाहिगा जनमु गवाइ ।। रहाउ ।। त्रै गुण धातु बहु करम कमावहि हरि रस सादु न आइआ । संधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझे दुखु पाइआ ।। २ ।। सतिगुरु सेवे सो वडभागी जिसनो आपि

मिलाए । हरि रसु पी जन सदा त्रिपतासे विचहु आपु गवाए ॥ ३ ॥ इहु जगु अंधा सभु अंधु कमावै बिनु गुर मगु न पाए । नानक सतिगुरु मिलै त अखी वेखै घरै अंदरि सचु पाए ॥ ४ ॥ १० ॥

हे भाई ! जगत में गुरु ही सुख का समुद्र है, किसी और स्थान पर सुख नहीं मिलता । जगत अपने अहंत्व के कारण दुख और रोग में ग्रसित रहता है, बार-बार जन्मता-मरता है, आपा पीट-पीटकर रोता है ॥ १ ॥ हे भाई ! गुरु की शरण लो और आत्मिक आनन्द प्राप्त करो । यदि तू गुरु द्वारा बतलाई सेवा करेगा तो सुख पाएगा, नहीं तो अपना जीवन व्यर्थ बिताकर चला जाएगा ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरु के बिना मनुष्य माया के तीनों गुणों के प्रभाव में कर्म करते हैं, लेकिन उन्हें परमात्मा की आत्मा का आस्वादन नहीं होता । तीनों वक्त सन्ध्या-पाठ करते हैं, पितरों-देवताओं को जल अर्पित करते हैं, गायत्री मन्त्र का पाठ करते हैं, लेकिन आत्मिक जीवन की सूझ के बिना दुख ही मिलता है ॥ २ ॥ हे भाई ! वह मनुष्य भाग्यशाली है, जो गुरु की बतलाई सेवा करता है । (गुरु से उसी की भेंट होती है), जिसे परमात्मा आप मिलाए । (प्रभु के नाम में रस लेनेवाले) मनुष्य अपने भीतर से अहंत्वभाव दूर करके परमात्मा के नाम का रस पान करके सदा तृप्त रहते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! यह जगत माया-मोह में अन्धा है, अन्धों वाले ही काम करता है । गुरु की शरण लिये बिना जीवन का सही मार्ग नहीं मिल सकता । हे नानक ! यदि इसे गुरु मिल जाए तो परमात्मा को आँखों से देख लेता है, अपने हृदय-घर में ही सत्यस्वरूप परमात्मा को प्राप्त कर लेता है ॥ ४ ॥ १० ॥

॥ सोरठि महला ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागा जुग चारे भरमाई । हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि बुझाई ॥ १ ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु तुम पिआरे । सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरिनामु देवहु आधारे ॥ रहाउ ॥ मनसा मारि दुबिधा सहजि समाणी पाइआ नामु अपारा । हरि रसु चाखि मनु निरमलु होआ किलबिख काटणहारा ॥ २ ॥ सबदि मरहु फिरि जीवहु सदही ता फिरि मरणु न होई । अंम्रितु नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई ॥ ३ ॥ दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई । नानक नामि रते सुखु पाइआ दरगह जापहि सेई ॥ ४ ॥ ११ ॥

हे भाई ! गुरु की शरण लिये बिना मनुष्य को बहुत दुख चिपटा रहता है, मनुष्य सदा ही भटकता फिरता है। हे प्रभु ! हम भिखारी हैं, तुम सदा ही देन देनेवाले हो। (हमें) शब्द में प्रवृत्त कर आत्मिक जीवन की समझ दो ॥ १ ॥ हे प्यारे प्रभु ! कृपा करो। अपने नाम की देन देनेवाला गुरु मुझे मिलाओ और ज़िन्दगी का सहारा अपना नाम मुझे दो ॥ रहाउ ॥ जिस मनुष्य ने अनन्त परमात्मा का नाम प्राप्त कर लिया, नाम-स्मरण से वासना को समाप्त कर उसकी मानसिक अस्थिरता आत्मिक स्थिरता में लीन हो जाती है। हे भाई ! परमात्मा का नाम समस्त पाप काटने के समर्थ है। (नाम-स्मरण में लीन) व्यक्ति का मन हरि-नाम का आस्वादन कर उसका मन पवित्र हो जाता है ॥ २ ॥ हे भाई ! गुरु के ज्ञान में लगकर विकारों से अछूते हो जाओ, फिर सदा के लिए ही आत्मिक जीवन जीते रहोगे, फिर कभी आत्मिक मृत्यु निकट नहीं आएगी। जो मनुष्य गुरु के ज्ञान के द्वारा हरि-नाम प्राप्त कर लेता है, उसे यह आत्मिक जीवन देनेवाला नाम सदा के लिए मन में मीठा लगने लगता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! दाता-प्रभु ने नाम की यह देन अपने हाथ में रखी हुई है; जिसे चाहता है, उसे दे देता है। हे नानक ! जो मनुष्य प्रभु के नाम-रंग में रँगे जाते हैं, वे सुख पाते हैं। परमात्मा की सेवा में भी वही मनुष्य आदर-सत्कार पाते हैं ॥ ४ ॥ ११ ॥

॥ सोरठि महला ३ ॥ सतिगुर सेवे ता सहज धुनि उपजै गति मति तदही पाए। हरि का नामु सचा मनि वसिआ नामे नामि समाए ॥ १ ॥ बिनु सतिगुर सभु जगु बउराना। मनमुखि अंधा सबदु न जाणै झूठै भरमि भुलाना ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ भरमि भुलाइआ हउमै बंधन कमाए। जंमणु मरणु सिर ऊपरि ऊभउ गरभ जोनि दुखु पाए ॥ २ ॥ त्रै गुण वरतहि सगल संसारा हउमै विचि पति खोई। गुरमुखि होवै चउथा पदु चीनै रामनामि सुखु होई ॥ ३ ॥ त्रै गुण सभि तेरे तू आपे करता जो तू करहि सु होई। नानक राम नामि निसतारा सबदे हउमै खोई ॥ ४ ॥ १२ ॥

हे भाई ! जब मनुष्य गुरु की शरण लेता है, तब आत्मिक स्थिरता की प्रक्रिया चल पड़ती है, तब ही मनुष्य उच्च आत्मिक अवस्था और उच्च बुद्धि प्राप्त करता है। सत्यस्वरूप हरि-नाम मनुष्य के मन में आ बसता है और मनुष्य सदा नाम में ही लीन रहता है ॥ १ ॥ हे भाई ! गुरु की शरण लिये बिना सारा जगत पागल हुआ फिरता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य माया-मोह में अन्धा होकर गुरु के उपदेश से कोई सामंजस्य नहीं करता।

झूठी दुनिया के मोह के कारण दुबिधा में पड़कर कुमार्गगामी हुआ रहता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मनुष्य त्रिगुणात्मक माया की दुबिधा में पड़कर कुमार्गगामी हुआ रहता है और अहंत्व के कारण मोह के बन्धन बढ़ानेवाला काम ही करता है। उसके सिर पर जन्म-मरण का चक्र प्रतिपल टिका रहता है और जन्म-मरण में पड़कर दुख सहता रहता है ॥ २ ॥ हे भाई ! माया के तीन गुण समस्त संसार में अपना प्रभाव जमाए रखते हैं, मनुष्य अहंत्व में फँसकर प्रतिष्ठा गवाँ लेता है। जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, वह उस आत्मिक अवस्था को पहचान लेता है, जहाँ माया के तीन गुण प्रभावकारी नहीं होते। परमात्मा के नाम में टिककर वह आत्मिक आनन्द महसूस करता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! माया के ये तीनों गुण तुम्हारे ही बनाए हुए हैं। तुम आप ही सबको पैदा करते हो। जगत में वही होता है, जो तुम करते हो। नानक का कथन है कि हे भाई ! परमात्मा के नाम में अनुरक्त होने से पूर्ण मुक्ति मिलती है। मनुष्य गुरु के ज्ञान द्वारा ही अहंत्व दूर कर सकता है ॥ ४ ॥ १२ ॥

सोरठि महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आपे आपि वरतदा पिआरा आपे आपि अपाहु। वणजारा जगु आपि है पिआरा आपे साचा साहु। आपे वणजु वापारीआ पिआरा आपे सचु वेसाहु ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नामु सलाह। गुर किरपा ते पाईऐ पिआरा अंम्रितु अगम अथाह ॥ रहाउ ॥ आपे सुणि सभ वेखदा पिआरा मुखि बोले आपि मुहाहु। आपे उझड़ पाइदा पिआरा आपि विखाले राहु। आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे वेपरवाहु ॥ २ ॥ आपे आपि उपाइदा पिआरा सिरि आपे धंधड़ै लाहु। आपि कराए साखती पिआरा आपि मारे मरि जाहु। आपे पतणु पातणी पिआरा आपे पारि लंघाहु ॥ ३ ॥ आपे सागरु बोहिथा पिआरा गुरु खेवटु आपि चलाहु। आपे ही चड़ि लंघदा पिआरा करि चोज वेखै पातिसाहु। आपे आपि दइआलु है पिआरा जन नानक बखसि मिलाहु ॥ ४ ॥ १ ॥

हे भाई ! प्रभु आप ही सर्वत्र मौजूद है, (परन्तु) आप ही निर्लिप्त है। जगत-बनजारा प्रभु आप ही है, सत्यस्वरूप प्रभु स्वयं ही साहूकार है। प्रभु आप ही व्यापार है, आप ही व्यापारी है और आप ही सत्यस्वरूप पूँजी

है ॥ १ ॥ हे मन ! हमेशा परमात्मा का नाम स्मरण किया कर, गुणस्तुति किया कर। गुरु-कृपा से ही वह प्यारा प्रभु मिल सकता है, जो आत्मिक जीवन का दाता है, अपहुँच है और गहन गम्भीर है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! प्रभु आप ही जीवों की प्रार्थना सुनकर सबकी सँभाल करता है, आप ही मुँह से मीठा वचन बोल सकता है। प्यारा प्रभु आप ही जीवों को कुमार्गगामी कर देता है, आप ही सन्मार्ग दिखाता है। हे भाई ! सर्वत्र प्रभु आप ही आप है और (मालिक होता हुआ भी) वह निश्चिन्त रहता है ॥ २ ॥ हे भाई ! प्रभु आप ही जीवों को पैदा करता है, आप ही हर एक जीव को माया के धन्धे में लगाए रखता है, प्रभु आप ही जीवों का ढाँचा बनाता है, आप ही मारता है (तब उसके द्वारा उत्पादित जीव मर जाता है)। प्रभु आप ही जहाज़ है, आप ही मल्लाह है और आप ही जीवों को पार उतारता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! प्रभु आप ही समुद्र है, आप ही जहाज़ है, आप ही गुरु-मल्लाह होकर जहाज़ को चलाता है। प्रभु आप ही जहाज़ में चढ़कर पार उतरता है। प्रभु-बादशाह कौतुक-तमाशे करके आप ही देख रहा है। नानक का कथन है कि प्रभु आप ही दया का स्रोत है, आप ही कृपा करके जीवों को अपने साथ मिला लेता है ॥४॥१॥

॥ सोरठि महला ४ चउथा ॥ आपे अंडज जेरज सेतज उतभुज आपे खंड आपे सभ लोइ। आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु परोइ। आपे ही सूतधारु है पिआरा सूतु खिचे ढहि ढेरी होइ ॥ १ ॥ मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ। सतिगुर विचि नामु निधानु है पिआरा करि दइआ अंम्रितु मुखि चोइ ॥ रहाउ ॥ आपे जल थलि सभतु है पिआरा प्रभु आपे करे सु होइ। सभना रिजकु समाहदा पिआरा दूजा अवरु न कोइ। आपे खेल खेलाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ २ ॥ आपे ही आपि निरमला पिआरा आपे निरमल सोइ। आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे करे सु होइ। आपे अलखु न लखीऐ पिआरा आपि लखावै सोइ ॥ ३ ॥ आपे गहिर गंभीरु है पिआरा तिसु जेवडु अवरु न कोइ। सभि घट आपे भोगवै पिआरा विचि नारी पुरख सभु सोइ। नानक गुपतु वरतदा पिआरा गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे प्रभु ! आप ही अण्डज, जेरज, स्वेदज और उद्भिज हैं। प्रभु आप ही पृथ्वी के नौ खण्ड हैं, आप ही सृष्टि के सारे भवन हैं। प्रभु आप ही धागा है, आप ही अनगिनत मनके है। वह आप अपनी शक्ति बनाकर

जगत को धागे में पिरोता है, प्रभु आप ही धागे को अपने हाथ में पकड़कर रखनेवाला है। जब वह धागे को खींच लेता है, तब जगत गिरकर ढेर हो जाता है ॥१॥ हे मेरे मन ! मुझे परमात्मा के अतिरिक्त कहीं भी कोई दूसरा दृष्टिगत नहीं होता। उस परमात्मा का नाम-ख़ज़ाना गुरु में मौजूद है। गुरु कृपा करके आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल मुँह में गिराता है ॥रहाउ॥ प्रभु आप ही पानी, पृथ्वी में सर्वत्र विद्यमान है। प्रभु जो कुछ करता है, वही घटित होता है। प्रभु आप ही सब जीवों को भोजन पहुँचाता है, उसके अतिरिक्त भोजन पहुँचानेवाला कोई नहीं है। प्रभु आप ही जगत-क्रीड़ा करा रहा है; वह आप जो कुछ करता है, वही होता है ॥ २ ॥ हे भाई ! पवित्र प्रभु सर्वत्र मौजूद है। प्रभु आप जो करता है, वही होता है। प्रभु का स्वरूप व्यक्त नहीं किया जा सकता, वह अदृश्य है। अपने स्वरूप की समझ वह आप ही देनेवाला है ॥ ३ ॥ हे भाई ! प्रभु ही मानो एक अथाह समुद्र है। वह अप्रतिम है। समस्त जीवों में व्यापक होकर आप ही सारे भोग भोगता है, प्रत्येक स्त्री-पुरुष में वह सर्वत्र आप ही आप है। हे नानक ! वह प्रभु समस्त जगत में छिपा हुआ मौजूद है। गुरु की शरण लेने से उसकी सर्वव्यापकता का प्रकाश होता है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै । आपे वेखि विगसदा पिआरा करि चोज वेखै प्रभु आपै । आपे वणि तिणि सभतु है पिआरा आपे गुरमुखि जापै ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नाम रसि ध्रापै । अंम्रित नामु महा रसु मीठा गुरसबदी चखि जापै ॥ रहाउ ॥ आपे तीरथु तुलहड़ा पिआरा आपि तरै प्रभु आपै । आपे जालु वताइदा पिआरा सभु जगु मछुली हरि आपै । आपि अभुलु न भुलई पिआरा अवरु न दूजा जापै ॥ २ ॥ आपे सिङी नादु है पिआरा धुनि आपि वजाए आपै । आपे जोगी पुरखु है पिआरा आपे ही तपु तापै । आपे सतिगुरु आपि है चेला उपदेसु करै प्रभु आपै ॥ ३ ॥ आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपे ही जपु जापै । आपे अंम्रितु आपि है पिआरा आपे ही रसु आपै । आपे आपि सलाहदा पिआरा जन नानक हरि रसि ध्रापै ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे भाई ! सर्वत्र प्रभु आप ही आप है। आप ही (जगत) को उत्पादित कर आप ही नष्ट कर देता है। प्रभु आप ही जगत-रचना को देखकर प्रसन्न होता है, कौतुक-तमाशे रचकर आप ही देखता है, अपने आप को ही देखता है। प्रभु आप ही वन में, तिनके में सर्वत्र मौजूद है। गुरु

की शरण लेकर वह प्रभु दिखाई दे जाता है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! सदा परमात्मा को जपा कर । (नाम जपने से) नाम-रस द्वारा मनुष्य माया की ओर से तृप्त हो जाता है । हे मेरे मन ! आत्मिक जीवन देनेवाला हरिनाम-जल बहुत स्वादिष्ट है, बहुत मीठा है, गुरु-शब्द द्वारा आस्वादन करके ही पता लगता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! प्रभु आप ही नदी का किनारा है, आप ही नाव है, आप ही पार उतरनेवाला है, अपने आप को ही पार उतारता है । प्रभु आप ही जाल बिछाता है और इस माया-जाल में फँसनेवाला जगत रूपी मछली वह स्वयं को ही बनाता है । वह कभी भूलनेवाला नहीं है, वह कभी भूल नहीं करता । उसके समकक्ष कोई दूसरा नहीं दिखता ॥ २ ॥ प्रभु आप ही नाद है, आप ही ध्वनि है; आप ही सुर बजाता है, आप ही अपने आप को बजाता है । प्रभु आप ही गुरु है, आप ही सिख है और आप ही स्वयं को उपदेश करनेवाला है ॥ ३ ॥ हे भाई ! प्रभु आप ही जीवों से नाम जपाता है और जीवों में व्यापक होकर आप ही अपना नाम जपता है । आप ही आत्मिक जीवन का दाता नाम-जल है, आप ही उस नाम-रस का पान करता है, अपने आप को (स्वयं) पान करता है । हे दास नानक ! प्रभु आप ही अपनी गुणस्तुति करता है, आप ही अपने नाम-रस से तृप्त होता है ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे कंडा आपि तराजी प्रभि आपे तोलि तोलाइआ । आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइआ । आपे धरती साजीअनु पिआरै पिछै टंकु चड़ाइआ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि हरि धिआइ सुखु पाइआ । हरि हरि नामु निधानु है पिआरा गुरि पूरै मीठा लाइआ ॥ रहाउ ॥ आपे धरती आपि जलु पिआरा आपे करे कराइआ । आपे हुकमि वरतदा पिआरा जलु माटी बंधि रखाइआ । आपे ही भउ पाइदा पिआरा बंनि बकरी सीहु हढाइआ ॥ २ ॥ आपे कासट आपि हरि पिआरा विचि कासट अगनि रखाइआ । आपे ही आपि वरतदा पिआरा भै अगनि न सकै जलाइआ । आपे मारि जीवाइदा पिआरा साह लैदे सभि लवाइआ ॥ ३ ॥ आपे ताणु दीबाणु है पिआरा आपे कारै लाइआ । जिउ आपि चलाए तिउ चलीऐ पिआरे जिउ हरि प्रभ मेरे भाइआ । आपे जंती जंतु है पिआरा जन नानक वजहि वजाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥

(हे भाई ! प्रभु ने आप ही पृथ्वी पैदा की हुई है ।) वह प्रभु स्वयं तराज़ू है, उस तराज़ू का काँटा भी वह आप है । प्रभु ने आप ही इन बाटों

(मर्यादा रूपी नियन्त्रण) से सारी सृष्टि को तोला हुआ है। प्रभु आप ही साहूकार है, आप ही व्यापारी है और आप ही व्यापार करानेवाला है ॥१॥ हे मेरे मन ! सदा परमात्मा का स्मरण कर। स्मरणकर्ता ने हमेशा सुख पाया है। हे भाई ! प्रभु का नाम समस्त सुखों का खज़ाना है। (शरण में आनेवाले को) गुरु ने परमात्मा के नाम का मीठा अनुभव करा दिया है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! प्रभु प्यारा आप ही धरती पैदा करनेवाला है, आप ही पानी पैदा करनेवाला है, आप ही सब कुछ करनेवाला है और आप ही जीवों से कराता है। आप ही अपने हुक्म अनुसार सर्वत्र काम करा रहा है, पानी को मिट्टी के साथ बाँध रखा है। (पानी मिट्टी बहा नहीं सकता), पानी में उसने आप ही अपना भय डाल दिया है, मानो बकरी शेर को बाँधकर घुमा रही है ॥ २ ॥ हे भाई ! प्रभु आप ही लकड़ी है, लकड़ी में उसने आप ही आग टिकाई हुई है। प्रभु प्यारा आप ही अपना हुक्म चला रहा है। उसके हुक्म अनुसार आग (लकड़ी को) जला नहीं सकती। प्रभु आप ही मारकर जिलानेवाला है। सारे जीव उसके द्वारा प्रेरित होकर ही साँस ले रहे हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! प्रभु आप ही शक्ति है, आप ही हाकिम है; सारे जगत को उसने आप ही धन्धे में लगाया हुआ है। हे प्यारे सज्जन ! जैसे प्रभु आप जीवों को चलाता है, जैसे मेरे हरि-प्रभु को भला लगता है, वैसे ही चला जा सकता है। हे दास नानक ! प्रभु आप ही जीव रूपी बाजा बनानेवाला है, आप ही बाजा बजानेवाला है और सारे जीव-बाजे उसी के बजाए बज रहे हैं ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे स्रिसटि उपाइदा पिआरा करि सूरजु चंदु चानाणु। आपि निताणिआ ताणु है पिआरा आपि निमाणिआ माणु। आपि दइआ करि रखदा पिआरा आपे सुघड़ु सुजाणु ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु नीसाणु। सत संगति मिलि धिआइ तू हरि हरि बहुड़ि न आवण जाणु ॥ रहाउ ॥ आपे ही गुण वरतदा पिआरा आपे ही परवाणु। आपे बखस कराइदा पिआरा आपे सचु नीसाणु। आपे हुकमि वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ॥ २ ॥ आपे भगति भंडार है पिआरा आपे देवै दाणु। आपे सेव कराइदा पिआरा आपि दिवावै माणु। आपे ताड़ी लाइदा पिआरा आपे गुणी निधानु ॥ ३ ॥ आपे वडा आपि है पिआरा आपे ही परधाणु। आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे तुलु परवाणु। आपे अतुलु तुलाइदा पिआरा जन नानक सद कुरबाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे भाई ! वह प्यारा प्रभु आप ही सृष्टि का उत्पादक है और सूर्य, चन्द्र आदि को प्रकाश के लिए बनाता है। प्रभु आप ही निराश्रितों का आश्रय है, जिन्हें कोई आदर-सम्मान नहीं देता, उन्हें आदर-सम्मान देनेवाला है। वह प्यारा प्रभु सुन्दर आत्मिक बनावट वाला है, सबके हृदयों की जाननेवाला है, वह कृपा करके आप सबकी रक्षा करता है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! परमात्मा का नाम स्मरण किया कर। यह नाम ही यात्राकर है। हे भाई ! सत्संगति में मिलकर तू परमात्मा का स्मरण किया कर। (नाम-स्मरण के प्रभाव से) बार-बार जन्म-मरण का चक्र नहीं रहेगा ॥रहाउ॥ हे भाई ! वह प्यारा प्रभु आप ही गुणों की देन देता है, आप ही जीवों को अपनी सेवा में लगाता है। प्रभु आप ही सब पर कृपा करता है, वह आप ही सत्यस्वरूप प्रकाश-ज्योति है। वह प्यारा प्रभु आप ही जीवों को हुक्म में चलाता है, आप ही सर्वत्र अपना हुक्म व्यवहृत करता है ॥ २ ॥ हे भाई ! वह प्यारा प्रभु आप ही भक्ति के ख़ज़ानों वाला है, वह आप ही जीवों को भक्ति की देन देता है। वह आप ही जीवों से सेवा-भक्ति कराता है और आप ही उन्हें जगत में प्रतिष्ठा दिलाता है। वह प्रभु आप ही गुणों का भण्डार है और आप ही अपने गुणों में समाधि लगाता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! वह प्यारा प्रभु आप ही सर्वोपरि है और लोकप्रिय है। वह आप ही माप-तोल करके (जीवों का) मूल्यांकन करता है। वह प्रभु स्वयं अमाप्य है, (लेकिन सदा) जावों के जीवन का मूल्यांकन करता है। दास नानक का कथन है कि मैं सदा उस पर बलिहारी हूँ ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे सेवा लाइदा पिआरा आपे भगति उमाहा। आपे गुण गावाइदा पिआरा आपे सबदि समाहा। आपे लेखणि आपि लिखारी आपे लेखु लिखाहा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु ओमाहा। अनदिनु अनदु होवै वडभागी लै गुरि पूरै हरि लाहा ॥ रहाउ ॥ आपे गोपी कानु है पिआरा बनि आपे गऊ चराहा। आपे सावल सुंदरा पिआरा आपे वंसु वजाहा। कुवलीआपीड़ु आपि मराइदा पिआरा करि बालक रूपि पचाहा ॥ २ ॥ आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा करि वेखै आपि चोजाहा। करि बालक रूप उपाइदा पिआरा चंडूरु कंसु केसु माराहा। आपे ही बलु आपि है पिआरा बलु भंनै मूरख मुगधाहा ॥ ३ ॥ सभु आपे जगतु उपाइदा पिआरा वसि आपे जुगति हथाहा। गलि जेवड़ी आपे पाइदा पिआरा जिउ प्रभु

खिचै तिउ जाहा। जो गरबै सो पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे भाई ! प्यारा प्रभु आप ही जीवों को सेवा में लगाता है, आप ही भक्ति के लिए उत्साहित करता है। वह आप ही जीवों को गुणगान के लिए प्रेरित करता है, आप ही गुरु के उपदेश में प्रवृत्त करता है। प्रभु आप ही कलम है, आप ही कलम चलानेवाला है और आप ही जीवों के लेख लिखनेवाला है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! परमात्मा का नाम उत्साहपूर्वक जपा कर। पूर्णगुरु के द्वारा हरि-नाम का लाभ प्राप्त कर। (नाम-स्मरणकर्ता) सौभाग्यशाली मनुष्य को प्रतिपल आत्मिक सुख मिला रहता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! प्रभु ही गोपियाँ है, आप ही कृष्ण है और आप ही जंगल में गाएँ चरानेवाला है। प्रभु आप ही साँवला सुन्दर कृष्ण है, आप ही बाँसुरी बजानेवाला है। प्रभु आप ही बालक-रूप में कुवलयापीड़ हाथी को नष्ट करनेवाला है ॥ २ ॥ हे भाई ! प्रभु आप ही अखाड़ा बनानेवाला है, इस अखाड़े में आप ही कौतुक-तमाशे रचकर देख रहा है। प्रभु आप ही बालक रूपी कृष्ण को पैदा करनेवाला है और आप ही उससे चंडूर, केसी और कंस को ख़त्म करानेवाला है। आप ही शक्ति (देनेवाला) है और आप ही मूर्खों की शक्ति का मर्दन करनेवाला है ॥३॥ हे भाई ! प्यारा प्रभु स्वयं समस्त जगत को पैदा करता है, जगत को नियन्त्रण में रखता है। प्रभु आप ही सब जीवों के गले में रस्सी डाले रखता है; जिस प्रकार वह रस्सी को खींचता है, उसी प्रकार जीव जीवन-मार्ग का अनुसरण करते हैं। नानक का कथन है कि हे प्यारे प्रभु ! जो मनुष्य अहंकार करता है, वह बरबाद हो जाता है। (इसलिए) हे भाई ! परमात्मा का नाम जपा करो और उसकी भक्ति में लीन रहा करो ॥४॥६॥

॥ सोरठि म० ४ दुतुके ॥ अनिक जनम विछुड़े दुखु पाइआ मनमुखि करम करै अहंकारी। साधू परसत ही प्रभु पाइआ गोबिद सरणि तुमारी ॥ १ ॥ गोबिद प्रीति लगी अति पिआरी। जब सतसंग भए साधू जन हिरदै मिलिआ सांति मुरारी ॥ रहाउ ॥ तू हिरदै गुपतु वसहि दिनु राती तेरा भाउ न बुझहि गवारी। सतिगुरु पुरखु मिलिआ प्रभु प्रगटिआ गुण गावै गुण वीचारी ॥ २ ॥ गुरमुखि प्रगासु भइआ साति आई दुरमति बुधि निवारी। आतम ब्रहमु चीनि सुखु पाइआ सतसंगति पुरख तुमारी ॥ ३ ॥ पुरखै पुरखु मिलिआ गुरु

पाइआ जिन कउ किरपा भई तुमारी । नानक अतुलु सहज सुखु पाइआ अनदिनु जागतु रहै बनवारी ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे भाई ! स्वेच्छाचारी मनुष्य अनेक जन्मों से परमात्मा से अलग रहकर दुख सहता चला आ रहा है। वह (मनमुख) अहंकार के अधीनस्थ होकर कर्म करता रहता है। (लेकिन) गुरु के चरण स्पर्श करते ही उसे परमात्मा प्राप्त हो जाता है। हे गोविन्द ! (गुरु की शरण लेकर) वह तेरी शरण में आ जाता है ॥१॥ जब सन्तों की संगति प्राप्त होती है, तब मनुष्य को हृदय में शान्तिप्रदाता परमात्मा आ मिलता है, परमात्मा के साथ उसकी अटूट प्रीति हो जाती है ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम प्रतिपल सब जीवों के हृदय में टिके रहते हो, मूर्ख मनुष्य तुम्हारे साथ प्रेम करना नहीं समझते। जिस मनुष्य को सर्वव्यापक प्रभु का रूप गुरु मिल पड़ता है, उसके भीतर परमात्मा प्रकट हो जाता है। वह मनुष्य परमात्मा के गुणों में सुरति लगाकर गुण गाता रहता है ॥ २ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, उसके भीतर (आत्मिक जीवन का) प्रकाश हो जाता है। उसके भीतर शान्ति हो जाती है, वह मनुष्य अपने भीतर से दुर्बुद्धि दूर कर लेता है। वह मनुष्य अपने भीतर परमात्मा को बसता हुआ पहचान कर आत्मिक आनन्द प्राप्त कर लेता है। हे सर्वव्यापक प्रभु ! यह तेरी सत्संगति का ही प्रभाव है ॥ ३ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य को गुरु मिल जाता है, उसे सर्वव्यापक परमात्मा मिल जाता है। (गुरु उन्हें मिलता है), जिन पर तेरी कृपा होती है। हे नानक ! ऐसा मनुष्य आत्मिक स्थिरता का अनन्त सुख प्राप्त करता है, वह प्रतिपल परमात्मा में लीन रहकर विकारों से सचेत रहता है ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ सोरठि महला ४ ॥ हरि सिउ प्रीति अंतरु मनु बेधिआ हरि बिनु रहणु न जाई । जिउ मछुली बिनु नीरै बिनसै तिउ नामै बिनु मरि जाई ॥ १ ॥ मेरे प्रभ किरपा जलु देवहु हरि नाई । हउ अंतरि नामु मंगा दिन राती नामे ही सांति पाई ॥ रहाउ ॥ जिउ चात्रिकु जल बिनु बिललावै बिनु जल पिआस न जाई । गुरमुखि जलु पावै सुख सहजे हरिआ भाइ सुभाई ॥ २ ॥ मनमुख भूखे दहदिस डोलहि बिनु नावै दुखु पाई । जनमि मरै फिरि जोनी आवै दरगह मिलै सजाई ॥ ३ ॥ क्रिपा करहि ता हरि गुण गावह हरि रसु अंतरि पाई । नानक दीन दइआल भए है त्रिसना सबदि बुझाई ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे भाई ! परमात्मा के साथ प्रेम के द्वारा जिस मनुष्य का हृदय बिंध जाता है, वह परमात्मा के बिना नहीं रह सकता। जिस प्रकार पानी के बिना मछली मर जाती है, उसी प्रकार वह मनुष्य प्रभु के नाम के बिना अपनी आत्मिक मौत आ गयी समझता है ॥ १ ॥ हे मेरे प्रभु ! मुझे अपनी कृपा का जल दो। हे हरि ! मुझे अपनी गुणस्तुति की देन दो। मैं अपने हृदय में दिन-रात तुम्हारा नाम माँगता हूँ, क्योंकि तुम्हारे नाम में अनुरक्ति रखने से ही आत्मिक शान्ति प्राप्त हो सकती है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस प्रकार वर्षा-जल के बिना पपीहा बिलखता है और वर्षा की बूँद के बिना उसकी प्यास नहीं मिटती, उसी प्रकार जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है वह तब प्रभु-प्रेम के प्रभाव से आत्मिक जीवन वाला बनता है, जब वह आत्मिक स्थिरता में टिककर आत्मिक आनन्द देनेवाला नाम-जल प्राप्त करता है ॥ २ ॥ हे भाई ! स्वेच्छाचारी मनुष्य माया की भूख के मारे हुए दसों दिशाओं में फिरते हैं। स्वेच्छाचारी मनुष्य परमात्मा के नाम से ख़ाली रहकर दुख पाता रहता है। वह जन्मता है मरता है, बार-बार योनियों में पड़ा रहता है, परमात्मा के दरबार में उसे सज़ा मिलती है ॥३॥ हे हरि ! यदि तुम कृपा करो, तो ही हम जीव तुम्हारी गुणस्तुति के गीत गा सकते हैं। प्रभु की कृपा होने पर मनुष्य अपने हृदय में हरि-नाम का आस्वादन अनुभव करता है। हे नानक ! दीनदयालु प्रभु जिस मनुष्य पर प्रसन्न होता है, गुरु के उपदेश के द्वारा उसकी प्यास बुझा देता है ॥ ४ ॥ ८ ॥

॥ सोरठि महला ४ पंचपदा ॥ अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई। प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥ १ ॥ मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई। गुरमति राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सभु आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा। हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ॥ २ ॥ जिस की वथु सोई प्रभु जाणै जिसनो देइ सु पाए। वसतु अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ॥ ३ ॥ जिनि इह चाखी सोई जाणै गूंगे की मिठिआई। रतनु लुकाइआ लूकै नाही जे को रखै लुकाई ॥ ४ ॥ सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई। जिसनो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ॥ ५ ॥ ९ ॥

जब मनुष्य इस अपराजित मन को जीत लेता है, तब इसे सफलता मिल

जाती है। इस सफलता से मनुष्य को यह ज्ञान हो जाता है कि परमात्मा के प्रेम के तीर इसके हृदय में बिंध जाते हैं, तब इसके मन की दुबिधा काटी जाती है ॥ १ ॥ हे मेरे गोविन्द ! अपने दास को प्रतिष्ठा दो। गुरु की शिक्षा के द्वारा मेरे अन्दर अपना नाम प्रकट कर दो। मुझे सदा अपनी शरण में रखो ॥ रहाउ ॥ हे मूर्ख अज्ञानी मन ! यह जगत जन्म-मरण का (कारण) है, (इसलिए परमात्मा का नाम) स्मरण करता रह। हे हरि ! कृपा कर। मुझे गुरु मिला, तब ही तेरे नाम में लीनता हो सकती है ॥ २ ॥ हे भाई ! यह नाम-वस्तु जिस प्रभु की है, वही जानता है (कि यह वस्तु किसे देनी है); जिस जीव को प्रभु यह देन देता है, वही ले सकता है। यह वस्तु ऐसी सुन्दर है कि जगत में इस जैसी दूसरी वस्तु नहीं। किसी चतुराई के द्वारा उस तक पहुँच नहीं हो सकती। मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों की भी इस तक पहुँच नहीं। यदि पूर्णगुरु मिल जाए, तो वही अगोचर प्रभु का दर्शन करा सकता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य ने यह नाम-वस्तु चखी है, वही इसका स्वाद जानता है। (वह उसी प्रकार नाम-आस्वादन की अनुभूति नहीं बता सकता, जिस प्रकार) गूँगा मिठाई खाने पर उसका स्वाद नहीं बतला सकता। यदि कोई मनुष्य नाम-रत्न को अपने भीतर, अपने अन्दर छिपाकर रखना चाहे, तो भी यह नाम-रत्न छिपाए नहीं छिपता ॥ ४ ॥ हे प्रभु ! यह सारा जगत तुम्हारे द्वारा निर्मित है, तुम सब जीवों के मन की जाननेवाले हो, तुम सबकी सुधि लेनेवाले मालिक हो। नानक का कथन है कि वही मनुष्य तुम्हारा नाम प्राप्त कर सकता है, जिसे तुम यह देन देते हो। दूसरा कोई भी ऐसा जीव नहीं, जो तुम्हारी कृपा के बिना तुम्हारा नाम प्राप्त कर सके ॥५॥९॥

सोरठि महला ५ घरु १ तितुके

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ किसु हउ जाची किसु आराधी जा सभु को कीता होसी। जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी। निरभउ निरंकारु भव खंडनु सभि सुख नवनिधि देसी ॥ १ ॥ हरि जीउ तेरी दाती राजा। माणसु बपुड़ा किआ सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥ रहाउ ॥ जिनि हरि धिआइआ सभु किछु तिस का तिस की भूख गवाई। ऐसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कबही जाई। अनदु भइआ सुख सहजि समाणे सतिगुरि मेलि मिलाई ॥ २ ॥ मन नामु जपि नामु आराधि अनदिनु नामु वखाणी। उपदेसु सुणि साध संतन का

सभ चूकी काणि जमाणी । जिन कउ क्रिपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥ ३ ॥ कीमति कउणु करै प्रभ तेरी तू सरब जीआ दइआला । सभु किछु कीता तेरा वरतै किआ हम बाल गुपाला । राखि लेहु नानकु जनु तुमरा जिउ पिता पूत किरपाला ॥ ४ ॥ १ ॥

हे भाई ! जब हर एक जीव परमात्मा द्वारा पैदा किया हुआ है, तो मैं कर्तार-प्रभु के अतिरिक्त किससे कुछ माँगूँ ? मैं और किससे आशा लगाए फिरूँ ? जो भी बड़ा या धनाड्य दिखता है, प्रत्येक को मिट्टी में मिल जाना है । हे भाई ! सारे सुख और जगत के सारे नौ ख़ज़ाने वह निरंकार ही देनेवाला है, जिसे किसी का भय नहीं और जो सब जीवों का जन्म-मरण नष्ट करनेवाला है ॥ १ ॥ हे प्रभुजी ! मैं तुम्हारी देनों से तृप्त हो सकता हूँ, मैं किसी बेचारे मनुष्य की प्रशंसा क्यों करता फिरूँ ? मुझे किसी मनुष्य की अधीनता क्यों होवे ? ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य ने परमात्मा की भक्ति शुरू कर दी, जगत की प्रत्येक वस्तु उसकी बन जाती है, परमात्मा उसके भीतर से माया की भूख दूर कर देता है । सुखदाता प्रभु ने उसे ऐसा नाम-धन दे दिया है, कभी भी समाप्त नहीं होता । गुरु ने उसे परमात्मा के चरणों में जगह दिलवा दी, तो आत्मिक स्थिरता के कारण उसके भीतर आनन्द और सारे सुख आ बसते हैं ॥ २ ॥ हे मन ! प्रतिपल परमात्मा का नाम जपा कर, स्मरण किया कर, उच्चरित किया कर । सन्तजनों का उपदेश सुनकर यमों की भी सारी अधीनता समाप्त हो जाती है । सतिगुरु की वाणी में वही मनुष्य सुरति लगाते हैं, जिन पर प्यारा प्रभु आप दयालु होता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा कौन मूल्यांकन कर सकता है ? तुम सब जीवों पर कृपा करनेवाले हो । हे गोपाल प्रभु ! हम जीवों की क्या सामर्थ्य है ? जगत में प्रत्येक कार्य आपका ही किया हुआ होता है । हे प्रभु ! नानक तेरा दास है । इस दास की रक्षा उसी प्रकार करता रह, जिस प्रकार पिता अपने पुत्रों की रक्षा कृपालु बनकर करता है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ सोरठि महला ५ घरु १ चौतुके ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई मनि तनि हिरदै धार । साचा साहिबु मनि वसै भाई एहा करणी सार । जितु तनि नामु न ऊपजै भाई से तन होए छार । साधसंगति कउ वारिआ भाई जिन एकंकार अधार ॥ १ ॥ सोई सचु अराधणा भाई जिस ते सभु किछु होइ । गुरि पूरै जाणाइआ भाई तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ रहाउ ॥ नाम

विहूणे पचि मुए भाई गणत न जाइ गणी । विणु सच सोच न पाईऐ भाई साचा अगम धणी । आवण जाणु न चुकई भाई झूठी दुनी मणी । गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी ॥ २ ॥ सिम्रिति सासत सोधिआ भाई विणु सतिगुर भरमु न जाइ । अनिक करम करि थाकिआ भाई फिरि फिरि बंधन पाइ । चारे कुंडा सोधीआ भाई विणु सतिगुर नाही जाइ । वडभागी गुरु पाइआ भाई हरि हरि नामु धिआइ ॥ ३ ॥ सचु सदा है निरमला भाई निरमल साचे सोइ । नदरि करे जिसु आपणी भाई तिसु परापति होइ । कोटि मधे जनु पाईऐ भाई विरला कोई कोइ । नानक रता सचि नामि भाई सुणि मनु तनु निरमलु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे भाई ! मन, तन में प्रभु को टिकाकर उस सर्वोच्च गोविन्द प्रभु की गुणस्तुति करनी चाहिए । आदमी के लिए सर्वोत्तम कर्तव्य यह है कि सत्यस्वरूप मालिक-प्रभु मन में बसा रहे । जिस-जिस शरीर में परमात्मा का नाम प्रकट नहीं होता, वे सब शरीर व्यर्थ समझो । हे भाई ! मैं उन गुरमुखों की संगति पर बलिहारी हूँ, जिन्होंने एक परमात्मा का आसरा बनाया हुआ है ॥ १ ॥ हे भाई ! उस सत्यस्वरूप परमात्मा की ही आराधना करनी चाहिए, जिसने हर वस्तु को उत्पादित किया है । हे भाई ! पूर्णगुरु द्वारा यह ज्ञान मिला है कि उसके बिना दूसरा कोई पूर्ण नहीं है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! उन मनुष्यों की गणना नहीं की जा सकती, जो परमात्मा के नाम से खाली रहकर माया-मोह में उलझकर आत्मिक मृत्यु प्राप्त करते रहते हैं । हे भाई ! सत्यस्वरूप प्रभु के बिना आत्मिक पवित्रता प्राप्त नहीं हो सकती । वह सत्यस्वरूप अपहुँच मालिक ही पवित्रता का स्रोत है । हे भाई ! (प्रभु के बिना) जन्म-मरण का चक्र नहीं समाप्त होता । लौकिक पदार्थों का अभिमान मिथ्या है । जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहता है, वह हरि-नाम की एक कणि देकर करोड़ों को बचा लेता है ॥ २ ॥ हे भाई ! स्मृतियाँ, शास्त्र सब देखे हैं, लेकिन गुरु के बिना किसी दूसरे से दुबिधा दूर नहीं हो सकती । हे भाई ! शास्त्रानुसार अनेकों कर्म करके मनुष्य थक जाता है, लेकिन बार-बार बन्धनग्रस्त ही होता है । हे भाई ! सारा जगत ढूँढ़कर देख लिया है, लेकिन गुरु के अतिरिक्त (बचाव का स्थल) कहीं नहीं है । हे भाई ! जिस सौभाग्यशाली मनुष्य को गुरु मिल जाता है, वह सदा परमात्मा का नाम स्मरण करता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! सत्यस्वरूप परमात्मा सदा पवित्र है, सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति सदा पवित्र है । हे भाई ! यह गुणस्तुति उस मनुष्य को मिलती है, जिस

पर प्रभु कृपादृष्टि करता है, और ऐसा कोई मनुष्य करोड़ों में से एक ही मिलता है। हे नानक! जो मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा के नाम में रँगा रहता है, प्रभु की गुणस्तुति सुन-सुनकर उसका तन, मन पवित्र हो जाता है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ सोरठि महला ५ दुतुके ॥ जउ लउ भाउ अभाउ इहु मानै तउ लउ मिलणु दूराई। आन आपना करत बीचारा तउ लउ बीचु बिखाई ॥ १ ॥ माधवे ऐसी देहु बुझाई। सेवउ साध गहउ ओट चरना नह बिसरै मुहतु चसाई ॥ रहाउ ॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी रिदै न आई। प्रानपति तिआगि आन तू रचिआ उरझिओ संगि बैराई ॥ २ ॥ सोगु न बिआपै आपु न थापै साधसंगति बुधि पाई। साकत का बकना इउ जानउ जैसे पवनु झुलाई ॥ ३ ॥ कोटि पराध अछादिओ इहु मनु कहणा कछू न जाई। जन नानक दीन सरनि आइओ प्रभ सभु लेखा रखहु उठाई ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे भाई! जब तक यह मन मोह और वैर मानता है तब तक प्रभु से मिलाप दूर की बात होती है, क्योंकि जब तक यह अपना-पराया के पचड़े में पड़ा रहता है, तब तक माया-मोह का पर्दा बना रहता है ॥ १ ॥ हे प्रभु! मुझे ऐसी समझ दो कि मैं गुरु की सेवा में लगा रहूँ, गुरु के चरणों का सहारा लिये रहूँ। यह आसरा मुझे पल भर के लिए भी विस्मृत न हो ॥ रहाउ ॥ हे मूर्ख अज्ञानी मन! तुझे कभी यह ज्ञान न हुआ कि तू प्राणों के मालिक-प्रभु को भुलाकर दूसरों के मोह में मस्त रहता है और कामादिक वैरियों से मेल किए रखता है ॥ २ ॥ हे भाई! सत्संगति से मुझे तो यह ज्ञान हुआ है कि जो मनुष्य अपनत्व के साथ (माया-मोह में) लिप्त नहीं होता, उस पर चिन्ता-फ़िक्र अपना दबाव नहीं डाल सकती। इसलिए मैं परमात्मा से विच्छिन्न मनुष्य की बात को हवा के झोंके की तरह मान लेता हूँ ॥ ३ ॥ हे भाई! यह मन करोड़ों पापों से दबा रहता है, इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। दास नानक का कथन है कि हे प्रभु! मैं तुच्छ तुम्हारा शरणागत हूँ, मेरे विकारों का समस्त लेखा समाप्त कर दीजिए ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ पुत्र कलत्र लोक ग्रिह बनिता माइआ सन बंधेही। अंत की बार को खरा न होसी सभ मिथिआ असनेही ॥ १ ॥ रे नर काहे पपोरहु देही। ऊडि जाइगो धूमु बादरो इकु भाजहु रामु सनेही ॥ रहाउ ॥

तीनि संङिआ करि देही कीनी जल कूकर भसमेही । होइ आमरो ग्रिह महि बैठा करण कारण बिसरोही ।। २ ।। अनिक भाति करि मणीए साजे काचै तागि परोही । तूटि जाइगो सूतु बापुरे फिरि पाछै पछुतोही ।। ३ ।। जिनि तुम सिरजे सिरजि सवारे तिसु धिआवहु दिनु रैनेही । जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतिगुर ओट गहेही ।। ४ ।। ४ ।।

हे भाई ! पुत्र, स्त्री, पारिवारिक व्यक्ति और औरतें सब माया के सम्बन्ध हैं। अन्त में कोई भी तेरा सहायक नहीं होगा, सब मिथ्या प्रेम करनेवाले हैं ।। १ ।। हे मनुष्य ! शरीर को ही क्यों प्रेमपूर्वक पालता रहता है ? धुएँ, बादल (के तुल्य यह शरीर) नष्ट हो जायगा। केवल परमात्मा का भजन किया कर, वही वास्तविक रूप से प्रेम करनेवाला है ।। रहाउ ।। हे भाई ! प्रभु ने माया के तीनों गुणों के अधीन रहनेवाला तेरा यह शरीर निर्मित किया है, जो अन्त में पानी, कुत्तों या मिट्टी के हवाले हो जाता है। तू इस शरीर-घर में स्वयं को अनश्वर समझ बैठा है और जगत के मूल परमात्मा को भुला रहा है ।। २ ।। हे भाई ! अनेक तरीक़ों से परमात्मा ने अंग रूपी मोती बनाए हैं और श्वासों के कच्चे धागों में पिरोए हैं। हे तुच्छ जीव ! अन्त में यह धागा टूट जाएगा, फिर समय बीत जाने पर हाथ मलकर पछताएगा ।। ३ ।। हे भाई ! जिस परमात्मा ने तुझे पैदा किया है, पैदा करके सुन्दर बनाया है, उसे दिन-रात स्मरण करता रह। दास नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मुझ पर कृपा कर, मैं गुरु का सहारा लिये रखूँ ।। ४ ।। ४ ।।

।। सोरठि महला ५ ।। गुरु पूरा भेटिओ वडभागी मनहि भइआ परगासा । कोइ न पहुचनहारा दूजा अपुने साहिब का भरवासा ।। १ ।। अपुने सतिगुर कै बलिहारै । आगै सुखु पाछै सुख सहजा घरि आनंदु हमारै ।। रहाउ ।। अंतरजामी करणैहारा सोई खसमु हमारा । निरभउ भए गुरचरणी लागे इक राम नाम आधारा ।। २ ।। सफल दरसनु अकाल मूरति प्रभु है भी होवनहारा । कंठि लगाइ अपुने जन राखे अपुनी प्रीति पिआरा ।। ३ ।। वडी वडिआई अचरज सोभा कारजु आइआ रासे । नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सगले दूख बिनासे ।। ४ ।। ५ ।।

हे भाई ! सौभाग्यवश मुझे पूर्णगुरु मिल गया है, मेरे मन में आत्मिक

जीवन की सूझ पैदा हो गई है। अब मुझे अपने मालिक-प्रभु का सहारा हो गया है, कोई उस मालिक के समकक्ष नहीं है ॥ १ ॥ हे भाई ! मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ। (क्योंकि गुरु-कृपा से) मेरे हृदय-घर में आनन्द बना रहता है, इस लोक में भी आत्मिक स्थिरता का सुख मुझे प्राप्त हो गया है और परलोक में भी यह सुख टिका रहनेवाला है ॥रहाउ॥ हे भाई ! जब से मैंने गुरु के चरणों में जगह पाई है, मुझे परमात्मा के नाम का सहारा हो गया है, मुझे कोई भय स्पर्श नहीं कर सकता। (मुझे विश्वास है कि) सृजनहार प्रभु सबके भीतर की जाननेवाला है, वही मेरे सिर पर रक्षक है ॥ २ ॥ जिस परमात्मा का दर्शन मनुष्य-जन्म का फल देनेवाला है, जिस परमात्मा की हस्ती मृत्यु से परे है, वह प्रभु इस समय भी मौजूद है और सत्यस्वरूप है। वह प्रभु अपने प्रेम की देन देकर अपने सेवकों को अपने गले लगाकर रखता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! मुझे पूर्णगुरु मिल गया है, मेरे सारे दुख दूर हो गए हैं। वह गुरु अत्यन्त गरिमावान है, आश्चर्यजनक शोभा वाला है, उसकी शरण लेने से ज़िन्दगी का लक्ष्य प्राप्त हो जाता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ सुखीए कउ पेखै सभ सुखीआ रोगी कै भाणै सभ रोगी। करण करावनहार सुआमी आपन हाथि संजोगी ॥ १ ॥ मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता। तिस कै भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रहमु पछाता ॥ रहाउ ॥ संत संगि जाका मनु सीतलु ओहु जाणै सगली ठांढी। हउमै रोगि जाका मनु बिआपित ओहु जनमि मरै बिललाती ॥ २ ॥ गिआन अंजनु जाकी नेत्री पड़िआ ता कउ सरब प्रगासा। अगिआनि अंधेरै सूझसि नाही बहुड़ि बहुड़ि भरमाता ॥ ३ ॥ सुणि बेनंती सुआमी अपुने नानकु इहु सुखु मागै। जह कीरतनु तेरा साधू गावहि तह मेरा मनु लागै ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे भाई ! आत्मिक सुख महसूस करनेवाले को प्रत्येक व्यक्ति अपने जैसा दिखता है और विकारग्रस्त व्यक्ति को तमाम दुनिया विकारग्रस्त दिखती है। मालिक-प्रभु ही सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला है, जीवों से कराने की सामर्थ्य रखनेवाला है, यह (आत्मिक सुख और दुख की स्थिति) प्रभु ने अपने हाथ में रखी हुई है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! जिस मनुष्य ने अपने भीतर से 'अपना-पराया', 'मैं-पर' की बात निकाल दी, जिसने सब जीवों में परमात्मा बसता हुआ पहचान लिया, उसके विचार में कोई जीव कुमार्गगामी नहीं है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! सत्संगति में रहकर जिस

मनुष्य का मन शान्त हो जाता है, वह सारी दुनिया को ही शान्त-हृदय समझता है। लेकिन जिस मनुष्य का मन अहंत्वरोग में फँसा रहता है, वह सदा दुखी रहता है। वह जन्म लेकर आत्मिक रूप से मृत रहता है ॥ २ ॥ हे भाई ! आत्मिक जीवन की सूझ का सुरमा जिस मनुष्य की आँखों में पड़ जाता है, उसे आत्मिक जीवन की सारी समझ आ जाती है। लेकिन अज्ञानी मनुष्य को अज्ञानता के अँधेरे में कुछ नहीं सूझता, वह बार-बार भटकता रहता है ॥ ३ ॥ हे मेरे मालिक ! मेरी प्रार्थना सुन। नानक तुम्हारे द्वार से यह सुख माँगता है कि जहाँ सन्तजन तुम्हारी गुणस्तुति का गीत गाते हैं, वहाँ मेरा मन लगा रहे ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ तनु संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीआ। संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ ॥ १ ॥ संतन बिनु अवरु न दाता बीआ। जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटहि जन सेवा हरि कीरतनु रसि गाईऐ। ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईऐ ॥ २ ॥ रसना एक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीऐ। अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि संतन की लहीऐ ॥ ३ ॥ निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही। बूडत मोह ग्रिह अंधकूप महि नानक लेहु निबाही ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे भाई ! जब कोई मनुष्य अपना तन, मन, धन सन्तजनों के हवाले कर देता है और सन्तों की कृपा से परमात्मा का नाम स्मरण करने लगता है, तब उसे सारे सुख मिल जाते हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! सन्तजनों के अतिरिक्त परमात्मा के नाम की देन देनेवाला कोई नहीं हैं। जो-जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, वह संसार-समुद्र से पार होने योग्य हो जाता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! परमात्मा के सेवक की सेवा करने से करोड़ों पाप मिट जाते हैं और प्रेमपूर्वक परमात्मा की गुणस्तुति की जा सकती है। इस लोक में आत्मिक आनन्द मिला रहता है और परलोक में मुक्त हो जाते हैं। लेकिन, हे भाई ! प्रभु के सेवकों की संगति सौभाग्यवश मिलती है ॥ २ ॥ हे भाई ! मेरी एक जिह्वा है और सन्तजन अनेक गुणों से भरपूर होते हैं। सन्तजनों की महिमा कहाँ तक बखानी जाए ? सन्तों की शरण लेने से ही वह परमात्मा मिल सकता है, जो अनश्वर और अगम्य है, जिस तक ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच नहीं हो सकती ॥ ३ ॥ दास नानक का कथन है कि मैं गुणहीन, नीच, निराश्रित, विकृत हूँ, मैंने सन्तों का आश्रय

लिया है। (मुझ) गृहस्थ के मोह के अन्धे कुएँ में डूब रहे का साथ अन्तिम दम तक निभाओ ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ सोरठि महला ५ घरु १ ॥ जाकै हिरदै वसिआ तू करते ताकी तैं आस पुजाई। दास अपुने कउ तू विसरहि नाही चरण धूरि मनि भाई ॥ १ ॥ तेरी अकथ कथा कथनु न जाई। गुण निधान सुखदाते सुआमी सभ ते ऊच बडाई ॥ रहाउ ॥ सो सो करम करत है प्राणी जैसी तुम लिखि पाई। सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥ २ ॥ सरब निरंतरि तुमहि समाने जाकउ तुधु आपि बुझाई। गुर परसादि मिटिओ अगिआना प्रगट भए सभ ठाई ॥ ३ ॥ सोई गिआनी सोई धिआनी सोई पुरखु सुभाई। कहु नानक जिसु भए दइआला ताकउ मन ते बिसरि न जाई ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे कर्तार! जिस मनुष्य के हृदय में तुम्हारा वास होता है, तुम उसकी प्रत्येक आकांक्षा पूर्ण कर देते हो। तुम्हारा सेवक तुम्हें कभी नहीं भूलता। उसके मन में तुम्हारे चरणों की धूलि के लिए लगाव होता है ॥ १ ॥ हे गुणों के भण्डार, सुखदाता मालिक! तुम्हारी गरिमा सर्वोपरि है। तुम कैसे हो, कितने महान हो —यह बात व्यक्त नहीं की जा सकती ॥ रहाउ ॥ जीव वही कर्म करता है, जैसी आज्ञा तुमने उसके माथे पर लिखकर रख दी है। अपने सेवक को तुमने अपनी सेवा-भक्ति की देन दी हुई है, वह तुम्हारे दर्शन करके तृप्त रहता है ॥२॥ हे प्रभु! जिस मनुष्य को तुम स्वयं ज्ञान देते हो, उसे तुम सब जीवों के भीतर निरन्तर व्याप्त दिखाई देते हो। गुरु की कृपा से उसके भीतर से अज्ञानता का अँधेरा मिट जाता है और उसकी शोभा सर्वत्र फैल जाती है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि वही मनुष्य ज्ञानी है, ईश्वर-प्रेमी है, प्रेमी स्वभाव वाला है, जिस पर प्रभु स्वयं कृपा करता है। उस व्यक्ति को प्रभु कभी भी विस्मृत नहीं होता ॥ ४ ॥ ८ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ सगल समग्री मोहि विआपी कब ऊचे कब नीचे। सुधु न होईऐ काहू जतना ओड़कि को न पहूचे ॥ १ ॥ मेरे मन साध सरणि छुटकारा। बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई फिरि आवत बारो बारा ॥ रहाउ ॥ ओहु जु भरमु भुलावा कहीअत तिन महि उरझिओ सगल संसारा। पूरन भगतु पुरख सुआमी का सरब थोक ते निआरा ॥ २ ॥

निंदउ नाही काहू बातै एहु खसम का कीआ। जाकउ क्रिपा करी प्रभि मेरै मिलि साध संगति नाउ लीआ ॥ ३ ॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर सभना करत उधारा। कहु नानक गुर बिनु नही तरीऐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥ ४ ॥ ९ ॥

समस्त दुनिया मोहग्रस्त है, जिसके फलस्वरूप जीव कभी अहंकारग्रस्त हो जाते हैं और कभी घबराहट में पड़ जाते हैं। व्यक्ति के किसी निजी प्रयास से पवित्र नहीं हुआ जा सकता। कोई भी मनुष्य मोह से परे नहीं पहुँच सकता ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! गुरु का शरणागत होने से मुक्ति हो सकती है। पूर्णगुरु के बिना जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं होता, जीव बार-बार जगत में आता रहता है ॥ रहाउ ॥ जिस मानसिक स्थिति को 'भ्रम' कहा जाता है, सारा जगत उसमें फँसा रहता है। लेकिन सर्वव्यापक मालिक-प्रभु का पूर्ण भक्त सारे लौकिक पदार्थों से अलग होता है ॥ २ ॥ फिर भी, यह सारा जगत प्रभु द्वारा उत्पादित है, मैं इसे किसी भी रूप में बुरा नहीं कह सकता। हाँ, जिस मनुष्य पर मेरे प्रभु ने कृपा कर दी, वह सत्संगति में मिलकर परमात्मा का नाम जपता है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि हमने यह वास्तविकता स्वीकार कर ली है कि गुरु का शरणागत हुए बिना संसार-सागर से पार नहीं उतरा जा सकता। (गुरु की शरण लेने पर) परमात्मा का रूप गुरु उन सबका उद्धार कर देता है ॥ ४ ॥ ९ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ राम नामु ततु सारा। किलबिख काटे निमख अराधिआ गुरमुखि पारि उतारा ॥ १ ॥ हरि रसु पीवहु पुरख गिआनी। सुणि सुणि महा त्रिपति मनु पावै साधू अंम्रित बानी ॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति सचु पाईऐ सरब सुखा का दाता। अपुने दास कउ भगति दानु देवै पूरन पुरखु बिधाता ॥ २ ॥ स्रवणी सुणीऐ रसना गाईऐ हिरदै धिआईऐ सोई। करण कारण समरथ सुआमी जा ते ब्रिथा न कोई ॥ ३ ॥ वडै भागि रतन जनमु पाइआ करहु क्रिपा किरपाला। साधसंगि नानकु गुण गावै सिमरै सदा गोपाला ॥ ४ ॥ १० ॥

हे भाई ! बड़ी लम्बी छानबीन करके हम इस फैसले पर पहुँचे हैं कि परमात्मा का नाम-स्मरण जीवन की सर्वोपरि वास्तविकता है। गुरु का शरणागत होकर हरि-नाम स्मरण करने से यह नाम पल भर में सारे पाप काट देता है और संसार-समुद्र से पार उतार देता है ॥ १ ॥ हे आत्मिक

रूप से जाग्रत् मनुष्य ! हमेशा परमात्मा का नाम-रस पान किया कर। गुरु की आत्मिक जीवन देनेवाली वाणी के माध्यम से परमात्मा का नाम बार-बार सुनकर मनुष्य का मन सर्वोपरि सन्तोष प्राप्त कर लेता है ॥रहाउ॥ हे भाई ! यदि समस्त सुखों का दाता, सत्यस्वरूप परमात्मा मिल जाए तो यही विकारों से मुक्ति है, यही खुराक है और जीने का सही ढंग है। वह सर्वव्यापक सृजनहार प्रभु भक्ति का दान अपने सेवक को देता है ॥ २ ॥ हे भाई ! जिस जगत के मूल, सर्वशक्तिमान प्रभु के द्वार से कोई जीव खाली हाथ नहीं जाता, उसके नाम को ही कानों से सुनना चाहिए, जिह्वा द्वारा गाना चाहिए और हृदय में स्मरण करना चाहिए ॥३॥ हे कृपालु गोपाल ! सौभाग्यवश यह श्रेष्ठ मनुष्य-जन्म प्राप्त किया है, अब कृपा कर, तुम्हारा दास नानक सत्संगति में रहकर तुम्हारा गुणगान करता रहे और हमेशा तुम्हारा स्मरण करता रहे ॥ ४ ॥ १० ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा। कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥ १ ॥ प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ। गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला। संता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु प्रतिपाला ॥ २ ॥ हरि अंम्रित नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु। जरा मरा तापु सभु नाठा गुणगोबिंद नित गावहु ॥ ३ ॥ सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई। प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई ॥ ४ ॥ ११ ॥

प्रातःकाल स्नान करके और प्रभु का नाम-स्मरण करके मन, तन निरोग हो जाते हैं क्योंकि प्रभु की शरण लेकर करोड़ों रुकावटें दूर हो जाती हैं और प्रभु के साथ मिलाप के अवसर बन जाते हैं ॥१॥ हे भाई ! गुरु ने अपना सुन्दर उपदेश दिया है, जो प्रभु की गुणस्तुति की वाणी है। इसे सदा गाते रहो, सुनते रहो और पढ़ते रहो, (ऐसा करने पर यह निश्चित है कि अनेक मुसीबतों से) पूर्णगुरु ने तुझे बचा लिया है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मालिक-प्रभु सत्यस्वरूप है, उसका बड़प्पन मापा नहीं जा सकता, वह भक्ति से प्रेम करनेवाला है, दया का स्रोत है, सन्तों की प्रतिष्ठा की रक्षा करता आया है और अपना यह विरद वह आदिमकाल से ही निभाता आ रहा है ॥ २ ॥ हे भाई ! परमात्मा का नाम आत्मिक जीवन देनेवाला है। यह आत्मिक खुराक सदा खाते रहो, प्रतिपल अपने मुँह में डालते रहो। हे भाई ! हमेशा गोविन्द का गुणगान करते रहो, न बुढ़ापा आएगा,

न मृत्यु आएगी और प्रत्येक दुख-क्लेश दूर हो जायगा ।। ३ ।। हे भाई ! (नाम-स्मरण करनेवाले) मनुष्य की प्रार्थना मेरे स्वामी ने सुन ली, (अब प्रभु-कृपा होने पर) उसके भीतर पूर्ण शक्ति पैदा हो जाती है । हे नानक ! गुरु की यह महानता तमाम युगों में उजागर रहती है ।। ४ ।। ११ ।।

सोरठि महला ५ घरु २ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुरहाई । सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि दरसनु देहु दिखाई ।। १ ।। सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई । इहु मनु तेरा भाई ।। रहाउ ।। पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मनु तैकू देसा । सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा ।। २ ।। मानु न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईऐ । सुणि मीता जीउ पिंडु सभु तनु अरपीजै इउ दरसनु हरि जीउ पाईऐ ।। ३ ।। भइओ अनुग्रहु प्रसादि संतन कै हरिनामा है मीठा । जन नानक कउ गुरि किरपा धारी सभु अकुल निरंजनु डीठा ।। ४ ।। १ ।। १२ ।।

हे मित्र ! हमारा एक ही प्रभु-पिता है, हम एक ही प्रभु-पिता के बच्चे हैं, तू मेरा गुरु-भाई है । मुझे परमात्मा का दर्शन करा दे । मेरी आत्मा तुझ पर बार-बार बलिहारी हुआ करेगी ।। १ ।। हे मित्र ! सुनो। मैं तेरे चरणों की धूलि पर बलिहारी हूँ । हे भाई ! मेरा यह मन (तुम्हारा अनुसर्ता है) ।। रहाउ ।। हे मित्र ! मैं तेरे दोनों पैर मलूँगा, मल-मलकर धोऊँगा, मैं अपना यह मन तेरे हवाले कर दूँगा । हे मित्र ! सुन । मैं तेरा शरणागत हूँ । मुझे ऐसी शिक्षा दे कि मैं प्रभु को मिल सकूँ ।। २ ।। (अगली पंक्तियों में प्रभु-मिलन की युक्ति को बतलाया है ।) हे मित्र ! सुन । अहंकार नहीं करना चाहिए, प्रभु की शरण में रहना चाहिए । जो कुछ परमात्मा कर रहा है, उसे सहर्ष स्वीकारना चाहिए । यह तन, मन उसके प्रति अर्पित हों । इस प्रकार परमात्मा को पाया जाता है ।। ३ ।। हे मित्र ! सन्तजनों की कृपा से जिस पर प्रभु की कृपा हो उसे परमात्मा का नाम प्यारा लगने लगता है । गुरु ने दास नानक पर कृपा की तो सर्वत्र वह प्रभु दृष्टिगत होने लगा, जिसका कोई विशेष ख़ानदान नहीं है और जो माया के प्रभाव से परे है ।। ४ ।। १ ।। १२ ।।

॥ सोरठि महला ५ ॥ कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे। प्रतिपालै नित सारि समालै इकु गुनु नही मूरखि जाता रे ॥ १ ॥ हरि आराधि न जाना रे। हरि हरि गुरु गुरु करता रे। हरि जीउ नामु परिओ रामदासु ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे। पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥ २ ॥ हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे। करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे ॥ ३ ॥ मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे। गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥ ४ ॥ २ ॥ १३ ॥

हे भाई! मुझ मूर्ख ने उस परमात्मा का एक भी उपकार नहीं समझा, जो करोड़ों ब्रह्माण्डों का पालक है, जो समस्त जीवों को देन देनेवाला है, जो सबका पालन-पोषण करता है और सदा सुधि लेकर सँभाल करता है ॥ १ ॥ हे भाई! मुझे परमात्मा का स्मरण करने की समझ नहीं, मैं तो केवल 'हरि-हरि', 'गुरु-गुरु' करता रहता हूँ। हे प्रभुजी! मेरा नाम 'राम का दास' हो गया है (अब तुम मेरी रक्षा करो) ॥ रहाउ ॥ हे भाई! मैं मूर्ख उस परमात्मा को कहीं दूर बसता हुआ समझ रहा हूँ, जो ग़रीबों पर दया करनेवाला है, जो दया का घर है, जो सुखों का समुद्र है, जो समस्त शरीरों में सर्वत्र विद्यमान है और जो सब जीवों के साथ-साथ रहकर सबके कर्म देखता है ॥ २ ॥ हे भाई! परमात्मा के गुणों का अन्त नहीं पाया जा सकता, लेकिन मैं उसके गुणों को ससीम करके व्यक्त करता हूँ। मैं क्या जान सकता हूँ कि वह परमात्मा कैसा है? हे भाई! मैं अपने गुरु के पास विनती करता हूँ कि मुझ मूर्ख को शिक्षा दे ॥ ३ ॥ हे भाई! मुझ मूर्ख को पार उतारना कोई बड़ी बात नहीं (क्योंकि प्रभु-कृपा से) करोड़ों पापी संसार-समुद्र से पार उतर रहे हैं। हे भाई! जिन मनुष्यों ने गुरु नानक के उपदेश को सुना है, उनका दर्शन किया है, वे दोबारा जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ते ॥ ४ ॥ २ ॥ १३ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ जिना बात को बहुतु अंदेसरो ते मिटे सभि गइआ। सहज सैन अरु सुखमन नारी ऊध कमल बिगसइआ ॥ १ ॥ देखहु अचरजु भइआ। जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि बोधि सो रिदै गुरि दइआ ॥ रहाउ ॥ जोइ दूत मोहि बहुतु संतावत ते भइआनक भइआ। करहि बेनती राखु

ठाकुर ते हम तेरी सरनइआ ॥ २ ॥ जह भंडारु गोबिंद का खुलिआ जिह प्रापति तिह लइआ । एकु रतनु मोकउ गुरि दीना मेरा मनु तनु सीतलु थिआ ॥ ३ ॥ एक बूंद गुरि अंम्रितु दीनो ता अटलु अमरु न मुआ । भगति भंडार गुरि नानक कउ सउपे फिरि लेखा मूलि न लइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥

हे भाई ! जिन बातों की मुझे बहुत चिन्ता लगी रहती थी, वह अब मिट गई है (अर्थात् चिन्ता समाप्त हो गई है) । मेरा विपरीतगामी हृदय-कमल का पुष्प प्रफुल्लित हो उठा है, सहजावस्था में मेरी लीनता रहती है और मेरी तमाम इन्द्रियाँ अब मेरे मन को आत्मिक सुख देनेवाली हो गई हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! देखो, मेरे भीतर एक विचित्र कौतुक घटित हुआ है। गुरु ने मेरे हृदय में वह परमात्मा दिखा दिया है, जिसके विषय में सुनते थे कि वह आदमी की समझ से बहुत परे है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जो कामादिक वैरी मुझे बहुत सताया करते थे, वे अब मेरे पास आने में डरते हैं; बल्कि वे विनती करते हैं कि हम अब तुम्हारे अधीनस्थ रहेंगे, हमें मालिक-प्रभु के (कोप से) बचा लो ॥ २ ॥ हे भाई ! (मेरे भीतर वह कौतुक ऐसे उद्घाटित हुआ है कि) उस अवस्था में परमात्मा की भक्ति का ख़ज़ाना खुल पड़ा है, लेकिन यह ख़ज़ाना उस मनुष्य को ही मिलता है, जिसके भाग्य में इसकी प्राप्ति लिखी है । हे भाई ! गुरु ने मुझे एक ऐसा रत्न दे दिया है, जिससे मेरा मन सर्वथा शीतल हो गया है, सर्वथा शान्त हो गया है ॥ ३ ॥ हे भाई ! गुरु ने मुझे आत्मिक जीवन देनेवाले नाम-जल की एक बूँद दी है, अब मेरी आत्मा स्थिर हो गई है, मैं आत्मिक मृत्यु से बच गया हूँ । आत्मिक मृत्यु मेरे निकट नहीं फटकती । हे भाई ! जब से गुरु ने नानक को परमात्मा की भक्ति के ख़ज़ाने दे दिए हैं, उससे पूर्वकृत कर्मों का लेखा बिल्कुल ही नहीं माँगा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ चरन कमल सिउ जाका मनु लीना से जन त्रिपति अघाई । गुण अमोल जिसु रिदै न वसिआ ते नर त्रिसन त्रिखाई ॥ १ ॥ हरि आराधे अरोग अनदाई । जिस नो विसरै मेरा राम सनेही तिसु लाख बेदन जणु आई ॥ रहाउ ॥ जिह जन ओट गही प्रभ तेरी से सुखीए प्रभ सरणे । जिह नर बिसरिआ पुरखु बिधाता ते दुखीआ महि गनणे ॥ २ ॥ जिह गुर मानि प्रभू लिव लाई तिह महा अनंद रसु करिआ । जिह प्रभू बिसारि गुर ते बेमुखाई ते नरक घोर महि परिआ ॥ ३ ॥ जितु

को लाइआ तित ही लागा तैसो ही वरतारा। नानक सह पकरी संतन की रिदै भए मगन चरनारा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥

हे भाई ! जिन मनुष्यों का मन प्रभु के कमल-कोमल चरणों में लग जाता है, वे मनुष्य पूर्णरूपेण संतुष्ट रहते हैं। लेकिन जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा के अमूल्य गुण नहीं टिकते, वे मनुष्य माया की तृष्णा में फँसे रहते हैं ॥१॥ हे भाई ! परमात्मा की आराधना करने से वे मनुष्य निरोग हो जाते हैं और आत्मिक आनन्द बना रहता है। लेकिन जिस मनुष्य को मेरा प्यारा प्रभु भूल जाता है, उस पर ऐसे जानो कि जैसे लाखों तकलीफ़ें आ पड़ती हैं ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! जिन मनुष्यों ने तुम्हारा आसरा लिया, वे तुम्हारी शरण में रहकर सुख पाते हैं। लेकिन, हे भाई ! जिन मनुष्यों को सर्वव्यापक कर्तार विस्मृत हो जाता है, वे मनुष्य दुखियों में गिने जाते हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! जिन मनुष्यों ने गुरु की आज्ञा मानकर परमात्मा में मन लगा लिया, उन्हें अत्यन्त आनन्द, अत्यन्त रस अनुभूत हुआ। लेकिन जो मनुष्य परमात्मा को भुलाकर गुरु से उदासीन रहते हैं, वे भयानक नरक में पड़े रहते हैं ॥ ३ ॥ हे नानक ! जिस कार्य में परमात्मा किसी जीव को लगाता है, वह उसी कार्य में लगा रहता है; प्रत्येक जीव वैसा ही व्यवहार करता है (जैसा परमात्मा चाहता है)। जिन मनुष्यों ने सन्तजनों का सहारा लिया है, वे भीतर से प्रभु के चरणों में ही मस्त रहते हैं ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ राजन महि राजा उरझाइओ मानन महि अभिमानी। लोभन महि लोभी लोभाइओ तिउ हरि रंगि रचे गिआनी ॥ १ ॥ हरि जन कउ इही सुहावै। पेखि निकटि करि सेवा सतिगुर हरि कीरतनि ही त्रिपतावै ॥ रहाउ ॥ अमलन सिउ अमली लपटाइओ भूमन भूमि पिआरी। खीर संगि बारिकु है लीना प्रभ संत ऐसे हितकारी ॥ २ ॥ बिदिआ महि बिदुअंसी रचिआ नैन देखि सुखु पावहि। जैसे रसना सादि लुभानी तिउ हरिजन हरि गुण गावहि ॥ ३ ॥ जैसी भूख तैसी का पूरकु सगल घटा का सुआमी। नानक पिआस लगी दरसन की प्रभु मिलिआ अंतरजामी ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥

जिस प्रकार राज्य के कार्यों में राजा व्यस्त रहता है, जिस प्रकार सम्मानवर्द्धक कार्यों में आदर-सम्मान का भूखा आदमी लगा रहता है, जिस प्रकार लालची मनुष्य लालच बढ़ानेवाले धन्धों में फँसा रहता है, उसी प्रकार आत्मिक जीवन की सूझ वाला मनुष्य प्रभु के प्रेम-रंग में मस्त रहता

है ॥ १ ॥ परमात्मा के भक्त को यही काम अच्छा लगता है। भक्त प्रभु को अपने आसपास देखकर, गुरु की सेवा करके परमात्मा की गुणस्तुति में ही प्रसन्न रहता है ॥ रहाउ ॥ नशों में दिलचस्पी रखनेवाला मनुष्य नशों में ही चिपटा रहता है, ज़मीन के मालिकों को ज़मीन अच्छी लगती है, बच्चा दूध में प्रवृत्त रहता है, इसी प्रकार सन्तपुरुष परमात्मा से प्रेम करते हैं ॥ २ ॥ हे भाई! विद्वान मनुष्य विद्या के पठन-पाठन में प्रसन्न रहता है, आँखें (लौकिक पदार्थ) देख-देखकर सुख महसूस करती हैं। हे भाई! जिस प्रकार जीभ पदार्थों के आस्वादन में प्रसन्न रहती है, उसी प्रकार प्रभु के भक्त प्रभु की गुणस्तुति के गीत गाते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई! जैसी जिस जीव की लालसा होती है, समस्त शरीरों का मालिक-प्रभु वैसी ही लालसा पूर्ण करनेवाला है। हे नानक! जिसे परमात्मा के दर्शन की प्यास लगती है, उसे दिल की जाननेवाला परमात्मा स्वयं आकर मिलता है ॥४॥५॥१६॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता। हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥ १ ॥ माधो हम ऐसे तू ऐसा। हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥ तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना। निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना ॥ २ ॥ तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला। तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपुने बाला ॥ ३ ॥ तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै। कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥

हे प्रभु! हम जीव विकारों के मैल से आपूरित रहते हैं, तुम हमें पवित्र करनेवाले हो। हम गुणहीन हैं, तुम हमें गुण देनेवाले हो। हम जीव मूर्ख हैं, तुम दाता हो, बुद्धिमान हो और हमारे गुणों के ज्ञाता हो ॥ १ ॥ हे प्रभु! हम जीव ऐसे (विकृत) हैं और तुम (लोककल्याण-कामी) हो। हम पाप कमानेवाले हैं, तुम पापों को नष्ट करनेवाले हो। हे ठाकुर! तुम्हारा देश सुन्दर है ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु! तुमने आत्मा, देह और प्राण देकर सब जीवों को उत्पादित किया है, उत्पादित करके सब पर कृपा करते हो। हे कृपालु! हम जीव गुणहीन हैं, हममें कोई गुण नहीं है। तुम हमें गुणों की देन देते हो ॥ २ ॥ हे प्रभु! तुम हमारा कल्याण करते हो, लेकिन हम तुम्हारी इस कल्याणकामी भावना का मूल्य नहीं समझते। लेकिन फिर भी तुम हम पर हमेशा

दयालु रहते हो। हे सर्वव्यापक सृजनहार! तुम हमें सुख देनेवाले हो, तुम अपने बच्चों की रक्षा करते हो ॥ ३ ॥ हे प्रभु! तुम सब गुणों के भण्डार हो। तुम सत्यस्वरूप बादशाह हो। समस्त जीव तुम्हारे द्वार पर भीख माँगते हैं। नानक का कथन है कि हम जीवों का तो यही हाल है, तुम हमें सन्तजनों के सहारे पर रखो ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥

॥ सोरठि महला ५ घरु २ ॥ मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे। पावक सागर अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे ॥ १ ॥ माधौ तू ठाकुरु सिरि मोरा। ईहा ऊहा तुहारो धोरा ॥ रहाउ ॥ कीते कउ मेरै संमानै करणहारु त्रिणु जानै। तू दाता मागन कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै ॥ २ ॥ खिन महि अवरु खिनै महि अवरा अचरज चलत तुमारे। रूड़ो गूड़ो गहिर गंभीरो ऊचौ अगम अपारे ॥३॥ साध संगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुनी तुमारी बाणी। अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥४॥७॥१८॥

हे उद्धार करने की सामर्थ्य रखनेवाले प्रभु! माँ के पेट में अपना स्मरण (मन्त्र) देकर वहाँ हमारी रक्षा करनेवाले हो। (अब) विकारों की अग्नि के समुद्र की गहरी लहरों में गिरे हुए को भी बचा लो ॥ १ ॥ हे प्रभु! तुम मेरे सिर पर रक्षक हो। इस लोक और परलोक में मुझे तुम्हारा ही सहारा है ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु! तुम्हारे द्वारा उत्पादित पदार्थों को यह जीव सुमेरु पर्वत जितना बड़ा समझता है, लेकिन सब पदार्थों को उत्पादित करनेवाले तुमको एक तिनके के तुल्य मानता है। हे प्रभु! तुम सब देन देनेवाले हो, समस्त दुनिया तुम्हारे ही द्वार से माँगनेवाली है, तुम अपनी रज़ा अनुसार सबको दान देनेवाले हो ॥ २ ॥ हे प्रभु! तुम्हारे कौतुक विस्मयकारी हैं, एक क्षण में तुम कुछ का कुछ बना देते हो। हे अपहुँच, अनन्त! तुम सर्वोच्च हो, सुन्दर हो, विशालमना हो और तुम सारे संसार में गुप्त रूप में विद्यमान हो ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि हे सर्वव्यापक प्रभु! जब तुम किसी जीव को आप ही सत्संगति में मिलाते हो, तब वह तुम्हारी गुणस्तुति की वाणी सुनता है। निष्काम एवं सर्वव्यापक प्रभु का प्रताप देखकर तब उसके भीतर आत्मिक आनन्द पैदा होता है ॥ ४ ॥ ७ ॥ १८ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा। संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा ॥ १ ॥ हम संतन सिउ बणि आई। पूरबि लिखिआ

पाई। इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा। संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा ॥ २ ॥ संतन मोकउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा। धरमराइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा ॥ ३ ॥ महा अनंद भए सुखु पाइआ संतन कै परसादे। कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रंगि रते बिसमादे ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥

हे प्यारे प्रभु ! मैं तुम्हारे सन्तों की चरण-धूलि बना रहूँ, उनकी शरण में रहूँ (ऐसी मेरी कामना है)। सन्त ही प्रबल सहारा हैं और सन्त ही मेरे जीवन को सुन्दर बनानेवाले हैं ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारे सन्तजनों के साथ मेरी प्रीति हो गई है। पूर्वलिखित लेख के अनुसार यह प्राप्ति हुई है। अब मेरा यह मन तुम्हारा प्रेमी बन गया है ॥ रहाउ ॥ सन्तों के साथ ही मेरा लेन-देन और व्यवहार है। सन्तों के साथ रहकर मैंने यह लाभ प्राप्त किया है कि मेरे भीतर भक्ति के खज़ाने भर गए हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! जब से सन्तजनों ने मुझे परमात्मा की भक्ति की राशि-पूँजी दी है, तब से मेरी फ़िक्र दूर हो गयी है। मेरे पूर्वकृत कर्मों के अनुसार लिखित हिसाब का काग़ज़ फट चुका है। अब धर्मराज मुझसे कोई पूछताछ नहीं करेंगे ॥३॥ हे भाई ! सन्तों की कृपा से मेरे भीतर अत्यन्त आत्मिक आनन्द बना पड़ा है। नानक का कथन है कि मेरा मन परमात्मा के साथ विश्वस्त हो गया है और आश्चर्यजनक प्रभु के प्रेम-रंग में मैं रँगा गया हूँ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥

॥ सोरठि म० ५ ॥ जेती समग्री देखहु रे नर तेती ही छडि जानी। राम नाम संगि करि बिउहारा पावहि पदु निरबानी ॥ १ ॥ पिआरे तू मेरो सुखदाता। गुरि पूरै दीआ उपदेसा तुमही संगि पराता ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना ता महि सुखु नही पाईऐ। होहु रेन तू सगल की मेरे मन तउ अनद मंगल सुखु पाईऐ ॥ २ ॥ घाल न भानै अंतर बिधि जानै ताकी करि मन सेवा। करि पूजा होमि इहु मनूआ अकाल मूरति गुरदेवा ॥ ३ ॥ गोबिद दामोदर दइआल माधवे पारब्रहम निरंकारा। नामु वरतणि नामो वालेवा नामु नानक प्रान अधारा ॥ ४ ॥ ९ ॥ २० ॥

हे मनुष्य ! यह जितनी सामग्री दृष्टिगत होती है, यह सब कुछ अन्त में

छोड़कर जाना है। परमात्मा के नाम के साथ मेल कर, इससे तू वह आत्मिक स्थिति प्राप्त कर लेगा जहाँ कोई वासना स्पर्श नहीं कर सकती ॥ १ ॥ हे प्यारे प्रभु ! तुम ही मेरे सुखों के दाता हो। जबसे पूर्णगुरु ने मुझे ज्ञान दिया है, मैं तुम्हारे साथ ही पिरोया गया हूँ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकृतियों में फँसे रहने से सुख नहीं मिला करता। हे मेरे मन ! तू सबके चरणों की धूलि बना रह। तब ही आत्मिक आनन्द, ख़ुशी और सुख प्राप्त होता है ॥ २ ॥ हे मेरे मन ! उस परमात्मा की सेवा-भक्ति किया कर, जो किसी की मेहनत को व्यर्थ नहीं जाने देता और हरेक के भीतर की जानता है। हे भाई! जो प्रकाश रूपी प्रभु सर्वोपरि है, जिसका स्वरूप मृत्यु-रहित है, उसकी पूजा कर और भेंट के रूप में अपना यह मन उसके हवाले कर दे ॥ ३ ॥ हे नानक ! गोविन्द, दामोदर, दया के घर, मायापति, परब्रह्म निरंकार के नाम को प्रतिपल व्यवहार में आनेवाली चीज़ बना। नाम को ही हृदय-घर का सामान बना (क्योंकि) यही आत्मा का सम्बल है ॥ ४ ॥ ९ ॥ २० ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ मिरतक कउ पाइओ तनि सासा बिछुरत आनि मिलाइआ। पसू परेत मुगध भए स्रोते हरि नामा मुखि गाइआ ॥ १ ॥ पूरे गुर की देखु वडाई। ताकी कीमति कहणु न जाई ॥ रहाउ ॥ दूख सोग का ढाहिओ डेरा अनद मंगल बिसरामा। मन बांछत फल मिले अचिंता पूरन होए कामा ॥ २ ॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल मिटि गए आवण जाणे। निरभउ भए हिरदै नामु वसिआ अपुने सतिगुर कै मनि भाणे ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरिगुण गावै दूखु दरदु भ्रमु भागा। कहु नानक ताके पूर करंमा जाका गुरचरनी मनु लागा ॥ ४ ॥ १० ॥ २१ ॥

हे भाई ! मृतक मनुष्य के शरीर में नाम प्राण डाल देता है, प्रभु से बिछुड़े हुए मनुष्य को लाकर प्रभु से मिला देता है। पशु, प्रेत, मूर्ख सभी अलग-अलग स्वभाव को धारण करनेवाले मनुष्य नाम सुननेवाले बन जाते हैं और परमात्मा का नाम मुँह से गाने लगते हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! पूर्णगुरु की आत्मिक उच्चता आश्चर्यजनक है, उसका मूल्य नहीं बताया जा सकता ॥ रहाउ ॥ (नाम-स्मरण करनेवाले व्यक्ति के भीतर से गुरु) दुखों का, ग़मों का डेरा गिरा देता है, उसके भीतर आनन्द और ख़ुशियों का ठिकाना बना देता है। उस मनुष्य को अचानक मनोवांछित फल मिल जाते हैं और उसके समस्त कार्य पूर्ण हो जाते हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! जो

मनुष्य गुरु को प्रिय लगते हैं, उन्हें इस लोक में सुख प्राप्त रहता है, परलोक में भी वे मुक्त हो जाते हैं, उनके जन्म-मरण के चक्र समाप्त हो जाते हैं, उन्हें कोई भय स्पर्श नहीं कर सकता। उनके हृदय में परमात्मा का नाम टिक जाता है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि जिस मनुष्य का मन गुरु के चरणों में लगा रहता है, उसके तमाम कार्य सफल हो जाते हैं, वह मनुष्य उठता-बैठता हर वक्त परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता रहता है, उसके भीतर से हर एक दुख, पीड़ा दुबिधा समाप्त हो जाती है ॥४॥१०॥२१॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ रतनु छाडि कउडी संगि लागे जाते कछू न पाईऐ। पूरन पारब्रहम परमेसुर मेरे मन सदा धिआईऐ ॥ १ ॥ सिमरहु हरि हरि नामु परानी। बिनसै काची देह अगिआनी ॥ रहाउ ॥ म्रिग त्रिसना अरु सुपन मनोरथ ताकी कछु न वडाई। राम भजन बिनु कामि न आवसि संगि न काहू जाई ॥ २ ॥ हउ हउ करत बिहाइ अवरदा जीअ को कामु न कीना। धावत धावत नह त्रिपतासिआ राम नामु नही चीना ॥ ३ ॥ साद बिकार बिखै रस मातो असंख खते करि फेरे। नानक की प्रभ पाहि बिनंती काटहु अवगुण मेरे ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२ ॥

मायाग्रस्त जीव बहुमूल्य प्रभु-नाम छोड़कर कौड़ी के मुल्य के बराबर माया से चिपटे रहते हैं, जिससे कुछ भी प्राप्त नहीं होता। हे मेरे मन ! सर्वव्यापक परब्रह्म परमेश्वर का नाम सदा स्मरण करना चाहिए ॥ १ ॥ हे मनुष्य ! सदा परमात्मा का नाम स्मरण किया कर। हे ज्ञानहीन ! यह शरीर नश्वर है, यह अवश्य नष्ट हो जाता है ॥ रहाउ ॥ माया मृग-तृष्णा है, स्वप्नों में मिले पदार्थ तुल्य है, (आत्मिक रूप से विकसित व्यक्तियों में) इस माया को तनिक भी प्रतिष्ठा नहीं मिलती। परमात्मा के भजन के बिना कोई चीज़ काम नहीं आती। यह माया अन्त में किसी के साथ नहीं जाती ॥ २ ॥ मायाग्रस्त जीव की उम्र माया का अभिमान करते हुए बीत जाती है। वह कोई ऐसा काम नहीं करता, जो आत्मा के लिए लाभप्रद हो। वह (माया के लिए) दौड़ता भटकता रहता है (लेकिन) तृप्त नहीं होता। (इसके अतिरिक्त) वह परमात्मा के नाम के साथ मेल नहीं जोड़ता ॥ ३ ॥ हे भाई ! मायाग्रस्त मनुष्य, आस्वादनों, विकारों और पदार्थों के स्वाद में मस्त रहता है, अनन्त पाप कर-करके जन्म-मरण के चक्रों में पड़ा रहता है। हे भाई ! नानक की प्रार्थना तो प्रभु के पास ही है। (हे प्रभु !) मेरे अवगुण समाप्त कर दो ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ गुण गावहु पूरन अबिनासी काम क्रोध बिखु जारे। महा बिखमु अगनि को सागरु साधू संगि उधारे ॥ १ ॥ पूरै गुरि मेटिओ भरमु अंधेरा। भजु प्रेम भगति प्रभु नेरा ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु निधान रसु पीआ मन तन रहे अघाई। जत कत पूरि रहिओ परमेसरु कत आवै कत जाई ॥ २ ॥ जप तप संजम गिआन तत बेता जिसु मनि वसै गुोपाला। नामु रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ताकी पूरन घाला ॥ ३ ॥ कलि कलेस मिटे दुख सगले काटी जम की फासा। कहु नानक प्रभि किरपा धारी मन तन भए बिगासा ॥ ४ ॥ १२ ॥ २३ ॥

(गुरु का शरणागत होकर) सर्वव्यापक, अनश्वर प्रभु के गुण गाया कर। (गुरु तुष्ट होकर) व्यक्ति के भीतर के काम-क्रोध से सम्बद्ध ज़हर जला देता है। जगत विकारों की अग्नि का समुद्र है, इससे पार उतरना बहुत कठिन है। (गुणस्तुति करनेवाले मनुष्य को गुरु) सत्संगति में रखकर पार उतार देता है ॥१॥ पूर्णगुरु ने (शरण लेनेवाले मनुष्य का) भ्रम मिटा दिया। उसका माया-मोह सम्बन्धी अँधेरा दूर कर दिया, इसलिए अब तू भी (प्रेमपूर्वक भक्ति के साथ) प्रभु का भजन किया कर, तुझे प्रभु साथ-साथ दृष्टिगत हो जायगा ॥ रहाउ ॥ हे भाई! परमात्मा का नाम (सारे रसों का ख़ज़ाना है), जो मनुष्य इस ख़ज़ाने का रस पान करता है, उसके तन, मन तृप्त हो जाते हैं। उसे सर्वत्र परमात्मा व्याप्त दिख पड़ता है। वह मनुष्य फिर न जन्मता है, न मरता है ॥ २ ॥ हे भाई! जिस मनुष्य ने गुरु की शरण लेकर नाम-रत्न पा लिया, उसकी मेहनत सफल हो गई। जिस मनुष्य के मन में सृष्टि का पालनकर्ता आ बसता है, वह मनुष्य वास्तविक जप, तप, संयम का भेद समझनेवाला हो जाता है और आत्मिक जीवन की सूझ का ज्ञाता हो जाता है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि जिस मनुष्य पर प्रभु ने कृपा की, उसके तन, मन आत्मिक आनन्द द्वारा प्रफुल्लित हो गए; उस मनुष्य की यमों वाली फाँसी काटी गई और उसके सारे दुख-क्लेश दूर हो गए ॥ ४ ॥ १२ ॥ २३ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ करण करावणहार प्रभु दाता पारब्रहम प्रभु सुआमी। सगले जीअ कीए दइआला सो प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥ मेरा गुरु होआ आपि सहाई। सूख सहज आनंद मंगल रस अचरज भई बडाई ॥ रहाउ ॥ गुर की सरणि पए भै नासे साची दरगह माने। गुण गावत आराधि नामु हरि

आए अपुनै थाने ॥ २ ॥ जै जैकारु करै सभ उसतति संगति साध पिआरी । सद बलिहारि जाउ प्रभ अपुने जिनि पूरन पैज सवारी ॥ ३ ॥ गोसटि गिआनु नामु सुणि उधरे जिनि जिनि दरसनु पाइआ । भइओ क्रिपालु नानक प्रभु अपुना अनद सेती घरि आइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २४ ॥

जिस पर गुरु-कृपा होती है, उसे निश्चय हो जाता है कि परमात्मा सब कुछ कर सकनेवाला है, जीवों से सब कुछ करा सकनेवाला है, सब जीवों को देन देनेवाला है, सबका मालिक है, सब जीव उसी दया के घर प्रभु द्वारा उत्पादित हैं, वह प्रभु हर एक के भीतर की जाननेवाला है ॥१॥ हे भाई ! मेरा गुरु जिसका मददगार आप बनता है, उस मनुष्य के भीतर सहजावस्था के सुख, आनन्द, खुशियाँ और आस्वादन प्रकट हो जाते हैं । उस मनुष्य को इस लोक में आश्चर्यजनक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य गुरु की शरण ले लेते हैं, उनके समस्त भय दूर हो जाते हैं, सत्यस्वरूप परमात्मा की सेवा में उन्हें सम्मान मिलता है, परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाकर, परमात्मा का नाम स्मरण कर वे अपने हृदय-स्थान में आ टिकते हैं (अर्थात् वे दुबिधा से मुक्त हो जाते हैं) ॥ २ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य को गुरु की संगति भली लगती है, तमाम दुनिया उसकी प्रशंसा करती है, सम्मान करती है । मैं सदा अपने प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने पूर्णरूपेण मेरी प्रतिष्ठा बचाई है ॥ ३ ॥ हे भाई ! जिस-जिस मनुष्य ने गुरु का दर्शन किया है, उन्हें प्रभु का मिलाप प्राप्त हो गया, उन्हें आत्मिक जीवन की सूझ प्राप्त हो गई और प्रभु का नाम श्रवण कर वे विकारों के आक्रमणों से बच गए । हे नानक ! जिस मनुष्य पर प्यारा प्रभु दयालु हो गया, वह मनुष्य आत्मिक आनन्दपूर्वक प्रभु-चरणों में लीन हो गया ॥ ४ ॥ १३ ॥ २४ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ प्रभ की सरणि सगल भै लाथे दुख बिनसे सुखु पाइआ । दइआलु होआ पारब्रहमु सुआमी पूरा सतिगुरु धिआइआ ॥ १ ॥ प्रभ जीउ तू मेरो साहिबु दाता । करि किरपा प्रभ दीन दइआला गुण गावउ रंगि राता ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि नामु निधानु द्रिड़ाइआ चिंता सगल बिनासी । करि किरपा अपुनो करि लीना मनि वसिआ अबिनासी ॥ २ ॥ ताकउ बिघनु न कोऊ लागै जो सतिगुरि अपुनै राखे । चरन कमल बसे रिद अंतरि अंम्रित हरि रसु चाखे ॥ ३ ॥ करि सेवा

सेवक प्रभ अपुने जिनि मन की इछ पुजाई । नानक दास ताकै बलिहारै जिनि पूरन पैज रखाई ।। ४ ।। १४ ।। २५ ।।

हे भाई ! जो मनुष्य पूर्णगुरु का स्मरण करता है, उस पर मालिक-परमात्मा दयालु होता है। परमात्मा की शरण लेने पर उसके समस्त भय दूर हो जाते हैं, सारे दुख दूर हो जाते हैं और वह सदा आत्मिक आनन्द महसूस करता है ।। १ ।। हे प्रभु ! तुम मेरे स्वामी हो, तुम मुझे समस्त देन देनेवाले हो। हे दीनदयालु प्रभु ! कृपा करो, मैं तुम्हारे प्रेम-रंग में रँगकर तुम्हारे गुण गाता रहूँ ।। रहाउ ।। हे भाई ! जिस मनुष्य के हृदय में गुरु ने सारे सुखों का ख़ज़ाना प्रभु-नाम दृढ़ कर दिया, उसकी सारी चिन्ता दूर हो गई। परमात्मा कृपा करके उसे अपना बना लेता है और उसके मन में अनश्वर परमात्मा आ बसता है ।। २ ।। हे भाई ! अपने गुरु ने जिस मनुष्य की रक्षा की, उसे कोई रुकावट नहीं होती। परमात्मा के कमल-पुष्प जैसे कोमल चरण उसके हृदय में आ टिकते हैं और वह मनुष्य आत्मिक जीवन के दाता हरिनाम-रस का सदा आस्वादन करता है ।। ३ ।। हे भाई ! जिस परमात्मा ने तेरी मनोकामना पूर्ण की है, उसकी स्तुति सेवकों की तरह करता रह। दास नानक का कथन है कि मैं उस प्रभु पर बलिहारी हूँ, जिसने पूर्णतौर से मेरी प्रतिष्ठा बचाई है ।। ४ ।। १४ ।। २५ ।।

।। सोरठि महला ५ ।। माइआ मोह मगनु अंधिआरै देवनहारु न जानै । जीउ पिंडु साजि जिनि रचिआ बलु अपुनो करि मानै ।। १ ।। मन मूड़े देखि रहिओ प्रभ सुआमी । जो किछु करहि सोई सोई जाणै रहै न कछूऐ छानो ।। रहाउ ।। जिहवा सुआद लोभ मदि मातो उपजे अनिक बिकारा । बहुतु जोनि भरमत दुखु पाइआ हउमै बंधन के भारा ।। २ ।। देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै । चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै ।। ३ ।। दीन दइआल पूरन दुख भंजन तुम बिनु ओट न काई । काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभ सरणाई ।। ४ ।। १५ ।। २६ ।।

हे भाई ! जिस परमात्मा ने शरीर बनाकर जीव को उत्पादित किया है, सब प्रकार की देन देनेवाले उस प्रभु के साथ जीव सम्बन्ध नहीं जोड़ता, माया-मोह के अँधेरे में मस्त रहकर अपनी शक्ति को ही बड़ी समझता है ।। १ ।। हे मूर्ख मन ! मालिक-प्रभु सब कुछ देख रहा है। तू जो करता है, वह वही जान लेता है। उस परमेश्वर से तेरी कोई भी

करतूत छिपी नहीं रह सकती ।। रहाउ ।। हे भाई ! मनुष्य जीभ के आस्वादों में, लोभ के नशे में मस्त रहता है, जिससे उसके भीतर अनेकों विकार पैदा हो जाते हैं, मनुष्य अहंकार की जंजीरों के बोझ के नीचे दब जाता है; बहुत योनियों में भटकता फिरता है और दुख सहता रहता है ।। २ ।। माया के आवरण में मनुष्य दरवाज़े बन्द करके अनेक परदों के पीछे परनारी के साथ कुकर्म करता है । जब चित्रगुप्त तेरी करतूतों का लेखा माँगेंगे तब कोई भी तुम्हारी करतूतों पर परदा नहीं डाल सकेगा ।। ३ ।। नानक का कथन है कि हे दीनदयालु, सर्वव्यापक, दुखनाशक प्रभु ! तुम्हारे अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा नहीं है । हे प्रभु ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ । संसार-समुद्र में से मुझे निकाल लो ।।४।।१५।।२६।।

।। सोरठि महला ५ ।। पारब्रहमु होआ सहाई कथा कीरतनु सुखदाई । गुर पूरे की बाणी जपि अनदु करहु नित प्राणी ।। १ ।। हरि साचा सिमरहु भाई । साध संगि सदा सुखु पाईऐ हरि बिसरि न कबहू जाई ।। रहाउ ।। अंम्रित नामु परमेसुर तेरा जो सिमरै सो जीवै । जिसनो करमि परापति होवै सो जनु निरमलु थीवै ।। २ ।। बिघन बिनासन सभि दुख नासन गुर चरणी मनु लागा । गुण गावत अचुत अबिनासी अनदिनु हरि रंगि जागा ।। ३ ।। मन इछे सेई फल पाए हरि की कथा सुहेली । आदि अंति मधि नानक कउ सो प्रभु होआ बेली ।। ४ ।। १६ ।। २७ ।।

हे प्राणी ! पूर्णगुरु की वाणी पढ़ा कर और आत्मिक आनन्द प्राप्त किया कर । वाणी के पठन-पाठन से परमात्मा सहायक बन जाता है और परमात्मा की गुणस्तुति (उस पाठक के भीतर) आत्मिक आनन्द पैदा करती है ।। १ ।। हे भाई ! सत्यस्वरूप परमात्मा का स्मरण करते रहा करो । सत्संगति में सदा आत्मिक आनन्द प्राप्त होता है और परमात्मा कभी विस्मृत नहीं होता ।। रहाउ ।। हे सर्वोच्च मालिक ! तुम्हारा नाम आत्मिक जीवन देनेवाला है । जो मनुष्य तुम्हारा नाम स्मरण करता है, वह आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेता है । जिस मनुष्य को तुम्हारी कृपा से तुम्हारा नाम प्राप्त होता है, वह मनुष्य सदाचारी बन जाता है ।। २ ।। हे भाई ! गुरु के चरण समस्त रुकावटें नष्ट करनेवाले हैं, समस्त दुख दूर करनेवाले हैं । जिस मनुष्य का मन गुरु के चरणों में लग जाता है, वह प्रतिपल अविनाशी तथा अटल परमात्मा के गुण गाता हुआ उसके प्रेम-रंग में लीन होकर सचेत रहता है ।। ३ ।। हे भाई ! परमात्मा की गुणस्तुति आत्मिक आनन्द देनेवाली है । गुणस्तुति करनेवाला मनुष्य वही फल प्राप्त

कर लेता है, जिनकी कामना उसका मन करता है। हे भाई ! परमात्मा नानक के लिए सदा का मददगार बन गया है ॥ ४ ॥ १६ ॥ २७ ॥

॥ सोरठि महला ५ पंचपदा ॥ बिनसै मोहु मेरा अरु तेरा बिनसै अपनी धारी ॥ १ ॥ संतहु इहा बतावहु कारी। जितु हउमै गरबु निवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब भूत पारब्रहमु करि मानिआ होवां सगल रेनारी ॥ २ ॥ पेखिओ प्रभ जीउ अपुनै संगे चूकै भीति भ्रमारी ॥ ३ ॥ अउखधु नामु निरमल जलु अंम्रितु पाईऐ गुरू दुआरी ॥ ४ ॥ कहु नानक जिसु मसतकि लिखिआ तिसु गुर मिलि रोग बिदारी ॥ ५ ॥ १७ ॥ २८ ॥

जिस उपचार से मेरे भीतर से मोह नष्ट हो जाए, मैं-पर वाला भेद-भाव दूर हो जाए, माया के प्रति मेरी ममता समाप्त हो जाए; ॥ १ ॥ हे सन्तो ! ऐसा कोई उपचार बताओ, जिससे मैं भीतर से अहंकार दूर कर सकूँ ॥ १ ॥रहाउ ॥ जिसके द्वारा परमात्मा सब जीवों में व्याप्त माना जा सके और मैं सबकी चरणधूलि बना रहूँ ॥ २ ॥ जिससे परमात्मा अपने साथ-साथ देखा जा सके और मेरे भीतर से माया की खातिर द्विधा की दीवार दूर हो जाए ॥ ३ ॥ हे भाई ! वह औषधि तो परमात्मा का नाम ही है, आत्मिक जीवन का दाता पवित्र नाम-जल ही है। यह नाम गुरु के द्वार से मिलता है ॥ ४ ॥ नानक का कथन है कि जिस मनुष्य के मस्तक पर नाम की प्राप्ति का लेख लिखा हो, गुरु से मिलकर उसके रोग काटे जाते हैं ॥ ५ ॥ १७ ॥ २८ ॥

सोरठि महला ५ घरु २ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ। ऊच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ ॥ १ ॥ संतहु घटि घटि रहिआ समाहिओ। पूरन पूरि रहिओ सरब महि जलि थलि रमईआ आहिओ ॥ १ ॥ रहाउ॥ गुण निधान नानकु जसु गावै सतिगुरि भरमु चुकाइओ। सरब निवासी सदा अलेपा सभ महि रहिआ समाइओ॥२॥१॥२९॥

हे भाई ! जिस प्रकार सब वृक्षों में अग्नि मौजूद है। जिस प्रकार हर प्रकार के दूध में घी गुप्तरूप में विद्यमान है, उसी प्रकार भले-बुरे सब जीवों में परमात्मा की ज्योति विद्यमान है। परमात्मा प्रत्येक शरीर में है,

सब जीवों में है ॥ १ ॥ हे सन्तो ! परमात्मा हरेक शरीर में मौजूद है। वह पूर्णरूपेण सब जीवों में व्यापक है, वह सुन्दर राम धरती में है, पानी में है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! नानक गुणों के भण्डार परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाता है। गुरु ने नानक का भ्रम दूर कर दिया है। परमात्मा सब जीवों में विद्यमान है (फिर भी) हमेशा निर्लिप्त है, सब जीवों में समाया हुआ है ॥ २ ॥ १ ॥ २९ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ जाकै सिमरणि होइ अनंदा बिनसै जनम मरण भै दुखी। चारि पदारथ नवनिधि पावहि बहुरि न त्रिसना भुखी ॥ १ ॥ जा को नामु लैत तू सुखी। सासि सासि धिआवहु ठाकुर कउ मन तन जीअरे मुखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सांति पावहि होवहि मन सीतल अगनि न अंतरि धुखी। गुर नानक कउ प्रभू दिखाइआ जलि थलि त्रिभवणि रुखी ॥ २ ॥ २ ॥ ३० ॥

हे भाई ! जिस प्रभु के स्मरण से तू खुशियों से आपूरित जीवन जी सकता है, तेरे जन्म-मरण के सब भय तथा दुख दूर हो सकते हैं, तू चारों पदार्थ और दुनिया के नौ ख़ज़ाने प्राप्त कर सकता है। जिसके स्मरण से तुझे माया की भूख-प्यास नहीं लगेगी ॥ १ ॥ हे जीव ! परमात्मा का नाम स्मरण करने से तू सुखी हो सकता है, उस पालनकर्ता प्रभु को तू अपने मन, तन मुँह से हर श्वास के साथ स्मरण किया कर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्मरण द्वारा ही तू शान्ति प्राप्त कर लेगा। तू भीतर से बिल्कुल शान्त (ठंडा) हो जायगा। तेरे भीतर तृष्णा की अग्नि नहीं जलेगी। हे भाई ! गुरु ने नानक को वह परमात्मा पानी, धरती, वृक्षों में, समस्त संसार में दिखा दिया ह ॥ २ ॥ २ ॥ ३० ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इन ते आपि छडावहु। इह भीतर ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥ १ ॥ अपुनी बिधि आपि जनावहु। हरि जन मंगल गावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसरु नाही कबहू हीए ते इह बिधि मन महि पावहु। गुरु पूरा भेटिओ वडभागी जन नानक कतहि न धावहु ॥ २ ॥ ३ ॥ ३१ ॥

हे प्रभु ! काम, क्रोध, लोभ, झूठ, निन्दा, इन सब विकारों से तुम मुझे मुक्त करा दो। मेरे मन से इन सबको निकाल दो और मुझे अपने चरणों में जगह दिए रखो ॥ १ ॥ हे प्रभु ! अपनी भक्ति की जाँच तुम मुझे आप सिखाओ। मुझे प्रेरित करो कि मैं तुम्हारे सन्तों के साथ मिलकर

तुम्हारी गुणस्तुति के गीत गाया करूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! मुझे ऐसी शिक्षा दो कि मेरे हृदय से तुम कभी भी विस्मृत न होओ। हे दास नानक ! तुझे सौभाग्यवश पूर्णगुरु मिल गया है, अब तू किसी दूसरी तरफ़ न दौड़ता फिर ॥ २ ॥ ३ ॥ ३१ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ जा कै सिमरणि सभु कछु पाईऐ बिरथी घाल न जाई। तिसु प्रभ तिआगि अवर कत राचहु जो सभ महि रहिआ समाई॥ १॥ हरि हरि सिमरहु संत गोपाला। साध संगि मिलि नामु धिआवहु पूरन होवै घाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सारि समालै निति प्रतिपालै प्रेम सहित गलि लावै। कहु नानक प्रभ तुमरे बिसरत जगत जीवनु कैसे पावै ॥ २ ॥ ४ ॥ ३२ ॥

हे भाई ! जिस प्रभु के स्मरण के प्रभाव से हर एक पदार्थ मिल सकता है, स्मरण की साधना व्यर्थ नहीं जाती, जो प्रभु सारी सृष्टि में मौजूद है, उसे छोड़कर किस ओर मस्त हो रहे हो ? ॥ १ ॥ हे सन्तो ! सृष्टि के पालक को सदा स्मरण करते रहो। सत्संगति में मिलकर प्रभु का नाम स्मरण किया करो। स्मरण की मेहनत ज़रूर सफल हो जाती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! वह परमात्मा सबकी सुधि लेकर सँभाल करता है, सदा पालन करता है, सबको प्रेमपूर्वक गले लगाता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तुम्हे भुलाकर जीव तुम्हें कैसे मिल सकता है ? और तुम ही सब जीवों की ज़िन्दगी का सहारा हो ॥ २ ॥ ४ ॥ ३२ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई। गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई ॥ १ ॥ मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ॥ जाकी सरणि पइआं सुखु पाईऐ बाहुड़ि दूखु न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी साध संगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई। तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरिनामु रिदै परोई॥ २॥ ५॥ ३३॥

हे भाई ! उस परमात्मा का स्मरण करने से सारा मैल उतर जाता है, जो अनश्वर है और जो सारे जीवों को देन देनेवाला है। वह प्रभु समस्त गुणों का भण्डार है, भक्तों के लिए प्रतिपल का सहारा है, लेकिन कोई विरला मनुष्य उसका मिलाप प्राप्त करता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! उस प्रभु का जाप कर जो सर्वोपरि है, जो सृष्टि का पालक है और जिसका सहारा लेने से सुख प्राप्त कर लिया जाता है, फिर कभी दुख नहीं होता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! सौभाग्यवश सत्संगति प्राप्त होती है,

तदन्तर दुर्बुद्धि समाप्त हो जाती है। दास नानक भी उनके चरणों की धूलि माँगता है, जिन्होंने परमात्मा का नाम हृदय में पिरो रखा है॥ २॥ ५॥ ३३॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै। दरसनु भेटत होत निहाला हरि का नामु बीचारै॥ १॥ मेरा बैदु गुरू गोविंदा। हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंदा॥ १॥ रहाउ॥ समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा। अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा॥ २॥ ६॥ ३४॥

हे भाई! गुरु रूपी वैद्य अनेक जन्मों के दुख दूर कर देता है, आत्मिक जीवन की हरियाली से खाली उसके मन को सहारा देता है, गुरु के दर्शन से वह प्रफुल्लित हो जाता है और परमात्मा के नाम को अपनी वैचारिकता में टिका लेता है॥ १॥ हे भाई! गोविन्द का रूप मेरा गुरु-वैद्य है, यह जिस मनुष्य के मुँह में हरि-नाम की औषधि डालता है, उसकी यमराज की बेड़ियाँ काट देता है॥ १॥ रहाउ॥ नानक का कथन है कि हे सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, पूर्ण, जीवों के उत्पादक प्रभु! तुम स्वयं ही (गुरु को पूर्ण वैद्य) बनानेवाले हो। अपने सेवक को उस गुरु से नाम का सहारा दिलाकर आप ही जीवों को यम की फाँसी से बचा लेते हो॥ २॥ ६॥ ३४॥

॥ सोरठि महला ५॥ अंतर की गति तुमही जानी तुझही पाहि निबेरो। बखसि लैहु साहिब प्रभ अपने लाख खते करि फेरो॥ १॥ प्रभ जी तू मेरो ठाकुरु नेरो। हरि चरण सरण मोहि चेरो॥ १॥ रहाउ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी ऊचो गुनी गहेरो। काटि सिलक कीनो अपुनो दासरो तउ नानक कहा निहोरो॥ २॥ ७॥ ३५॥

हे मेरे अपने मालिक-प्रभु! मेरे दिल की स्थिति तुम ही जानते हो, तुम्हारी शरण लेकर ही मेरी भीतरी विकृत अवस्था का समापन हो सकता है। मैं लाखों पाप करता फिरता हूँ। मेरे मालिक प्रभु! मुझे क्षमा कर दीजिए॥ १॥ हे प्रभु! तुम मेरे पालनकर्ता स्वामी हो, मेरे साथ-साथ रहते हो। हे हरि! मुझे अपने चरणों में जगह दो। हे हरि! मुझे अपनी शरण में रखो, मुझे अपना दास बनाए रखो॥ १॥ रहाउ॥ हे अपरिमित, अनन्त, मालिक-प्रभु! तुम उच्च आत्मिक अवस्था वाले हो,

तुम सारे गुणों के मालिक हो, गहन हो। नानक का कथन है कि हे प्रभु! जब तुम किसी को बन्धनमुक्त कर अपना दास बना लेते हो, तब उसे किसी अधीनता की ज़रूरत नहीं रहती ॥ २ ॥ ७ ॥ ३५ ॥

॥ सोरठि ५ ॥ भए क्रिपाल गुरू गोविंदा सगल मनोरथ पाए। असथिर भए लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाए ॥ १ ॥ भलो समूरतु पूरा। सांति सहज आनंद नामु जपि वाजे अनहद तूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिले सुआमी प्रीतम अपुने घर मंदर सुखदाई। हरि नामु निधानु नानक जन पाइआ सगली इछ पुजाई ॥ २ ॥ ८ ॥ ३६ ॥

हे भाई! जिस मनुष्य पर परमात्मा का रूप गुरु दयालु होता है, उसके मन की सब आकांक्षाएँ पूर्ण हो जाती हैं क्योंकि परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गा-गाकर प्रभु-चरणों में लगन लगाकर वह मनुष्य (माया के प्रति उपजनेवाले) आकर्षण से हट जाता है ॥ १ ॥ वह समय सुहावना होता है, शुभ होता है, जब परमात्मा का नाम जपकर उसके भीतर शान्ति आत्मिक स्थिरता, आनन्द का अनहद नाद होने लगता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! जिस मनुष्य को मालिक-प्रियतम प्रभुजी मिल पड़ते हैं, उसे ये घर-घाट सब सुखदायक प्रतीत होते हैं। हे दास नानक! जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम-ख़ज़ाना प्राप्त कर लिया, उसकी हरेक मनोकामना पूर्ण हो जाती है ॥ २ ॥ ८ ॥ ३६ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर के चरन बसे रिद भीतरि सुभ लखण प्रभि कीने। भए क्रिपाल पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ॥ १ ॥ मेरो गुरु रखवारो मीत। दूण चऊणी दे वडिआई सोभा नीता नीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत प्रभि सगल उधारे दरसनु देखणहारे। गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे ॥ २ ॥ ९ ॥ ३७ ॥

हे भाई! जिस मनुष्य के हृदय में गुरु के चरणों का अनुराग है, प्रभु ने उसके भीतर सफलता लानेवाले लक्षण पैदा कर दिए। सर्वव्यापक प्रभुजी जिस मनुष्य पर दयालु हो गए, उस मनुष्य ने परमात्मा के नाम के ख़ज़ाने अपने मन में टिके हुए पहचान लिये ॥ १ ॥ हे भाई! मेरा गुरु मेरा रक्षक है, मित्र है, वह मुझे महानता देता है जो दिन दूनी, रात चौगुनी होती जाती है, (वही प्रभु) मुझे हमेशा सत्कार दिलाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! गुरु का दर्शन करनेवाले सब मनुष्यों को प्रभु ने बचा लिया।

पूर्णगुरु का इतना बड़ा स्थान है कि हैरानी हो जाती है। नानक का कथन है कि मैं गुरु पर सदा बलिहारी हूँ ॥ २ ॥ ९ ॥ ३७ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ संचनि करउ नाम धनु निरमल थाती अगम अपार। बिलछि बिनोद आनंद सुख माणहु खाइ जीवहु सिख परवार ॥ १ ॥ हरि के चरन कमल आधार। संत प्रसादि पाइओ सच बोहिथु चड़ि लंघउ बिखु संसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भए क्रिपाल पूरन अबिनासी आपहि कीनी सार। पेखि पेखि नानक बिगसानो नानक नाही सुमार ॥२॥१०॥३८॥

मैं परमात्मा के पवित्र नाम का धन एकत्रित कर रहा हूँ, (जहाँ यह धन इकट्ठा किया जाए, वहाँ) अगम्य तथा अनन्त प्रभु का निवास हो जाता है। हे गुरु के सिखपरिवार! तुम भी नाम-भोजन खाकर आत्मिक जीवन प्राप्त करो और प्रसन्न होकर आत्मिक सुख, आनन्द प्राप्त किया करो ॥ १ ॥ मैंने परमात्मा के कोमल चरणों को आसरा बना लिया है। गुरु की कृपा से मैंने सत्यस्वरूप प्रभु का नाम-जहाज़ प्राप्त कर लिया है, उस पर चढ़कर मैं विष से भरे संसार-समुद्र से पार उतर रहा हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! जिस मनुष्य पर सर्वव्यापक अविनाशी प्रभुजी दयालु होते हैं, उसकी सँभाल आप ही करते हैं। नानक उसका यह कौतुक देख-देखकर खुश हो रहा है। हे नानक! प्रभु की दया का अनुमान नहीं लगाया जा सकता ॥ २ ॥ १० ॥ ३८ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै अपनी कल धारी सभ घट उपजी दइआ। आपे मेलि वडाई कीनी कुसल खेम सभ भइआ ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा मेरै नालि। पारब्रहमु जपि सदा निहाल ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि थान थनंतरि जत कत पेखउ सोई। नानक गुरु पाइओ वडभागी तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ २ ॥ ११ ॥ ३९ ॥

हे भाई! पूर्णगुरु ने मेरे भीतर अपनी ऐसी शक्ति भर दी है कि मुझमें सब जीवों के लिए प्रेम पैदा हो गया है। आप ही प्रभु-चरणों में अनुराग उत्पन्न कर आत्मिक उच्चता प्रदान की है, अब मेरे भीतर आनन्द ही आनन्द बना रहता है ॥ १ ॥ हे भाई! पूर्णगुरु मेरे साथ है, उसकी कृपा से परमात्मा का नाम जप-जपकर मैं सदा प्रसन्नचित्त रहता हूँ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! अब अपने भीतर और बाहर, सर्वत्र, मैं जहाँ भी देखता हूँ, परमात्मा ही (दृष्टिगत होता है)। हे नानक! सौभाग्यवश मुझे गुरु मिल गया है, जो अप्रतिम है ॥ २ ॥ ११ ॥ ३९ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ सूख मंगल कलिआण सहज धुनि प्रभ के चरण निहारिआ । राखनहारै राखिओ बारिकु सतिगुरि तापु उतारिआ ॥ १ ॥ उबरे सतिगुर की सरणाई । जाकी सेव न बिरथी जाई ॥ रहाउ ॥ घरि महि सूख बाहरि फुनि सूखा प्रभ अपुने भए दइआला । नानक बिघनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ किरपाला ॥ २ ॥ १२ ॥ ४० ॥

गुरु ने अपनी शरण में आए व्यक्ति का सन्ताप दूर कर दिया, रक्षा करने में समर्थ गुरु ने उस बालक को बचा लिया जैसे पिता अपने बच्चों को बचाता है। जिसने परमात्मा के चरणों का दर्शन कर लिया, उसके भीतर सुख, आनन्द और उल्लास का प्रवाह बह उठा ॥ १ ॥ हे भाई! जिस गुरु की सेवा व्यर्थ नहीं जाती, उस गुरु की शरण जो मनुष्य लेते हैं वे (सांसारिक बाधाओं से) बच जाते हैं ॥ रहाउ ॥ गुरु के शरणागत व्यक्ति के हृदय में आत्मिक आनन्द बना रहता है, बाहर लौकिक व्यवहार निभाते हुए भी उसे आत्मिक सुख मिला रहता है, उस पर हमेशा प्रभु दयालु रहता है। हे नानक! उस मनुष्य की जिन्दगी के रास्ते में कोई रुकावट नहीं आती, उस पर परमात्मा कृपालु हुआ रहता है ॥२॥१२॥४०॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ साधू संगि भइआ मनि उदमु नामु रतनु जसु गाई । मिटि गई चिंता सिमरि अनंता सागरु तरिआ भाई ॥ १ ॥ हिरदै हरि के चरण वसाई । सुखु पाइआ सहज धुनि उपजी रोगा घाणि मिटाई ॥ रहाउ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा कीमति कहणु न जाई । नानक भगत भए अबिनासी अपुना प्रभु भइआ सहाई ॥ २ ॥ १३ ॥ ४१ ॥

हे भाई! गुरु की संगति में रहने से मन में उद्यम पैदा होता है, श्रेष्ठ नाम जपने लग जाता है और परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाने लगता है। अनन्त प्रभु का स्मरण करके मनुष्य की चिन्ता मिट जाती है और वह संसार-समुद्र से पार उतर जाता है ॥ १ ॥ हे भाई! अपने हृदय में परमात्मा के चरण टिकाए रख अर्थात् प्रभु-स्मरण किया कर। ऐसा करनेवाले व्यक्ति ने आत्मिक आनन्द प्राप्त कर लिया, उसके भीतर आत्मिक स्थिरता की ध्वनि पैदा हो गई और उसने भीतर से रोग समाप्त कर लिये ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु! मैं तुम्हारे कौन-कौन से गुण बखानूँ ? तुम्हारा मूल्य शब्दों से परे है। हे नानक! प्यारा प्रभु जिन मनुष्यों का मददगार बनता है, वे भक्तजन आत्मिक मृत्यु से रहित हो जाते हैं ॥ २ ॥ १३ ॥ ४१ ॥

॥ सोरठि म० ५॥ गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी । आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥ १ ॥ हरि जीउ तू सुख संपति रासि । राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥ रहाउ ॥ जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा । कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा ॥ २ ॥ १४ ॥ ४२ ॥

हे भाई ! जिस मनुष्य पर भी प्यारे प्रभु ने कृपा की, उसके सब क्लेश तथा रोग दूर हो गए । हे भाई ! मालिक-प्रभु को आठों प्रहर स्मरण करते रहा करो, हम जीवों की मेहनत अवश्य सफल होती है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम ही मुझे आत्मिक आनन्द की धन-दौलत देनेवाले हो । हे प्रभु ! मुझे क्लेशों से बचा लो । मेरी तुम्हारे आगे ही प्रार्थना है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मैं तो जो कुछ माँगता हूँ, वही कुछ प्राप्त कर लेता हूँ । मुझे अपने मालिक-प्रभु पर विश्वास है । नानक का कथन है कि जिस मनुष्य को पूर्णगुरु मिल जाता है, उसकी समस्त फ़िक्र दूर हो जाती हैं ॥२॥१४॥४२॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ । ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पाइआ ॥ १ ॥ मेरा गुरु पूरा सुखदाता । करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला । जै जैकार भए जग भीतरि होआ पारब्रहमु रखवाला ॥ २ ॥ १५ ॥ ४३ ॥

गुरु की शरण लेनेवाला मनुष्य बार-बार सतिगुरु को स्मरण कर अपना हरेक प्रकार का दुख दूर कर लेता है । गुरु की शिक्षा पर चलकर उसके सारे रोग, सारे क्लेश दूर हो जाते हैं और वह मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है ॥ १ ॥ हे भाई ! मेरा गुरु सर्वगुणसम्पन्न है, सब सुख देनेवाला है । गुरु उस सर्वव्यापक सृजनहार का रूप है, जो सारे जगत का मूल है, जो सर्वशक्तिमान् है ॥ रहाउ ॥ नानक का कथन है कि यदि तुझ पर सतिगुरु दयालु हुए हैं, तो तू प्रभु की गुणस्तुति के गीत गाता रह, इससे तेरे भीतर आनन्द, खुशियाँ और सुख बने रहेंगे । गुणस्तुति से जगत में शोभा मिलती है (क्योंकि यह सर्वथा सत्य है कि) परमात्मा हमेशा रक्षक है ॥ २ ॥ १५ ॥ ४३ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ हमरी गणत न गणीआ काई अपणा बिरदु पछाणि । हाथ देइ राखे करि अपुने सदा सदा रंगु

माणि ॥ १ ॥ साचा साहिबु सद मिहरवाण । बंधु पाइआ मेरै सतिगुरि पूरै होई सरब कलिआण ॥ रहाउ ॥ जीउ पाइ पिंडु जिनि साजिआ दिता पैनणु खाणु । अपणे दास की आपि पैज राखी नानक सद कुरबाणु ॥ २ ॥ १६ ॥ ४४ ॥

हे भाई ! परमात्मा हम जीवों के कुकर्मों पर कोई ध्यान नहीं देता । वह अपने विरद को स्मरण रखता है । वह (गुरु के माध्यम से) अपने बनाकर हमें विकारों से बचाता है । (गुरु की प्राप्ति से) हमेशा भीतर आत्मिक आनन्द बना रहता है ॥ १ ॥ हे भाई ! सत्यस्वरूप मालिक-प्रभु सदा दयालु रहता है । (गुरु ने कृपा करके विकारों के मार्ग में) बाँध लगा दिया है और इस प्रकार भीतर सारे आत्मिक आनन्द पैदा हो गए हैं ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस परमात्मा ने प्राण डालकर शरीर उत्पन्न किया है, जो हमें ख़ुराक तथा पोशाक दे रहा है, वह परमात्मा (संसार-समुद्र की विकार रूपी लहरों से) अपने सेवक की लाज (गुरु के माध्यम से) खुद बचाता है । नानक का कथन है कि वह उस परमात्मा पर सदा बलिहारी है ॥ २ ॥ १६ ॥ ४४ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे सभु संसारु उबारिआ । पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी अपणा बिरदु समारिआ ॥ १ ॥ होई राजे राम की रखवाली । सूख सहज आनद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥ रहाउ ॥ पतित उधारणु सतिगुरु मेरा मोहि तिस का भरवासा । बखसि लए सभि सचै साहिबि सुणि नानक की अरदासा ॥२॥१७॥४५॥

(जिस प्राणी पर प्रभु कृपालु हो गए) उसका पूर्वकृत पाप प्रभु ने दूर कर दिया, इस प्रकार प्रभु सारे संसार को आप ही बचाता है । प्रभु हमेशा अपना विरद स्मरण रखता है ॥ १ ॥ हे भाई ! प्रभु-बादशाह (पापों से) जिसकी रक्षा करता है, उसका मन सुखी हो जाता है, उसका शरीर सुखी हो जाता है । तुम भी उस परमात्मा के गुणों के गीत गाया करो, तुम्हें भी सुख और सहजावस्था को अनुभूत होनेवाला आनन्द प्राप्त होगा ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मेरा गुरु विकारग्रस्त जीवों को बचानेवाला है । मुझे भी उसका ही सहारा है । जिस सत्यस्वरूप प्रभु ने सारे जीव (गुरु का शरणागत करके) बख़्श दिए हैं अर्थात् सबको क्षमा कर दिया है, वह प्रभु नानक की प्रार्थना भी सुननेवाला है ॥ २ ॥ १७ ॥ ४५ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ बखसिआ पारब्रहम परमेसरि सगले

रोग बिदारे । गुर पूरे की सरणी उबरे कारज सगल सवारे ।। १ ।। हरि जनि सिमरिआ नाम अधारि । तापु उतारिआ सतिगुरि पूरै अपणी किरपा धारि ।। रहाउ ।। सदा अनंद करह मेरे पिआरे हरि गोविदु गुरि राखिआ । वडी वडिआई नानक करते की साचु सबदु सति भाखिआ ।। २ ।। १८ ।। ४६ ।।

हे भाई ! पारब्रह्म परमेश्वर ने जिस पर कृपा की, उसके सारे रोग उसने दूर कर दिए । जो मनुष्य गुरु की शरण लेते हैं, वे दुख-क्लेशों से बच जाते हैं । गुरु उनके सारे कार्य सँवार देता है ।। १ ।। हे भाई ! परमात्मा के जिस सेवक ने परमात्मा का नाम स्मरण किया, नाम के आसरे पर रहा, पूर्णगुरु ने कृपा करके उसका दुख (ज्वर) दूर कर दिया ।। रहाउ ।। हे मेरे प्यारे भाई ! गुरु की शरण लेकर सदा आनन्द मानो, हरिगोबिन्द को भी गुरु ने ही ज्वर से बचाया है । हे नानक ! सृजनहार कर्तार महान शक्तियों का स्वामी है । उस सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति का शब्द ही उच्चारण करना चाहिए (गुरु ने यह उपयुक्त उपदेश दिया है) ।।२।।१८।।४६।।

[कहते हैं कि एक समय गुरु अर्जुनदेव के सुपुत्र हरिगोबिन्द को तीव्र ज्वर हुआ था । प्रभु-कृपा से जब वह ज्वर-मुक्त हुए, तो गुरुजी ने उपर्युक्त शब्दोच्चारण किया । कतिपय आगे के पद भी इसी संदर्भ में हैं ।]

।। सोरठि महला ५ ।। भए क्रिपाल सुआमी मेरे तितु साचै दरबारि । सतिगुरि तापु गवाइआ भाई ठांढि पई संसारि । अपणे जीअ जंत आपे राखे जमहि कीओ हटतारि ।। १ ।। हरि के चरण रिदै उरिधारि । सदा सदा प्रभु सिमरीऐ भाई दुख किलबिख काटणहारु ।। १ ।। रहाउ ।। तिस की सरणी ऊबरै भाई जिनि रचिआ सभु कोइ । करण कारण समरथु सो भाई सचै सची सोइ । नानक प्रभू धिआईऐ भाई मनु तनु सीतलु होइ ।। २ ।। १९ ।। ४७ ।।

हे भाई ! जिस मनुष्य पर मेरे मालिक प्रभुजी दयालु होते हैं, प्रभु के सच्चे दरबार में (उस मनुष्य को सत्कार मिलता है) । जब गुरु ने उसका संताप दूर कर दिया, तो उसके लिए संसार में शान्ति परिव्याप्त हो जाती है । प्रभु आप ही अपने सेवकों की रक्षा करता है, उन्हें (प्रभु-सेवकों को) मृत्यु स्पर्श नहीं कर सकती अर्थात् यमदूत उनके प्रति विमुख हो जाते हैं ।। १ ।। हे भाई ! परमात्मा के चरण अपने हृदय में धारण कर । हे भाई ! परमात्मा का सदा स्मरण करो, वही परमात्मा सारे दुखों और पापों को नष्ट करनेवाला है ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! जिस परमात्मा

ने प्रत्येक जीव को उत्पन्न किया है, उसकी शरण लेनेवाला जीव पापों से बच जाता है। वह परमात्मा सारे जगत का मूल है, समस्त शक्तियों का मालिक है, उस सत्यस्वरूप प्रभु की शोभा शाश्वत है। हे भाई! उस प्रभु का स्मरण करना चाहिए (जिसके स्मरण करने से) मन, तन शान्त हो जाता है ॥ २ ॥ १९ ॥ ४७ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ संतहु हरि हरि नामु धिआई। सुख सागर प्रभु विसरउ नाही मन चिंदिअड़ा फलु पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि पूरै तापु गवाइआ अपणी किरपा धारी। पारब्रहम प्रभ भए दइआला दुखु मिटिआ सभ परवारी ॥ १ ॥ सरब निधान मंगल रस रूपा हरि का नामु अधारो। नानक पति राखी परमेसरि उधरिआ सभु संसारो ॥ २ ॥ २० ॥ ४८ ॥

हे सन्तो! (मेरी कामना है कि) मैं सदा परमात्मा का नाम स्मरण करता रहूँ। सुखों का समुद्र प्रभु मुझे कभी विस्मृत न हो और मैं मनोवांछित फल प्राप्त करता रहूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे सन्तो! पूर्णगुरु ने बालक हरिगोबिन्द का दुख दूर कर दिया, इस प्रकार गुरु ने कृपा की है, परमात्मा कृपालु हुआ है और सारे परिवार का दुख मिट गया है ॥ १ ॥ हे सन्तो! परमात्मा का नाम ही एकमात्र सहारा है, नाम ही सब ख़ुशियों, रसों, रूपों का भण्डार है। नानक का कथन है कि परमेश्वर ने हमारी प्रतिष्ठा की रक्षा की है (क्योंकि) वही समस्त संसार की रक्षा करनेवाला है ॥ २ ॥ २० ॥ ४८ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ मेरा सतिगुरु रखवाला होआ। धारि क्रिपा प्रभ हाथ दे राखिआ हरि गोविदु नवा निरोआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तापु गइआ प्रभि आपि मिटाइआ जन की लाज रखाई। साध संगति ते सभ फल पाए सतिगुर कै बलि जांई ॥ १ ॥ हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ। अटल बचनु नानक गुर तेरा सफल करु मसतकि धारिआ ॥ २ ॥ २१ ॥ ४९ ॥

हे भाई! मेरा गुरु मेरा सहायक बना है, जिसके परिणामस्वरूप प्रभ ने कृपा करके बालक हरिगोबिन्द को बचा लिया है और हरिगोबिन्द बिल्कुल स्वस्थ हो गए हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! हरिगोबिन्द का दुख दूर हो गया है, प्रभु ने आप दूर किया है, प्रभु ने अपने सेवक की प्रतिष्ठा की रक्षा की है। हे भाई! गुरु की संगति से मैंने सारे फल प्राप्त किए हैं,

(इसलिए) मैं हमेशा गुरु पर बलिहारी हूँ ॥ १ ॥ (सेवक) का लोक-परलोक परमात्मा सँवार देता है। समर्पित जीवों का कोई अवगुण परमात्मा मन में नहीं रखता। नानक का कथन है कि हे गुरु! तुम्हारा यह वचन अपरिवर्तनीय है (कि प्रभु जीव का रक्षक है)। हे सतिगुरु! तुम्हारा वरद हाथ हमारे सिर पर सदा बना रहे ॥ २ ॥ २१ ॥ ४९ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ जीअ जंत्र सभि तिस के कीए सोई संत सहाई। अपुने सेवक की आपे राखै पूरन भई बडाई ॥ १ ॥ पारब्रहमु पूरा मेरै नालि। गुरि पूरै पूरी सभ राखी होए सरब दइआल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु नानकु नामु धिआए जीअ प्रान का दाता। अपुने दास कउ कंठि लाइ राखै जिउ बारिक पित माता ॥ २ ॥ २२ ॥ ५० ॥

हे भाई! समस्त जीव उसके द्वारा ही उत्पादित हैं। वह प्रभु ही सन्तजनों का सहायक है। परमात्मा अपने सेवक की प्रतिष्ठा आप रखता है, उसी की कृपा से सेवक की प्रतिष्ठा पूर्णतौर से बनी रहती है ॥ १ ॥ हे भाई! पूर्णपरमात्मा सदा मेरा सहायक है। उसी ने भली प्रकार से मेरी प्रतिष्ठा का निर्वाह किया है। गुरु समस्त जीवों पर दयालु रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई! नानक उसका नाम प्रतिपल स्मरण करता रहता है, जो प्राणदाता है और जो श्वासों का दाता है। हे भाई! जैसे माँ-बाप अपने बच्चों का ख़्याल रखते हैं, उसी प्रकार सेवक को परमात्मा अपने गले से लगाकर रखता है ॥ २ ॥ २२ ॥ ५० ॥

सोरठि महला ५ घरु ३ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मिलि पंचहु नही सहसा चुकाइआ। सिकदारहु नह पतीआइआ। उमरावहु आगै झेरा। मिलि राजन राम निबेरा ॥ १ ॥ अब ढूढन कतहु न जाई। गोबिद भेटे गुर गोसाई ॥ रहाउ ॥ आइआ प्रभ दरबारा। ता सगली मिटी पूकारा। लबधि आपणी पाई। ता कत आवै कत जाई ॥ २ ॥ तह साच निआइ निबेरा। ऊहा सम ठाकुरु सम चेरा। अंतरजामी जानै। बिनु बोलत आपि पछानै ॥३॥ सरब थान को राजा। तह अनहद सबद अगाजा। तिसु पहि किआ चतुराई। मिलु नानक आपु गवाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५१ ॥

हे भाई ! शहर के पंचों को मिलकर भय दूर नहीं किया जा सकता । बड़े लोगों (शहर के प्रतिष्ठित लोगों) से भी यह आश्वासन नहीं मिल सकता, सरकारी अफ़सरों से भी यह क्लेश नहीं निबटता । (लेकिन) प्रभु को मिलकर फ़ैसला हो जाता है और कामादिक वैरियों का आतंक समाप्त हो जाता है ।। १ ।। जब सतिगुरु या सृष्टि के स्वामी से भेंट हो गई, तब किसी और के आश्रय को खोजने की आवश्यकता नहीं रही ।। रहाउ ।। हे भाई ! जब मनुष्य प्रभु की सेवा में जगह पाता है, तब उसकी तमाम शिकायतें समाप्त हो जाती हैं । तब वह प्राणी वह वस्तु पा लेता है, जो शाश्वत होती है और वह विकारमुक्त होकर भटकाव से बच जाता है ।। २ ।। हे भाई ! प्रभु की सेवा में सनातन नियमों के अनुसार निर्णय हो जाता है । उस प्रभु के दरबार में मालिक और सेवक एक समान समझे जाते हैं । अन्तर्यामी प्रभु सबके भीतर की जानता है, किसी के कहे बग़ैर ही सबकी (पीड़ा को) वह समझ लेता है ।। ३ ।। हे भाई ! प्रभु समस्त स्थानों का मालिक है, उस प्रभु के साथ मिलन की स्थिति में मनुष्य के भीतर प्रभु की वाणी पूर्णरूपेण स्थिर हो जाती है । उस प्रभु के साथ कोई चालाकी नहीं की जा सकती । हे नानक ! (अगर प्रभु से भेंट करनी है तो) अहंत्वभाव को छोड़कर मिल ।। ४ ।। १ ।। ५१ ।।

।। सोरठि महला ५ ।। हिरदै नामु वसाइहु । घरि बैठे गुरू धिआइहु । गुरि पूरै सचु कहिआ । सो सुखु साचा लहिआ ।। १ ।। अपुना होइओ गुरु मिहरवाना । अनद सूख कलिआण मंगल सिउ घरि आए करि इसनाना ।। रहाउ ।। साची गुर वडिआई । ताकी कीमति कहणु न जाई । सिरि साहा पातिसाहा । गुर भेटत मनि ओमाहा ।। २ ।। सगल पराछत लाथे । मिलि साध संगति कै साथे । गुण निधान हरिनामा । जपि पूरन होए कामा ।। ३ ।। गुरि कीनो मुकति दुआरा । सभ स्रिसटि करै जैकारा । नानक प्रभु मेरै साथे । जनम मरण भै लाथे ।। ४ ।। २ ।। ५२ ।।

हे भाई ! अपने हृदय में प्रभु का नाम स्मरण करते रहो और अन्तर्मन में हमेशा गुरु की पूजा करो । जिस मनुष्य को सतिगुरु ने प्रभु के शाश्वत नाम का ज्ञान दिया, उसने शाश्वत आनन्द प्राप्त कर लिया ।। १ ।। हे भाई ! जिन मनुष्यों पर प्यारा प्रभु दयालु होता है, वे मनुष्य नाम-जल द्वारा मन को प्रक्षालित करके आनन्दमग्न होते और अन्तर्मन में स्थिर हो जाते हैं ।। रहाउ ।। हे भाई ! गुरु की आत्मिक शक्ति सत्य है, उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता । गुरु बादशाहों का बादशाह है, जिसे

मिलकर मन में प्रभु-भक्ति का चाव पैदा हो जाता है ॥ २ ॥ हे भाई ! गुरु की संगति में आने से तमाम पाप दूर हो जाते हैं (और) गुणों के भण्डार हरि-नाम का स्मरण कर जीवन के समस्त मन्तव्य पूर्ण हो जाते हैं ॥ ३ ॥ हे भाई ! गुरु ने नाम-स्मरण का ऐसा द्वार तैयार किया, जो मुक्तिकारक है। इसी कारण तमाम सृष्टि गुरु का आदर करती है। नानक का कथन है कि परमात्मा मेरे अंग-संग विद्यमान है (और इसीलिए) मेरे सब भय दूर हो गए हैं ॥ ४ ॥ २ ॥ ५२ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै किरपा धारी। प्रभि पूरी लोच हमारी। करि इसनानु ग्रिहि आए। अनद मंगल सुख पाए ॥ १ ॥ संतहु राम नामि निसतरीऐ। ऊठत बैठत हरि हरि धिआईऐ अनदिनु सुक्रितु करीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत का मारगु धरम की पउड़ी को वडभागी पाए। कोटि जनम के किलबिख नासे हरि चरणी चितु लाए ॥ २ ॥ उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी। जीअ जंत सभि भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी ॥ ३ ॥ बिघन बिनासन सभि दुख नासन सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ। खोए पाप भए सभि पावन जन नानक सुखि घरि आइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५३ ॥

जबसे गुरु ने कृपा की है, तबसे प्रभु ने हमारी कामनाएँ पूर्ण कर दी हैं। हम आत्मिक रूप से शुद्ध होकर भीतर प्रभु का नाम-स्मरण करते रहते हैं और आत्मिक आनन्द, खुशियाँ और सुख महसूस कर रहे हैं ॥ १ ॥ हे सन्तो ! परमात्मा के नाम में संलग्न होकर संसार-समुद्र से पार उतरा जा सकता है। (इसलिए) उठते-बैठते प्रतिपल परमात्मा का स्मरण करना चाहिए। प्रभु के नाम-स्मरण की नेक कमाई प्रतिपल करनी चाहिए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (नाम-स्मरण) ही गुरु द्वारा बतलाया सही मार्ग है, यही धर्म की सीढ़ी है, (लेकिन) इसे कोई विरला भाग्यशाली पुरुष ही प्राप्त करता है। जो मनुष्य परमात्मा के चरणों में मन लगाता है, उसके करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ २ ॥ हे सन्तो ! जिस प्रभु ने अपना अस्तित्व प्रकटाया हुआ है, उसकी गुणस्तुति करनेवाले समस्त प्राणी सदाचारी बन जाते हैं और आत्मिक आनन्द महसूसते हुए स्थिरप्रज्ञ हो जाते हैं ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि हे भाई ! विघ्नों का विनाश करनेवाले और समस्त दुखों को नष्ट करनेवाले सतिगुरु का नाम हृदय में दृढ़ करो; ऐसा करने से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और वह सब प्रकार से पवित्र होकर सुख के आवास को प्राप्त करता है ॥४॥३॥५३॥

॥सोरठि महला ५॥ साहिबु गुनी गहेरा। घरु लसकरु सभु तेरा। रखवाले गुर गोपाला। सभि जीअ भए दइआला॥ १॥ जपि अनदि रहउ गुर चरणा। भउ कतहि नही प्रभ सरणा॥ रहाउ॥ तेरिआ दासा रिदै मुरारी। प्रभि अबिचल नीव उसारी। बलु धनु तकीआ तेरा। तू भारो ठाकुरु मेरा॥ २॥ जिनि जिनि साध संगु पाइआ। सो प्रभि आपि तराइआ। करि किरपा नाम रसु दीआ। कुसल खेम सभ थीआ॥ ३॥ होए प्रभू सहाई। सभ उठि लागी पाई। सासि सासि प्रभु धिआईऐ। हरि मंगलु नानक गाईऐ॥ ४॥ ४॥ ५४॥

हे सर्वोपरि, सृष्टि के पालक, सबके पालक, तुम सब जीवों पर दया करते हो। तुम सबके मालिक हो, तुम सर्वगुणसम्पन्न हो और गहन गम्भीर हो। जीवों की घर-बारी समृद्धियाँ तुम्हारी ही देन हैं॥१॥ हे भाई! गुरु के चरणों में मन लगाकर मैं आत्मिक आनन्द में टिका रहता हूँ। गुरु की शरण लेने से कोई भय स्पर्श नहीं कर सकता॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तुम्हारे सेवकों के हृदय में परमात्मा बसता है। हे प्रभु! तुमने भक्ति की अविचल नींव भक्तों के हृदय में रखी हुई है। तुम ही मेरे बल हो, तुम ही मेरे धन हो, तुम्हारा ही मुझे सहारा है। तुम मेरे सर्वोपरि मालिक हो॥ २॥ हे भाई! जिस-जिस मनुष्य ने गुरु की संगति प्राप्त की है, उन सबको प्रभु ने स्वयं पार उतार दिया है। जिस मनुष्य को प्रभु ने कृपा करके अपने नाम का स्वाद चखाया है, उसके भीतर आत्मिक आनन्द बना रहता है॥३॥ प्रभु जिस मनुष्य का सहायक बनता है, सारी दुनिया उठकर उसके चरण स्पर्श करती है। अतः हे नानक! हर एक श्वास के साथ प्रभु का स्मरण करना चाहिए (और) सदा परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाते रहना चाहिए॥ ४॥ ४॥ ५४॥

॥सोरठि महला ५॥ सूख सहज आनंदा। प्रभु मिलिओ मनि भावंदा। पूरै गुरि किरपा धारी। ता गति भई हमारी॥ १॥ हरि की प्रेम भगति मनु लीना। नित बाजे अनहत बीना॥ रहाउ॥ हरि चरण की ओट सताणी। सभ चूकी काणि लोकाणी। जगजीवनु दाता पाइआ। हरि रसकि रसकि गुण गाइआ॥ २॥ प्रभ काटिआ जम का फासा। मन पूरन होई आसा। जह पेखा तह सोई। हरि प्रभ बिनु

अवरु न कोई ।। ३ ।। करि किरपा प्रभि राखे । सभि जनम जनम दुख लाथे। निरभउ नामु धिआइआ। अटल सुखु नानक पाइआ ।। ४ ।। ५ ।। ५५ ।।

जबसे गुरु ने कृपा की है, तबसे ही मेरी आत्मिक स्थिति ऊँची बनी है, मुझे मनमोहन परमात्मा मिल गया है; मेरे भीतर आत्मिक स्थिरता और सुख, आनन्द बने रहते हैं ।। १ ।। हे भाई ! जिस मनुष्य का मन परमात्मा की प्रेम-भक्ति में टिका रहता है, उसके भीतर निरन्तर (आनन्द की) वीणा बजती रहती है ।।रहाउ।। हे भाई ! जिस मनुष्य ने प्रभु-चरणों का सशक्त आसरा ले लिया, दुनिया के लोगों के प्रति उसकी अधीनता समाप्त हो गई । उसे जगत का आधार दाता-प्रभु मिल जाता है। वह सदा अत्यन्त प्रेम के साथ परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता रहता है ।। २ ।। हे भाई ! मेरी भी प्रभु ने यम की फाँसी काट दी है, मेरे मन की आशा पूर्ण हो गई है । अब मैं जिधर देखता हूँ, मुझे उस परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई दिखाई नहीं देता ।। ३ ।। हे नानक ! प्रभु ने कृपा करके जिनकी रक्षा की, उनके जन्म-जन्मान्तरों के सारे दुख समाप्त हो गए। जिन्होंने निर्भय प्रभु का नाम-स्मरण किया, उन्होंने वह आत्मिक आनन्द प्राप्त कर लिया जो कभी क्षय नहीं होता ।। ४ ।। ५ ।। ५५ ।।

।। सोरठि महला ५ ।। ठाढि पाई करतारे । तापु छोडि गइआ परवारे । गुरि पूरै है राखी । सरणि सचे की ताकी ।। १ ।। परमेसरु आपि होआ रखवाला । सांति सहज सुख खिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला ।। रहाउ ।। हरि हरि नामु दीओ दारू । तिनि सगला रोगु बिदारू । अपणी किरपा धारी । तिनि सगली बात सवारी ।। २ ।। प्रभि अपना बिरदु समारिआ । हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ । गुर का सबदु भइओ साखी । तिनि सगली लाज राखी ।। ३ ।। बोलाइआ बोली तेरा । तू साहिबु गुणी गहेरा । जपि नानक नामु सचु साखी । अपुने दास की पैज राखी ।। ४ ।। ६ ।। ५६ ।।

हे भाई ! जिस मनुष्य के भीतर कर्तार ने शान्ति प्रतिष्ठापित कर दी, उसका परिवार भी (विकारों के) ताप से मुक्त हो जाता है। हे भाई ! पूर्णगुरु ने जिस मनुष्य की सहायता की, उसने सत्यस्वरूप परमात्मा का सहारा पा लिया ।। १ ।। जिस मनुष्य का रक्षक आप परमात्मा बन जाता है, उसका मन हमेशा के लिए सुखी हो जाता है, (उसके भीतर) एक क्षण में आत्मिक टिकाव, सुख, शान्ति पैदा हो जाते हैं ।। रहाउ ।। हे भाई !

गुरु ने जिसे परमात्मा की नाम रूपी औषधि दी, उस नाम रूपी औषधि ने उस मनुष्य का सारा ही विकार-(रोग) दूर कर दिया। मनुष्य पर प्रभु-कृपा हुई तो उसकी तमाम जीवन-कथा ही सुन्दर बन गई ॥२॥ हे भाई ! प्रभु ने सदा अपने विरद को स्मरण रखा है। वह हम जीवों का कोई गुण या अवगुण स्मरण नहीं रखता। (जिस मनुष्य के भीतर) गुरु के ज्ञान ने प्रभाव दिखाया, उसकी समस्त प्रतिष्ठा का बचाव हो गया ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तुम हमारे स्वामी हो, गुणों के भण्डार हो और गहन गम्भीर हो। जब तुम प्रेरणा देते हो, तब ही मैं तुम्हारी गुणस्तुति कर सकता हूँ। हे नानक ! सत्यस्वरूप प्रभु का नाम जपा कर, यही सदा साक्षी रहेगा। प्रभु अपने सेवकों की लाज (प्रतिष्ठा) बचाता ही आया है ॥४॥६॥५६॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ विचि करता पुरखु खलोआ। वालु न विंगा होआ। मजनु गुर आंदा रासे। जपि हरि हरि किलविख नासे ॥ १ ॥ संतहु रामदास सरोवरु नीका। जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जीका ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जैकारु जगु गावै। मन चिंदिअड़े फल पावै। सही सलामति नाइ आए। अपणा प्रभू धिआए॥ २॥ संत सरोवर नावै। सो जनु परमगति पावै। मरै न आवै जाई। हरि हरि नामु धिआई॥ ३॥ इहु ब्रहम बिचारु सु जानै। जिसु दइआलु होइ भगवानै। बाबा नानक प्रभ सरणाई। सभ चिंता गणत मिटाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५७ ॥

जिस मनुष्य का आत्मिक स्नान गुरु ने पूर्ण कर दिया अर्थात् सत्संगति द्वारा जिसे पवित्र कर दिया, वह हमेशा परमात्मा का नाम जप-जपकर समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। सर्वव्यापक कर्तार स्वयं उसकी सहायता करता है (और उसे तनिक भी) नुक़सान नहीं होता ॥ १ ॥ हे सन्तो ! सत्संगति सुन्दर सरोवर है। जो मनुष्य इसमें आत्मिक स्नान करता है, उसकी आत्मा को विकारों से छुटकारा मिल जाता है। वह (अपने साथ) अपने वंश का भी उद्धार कर लेता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य सत्संगति में रहकर अपने प्रभु की आराधना करता है, वह मनुष्य इस सरोवर में स्नान कर अपने आत्मिक जीवन की पूँजी को पूर्णरूपेण बचा लेता है। समस्त जगत उसकी प्रशंसा के गीत गाता है और वह मनुष्य मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है ॥ २ ॥ जो मनुष्य सत्संगति के सरोवर में आत्मिक स्नान करता है, वह मनुष्य सर्वोत्तम स्थिति प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य परमात्मा का नाम-स्मरण करता रहता है, वह जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ता ॥ ३ ॥ हे भाई ! परमात्मा के

साथ ऐक्य की इस भावना को वह मनुष्य समझता है, जिस पर प्रभु स्वयं कृपालु होता है। गुरु नानक का कथन है कि जो व्यक्ति परमात्मा की शरण लेता है, वह अपनी हर प्रकार की चिन्ता दूर कर लेता है ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५७ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमि निबाही पूरी । काई बात न रहीआ ऊरी । गुरि चरन लाइ निसतारे । हरि हरि नामु सम्हारे ॥ १ ॥ अपने दास का सदा रखवाला । करि किरपा अपुने करि राखे मात पिता जिउ पाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ । जिनि जम का पंथु मिटाइआ । हरि भगति भाइ चितु लागा । जपि जीवहि से वडभागा ॥ २ ॥ हरि अंम्रित बाणी गावै । साधा की धूरी नावै । अपुना नामु आपे दीआ । प्रभ करणहार रखि लीआ ॥ ३ ॥ हरि दरसन प्रान अधारा । इहु पूरन बिमल बीचारा । करि किरपा अंतरजामी । दास नानक सरणि सुआमी ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५८ ॥

परमात्मा ने अपने सेवक के साथ अन्त तक प्रेम का निर्वाह किया है। सेवक को किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। सेवक हमेशा परमात्मा का नाम हृदय में सँभालकर रखता है। गुरु अपने चरणों में आश्रय देकर सेवकों को (संसार-समुद्र से) पार उतारता है ॥१॥ हे भाई! परमात्मा अपने सेवक का सदा रक्षक बना रहता है। जैसे माँ-बाप अपने बच्चों को पालते हैं, वैसे ही प्रभु कृपा करके अपने सेवकों को अपना बनाए रखते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सौभाग्यशाली मनुष्यों ने गुरु प्राप्त कर लिया है और उसने उनके लिए यम के देश को ले जानेवाला मार्ग ही मिटा दिया है। उन (भक्तों का) मन प्रभु-प्रेम में डूबा रहता है। वे सौभाग्यशाली मनुष्य परमात्मा का नाम जपकर आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेते हैं ॥२॥ परमात्मा का सेवक उस प्रभु की आत्मिक जीवन देनेवाली वाणी का गान करता है, सेवक गुरमुखों के चरणों की धूलि में स्नान करता है (अर्थात् गुरमुखों की शरण में रहता है)। परमात्मा ने आप ही सेवक को अपना नाम दिया है और सृजनहार प्रभु ने आप ही सेवक को विकारों से बचाया है ॥ ३ ॥ हे भाई! परमात्मा के सेवक का यह पवित्र एवं अटल ख्याल बना रहता है कि परमात्मा का दर्शन ही ज़िन्दगी का अवलम्ब है। दास नानक का कथन है कि हे अन्तर्यामी, स्वामी प्रभु! कृपा करो, मैं तुम्हारा शरणागत हूँ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५८ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै चरनी लाइआ । हरि

संगि सहाई पाइआ। जह जाईऐ तहा सुहेले। करि किरपा प्रभि मेले ॥ १ ॥ हरि गुण गावहु सदा सुभाई। मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाराइण प्राण अधारा। हम संत जनां रेनारा। पतित पुनीत करि लीने। करि किरपा हरि जसु दीने ॥ २ ॥ पारब्रहमु करे प्रतिपाला। सद जीअ संगि रखवाला। हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईऐ। बहुड़ि न जोनी पाईऐ ॥ ३ ॥ जिसु देवै पुरखु बिधाता। हरि रसु तिन ही जाता। जम कंकरु नेड़ि न आइआ। सुखु नानक सरणी पाइआ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ५९ ॥

जिस मनुष्य को गुरु ने परमात्मा के चरणों में अनुरक्त कर दिया, उसने वह प्रभु प्राप्त कर लिया जो प्रतिपल साथ-साथ रहता है और आत्मा का सहायक है। (परमात्मा में मन लगाने से) जहाँ भी जाएँ वहीं सुखी रहा जा सकता है। (लेकिन अपने चरणों में) प्रभु ने सेवकों को कृपा कर स्वयं ही जगह दी है ॥ १ ॥ (इसलिए) हमेशा प्रेमपूर्वक परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाते रहो। (इससे) मनोवांछित फल पाओगे और आत्मा परमात्मा के अंग-संग होने का अनुभव प्राप्त करेगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैं तो हमेशा सन्तजनों के चरणों की धूलि बना रहता हूँ, जिससे परमात्मा मुझे अपना एकमात्र अवलम्ब प्रतीत होता है। सन्तजन कृपा करके परमात्मा की गुणस्तुति करना सिखा देते हैं और इस प्रकार विकारग्रस्त जीव सदाचारी बन जाते हैं ॥ २ ॥ हे भाई! दिन-रात हमेशा परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाते रहना चाहिए, (जिससे) बार-बार जन्म-मरण के चक्र में पड़ना नहीं होता। परमात्मा (शरणागतों का) रक्षक है और हमेशा सेवकों के साथ उनका रक्षक बना रहता है ॥ ३ ॥ हे नानक! उस मनुष्य ने ही परमात्मा के नाम का आस्वाद समझा है, जिसे सृजनहार, सर्वव्यापक प्रभु स्वयं यह देन देता है। परमात्मा की शरण लेकर वह आत्मिक आनन्द महसूसता रहता है और (यहाँ तक कि) यमदूत भी उसके निकट नहीं फटकता ॥ ४ ॥ ९ ॥ ५९ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरे कीती पूरी। प्रभु रवि रहिआ भरपूरी। खेम कुसल भइआ इसनाना। पारब्रहम विटहु कुरबाना ॥ १ ॥ गुर के चरन कवल रिद धारे। बिघनु न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि साधू दुरमति खोए। पतित पुनीत सभ होए। रामदासि सरोवर नाते। सभ लाथे पाप कमाते ॥ २ ॥ गुन गोबिंद

नित गाईऐ। साध संग मिलि धिआईऐ। मन बांछत फल पाए। गुरु पूरा रिदै धिआए ॥ ३ ॥ गुर गोपाल आनंदा। जपि जपि जीवै परमानंदा। जन नानक नामु धिआइआ। प्रभ अपना बिरदु रखाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ६० ॥

हे भाई ! पूर्णगुरु ने मुझे सफलता दी है (इसलिए) मुझे सर्वत्र प्रभु व्याप्त दीख पड़ता है। मेरे भीतर आत्मिक सुख और आनन्द बस गया है —यही मेरे लिए गुरु-सरोवर में स्नान है। मैं परमात्मा पर बलिहारी जाता हूँ ॥ १ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य ने प्रभु के कमलपुष्प-तुल्य कोमल चरणों का अपने हृदय में स्मरण किया, उसके मार्ग में तनिक भी रुकावट नहीं आती। गुरु उसके समस्त कार्य सँवार देता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरु को मिलकर मनुष्य दुर्बुद्धि दूर कर लेता है। विकृत मनुष्य भी गुरु को मिलकर सदाचारी हो जाते हैं। जो मनुष्य सत्संगति रूपी सरोवर में स्नान करते हैं, उनके समस्त पूर्वकृत पाप दूर हो जाते हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! गुरु के सान्निध्य में रहकर परमात्मा का नाम-स्मरण करना चाहिए, हमेशा प्रभु की गुणस्तुति में प्रवृत्त रहना चाहिए। जो मनुष्य सतिगुरु को अपने हृदय में स्मरण करता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है ॥ ३ ॥ दास नानक का कथन है कि परमात्मा अपना विरद हमेशा निभाता है। वह परमात्मा सर्वोपरि है, सृष्टि का पालक है, आनन्दस्वरूप है। जो मनुष्य उसका स्मरण करता है, वह सर्वोच्च आनन्द के मालिक-प्रभु का जप करके आत्मिक आनन्द प्राप्त कर लेता है ॥ ४ ॥ १० ॥ ६० ॥

॥ रागु सोरठि महला ५ ॥ दहदिस छत्र मेघ घटाघट दामनि चमकि डराइओ। सेज इकेली नीद नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाइओ ॥ १ ॥ हुणि नही संदेसरो माइओ। एक कोसरो सिधि करत लालु तब चतुर पातरो आइओ ॥ रहाउ ॥ किउ बिसरै इहु लालु पिआरो सरब गुणा सुख दाइओ। मंदरि चरिकै पंथु निहारउ नैन नीरि भरि आइओ ॥ २ ॥ हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ। भांभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥ ३ ॥ भइओ किरपालु सरब को ठाकुरु सगरो दूखु मिटाइओ। कहु नानक हउमै भीति गुरि खोई तउ दइआरु बीठलो पाइओ ॥ ४ ॥ सभु रहिओ अंदेसरो माइओ। जो चाहत सो गुरू मिलाइओ। सरब गुना निधि राइओ। रहाउ दूजा ॥ ११ ॥ ६१ ॥

बादलों की घटाएँ छतरी की तरह दसों दिशाओं में (फैली होती हैं), बिजली चमक-चमककर डराती है, जिसका पति परदेस में गया होता है, उसकी सेज सूनी होती है, उसकी आँखों में नींद नहीं आती ।। १ ।। पतिवियुक्ता कहती है कि हे माँ ! अब तो पति की ओर से कोई सन्देश भी नहीं आता । पहले जब कभी एक कोस मार्ग ही तय करता था, तब ही उसकी चार चिट्ठियाँ आ जाती थीं ।। रहाउ ।। हे माँ ! मुझे यह सुन्दर प्यारा प्रभु-पति कैसे विस्मृत हो सकता है, यह तो सर्वगुणसम्पन्न, सुखदाता है । मैं कोठे पर चढ़कर पति का मार्ग देखती हूँ । मेरी आँखें भी वियोग-जन्य अश्रुओं से भर आई हैं ।। २ ।। हे माँ ! मैं तो यह सुनती थी कि वह प्रभु-पति मेरे निकट, हृदय में ही विद्यमान है, लेकिन हम दोनों के मध्य अहंत्व की दीवार खड़ी हो गई है । भँवरी के पंख की तरह महीन सा परदा हमारे मध्य है, लेकिन दर्शन के बिना वह कहीं बहुत दूर प्रतीत होता है ।। ३ ।। हे माँ ! जिस सुहागिन पर सब जीवों का मालिक-प्रभु दयालु होता है, उस सुहागिन का वह समस्त दुख दूर कर देता है । नानक का कथन है कि जब गुरु ने जीव-स्त्री के मध्य से अहंत्व की दीवार गिरा दी, तब उसने मायारहित कृपालु प्रभु को भीतर ही पा लिया ।। ४ ।। हे माँ ! प्रभु बादशाह है, सब गुणों का भण्डार है । जिस जीव-स्त्री को गुरु ने उसके अभिलषित प्रभु का दर्शन करवा दिया, उसकी समस्त चिन्ताएँ दूर हो जाती हैं ।। रहाउ दूजा ।। ११ ।। ६१ ।।

।। सोरठि महला ५ ।। गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी । करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी माइआधारी । नामु परिओ भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ।। १ ।। हरि जीउ निमाणिआ तू माणु । निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ।। रहाउ ।। जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध कमावै । करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै । पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ।। २ ।। हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईऐ । कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईऐ । अवर ओट मै सगली देखी इक तेरी ओट रहाईऐ ।। ३ ।। होइ दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेनंती । पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन की चिंती । हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ।। ४ ।। १२ ।। ६२ ।।

हे प्रभु ! तुम गवाँई हुई राशि (आत्मिक जीवन की राशि) को पुनः प्राप्त करानेवाले हो, तुम विकारों की क़ैद से मुक्ति दिलानेवाले हो, तुम्हारा कोई विशेष स्वरूप नहीं बतलाया जा सकता, तुम दुखों में धैर्य बँधानेवाले हो। मैं किसी शुभ कर्म-धर्म से अपरिचित हूँ। मैं लोभ और माया-मोह में फँसा हुआ हूँ। लेकिन, हे प्रभु ! मेरा नाम 'गोविन्द का भक्त' हो गया है। इसलिए अब तुम अपने नाम की लाज रखो ॥ १ ॥ हे प्रभुजी ! तुम उन व्यक्तियों को सम्मान देते हो, जिनका कोई दूसरा सम्मान नहीं करता। मैं तुम्हारी शक्ति पर बलिहारी हूँ। हे भाई ! मेरा गोविन्द निकम्मों को भी सम्मानयोग्य बना देता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जैसे कोई बच्चा शैशवसुलभ स्वभावानुसार लाखों ग़लतियाँ करता है, उसका पिता उसे शिक्षा देकर कई दृष्टियों से झिड़कता भी है, लेकिन (इतना होने पर भी) उसे गले लगा लेता है। इसी प्रकार प्रभु-पिता भी जीवों के पूर्वकृत पाप क्षमा करता और भविष्य के लिए उसे सन्मार्गगामी बना देता है ॥ २ ॥ हे भाई ! परमात्मा सबके अन्तर्मन की स्थिति से परिचित है, जीवों की प्रत्येक आत्मिक स्थिति से अवगत है, (फिर) किस दूसरे व्यक्ति से अपनी व्यथा को सुनाया जा सकता है ? हे भाई ! प्रभु मात्र बातों से प्रसन्न नहीं होता। जो मनुष्य प्रभु को भला लगता है, वह उसी की प्रतिष्ठा की रक्षा करता है। हे प्रभु ! मैंने दूसरे सब सहारे देख लिये हैं, (अब) मुझे एक तुम्हारा ही सहारा है ॥ ३ ॥ प्रभु स्वयं ही कृपालु होकर जिसकी प्रार्थना सुन लेता है, उसे सतिगुरु मिला देता है और इस प्रकार उस मनुष्य के मन की तमाम चिन्ता मिट जाती है। दास नानक का कथन है कि परमात्मा जिस मनुष्य के मुँह में नाम रूपी औषधि डाल देता है, वह मनुष्य आत्मिक आनन्द में जीवन जीता है ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६२ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भए अनंदा दुख कलेस सभि नाठे। गुन गावत धिआवत प्रभु अपना कारज सगले सांठे ॥ १ ॥ जग जीवन नामु तुमारा। गुर पूरे दीओ उपदेसा जपि भउजलु पारि उतारा ॥ रहाउ ॥ तू है मंत्री सुनहि प्रभ तू है सभु किछु करणैहारा। तू आपे दाता आपे भुगता किआ इहु जंतु विचारा ॥ २ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणी कीमति कहणु न जाई। पेखि पेखि जीवै प्रभु अपना अचरजु तुमहि वडाई ॥ ३ ॥ धारि अनुग्रहु आपि प्रभ स्वामी पति मति कीनी पूरी। सदा सदा नानक बलिहारी बाछउ संता धूरी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६३ ॥

तुम्हारा नाम-स्मरण करके भक्त प्रसन्नचित्त हो जाते हैं, उनके समस्त दुख-क्लेश मिट जाते हैं। वे अपने प्रभु के गुण गाते एवं नाम-स्मरण करते हुए अपने समस्त कार्य सँवार लेते हैं ॥ १ ॥ हे प्रभु! तुम्हारा नाम विश्व को जीवन देनेवाला है। पूर्णसतिगुरु ने जिसे तुम्हारे नाम का उपदेश दिया, वह मनुष्य नाम जपकर संसार-समुद्र से पार उतर गया ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु! तुम आप ही अपने परामर्शदाता हो, तुम आप ही देन देनेवाले हो और तुम स्वयं ही भोगनेवाले भी हो। इस जीव की कोई सामर्थ्य नहीं है ॥२॥ हे प्रभु! मुझमें तुम्हारे गुणों को व्यक्त करने का साहस नहीं है। तुम्हारी प्रतिष्ठा मूल्यांकन से परे है। तुम्हारा गौरव आश्चर्यजनक है। जीव अपने प्रभु का दर्शन करके आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु! तुम स्वयं ही कृपा करके जीव को प्रतिष्ठा देते हो, उसे सुबुद्धि प्रदान करते हो। नानक का कथन है कि मैं सदा ही तुम पर बलिहारी हूँ। मैं तुम्हारे द्वार से सन्तों के चरणों की धूलि माँगता हूँ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६३ ॥

॥ सोरठि म० ५ ॥ गुरु पूरा नमसकारे। प्रभि सभे काज सवारे। हरि अपणी किरपा धारी। प्रभ पूरन पैज सवारी ॥ १ ॥ अपने दास को भइओ सहाई। सगल मनोरथ कीने करतै ऊणी बात न काई ॥ रहाउ ॥ करतै पुरखि तालु दिवाइआ। पिछै लगि चली माइआ। तोटि न कतहू आवै। मेरे पूरे सतगुर भावै ॥ २ ॥ सिमरि सिमरि दइआला। सभि जीअ भए किरपाला। जै जैकारु गुसाई। जिनि पूरी बणत बणाई ॥ ३ ॥ तू भारो सुआमी मोरा। इहु पुंनु पदारथु तेरा। जन नानक एकु धिआइआ। सरब फला पुंनु पाइआ ॥ ४ ॥ १४ ॥ ६४ ॥

हे भाई! जो मनुष्य सतिगुरु की शरण लेता है, (उसके लिए समझो) प्रभु उसके समस्त कार्य पूर्ण कर देता है। प्रभु ने उस भक्त पर कृपादृष्टि की और उसकी प्रतिष्ठा बचा ली ॥ १ ॥ हे भाई! परमात्मा अपने सेवकों का सहायक बनता है, उसने भक्तों की समस्त कामनाएँ पूर्ण की हैं, (उसके) सेवक को किसी प्रकार की कमी नहीं रहती ॥ रहाउ ॥ हे भाई शरणागत को उस सर्वव्यापक कर्तार ने गुरु द्वारा गुप्त नाम-भण्डार दिला दिया, (वह माया के लिए उतावला नहीं होता) बल्कि माया उसके पीछे दौड़ती फिरती है। उसे कहीं भी कोई कमी महसूस नहीं होती। पूर्ण-सतिगुरु को (अपने सेवक की) यह बात भली लगती है ॥ २ ॥ हे भाई! दया के घर प्रभु का नाम स्मरण कर समस्त जीव करुणा-रूप प्रभु का ही

रूप हो जाते हैं, इसलिए उस सृष्टि के मालिक-प्रभु की गुणस्तुति करते रहो, जिसने इस सुन्दर विधि का विधान बनाया है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तुम मेरे सर्वोच्च मालिक हो। तुम्हारा नाम-पदार्थ तुम्हारी ही देन है। नानक का कथन है कि जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम-स्मरण करना शुरू कर दिया, उसने समस्त फल देनेवाली ईश्वरीय देन प्राप्त कर ली ॥४॥१४॥६४॥

सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रामदास सरोवरि नाते। सभि उतरे पाप कमाते। निरमल होए करि इसनाना। गुरि पूरै कीने दाना ॥ १ ॥ सभि कुसल खेम प्रभि धारे। सही सलामति सभि थोक उबारे। गुर का सबदु वीचारे ॥ रहाउ ॥ साध संगि मलु लाथी। पारब्रहमु भइओ साथी। नानक नामु धिआइआ। आदि पुरख प्रभु पाइआ ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥

जो मनुष्य सत्संगति में स्नान करते (रहते) हैं, उनके पूर्वकृत पाप दूर हो जाते हैं। (हरि के नाम रूपी जल में) स्नान करके वे सदाचारी हो जाते हैं। परन्तु यह कृपा पूर्णगुरु द्वारा ही होती है ॥१॥ हे भाई ! जिस मनुष्य ने गुरु के ज्ञान का आश्रय लेकर आत्मिक जीवन के सारे गुण पूर्णरूपेण ग्रहण कर लिये हैं, प्रभु उसके भीतर समस्त सुख पैदा कर देता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! सत्संगति में रहने से विकारों का मैल दूर हो जाता है, सत्संगति के प्रभाव से परमात्मा सहायक बन जाता है। हे नानक ! जिस मनुष्य ने प्रभु का स्मरण किया, उसने उस प्रभु को पा लिया जो सबका आदि है और जो सर्वव्यापक है ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ जितु पारब्रहमु चिति आइआ। सो घरु दयि वसाइआ। सुखसागरु गुरु पाइआ। ता सहसा सगल मिटाइआ ॥ १ ॥ हरि के नाम की वडिआई। आठ पहर गुण गाई। गुर पूरे ते पाई ॥ रहाउ ॥ प्रभ की अकथ कहाणी। जन बोलहि अंम्रित बाणी। नानक दास वखाणी। गुर पूरे ते जाणी ॥ २ ॥ २ ॥ ६६ ॥

हे भाई ! जिस हृदय-घर में परमात्मा आ बसा, उस घर को प्रियतम प्रभु ने आत्मिक गुणों से परिपूरित कर दिया। जब (मनुष्य को) सुखों का समुद्र गुरु प्राप्त हो गया, तब उसके समस्त भय दूर हो गए ॥ १ ॥

हे भाई ! परमात्मा के नाम की गुणस्तुति करने, आठों प्रहर उसका गुणगान करने की यह प्रवृत्ति पूर्णगुरु से ही प्राप्त होती है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! प्रभु का स्वरूप अव्यक्त है। प्रभु के सेवक आत्मिक जीवन देनेवाली गुणस्तुति की वाणी उच्चरित करते रहते हैं। हे नानक ! वही सेवक (जीव) यह वाणी उच्चारण करते हैं, जिन्होंने पूर्णगुरु से यह सूझ प्राप्त की है ॥ २ ॥ २ ॥ ६६ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु गुरि दीआ। पाछै कुसल खेम गुरि कीआ। सरब निधान सुख पाइआ। गुरु अपुना रिदै धिआइआ ॥ १ ॥ अपने सतिगुर की वडिआई। मन इछे फल पाई। संतहु दिनु दिनु चड़ै सवाई ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभि भए दइआला प्रभि अपने करि दीने। सहज सुभाइ मिले गोपाला नानक साचि पतीने ॥ २ ॥ ३ ॥ ६७ ॥

हे सन्तो ! जिस मनुष्य ने गुरु को अपने हृदय में बसा लिया, उसने समस्त ख़ज़ाने, सारे आनन्द प्राप्त कर लिये। गुरु ने उसे आगामी जीवन-मार्ग के लिए सुख प्रदान कर दिया, अतीत में भी उसे गुरु ने सुख-आनन्द प्रदान किया था ॥ १ ॥ हे सन्तो ! गुरु की आत्मिक स्थिति उच्चतम है, (उसका शरणागत) मनोवांछित कामनाएँ पा लेता है। गुरु की यह उदारता दिन-प्रतिदिन बढ़ती है ॥ रहाउ ॥ हे सन्तो ! समस्त जीव दया-भाव से परिपूरित हो जाते हैं, प्रभु उन्हें अपना बना लेता है। हे नानक ! आत्मिक लग्न और प्रभु-प्रेम के फलस्वरूप उन्हें सृष्टि का मालिक-प्रभु मिल जाता है और वे सत्यस्वरूप प्रभु की स्मृति में लीन रहते हैं ॥२॥३॥६७॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर का सबदु रखवारे। चउकी चउगिरद हमारे। राम नामि मनु लागा। जमु लजाइ करि भागा ॥ १ ॥ प्रभ जी तू मेरो सुख दाता। बंधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ नानक प्रभु अबिनासी। ताकी सेव न बिरथी जासी। अनद करहि तेरे दासा। जपि पूरन होई आसा ॥ २ ॥ ४ ॥ ६८ ॥

गुरु का ज्ञान ही हम जीवों का रक्षक है, वही हमारे चारों ओर का संरक्षक है। (गुरु की शरण लेनेवाले) जिस मनुष्य का मन परमात्मा में प्रवृत्त होता है, उससे यमराज भी आतंकित होकर दूर हट जाता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! मेरे लिए तो तुम ही सुखों के दाता हो। (आस्थावान प्राणी को) सर्वव्यापक प्रभु बन्धनमुक्त कर उसके मन को पवित्र कर देता है ॥रहाउ॥ नानक का कथन है कि अविनाशी प्रभु की की गई सेवा व्यर्थ नहीं जाती।

हे प्रभु ! तुम्हारे सेवक आत्मिक आनन्द महसूसते हैं, तुम्हारा नाम स्मरण कर उनकी प्रत्येक मनोकामना पूर्ण हो जाती है ॥ २ ॥ ४ ॥ ६८ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर अपुने बलिहारी । जिनि पूरन पैज सवारी । मन चिंदिआ फलु पाइआ । प्रभु अपुना सदा धिआइआ ॥ १ ॥ संतहु तिसु बिनु अवरु न कोई । करण कारण प्रभु सोई ॥ रहाउ ॥ प्रभि अपनै वर दीने । सगल जीअ वसि कीने । जन नानक नामु धिआइआ । ता सगले दूख मिटाइआ ॥ २ ॥ ५ ॥ ६९ ॥

हे सन्तो ! मैं अपने गुरु पर बलिहारी हूँ, जिसने पूर्णरूपेण प्रतिष्ठा की रक्षा की है । हे भाई ! जो मनुष्य सदा अपने प्रभु का स्मरण करता है, उसकी मनोवांछित कामनाएँ पूर्ण होती हैं ॥ १ ॥ हे सन्तो ! उस परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई रक्षक नहीं है । वही परमात्मा जगत का मूल है ॥ रहाउ ॥ हे सन्तो ! प्यारे प्रभु ने सब कुछ दिया है, सब जीवों को अपने अधीन रखा है । दास नानक का कथन है कि जब भी किसी ने परमात्मा का नाम स्मरण किया, उसके सारे दुख दूर हो गए ॥ २ ॥ ५ ॥ ६९ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ तापु गवाइआ गुरि पूरे । वाजे अनहद तूरे । सरब कलिआण प्रभि कीने । करि किरपा आपि दीने ॥ १ ॥ बेदन सतिगुरि आपि गवाई । सिख संत सभि सरसे होए हरि हरि नामु धिआई ॥ रहाउ ॥ जो मंगहि सो लेवहि । प्रभ अपणिआ संता देवहि । हरि गोविदु प्रभि राखिआ । जन नानक साचु सुभाखिआ ॥ २ ॥ ६ ॥ ७० ॥

सतिगुरु ने (हरि-नाम की औषधि से अन्तर्मन का) सन्ताप मिटा दिया । उसके भीतर निरन्तर आनन्द के बाजे बजने लगे । प्रभु ने आप ही कृपा करके उसे सारे सुख प्रदान कर दिए ॥ १ ॥ हे भाई ! समस्त गुरमुख जीव प्रभु का नाम स्मरण कर आनन्दमग्न हुए रहते हैं । (नाम-स्मरणकर्ता की) गुरु ने सब पीड़ा दूर कर दी ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! सन्तजन जो कुछ भी माँगते हैं, तुम उन्हें वही देते हो । हरिगोबिन्द को भी प्रभु ने आप बचाया है (किसी चामत्कारिक शक्ति ने नहीं) । दास नानक का कथन है कि (इसीलिए) मैं तो सत्यस्वरूप प्रभु का नाम उच्चरित करता हूँ ॥ २ ॥ ६ ॥ ७० ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ सोई कराइ जो तुधु भावै ।

मोहि सिआणप कछू न आवै। हम बारिक तउ सरणाई। प्रभि आपे पैज रखाई ॥ १ ॥ मेरा मात पिता हरि राइआ। करि किरपा प्रति पालण लागा करीं तेरा कराइआ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत तेरे धारे। प्रभ डोरी हाथि तुमारे। जि करावै सो करणा। नानक दास तेरी सरणा ॥ २ ॥ ७ ॥ ७१ ॥

हे प्रभु बादशाह ! तुम मुझसे वही कार्य कराया करो, जो तुम्हें भला लगे। मुझे कोई भी बुद्धिमत्ता की बात नहीं आती। हे प्रभु ! हम बच्चे तुम्हारी शरण में हैं। हे भाई ! शरणागत जीव की प्रतिष्ठा को प्रभु ने स्वयं ही बचाया है ॥ १ ॥ हे प्रभु बादशाह ! तुम ही मेरी माँ हो, पिता हो। कृपा करके तुम ही मेरा पालन-पोषण कर रहे हो। हे प्रभु ! मैं वही कुछ करता हूँ, जो तुम मुझसे करवाते हो ॥ रहाउ ॥ हे हरि ! हम जीवों की ज़िन्दगी की डोर तुम्हारे हाथ में है, सब जीव तुम्हारे ही आसरे हैं। नानक का कथन है कि तुम्हारे दास तुम्हारी ही शरण में रहते हैं। हे भाई ! जीव वही कुछ कर सकते हैं, जो कुछ परमात्मा उनसे कराता है ॥ २ ॥ ७ ॥ ७१ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ हरिनामु रिदै परोइआ। सभु काजु हमारा होइआ। प्रभ चरणी मनु लागा। पूरन जाके भागा ॥ १ ॥ मिलि साध संगि हरि धिआइआ। आठ पहर अराधिओ हरि हरि मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ रहाउ ॥ परा पूरबला अंकुरु जागिआ। राम नामि मनु लागिआ। मनि तनि हरि दरसि समावै। नानक दास सचे गुण गावै ॥ २ ॥ ८ ॥ ७२ ॥

हे भाई ! जिस मनुष्य का भाग्य भली प्रकार उदित हो जाता है, उसका मन प्रभु के चरणों में लीन रहता है। जब प्रभु का नाम भली भाँति मन में स्थिर हो जाता है, तब जीवों का समस्त जीवन-मनोरथ सफल हो जाता है ॥ १ ॥ जिसने सत्संगति में मिलकर प्रभु का नाम स्मरण किया, आठों प्रहर परमात्मा का गुणगान किया, उसने मनोवांछित फल प्राप्त कर लिया ॥ रहाउ ॥ दास नानक का कथन है कि (जब किसी मनुष्य के भीतर सत्संगति के प्रभाव से) अनेकों पूर्ववर्ती जन्मों के संस्कारों का बीज अंकुरित होता है, तब उसका मन परमात्मा के नाम में रत होने लगता है; वह मनुष्य तन-मन से परमात्मा के ध्यान में संलग्न रहता है और सत्यस्वरूप प्रभु के गुण गाता रहता है ॥ २ ॥ ८ ॥ ७२ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर मिलि प्रभू चितारिआ।

कारज सभि सवारिआ । मंदा को न अलाए । सभ जै जैकारु सुणाए ॥ १ ॥ संतहु साची सरणि सुआमी । जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै सो प्रभु अंतरजामी ॥ रहाउ ॥ करतब सभि सवारे । प्रभि अपुना बिरदु समारे । पतित पावन प्रभ नामा । जन नानक सद कुरबाना ॥ २ ॥ ९ ॥ ७३ ॥

हे सन्तो ! जिसने गुरु को मिलकर परमात्मा को याद करना आरम्भ कर दिया, उसने अपने काम सँवार लिये । वह किसी को कटु वचन नहीं बोलता, बल्कि सारी दुनिया को प्रभु की गुणस्तुति ही सुनाता है ॥ १ ॥ हे सन्तो ! मालिक-प्रभु का आसरा निश्चित आसरा है । सब जीव उस प्रभु के हाथ में हैं और वह प्रभु अन्तर्यामी है ॥ रहाउ ॥ हे सन्तो ! (प्रभु का आश्रय लेनेवाले व्यक्ति के) प्रभु ने सब काम सफल कर दिए । प्रभु ने अपना यह विरद (भक्त की रक्षा करने का वचन) हमेशा स्मरण रखा है । परमात्मा का नाम विकृत जीवों को पवित्र करनेवाला है । दास नानक का कथन है कि वह उस पर हमेशा बलिहारी जाता है ॥ २ ॥ ९ ॥ ७३ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमि साजि सवारिआ । इहु लहुड़ा गुरू उबारिआ । अनद करहु पित माता । परमेसरु जीअ का दाता ॥ १ ॥ सुभ चितवनि दास तुमारे । राखहि पैज दास अपुने की कारज आपि सवारे ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु परउपकारी । पूरन कल जिनि धारी । नानक सरणी आइआ । मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ २ ॥ १० ॥ ७४ ॥

हे भाई ! परमात्मा ने इस छोटे बच्चे (हरिगोबिन्द) को बनाया, सँवारा है । परमात्मा ही प्राणों का दाता है । (उसकी कृपा से ही) गुरु ने इसे बचा लिया है । (अब ईश्वर-कृपा के फलस्वरूप) निस्सन्देह इसके माँ-बाप खुशियाँ मनाएँ ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारे सेवक सबका शुभ चाहते हैं । तुम उनके अनुसार काम सँवारकर अपने सेवकों की लाज रख लेते हो ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस प्रभु की शक्ति समस्त जगत में व्याप्त है, वही सबकी भलाई करनेवाला है । नानक का कथन है कि जो भी मनुष्य उस प्रभु की शरण लेता है, वह मनोवांछित फल पा लेता है ॥ २ ॥ १० ॥ ७४ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ सदा सदा हरि जापे । प्रभ बालक राखे आपे । सीतला ठाकि रहाई । बिघन गए हरि

नाई ॥ १ ॥ मेरा प्रभु होआ सदा दइआला । अरदासि सुणी भगत अपुने की सभ जीअ भइआ किरपाला ॥ रहाउ ॥ प्रभ करणकारण समराथा । हरि सिमरत सभु दुखु लाथा । अपणे दास की सुणी बेनंती । सभ नानक सुखि सवंती ॥२॥११॥७५॥

हे भाई ! सदा ही परमात्मा का नाम-स्मरण किया करो । प्रभुजी आप ही अपने बालकों के रक्षक हैं । (प्रभु ने कृपा करके) शीतला (चेचक) को रोक लिया है । परमात्मा की गुणस्तुति के प्रभाव से संकट दूर हो गए हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! मेरा प्रभु सदा ही दयालु है । समस्त जीवों पर दया करता है । वह सदा अपने भक्त की प्रार्थना सुनता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! प्रभु जगत का मूल है और सब ताकतों का स्वामी है । प्रभु का नाम-स्मरण करने से हर एक दुख दूर हो जाता है । हे नानक ! प्रभु ने सदा ही अपने सेवक की प्रार्थना सुनी है और उसी की कृपा से सारी दुनिया सुखी बसती है ॥ २ ॥ ११ ॥ ७५ ॥

[इस पद में गुरुजी ने छठी पातशाही गुरु हरगोबिन्द के बाल्यावस्था में चेचक द्वारा रुग्ण होने एवं प्रभु-कृपा से स्वस्थ होने का संकेत दिया है ।]

॥ सोरठि महला ५ ॥ अपना गुरू धिआए । मिलि कुसल सेती घरि आए । नामै की वडिआई । तिसु कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ संतहु हरि हरि हरि आराधहु । हरि आराधि सभो किछु पाईऐ कारज सगले साधहु ॥ रहाउ ॥ प्रेम भगति प्रभ लागी । सो पाए जिसु वडभागी । जन नानक नामु धिआइआ । तिनि सरब सुखा फल पाइआ ॥२॥१२॥७६॥

हे सन्तो ! जो मनुष्य अपने गुरु का स्मरण करता है, वह गुरु के चरणों में जगह पाकर आत्मिक आनन्द के साथ हृदय-घर में स्थिर हो जाता है । यह नाम का ही प्रभाव है (कि प्राणी का भटकाव समाप्त हो जाता है) । लेकिन इस हरि-नाम का मूल्य बतलाया नहीं जा सकता ॥ १ ॥ हे सन्तो ! सर्वदा प्रभु का नाम-स्मरण किया करो । उस प्रभु का नाम-स्मरण करके हर वस्तु प्राप्त की जा सकती है । तुम भी प्रभु का नाम-स्मरण कर अपना समस्त काम सँवार लो ॥ रहाउ ॥ (प्रभु-भक्त का) मन प्रभु की प्रेम-भक्ति में रँग जाता है । किन्तु यह वरदान वही मनुष्य प्राप्त करता है, जो सौभाग्यशाली हो । दास नानक का कथन है कि जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम-स्मरण किया है, उसने सभी सुखद फल प्राप्त कर लिये हैं ॥ २ ॥ १२ ॥ ७६ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ परमेसरि दिता बंना । दुख रोग का डेरा भंना । अनद करहि नर नारी । हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥ १ ॥ संतहु सुखु होआ सभ थाई । पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ धुर की बाणी आई । तिनि सगली चिंत मिटाई । दइआल पुरख मिहरवाना । हरि नानक साचु वखाना ॥ २ ॥ १३ ॥ ७७ ॥

हे सन्तो ! परमेश्वर ने जिसके लिए (विकारों के मार्ग में) रुकावट पैदा कर दी, उसके भीतर से परमात्मा ने दुखों और रोगों का डेरा ही उठा दिया । जिन जीवों पर प्रभु ने यह कृपा कर दी, वे सब आत्मिक आनन्द महसूसते हैं ॥ १ ॥ हे सन्तो ! जिसे विश्वास हो जाता है कि परब्रह्म परमेश्वर सर्वत्र मौजूद है, उसे सर्वत्र सुख ही सुख प्रतीत होता है ॥रहाउ॥ हे सन्तो ! परमात्मा की गुणस्तुति की वाणी जिस मनुष्य के भीतर स्थिर हो गई, उसने अपनी समस्त चिन्ता मिटा ली; कृपा के स्रोत प्रभु उस मनुष्य पर कृपालु होते हैं और वह मनुष्य उस सत्यस्वरूप प्रभु का नाम उच्चरित करता है ॥ २ ॥ १३ ॥ ७७ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ ऐथै ओथै रखवाला । प्रभ सतिगुर दीन दइआला । दास अपने आपि राखे । घटि घटि सबदु सुभाखे ॥ १ ॥ गुर के चरण ऊपरि बलि जाई । दिनसु रैनि सासि सासि समाली पूरनु सभनी थाई ॥ रहाउ ॥ आपि सहाई होआ । सचे दा सचा ढोआ । तेरी भगति वडिआई । पाई नानक प्रभ सरणाई ॥ २ ॥ १४ ॥ ७८ ॥

हे भाई ! प्रभु ग़रीबों पर दया करनेवाला है, इस लोक और परलोक में रक्षा करनेवाला है । प्रभु अपने सेवकों की रक्षा करता है । प्रभु प्रत्येक शरीर में आप ही मुखरित है ॥ १ ॥ हे भाई ! मैं गुरु के चरणों पर बलिहारी हूँ । (क्योंकि उसी की कृपा से) मैं प्रत्येक श्वास के साथ दिन-रात प्रभु को स्मरण करता हूँ, जो सर्वत्र परिव्याप्त है ॥ रहाउ ॥ (गुरु-कृपा से) परमात्मा स्वयं सहायक बनता है । उसकी कृपा से सत्यस्वरूप प्रभु की सत्यस्वरूप वाणी की देन मिलती है । नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तुम्हारी शरण लेने से तुम्हारी भक्ति और गुणस्तुति की शक्ति प्राप्त होती है ॥ २ ॥ १४ ॥ ७८ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ सतिगुर पूरे भाणा । ता जपिआ नामु रमाणा । गोबिंद किरपा धारी । प्रभि राखी पैज

हमारी ॥ १ ॥ हरि के चरण सदा सुखदाई । जो इछहि सोई फलु पावहि बिरथी आस न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा करे जिसु प्रानपति दाता सोई संतु गुण गावै । प्रेम भगति ताका मनु लीणा पारब्रहम मनि भावै ॥ २ ॥ आठ पहर हरि का जसु रवणा बिखै ठगउरी लाथी । संगि मिलाइ लीआ मेरै करतै संत साध भए साथी ॥ ३ ॥ करु गहि लीने सरब सु दीने आपहि आपु मिलाइआ । कहु नानक सरब थोक पूरन पूरा सतिगुरु पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ७९ ॥

हे भाई ! (गुरु के प्रसन्न होने पर) ही प्रभु का नाम लिया जा सकता है । तबही परमात्मा ने कृपा की और हमारी लाज बचाई ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा के चरण सदा सुख देनेवाले हैं । जो कुछ परमात्मा से माँगते हैं, वही फल प्राप्त कर लेते हैं । कोई भी आशा अपूर्ण नहीं रहती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य पर सब कुछ देनेवाला प्राणपति प्रभु कृपा करता है, वही सन्तपुरुष उस प्रभु का गुण गाता है; उसका मन प्रेम-भक्ति में लीन हो जाता है और उसके मन को परब्रह्म परमात्मा अच्छा लगने लगता है ॥ २ ॥ हे भाई ! आठों प्रहर परमात्मा का गुणगान करने से विकारों की ठग-बूटी (ठगौरी) का प्रभाव समाप्त हो जाता है । (जिस भक्त को) कर्तार-प्रभु ने अपने साथ मिला लिया, सन्तजन उसके साथी बन गए ॥३॥ प्रभु ने हाथ पकड़कर उसको सब कुछ दे दिया, प्रभु ने उसे अपना ही रूप बना दिया। नानक का कथन है कि जिस मनुष्य की पूर्णगुरु से भेंट हो गई, उसके समस्त कार्य पूर्ण हो गए ॥ ४॥ १५ ॥ ७९ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ गरीबी गदा हमारी । खंना सगल रेनु छारी । इसु आगै को न टिकै वेकारी । गुर पूरे एह गल सारी ॥ १ ॥ हरि हरि नामु संतन की ओटा । जो सिमरै तिस की गति होवै उधरहि सगले कोटा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत संगि जसु गाइआ । इहु पूरन हरि धनु पाइआ । कहु नानक आपु मिटाइआ । सभु पारब्रहमु नदरी आइआ ॥२॥१६॥८०॥

हे भाई ! नम्रता हमारे पास गदा है, सबकी चरणधूलि बने रहना खण्डा है, इस गदा और खण्डा (शास्त्रों) के समक्ष कोई कुकर्मी टिक नहीं सकता । पूर्णगुरु ने हमें यह बात समझा दी है ॥ १ ॥ हे भाई ! प्रभु का नाम ही सन्तों का आसरा है । जो मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करता है, उसकी आत्मिक अवस्था उच्च बन जाती है । प्रभु के नाम के सहारे करोड़ों जीव विकारों से बच जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक का

कथन है कि जिस मनुष्य ने सन्तों की संगति में परमात्मा की गुणस्तुति का गीत गाया है, उसने यह हरि-नाम रूपी धन प्राप्त कर लिया है जो कभी भी समाप्त नहीं होता। उस मनुष्य ने अपने भीतर से अहंत्वभाव दूर कर लिया है, उसे सर्वत्र परमात्मा ही दृष्टिगत होता है॥ २॥ १६॥ ८०॥

॥ सोरठि महला ५॥ गुरि पूरै पूरी कीनी। बखस अपुनी करि दीनी। नित अनंद सुख पाइआ। थाव सगले सुखी वसाइआ॥ १॥ हरि की भगति फलदाती। गुरि पूरै किरपा करि दीनी विरलै किन ही जाती॥ रहाउ॥ गुरबाणी गावह भाई। ओह सफल सदा सुखदाई। नानक नामु धिआइआ। पूरबि लिखिआ पाइआ॥ २॥ १७॥ ८१॥

हे भाई! जिस मनुष्य पर वाहिगुरु ने कृपा की, उसे गुरु ने अपने द्वार पर प्रभु-भक्ति की देन दे दी। उस मनुष्य को आत्मिक आनन्द प्राप्त हो गया। गुरु ने उसकी समस्त ज्ञानेन्द्रियों को (विकारमुक्त कर) शान्त कर दिया॥१॥ परमात्मा की भक्ति समस्त फलों की दात्री है। पूर्णगुरु ने जिस पर कृपा की, वही (भक्ति में प्रवृत्त हो गया), पर किसी विरले मनुष्य ने ही परमात्मा की भक्ति की क़ीमत समझी है॥ रहाउ॥ आइए, हम भी गुरवाणी का गायन करें। यह सदा ही समस्त उपलब्धियों और सुख की देनेवाली है। नानक का कथन है कि उसी मनुष्य ने प्रभु का नाम-स्मरण किया है, जिसने पूर्वजन्म में लिखा भक्ति का लेख प्राप्त किया है॥ २॥ १७॥ ८१॥

॥ सोरठि महला ५॥ गुरु पूरा आराधे। कारज सगले साधे। सगल मनोरथ पूरे। बाजे अनहद तूरे॥ १॥ संतहु रामु जपत सुखु पाइआ। संत असथानि बसे सुख सहजे सगले दूख मिटाइआ॥ १॥ रहाउ॥ गुर पूरे की बाणी। पारब्रहम मनि भाणी। नानक दासि वखाणी। निरमल अकथ कहाणी॥ २॥ १८॥ ८२॥

हे सन्तो! जिन मनुष्यों ने पूर्णगुरु का स्मरण किया, उन्होंने अपने तमाम कार्य सँवार लिये। उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण हो गईं और उनके भीतर प्रभु की गुणस्तुति के बाजे निरन्तर बजने लगे॥ १॥ हे सन्तो! जो मनुष्य सत्संगति में सम्मिलित होते हैं, वे आत्मिक स्थिरता में लीन रहकर आत्मिक आनन्द प्राप्त करते हैं। वे अपने समस्त दुख दूर कर लेते हैं और परमात्मा का नाम जपकर आत्मिक सुख प्राप्त करते हैं॥१॥

रहाउ ॥ लेकिन, हे नानक ! पूर्णगुरु की वाणी किसी विरले ही सेवक ने उच्चरित की है। यह वाणी परमात्मा को प्यारी लगती है क्योंकि यह वाणी पवित्र करनेवाली है; यह वाणी उस प्रभु की गुणस्तुति है, जिसका स्वरूप व्यक्त नहीं किया जा सकता ॥ २ ॥ १८ ॥ ८२ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ भूखे खावत लाज न आवै । तिउ हरिजनु हरि गुण गावै ॥ १ ॥ अपने काज कउ किउ अलकाईऐ । जितु सिमरनि दरगह मुखु ऊजल सदा सदा सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ कामी कामि लुभावै । तिउ हरि दास हरि जसु भावै ॥ २ ॥ जिउ माता बालि लपटावै । तिउ गिआनी नामु कमावै ॥ ३ ॥ गुर पूरे ते पावै । जन नानक नामु धिआवै ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८३ ॥

हे भाई ! जैसे कोई भूखा मनुष्य खाते हुए लज्जा महसूस नहीं करता, वैसे ही परमात्मा का सेवक (बिना किसी झिझक के) परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता है ॥ १ ॥ हे भाई ! जिस नाम-स्मरण के प्रभाव से परमात्मा की सेवा करते हुए मुक्ति हो जाती है और सदा आत्मिक आनन्द की उपलब्धि होती है (वही वास्तविक कर्म है); अपने इस वास्तविक काम के खातिर कभी भी आलस्य नहीं करना चाहिए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस प्रकार कोई विषयी मनुष्य कामवासना में ही लीन रहता है, उसी प्रकार परमात्मा के सेवक को परमात्मा की गुणस्तुति ही भली लगती है ॥ २ ॥ हे भाई ! जैसे माँ अपने बच्चे के साथ चिपटी रहती है, उसी प्रकार आत्मिक जीवन की सूझ वाला मनुष्य नाम-स्मरण की कमाई में संलग्न रहता है ॥ ३ ॥ पर, हे दास नानक ! वही मनुष्य नाम-स्मरण करता है, जो पूर्णगुरु की कृपा से रहस्य को प्राप्त करता है ॥४॥१९॥८३॥

॥ सोरठि महला ५॥ सुख सांदि घरि आइआ । निंदक कै मुखि छाइआ । पूरै गुरि पहिराइआ । बिनसे दुख सबाइआ ॥ १ ॥ संतहु साचे की वडिआई । जिनि अचरज सोभ बणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बोले साहिब कै भाणै । दासु बाणी ब्रहमु वखाणै । नानक प्रभ सुखदाई । जिनि पूरी बणत बणाई ॥ २ ॥ २० ॥ ८४ ॥

जिस मनुष्य को पूर्णगुरु ने आदर-सम्मान दिया, उसके समस्त दुख दूर हो गए। वह पूर्ण आत्मिक आरोग्यता के साथ अपने हृदय-घर में स्थिर हो गया। उसके निन्दक के मुख पर राख पड़ती है अर्थात् उसके निन्दक

को बदनामी ही भोगनी पड़ती है ॥ १ ॥ हे सन्तो ! प्रभु की महिमा अकल्पनीय है, जिसने आश्चर्य-उत्पादक शोभा (अपने सेवक की) बना दी है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस मनुष्य को पूर्णगुरु ने मान-सम्मान दिया, वह सदा प्रभु की रज़ा-अनुसार बोलता है; वह प्रभु की गुणस्तुति की वाणी उच्चरित करता है और परमात्मा का नाम-स्मरण करता है। हे नानक ! जिस परमात्मा ने यह दोषरहित योजना बना दी है, वह सदा अपने सेवक को सुख देनेवाला है ॥ २ ॥ २० ॥ ८४ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ प्रभु अपुना रिदै धिआए। घरि सही सलामति आए। संतोखु भइआ संसारे। गुरि पूरै लै तारे॥ १ ॥ संतहु प्रभु मेरा सदा दइआला। अपने भगत की गणत न गणई राखै बाल गुपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिनामु रिदै उरिधारे। तिनि सभे थोक सवारे। गुरि पूरै तुसि दीआ। फिरि नानक दूखु न थीआ ॥ २ ॥ २१ ॥ ८५ ॥

हे सन्तो ! जो मनुष्य परमात्मा का नाम अपने हृदय में स्मरण करता हैं, वह मनुष्य अपनी आत्मिक जीवन की राशि को विकारों से बचा कर हृदय-घर में स्थिर रहता है। सांसारिक कार्य-व्यापार करते हुए भी उसके भीतर माया की ओर से निर्लिप्तता बनी रहती है। सतिगुरु उसकी बाँह पकड़कर उसे संसार-समुद्र से पार कर देता है ॥ १ ॥ हे सन्तो ! मेरा प्रभु सदा दयालु है। प्रभु अपने भक्तों के कर्मों पर (जाँच-पड़ताल कर) उनका लेखा नहीं रखता। सृष्टि का सर्जक प्रभु बच्चों के तुल्य अपने सेवकों को विकारों से बचाए रखता है (उनके विकारों को भुला देता है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे सन्तो ! जो मनुष्य प्रभु का नाम हृदय में स्मरण करता है (उसके बारे में यह सही है कि) वह अपने समस्त गुण सुन्दर बना लेता है। हे नानक ! सतिगुरु ने प्रसन्न होकर (जिसे) नाम की देन प्रदान की, उसे दोबारा कोई दुख संस्पर्श नहीं कर सका ॥२॥२१॥८५॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ हरि मनि तनि वसिआ सोई। जै जैकारु करे सभु कोई। गुर पूरे की वडिआई। ता की कीमति कही न जाई ॥ १ ॥ हउ कुरबानु जाई तेरे नावै। जिसनो बखसि लैहि मेरे पिआरे सो जसु तेरा गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं भारो सुआमी मेरा। संतां भरवासा तेरा। नानक प्रभ सरणाई। मुखि निंदक कै छाई ॥ २ ॥ २२ ॥ ८६ ॥

हे भाई ! जिस मनुष्य के मन-तन में परमात्मा विद्यमान है, प्रत्येक

जीव उसका सत्कार करता है। वाहिगुरु की कृपा का मोल नहीं किया जा सकता ॥ १ ॥ हे मेरे प्यारे प्रभु ! मैं तुम्हारे नाम पर बलिहारी हूँ। तुम जिस पर कृपा करते हो, वह सदा तुम्हारी स्तुति का गीत गाता है ॥१॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम मेरे सर्वोपरि मालिक हो। तुम्हारे सन्तों को तुम्हारा ही अवलम्ब रहता है। हे नानक ! प्रभु की शरण लेनेवाले (मनुष्य के निन्दक के मुख) पर राख पड़ती है अर्थात् निन्दक को स्वयं ही अपमानित होना पड़ता है ॥ २ ॥ २२ ॥ ८६ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु मेरे मीता। पाछे आनदु प्रभि कीता। परमेसुरि बणत बणाई। फिरि डोलत कतहू नाही ॥ १ ॥ साचे साहिब सिउ मनु मानिआ। हरि सरब निरंतरि जानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ जीअ तेरे दइआला। अपने भगत करहि प्रतिपाला। अचरजु तेरी वडिआई। नित नानक नामु धिआई ॥ २ ॥ २३ ॥ ८७ ॥

हे मेरे मित्र ! जिस मनुष्य के आगामी जीवन में प्रभु ने सुख बना दिया है, जिसके विगत जीवन में भी प्रभु-कृपा से सुख बना रहा है, जिस मनुष्य के लिए प्रभु ने ऐसा विधान बनाए रखा है, वह मनुष्य लोक-परलोक में विचलित नहीं होता ॥१॥ हे भाई ! जिस मनुष्य के मन में सत्यस्वरूप मालिक का अडिग विश्वास होता है, वह मनुष्य उस मालिक को सबमें व्याप्त पहचानता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे दया के घर प्रभु ! समस्त जीव तुम्हारे द्वारा उत्पादित हैं, तुम अपने भक्तों की रखवाली आप ही करते हो। तुम आश्चर्यजनक हो। तुम्हारी देन हैरान करनेवाली है। नानक का कथन है कि (प्रभु उस पर कृपालु होता है) जो सदा उसका नाम-स्मरण करता रहता है ॥ २ ॥ २३ ॥ ८७ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ नालि नराइणु मेरै। जम दूतु न आवै नेरै। कंठि लाइ प्रभ राखै। सतिगुर की सचु साखै ॥१॥ गुरि पूरै पूरी कीती। दुसमन मारि विडारे सगले दास कउ सुमति दीती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभि सगले थान वसाए। सुखि सांदि फिरि आए। नानक प्रभ सरणाए। जिनि सगले रोग मिटाए ॥ २ ॥ २४ ॥ ८८ ॥

हे भाई ! प्रभु मेरे अन्तर्मन में अवस्थित है (अब) यमदूत मेरे निकट नहीं आता। जिस मनुष्य को गुरु के द्वारा सत्यस्वरूप हरि-नाम के स्मरण की शिक्षा मिल जाती है, प्रभु उस मनुष्य को अपने गले लगाकर रखता

है ॥ १ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य को पूर्णगुरु ने सफलता प्रदान की, उस मनुष्य के समस्त वैरी प्रभु ने समाप्त कर दिए और उस सेवक को नाम-स्मरण की सुमति भी मिली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (प्रभु का नाम जिन्होंने स्मरण किया) प्रभु ने उनकी ज्ञानेन्द्रियों को आत्मिक गुणों से परिपूरित कर दिया। वे मनुष्य कामादिक विकृतियों से हटकर आत्मिक आनन्द के भोक्ता बन गए। हे नानक ! उस प्रभु की शरण लो, जिसने शरणागतों के सारे रोग दूर कर दिए ॥ २ ॥ २४ ॥ ८८ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ सरब सुखा का दाता सतिगुरु ताकी सरनी पाईऐ। दरसनु भेटत होत अनंदा दूखु गइआ हरि गाईऐ ॥ १ ॥ हरि रसु पीवहु भाई। नामु जपहु नामो आराधहु गुर पूरे की सरनाई ॥ रहाउ ॥ तिसहि परापति जिसु धुरि लिखिआ सोई पूरनु भाई। नानक की बेनंती प्रभ जी नामि रहा लिवलाई ॥ २ ॥ २५ ॥ ८९ ॥

हे भाई ! गुरु सब सुखों का दाता है। उसकी शरण में रहना चाहिए। गुरु का दर्शन करने से आत्मिक आनन्द प्राप्त होता है, प्रत्येक दुख दूर हो जाता है। (इसलिए) प्रभु का गुणगान करना चाहिए ॥१॥ हे भाई ! पूर्णगुरु की शरण लेकर परमात्मा का नाम जपा करो, प्रतिपल उसका नाम-स्मरण किया करो; वह अमृत के समान है, उसका पान करते रहा करो ॥ रहाउ ॥ लेकिन नाम की यह देन उस मनुष्य को ही मिलती है, जिसके भाग्य में परमात्मा के दरबार से इसकी प्राप्ति-सम्भावना लिखी होती है। वही मनुष्य सर्वगुणसम्पन्न हो जाता है। हे प्रभु ! नानक की प्रार्थना है कि मैं भी तुम्हारे नाम-स्मरण में रत रहूँ ॥ २ ॥ २५ ॥ ८९ ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ करन करावन हरि अंतरजामी जन अपुने की राखै। जै जैकारु होतु जग भीतरि सबदु गुरू रसु चाखै ॥ १ ॥ प्रभ जी तेरी ओट गुसाई। तू समरथु सरनि का दाता आठ पहर तुम्ह धिआई ॥ रहाउ ॥ जो जनु भजनु करे प्रभ तेरा तिसै अंदेसा नाही। सतिगुर चरन लगे भउ मिटिआ हरि गुन गाए मन माही ॥ २ ॥ सूख सहज आनंद घनेरे सतिगुर दीआ दिलासा। जिणि घरि आए सोभा सेती पूरन होई आसा ॥ ३ ॥ पूरा गुरु पूरी मति जाकी पूरन प्रभ के कामा। गुर चरनी लागि तरिओ भवसागरु जपि नानक हरि हरि नामा ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९० ॥

हे भाई ! सब कुछ कर सकनेवाला और जीवों से करानेवाला अन्तर्यामी प्रभु अपने सेवक की लाज रखता है। जो सेवक गुरु के शब्द को (आत्मसात् कर) आस्वादन करता है, समस्त संसार में उसकी शोभा होती है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! पृथ्वीपति ! मुझे तुम्हारा ही आश्रय है। तुम सर्वशक्तिमान हो, सबके आश्रयदाता हो। (कृपा करो, ताकि) मैं आठों प्रहर तुम्हें स्मरण करता रहूँ ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य तुम्हारी भक्ति करता है, उसे कोई चिन्ता स्पर्श नहीं कर सकती। जो गुरु के चरण छूता है, उसका प्रत्येक भय मिट जाता है और वह मनुष्य अपने भीतर परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाता रहता है ॥ २ ॥ हे सतिगुरु ! जिस मनुष्य को तुमने बल प्रदान किया, उसके भीतर आत्मिक स्थिरता के अनगिनत सुख और आनन्द पैदा हो जाते हैं। वह मनुष्य (जीवन के खेल में) विजेता होकर जगत में सुशोभित होता और हृदय-घर में स्थिर रहता है। उसकी प्रत्येक आशा पूर्ण हो जाती है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि जो गुरु स्वयं दोषयुक्त नहीं, जिसकी शिक्षा में कोई दोष नहीं, जो पूर्णप्रभु के स्मरण में (प्राणी को) लगाता है, उस गुरु के चरण स्पर्श कर और सदा परमात्मा का नाम जपकर मैं संसार-समुद्र से कुशलपूर्वक पार उतर रहा हूँ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९० ॥

॥ सोरठि महला ५ ॥ भइओ किरपालु दीन दुख भंजनु आपे सभ बिधि थाटी। खिन महि राखि लीओ जनु अपुना गुर पूरै बेड़ी काटी ॥ १ ॥ मेरे मन गुर गोविंदु सद धिआईऐ। सगल कलेस मिटहि इसु तन ते मन चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत जाके सभि कीने प्रभु ऊचा अगम अपारा। साध संगि नानक नामु धिआइआ मुख ऊजल भए दरबारा ॥ २ ॥ २७ ॥ ९१ ॥

हे भाई ! दीनों के दुखों का नाशक प्रभु हमेशा दयालु है। उसने स्वयं ही समस्त योजना बनाई है। उसने हमेशा एकपल मात्र में अपने सेवक का संरक्षण किया है। उसी की कृपा के फलस्वरूप सतिगुरु ने मेरे (दुखों की) ज़ंजीर काट दी ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! सदा गुरु का स्मरण करना चाहिए, प्रभु का नाम-स्मरण करना चाहिए। इस उद्यम से इस देह के सारे दुख-क्लेश मिट जाते हैं और मनोवांछित तृप्ति प्राप्त कर ली जाती है ॥ रहाउ ॥ नानक का कथन है कि सब जीव प्रभु द्वारा उत्पादित हैं, वह प्रभु सर्वोच्च है, वह अगम्य तथा अनन्त है। जिन मनुष्यों ने उस परमात्मा का नाम-स्मरण किया, वे परमात्मा की सेवा में ही रत हो गए ॥ २ ॥ २७ ॥ ९१ ॥

।। सोरठि महला ५ ।। सिमरउ अपुना सांई । दिनसु रैनि सद धिआई । हाथ देइ जिनि राखे । हरि नाम महा रस चाखे ।। १ ।। अपने गुर ऊपरि कुरबानु । भए किरपाल पूरन प्रभ दाते जीअ होए मिहरवान ।। रहाउ ।। नानक जन सरनाई । जिनि पूरन पैज रखाई । सगले दूख मिटाई । सुखु भुंचहु मेरे भाई ।। २ ।। २८ ।। ९२ ।।

हे भाई ! मैं उस पति-प्रभु का नाम-स्मरण करता हूँ, दिन-रात उसका ध्यान करता हूँ, जिसने अपना हाथ देकर उन मनुष्यों को बचा लिया, जिन्होंने परमात्मा के नाम के श्रेष्ठ रस का आस्वादन किया ।। १ ।। हे भाई ! मैं अपने गुरु पर बलिहार जाता हूँ, (जिसके द्वारा) सर्वव्यापक दाता-प्रभु सेवकों पर कृपा करता और समस्त जीवों का संरक्षण करता है ।। रहाउ ।। दास नानक का कथन है कि मेरे भाइयो ! उस परमात्मा की शरण लो, जिसने (विकारों के मुक़ाबले में) प्रतिष्ठा की भली प्रकार रक्षा की और जिसने हमारे सब दुख दूर कर दिए । हे भाइयो ! तुम भी शरण लेकर आनन्द महसूस करो ।। २ ।। २८ ।। ९२ ।।

।। सोरठि महला ५ ।। सुनहु बिनंती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे । राखु पैज नाम अपुने की करनकरावन हारे ।। १ ।। प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे । बुरे भले हम थारे ।।रहाउ।। सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे । पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ।। २ ।। २९ ।। ९३ ।।

हे मेरे ठाकुर, हे सब कुछ करने और कराने की सामर्थ्य रखनेवाले प्रभु ! प्रार्थना सुनो । सब छोटे-बड़े जीव तुम्हारे ही सहारे हैं । तुम अपने नाम की लाज रखो (और सबके बन्धन समाप्त करो) ।। १ ।। हे प्यारे प्रभुजी ! स्वामित्व को पूर्ण करनेवाला दायित्व निभाओ । हम भले हैं अथवा बुरे, सब तुम्हारे ही हैं ।। रहाउ ।। नानक का कथन है कि जिनकी पुकार सर्वशक्तिमान प्रभु ने सुन ली, उनके बन्धन समाप्त कर प्रभु ने उनके जीवन सुन्दर बना दिए । उन सब दासों को सम्मानित कर अपने चरणों में जगह दे दी और विश्व में प्रतिष्ठित कर दिया ।। २ ।। २९ ।। ९३ ।।

।। सोरठि महला ५ ।। जीअ जंत सभि वसि करि दीने सेवक सभि दरबारे । अंगीकारु कीओ प्रभ अपुने भवनिधि पारि उतारे ।। १ ।। संतन के कारज सगल सवारे । दीन दइआल क्रिपाल क्रिपा निधि पूरन खसम हमारे ।। रहाउ ।। आउ बैठु

आदरु सभ थाई ऊन न कतहूं बाता। भगति सिरपाउ दीओ जन अपुने प्रतापु नानक प्रभ जाता ॥ २ ॥ ३० ॥ ६४ ॥

हे भाई ! प्यारा प्रभु अपने सेवकों को अपने दरबार में आदर-सम्मान देता है और दुनिया के समस्त जीवों को अपना आज्ञाकारी बना लेता है। वह सेवकों का पक्ष लेता है और उन्हें संसार-समुद्र से पार उतारता है ॥१॥ हे भाई ! हमारा स्वामी दीनदयालु है, कृपा का भण्डार है, सर्वशक्तिमान है और सन्तजनों के समस्त कार्य सँवार देता है ॥ रहाउ ॥ नानक का कथन है कि परमात्मा के सन्तों (सेवकों) को सर्वत्र आदर मिलता है, सर्वत्र लोग उनका आदर करते हैं। उन्हें किसी बात की कमी नहीं रहती। परमात्मा अपने सेवकों को भक्ति की सम्मानसूचक देन (सिरोपा) देता है और इस प्रकार प्रभु का तेज-प्रताप विश्व में प्रकट हो जाता है ॥ २ ॥ ३० ॥ ९४ ॥

सोरठि महला ९

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रे मन राम सिउ करि प्रीति। स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि साध संगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत। कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥ १ ॥ आजु कालि फुनि तोहि ग्रसिहै समझि राखउ चीति। कहै नानकु रामु भजि लै जात अउसरु बीति ॥ २ ॥ १ ॥

हे मन ! परमात्मा से प्रीति कर। कानों से उसकी गुणस्तुति सुना कर और जिह्वा से प्रभु की गुणस्तुति के गीत गाया कर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरमुखों की संगति में रहा कर और प्रभु का नाम-स्मरण करते रहा कर। (इस प्रकार) नीच प्राणी भी पवित्र हो जाते हैं। हे मित्र ! (प्रभु का नाम लो क्योंकि) मृत्यु साँप के तुल्य मुँह खोले फिरती है ॥ १ ॥ हे भाई ! अपने हृदय में शीघ्र ही यह समझ लो कि यह मृत्यु शीघ्र ही तुम्हें भी हड़प जाएगी। नानक का कथन है कि (अभी भी समय है) परमात्मा का नाम-स्मरण कर लो (समय टल जाने पर पछतावा होगा), समय बीतता जा रहा है ॥ २ ॥ १ ॥

॥ सोरठि महला ६ ॥ मन की मन ही माहि रही। ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभ मही। अवर सगल

मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ।। १ ।। फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही । नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ।। २ ।। २ ।।

(अभागे जीव के) मन की आशा मन में ही रह गई । न उसने परमात्मा का भजन किया और न ही उसने सन्तों की सेवा की (लेकिन) मृत्यु ने चोटी आ पकड़ी ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! स्त्री, मित्र, पुत्र, गाड़ियाँ, माल-असबाब, धन-पदार्थ, समस्त पृथ्वी —सब कुछ नश्वर समझो । परमात्मा का भजन ही वास्तविक साथी है ।। १ ।। हे भाई ! कई युग भटक-भटककर तू थक गया है, तब कहीं तुझे मनुष्य-शरीर मिला है । नानक का कथन है कि परमात्मा को मिलने का यही रास्ता है, अब भी तू नाम-स्मरण क्यों नहीं करता ? ।। २ ।। २ ।।

।। सोरठि महला ९ ।। मन रे कउनु कुमति तै लीनी । परदारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नही कीनी ।।१।।रहाउ।। मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ । अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ।। १ ।। ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना । घटि ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ।। २ ।। बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई । मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ।। ३ ।। ३ ।।

हे मन ! तूने कैसी ग़लत धारणा बना ली है ? तू पर-नारी और परनिन्दा में मस्त रहता है । तूने परमात्मा की भक्ति नहीं की ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! तूने विकारों से छुटकारा पाने का मार्ग नहीं समझा; तू केवल धन-संग्रह के लिए भाग-दौड़ कर रहा है । लौकिक पदार्थों में से आख़िर किसी ने भी साथ नहीं दिया । तूने व्यर्थ ही स्वयं को मोह में जकड़ा हुआ है ।। १ ।। हे भाई ! न तूने परमात्मा की भक्ति की है, न गुरु की शरण ली है, न ही तेरे भीतर आत्मिक जीवन का ज्ञान है । माया से निर्लिप्त प्रभु तेरे अन्तर्मन में अवस्थित है, लेकिन तू इसे जंगलों में खोज रहा है ।। २ ।। हे भाई ! अनेक जन्मों में भटक-भटककर तूने जीवन-बाज़ी हार दी है । तूने ऐसी सुबुद्धि नहीं अपनाई, जिससे तुझे आत्मिक स्थिरता महसूस हो सके । नानक का कथन है कि गुरु तो यह बात समझाते हैं कि मनुष्य-योनि की ऊँची स्थिति पाकर परमात्मा का भजन करो ।। ३ ।। ३ ।।

।। सोरठि महला ९ ।। मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ।

जिह सिमरत गनका सी उधरी ताको जसु उरधारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अटल भइओ ध्रूअ जाकै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ । दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥ १ ॥ जब ही सरनि गही किरपानिधि गज गराह ते छूटा । महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥ २ ॥ अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा । नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥ ३ ॥ ४ ॥

हे मन ! परमात्मा का शरणागत होकर उसका स्मरण किया करो । जिस प्रभु का भजन करते हुए गणिका मुक्त हो गई थी । तुम भी उसकी गुणस्तुति में लीन रहो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस प्रभु के स्मरण द्वारा ध्रुव को अटल पद की प्राप्ति हुई थी और उसने निर्भयता का अलौकिक स्थान प्राप्त कर लिया था, तूने क्यों उस प्रभु को विस्मृत किया है, वही तो इस प्रकार के दुखों का विनाशक है ॥१॥ हे भाई! कृपा-सागर परमात्मा का अवलम्ब लेकर ही वह हाथी मगरमच्छ की पकड़ से बच गया था । मैं कहाँ तक प्रभु के नाम की प्रशंसा करूँ ? परमात्मा के नाम-स्मरण से उस हाथी के बन्धन टूट गए थे ॥ २ ॥ हे भाई ! सारी दुनिया जानती है कि अजामिल वासनाओं में लिप्त था (लेकिन प्रभु-कृपा से) पल भर में उसका उद्धार हो गया था । नानक का कथन है कि मनोकामनाएँ पूरित करनेवाले परमात्मा का नाम-स्मरण किया कर । तू भी संसार-समुद्र से पार उतर जाएगा ॥ ३ ॥ ४ ॥

॥ सोरठि महला ९ ॥ प्रानी कउनु उपाउ करै । जाते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई । कउनु नामु गुर जाकै सिमरै भवसागर कउ तरई ॥ १ ॥ कल मै एकु नामु किरपानिधि जाहि जपै गति पावै । अउर धरम ताकै समि नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥ २ ॥ सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जाकउ कहत गुसाई । सो तुमही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥ ३ ॥ ५ ॥

मनुष्य कौन सा प्रयत्न करे, जिससे परमात्मा की भक्ति प्राप्त हो सके और यम का भय दूर हो सके ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बताओ, वे कौन से कर्म हैं, वह कौन सी विद्या है, वह कौन सा धर्म है, वह कौन सा नाम (गुरु द्वारा बतलाया हुआ) है, जिसका स्मरण करने से मनुष्य संसार-समुद्र

से पार हो सकता है ? ॥१॥ कृपा के भण्डार परमात्मा का नाम ही जगत में है, जिसे स्मरण करनेवाला ऊँची आत्मिक स्थिति को प्राप्त कर लेता है। दूसरा कोई धर्म-कर्म उस नाम के बराबर नहीं है —वेद के अनुसार भी यही समीचीन युक्ति है ॥ २ ॥ नानक का कथन है कि जिसे जगत पृथ्वीपति कहता है, वह सुखों-दुखों से निर्लिप्त रहता है, वह हमेशा निर्लेप रहता है। वह तुम्हारे भीतर भी निरन्तर (उसी तरह) विद्यमान है, जैसे शीशे में (प्रतिबिम्ब विद्यमान रहता है) ॥ ३ ॥ ५ ॥

॥ सोरठि महला ९ ॥ माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई। महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥१॥रहाउ॥ सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई। बिखिआ सकत रहिओ निसबासुर नह छूटी अधमाई ॥ १ ॥ साध संगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई। जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥ २ ॥ ६ ॥

हे माँ ! पृथ्वी के प्रभु-पति को मैं किस प्रकार पहचानूँ ? मेरा मन तो बड़े मोह की अज्ञानता में, मोह के अँधेरे में फँसा रहा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैंने अभी तक वह सुमति प्राप्त नहीं की, जो मुझे स्थिर रख सके। दिन-रात मैं माया में ही डूबा रहता हूँ। मेरी यह नीचता समाप्त होने में ही नहीं आती ॥ १ ॥ हे माँ ! मैंने कभी गुरमुखों का सान्निध्य नहीं किया, मैंने कभी परमात्मा की स्तुति का गीत नहीं गाया। दास नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मेरे भीतर कोई गुण नहीं है। कृपा करके मुझे अपनी शरण में ले लो ॥ २ ॥ ६ ॥

॥ सोरठि महला ९ ॥ माई मनु मेरो बसि नाहि। निसबासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥ १ ॥ रहाउ॥ बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै। परधन परदारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै ॥ १ ॥ मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना। घट ही भीतरि बसत निरंजनु ताको मरमु न जाना॥ २॥ जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी। तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥ ३ ॥ ७ ॥

हे माँ ! मेरा मन अनियंत्रित है। रात-दिन पदार्थों की खातिर दौड़ता फिरता है। मैं इसे किस प्रकार रोकूँ ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यह जीव पुराणों, स्मृतियों का उपदेश सुनकर पल भल के लिए भी (उस उपदेश को) हृदय में नहीं टिकाता। पराए धन, पर-नारी के मोह में मस्त रहता

है (और इस प्रकार) अपना जन्म व्यर्थ गवाँता है ।। १ ।। जीव माया के नशे में उन्मत्त हो रहा है, आत्मिक जीवन के बारे में इसे कोई ज्ञान नहीं। माया से निर्लिप्त प्रभु इसके हृदय में ही अवस्थित है, लेकिन उसका रहस्य यह जीव नहीं समझता ।। २ ।। जब जीव गुरु की शरण लेता है, तब इसकी समस्त दुर्बुद्धि नष्ट हो जाती है। तब, हे नानक! यह समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण करनेवाले परमात्मा को स्मरण करता है और इसकी यमराज की फाँसी भी काट दी जाती है ।। ३ ।। ७ ।।

।। सोरठि महला ९ ।। रे नर इह साची जीअ धारि। सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ।। १ ।। रहाउ ।। बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि। तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ।। १ ।। अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि। कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ।। २ ।। ८ ।।

हे मन! अपने भीतर इस बात को निश्चित मान लो कि सारा संसार स्वप्नवत है। इसके नष्ट होने में देर नहीं लगती ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई! जैसे किसी ने रेत की दीवार बनाकर, पोतकर तैयार की हो, लेकिन वह चार दिन भी टिकी नहीं रह सकती। माया के सुख भी रेत की दीवार के तुल्य ही हैं। हे मूर्ख! तू इन सुखों में क्यों संलग्न हो रहा है? ।। १ ।। हे भाई! अभी भी समझ ले, (अभी) कुछ नहीं बिगड़ा। परमात्मा का नाम स्मरण किया कर। नानक का कथन है कि यही गुरमुखों का निजी अनुभव है ।। २ ।। ८ ।।

।। सोरठि महला ९ ।। इह जगि मीतु न देखिओ कोई। सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ।।१।।रहाउ।। दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे। जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ।। १ ।। कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ। दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ताको बिसराइओ ।। २ ।। सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ। नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ।। ३ ।। ९ ।।

हे भाई! इस जगत में कोई सच्चा मित्र नहीं है। सारा संसार अपने सुख में लीन है, दुख में कोई किसी का साथी नहीं बनता ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई! स्त्री, पुत्र, मित्र, रिश्तेदार —ये सब धन से प्रेम करते

हैं, ज्योंही इन्होंने मनुष्य को कंगाल देखा (तो ये) साथ छोड़कर भाग जाते हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! मैं इस पागल मन को क्या समझाऊँ ? इसने इन (झूठे मित्रों के) साथ प्रेम किया है। जो प्रभु ग़रीबों का रक्षक और भयनाशक है, उसकी स्तुति भुला रखी है ॥ २ ॥ हे भाई ! जैसे कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं होती (उसी प्रकार मन लौकिक वासनाओं से अलग नहीं होता), मैंने बहुत प्रयास किया है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! अपने विरद की लाज रख (मुझ पर कृपा कर तभी) मैं नाम-स्मरण कर सकता हूँ ॥ ३ ॥ ९ ॥

॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे गहिओ न गुरु उपदेसु । कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साच छाडि कै झूठह लागिओ जनमु अकारथु खोइओ । करि परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ ॥ १ ॥ राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना । उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥ २ ॥ रहिओ अचेत न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी । कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥ ३ ॥ १० ॥

हे मन ! तू गुरु की शिक्षा का अनुसरण नहीं करता। यदि तूने सिर मुँड़ा लिया और भगवे रंग के कपड़े पहन लिये तो भी क्या है ? (बाहरी दिखावे से प्रभु प्रसन्न नहीं होते) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू सत्यस्वरूप प्रभु का नाम त्यागकर नश्वर पदार्थों में ही वृत्ति जोड़े रहता है। लोगों के साथ छल करके अपना पेट पालता रहा और पशुओं के तुल्य सोता है ॥ १ ॥ हे भाई ! मनुष्य परमात्मा के भजन की युक्ति नहीं समझता, (वह) माया के हाथ बिका हुआ है। मूर्ख मनुष्य भौतिक पदार्थों (की चाह) में लीन रहता है और प्रभु के श्रेष्ठ नाम-रत्न की उपेक्षा करता है ॥ २ ॥ (मनुष्य माया में ग्रस्त हो) असावधान रहता है, परमात्मा को स्मरण तक नहीं करता और सारी उम्र व्यर्थ बिता लेता है। नानक की विनती है कि हे हरि ! तुम अपने विरद को स्मरण करो, (इनकी रक्षा करो, अपने में तो) ये जीव सदैव (मायाग्रस्त हो) पथविचलित ही रहते हैं ॥ ३ ॥ १० ॥

॥ सोरठि महला ९ ॥ जो नरु दुख मै दुखु नही मानै । सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना । हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥ १ ॥ आसा मनसा

सगल तिआगै जग ते रहै निरासा । कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥ २ ॥ गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी । नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥ ३ ॥ ११ ॥

हे भाई ! जो मनुष्य दुखों में घबराता नहीं, जिसके हृदय में सुखों के प्रति मोह नहीं, किसी प्रकार का भय नहीं और जो सोने को मिट्टीतुल्य समझता है (वही परमात्मा को अपने भीतर महसूसता है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य के भीतर किसी की निन्दा-चुग़ली नहीं, ख़ुशामद नहीं, लोभ, मोह और अहंकार नहीं है; जो मनुष्य सुख और दुख से निर्लिप्त रहता है, जिसे आदर-अनादर स्पर्श नहीं करते (वही प्रभु को अपने भीतर महसूस करता है) ॥ १ ॥ जो मनुष्य आशाओं और उम्मीदों को त्याग देता है, जगत से निर्लिप्त रहता है, जिसे न कामवासना स्पर्श कर सकती है, न क्रोध स्पर्श कर सकता है, उस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का निवास हो जाता है ॥ २ ॥ नानक का कथन है कि जिस मनुष्य पर गुरु ने कृपा की, उसने ही जीवन की सही जाँच की है । वह मनुष्य प्रभु से इस प्रकार ऐक्य प्राप्त कर लेता है जैसे पानी, पानी से मिल जाता है ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ सोरठि महला ९ ॥ प्रीतम जानि लेहु मन माही । अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥१॥रहाउ॥ सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै । बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥ १ ॥ घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी । जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥ २ ॥ इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ । अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥ ३ ॥ १२ ॥ १३९ ॥

हे मित्र ! मन में यह बात निश्चित समझ लो कि सारा संसार अपने सुख के साथ बँधा है । कोई भी किसी का साथी नहीं बनता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मित्र ! सुख के दिनों में कितने ही दोस्त-मित्र मिलकर बैठते हैं और सम्पन्न व्यक्ति को चारों ओर से घेरे रखते हैं; किन्तु जब उस पर मुसीबत पड़ती है तो सब साथ छोड़ जाते हैं, कोई भी उसके निकट नहीं आता ॥१॥ हे मित्र ! पत्नी (भी), जिसके साथ असीम नेह होता है, जो सदा पति के साथ लगी रहती है; (वह भी) जिस वक्त जीवात्मा इसे (शरीर को) छोड़ जाता है, पत्नी इससे परे हट जाती है (कि यह मर चुका है) ॥ २ ॥ नानक का कथन है कि यह दुनिया का यही व्यवहार है, इसी के साथ मनुष्य

का लगाव है। लेकिन, हे मित्र! अन्तिम समय में परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई सहायक नहीं होता ॥ ३ ॥ १२ ॥ १३९ ॥

सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई। त्रिसना राचि न पर घरि जावा त्रिसना नामि बुझाई। घर भीतरि घरु गुरू दिखाइआ सहजि रते मन भाई। तू आपे दाना आपे बीना तू देवहि मति साई ॥ १ ॥ मनु बैरागि रतउ बैरागी सबदि मनु बेधिआ मेरी माई। अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई ॥ रहाउ ॥ असंख बैरागी कहहि बैराग सो बैरागी जि खसमै भावै। हिरदै सबदि सदा भै रचिआ गुर की कार कमावै। एको चेतै मनूआ न डोलै धावतु वरजि रहावै। सहजे माता सदा रंगि राता साचे के गुण गावै ॥ २ ॥ मनूआ पउणु बिंदु सुखवासी नामि वसै सुख भाई। जिहबा नेत्र सोत्र सचि राते जलि बूझी तुझहि बुझाई। आस निरास रहै बैरागी निज घरि ताड़ी लाई। भिखिआ नामि रजे संतोखी अंम्रितु सहजि पीआई ॥ ३ ॥ दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई। सभु जगु तेरा तू एको दाता अवरु न दूजा भाई। मनमुखि जंत दुखि सदा निवासी गुरमुखि दे वडिआई। अपर अपार अगंम अगोचर कहणै कीम न पाई ॥ ४ ॥ सुंन समाधि महा परमारथु तीनि भवण पति नामं। मसतकि लेखु जीआ जगि जोनी सिरि सिरि लेखु सहामं। करम सुकरम कराए आपे आपे भगति द्रिड़ामं। मनि मुखि जूठि लहै भै मानं आपे गिआनु अगामं ॥ ५ ॥ जिन चाखिआ सेई सादु जाणनि जिउ गुंगे मिठिआई। अकथै का किआ कथीऐ भाई चालउ सदा रजाई। गुरु दाता मेले ता मति होवै निगुरे मति न काई। जिउ चलाए तिउ चालह भाई होर किआ को करे चतुराई ॥ ६ ॥ इकि भरमि भुलाए इकि भगती राते तेरा खेलु अपारा। जितु तुधु लाए तेहा फलु पाइआ तू हुकमि चलावणहारा। सेवा करी जे

किछु होवै अपणा जीउ पिंडु तुमारा। सतिगुरि मिलिऐ किरपा कीनी अंम्रित नामु अधारा ॥ ७ ॥ गगनंतरि वासिआ गुण परगासिआ गुण महि गिआन धिआनं। नामु मनि भावै कहै कहावै ततो ततु वखानं। सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं। पूरा बैरागी सहजि सुभागी सचु नानक मनु मानं ॥ ८ ॥ १ ॥

मुझे परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे सहारे की खोज नहीं, मैं उस प्रभु के बिना किसी दूसरे को नहीं पूजता, मैं कहीं क़ब्रिस्तान तथा श्मशानों में नहीं जाता। माया की तृष्णा में फँसकर मैं किसी दूसरे घर में नहीं जाता, मेरी (माया सम्बन्धी) तृष्णा परमात्मा के नाम ने मिटा दी है। गुरु ने मेरे हृदय में ही परमात्मा दरशा दिया है और स्थिर अवस्था में अनुरक्त मेरे मन को वह सहजावस्था भली लग रही है। हे मेरे स्वामी! तुम अन्तर्यामी हो, सर्वज्ञाता हो और तुम ही सुमति के प्रदाता हो ॥ १ ॥ हे मेरी माता! मेरा मन गुरु के शब्द में रम गया है। वही मनुष्य त्यागी है, जिसका मन परमात्मा के विरह-रंग में रँगा हुआ है। उस वैरागी के भीतर प्रभु की ज्योति प्रज्वलित होती है, वह निरन्तर प्रभु-गुणगान में मस्त रहता है, सत्यस्वरूप मालिक-प्रभु के चरणों में उसकी सुरति लगी रहती है ॥ रहाउ ॥ अनेक वैरागी वैराग्य की बातें करते हैं, लेकिन असली वैराग्य वह है जो पति-प्रभु को प्यारा लगता है। वह गुरु के ज्ञान के द्वारा अपने हृदय में (परमात्मा को) स्मरण करता है और सदा परमात्मा के भय में मस्त रहकर गुरु द्वारा बतलाई सेवा (कामकाज) करता है। वह वैरागी केवल परमात्मा को स्मरण करता है, जिससे उसका मन माया की ओर प्रवृत्त नहीं होता। वह वैरागी माया की ओर ललकते मन को रोककर प्रभु-चरणों में लगाए रखता है। स्थिर अवस्था में मस्त वह वैरागी सदा प्रभु के नाम-रंग में रँगा रहता है और सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति करता है ॥ २ ॥ हे भाई! जिसका चंचल मन तनिक भी आत्मिक आनन्द में टिकानेवाले नाम में स्थिर होता है, वह (असली वैरागी है और) आत्मिक आनन्द महसूसता है। हे प्रभु! तूने स्वयं सही रास्ते का ज्ञान दिया है, जिससे (उसकी) तृष्णा की अग्नि बुझ गई है और उसकी जिह्वा, उसकी आँखें, इन्द्रियाँ सत्यस्वरूप हरि-नाम में अनुरक्त रहते हैं। वह वैरागी दुनियावी इच्छाओं से निर्लिप्त होकर जीवन व्यतीत करता है। वह (लौकिक घर-बार से निर्लिप्त होकर) उस घर में सुरति लगाए रखता है, जो सचमुच ही स्थायी रूप से उसका है। ऐसे वैरागी गुरु के द्वार से मिली नाम-भिक्षा से तृप्त रहते हैं, संतोषी बने रहते हैं। उन्हें गुरु ने स्थिर आत्मिक अवस्था में टिकाकर आत्मिक जीवन का दाता नाम-रस

पान करा दिया है ।। ३ ।। जब तक थोड़ी बहुत भी कोई दूसरी चाह है, किसी दूसरे सहारे की खोज है, तब तक विरह-अवस्था पैदा नहीं हो सकती। इस प्रकार के विरह की देन देनेवाले एक तुम ही हो, तुम्हारे अतिरिक्त कोई दूसरा दानी नहीं है और यह सारा जगत तुम्हारा अपना ही है। स्वेच्छाचारी मनुष्य सदा दुख में ही रहते हैं। जो व्यक्ति गुरु की शरण लेते हैं, उन्हें प्रभु आदर-सम्मान देता है। उस अनन्त, अगम्य और अगोचर प्रभु की क़ीमत अव्यक्त है ।। ४ ।। परमात्मा एक ऐसी आत्मिक अवस्था का मालिक है कि उस पर माया के प्रपंच प्रभाव नहीं कर सकते, वह तीनों भुवनों का स्वामी है, उसका नाम जीवों के लिए उत्तम धन है। विश्व में जितने भी जीव जन्म लेते हैं, उनके मस्तक पर कर्मानुसार लेख (भाग्य) लिखा जाता है। प्रत्येक जीव को अपने-अपने मस्तक पर लिखा लेख भोगना पड़ता है। प्रभु आप ही साधारण और श्रेष्ठ कर्म जीवों से कराता है, आप ही जीवों के हृदय में भक्ति दृढ़ करता है। अगम्य प्रभु स्वेच्छा से जीवों को आध्यात्मिक मिलन प्रदान करता है। सच्चा वैरागी प्रभु के भय तथा सम्मान में रहता है, उसके मन और वाणी (विकारों के मैल से) मुक्त हो जाते हैं ।। ५ ।। जिन मनुष्यों ने नाम-रस चखा है, उसका स्वाद केवल वे ही जानते हैं (कह नहीं सकते), जैसे गूँगा मनुष्य मिठाई का स्वाद चखता है, किन्तु कह न सकने के कारण दूसरे को बता नहीं सकता। हे भाई! नाम-रस अकथ्य है, व्यक्त नहीं किया जा सकता। (मैं चाहता हूँ कि) मैं उस मालिक-प्रभु की इच्छा में चलूँ। लेकिन प्रभु की रज़ा में प्रवृत्त होने की समझ भी तभी आती है, जब गुरु उस दाता-प्रभु के साथ-मिला दे। जो व्यक्ति गुरु की शरण नहीं लेता, उसे यह समझ तनिक भी नहीं आती। हे भाई! कोई आदमी अपनी चतुराई का अहंकार नहीं कर सकता। जैसे-जैसे प्रभु हम जीवों को चलाता है, वैसे-वैसे ही हम आचरण करते हैं ।। ६ ।। हे अपार प्रभु! अनेक जीव दुबिधाग्रस्त होकर कुमार्गगामी हैं, अनेक जीव तुम्हारी भक्ति के रंग में रँगे हुए हैं —यह सब तुम्हारा खेल है। जिस ओर तुमने जीवों को लगाया है, वैसा ही फल जीव भोग रहे हैं। तुम सब जीवों को अपने हुक्म अनुसार चलाने के योग्य हो। यदि कोई चीज़ मेरी अपनी हो, तो शायद मैं यह कहने का गौरव महसूस कर सकूँ कि मैं तुम्हारी सेवा कर रहा हूँ। लेकिन मेरी यह आत्मा तुम्हारी ही दी हुई है और मेरा शरीर भी तुम्हारा दिया हुआ है। यदि गुरु मिल जाए और वह कृपा कर दे, तो आत्मिक जीवन देनेवाले तुम्हारे नाम का रहस्य मेरा सम्बल बन सकता है ।। ७ ।। हे नानक! जो मनुष्य सदा उच्च आत्मिक स्थिति में टिका रहता है, उसके भीतर आत्मिक गुण प्रकट होते हैं, आत्मिक गुणों के साथ वह मेल किए रहता है, आत्मिक गुणों में ही उसकी सुरति (आत्मा की स्थिरता) लगी रहती है। उसके

मन को परमात्मा का नाम प्यारा लगता है, वह स्वयं नाम-स्मरण करता है और दूसरों को भी प्रेरित करता है। वह हमेशा जगत के मूल प्रभु की ही गुणस्तुति करता है। गुरु-पीर के शब्द को ग्रहण कर वह विशालचित्त हो जाता है। लेकिन गुरु के ज्ञान की उपेक्षा करके जगत (माया-मोह में) उन्मत्त हुआ फिरता है। वह पूर्णत्यागी मनुष्य स्थिर आत्मिक अवस्था में टिककर भाग्यशाली बन जाता है और उसका हृदय सत्यस्वरूप प्रभु के (नाम-स्मरण को जीवन-लक्ष्य) स्वीकारता है ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ सोरठि महला १ तितुकी ॥ आसा मनसा बंधनी भाई करम धरम बंधकारी। पापि पुंनि जगु जाइआ भाई बिनसै नामु विसारी। इह माइआ जगि मोहणी भाई करम सभे वेकारी ॥१॥ सुणि पंडित करमाकारी। जितु करमि सुखु ऊपजै भाई सु आतम ततु बीचारी ॥ रहाउ ॥ सासतु बेदु बकै खड़ो भाई करम करहु संसारी। पाखंडि मैलु न चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी। इन बिधि डूबी माकुरी भाई ऊंडो सिर कै भारी ॥२॥ दुरमति घणी विगूती भाई दूजै भाइ खुआई। बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै भरमु न जाई। सतिगुरु सेवे ता सुखु पाए भाई आवणु जाणु रहाई ॥ ३ ॥ साचु सहजु गुर ते ऊपजै भाई मनु निरमलु साचि समाई। गुरु सेवे सो बूझै भाई गुर बिनु मगु न पाई। जिसु अंतरि लोभु कि करम कमावै भाई कूड़ु बोलि बिखु खाई ॥ ४ ॥ पंडित दही विलोईऐ भाई विचहु निकलै तथु। जलु मथीऐ जलु देखीऐ भाई इहु जगु एहा वथु। गुर बिनु भरमि विगूचीऐ भाई घटि घटि देउ अलखु ॥ ५ ॥ इहु जगु तागो सूत को भाई दहदिस बाधो माइ। बिनु गुर गाठि न छूटई भाई थाके करम कमाइ। इहु जगु भरमि भुलाइआ भाई कहणा किछू न जाइ ॥ ६ ॥ गुर मिलिऐ भउ मनि वसै भाई भै मरणा सचु लेखु। मजनु दानु चंगिआईआ भाई दरगह नामु विसेखु। गुरु अंकसु जिनि नामु द्रिड़ाइआ भाई मनि वसिआ चूका भेखु ॥ ७ ॥ इहु तनु हाटु सराफ को भाई वखरु नामु अपारु। इहु वखरु वापारी सो द्रिड़ै भाई गुर सबदि करे वीचारु। धनु वापारी नानका भाई मेलि करे वापारु ॥८॥२॥

हे भाई! सांसारिक आशाओं, आकांक्षाओं के ये स्वप्न माया-मोह में बाँधनेवाले हैं। ये धार्मिक कर्म माया के बन्धन उपजाते हैं। हे भाई!

पाप और पुण्य के फलस्वरूप जगत जन्मता है और प्रभु-नाम की विस्मृति में ही मृत्यु को प्राप्त करता है। हे भाई! यह माया जगत में जीवों को मोहित करने का कार्य करती है। ये सारे धार्मिक कर्म व्यर्थ हो जाते हैं ॥ १ ॥ कर्मकाण्ड में विश्वास रखनेवाले पंडित! सुन। आत्मिक जीवन देनेवाले जगत-मूल प्रभु के गुणों को अपने मस्तिष्क में स्थिर करने से ही आत्मिक आनन्द मिलता है ॥ रहाउ ॥ हे पंडितजी! तुम वेद-शास्त्र (धार्मिक पुस्तकें) तो खोलकर पढ़ते-पढ़ाते हो, लेकिन स्वयं वही कर्म करते हो जो माया-मोह में फँसाए रखें। हे पंडित! इस पाखण्ड के साथ मन का मैल दूर नहीं हो सकता, विकारों का मैल मन के भीतर बना रहता है। इस प्रकार तो मकड़ी भी (जाला बुनकर और तदुपरान्त उसी जाले में फँसकर) उलटी सिर के बल होकर मरती है ॥ २ ॥ हे भाई! दुर्बुद्धि के कारण अनगिनत दुनिया दुखी हो रही है, परमात्मा को विस्मृत कर दूसरों के मोह में पथविचलित हुई है। परमात्मा का नाम गुरु के बिना नहीं मिल सकता और प्रभु के नाम के बिना मन की दुबिधा दूर नहीं होती। जब मनुष्य गुरु की सेवा करता है, तब आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है और अपना जन्म-मरण का चक्र समाप्त कर लेता है ॥ ३ ॥ हे पंडित! गुरु की शरण लेकर आध्यात्मिक स्थिरता पैदा होती है और इस प्रकार पवित्र हुआ मन सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन हो जाता है। गुरु-आदेशानुसार आचरण करनेवाला मनुष्य ही सत्य को समझता है; गुरु के बिना यह रास्ता नहीं मिलता। जिस मनुष्य के मन में लोभ प्रबल हो, उसे परम्पराबद्ध काम करने का कोई लाभ नहीं हो सकता। माया की खातिर झूठ बोल-बोलकर वह मनुष्य (मिथ्या की) जहर खाता रहता है ॥ ४ ॥ हे पंडित! यदि दही का मन्थन करें तो उसमें से मक्खन निकलता है, लेकिन यदि पानी का मन्थन करें तो पानी ही देखने में आता है। (मायाग्रस्त) जगत यह पानी ही प्राप्त करता है। हे भाई! गुरु की शरण लिये बिना मनुष्य दुबिधा में ही दुखी होता रहता है और घट-घट में व्यापक अलक्ष्य परमात्मा से अलग रहता है ॥ ५ ॥ हे भाई! यह जगत सूत का धागा है, जिसमें दसों दिशाओं में मोह की गाँठें बँधी हुई हैं। अनेक जीव धार्मिक कर्मकाण्ड कर-करके हार गए, लेकिन गुरु की शरण लिये बिना मोह की गाँठ खुलती नहीं। यह जगत मोह की दुबिधा में इतना पथविचलित है कि व्यक्त नहीं किया जा सकता ॥ ६ ॥ हे पंडित! यदि गुरु मिल जाए तो प्रभु का भय तथा सम्मान मन में टिक जाता है, उसी में रहकर मोह की ओर से मरना ऐसा लेखा है (जो जीव को अटल जीवन देता है)। हे भाई! तीर्थ-स्नान, दान-पुण्य और दूसरी विशेषताएँ परमात्मा का नाम ही हैं, परमात्मा के नाम को ही उसकी सेवा में स्वीकृति मिलती है। गुरु का शब्द ही अंकुश है, उसने ही परमात्मा का

नाम मनुष्य को दृढ़ कराया है। गुरु की कृपा से जब नाम मन में बस जाता है तो धार्मिक दिखावा समाप्त हो जाता है ॥ ७ ॥ हे भाई ! यह मनुष्य-शरीर परमात्मा-सर्राफ़ का दिया हुआ एक हाट है, जिसमें अक्षुण्ण नाम रूपी सौदा करना है। वही जीव-व्यापारी दृढ़ता के साथ नाम के सौदे का व्यापार करता है, जो गुरु के आदेश पर आचरण करता है। हे नानक ! वह जीव-व्यापारी भाग्यशाली है, जो सत्संगति में रहकर यह व्यापार करता है ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ सोरठि महला १ ॥ जिन्ही सतिगुरु सेविआ पिआरे तिन्ह के साथ तरे। तिन्हा ठाक न पाईऐ पिआरे अंम्रित रसन हरे। बूडे भारे भै बिना पिआरे तारे नदरि करे ॥ १ ॥ भी तूहै सालाहणा पिआरे भी तेरी सालाह। विणु बोहिथ भै डुबीऐ पिआरे कंधी पाइ कहाह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सालाही सालाहणा पिआरे दूजा अवरु न कोइ। मेरे प्रभ सालाहनि से भले पिआरे सबदि रते रंगु होइ। तिस की संगति जे मिलै पिआरे रसु लै ततु विलोइ ॥ २ ॥ पति परवाना साच का पिआरे नामु सचा नीसाणु। आइआ लिखि लै जावणा पिआरे हुकमी हुकमु पछाणु। गुर बिनु हुकमु न बूझीऐ पिआरे साचे साचा ताणु ॥ ३ ॥ हुकमै अंदरि निंमिआ पिआरे हुकमै उदर मझारि। हुकमै अंदरि जंमिआ पिआरे ऊधउ सिर कै भारि। गुरमुखि दरगह जाणीऐ पिआरे चलै कारज सारि ॥ ४ ॥ हुकमै अंदरि आइआ पिआरे हुकमे जादो जाइ। हुकमे बंन्हि चलाईऐ पिआरे मनमुखि लहै सजाइ। हुकमे सबदि पछाणीऐ पिआरे दरगह पैधा जाइ ॥ ५ ॥ हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोइ। हुकमे भवै भवाईऐ पिआरे अवगणि मुठी रोइ। हुकमु सिजापै साह का पिआरे सचु मिलै वडिआई होइ ॥ ६ ॥ आखणि अउखा आखीऐ पिआरे किउ सुणीऐ सचु नाउ। जिन्ही सो सालाहिआ पिआरे हउ तिन्ह बलिहारै जाउ। नाउ मिलै संतोखीआं पिआरे नदरी मेलि मिलाउ ॥ ७ ॥ काइआ कागदु जे थीऐ पिआरे मनु मसवाणी धारि। ललता लेखणि सच की पिआरे हरि गुण लिखहु वीचारि। धनु लेखारी नानका पिआरे साचु लिखै उरिधारि ॥ ८ ॥ ३ ॥

जिन व्यक्तियों ने सतिगुरु का पल्लू पकड़ा है, हे सज्जनो ! उनके संगी-साथी भी पार उतर जाते हैं। जिनकी जिह्वा परमात्मा का नाम-रस चखती है, उनके जीवन-मार्ग में रुकावट नहीं पड़ती। जिन्हें प्रभु का भय तथा सम्मान नहीं है, वे विकारों के बोझ से लदे रहते हैं और संसार-समुद्र में डूब जाते हैं। लेकिन जब परमात्मा कृपादृष्टि करता है तो उन्हें भी पार उतार देता है ॥ १ ॥ हे हरि ! हमेशा तुम्हारी ही सराहना करनी चाहिए (तुम्हारी गुणस्तुति संसार-समुद्र से पार होने के लिए जहाज़ है), इस जहाज़ के बिना जीव भवसागर से पार नहीं हो सकता। कोई भी जीव अपने-आप संसार-समुद्र का दूसरा छोर प्राप्त नहीं कर सकता ॥१॥ रहाउ ॥ हे सज्जनो ! सराहनीय प्रभु की गुणस्तुति करनी चाहिए, वह अप्रतिम है। जो जीव प्यारे प्रभु की गुणस्तुति में लीन रहते हैं, वे सौभाग्यशाली हैं। गुरु के शब्द में तल्लीनता रखनेवाले व्यक्ति को परमात्मा का प्रेम-रंग चढ़ता है। ऐसे व्यक्ति की संगति यदि किसी को प्राप्त हो जाए तो वह भी हरि-नाम का रस लेता है और नाम रूपी दूध का मन्थन कर वह जगत के सम्बल प्रभु रूपी नवनीत को प्राप्त कर लेता है ॥ २ ॥ हे भाई ! सत्यस्वरूप प्रभु का नाम प्रभु-पति को मिलने के लिए चुंगी-कर है। यह नाम सत्यस्वरूप अर्थात् शाश्वत है। जगत में जिस प्राणी ने जन्म लिया है, उसे (नाम रूपी परवाणा) लिखकर अपने साथ ले जाना है। हे भाई ! प्रभु के इस हुक्म को समझो (गुरु की शरण लो क्योंकि) गुरु की शरण लिये बिना प्रभु का हुक्म समझा नहीं जा सकता। हे भाई ! (गुरु-कृपा द्वारा) सत्यस्वरूप प्रभु का शाश्वत बल प्राप्त हो जाता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! जीव परमात्मा के हुक्म अनुसार पहले माता के गर्भ में वास करता है और माँ के पेट में सिर के भार लटककर प्रभु के हुक्म अनुसार ही जन्म लेता है। जो जीव गुरु की शरण लेकर जीवन-मनोरथ सँवारकर यहाँ से जाता है, वह परमात्मा की सेवा में सत्कृत होता है ॥४॥ हे सज्जन ! परमात्मा की रज़ा अनुसार ही जीव जगत में आता है, रज़ा अनुसार ही यहाँ से चला जाता है। जो मनुष्य स्वेच्छाचारी होता है, उसे प्रभु की रज़ा अनुसार बाँधकर यहाँ से भेजा जाता है। परमात्मा की रज़ा अनुसार ही जिसने गुरु के शब्द के द्वारा जीवन-मनोरथ को पहचान लिया है, वह परमात्मा की सेवा में आदर के साथ जाता है ॥ ५ ॥ हे भाई ! परमात्मा की रज़ा के अनुसार ही माया सम्बन्धी कल्पनाएँ की जा रही हैं, प्रभु की रज़ा के अनुसार ही कहीं अहंकार और द्वैतभाव है और प्रभु की इच्छानुसार ही जीव भटक जाता है, कहीं कोई जन्म-मरण के चक्र में पड़ा है और कहीं पाप की ठगी हुई दुनिया अपने दुख रो रही है। जिस मनुष्य को प्रभु की रज़ा समझ में आ जाती है, उसे सत्यस्वरूप प्रभु मिल जाता है,

उसकी लोक-परलोक में प्रशंसा होती है ।।६।। हे भाई ! (माया के प्रभाव के कारण) परमात्मा का सत्यस्वरूप नाम-स्मरण अत्यन्त दुःसाध्य है । मैं उन व्यक्तियों पर बलिहारी हूँ, जिन्होंने प्रभु की गुणस्तुति की है । (मेरी प्रार्थना है कि) मुझे भी नाम मिले और मेरा जीवन संतुष्ट हो जाए, कृपा-दृष्टि वाले प्रभु के चरणों में मैं जगह पाऊँ ।। ७ ।। यदि हमारा शरीर काग़ज़ बन जाए, यदि मन को स्याही की दवात बना लें, यदि हमारी जिह्वा प्रभु की गुणस्तुति लिखने के लिए कलम बन जाए तो, हे भाई ! (कल्याण इसी में है कि) परमात्मा के गुणों को मन में स्थिर करके निरन्तर लिखते चलो । हे नानक ! वह जीव भाग्यशाली है, जो सत्यस्वरूप प्रभु के नाम को हृदय में स्थिर करके अपने भीतर धारण कर लेता है ।। ८ ।। ३ ।।

।। सोरठि महला १ पहिला दुतुकी ।। तू गुणदातौ निरमलो भाई निरमलु ना मनु होइ । हम अपराधी निरगुणे भाई तुझही ते गुणु सोइ ।। १ ।। मेरे प्रीतमा तू करता करि वेखु । हउ पापी पाखंडीआ भाई मनि तनि नाम विसेखु ।। रहाउ ।। बिखु माइआ चितु मोहिआ भाई चतुराई पति खोइ । चित महि ठाकुरु सचि वसै भाई जे गुर गिआनु समोइ ।। २ ।। रूड़ौ रूड़ौ आखीऐ भाई रूड़ौ लाल चलूलु । जे मनु हरि सिउ बैरागीऐ भाई दरि घरि साचु अभूलु ।। ३ ।। पाताली आकासि तू भाई घरि घरि तू गुण गिआनु । गुर मिलिऐ सुखु पाइआ भाई चूका मनहु गुमानु ।। ४ ।। जलि मलि काइआ माजीऐ भाई भी मैला तनु होइ । गिआनि महारसि नाईऐ भाई मनु तनु निरमलु होइ ।। ५ ।। देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि । पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बूडहि तेहि ।। ६ ।। गुर बिनु अलखु न लखीऐ भाई जगु बूडै पति खोइ । मेरे ठाकुर हाथि वडाईआ भाई जै भावै तै देइ ।। ७ ।। बईअरि बोलै मीठुली भाई साचु कहै पिर भाइ । बिरहै बेधी सचि वसी भाई अधिक रही हरि नाइ ।।८।। सभु को आखै आपणा भाई गुर ते बुझै सुजानु । जो बीधे से ऊबरे भाई सबदु सचा नीसानु ।।९।। ईधनु अधिक सकेलीऐ भाई पावकु रंचक पाइ । खिनु पलु नामु रिदै वसै भाई नानक मिलणु सुभाइ ।। १० ।। ४ ।।

हे प्रभु ! तुम जीवों को अपने गुणों की देन देनेवाले हो, तुम पावन-स्वरूप हो । हम जीवों का मन विकृत है । हम पापी और गुणहीन हैं ।

हे प्रभु ! पवित्रता का वह गुण तुम्हारे पास ही प्राप्त हो सकता है ॥ १ ॥ हे प्रियतम ! तुम मेरे कर्तार हो। मुझे उत्पन्न कर तुम ही मेरी रक्षा करते हो। मैं पापी और पाखण्डी हूँ। हे प्यारे ! मेरे तन-मन में अपने नाम की महत्ता प्रकट करो ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! हृदय आत्मिक हत्या करनेवाली माया में ग्रस्त रहता है। चतुराई द्वारा अपनी प्रतिष्ठा गवाँ लेता है। लेकिन यदि गुरु का ज्ञान जीव के मन में स्थिर हो तो उसके मन में प्रभु वास करता है और जीव सत्यस्वरूप प्रभु में लीन रहता है ॥२॥ हे भाई ! परमात्मा सर्वसुन्दर है, उसे मानो प्रेम का गहरा लाल रंग चढ़ा रहता है। उस सुन्दर प्रभु को सदा स्मरण करना चाहिए। यदि जीव का मन उस परमात्मा से प्रेम करे तो, हे भाई ! उसके भीतर हृदय में वह सत्यस्वरूप प्रभु प्रकट हो जाता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! आकाश, पाताल में सर्वत्र तथा हर एक के हृदय में तुम मौजूद हो, अपने गुणों की जान-पहचान तुम स्वयं ही (गुरु द्वारा) कराते हो। यदि सतिगुरु से भेंट हो जाए तो उसे आत्मिक आनन्द प्राप्त हो जाता है और उसके मन से अहंकार दूर हो जाता है ॥ ४ ॥ हे भाई ! यदि पानी से मल-मलकर शरीर को धोएँ तो भी शरीर मैला ही रहता है, लेकिन यदि परमात्मा के ज्ञान, परमात्मा के नाम (-अमृत) में स्नान करें तो मन और तन दोनों पवित्र हो जाते हैं ॥ ५ ॥ हे भाई ! यदि देवी-देवताओं की पत्थर की मूर्तियों की पूजा करें, तो ये कुछ भी नहीं दे सकतीं, मैं इनसे कुछ भी नहीं माँगता। पत्थर को पानी से धोते रहें तो भी वे पानी में डूब ही जाते हैं (अर्थात् सेवक को भी डुबाते हैं) ॥ ६ ॥ परमात्मा का अस्तित्व वर्णन से परे है अर्थात् अव्यक्त है। हे भाई ! गुरु के बिना जगत डूब जाता है और अपनी प्रतिष्ठा गवाँता है। मान-सम्मान सब कुछ परमात्मा के हाथ में है; जो उसे भला लगता है, उसे देता है ॥ ७ ॥ जो जीव-स्त्री, हे भाई ! प्रभु की गुणस्तुति के मीठे वचन बोलती है, सत्यस्वरूप प्रभु का स्मरण करती है, वह प्रभु-पति के प्रेम में लीन रहती है। वह प्रभु-प्रेम में अनुरक्त जीव-स्त्री सत्यस्वरूप प्रभु का स्मरण करती है, बहुत गहराई से प्रभु-प्रेम में डूबकर वह प्रभु-नाम में तल्लीन रहती है ॥ ८ ॥ हे भाई ! प्रत्येक जीव माया-मोह की बातें करता है; लेकिन जो मनुष्य गुरु से जीवन का सही मार्ग समझता है, वह बुद्धिमान हो जाता है। जो लोग परमात्मा के प्रेम में बिंधे रहते हैं, वे (माया-मोह से) बच जाते हैं। गुरु का शब्द उनके पास सदा विद्यमान रहनेवाला परवाना है ॥ ९ ॥ हे भाई ! यदि बहुत सारा ईंधन एकत्रित कर लें और उसमें तनिक सी आग लगा दें (तो वह जलकर राख हो जाता है); इसी प्रकार, हे नानक ! यदि परमात्मा का नाम घड़ी, पल के लिए भी मनुष्य के मन में टिक जाए तो सहज में ही उसका (परमात्मा से) मिलाप हो जाता है ॥ १० ॥ ४ ॥

सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइआ । प्रहिलाद जन तुधु राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारि पचाइआ । गुरमुखा नो परतीति है हरि जीउ मनमुख भरमि भुलाइआ ॥ १ ॥ हरि जी एह तेरी वडिआई । भगता की पैज रखु तू सुआमी भगत तेरी सरणाई ॥ रहाउ ॥ भगता नो जमु जोहि न साकै कालु न नेड़ै जाई । केवल राम नामु मनि वसिआ नामे ही मुकति पाई । रिधि सिधि सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजि सुभाई ॥ २ ॥ मनमुखा नो परतीति न आवी अंतरि लोभ सुआउ । गुरमुखि हिरदै सबदु न भेदिओ हरिनामि न लागा भाउ। कूड़ कपट पाजु लहि जासी मनमुख फीका अलाउ ॥ ३ ॥ भगता विचि आपि वरतदा प्रभ जी भगती हू तू जाता । माइआ मोह सभ लोक है तेरी तू एको पुरखु बिधाता । हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता ॥ ४ ॥ अचिंत कंम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा । गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणहारा । ओना की रीस करे सु विगुचै जिन हरिप्रभु है रखवारा ॥ ५ ॥ बिनु सतिगुर सेवे किनै न पाइआ मनमुखि भउकि मुए बिललाई । आवहि जावहि ठउर न पावहि दुख महि दुखि समाई । गुरमुखि होवै सु अंम्रितु पीवै सहजे साचि समाई ॥ ६ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जनमु न छोडै जे अनेक करम करै अधिकाई । वेद पड़हि तै वाद वखाणहि बिनु हरि पति गवाई । सचा सतिगुरु साची जिसु बाणी भजि छूटहि गुर सरणाई ॥ ७ ॥ जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचै सचिआरा। ओना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइ न मेटणहारा। नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ उरिधारा॥८॥१॥

परमात्मा सदा अपने भक्तों की प्रतिष्ठा की रक्षा करता है, जबसे सृष्टि का जन्म हुआ है तबसे प्रतिष्ठा की रक्षा करता आ रहा है। हे हरि ! प्रह्लाद भक्त जैसे अनेकों सेवकों की तुमने प्रतिष्ठा बचाई है, तुमने हिरण्यकशिपु को समाप्त कर दिया । गुरमुख जीव जानते हैं (कि प्रभु भक्तों के रक्षक हैं), लेकिन स्वेच्छाचारी मनुष्य दुबिधाग्रस्त होकर

कुमार्गगामी हुए रहते हैं ॥ १ ॥ हे हरि, हे स्वामी ! भक्त तुम्हारी शरण में रहते हैं । तुम अपने भक्तों की मर्यादा बनाए रखो । हे हरि ! यह मर्यादा आपकी ही है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! भक्तों को मृत्यु नहीं डरा सकती । मृत्यु का डर भक्तों के निकट नहीं आता । उनके मन में केवल परमात्मा का नाम ही बस सकता है, नाम के प्रभाव से वे मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं । भक्त गुरु द्वारा आत्मिक स्थिरता में, प्रभु-प्रेम में लीन रहते हैं । सब चामत्कारिक शक्तियाँ भक्तों के चरणों में (आश्रय) लेती हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! स्वेच्छाचारी मनुष्यों को परमात्मा में विश्वास नहीं होता, उनके भीतर लोभ से परिपूरित स्वार्थभावना विद्यमान रहती है । गुरु की शरण लेकर भी उनके हृदय में गुरु-प्रदत्त ज्ञान प्रभाव नहीं करता और परमात्मा के नाम में उनका लगाव नहीं होता । मनमुखों के वचन भी नीरस होते हैं, लेकिन उनका मिथ्या और ठगी का भेद प्रकट हो जाता है ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! अपने भक्तों में तुम स्वयं लीन होते हो । तुम्हारे भक्तों ने तुम्हारे साथ अटूट सम्बन्ध बनाए हुए हैं । लेकिन, हे प्रभु ! माया-मोह भी तुम्हारी ही सृजना है, तुम आप ही सर्वव्यापक हो, सृजनहार हो । जिन मनुष्यों ने गुरु-ज्ञान के द्वारा अहंत्व समाप्त कर मन की एषणाएँ भीतर ही नियंत्रित कर दी हैं, उन्होंने तुम्हारे साथ मेल कर लिया है ॥ ४ ॥ हे प्रभु ! जिन्हें तुम्हारा नाम प्यारा लगता है, तुम उनके काम कर देते हो, उन्हें कोई चिन्ता नहीं सताती । हे भाई ! गुरु-कृपा से जिनके मन में परमात्मा हमेशा विद्यमान रहता है, परमात्मा (ही) उनके सब काम सँवार देता है । जिन मनुष्यों का रक्षक परमात्मा आप बनता है, उनका विरोध जो भी मनुष्य करता है वह दुखी होता है ॥ ५ ॥ हे भाई ! गुरु की शरण लिये बिना किसी ने भी परमात्मा का मिलाप प्राप्त नहीं किया । स्वेच्छाचारी मनुष्य व्यर्थ बोल-बोलकर बिलख-बिलखकर आत्मिक मृत्यु के भागी होते हैं । वे सदा जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं, इस चक्र से बचाव के लिए कोई ठिकाना वे प्राप्त नहीं कर सकते (और) दुख में ही समाप्त हो जाते हैं । जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, वह आत्मिक जीवन देनेवाला नामामृत पान करता है (और) आत्मिक स्थिरता के द्वारा सत्यस्वरूप हरि-नाम में लीन रहता है ॥६॥ हे भाई ! गुरु की शरण लिये बिना मनुष्य को जन्मों का चक्र नहीं छोड़ता; वह चाहे कितने ही (धार्मिक कर्मकाण्ड) कर्म करता रहे । पंडित वेद पढ़ते हैं और वाद-विवाद करते हैं (लेकिन सब व्यर्थ, क्योंकि) प्रभु के नाम के बिना उन्होंने प्रभु-द्वार पर अपनी प्रतिष्ठा गवाँ ली है । हे भाई ! गुरु सत्यस्वरूप प्रभु के नाम का उपदेश करनेवाला है, उसकी वाणी भी परमात्मा की गुणस्तुति वाली है । जो मनुष्य तत्परता से गुरु की शरण लेते हैं, वे (आत्मिक मृत्यु से) बच जाते हैं ॥ ७ ॥ हे भाई ! जिन मनुष्यों के मन में परमात्मा आ बसता है,

वे मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर मुक्त हो जाते हैं। उन मनुष्यों की प्रशंसा प्रत्येक युग में होती है, कोई भी उनकी (प्रसिद्धि) को मिटा नहीं सकता। नानक का कथन है कि मैं उन मनुष्यों पर बलिहारी हूँ, जिन्होंने परमात्मा को हृदय में बसा रखा है ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ सोरठि महला ३ दुतुकी ॥ निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ। सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥ १ ॥ हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ। गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ ॥ रहाउ ॥ कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि। भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ॥ २ ॥ मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ। आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ ॥ ३ ॥ हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ। नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥ ४ ॥ गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ। सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ॥ ५ ॥ गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु। प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु आधारु ॥ ६ ॥ जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिनकै हउ लागउ पाइ। जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥ ७ ॥ सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ। नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥ ८ ॥ २ ॥

हे भाई! गुणहीन जीवों को परमात्मा सतिगुरु की सेवा में प्रवृत्त कर आप ही क्षमा कर लेता है। हे भाई! गुरु की शरण-सेवा श्रेष्ठ है, गुरु शरणागत का मन प्रभु के नाम में लगा देता है ॥ १ ॥ हे भाई! हम जीव गुणहीन हैं, विकारी हैं। पूर्णगुरु ने जिन्हें सत्संगति में मिला लिया है, उन्हें प्रभु कृपा करके आप ही अपने चरणों में जगह दे देता है ॥ रहाउ ॥ हे प्यारे! प्रभु ने अनेक दोषियों को गुरु के ज्ञान द्वारा आत्मिक जीवन के विचार में लगाकर क्षमा कर दिया है। हे भाई! गुरु के शब्द रूपी जहाज़ में चढ़ाकर उस परमात्मा ने अनेक जीवों को संसार-समुद्र से पार कर दिया है ॥ २ ॥ हे भाई! जिन मनुष्यों को गुरु के द्वारा प्रभु अपने चरणों में जगह देता है, वे मनुष्य जले हुए लोह से स्वर्ण बन जाते हैं।

हे भाई ! अहंत्वभाव के स्थान पर उनके मन में परमात्मा का नाम आ टिकता है। गुरु उनकी सुरति को प्रभु की ज्योति में मिला देता है ।।३।। हे भाई ! मैं बलिहारी जाता हूँ, मैं गुरु पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ। जिस गुरु ने परमात्मा का नाम-भण्डार दिया है, उस गुरु की शिक्षा लेकर मैं आत्मिक स्थिरता में संलग्न हूँ ।। ४ ।। हे भाई ! आत्मिक जीवन की सूझ वाले मनुष्यों को पूछो। (यह स्पष्ट है कि) गुरु की शरण लिये बिना आत्मिक स्थिरता पदा नहीं हो सकती। (इसलिए) तुम भी अपने भीतर से अहंत्वभाव दूर कर गुरु की सेवा किया करो ।। ५ ।। गुरु की शिक्षा का अनुसरण कर (प्रभु के प्रति) भय-सम्मान का भाव पैदा होता है। मन में परमात्मा का भय-सम्मान उपजाना ही करणीय कर्म है। यही सत्यस्वरूप कर्म है, यही श्रेष्ठ कर्म है। इससे ही परमात्मा के प्रेम का बहुमूल्य धन प्राप्त हो जाता है और परमात्मा का सत्यस्वरूप नाम जीवन का आसरा बन जाता है ।। ६ ।। जो मनुष्य गुरु का आश्रय लेते हैं, उनके चरण स्पर्श करता हूँ। मैं अपना जीवन सुन्दर बना रहा हूँ, मैं अपने समस्त वंश के लिए भी परमात्मा की देन प्राप्त कर रहा हूँ ।। ७ ।। हे भाई ! गुरु की कृपा से सत्यस्वरूप नाम हृदय में अवस्थित हो जाता है, गुणस्तुति की वाणी हृदय में आ टिकती है, परमात्मा का शब्द प्राप्त हो जाता है। नानक का कथन है कि जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम अवस्थित हो जाता है, उसे जीवन-यात्रा में कोई रुकावट नहीं आती ।। ८ ।। २ ।।

।। सोरठि महला ३ ।। हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइ। सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइ ।। १ ।। हरि जी तू आपे रंगु चड़ाइ। गावहु गावहु रंगि रातिहो भाई हरि सेती रंगु लाइ ।। रहाउ ।। गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइ। सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ ।। २ ।। पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि। मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ।। ३ ।। से गावहि जिन मसतकि भागु है भाई भाइ सचै बैरागु। अनदिनु राते गुण रवहि भाई निरभउ गुर लिव लागु ।। ४ ।। सभना मारि जीवालदा भाई सो सेवहु दिनु राति। सो किउ मनहु विसारीऐ भाई जिसदी वडी है दाति ।। ५ ।। मनमुखि मैली डुमणी भाई दरगह नाही थाउ। गुरमुखि होवै त गुण रवै भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ ।। ६ ।। एतु जनमि हरि न चेतिओ भाई किआ मुहु देसी

वे मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर मुक्त हो जाते हैं। उन मनुष्यों की प्रशंसा प्रत्येक युग में होती है, कोई भी उनकी (प्रसिद्धि) को मिटा नहीं सकता। नानक का कथन है कि मैं उन मनुष्यों पर बलिहारी हूँ, जिन्होंने परमात्मा को हृदय में बसा रखा है ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ सोरठि महला ३ दुतुकी ॥ निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ। सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥ १ ॥ हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ। गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ ॥ रहाउ ॥ कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि। भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ॥ २ ॥ मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ। आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ ॥ ३ ॥ हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ। नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥ ४ ॥ गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ। सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ॥५॥ गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु। प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु आधारु ॥ ६ ॥ जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिनकै हउ लागउ पाइ। जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥ ७ ॥ सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ। नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥ ८ ॥ २ ॥

हे भाई! गुणहीन जीवों को परमात्मा सतिगुरु की सेवा में प्रवृत्त कर आप ही क्षमा कर लेता है। हे भाई! गुरु की शरण-सेवा श्रेष्ठ है, गुरु शरणागत का मन प्रभु के नाम में लगा देता है ॥ १ ॥ हे भाई! हम जीव गुणहीन हैं, विकारी हैं। पूर्णगुरु ने जिन्हें सत्संगति में मिला लिया है, उन्हें प्रभु कृपा करके आप ही अपने चरणों में जगह दे देता है ॥ रहाउ ॥ हे प्यारे! प्रभु ने अनेक दोषियों को गुरु के ज्ञान द्वारा आत्मिक जीवन के विचार में लगाकर क्षमा कर दिया है। हे भाई! गुरु के शब्द रूपी जहाज़ में चढ़ाकर उस परमात्मा ने अनेक जीवों को संसार-समुद्र से पार कर दिया है ॥ २ ॥ हे भाई! जिन मनुष्यों को गुरु के द्वारा प्रभु अपने चरणों में जगह देता है, वे मनुष्य जले हुए लोह से स्वर्ण बन जाते हैं।

हे भाई ! अहंत्वभाव के स्थान पर उनके मन में परमात्मा का नाम आ टिकता है। गुरु उनकी सुरति को प्रभु की ज्योति में मिला देता है ॥३॥ हे भाई ! मैं बलिहारी जाता हूँ, मैं गुरु पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ। जिस गुरु ने परमात्मा का नाम-भण्डार दिया है, उस गुरु की शिक्षा लेकर मैं आत्मिक स्थिरता में संलग्न हूँ ॥ ४ ॥ हे भाई ! आत्मिक जीवन की सूझ वाले मनुष्यों को पूछो। (यह स्पष्ट है कि) गुरु की शरण लिये बिना आत्मिक स्थिरता पदा नहीं हो सकती। (इसलिए) तुम भी अपने भीतर से अहंत्वभाव दूर कर गुरु की सेवा किया करो ॥ ५ ॥ गुरु की शिक्षा का अनुसरण कर (प्रभु के प्रति) भय-सम्मान का भाव पैदा होता है। मन में परमात्मा का भय-सम्मान उपजाना ही करणीय कर्म है। यही सत्यस्वरूप कर्म है, यही श्रेष्ठ कर्म है। इससे ही परमात्मा के प्रेम का बहुमूल्य धन प्राप्त हो जाता है और परमात्मा का सत्यस्वरूप नाम जीवन का आसरा बन जाता है ॥ ६ ॥ जो मनुष्य गुरु का आश्रय लेते हैं, उनके चरण स्पर्श करता हूँ। मैं अपना जीवन सुन्दर बना रहा हूँ, मैं अपने समस्त वंश के लिए भी परमात्मा की देन प्राप्त कर रहा हूँ ॥ ७ ॥ हे भाई ! गुरु की कृपा से सत्यस्वरूप नाम हृदय में अवस्थित हो जाता है, गुणस्तुति की वाणी हृदय में आ टिकती है, परमात्मा का शब्द प्राप्त हो जाता है। नानक का कथन है कि जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम अवस्थित हो जाता है, उसे जीवन-यात्रा में कोई रुकावट नहीं आती ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइ। सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइ ॥ १ ॥ हरि जी तू आपे रंगु चड़ाइ। गावहु गावहु रंगि रातिहो भाई हरि सेती रंगु लाइ ॥ रहाउ ॥ गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइ। सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ ॥ २ ॥ पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि। मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥ ३ ॥ से गावहि जिन मसतकि भागु है भाई भाइ सचै बैरागु। अनदिनु राते गुण रवहि भाई निरभउ गुर लिव लागु ॥ ४ ॥ सभना मारि जीवालदा भाई सो सेवहु दिनु राति। सो किउ मनहु विसारीऐ भाई जिसदी वडी है दाति ॥ ५ ॥ मनमुखि मैली डुमणी भाई दरगह नाही थाउ। गुरमुखि होवै त गुण रवै भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ ॥ ६ ॥ एतु जनमि हरि न चेतिओ भाई किआ मुहु देसी

जाइ। किड़ी पवंदी मुहाइओनु भाई बिखिआ नो लोभाइ ॥ ७ ॥ नामु समालहि सुखि वसहि भाई सदा सुखु सांति सरीर। नानक नामु समालि तू भाई अपरंपर गुणी गहीर ॥ ८ ॥ ३ ॥

हे भाई ! गुरु के ज्ञान द्वारा ही प्रभु से जान-पहचान होती है, सौभाग्यवश गुरु जीव को प्रभु से मिला देता है। हे भाई ! प्रभु-पति से प्रेम करनेवाली जीव-स्त्रियाँ सदा आत्मिक सुख भोगती हैं, प्रभु से प्रेम करके वे उसके प्रेम-रंग में रँगी रहती हैं ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम आप ही जीवों पर प्रेम का रंग चढ़ाते हो। हे प्रभु-प्रेम से अनुरक्त भाइयो ! परमात्मा से प्रेम कर उसकी गुणस्तुति के गीत गाते रहा करो ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जो जीव-स्त्री अहंत्वभाव त्यागकर और पूर्णलग्न से गुरु का बताया कामकाज करती है उसके भीतर आत्मिक स्थिरता बनी रहती है, उसे कभी दुख स्पर्श नहीं करता और उसके मन में परमात्मा आप आ बसता है ॥ २ ॥ जो जीव-स्त्री प्रभु-पति की रज़ा (इच्छा) को नहीं समझती, वह अशुभ लक्षणों वाली है, अभागी है। यदि वह दिखावे के ख़ातिर हठपूर्वक कार्य करती है तो भी, हे भाई ! नाम-रहित है, वह झूठ की ही बनजारिन बनी रहती है ॥३॥ जिन मनुष्यों के मस्तक पर भाग्य उदय हो जाता है, वे परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाते हैं, उनके भीतर प्रभु-प्रेम के कारण (माया से) उदासीनता उत्पन्न हो जाती है। हे भाई ! वे प्रभु-प्रेम में रँगे हुए प्रतिपल परमात्मा के गुण गाते हैं, वे भयहीन रहते हैं, उनके भीतर गुरु द्वारा दी हुई प्रभु-चरणों की प्रीति बनी रहती है ॥ ४ ॥ दिन-रात उस परमात्मा की सेवा-भक्ति किया करो, जो सब जीवों को मारता है, जिलाता है। जिस परमात्मा की देन बहुत बड़ी है, उसे मन से विस्मृत नहीं करना चाहिए ॥ ५ ॥ हे भाई ! स्वेच्छाचारी जीव-स्त्री में विकारों का मैल भरा रहता है, उसका मन सदा विचलित रहता है, उसे परमात्मा की सेवा में जगह नहीं मिलती। लेकिन, हे भाई ! जब वह गुरु की शरण में आ जाती है, तब परमात्मा के गुण स्मरण करती है। प्रियतम-प्रभु को मिलकर वह सत्यस्वरूप प्रभु में लीन हो जाती है ॥ ६ ॥ हे भाई ! जिसने इस मनुष्य-जन्म में परमात्मा को स्मरण न किया, वह परलोक में जाकर क्या मुँह दिखावेगा ? हे भाई ! उसने माया के लिए लोभग्रस्त होकर, अन्तरात्मा की पुकार सुनते हुए भी अपना आत्मिक जीवन लुटा लिया ॥ ७ ॥ जो मनुष्य प्रभु का नाम हृदय में लेते हैं, वे आनन्द अनुभव करते हैं और उनकी देह में सुख-शान्ति रहती है। नानक का कथन है कि हे भाई ! तू उस प्रभु का नाम हृदय में स्मरण कर, जो अनन्त है, गुणसम्पन्न और गहनगम्भीर है ॥ ८ ॥ ३ ॥

सोरठि महला ५ घरु १ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। सभु जगु जिनहि उपाइआ भाई करण कारण समरथु । जीउ पिंडु जिनि साजिआ भाई दे करि अपणी वथु । किनि कहीऐ किउ देखीऐ भाई करता एकु अकथु । गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई जिसते जापै तथु ।। १ ।। मेरे मन जपीऐ हरि भगवंता । नाम दानु देइ जन अपने दूख दरद का हंता ।। रहाउ ।। जाकै घरि सभु किछु है भाई नउनिधि भरे भंडार । तिस की कीमति ना पवै भाई ऊचा अगम अपार । जीअ जंत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार । सतिगुरु पूरा भेटीऐ भाई सबदि मिलावणहार ।। २ ।। सचे चरण सरेवीअहि भाई भ्रमु भउ होवै नासु । मिलि संत सभा मनु मांजीऐ भाई हरि कै नामि निवासु । मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगासु । गुरबचनी सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि ।। ३ ।। मेरा तेरा छोडीऐ भाई होईऐ सभ की धूरि । घटि घटि ब्रहमु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि । जितु दिनि विसरै पारब्रहमु भाई तितु दिनि मरीऐ झूरि । करनकरावन समरथो भाई सरब कला भरपूरि ।। ४ ।। प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु । तिसु भावै ता मेलि लए भाई हिरदै नाम निवासु । गुरमुखि कमलु प्रगासीऐ भाई रिदै होवै परगासु । प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ धरति अकासु ।। ५ ।। गुरि पूरै संतोखिआ भाई अहिनिसि लागा भाउ । रसना रामु रवै सदा भाई साचा सादु सुआउ । करनी सुणि सुणि जीविआ भाई निहचलु पाइआ थाउ । जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअड़ा जलि जाउ ।। ६ ।। बहु गुण मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ । ओहु निरगुणीआरे पालदा भाई देइ निथावे थाउ । रिजकु संबाहे सासि सासि भाई गूड़ा जाका नाउ । जिसु गुरु साचा भेटीऐ भाई पूरा तिसु करमाउ ।। ७ ।। तिसु बिनु घड़ी न जीवीऐ भाई सरब कला भरपूरि । सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा हजूरि । साधू संगि मिलाइआ भाई सरब रहिआ भरपूरि ।

जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित नित मरदे झूरि ॥ ८ ॥ अंचलि लाइ तराइआ भाई भउजलु दुखु संसारु । करि किरपा नदरि निहालिआ भाई कीतोनु अंगु अपारु । मनु तनु सीतलु होइआ भाई भोजनु नाम अधारु । नानक तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु ॥ ९ ॥ १ ॥

हे भाई ! जिस प्रभु ने जगत पैदा किया है, जो जगत का मूल और सर्वशक्तिमान है, जिसने अपनी सामर्थ्य से मनुष्य का शरीर तथा प्राण बनाया है, वह कर्तार किसी के द्वारा भी व्यक्त नहीं किया जा सकता। हे भाई ! उस कर्तार का स्वरूप अव्यक्त है। उसे कैसे देखा जाए ? गोविन्द-रूप गुरु की स्तुति करनी चाहिए, क्योंकि गुरु द्वारा ही समस्त जगत के मूल उस परमात्मा की सूझ पैदा हो सकती है ॥ १ ॥ हे मन ! सदा भगवान का नाम-स्मरण करना चाहिए। वह भगवान अपने सेवक को अपने नाम की देन देता है। वह समस्त दुखों और पीड़ाओं का नाशक है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस प्रभु के घर में हर चीज़ मौजूद है, जिसके घर में जगत के नौ खज़ाने मौजूद हैं, जिसके घर में भण्डार भरे पड़े हैं, उसका मूल्यांकन नहीं हो सकता। वह सर्वोच्च, अगम्य और अनन्त है। वह प्रभु समस्त जीवों का पालन-पोषण करता है, वह सदा ही सबकी देखभाल करता है। हे भाई ! पूर्णगुरु को मिलना चाहिए, (वही) ज्ञान का प्रकाश देकर परमात्मा के साथ मिला सकनेवाला है ॥ २ ॥ सत्यस्वरूप परमात्मा के चरणों में लगाव रखना चाहिए। इस प्रकार मन की दुबिधा और भय का विनाश हो जाता है। हे भाई ! सत्संगति में मिलकर मन को स्वच्छ करना चाहिए (इससे) परमात्मा के नाम में मन स्थिर हो जाता है। (इससे ही) आत्मिक जीवन के प्रति अज्ञानता का अँधेरा मिट जाता है, हृदय का कमल खिल जाता है। हे भाई ! गुरु की शिक्षा पर आचरण करके आत्मिक आनन्द पैदा होता है। गुरु सर्वफल-प्रदाता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! भेदभाव त्याग देना चाहिए, सबके चरणों की धूलि बन जाना चाहिए। परमात्मा हर एक शरीर में विद्यमान है। वह सबके साथ-साथ होकर सबको देखता है, सबकी सुनता है। हे भाई ! जिस दिन परमात्मा विस्मृत हो जाएगा, उसी दिन दुखी होकर मनुष्य आत्मिक मृत्यु को प्राप्त करेगा। हे भाई ! परमात्मा सब कुछ कर सकनेवाला तथा करा सकनेवाला है। परमात्मा में सब शक्तियाँ मौजूद हैं ॥ ४ ॥ हे भाई ! जिसके भीतर प्रभु-प्रेम का बहुमूल्य धन विद्यमान है, हरि-नाम मौजूद है, उसके भीतर से माया-मोह का समापन हो जाता है। (जब) उस प्रभु को ठीक जचता है और (जिसे) उसने अपने चरणों में जगह दी होती है, उसके हृदय में प्रभु-नाम का निवास हो जाता है। हे भाई ! गुरु के

सान्निध्य में रहने से हृदय-कमल खिल जाता है और हृदय में आत्मिक ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। (गुरु का शरणागत होने पर) जीव के भीतर परमात्मा की शक्ति प्रकट हो जाती है। (वास्तव में प्रभु की शक्ति अपरिमित है) उसके बल पर ही धरती और आकाश स्थित हैं ।। ५ ।। जिस मनुष्य को सतिगुरु ने सन्तोष की देन दी, उसके भीतर दिन-रात प्रभु-प्रेम बना रहता है, वह मनुष्य सदा जिह्वा द्वारा परमात्मा का नाम जपता रहता है। नाम जपने का यह लक्ष्य उसके भीतर अवस्थित रहता है। वह मनुष्य अपने कानों से (प्रभु की गुणस्तुति सुनकर आत्मिक जीवन प्राप्त करता रहता है और प्रभु-चरणों में) निवसित रहता है। लेकिन, हे भाई! जिस मनुष्य को गुरु पर विश्वास नहीं होता, उसकी आत्मा विकारों में जल जाती है ।। ६ ।। हे भाई! मेरे मालिक-प्रभु में असंख्य गुण हैं, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। वह मालिक गुणहीन व्यक्ति का पालन करता है, वह निराश्रित को आश्रय भी देता है। वह मालिक प्रत्येक श्वास के साथ भोजन पहुँचाता है, उसका नाम (भक्त के भीतर प्रेम का) गहरा रंग चढ़ा देता है। हे भाई! जिसे सतिगुरु मिल जाता है, उसका भाग्य उदित हो जाता है ।। ७ ।। हे भाई! वह परमात्मा शक्तिसम्पन्न है, उसके बिना एक घड़ी भी आत्मिक जीवन नहीं रह सकता। हे भाई! मैं तो उस परमात्मा को अपने साथ-साथ देखता हूँ। मुझे वह खाते हुए, साँस लेते हुए कभी भी नहीं विस्मृत होता। हे भाई! जिस मनुष्य को परमात्मा ने गुरु की संगति दे दी, उसे सर्वत्र परमात्मा के दर्शन होते हैं। लेकिन, हे भाई! जिनके भीतर परमात्मा का प्रेम पैदा नहीं होता, वे सदा चिन्तातुर होकर आत्मिक मृत्यु पाते हैं ।।८।। शरणागत को अवलम्ब देकर प्रभु आप इस दुख रूपी संसार-समुद्र से पार उतार देता है। प्रभु कृपा करके उस पर दया करता है, उसका अधिकतम समर्थन करता है। हे भाई! उस मनुष्य का मन, तन शान्त हो जाता है, वह प्रभु के नाम की ख़ुराक (आत्मिक जीवन के लिए) खाता है, नाम का आश्रय लेता है। नानक का कथन है कि उस परमात्मा की शरण लो, जो सारे पाप काट देता है ।। ९ ।। १ ।।

।। सोरठि महला ५ ।। मात गरभ दुख सागरो पिआरे तह अपणा नामु जपाइआ। बाहरि काढि बिख पसरीआ पिआरे माइआ मोहु वधाइआ। जिसनो कीतो करमु आपि पिआरे तिसु पूरा गुरू मिलाइआ। सो आराधे सासि सासि पिआरे राम नाम लिव लाइआ ।। १ ।। मनि तनि तेरी टेक है पिआरे मनि तनि तेरी टेक। तुधु बिनु अवरु न करनहारु पिआरे अंतरजामी

एक ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि आइआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइ । साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइ । जिन भेटै पूरा सतिगुरू पिआरे से लागे साचै नाइ । तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाइ ॥ २ ॥ मिठा करि कै खाइआ पिआरे तिनि तनि कीता रोगु । कउड़ा होइ पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु । भोग भुंचाइ भुलाइअनु पिआरे उतरै नही विजोगु । जो गुर मेलि उधारिआ पिआरे तिन धुरे पइआ संजोगु ॥ ३ ॥ माइआ लालचि अटिआ पिआरे चिति न आवहि मूलि । जिन तू विसरहि पारब्रहम सुआमी से तन होए धूड़ि । बिललाट करहि बहुतेरिआ पिआरे उतरै नाही सूलु । जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिन का रहिआ मूलु ॥ ४ ॥ साकत संगु न कीजई पिआरे जे का पारि वसाइ । जिसु मिलिऐ हरि विसरै पिआरे सुो मुहि कालै उठि जाइ । मनमुखि ढोई नह मिलै पिआरे दरगह मिलै सजाइ । जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिना पूरी पाइ ॥ ५ ॥ संजम सहस सिआणपा पिआरे इक न चली नालि । जो बेमुख गोबिंद ते पिआरे तिन कुलि लागै गालि । होदी वसतु न जातीआ पिआरे कूड़ु न चली नालि । सतिगुरु जिना मिलाइओनु पिआरे साचा नामु समालि ॥ ६ ॥ सतु संतोखु गिआनु धिआनु पिआरे जिसनो नदरि करे । अनदिनु कीरतनु गुण रवै पिआरे अंम्रिति पूर भरे । दुख सागरु तिन लंघिआ पिआरे भवजलु पारि परे । जिसु भावै तिसु मेलि लैहि पिआरे सेई सदा खरे ॥ ७ ॥ संम्रथ पुरखु दइआल देउ पिआरे भगता तिस का ताणु । तिसु सरणाई ढहि पए पिआरे जि अंतरजामी जाणु । हलतु पलतु सवारिआ पिआरे मसतकि सचु नीसाणु । सो प्रभु कदे न वीसरै पिआरे नानक सद कुरबाणु ॥ ८ ॥ २ ॥

हे प्यारे भाई ! माँ का पेट दुखों का समुद्र है, वहाँ भी प्रभु ने जीव से अपने नाम का स्मरण कराया । माँ के पेट से उत्पादित कर (प्रभु ने माया-मोह की) ज़हर बिखेर दी और (जीव के हृदय में) माया का मोह बढ़ा दिया । हे भाई ! अब वह जिस मनुष्य पर कृपा करता है, उसे पूर्णगुरु से मिलाता है । वह मनुष्य प्रत्येक श्वास के साथ परमात्मा का स्मरण करने लगता है और परमात्मा के नाम की लगन अपने भीतर बनाए

रखता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! मन, तन में तुम्हारा ही आसरा है, तुम अन्तर्यामी हो; तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है, जो सब कुछ करने की सामर्थ्य रखता हो ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! अनेक योनियों में दुख सहनकर, करोड़ों जन्मों में भटककर मनुष्य-जन्म मिलता है। अब इसे सत्यस्वरूप मालिक विस्मृत हो जाता है और इसकी बड़ी सज़ा मिलती है। (किन्तु) जिन मनुष्यों को सतिगुरु मिलता है, वे सत्यस्वरूप प्रभु के नाम में सुरति लगाते हैं। हे भाई ! जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु की शरण लेते हैं, उनके पद-चिह्नों पर चलकर मोह से बचा जा सकता है ॥ २ ॥ हे भाई ! मनुष्य ने दुनियावी पदार्थों को मीठा मानकर खाया, उस मीठे ने उसके शरीर में रोग पैदा कर दिया। वह रोग दुखदायक होकर शरीर में टिक जाता है, उस रोग से ही चिन्ता पैदा होती है। दुनियावी पदार्थ खिला-खिलाकर उस परमात्मा ने जीव को कुमार्गगामी बनाया हुआ है। परमात्मा के साथ जीव का बिछोह (इसी कारण) समाप्त नहीं होता। जिन जीवों को प्रभु ने गुरु से भेंट कराकर माया-मोह से बचा लिया, परमात्मा के द्वारा लिखे लेख अनुसार उनका प्रभु से मिलाप हो गया ॥ ३ ॥ हे प्यारे प्रभु ! जो मनुष्य माया के लोभ में ग्रस्त रहते हैं, उनके हृदय में तुम बिल्कुल ही नहीं बसते। हे मालिक-प्रभु ! जिन्हें तुम विस्मृत हो जाते हो, उनके शरीर मिट्टी हो जाते हैं। वे बिलखते हैं, लेकिन उनके भीतर का दुख दूर नहीं होता ॥ ४ ॥ हे भाई ! जहाँ तक सम्भव हो सके परमात्मा से वियुक्त व्यक्ति का साथ नहीं करना चाहिए, क्योंकि उस व्यक्ति को मिलने से परमात्मा विस्मृत हो जाता है। (कुसंगति करनेवाला) व्यक्ति बदनामी पाकर दुनिया से चला जाता है। हे भाई ! स्वेच्छाचारी मनुष्य को प्रभु के दरबार में जगह नहीं मिलती, बल्कि वह सज़ा का अधिकारी बनता है। लेकिन, हे भाई ! गुरु के साथ मिलाकर जिन मनुष्यों का जीवन परमात्मा ने सुन्दर बना दिया है, उन्हें सफलता प्राप्त होती है ॥ ५ ॥ हे भाई ! मनुष्य चाहे हज़ारों संयम और चतुराइयाँ करता रहे, इनमें से एक भी (चीज़) सहायक नहीं बनती। जो मनुष्य परमात्मा से अपना मुँह मोड़े रखते हैं, उनके वंश में कलंक का टीका लग जाता है। नास्तिक मनुष्य हृदय में अवस्थित हरि-नाम से मेल नहीं करता, (लेकिन) नश्वर पदार्थों में कोई भी साथ नहीं देता। हे भाई ! जिन मनुष्यों को उस परमात्मा ने गुरु मिला दिया है, वे सत्यस्वरूप हरि-नाम हृदय में बसाए रखते हैं ॥ ६ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य पर परमात्मा कृपादृष्टि करता है, उसके भीतर सेवा, संतोष, ज्ञान, ध्यान पैदा हो जाते हैं। वह मनुष्य प्रतिपल परमात्मा की गुणस्तुति करता है, प्रभु के गुण स्मरण करता रहता है। वह आत्मिक जीवन देनेवाले नाम-जल से पूर्णरूपेण आपूरित रहता है, वे मनुष्य दुखों के समुद्र से पार उतर जाते हैं और संसार-समुद्र से पार उतर जाते हैं।

हे प्यारे प्रभु ! जो तुम्हें भला लगता है, उसे अपने साथ मिला लेते हो। वह व्यक्ति सदा के लिए सदाचारी हो जाता है ॥ ७ ॥ परमात्मा समस्त शक्तियों का मालिक है, सर्वव्यापक, दया का घर और प्रकाशस्वरूप है, भक्तों को सदा उस प्रभु का आसरा रहता है। हे भाई ! भक्त उस परमात्मा की शरण में रहते हैं, जो अन्तर्यामी है और विवेकी है। हे भाई ! जिस मनुष्य के मस्तक पर सत्यस्वरूप परमात्मा अपनी छाप लगा देता है, उसका यह लोक तथा परलोक सँवर जाता है। नानक का कथन है कि हे भाई ! वह परमात्मा मुझे कभी विस्मृत न हो ! मैं उस पर सदा बलिहारी जाता हूँ ॥ ८ ॥ २ ॥

सोरठि महला ५ घरु २ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे। पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अहंबुधि बाधे ॥ १ ॥ पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका। हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥ रहाउ॥ मोनि भइओ करपाती रहिओ नगन फिरिओ बन माही। तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही ॥ २ ॥ मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए। मन को मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए ॥ ३ ॥ कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा। अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा॥४॥ पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता। हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीऐ इह जुगता ॥ ५ ॥ जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ। वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ ॥ ६ ॥ राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा। सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा ॥ ७ ॥ हरि कीरति साध संगति है सिरि करमन कै करमा। कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ॥ ८ ॥ तेरो सेवकु इह रंगि माता। भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

कोई मनुष्य वेद का पठन-पाठन करता और चिन्तन करता है, खड़े होकर साधना करता है, कोई श्वास-नियन्त्रण द्वारा कुण्डलिनी को जगाता है, (लेकिन इनके द्वारा) पाँचों कामादिक से मुक्ति नहीं होती, बल्कि जीव और अधिक अहंकार में बँध जाते हैं ॥१॥ हे भाई ! मेरे देखते हुए लोग अनेक कर्म करते हैं, लेकिन इन तरीक़ों से परमात्मा के चरणों में जगह नहीं प्राप्त की जा सकती । मैं तो इन कर्मों का आश्रय छोड़कर मालिक-प्रभु के द्वार पर आ गिरा हूँ (प्रार्थना है कि मुझे शुभ-अशुभ की) परख कर सकनेवाली बुद्धि दे ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! कोई मनुष्य मौन लगाए बैठा ह, कोई हाथों को ही बर्तनों के रूप में इस्तेमाल करता है, कोई जंगल में नग्न फिरता है, कोई मनुष्य समस्त तीर्थों का भ्रमण कर रहा है, कोई समस्त पृथ्वी का भ्रमण (पर्यटन) कर रहा है, (लेकिन) इस प्रकार भी मन का चांचल्य समाप्त नहीं होता ॥ २ ॥ हे भाई ! कोई अपनी मनोकामना के अनुरूप तीर्थों पर जा बसा है, कोई (मुक्ति का इच्छुक) सिर पर आरा रखाता है, लेकिन चाहे कोई इस प्रकार के लाखों यत्न करे, उसके मन का मैल नहीं उतरता ॥ ३ ॥ कोई मनुष्य सोना, स्त्री, बढ़िया घोड़े और बढ़िया हाथी जैसे कई प्रकार के दान करनेवाला है । कोई मनुष्य अन्न दान करता है, कपड़े दान करता है, भूमि दान करता है, पर (इस प्रकार भी) परमात्मा के द्वार पर पहुँचा नहीं जा सकता ॥ ४ ॥ हे भाई ! कोई मनुष्य देव-पूजा करने में, देवताओं को दण्डवत प्रणाम करने में, छः प्रकार के कर्मों को करने में मस्त रहता है, तो भी वह इन कर्मों को अहंकारवश करता हुआ बन्धनों में जकड़ा रहता है । इस तरीक़े से भी प्रभु को नहीं मिला जा सकता ॥५॥ योगमत में सिद्धों के प्रसिद्ध चौरासी आसन हैं, ये आसन कर-करके भी मनुष्य थक जाता है । (योगी) उम्र तो लम्बी कर लेता है, परन्तु इस प्रकार प्रभु से ऐक्य नहीं होता, वह भी बार-बार जन्मों के चक्र में पड़ा रहता है ॥ ६ ॥ हे भाई ! कुछ ऐसे मनुष्य हैं जो शासन का आनन्द भोगते हैं, राजाओं के तुल्य ठाट-बाट बनाते हैं, लोगों पर हुक्म चलाते हैं, कोई भी उनका हुक्म टाल नहीं सकता, सुन्दर स्त्री की सेज का आनन्द भोगते हैं, शरीर पर चन्दन और इत्र लगाते हैं, लेकिन यह सब कुछ तो भयानक नरक की ओर ले जानेवाला है ॥ ७ ॥ हे भाई ! सत्संगति में बैठकर प्रभु की गुणस्तुति करनी —यही सर्वोत्कृष्ट कर्म है । लेकिन, नानक का कथन है कि यह अवसर उस मनुष्य को ही मिलता है, जिसके मस्तक पर पूर्वकृत कर्मों के संस्कारों के अनुसार लेख लिखा होता है ॥ ८ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा सेवक तुम्हारी गुणस्तुति के रंग में मस्त रहता है । हे भाई ! दीनों के दुख दूर करनेवाला प्रभु जिस मनुष्य पर दयालु होता है, उसका मन प्रभु की गुणस्तुति के रंग में रँग जाता है ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु सोरठि वार महले ४ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु म० १ ॥ सोरठि सदा सुहावणी जे सचा मनि होइ । दंदी मैलु न कतु मनि जीभै सचा सोइ । ससुरै पेईऐ भै वसी सतिगुरु सेवि निसंग । परहरि कपड़ु जे पिर मिलै खुसी रावै पिरु संगि । सदा सीगारी नाउ मनि कदे न मैलु पतंगु । देवर जेठ मुए दुखि ससू का डरु किसु । जे पिर भावै नानका करम मणी सभु सचु ॥१॥ म० ४ ॥ सोरठि तामि सुहावणी जा हरि नामु ढंढोले । गुर पुरखु मनावै आपणा गुरमती हरि हरि बोले । हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले । हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले । गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले । जनु नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गोल गोले ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे सिसटि करता सिरजणहारिआ । तुधु आपे खेलु रचाइ तुधु आपि सवारिआ । दाता करता आपि आपि भोगणहारिआ । सभु तेरा सबदु वरतै उपावणहारिआ । हउ गुरमुखि सदा सलाही गुर कउ वारिआ ॥ १ ॥

॥ सलोकु महला १ ॥ सोरठि रागिनी सदा सुन्दर लगे यदि सत्यस्वरूप प्रभु मन में अवस्थित हो, निन्दा करने की वृत्ति न रहे, मन में किसी के प्रति बैर न रहे और जिह्वा पर सदैव उस सच्चे प्रभु का स्मरण हो। (इस प्रकार) जीव-स्त्री लोक-परलोक में परमात्मा के भय में जीवन गुज़ारती है और गुरु की सेवा करके निश्शंक हो जाती है। यदि जीव-स्त्री दिखावा त्यागकर प्रभु-पति को मिले तो पति-प्रभु भी संतुष्ट होकर उसे अपने साथ मिला लेता है। जिस जीव-स्त्री के मन में प्रभु का नाम स्थिर हो वह हमेशा नाम-अलंकार से अलंकृत रहती है और उसे विकारों का तनिक भी मैल नहीं लगता। उस जीव-स्त्री के कामादिक विकार समाप्त हो जाते हैं, उस पर माया का भी कोई दबाव नहीं रह जाता। हे नानक! यदि जीव-स्त्री प्रभु-पति को भली लगे, तो उसे भाग्यशालिनी समझो। उसे सर्वत्र सच्चा प्रभु ही दृष्टिगत होता है ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सोरठि रागिनी तभी सुन्दर है यदि इसके द्वारा हरि-नाम की खोज की जाए, अपने महान पति हरि को प्रसन्न करे और सतिगुरु की शिक्षा लेकर प्रभु का स्मरण करे। रात-दिन हरि के प्रेम में बद्ध होकर अपने शरीर को प्रभु के रंग में रँग ले। मैंने तमाम संसार छानबीन कर देख लिया है, परमात्मा जैसा

कोई 'पुरुष' नहीं मिला। गुरु ने हरि का नाम मेरे हृदय में दृढ़ किया है, (अब) मेरा मन कहीं भी विचलित नहीं होता। दास नानक गुरु का दास है और गुरु वाहिगुरु के सेवकों का सेवक है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे सृजनहार प्रभु! तुम स्वयं ही संसार के सर्जक हो। तुमने यह संसार-खेल रचकर स्वयं ही इसे सुन्दर बनाया है, तुम स्वयं ही सृजनहार हो। इस संसार को देनेवाले भी तुम ही हो और उस देन को भोगनेवाले भी तुम हो। हे सृष्टि उत्पादित करनेवाले! सर्वत्र तुम्हारा हुक्म व्याप्त है; (लेकिन) मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी हूँ, जिसके सान्निध्य में रहकर तुम्हारी गुणस्तुति कर सकता हूँ ॥ १ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ। पूरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पंनै पाइ। इहु जगु जलता नदरी आइआ गुर कै सबदि सुभाइ। सबदि रते से सीतल भए नानक सचु कमाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सफलिओ सतिगुरु सेविआ धंनु जनमु परवाणु। जिना सतिगुरु जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण। कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु। गुरमुखि मुए जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि। नानक मुए न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि पुरखु निरंजनु सेवि हरिनामु धिआईऐ। सत संगति साधू लगि हरि नामि समाईऐ। हरि तेरी वडी कार मै मूरख लाईऐ। हउ गोला लाला तुधु मै हुकमु फुरमाईऐ। हउ गुरमुखि कार कमावा जि गुरि समझाईऐ ॥२॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ सांसारिक जीव अहंत्व में जलते हुए मर चुके थे, (लेकिन) जब वे मोह में भटक-भटककर गुरु के द्वार पर आए तो गुरु ने उन्हें आश्रय देकर बचा लिया। उन्हें सतिगुरु के ज्ञान द्वारा सचमुच ही यह संसार जलता हुआ लगा। इसलिए वे गुरु के शब्द में रँगकर और नाम-स्मरण की कमाई करके शान्त हो गए ॥ १ ॥ म० ३ ॥ उन मनुष्यों द्वारा सतिगुरु की सेवा सफल है और उनका जन्म भी प्रशंसनीय तथा प्रामाणिक है। वही मनुष्य बुद्धिमान हैं, जिन्हें तमाम उम्र सतिगुरु कभी विस्मृत नहीं हुआ। (ऐसा उपासक) प्रभु-दरबार में स्वीकृत हो जाता है और अपने वंश का भी उद्धार कर लेता है। सतिगुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य स्वीकृत हैं, लेकिन स्वेच्छाचारी मनुष्य जन्मते-मरते रहते हैं। हे नानक! जो मनुष्य सतिगुरु के शब्द में लीन हो जाते हैं, उन्हें मृत नहीं कहा जा सकता ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माया-रहित अकालपुरुष की

सेवा कर उसका नाम-स्मरण करना चाहिए। गुरु के सान्निध्य में रहकर हरि के नाम में लीन हुआ जा सकता है। हे हरि ! मुझ मूर्ख को अपने बड़े काम अर्थात् भक्ति में लगा लो। मुझे हुक्म दो, मैं तुम्हारे दासों का दास हूँ। सतिगुरु ने जो काम समझाया है, उसे मैं उसके सान्निध्य में रहकर कर सकूँ ॥ २ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा जि करतै आपि लिखिआसु। मोह ठगउली पाईअनु विसरिआ गुणतासु। मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइ मुइआसु। जिनी गुरमुखि नामु न चेतिओ से बहणि न मिलनी पासि। दुखु लागा बहु अति घणा पुतु कलतु न साथि कोई जासि। लोका विचि मुहु काला होआ अंदरि उभे सास। मनमुखा नो को न विसही चुकि गइआ वेसासु। नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अंतरि नाम निवासु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ से सैण से सजणा जि गुरमुखि मिलहि सुभाइ। सतिगुर का भाणा अनदिनु करहि से सचि रहे समाइ। दूजै भाइ लगे सजण न आखीअहि जि अभिमानु करहि वेकार। मनमुख आप सुआरथी कारजु न सकहि सवारि। नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइकै आपि खेलु रचाइआ। त्रै गुण आपि सिरजिआ माइआ मोहु वधाइआ। विचि हउमै लेखा मंगीऐ फिरि आवै जाइआ। जिना हरि आपि क्रिपा करे से गुरि समझाइआ। बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमाइआ ॥ ३ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ पूर्वकृत कर्मों के अनुसार जो संस्कार रूपी लेख लिखा हुआ है और जो कर्तार ने स्वयं लिख दिया है, वह अवश्य कमाना पड़ता है। उस लेख के अनुसार ही मोह की ठग-बूटी जिसे मिल गई है, उसे गुणों का भण्डार प्रभु विस्मृत हो गया है। उस संसार को जीवित न समझो, जो माया-मोह में मृत पड़ा है। जिन्होंने सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर नाम-स्मरण नहीं किया, उन्हें प्रभु का सामीप्य नहीं मिलता। वे मनमुख बहुत दुखी होते हैं, (क्योंकि वे जिनके लिए कर्म-संलग्न हैं, वे) सब पुत्र, स्त्री उनके साथ नहीं जाएँगे; सांसारिक लोगों में भी उनका मुँह काला होता है और वे पश्चाताप करते हैं। मनमुखों का कोई विश्वास नहीं होता, उनका विश्वास भंग हो जाता है। हे नानक ! गुरमुख प्राणियों को सुख का अनुभवन होता है, क्योंकि उनके हृदय में प्रभु का नाम-स्मरण होता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर जो मनुष्य प्रभु

में लीन हो जाते हैं, वे भले लोग हैं और सहयोगी हैं। जो सदैव प्रभु का 'भाणा' (ईश्वरेच्छा) स्वीकारते हैं वे सच्चे हरि में समाए रहते हैं, उन्हें सन्त नहीं कहा जा सकता। जो माया में प्रवृत्त होकर अहंकार और विकार करते हैं। मनमुख अपनी स्वार्थप्रियता के फलस्वरूप किसी का कार्य नहीं सँवार सकते। हे नानक! (उनका क्या दोष?) पूर्वकृत कर्मों के अनुसार उन्हें लिखा लेख कमाना पड़ता है, (इस प्रक्रिया को) कोई भी प्राणी मिटा नहीं सकता ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे हरि! तुमने आप ही सृष्टि रचकर यह तमाशा बनाया है। तुमने आप ही तीनों गुण बनाए हैं और स्वयं ही माया-मोह बढ़ाया है। मोह के फलस्वरूप अहंकार में प्रवृत्त होकर प्रभु के दरबार में लेखा माँगा जाता है और फिर जन्मना-मरना पड़ता है। जिन पर हरि कृपा करता है, उन्हें सतिगुरु ने यह ज्ञान दे दिया है। इसलिए मैं सदा सतिगुरु पर बलिहारी और सदैव बलिहारी जाता हूँ ॥ ३ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ। मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ। बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी आइआ। धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ सुख दाता मनि न वसाइआ। नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइआ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ घर ही महि अंम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ। जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ। अंम्रितु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइआ। गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइआ। तनु मनु सीतलु होइआ रसना हरि सादु आइआ। सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ। बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइआ। अंम्रितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो हरि पुरखु अगंमु है कहु कितु बिधि पाईऐ। तिसु रूपु न रेख अद्रिसटु कहु जन किउ धिआईऐ। निरंकारु निरंजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईऐ। जिसु आपि बुझाए आपि सु हरि मारगि पाईऐ। गुरि पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ ॥ ४ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ माया मन को आकर्षित करनेवाली है, इसने दुनिया को बिना दाँतों के ही खा लिया है। (इसके ममत्व में) मनमुख ग्रसे गए हैं और जिन गुरमुखों ने नाम में मन लगाया है, वे बच गए हैं।

सतिगुरु के सान्निध्य में आकर पता चलता है कि संसार प्रभु-नाम से रहित होकर पागल हुआ भटकता फिरता है, माया सम्बन्धी कार्यों को निपटाते हुए वह मनुष्य-जन्म निष्फल गवाँ लेता है और सुखों के दाता नाम को मन में नहीं बसाता। हे नानक! नाम उन्हीं मनुष्यों को मिलता है, जिनके हृदय में आदिमकाल से संसार रूपी आलेख लिखकर प्रभु ने रख दिया है ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ (नाम रूपी) अमृत हृदय रूपी घर में ही आपूरित है, लेकिन मनमुखों को उसमें आस्वादन नहीं मिलता। जैसे हरिण (नाभि में स्थित) कस्तूरी को नहीं पहचानता और भ्रम में पड़कर भटकता है, उसी प्रकार मनुष्य नाम-अमृत को छोड़कर विष का संग्रह करता है। (लेकिन जीव के क्या वश ?) कर्तार ने (पूर्वकृत कर्मों के अनुसार) उसे स्वयं पथ-विचलित किया है। विरले गुरमुखों को यह ज्ञान होता है। उन्हें अन्तर्मन में ही प्रभु का दर्शन हो जाता है। उनका मन-तन शान्त हो जाता ह और जिह्वा द्वारा उन्हें नाम का आनन्द महसूस हो जाता है। सतिगुरु के शब्द द्वारा ही नाम का अंकुर अंकुरित होता है और शब्द के द्वारा ही प्रभु से मेल होता है। शब्द के बिना सारा संसार पागल हुआ पड़ा है और मनुष्य-जन्म व्यर्थ गवाँता है। हे नानक! गुरु का शब्द ही आत्मिक जीवन का दाता है, जो सतिगुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य को प्राप्त होता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे भाई! यह बताओ कि वह हरि, जो अगम्यपुरुष है, किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ? उसका कोई रूप नहीं, रेखा नहीं और जो दृष्टिगोचर नहीं, उसे कैसे स्मरण किया जाए ? जो निराकार, निरञ्जन, अगम्य है उसे क्या कहकर, उसकी गुणस्तुति की जाए ? जिस मनुष्य को प्रभु स्वयं ज्ञान देता है, वह प्रभु के मार्ग का अनुसरण करता है। पूर्णगुरु ने ही उस प्रभु का दर्शन कराया है, गुरु द्वारा बताई कमाई करने से ही वह प्रभु मिलता है ॥ ४ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ जिउ तनु कोलू पीड़ीऐ रतु न भोरी डेहि। जीउ वंञै चउखंनीऐ सचे संदड़ै नेहि। नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सजणु मैडा रंगुला रंगु लाए मनु लेइ। जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि। नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि आपि वरतै आपि हरि आपि बुलाइदा। हरि आपे स्रिसटि सवारि सिरि धंधै लाइदा। इकना भगती लाइ इकि आपि खआइदा। इकना मारगि पाइ इकि उझड़ि पाइदा। जनु नानकु नामु धिआए गुरमुखि गुण गाइदा ॥ ५ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ हे नानक! यदि मेरी देह में तनिक भी

लहू न रहे, चाहे उसे तिलों की तरह कोल्हू में पीसा जाए, चाहे मेरा मन सच्चे प्रभु के प्रेम में संलग्न होकर टुकड़े-टुकड़े भी हो जाय तो भी प्रभु का मेल रात-दिन में कभी नहीं छूटता ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मेरा प्रिय रँगीला है, मन लेकर रंग लगा देता है। जैसे पहनने के कपड़े केसरी रंग में रँगे जाते हैं (वैसे अहंत्व त्यागकर प्रभु मिलता है)। हे नानक! इस प्रकार का रंग फिर नहीं उतरता और न ही दूसरा कोई रंग उस पर चढ़ सकता है ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ हरि स्वयं ही सर्वत्र परिव्याप्त है और आप ही सबको सम्बोधित है। संसार की सृजना कर प्रत्येक जीव को माया के झंझट में लगा देता है। कुछ को अपनी भक्ति में लगाता है और कुछ को आप ही भ्रमित करता है। कुछ को सन्मार्ग पर लगाता है और कुछ को कुमार्ग पर लगाता है। दास नानक उस प्रभु का नाम स्मरण करता है और सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर उसकी गुणस्तुति करता है ॥ ५ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर की सेवा सफलु है जेको करे चितु लाइ। मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ। बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ। इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ। नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुख मंनु अजितु है दूजै लगै जाइ। तिसनो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइ। घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि लगाइ। इहु मनु वसि न आवई थके करम कमाइ। भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीरथ नाइ। मन की सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ। गुरपरसादी भउ पइआ वडभागि वसिआ मनि आइ। भै पइऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ। सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ। सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाइआ नानक सुखि समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ एह भूपति राणे रंग दिन चारि सुहावणा। एहु माइआ रंगु कसुंभ खिन महि लहि जावणा। चलदिआ नालि न चलै सिरि पाप लै जावणा। जां पकड़ि चलाइआ कालि तां खरा डरावणा। ओह वेला हथि न आवै फिरि पछुतावणा ॥ ६ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ यदि कोई मनुष्य सतिगुरु की सेवा करे तो यह सेवा अवश्य फलीभूत होती है। उस (सेवक को) मनोवांछित फल मिलता है, अहंकार मन से दूर होता है। (गुरु द्वारा बताई विधि) सांसारिक बन्धनों को भंग करती है, इससे बन्धनों से मुक्ति हो जाती है

और मनुष्य सच्चे हरि में समाया रहता है। इस संसार में प्रभु का नाम दुर्लभ है, सतिगुरु के सान्निध्य में रहनेवाले व्यक्ति के मन में नाम स्थिर होता है। नानक का कथन है कि मैं उन पर बलिहारी हूँ, जो अपने सतिगुरु के आदेशानुसार आचरण करते हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुख का मन अनियंत्रित होता है, क्योंकि वह मायाग्रस्त रहता है; इसलिए उसे स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता। उसकी उम्र सदा दुख में ही बीतती है। अनेक पंडित पढ़-पढ़कर तथा सिद्ध समाधियाँ लगा-लगाकर थक गए, कितने ही कर्म कर-करके थक गए हैं, अहंत्व और भ्रम में भटके हुए लोगों को मन की सुधि नहीं आई। अनेक मनुष्य नाना प्रकार के भेष बनाकर और अड़सठ तीर्थों में स्नान करके थक गए, परन्तु वे अहंत्व के भ्रम में भूलकर मन के तत्व को न जान सके। सौभाग्यवश प्रभु की कृपा से ही उसका भय पैदा होता है। भय उपजते ही सतिगुरु के ज्ञान द्वारा अहम् जल जाता है और मन नियन्त्रित होता है। जो मनुष्य प्रभु की ज्योति में अपनी वृत्ति लगाकर उस सच्चे प्रभु में रँगे गए हैं, वे निर्मल हो गए हैं। हे नानक ! सतिगुरु के मिलने पर ही नाम की प्राप्ति होती है और सुख में समाई होती है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ राजाओं तथा रानियों के (विलासिता के) ये रंग चार दिन के लिए शोभायमान होते हैं। माया का रंग कुसुंभे रंग के तुल्य है अर्थात् क्षणभंगुर है। यह क्षणमात्र में ही उतर जाएगा। संसार से प्रयाण करते समय माया साथ नहीं जाती, लेकिन इसके कारण किए गए पाप सिर पर रखकर ले जाए जाते हैं। जब यमराज ने पकड़कर जीव को आगे हाँक लिया तो जीव अत्यन्त भयभीत होता है। यह अवकाश दोबारा नहीं मिलता इसी कारण वह (बहुत) पश्चाताप करता है ॥ ६ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहि। फिरि फिरि मिलणु न पाइनी जंमहि तै मरि जाहि। सहसा रोगु न छोडई दुख ही महि दुख पाहि। नानक नदरी बखसि लेहि सबदे मेलि मिलाहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ। जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारणि बदनाउ। नानक गुरमुखि बखसीअहि से सतिगुर मेलि मिलाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो सेवहि सति मुरारि से भवजल तरि गइआ। जो बोलहि हरि हरि नाउ तिन जमु छडि गइआ। से दरगह पैधे जाहि जिना हरि जपि लइआ। हरि सेवहि सेई पुरख जिना हरि तुधु मइआ। गुण गावा पिआरे नित गुरमुखि भ्रम भउ गइआ ॥ ७ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जो मनुष्य सतिगुरु की ओर से उदासीन हैं वे मोहबद्ध होकर दुख सहते हैं, प्रभु को मिल नहीं सकते, बार-बार जन्मते-मरते हैं। उन्हें चिन्ता का रोग नहीं छोड़ता और वे सदा दुखी ही रहते हैं। हे नानक ! कृपादृष्टि वाला प्रभु यदि उन्हें क्षमा कर दे तो वे सतिगुरु के शब्द द्वारा परमात्मा में विलीन हो जाते हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जो मनुष्य सतिगुरु से उदासीन हैं, उनका ठौर-ठिकाना नहीं होता। वे घर-घर फिरनेवाली बदनाम परित्यक्ता स्त्री के तुल्य हैं। हे नानक ! जो गुरु के सान्निध्य में रहकर क्षमा कर दिये जाते हैं, वे सतिगुरु की संगति में लीन हो जाते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो मनुष्य सच्चे हरि की आराधना करते हैं, वे संसार-सागर को पार कर लेते हैं। जो मनुष्य हरि का नाम-स्मरण करते हैं, उन्हें यमराज छोड़ जाता है; जिन्होंने हरि का नाम जपा है वे परमात्मा के दरबार में सम्मानित हो जाते हैं। (लेकिन) हे हरि ! जिन पर तुम्हारी कृपा होती है, वे ही मनुष्य तुम्हारी भक्ति में प्रवृत्त होते हैं। सतिगुरु के सान्निध्य में भ्रम और भय दूर हो जाते हैं, (कृपा कर) हे प्यारे ! मैं भी हमेशा तुम्हारी गुणस्तुति करूँ ॥ ७ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अंम्रितु सारु। जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु। इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि। एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरिधारि। एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि। नानक जिसु बुझाए सु बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जो धुरि मेले से मिलि रहे सतिगुर सिउ चितु लाइ। आपि विछोड़ेनु से विछुड़े दूजै भाइ खुआइ। नानक विणु करमा किआ पाईऐ पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बहि सखीआ जसु गावहि गावणहारीआ। हरिनामु सलाहिहु नित हरि कउ बलिहारीआ। जिनी सुणि मंनिआ हरि नाउ तिना हउ वारीआ। गुरमुखीआ हरि मेलु मिलावणहारीआ। हउ बलिजावा दिनु राति गुर देखणहारीआ ॥ ८ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जिस हृदय रूपी थाल में (सत्य, संतोष और विचार) तीन चीजें हैं, उस हृदय रूपी थाल में हरि-नाम रूपी अमृत भोजन है जिसके खाने से मन तृप्त हो जाता है और जीव को मुक्ति का द्वार प्राप्त होता है। हे सन्तो ! यह भोजन दुर्लभ है, यह सतिगुरु के द्वारा बताए गए व्यवहार द्वारा प्राप्त होता है। आत्मिक आनन्द की प्रदाता इस

खुराक की सूझ गुरु ने दी है, इसे गुरमुखों ने बड़ी छानबीन से पाया है। इसे सदा हृदय में सँभालकर रखना चाहिए, यह कभी विस्मृत नहीं करनी चाहिए। हे नानक ! जिस मनुष्य को इसका ज्ञान प्रभु देता है, वही इसे समझता है और सतिगुरु के सान्निध्य में होकर साधना करके हरि को मिलता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हरि ने जिन्हें प्रारम्भ से मिलाया है, वे मनुष्य सतिगुरु में मन लगाकर हरि में लीन हुए हैं; (लेकिन) जो उस प्रभु ने स्वयं अलग किए हैं, वे माया-मोह में पथविचलित होकर हरि से बिछुड़े हुए हैं। हे नानक ! भाग्य की कमाई के बिना कुछ नहीं मिलता। पूर्वकृत कर्मों के अनुसार लिखे लेखों का फल भोगना पड़ता है ॥ २॥ पउड़ी ॥ हरि की गुणस्तुति करनेवाली सहेलियाँ (सन्तजन) एकत्रित हो साथ-साथ बैठकर प्रभु का गुणगान करती हैं, हरि पर बलिहारी जाती हैं (और सभी को परामर्श देती हैं कि) सदैव हरि के नाम का गुणगान अर्थात् स्तुति करो। मैं उन पर बलिहारी हूँ जिन्होंने सुनकर हरि-नाम स्वीकारा है, प्रभु से भेंट करानेवाली उन गुरमुख सहेलियों पर बलिहारी हूँ, सतिगुरु के दर्शन करनेवालों पर मैं दिन-रात्रि बलिहारी हूँ ॥ ८ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ विणु नावै सभि भरमदे नित जगि तोटा सैसारि। मनमुखि करम कमावणे हउमै अंधु गुबारु। गुरमुखि अंम्रितु पीवणा नानक सबदु वीचारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सहजे जागै सहजै सोवै। गुरमुखि अनदिनु उसतति होवै। मनमुख भरमै सहसा होवै। अंतरि चिंता नीद न सोवै। गिआनी जागहि सवहि सुभाइ। नानक नामि रतिआ बलि जाउ ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ से हरिनामु धिआवहि जो हरि रतिआ। हरि इकु धिआवहि इकु इको हरि सतिआ। हरि इको वरतै इकु इको उतपतिआ। जो हरि नामु धिआवहि तिन डरु सटि घतिआ। गुरमती देवै आपि गुरमुखि हरि जपिआ ॥ ९ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ नाम के बिना समस्त लोग भटकते फिरते हैं, उन्हें विश्व में हमेशा हानि ही हानि है। हे नानक ! मनमुख तो अहंत्व में फँसकर ऐसे कर्म करते हैं जो घोर अँधेरा पैदा करते हैं, लेकिन सतिगुरु के सान्निध्य में जीव शब्द को विचारकर आत्मिक जीवन का दाता नामामृत पान करते हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जो मनुष्य सतिगुरु के सान्निध्य में होता है, वह आत्मिक स्थिरता में ही जागता है और आत्मिक स्थिरता में शयन करता है। उसे प्रतिदिन हरि की स्तुति का ही कामकाज होता है। (इससे हीन) मनुष्य भटकता है क्योंकि उसे सदा चिन्ता

और भ्रम रहते हैं। मन में चिन्ता की उपस्थिति से वह (अच्छी गहरी निद्रा) भी नहीं ले पाता। प्रभु के साथ गहरा मेलजोल रखनेवाले व्यक्ति प्रभु के प्रेम में ही जागते, सोते हैं। हे नानक ! मैं नाम में रँगे हुए जीवों पर बलिहारी हूँ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो मनुष्य हरि में अनुरक्त हैं, वे उसका नाम-स्मरण करते हैं। वे एकमात्र हरि का स्मरण करते हैं जो सत्यस्वरूप है, जो सर्वत्र व्यापक है और जिसने सृष्टि उत्पादित की है। जो मनुष्य नाम-स्मरण करते हैं, उन्होंने सारा भय दूर कर दिया है। लेकिन वही गुरमुख प्रभु का नाम-स्मरण करता है, जिसे गुरु की शिक्षा द्वारा यह प्राप्ति होती है ॥ ९ ॥

॥ सलोक म० ३ ॥ अंतरि गिआनु न आइओ जितु किछु सोझी पाइ। विणु डिठा किआ सालाहीऐ अंधा अंधु कमाइ। नानक सबदु पछाणीऐ नामु वसै मनि आइ॥ १॥ म० ३॥ इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि। सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार। गुर किरपा ते पाईअनि जे देवै देवणहारु। सचा सउदा लाभु सदा खटिआ नामु अपारु। विखु विचि अंम्रितु प्रगटिआ करमि पीआवणहारु। नानक सचु सलाहीऐ धंनु सवारणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई। जेको बोलै सचु कूड़ा जलि जावई। कूड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई। जिसु हरि होइ क्रिपालु सो नामु धिआवई। हरि गुरमुखि नामु अराधि कूड़ु पापु लहि जावई ॥ १० ॥

॥ सलोक महला ३ ॥ जिस ज्ञान द्वारा सूझ पैदा होती थी, वह ज्ञान तो भीतर प्रकट नहीं हुआ। फिर जिस हरि को देखा भी नहीं, उसकी स्तुति कैसे हो सके ? अज्ञानी मनुष्य अज्ञानता की साधना करता है। हे नानक ! यदि सतिगुरु के शब्द को पहचाना जाए तो हरि का नाम मन में प्रकट हो जाता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ केवल वाणी ही प्रामाणिक गुरु है, गुरु के शब्द को ही विचारो —यह सत्य का सौदा है, यही सच्ची दुकान है जिसमें रत्नों के भण्डार आपूरित हैं। यदि दाता-हरि हो, तो ये ख़ज़ाने सतिगुरु की कृपा से मिल ही जाते हैं। जिस मनुष्य ने इस सच्चे सौदे के द्वारा अनन्त प्रभु का नाम पाया है, उसे विष में रहकर भी नाम-अमृत मिल जाता है। लेकिन यह अमृत प्रभु अपनी कृपा द्वारा ही पिलाता है। हे नानक ! उस सराहनीय प्रभु का स्मरण करो, जो (नाम की देन देकर) जीव को सँवारता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनके हृदय में झूठ रहता है,

उन्हें सत्य अच्छा नहीं लगता । यदि कोई मनुष्य सच बोले तो झूठा जल उठता है । झूठ का व्यापारी झूठ में ही प्रसन्न होता है, जैसे कौआ विष्ठा ही खाता है । जिस मनुष्य पर प्रभु दयालु हो, वही नाम जपता है । यदि सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर हरि का नाम-स्मरण किया जाए, तो झूठ और पाप समाप्त हो जाते हैं ॥ १० ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ सेखा चउचकिआ चउवाइआ एहु मनु इकतु घरि आणि । एहड़ तेहड़ छडि तू गुर का सबदु पछाणु । सतिगुर अगै ढहि पउ सभु किछु जाणै जाणु । आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु । सतिगुर कै भाणै भी चलहि ता दरगह पावहि माणु । नानक जि नामु न चेतनी तिन धिगु पैनणु धिगु खाणु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हरि गुण तोटि न आवई कीमति कहणु न जाइ । नानक गुरमुखि हरि गुण रवहि गुण महि रहै समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि चोली देह सवारी कढि पैधी भगति करि । हरि पाटु लगा अधिकाई बहु बहु बिधि भाति करि । कोई बूझै बूझणहारा अंतरि बिबेकु करि । सो बूझै एहु बिबेकु जिसु बुझाए आपि हरि । जनु नानकु कहै विचारा गुरमुखि हरि सति हरि ॥ ११ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ हे विकृत शेख ! इस मन को केन्द्रित कर अर्थात् नियन्त्रित कर । टेढ़ी-तिरछी बातें छोड़कर सतिगुरु के उपदेश को समझ । हे शेख ! जो सर्वज्ञ सतिगुरु सब समझता है, उसकी सेवा कर । आशाएँ और एषणाएँ मिटाकर स्वयं को जगत में अतिथि समझ । यदि तू सतिगुरु के 'भाणे' (इच्छा) अनुसार प्रवृत्त होगा, तो परमात्मा के दरबार में आदर पाएगा । हे नानक ! जो मनुष्य नाम-स्मरण नहीं करते, उनका खाना तथा पहनना धिक्कार योग्य है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हरि के गुण व्यक्त करने से समाप्त नहीं होते और न ही उन गुणों के व्यापार के लिए मूल्य निश्चित किया जा सकता है । (लेकिन) हे नानक ! गुरमुख जीव हरि के गुण गाते हैं और गुणों में ही लीन रहते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ यह शरीर, मानो चोली है जो प्रभु ने बनाई है । भक्ति रूपी कसीदा निकाल कर यह चोली पहनने योग्य बनती है । इसमें कई प्रकार का हरि-नाम रूपी वस्त्र लगा हुआ है । इस भेद को (मन में विचारकर) कोई विरला ही समझता है । इस विचार को वही समझता है, जिसे हरि आप समझाए । दास नानक का विश्वास है कि सत्यस्वरूप हरि गुरु के माध्यम से ही स्मरण किया जा सकता है ॥ ११ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ परथाइ साखी महापुरख बोलदे साझी सगल जहानै । गुरमुखि होइ सु भउ करे आपणा आपु पछाणै । गुर परसादी जीवतु मरै ता मन ही ते मनु मानै। जिन कउ मन की परतीति नाही नानक से किआ कथहि गिआनै ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ गुरमुखि चितु न लाइओ अंति दुखु पहुता आइ । अंदरहु बाहरहु अंधिआं सुधि न काई पाइ । पंडित तिनकी बरकती सभु जगतु खाइ जो रते हरि नाइ । जिन गुर कै सबदि सलाहिआ हरि सिउ रहे समाइ । पंडित दूजै भाइ बरकति न होवई ना धनु पलै पाइ । पड़ि थके संतोखु न आइओ अनदिनु जलत विहाइ । कूक पूकार न चुकई ना संसा विचहु जाइ । नानक नाम विहूणिआ मुहि कालै उठि जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि सजण मेलि पिआरे मिलि पंथु दसाई । जो हरि दसे मितु तिसु हउ बलि जाई । गुण साझी तिन सिउ करी हरिनामु धिआई । हरि सेवी पिआरा नित सेवि हरि सुखु पाई । बलिहारी सतिगुर तिसु जिनि सोझी पाई ॥ १२ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ महापुरुष किसी विशेष के सम्बन्ध में शिक्षा का वचन बोलते हैं, लेकिन वह शिक्षा सभी के लिए स्वीकार्य होती है; जो मनुष्य सतिगुरु के सान्निध्य में रहता है, वह प्रभु का भय धारण करता है और अपनी आन्तरिक जाँच-पड़ताल करता है। सतिगुरु की कृपा से वह सांसारिक जीवन बिताता हुआ भी माया से निर्लिप्त रहता है, तो उसका मन स्वयं विश्वस्त हो जाता है। हे नानक ! जिनका मन विश्वस्त नहीं हुआ, उन्हें ज्ञान की बातें करने का कोई लाभ नहीं होता ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ जिन मनुष्यों ने सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर हरि में मन नहीं लगाया, उन्हें आख़िर में दुख होता है। उन 'अन्धों' को भीतर और बाहर से कोई समझ नहीं आती। हे पण्डित ! जो मनुष्य हरि के नाम में अनुरक्त हैं, जिन्होंने सतिगुरु के शब्द द्वारा गुणस्तुति की है और हरि में लीन हैं, उनकी कमाई की देन सारा संसार खाता है। हे पण्डित ! माया-मोह में फँसे रहने से उन्नति नहीं होती और न नाम-धन मिलता है, वे पढ़-पढ़कर थक जाते हैं पर संतोष नहीं प्राप्त कर पाते और प्रतिपल कालावधि जलते हुए ही बीतती है। उनकी शिकायत समाप्त नहीं होती और मन से चिन्ता नहीं मिटती। हे नानक ! नाम-हीन होने के कारण मनुष्य काले मुँह (कलंकित) ही संसार से उठ जाता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे प्यारे हरि ! मुझे गुरमुख मिलाओ, जिनसे मैं तुम्हारा मार्ग पूछ लूँ। जो मनुष्य मुझे

हरि-मित्र की सूचना दे मैं उस पर बलिहारी हूँ। उनके साथ मैं गुणों की तालमेल जोड़ूँ और हरि-नाम स्मरण करूँ। मैं हमेशा प्रिय प्रभु को स्मरण करूँ और स्मरण कर सुख पाऊँ। मैं उस सतिगुरु पर बलिहारी हूँ, जिसने परमात्मा की समझ दी है ॥ १२ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ पंडित मैलु न चुकई जे वेद पड़ै जुगचारि। त्रै गुण माइआ मूलु है विचि हउमै नामु विसारि। पंडित भूले दूजै लागे माइआ कै वापारि। अंतरि त्रिसना भुख है मूरख भुखिआ मुए गवार। सतिगुरि सेविऐ सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि। अंदरहु त्रिसना भुख गई सचै नाइ पिआरि। नानक नामि रते सहजे रजे जिना हरि रखिआ उरिधारि ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ मनमुख हरिनामु न सेविआ दुखु लगा बहुता आइ। अंतरि अगिआनु अंधेरु है सुधि न काई पाइ। मनहठि सहजि न बीजिओ भुखा कि अगै खाइ। नामु निधानु विसारिआ दूजै लगा जाइ। नानक गुरमुखि मिलहि वडिआईआ जे आपे मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि रसना हरि जसु गावै खरी सुहावणी। जो मनि तनि मुखि हरि बोलै सा हरि भावणी। जो गुरमुखि चखै सादु सा त्रिपतावणी। गुण गावै पिआरे नित गुण गाइ गुणी समझावणी। जिसु होवै आपि दइआलु सा सतिगुरू गुरू बुलावणी ॥ १३ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ पण्डित का मैल नहीं उतरता चाहे वह चारों वेद पढ़ता रहे, क्योंकि वह त्रिगुणात्मक माया में लिप्त रहता है। पण्डित अहंत्व में नाम भुला देता है। भूले हुए पण्डित माया के व्यापार तथा माया के मोह में लगे हुए हैं, उनके भीतर तृष्णा है, भूल है, गँवार मूर्ख भ्रम में ही मर जाते हैं (चाहे उम्र भर धार्मिक ग्रन्थ ही पढ़ते रहें)। सतिगुरु के बतलाए मार्ग का अनुसरण करने तथा सच्चे नाम में प्रेम करने से भीतर की तृष्णा और भूख दूर हो जाती है। हे नानक ! जो मनुष्य नाम में रँगे हैं और जिन्होंने हरि को हृदय में धारण किया हुआ है, वे आत्मिक स्थिरता में सन्तुष्ट हो गए हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुख ने हरि का नाम स्मरण नहीं किया, इसलिए वह बहुत दुखी होता है। उसके हृदय में अज्ञान रूपी अँधेरा होता है, इसलिए उसे कोई सूझ नहीं होती। स्वेच्छाचारी होने के कारण वह स्थिर अवस्था में कुछ नहीं बोता, (नाम के बग़ैर) भूखा मनुष्य आगे क्या खाएगा ? (मनमुख) नाम-ख़ज़ाना भुलाकर माया में जा लगा है। हे नानक ! सतिगुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्यों को

प्रशंसा मिलती है (यदि हरि अपनी संगति में मिला ले) ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ जो जिह्वा हरि का यश गाती है, वह बड़ी सुन्दर लगती है; जो तन-मन से तथा मुख से हरि-नाम का उच्चारण एवं ध्यान करती है, वह हरि को प्यारी लगती है। जो सतिगुरु के सान्निध्य में होकर स्वाद लेती है, वह तृप्त हो जाती है। वह प्यारे हरि के गुण सदा गाती है और गुण गाकर गुणी (हरि) की शिक्षा दूसरों को देती है। जिस जिह्वा पर हरि आप दयालु होता है, वह 'गुरु, गुरु' जपती है ॥ १३ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ हसती सिरि जिउ अंकसु है अहरणि जिउ सिरु देइ। मनु तनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ। इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु स्रिसटि का लेइ। नानक गुरमुखि बुझीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आए ते परवाणु। नानक कुल उधारहि आपणा दरगह पावहि माणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि सखीआ सिख गुरू मेलाईआ। इकि सेवक गुर पासि इकि गुरि कारै लाईआ। जिना गुरु पिआरा मनि चिति तिना भाउ गुरू देवाईआ। गुर सिखा इको पिआरु गुर मिता पुता भाईआ। गुरु सतिगुरु बोलहु सभि गुरु आखि गुरू जीवाईआ ॥ १४ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जिस प्रकार हाथी के सिर पर अंकुश होता है, लोहा लोहार के सम्मुख समर्पित होता है, उसी प्रकार शरीर और मन सतिगुरु को अर्पित करके सावधान होकर सेवा करो। सतिगुरु के सान्निध्य में मनुष्य इस प्रकार अहंत्वभाव गवाँता है और मानो सारी सृष्टि का राज्य ले लेता है। हे नानक! जब हरि स्वयं कृपादृष्टि करता है, तब सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर यह समझ आती है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ संसार में आए वे मनुष्य स्वीकृत हैं, जिन्होंने सतिगुरु के बताए मार्ग पर चलकर नाम-स्मरण किया है। हे नानक! वे मनुष्य अपने वंश का उद्धार कर लेते हैं और हरि के दरबार में आदर पाते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु ने गुरमुख सिक्ख रूपी सहेलियाँ आपस में मिलाई हैं। उनमें से कई सतिगुरु के पास सेवा करती हैं, कितने लोगों को सतिगुरु ने आत्मिक काम-काज में लगाया है; जिनके मन में प्यारे गुरु का वास है, सतिगुरु उन्हें अपना प्रेम देता है। सतिगुरु का अपने सिक्खों, मित्रों, पुत्रों और भाइयों से समान प्रेम होता है। हे सहेलियो! 'गुरु, गुरु' कहने से गुरु आत्मिक जीवन दे देता है ॥ १४ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ नानक नामु न चेतनी अगिआनी

अंधुले अवरे करम कमाहि । जम दरि बधे मारीअहि फिरि विसटा माहि पचाहि ।। १ ।। म० ३ ।। नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु । हरि कै नाइ समाइ रहे चूका आवणु जाणु ।। २ ।। पउड़ी ।। धनु संपै माइआ संचीऐ अंते दुखदाई । घर मंदर महल सवारीअहि किछु साथि न जाई । हर रंगी तुरे नित पालीअहि कितै कामि न आई । जन लावहु चितु हरिनाम सिउ अंति होइ सखाई । जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि सुखु पाई ।। १५ ।।

।। सलोकु महला ३ ।। हे नानक ! अन्धे अज्ञानी नाम-स्मरण नहीं करते और अन्यान्य काम करते हैं, (इसी कारण) वे यम के द्वार पर बँधे मार खाते हैं और फिर विकारों में जलते हैं ।। १ ।। म० ३ ।। हे नानक ! जो मनुष्य सतिगुरु द्वारा बताया धन्धा करते हैं, वे मनुष्य सच्चे तथा सत्कृत हैं । वे हरि के नाम में लीन रहते हैं और उनका जन्म-मरण समाप्त हो जाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। धन, दौलत और माया एकत्रित की जाती है, पर अन्तिम स्थिति में दुखदायी होती है । घर, मन्दिर और महल बनाए जाते हैं, लेकिन कुछ साथ नहीं जाता । कई रंगों के घोड़े-हाथी सदा पाले जाते हैं (सम्पन्नता प्रदर्शित की जाती है), लेकिन किसी काम नहीं आते । हे सज्जनो ! हरि के नाम के साथ मन लगाओ जो अन्त को मित्र बने । हे दास नानक ! जो मनुष्य नाम-स्मरण करता है, वह सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर सुख पाता है ।। १५ ।।

।। सलोकु म० ३ ।। बिनु करमै नाउ न पाईऐ पूरै करमि पाइआ जाइ । नानक नदरि करे जे आपणी ता गुरमति मेलि मिलाइ ।। १ ।। म० ३ ।। इक दझहि इक दबीअहि इकना कुते खाहि । इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भी फिरि हसणि पाहि । नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि ।। २ ।। ।। पउड़ी ।। तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते । तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते । तिन के तुरे जीन खुरगीर सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सिख साध संत चड़ि जाते । तिन के करम धरम कारज सभि पवितु हहि जो बोलहि हरि हरि राम नामु हरि साते । जिन कै पोतै पुंनु है से गुरमुखि सिख गुरू पहि जाते ।। १६ ।।

॥ सलोकु महला ३ ॥ प्रभु की पूर्णकृपा द्वारा हरि का नाम प्राप्त हो सकता है, कृपा के बिना नाम की प्राप्ति नहीं होती। हे नानक ! यदि हरि अपनी कृपादृष्टि करे, तो सतिगुरु की शिक्षा द्वारा परिचालित कर अपने में लीन कर लेता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मरण के उपरान्त कुछ जलाए जाते हैं, कुछ दबाए जाते हैं, कुछ को कुत्ते खाते हैं, कुछ जल में प्रवाहित किए जाते हैं और कुछ सूखे कुएँ में रखे जाते हैं। लेकिन, हे नानक ! शरीर के दबाने, जलाने आदि से यह पता नहीं लग सकता कि आत्माएँ कहाँ जाकर बस जाती हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो मनुष्य हरि के नाम में रँगे हैं, उनके द्वारा माया को इस्तेमाल करना, खाना-पहनना सब कुछ पवित्र है। उनके घर, मन्दिर, महल और सराय सब पवित्र हैं, जिनमें गुरमुख सिक्ख और अभ्यागत जाकर सुख की साँस लेते हैं। उनके घोड़े, जीनें, जीन के नीचे बिछाया जानेवाला मखमली कपड़ा सब पवित्र हैं, जिन पर गुरमुख (सिक्ख सन्त) सवारी करते हैं। उनके सब कामकाज पवित्र हैं, जो प्रतिपल हरि का नाम उच्चरित करते हैं। पूर्वकृत कर्मों के अनुसार जिनके पास पुण्य है, वे ही गुरमुख सिक्ख सतिगुरु की शरण आते हैं ॥ १६ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ नानक नावहु घुथिआ हलतु पलतु सभु जाइ। जपु तपु संजमु सभु हिरि लइआ मुठी दूजै भाइ। जम दरि बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ॥१॥ म० ३ ॥ संता नालि वैरु कमावदे दुसटा नालि मोहु पिआरु। अगै पिछै सुखु नही मरि जंमहि वारो वार। त्रिसना कदे न बुझई दुबिधा होइ खुआरु। मुह काले तिना निंदका तितु सचै दरबारि। नानक नाम विहूणिआ ना उरवारि न पारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो हरि नामु धिआइदे से हरि हरि नामि रते मन माही। जिना मनि चिति इकु अराधिआ तिना इकस बिनु दूजा को नाही। सेई पुरख हरि सेवदे जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाही। हरि के गुण नित गावदे हरि गुण गाइ गुणी समझाही। वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हरि नामि समाही ॥ १७ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ हे नानक ! नाम से विचलित व्यक्तियों का लोक-परलोक सब व्यर्थ जाता है, उनका जप, तप और संयम सब छिन जाता है और माया-मोह में उनकी बुद्धि ठगी जाती है। वे यम के द्वार पर मारे जाते हैं और बड़ी भारी सज़ा पाते हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ निन्दक मनुष्य सन्तजनों के साथ वैर करते हैं और दुर्जनों के साथ मोह रखते हैं,

उन्हें लोक-परलोक में कहीं सुख प्राप्त नहीं होता। बार-बार दुविधाग्रस्त होकर, दुखी होकर जन्मते-मरते हैं, उनकी तृष्णा कभी नहीं बुझती। हरि के सच्चे दरबार में उन निन्दकों के मुँह काले होते हैं। हे नानक! नाम से खाली व्यक्तियों को लोक-परलोक में कहीं भी आश्रय नहीं मिलता ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो मनुष्य हरि का नाम-स्मरण करते हैं, उनका अन्तर्मन हरि-नाम में रँगा जाता है। जिन्होंने एकाग्रचित्त होकर एक हरि की आराधना की है, वे उसके अतिरिक्त किसी दूसरे को नहीं जानते। पूर्वकृत कर्मों के अनुसार प्रभु के दरबार से ही जिनके माथे पर संस्कार रूपी लेख लिखा है, वे मनुष्य हरि का जाप करते हैं, वे सदा स्वयं हरि का गुणगान करते हैं, दूसरों को भी गुणगान के लिए गुणों के मालिक हरि की शिक्षा देते हैं। गुरमुखों में यह एक बड़ा गुण है कि वे पूर्णसतिगुरु के द्वारा हरि के नाम में लीन होते हैं ॥ १७ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ। सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ। पारस परसिऐ पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ। जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ। नानक गणतै सेवकु ना मिलै जिसु बखसे सो पवै थाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ महलु कुमहलु न जाणनी मूरख अपणै सुआइ। सबदु चीनहि ता महलु लहहि जोती जोति समाइ। सदा सचे का भउ मनि वसै ता सभा सोझी पाइ। सतिगुरु अपणै घरि वरतदा आपे लए मिलाइ। नानक सतिगुरि मिलिऐ सभ पूरी पई जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धंनु धनु भाग तिना भगत जना जो हरि नामा हरि मुखि कहतिआ। धनु धनु भाग तिना संत जना जो हरि जसु स्रवणी सुणतिआ। धनु धनु भाग तिना साध जना हरि कीरतनु गाइ गुणी जन बणतिआ। धनु धनु भाग तिना गुरमुखा जो गुरसिख लै मनु जिणतिआ। सभदू वडे भाग गुरसिखा के जो गुरचरणी सिख पड़तिआ ॥ १८ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ सतिगुरु के आदेश के अनुसार चलना अत्यन्त विषम है, (उसके लिए) सिर देना पड़ता है और अहंत्व गवाँकर (प्रभु-नाम में लीन होना पड़ता है)। जो मनुष्य सतिगुरु की शिक्षा द्वारा विरक्त होते हैं अर्थात् सांसारिक रूप से मृत-समान हैं, वे फिर जन्म-मरण में नहीं पड़ते और उनकी सारी सेवा स्वीकृत हो जाती है। जो मनुष्य सच्चे नाम में वृत्ति लगाता है, वह मानो पारस को स्पर्श कर स्वर्ण हो

जाता है। जिसके हृदय में आरम्भ से ही संस्कार रूपी लेख लिखा हो, उसे सतिगुरु-प्रभु मिलता है। हे नानक ! हिसाब-किताब करने से सेवक हरि को नहीं मिल सकता, जिस पर हरि-कृपा होती है वही सम्मानित होता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मूर्ख मनुष्य अपनी स्वार्थलिप्सा के कारण भली-बुरी जगह नहीं देखते। यदि सतिगुरु प्रदत्त ज्ञान को अपनाएँ तो हरि की ज्योति में वृत्ति लगाकर ठिकाना प्राप्त कर लें। यदि सच्चे हरि का भय मन में रहे, तो इस बात का ज्ञान हो जाता है कि सतिगुरु, जो निजस्वरूप में स्थित होता है, स्वयं ही सेवक को अपने में मिला लेता है। हे नानक ! प्रभु अपनी इच्छानुसार जिस मनुष्य पर कृपा करे, उसे सतिगुरु मिलने पर पूर्ण सफलता होती है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वे भक्त महाभाग्यवान हैं जो हरि का नाम लेते हैं, वे सन्त भाग्यशाली हैं जो अपने कानों से हरि का यश सुनते हैं। उन सज्जन लोगों के भाग्य धन्य हैं, जो हरि का कीर्तन कर गुणवान बनते हैं। वे गुरमुख भाग्यशाली हैं, जो गुरु की शिक्षा द्वारा अपने मन को जीतते हैं। सबसे अधिक भाग्यवान वे गुरसिक्ख हैं, जो सतिगुरु के चरण स्पर्श करते हैं ॥ १८ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ ब्रहमु बिंदै तिसदा ब्रहमतु रहै एक सबदि लिव लाइ। नवनिधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ। बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बुझहु करि वीचारु। नानक पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखु पाए जुग चारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ किआ गभरू किआ बिरधि है मनमुख त्रिसना भुख न जाइ। गुरमुखि सबदे रतिआ सीतलु होए आपु गवाइ। अंदरु त्रिपति संतोखिआ फिरि भुख न लगै आइ। नानक जि गुरमुखि करहि सो परवाणु है जो नामि रहे लिव लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ बलिहारी तिन कंउ जो गुरमुखि सिखा। जो हरि नामु धिआइदे तिन दरसनु पिखा। सुणि कीरतनु हरि गुण रवा हरि जसु मनि लिखा। हरि नामु सलाही रंग सिउ सभि किलबिख क्रिखा। धनु धंनु सुहावा सो सरीरु थानु है जिथै मेरा गुरु धरे विखा ॥ १९ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ जो मनुष्य केवल गुरु के शब्द में वृत्ति लगाकर ब्रह्म को पहचाने, उसका ब्राह्मणत्व बना रहता है। जो मनुष्य हरि को हृदय में स्थिर करे, नौ निधियाँ और अठारह सिद्धियाँ उसके पीछे चलती हैं। इसे गहराई से समझो कि सतिगुरु के बिना नाम नहीं मिलता। हे नानक ! सौभाग्यवश जिसे सतिगुरु मिले, वह चारों युगों में सुख पाता

है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ युवक हो चाहे वृद्ध —मनमुख की तृष्णा, भूख कभी दूर नहीं होती। सतिगुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य गुरु-ज्ञान में अनुरक्त होने के कारण अहंकार गवाँकर भीतर से सन्तुष्ट होते हैं। उनका हृदय तृप्ति के फलस्वरूप सन्तुष्ट होता है, उन्हें तदन्तर माया की भूख नहीं लगती। हे नानक ! गुरमुख मनुष्य जो कुछ करते हैं, वही स्वीकृत होता है क्योंकि वे प्रभु के नाम में वृत्ति लगाए रखते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो सिक्ख सतिगुरु के सान्निध्य में हैं, मैं उन पर बलिहारी हूँ। (परमात्मा करे कि) जो हरि-नाम का स्मरण करते हैं, मैं उनके दर्शन करूँ। कीर्तन सुनकर हरि के गुण गाऊँ और हरि-यश मन में लिख लूँ, प्रेमपूर्वक हरि-नाम की स्तुति करूँ और अपने पाप काट दूँ। वह शरीर रूपी स्थान धन्य है, जहाँ प्यारा सतिगुरु चरण रखता है ॥ १९ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ गुर बिनु गिआनु न होवई ना सुखु वसै मनि आइ। नानक नाम विहूणे मनमुखी जासनि जनमु गवाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सिध साधिक नावै नो सभि खोजदे थकि रहे लिव लाइ। बिनु सतिगुर किनै न पाइओ गुरमुखि मिलै मिलाइ। बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति। सा सिधि सा करमाति है अचिंतु करे जिसु दाति। नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै एहा सिधि एहा करमाति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हम ढाढी हरि प्रभ खसम के नित गावह हरि गुण छंता। हरि कीरतनु करह हरि जसु सुणह तिसु कवला कंता। हरि दाता सभु जगतु भिखारीआ मंगत जन जंता। हरि देवहु दानु दइआल होइ विचि पाथर क्रिम जंता। जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि धनवंता ॥ २० ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ सतिगुरु के बिना न आत्मिक जीवन की समझ होती है और न ही मन में सुख होता है। हे नानक ! नाम से खाली रहकर मनमुख मनुष्य-जन्म व्यर्थ गवाँ जाएँगे ॥१॥ म०३॥ समस्त सिद्ध और साधक नाम को ही खोजते हुए वृत्ति लगाकर थक गए हैं (लेकिन) सतिगुरु के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं हुआ। सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर ही मनुष्य प्रभु को मिलता है। नाम के बिना खाना-पहनना सब व्यर्थ है। (नाम के बिना) सब सिद्धियाँ और करामातें धिक्कार योग्य हैं। यही सिद्धि है और करामात है कि चिन्ता-रहित हरि उसे नाम की देन दे। हे नानक ! गुरु के सान्निध्य में रहकर हरि का नाम मन में बसता है —यही सिद्धि और करामात होती है ॥ २ ॥

।। पउड़ी ।। हम प्रभु-पति के गायक हमेशा प्रभु के गुणों के गीत गाते हैं। उस कमलापति प्रभु का ही कीर्तन करते हैं और यश श्रवण करते हैं। प्रभु दाता है, सारा संसार भिक्षुक है और जीव-जन्तु याचक हैं। हे हरि! पत्थरों में रहनेवाले कीड़ों को भी तुम संरक्षण देते हो। दास नानक का कथन है कि जो सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर नाम-स्मरण करते हैं, वे ही वास्तविक धनी होते हैं ।। २० ।।

।। सलोकु म० ३ ।। पड़णा गुड़णा संसार की कार है अंदरि त्रिसना विकारु। हउमै विचि सभि पड़ि थके दूजै भाइ खुआरु। सो पड़िआ सो पंडितु बीना गुर सबदि करे वीचारु। अंदरु खोजै ततु लहै पाए मोख दुआरु। गुण निधानु हरि पाइआ सहजि करे वीचारु। धंनु वापारी नानका जिसु गुरमुखि नामु अधारु ।।१।। म० ३ ।। विणु मनु मारे कोइ न सिझई वेखहु को लिव लाइ। भेख धारी तीरथी भवि थके ना एहु मनु मारिआ जाइ। गुरमुखि एहु मनु जीवतु मरै सचि रहै लिव लाइ। नानक इसु मन की मलु इउ उतरै हउमै सबदि जलाइ ।। २ ।। पउड़ी ।। हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई हरि नामु द्रिड़ावहु इक किनका। हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापड़ु पहिरहु खिम का। ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै हरि लागै पिआरा प्रिम का। हरि हरि नामु बोलहु दिनु राती सभि किलबिख काटै इक पलका। हरि हरि दइआलु होवै जिसु उपरि सो गुरमुखि हरि जपि जिणका ।। २१ ।।

।। सलोकु महला ३ ।। पढ़ना और विचारना संसार का एक काम बन गया है अर्थात् अन्य कार्यों की तरह प्रभु का चिन्तन-मनन भी एक काम हो गया है (क्योंकि) हृदय में तृष्णा और विकार टिके रहते हैं। अहंत्वभाव के कारण समस्त पण्डित पढ़-पढ़कर थक गए हैं, फिर भी माया-मोह में दुखी ही होते हैं। वही मनुष्य शिक्षित और बुद्धिमान है, जो सतिगुरु के ज्ञान पर चिन्तन-मनन करता है, जो अपने मन को खोजता है और अपने भीतर प्रभु को पाता और तृष्णा से बचाव के लिए रास्ता बना लेता है। वह गुणों के भण्डार हरि को प्राप्त करता है और आत्मिक स्थिरता में टिककर परमात्मा के गुणों में सुरति लगाए रखता है। हे नानक! इस प्रकार सतिगुरु के सान्निध्य में रहे हुए जिस मनुष्य को 'नाम' आसरा है, वह नाम का व्यापारी मुबारिक है ।। १ ।। म० ३ ।। तुम कोई भी मनुष्य-वृत्ति जोड़कर देख लो, मन को नियन्त्रित किए बिना कोई भी उपलब्धि नहीं हो

सकी। वेश धारण करनेवाले (बहुरूपिए) तीर्थों की यात्रा कर-करके रह गए हैं (क्योंकि) इस प्रकार मन नहीं मारा जाता। सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर मनुष्य सच्चे हरि में सुरति लगाए रखता है, इसलिए उसका मन जीवित होकर भी मृततुल्य है अर्थात् निर्लिप्त है। हे नानक ! इस मन का मैल इस प्रकार उतरता है कि मन की अहंभावना सतिगुरु के शब्द द्वारा जलाई जाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे मेरे भाई सन्तो ! मुझे थोड़ा बहुत हरि-नाम का रहस्य समझाओ। हे हरि-जनो ! हरि के नाम का शृंगार करो और क्षमा की पोशाक पहनो। यह शृंगार प्यारे हरि को भला लगता है। हरि को प्रेम का शृंगार भला लगता है। दिन-रात हरि का नाम-स्मरण करो; पलकमात्र में इससे समस्त पाप धुल जाते हैं। जिस गुरमुख पर हरि दयालु होता है, वह हरि का स्मरण कर जीत जाता है ॥ २१ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु। खंनली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु। गुरपरसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु। नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ चहु जुगी कलि काली कांढी इक उतम पदवी इसु जुग माहि। गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईऐ जिन कउ हरि लिखि पाहि। नानक गुरपरसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि हरि भगती माहि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि मेलि साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणि। हरि गुण गावा हरि नित चवा गुरमती हरि रंगु सदा माणि। हरि जपि जपि अउखध खाधिआ सभि रोग गवाते दुखा घाणि। जिना सासि गिरासि न विसरै से हरि जन पूरे सही जाणि। जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन चूकी जम की जगत काणि ॥ २२ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ इस मन को कई जन्मों से मैल लगा हुआ है, जिससे यह बहुत ही काला हुआ पड़ा है। जैसे तेली के कपड़े धोने से साफ़ नहीं होते, चाहे सौ बार धोने का प्रयत्न करो (वही स्थिति मन की है)। हे नानक ! यदि गुरु की कृपा से मन जीवन्मृत हो सके अर्थात् निर्लिप्त हो जाए और मति बदलकर माया से उदास हो जाए, तो फिर न तो मैल ही लगता है और न योनियों में ही भटकना पड़ता है ॥ १ ॥ म० ३ ॥ चारों युगों में कलियुग ही घोर काला कहा जाता है, परन्तु इस युग में भी एक उत्तम पद मिल सकता है। यह उत्तम पद यह है कि

जिनके हृदय में हरि (भक्ति रूपी लेख) लिख देता है, वे गुरमुख हरि की गुणस्तुति रूपी फल प्राप्त करते हैं और हे नानक ! वे मनुष्य गुरु की कृपा द्वारा प्रतिदिन हरि की भक्ति करते और भक्ति में ही लीन हो जाते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे हरि ! मुझे साधुपुरुषों की संगति में मिला, मैं मुख से तुम्हारे नाम की सुन्दर बोली बोलूँ, हरि-गुण गाऊँ, हरि-नाम उच्चरित करूँ और गुरु की शिक्षा के अनुसार आचरण करके हरि-प्रेम प्राप्त करूँ। हरि का भजन करके और भजन रूपी औषधि खाने से सारे दुख-रोग दूर हो जाते हैं। उन हरि-जनों को सचमुच पूर्ण समझो, जिन्हें साँस लेते और खाते कभी भी परमात्मा विस्मृत नहीं होता। जो मनुष्य सतिगुरु के सान्निध्य में रहकर हरि को स्मरण करते हैं, उनके लिए यमराज की तथा जगत की परतन्त्रता समाप्त हो जाती है ॥ २२ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ रे जन उथारै दबिओहु सुतिआ गई विहाइ। सतिगुर का सबदु सुणि न जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ। सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ। जगतु जलंदा डिठु मै हउमै दूजै भाइ। नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि। पिरकै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु। सेज सुहावी सदा पिरु रावै हरिवरु पाइआ नारि। ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि। नानक हरि प्रभ मेलि लई गुर कै हेति पिआरि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी। हरि जीउ तिन का दरसनु ना करहु पापिसट हतिआरी। ओहि घरि घरि फिरहि कुसुध मनि जिउ धरकट नारी। वडभागी संगति मिले गुरमुखि सवारी। हरि मेलहु सतिगुर दइआ करि गुर कउ बलिहारी ॥ २३ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ मोह रूपी दबाव में दबे हुए जीव ! तेरी उम्र सोते-सोते ही गुज़र गई है। सतिगुरु का शब्द सुनकर तुझे ज्ञान नहीं हुआ और न ही हृदय में अध्यात्म के लिए चाव उपजा है। गुणों से ख़ाली शरीर, जो सतिगुरु द्वारा बतलाई सेवा नहीं करता, जल जाने योग्य है। मैंने (इस प्रकार के) संसार को अहंत्व और माया-मोह में जलता हुआ देखा है। हे नानक ! गुरु के शब्द द्वारा सच्चे हरि को मन में स्मरण कर जीव सतिगुरु की शरण लेकर (अहंत्व से) बच जाते हैं ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ जिसकी अहंभावना सतिगुरु के शब्द में अनुरक्त होने से दूर हो जाती है, वह जीव रूपी नारी सुहागिन है। वह नारी अपने प्रभु-पति के

हुक्म का पालन करती है, इसलिए उसका शृंगार सफल समझो। जिस जीव-स्त्री ने प्रभु-पति प्राप्त कर लिया है, उसकी सेज सुन्दर है क्योंकि उसे पति सदा मिला रहता है। वह स्त्री सौभाग्यशालिनी है क्योंकि उसका प्रभु-पति कभी नहीं मरता, इसलिए वह कभी दुखी नहीं होती। हे नानक! गुरु के प्रेम में उसकी वृत्ति होने के कारण प्रभु ने उसे अपने साथ मिलाया है ॥२॥ पउड़ी ॥ जो मनुष्य प्यारे सतिगुरु की निन्दा करते हैं, वे निकृष्ट हैं, परमात्मा कृपा करे (उनसे प्रभु ही बचाए)। हे भाई! उनका दर्शन न करो, वे बड़े पापी और हत्यारे हैं। वे खोटे आदमी व्यभिचारिणी स्त्री के समान घर-घर फिरते हैं। भाग्यशाली मनुष्य सतिगुरु द्वारा प्रदान की हुई गुरमुखों की संगति में मिलते हैं। हे हरि! मैं उस सतिगुरु पर बलिहारी हूँ। कृपा करो और सतिगुरु से मेरी भेंट करवा दो ॥ २३ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ। जंमणु मरणा मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ। हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ। नानक हउ बलिहारी तिंन कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार। पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु। सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि अपणी दइआ करि हरि बोली बैणी। हरि नामु धिआई हरि उचरा हरि लाहा लैणी। जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन हउ कुरबैणी। जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैणी। हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ॥ २४ ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ सतिगुरु की सेवा से मनुष्य को सुख प्राप्त होता है, फिर कभी क्लेश नहीं होता। उसका जन्म-मरण समाप्त हो जाता है और उन पर यमराज का कुछ वश नहीं चलता। हरि के साथ उसका मन मिला रहता है और वह सच्चे हरि में लीन रहता है। हे नानक! मैं उन पर बलिहारी हूँ, जो सतिगुरु के प्रेम में लीन रहते हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जीव-स्त्री चाहे कितने ही शृंगार करे सतिगुरु के शब्द के बिना कभी शुद्ध नहीं हो सकती, क्योंकि वह पति का सही मूल्यांकन कभी नहीं कर सकती और सदैव उसकी माया में रत रहती है। हे नानक! ऐसी स्त्री मानो खोटी तथा अशुभ लक्षणों वाली होती है और स्त्रियों में वह दुष्टा स्त्री (कहलाती है) ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे हरि!

अपनी कृपा करो। मैं तेरी वाणी उच्चरित करूँ, हरि-नाम स्मरण करूँ, हरि-नाम का उच्चारण करूँ और प्रभु-स्मरण का लाभ प्राप्त करूँ। मैं उन पर बलिहारी हूँ, जो दिन-रात हरि का नाम जपते हैं। मैं अपनी आँखों से सतिगुरु की सेवा करनेवालों का सम्पर्क करूँ। मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी हूँ, जिसने मुझे प्यारा सजन-प्रभु मिला दिया है॥ २४॥

॥ सलोकु म० ४॥ हरि दासन सिउ प्रीति है हरि दासन को मितु। हरि दासन कै वसि है जिउ जंती कै वसि जंतु। हरि के दास हरि धिआइदे करि प्रीतम सिउ नेहु। किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु। जो हरि दासन की उसतति है सा हरि की वडिआई। हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई। सो हरि जनु नामु धिआइदा हरि हरि जनु इक समानि। जनु नानकु हरि का दासु है हरि पैज रखहु भगवान॥ १॥ म० ४॥ नानक प्रीति लाई तिनि साचै तिसु बिनु रहणु न जाई। सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई॥ २॥ पउड़ी॥ रैणि दिनसु परभाति तूहै ही गावणा। जीअ जंत सरबत नाउ तेरा धिआवणा। तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा। भगत जना कै संगि पाप गवावणा। जन नानक सद बलिहारै बलि बलि जावणा॥ २५॥

॥ सलोकु महला ४॥ प्रभु की अपने सेवकों के साथ प्रीति होती है, प्रभु अपने सेवकों का मित्र है। जिस प्रकार बाजा उसके बजानेवाले के वश में होता है, उसी प्रकार प्रभु अपने सेवकों के अधीनस्थ होता है। प्रभु के सेवक अपने प्रियतम-प्रभु के साथ प्रेम करके उसे स्मरण करते हैं (और कहते हैं कि) हे प्रभु! कृपा करके सुनो और सारे संसार में नाम की वर्षा कर दो। हरि के सेवकों की महानता हरि की ही महानता है। हरि को अपनी यह महानता भली लगती है। इसलिए वह अपने सेवक की जय-जयकार करा देता है। हरि का दास वह है, जो उसका नाम स्मरण करता है। हरि और हरि का सेवक एकरूप हैं। हे भगवान! दास नानक तुम्हारा सेवक है, उस सेवक की लाज रखो॥ १॥ ॥ म० ४॥ उस सच्चे हरि ने नानक के हृदय में प्रेम पैदा किया है। अब उसके बग़ैर जिया नहीं जाता। सतिगुरु मिल जाए तभी पूर्णहरि मिलता है और जिह्वा हरि-नाम के आस्वादन में लग जाती है॥२॥ पउड़ी॥ हे हरि! दिन-रात तथा ब्रह्ममुहूर्त में तुम ही गुणगान के योग्य हो। सब जीव-जन्तु तुम्हारा ही नाम-स्मरण करते हैं, तुम देन देनेवाले दाता हो, तुम्हारा ही

दिया हुआ हम सब खाते हैं और भक्तों की संगति में अपने पाप दूर करते हैं। दास नानक भक्तों पर हमेशा बलिहारी है और बार-बार उनका गुण गाता है ॥ २५ ॥

॥ सलोकु म० ४ ॥ अंतरि अगिआनु भई मति मधिम सतिगुर की परतीति नाही। अंदरि कपटु सभु कपटो करि जाणै कपटे खपहि खपाही। सतिगुर का भाणा चिति न आवै आपणै सुआइ फिराही। किरपा करे जे आपणी ता नानक सबदि समाही ॥ १ ॥ म० ४ ॥ मनमुख माइआ मोह विआपे दूजै भाइ मनूआ थिरु नाहि। अनदिनु जलत रहहि दिनु राती हउमै खपहि खपाहि। अंतरि लोभु महा गुबारा तिनकै निकटि न कोई जाहि। ओइ आपि दुखी सुखु कबहू न पावहि जनमि मरहि मरि जाहि। नानक बखसि लए प्रभु साचा जि गुरचरनी चितु लाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ संत भगत परवाणु जो प्रभि भाइआ। सेई बिचखण जंत जिनी हरि धिआइआ। अंम्रितु नामु निधानु भोजनु खाइआ। संत जना की धूरि मसतकि लाइआ। नानक भए पुनीत हरि तीरथि नाइआ ॥ २६ ॥

॥ सलोकु महला ४ ॥ मनमुख के हृदय में अज्ञान है, उसकी बुद्धि ओछी होती है और सतिगुरु पर उसे विश्वास नहीं होता, मन में छल होने से वह संसार में भी छल ही छल व्याप्त हुआ समझता है। मनमुखी जीव स्वयं दुखी होते हैं और दूसरों को भी दुखी करते हैं। सतिगुरु का हुक्म उनके हृदय में नहीं आता और वे अपने स्वार्थ के पीछे निरन्तर भटकते फिरते हैं। हे नानक! यदि हरि उन पर कृपा करे, तो वे गुरु के शब्द में लीन होते हैं ॥ १ ॥ म० ४ ॥ माया-मोह में ग्रसित मनमुखों का मन माया के प्रेम में एक स्थान पर नहीं टिकता, वे हर वक्त रात-दिन (तृष्णा में) जलते रहते हैं, अहंकार में दुखी होते हैं, दूसरों को दुखी करते हैं, उनके अन्दर लोभ रूपी अन्धकार गहरा होता है, कोई मनुष्य उनके निकट नहीं जाता, वे अपने आप ही दुखी रहते हैं, कभी सुखी नहीं होते, हमेशा जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं। हे नानक! यदि वे गुरु के चरणों में मन लगाएँ तो सच्चा हरि उन्हें क्षमा कर दे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो मनुष्य प्रभु को प्यारे हैं, वे सन्त हैं, भक्त हैं और वे ही (प्रभु-दरबार में) स्वीकृत हैं। वे ही मनुष्य समझदार हैं जो हरि का नाम-स्मरण करते हैं, वे आत्मिक जीवन देनेवाला नाम रूपी भोजन खाते हैं और सन्तों की चरणधूलि अपने

मस्तक पर लगाते हैं। हे नानक ! ऐसे मनुष्य हरि के स्मरण रूपी तीर्थ पर स्नान करते हैं और पवित्र हो जाते हैं ।। २६ ।।

।। सलोकु म० ४ ।। गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ । नामो चितवै नामु पड़ै नामि रहै लिव लाइ । नामु पदारथु पाइआ चिंता गई बिलाइ । सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै तिसना भुख सभ जाइ । नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ।। १ ।। म० ४ ।। सतिगुर पुरखि जि मारिआ भ्रमि भ्रमिआ घरु छोडि गइआ । ओसु पिछै वजै फकड़ी मुहु काला आगै भइआ । ओसु अरलु बरलु मुहहु निकलै नित झगू सुटदा मुआ । किआ होवै किसै ही दै कीतै जां धुरि किरतु ओसदा एहो जेहा पइआ । जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु झूठा कूड़ु बोले किसै न भावै । वेखहु भाई वडिआई हरि संतहु सुआमी अपुने की जैसा कोई करै तैसा कोई पावै । एहु ब्रहम बीचारु होवै दरि साचै अगो दे जनु नानकु आखि सुणावै ।। २ ।। पउड़ी ।। गुरि सचै बधा थेहु रखवाले गुरि दिते । पूरन होई आस गुर चरणी मन रते । गुरि क्रिपालि बेअंति अवगुण सभि हते । गुरि अपणी किरपा धारि अपणे करि लिते । नानक सद बलिहार जिसु गुर के गुण इते ।। २७ ।।

।। सलोकु महला ४ ।। यदि कोई मनुष्य सतिगुरु के सान्निध्य में है, उसके भीतर शीतलता है और वह मन-तन से नाम में लीन रहता है। वह नाम का चिन्तन करता है, नाम ही पढ़ता है और नाम में ही सुरति लगाए रखता है। (वास्तव में) नाम रूपी सुन्दर वस्तु पाकर उसकी चिन्ता मिट जाती है। यदि गुरु मिल जाए तो नाम हृदय में विकसित होता है, तृष्णा दूर होती है, माया की भूख मिट जाती है। हे नानक ! नाम में रँगे जाने के कारण नाम ही हृदय रूपी पल्लू में लिखा जाता है ।।१।। म० ४ ।। जो मनुष्य गुरु-परमेश्वर की ओर से मारा हुआ है अर्थात् जो प्रभु की ओर से तिरस्कृत है, वह भ्रम में भटकता हुआ अपने ठिकाने से हिल जाता है (अर्थात् निराश्रित हो जाता है)। उसके पीछे लोग उसकी बदनामी करते हैं और आगे जाकर उसके मुँह पर कालिख लगती है। उसके मुँह से केवल बकवास ही निकलता है, वह सदा निन्दा-कर्म करके दुखी होता रहता है। किसी के करने से कुछ नहीं हो सकता क्योंकि प्रारम्भ से ही (पूर्वकृत कर्मों के संस्कारों के अनुसार) उसे ऐसी कमाई करनी पड़ी है। वह जहाँ जाता है वहीं झूठा होता है, झूठ बोलता है और किसी को भला नहीं लगता।

हे सन्तो ! प्यारे मालिक-प्रभु की महानता देखो कि कोई जैसी कमाई करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। सच्ची चिन्तना सच्चे दरबार में होती है, (इसलिए) दास नानक पहले ही तुम्हें कहकर सुना रहा है (ताकि सुफल पाने के लिए सुकर्म करो) ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सच्चे सतिगुरु ने सत्संग रूपी गाँव बसाया है, उस गाँव के लिए सत्संगी रक्षक भी सतिगुरु ने ही दिए हैं। जिनके मन गुरु के चरणों में लगे हैं, उनकी आशा पूर्ण हो गई है। दयालु और अनन्त गुरु ने उनके सारे पाप नष्ट कर दिए हैं, अपनी कृपा कर सतिगुरु ने उन्हें अपना बना लिया है। हे नानक ! मैं सदा उस सतिगुरु पर बलिहारी हूँ जिसमें इतने गुण हैं ॥ २७ ॥

॥ सलोक म० १ ॥ ता की रजाइ लेखिआ पाइ अब किआ कीजै पांडे। हुकमु होआ हासलु तदे होइ निबड़िआ हंढहि जीअ कमांदे ॥ १ ॥ म० २ ॥ नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे। जहा दाणे तहां खाणे नानका सचु हे॥ २॥ पउड़ी ॥ सभे गला आपि थाटि बहालीओनु। आपे रचनु रचाइ आपे ही घालिओनु। आपे जंत उपाइ आपि प्रतिपालिओनु। दास रखे कंठि लाइ नदरि निहालिओनु। नानक भगता सदा अनंदु भाउ दूजा जालिओनु ॥ २८ ॥

॥ सलोक महला १ ॥ हे पण्डित ! अब कुछ नहीं बनता। प्रभु की इच्छा के अनुसार पूर्वकृत कर्मों का लिखा लेख भोगना पड़ता है। जब प्रभु का हुक्म हुआ, तब यह फ़ैसला हुआ और जीव (उसी लेख के अनुसार) कर्म करने में प्रवृत्त हैं ॥ १ ॥ म० २ ॥ हे नानक ! जीव की नाक में प्रभु-इच्छा की नकेल है, जो पति-प्रभु के हाथ में है। पूर्वकृत कर्मों के अनुसार बना हुआ स्वभाव अब जीव को धकेलकर चला रहा है। सच यह है कि जहाँ जीव का दाना-पानी होता है, वहीं उसे खाना पड़ता है॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु ने स्वयं ही तमाम योजनाएँ बनाकर स्थिर की हैं, वह संसार की रचना कर स्वयं ही उसे नष्ट करता है। आप ही जीवों को पैदा करता है और आप ही पालता है, आप ही अपने सेवकों को गले लगाकर रखता है, आप ही कृपादृष्टि से देखता है। हे नानक ! भक्तों को सदैव प्रसन्नता रहती है, क्योंकि उनका माया के प्रति नेह प्रभु ने जला दिया है ॥ २८ ॥

॥ सलोकु म० ३ ॥ ए मन हरि जी धिआइ तू इक मनि इक चिति भाइ। हरि कीआ सदा सदा वडिआईआ देइ न पछोताइ। हउ हरि कै सद बलिहारणै जितु सेविऐ सुखु

पाइ । नानक गुरमुखि मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥ १ ॥ ॥ म० ३ ॥ आपे सेवा लाइअनु आपे बखस करेइ । सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइ । नानक नामु धिआइनि तिन निज घरि वासु है जुगु जुगु सोभा होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू करण कारण समरथु हहि करते मै तुझ बिनु अवरु न कोई । तुधु आपे सिसटि सिरजीआ आपे फुनि गोई । सभु इको सबदु वरतदा जो करे सु होई । वडिआई गुरमुखि देइ प्रभु हरि पावै सोई । गुरमुखि नानक आराधिआ सभि आखहु धंनु धंनु धंनु गुरु सोई ॥ २९ ॥ १ ॥ सुधु ॥

॥ सलोकु महला ३ ॥ प्रेमपूर्वक एकाग्रचित्त होकर हरि का स्मरण करो । हरि में यह शाश्वत गुण है कि वह देन देकर पश्चात्ताप नहीं करता । मैं हरि पर सदा बलिहारी हूँ, जिसकी सेवा करने से सुख मिलता है । हे नानक ! गुरमुख व्यक्ति अहंकार को सतिगुरु के ज्ञान द्वारा जलाकर हरि में लीन रहते हैं ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हरि ने आप ही मनुष्यों को सेवा में लगाया है, वह आप ही कृपा करता है, आप ही सबका माँ-बाप है और आप ही सबकी सँभाल करता है । हे नानक ! जो मनुष्य नाम जपते हैं, वे अपने अवलम्ब पर स्थिर होते हैं और हर एक युग में उनकी शोभा होती है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे कर्तार ! तुम समस्त सृष्टि की सृजना करने में समर्थ हो, तुम्हारे अतिरिक्त तुम्हारे जैसा दूसरा कोई दिखाई नहीं देता; तुम सारी सृष्टि को पैदा करते हो और आप ही तदन्तर विनष्ट करते हो । सर्वत्र हरि का हुक्म क्रियान्वित है, जो वह करता है वही होता है । जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में होता है, उसे प्रभु महत्व देता है और वह हरि में ही लीन रहता है । हे नानक ! गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य हरि का स्मरण करते हैं । (इसलिए सब कहो कि) वह सतिगुरु धन्य है, धन्य है ॥ २९ ॥ १ ॥ सुधु ॥

रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई । ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥ १ ॥ मन रे संसारु अंध गहेरा । चहु दिस पसरिओ है जम जेवरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबित पड़े पड़ि कबिता मूए कपड़ केदारै जाई । जटा धारि धारि जोगी मूए तेरी गति इनहि

न पाई ॥ २ ॥ दरबु संचि संचि राजे मूए गडि ले कंचन भारी । बेद पड़े पड़ि पंडित मूए रूपु देखि देखि नारी ॥ ३ ॥ राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा । हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥ ४ ॥ १ ॥

हिन्दू लोग मूर्तियों की पूजा कर-करके दुखी हो रहे हैं, मुसलमान सज्दा (झुककर प्रणाम) कर रहे हैं। हिन्दुओं ने अपने मुर्दे जला दिए और मुस्लिमों ने दबा दिए। हे प्रभु ! तुम्हारी सही पहचान दोनों में से किसी को नहीं हो सकी ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! (स्मरण से पथविचलित होकर) जगत एक गहरा अँधेरा बना हुआ है और चारों दिशाओं में यमों की फाँसी बिखरी पड़ी है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कई (विद्वान) लोग अपनी-अपनी काव्य-रचना पढ़ने में ही मस्त हैं, गुदड़ी पहननेवाले साधु लोग केदारनाथ आदि तीर्थों पर जाकर व्यर्थ जीवन गवाँते हैं, योगी लोग जटाएँ रख-रखकर ही यह समझते रहे कि उनकी ही राह सही है। हे प्रभु ! तुम्हारे बारे में सही ज्ञान इन लोगों को न हुआ ॥ २ ॥ राजा धन जोड़-जोड़कर उम्र गवाँ गए, उन्होंने सोने आदि के ढेर धरती में गाड़कर रखे, पण्डित लोग वेदपाठी होने के अहंत्व में खपते हैं और स्त्रियाँ अपना रूप देखने में ही व्यर्थ ज़िन्दगी बिता रही हैं ॥ ३ ॥ अपने भीतर झाँककर देख लो, परमात्मा के नाम का स्मरण किए बिना सब जीव दुखी हो रहे हैं। कबीर उपदेश की बात कहते हैं कि परमात्मा के नाम के बिना किसी को जीवन की सही समझ नहीं होती ॥ ४ ॥ १ ॥

जब जरीऐ तब होइ भसम तनु रहै किरम दल खाई । काची गागरि नीरु परतु है इआ तन की इहै बडाई ॥ १ ॥ काहे भईआ फिरतौ फूलिआ फूलिआ । जब दस मास उरध मुख रहता सो दिनु कैसे भूलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मधु माखी तिउ सठोरि रसु जोरि जोरि धनु कीआ । मरती बार लेहु लेहु करीऐ भूतु रहन किउ दीआ ॥ २ ॥ देहुरी लउ बरी नारि संग भई आगै सजन सुहेला । मरघट लउ सभु लोगु कुटंबु भइओ आगै हंसु अकेला ॥ ३ ॥ कहतु कबीर सुनहु रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ । झूठी माइआ आपु बंधाइआ जिउ नलनी भ्रमि सूआ ॥ ४ ॥ २ ॥

(मरणोपरान्त यदि शरीर) जलाया जाए तो यह राख हो जाता है, (क़ब्र में दबा रहे तो) चींटियों का समूह इसे खा जाता है। जैसे कच्चे घड़े में पानी डाला जाता है (और घड़ा फूट जाता है), वैसे ही शरीर के बीच

से आत्मा निकल जाती है, इसलिए) इस शरीर का इतना ही महत्व है जितना कच्चे घड़े का ॥ १ ॥ हे भाई ! तू किस बात के अहंकार में भूला फिरता है ? तुझे वह समय क्यों विस्मृत हो गया है, जब तू माँ के पेट में दस महीने उलटा लटका रहा था ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस प्रकार मक्खी रस का संग्रह करके शहद एकत्रित करती है, उसी प्रकार मूर्ख व्यक्ति ने बचत कर-करके धन जोड़ा (पर बाद में वह नष्ट ही हो गया)। मृत्यु होने पर सब यही कहते हैं कि ले चलो, ले चलो, अब यह खत्म हो चुका है, अधिक समय तक घर पर रखने का कोई लाभ नहीं ॥ २ ॥ घर की देहरी तक पत्नी साथ जाती है, आगे मित्र-दोस्त उठाकर ले जाते हैं, श्मशान तक परिवार के व्यक्ति तथा दूसरे आदमी ले जाते हैं, लेकिन परलोक में तो जीवात्मा अकेला ही जाता है ॥ ३ ॥ कबीर का कथन है कि हे जीव ! तू उस कुएँ में गिरा पड़ा है, जिसे मृत्यु ने घेरा हुआ है। लेकिन तूने स्वयं को इस माया से बाँध रखा है, जिसके साथ निर्वाह होना सम्भव नहीं है। जैसे तोता मृत्यु के भय से स्वयं को नलकी के साथ चिपटाए रखता है (उसी प्रकार जीव माया में सम्पृक्त रहता है और यही उसकी मृत्यु का कारण बनती है) ॥ ४ ॥ २ ॥

बेद पुरान सभै मत सुनि कै करी करम की आसा। काल ग्रसत सभ लोग सिआने उठि पंडत पै चले निरासा ॥ १ ॥ मन रे सरिओ न एकै काजा। भजिओ न रघुपति राजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बनखंड जाइ जोगु तपु कीनो कंद मूलु चुनि खाइआ। नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइआ ॥ २ ॥ भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तनु दीना। राग रागनी डिंभ होइ बैठा उनि हरि पहि किआ लीना ॥ ३ ॥ परिओ कालु सभै जग ऊपर माहि लिखे भ्रम गिआनी। कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिन चतुर व्यक्तियों ने वेद-पुराण आदि पुस्तकों के समस्त मत सुनकर कर्मकाण्ड की आशा रखी (अर्थात् कर्मकाण्ड के माध्यम से जीवन सुधारना चाहा), वे सब आत्मिक मृत्यु में ही ग्रसित रहे। पण्डित लोग भी आशा पूर्ण हुए बिना यहाँ से उठकर चले गए ॥ १ ॥ हे मन ! तूने ज्योतिरूप परमात्मा का भजन नहीं किया, तुझसे यह एक कार्य भी सम्पन्न नहीं हो सका ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कई लोगों ने जंगल में जाकर योगसाधना की, तप किया, कन्द-मूल खा-खाकर गुज़ारा किया, योगी, कर्मकाण्डी, अलख पुकारनेवाले योगी, मौनी —ये सब यम के लेखे में ही लिखे गए अर्थात् इन्हें मृत्यु के भय से मुक्ति नहीं मिली ॥ २ ॥ जिस मनुष्य ने शरीर पर

धार्मिक चिह्न आदि लगा लिये हैं (गोदने बनवाए हैं), परन्तु प्रेमा-भक्ति उसके हृदय में पैदा नहीं हुई, जो राग-रागिनियाँ तो गाता है लेकिन निरा पाखण्डमूर्ति ही बन बैठा है, ऐसे मनुष्य को परमात्मा द्वारा कुछ नहीं मिलता ॥ ३ ॥ समस्त जगत पर मृत्यु का भय छाया है, भ्रमित ज्ञानी भी उसी लेख में लिखे गए हैं (अर्थात् भय-ग्रस्त हैं)। कबीर का कथन है कि जिन मनुष्यों ने प्रेमा-भक्ति को समझ लिया है, वे मृत्यु के भय से मुक्त हो गए हैं ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ घरु २ ॥ दुइ दुइ लोचन पेखा। हउ हरि बिनु अउरु न देखा। नैन रहे रंगु लाई। अब बेगल कहनु न जाई ॥ १ ॥ हमरा भरमु गइआ भउ भागा। जब राम नाम चितु लागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाजीगर डंक बजाई। सभ खलक तमासे आई। बाजीगर स्वांगु सकेला। अपने रंग रवै अकेला ॥ २ ॥ कथनी कहि भरमु न जाई। सभ कथि कथि रही लुकाई। जाकउ गुरमुखि आपि बुझाई। ताके हिरदै रहिआ समाई ॥ ३ ॥ गुर किंचत किरपा कीनी। सभु तनु मनु देह हरि लीनी। कहि कबीर रंगि राता। मिलिओ जगजीवन दाता ॥ ४ ॥ ४ ॥

मैं जिस तरफ़ आँख खोलकर देखता हूँ, मुझे परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा दिखाई ही नहीं देता। मेरी आँखें प्रभु-प्रेम में पगी हैं। अब मुझसे कोई दूसरी बात नहीं कही जा सकती (अर्थात् मेरी स्थिति इतनी ईश्वरमय है कि मुझे कुछ भी और कहने की आवश्यकता नहीं रही) ॥ १ ॥ जबसे मेरा हृदय परमात्मा के नाम में लीन है (तबसे) मेरा भ्रम दूर हो गया है। अब मुझे कोई भय नहीं रह गया है (क्योंकि अब प्रभु से अपनत्व हो गया है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुझे लगता है कि जब प्रभु-बाज़ीगर डुगडुगी बजाता है, तो समस्त जनता अर्थात् दुनिया तमाशा देखने आ जाती है, और जब वह बाज़ीगर खेल ख़त्म करता है, तो अकेला आप ही अपनी मौज में रह जाता है ॥ २ ॥ लेकिन यह (द्वैत का) भ्रम केवल बातों से दूर नहीं होता, मात्र बात कर-करके तो दुनिया थक चुकी है। जिस मनुष्य को परमात्मा स्वयं गुरु के द्वारा सुबुद्धि देता है, उसके हृदय में वह परमात्मा सदा आप स्थिर रहता है ॥ ३ ॥ कबीर का कथन है कि जिस मनुष्य पर गुरु ले थोड़ी सी भी कृपा की है, उसका तन और मन सब हरि में लीन हो जाता है, वह प्रभु के प्रेम में रँगा जाता है। उसे वह प्रभु मिल जाता है, जो समस्त जगत को जीवन देनेवाला है ॥ ४ ॥ ४ ॥

जाके निगम दूध के ठाटा। समुंदु बिलोवन कउ माटा। ताकी होहु बिलोवन हारी। किउ मेटैगो छाछि तुहारी ॥ १ ॥ चेरी तू रामु न करसि भतारा। जगजीवन प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे गलहि तउकु पग बेरी। तू घर घर रमईऐ फेरी। तू अजहु न चेतसि चेरी। तू जमि बपुरी है हेरी ॥ २ ॥ प्रभ करन करावनहारी। किआ चेरी हाथ बिचारी। सोई सोई जागी। जितु लाई तितु लागी ॥ ३ ॥ चेरी तै सुमति कहां ते पाई। जाते भ्रम की लीक मिटाई। सु रसु कबीरै जानिआ। मेरो गुरप्रसादि मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे आत्मा ! तू उस प्रभु के नाम का मन्थन करनेवाली बन। वेद आदि धार्मिक ग्रन्थ जिसके दूध के स्रोत हैं और सत्संग उस दूध के मथने के लिए मटकी है। (हरि-मिलन यदि तुझे न हुआ तो भी) साधारण आनन्द (धार्मिक पुस्तकों के पठन-पाठन का) तो बना ही रहेगा ॥१॥ हे आत्मा ! तू उस परमात्मा को अपना पति क्यों नहीं बनाती, जो जगत का जीवन है और सबके प्राणों का सहारा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे आत्मा ! तेरे गले में मोह का पट्टा और पैरों में इच्छाओं की ज़ंजीरें होने के कारण तुझे परमात्मा ने घर-घर घुमाया है। अब भी तू उस प्रभु को स्मरण नहीं करती। हे अभागिन ! तुझे यमराज ने अपनी दृष्टि में रखा है अर्थात् मृत्यु के उपरान्त पता नहीं तू कितने आवागमन में पड़ी रहेगी ? ॥ २ ॥ परन्तु इस बेचारी आत्मा का भी क्या वश है ? सब कुछ करने और करानेवाला प्रभु आप ही है। यह कई जन्मों की सोई आत्मा तभी जागती है (जब प्रभु जगाता है); जिधर प्रभु इसे लगाता है, उस ओर ही यह लगती है ॥३॥ (प्रभु-कृपा से सचेत जीवात्मा को जिज्ञासु आत्मा पूछती है कि) हे भाग्यशाली जीवात्मा ! तुझे कहाँ से यह सुबुद्धि प्राप्त हुई है, जिससे तेरे वे संस्कार मिट गए हैं जो दुबिधा में डाले रखते थे ? कबीर उत्तर देते हैं कि सतिगुरु की कृपा से मेरी उस आत्मिक आनन्द से जान-पहचान हो गई है और मेरा मन उसमें लीन हो गया है ॥ ४ ॥ ५ ॥

जिह बाझु न जीआ जाई। जउ मिलै त घाल अघाई। सद जीवनु भलो कहांही। मूए बिनु जीवनु नाही ॥ १ ॥ अब किआ कथीऐ गिआनु बीचारा। निज निरखत गत बिउहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घसि कुंकम चंदनु गारिआ। बिनु नैनहु जगतु निहारिआ। पूति पिता इकु जाइआ। बिनु ठाहर नगरु बसाइआ ॥ २ ॥ जाचक जन दाता पाइआ। सो दीआ

न जाई खाइआ। छोडिआ जाइ न मूका। अउरन्ह पहि जाना चूका॥ ३॥ जो जीवन मरना जानै। सो पंच सैल सुख मानै। कबीरै सो धनु पाइआ। हरि भेटत आपु मिटाइआ॥ ४॥ ६॥

जिस (पवित्र जीवन) के बिना जीवित नहीं रहा जा सकता, जिस जीवन के मिल जाने से साधना सफल हो जाती है, जो जीवन सत्यस्वरूप है और जिसे लोग सुन्दर जीवन कहते हैं, वह जीवन अहंभाव त्यागे बग़ैर नहीं मिल सकता॥ १॥ जब उस 'सच्चे जीवन' की सूझ मिल जाती है, तब कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रहती। (इसलिए) अपने आप को देखते हुए जगत की सदा परिवर्तित होनेवाली चाल को परख लेना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ जिस पुत्र (जीवात्मा) ने साधना करके अपनी आत्मा को प्रभु में मिला दिया है, उसने अपनी आँखों को (जगत-)तमाशे से हटाकर जगत की वास्तविकता को देख लिया है। उसने अपने भीतर अपने पिता-प्रभु को प्रकट कर लिया है। पहले वह सदा बाहर भटकता था, अब (उसने भीतर मानो) शहर बसा लिया है अर्थात् अब उसे बाहर भटकने की ज़रूरत नहीं रही॥ २॥ जो मनुष्य भिखारी है, उसे दाता-प्रभु आप मिल गया है। उसे वह आत्मिक जीवन की इतनी देन देता है कि जो खर्च करने से खत्म नहीं होती। उस देन को छोड़ने को मन नहीं करता है, न वह कभी खत्म होती है (और उसके प्रभाव से) दूसरों के द्वार पर भटकने की प्रवृत्ति भी समाप्त होती है॥३॥ जो मनुष्य इस आत्मिक स्थिर जीवन के लिए अहम्‌भाव मिटाने की जाँच सीख लेता है, वह सन्तों वाले अटल आत्मिक सुख को पा लेता है। मैंने (कबीर ने) भी वह आत्मिक जीवन रूपी धन प्राप्त कर लिया है और प्रभु के चरणों में जगह पाकर अहंत्व मिटा लिया है॥ ४॥ ६॥

किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ। किआ बेद पुरानां सुनीऐ। पड़े सुने किआ होई। जउ सहज न मिलिओ सोई॥ १॥ हरि का नामु न जपसि गवारा। किआ सोचहि बारंबारा॥१॥ रहाउ॥ अंधिआरे दीपकु चहीऐ। इक बसतु अगोचर लहीऐ। बसतु अगोचर पाई। घटि दीपकु रहिआ समाई॥ २॥ कहि कबीर अब जानिआ। जब जानिआ तउ मनु मानिआ। मन माने लोगु न पतीजै। न पतीजै तउ किआ कीजै॥३॥७॥

(हे मूर्ख!) वेद, पुराण आदि धार्मिक ग्रन्थों के पठन-पाठन से तब तक कोई लाभ नहीं, जब तक कि इस पढ़ने-सुनने के परिणामस्वरूप उस प्रभु की प्राप्ति न हो॥ १॥ हे मूर्ख! तू परमात्मा का नाम-स्मरण

नहीं करता (फिर) बार-बार दूसरी कल्पनाएँ करने से तुझे क्या लाभ होगा ? ।। १ ।। रहाउ ।। (अज्ञान के) अँधेरे में दीपक की ज़रूरत होती है, ताकि भीतर से वह हरि-नाम रूपी पदार्थ मिल सके जिस तक इन्द्रियों की साधारण पहुँच नहीं हो सकती । जिस मनुष्य को वह अगम्य हरि-नाम रूपी पदार्थ मिल जाता है, उसके भीतर वह (विवेक का) दीपक फिर सदा स्थिर रहता है ।। २ ।। कबीर का कथन है कि उस अगम्य हरि-नाम रूपी पदार्थ से मेरी भी जान-पहचान हो गई है । जबसे जान-पहचान हुई है, मेरा मन उसी में रम गया है । परमात्मा में मन प्रवृत्त होने से (कर्मकाण्डी) जगत की तसल्ली नहीं होती । नाम-स्मरण करनेवाले को भी यह आवश्यकता नहीं होती कि वह लोगों की तसल्ली भी कराए ।।३।।७।।

ह्रिदै कपटु मुख गिआनी । झूठे कहा बिलोवसि पानी ।।१।। कांइआ मांजसि कउन गुनां । जउ घट भीतरि है मलनां ।। १ ।। रहाउ ।। लउकी अठसठि तीरथ न्हाई । कउरापनु तऊ न जाई ।। २ ।। कहि कबीर बीचारी । भव सागरु तारि मुरारी ।। ३ ।। ८ ।।

हे पाखण्डी मनुष्य ! तेरे मन में तो ठगी है, परन्तु मुँह से ज्ञान की बातें कर रहा है । तुझे इस तरह पानी के मन्थन से कोई लाभ नहीं हो सकता ।। १ ।। यदि तेरे हृदय में मैल है, तो शरीर निर्मल कर लेने का कोई लाभ नहीं ।। १ ।। रहाउ ।। यदि कड़वी लौकी (तुंबी) अड़सठ तीर्थों पर भी स्नान कर आए, तो भी उसकी भीतरी कड़ुआहट दूर नहीं होती ।। २ ।। (इस मैल को हटाने के लिए) कबीर तो सोच-विचारकर प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! तुम मुझे इस संसार-सागर से उबार लो ।। ३ ।। ८ ।।

सोरठि

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। बहु परपंच करि परधनु लिआवै । सुत दारा पहि आनि लुटावै ।। १ ।। मन मेरे भूले कपटु न कीजै । अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ।। १ ।। रहाउ ।। छिनु छिनु तनु छीजै जरा जनावै । तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावै ।। २ ।। कहतु कबीरु कोई नही तेरा । हिरदै रामु की न जपहि सवेरा ।। ३ ।। ९ ।।

हे मन ! कई प्रकार का छल-कपट करके तू पराया माल लाता है

और लाकर अपने पुत्रों तथा पत्नी को सौंप देता है ।। १ ।। हे मेरे भ्रमित मन ! तू धोखा-फ़रेब न किया कर, आख़िर में इसका हिसाब तेरी आत्मा से ही लिया जानेवाला है ।। १ ।। रहाउ ।। धीरे-धीरे तेरा शरीर कमज़ोर होता जा रहा है, वृद्धावस्था के चिह्न नज़र आ रहे हैं, (वृद्ध होने पर) किसी ने तेरी ओक (हथेलियों को जोड़कर बर्तन की शक्ल में करके जिससे पानी पिया जा सके, अंजलि) में पानी भी नहीं डाला ।। २ ।। कबीर का कथन है कि हे आत्मा ! (उस समय) कोई भी तेरा साथी नहीं बनेगा (एक प्रभु ही वास्तविक साथी है) । अतः समय रहते तू उस प्रभु को अपने हृदय में क्यों स्मरण नहीं करती ? ।। ३ ।। ९ ।।

संतहु मन पवनै सुखु बनिआ । किछु जोगु परापति गनिआ ।। रहाउ ।। गुरि दिखलाई मोरी । जितु मिरग पड़त है चोरी । मूंदि लीए दरवाजे । बाजीअले अनहद बाजे ।। १ ।। कुंभ कमलु जलि भरिआ । जलु मेटिआ ऊभा करिआ । कहु कबीर जन जानिआ । जउ जानिआ तउ मनु मानिआ ।।२।।१०।।

हे सन्तो ! पवन जैसे चंचल मन को अब सुख मिल गया है । अब इसे प्रभु का मिलाप प्राप्त करने योग्य समझा जा सकता है ।। रहाउ ।। सतिगुरु ने मुझे मेरी वह कमज़ोरी दिखा दी है, जिसके कारण कामादिक पशु चुपचाप ही मुझे आ दबाते हैं; (इसलिए) मैंने दरवाज़े (ज्ञानेन्द्रियाँ परनिन्दा, पराए-धन आदि से) बन्द कर लिये हैं और मेरे भीतर प्रभु-गुणगान के बाजे निरन्तर बजने लगे हैं ।। १ ।। मेरा हृदय-कमल रूप पात्र पहले विकारों के पानी से भरा हुआ था । मैंने वह पानी (गुरु की कृपा से) गिरा दिया है और हृदय को ऊँचा उठा दिया है । (दास कबीर का कथन है कि) मैंने प्रभु से जान-पहचान कर ली है और जबसे यह मेल-मिलाप हुआ है मेरा मन उस प्रभु में रम गया है ।। २ ।। १० ।।

।। रागु सोरठि ।। भूखे भगति न कीजै । यह माला अपनी लीजै । हउ मांगउ संतन रेना । मै नाही किसी का देना ।। १ ।। माधो कैसी बनै तुम संगे । आपि न देहु त लेवउ मंगे ।। रहाउ ।। दुइ सेर मांगउ चूना । पाउ घीउ संगि लूना । अध सेरु मांगउ दाले । मोकउ दोनउ वखत जिवाले ।। २ ।। खाट मांगउ चउपाई । सिरहाना अवर तुलाई । ऊपर कउ मांगउ खींधा । तेरी भगति करै जनु थींधा ।। ३ ।। मै नाही कीता लबो । इकु नाउ तेरा मैं फबो । कहि कबीर मनु मानिआ । मनु मानिआ तउ हरि जानिआ ।। ४ ।। ११ ।।

यदि मनुष्य की तृष्णा रोटी की ओर से ही न ख़त्म हुई तो वह प्रभु की भक्ति नहीं कर सकता, फिर वह भक्ति दिखावे की ही रह जाती है। (हे प्रभु ! एक तो मुझे रोटी से निश्चिन्त करो और इसके अतिरिक्त) मैं सन्तों के चरणों की धूलि माँगता हूँ, ताकि मैं किसी के अधीन न होऊँ ।।१।। हे प्रभु ! तुमसे संकोच करने पर निर्वाह नहीं हो सकता। इसलिए यदि तुम कुछ न दोगे तो मैं ही माँगकर ले लूँगा ।। रहाउ ।। मुझे दो सेर आटे की ज़रूरत है, एक पाव घी तथा कुछ नमक चाहिए, मैं तुमसे आधा सेर दाल माँगता हूँ —ये चीज़ें मुझे दो समय की आपूर्ति के लिए पर्याप्त हैं ।। २ ।। चारपाई माँगता हूँ, तकिया और गद्दा भी। ऊपर लेने के लिए रज़ाई की भी ज़रूरत है —बस फिर तुम्हारा भक्त निश्चिन्त होकर प्रेम-रस में भीगकर तुम्हारी भक्ति करेगा ।। ३ ।। कबीर का कथन है कि हे प्रभु ! मैंने माँगने में कोई लालच नहीं किया, क्योंकि (इन चीज़ों के अतिरिक्त) वास्तव में तो तुम्हारा नाम ही मुझे प्यारा है। मेरा मन तुम्हारे नाम में हिल-मिल गया है और जबसे यह मन नाम से हिल-मिल गया है, तबसे तुम्हारे साथ मेरी गहरी जान-पहचान हो गई है ।। ४ ।। ११ ।।

रागु सोरठि बाणी भगत नाम दे जी की घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। जब देखा तब गावा । तउ जन धीरजु पावा ।। १ ।। नादि समाइलो रे सतिगुरु भेटिले देवा ।। १ ।। रहाउ ।। जह झिलिमिलिकारु दिसंता । तह अनहद सबद बजंता । जोती जोति समानी । मै गुरपरसादी जानी ।। २ ।। रतन कमल कोठरी । चमकार बीजुल तही । नेरै नाही दूरि । निज आतमै रहिआ भरपूरि ।। ३ ।। जह अनहत सूर उज्यारा । तह दीपक जलै छंछारा । गुरपरसादी जानिआ । जनु नामां सहज समानिआ ।। ४ ।। १ ।।

ज्यों-ज्यों मैं सर्वत्र परमात्मा का दर्शन करता हूँ, उसकी गुणस्तुति करता हूँ, त्यों-त्यों मेरे भीतर शान्ति पैदा होती जाती है ।।१।। हे भाई ! मुझे प्रभु ने सतिगुरु मिला दिया है, जिससे मेरा मन उसके ज्ञान में लीन हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। जिस मन में चंचलता दिख रही थी, वहाँ अब निरन्तर गुरु-शब्द के प्रभाव से स्थिरता हो रही है। अब मेरी आत्मा परमात्मा में मिल गई है। सतिगुरु की कृपा से मैंने उस ज्योति को पहचान लिया है ।। २ ।। मेरे हृदय-कमल की कोठरी में रत्न हैं और अब वहाँ बिजली की चमक (के तुल्य प्रकाश) है। अब प्रभु कहीं दूर नहीं लगता,

निकट दिखता है। मुझे अपने भीतर ही परिव्याप्त दिखता है ॥ ३ ॥ जिस मन में अब निरन्तर सूर्य के प्रकाश जैसा तीव्र प्रकाश है, वहाँ मानो पहले मद्धिम लौ वाला दीपक जल रहा था। अब प्रभु-कृपा से मेरी परमात्मा के साथ जानकारी हो गई है और मैं (दास नामदेव) स्थिरचित हो गया हूँ ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ घरु ४ सोरठि ॥ पाड़ पड़ोसणि पूछिले नामा कापहि छानि छवाई हो। तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मोकउ बेढी देहु बताई हो ॥ १ ॥ री बाई बेढी देनु न जाई। देखु बेढी रहिओ समाई। हमारै बेढी प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो। लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥ २ ॥ ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो। गूंगै महा अंम्रित रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥ ३ ॥ बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बांधि ध्रू थापिओ हो। नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिओ हो ॥ ४ ॥ २ ॥

पड़ोसिन ने पूछा कि तूने अपनी झोंपड़ी किससे बनवाई है ? 'मुझे उस बढ़ई का पता बताओ, मैं तुमसे दुगुनी मज़दूरी दे दूँगी' ॥ १ ॥ हे बहिन ! उस बढ़ई का पता नहीं बताया जा सकता। देखो, वह बढ़ई सर्वत्र मौजूद है और मेरी आत्मा का अवलम्ब है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि कोई मनुष्य उस बढ़ई से छप्पर बनवाए, तो वह बढ़ई प्रेम की मज़दूरी माँगता है। (प्रीति भी ऐसी हो कि) वह लोगों से, परिवार से, सबसे मोह भंग कर ले, तब वह बढ़ई स्वयं आ जाता है ॥ २ ॥ यदि कोई गूँगा स्वादिष्ट पदार्थ खाए, तो पूछने पर उससे उसका स्वाद नहीं बताया जा सकता; वैसे ही वह सबमें और सर्वत्र है ॥ ३ ॥ हे बहिन ! उस बढ़ई के कुछ गुण सुन लो। (यह वही है जिसने) ध्रुव को अटल पदवी प्रदान की, समुद्र पर पुल बनाया और सीता को (युद्धोपरांत) वापस लाया। उसी ने विभीषण को लंका का मालिक बना दिया ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ सोरठि घरु ३ ॥ अणमड़िआ मंदलु बाजै। बिनु सावण घनहरु गाजै। बादल बिनु बरखा होई। जउ ततु बिचारै कोई ॥ १ ॥ मोकउ मिलिओ रामु सनेही। जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि पारस कंचनु होइआ। मुख मनसा रतनु परोइआ। निज भाउ भइआ भ्रमु भागा।

गुर पूछे मनु पतीआगा ।। २ ।। जल भीतरि कुंभ समानिआ । सभ रामु एकु करि जानिआ । गुर चेले है मनु मानिआ । जन नामै ततु पछानिआ ।। ३ ।। ३ ।।

जो मनुष्य वास्तविकता को पहचानता है, उसके भीतर ढोल की मन्दर ध्वनि होने लगती है। वह ढोल खाल से मढ़ा हुआ नहीं होता। उसके मन में बादल गरजने लगता है, परन्तु वह बादल सावन महीने की प्रतीक्षा नहीं करता। उसके भीतर बादलों के बिना ही मेंह बरसने लगता है ।। १ ।। मुझे प्यारा राम मिल गया है, जिसके मिलन से मेरा शरीर भी ज्योतिर्मान हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। सतिगुरु की शिक्षा लेकर मेरा मन इस प्रकार विश्वस्त हो गया है, जैसे पारस से स्पर्श करके लोहा सोना बन जाता है। अब मेरे शब्दों में, ख़्यालों में नाम-रत्न पिरोया हुआ है, अब प्रभु से मेरा अपनों जैसा प्रेम हो गया है। यह भ्रम रह ही नहीं गया कि कोई पराया है ।। २ ।। जिस प्रकार समुद्र के पानी में घड़े का पानी मिल जाता है (और अभेदत्व की स्थिति पैदा हो जाती है), उसी प्रकार मुझे भी अब सर्वत्र प्रभु ही प्रभु दिखता है। अपने सतिगुरु के साथ मेरा मन रम गया है और दास नामदेव ने जगत के मूल परमात्मा के साथ ऐक्य कर लिया है ।। ३ ।। ३ ।।

रागु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही। अनल अगम जैसे लहरि मइओदधि जल केवल जल मांही ।। १ ।। माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा। जैसा मानीऐ होइ न तैसा ।। १ ।। रहाउ ।। नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी। अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी ।। २ ।। राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ। अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ ।। ३ ।। सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भुगवै सोई। कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ।। ४ ।। १ ।।

(हे माधव !) जब तक हम जीवों के भीतर अहंभावना रहती है, तब तक तुम प्रकट नहीं होते; लेकिन जब तुम प्रकट होते हो तब हमारी

'मैं' अर्थात् अहंभावना दूर हो जाती है। जिस प्रकार भयंकर तूफ़ान आने पर समुद्र लहरों से भर जाता है, लेकिन असल में वे लहरें समुद्र के पानी में पानी ही होती हैं (अर्थात् प्रभु का अपना ही फैलाव है) ॥ १ ॥ हे माधव ! हम जीवों को कुछ ऐसा भ्रम है कि व्यक्त नहीं किया जा सकता। हम जो माने बैठे हैं वह सही नहीं है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे कोई राजा अपने तख़्त पर निद्रा-मग्न हो और स्वप्न में भिखारी हो जाए, ऐसे में वह राज्य होते हुए भी राज्य से अलग होकर दुखी होता है, उसी प्रकार (प्रभु से अलग होकर) हम जीवों का हाल हो रहा है ॥ २ ॥ जिस प्रकार रस्सी और साँप का उदाहरण है, जिस प्रकार अनेकों कंगन देखकर किसी को भ्रम उत्पन्न हो जाए (कि शायद सोना भी कई प्रकार का है), (उसी प्रकार जगत और तुम्हारी स्थिति को लेकर भ्रम पैदा हो जाता है), लेकिन अब तुमने मुझे कुछ भेद बता दिया है। अब वह पुरानी भेदभाव वाली बात मुझसे कही नहीं जाती (अर्थात् तुम्हारे और जगत के अलग-अलग होने का दावा अब नहीं होता) ॥ ३ ॥ रविदास का कथन है कि प्रभु-पति अनेक रूप बनाकर सबमें परिव्याप्त है। सब प्राणियों में आप प्रतिष्ठित हो जगत का आनन्द भोग रहा है। वह मेरे लिए मेरे हाथ से भी अधिक (मेरे अत्यधिक) निकट है। जो कुछ जगत में हो रहा है, उसी की इच्छा के अनुसार हो रहा है ॥ ४ ॥ १ ॥

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे। अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे॥ १॥ माधवे जानत हहु जैसी तैसी। अब कहा करहुगे ऐसी॥ १॥ रहाउ॥ मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहु बानी। खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी॥ २॥ आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा। मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा॥ ३॥ कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह कासिउ कहीऐ। जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीऐ॥ ४॥ २॥

(हे माधव !) यदि हम मोह की फाँसी में बँधे हुए थे, तो हमने तुम्हें अपने प्रेम की रस्सी से बाँध लिया है। हम तो तुम्हें स्मरण कर निकल आए हैं, लेकिन तुम हमारे प्रेम की जकड़ से कैसे निकल सकोगे ? ॥ १ ॥ हे माधव ! तुम्हारे भक्त जैसा प्रेम तुम्हारे साथ करते हैं, वह तुमसे छिपा नहीं रह सकता। ऐसी प्रीति के होते हुए तुम अवश्य उन्हें मृत्यु से बचाए रखते हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमारा प्रेम तुम्हारे साथ उसी प्रकार का है, जैसे मछली का प्रेम पानी से होता है। जैसे मछली को पकड़कर बीच से

चीर दें, टुकड़े कर दें और कई प्रकार से पका लें, तदुपरान्त थोड़ा-थोड़ा करके खा लें, फिर भी उस मछली को पानी विस्मृत नहीं होता ॥ २ ॥ जगत का मालिक हरि किसी की पैतृक सम्पत्ति नहीं है। वह तो प्रेम के वशीभूत है। जगत मोह के पर्दे में फँसा है, लेकिन प्रभु-प्रेमी भक्तों को इस मोह का दुख नहीं होता ॥३॥ रविदास का कथन है कि हे माधव ! मैंने एक तुम्हारी भक्ति हृदय में इतनी दृढ़ कर ली है कि मुझे अब किसी से शिकायत करने की ज़रूरत नहीं रह गई। जिस मोह से बचने के लिए मैं तुम्हारा स्मरण कर रहा था, क्या उस मोह का दुख मुझे अब भी सहना पड़ेगा ? ॥ ४ ॥ २ ॥

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेके। राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥ १ ॥ न बीचारिओ राजा राम को रसु। जिह रस अनरस बीसरि जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही। इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥ २ ॥ कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ। कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

यह मनुष्य-जीवन बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है; यह पूर्वकृत शुभ कर्मों के फलस्वरूप हमें मिल गया, लेकिन हमारी मूर्खता के कारण यह व्यर्थ ही बीत रहा है। (हमने यह नहीं सोचा कि) यदि प्रभु की भक्ति से खाली रहे तो राजा इन्द्र के स्वर्गिक महल भी किसी काम के नहीं हैं ॥ १ ॥ हम जीवों ने जगत-प्रभु परमात्मा के नाम के उस आनन्द को कभी नहीं सोचा, जिसके प्रभाव से माया सम्बन्धी लोभ-लालच दूर हो जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम जानते हुए भी मूर्ख बने हैं, हमारी उम्र के दिन शुभ-अशुभ कल्पनाओं में बीत रहे हैं, हमारी कामवासना बढ़ रही है, चिन्तनशक्ति कम हो रही है, इस बात को हमने कभी भी नहीं सोचा कि हमारी सबसे बड़ी ज़रूरत क्या है ? ॥२॥ हम कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। माया इतनी प्रबल है कि हमें अपनी मूर्खता का ज्ञान ही नहीं होता। हे प्रभु ! तुम्हारा दास रविदास कहता है कि मैं अब इस मूर्खता से तटस्थ हो गया हूँ, मेरी मूर्खता पर क्रोध न करना और मेरी आत्मा पर कृपा कर देना ॥ ३ ॥ ३ ॥

सुखसागरु सुरतरु चिंतामनि कामधेनु बसि जाके। चारि पदारथ असट दसा सिधि नवनिधि करतल ताके ॥ १ ॥ हरि

हरि हरि न जपहि रसना । अवर सभ तिआगि बचन रचना ।। १ ।। रहाउ ।। नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही । बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ।। २ ।। सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी । कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ।। ३ ।। ४ ।।

(हे पण्डित !) जो प्रभु सुखों का समुद्र है, जिस प्रभु के वश में स्वर्ग के कल्पवृक्ष, चिन्तामणि और कामधेनु हैं, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ, अठारह सिद्धियाँ और नौ निधियाँ हैं —ये सब उसी के हाथों में हैं ।। १ ।। हे पण्डित ! तू दूसरी सब अनर्गल बातें छोड़कर जिह्वा द्वारा हमेशा एक परमात्मा का नाम-स्मरण क्यों नहीं करता ? ।। १ ।। रहाउ ।। पुराणों के अनेक प्रकार के प्रसंग, वेदों में बतलाई विधियाँ —ये सब वाग्विस्तार ही हैं । (वेदों के तत्ववेत्ता) व्यास ने विचार करके यह परमतत्व बताया है कि (वेदों का पाठ आदि) परमात्मा के नाम-स्मरण की तुलना नहीं कर सकते ।। २ ।। रविदास का कथन है कि सौभाग्यवश जिस मनुष्य की सुरति प्रभु के चरणों में लगती है, उसका मन आत्मिक स्थिरता में संलग्न रहता है । उसमें कोई विकार नहीं उठता, वह मनुष्य अपने हृदय में प्रकाश प्राप्त करता है और उसके जन्म-मरण के भय समाप्त हो जाते हैं ।। ३ ।। ४ ।।

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा । जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ।। १ ।। माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि । तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ।। १ ।। रहाउ ।। जउ तुम दीवरा तउ हम बाती । जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ।। २ ।। साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी । तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ।। ३ ।। जह जह जाउ तहा तेरी सेवा । तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ।। ४ ।। तुमरे भजन कटहि जम फांसा । भगति हेत गावै रविदासा ।। ५ ।। ५ ।।

हे मेरे माधव ! यदि तुम सुन्दर सा पर्वत बनो तो मैं तुम्हारा मोर बनूँगा । यदि तुम चन्द्र बनो तो मैं चकोर बनूँगा ।। १ ।। हे माधव ! यदि तुम प्रेम सम्बन्ध तोड़ो भी तो मैं नहीं तोड़ूँगा, क्योंकि तुम्हारे साथ सम्बन्ध भंग कर मैं किसके साथ जोड़ सकता हूँ ? ।। १ ।। रहाउ ।। हे माधव ! यदि तुम सुन्दर दीपक बनो तो मैं तुम्हारी बत्ती बन जाऊँगा । यदि तुम तीर्थ बनो तो मैं तुम्हारा यात्री बन जाऊँगा ।। २ ।। हे प्रभु !

मैंने तुम्हारे साथ दृढ़ प्रेम कर लिया है। तुम्हारे साथ प्रेम सम्बन्ध बनाकर मैंने शेष सबसे सम्बन्ध तोड़ लिये हैं ॥ ३ ॥ हे माधव ! मैं जहाँ-जहाँ जाता हूँ (सर्वत्र) तुम्हारी ही सेवा करता हूँ। हे देव ! तुम्हारे तुल्य दूसरा कोई स्वामी मुझे दृष्टिगत नहीं हुआ ॥ ४ ॥ तुम्हारी प्रार्थना करने से यमों के बन्धन कट जाते हैं, इसलिए रविदास तुम्हारी भक्ति का आनन्द प्राप्त करने के लिए तुम्हारा गुणगान करता है ॥ ५ ॥ ५ ॥

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा। हाड मास नाड़ीं को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥ १ ॥ प्रानी किआ मेरा किआ तेरा। जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखहु कंध उसारहु नीवां। साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥ २ ॥ बंके बाल पाग सिर डेरी। इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥ ३ ॥ ऊचे मंदर सुंदर नारी। राम नाम बिनु बाजी हारी ॥ ४ ॥ मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा। तुम सरनागति राजा रामचंद कहि रविदास चमारा ॥ ५ ॥ ६ ॥

जीव रूपी पक्षी बेचारा उस शरीर में विद्यमान है, जिसकी दीवार पानी की है, जिसके स्तम्भ हवा के हैं, माँ के रक्त और पिता के वीर्य का जिसमें गारा लगा हुआ है और हाड़-मांस नाड़ियों का पिंजरा बना हुआ है ॥ १ ॥ जिस प्रकार वृक्षों पर पक्षियों का डेरा होता है (वैसे ही जीवों का वास जगत में होता है)। हे भाई ! फिर इन बँटवारों तथा भेदभावों का क्या लाभ ? ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! नीवें खोद-खोदकर तू उन पर दीवारें बनाता है, पर तुझे आप सोते वक्त मुश्किल से साढ़े तीन हाथ जगह चाहिए ॥ २ ॥ तू सिर पर सुन्दर केश सँवारकर तिरछी पगड़ी बाँधता है (लेकिन तुझे क्या यह नहीं पाता ? कि) यह शरीर ही किसी दिन राख की ढेरी हो जायगा ॥३॥ हे भाई ! तू ऊँचे-ऊँचे महलों और सुन्दर स्त्री का अभिमान करता है, प्रभु का नाम भुलाकर तू मनुष्यता का खेल हार रहा है ॥ ४ ॥ रविदास चमार कहता है कि हे मेरे राजन ! हे मेरे सुन्दर राम ! मेरी तो जाति, कुल और जन्म नीच था, (मैं सर्वथा अयोग्य था परन्तु) मैं तुम्हारा शरणागत हूँ ॥ ५ ॥ ६ ॥

चमरटा गांठि न जनई। लोगु गठावै पनही ॥१॥रहाउ॥ आर नही जिह तोपउ। नही रांबी ठाउ रोपउ ॥ १ ॥ लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा। हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥ २ ॥ रविदासु जपै राम नामा। मोहि जम सिउ नाही कामा ॥ ३ ॥ ७ ॥

मैं ग़रीब चमार (शरीर रूपी जूती को) गाँठना नहीं जानता, लेकिन सांसारिक जीव अपनी-अपनी शरीर रूपी जूती गँठवा रहे हैं (अर्थात् लोग अपने-अपने शरीर के पालन-पोषण में व्यस्त हैं) ।। १ ।। रहाउ ।। मेरे पास कील नहीं है कि मैं जूती को गाँठूँ। मेरे पास रंबी नहीं कि जूती को जोड़ लगाऊँ ।। १ ।। जगत शरीर रूपी जूती को गाँठ-गाँठकर दुखी हो रहा है अर्थात् जगत के जीव अपने-अपने शरीर का पालन-पोषण कर दुखी हो रहे हैं। मैं शरीर रूपी जूती को गाँठने का काम छोड़कर प्रभु-चरणों में जा पहुँचा हूँ ।। २ ।। रविदास अब परमात्मा का नाम-स्मरण करता है (और शरीर का मोह छोड़ बैठा है), इसलिए मुझ रविदास को अब यमों से कोई भय नहीं रह गया है ।। ३ ।। ७ ।।

रागु सोरठि बाणी भगत भीखन की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुधवानी । रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ।। १ ।। राम राइ होहि बैद बनवारी । अपने संतह लेहु उबारी ।। १ ।। रहाउ ।। माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही । ऐसी बेदन उपजि खरी भई वाका अउखधु नाही ।। २ ।। हरि का नामु अंम्रित जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा । गुरपरसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ।। ३ ।। १ ।।

हे जीव ! तेरी आँखों से पानी बह रहा है, तेरा शरीर कमज़ोर हो रहा है, तेरे बाल दूध जैसे श्वेत हो गए हैं, तेरा गला अवरुद्ध होने के कारण बोल नहीं निकलता; अभी भी तू क्या कर रहा है ।।१।। हे सुन्दर राम ! हे प्रभु ! तुम हकीम बनकर अपने सेवकों को बचा लेते हो अर्थात् सन्तों की रक्षा करते हो ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्राणी ! तेरे सिर में पीड़ा टिकी रहती है, शरीर में जलन रहती है, कलेजे में दर्द उठता है, (इस प्रकार शरीर में) एक ऐसा बड़ा रोग उठ खड़ा है कि इसका कोई उपचार नहीं है ।।२।। (इस शारीरिक मोह को समाप्त करने के लिए) एक ही उत्तम इलाज दुनिया में है, वह है प्रभु का नाम रूपी अमृत, परमात्मा का नाम रूपी निर्मल जल । दास भीखण का कथन है कि अपने गुरु की कृपा से मैंने यह नाम जपने का रास्ता प्राप्त कर लिया है, जिससे मैंने शारीरिक मोह से मुक्ति पा ली है ।। ३ ।। १ ।।

ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदारथु पाइआ। अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ।। १ ।। हरि गुन कहते कहनु न जाई। जैसे गूंगे की मिठिआई ।। १ ।। रहाउ ।। रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई। कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखां तह सोई ।। २ ।। २ ।।

प्रभु का नाम एक ऐसा अमूल्य पदार्थ है, जो सौभाग्यवश मिलता है। इस रत्न को यदि अनेक यत्नों से भी हृदय में छिपाकर रखें, तो भी यह छिपाये नहीं छिपता ।। १ ।। वह (आनन्द) कहा नहीं जा सकता, जो परमात्मा का गुणगान करने से मिलता है। जैसे गूँगे मनुष्य द्वारा खाई मिठाई (का आस्वादन अकथ्य है, वैसे ही प्रभु का नाम-स्मरण का आनन्द अकथ्य है) ।।१।।रहाउ।। (इस रत्न रूपी) नाम जपने से जिह्वा को सुख मिलता है, सुननेवाले कानों को सुख मिलता है और स्मरण करते हुए हृदय को सुख मिलता है। भीखन का कथन है कि प्रभु-नाम के स्मरण से मेरी आँखों में ऐसी शीतलता छाई है कि मैं जिधर देखता हूँ, उस परमात्मा को ही देखता हूँ ।। २ ।। २ ।।

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।।

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार। दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ।। १ ।। साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ।। १ ।। रहाउ ।। अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ। सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ।। २ ।। दइआल तेरै नामि तरा। सद कुरबाणै जाउ ।। १ ।। रहाउ ।। सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ। ताकी सेवा सो करे जाकउ नदरि करे ।। ३ ।। तुधु बाझु पिआरे केव रहा। सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां। दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ।। १ ।। रहाउ ।। सेवी साहिबु

आपणा अवरु न जाचंउ कोइ । नानकु ताका दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ ४ ॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

सांसारिक दुखों को देखकर मेरी आत्मा काँपती है (कोई बचानेवाला दृष्टिगत नहीं होता), जिसके पास जाकर मैं प्रार्थना करूँ। (इसलिए) मैं दुखनाशक प्रभु को ही स्मरण करता हूँ, वह हमेशा ही कृपा करनेवाला है ॥ १ ॥ मेरा मालिक-प्रभु हमेशा कृपा तो करता रहता है अर्थात् प्रभु देन देता रहता है, लेकिन उसकी निरन्तर कृपा हमें इस प्रकार प्रतीत होती है, जैसे पहली बार ही कृपा करने लगा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरी आत्मा ! प्रतिदिन उस मालिक को ही स्मरण करना चाहिए, आखिर में वही दुखों से बचाता है। हे आत्मा ! ध्यानपूर्वक सुन। (प्रभु-कृपा द्वारा ही) पार उतरा जा सकता है ॥ २ ॥ हे दयालु प्रभु ! मैं हमेशा तुम पर बलिहारी हूँ। तुम्हारे नाम के द्वारा ही संसार-समुद्र से पार उतर सकता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सत्यस्वरूप प्रभु ही सर्वत्र मौजूद है, उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं। जिस जीव पर वह कृपादृष्टि करता है वही उसका स्मरण करता है ॥ ३ ॥ हे प्यारे प्रभु ! तुम्हारी स्मृति के बिना मैं दुखी हो जाता हूँ। मुझे वह वरदान दो, जिसके परिणामस्वरूप मैं तुम्हारे नाम में लीन रहूँ। हे प्यारे ! तुम्हारे बिना कोई दूसरा ऐसा नहीं है, जिसके पास जाकर मैं यह प्रार्थना कर सकूँ॥१॥रहाउ॥ (दुखों से मुक्ति के लिए) मैं अपने मालिक-प्रभु को ही स्मरण करता हूँ, किसी दूसरे से मैं यह माँग नहीं माँगता। नानक उस मालिक का ही सेवक है और उस मालिक पर ही क्षण-क्षण बलिहारी जाता है ॥ ४ ॥ हे मेरे मालिक ! मैं तुम्हारे नाम पर बलिहारी जाता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ धनासरी महला १ ॥ हम आदमी हां इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा। नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जाके जीअ पराणा ॥ १ ॥ अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासु मासु सभु जीउ तुमारा तू मै खरा पिआरा। नानकु साइरु एव कहतु है सचे परवदगारा ॥ २ ॥ जे तू किसै न देही मेरे साहिबा किआ को कढै गहणा। नानकु बिनवै सो किछु पाईऐ पुरबि लिखे का लहणा ॥ ३ ॥ नामु खसम का चिति न कीआ कपटी कपटु कमाणा। जम दुआरि जा पकड़ि चलाइआ ता चलदा पछुताणा ॥ ४ ॥ जब लगु दुनीआ रहीऐ

नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ। भालि रहे हम रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीऐ ॥ ५ ॥ २ ॥

गुरु नानक प्रार्थना करते हैं कि हम एक श्वास के मालिक हैं (आगे ज़िन्दगी का क्या पता ?)। ज़िन्दगी की अवधि का पता नहीं है, हमें यह पता नहीं कि मृत्यु का वक्त कब आ जाता है। (इसलिए) उस परमात्मा का स्मरण करो, जिसने यह आत्मा और श्वास दिए हैं ॥ १ ॥ हे माया-मोह में अन्धे जीव ! देखो, सोचो-समझो, यहाँ जगत में थोड़े दिनों की ज़िन्दगी है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा गुणगायक नानक यह प्रार्थना करता है कि हे सत्यस्वरूप और जीवों के पालक प्रभु ! यह श्वास, तन, आत्मा सर्वस्व तुम्हारी देन है (इसलिए) अपना प्रेम भी तुम आप ही हो ॥ २ ॥ हे मेरे मालिक ! यदि तुम अपने प्रेम की देन आप ही किसी जीव को न दो, तो जीव के पास ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिसके बदले में तुम्हारा प्रेम खरीद ले। नानक प्रार्थना करता है कि जीव को वही कुछ मिल सकता है, जो उसके पूर्वकृत कर्मों के संस्कार रूपी लेख में (उसके मस्तक पर लिखे) हैं ॥ ३ ॥ पूर्वकृत कर्मों के अनुसार छली मनुष्य तो छल ही कमाता रहता है और पति-प्रभु का नाम अपने मन में नहीं बसाता। (अन्तिम समय में) जब यमराज के दरवाज़े की ओर धकेला जाता है, तो यहाँ से जाते वक्त हाथ मलता है ॥ ४ ॥ हे नानक ! जब तक दुनिया में जीना है, परमात्मा की गुणस्तुति करनी चाहिए। हम खोज कर चुके हैं कि यहाँ सदा किसी को आश्रय नहीं मिला। इसलिए जितनी देर तक जीवन का अवसर प्राप्त हुआ है, उतनी देर तक सांसारिक इच्छाओं से निस्संग होकर ज़िन्दगी के क्षण गुजारें ॥ ५ ॥ २ ॥

धनासरी महला १ घरु दूजा

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ। तपै हिआउ जीअड़ा बिललाइ। सिरजि सवारे साचा सोइ। तिसु विसरिऐ चंगा किउ होइ ॥ १ ॥ हिकमति हुकमि न पाइआ जाइ। किउकरि साचि मिलउ मेरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वखरु नामु देखण कोई जाइ। ना को चाखै ना को खाइ। लोकि पतीणै ना पति होइ। ता पति रहै राखै जा सोइ ॥ २ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ। तुधु बिनु दूजी नाही जाइ। जेको करे कीतै किआ होइ। जिसनो बखसे साचा सोइ ॥ ३ ॥ हुणि उठि चलणा मुहति कि तालि। किआ मुहु

देसा गुण नही नालि । जैसी नदरि करे तैसा होइ । विणु नदरी नानक नही कोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

(बलपूर्वक) परमात्मा का स्मरण नहीं किया जा सकता, फिर मैं उसका स्मरण कैसे करूँ ? और यदि उस प्रभु को भुला दें तो भी जीवन भला नहीं बन सकता, दिल जलता रहता है, आत्मा दुखी रहती है। (वास्तविकता यह है कि) सत्यस्वरूप प्रभु जीवों को पैदा करके आप ही उन्हें सदाचारी बनाता है ॥ १ ॥ हे मेरी माँ ! किसी चतुराई से या किसी प्रकार अधिकार जताने से परमात्मा नहीं मिलता। दूसरा कौन सा तरीक़ा है, जिससे मैं उस सत्यस्वरूप प्रभु में मिल सकता हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (यदि ईश्वरेच्छा न हो तो) इस नाम-सौदे को न कोई परखने के लिए जाता है, न कोई इसे चखकर देखता है। (चतुराई-छल द्वारा लोगों की तसल्ली कराने पर) या केवल लोगों को विश्वास करा देने से प्रभु के दरबार में आदर नहीं मिलता। (वास्तव में) प्रतिष्ठा तभी मिलती है, यदि प्रभु नाम-दान कर प्रतिष्ठित करे ॥ २ ॥ जिधर मैं देखता हूँ, वहीं तुम मौजूद हो; तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कोई सहारा नहीं है। यदि कोई जीव (चतुराई द्वारा) प्रभु को मिलना चाहे तो ऐसी चतुराइयों का कोई लाभ नहीं होता। (उसी जीव को प्रभु मिल सकता है) जिस पर सत्यस्वरूप प्रभु स्वयं नाम-दान की कृपा करे ॥ ३ ॥ यहाँ से शीघ्र ही जीव को जाना है। पल भर में अथवा कुछ ही समय में (जीव परलोक में चला जाएगा)। (इस प्रकार ही करता रहा तो) मैं वहाँ क्या मुँह दिखाऊँगा ? मेरे पल्ले तो गुण भी नहीं होंगे। (जीव के भी क्या वश की बात है ?) परमात्मा जैसी कृपा करता है, जीव वैसे ही जीवन वाला बन जाता है। हे नानक ! प्रभु की कृपादृष्टि के बिना कोई जीव प्रभु के चरणों में जगह नहीं पा सकता ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

॥ धनासरी महला ३ ॥ नदरि करे ता सिमरिआ जाइ । आतमा द्रवै रहै लिव लाइ । आतमा परातमा एको करै । अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥ १ ॥ गुर परसादी पाइआ जाइ । हरि सिउ चितु लागै फिरि कालु न खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि सिमरिऐ होवै परगासु । ताते बिखिआ महि रहै उदासु । सतिगुर की ऐसी वडिआई । पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥ २ ॥ ऐसी सेवकु सेवा करै । जिस का जीउ तिसु आगै धरै । साहिब भावै सो परवाणु । सो सेवकु दरगह पावै माणु ॥ ३ ॥ सतिगुर की मूरति हिरदै वसाए । जो इछै सोई फलु पाए ।

साचा साहिबु किरपा करै । सो सेवकु जम ते कैसा डरै ॥ ४ ॥ भनति नानकु करे वीचारु । साची बाणी सिउ धरे पिआरु । ता को पावै मोख दुआरु । जपु तपु सभु इहु सबदु है सारु ॥ ५ ॥ २ ॥ ४ ॥

प्रभु आप ही कृपादृष्टि करे तो जीव गुरु के माध्यम से उसका स्मरण कर सकता है। स्मरण करनेवाले व्यक्ति की आत्मा पराए दुखों से द्रवीभूत होती है। वह प्रभु में मन लगाए रखता है; वह मनुष्य आत्मा-परमात्मा को एक जैसा समझता है, उसके अन्दर की अपने-पराए की भावना (द्वैत-भावना) समाप्त हो जाती है ॥ १ ॥ परमात्मा का स्मरण गुरु-कृपा द्वारा होता है। जिस मनुष्य का हृदय परमात्मा में तल्लीन हो जाता है, उसे दोबारा मृत्यु का भय स्पर्श नहीं करता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यदि सत्यस्वरूप प्रभु का स्मरण किया जाए, तो सही जीवन का ज्ञान हो जाता है, वह प्रकाशित मन से माया सम्बन्धी व्यवहार करता हुआ भी निर्लिप्त रहता है। गुरु की शरण लेने में ऐसी विशेषता है कि पुत्र, स्त्री आदि के बीच रहते हुए भी ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है ॥ २ ॥ सेवक वह है, जो स्वामी की ऐसी सेवा करे कि उसकी (प्रभु की) दी हुई आत्मा को प्रभु के ही समक्ष भेंट कर दे। ऐसा सेवक स्वामी को पसन्द होता है, प्रभु के घर में सत्कृत होता है और प्रभु के सम्मुख सम्मानित होता है ॥३॥ जो सेवक अपने सतिगुरु के आत्मिक-स्वरूप (शब्द) को हृदय में टिकाता है, वह गुरु के द्वार पर मनोवांछित फल पाता है। सत्यस्वरूप मालिक-प्रभु उस पर कृपा करता है; उसे मृत्यु का भी कोई भय नहीं रह जाता ॥ ४ ॥ नानक का कथन है कि जब मनुष्य गुरु के शब्द का विचार करता है, सत्यस्वरूप प्रभु के गुणगान वाली गुरु-वाणी में मन लगाता है, तब वह मुक्ति का द्वार प्राप्त कर लेता है। (वास्तव में) यह श्रेष्ठ गुरु-शब्द (ज्ञान) ही वास्तविक जप और तप है ॥ ५ ॥ २ ॥ ४ ॥

॥ धनासरी महला १ ॥ जीउ तपतु है बारो बार । तपि तपि खपै बहुतु बेकार । जै तनि बाणी विसरि जाइ । जिउ पका रोगी विललाइ ॥ १ ॥ बहुता बोलणु झखणु होइ । विणु बोले जाणै सभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कन कीते अखी नाकु । जिनि जिहवा दिती बोले तातु । जिनि मनु राखिआ अगनी पाइ । वाजै पवणु आखै सभ जाइ ॥ २ ॥ जेता मोहु परीति सुआद । सभा कालख दागा दाग । दाग दोस मुहि चलिआ लाइ । दरगह बैसण नाही जाइ ॥ ३ ॥

करमि मिलै आखणु तेरा नाउ। जितु लगि तरणा होरु नही थाउ। जेको डूबै फिरि होवै सार। नानक साचा सरब दातार ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

(प्रभु के नाम में वृत्ति न रखने से) आत्मा बार-बार दुखी होती है, विकारों में ग्रस्त होकर निरन्तर परेशान होती है। जिस शरीर में प्रभु की गुणस्तुति की वाणी का विस्मरण होता है, वह शरीर ऐसे बिलखता है जैसे कोढ़ी व्यक्ति रोता है ॥ १ ॥ (नाम-हीन होकर सहे गए दुखों के सम्बन्ध में) शिकायत करना अनर्गल प्रलाप है, क्योंकि वह परमात्मा हमारे द्वारा शिकायत किए बिना ही (सब रोगों) का कारण जानता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वह प्रभु स्मरणीय है, जिसने कान दिए, आँखें और नाक प्रदान की, जिह्वा दी जो अनर्गल बोलती है, जिसने हमारे शरीर को गर्भ की अग्नि में प्रविष्ट करके भी सुरक्षित रखा। जिसके फलस्वरूप श्वास चलता है और आदमी सर्वत्र बोलचाल कर सकता है ॥ २ ॥ जितने भी माया-मोह, लौकिक प्रीति और रसों के स्वाद हैं, ये सब मन में विकारों की कालिख पैदा करते हैं, विकारों के दाग़ लगाते हैं। (विकारग्रस्त होकर) मनुष्य विकारों के दाग़ अपने मस्तक पर लगाकर अन्तत: यहाँ से चला जाता है और परमात्मा की सेवा में बैठने के लिए इसे जगह नहीं मिलती ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा नाम-स्मरण तुम्हारी कृपा द्वारा ही प्राप्त हो सकता ह, तुम्हारे नाम में प्रवृत्त होकर ही (संसार-समुद्र) से पार उतरा जा सकता है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई अवलम्ब नहीं है। हे नानक ! यदि कोई मनुष्य प्रभु का विस्मरण कर विकारग्रस्त भी होता है, तो फिर भी नाम जपने के कारण (प्रभु की दयालु वृत्ति के कारण) उसकी देखभाल होती है। वह सत्यस्वरूप प्रभु सब जीवों को वरदान देनेवाला है ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

॥ धनासरी महला १ ॥ चोरु सलाहे चीतु न भीजै। जे बदी करे ता तसू न छीजै। चोर की हामा भरे न कोइ। चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥ १ ॥ सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर। बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चोरु सुआलिउ चोरु सिआणा। खोटे का मुलु एकु दुगाणा। जे साथि रखीऐ दीजै रलाइ। जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ॥ २ ॥ जैसा करे सु तैसा पावै। आपि बीजि आपे ही खावै। जे वडिआईआ आपे खाइ। जेही सुरति तेहै राहि जाइ ॥ ३ ॥ जे सउ कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु। भावै सभु आखउ संसारु। तुधु भावै अधी परवाणु। नानक जाणै जाणु सुजाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

यदि कोई चोर (न्यायाधीश की) खुशामद करे, तो उसे विश्वास नहीं हो पाता (कि वह सच्चा है)। यदि वह चोर बदनामी करे, तो भी वह तनिक नहीं घबराता। कोई भी मनुष्य किसी चोर के भले होने की गवाही नहीं दे सकता। जो मनुष्य (लोगों की दृष्टि में) चोर माना गया, वह किसी भी तरीक़े से भला नहीं बन सकता ॥ १ ॥ हे अन्धे, लालची और झूठे मन ! सुन। सच्चा मनुष्य मौन रहकर भी पहचाना जाता है ॥१॥ रहाउ ॥ चोर चाहे सुन्दर बने, चाहे चतुर (लेकिन तमाम स्थितियों में वह व्यर्थ है जैसे कि) खोटे रुपये का मूल्य दो कौड़ी (तुच्छ) होता है। यदि खोटे रुपये को खरे रुपयों में मिला दें या उनमें रख दें तो भी जब उसकी परख होती है, वह खोटा ही कहा जाता है ॥ २ ॥ मनुष्य जैसा काम करता है, वैसा ही फल पाता है। प्रत्येक जीव कर्मों के बीज बोकर आप ही फल खाता है। यदि कोई मनुष्य अपनी विशेषताओं की सौगन्ध ले (तो भी वह विश्वसनीय नहीं हो सकता, क्योंकि) व्यक्ति की जैसी भावना होती है, वह वैसे ही रास्ते पर चलता है ॥३॥ चाहे कोई मनुष्य सारे संसार को झूठी बातें और गप्पें सुना दे (किन्तु तुम्हें धोखा नहीं दिया जा सकता)। यदि मनुष्य सदाचारी हो तो साधारण होते हुए भी वह तुम्हें (परमात्मा को) पसन्द आ जाता है, तुम्हारे द्वार पर सत्कृत होता है। हे नानक ! अन्तर्यामी प्रभु सब कुछ जानता है ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ धनासरी महला १ ॥ काइआ कागदु मनु परवाणा। सिर के लेख न पड़ै इआणा। दरगह घड़ीअहि तीने लेख। खोटा कामि न आवै वेखु ॥ १ ॥ नानक जे विचि रुपा होइ। खरा खरा आखै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ। ब्राहमणु नावै जीआ घाइ। जोगी जुगति न जाणै अंधु। तीने ओजाड़े का बंधु ॥ २ ॥ सो जोगी जो जुगति पछाणै। गुर परसादी एको जाणै। काजी सो जो उलटी करै। गुर परसादी जीवतु मरै। सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै। आपि तरै सगले कुल तारै ॥ ३ ॥ दानसबंदु सोई दिलि धोवै। मुसलमाणु सोई मलु खोवै। पड़िआ बूझै सो परवाणु। जिसु सिरि दरगह का नीसाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

यह मनुष्य-शरीर एक काग़ज़ है और मनुष्य का मन उस काग़ज़ पर लिखा हुआ हुक्म है। लेकिन मूर्ख मनुष्य अपने माथे पर लिखा लेख नहीं पढ़ता (अर्थात् अपने भाग्य से अभिज्ञ रहता है)। माया के त्रिगुणात्मक प्रभावों के फलस्वरूप किए कर्मों के संस्कार ईश्वरीय नियम अनुसार प्रत्येक

मनुष्य के हृदय में लिखे जाते हैं। लेकिन, हे भाई! (खोटे-सिक्के के समान) कुकर्मों का संस्कार किसी भी काम में नहीं आता ॥ १ ॥ हे नानक! यदि रुपये आदि सिक्के में चाँदी हो तो प्रत्येक व्यक्ति उसे खरा सिक्का कहता है (इसी प्रकार पवित्र मन वाले व्यक्ति को खरा कहा जाता है) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क़ाज़ी झूठ बोलकर हराम का माल खाता है। ब्राह्मण तीर्थों का स्नान करके भी दूसरे व्यक्तियों को दुखी करता है। योगी भी अन्धा है और जीवन की जाँच नहीं समझता (ये सब धार्मिक नेता हैं, लेकिन) इन तीनों के ही भीतर आत्मिक जीवन की रिक्तता है ॥ २ ॥ वास्तविक योगी वह है, जो जीवन को सही तौर पर परखता है और गुरु-कृपा से परमात्मा के साथ ऐक्य रखता है। क़ाज़ी वह है, जो सुरति को हराम के माल की ओर से हटाता है और गुरु-कृपा से दुनिया में रहता हुआ दुनियावी पदार्थों से विमुख रहता है। ब्राह्मण वह है, जो सर्वव्यापक प्रभु में मन लगाता है और इस प्रकार स्वयं भी संसार-समुद्र से पार उतरता है तथा दूसरों को भी पार उतार देता है ॥ ३ ॥ वही मनुष्य बुद्धिमान है, जो अपने मन की बुराई को दूर करता है। वही मुसलमान है, जो मन से विकारों का मैल नष्ट करता है। वही विद्वान है, जो जीवन का सही रास्ता समझता है; उसके मस्तक पर दरबार का टीका लगता है और वही प्रभु की सेवा में स्वीकृत होता है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

धनासरी महला १ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु । थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु ॥ १ ॥ कल महि राम नामु सारु । अखी त मीटहि नाक पकड़हि ठगण कउ संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आंट सेती नाकु पकड़हि सूझते तिनि लोअ । मगर पाछै कछु न सूझै एहु पदमु अलोअ ॥ २ ॥ खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही । स्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥ ३ ॥ असट साज साजि पुराण सोधहि करहि बेद अभिआसु । बिनु नाम हरि के मुकति नाही कहै नानकु दासु ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ ८ ॥

मनुष्य-जीवन का यह समय बाह्य कर्मकाण्ड (योगादि) के लिए नहीं है (अर्थात् आँखें बन्द करने तथा नाक पकड़ने के लिए नहीं है), (इन तरीक़ों से परमात्मा के साथ मेल नहीं होता), यह ऊँचे आचरण का ढंग

नहीं है। इन तरीक़ों से तो पवित्र हृदय भी गन्दे हो जाते हैं (पूजा-स्थल मलिन हो जाते हैं) और इस प्रकार जगत विकारों में डूबने लग जाता है ॥ १ ॥ जगत में प्रभु का नाम श्रेष्ठ है। जो लोग आँख बन्द करते हैं, नाक पकड़ते हैं, ये सब दुनिया को ठगने के लिए करते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हाथ के अँगूठे के साथ की दो उँगलियों से ये अपना नाक पकड़ते हैं (और समाधि की स्थिति में बैठकर दावा करते हैं कि) तीनों लोक दृष्टिगत हो रहे हैं, लेकिन इन्हें अपनी पीठ पीछे पड़ी कोई चीज़ नहीं दिखती। यह उनका विचित्र पद्मासन है ॥ २ ॥ क्षत्रियों ने (धर्म की रक्षा का) क्षत्रिय कर्म त्याग दिया है, जिन्हें ये मुँह से म्लेच्छ कह रहे हैं, उन्हीं की बोली ग्रहण कर चुके हैं। इनके धर्म की मर्यादा समाप्त हो चुकी है। (अब) तमाम सृष्टि एक ही वर्ण की हो चुकी है ॥ ३ ॥ ब्राह्मण लोग पाठ एवं अर्थ के आठों अंगों की सृजना कर पुराणों का चिन्तन-मनन करते हैं, वेदों का अभ्यास करते हैं; परन्तु दास नानक का कथन है कि परमात्मा का नाम जपे बिना विकारों से मुक्ति नहीं हो सकती (इसलिए नाम-स्मरण ही श्रेष्ठ धर्म है) ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ ८ ॥

धनासरी महला १ आरती

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती। धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती। अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही। सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ। तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ। गुर साखी जोति परगटु होइ। जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा। क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जाते तेरै नामि वासा ॥४॥१॥७॥९॥

सारा आकाश थाल है, सूर्य, चन्द्र इसमें दीपक हैं, तारों के समूह इसमें मोती रखे हैं, मलयानिल मानो सुगन्धित धूप है, हवा चँवर कर रही है और समस्त वनस्पति ज्योतिरूप प्रभु की आरती के लिए पुष्पांजलि दे रही है ॥ १ ॥ हे जीवों के आवागमन का नाश करनेवाले! तुम्हारी कैसी सुन्दर आरती हो रही है। निरन्तर बजनेवाला अनाहत नाद तुम्हारी

आरती के लिए मानो नगाड़े बज रहे हैं ।। १ ।। रहाउ ।। तुम्हारी हज़ारों आँखें हैं, लेकिन कोई भी तुम्हारी (शारीरिक) आँख नहीं है, (प्रभु साकार होकर निराकार हैं इसलिए आँखें उनकी होकर भी उनकी नहीं हैं) । हज़ारों आकृतियाँ तुम्हारी हैं, लेकिन कोई भी तुम्हारी (शारीरिक आकृति) नहीं है। हज़ारों सुन्दर पैर तुम्हारे हैं (लेकिन निराकार होने के कारण) कोई पैर तुम्हारा नहीं है। हज़ारों नाक तुम्हारे ही हैं, लेकिन तुम नाक के बिना ही हो। तुम्हारे ऐसे कौतुकों ने मुझे आश्चर्यचकित किया हुआ है ।।२।। समस्त सृष्टि में एक वही परमात्म-ज्योति विद्यमान है। उस ज्योति के प्रकाश से सारे जीवों में प्रकाश अथवा ज्ञान है। लेकिन इस ज्योति का ज्ञान गुरु की शिक्षा द्वारा ही होता है। इस सर्वव्यापक ज्योति की आरती यह है कि जो कुछ उसकी इच्छा से हो रहा है, वह जीव को भला लगने लगे ।।३।। हे हरि ! तुम्हारे चरण रूपी कमल-फूलों के रस के लिए मेरा मन (भँवरा) ललकता है, प्रतिदिन मुझे इसी रस की तृष्णा है। मुझे (नानक-पपीहे को) अपनी कृपा का जल दो, जिससे मैं तुम्हारे नाम में स्थिर रह सकूँ ।। ४ ।। १ ।। ७ ।। ९ ।।

धनासरी महला ३ घरु २ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। इहु धनु अखुटु न निखुटै न जाइ । पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ । अपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई । गुर किरपा ते हरि मंनि वसाई ।। १ ।। से धनवंत हरि नामि लिव लाइ । गुरि पूरै हरि धनु परगासिआ हरि किरपा ते वसै मनि आइ ।। रहाउ ।। अवगुण काटि गुण रिदै समाइ । पूरे गुर कै सहजि सुभाइ । पूरे गुर की साची बाणी । सुखमन अंतरि सहजि समाणी ।। २ ।। एकु अचरजु जन देखहु भाई । दुबिधा मारि हरि मंनि वसाई । नामु अमोलकु न पाइआ जाइ । गुरपरसादि वसै मनि आइ ।। ३ ।। सभ महि वसै प्रभु एको सोइ । गुरमती घटि परगटु होइ । सहजे जिनि प्रभु जाणि पछाणिआ । नानक नामु मिलै मनु मानिआ ।।४।।१।।

हे भाई ! यह नाम-कोश कभी भी समाप्त होनेवाला नहीं है। न यह समाप्त होता है, न यह खोता है; (इस धन की गुणवत्ता) पूर्णगुरु ने मुझे दिखा दी है। मैं अपने गुरु पर सदा बलिहारी हूँ। गुरु की कृपा द्वारा ही परमात्मा का नाम हृदय में स्मरण करता हूँ ।।१।। जिनके भीतर

पूर्णगुरु ने परमात्मा के नाम का धन प्रकट कर दिया है, वे मनुष्य परमात्मा के नाम में सुरति जोड़कर बादशाह बन गए हैं। हे भाई ! यह नाम-धन परमात्मा की ही कृपा द्वारा मन में स्थिर होता है ॥ रहाउ ॥ गुरु शरणागत के अवगुण दूर कर, उसके मन में परमात्मा की गुणस्तुति की प्रेरणा देता है। पूर्णगुरु द्वारा कही गई सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति वाली वाणी मन में आत्मिक आनन्द पैदा करती है। इससे मन आत्मिक आनन्द में लीन रहता है ॥ २ ॥ हे भाइयो ! एक आश्चर्यजनक तमाशा देखो। गुरु अपने-पराए के भेद की भावना मिटाकर परमात्मा का नाम मन में बसा देता है। परमात्मा का नाम अमूल्य है, वह किसी भी दुनियावी क़ीमत से प्राप्त नहीं हो सकता। (केवल) गुरु-कृपा से ही मन में निवसित होता है ॥ ३ ॥ प्रभु सबके भीतर विद्यमान है, पर गुरु की शिक्षा पर चलने से हृदय में प्रकट हो जाता है। हे नानक ! आत्मिक स्थिरता में टिककर जिस मनुष्य ने प्रभु के साथ गहन सम्बन्ध बनाए हैं और उसे पहचान लिया है, उसे परमात्मा का नाम हमेशा के लिए प्राप्त हो जाता है, उसका मन परमात्मा की स्मृति में आश्वस्त रहता है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ धनासरी महला ३ ॥ हरि नामु धनु निरमलु अति अपारा। गुर कै सबदि भरे भंडारा। नाम धन बिनु होर सभ बिखु जाणु। माइआ मोहि जलै अभिमानु ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि रसु चाखै कोइ। तिसु सदा अनंदु होवै दिनु राती पूरै भागि परापति होइ ॥ रहाउ ॥ सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ। जो चाखै सो निरमलु होइ। निरमल नामि हउमै मलु धोइ। साची भगति सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ जिनि हरि रसु चाखिआ सो हरि जनु लोगु। तिसु सदा हरखु नाही कदे सोगु। आपि मुकतु अवरा मुकतु करावै। हरि नामु जपै हरि ते सुखु पावै ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर सभ मुई बिललाइ। अनदिनु दाझहि साति न पाइ। सतिगुरु मिलै सभ त्रिसन बुझाए। नानक नामि सांति सुखु पाए ॥ ४ ॥ २ ॥

हे भाई ! परमात्मा का नाम पवित्र धन है, अक्षुण्ण धन है। गुरु की शिक्षा के अनुसार आचरण करने से मनुष्य के भीतर इस धन के ख़ज़ाने भर जाते हैं। हे भाई ! हरि-नाम रूपी धन के अतिरिक्त सब लौकिक धन विष ही समझो। लौकिक धन अहंकार पैदा करता है। (लौकिक धन का संग्रह करनेवाला मनुष्य) माया-मोह में जलता रहता है ॥ १ ॥ हे भाई ! जो मनुष्य गुरु की शरण लेकर प्रभु के नाम का स्वाद चखता है,

उसे दिन-रात्रि प्रतिपल आत्मिक आनन्द मिलता है, (लेकिन यह हरि-नाम का रस) सौभाग्यवश ही मिलता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरु का शब्द दीपक है, जो सारे संसार में प्रकाश करता है । जो मनुष्य गुरु के शब्द का आस्वादन करता है, वह सदाचारी हो जाता है । गुरु के शब्द के द्वारा पवित्र हरि-नाम में प्रवृत्त होकर मनुष्य अहंकार का मैल धो डालता है । सत्यस्वरूप प्रभु की भक्ति के प्रभाव से सदा आत्मिक आनन्द बना रहता है ॥ २ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम-रस चख लिया, वह परमात्मा का दास बन गया । उसे सदा आनन्द प्राप्त रहता है, उसे कोई दुख नहीं होता । वह मनुष्य विकारों से बचा रहता है और दूसरों को भी बचा लेता है । वह सदा परमात्मा का नाम जपता रहता है और परमात्मा से सुख प्राप्त करता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! गुरु की शरण लिये बिना सारी दुनिया दुखी होकर आत्मिक मृत्यु प्राप्त करती है । गुरु के बिना मनुष्य मोह-माया में जलते रहते हैं । गुरु के बिना मनुष्य शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता । जिस मनुष्य को गुरु मिल जाता है, उसकी सारी प्यास (तृष्णा) मिट जाती है । हे नानक ! वह मनुष्य हरि-नाम में स्थिर होकर शान्ति और आनन्द प्राप्त करता है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ धनासरी महला ३ ॥ सदा धनु अंतरि नामु समाले । जीअ जंत जिनहि प्रतिपाले । मुकति पदारथु तिन कउ पाए । हरि कै नामि रते लिव लाए ॥ १ ॥ गुर सेवा ते हरि नामु धनु पावै । अंतरि परगासु हरि नामु धिआवै ॥ रहाउ ॥ इहु हरि रंगु गूड़ा धन पिर होइ । सांति सीगारु रावे प्रभु सोइ । हउमै विचि प्रभु कोइ न पाए । मूलहु भुला जनमु गवाए ॥ २ ॥ गुर ते साति सहज सुखु बाणी । सेवा साची नामि समाणी । सबदि मिलै प्रीतमु सदा धिआए । साच नामि वडिआई पाए ॥ ३ ॥ आपे करता जुगि जुगि सोइ । नदरि करे मेलावा होइ । गुरबाणी ते हरि मंनि वसाए । नानक साचि रते प्रभि आपि मिलाए ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिस परमात्मा ने समस्त जीवों के पालन-पोषण की जिम्मेवारी सँभाली हुई है, उस प्रभु का नाम रूपी धन ही सदा साथ निभाता है; इसे अपने भीतर सँभालकर रखो । हे भाई ! विकारों से छुटकारा करानेवाला नाम-धन उन मनुष्यों को मिलता है, जो सुरति लगाकर परमात्मा के नाम में रँगे रहते हैं ॥ १ ॥ गुरु की सेवा करनेवाला मनुष्य परमात्मा का नाम रूपी धन प्राप्त कर लेता है । जो मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करता

है, उसके भीतर आत्मिक जीवन की सूझ पैदा हो जाती है ॥ रहाउ ॥ प्रभु-पति के प्रेम का यह गहरा रंग उस जीव-स्त्री को चढ़ता है, जो शान्ति को अपना आभूषण बनाती है। वह जीव-स्त्री उन प्रभु को प्रतिपल अपने हृदय में धारण किए रखती है। लेकिन अहंकार में रहकर कोई भी जीव परमात्मा को नहीं मिल सकता। अपने प्राणदाता को विस्मृत कर मनुष्य अपना जन्म व्यर्थ गवाँ देता है ॥ २ ॥ गुरु द्वारा वाणी के प्रभाव से आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है, आत्मिक स्थिरता का आनन्द मिलता है। गुरु द्वारा बतलाई सेवा सदा साथ निभनेवाली चीज है, जिसके प्रभाव से नाम में लीनता हो जाती है। जो मनुष्य गुरु के शब्द में प्रवृत्त रहता है, वह प्रियतम-प्रभु को सदा स्मरण करता है, सत्यस्वरूप के नाम में लीन होकर लोक-परलोक में प्रतिष्ठा पाता है ॥३॥ जो कर्तार प्रत्येक युग में विद्यमान है, वह जिस पर कृपा करता है उसे अपने में लीन कर लेता है। वह मनुष्य गुरु की वाणी के प्रभाव से प्रभु को अपने मन में बसा लेता है। हे नानक ! जिन मनुष्यों को प्रभु ने अपने चरणों में जगह दी है, वे उस सत्यस्वरूप प्रभु के प्रेम-रंग में रँगे रहते हैं ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ धनासरी महला ३ तीजा ॥ जगु मैला मैलो होइ जाइ। आवै जाइ दूजै लोभाइ। दूजै भाइ सभ परज विगोई। मनमुखि चोटा खाइ अपुनी पति खोई ॥ १ ॥ गुर सेवा ते जनु निरमलु होइ। अंतरि नामु वसै पति ऊतम होइ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि उबरे हरि सरणाई। राम नामि राते भगति द्रिड़ाई। भगति करे जनु वडिआई पाए। साचि रते सुख सहजि समाए ॥ २ ॥ साचे का गाहकु विरला को जाणु। गुर कै सबदि आपु पछाणु। साची रासि साचा वापारु। सो धंनु पुरखु जिसु नामि पिआरु ॥ ३ ॥ तिनि प्रभि साचै इकि सचि लाए। ऊतम बाणी सबदु सुणाए। प्रभ साचे की साची कार। नानक नामि सवारणहार ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे भाई ! माया-मोह में फँसकर जगत विकार-जीवी हो जाता है। वह अधिकाधिक विकृत जीवन वाला होता जाता है और जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है। हे भाई ! माया-मोह में फँसकर सारी दुनिया दुखी होती है, स्वेच्छाचारी मनुष्य चोटें खाता है और अपनी प्रतिष्ठा गवाँता है ॥ १ ॥ हे भाई ! गुरु द्वारा दिए उपदेशों पर आचरण करने से मनुष्य सदाचारी हो जाता है, उसके भीतर परमात्मा का नाम आ बसता है और उसे ऊँची प्रतिष्ठा प्राप्त होती है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! गुरु के सान्निध्य में रहनेवाले मनुष्य परमात्मा की शरण लेकर माया-मोह से बच निकलते

हैं। वे परमात्मा के नाम में लीन रहते हैं, परमात्मा की भक्ति अपने हृदय में स्थिर रखते हैं। हे भाई! जो मनुष्य परमात्मा की भक्ति करता है, वह लोक-परलोक में प्रतिष्ठा पाता है। जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु के प्रेम में रँगे रहते हैं, वे आत्मिक उल्लास में, आत्मिक स्थिरता में जीवन जीते हैं ॥ २ ॥ सत्यस्वरूप प्रभु के मिलाप का इच्छुक कोई विरला व्यक्ति ही होता है। गुरु के ज्ञान से जागरूक होकर मनुष्य आत्मिक जीवन को परखनेवाला बन जाता है। वह मनुष्य सत्यस्वरूप हरि-नाम की पूँजी सँभाल कर रखता है, वह मनुष्य (सत्यस्वरूप हरि-नाम की पूँजी का) सदा साथ निभानेवाला व्यापार करता है। हे भाई! वह सौभाग्यशाली है, जो परमात्मा के नाम में मग्न हो जाता है ॥ ३ ॥ हे भाई! उस सत्यस्वरूप प्रभु ने कई मनुष्यों को सच्चे हरि-नाम में निमग्न किया हुआ है, उन्हें गुरु की वाणी, गुरु का शब्द सुनाता है और सदाचारी बना लेता है। हे नानक! सत्यस्वरूप प्रभु की यह अटल मर्यादा है कि वह अपने नाम में लगाकर जीवों के जीवन सुन्दर बना देनेवाला है ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ धनासरी महला ३ ॥ जो हरि सेवहि तिन बलि जाउ। तिन हिरदै साचु सचा मुखि नाउ। साचो साचु समालिहु दुखु जाइ। साचै सबदि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ गुरबाणी सुणि मैलु गवाए। सहजे हरि नामु मंनि वसाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूड़ु कुसतु त्रिसना अगनि बुझाए। अंतरि सांति सहजि सुखु पाए। गुर कै भाणै चलै ता आपु जाइ। साचु महलु पाए हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ न सबदु बूझै न जाणै बाणी। मनमुखि अंधे दुखि विहाणी। सतिगुरु भेटे ता सुखु पाए। हउमै विचहु ठाकि रहाए ॥ ३ ॥ किसनो कहीऐ दाता इकु सोइ। किरपा करे सबदि मिलावा होइ। मिलि प्रीतम साचे गुण गावा। नानक साचे साचा भावा ॥ ४ ॥ ५ ॥

जो मनुष्य परमात्मा का स्मरण करते हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। उनके हृदय में सत्यस्वरूप प्रभु विद्यमान रहता है और मुख से भी वे सदैव हरि-नाम ही बोलते है। तुम भी सत्यस्वरूप प्रभु को हृदय में भली प्रकार से रखो, इससे प्रत्येक दुख दूर हो जाता है। हरि की गुणस्तुति वाले शब्दों में प्रवृत्त होने से हरि-नाम मन में आ बसता है ॥ १ ॥ हे भाई! गुरु की वाणी, जो विकारों का मैल दूर कर देती है, आत्मिक रूप से स्थिर कर परमात्मा का नाम भीतर स्थिर करती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (वाणी) मन से झूठ-फ़रेब समाप्त कर देती है, तृष्णा की अग्नि बुझा देती

है। इससे मन में शान्ति पैदा हो जाती है, आत्मिक रूप से स्थिरता मिलती है, आत्मिक आनन्द अनुभूत होता है। जब मनुष्य गुरु की रज़ा के अनुसार आचरण करता है, तब उसका अहंभाव दूर होता है और वह प्रभु की गुणस्तुति के गीत गा-गाकर स्थिर रहनेवाला अवलम्ब प्राप्त कर लेता है ॥ २ ॥ जो मनुष्य न गुरु के ज्ञान को स्वीकारता है, न गुरु की वाणी से गहन सम्बन्ध बनाता है, माया के मोह में अन्धे और स्वेच्छाचारी उस मनुष्य की आयु दुख में ही समाप्त होती है। जब उसे गुरु मिलता है, तब वह आत्मिक आनन्द महसूस करता है। गुरु उसके मन से अहंत्व समाप्त कर देता है ॥ ३ ॥ लेकिन, हे भाई ! किसी दूसरे के समक्ष प्रार्थना नहीं की जा सकती। केवल प्रभु ही दाता है। जब प्रभु कृपा करता है, तब गुरु के उपदेश में प्रवृत्त होकर जीव का प्रभु से मेल हो जाता है। नानक का कथन है कि मैं प्रियतम-गुरु को मिलकर ही सत्यस्वरूप प्रभु का गुणगान कर सकता हूँ, सत्यस्वरूप प्रभु का नाम जपकर उसे प्यारा लग सकता हूँ ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ धनासरी महला ३ ॥ मनु मरै धातु मरि जाइ। बिनु मन मूए कैसे हरि पाइ। इहु मनु मरै दारू जाणै कोइ। मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥ १ ॥ जिसनो बखसे हरि दे वडिआई। गुर परसादि वसै मनि आई ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै। ता इसु मन की सोझी पावै। मनु मै मतु मैगल मिकदारा। गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥ २ ॥ मनु असाधु साधै जनु कोई। अचरु चरै ता निरमलु होई। गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि। हउमै विचहु तजै विकार ॥३॥ जो धुरि रखिअनु मेलि मिलाइ। कदे न विछुड़हि सबदि समाइ। आपणी कला आपे प्रभु जाणै। नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ६ ॥

नाम के प्रभावस्वरूप मन विकारों में ग्रस्त नहीं होता, उसकी तृष्णा समाप्त हो जाती है। जब तक मन विकारों से असम्पृक्त नहीं होता, मनुष्य परमात्मा के ऐक्य से लाभान्वित नहीं हो सकता। हे भाई ! कोई विरला मनुष्य ही वह औषधि जानता है, जिसके द्वारा मन विकारों से प्रभावित होने से बचा रह सके। (नाम में रुचि रखनेवाला) मनुष्य समझ लेता है कि गुरु के उपदेश में लगने से मन विकारों से असम्पृक्त हो जाता है ॥ १ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य पर परमात्मा कृपा करता है, जिसे प्रतिष्ठा देता है, उसके मन में गुरु की कृपा द्वारा नाम टिक जाता

है ॥ रहाउ ॥ जब मनुष्य गुरु का शरणागत होकर करणीय कर्म शुरू कर देता है, तब उसे इस मन को नियन्त्रित करने की सूझ आ जाती है। जब मनुष्य का मन मदमत्त हाथी-तुल्य हो जाता है, तब गुरु ही अपने (ज्ञान रूपी) अंकुश से उसे आत्मिक जीवन देने की सामर्थ्य रखता है ॥२॥ यह मन बड़ी कठिनाई से नियन्त्रित होता है, कोई विरला मनुष्य ही इसे नियन्त्रित करता है। जब मनुष्य इस दुर्दमनीय बाधा को समाप्त कर देता है, तब उसका मन पवित्र हो जाता है। गुरु की शरण लेनेवाला मनुष्य इस मन को सुन्दर बना लेता है और अपने भीतर से अहंत्व आदि विकारों को दूर कर देता है ॥ ३ ॥ जिन मनुष्यों को उसने प्रारम्भ से ही अपने चरणों में जगह दी है, वे गुरु के ज्ञान में प्रवृत्त होकर कभी भी प्रभु से अलग नहीं होते। प्रभु अपनी अन्तर्निहित शक्ति को जानता है। (हे नानक !) गुरु के सान्निध्य में रहनेवाला मनुष्य परमात्मा के नाम में लीन रहता है ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ धनासरी महला ३ ॥ काचा धनु संचहि मूरख गावार। मनमुख भूले अंध गावार। बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइ। ना साथि जाइ न परापति होइ ॥ १ ॥ साचा धनु गुरमती पाए। काचा धनु फुनि आवै जाए ॥ रहाउ ॥ मनमुखि भूले सभि मरहि गवार। भवजलि डूबे न उरवारि न पारि। सतिगुरु भेटे पूरै भागि। साचि रते अहिनिसि बैरागि ॥ २ ॥ चहु जुग महि अंम्रितु साची बाणी। पूरै भागि हरिनामि समाणी। सिध साधिक तरसहि सभि लोइ। पूरै भागि परापति होइ ॥ ३ ॥ सभु किछु साचा साचा है सोइ। ऊतम ब्रहमु पछाणै कोइ। सचु साचा सचु आपि द्रिड़ाए। नानक आपे वेखै आपे सचि लाए ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे भाई ! मूर्ख अज्ञानी लोग केवल नश्वर धन ही जोड़ते रहते हैं। स्वेच्छाचारी तथा माया-मोह में अन्धे व्यक्ति कुमार्गगामी हुए रहते हैं। छल-कपट के धन से सदा दुख ही मिलता है। यह धन न तो मनुष्य के साथ जाता है और न ही इससे सन्तोष प्राप्त होता है ॥ १ ॥ जो मनुष्य गुरु की शिक्षा का अनुसरण करता है, वह सत्यस्वरूप हरि-नाम रूपी धन प्राप्त कर लेता है। (यह धन स्थिर होता है, जबकि) नश्वर धन कभी मनुष्य को मिल जाता है और कभी हाथ से निकल जाता है ॥ रहाउ ॥ स्वेच्छाचारी मूर्ख मनुष्य कुमार्गगामी होकर आत्मिक मृत्यु प्राप्त करते हैं, संसार-समुद्र में डूब जाते हैं; न वे इधर के रहते हैं, न उधर के (माया के साथ डूब मरते हैं)। जिन मनुष्यों को सौभाग्यवश गुरु मिल जाता है,

वे दिन-रात्रि सत्यस्वरूप हरि-नाम में लीन रहते हैं और अनासक्त स्थिति में टिके रहते हैं ॥ २ ॥ हे भाई ! सत्यस्वरूप प्रभु की गुणावली वाली गुरुवाणी हमेशा आत्मिक जीवन का दाता नामामृत प्रदान करती है, (जिससे सौभाग्यवश) मन प्रभु के नाम में लीन हो जाता है । करामाती योगी हों या साधना करनेवाले योगी, सभी जगत में इसके आकांक्षी रहते हैं, लेकिन यह सौभाग्यवश ही मिलती है ॥ ३ ॥ हे भाई ! जो विरला मनुष्य पवित्र परमात्मा के साथ ऐक्य अनुभव करता है, उसे हर वस्तु सत्यस्वरूप प्रभु का रूप दिखती है, उसे सर्वत्र वह सत्यस्वरूप प्रभु ही दिखता है । हे नानक ! परमात्मा अपना सत्यस्वरूप नाम को ही सार्थक करता है । वही सबकी सँभाल करता है और आप ही जीवों को सत्य नाम में लगाता है ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ धनासरी महला ३ ॥ नावै की कीमति मिति कही न जाइ। से जन धंनु जिन इक नामि लिव लाइ। गुरमति साची साचा वीचारु । आपे बखसे दे वीचारु ॥ १ ॥ हरि नामु अचरजु प्रभु आपि सुणाए । कली काल विचि गुरमुखि पाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम मूरख मूरख मन माहि । हउमै विचि सभ कार कमाहि । गुरपरसादी हंउमै जाइ । आपे बखसे लए मिलाइ ॥ २ ॥ बिखिआ का धनु बहुतु अभिमानु । अहंकारि डूबै न पावै माःनु । आपु छोडि सदा सुखु होई । गुरमति सालाही सचु सोई ॥ ३ ॥ आपे साजे करता सोइ । तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ । जिसु सचि लाए सोई लागै । नानक नामि सदा सुखु आगै ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे भाई ! यह नहीं कहा जा सकता कि प्रभु का नाम किस मूल्य से प्राप्त हो सकता है और यह नाम कितनी शक्ति वाला है । जिन मनुष्यों ने परमात्मा के नाम में सुरति लगाई है, वे सौभाग्यशाली हैं । जो मनुष्य गुरु की शुभ शिक्षा आत्मसात् करता है, वह सत्यस्वरूप प्रभु के गुणों की चिन्तना करता है । लेकिन यह गुणचिन्तना प्रभु उसे सौंपता है, जिस पर उसकी कृपा होती है ॥ १ ॥ यह अद्भुत हरि-नाम प्रभु आप ही भक्तों को सुनाता (उनके मन में उपजाता) है । इस कलिकाल में भी गुरमुख हुए अर्थात् परमात्मा रूपी गुरु को प्राप्त किया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम मूर्ख हैं और मन में अज्ञान समाया है । अहंकार के वशीभूत होकर सांसारिक अनेक कर्मों में लगे उनके बन्धनों में बँध रहे हैं । गुरु की कृपा से ही अहंत्व का नाश होता है । वह गुरु ही हमको अपनी कृपा से अपने में मिला

लेता है और हम अहंत्व तजकर उस प्रभु की शरण में पहुँच जाते हैं ।।२।। यह माया का धन अहंकार उपजाता है और जो मनुष्य अहंकार में डूबा रहता है, वह प्रभु के सम्मुख आदर नहीं पाता । अहंभाव छोड़ देने से हमेशा आत्मिक आनन्द बना रहता है । मैं तो गुरु की शिक्षा लेकर उस सत्यस्वरूप प्रभ की गुणस्तुति करता हूँ ।। ३ ।। हे भाई ! वह कर्तार आप ही सृष्टि को पैदा करता है, उसके अतिरिक्त कोई सामर्थ्यवान नहीं है । वह कर्तार जिस मनुष्य को अपने नाम में प्रवृत्त करता है, वही मनुष्य नाम में प्रवृत्त होता है । हे भाई ! जो मनुष्य नाम में प्रवृत्त होता है, उसे लोक तथा परलोक में सदा आनन्द की अनुभूति होती रहती है ।। ४ ।। ८ ।।

रागु धनासिरी महला ३ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता । होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता ।। १ ।। हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु । करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा कोई ।। १ ।। रहाउ ।। बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै । होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ।। २ ।। भनति नानक भरम पट खूल्हे गुरपरसादी जानिआ । साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ।। ३ ।। १ ।। ६ ।।

हे प्रभु ! हम जीव तुम्हारे द्वार के भिक्षुक हैं, तुम सर्वाधिकार सम्पन्न हो, सबको (भिक्षा) देनेवाले हो । हे प्रभु ! मुझ पर आप कृपालु होओ । मुझ भिखारी को अपना नाम दो, ताकि मैं सदा तुम्हारे प्रेम-रंग में रँगा रहूँ ।। १ ।। हे प्रभु ! मैं हमेशा तुम्हारे सत्यस्वरूप नाम पर बलिहारी जाता हूँ । तुम समस्त संसार के मूल हो, तुम ही सब जीवों के उत्पादक हो । कोई अन्य तुम्हारे जैसा नहीं है ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु ! मुझ मायाग्रसित जीव को अनेक चक्र पड़ चुके हैं, अब तो मुझ पर कृपा करो । हे प्रभु ! मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मुझे तुम्हारा दर्शन हो सके ।। २ ।। हे भाई ! नानक का कथन है कि गुरु की कृपा से जिस जीव के भ्रम के परदे खुल जाते हैं, उसका परमात्मा से अविच्छिन्न सम्बन्ध हो जाता है । उसके हृदय में अनवरत लग्न पैदा हो जाती है और गुरु के साथ उसका मन विश्वस्त हो जाता है ।। ३ ।। १ ।। ९ ।।

धनासरी महला ४ घरु १ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जो हरि सेवहि संत भगत तिन के सभि पाप निवारी । हम ऊपरि किरपा करि सुआमी रखु संगति तुम जु पिआरी ॥ १ ॥ हरि गुण कहि न सकउ बनवारी । हम पापी पाथर नीरि डुबत करि किरपा पाखण हम तारी ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के लागे बिखु मोरचा लगि संगति साध सवारी । जिउ कंचनु बैसंतरि ताइओ मलु काटी कटित उतारी ॥ २ ॥ हरि हरि जपनु जपउ दिनु राती जपि हरि हरि हरि उरिधारी । हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी ॥ ३ ॥ हरि हरि अगम अगाधि बोधि अपरंपर पुरख अपारी । जन कउ क्रिपा करहु जगजीवन जन नानक पैज सवारी ॥ ४ ॥ १ ॥

हे प्रभु ! जो सन्त, जो भक्त तुम्हारा स्मरण करते हैं, तुम उनके समस्त पाप दूर करनेवाले हो । हे मालिक-प्रभु ! हम पर भी कृपा करो। हमें सत्संगति में रखो, वही तुम्हें प्यारी लगती है ॥ १ ॥ हे हरि प्रभु ! मैं तुम्हारे गुण व्यक्त नहीं कर सकता । हम जीव पापी हैं, पापों में डूबे रहते हैं, जैसे पत्थर पानी में डूबे रहते हैं । कृपा करके हम पत्थरों को संसार-सागर से पार कर लो ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जैसे अग्नि में तपते हुए सोने का समस्त मैल कट जाता है, वैसे ही जीवों के अनेक जन्मों के इकट्ठे हुए पापों का विष, पापों का जंजाल सत्संगति की शरण लेकर शुद्ध किया जाता है ॥ २ ॥ (इसलिए) मैं दिन-रात्रि परमात्मा के नाम का जाप करता हूँ, नाम जपकर उसे हृदय में बसाए रखता हूँ । परमात्मा का नाम जगत में ऐसी औषधि है, जो (हमेशा) अचूक होती है । यही नाम जपकर अहंभावना समाप्त की जा सकती है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि हे अगम्य, अपहुँच, अपरम्पार, सर्वव्यापक, अनन्त, जगज्जीवन प्रभु ! अपने सेवकों पर कृपा करो और उनकी प्रतिष्ठा की रक्षा करो ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि के संत जना हरि जपिओ तिन का दूखु भरमु भउ भागी । अपनी सेवा आपि कराई गुरमति अंतरि जागी ॥ १ ॥ हरि कै नामि रता बैरागी । हरि हरि कथा सुणी मनि भाई गुरमति हरि लिव लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

संत जना की जाति हरि सुआमी तुम्ह ठाकुर हम सांगी । जैसी मति देवहु हरि सुआमी हम तैसे बुलग बुलागी ।। २ ।। किआ हम किरम नान्ह निक कीरे तुम्ह वडपुरख वडागी । तुम्हरी गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ।। ३ ।। हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु हम हरि हरि सेवा लागी । नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि कथा कथागी ।। ४ ।। २ ।।

हे भाई ! परमात्मा के जिन सन्तजनों ने उसका नाम स्मरण किया, उन सन्तों का हर एक दुख, भ्रम और भय दूर हो जाता है । परमात्मा आप ही उनसे अपनी भक्ति कराता है और उस प्रभु की कृपा से ही गुरु का उपदेश प्रभावी होता है ।। १ ।। हे भाई ! जो मनुष्य परमात्मा के नाम में लीन रहता है, वह माया-मोह से निर्लिप्त हो जाता है । वह परमात्मा की गुणस्तुति की बातें सुनता है और उसे वे बातें प्यारी लगती हैं । गुरु के उपदेश के प्रभाव से उसकी लग्न परमात्मा में लगी रहती है ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु ! सन्तों की जाति तुम स्वयं हो । हे प्रभु ! तुम हमारे स्वामी हो, हम तुम्हारे आदेश पर चलनेवाले हैं । जैसी बुद्धि तुम हमें देते हो, वैसा बोल ही हम बोलते हैं ।।२।। हे प्रभु ! हमारा क्या सामर्थ्य है ? हम बहुत छोटे-छोटे कीड़े हैं, तुम महान पुरुष हो । हम जीव यह नहीं बतला सकते कि तुम कैसे हो और कितने बड़े हो ? हम अभागे जीव तुम्हें कैसे मिलें ? ।। ३ ।। हे हरि ! हे स्वामी ! हम पर कृपा करो ताकि हम तुम्हारी सेवा-भक्ति में लगें । नानक का कथन है कि हे प्रभु ! हमें अपने दासों का दास बना लो ताकि हम तुम्हारी गुणस्तुति की बातें करते रहें ।। ४ ।। २ ।।

।। धनासरी महला ४ ।। हरि का संतु सतगुरु सत पुरखा जो बोलै हरि हरि बानी । जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिसकै सद कुरबानी ।। १ ।। हरि के संत सुनहु जसु कानी । हरि हरि कथा सुनहु इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ।। १ ।। रहाउ ।। ऐसा संतु साधु जिन पाइआ ते वड पुरख वडानी । तिनकी धूरि मंगह प्रभ सुआमी हम हरि लोच लुचानी ।। २ ।। हरि हरि सफलिओ बिरखु प्रभ सुआमी जिन जपिओ से त्रिपतानी । हरि हरि अंम्रितु पी त्रिपतासे सभ लाथी भूख भुखानी ।। ३ ।। जिन के वडे भाग वड ऊचे तिन हरि जपिओ जपानी । तिन हरि संगति मेलि प्रभ सुआमी जन नानक दास दसानी ।। ४ ।। ३ ।।

हे भाई ! गुरु महापुरुष है, परमात्मा का सन्त है, जो परमात्मा की गुणस्तुति की वाणी उच्चरित करता है। जो-जो मनुष्य इस वाणी को पढ़ता-सुनता है, वह पापों से मुक्त हो जाता है। उस गुरु पर मैं सदा बलिहारी हूँ ॥१॥ हे सन्तो ! परमात्मा की स्तुति ध्यानपूर्वक सुना करो। निमिष मात्र के लिए, एक पल के लिए भी यदि परमात्मा की गुणस्तुति की बातें सुनो तो समस्त दोष, पाप दूर हो जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिन मनुष्यों ने ऐसा सन्त गुरु प्राप्त कर लिया है, वे महान बन गए हैं। हे प्रभु, स्वामी, हरि ! मैं तुमसे उनके चरणों की धूलि माँगता हूँ, मुझे उनकी चरणधूलि की आकांक्षा है ॥ २ ॥ तुम कल्पवृक्ष हो। जिन मनुष्यों ने तुम्हारा नाम जपा, वे तृप्त हो गए। हे हरि ! तुम्हारा नाम आत्मिक जीवन देनेवाला जल है, जिसे पीकर लोग तृप्त हो जाते हैं। उनकी तृष्णा (समस्त भूख) मिट जाती है ॥ ३ ॥ जिन मनुष्यों के भाग्य शुभ होते हैं, वे परमात्मा के नाम का जाप करते हैं। दास नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मुझे उनकी संगति में रखो और मुझे उनके दासों का दास बना दो ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ धनासरी महला ४ ॥ हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली। सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली ॥ १ ॥ गुरसिख मीत चलहु गुर चाली। जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली। सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधउ मत जाणहु आजु कि काल्ही ॥ २ ॥ हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली। जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल केलाली ॥ ३ ॥ हरि हरि जपनु जपि लोच लुोचानी हरि किरपा करि बनवाली। जन नानक संगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग राली ॥ ४ ॥ ४ ॥

हम जीव माया-मोह में अन्धे होकर माया से सम्बद्ध पदार्थों के विष में लिप्त रहते हैं। हम किस प्रकार गुरु द्वारा बतलाए मार्ग पर चल सकते हैं ? सुखदाता गुरु आप ही कृपा करे और हमें अपने साथ लगाए ॥१॥ हे गुरमुख मित्रो ! गुरु द्वारा बतलाए जीवन-मार्ग पर चलो। जो कुछ गुरु कहते हैं, उसे सही समझो (क्योंकि) प्रभु की गुणस्तुति अनोखी है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे हरि के सन्तो, भाइयो ! सुनो, शीघ्र ही गुरु की शरण में जाओ। गुरु की शरण लेकर जीवन-यात्रा के लिए परमात्मा के नाम का मार्ग-व्यय

संग लो। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए आज या कल पर बात नहीं टालो ॥ २ ॥ हे हरि के सन्तो ! परमात्मा के नाम का जाप करो। इससे हरि का सन्त हरि की इच्छा को स्वीकारने लगता है। हे भाई ! जो मनुष्य परमात्मा का नाम जपते हैं, वे परमात्मा का रूप हो जाते हैं। संसार में लीला रचानेवाला प्रभु उन्हें मिल जाता है ॥ ३ ॥ दास नानक का कथन है कि हे बनवारी प्रभु ! मुझे तुम्हारा नाम जपने की इच्छा लगी हुई है। कृपा करके मुझे सत्संगति में मिलाए रखो, मुझे तुम्हारे सन्तजनों के चरणों की धूलि मिलती रहे ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि हरि बूंद भए हरि सुआमी हम चात्रिक बिलल बिललाती। हरि हरि क्रिपा करहु प्रभ अपनी मुखि देवहु हरि निमखाती ॥ १ ॥ हरि बिनु रहि न सकउ इक राती। जिउ बिनु अमलै अमली मरि जाई है तिउ हरि बिनु हम मरि जाती ॥ रहाउ ॥ तुम हरि सरवर अति अगाह हम लहि न सकहि अंतु माती। तू परै परै अपरंपरु सुआमी मिति जानहु आपन गाती ॥ २ ॥ हरि के संत जना हरि जपिओ गुर रंगि चलूलै राती। हरि हरि भगति बनी अति सोभा हरि जपिओ ऊतम पाती ॥ ३ ॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु आपि बनावै भाती। नानकु जनु तुमरी सरणाई हरि राखहु लाज भगाती ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे हरि, हे स्वामी ! मैं पपीहा हूँ, तुम्हारी नाम रूपी स्वाति-बूंद के लिए तड़प रहा हूँ। तुम्हारा नाम मेरे लिए (स्वाति-) बूंद बना रहे। हे हरि प्रभु ! अपनी कृपा करो, एक निमिष के लिए ही मेरे मुँह में स्वाति-बूंद डाल दो ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा के नाम के बिना मैं पल मात्र के लिए भी नहीं रह सकता। जैसे नशे के बिना नशई मनुष्य तड़प उठता है, वैसे ही परमात्मा के नाम के बिना मैं घबरा जाता हूँ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम अत्यन्त गहन समुद्र हो, हम तुम्हारी थाह का तनिक भी अनुमान नहीं कर सकते। तुम अपरम्पार और अनन्त हो। हे स्वामी ! तुम कैसे और कितने बड़े हो —यह भेद तुम आप ही जानते हो ॥ २ ॥ परमात्मा के जिन सन्तों ने परमात्मा का नाम जपा, वे गुरु के गहन अनुराग-रंग में रँग गए, उनके भीतर परमात्मा की भक्ति का रंग जम गया। उन्हें अत्यन्त आदर-सम्मान मिला। जिन्होंने प्रभु का नाम जपा, वे प्रतिष्ठित हो गए ॥ ३ ॥ लेकिन, हे भाई ! भक्ति करने की योजना प्रभु आप ही बनाता है। वह आप ही मालिक है और आप ही सेवक है।

हे प्रभु ! तुम्हारा दास नानक तुम्हारा शरणागत है। तुम आप ही अपने भक्तों की प्रतिष्ठा का निर्वाह करते हो ।। ४ ।। ५ ।।

।। धनासरी महला ४ ।। कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी। हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि जपिओ तरै तराकी ।। १ ।। हरि जी लाज रखहु हरि जन की। हरि हरि जपनु जपावहु अपना हम मागी भगति इकाकी ।। रहाउ ।। हरि के सेवक से हरि पिआरे जिन जपिओ हरि बचना की। लेखा चित्र गुपति जो लिखिआ सभ छूटी जम की बाकी ।। २ ।। हरि के संत जपिओ मनि हरि हरि लगि संगति साध जना की। दिनीअरु सूरु त्रिसना अगनि बुझानी सिव चरिओ चंदु चंदा की ।। ३ ।। तुम वड पुरख वड अगम अगोचर तुम आपे आपि अपा की। जन नानक कउ प्रभ किरपा कीजै करि दासनि दास दसा की ।। ४ ।। ६ ।।

मुझे वह धर्म बताओ जिससे कलियुग में जगत के विकारों, झमेलों से बचा जा सके। मैं इन झमेलों से बचना चाहता हूँ। बताओ, मैं कैसे बचूँ ? (इसका उत्तर अगली पंक्तियों में है।) परमात्मा के नाम का जाप नाव है, नाम ही (तुलहा) छोटी नाव (लकड़ियों को जोड़कर बनाई हुई) है। जिस मनुष्य ने हरि-नाम का जाप किया, वह तैराक बनकर पार उतर जाता है ।। १ ।। हे प्रभु ! अपने सेवक की मर्यादा की रक्षा करो। मुझे अपने नाम के जपने की सामर्थ्य दो। मैं तो केवल तुम्हारी भक्ति का दान माँग रहा हूँ ।। रहाउ ।। हे भाई ! जिन मनुष्यों ने गुरु के वचनों के द्वारा परमात्मा का नाम जपा, वे सेवक स्वामी को प्रिय लगते हैं। चित्रगुप्त ने जो उनके कर्मों का लेख लिखा था, धर्मराज के यहाँ वह सारा हिसाब ही समाप्त हो जाता है ।। २ ।। जिन सन्तजनों ने सन्तों की संगति में बैठकर अपने मन में परमात्मा के नाम का जाप किया, उनके भीतर कल्याण रूपी परमात्मा का उदय मानो शीतलतादायक चन्द्रमा के समान हो गया, जिसने तृष्णा की आग बुझा दी और तपता सूर्य (शान्त कर दिया) ।। ३ ।। हे प्रभु ! तुम सबसे बड़े हो, तुम सर्वव्यापक हो, तुम अपहुँच हो और ज्ञानेन्द्रियों की पकड़ से परे हो। तुम सर्वत्र आप ही आप हो। हे प्रभु ! अपने दास नानक पर कृपा करो और उसे अपने दासों का दास बना लो ।।४।।६।।

धनासरी महला ४ घरु ५ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ उरधारि बीचारि मुरारि रमो रमु मन मोहन नामु जपीने । अद्रिसटु अगोचरु अपरंपर सुआमी गुरि पूरै प्रगट करि दीने ॥ १ ॥ राम पारस चंदन हम कासट लोसट । हरि संगि हरी सतसंगु भए हरि कंचनु चंदनु कीने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नव छिअ खटु बोलहि मुख आगर मेरा हरि प्रभु इव न पतीने । जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु इउ हरि प्रभु मेरा भीने ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

हे भाई ! पूर्णगुरु ने जिसके भीतर उस अगोचर, अप्राप्य और अनन्त परमात्मा का नाम प्रकट कर दिया है, वह मनुष्य उस प्रभु को, उस मनमोहन प्रभु के नाम को हृदय और मस्तिष्क में अवस्थित कर सदा जपता रहता है ॥१॥ परमात्मा पारस है और हम लोहा हैं। परमात्मा चन्दन है और हम (जीव) काठ हैं। जिस मनुष्य का परमात्मा के साथ ऐक्यभाव हो जाता है, परमात्मा उस मनुष्य को कंचन (के तुल्य शुद्ध) बना देता है, (और काठ से सुगन्धित) चन्दन बना देता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कितने लोग नौ व्याकरण, छः शास्त्र कंठस्थ कर लेते हैं, लेकिन प्यारा हरि-प्रभु इस प्रकार प्रसन्न नहीं होता। दास नानक का कथन है कि परमात्मा को अपने भीतर हमेशा स्थिर रखो, इसी प्रकार परमात्मा प्रसन्न होता है ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

॥ धनासरी महला ४ ॥ गुन कहु हरि लहु करि सेवा सतिगुर इव हरि हरि नामु धिआई । हरि दरगह भावहि फिरि जनमि न आवहि हरि हरि हरि जोति समाई ॥ १ ॥ जपि मन नामु हरी होहि सरब सुखी । हरि जसु ऊच सभना ते ऊपरि हरि हरि हरि सेवि छडाई ॥ रहाउ ॥ हरि क्रिपानिधि कीनी गुरि भगति हरि दीनी तब हरि सिउ प्रीति बनि आई । बहु चिंत विसारी हरि नामु उरिधारी नानक हरि भए है सखाई ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥

हे भाई ! परमात्मा के गुण स्मरण किया करो और उसके मिलाप का प्रयत्न करते रहो। गुरु-आदेशानुसार सेवा की विधि द्वारा उस प्रभु का नाम-स्मरण किया करो। ऐसा करने पर तुम्हें प्रभु के दरबार में सम्मान मिलेगा, पुनर्जन्म नहीं लेना पड़ेगा और तुम प्रभु की ज्योति में

हमेशा अन्तर्निहित रहोगे ।। १ ।। हे मन ! प्रभु का नाम-स्मरण किया करो, इससे तुम हमेशा आनन्दित रहोगे । प्रभु की गुणस्तुति सर्वोत्तम कर्म है, परमात्मा की सेवा-भक्ति करते रहो, यह (विकारों से) रक्षा करती है ।। रहाउ ।। लेकिन, हे भाई ! कृपालु प्रभु ने जिस पर कृपा की, गुरु ने उसी मनुष्य को भक्ति का वरदान दिया । इस प्रकार उस मनुष्य का प्रेम परमात्मा के साथ दृढ़ हो गया । हे नानक ! जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम अपने भीतर दृढ़ कर लिया, उसने बहुत सारी व्यर्थ चिन्ता भुला दी और परमात्मा उसका साथी बन गया ।। २ ।। २ ।। ८ ।।

।। धनासरी महला ४ ।। हरि पड़ु हरि लिखु हरि जपि हरि गाउ हरि भउजलु पारि उतारी । मनि बचनि रिदै धिआइ हरि होइ संतुसटु इव भणु हरि नामु मुरारी ।। १ ।। मनि जपीऐ हरि जगदीस । मिलि संगति साधू मीत । सदा अनंदु होवै दिनु राती हरि कीरति करि बनवारी ।। रहाउ ।। हरि हरि करी द्रिसटि तब भइओ मनि उदमु हरि हरि नामु जपिओ गति भई हमारी । जन नानक की पति राखु मेरे सुआमी हरि आइ परिओ है सरणि तुमारी ।। २ ।। ३ ।। ९ ।।

हे भाई ! परमात्मा का नाम पढ़ा करो । परमात्मा का नाम लिखते रहो; परमात्मा का नाम जपा करो और उसकी गुणस्तुति का गीत गाया करो । परमात्मा संसार-समुद्र से पार उतार देता है । मन, हृदय और जिह्वा द्वारा प्रभु का नाम-स्मरण करके सन्तुष्ट हो जाओ ।। १ ।। हे मित्र ! गुरु की संगति में रहकर जगत के स्वामी हरि का नाम मन में जपना चाहिए । परमात्मा की गुणस्तुति किया करो (इस प्रकार) रात-दिन आत्मिक आनन्द बना रहता है ।। रहाउ ।। हे भाई ! जब परमात्मा ने कृपादृष्टि की, तब मन में उद्यम पैदा हुआ । तभी हमने नाम जपा और हमारी उच्च आत्मिक अवस्था बन गई । हे मेरे मालिक-प्रभु ! अपने दास नानक की प्रतिष्ठा की रक्षा करो, यह दास तुम्हारा शरणागत है ।। २ ।। ३ ।। ९ ।।

।। धनासरी महला ४ ।। चउरासीह सिध बुध तेतीस कोटि मुनि जन सभि चाहहि हरि जीउ तेरो नाउ । गुर प्रसादि को विरला पावै जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि भाउ ।। १ ।। जपि मन रामै नामु हरि जसु ऊतम काम । जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी हउ तिन कै सद बलिहारै जाउ ।। रहाउ ।।

सरणागति प्रतिपालक हरि सुआमी जो तुम देहु सोई हउ पाउ । दीन दइआल क्रिपा करि दीजै नानक हरि सिमरण का है चाउ ।। २ ।। ४ ।। १० ।।

हे भाई ! योगमत के चौरासी सिद्ध, महात्मा बुद्ध जैसे ज्ञानी, तेंतीस करोड़ देव, अनेकों ऋषि-मुनि —ये सब तुम्हारा नाम चाहते हैं, लेकिन इनमें कोई विरला ही गुरु की कृपा द्वारा इसे प्राप्त करता है । जिनके मस्तक पर प्रभु के दरबार से हरि-नाम का प्रेम लिखा हुआ है (वे ही प्राप्त करते हैं) ।। १ ।। हे मन ! परमात्मा का नाम जपा करो । उसकी गुणस्तुति सर्वोत्कृष्ट कर्म है । हे हरि ! जो तुम्हारी गुणस्तुति का गायन, श्रवण करते हैं, मैं उन पर हमेशा बलिहारी हूँ ।। रहाउ ।। हे शरणागतों के रक्षक प्रभु ! तुम जो देते हो, मैं वही प्राप्त कर सकता हूँ । हे दीनदयालु ! कृपा करके नानक को अपने नाम की देन दो, मुझे (नानक को) तुम्हारे नाम-स्मरण का चाव है ।। २ ।। ४ ।। १० ।।

।। धनासरी महला ४ ।। सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी । गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ।। १ ।। बोलहु भाई हरि कीरति हरि भवजल तीरथि । हरि दरि तिन की ऊतम बात है संतहु हरि कथा जिन जनहु जानी ।। रहाउ ।। आपे गुरु चेला है आपे आपे हरि प्रभु चोज विडानी । जन नानक आपि मिलाए सोई हरि मिलसी अवर सभ तिआगि ओहा हरि भानी ।। २ ।। ५ ।। ११ ।।

हे भाई ! सब सेवक प्रभु के द्वार पर पूजा-भक्ति करने आते हैं और प्रभु की गुणस्तुति से परिपूरित श्रेष्ठ गुरुवाणी का गान करते हैं । लेकिन प्रभु उन्हीं लोगों का वाणी-गायन एवं श्रवण स्वीकारता है, जिन्होंने गुरु के हुक्म को सही जानकर उस पर आचरण किया है ।। १ ।। हे भाई ! संसार-समुद्र से पार उतारनेवाले गुरु रूपी तीर्थ की शरण लेकर परमात्मा की गुणस्तुति किया करो । परमात्मा के द्वार पर उन मनुष्यों का सत्कार होता है, जो परमात्मा के गुणगान में लीन हैं ।। रहाउ ।। प्रभु आप ही गुरु है, आप ही सिख है, प्रभु आप ही कौतुक करनेवाला है । (हे नानक !) वही मनुष्य परमात्मा को मिल सकता है, जिसे परमात्मा स्वयं मिलाता है । शेष सब कुछ छोड़कर (प्रभु का नाम-स्मरण करो) क्योंकि प्रभु को वह गुणस्तुति प्यारी लगती है ।। २ ।। ५ ।। ११ ।।

॥ धनासरी महला ४ ॥ इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जाकै वसि है कामधेना । सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना ॥ १ ॥ जपि मन सतिनामु सदा सतिनामु । हलति पलति मुख ऊजल होईहै नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना ॥ रहाउ ॥ जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरि जपना । जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना ॥ २ ॥ ६ ॥ १२ ॥

हे मेरी आत्मा ! जो हरि सब कामनाओं की पूर्ति करनेवाला है, सब सुखों का दाता है, जिसके वश में कामधेनु है, उसी समर्थ प्रभु का स्मरण कर । तभी तू सारे सुख प्राप्त कर सकेगी ॥ १ ॥ हे मन ! सत्यस्वरूप प्रभु का नाम जपा करो । सर्वव्यापक निर्लिप्त हरि का सदा स्मरण करना चाहिए, इससे लोक-परलोक में प्रतिष्ठा मिलती है ॥ रहाउ ॥ जिस हृदय में परमात्मा की भक्ति होती है, उसमें से हर प्रकार का झगड़ा-झंझट दूर हो जाता है । सौभाग्य होने पर ही प्रभु का भजन हो सकता है । दास नानक को गुरु ने यह सूझ दी है कि परमात्मा का नाम-स्मरण कर संसार-समुद्र से पार उतरा जाता है ॥ २ ॥ ६ ॥ १२ ॥

॥ धनासरी महला ४ ॥ मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइ । हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु सचु तू मेरे साहा तेरा कीआ सचु सभु होइ । झूठा किस कउ आखीऐ साहा दूजा नाही कोइ ॥ १ ॥ सभना विचि तू वरतदा साहा सभि तुझहि धिआवहि दिनु राति । सभि तुझ ही थावहु मंगदे मेरे साहा तू सभना करहि इक दाति ॥ २ ॥ सभु को तुझही विचि है मेरे साहा तुझ ते बाहरि कोई नाहि । सभि जीअ तेरे तू सभसदा मेरे साहा सभि तुझही माहि समाहि ॥ ३ ॥ सभना की तू आस है मेरे पिआरे सभि तुझहि धिआवहि मेरे साह । जिउ भावै तिउ रखु तू मेरे पिआरे सचु नानक के पातिसाह ॥ ४ ॥ ७ ॥ १३ ॥

हे मेरे बादशाह ! कृपा करो ताकि मुझे तुम्हारे दर्शनों का आनन्द प्राप्त हो जाए । मेरे दिल की पीड़ा तुम ही जानते हो, कोई दूसरा क्या जान सकता है ? ॥ रहाउ ॥ हे मेरे बादशाह ! तुम शाश्वत हो, अटल हो । जो भी तुम करते हो, वह भी दोषहीन है । हे बादशाह ! तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है । इसलिए कुछ भी झूठा नहीं कहा जा

सकता ॥ १ ॥ हे मेरे बादशाह ! तुम सब जीवों में मौजूद हो, सब जीव दिन-रात तुम्हारा ही स्मरण करते हैं। सब जीव तुमसे ही माँगते हैं। एक तुम ही सब जीवों को देनेवाले हो ॥२॥ हे मेरे बादशाह ! हर जीव तुम्हारे हुक्म अनुसार चलता है। तुमसे विपरीत कोई नहीं चल सकता। सब जीव तुम्हारे द्वारा उत्पादित हैं और ये सब तुम्हारे भीतर ही विलीन हो जाते हैं ॥ ३ ॥ तुम ही सब जीवों की इच्छाएँ पूर्ण करते हो, सब जीव तुम्हारा ही स्मरण करते हैं। हे नानक के बादशाह ! जैसे तुम्हें भला लगता है, वैसे ही मुझे अपने चरणों में रखो। तुम ही शाश्वत सत्यस्वरूप हो ॥ ४ ॥ ७ ॥ १३ ॥

धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ भवखंडन दुखभंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे। कोटि पराध मिटे खिन भीतरि जां गुरमुखि नामु समारे॥ १॥ मेरा मनु लागा है राम पिआरे। दीन दइआलि करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे॥ १॥ रहाउ॥ तेरा थानु सुहावा रूपु सुहावा तेरे भगत सोहहि दरबारे। सरब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेहु उबारे॥ २॥ तेरा वरनु न जापै रूपु न लखीऐ तेरी कुदरति कउनु बीचारे। जलि थलि महीअलि रविआ स्रब ठाई अगम रूप गिरधारे॥ ३॥ कीरति करहि सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरखु मुरारे। जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरनि दुआरे॥ ४॥ १॥

हे जन्म-मरण का चक्र नष्ट करनेवाले, दुखों के नाशक, भक्तों के साथ प्रेम करनेवाले, आकार-रहित प्रभु ! जब कोई मनुष्य गुरु की शरण लेकर तुम्हारा नाम हृदय में धारण करता है, तब उसके करोड़ों पाप एक क्षण में ही मिट जाते हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! मेरा मन प्यारे प्रभु में रम गया है। दीनदयालु प्रभु ने आप ही कृपा की है और पाँचों कामादिक वैरी वश में आ गए हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा स्थान सुन्दर है, तुम्हारा रूप सुन्दर है, भक्त तुम्हारे दरबार में समादृत होते हैं। जीवों को समस्त प्राप्य देनेवाले मालिक-प्रभु ! कृपा करो, मुझे (विकारों से) बचाए रखो ॥ २ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा कोई रंग, रूप नहीं दिखता। कोई मनुष्य नहीं सोच सकता कि तुम्हारी शक्ति कितनी है। हे अगम्य परमात्मा ! तुम पानी, पृथ्वी, आकाश में सर्वत्र मौजूद हो ॥ ३ ॥

हे मुरारी ! तुम अनश्वर हो, सर्वव्यापक हो, तुम्हारे सब सेवक तुम्हारी गुणस्तुति करते हैं। दास नानक का कथन है कि हे स्वामी ! मैं तुम्हारे द्वार पर आ गिरा हूँ, तुम्हारा शरणागत हूँ; जैसे तुम्हें उचित लगे, उसी प्रकार मेरी रक्षा करो ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ बिनु जल प्रान तजे है मीना जिनि जल सिउ हेतु बढाइओ। कमल हेति बिनसिओ है भवरा उनि मारगु निकसि न पाइओ ॥ १ ॥ अब मन एकस सिउ मोहु कीना। मरै न जावै सद ही संगे सतिगुर सबदी चीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम हेति कुंचरु लै फांकिओ ओहु परवसि भइओ बिचारा। नाद हेति सिरु डारिओ कुरंका उसही हेत बिदारा ॥ २ ॥ देखि कुटंबु लोभि मोहिओ प्रानी माइआ कउ लपटाना। अति रचिओ करि लीनो अपुना उनि छोडि सरापर जाना ॥ ३ ॥ बिनु गोबिंद अवर संगि नेहा ओहु जाणहु सदा दुहेला। कहु नानक गुर इहै बुझाइओ प्रीति प्रभू सद केला ॥ ४ ॥ २ ॥

हे भाई ! मछली पानी से अलग होकर प्राण त्याग देती है, क्योंकि उसने पानी के साथ मोह बढ़ाया हुआ है। कमल-पुष्प में बन्द होकर भँवरे ने मृत्यु पाई, क्योंकि उसने उसमें से निकलकर 'बाहर का मार्ग' न पाया ॥ १ ॥ हे मन ! जिस मनुष्य ने अब परमात्मा से प्रेम कर लिया है, वह जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ता, वह हमेशा परमात्मा के चरणों में लीन रहता है। गुरु के ज्ञान में प्रवृत्त होकर वह परमात्मा से मेल किए रखता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामवासना के परिणामस्वरूप हाथी फँस गया, वह बेचारा पराधीन हो गया। आवाज़ के मोह में हिरन अपना सिर दे बैठता है, उसी के प्रेम में मारा जाता है ॥ २ ॥ मनुष्य अपना परिवार देखकर माया के लोभ में फँस जाता है, माया में चिपटा रहता है, माया-मोह में तल्लीन होता है, माया को अपनी बना लेता है, जबकि उसे सब कुछ छोड़कर यहाँ से चले जाना है ॥३॥ हे भाई ! जो मनुष्य परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य से प्रेम करता है, विश्वास करो, वह सदा दुखी रहता है। नानक का कथन है कि गुरु ने ही मुझे यह ज्ञान दिया है कि परमात्मा के साथ प्रेम करने से हमेशा आत्मिक आनन्द बना रहता है ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ धनासरी म० ५ ॥ करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाए। मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी

लाए ॥ १ ॥ साध संगि चित बिरानी छाडी । अहंबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाको मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई । ब्रहमु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ॥ २ ॥ सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन । दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मेरै राजन ॥ ३ ॥ बिनसिओ ढीठा अंम्रितु वूठा सबदु लगो गुर मीठा । जलि थलि महीअलि सरब निवासी नानक रमईआ डीठा ॥ ४ ॥ ३ ॥

सत्संगति में गुरु-कृपा से मुझे परमात्मा का नाम मिला । गुरु के चरणों में जगह पाकर मुझे माया के बन्धनों से छुटकारा मिला और मेरे मन से सारा विकार दूर हो गया ॥ १ ॥ हे भाई ! सत्संगति पाकर मैंने दूसरों की आशा त्याग दी; अहं, माया-मोह, मन की आकांक्षा —इन सबको गढ़ा खोदकर दाब दिया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सत्संगति के कारण मेरा कोई दुश्मन नहीं रह गया । मैं भी किसी से दुश्मनी नहीं करता । मुझे गुरु के द्वारा यह समझ प्राप्त हो गई है कि संसार का सब प्रसार परमात्मा आप ही है, सबके भीतर उसने स्वयं को फैलाया हुआ है ॥ २ ॥ अब मैं हर प्राणी को मित्र समझता हूँ । मैं भी सबका सज्जन मित्र बना रहता हूँ । मेरे मन का बिछोह कहीं दूर चला गया है । जब मैंने सत्संगति की शरण ली, तब मेरे प्रभु (बादशाह) ने मुझे अपने चरणों में जगह दे दी ॥ ३ ॥ सत्संगति द्वारा मेरे मन की धृष्टता समाप्त हो गई है, मेरे भीतर आत्मिक जीवन देनेवाला नामामृत आ टिका है, गुरु का शब्द मुझे प्यारा लग रहा है । नानक का कथन है कि अब मैंने जल, थल, आकाश में सर्वत्र रमण करनेवाले सुन्दर राम को देख लिया है ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ धनासरी म० ५ ॥ जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए । महा अनंदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ॥ १ ॥ अब मोहि राम जसो मनि गाइओ । भइओ प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु पूरा पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधानु रिद भीतरि वसिआ ता दूखु भरम भउ भागा । भई परापति वसतु अगोचर राम नामि रंगु लागा ॥२॥ चित अचिंता सोच असोचा सोगु लोभु मोहु थाका । हउमै रोग मिटे किरपा ते जम ते भए बिबाका ॥ ३ ॥ गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी । कहु नानक जिनि जम ते काढे तिसु गुर कै कुरबाणी ॥ ४ ॥ ४ ॥

जब से गुरु के दर्शन हुए हैं, तब से मेरे ऐसे शुभ दिन आ गए हैं कि परमात्मा का गुणगान करने में मेरे भीतर सुख बना रहता है, मुझे सर्वव्यापक कर्तार मिल गया है ॥ १ ॥ हे भाई ! (मुझे गुरु मिल गया है) अब मैं प्रभु की गुणस्तुति का गायन करता हूँ, मेरे भीतर आत्मिक प्रकाश हो गया है। मेरे मन में सदा आत्मिक आनन्द बना रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब से गुणों का ख़ज़ाना परमात्मा मेरे हृदय में आ बसा है, तब से मेरा हर एक दुख, भ्रम, भय दूर हो गया है। परमात्मा के नाम में मेरा लगाव हो गया है। मुझे वह उत्तम वस्तु उपलब्ध हो गई है, जिस तक ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच नहीं थी ॥ २ ॥ मैं समस्त चिन्ताओं और दुश्चिन्ताओं से बच गया हूँ, मेरे भीतर से दुख समाप्त हो गया है, लोभ समाप्त हो गया है, मोह मिट गया है। गुरु-कृपा से मेरे भीतर अवस्थित अहंत्व आदि रोग मिट गए हैं, (अब) मुझे यमराज से भी कोई भय नहीं लगता ॥ ३ ॥ हे भाई ! अब मुझे गुरु की सेवा, गुरु की आज्ञा ही प्यारी लगती है। (नानक का कथन है कि) मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने मुझे दुखों से बचा लिया है ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ जिस का तनु मनु धनु सभु तिस का सोई सुघड़ु सुजानी। तिनही सुणिआ दुखु सुखु मेरा तउ बिधि नीकी खटानी ॥ १ ॥ जीअ की एकै ही पहिमानी। अवरि जतन करि रहे बहुतेरे तिन तिलु नही कीमति जानी ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु निरमोलकु हीरा गुरि दीनो मंतानी। डिगै न डोलै द्रिड़ु करि रहिओ पूरन होइ त्रिपतानी ॥ २ ॥ ओइ जु बीच हम तुम कछु होते तिन की बात बिलानी। अलंकार मिलि थैली होईहै ताते कनिक वखानी ॥ ३ ॥ प्रगटिओ जोति सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी। कहु नानक निहचल घरु बाधिओ गुरि कीओ बंधानी ॥ ४ ॥ ५ ॥

जिस प्रभु का दिया हुआ यह तन और मन है, यह समस्त धन-पदार्थ भी उसी का दिया हुआ है; वही चतुर एवं बुद्धिमान है। हम जीवों का सुख-दुख उस प्रभु ने ही सुना है, (उसके द्वारा प्रार्थना सुनने पर ही) हमारी स्थिति ठीक बनती है ॥ १ ॥ आत्मा की प्रार्थना प्रभु के पास ही की जाती है। लोग बहुत से व्यर्थ यत्न कर-करके थक जाते हैं, उन यत्नों का मूल्य कौड़ी भी नहीं समझा जाता ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! परमात्मा का नाम आत्मिक जीवन देनेवाला है। नाम एक ऐसा हीरा है, जो अनमोल है। गुरु ने यह नाम-मन्त्र जिसे दे दिया, वह मनुष्य विचलित नहीं होता। वह मनुष्य दृढ़ संकल्पी बन जाता है और पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहता है ॥ २ ॥

गुरु मिलने पर अपना-पराया वाली प्रबल भेदात्मक वृत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं। उस मनुष्य को प्रभु इस प्रकार दृष्टिगत होता है, जैसे अनेकों गहने मिलकर थैली बन जाती है और केवल सोना ही कहलवाती है ॥ ३ ॥ जिसके भीतर परमात्मा की ज्योति का प्रकाश हो जाता है, वहाँ आत्मिक स्थिरता का आनन्द पैदा हो जाता है। उसे सर्वत्र सत्कार मिलता है, उसके भीतर अनाहत ध्वनि गूँजित होने लगती है। (नानक का कथन है कि) गुरु ने जिस मनुष्य के लिए यह प्रबन्ध कर दिया, वह मनुष्य सदा के लिए प्रभु-चरणों में जगह प्राप्त कर लेता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ वडे वडे राजन अरु भूमन ताकी त्रिसन न बूझी। लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥ १ ॥ बिखिआ महि किनही त्रिपति न पाई। जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई ॥ रहाउ ॥ दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन ताकी मिटै न भूखा। उदमु करै सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा ॥ २ ॥ कामवंत कामी बहु नारी परग्रिह जोह न चूकै। दिन प्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु अपार अमोला अंम्रितु एकु निधाना। सूखु सहजु आनंदु संतन कै नानक गुर ते जाना ॥ ४ ॥ ६ ॥

दुनिया में बड़े-बड़े राजा हैं, बड़े-बड़े ज़मींदार हैं (लेकिन) उनकी तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती। वे माया के कौतुकों में मस्त रहते हैं, माया के साथ चिपटे रहते हैं। उन्हें आँखों से कुछ और दीख ही नहीं पड़ता ॥ १ ॥ हे भाई ! मायाग्रस्त होकर किसी मनुष्य ने वैसे ही कभी तृप्ति अनुभव नहीं की, जैसे अग्नि ईंधन से कभी तृप्त नहीं होती। परमात्मा के नाम के बिना मनुष्य कभी तृप्त नहीं हो सकता ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य प्रतिदिन स्वादिष्ट खाने खाता है, उसकी भूख कभी शान्त नहीं होती। वह मनुष्य कुत्ते की तरह भाग-दौड़ करता हुआ चारों ओर खाद्यपदार्थों की पड़ताल करता है ॥ २ ॥ हे भाई ! कामी, विषयी मनुष्य की कितनी भी स्त्रियाँ हों, लेकिन उसकी कुदृष्टि पराए घर की ओर से नहीं टलती। वह प्रतिदिन पाप करता है और पश्चात्ताप भी करता है। इस कामवासना और पश्चात्ताप में उसका जीवन समाप्त हो जाता है ॥३॥ हे भाई ! परमात्मा का नाम ही एक ऐसा अक्षुण्ण और बहुमूल्य भण्डार है, जो आत्मिक जीवन देता है। (नाम के प्रभाव से) सन्तजनों के हृदय-घर में आत्मिक स्थिरता बनी रहती है, सुख-आनन्द बना रहता है।

लेकिन, हे नानक ! इस खज़ाने की जान-पहचान गुरु से ही प्राप्त होती है ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ धनासरी म० ५ ॥ लवै न लागन कउ है कछूऐ जाकउ फिरि इहु धावै। जाकउ गुरि दीनो इहु अंम्रितु तिसही कउ बनि आवै ॥ १ ॥ जाकउ आइओ एकु रसा । खान पान आन नही खुधिआ ताकै चिति न बसा ॥ रहाउ ॥ मउलिओ मनु तनु होइओ हरिआ एक बूंद जिनि पाई । बरनि न साकउ उसतति ताकी कीमति कहणु न जाई ॥ २ ॥ घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता । जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥ ३ ॥ दीन दैआल सदा किरपाला सरब जीआ प्रतिपाला । ओति पोति नानक संगि रविआ जिउ माता बाल गुोपाला ॥ ४ ॥ ७ ॥

यह मनुष्य जिन भौतिक पदार्थों के लिए भटकता फिरता है, उनमें से कोई भी पदार्थ नाम की बराबरी नहीं कर सकता । गुरु ने जिस मनुष्य को यह आतिमक जीवन वाला नाम-जल दे दिया, वही इसकी क़ीमत जानता है ॥ १ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य ने परमात्मा के नाम का आस्वाद चख लिया, उसे खाने-पीने आदि की कोई दूसरी भूख नहीं रहती, कोई दूसरी भूख उसके हृदय में नहीं टिक सकती ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिसे नाम-जल की एक बूंद भी प्राप्त हो गई, उसका मन प्रसन्न हो जाता है, उसकी देह स्वस्थ हो जाती है । मैं उस मनुष्य की प्रशंसा में असमर्थ हूँ, उसके आतिमक जीवन की क़ीमत नहीं बताई जा सकती ॥ २ ॥ यह नाम-रस मेहनत द्वारा नहीं मिलता, अपनी किसी सेवा के बल से नहीं पाया जा सकता । प्यारे प्रभु ने जिस मनुष्य पर कृपा की, उस मनुष्य ने गुरु के उपदेश पर आचरण किया और उसे प्राप्त कर लिया ॥३॥ हे नानक ! परमात्मा दीनदयालु है, सदा कृपालु रहता है और सब जीवों की देखभाल करता है । जिस प्रकार माँ अपने बच्चे को सदा हृदय में स्थिर रखती है, उसी प्रकार वह गोपाल प्रभु ताने-पेटे के तुल्य उस मनुष्य के साथ मिला रहता है (जो हरि का नाम-स्मरण करता है) ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ बारि जाउ गुर अपुने ऊपरि जिनि हरि हरि नामु द्रिड़ाया । महा उदिआन अंधकार महि जिनि सीधा मारगु दिखाया ॥ १ ॥ हमरे प्रान गुपाल गोबिंद । ईहा ऊहा सरब थोक की जिसहि हमारी चिंद ॥१॥रहाउ॥ जाकै

सिमरनि सरब निधाना मानु महतु पति पूरी । नामु लैत कोटि अघ नासे भगत बाछहि सभि धूरी ।। २ ।। सरब मनोरथ जेको चाहै सेवै एकु निधाना । पारब्रहम अपरंपर सुआमी सिमरत पारि पराना ।। ३ ।। सीतल सांति महा सुखु पाइआ संत संगि रहिओ ओल्हा । हरि धनु संचनु हरिनामु भोजनु इहु नानक कीनो चोल्हा ।। ४ ।। ८ ।।

हे भाई ! मैं अपने गुरु पर न्योछावर हूँ, जिसने मेरे भीतर परमात्मा का नाम दृढ़ कर दिया है, जिसने इस बड़े तथा घोर अँधेरे जंगल (दुनिया) में सीधा मार्ग दिखा दिया है ।। १ ।। हे भाई ! जिस परमात्मा को इस लोक में तथा परलोक में हमारी सब आवश्यकताएँ पूर्ण करने की चिन्ता है, वही हमारी आत्मा का सहारा है ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई ! जिसके स्मरण से तमाम निधियाँ प्राप्त हो जाती हैं, सत्कार, प्रशंसा और पूर्ण प्रतिष्ठा मिलती है, जिसका नाम-स्मरण करने से करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं, सभी भक्त उस प्रभु के चरणों की धूलि चाहते हैं ।। २ ।। हे भाई ! यदि कोई मनुष्य तमाम कामनाएँ पूरी करना चाहता है, तो उसे परमात्मा की ही भक्ति करनी चाहिए, वही सब पदार्थों का भण्डार है । हे भाई ! समस्त जगत के स्वामी अनन्त प्रभु का स्मरण करने से उद्धार हो जाता है ।। ३ ।। हे नानक ! जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम-धन एकत्रित किया है, परमात्मा के नाम को भोजन बनाया है, स्वादिष्ट खाद्य बनाया है, उसका हृदय शान्त रहता है, उसे शान्ति प्राप्त होती है, उसे अत्यन्त आत्मिक आनन्द बना रहता है । गुरमुखों की संगति में रहकर उसकी प्रतिष्ठा होती है ।। ४ ।। ८ ।।

।। धनासरी महला ५ ।। जिह करणी होवहि सरमिंदा इहा कमानी रीति । संत की निंदा साकत की पूजा ऐसी द्रिड़ी बिपरीति ।। १ ।। माइआ मोह भूलो अवरै हीत । हरि चंदउरी बनहर पात रे इहै तुहारो बीत ।। १ ।। रहाउ ।। चंदन लेप होत देह कउ सुखु गरधभ भसम संगीति । अंम्रित संगि नाहि रुच आवत बिखै ठगउरी प्रीति ।। २ ।। उतम संत भले संजोगी इसु जुग महि पवित पुनीत । जात अकारथ जनमु पदारथ काच बादरै जीत ।। ३ ।। जनम जनम के किलविख दुख भागे गुरि गिआन अंजनु नेत्र दीत । साध संगि इन दुख ते निकसिओ नानक एक परीत ।। ४ ।। ९ ।।

हे भाई! जिन कामों से तुम्हें प्रभु के दरबार में लज्जित होना पड़ेगा, तू उन्हीं पर आचरण कर रहा है। तू सन्तों की निन्दा करता रहता है और परमात्मा से विमुख मनुष्यों का सत्कार करता है, तूने विचित्र विपरीत बुद्धि ग्रहण की है ॥ १ ॥ तू माया-मोह में फँसकर कुमार्गगामी हो गया है, तू ईश्वर को छोड़ दूसरों से लगाव करता है। तेरी अपनी शक्ति तो इतनी ही है, जितनी जंगल के हरे पत्तों की (जो शीघ्र ही सूखकर झड़ जाते हैं) या जितनी आकाश में दिख रही कल्पित नगरी की (जिसका कोई अस्तित्व नहीं) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गधे के शरीर पर चाहे चन्दन का लेप कर दिया जाए, तो भी मिट्टी-राख में ही सुख मानता है। (इसी तरह) आत्मिक जीवन के दाता नाम-जल से तेरा प्रेम सम्पन्न नहीं होता। तू विषयों की ठगौरी से प्रेम करता है ॥ २ ॥ हे भाई! सदाचारी सन्त, जो इस संसार में भी पवित्र रहते हैं, बड़े शुभ संयोग द्वारा मिलते हैं। (उनके बिना) तुम्हारा क़ीमती मनुष्य-जन्म व्यर्थ जा रहा है, काँच के बदले में हीरा जा रहा है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि जिस मनुष्य की आँखों में गुरु ने आत्मिक जीवन की सूझ वाला सुरमा लगा दिया है, उसके अनेक जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं। सत्संगति में टिककर वह मनुष्य इन दुखों-पापों से बच निकला है और उसने केवल परमात्मा से प्रेम कर लिया है ॥ ४ ॥ ९ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई। सासि सासि मनु नामु सम्हारै इहु बिस्राम निधि पाई ॥ १ ॥ तुम्ह करहु दइआ मेरे साई। ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुधु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते मोहु मानु छूटै बिनसि जाइ भरमाई। अनद रूपु रविओ सभ मधे जत कत पेखउ जाई ॥ २ ॥ तुम्ह दइआल क्रिपाल क्रिपानिधि पतित पावन गोसाई। कोटि सूख आनंद राज पाए मुख ते निमख बुलाई ॥ ३ ॥ जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मनि भाई। नामु जपत त्रिसना सभ बुझी है नानक त्रिपति अघाई ॥ ४ ॥ १० ॥

परमात्मा करे, मैं सन्तों की सेवा में पानी ढोता रहूँ, पंखा करूँ, आटा पीसूँ और हे गोविन्द! सदा तुम्हारे गुण गाता रहूँ। मेरा मन हर श्वास के साथ तुम्हारा नाम-स्मरण करता रहे, मैं तुम्हारा वह नाम प्राप्त कर लूँ जो सुख-शान्ति का ख़ज़ाना है ॥ १ ॥ हे मेरे पति-प्रभु! दया करो। मुझे ऐसी बुद्धि दो कि हमेशा तुम्हारा नाम स्मरण करता रहूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु! तुम्हारी कृपा से मेरे भीतर से माया का

मोह दूर हो जाए, अहंकार मिट जाए, मेरी दुबिधा का नाश हो जाए। मैं जहाँ-जहाँ देखूँ, सब ओर मुझे तुम आनन्दस्वरूप प्रभु ही विद्यमान दिखाई दो ॥ २ ॥ हे पृथ्वीपति ! हे दयालु कृपालु ! तुम दया के ख़ज़ाने हो। जब मैं निमिष मात्र के लिए भी मुँह से तुम्हारा नाम-उच्चारण करता हूँ, तो तुम मेरे विकारों का नाश कर देते हो। मुझे लगता है कि मैंने राज्यभोग के समान करोड़ों सुख और आनन्द प्राप्त कर लिये हैं ॥३॥ हे नानक ! वही जप, तप और भक्ति सफल जानो, जो प्रभु को प्रिय लगती है। परमात्मा का नाम लेने से सारी तृष्णा मिट जाती है और सांसारिक पदार्थों से मन पूर्णरूपेण तृप्त हो जाता है ॥ ४ ॥ १० ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ जिनि कीने वसि अपुनै त्रैगुण भवण चतुर संसारा। जग इसनान ताप थान खंडे किआ इहु जंतु विचारा ॥ १ ॥ प्रभ की ओट गही तउ छूटो। साध प्रसादि हरि हरि हरि गाए बिखै बिआधि तब हूटो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह सुणीऐ नह मुख ते बकीऐ नह मोहै उह डीठी। ऐसी ठगउरी पाइ भुलावै मनि सभ कै लागै मीठी ॥ २ ॥ माइ बाप पूत हित भ्राता उनि घरि घरि मेलिओ दूआ। किसही वाधि घाटि किसही पहि सगले लरि लरि मूआ ॥ ३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि इहु चलतु दिखाइआ। गूझी भाहि जलै संसारा भगत न बिआपै माइआ ॥ ४ ॥ संत प्रसादि महा सुखु पाइआ सगले बंधन काटे। हरि हरि नामु नानक धनु पाइआ अपुनै घरि लै आइआ खाटे ॥ ५ ॥ ११ ॥

हे भाई ! जिस माया ने चारों दिशाओं में बिखरे त्रिगुणात्मक जगत को, अपने वश में किया हुआ है, जिसने यज्ञ करनेवाले, स्नान करनेवाले और तप करनेवाले स्थान भ्रष्ट कर दिए हैं, उसके सम्मुख बेचारे इस जीव का क्या सामर्थ्य है ? ॥१॥ हे भाई ! जब मनुष्य ने परमात्मा का पल्लू पकड़ा, तब वह माया से बच गया। जब गुरु की कृपा से मनुष्य ने परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाने शुरू कर दिए, तब विकारों का रोग अपने आप समाप्त हो गया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वह माया जब मनुष्य को आकर भ्रम में डालती है, तब न उसकी आवाज सुनी जाती है, न वह मुँह से बोलती है और न वह आँखों से दृष्टिगत होती है। कोई ऐसी नशीली चीज़ खिलाकर मनुष्य को कुमार्गगामी बना देती है कि सबको ही वह प्यारी लगने लगती है ॥२॥ माँ, बाप, पुत्र, मित्र, भाई —उस माया ने हर एक के हृदय में भेदभाव पैदा कर दिया है। किसी के पास अधिक है तो किसी के पास कम।

सब आपस में लड़-लड़कर खपते हैं ॥ ३ ॥ मैं अपने गुरु पर बलिहारी हूँ, जिसने मुझे माया की यह गति समझा दी है। मैं जान गया हूँ कि इस छिपी हुई आग से सारा जगत जल रहा है। परमात्मा की भक्ति करनेवाले प्राणी पर माया अपना ज़ोर नहीं डाल सकती ॥ ४ ॥ हे नानक! जिसने गुरु-कृपा से परमात्मा का नाम-धन प्राप्त किया है और यह धन कमाकर हृदय रूपी घर में ले आया है, वह निरन्तर आत्मिक आनन्द महसूसता है और उसके समस्त माया-बन्धन कट जाते हैं ॥ ५ ॥ ११ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे। निमख निमख तुमही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥ १ ॥ जिहवा एक कवन गुन कहीऐ। बे सुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किनही लहीऐ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु। हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु ॥ २ ॥ तुमरी सरणि तुमारी आसा तुमही सजन सुहेले। राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले ॥ ३ ॥ १२ ॥

हे प्रभु! तुम सब कुछ देनेवाले हो, तुम स्वामी हो, तुम सबके पालक हो, तुम सबके अगुआ हो, तुम हमारे स्वामी हो। हे प्रभु! तुम प्रत्येक क्षण हमारी देखभाल करते हो, हम तुम्हारे बच्चे तुम्हारे सहारे जीते हैं ॥ १ ॥ हे असंख्य गुणों के मालिक प्रभु! किसी के द्वारा भी तुम्हारे गुणों का भेद नहीं पाया जा सका। मनुष्य की एक जिह्वा द्वारा तुम्हारा कौन-कौन सा गुण व्यक्त किया जाए? ॥१॥रहाउ॥ हे प्रभु! तुम हमारे करोड़ों अपराध नष्ट करते हो, तुम हमें अनेक तरीकों से समझाते हो; हम जीव आत्मिक जीवन की सूझ से ख़ाली हैं, हमारी बुद्धि थोड़ी है, ओछी है, फिर भी तुम अपना विरद निभाते हो ॥ २ ॥ नानक का कथन है कि हे प्रभु! हम तुम्हारे आश्रित हैं। हमें तुम्हारी ही सहायता की अपेक्षा है। तुम ही हमारे मित्र हो। तुम ही हमें सुख देनेवाले हो। हे दयालु! सबकी रक्षा करने में समर्थ प्रभु! हमारी रक्षा करो। हम तुम्हारे ग़ुलाम हैं ॥ ३ ॥ १२ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ पूजा वरत तिलक इसनाना पुंन दान बहु दैन। कहूं न भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥ १ ॥ प्रभ जी को नामु जपत मन चैन। बहु प्रकार खोजहि सभि ताकउ बिखमु न जाई लैन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप ताप भ्रमन बसुधा करि उरध ताप लै गैन। इह बिधि नह

पतीआनो ठाकुर जोग जुगति करि जैन ॥ २ ॥ अंम्रित नामु निरमोलकु हरि जसु तिनि पाइओ जिसु किरपैन । साध संगि रंगि प्रभ भेटे नानक सुखि जन रैन ॥ ३ ॥ १३ ॥

हे भाई ! लोग देव-पूजा करते हैं, व्रत रखते हैं, मस्तक पर तिलक लगाते हैं, तीर्थों पर स्नान करते हैं, दान-पुण्य करते हैं, मीठे वचन बोलते हैं, लेकिन ऐसी किसी भी युक्ति द्वारा मालिक-प्रभु प्रसन्न नहीं होता ॥१॥ हे भाई ! परमात्मा का नाम जपने से मन को शान्ति मिलती है, लोग कई तरीकों से उस परमात्मा को पाना चाहते हैं (लेकिन उसे पाना) कठिन है, (इन तरीकों से उसे) पाया नहीं जा सकता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जप-तप करके, सारी पृथ्वी पर चक्कर लगाकर सिर के बल तप करके, प्राण दसवें द्वार पर चढ़ाकर, योग मत की युक्तियाँ करके, जैन मत की युक्तियाँ करके (लोग प्रभु को पाना चाहते हैं, लेकिन) इन तरीकों से भी मालिक-प्रभु विश्वस्त नहीं होता ॥ २ ॥ परमात्मा का नाम आत्मिक जीवन देनेवाला है । परमात्मा की गुणस्तुति एक ऐसा पदार्थ है, जिसका कोई मूल्यांकन नहीं हो सकता । यह देन उस मनुष्य ने प्राप्त की है, जिस पर परमात्मा की कृपा हुई है । नानक का कथन है कि गुरु की संगति के द्वारा प्रेम-रंग में रँगकर जिसे प्रभु मिला है, उस मनुष्य की जीवन-रात्रि सुख और आनन्द में समाप्त होती है ॥ ३ ॥ १३ ॥

बंधन ते छुटकावै प्रभू मिलावै हरि हरि नामु सुनावै । असथिरु करे निहचलु इहु मनूआ बहुरि न कतहू धावै ॥ १ ॥ है कोऊ ऐसो हमरा मीतु । सगल समग्री जीउ हीउ देउ अरपउ अपनो चीतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परधन परतन पर की निंदा इन सिउ प्रीति न लागै । संतह संगु संत संभाखनु हरि कीरतनि मनु जागै ॥ २ ॥ गुण निधान दइआल पुरख प्रभ सरब सूख दइआला । मागै दानु नामु तेरो नानकु जिउ माता बाल गुपाला ॥ ३ ॥ १४ ॥

जो मुझे माया के बन्धनों से मुक्त कराए, मुझे परमात्मा से मिलाए, मुझे सदा परमात्मा का नाम सुनाए, मेरे मन को विचलित होने से बचाए, ताकि यह किसी ओर भटका न रहे ॥ १ ॥ यदि कोई मुझे ऐसा मित्र मिल जाए, तो मैं उसे अपना सारा धन-पदार्थ, अपनी आत्मा और हृदय समर्पित कर दूँ । मैं अपना हृदय उसके प्रति उत्सर्ग कर दूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस मित्र की कृपा से पराया धन, परनारी, परनिन्दा की ओर से मेरा लगाव टूट जाये (मैं उसकी दासता करूँ) । मैं सन्तों की संगति में

रहूँ, मेरी उनके साथ वाक्-चर्चा भी रहे और परमात्मा की गुणस्तुति में मेरा मन प्रतिपल जाग्रत रहा करे ॥ २ ॥ हे गुणों के भण्डार, दया के घर, सर्वव्यापक प्रभु ! हे समस्त सुखों के दाता ! हे गोपाल ! जैसे बच्चे अपनी माँ से माँगते हैं, वैसे ही मैं तुम्हारा दास नानक तुमसे नाम का दान माँगता हूँ ॥ ३ ॥ १४ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ हरि हरि लीने संत उबारि । हरि के दास की चितवै बुरिआई तिसही कउ फिरि मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन का आपि सहाई होआ निंदक भागे हारि । भ्रमत भ्रमत ऊहां ही मूए बाहुड़ि ग्रिहि न मंझारि ॥ १ ॥ नानक सरणि परिओ दुख भंजन गुन गावै सदा अपारि । निंदक का मुखु काला होआ दीन दुनीआ कै दरबारि ॥ २ ॥ १५ ॥

परमात्मा अपने सन्तों को सदा ही बचाता आ रहा है। यदि कोई मनुष्य प्रभु के सेवक के नुक़सान की योजना बनाता है, तो परमात्मा उसे आत्मिक रूप से मार देता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! परमात्मा अपने सेवक का आप मददगार बनता है, उसके निन्दक पराजित हो भाग खड़े होते हैं। निन्दक मनुष्य निन्दा कर्म में भटक-भटककर, निन्दा के चक्र में ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं और फिर अनेक योनियों में भटकते फिरते हैं ॥ १ ॥ नानक का कथन है कि जो मनुष्य दुखनाशक परमात्मा की शरण लेता है, वह उस अनन्त प्रभु में लीन होकर सदा उसके गुण गाता है; लेकिन उसकी निन्दा करनेवाले मनुष्य का मुँह दुनिया में भी काला होता है अर्थात् उसे कहीं भी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती ॥ २ ॥ १५ ॥

॥ धनासिरी महला ५ ॥ अब हरि राखनहारु चितारिआ । पतित पुनीत कीए खिन भीतरि सगला रोगु बिदारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोसटि भई साध कै संगमि काम क्रोधु लोभु मारिआ । सिमरि सिमरि पूरन नाराइन संगी सगले तारिआ ॥ १ ॥ अउखध मंत्र मूल मन एकै मनि बिस्वासु प्रभ धारिआ । चरन रेन बांछै नित नानकु पुनह पुनह बलिहारिआ ॥ २ ॥ १६ ॥

जिन मनुष्यों ने इस मनुष्य-जन्म में रक्षक परमात्मा को स्मरण करना आरम्भ कर दिया, परमात्मा ने क्षण भर में ही उनको विकारों से मुक्त करके सदाचारी बना दिया और उनका सारा रोग समाप्त कर दिया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु की संगति में जिन मनुष्यों का मिलाप हो गया, परमात्मा ने उनके भीतर से काम, क्रोध और लोभ समाप्त कर दिया। सर्वव्यापक परमात्मा का नाम बार-बार स्मरण करके उन्होंने अपने सब मित्रों को भी

पार करा लिया ॥१॥ हे मन ! परमात्मा का नाम ही समस्त औषधियों का मूल है, तमाम मन्त्रों का मूल है। जिस मनुष्य ने अपने भीतर परमात्मा के लिए श्रद्धा धारण की है, नानक उस व्यक्ति के चरणों की धूलि माँगता है। नानक उस मनुष्य पर बलिहारी जाता है ॥ २ ॥ १६ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ मेरा लागो राम सिउ हेतु । सतिगुरु मेरा सदा सहाई जिनि दुख का काटिआ केतु ॥१॥रहाउ॥ हाथ देइ राखिओ अपुना करि बिरथा सगल मिटाई । निंदक के मुख काले कीने जनका आपि सहाई ॥ १ ॥ साचा साहिबु होआ रखवाला राखि लीए कंठि लाइ । निरभउ भए सदा सुख माणे नानक हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ १७ ॥

हे भाई ! जिस गुरु ने (शरणागत मनुष्य के) दुखों का मूल समाप्त कर दिया है, वह गुरु मेरा भी सदा के लिए सहायक बन गया है, (उसकी कृपा से) मेरा परमात्मा के प्रति प्रेम सम्पन्न हो गया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा सहारा देकर दुखों से बचाता है और अपना बनाकर सारा दुख-दर्द मिटा देता है। परमात्मा अपने सेवकों का आप मददगार बनता है और उनकी निन्दा करनेवालों के मुँह काले होते हैं ॥ १ ॥ हे नानक ! सत्यस्वरूप मालिक स्वयं सेवकों का रक्षक बनता है, उन्हें अपने गले से लगाकर रखता है। परमात्मा के सेवक परमात्मा के गुण गा-गाकर और सदा आत्मिक आनन्द भोगकर भय-रहित हो जाते हैं ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ धनासिरी महला ५ ॥ अउखधु तेरो नामु दइआल । मोहि आतुर तेरी गति नही जानी तूं आपि करहि प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे दुतीआ भाउ निवारि । बंधन काटि लेहु अपुने करि कबहू न आवह हारि ॥ १ ॥ तेरी सरनि पइआ हउ जीवां तूं संम्रथु पुरखु मिहरवानु । आठ पहर प्रभ कउ आराधी नानक सद कुरबानु ॥ २ ॥ १८ ॥

हे दया के घर प्रभु ! तुम्हारा नाम हर रोग की औषधि है, लेकिन मुझ दुखिया ने समझा ही नहीं था कि तुम कितनी उच्च आत्मिक अवस्था वाले हो (जबकि तुम आप मेरी पालना करते हो) ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे मेरे मालिक ! मुझ पर कृपा करो (मेरे भीतर से) माया का मोह दूर करो। हे प्रभु ! हमारे बन्धन काटकर हमें अपने बना लो। ऐसा वरदान दो कि हम कभी मनुष्य-जन्म की बाज़ी हारकर न आएँ ॥ १ ॥ गुरु नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं तुम्हारी शरण लेकर आत्मिक जीवन

वाला बना रहता हूँ। तुम समस्त शक्तियों के मालिक हो, तुम सर्वव्यापक हो, तुम दयालु हो। (मैं चाहता हूँ कि) मैं आठों प्रहर परमात्मा की आराधना करता रहूँ। मैं उस पर सदा बलिहारी हूँ ॥ २ ॥ १८ ॥

रागु धनासरी महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हा हा प्रभ राखि लेहु । हम ते किछू न होइ मेरे स्वामी करि किरपा अपुना नामु देहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि कुटंब सागर संसार । भरम मोह अगिआन अंधार ॥ १ ॥ ऊच नीच सूख दूख । ध्रापसि नाही त्रिसना भूख ॥ २ ॥ मनि बासना रचि बिखै बिआधि । पंच दूत संगि महा असाध ॥ ३ ॥ जीअ जहानु प्रान धनु तेरा । नानक जानु सदा हरि नेरा ॥ ४ ॥ १ ॥ १९ ॥

हे प्रभु ! हमें बचा लो, हम जीवों से कुछ नहीं हो सकता। कृपा कर, अपना नाम दो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! यह संसार-समुद्र कुटुम्ब के मोह की अग्नि से भरा है। दुबिधा, माया-मोह, आत्मिक जीवन की ओर से उदासीनता—ये सब घोर अँधेरे हैं ॥ १ ॥ दुनियावी सुखों की प्राप्ति से जीव को अहंकार हो जाता है, दुख मिलने पर दुर्दशा हो जाती है। जीव कभी तृप्त नहीं होता, इसे माया की भूख, प्यास चिपटी रहती है ॥ २ ॥ हे प्रभु ! जीव अपने मन में वासना उत्पन्न कर विषय-विकारों के कारण रोगी हो जाता है। पाँच बड़े दुश्मन इसके साथ चिपके रहते हैं ॥ ३ ॥ हे नानक ! सदा परमात्मा को अपने साथ-साथ विद्यमान समझो। ये सब जीव, जगत, धन, जीवों के प्राण, सब कुछ प्रभु द्वारा ही विरचित हैं ॥ ४ ॥ १ ॥ १९ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ दीन दरद निवारि ठाकुर राखै जन की आपि । तरणतारण हरि निधि दूखु न सकै बिआपि ॥१॥ साधू संगि भजहु गुपाल । आन संजम किछु न सूझै इह जतन काटि कलिकाल ॥ रहाउ ॥ आदि अंति दइआल पूरन तिसु बिना नही कोइ । जनम मरण निवारि हरि जपि सिमरि सुआमी सोइ ॥ २ ॥ बेद सिम्रिति कथै सासत भगत करहि बीचारु । मुकति पाईऐ साध संगति बिनसि जाइ अंधारु ॥ ३ ॥ चरन कमल अधारु जनका रासि पूंजी एक । ताणु माणु दीबाणु साचा नानक की प्रभ टेक ॥ ४ ॥ २ ॥ २० ॥

हे भाई ! परमात्मा अनाथों के दुख दूर करके अपने सेवकों की लाज आप रखता है। वह प्रभु संसार-समुद्र से पार उतरने के लिए जहाज़ है, वह हरि सारे सुखों का भण्डार है, (प्रभु के शरणागतों को) कोई दुख स्पर्श नहीं कर सकता ॥ १ ॥ गुरु की संगति में बैठकर परमात्मा का नाम जपा करो। इन यत्नों से ही संसार के झमेलों के बन्धन कटते हैं। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय दृष्टिगत नहीं होता ॥ रहाउ ॥ दया का घर सर्वव्यापक प्रभु शाश्वत है, उसके तुल्य कोई नहीं है। उस मालिक का नाम सदा स्मरण किया करो। उसी हरि का नाम जपकर जन्म-मरण का चक्र दूर करो ॥ २ ॥ वेद, शास्त्र, स्मृति जिस प्रभु का वर्णन करते हैं, भक्तजन उसके गुणों का विचार करते हैं; सत्संगति में विपत्तियों से मुक्ति मिलती है और माया-मोह का अँधेरा दूर हो जाता है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि परमात्मा के सुन्दर चरण ही भक्तों का धन है, परमात्मा की ओट ही उनका बल है, सहारा है और सत्यस्वरूप आसरा है ॥४॥२॥२०॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ फिरत फिरत भेटे जन साधू पूरै गुरि समझाइआ। आन सगल बिधि कांमि न आवै हरि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥ ताते मोहि धारी ओट गोपाल। सरनि परिओ पूरन परमेसुर बिनसे सगल जंजाल ॥ रहाउ ॥ सुरग मिरत पइआल भूमंडल सगल बिआपे माइ। जीअ उधारन सभ कुल तारन हरि हरि नामु धिआइ ॥ २ ॥ नानक नामु निरंजनु गाईऐ पाईऐ सरब निधाना। करि किरपा जिसु देइ सुआमी बिरले काहू जाना ॥ ३ ॥ ३ ॥ २१ ॥

हे भाई ! खोज करते-करते जब मैं गुरु महापुरुष को मिला, तो पूर्णगुरु ने यह ज्ञान दिया कि शेष युक्तियों में से कोई युक्ति काम नहीं आती। परमात्मा का नाम-स्मरण किया हुआ ही काम आता है ॥ १ ॥ इसलिए मैंने परमात्मा का सहारा ले लिया। जब मैंने सर्वव्यापक परमात्मा की शरण ली तो मेरे सब जंजाल नष्ट हो गए ॥ रहाउ ॥ देवलोक, मातृलोक (मृत्युलोक) और पाताललोक —तमाम सृष्टि माया-मोह में फँसी है। हे भाई ! सदा परमात्मा का नाम-स्मरण किया करो, यही आत्मा का रक्षक है और यही वंशावलि का उद्धार करनेवाला है ॥ २॥ हे नानक ! माया से निर्लिप्त हरि का नाम-स्मरण करना चाहिए, जिससे तमाम खज़ानों की प्राप्ति होती है, परन्तु यह भेद किसी विरले मनुष्य ने समझा है, जिसे मालिक-प्रभु आप कृपा करके नाम की देन देता है ॥ ३ ॥ ३ ॥ २१ ॥

धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ छोडि जाहि से करहि पराल । कामि न आवहि से जंजाल । संगि न चालहि तिन सिउ हीत । जो बैराई सेई मीत ॥ १ ॥ ऐसे भरमि भुले संसारा । जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ रहाउ ॥ साचु धरमु नही भावै डीठा । झूठ धोह सिउ रचिओ मीठा । दाति पिआरी विसरिआ दातारा । जाणै नाही मरणु विचारा ॥ २ ॥ वसतु पराई कउ उठि रोवै । करम धरम सगलाई खोवै । हुकमु न बूझै आवण जाणे । पाप करै ता पछोताणे ॥ ३ ॥ जो तुधु भावै सो परवाणु । तेरे भाणे नो कुरबाणु । नानकु गरीबु बंदा जनु तेरा । राखि लेइ साहिबु प्रभु मेरा ॥ ४ ॥ १ ॥ २२ ॥

मायाग्रस्त जीव वही निकम्मे कर्म करते रहते हैं, जिन्हें आखिर छोड़कर यहाँ से चले जाना है। वही जाल-जंजाल चिपकाए रखते हैं, जो इनके किसी काम नहीं आते। उनके साथ मोह-प्रेम बनाए रखते हैं, जो अन्त में साथ नहीं जाते। उन विकारों को मित्र समझते हैं, जो (वास्तविक जीवन में सदाचरण के) दुश्मन हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! मूर्ख जगत दुबिधा-ग्रस्त होकर ऐसा कुमार्गगामी हो गया है कि अपना क़ीमती मनुष्य-जन्म गवाँ रहा है ॥ रहाउ ॥ मायाग्रस्त जीव को सत्यस्वरूप हरि का नाम-स्मरण रूपी धर्म तनिक मात्र भी नहीं रुचता। जीव झूठ, ठगी को मीठा जानकर इनमें मस्त रहता है। दाता-प्रभु को भुलाए रखता है, उसकी दी हुई चीज़ें इसे प्यारी लगती हैं, मोहवश भटका हुआ जीव अपनी मृत्यु का ध्यान नहीं करता ॥ २ ॥ जीव उस वस्तु के लिए दौड़-दौड़कर प्रयास करता है, जो अन्त में पराई हो जाती है; वह अपना सारा ही मानवीय कर्तव्य विस्मृत कर देता है। मनुष्य परमात्मा की रज़ा को नहीं समझता, इसलिए जन्म-मरण के चक्र में पड़कर नित्य पाप करता रहता है और आख़िर पश्चात्ताप करता है ॥ ३ ॥ (जीवों के भी क्या वश ?) जो तुम्हें अच्छा लगता है, वही हम जीवों को स्वीकृत होता है। हे प्रभु ! मैं तुम्हारी रज़ा पर बलिहारी हूँ। ग़रीब नानक तुम्हारा दास है, तुम्हारा गुलाम है। मेरा मालिक-प्रभु अपने दास की लाज रखता है ॥ ४ ॥ १ ॥ २२ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ मोहि मसकीन प्रभु नामु अधारु । खाटण कउ हरि हरि रोजगारु । संचण कउ हरि एको नामु ।

हलति पलति ताकै आवै काम ॥ १ ॥ नामि रते प्रभ रंगि अपार । साध गावहि गुण एक निरंकार ॥ रहाउ ॥ साध की सोभा अति मसकीनी । संत वडाई हरि जसु चीनी । अनदु संतन कै भगति गोविंद । सूखु संतन कै बिनसी चिंद ॥ २ ॥ जह साध संतन होवहि इकत्र । तह हरि जसु गावहि नाद कवित । साध सभा महि अनद बिस्राम । उन संगु सो पाए जिसु मसतकि कराम ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करी अरदासि । चरन पखारि कहां गुणतास । प्रभ दइआल किरपाल हजूरि । नानकु जीवै संता धूरि ॥ ४ ॥ २ ॥ २३ ॥

हे भाई ! मुझ परमात्मा के प्रिय को परमात्मा का नाम ही एकमात्र आसरा है, मेरे लिए खाने-कमाने के लिए परमात्मा का नाम ही रोज़ी है, मेरे लिए एकत्रित करने के लिए भी परमात्मा का नाम ही है, (यह नाम-धन ही) लोक-परलोक में मेरे काम आता है ॥ १ ॥ हे भाई ! सन्तजन परमात्मा के नाम में मस्त होकर, अनन्त प्रभु के प्रेम में लीन होकर, एक निरंकार प्रभु के गुण गाते हैं ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! अत्यन्त विनम्र स्वभाव सन्त की शोभा है, परमात्मा की गुणस्तुति करना ही सन्त की महानता है । परमात्मा की भक्ति सन्तों के हृदय में आनन्द पैदा करती है, जिससे सन्तों के हृदय में सुख बना रहता है और उनके भीतर से चिन्ता नष्ट हो जाती है ॥ २ ॥ हे भाई ! साधु-सन्त जहाँ एकत्रित होते हैं, वहाँ वे वाद्ययन्त्रों की पावन ध्वनि में वाणी का गान करते हैं । सत्संगति में बैठने से आत्मिक आनन्द उपजता है, शान्ति अनुभूत होती है । लेकिन उनकी संगति वही मनुष्य प्राप्त करता है, जिसके मस्तक पर प्रभु-कृपा का लेख लिखा हो ॥ ३ ॥ हे भाई ! मैं अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि मैं सन्तों के चरणों का प्रसाद पाकर गुणों के भण्डार परमात्मा का नाम उच्चरित करता रहूँ । हे भाई ! (नानक) उन सन्तों के चरणों की धूलि से आत्मिक जीवन प्राप्त करता है, जो दयालु प्रभु की सेवा में सदा टिके रहते हैं ॥ ४ ॥ २ ॥ २३ ॥

॥ धनासरी म० ५ ॥ सो कत डरै जि खसमु सम्हारै । डरि डरि पचे मनमुख वेचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिर ऊपरि मात पिता गुरदेव । सफल मूरति जाकी निरमल सेव । एकु निरंजनु जाकी रासि । मिलि साध संगति होवत परगास ॥ १ ॥ जीअन का दाता पूरन सभ ठाइ । कोटि कलेस मिटहि हरि नाइ । जनम मरन सगला दुखु नासै । गुरमुखि जाकै मनि तनि

बासै ॥ २ ॥ जिसनो आपि लए लड़ि लाइ । दरगह मिलै तिसै ही जाइ । सेई भगत जि साचे भाणे । जम काल ते भए निकाणे ॥ ३ ॥ साचा साहिबु सचु दरबारु । कीमति कउणु कहै बीचारु । घटि घटि अंतरि सगल अधारु । नानकु जाचै संत रेणारु ॥ ४ ॥ ३ ॥ २४ ॥

हे भाई ! स्वेच्छाचारी तुच्छ जीव डर-डरकर दुखी होते रहते हैं, लेकिन जो मनुष्य पति-प्रभु को अपने हृदय में टिकाए रखता है, वह कहीं भी भयभीत नहीं होता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस परमात्मा का दर्शन करने से समस्त फल प्राप्त होते हैं, जिसकी सेवा-भक्ति सदाचारी बना देती है, उस प्रकाशरूप प्रभु को जो माता-पिता तुल्य अपने सिर पर रक्षक समझता है; माया से निर्लिप्त प्रभु का नाम ही जिस मनुष्य का धन बन जाता है, सत्संगति में मिलकर उस मनुष्य के भीतर अमर ज्योति का प्रकाश हो जाता है ॥ १ ॥ हे भाई ! जो परमात्मा सब जीवों का दाता है, जो सर्वत्र मौजूद है, जिसके नाम-स्मरण से करोड़ों दुख-क्लेश मिट जाते हैं (और) गुरु के माध्यम से वह प्रभु जिस मनुष्य के मन में आ बसता है, उसका जन्म-मरण का दुख नष्ट हो जाता है ॥ २ ॥ परमात्मा जिस मनुष्य को अपनी लग्न लगाता है, उसी को परमात्मा की सेवा में जगह मिलती है । हे भाई ! वही मनुष्य परमात्मा के भक्त कहलवा सकते हैं, जो उस सत्यस्वरूप परमात्मा को प्यारे लगते हैं, वे मनुष्य मृत्यु से निश्चिन्त हो जाते हैं ॥ ३ ॥ मालिक-प्रभु सत्यस्वरूप है, उसका दरबार सच्चा है । कोई मनुष्य उसका मूल्यांकन करने का सामर्थ्य नहीं रखता । वह प्रभु हर एक शरीर में विद्यमान है, वह सबके अन्दर अवस्थित है, सब जीवों का आसरा है । नानक उस प्रभु के सन्तों की चरणधूलि माँगता है ॥ ४ ॥ ३ ॥ २४ ॥

धनासरी महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ घरि बाहरि तेरा भरवासा तू जन कै है संगि । करि किरपा प्रीतम प्रभ अपुने नामु जपउ हरि रंगि ॥ १ ॥ जन कउ प्रभ अपने का ताणु । जो तू करहि करावहि सुआमी सा मसलति परवाणु ॥ रहाउ ॥ पति परमेसरु गति नाराइणु धनु गुपाल गुण साखी । चरन सरन नानक दास हरि हरि संती इह बिधि जाती ॥ २ ॥ १ ॥ २५ ॥

हे प्रभु ! तुम्हारे सेवक को घर के भीतर-बाहर तुम्हारा ही सहारा रहता है, तुम अपने सेवकों के साथ रहते हो। हे मेरे प्रियतम-प्रभु ! कृपा करो। मैं तुम्हारे प्रेम में स्थिर होकर तुम्हारा नाम जपता रहूँ ॥१॥ प्रभु के सेवक को अपने प्रभु का आसरा होता है। हे मालिक-प्रभु ! जो कुछ तुम करते हो, जो कुछ तुम कराते हो, सेवक को वही प्रेरणा होती है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! परमात्मा के नाम में ही प्रतिष्ठा है, नाम ही ऊँची आत्मिक अवस्था है, परमात्मा के गुणों की साखियाँ सेवक के लिए धन-पदार्थ है। हे नानक ! प्रभु के सेवक प्रभु के चरणों में शरण लिये रहते हैं। सन्तों ने इसे ही जीवन-युक्ति समझा है ॥ २ ॥ १ ॥ २५ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ सगल मनोरथ प्रभ ते पाए कंठि लाइ गुरि राखे। संसार सागर महि जलनि न दीने किनै न दुतरु भाखे ॥ १ ॥ जिन कै मनि साचा बिस्वासु। पेखि पेखि सुआमी की सोभा आनदु सदा उलासु ॥ रहाउ ॥ चरन सरनि पूरन परमेसुर अंतरजामी साखिओ। जानि बूझि अपना कीओ नानक भगतन का अंकुरु राखिओ ॥ २ ॥ २ ॥ २६ ॥

हे भाई ! उन मनुष्यों को गुरु ने अपने गले से लगाकर बचा लिया, उन्होंने अपनी सब आकांक्षाएँ प्राप्त कर लीं। गुरु-परमेश्वर ने उन्हें संसार-समुद्र में न जलने दिया। किसी ने भी यह नहीं कहा कि इस संसार-समुद्र से पार उतरना कठिन है ॥ १ ॥ जिन मनुष्यों के मन में अटल श्रद्धा है, मालिक-प्रभु की शोभा-प्रशंसा देख-देखकर उनके भीतर सदा आनन्द बना रहता है, खुशी बनी रहती है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! उन मनुष्यों ने सर्वव्यापक परमात्मा के चरणों की शरण में रहकर अन्तर्यामी परमात्मा को प्रत्यक्ष देख लिया। हे नानक ! उनके दिल की जानकर, समझकर परमात्मा ने उन्हें अपना बना लिया है और इस प्रकार अपने उन भक्तों के भीतर भक्ति का फूटता हुआ अंकुर परमात्मा ने सुरक्षित कर लिया है ॥ २ ॥ २ ॥ २६ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई। रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥ १ ॥ ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ। बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई। सासि सासि संमालता मेरा प्रभु सोई ॥ २ ॥ अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जाका रूपु। जपि जपि करहि अनंदु जन अचरज आनूपु ॥ ३ ॥ सा मति देहु दइआल

प्रभ जितु तुमहि अराधा। नानकु मंगै दानु प्रभ रेन पग साधा ॥ ४ ॥ ३ ॥ २७ ॥

हे भाई ! मैं जहाँ-जहाँ देखता हूँ, वहाँ-वहाँ परमात्मा प्रत्यक्ष है, वह किसी स्थान से भी दूर नहीं है। हे मन ! तू सदा उस प्रभु को स्मरण किया कर, जो सबमें विद्यमान है ॥ १ ॥ उस प्रभु को ही वास्तविक साथी समझना चाहिए, जो इस लोक-परलोक में कहीं भी अलग नहीं होता। उस सुख को निम्नस्तरीय सुख कहना चाहिए, जो निमिषमात्र में समाप्त हो जाता है (अस्थायी है) ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मेरा वह प्रभु भोजन देकर सबको पालता है, उसकी कृपा से किसी चीज़ की कमी नहीं रहती। वह प्रभु प्रत्येक श्वास के साथ-साथ हमारी सँभाल करता रहता है ॥ २ ॥ जो प्रभु छला नहीं जा सकता, नष्ट नहीं किया जा सकता, जिसकी हस्ती सबसे ऊँची है, हैरान करनेवाली है, जिसके बराबर का दूसरा कोई नहीं। उसके भक्त उसका नाम जप-जपकर आत्मिक आनन्द महसूस करते हैं ॥ ३ ॥ हे दया के घर प्रभु ! मुझे वह समझ दो, जिसके प्रभाव से मैं तुम्हें ही स्मरण करता रहूँ। हे प्रभु ! नानक तुम्हारे सन्तजनों के चरणों की धूलि माँगता है ॥ ४ ॥ ३ ॥ २७ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ। अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ ॥ १ ॥ तुम घरि आवहु मेरे मीत। तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत ॥ रहाउ ॥ प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके। घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे ॥ २ ॥ असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि। जै जैकारु सगल भूमंडल मुख ऊजल दरबार ॥ ३ ॥ जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई। अचरजु कीआ करनैहारै नानक सचु वडिआई ॥ ४ ॥ ४ ॥ २८ ॥

हे मेरी आत्मा ! जिसने तुझे संसार में भेजा है, उसी ने तुझे अपनी ओर प्रेरणा देनी शुरू की है। तू आनन्दपूर्वक आत्मिक स्थिरता से हृदय-घर में रह। हे आत्मा ! आत्मिक स्थिरता के बहाव में, आनन्द-ख़ुशी पैदा करनेवाले हरिगुण गाया कर और कामादिक वैरियों पर अटल संयम रख ॥ १ ॥ हे मेरे मित्र ! तू हृदय-घर में टिका रह। परमात्मा ने आप ही तुम्हारे कामादिक वैरी दूर कर दिए हैं, (अब इसी कारण कामादिक की) विपत्ति समाप्त हो गई है ॥ रहाउ ॥ सब कुछ कर

सकने में समर्थ पति-प्रभु ने जिन पर कृपा की, उनके भीतर उसने अपना आप प्रकट कर दिया। उनकी दुबिधाएँ समाप्त हो गईं, उनके हृदय-घर में मानो आत्मिक आनन्द के बाजे बजने लगते हैं ॥ २ ॥ गुरु के उपदेश पर चलकर, गुरु के आसरे रहकर दृढ़ खड़ा हो जाओ। देखो, अब कभी भी विचलित न होना। सारी सृष्टि में शोभा होगी और प्रभु की सेवा में रहकर तुम्हारा मुँह उजला होवेगा ॥ ३ ॥ हे नानक! जिस प्रभु ने जीव पैदा किए हैं, वह आप ही इन्हें विकारों से हटाता है। वह आप ही सहायक बनता है। सब कुछ कर सकनेवाले परमात्मा ने यह अनोखी लीला बना दी है, उसकी महानता सदा स्थिर रहनेवाली है ॥४॥४॥२८॥

धनासरी महला ५ घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सुनहु संत पिआरे बिनउ हमारे जीउ। हरि बिनु मुकति न काहू जीउ ॥ रहाउ ॥ मन निरमल करम करि। तारन तरन हरि अवरि जंजाल तेरै काहू न काम जीउ। जीवन देवा पारब्रहम सेवा इहु उपदेसु मोकउ गुरि दीना जीउ ॥१॥ तिसु सिउ न लाईऐ हीतु। जाको किछु नाही बीतु अंत की बार ओहु संगि न चालै। मनि तनि तू आराध हरि के प्रीतम साध जाकै संगि तेरे बंधन छूटै ॥ २ ॥ गहु पारब्रहम सरन हिरदै कमल चरन अवर आस कछु पटलु न कीजै। सोई भगतु गिआनी धिआनी तपा सोई नानक जाकउ किरपा कीजै ॥ ३ ॥ १ ॥ २९ ॥

हे प्यारे सन्तो! मेरी विनती सुनो। प्रभु के नाम-स्मरण के बिना किसी की भी मुक्ति नहीं होती ॥ रहाउ ॥ हे मन! पवित्र करनेवाले (हरि-स्मरण जैसे) काम किया कर। पार होने के लिए परमात्मा जहाज़ है। दूसरे सब जंजाल तेरे किसी भी काम नहीं आएँगे। प्रकाश रूपी परमात्मा की सेवा-भक्ति ही वास्तविक जीवन है—यह शिक्षा मुझे गुरु ने दी है ॥ १ ॥ हे भाई! उस (धन-पदार्थ) के साथ नेह नहीं करना चाहिए, जिसकी कोई शक्ति ही नहीं। वह अन्तिम समय में साथ नहीं जाता। अपने मन, तन में तू परमात्मा का नाम स्मरण कर। परमात्मा के साथ प्रेम करनेवाले सन्तों की संगति किया कर, क्योंकि उन सन्तों की संगति में तुम्हारे माया के बन्धन समाप्त हो सकते हैं ॥ २ ॥ हे भाई! परमात्मा का आसरा ले, हृदय में परमात्मा के चरण-कमल बसा। उस

प्रभु के अतिरिक्त किसी दूसरे की आस नहीं करनी चाहिए, कोई दूसरा आसरा नहीं ढूँढ़ना चाहिए। हे नानक ! वही मनुष्य भक्त है, ज्ञानी है, वही सुरति-अभ्यासी है, वही तपस्वी है, जिस पर परमात्मा कृपा करता है॥ ३ ॥ १ ॥ २९ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ मेरे लाल भलो रे भलो रे भलो हरि मंगना। देखहु पसारि नैन सुनहु साधू के बैन प्रानपति चिति राखु सगल है मरना ॥ रहाउ ॥ चंदन चोआ रस भोग करत अनेकै बिखिआ बिकार देखु सगल है फीके एकै गोबिद को नामु नीको कहत है साध जन। तनु धनु आपन थापिओ हरि जपु न निमख जापिओ अरथु द्रबु देखु कछु संगि नाही चलना ॥ १ ॥ जाको रे करमु भला तिनि ओट गही संत पला तिन नाही रे जमु संतावै साधू की संगना। पाइओ रे परम निधानु मिटिओ है अभिमानु एकै निरंकार नानक मनु लगना ॥ २ ॥ २ ॥ ३० ॥

हे मेरे प्यारे भाई ! परमात्मा के द्वार से माँगना शुभ कर्म है। हे सज्जन ! गुरु की वाणी सुनते रहो, आत्मा के स्वामी प्रभु को हृदय में धारण करो। आँखें खोलकर देखो (आखिर) सबको मरना है ॥ रहाउ ॥ तू चन्दन-इत्र की सुगन्धियाँ लगाता है, अनेक स्वादिष्ट खाने खाता है, लेकिन, देख, यह विकार पैदा करनेवाले माया के सारे भोग फीके हैं। सन्तजनों का कथन है कि केवल परमात्मा का नाम ही शुभ है। तू इस शरीर को, धन को अपना समझ रहा है। परमात्मा का नाम तू क्षण भर भी नहीं जपता। देख, यह धन-पदार्थ कुछ भी तेरे साथ नहीं जाएगा ॥ १ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य की अच्छी क़िस्मत हुई, उसी ने सन्तों का आसरा लिया, सन्तों का पल्लू पकड़ा। जो मनुष्य गुरु की संगति में रहते हैं, उन्हें मृत्यु का भय सता नहीं सकता। जिस मनुष्य का मन केवल परमात्मा में लगा रहता है, समझो कि उसने सर्वोत्तम खज़ाना प्राप्त कर लिया और उसके भीतर से अहंकार मिट गया ॥ २ ॥ २ ॥ ३० ॥

धनासरी महला ५ घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि एकु सिमरि एकु सिमरि एकु सिमरि पिआरे। कलि कलेस लोभ मोह महा भउजलु तारे ॥ रहाउ ॥ सासि सासि निमख निमख दिनसु रैनि चितारे।

साध संग जपि निसंग मनि निधानु धारे ॥ १ ॥ चरन कमल नमसकार गुन गोबिद बीचारे । साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

हे प्यारे ! सदा परमात्मा का नाम स्मरण किया करो । यह इस बड़े भयानक संसार-समुद्र से पार कर देता है, जिसमें अनन्त सांसारिक झगड़े हैं और लोभ-मोह (की उठती हुई लहरें) हैं ॥ रहाउ ॥ दिन-रात, क्षण-क्षण हरेक श्वास के साथ प्रभु का नाम स्मरण करते रहो । सत्संगति में बैठकर, संकोच दूर कर परमात्मा का नाम जपा करो । यह नाम-भण्डार अपने मन में स्थिर करो ॥ १ ॥ हे प्यारे ! परमात्मा के कोमल चरणों पर अपना शीश झुकाए रखो । गोविन्द के गुण अपने मस्तिष्क में स्थिर करो । हे नानक ! सन्तों के चरणों की धूलि आत्मिक ख़ुशियाँ और आनन्द देती है ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

धनासरी महला ५ घरु ८ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ सासि सासि समाले । इह लोकि परलोकि संगि सहाई जत कत मोहि रखवाले ॥ १ ॥ गुर का बचनु बसै जीअ नाले । जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले ॥१॥रहाउ॥ निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले । सागर महि बोहिथु पाइओ हरि नानक करी क्रिपा किरपाले॥२॥१॥३२॥

हे भाई ! हर एक श्वास के साथ प्रभु का नाम भीतर अवस्थित कर मैं उसे स्मरण करता हूँ और स्मरण कर आत्मिक आनन्द प्राप्त करता हूँ । यह हरि-नाम लोक-परलोक में मेरा सहायक है और सर्वत्र मेरा रक्षक है ॥ १ ॥ हे भाई ! गुरु का शब्द मेरी आत्मा के साथ विद्यमान है । यह धन पानी में डूबता नहीं, इसे चोर चुरा नहीं सकता, इसे आग नहीं जला सकती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा का नाम ग़रीब के लिए धन है, अन्धे के लिए लकड़ी है और बच्चे के लिए माँ के दूध-तुल्य है । जिस मनुष्य पर प्रभु ने कृपा की, उसे यह नाम मिल गया, जो कि संसार-समुद्र में जहाज़ (तुल्य) है ॥ २ ॥ १ ॥ ३२ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ भए क्रिपाल दइआल गोबिंदा अंम्रितु रिदै सिचाई । नवनिधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ॥ १ ॥ संतन कउ अनदु सगल ही जाई । ग्रिहि

बाहरि ठाकुरु भगतन का रवि रहिआ स्रब ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताकउ कोइ न पहुचनहारा जाकै अंगि गुसाई । जम की त्रास मिटै जिसु सिमरत नानक नामु धिआई ॥ २ ॥ २ ॥ ३३ ॥

नौ निधियाँ, समस्त चामत्कारिक शक्तियाँ सन्तजनों के चरणों में विद्यमान रहती हैं। प्रभुजी अपने सेवकों पर कृपालु रहते हैं। (यदि प्रभु-कृपा हो तो) मैं भी अपने हृदय में आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल संचित कर सकूँ ॥ १ ॥ हे भाई ! सन्तों को सर्वत्र आत्मिक आनन्द बना रहता है। घर, बाहर परमात्मा भक्तों का रक्षक है, भक्तों को वह सर्वत्र दृष्टिगत होता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा जिस मनुष्य के पक्ष में स्वयं होता है, उस मनुष्य की बराबरी कोई दूसरा मनुष्य नहीं कर सकता। नानक का कथन है कि जिस परमात्मा का नाम-स्मरण करने से मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है, तू भी उसका नाम-स्मरण किया कर ॥२॥२॥३३॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ दरबवंतु दरबु देखि गरबै भूमवंतु अभिमानी । राजा जानै सगल राजु हमरा तिउ हरि जन टेक सुआमी ॥ १ ॥ जे कोऊ अपुनी ओट समारै । जैसा बितु तैसा होइ वरतै अपुना बलु नही हारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन तिआगि भए इक आसर सरणि सरणि करि आए । संत अनुग्रह भए मन निरमल नानक हरि गुन गाए ॥ २ ॥ ३ ॥ ३४ ॥

धन को देखकर धनी मनुष्य अहंकारी हो जाता है, ज़मीन देखकर ज़मीन का मालिक अहंकारी हो उठता है। राजा सोचता है कि समस्त देश मेरा ही राज्य है; (लेकिन इन सबसे अलग) बिना किसी अहंकार के परमात्मा के सेवक को मालिक-प्रभु का सहारा है ॥ १ ॥ यदि कोई मनुष्य अपने असली अवलम्ब अर्थात् प्रभु को अपने हृदय में स्थिर रखे तो वह कभी हतोत्साहित नहीं होता, क्योंकि वह सदैव अपनी शक्ति के अनुकूल कार्य करता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे नानक ! जो मनुष्य दूसरे सब आश्रय छोड़कर एक प्रभु का आश्रय रखनेवाले बन जाते हैं, प्रभु के द्वार पर आकर उसका शरणागत होने का दावा करते हैं, गुरु की कृपा से परमात्मा के गुण गा-गाकर उनके मन पवित्र हो जाते हैं ॥ २ ॥ ३ ॥ ३४ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ जाकउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा । आतम जिणै सगल वसि ताकै जाका सतिगुरु पूरा ॥ १ ॥ ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि । सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन के

चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही । जन की धूरि देहु किरपानिधि नानक कै सुखु एही ॥ २ ॥ ४ ॥ ३५ ॥

हे भाई ! इस जगत में वह मनुष्य शूरवीर कहलाता है, जिसके हृदय में प्रभु-प्रेम पैदा हो जाता है। पूर्णगुरु जिस मनुष्य का सहायक है, वह मनुष्य अपने मन को जीत लेता है और समस्त सृष्टि उसके वश में हो जाती है ॥१॥ (अतः) मन के स्नेह से प्रभु की गुणस्तुति करनी चाहिए। उस परमात्मा की शरण में रहना और उसका नाम-स्मरण ही एक मात्र तरीका है, जिससे आत्मिक रूप से स्थिर होकर उसमें लीन हुआ जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे कृपा के खज़ाने प्रभु ! यदि तुम्हारे दासों के चरण मेरे हृदय में स्थिर हो जाएँ अर्थात् मैं तुम्हारे दासों के चरणों में नेह लगाऊँ, तो उनकी संगति में मेरा शरीर पवित्र हो जाए। मुझे अपने दासों के चरणों की धूलि प्रदान करो, मेरे (नानक के) लिए यही सुख है ॥ २ ॥ ४ ॥ ३५ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ जतन करै मानुख डहकावै ओहु अंतरजामी जानै । पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै ॥ १ ॥ जानत दूरि तुमहि प्रभ नेरि । उत ताकै उत ते उत पेखै आवै लोभी फेरि ॥ रहाउ ॥ जब लगु तुटै नाही मन भरमा तब लगु मुकतु न कोई । कहु नानक दइआल सुआमी संतु भगतु जनु सोई ॥ २ ॥ ५ ॥ ३६ ॥

हे भाई ! लालची मनुष्य अनेक यत्न करता है और लोगों को धोखा देता है। विरक्तों वाले बनावटी पहनावे बनाए रखता है, पाप करके उन पापों से नट भी जाता है (कि मैंने नहीं किए), लेकिन अन्तर्यामी वह परमात्मा सब कुछ जानता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम तो सब जीवों के निकट बसते हो, लेकिन लालची मनुष्य तुम्हें दूर समझता है। लालची मनुष्य लालच के चक्र में फँसा रहता है। माया के लिए इधर-उधर ताकता रहता है (लेकिन उसके भीतर स्थिरता नहीं आती) ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जब तक मनुष्य के मन की दुबिधा दूर नहीं होती, यह लालच से आज़ाद नहीं हो सकता। नानक का कथन है कि जिस मनुष्य पर मालिक दयालु होता है, वही मनुष्य सन्त है, वही सच्चा भक्त है ॥ २ ॥ ५ ॥ ३६ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ नामु गुरि दीओ है अपुनै जाकै मसतकि करमा । नामु द्रिड़ावै नामु जपावै ताका जुग महि धरमा ॥ १ ॥ जन कउ नामु वडाई सोभ । नामो गति नामो पति जनकी मानै जो जो होग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम धनु जिसु

जन कै पालै सोई पूरा साहा । नामु बिउहारा नानक आधारा नामु परापति लाहा ॥ २ ॥ ६ ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्य का भाग्य उदित हो गया, उसे प्यारे गुरु ने परमात्मा का नाम दे दिया। उस मनुष्य का जगत में हमेशा के लिए एक कार्य हो जाता है कि वह दूसरों को प्रभु का नाम दृढ़ कराता या जपाता है ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा के सेवक के लिए परमात्मा का नाम ही गौरव एवं गरिमा है। हरि-नाम ही उसकी उच्च आत्मिक अवस्था है, नाम ही उसकी प्रतिष्ठा है। जो कुछ परमात्मा की इच्छा के अनुसार होता है, सेवक उसे सहर्ष स्वीकारता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा का नाम-धन जिस मनुष्य के पास है, वही पूर्णसाहूकार है। वह मनुष्य हरि के नाम-स्मरण को ही अपना वास्तविक व्यापार समझता है, नाम का ही उसे सहारा रहता है, नाम की ही वह कमाई प्राप्त करता है ॥२॥६॥३७॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ नेत्र पुनीत भए दरस पेखे माथै परउ रवाल । रसि रसि गुण गावउ ठाकुर के मोरै हिरदै बसहु गोपाल ॥ १ ॥ तुम तउ राखनहार दइआल । सुंदर सुघर बेअंत पिता प्रभ होहु प्रभू किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा अनंद मंगल रूप तुमरे बचन अनूप रसाल । हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बांधिओ पाल ॥ २ ॥ ७ ॥ ३८ ॥

हे सृष्टि के पालक ! मेरे हृदय में आ बसो। मैं आनन्दपूर्वक तुम्हारा गुणगान करता रहूँ। मेरे मस्तक पर तुम्हारी चरणधूलि रहे। तुम्हारे दर्शन करके मेरी आँखें पवित्र हो जाती हैं ॥ १ ॥ हे दया के घर प्रभु ! तुम तो सब जीवों की रक्षा करने में समर्थ हो। तुम सुन्दर, बुद्धिमान और अनन्त हो। हे पिता-प्रभु ! मुझ पर कृपा करो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम आनन्दस्वरूप एवं मंगलरूप हो। तुम्हारी गुणस्तुति की वाणी सुन्दर है, मधुर है। हे नानक ! जिस मनुष्य ने सतिगुरु की वाणी पल्ले बाँध ली, उसके हृदय में प्रभु के चरणों का नेह अटल रहता है ॥ २ ॥ ७ ॥ ३८ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ अपनी उकति खलावै भोजन अपनी उकति खेलावै । सरब सूख भोग रस देवै मन ही नालि समावै ॥ १ ॥ हमरे पिता गोपाल दइआल । जिउ राखै महतारी बारिक कउ तैसे ही प्रभ पाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीत साजन सरब गुण नाइक सदा सलामति देवा । ईत ऊत जत कत तत तुमही मिलै नानक संत सेवा ॥ २ ॥ ८ ॥ ३९ ॥

परमात्मा अपने तरीके से जीवों को खाने-पीने के लिए देता है, अपने ही तरीके से जीवों को खेल में लगाए रखता है। जीवों को तमाम सुख देता है, तमाम स्वादिष्ट पदार्थ देता है और हमेशा सबके साथ-साथ रहता है ॥ १ ॥ हे दया के घर, सृष्टि के रक्षक, पिता-प्रभु ! जैसे माँ अपने बच्चे को पालती है, वैसे ही तुम हम जीवों को पालनेवाले हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रकाशरूप प्रभु ! तुम हमारे मित्र हो, सज्जन हो, सारे गुणों के मालिक हो, सबका मार्ग निर्देश करनेवाले हो, शाश्वत हो, सर्वत्र लोक-परलोक में अवस्थित हो। नानक का कथन है कि गुरु की शरण लेकर ही वह परमात्मा मिलता है ॥ २ ॥ ८ ॥ ३९ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ संत क्रिपाल दइआल दमोदर काम क्रोध बिखु जारे। राजु मालु जोबनु तनु जीअरा इन ऊपरि लै बारे ॥ १ ॥ मनि तनि राम नाम हितकारे। सूख सहज आनंद मंगल सहित भवनिधि पारि उतारे ॥ रहाउ ॥ धंनि सु थानु धंनि ओइ भवना जा महि संत बसारे। जन नानक की सरधा पूरहु ठाकुर भगत तेरे नमसकारे ॥ २ ॥ ९ ॥ ४० ॥

हे भाई ! सन्तजन दया के स्रोत परमात्म-रूप हैं। वे अपने भीतर से काम-क्रोध रूपी ज़हर जला लेते हैं। ऐसे सन्तों पर राज्य, धन, यौवन, शरीर, प्राण —सब कुछ न्योछावर कर देना चाहिए ॥ १ ॥ जिनके तन-मन में परमात्मा के नाम का प्रेम बना रहता है, वे मनुष्य आत्मिक स्थिरता के सुख, आनन्द और ख़ुशियाँ महसूस करते हैं और दूसरों को भी संसार-समुद्र से पार कर देते हैं ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! वह स्थान भाग्यशाली है, वे घर भाग्यशाली हैं, जिनमें सज्जन बसते हैं। हे ठाकुर ! दास नानक की अभिलाषा पूर्ण करो, ताकि वह सदैव तुम्हारे भक्तों को शीश झुकाता रहे ॥ २ ॥ ९ ॥ ४० ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ छडाइ लीओ महाबली ते अपने चरन पराति। एकु नामु दीओ मन मंता बिनसि न कतहू जाति ॥ १ ॥ सतिगुरि पूरै कीनी दाति। हरि हरि नामु दीओ कीरतन कउ भई हमारी गाति ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै भगतन की राखी पाति। नानक चरन गहे प्रभ अपने सुखु पाइओ दिन राति ॥ २ ॥ १० ॥ ४१ ॥

गुरु भक्त प्राणी को अपने चरणों में जगह देकर शक्तिमती माया से बचा लेता है। मन की स्थिरता के लिए गुरु परमात्मा का नाम-मन्त्र देता है, जो न नष्ट होता है और न कहीं खो पाता है ॥ १ ॥ हे भाई !

पूर्णगुरु ने मुझ पर कृपा की है। परमात्मा का नाम कीर्तन के लिए दिया है, जिसके प्रभाव से मेरी ऊँची आत्मिक अवस्था बन गई है ।। रहाउ ।। प्रभु ने सदा ही अपने भक्तों का समर्थन किया है, भक्तों की लाज रखी है। हे नानक ! जिस मनुष्य ने गुरु की शरण लेकर परमात्मा के चरणों में जगह बना ली, उसे दिन-रात्रि आत्मिक आनन्द महसूस होता रहता है ।। २ ।। १० ।। ४१ ।।

।। धनासरी महला ५ ।। परहरना लोभु झूठ निंद इवही करत गुदारी। त्रिगत्रिसना आस मिथिआ मीठी इह टेक मनहि साधारी ।। १ ।। साकत की आवरदा जाइ ब्रिथारी। जैसे कागद के भार मूसा टूकि गवावत कामि नही गावारी ।। रहाउ ।। करि किरपा पारब्रहम सुआमी इह बंधन छुटकारी। बूडत अंध नानक प्रभ काढत साध जना संगारी ।। २ ।। ११ ।। ४२ ।।

पराया धन चुराना, लोभ करना, झूठ बोलना, परनिन्दन —इस प्रकार करते हुए (मनमुख व्यक्ति अपनी उम्र) बिताता है। जैसे प्यासे हिरन को मृगतृष्णा का जल मीठा प्रतीत होता है, वैसे मनमुख मिथ्या आकांक्षाओं को मीठा मानता है। मिथ्या आकांक्षाओं के सहारे को मन में अपना (स्तम्भ) अर्थात् अवलम्ब बनाता है ।। १ ।। परमात्मा से बिछुड़े हुए मनुष्य की उम्र ऐसे व्यर्थ बीत जाती है, जैसे कोई चूहा काग़ज़ों के ढेर काट-काटकर गवाँ देता है, लेकिन वे काग़ज़ उस मूर्ख के काम नहीं आते ।। रहाउ ।। हे मालिक-प्रभु ! तुम आप ही कृपा करके इन बन्धनों से छुड़ाते हो। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! माया-मोह में अन्धे हुए मनुष्यों को, मोह में डूबे हुए व्यक्तियों को, सत्संगति द्वारा तुम ही डूबने से बचाते हो ।। २ ।। ११ ।। ४२ ।।

।। धनासरी महला ५ ।। सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सीतल तनु मनु छाती। रूप रंग सूख धनु जीअ का पारब्रहम मोरै जाती ।। १ ।। रसना राम रसाइनि माती। रंग रंगी राम अपने कै चरन कमल निधि थाती ।। रहाउ ।। जिस का सा तिन ही रखि लीआ पूरन प्रभ की भाती। मेलि लीओ आपे सुखदातै नानक हरि राखी पाती ।। २ ।। १२ ।। ४३ ।।

मालिक-प्रभु का नाम बार-बार स्मरण करने से मन, तन, हृदय शान्त हो जाते हैं। हे भाई ! मेरे लिए भी परमात्मा का नाम ही रूप, रंग, सुख, धन और कुलीनता है ।। १ ।। जिस मनुष्य की जिह्वा प्रभु के नाम-रस में लीन रहती है और प्यारे प्रभु के प्रेम-रंग द्वारा रँगी जाती है,

वह मनुष्य परमात्मा के कोमल चरणों की स्मृति का ख़ज़ाना एकत्रित कर लेता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! प्रभु का दुखों से बचाने का ढंग अत्यन्त श्रेष्ठ है । जो मनुष्य उस प्रभु का सेवक बन गया, उसे उसने बचा लिया । हे नानक ! शरणागत मनुष्य को सुखदाता प्रभु ने सदा अपने चरणों में जगह दी है और उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा की है ॥ २ ॥ १२ ॥ ४३ ॥

॥धनासरी महला ५॥ दूत दुसमन सभि तुझ ते निवरहि प्रगट प्रतापु तुमारा । जो जो तेरे भगत दुखाए ओहु तत काल तुम मारा ॥ १ ॥ निरखउ तुमरी ओरि हरि नीत । मुरारि सहाइ होहु दास कउ करु गहि उधरहु मीत ॥ रहाउ ॥ सुणी बेनती ठाकुरि मेरै खसमाना करि आपि । नानक अनद भए दुख भागे सदा सदा हरि जापि ॥ २ ॥ १३ ॥ ४४ ॥

हे प्रभु ! समस्त बैरी तुम्हारी ही कृपा से दूर होते हैं, तुम्हारा तेज प्रताप सर्वत्र उजागर है; जो-जो तुम्हारे भक्तों को दुख देता है, तुम उसे तुरन्त आत्मिक रूप से मार देते हो ॥ १ ॥ हे मुरारि, हरि ! मैं हमेशा तुम्हारी ओर ताकता रहता हूँ । अपने दास के सहायक बनो । हे मित्र-प्रभु ! हाथ पकड़कर इस सेवक को बचा लो ॥ रहाउ ॥ नानक का कथन है कि मालिक-प्रभु ने पति वाला दायित्व निभाकर जिस मनुष्य की प्रार्थना सुन ली, उसे हमेशा के लिए परमात्मा के नाम-स्मरण के द्वारा आत्मिक आनन्द हो गया और उसके समस्त दुख नष्ट हो गए ॥२॥१३॥४४॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ चतुर दिसा कीनो बलु अपना सिर ऊपरि करु धारिओ । क्रिपा कटाख्य अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिओ ॥ १ ॥ हरि जन राखे गुर गोविंद । कंठि लाइ अवगुण सभि मेटे दइआल पुरख बखसंद ॥ रहाउ ॥ जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै । नानक दासु मुखते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै ॥ २ ॥ १४ ॥ ४५ ॥

हे भाई ! जिस प्रभु ने चारों दिशाओं में अपनी लीला प्रसारित की हुई है, उसने अपने सेवक के सिर सदा अपना हाथ रखा है, कृपादृष्टि से अपने सेवक की ओर देखता है और उसका हरेक दुख दूर कर देता है ॥१॥ हे भाई ! परमात्मा अपने सेवकों की रक्षा करता है । सेवकों को अपने गले लगाकर दया का घर सर्वव्यापक क्षमाशील प्रभु उनके सारे अवगुण मिटा देता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! प्रभु के भक्त अपने प्रभु से जो कुछ माँगते हैं, वह उन्हें वही कुछ दे देता है । हे नानक ! प्रभु का सेवक जो

कुछ मुँह से बोलता है, वह इस लोक-परलोक में अटल हो जाता है ॥ २ ॥ १४ ॥ ४५ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले । हाथ देइ राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥ १ ॥ प्रभ सिउ लागि रहिओ मेरा चीतु । आदि अंति प्रभु सदा सहाई धंनु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥ मनि बिलास भए साहिब के अचरज देखि बडाई । हरि सिमरि सिमरि आनद करि नानक प्रभि पूरन पैज रखाई ॥ २ ॥ १५ ॥ ४६ ॥

हे भाई ! प्रभु अपने सेवक को कोई दुखद समय नहीं देखने देता । वह अपना विरद हमेशा स्मरण रखता है । प्रभु सहारा देकर अपने सेवक की रक्षा करता है और प्रत्येक श्वास में उसकी देखभाल करता है ॥ १ ॥ मेरा मन उस प्रभु के साथ लगा रहता है, जो आदि से अन्त तक सहायक होता है । हमारा वह मित्र-प्रभु धन्य है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मालिक-प्रभु के आश्चर्योत्पादक कौतुक देखकर, उसकी महानता देखकर सेवक के मन में भी खुशियाँ बनी रहती हैं । हे नानक ! तुम भी परमात्मा का नाम-स्मरण करके आत्मिक आनन्द प्राप्त करो । प्रभु ने ही पूरी तरह तुम्हारी प्रतिष्ठा की रक्षा की है ॥ २ ॥ १५ ॥ ४६ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहु अभागा । चरन कमल जाका मनु रागिओ अमिअ सरोवर पागा ॥ १ ॥ तेरा जनु राम नाम रंगि जागा । आलसु छीजि गइआ सभु तन ते प्रीतम सिउ मनु लागा ॥ रहाउ ॥ जह जह पेखउ तह नाराइण सगल घटा महि तागा । नाम उदकु पीवत जन नानक तिआगे सभि अनुरागा ॥ २ ॥ १६ ॥ ४७ ॥

हे भाई ! उस मनुष्य को अभागा समझो, जिसे प्राण-प्रिय प्रभु विस्मृत हो जाता है । जिस मनुष्य का मन परमात्मा के कोमल चरणों में अनुरक्त हो जाता है, वह मनुष्य आध्यात्मिक जीवन देनेवाले नामामृत का सरोवर प्राप्त कर लेता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा सेवक तुम्हारे नाम-रंग में रँगकर जाग्रत रहता है । उसके शरीर में से तमाम आलस्य समाप्त हो जाता है । उसका मन प्रियतम-प्रभु में (प्रभु के नाम-स्मरण में) संलग्न रहता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मैं जिधर-जिधर देखता हूँ, वहाँ परमात्मा ही समस्त शरीरों में दृष्टिगत होता है, जैसे धागा (सभी मोतियों में पिरोया हुआ होता है) । हे नानक ! प्रभु के दास उसका नाम रूपी अमृत पीते ही सारे मोह-लगाव त्याग देते हैं ॥ २ ॥ १६ ॥ ४७ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ जन के पूरन होए काम । कलीकाल महा बिखिआ महि लजा राखी राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना निकटि न आवै जाम । मुकति बैकुंठ साध की संगति जन पाइओ हरि का धाम ॥ १ ॥ चरन कमल हरि जन की थाती कोटि सूख बिस्राम । गोबिंदु दमोदर सिमरउ दिन रैनि नानक सद कुरबान ॥ २ ॥ १७ ॥ ४८ ॥

हे भाई ! परमात्मा के भक्तों के समस्त कार्य सफल हो जाते हैं। इस विपत्तिग्रस्त संसार में, इस मोहिनी माया के फन्दों में परमात्मा अपने भक्तों की प्रतिष्ठा की रक्षा करता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मालिक-प्रभु का नाम पुनःपुनः स्मरण करने से कभी आत्मिक मृत्यु नहीं होती। जहाँ सेवक गुरु की संगति प्राप्त कर लेते हैं, वहीं परमात्मा का घर है। वही भक्तों के लिए विष्णु की पुरी है और विकारों से मुक्ति पाने की जगह है ॥ १ ॥ प्रभु के सेवकों के लिए प्रभु के चरण ही एक मात्र सहारा हैं, करोड़ों सुखों का अवलम्ब हैं। नानक का कथन है कि वह भी उस गोविन्द दमोदर प्रभु को दिन-रात्रि स्मरण करते हैं और उस पर सदा बलिहारी जाते हैं ॥ २ ॥ १७ ॥ ४८ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ मांगउ राम ते इकु दानु । सगल मनोरथ पूरन होवहि सिमरउ तुमरा नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन तुम्हारे हिरदै वासहि संतन का संगु पावउ । सोग अगनि महि मनु न विआपै आठ पहर गुण गावउ ॥ १ ॥ स्वसति बिवसथा हरि की सेवा मध्यंत प्रभ जापण । नानक रंगु लगा परमेसर बाहुड़ि जनम न छापण ॥ २ ॥ १८ ॥ ४९ ॥

मैं परमात्मा से एक चीज़ माँगता हूँ कि हे प्रभु ! मैं तुम्हारा नाम-स्मरण करता रहूँ, जिससे सब आकांक्षाएँ पूर्ण हो जाती हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारे चरण मेरे हृदय में स्थिर रहें, मैं तुम्हारे सन्तों की संगति प्राप्त कर लूँ, मैं आठों प्रहर तुम्हारे गुण गाता रहूँ; (क्योंकि तुम्हारे नाम-स्मरण से) मन चिन्ता की अग्नि में नहीं फँसता ॥ १ ॥ हे नानक ! हमेशा प्रभु का नाम जपने से, हरि की सेवा-भक्ति करने से मन में शान्ति की स्थिति बनी रहती है। जिस मनुष्य का प्रभु के प्रति प्रेम परिपक्व हो जाए, वह बार-बार जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ता ॥ २ ॥ १८ ॥ ४९ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ मांगउ राम ते सभि थोक । मानुख कउ जाचत स्रमु पाईऐ प्रभ कै सिमरनि मोख ॥ १ ॥

रहाउ ॥ घोखे मुनि जन सिम्रिति पुरानां बेद पुकारहि घोख । क्रिपासिंधु सेवि सचु पाईऐ दोवै सुहेले लोक ॥ १ ॥ आन अचार बिउहार है जेते बिनु हरि सिमरन फोक । नानक जनम मरण भै काटे मिलि साधू बिनसे सोक ॥ २ ॥ १९ ॥ ५० ॥

हे भाई ! मैं समस्त पदार्थ ईश्वर से माँगता हूँ । मनुष्यों से माँगने में तो केवल मात्र परेशानी ही होती है । (दूसरी ओर) परमात्मा के स्मरण के द्वारा माया-मोह से मुक्ति प्राप्त हो जाती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऋषि-मुनियों ने स्मृतियों-पुराणों को ग़ौर से विचारकर देखा, वेदों को भी चिन्तना द्वारा विचारकर उच्च स्वर से पढ़ा (लेकिन सब व्यर्थ); क्योंकि कृपा के समुद्र परमात्मा की शरण लेकर ही उसका सत्यस्वरूप नाम प्राप्त होता है, जिससे लोक-परलोक सुखदायक हो जाते हैं ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा के स्मरण के अतिरिक्त जितने भी दूसरे धार्मिक रीति-रिवाज हैं, वे सब व्यर्थ हैं । हे नानक ! गुरु को पाकर जन्म-मरण के समस्त भय समाप्त हो जाते हैं और समस्त चिन्ताएँ-दुश्चिन्ताएँ मिट जाती हैं ॥ २ ॥ १९ ॥ ५० ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ त्रिसना बुझै हरि कै नामि । महा संतोखु होवै गुरबचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा कलोल बुझहि माइआ के करि किरपा मेरे दीन दइआल । अपणा नामु देहि जपि जीवा पूरन होइ दास की घाल ॥ १ ॥ सरब मनोरथ राज सूख रस सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम । जिस कै करमि लिखिआ धुरि करतै नानक जन के पूरन काम ॥ २ ॥ २० ॥ ५१ ॥

परमात्मा के नाम-स्मरण से माया की प्यास (तृष्णा) बुझ जाती है, गुरु के उपदेश का आश्रय लेने से बड़ा सन्तोष पैदा होता है और परमात्मा के चरणों में पूर्णरूपेण उसकी लग्न लग जाती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे दीनदयालु प्रभु ! जिस मनुष्य पर तुम कृपा करते हो, उस पर माया के रंग-तमाशे प्रभाव नहीं करते । हे प्रभु ! मुझे भी अपना नाम दो, ताकि तुम्हारा नाम जपकर मैं आत्मिक जीवन प्राप्त कर सकूँ और तुम्हारे दास की (मेरी) मेहनत सफल हो जाए ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा का नाम जपकर, परमात्मा की गुणस्तुति करके समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण हो जाती हैं, राज्य के सुख-भोग मिल जाते हैं, हमेशा आनन्द बना रहता है । हे नानक ! कर्तार-प्रभु ने जिस मनुष्य के भाग्य में अपने दरबार से ही नाम की देन लिख दी, उसके समस्त कार्य सफल हो जाते हैं ॥ २ ॥ २० ॥ ५१ ॥

॥ धनासरी म० ५ ॥ जन की कीनी पारब्रहमि सार। निंदक टिकनु न पावनि मूले ऊडि गए बेकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह जह देखउ तह तह सुआमी कोइ न पहुचनहार। जो जो करै अवगिआ जन की होइ गइआ तत छार ॥ १ ॥ करनहारु रखवाला होआ जाका अंतु न पारावार। नानक दास रखे प्रभि अपुनै निंदक काढे मारि ॥ २ ॥ २१ ॥ ५२ ॥

परमात्मा ने अपने सेवकों की देखभाल की है। उनके निन्दक उनके मुक़ाबले पर बिल्कुल ही टिक नहीं सकते, (उनके निन्दक उनके मुक़ाबले पर) असमर्थ होकर दूर हट जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस प्रभु की बराबरी कोई नहीं कर सकता। मैं जहाँ-जहाँ देखता हूँ, वहीं वह मालिक-प्रभु बसता है। जो भी उसके सेवक का अनादर करता है, वह तुरन्त ध्वंस हो जाता है ॥ १ ॥ हे भाई! जिस परमात्मा के गुणों का अन्त नहीं पाया जा सकता, जिसकी हस्ती का ओर-छोर नहीं मिल सकता, वह परमात्मा सबका कर्ता और रक्षक है। हे नानक! प्रभु ने सदा अपने सेवकों की रक्षा की है और उनकी निन्दा करनेवालों को आत्मिक रूप से मारकर निकाल दिया है ॥ २ ॥ २१ ॥ ५२ ॥

धनासरी महला ५ घरु ९ पड़ताल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि चरन सरन गोबिंद दुख भंजना दास अपुने कउ नामु देवहु। द्रिसटि प्रभ धारहु क्रिपा करि तारहु भुजा गहि कूप ते काढि लेवहु ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध करि अंध माइआ के बंध अनिक दोखा तनि छादि पूरे। प्रभ बिना आन न राखनहारा नामु सिमरावहु सरनि सूरे ॥ १ ॥ पतित उधारणा जीअजंत तारणा बेद उचार नही अंतु पाइओ। गुणह सुख सागरा ब्रहम रतनागरा भगति वछलु नानक गाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ ५३ ॥

हे हरि, गोविन्द! हे दुखों के नाशक! अपने दास को अपना नाम दो (अपने चरणों में शरण दो)। कृपादृष्टि करो। दास को संसार-समुद्र से पार कर दो और उसकी बाँह पकड़कर कुएँ से निकाल लो ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु! काम-क्रोध के कारण जीव अन्धे हुए पड़े हैं, माया के बन्धनों में फँसे पड़े हैं और अनेक विकार शरीर में असर किए हुए मौजूद हैं। हे प्रभु! तुम्हारे बिना दूसरा कोई रक्षा करने में समर्थ नहीं।

हे शरणागत की लाज रखनेवाले ! अपना नाम जपाओ ॥ १ ॥ हे विकृत जीवों को बचानेवाले ! हे सारे जीवों को पार उतारनेवाले ! वेदों के पढ़नेवाले भी तुम्हारे गुणों का भेद नहीं पा सके । नानक का कथन है कि हे गुणों के समुद्र, सुखों के समुद्र, रत्नों की खान परब्रह्म ! मैं तुम्हें भक्तिपूर्वक प्रेम करनेवाला तुम्हारी गुणस्तुति कर रहा हूँ ॥ २ ॥ १ ॥ ५३ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ हलति सुखु पलति सुखु नित सुखु सिमरनो नामु गोबिंद का सदा लीजै । मिटहि कमाणे पाप चिराणे साध संगति मिलि मुआ जीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राज जोबन बिसरंत हरि माइआ महा दुखु एहु महांत कहै । आस पिआस रमण हरि कीरतन एहु पदारथु भागवंतु लहै ॥ १ ॥ सरणि समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नामु तेरा । अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुरु मेरा ॥ २ ॥ २ ॥ ५४ ॥

परमात्मा का नाम सदा स्मरण करना चाहिए । नाम-स्मरण इस लोक तथा परलोक में सुख देता है । पूर्वकृत पाप मिट जाते हैं । हे भाई ! सत्संगति में मिलकर विकारग्रस्त मनुष्य दोबारा आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! राज्य (भोग-विलास) और यौवन परमात्मा का नाम भुला देते हैं । माया-मोह बड़ी दुखदायी है —यह बात महापुरुष कहते हैं । परमात्मा के नाम-स्मरण, परमात्मा की गुणस्तुति की आशा और इच्छा —यह बहुमूल्य चीज़ कोई विरला भाग्यशाली मनुष्य ही प्राप्त करता है ॥ १ ॥ हे शरणागत की सहायता करने में समर्थ, अकथ्य, अगोचर, अन्तर्यामी और नानक के स्वामी ! तुम्हारा नाम जीवों को विकारों से बचा लेनेवाला है ॥ २ ॥ २ ॥ ५४ ॥

धनासरी महला ५ घरु १२

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ बंदना हरि बंदना गुण गावहु गोपालराइ ॥ रहाउ ॥ वडै भागि भेटे गुरदेवा । कोटि पराध मिटे हरि सेवा ॥ १ ॥ चरन कमल जाका मनु रापै । सोग अगनि तिसु जन न बिआपै ॥ २ ॥ सागरु तरिआ साधू संगे । निरभउ नामु जपहु हरि रंगे ॥ ३ ॥ परधन दोख किछु पाप न फेड़े । जम जंदारु न आवै नेड़े ॥ ४ ॥ त्रिसना अगनि प्रभि आपि बुझाई । नानक उधरे प्रभ सरणाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ५५ ॥

हे भाई ! परमात्मा को सदा प्रणाम करो, प्रभु-बादशाह के गुण गाते रहो ॥ रहाउ ॥ जिस मनुष्य को सौभाग्यवश गुरु मिल जाता है, परमात्मा की सेवा-भक्ति करने से उसके करोड़ों पाप मिट जाते हैं ॥ १ ॥ जिस मनुष्य का मन परमात्मा के सुन्दर चरणों में रत होता है, उस मनुष्य पर चिन्ता की अग्नि प्रभाव नहीं कर सकती ॥ २ ॥ हे भाई ! प्रेमपूर्वक निर्भय प्रभु का नाम जपा करो। गुरु की संगति में रहकर संसार-समुद्र से पार हुआ जाता है ॥ ३ ॥ नाम-स्मरण से मनुष्य पराए धन आदि के दोषों, पापों, नीच कर्मों आदि से बचा रहता है, भयानक यम भी निकट नहीं आता ॥ ४ ॥ हे भाई ! प्रभु के भक्तों की तृष्णा की अग्नि प्रभु ने बुझा दी है। हे नानक ! प्रभु की शरण लेकर अनेक जीव तृष्णा की अग्नि से बच निकलते हैं ॥ ५ ॥ १ ॥ ५५ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ त्रिपति भई सचु भोजनु खाइआ। मनि तनि रसना नामु धिआइआ ॥ १ ॥ जीवना हरि जीवना। जीवनु हरि जपि साध संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकारी बसत्र ओढाए। अनदिनु कीरतनु हरि गुन गाए ॥ २ ॥ हसती रथ असु असवारी। हरि का मारगु रिदै निहारी ॥ ३ ॥ मन तन अंतरि चरन धिआइआ। हरि सुख निधान नानक दासि पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५६ ॥

जिस मनुष्य ने अपने मन में, हृदय में जिह्वा द्वारा परमात्मा का नाम-स्मरण करना शुरू कर दिया, जिसने सत्यस्वरूप हरि-नाम की ख़ुराक खानी शुरू कर दी, वह माया की तृष्णा से मुक्त हो जाता है ॥ १ ॥ हे भाई ! सत्संगति में बैठकर परमात्मा का नाम जपा करो, यही असली ज़िन्दगी है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मनुष्य प्रतिपल परमात्मा की गुणस्तुति करता है, प्रभु के गुण गाता है, मानो उसने कई प्रकार के सुन्दर वस्त्र पहन लिये हैं ॥ २ ॥ जो मनुष्य अपने हृदय में परमात्मा के मिलाप का मार्ग देखता है, वह मानो हाथी, रथों और घोड़ों की सवारी का आनन्द अनुभव करता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य ने अपने मन में परमात्मा के चरणों का ध्यान करना शुरू कर दिया है, उस दास ने सब सुखों के ख़ज़ानों रूपी प्रभु को पा लिया है ॥ ४ ॥ २ ॥ ५६ ॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ गुर के चरन जीअ का निसतारा। समुंदु सागरु जिनि खिन महि तारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई होआ क्रम रतु कोई तीरथ नाइआ। दासीं हरि का नामु

धिआइआ ॥ १ ॥ बंधन काटनहारु सुआमी । जन नानकु सिमरै अंतरजामी ॥ २ ॥ ३ ॥ ५७ ॥

जिसने शरणागत को एक क्षण में संसार-समुद्र से पार कर दिया, उस गुरु के चरणों का स्मरण आत्मा के लिए संसार-समुद्र से पार होने के निमित्त उत्तम साधन है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई मनुष्य धार्मिक रस्मों का प्रेमी बन जाता है, कोई तीर्थों पर स्नान करता फिरता है; (पर) परमात्मा के सेवकों ने परमात्मा का नाम ही स्मरण किया है ॥ १ ॥ हे भाई ! दास नानक परमात्मा का नाम-स्मरण करता है, जो अन्तर्यामी है, सबका मालिक है और माया के बन्धन काटने की सामर्थ्य रखता है ॥२॥३॥५७॥

॥ धनासरी महला ५ ॥ कितै प्रकारि न तूटउ प्रीति । दास तेरे की निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मन धन ते पिआरा । हउमै बंधु हरि देवण हारा ॥ १ ॥ चरन कमल सिउ लागउ नेहु । नानक की बेनंती एह ॥ २ ॥ ४ ॥ ५८ ॥

हे प्रभु ! तुम्हारे दासों का आचरण इसलिए पवित्र रहता है, ताकि किसी प्रकार भी तुमसे उनकी प्रीति विच्छिन्न न हो जाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परमात्मा के दासों को अपनी आत्मा, अपने प्राण और तन, मन, धन से भी वह परमात्मा अधिक प्यारा लगता है, जो अहंभावना का मार्ग अवरुद्ध करने की सामर्थ्य रखता है ॥ १ ॥ गुरु नानक की सदा यही प्रार्थना है कि परमात्मा के सुन्दर चरणों के साथ उसका प्रेम बना रहे ॥२॥४॥५८॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

धनासरी महला ९ ॥ काहे रे बन खोजन जाई । सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई । तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥ १ ॥ बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई । जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥ २ ॥ १ ॥

हे भाई ! परमात्मा को पाने के लिए तू जंगलों में क्यों जाता है ? परमात्मा सबमें विद्यमान है, लेकिन सदा माया से निर्लिप्त रहता है। वह परमात्मा तुम्हारे साथ ही रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जसे पुष्प में सुगन्धि, शीशे में प्रतिबिम्ब रहता है, उसी प्रकार परमात्मा निरन्तर सबके

भीतर अवस्थित रहता है। इसलिए उसे अपने हृदय में ही खोजो ॥ १ ॥ गुरु का उपदेश यह बतलाता है कि अपने भीतर और बाहर एक परमात्मा को अवस्थित समझो। हे दास नानक ! अपना आत्मिक जीवन परखे बिना दुबिधा का जाला दूर नहीं हो सकता ॥ २ ॥ १ ॥

॥ धनासरी महला ९ ॥ साधो इहु जगु भरम भुलाना। राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता भाई सुत बनिता ताकै रसि लपटाना। जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥ १ ॥ दीनदइआल सदा दुखभंजन ता सिउ मनु न लगाना। जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥ २ ॥ २ ॥

हे सन्तो ! यह जगत दुबिधाग्रस्त होकर कुमार्गगामी हुआ रहता है। प्रभु के नाम का स्मरण विस्मृत किए रहता है और माया के हाथ में बिका रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भ्रम में फँसा हुआ यह जगत माँ, पिता, भाई, पुत्र, स्त्री के मोह में फँसा रहता है। यौवन तथा धन की शक्ति के नशे में यह जगत पागल हुआ है ॥ १ ॥ जो परमात्मा दीनों पर दया करनेवाला है, जो सारे दुखों का नाश करनेवाला है, जगत उस परमात्मा में मन नहीं लगाता। दास नानक का कथन है कि करोड़ों में से किसी एक मनुष्य ने गुरु की शरण लेकर परमात्मा से मेल किया है ॥ २ ॥ २ ॥

॥ धनासरी महला ९ ॥ तिह जोगी कउ जुगति न जानउ। लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर निंदा उसतति नह जाकै कंचन लोह समानो। हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥ १ ॥ चंचल मनु दहदिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो। कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ ३ ॥

उस योगी को जीवन-युक्ति में पारंगत नहीं कहा जा सकता, जिसमें अब भी लोभ, मोह-माया एवं ममता की झलक निरन्तर बनी रहती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य के हृदय में पराई निन्दा नहीं है, पराई खुशामद नहीं है, जो सोने और लोहे को एक समान मानता है, जो मनुष्य सुख-दुख से निर्लिप्त रहता है, केवल उसे योगी समझो ॥ १ ॥ नानक का कथन है कि सदा भटकता रहनेवाला मन दसों दिशाओं में फिरता है। जिस मनुष्य ने इसे स्थिर कर नियन्त्रित कर लिया है, जो

मनुष्य इस प्रकार का है, समझ लो कि उसे विकारों से मुक्ति मिल गई है ॥ २ ॥ ३ ॥

॥ धनासरी महला ९ ॥ अब मै कउनु उपाउ करउ । जिह बिधि मन को संसा चूकै भउनिधि पारि परउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ताते अधक डरउ । मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥ १ ॥ गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ । कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतत तरउ ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ९ ॥ १३ ॥ ५८ ॥ ४ ॥ ९३ ॥

अब मैं कौन सा यत्न करूँ, जिससे मेरे मन का भय समाप्त हो जाए और मैं संसार-समुद्र से पार उतर जाऊँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! मनुष्य-जन्म पाकर मैंने कोई भलाई नहीं की, इसलिए मैं बहुत डरता रहता हूँ । मैं अपने भीतर यही सोचता रहता हूँ कि मैंने मन, वचन, कर्म से परमात्मा के गुण नहीं गाए ॥ १ ॥ हे भाई ! गुरु की शिक्षा सुनकर भी यदि किसी को आत्मिक जीवन की कुछ भी सूझ पैदा नहीं होती, वह पशु के तुल्य अपना पेट भर लेता है । नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं विकारयुक्त हूँ, केवल तभी पार उतर सकता हूँ यदि तुम अपना शाश्वत विरद (भक्तों के रक्षक होने का) स्मरण रखो ॥२॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥

धनासरी महला १ घरु २ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गुरु सागरु रतनी भरपूरे । अंम्रितु संत चुगहि नही दूरे । हरि रसु चोग चुगहि प्रभ भावै । सरवर महि हंसु प्रानपति पावै ॥ १ ॥ किआ बगु बपुड़ा छपुड़ी नाइ । कीचड़ि डूबै मैलु न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रखि रखि चरन धरे वीचारी । दुबिधा छोडि भए निरंकारी । मुकति पदारथु हरि रस चाखे । आवण जाण रहे गुरि राखे ॥ २ ॥ सरवर हंसा छोडि न जाइ । प्रेम भगति करि सहजि समाइ । सरवर महि हंसु हंस महि सागरु । अकथ कथा गुर बचनी आदरु ॥ ३ ॥ सुंन मंडल इकु जोगी बैसे । नारि न पुरखु कहहु कोऊ कैसे । त्रिभवण जोति रहे लिव लाई । सुरिनर नाथ सचे सरणाई ॥ ४ ॥ आनंद मूलु अनाथ अधारी ।

गुरमुखि भगति सहजि बीचारी । भगति वछल भै काटण हारे । हउमै मारि मिले पगु धारे ।। ५ ।। अनिक जतन करि कालु संताए । मरणु लिखाइ मंडल महि आए । जनमु पदारथु दुबिधा खोवै । आपु न चीनसि भ्रमि भ्रमि रोवै ।। ६ ।। कहतउ पड़तउ सुणतउ एक । धीरज धरमु धरणी धर टेक । जतु सतु संजमु रिदै समाए । चउथे पद कउ जे मनु पतीआए ।। ७ ।। साचे निरमल मैलु न लागै । गुर कै सबदि भरम भउ भागै । सूरति मूरति आदि अनूपु । नानकु जाचै साचु सरूपु ।। ८ ।। १ ।।

गुरु एक समुद्र है, जो रत्नों से लबालब भरा हुआ है। गुरमुख सिक्ख आत्मिक जीवन देनेवाली ख़ुराक का भोग करते हैं और गुरु से दूर नहीं होते। प्रभु की कृपा से सन्त रूपी हंस हरि-नाम रूपी रस का चुग्गा लेते हैं। गुरमुख हंस गुरु रूपी सरोवर में जगह प्राप्त करता है और प्राणों के मालिक-प्रभु को पा लेता है ।। १ ।। बेचारा बगुला तालाब में किसलिए स्नान करता है (क्योंकि नहाकर) कीचड़ में ही डूबता है, उसका मैल दूर नहीं होता (जो मनुष्य गुरु रूपी सागर को त्यागकर किसी ममत्व के तालाब में नहाता है, वह माया-मोह से मुक्त नहीं हो पाता।) ।। १ ।। रहाउ ।। गुरसिक्ख अत्यन्त जागरूक होकर सोच-विचारकर अग्रसर होता है। परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे सहारे की खोज छोड़ परमात्मा का ही बन जाता है। परमात्मा के नाम का रसास्वादन करके गुरसिक्ख वह पदार्थ प्राप्त कर लेता है, जो माया-मोह से मुक्ति दिला देता है। जिसकी गुरु ने सहायता कर दी, उसके जन्म-मरण के चक्र समाप्त हो गए ।। २ ।। जिस प्रकार हंस मानसरोवर को त्यागकर नहीं जाता, उसी प्रकार (भक्त प्रभु-भक्ति से विलग नहीं होता); भक्त प्रेम-भक्ति के प्रभाव से स्थिर आत्मिक अवस्था में लीन हो जाता है। जो गुरसिक्ख रूपी हंस गुरु रूपी सरोवर में स्थिर रहता है, उसके भीतर गुरु-सरोवर अपना आप प्रकट कर देता है। यह कथा अकथ्य है (अर्थात् आत्मिक रहस्य का वर्णन नहीं हो सकता)। गुरु के शब्दों का अनुकरण कर जीव लोक-परलोक में आदर पाता है ।।३।। वह प्रभु ही वास्तव में योगी है, जो शून्य अवस्था में समाधी लगाकर स्त्री-पुरुष वाले भेद से इतर रहता है। उसके सम्बन्ध में कोई ऐसा संकल्प कर भी कैसे सकता है? क्योंकि तीनों लोक उसी की ज्योति में ध्यान लगाए रहते हैं और देवता, मनुष्य, नाथ आदि समस्त उसी सत्यस्वरूप प्रभु की शरण लेकर जीते हैं ।। ४ ।। जो आत्मिक आनन्द का स्रोत है, जो निराश्रितों का आश्रय है, गुरमुख उसकी भक्ति के द्वारा और गुणों के

चिन्तन द्वारा स्थिर आतिमक अवस्था में दृढ़ रहते हैं। वह प्रभु भक्तों से प्रेम करता है; वह सेवकों के समस्त भय दूर करने में समर्थ है। गुरमुख अहंत्व मारकर और सत्संगति में रहकर उस आनन्द-मूल प्रभु के चरणों में जगह पाते हैं ॥५॥ जो मनुष्य आतिमक जीवन (के महत्त्व को) नहीं पहचानता, वह (अहंत्व में) भटक-भटककर दुखी होता है। परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे सहारे की खोज में वह अमूल्य मनुष्य-जन्म को गवाँ देता है। अनेक दूसरे यत्नों से प्राप्त की हुई विकारी मृत्यु उसे दुखी करती है। वह अपने पूर्वकृत कर्मों के कारण आतिमक मृत्यु का लेख लिखाकर लाया (और यहाँ पर भी उसका ही व्यापार करता रहा) ॥६॥ जो मनुष्य उसी एक परमात्मा का गुणगान करता है, पढ़ता है, सुनता है और समूची सृष्टि के सहारे प्रभु का आश्रय लेता है, वह गम्भीर स्वभाव ग्रहण करता है और मनुष्य के कर्तव्य आदि को समझता है। यदि मनुष्य अपने मन को उस आतिमक अवस्था का वासी बना ले जहाँ माया के तीनों गुण प्रभाव नहीं कर सकते, तो स्वतः ही जितेन्द्रियता, संयम आदि उसके हृदय में लीन रहते हैं ॥ ७ ॥ सत्यस्वरूप प्रभु में टिककर पवित्र हुए मनुष्य के मन को विकारों का मैल नहीं लगता। गुरु के शब्द के प्रभाव से उसकी दुबिधा दूर हो जाती है और उसका भय समाप्त हो जाता है। नानक उस सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार से नाम की याचना करता है, जिसके तुल्य दूसरा कोई अमूल्य पदार्थ नहीं है और जो आदि युगादि से इसी प्रकार अटल है ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ धनासरी महला १ ॥ सहजि मिलै मिलिआ परवाणु। ना तिसु मरणु न आवणु जाणु। ठाकुर महि दासु दास महि सोइ। जह देखा तह अवरु न कोइ ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति सहज घरु पाईऐ। बिनु गुर भेटे मरि आईऐ जाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो गुरु करउ जि साचु द्रिड़ावै। अकथु कथावै सबदि मिलावै। हरि के लोग अवर नही कारा। साचउ ठाकुरु साचु पिआरा ॥ २ ॥ तन महि मनूआ मन महि साचा। सो साचा मिलि साचे राचा। सेवकु प्रभ कै लागै पाइ। सतिगुरु पूरा मिलै मिलाइ ॥ ३ ॥ आपि दिखावै आपे देखै। हठि न पतीजै ना बहु भेखै। घड़ि भाडे जिनि अंम्रितु पाइआ। प्रेम भगति प्रभि मनु पतीआइआ ॥ ४ ॥ पड़ि पड़ि भूलहि चोटा खाहि। बहुतु सिआणप आवहि जाहि। नामु जपै भउ भोजनु खाइ। गुरमुखि सेवक रहे समाइ ॥ ५ ॥ पूजि सिला तीरथ

बनवासा । भरमत डोलत भए उदासा । मनि मैलै सूचा किउ होइ । साचि मिलै पावै पति सोइ ॥ ६ ॥ आचारा वीचारु सरीरि । आदि जुगादि सहजि मनु धीरि । पल पंकज महि कोटि उधारे । करि किरपा गुरु मेलि पिआरे ॥ ७ ॥ किसु आगै प्रभ तुधु सालाही । तुधु बिनु दूजा मै को नाही । जिउ तुधु भावै तिउ राखु रजाइ । नानक सहजि भाइ गुण गाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

जो मनुष्य गुरु के द्वारा स्थितप्रज्ञ होकर प्रभु-चरणों में जगह लेता है, उसका प्रभु-चरणों में जगह पाना प्रामाणिक है। उस मनुष्य को न तो आत्मिक मृत्यु भोगनी पड़ती है और न जन्म-मरण का चक्र ! ऐसा प्रभु का सेवक प्रभु में लीन रहता है, प्रभु ऐसे सेवक के भीतर प्रकट हो जाता है। वह सेवक जिधर देखता है, उसे परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं दिखता ॥ १ ॥ गुरु का शरणागत होकर उस प्रभु की भक्ति करने से वह आत्मिक ठिकाना मिल जाता है, जहाँ मन स्थिर होकर जगह पा लेता है; (लेकिन) गुरु से मिले बिना जीव जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैं वही गुरु स्वीकार करना चाहता हूँ, जो सत्यस्वरूप प्रभु को हृदय में भली प्रकार दर्शा दे, जो मुझसे अकथ्य प्रभु की गुणस्तुति कराए और अपने शब्द के द्वारा मुझे प्रभु-चरणों में मिलाए। प्रभु के भक्त को दूसरा धन्धा नहीं सूझता, भक्त सत्यस्वरूप प्रभु को स्मरण करता है, सत्यस्वरूप प्रभु ही उसे प्यारा लगता है ॥ २ ॥ जिस मनुष्य को पूर्णगुरु मिलता है, गुरु उसे प्रभु-चरणों में मिला देता है, वह सेवक प्रभु के चरणों में मिला रहता है, उसका मन शरीर के भीतर ही रहता है अर्थात् निर्लिप्त रहता है। उसके भीतर सत्यस्वरूप प्रभु प्रकट हो जाता है, वह सत्यस्वरूप प्रभु को स्मरण कर उसमें लीन होकर उसकी स्मृतियों में सोया रहता है ॥ ३ ॥ परमात्मा अपना दर्शन आप ही कराता है, आप ही सब जीवों के मन की बात जानता है, इसलिए वह हठात् कर्मों के प्रति विश्वस्त नहीं होता और न ही बहुत से वेशों पर प्रसन्न होता है। जिस प्रभु ने शरीर बनाए हैं और जिसके द्वारा नाम-अमृत पाया है, उसी प्रभु ने उसका मन प्रेमा-भक्ति में लगाया है ॥४॥ जो मनुष्य विद्या पढ़-पढ़कर अहंकारवश स्मरण से विलग हो जाते हैं, वे आत्मिक मृत्यु की चोटें सहते हैं। चतुराई के कारण जन्म-मरण के चक्र में पड़ते हैं। जो-जो मनुष्य प्रभु का नाम-स्मरण करता है और प्रभु के भय तथा सम्मान को अपनी आत्मा की ख़ुराक बनाता है, वह सदा गुरु की शरण लेकर प्रभु में लीन रहता है ॥ ५ ॥ जो मनुष्य पत्थर पूजता रहा, तीर्थों पर स्नान करता रहा, जंगलों में भटकता रहा,

त्यागी बनकर जगह-जगह विचरण करता फिरा, यदि उसका मन फिर भी मैला ही रहा तो उसे पवित्रता कहाँ मिलेगी ? जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु में लीन होता है, वही लोक-परलोक में प्रतिष्ठा पाता है ॥ ६ ॥ हे प्यारे प्रभु ! कृपया मुझे वह गुरु मिला दो, जो एक निमिष में करोड़ों व्यक्तियों को पार कर देता है, जिसका मन सदैव स्थिर रहता है, जो गम्भीर एवं सदाचारी है और जिसके पास आत्मिक सूझ भी है ॥ ७ ॥ हे नानक ! प्रभु-द्वार पर यों प्रार्थना करो कि हे प्रभु ! मैं किस व्यक्ति के समक्ष तुम्हारी गुणस्तुति करूँ ? मुझे तो तुम्हारे बिना दूसरा कोई दिखता ही नहीं। जैसी तुम्हारी इच्छा हो मुझे (अपनी रज़ा में) रखो, ताकि तुम्हारा दास स्थिर आत्मिक स्थिति और तुम्हारे प्रेम में लीन होकर तुम्हारा गुणगान करता रह सके ॥ ८ ॥ २ ॥

धनासरी महला ५ घरु ६ असटपदी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जो जो जूनी आइओ तिह तिह उरझाइओ माणस जनमु संजोगि पाइआ । ताकी है ओट साध राखहु दे करि हाथ करि किरपा मेलहु हरि राइआ ॥ १ ॥ अनिक जनम भ्रमि थिति नही पाई । करउ सेवा गुर लागउ चरन गोविंद जी का मारगु देहु जी बताई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव करउ माइआ कउ बचिति धरउ मेरी मेरी करत सद ही विहावै । कोई ऐसो रे भेटै संतु मेरी लाहै सगल चिंत ठाकुर सिउ मेरा रंगु लावै ॥ २ ॥ पड़े रे सगल बेद नह चूकै मन भेद इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पंचा । कोई ऐसो रे भगतु जु माइआ ते रहतु इकु अंम्रित नामु मेरै रिदै सिंचा ॥ ३ ॥ जेते रे तीरथ नाए अहंबुधि मैलु लाए घर को ठाकुरु इकु तिलु न मानै । कदि पावउ साधसंगु हरि हरि सदा आनंदु गिआन अंजनि मेरा मनु इसनानै ॥ ४ ॥ सगल अस्रम कीने मनूआ नह पतीने बिबेक हीन देही धोए । कोई पाईऐ रे पुरखु बिधाता पारब्रहम कै रंगि राता मेरे मन की दुरमति मलु खोए ॥ ५ ॥ करम धरम जुगता निमख न हेतु करता गरबि गरबि पड़ै कही न लेखै । जिसु भेटीऐ सफल मूरति करै सदा कीरति गुरपरसादि कोऊ नेत्रहु पेखै ॥ ६ ॥ मनहठि जो कमावै तिलु न लेखै पावै बगुल जिउ धिआनु लावै माइआ रे धारी । कोई ऐसो रे सुखहदाई प्रभ की

कथा सुनाई तिसु भेटे गति होइ हमारी ॥ ७ ॥ सु प्रसंन गोपालराइ काटै रे बंधन माइ गुर कै सबदि मेरा मनु राता । सदा सदा आनंदु भेटिओ निरभै गोबिंदु सुख नानक लाधे हरि चरन पराता ॥ ८ ॥ सफल सफल भई सफल जात्रा । आवण जाण रहे मिले साधा ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

हे गुरु ! जो-जो जीव किसी योनि में आया है, वह उस-उस योनि के मोह में ही लिप्त हो रहा है । मनुष्य-जन्म किसी मनुष्य ने भाग्यवश ही प्राप्त किया है । हे गुरु ! मैंने तो तुम्हारा आसरा देखा है । अपना सहारा देकर बचा लो । कृपा करके मुझे प्रभु-(बादशाह) के साथ मिला दो ॥ १ ॥ हे सतिगुरु ! अनेक योनियों में भटक-भटककर मुझे स्थिरता नहीं मिली । अब मैं तुम्हारे चरणों में आ गिरा हूँ, मैं तुम्हारी ही सेवा करता हूँ, मुझे परमात्मा का रास्ता बता दो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैं नित्य माया की एषणा में अनेक प्रयत्न करता रहता हूँ, मैं उसे जान-पूछकर अपने मन में टिकाए रखता हूँ, हमेशा 'मेरी', 'मेरी' करते मेरी उम्र बीतती जा रही है । (प्रभु से प्रार्थना है कि) मुझे कोई ऐसा सन्त मिल जाए, जो समस्त सोच-विचार दूर कर दे और परमात्मा के साथ मेरा प्रेम सम्पन्न कर दे ॥ २ ॥ सारे वेद पढ़कर देखे हैं, इनसे भी परमात्मा और मन के बीच की दूरी नहीं मिटती, इनसे ज्ञानेन्द्रियाँ एक क्षण के लिए भी शान्त नहीं होतीं । कोई ऐसा भक्त मिल जाए, जो स्वयं माया से निर्लिप्त हो । वही भक्त मेरे हृदय को आत्मिक जीवन देनेवाले नाम-जल से सींच सकता है ॥ ३ ॥ जितने भी तीर्थ हैं, यदि उन पर स्नान किया जाए, तो वे मैल उतारने की जगह मन पर अहंकार का मैल लगा देते हैं । इन तीर्थस्थानों पर स्नान करने से परमात्मा तनिक भी प्रसन्न नहीं होता । मेरी चाह है कि मैं सत्संगति प्राप्त कर सकूँ, जिससे मन में अनवरत आनन्द बना रहे और मेरे मन के नेत्रों में ज्ञान का सुरमा लगने से पावनता मिले ॥ ४ ॥ हे भाई ! समस्त आश्रम-धर्म कमाने से मन विश्वस्त नहीं होता । अज्ञानी मनुष्य केवल शरीर को ही स्वच्छ करते रहते हैं । मेरी चाह है कि परमात्मा के प्रेम-रंग में रँगा हुआ, परमात्मा का रूप कोई महापुरुष मिल जाए और वह मेरे भीतर की दुर्बुद्धि का मैल दूर कर दे ॥५॥ हे भाई ! जो मनुष्य धार्मिक कार्यों में ही व्यस्त रहता है, परमात्मा से थोड़ा भी प्रेम नहीं करता, (पूर्वकृत कर्मों के सहारे) पुनःपुनः अहंकारग्रस्त रहता है, (लेकिन) इन कर्मों में से कोई उसके काम नहीं आता । जिस मनुष्य को वह गुरु मिल जाता है, जो समस्त आकांक्षाएँ पूर्ण करनेवाला है और जिसकी कृपा से मनुष्य सदा परमात्मा की गुणस्तुति करता है, उसी गुरु की कृपा से कोई भाग्यशाली मनुष्य ही परमात्मा को अपनी आँखों से देखता

है ॥ ६ ॥ जो मनुष्य हठपूर्वक तपस्या करता है, प्रभु उसकी मेहनत को तनिक भी नहीं स्वीकारता (क्योंकि) वह मनुष्य तो बगुले के तुल्य ही समाधि लगाए होता है, उसके मन में मोह-माया का फन्दा निरन्तर बना रहता है। हे भाई ! यदि कोई ऐसा आत्मिक आनन्द का दाता मिल जाए जो हमें परमात्मा-गुणगान सुनाए, तो उसे मिलकर हमारी आत्मिक अवस्था ऊँची हो सकती है ॥ ७ ॥ जिस मनुष्य पर प्रभु-बादशाह दयालु होता है, गुरु उसके माया के बन्धन काट देता है। मेरा मन भी गुरु के शब्द में मग्न रहता है। जिस मनुष्य को समस्त भयों से रहित (निपट निर्भय) गोविन्द मिल जाता है, उसके भीतर अमित आनन्द बना रहता है। वह मनुष्य परमात्मा के चरणों में लीन रहकर सारे सुख प्राप्त कर लेता है ॥ ८ ॥ गुरु के द्वार पर रहने से मनुष्य-जीवन की यात्रा सफल हो जाती है, गुरु को मिलकर जन्म-मरण के चक्र समाप्त हो जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

धनासरी महला १ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है। तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है। गुर गिआनु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा। हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा। संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना। गुरवाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ॥ १ ॥ साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ। गुणहि हारु परोइ किस कउ रोईऐ। वीचारि मारै तरै तारै उलटि जोनि न आवए। आपि पारसु परम धिआनी साचु साचे भावए। आनंदु अनदिनु हरखु साचा दूख किलविख परहरे। सचु नामु पाइआ गुरि दिखाइआ मैलु नाही सच मने ॥ २ ॥ संगति मीत मिलापु पूरा नावणो। गावै गावणहारु सबदि सुहावणो। सालाहि साचे मंनि सतिगुरु पुंन दान दइआमते। पिर संगि भावै सहजि नावै बेणी त संगमु सतसते। आराधि एकंकारु साचा नित देइ चड़ै सवाइआ। गति संगि मीता संत संगति करि नदरि मेलि मिलाइआ ॥ ३ ॥ कहणु कहै सभु कोइ केवडु आखीऐ। हउ मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीऐ। सचु गुर की साखी अंम्रित भाखी तितु मनु मानिआ मेरा। कूचु करहि

आवहि बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा। आखणि तोटि न भगति भंडारी भरिपुरि रहिआ सोई। नानक साच कहै बेनंती मनु मांजै सचु सोई ॥ ४ ॥ १ ॥

मैं तीर्थ पर स्नान करने जाऊँ, लेकिन मेरे लिए प्रभु का नाम ही तीर्थ है। गुरु के शब्द को मन-मस्तिष्क में दृढ़ाना ही मेरे लिए तीर्थ है, जिससे मेरा भीतर प्रभु के साथ ऐक्य हो जाता है। सतिगुरु का दिया हुआ ज्ञान मेरे लिए सच्चा तीर्थस्नान है, मेरे लिए दस पवित्र दिन हैं[1], मेरे लिए यही दस पापों की हरनेवाली गंगा का जन्मदिन है[2]। मैं तो हमेशा प्रभु का नाम ही माँगता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि हे पृथ्वी के सम्बल स्वामी! मुझे अपना नाम दो। जगत विकारग्रस्त है, परमात्मा का नाम इन रोगों का एक मात्र उपचार है। सत्यस्वरूप प्रभु के नाम के बिना मन को विकारों का मैल लग जाता है। गुरु का पवित्र शब्द मनुष्य को सदा आत्मिक प्रकाश देता है, यही नित्य सत्यस्वरूप तीर्थ है, यही तीर्थ-स्नान है ॥ १ ॥ नित्य-सत्य प्रभु के नाम में लगने से मन को विकारों का मैल नहीं लगता, (तदुपरान्त तीर्थों पर) कोई मैल धोने की आवश्यकता नहीं रहती। परमात्मा के गुणों का हार पिरोकर किसी के आगे पुकार करने की भी आवश्यकता नहीं रहती। जो मनुष्य गुरु के शब्द के चिन्तन से (भीतर अवस्थित विकारों को) जीत लेता है, वह स्वयं संसार-समुद्र से पार उतर जाता है और दूसरों को भी पार उतार देता है। वह दोबारा योनियों के चक्र में नहीं आता। वह मनुष्य आप पारस बन जाता है, अत्यन्त ऊँची आत्मा का स्वामी हो जाता है। वह सत्यस्वरूप प्रभु का रूप बन जाता है और उसे प्यारा लगने लग जाता है। उसके भीतर प्रतिपल आनन्द बना रहता है, शाश्वत खुशी पैदा हो जाती है, वह मनुष्य अपने सारे दुख अथवा पाप दूर कर लेता है। जिस मनुष्य ने सत्यस्वरूप प्रभु का नाम प्राप्त कर लिया, जिसे गुरु ने प्रभु दिखा दिया, उसके सच्चे नाम को जपने से मन को कभी विकारों का मैल नहीं लगता ॥२॥ सत्संगति में परम-मित्र प्रभु का मिलाप हो जाता है —यही वह तीर्थस्नान है, जिसमें कोई कमी नहीं रह जाती। जो मनुष्य गुरु के आदेशानुसार आचरण करता हुआ स्मरणीय प्रभु के गुण गाता है, उसका जीवन महक उठता है। सतिगुरु को पाकर सत्यस्वरूप प्रभु का गुणगान करने से मनुष्य की बुद्धि दूसरों की सेवा करनेवाली तथा सब पर दया करनेवाली बन जाती है। पति-प्रभु की

१ दस स्नान पर्व— अष्टमी, चौदश, अमावस, संक्रान्ति, पूर्णिमा, उत्तरायण, दक्षिणायन, व्यातिपात, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण।

२ दसाहरा = ज्येष्ठ सुदी दशमी: दसों पापों का हरण करनेवाली गंगा का जन्म-दिवस।

संगति में रहने के कारण वह उसे प्यारा लगने लगता है। वह आत्मिक स्थिरता में स्नान करता है, यही उसके लिए पवित्रतम त्रिवेणी-संगम है। हे भाई ! उस सत्यस्वरूप एक अकालपुरुष को स्मरण करो, जो दाता है और जिसकी देन दिन-प्रतिदिन बढ़ती है। मित्र-प्रभु की संगति में, गुरु-सन्त की संगति में आत्मिक अवस्था ऊँची हो जाती है और प्रभु कृपादृष्टि करके उसे अपने में विलीन कर लेता है ॥ ३ ॥ हर एक जीव परमात्मा के बारे में कथन करता है, लेकिन कोई नहीं बतला सकता कि वह कितना महान है। मैं तो मूर्ख, दुराचारी, अज्ञानी हूँ, (इसलिए) मैं तो गुरु के उपदेश द्वारा ही समझ सकता हूँ। मेरा मन तो उस गुरु-ज्ञान में ही विश्वस्त हो गया है, जो सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति करता है और जो आत्मिक जीवन देनेवाला है। जो जीव (माया-मोह के) ज़हर से लदे हुए जगत में आते हैं, वे इसी प्रकार यहाँ से चले जाते हैं; लेकिन जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति के शब्द में प्रवृत्त होते हैं, उन्हें सद्गुरु उस ज़हर के भार से मुक्त कर लेता है। भक्ति के ख़ज़ाने अक्षय रहते हैं, वे परमात्मा के गुण व्यक्त करने से समाप्त नहीं होते; (क्योंकि) परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। हे नानक ! जो मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु का स्मरण करता है, जो प्रभु के द्वार पर प्रार्थनाएँ करता है और अपने मन को विकारों के मैल से साफ़ कर लेता है, उसे सर्वत्र वह सत्यस्वरूप प्रभु ही दीख पड़ता है ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ धनासरी महला १ ॥ जीवा तेरै नाइ मनि आनंदु है जीउ । साचो साचा नाउ गुण गोविंदु है जीउ । गुर गिआनु अपारा सिरजणहारा जिनि सिरजी तिनि गोई । परवाणा आइआ हुकमि पठाइआ फेरि न सकै कोई । आपे करि वेखै सिरि सिरि लेखै आपे सुरति बुझाई । नानक साहिबु अगम अगोचरु जीवा सची नाई ॥ १ ॥ तुम सरि अवरु न कोइ आइआ जाइसी जीउ । हुकमी होइ निबेड़ु भरमु चुकाइसी जीउ । गुरु भरमु चुकाए अकथु कहाए सच महि साचु समाणा । आपि उपाए आपि समाए हुकमी हुकमु पछाणा । सची वडिआई गुर ते पाई तू मनि अंति सखाई । नानक साहिबु अवरु न दूजा नामि तेरै वडिआई ॥ २ ॥ तू सचा सिरजणहारु अलख सिरंदिआ जीउ । एकु साहिबु दुइ राह वाद वधंदिआ जीउ । दुइ राह चलाए हुकमि सबाए जनमि मुआ संसारा । नाम बिना नाही को बेली बिखु लादी सिरि भारा । हुकमी आइआ हुकमु न बूझै हुकमि सवारणहारा । नानक साहिबु सबदि सिञापै साचा

सिरजणहारा ॥ ३ ॥ भगत सोहहि दरवारि सबदि सुहाइआ जीउ। बोलहि अंम्रित बाणि रसन रसाइआ जीउ। रसन रसाए नामि तिसाए गुर कै सबदि विकाणे। पारसि परसिऐ पारसु होए जा तेरै मनि भाणे। अमरापदु पाइआ आपु गवाइआ विरला गिआन बीचारी। नानक भगत सोहनि दरि साचै साचे के वापारी ॥४॥ भूख पिआसो आथि किउ दरि जाइसा जीउ। सतिगुर पूछउ जाइ नामु धिआइसा जीउ। सचु नामु धिआई साचु चवाई गुरमुखि साचु पछाणा। दीनानाथु दइआलु निरंजनु अनदिनु नामु वखाणा। करणी कार धुरहु फुरमाई आपि मुआ मनु मारी। नानक नामु महारसु मीठा त्रिसना नामि निवारी ॥ ५ ॥ २ ॥

हे प्रभु ! तुम्हारे नाम-स्मरण से मेरे भीतर आत्मिक जीवन पैदा होता है, मुझे खुशी मिलती है। परमात्मा का नाम सच्चा है, प्रभु गुणों का भण्डार और दुनिया के लोगों के अन्तर्मन की जाननेवाला है। गुरु-प्रदत्त ज्ञान से सर्जक प्रभु की अनन्तता का पता चलता है। जिसने यह सृष्टि उत्पन्न की है, वही इसे नष्ट करता है। जब उसके हुक्म अनुसार निमन्त्रण आता है, तो कोई जीव उस निमन्त्रण को टाल नहीं सकता। परमात्मा आप ही जीवों को पैदा करके आप ही सँभाल करता है, आप ही हर एक जीव के मस्तक पर भाग्य-लेख लिखता है और ज्ञान प्रदान करता है। परमात्मा अगम्य है और जीवों की ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच उस तक नहीं हो सकती। नानक का कथन है कि प्रभु की सच्ची गुणस्तुति से उसके भीतर आत्मिक जीवन पैदा होता है ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम अप्रतिम हो (क्योंकि) जो भी जगत में आया है, चला जाएगा। जिस मनुष्य की दुबिधा गुरु दूर करता है, प्रभु के हुक्म अनुसार उसके जन्म-मरण का चक्र दूर हो जाता है। गुरु जिसकी दुबिधा दूर करता है, वह उससे अवर्णनीय गुण-युक्त परमात्मा की स्तुति कराता है। वह मनुष्य सत्यस्वरूप प्रभु की स्मृति में रहता है और उसके हृदय में परमात्मा प्रकट हो जाता है। वह मनुष्य इच्छा-सम्पन्न प्रभु का हुक्म पहचान लेता है और जानता है कि प्रभु आप ही पैदा करता है और आप ही अपने में विलीन कर लेता है। हे प्रभु ! जिस जीव ने गुरु से तुम्हारा ज्ञान प्राप्त कर लिया है, तुम उसके मन में विद्यमान रहते हो और अन्तिम समय में भी उसके मित्र बनते हो। हे नानक ! मालिक-प्रभु सत्यस्वरूप है, उस जैसा कोई अन्य नहीं है। उसके नाम-स्मरण से सर्वत्र आदर मिलता है ॥२॥ हे अदृश्य सृजनहार ! तुम सत् हो और सब जीवों को पैदा करनेवाले हो। एक सृजनहार ही

समस्त जगत का मालिक है, उसी ने जन्मना और मरना दो मार्ग बनाए हैं, उसी की इच्छा से विवाद उठते हैं। दोनों मार्ग प्रभु ने ही चलाए हैं, सब जीव उसके हुक्म अनुसार (परिचालित) हैं, उसी के अनुसार जगत जन्मता-मरता रहता है। जीव (प्रभु को भुलाकर माया का) ज़हर रूपी बोझ अपने सिर पर एकत्रित किए जाता है। (जब कि) परमात्मा के नाम के अतिरिक्त कोई भी उसका सच्चा साथी नहीं बन सकता। जीव परमात्मा के हुक्म अनुसार जगत में आता है, लेकिन माया-मोह में फँसकर उस हुक्म को पहचानता नहीं। प्रभु आप ही जीवों को अपने हुक्म अनुसार सँवारने में समर्थ है। हे नानक! गुरु के उपदेश में प्रवृत्त होने से यह पहचान आती है कि जगत का मालिक सत्यस्वरूप है और सबका सर्जक है ॥ ३ ॥ हे भाई! परमात्मा की भक्ति करनेवाले व्यक्ति परमात्मा की सेवा में शोभा पाते हैं, क्योंकि गुरु के ज्ञान के प्रभाव से वे अपने जीवन को सुन्दर बना लेते हैं। वे जीव आत्मिक जीवन देनेवाली वाणी अपनी जिह्वा से उच्चरित करते हैं और जीव उस वाणी से एकाकार कर लेता है। भक्त-जन प्रभु के नाम से जीभ को पवित्र कर लेते हैं, नाम में प्रवृत्त होकर नाम के लिए उनकी प्यास बढ़ती है और गुरु के शब्द के द्वारा वे प्रभु-नाम पर बलिहारी होते हैं। हे प्रभु! जब भक्तजन तुम्हें मन में प्रेम करते हैं, तो वे गुरु-पारस के स्पर्श से स्वयं भी पारस हो जाते हैं। जो व्यक्ति अहंभाव दूर करते हैं, उन्हें वह आत्मिक स्थान मिल जाता है जहाँ मृत्यु भी असर नहीं कर सकती। पर ऐसा व्यक्ति कोई विरला ही होता है, जो गुरु-प्रदत्त ज्ञान का सही विचार करता है। हे नानक! परमात्मा की भक्ति करनेवाले व्यक्ति सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर शोभा पाते हैं, वे सत्यस्वरूप प्रभु के नाम का ही व्यापार करते हैं ॥ ४ ॥ जब तक माया के लिए मेरी तृष्णा है, तब तक मैं किसी भी तरह प्रभु के द्वार पर नहीं पहुँच सकता। मैं जाकर अपने गुरु से सीखता हूँ और परमात्मा का नाम स्मरण करता हूँ। गुरु का शरणागत होकर मैं सच्चा नाम जपता हूँ। प्रभु का गुणगान करते हुए सत्यस्वरूप प्रभु से मेल करता हूँ; प्रतिदिन उस प्रभु का नाम मुँह से बोलता हूँ, जो दीनों का सहारा है, दया का स्रोत है और जो माया के प्रभाव से परे है। परमात्मा ने जिस मनुष्य को अपने दरबार से ही नाम-स्मरण की करणीय कार (काम-धन्धा) करने का आदेश दे दिया, वह मनुष्य अपने मन को मारकर तृष्णा के प्रभाव से बच जाता है। हे नानक! उस मनुष्य को प्रभु का नाम ही मीठा तथा दूसरे रसों से श्रेष्ठ लगता है, वह नाम-स्मरण के प्रभाव से माया की तृष्णा दूर कर लेता है ॥ ५ ॥ २ ॥

॥ धनासरी छंत महला १ ॥ पिर संगि मूठड़ीए खबरि न पाईआ जीउ । मसतकि लिखिअड़ा लेखु पुरबि कमाइआ

जीउ। लेखु न मिटई पुरबि कमाइआ किआ जाणा किआ होसी। गुणी अचारि नही रंगि राती अवगुण बहि बहि रोसी। धनु जोबनु आक की छाइआ बिरधि भए दिन पुंनिआ। नानक नाम बिना दोहागणि छूटी झूठि विछुंनिआ ॥ १ ॥ बूडी घरु घालिओ गुर कै भाइ चलो। साचा नामु धिआइ पावहि सुखि महलो। हरिनामु धिआए ता सुखु पाए पेईअड़ै दिन चारे। निज घरि जाइ बहै सचु पाए अनदिनु नालि पिआरे। विणु भगती घरि वासु न होवी सुणिअहु लोक सबाए। नानक सरसी ता पिरु पाए राती साचै नाए ॥ २ ॥ पिरु धन भावै ता पिर भावै नारी जीउ। रंगि प्रीतम राती गुर कै सबदि वीचारी जीउ। गुर सबदि वीचारी नाह पिआरी निवि निवि भगति करेई। माइआ मोहु जलाए प्रीतमु रस महि रंगु करेई। प्रभ साचे सेती रंगि रंगेती लाल भई मनु मारी। नानक साचि वसी सोहागणि पिर सिउ प्रीति पिआरी ॥ ३ ॥ पिर घरि सोहै नारि जे पिर भावए जीउ। झूठे वैण चवे कामि न आवए जीउ। झूठु अलावै कामि न आवै ना पिरु देखै नैणी। अवगुणिआरी कंति विसारी छूटी विधण रैणी। गुर सबदु न मानै फाही फाथी सा धन महलु न पाए। नानक आपे आपु पछाणै गुरमुखि सहजि समाए ॥ ४ ॥ धन सोहागणि नारि जिनि पिरु जाणिआ जीउ। नाम बिना कूड़िआरि कूड़ु कमाणिआ जीउ। हरि भगति सुहावी साचे भावी भाइ भगति प्रभ राती। पिरु रलीआला जोबनि बाला तिसु रावे रंगि राती। गुर सबदि विगासी सहु रावासी फलु पाइआ गुणकारी। नानक साचु मिलै वडिआई पिर घरि सोहै नारी ॥ ५ ॥ ३ ॥

माया-मोह में ठगी हुई जीव-स्त्री ! प्रभु-पति तुम्हारे साथ है, लेकिन इस बात का तुम्हें ज्ञान नहीं। तूने जो कर्म पूर्व जन्मों में किए, उनके परिणामस्वरूप तेरे मस्तक पर लेख ही ऐसा लिखा गया (कि तू अन्तर्मन में अवस्थित प्रभु को नहीं पहचानती)। पूर्व जन्मों में किए कर्मों के अनुसार लिखा लेख मिट नहीं सकता। किसी को यह ज्ञान नहीं हो सकता कि क्या घटित होगा। जो जीव-स्त्री गुणवान नहीं, सदाचारिणी नहीं और प्रभु के प्रेम-रंग में नहीं रँगी, वह अवगुणों के कारण बार-बार दुखी होगी। धन और यौवन आक की छाया के समान हैं, जीव अन्ततः वृद्ध हो जाता

है और उम्र के दिन आखिरकार समाप्त हो जाते हैं। हे नानक! परमात्मा के नाम से अलग होकर अभागिनी जीव-स्त्री परित्यक्ता हो जाती है और मिथ्या मोह में फँसकर प्रभु-पति से बिछुड़ जाती है ॥ १ ॥ हे माया-मोह में डूबी स्त्री! तुमने अपना घर बरबाद कर लिया है। (गुरु के प्रेम में रहकर) अब अग्रसर होओ। सत्यस्वरूप प्रभु का नाम-स्मरण कर तू आत्मिक आनन्द महसूसती हुई परमात्मा का द्वार प्राप्त कर लेगी। जीव-स्त्री तब ही आत्मिक आनन्द महसूस कर सकती है, जब परमात्मा-पति का नाम स्मरण करती है। (इस जगत का क्या अभिमान?) जगत में तो चार दिनों का वास है। नाम-स्मरण द्वारा जीव-स्त्री अपने वास्तविक घर में पहुँचकर सम्मान पा जाती है, सत्यस्वरूप पति परमात्मा को प्राप्त कर लेती है और प्रतिदिन उस प्यारे के साथ लीलामग्न रहती है। ऐ जीवो! सुनो, भक्ति के बिना अन्तरात्मा स्थिर नहीं हो सकती। हे नानक! परमात्मा के सत्य नाम में प्रेम होने से जीव-स्त्री उसी में निमग्न हो जाती है ॥२॥ जब जीव-स्त्री को प्रभु-पति प्यारा लगने लगता है, तब वह प्रभु-पति को भी प्यारी लगने लगती है। प्रभु-प्रियतम के प्रेम-रंग में रँगी हुई वह गुरु के शब्द में प्रवृत्त होकर चिन्तनशील हो जाती है। गुरु के शब्द का विचार करनेवाली वह जीव-स्त्री पति-प्रभु की प्यारी हो जाती है और नम्रतापूर्वक प्रभु की भक्ति करती है। प्रभु-प्रियतम उसके भीतर से माया-मोह हटा देता है और वह उसके नाम-रस में भीगकर उसके मिलाप का आनन्द भोगती है। सत्यस्वरूप प्रभु के साथ उसके नाम-रंग में रँगकर जीव-स्त्री अपने मन पर अंकुश लगाती और सुन्दर जीवन वाली बन जाती है। हे नानक! सत्यस्वरूप प्रभु की स्मृति में लीन सौभाग्यवती जीव-स्त्री प्रभु-पति के साथ प्रीति करती है और पति की प्यारी हो जाती है ॥ ३ ॥ जीव-स्त्री प्रभु-पति के द्वार पर तब ही शोभा पाती है, जब वह प्रभु-पति को पसन्द आ जाती है। झूठे वचनों से (प्रभु-पति को पाना सम्भव नहीं), इसलिए ऐसे कामों से बचना उपयुक्त है। जो जीव-स्त्री मिथ्या वचन बोलती है, वह वचन उसके काम नहीं आता, प्रभु-पति उसकी ओर देखता भी नहीं। उस अवगुणों से परिपूरित जीव-स्त्री को प्रभु-पति त्याग देता है, वह परित्यक्ता हो जाती है और उसकी जिन्दगी की रात्रि दुखों में ही बीतती है। जो जीव-स्त्री गुरु के शब्द को हृदय में नहीं स्वीकारती, वह माया-मोह के बन्धन में बँधी रहती है, वह सच्चा घर-वर नहीं प्राप्त कर सकती। हे नानक! गुरु की शरण लेकर जो जीव-स्त्री अपने आप को पहचानती है, वह आत्मिक स्थिरता में लीन रहती है ॥४॥ वह जीव-स्त्री मुबारिक है, भाग्यशालिनी है, जिसने प्रभु-पति के साथ मेल कर लिया है। लेकिन जिसने उसकी स्मृति विस्मृत कर दी है, वह झूठ की व्यापारिन है, वह झूठ ही अर्जन करती है। जो जीव-स्त्री प्रभु की भक्ति द्वारा अपना जीवन सुन्दर बना लेती है,

वह सत्यस्वरूप प्रभु को प्यारी लगती है, वह प्रभु के प्रेम में, प्रभु की भक्ति में मस्त रहती है। आनन्द-स्रोत और अनन्त यौवन वाला प्रभु-पति उस प्रेम-रंग में रँगी हुई जीव-स्त्री को गले लगा लेता है। गुरु के शब्द के प्रभाव से प्रसन्न हृदय वाली जीव-स्त्री प्रभु-पति के मिलाप का आनन्द महसूसती है, गुरु के शब्द में प्रवृत्त होने का फल उसे मिलता है कि उसके भीतर आत्मिक गुण पैदा हो जाते हैं। हे नानक ! उसे सत्यस्वरूप प्रभु मिल जाता है, उसे आदर मिलता है और वह प्रभु-पति के आँगन में शोभा पाती है ॥ ५ ॥ ३ ॥

धनासरी छंत महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ। सतिगुरु मिलै सुभाइ सहजि गुण गाईऐ जीउ। गुण गाइ विगसै सदा अनदिनु जा आपि साचे भावए। अहंकारु हउमै तजै माइआ सहजि नामि समावए। आपि करता करे सोई आपि देइ त पाईऐ। हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ १ ॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै जीउ। हउ तिसु सेवी दिनु राति मै कदे न वीसरै जीउ। कदे न विसारी अनदिनु सम्हारी जा नामु लई ता जीवा। स्रवणी सुणी त इहु मनु त्रिपतै गुरमुखि अंम्रितु पीवा। नदरि करे ता सतिगुरु मेले अनदिनु बिबेक बुधि बिचरै। अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै ॥ २ ॥ सत संगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ। अनदिनु रहै लिव लाइ त सहजि समावए जीउ। सहजि समावै ता हरि मनि भावै सदा अतीतु बैरागी। हलति पलति सोभा जग अंतरि राम नामि लिव लागी। हरख सोग दुहा ते मुकता जो प्रभु करे सु भावए। सत संगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ ३ ॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुख जमि जोहिआ जीउ। हाइ हाइ करे दिनु राति माइआ दुखि मोहिआ जीउ। माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ मेरी मेरी करत विहावए। जो प्रभु देइ तिसु चेतै नाही अंति गइआ पछुतावए। बिनु नावै को साथि न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ। दूजै भाइ दुखु होइ मनमुखि जमि जोहिआ जीउ ॥ ४ ॥ करि किरपा लेहु मिलाइ

महलु हरि पाइआ जीउ। सदा रहै कर जोड़ि प्रभु मनि भाइआ जीउ। प्रभु मनि भावै ता हुकमि समावै हुकमु मंनि सुखु पाइआ। अनदिनु जपत रहै दिनु राती सहजे नामु धिआइआ। नामो नामु मिली वडिआई नानक नामु मनि भावए। करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पावए जीउ ॥ ५ ॥ १ ॥

हे भाई ! यदि परमात्मा स्वयं कृपा करे तभी उसका नाम स्मरण किया जा सकता है। यदि गुरु मिल जाए तो प्रभु के प्रेम में लीन होकर, आत्मिक रूप से संयमित होकर परमात्मा के गुणों को गाया जा सकता है। परमात्मा के गुण गाकर मनुष्य सदा प्रसन्न रहता है, (लेकिन यह तभी सम्भव है) जब सत्यस्वरूप परमात्मा आप कृपा करे। प्रभु के गुणगान से मनुष्य अहंकार, अहंत्व, माया-मोह त्याग देता है और आत्मिक स्थिरता में, हरि-नाम में लीन हो जाता है। (नाम की देन) वह परमात्मा आप ही देता है, जब वह देन देता है तभी मिलती है। हे भाई ! परमात्मा कृपा करे, तभी उसका नाम स्मरण किया जा सकता है ॥ १ ॥ हे भाई ! पूर्णगुरु के द्वारा मेरे मन में प्रभु के प्रति शाश्वत प्रेम सम्पन्न हो गया है। मैं उस प्रभु को दिन-रात्रि स्मरण करता रहता हूँ, मुझे वह कभी भी विस्मृत नहीं होता। मैं प्रत्येक पल उसे हृदय में स्मरण करता हूँ। उसका नाम जपने से मुझे आत्मिक जीवन प्राप्त होता है। जब मैं अपने कानों से हरि-नाम सुनता हूँ, तब मेरा मन माया की ओर से विमुख हो जाता है। हे भाई ! मैं गुरु की शरण लेकर आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल पीता रहता हूँ। जब प्रभु मनुष्य पर कृपादृष्टि करता है, तब उसे गुरु मिलाता है और प्रतिपल उसके भीतर शुभ-अशुभ की परख कर सकनेवाली बुद्धि काम करती है। पूर्णगुरु की कृपा से मेरे भीतर सच्चा प्रेम उगा है ॥ २ ॥ जिसे सौभाग्यवश सत्संगति प्राप्त हो जाती है, उसे परमात्मा के नाम का आस्वादन होने लगता है। वह प्रतिपल प्रभु की स्मृति में मन लगाए रखता है, आत्मिक स्थिरता में टिका रहता है। जब मनुष्य आत्मिक स्थिरता में लीन हो जाता है, तब वह परमात्मा को प्यारा लगने लगता है; वह माया-मोह से परे उतर जाता है और पूर्णतः निर्लिप्त हो जाता है। लोक, परलोक में सर्वत्र उसकी शोभा होने लगती है, परमात्मा के नाम में उसका ध्यान लगा रहता है। वह मनुष्य ख़ुशी, ग़मी दोनों से ऊपर उठ जाता है और जो कुछ परमात्मा करता है वह उसे भला लगने लगता है। हे भाई ! जब सौभाग्यवश किसी को सत्संगति प्राप्त होती है, तब उसे परमात्मा के नाम का आनन्द आने लगता है ॥ ३ ॥ स्वेच्छाचारी मनुष्य सदा मौत के हाथों में खेलता है, माया-मोह के कारण उसे सदा दुख होता है। वह दिन-रात्रि 'हाय-हाय' करता और माया के दुख में फँसा रहता

है। वह सदा माया के दुख में ग्रसित होकर अहंत्व के कारण क्रोधातुर भी रहता है, उसकी सारी उम्र 'मेरी', 'मेरी' करते हुए गुज़र जाती है। जो परमात्मा उसे सब कुछ दे रहा है, उस परमात्मा को वह कभी स्मरण नहीं करता। अन्त में जब यहाँ से चलता है, तो पश्चात्ताप करता है। हरि-नाम के अतिरिक्त पुत्र-स्त्री आदि कोई भी साथ नहीं जाता, दुनिया की माया उसे छल लेती है। हे भाई! स्वेच्छाचारी (मनमुखी) मनुष्य पर निरन्तर मृत्यु की छाया बनी रहती है और माया-मोह के कारण उसे सदा दुख कचोटता रहता है ॥ ४ ॥ हे हरि। जिस मनुष्य को तुम कृपा करके अपने चरणों में जगह देते हो, उसे तुम्हारी सेवा (करने का मौका) प्राप्त हो जाता है अर्थात् तुम्हारा सामीप्य मिल जाता है। वह जीव हमेशा हाथ जोड़कर सेवा में खड़ा रहता है, उसे मन में प्रभु प्यारा लगता है। जब मनुष्य को भीतर से प्रभु के प्रति लगाव हो जाता है, वह प्रभु की इच्छा में रहने लगता है और हुक्म मानकर आत्मिक आनन्द भोगता है। वह मनुष्य दिन-रात्रि परमात्मा का नाम जपता रहता है और मन में स्थिर होकर हरि-नाम स्मरण करता है। हे नानक! परमात्मा का प्रतिपल नाम-स्मरण ही उसकी शोभा है और प्रभु का नाम उसे मन में प्यारा लगता है। हे हरि! कृपापूर्वक जिसे तुम अपने चरणों में जगह देते हो, वह तुममें ही लीन हो जाता है ॥ ५ ॥ १ ॥

धनासरी महला ५ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ सतिगुर दीन दइआल जिसु संगि हरि गावीऐ जीउ। अंम्रितु हरि का नामु साध संगि रावीऐ जीउ। भजु संगि साधू इकु अराधू जनम मरन दुख नासए। धुरि करमु लिखिआ साचु सिखिआ कटी जम की फासए। भै भरम नाठे छुटी गाठे जम पंथि मूलि न आवीऐ। बिनवंति नानक धारि किरपा सदा हरि गुण गावीऐ ॥ १ ॥ निधरिआ धर एकु नामु निरंजनो जीउ। तू दाता दातारु सरब दुख भंजनो जीउ। दुख हरत करता सुखह सुआमी सरणि साधू आइआ। संसारु सागरु महा बिखड़ा पल एक माहि तराइआ। पूरि रहिआ सरब थाई गुर गिआनु नेत्री अंजनो। बिनवंति नानक सदा सिमरी सरब दुख भै भंजनो ॥ २ ॥ आपि लीए लड़ि लाइ किरपा धारीआ जीउ। मोहि निरगुणु नीचु अनाथु प्रभ अगम अपारीआ जीउ। दइआल सदा क्रिपाल सुआमी नीच थापण

हारिआ। जीअ जंत सभि वसि तेरै सगल तेरी सारिआ। आपि करता आपि भुगता आपि सगल बीचारीआ। बिनवंत नानक गुण गाइ जीवा हरि जपु जपउ बनवारीआ॥ ३॥ तेरा दरसु अपारु नामु अमोलई जीउ। निति जपहि तेरे दास पुरख अतोलई जीउ। संत रसन वूठा आपि तूठा हरि रसहि सेई मातिआ। गुर चरन लागे महा भागे सदा अनदिनु जागिआ। सद सदा सिम्रतब्य सुआमी सासि सासि गुण बोलई। बिनवंति नानक धूरि साधू नामु प्रभू अमोलई॥ ४॥ १॥

हे भाई! वह गुरु दीनों पर दया करनेवाला है, उसी की संगति में परमात्मा की स्तुति की जा सकती है। गुरु की संगति में आत्मिक जीवन के दाता हरि-नाम का स्मरण किया जा सकता है। गुरु की संगति में जाओ, एक प्रभु का स्मरण करो, (इससे) जन्म-मरण का दुख दूर हो जाता है। जिसके मस्तक पर प्रभु-दरबार से प्रभु-कृपा का लेख लिखा है, वह सत्यस्वरूप हरि-नाम के स्मरण की शिक्षा ग्रहण करता है और उसकी मृत्यु की फाँसी कट जाती है। हे भाई! स्मरण के प्रभाव से समस्त भय, भ्रम नष्ट हो जाते हैं, भीतर की गाँठ खुल जाती है, (इसलिए) यम के रास्ते पर बिल्कुल नहीं चलना चाहिए। नानक की प्रार्थना है कि हे प्रभु! हम जीव हमेशा तुम्हारी गुणस्तुति करते रहें॥ १॥ हे प्रभु! तुम माया की कालिख से रहित हो, तुम्हारा नाम ही निराश्रितों का आश्रय है। तुम सब जीवों को देन देनेवाले हो, तुम सबके दुख नष्ट करनेवाले हो। हे दुखनाशक, सबके सर्जक, सुखों के मालिक प्रभु! जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, उसे तुम दुस्तर संसार-सागर से एक क्षण में पार कर देते हो। गुरु का दिया ज्ञान-सुरमा जिस मनुष्य की आँखों में पड़ता है, उसे तुम सर्वत्र व्यापक दिखते हो। (गुरु) नानक की प्रार्थना है कि हे सर्वदुखनाशक! मैं हमेशा तुम्हारा नाम स्मरण करता रहूँ॥ २॥ हे अगम्य तथा अनन्त प्रभु! जिन पर तुम कृपा करते हो उन्हें अपने साथ लगा लेते हो। मैं गुणहीन, नीच और अनाथ हूँ, हे दया के घर, हे नीचों को उच्च बनानेवाले प्रभु! सारे जीव तुम्हारे वश में हैं, सब तुम्हारी देख-रेख में हैं। तुम आप सब जीवों को पैदा करनेवाले हो, तुम सब पदार्थ भोगनेवाले हो, तुम आप सारे जीवों के लिए विचार करनेवाले हो। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! मैं तुम्हारे गुण गाकर आत्मिक जीवन प्राप्त करता रहूँ और सदा तुम्हारे नाम का जाप करता रहूँ॥ ३॥ हे प्रभु! तुम अनन्त हो। तुम्हारा नाम अनमोल है। हे (नाप-तोल से परे) सर्वव्यापक प्रभु! तुम्हारे दास तुम्हारा नाम जपते रहते हैं। तुम

सन्तों पर प्रसन्न होते हो और उनकी जिह्वा पर आ विराजते हो। वे (सन्त) तुम्हारे नाम के आनन्द में मस्त रहते हैं। जो मनुष्य गुरु के चरण स्पर्श करते हैं, वे भाग्यशाली हो जाते हैं और प्रतिपल जाग्रत रहते हैं। नानक प्रार्थना करता है कि हे स्मरणीय प्रभु ! मुझे उस गुरु की चरणधूलि दो, जो तुम्हारा अमूल्य नाम जपता है और हमेशा प्रत्येक श्वास के साथ तुम्हारा गुणगान करता है ॥ ४ ॥ १ ॥

रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सनक सनंद महेस समानां। सेख नागि तेरो मरमु न जानां ॥ १ ॥ संत संगति रामु रिदै बसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हनूमान सरि गरुड़ समानां। सुरपति नरपति नही गुन जानां ॥ २ ॥ चारि बेद अरु सिम्रिति पुरानां। कमलापति कवला नही जानां ॥ ३ ॥ कहि कबीर सो भरमै नाही। पग लगि राम रहै सरनांही ॥ ४ ॥ १ ॥

हे प्रभु ! सनक, सनन्दन और शिव जैसों ने तुम्हारा रहस्य नहीं पाया। शेषनाग भी तुम्हारा भेद न समझ सके ॥ १ ॥ मैं सन्तों की संगति में रहकर परमात्मा का नाम हृदय में धारण कर सका हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हनुमान, गरुड़, देवराज इन्द्र और बड़े-बड़े राजाओं ने भी तुम्हारे गुणों का अन्त नहीं पाया ॥ २ ॥ वेद, स्मृति और पुराण आदि किसी ने तुम्हें न समझा, विष्णु और लक्ष्मी ने तुम्हारा ओर-छोर नहीं पाया ॥ ३ ॥ कबीर का कथन है कि एक वही व्यक्ति भ्रम से बचा रहता है, जो सन्तों के चरण स्पर्श कर प्रभु की शरण में रहता है ॥ ४ ॥ १ ॥

दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै। कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥ १ ॥ सो दिनु आवन लागा। मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है काका ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै। लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥ २ ॥ कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा। केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनां ॥ ३ ॥ २ ॥

दिन से प्रहर और प्रहर से घड़ियाँ बीतती हैं—इस प्रकार उम्र घटती जाती है और शरीर क्षीण होता जाता है। काल रूपी शिकारी

(हिरन आदि का शिकार करनेवालों की तरह) फिरता है, हे भाई ! कहो, अब कौन उपाय किया जाय ? ॥ १ ॥ (अन्त में) एक दिन आ जाता है, जब माँ, बाप, भाई, पुत्र, पत्नी —इनमें से कोई भी उसकी सहायता नहीं कर सकता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब तब शरीर में आत्मा अवस्थित है, पशु रूपी मनुष्य अपने मूल को नहीं समझता, अधिकाधिक जीने की चाह करता है, लेकिन इसे आँखों से नहीं सूझता कि काल से मुक्ति पाना असम्भव है ॥२॥ कबीर का कथन है कि हे भाई ! सुनो, मन के भ्रम दूर कर दो। हे जीव ! (अतिरिक्त लालसाएँ त्यागकर) केवल प्रभु का नाम स्मरण करो और उस एक परमात्मा की शरण लो ॥ ३ ॥ २ ॥

जो जनु भाउ भगति कछु जानै ताकउ अचरजु काहो । जिउ जलु जल महि पैसि न निकसै तिउ ढुरि मिलिओ जुलाहो ॥ १ ॥ हरि के लोगा मै तउ मति का भोरा । जउ तनु कासी तजहि कबीरा रमईऐ कहा निहोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई । भरमि न भूलहु कोई । किआ कासी किआ ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई ॥ २ ॥ ३ ॥

जैसे पानी, पानी में मिलकर अलग सत्ता नहीं रखता, उसी प्रकार कबीर जुलाहा अहंत्व मिटाकर प्रभु में मिल गया है, इसमें कोई विचित्र बात नहीं है। जो भी मनुष्य प्रभु-प्रेम और प्रभु-भक्ति में संलग्न होता है (वह प्रभु से ऐक्यभाव प्राप्त कर लेता है) ॥ १ ॥ हे सन्तो ! मैं पागल ही सही, लेकिन यदि कबीर काशी में मृत्यु प्राप्त करे तो परमात्मा का इसमें क्या उपकार समझा जायगा ? ॥१॥ रहाउ ॥ कबीर का कथन है कि हे लोगो ! सुनो, कोई मनुष्य किसी भ्रम में न पड़ जाए (कि काशी में मुक्ति मिलती है), यदि परमात्मा का नाम हृदय में हो तो काशी क्या और ऊबड़-खाबड़ मगहर क्या (सर्वत्र प्रभु में लीन हुआ जा सकता है) ॥२॥३॥

इंद्र लोक सिव लोकहि जैबो । ओछे तप करि बाहुरि ऐबो ॥ १ ॥ किआ मांगउ किछु थिरु नाही । राम नाम रखु मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोभा राज बिभै बडिआई । अंति न काहू संग सहाई ॥ २ ॥ पुत्र कलत्र लछमी माइआ । इन ते कहु कवनै सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ कहत कबीर अवर नही कामा । हमरै मन धन राम को नामा ॥ ४ ॥ ४ ॥

यदि मनुष्य तप आदि सहज कर्म करके इन्द्रपुरी या शिवपुरी में पहुँच भी जायगा तो भी वहाँ से दोबारा वापस (जन्म लेगा) आएगा ॥ १ ॥

मैं प्रभु से क्या माँगूँ ? (क्योंकि नाम के अतिरिक्त) कोई चीज़ शाश्वत नहीं दिखती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत में प्रसिद्धि, राज्य, ऐश्वर्य, महानता —इनमें से कोई भी अन्तिम समय में साथी नहीं बन सकता ॥ २ ॥ पुत्र, पत्नी, धन-पदार्थ —कहो, इनसे किसी ने कहीं सुख पाया है ? ॥ ३ ॥ कबीर का कथन है कि प्रभु के नाम के अतिरिक्त दूसरे कामकाज किसी लाभ के नहीं हैं, मेरे मन का तो परमात्मा का नाम ही शाश्वत धन प्रतीत होता है ॥ ४ ॥ ४ ॥

राम सिमरि राम सिमरि राम सिमरि भाई । राम नाम सिमरन बिनु बूडते अधिकाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बनिता सुत देह ग्रेह संपति सुखदाई । इन्ह मै कछु नाहि तेरो काल अवध आई ॥ १ ॥ अजामल़ गज गनिका पतित करम कीने । तेऊ उतरि पारि परे राम नाम लीने ॥ २ ॥ सूकर कूकर जोनि भ्रमे तऊ लाज न आई । राम नाम छाडि अंम्रित काहे बिखु खाई ॥ ३ ॥ तजि भरम करम बिधि निखेध राम नामु लेही । गुर प्रसादि जन कबीर रामु करि सनेही ॥ ४ ॥ ५ ॥

प्रभु का स्मरण करो, सदा प्रभु का स्मरण करो । प्रभु का स्मरण किए बिना बहुत से जीव विकारों में रत रहते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पत्नी, पुत्र, देह, धन-दौलत सब सुखदायक हैं, लेकिन जब तुम्हारा मृत्यु रूपी अन्तिम समय आएगा तब इनमें से कोई भी तुम्हारा अपना नहीं रहेगा ॥ १ ॥ अजामिल, गज, गनिका —ये सब आयु भर विकारग्रस्त रहे, लेकिन जब परमात्मा का नाम इन्होंने स्मरण किया तो ये भी पार उतर गए ॥ २ ॥ तू सूअर, कुत्ते आदि जीवों की योनियों में भटकता रहा, लेकिन तुझे लाज न आई । परमात्मा का नाम विस्मृत कर क्यों विष (विकारों का विष) खा रहा है ? ॥ ३ ॥ शास्त्रों के अनुसार किए जानेवाले कौन से कार्य हैं और शास्त्रों में किन कार्यों का निषेध है —यह भ्रम त्यागकर परमात्मा का नाम स्मरण करो । हे दास कबीर ! तू अपने गुरु की कृपा से अपने परमात्मा को ही अपना साथी बना ॥ ४ ॥ ५ ॥

धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए । मारकंडे ते को अधिकाई जिनि त्रिण धरि मूंड बलाए ॥ १ ॥ हमरो करता रामु सनेही । काहे रे नर

गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ।। १ ।। रहाउ ।। मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई । बारह जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन खाई ।। २ ।। सरब सुोइन की लंका होती रावन से अधिकाई । कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि भई पराई ।। ३ ।। दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए । क्रिपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन गाए ।। ४ ।। १ ।।

जिन्होंने गहरी नीवँ खोदकर ऊँचे महल बनाए (उनके महल भी यहीं रह गए, फिर इन लौकिक पदार्थों का अभिमान कैसा ?) । मार्कण्डेय ऋषि से लम्बी उम्र किसकी होगी, (लेकिन) उसने तिनकों की झोंपड़ी बनाकर अपनी उम्र बिताई ।। १ ।। हे मनुष्यो ! क्यों अभिमान करते हो ? यह शरीर नश्वर है, नष्ट हो जायगा । हमारा वास्तविक साथी तो कर्तार है, परमात्मा है ।। १ ।। रहाउ ।। जिन कौरवों के दुर्योधन जैसे (शक्तिसम्पन्न) भाई थे, वे 'हमारी', 'हमारी' कहकर अभिमान में फँसे रहे । अड़तालीस कोस में उनकी सेना का फैलाव था, (लेकिन कुरुक्षेत्र के युद्ध में) गिद्धों ने उनकी मृत देह खाई ।। २ ।। रावण जैसे बलशाली राजा की लंका सोने की थी, उसके द्वार पर हाथी बँधे हुए खड़े रहते थे, लेकिन उसको अन्तिम क्षणों में क्या मिला ? एक पल में सब कुछ पराया हो गया ।।३।। यादवों ने (अभिमानवश) दुर्वासा से मज़ाक़ किया, इसलिए उन्हें दुष्परिणाम भोगना पड़ा (कि तमाम वंश ही समाप्त हो गया) । (लेकिन दूसरी ओर विनम्र) नामदेव पर परमात्मा ने कृपा की, इसीलिए नामदेव अहम् त्यागकर परमात्मा के गुण गाता है ।। ४ ।। १ ।।

दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ही पंचहु का मिट नावउ । सतरि दोइ भरे अंम्रित सरि बिखु कउ मारि कढावउ ।। १ ।। पाछै बहुरि न आवनु पावउ । अंम्रित बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ ।। १ ।। रहाउ ।। बजर कुठारु मोहि है छीनां करि मिनति लगि पावउ । संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डर पावउ ।। २ ।। इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ । माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ ।। ३ ।। इतु करि भगति करहि जो जन तिन भउ सगल चुकाईऐ । कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम हरि पाईऐ ।। ४ ।। २ ।।

मैंने अपनी दसों इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया है, (इसलिए)

पाँचों कामादिक शत्रुओं का अस्तित्व ही मिट गया है। मैंने अपने रोम-रोम को नाम-अमृत के सरोवर में तर कर लिया है और माया के विष का पूर्ण तौर पर नाश कर दिया है ॥ १ ॥ अब मैं पुनःपुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं आऊँगा, क्योंकि मैं एकाग्रचित्त होकर प्रभु की गुणस्तुति की वाणी उच्चरित करता हूँ और अपनी आत्मा को शिक्षा देता रहता हूँ ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु के चरण स्पर्श कर, गुरु से प्रार्थना करके मैंने उससे शब्द रूपी कठोर कुठार ले लिया है (और अब उससे मोह को काट दिया है)। मैं (काल से नहीं बल्कि) भक्तजनों से डरता हूँ और उनका ही सेवक बन गया हूँ ॥ २ ॥ सांसारिक बन्धनों से मेरी मुक्ति तब ही सम्भव है, यदि मैं माया-मोह में ग्रस्त न होऊँ। माया ही जन्म-मरण के चक्र में पड़ने का मूल कारण है, (इसलिए) इसे त्यागकर ही प्रभु का दर्शन किया जा सकता है ॥ ३ ॥ इस तरीके से जो प्रभु की भक्ति करते हैं, उनका हर प्रकार का भय दूर हो जाता है। नामदेव का कथन है कि बाहर भटकने का कोई लाभ नहीं। (ऊपर बताए) संयमों के द्वारा ही प्रभु की प्राप्ति हो सकती है ॥ ४ ॥ २ ॥

मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला। जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ १ ॥ तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला। जिउ कोकिल कउ अंबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ २ ॥ चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मानसरोवर हंसुला। जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ ३ ॥ बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चात्रिक मुख जैसे जलधरा। मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ ४ ॥ साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला। सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥ ५ ॥ ३ ॥

जैसे मारवाड़ (जैसे शुष्क) प्रदेश में पानी प्यारा लगता है, जैसे ऊँट को लता-पौदे स्वादिष्ट लगते हैं, जैसे हरिण को रात्रि के समय ध्वनि प्यारी लगती है, वैसे ही मेरे भीतर राम के प्रति आकर्षण है ॥ १ ॥ हे मेरे सुन्दर राम! तुम्हारा नाम, रूप और रंग बहुत सुन्दर है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे पृथ्वी को मेंह प्यारा लगता है, जैसे भँवरे को पुष्प की सुगन्धि प्यारी लगती है, जैसे कोयल को आम प्यारा लगता है, वैसे ही मेरे मन को राम प्यारा लगता है ॥ २ ॥ जैसे चकवी को सूर्य प्यारा लगता

है, जैसे हंस को मानसरोवर प्यारा लगता है, जैसे यौवनसम्पन्ना नारी को
पति प्यारा लगता है वैसे ही मेरे मन को सुन्दर राम प्यारा लगता है ॥३॥
जैसे बालक को दूध प्यारा लगता है, जैसे पपीहे के मुँह को स्वाति नक्षत्र
की वर्षा प्यारी लगती है, मछली को जैसे पानी प्यारा लगता है, उसी
प्रकार मेरे मन को सुन्दर राम प्यारा लगता है ॥ ४ ॥ साधक, योगी
और मुनि (सुन्दर राम का दर्शन करना) चाहते हैं, पर किसी विरले को
उस प्रभु के दर्शन होते हैं; जैसे समस्त भुवनों के (जीवों को) तुम्हारा
नाम प्यारा है, उसी प्रकार मुझ नामदेव के मन में तुम बिट्ठल (परमात्मा)
प्यारे हो ॥ ५ ॥ ३ ॥

**पहिल पुरीए पुंडरक वना। ताचे हंसा सगले जनां।
क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥ १ ॥ पहिल
पुरसाबिरा। अथोन पुरसादमरा। असगा अस उसगा। हरि
का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाचंती
गोपी जंना। नईआ ते बैरे कंना। तरकु न चा। भ्रमीआ
चा। केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ ॥ २ ॥ पिंधी
उभ कले संसारा। भ्रमि भ्रमि आए तुमचे दुआरा। तू कुनु
रे। मै जी। नामा। हो जी। आला ते निवारणा जम
कारणा ॥ ३ ॥ ४ ॥**

आदि जगत कमल-पुष्पों का खेत है, समस्त जीवजन्तु उस खेत के हंस
हैं। परमात्मा की यह रचना (सृष्टि) घिर रही है। यह प्रभु की माया
की प्रेरणा से उद्भूत समझो ॥१॥ सर्वप्रथम अकालपुरुष प्रकट हुआ, तदन्तर
अकालपुरुष से माया उपजी। इस माया और अकालपुरुष का सम्मिलन
हुआ, जिससे यह संसार प्रभु का सुन्दर बाग़ बन गया है। जो ऐसे थिरक
रहा है, जैसे कुएँ की रहटों में पानी थिरकता है अर्थात् माया के प्रभाववश
जीव उसी प्रकार भाग-दौड़ कर रहे हैं, जैसे रहटों में पानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
पुरुष-स्त्री सब नृत्यमग्न हैं, पर इनमें परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं
है। इस विषय में शंका न करो, तमाम भ्रम दूर कर दो; प्रत्येक स्त्री-
पुरुष में परमात्मा के वचन ही बोले जा रहे हैं ॥ २ ॥ हे भाई! जीव
रूपी रहट संसार-समुद्र में डुबकियाँ ले रही हैं। हे प्रभु! भटक-भटककर
मैं तुम्हारे द्वार पर आ गिरा हूँ। (यदि मुझसे पूछा जाय कि) मैं कौन
हूँ? (तो मैं बताऊँगा कि) मैं नामदेव हूँ। (कृपा करके) मुझे सांसारिक
जंजाल से (जो कि यमों के भय का कारण है) बचाओ ॥ ३ ॥ ४ ॥

पतित पावन माधउ बिरदु तेरा। धंनि ते वै मुनि जन

जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा ॥ १ ॥ मेरै माथै लागीले धूरि गोबिंद चरनन की । सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी । चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥ २ ॥ ५ ॥

हे माधव ! विकारग्रस्त व्यक्तियों को पवित्र करना तुम्हारा विरद है। हे भाई ! वे मुनि लोग भाग्यशाली हैं, जिन्होंने प्यारे प्रभु को स्मरण किया है ॥ १ ॥ (प्रभु-कृपा से) मुझे भी प्रभु की चरणधूलि मस्तक पर लगाने का सौभाग्य मिला है । वह चरणधूलि देवता और मुनियों को भी प्राप्त न हो सकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे माधव ! तुम दीनदयालु हो, तुम अहंकार नष्द करनेवाले हो । मैं नामदेव तुम्हारा शरणागत हूँ और तुम पर बलिहारी हूँ ॥ २ ॥ ५ ॥

धनासरी भगत रविदास जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हमसरि दीनु दइआलु न तुमसरि अब पतीआरु किआ कीजै । बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥ १ ॥ हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने । कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥ बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे । कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥ २ ॥ १ ॥

हे प्रभु ! मुझ जैसा कोई तुच्छ नहीं और तुम जैसा कोई दूसरा दयालु नहीं, (लेकिन) तुच्छता को लेकर अब मैं पश्चाताप नहीं करूँगा । मुझ दास को यह प्रतीति दो कि मेरा मन तुम्हारी गुणस्तुति की बातों में रम जाय ॥ १ ॥ हे मेरे प्यारे राम ! मैं तुम पर बलिहारी हूँ । तुम किस कारण मुझसे नहीं बोलते ? ॥ रहाउ ॥ रविदास का कथन है कि हे माधव ! कई जन्मों से तुमसे बिछुड़ा हुआ हूँ, (कृपा करो जिससे) यह जन्म तुम्हारी स्मृति में बीते, तुम्हारा दर्शन किए काफ़ी समय हो गया है । (तुम्हारे दर्शनों की) आशा में ही मैं जीवित हूँ ॥ २ ॥ १ ॥

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ । मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥ १ ॥ मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै । मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगति

बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी। कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥ २ ॥ २ ॥

(मेरी कामना है कि) मैं हृदय से प्रभु का स्मरण करता रहूँ, आँखों से उसे देखता रहूँ, कानों में उसकी वाणी का सुहावना रस आपूरित रखूँ, मन को उसका भँवरा बनाए रखूँ, उसके (चरण) हृदय में स्मरण करता रहूँ और जिह्वा द्वारा उस प्रभु का आत्मिक जीवन देनेवाला नाम उच्चरित करता रहूँ ॥ १ ॥ गोविन्द प्रभु के प्रति मेरा प्रेम कम न हो। मैंने तो बड़े महँगे मूल्य पर इसे ख़रीदा है। अपने प्राण देकर इस प्रभु-प्रेम का व्यापार किया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यह प्रभु-प्रीति सत्संगति के बिना उत्पन्न नहीं हो सकती और इस प्रीति के बिना तुम्हारी भक्ति नहीं हो सकती। रविदास प्रभु के समक्ष प्रार्थना करता है कि हे राजन् राम ! मेरी लाज बचाइए ॥ २ ॥ २ ॥

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे। हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे। नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥ १ ॥ नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे। नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥ २ ॥ नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे। तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥ ३ ॥ दसअठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे। कहै रविदासु नामु तेरो आरती सतिनामु है हरि भोग तुहारे ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे प्रभु ! मेरे लिए तुम्हारा नाम आरती है और (यही नाम) तीर्थ-स्नान है। परमात्मा के नाम-स्मरण के बिना सब आडम्बर मिथ्या हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हारा नाम मेरे लिए आसन है, तुम्हारा नाम ही मेरे लिए सिल है, (मुझे केसर घोलकर मूर्ति पर छिड़कने की आवश्यकता नहीं क्योंकि) मेरे लिए तुम्हारा नाम ही केसर है। हे मुरारी ! तुम्हारा नाम ही चन्दन है और वही पानी है, इसलिए नाम-चन्दन को नाम-पानी से घिसकर (तुम्हारे नाम का स्मरण रूपी चन्दन ही) मैं तुम्हारे ऊपर लगाता हूँ ॥ १ ॥ हे प्रभु ! तुम्हारा नाम दीपक है, नाम ही बत्ती है और नाम ही तेल है, जो मैंने (नाम रूपी दीपक में) डाला है। मैंने तुम्हारे नाम की ज्योति को जलाया है, जिससे समस्त भुवनों में प्रकाश हो गया

है ॥ २ ॥ तुम्हारा नाम मैंने धागा बनाया है, नाम को ही फूलों की माला बनाया है (क्योंकि) तुम्हारे नाम की माला के अतिरिक्त वनस्पति की मालाएँ जूठी हैं। तुम्हारे द्वारा उत्पादित प्रकृति में से तुम्हारे समक्ष क्या रखूँ ? मैं तुम्हारा नाम रूपी चँवर ही तुम्हारे ऊपर झुलाता हूँ ॥३॥ हे प्रभु ! अड़सठ तीर्थों एवं सारे संसार में तुम्हारे नाम का ही बरतना (व्यवहार सच्चा) है। रविदास का कथन है कि हे हरि ! तुम्हारा नाम ही आरती है और सत्यनाम ही तुम्हारा भोग है ॥ ४ ॥ ३ ॥

धनासरी बाणी भगतां की त्रिलोचन

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ नाराइण निंदसि काइ भूली गवारी। दुक्रितु सुक्रितु थारो करमु री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे। कुलजन मधे मिलियो सारगपान रे। करम करि कलंकु मफीटसि री ॥ १ ॥ बिस्व का दीपकु स्वामी ताचे रे सुआरथी पंखीराइ गरुड़ ताचे बाधवा। करम करि अरुण पिंगुला री ॥ २ ॥ अनिक पातिक हरता त्रिभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री। करम करि कपालु मफीटसि री ॥ ३ ॥ अंम्रित ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि सुनागर नदी चे नाथं। करम करि खारु मफीटसि री ॥ ४ ॥ दाधीले लंकागड़ु उपाड़ीले रावण बणु सलि बिसलि आणि तोखीले हरी। करम करि कछउटी मफीटसि री ॥ ५ ॥ पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि ताचे मोहि जापीअले राम चे नामं। बदति त्रिलोचन राम जी ॥ ६ ॥ १ ॥

हे विस्मृतिशील मूर्ख आत्मा ! तुम परमात्मा को क्यों दोष देती हो ? समस्त पाप-पुण्य तुम्हारा अपना किया हुआ कर्म-फल है ॥१॥ रहाउ॥ हे मेरी आत्मा ! अपने कृत कर्मों के कारण चन्द्रमा का धब्बा न हट सका, जब कि वह शिवजी के मस्तक पर विद्यमान है, नित्य गंगा में स्नान करता है और उसी के वंश में विष्णु ने (कृष्ण-रूप धारणकर) जन्म लिया ॥ १ ॥ अपने कर्मों के कारण अरुण अपाहिज ही रहा, जब कि समस्त जगत को प्रकाशमान करनेवाला सूर्य उसका स्वामी है। वह सूर्य का रथवाहक है और पक्षियों का राजा गरुड़ उसका सम्बन्धी है ॥२॥ ब्रह्महत्या के कुकृत्य अनुसार शिव के हाथ से खोपड़ी (ब्रह्मा का सिर) न उतर सकी, जब कि शिव समस्त जगत का स्वामी माना जाता है। वह दूसरे जीवों के पापों

का नाशक है, लेकिन हरेक तीर्थ पर भटकते फिरने से भी उसकी मुक्ति नहीं हुई थी (जब तक कि वह कपाल-मोचन नहीं आया) ।। ३ ।। अपने कृत कर्मों के कारण समुद्र का खारापन नहीं हट सका, जब कि वह सब नदियों का स्वामी है और उसमें से अमृत, चन्द्रमा, कामधेनु, लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, सप्तमुँहा घोड़ा, धन्वन्तरि वैद्य आदि (रत्न) निकले थे ।। ४ ।। जब कि (हनुमान ने) रामचन्द्रजी के लिए लंका का किला जलाया, रावण का बाग़ भी उजाड़ा, चोट दूर करनेवाली बूटी लाकर रामचन्द्रजी को प्रसन्न भी किया, फिर भी कर्मों के कारण उस पर (हनुमान पर) लँगोटी का अभिशाप नहीं टल सका ।। ५ ।। हे मेरी आत्मा ! पूर्वकृत कोई भी कर्म मिटता नहीं है, इसलिए मैं तो परमात्मा का नाम ही स्मरण करता हूँ। त्रिलोचन का कथन है कि मैं तो 'राम-राम' ही जपता हूँ अर्थात् परमात्मा का नाम-स्मरण कर जीवन को सार्थक बनाता हूँ ।। ६ ।। १ ।।

।। स्री सैणु ।। धूप दीप घ्रित साजि आरती । वारने जाउ कमलापती ।। १ ।। मंगला हरि मंगला । नित मंगलु राजा राम राइ को ।। १ ।। रहाउ ।। ऊतमु दीअरा निरमल बाती । तुंही निरंजनु कमलापाती ।। २ ।। रामा भगति रामानंदु जानै । पूरन परमानंदु बखानै ।। ३ ।। मदन मूरति भै तारि गोबिंदे । सैनु भणै भजु परमानंदे ।। ४ ।। २ ।।

हे मायापति प्रभु ! मैं तुम पर बलिहारी हूँ। (यही बलिहारी होना) धूप, दीपक, घी, सामग्री एकत्रित करके तुम्हारी आरती करने के तुल्य है ।। १ ।। हे राजन् राम ! तुम्हारी कृपा से हमेशा आनन्दमंगल हो रहा है ।। १ ।। रहाउ ।। हे कमलापति ! तुम निरंजन ही मेरे लिए सुन्दर दीपक और साफ़सुथरी बत्ती हो ।। २ ।। जो मनुष्य सर्वव्यापक परमानन्दरूप प्रभु के गुण गाता है, वह प्रभु की भक्ति के प्रभाव से उसके मिलाप का आनन्द भोगता है ।। ३ ।। सैन का कथन है कि उस परमानन्द परमात्मा का स्मरण करो, जो सुन्दर स्वरूप वाला है, जो सांसारिक भयों से पार उतारनेवाला है और जो सृष्टि की सुधि लेनेवाला है ।। ४ ।। २ ।।

।। पीपा ।। कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती । काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ।। १ ।। काइआ बहु खंड खोजते नवनिधि पाई । ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई ।। १ ।। रहाउ ।। जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै । पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ।। २ ।। ३ ।।

(शरीर के भीतर प्रभु हैं) अतः शरीर की खोज ही मेरा देवता है, शरीर ही मेरा मन्दिर है, शरीर ही मुझ जंगम तथा यात्री के लिए तीर्थ-यात्रा है, शरीर की खोज ही भीतर अवस्थित देवता के लिए धूप, दीप और अर्चन है। इसी की खोज करके, मैं मानो पत्र-पुष्प भेंट करके अपने इष्टदेव की पूजा कर रहा हूँ ॥ १ ॥ देश-देशान्तरों को खोज-खोजकर अपने शरीर के भीतर ही मैंने प्रभु के नाम रूपी निधियाँ प्राप्त कर ली हैं। अब परमात्मा की स्मृति का ही प्रभाव है कि मेरे लिए न कुछ जन्मता है और न कुछ मरता है अर्थात् मेरा आवागमन का चक्र मिट गया है ॥१॥रहाउ॥ पीपा प्रार्थना करता है कि जो सृष्टि का सृजनहार परमात्मा समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, वही मनुष्य-शरीर में है। जो मनुष्य भीतर खोज करता है, वह उसे प्राप्त कर लेता है। यदि सतिगुरु मिल जाए तो अन्दर ही दर्शन करा देता है ॥ २ ॥ ३ ॥

॥ धंना ॥ गोपाल तेरा आरता। जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दालि सीधा मागउ घीउ। हमरा खुसी करै नित जीउ। पन्हीआ छादनु नीका। अनाजु मगउ सत सी का ॥ १ ॥ गऊ भैस मगउ लावेरी। इक ताजनि तुरी चंगेरी। घर की गीहनि चंगी। जनु धंना लेवै मंगी ॥ २ ॥ ४ ॥

हे पृथ्वी के पालक प्रभु! मैं तुम्हारे द्वार का भिखारी हूँ। जो-जो मनुष्य तुम्हारी भक्ति करते हैं, तुम उनके कार्य पूर्ण करते हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैं तुम्हारे द्वार से दाल, आटा और घी माँगता हूँ, जो मेरी आत्मा को नित्य तृप्त रखता है। जूती और सुन्दर कपड़े भी माँगता हूँ और सात बार जोतकर बोया हुआ अन्न भी माँगता हूँ ॥१॥ हे गोपाल! मैं गाय, भैंस (दुधारू) माँगता हूँ और एक सुन्दर अरबी घोड़ी भी माँगता हूँ। तुम्हारा दास धन्ना तुमसे सुघड़ (गुणसम्पन्न) स्त्री भी माँगता है ॥ २ ॥ ४ ॥

जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा। जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ

रिनु लाथा ।। १ ।। मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा । गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ बिनु नावै जीवनु बिरथा ।। रहाउ ।। बिनु गुर मूड़ भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा । तिन साधू चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ।। २ ।। जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा । मोकउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा ।। ३ ।। हम अंधुले गिआन हीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा । हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा ।। ४ ।। १ ।।

जब गुरु ने मेरे सिर पर अपना हाथ रखा अर्थात् मुझे आश्वासन दिया तो मेरे हृदय में परमात्मा का नाम रूपी रत्न आ बसा । जिस मनुष्य को गुरु ने प्रभु का नाम दिया, उसके अनेक जन्मों के दुख दूर हो गए । उसके सिर से पापों का क़र्ज़ा उतर गया ।। १ ।। हे मेरे मन ! सदा परमात्मा का नाम स्मरण किया कर । प्रभु सारे पदार्थ देनेवाला है । (इसलिए प्रभु-प्राप्ति के लिए गुरु की शरण ले क्योंकि) पूर्णगुरु ने ही परमात्मा का नाम हृदय में दृढ़ किया है (नहीं तो) नाम के बिना मनुष्य की ज़िन्दगी व्यर्थ बीत जाती है ।। रहाउ ।। हे भाई ! जो मनुष्य स्वेच्छाचरण करते हैं वे गुरु के बिना मूर्ख बने रहते हैं, सदा माया-मोह में फँसे रहते हैं । उन्होंने कभी भी गुरु का आसरा नहीं लिया और उनका समस्त जीवन व्यर्थ चला जाता है ।। २ ।। जो मनुष्य गुरु के चरणों की ओट लेते हैं, वे स्वामी को पा लेते हैं और उनकी ज़िन्दगी सफल हो जाती है । हे हरि, जगत के स्वामी ! मुझ पर कृपा करो, मुझे अपने दासों का दास बना लो ।। ३ ।। हे गुरु ! हम जीव माया में अन्धे हो रहे हैं, हम आत्मिक जीवन से रहित हैं, हमें सही जीवनयुक्ति की समझ नहीं है, हम तुम्हारे बतलाए हुए जीवन-मार्ग पर चल नहीं सकते । दास नानक का कथन है कि हे गुरु ! हम अन्धों को अपना आश्रय दो, ताकि तुम्हारा आश्रय लेकर तुम्हारे द्वारा बतलाए मार्ग पर चल सकें ।। ४ ।। १ ।।

।। जैतसरी महला ४ ।। हीरा लालु अमोलकु है भारी बिनु गाहक मीका काखा । रतन गाहकु गुरु साधू देखिओ तब रतनु बिकानो लाखा ।। १ ।। मेरै मनि गुपत हीरु हरि राखा । दीन दइआलि मिलाइओ गुरु साधू गुरि मिलिऐ हीरु पराखा ।। रहाउ ।। मनमुख कोठी अगिआनु अंधेरा तिन घरि रतनु न लाखा । ते ऊझड़ि भरमि मुए गावारी माइआ भुअंग

बिखु चाखा ॥ २ ॥ हरि हरि साध मेलहु जन नीके हरि साधू सरणि हम राखा । हरि अंगीकारु करहु प्रभ सुआमी हम परे भागि तुम पाखा ॥ ३ ॥ जिहवा किआ गुण आखि वखाणह तुम वड अगम वड पुरखा । जन नानक हरि किरपा धारी पाखाणु डुबत हरि राखा ॥ ४ ॥ २ ॥

हे भाई ! प्रभु का नाम अत्यन्त मूल्यवान हीरा है, लेकिन ग्राहक के बिना यह हीरा तिनके के तुल्य है । जब इस रत्न का ग्राहक गुरु मिल गया, तभी यह रत्न लाखों रुपये में बिकने लगा ॥ १ ॥ मेरे मन में परमात्मा ने अपना नाम रूपी हीरा छिपाकर रखा था । दीनदयालु उस प्रभु ने मुझे गुरु मिला दिया और उस गुरु के माध्यम से मैंने वह हीरा परख लिया ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! स्वेच्छाचारी मनुष्यों के हृदय में आत्मिक जीवन के प्रति अज्ञानता का अँधेरा बना रहता है । इसलिए वे अपने मन में अवस्थित नाम-रत्न को नहीं देख पाते । वे मनुष्य माया रूपी सर्पिणी का विष भक्षण करते रहते हैं, इसलिए वे मूर्ख दुबिधा के कारण कुमार्गगामी होकर आत्मिक रूप से मृत रहते हैं ॥ २ ॥ हे हरि ! मुझे सन्तजनों से मिलाओ और गुरु की शरण में रखो । हे प्रभु ! मेरी मदद करो । मैं समस्त आश्रयों को छोड़कर तुम्हारा शरणागत हूँ ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! तुम महानपुरुष हो, अगम्य हो । हम अपनी जिह्वा से तुम्हारे कौन-कौन से गुण गा सकते हैं ? दास नानक का कथन है कि जिस मनुष्य पर प्रभु ने कृपा की, उसे (पत्थर को) उसने संसार-सागर में डूबते हुए बचा लिया ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ जैतसरी म० ४ ॥ हम बारिक कछूअ न जानह गति मिति तेरे मूरख मुगध इआना । हरि किरपा धारि दीजै मति ऊतम करि लीजै मुगधु सिआना ॥ १ ॥ मेरा मनु आलसीआ उघलाना । हरि हरि आनि मिलाइओ गुरु साधू मिलि साधू कपट खुलाना ॥ रहाउ ॥ गुर खिनु खिनु प्रीति लगावहु मेरै हीअरै मेरे प्रीतम नामु पराना । बिनु नावै मरि जाईऐ मेरे ठाकुर जिउ अमली अमलि लुभाना ॥ २ ॥ जिन मनि प्रीति लगी हरि केरी तिन धुरि भाग पुराना । तिन हम चरण सरेवह खिनु खिनु जिन हरि मीठ लगाना ॥ ३ ॥ हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि जनु बिछुरिआ चिरी मिलाना । धनु धनु सतिगुरु जिनि नामु द्रिड़ाइआ जनु नानकु तिसु कुरबाना ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे प्रभु ! हम तुम्हारे मूर्ख बच्चे हैं। हम नहीं जान सकते कि तुम कैसे हो और कितने बड़े हो ? हे प्रभु ! कृपा करके मुझे सुबुद्धि दो, मुझ मूर्ख को बुद्धिमान बना लो ॥ १ ॥ हे भाई ! मेरा सुस्त मन सो गया था (माया की निद्रा में सुप्त था), (लेकिन) प्रभु ने गुरु से मेरी भेंट करा दी जिससे मेरे मन के किवाड़ खुल गए हैं (मन में जागृति आई है) ॥ रहाउ ॥ हे गुरु ! मेरे हृदय में प्रभु के प्रति अनवरत रहनेवाली प्रीति उपजाओ, (ताकि) मेरे प्रियतम-प्रभु का नाम मेरे लिए प्राणसमान बन जाए। हे प्रभु ! जैसे नशा करनेवाला व्यक्ति नशे में प्रसन्न रहता है (और नशे के बिना व्याकुल हो उठता है वैसे ही) तुम्हारे नाम के बिना मेरी आत्मा व्याकुल हो जाती है ॥ २ ॥ जिन मनुष्यों के भीतर प्रभु की प्रीति उद्भूत हो जाती है, उसके लिए प्रभु के दरबार से प्राप्त भाग्य का उदय हो जाता है। हे भाई ! जिन मनुष्यों को परमात्मा से प्रेम है, हम प्रतिपल उनके चरणों के सेवक हैं ॥३॥ मेरे मालिक-प्रभु ने जिस पर कृपादृष्टि की, उस चिरकाल से बिछुड़े हुए को उसने अपने साथ मिला लिया। गुरु धन्य है, जिसने उसके हृदय में परमात्मा का नाम दृढ़ कर दिया। दास नानक उस गुरु पर बलिहारी जाता है ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ जैतसरी महला ४ ॥ सतिगुरु साजनु पुरखु वड पाइआ हरि रसकि रसकि फल लागिबा। माइआ भुइअंग ग्रसिओ है प्राणी गुरबचनी बिसु हरि काढिबा ॥ १ ॥ मेरा मनु राम नाम रसि लागिबा। हरि कीए पतित पवित्र मिलि साध गुर हरि नामै हरि रसु चाखिबा ॥ रहाउ ॥ धनु धनु वड भाग मिलिओ गुरु साधू मिलि साधू लिव उनमनि लागिबा। त्रिसना अगनि बुझी सांति पाई हरि निरमल निरमल गुन गाइबा ॥ २ ॥ तिन के भाग खीन धुरि पाए जिन सतिगुर दरसु न पाइबा। ते दूजै भाइ पवहि ग्रभ जोनी सभु बिरथा जनमु तिन जाइबा ॥ ३ ॥ हरि देहु बिमल मति गुर साध पग सेवह हम हरि मीठ लगाइबा। जनु नानकु रेण साध पग मागै हरि होइ दइआलु दिवाइबा ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे भाई ! गुरु सज्जन एवं महापुरुष है, जिसे वह मिल जाता है, वह मनुष्य अत्यन्त प्रेम से परमात्मा की गुणस्तुति के फल खाने लगता है। हे भाई ! मनुष्य को माया रूपी सर्पिणी ग्रसे हुए है, लेकिन गुरु के वचनों पर चलने से परमात्मा उसके भीतर से वह जहर निकाल देता है ॥ १ ॥ (अब गुरु-कृपा से) मेरा हृदय परमात्मा के नामास्वादन में तल्लीन हो गया

है। साधु-रूप गुरु को मिलकर जो मनुष्य परमात्मा के नाम में प्रवृत्त होते हैं, परमात्मा के नाम-रस का आस्वादन करते हैं, उन विकारी जीवों को भी परमात्मा पवित्र जीवन वाले बना देता है ॥ रहाउ ॥ हे भाई! वह मनुष्य प्रशंसनीय एवं सौभाग्यशाली हो जाता है, जिसे गुरु मिल जाता है। गुरु को मिलकर उसकी सुरति उच्च आत्मिक अवस्था में स्थिर हो जाती है। वह परमात्मा के पवित्र करनेवाले गुण गाता है, (उसकी) तृष्णा-अग्नि बुझ जाती है और उसे आत्मिक शान्ति प्राप्त हो जाती है ॥ २ ॥ हे भाई! जिन मनुष्यों ने कभी गुरु का साक्षात्कार नहीं किया, उनके भाग्य क्षीण हैं, प्रभु के दरबार से ही उन्हें यह भाग्यहीनता प्राप्त हुई है। माया-मोह के कारण वे जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं और उनकी समस्त ज़िन्दगी व्यर्थ बीत जाती है ॥ ३ ॥ हे प्रभु! हमें सुबुद्धि दीजिए, हम गुरु के चरणों में अनुरक्ति रखें और तुम हमें प्यारे लगते रहो। दास नानक तो प्रभु से गुरु के चरणों की धूलि माँगता है। जिस पर प्रभु दयालु होता है, उसे गुरु के चरणों में जगह देता है ॥ ४ ॥४॥

॥ जैतसरी महला ४ ॥ जिन हरि हिरदै नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बांझा। तिन सुंञी देह फिरहि बिनु नावै ओइ खपि खपि मुए करांझा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा। हरि हरि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीओ मनु समझा ॥ रहाउ ॥ हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतमु हरि पाईऐ सतिगुर माझा। हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि गुपतु नामु परगाझा ॥ २ ॥ दरसनु साध मिलिओ वडभागी सभि किलबिख गए गवाझा। सतिगुरु साहु पाइआ वड दाणा हरि कीए बहु गुण साझा ॥ ३ ॥ जिन कउ क्रिपा करी जगजीवनि हरि उरिधारिओ मन माझा। धरमराइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे भाई! जिन मनुष्यों के हृदय में परमात्मा का नाम स्थिर नहीं रह पाता, अच्छा होता यदि परमात्मा उनकी माँ को बाँझ ही रखता (अर्थात् ऐसे लोगों का जन्म व्यर्थ है, जो नाम-स्मरण नहीं करते)। उनका शरीर हरि-नाम से सूना रहता है, वे नाम से ख़ाली रहकर ही भागे फिरते हैं और वे कुढ़-कुढ़कर, दुखी होकर मर जाते हैं ॥ १ ॥ हे मन! उस परमात्मा का नाम जपा करो, जो तुम्हारे भीतर अवस्थित है। कृपालु प्रभु ने जिस पर कृपा की, गुरु ने उसे आत्मिक जीवन की समझ दी और उसका मन इसमें लीन हो गया ॥ रहाउ ॥ हे भाई! जगत में परमात्मा

की गुणस्तुति ही सर्वोच्च स्थिति है, जो गुरु द्वारा मिलती है। मैं अपने गुरु पर बलिहारी हूँ, जिसने मेरे अन्तर्निहित प्रभु का नाम प्रकट कर दिया ॥ २ ॥ हे भाई ! जिस मनुष्य को सौभाग्यवश गुरु का दर्शन होता है, उसके सारे पाप मिट जाते हैं। जिसे अत्यन्त समझदार और शाह गुरु मिल गया, उसने गुरु से परमात्मा के गुणों का परिचय पा लिया ॥ ३ ॥ हे भाई ! जगत के जीवन प्रभु ने जिन मनुष्यों पर कृपा की, उन्होंने अपने तन, मन में परमात्मा का नाम बसा लिया। नानक का कथन है कि धर्मराज के द्वार पर उन मनुष्यों के कृत कर्मों के (लेखे के सारे) काग़ज़ फाड़ दिए गए और उन दासों का लेखा निबट गया है ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ जैतसरी महला ४ ॥ सत संगति साध पाई वडभागी मनु चलतौ भइओ अरूड़ा। अनहत धुनि वाजहि नित वाजे हरि अंम्रित धार रसि लीड़ा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि रूड़ा। मेरै मनि तनि प्रीति लगाई सतिगुरि हरि मिलिओ लाइ झपीड़ा ॥ रहाउ ॥ साकत बंध भए है माइआ बिखु संचहि लाइ जकीड़ा। हरि कै अरथि खरचि नह साकहि जमकालु सहहि सिरि पीड़ा ॥ २ ॥ जिन हरि अरथि सरीरु लगाइआ गुर साधू बहु सरधा लाइ मुखि धूड़ा। हलति पलति हरि सोभा पावहि हरिरंगु लगा मनि गूड़ा ॥ ३ ॥ हरि हरि मेलि मेलि जन साधू हम साध जना का कीड़ा। जन नानक प्रीति लगी पग साध गुर मिलि साधू पाखाणु हरिओ मनु मूड़ा ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे भाई ! जिस मनुष्य ने सौभाग्यवश गुरु की सत्संगति प्राप्त कर ली, उसका भटकता हुआ मन स्थिर हो गया। उसके भीतर निरन्तर अनाहत नाद होता रहता है। आत्मिक जीवन देनेवाले नाम-जल की धारा प्रेमपूर्वक पीकर वह तृप्त हो जाता है ॥ १ ॥ हे मेरे मन ! सुन्दर परमात्मा का नाम जपा कर। गुरु ने मेरे मन, तन में परमात्मा का प्रेम पैदा कर दिया है, अब परमात्मा ने मुझे आलिंगनबद्ध कर लिया है (गले से लगा लिया है) ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! परमात्मा से वियुक्त मनुष्य माया-मोह में बँधे रहते हैं, वे ज़ोर लगाकर ज़हर ही एकत्रित करते रहते हैं। वे मनुष्य उस माया को परमात्मा के मार्ग पर ख़र्च नहीं कर सकते, इसलिए मृत्यु-सम दुख सिर पर ढोते हैं ॥ २ ॥ जिन मनुष्यों ने श्रद्धापूर्वक गुरु के चरणों की धूलि अपने मस्तक पर लगाकर अपने शरीर को परमात्मा के प्रति अर्पित कर दिया, वे मनुष्य लोक-परलोक में शोभा पाते हैं। उनके मन में प्रभु के प्रति गहन प्रेम सम्पन्न हो जाता है ॥ ३ ॥ हे हरि, प्रभु !

मुझे गुरु मिला। मैं गुरु के सेवकों का तुच्छ दास हूँ। दास नानक का कथन है कि जिस मनुष्य के भीतर गुरु के चरणों की लग्न होती है, गुरु को मिलकर उसका अज्ञानी मन प्रसन्न हो जाता है ॥ ४ ॥ ६ ॥

जैतसरी महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ हरि हरि सिमरहु अगम अपारा। जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा। हरि हरि सतिगुरु पुरखु मिलावहु गुरि मिलिऐ सुखु होई राम ॥ १ ॥ हरि गुण गावहु मीत हमारे। हरि हरि नामु रखहु उरधारे। हरि हरि अंम्रित बचन सुणावहु गुर मिलिऐ परगटु होई राम ॥ २ ॥ मधुसूदन हरि माधो प्राना। मेरै मनि तनि अंम्रित मीठ लगाना। हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु सदा सुखदाता। हरि कै रंगि मेरा मनु राता। हरि हरि महा पुरखु गुरु मेलहु गुर नानक नामि सुखु होई राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥

हे भाई ! उस अगम्य और अनन्त परमात्मा का नाम-स्मरण किया करो, जिसे स्मरण करने से हम जीवों का हर एक दुख दूर हो सकता है। हे हरि, प्रभु ! हमें गुरु मिला दीजिए। यदि गुरु मिल जाए तो आत्मिक आनन्द प्राप्त हो जाता है ॥ १ ॥ हे मेरे मित्रो ! परमात्मा की गुणस्तुति गाया करो और परमात्मा का नाम अपने हृदय में बसाए रखो। परमात्मा की गुणस्तुति के आत्मिक जीवन देनेवाले वचन सुनाया करो। यदि गुरु मिल जाए तो परमात्मा हृदय में प्रकट हो जाता है ॥ २ ॥ हे यम-त्रास के नाशक, मायापति ! हे मेरी आत्मा के सहारे ! मुझे मन, तन में आत्मिक जीवन का दाता तुम्हारा नाम मीठा लग रहा है। हे हरि, प्रभु ! कृपा करो। मुझे वह महापुरुष गुरु मिलाओ, जो माया के प्रभाव से परे है ॥३॥ हे भाई ! परमात्मा का नाम सदा सुखदाता है। मेरा मन उस परमात्मा के प्रेम में मस्त रहता है। नानक का कथन है कि हे हरि ! मुझे गुरु महापुरुष मिलाओ। प्रभु के नाम में प्रवृत्त होने से आत्मिक आनन्द मिलता है ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥

॥ जैतसरी म० ४ ॥ हरि हरि हरि हरि नामु जपाहा। गुरमुखि नामु सदा लै लाहा। हरि हरि हरि हरि भगति द्रिड़ावहु हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि हरि नामु

दइआलु धिआहा। हरि कै रंगि सदा गुण गाहा। हरि हरि हरि जसु घूमरि पावहु मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥ २ ॥ आउ सखी हरि मेलि मिलाहा। सुणि हरि कथा नामु लै लाहा। हरि हरि क्रिपा धारि गुर मेलहु गुरि मिलिऐ हरि ओमाहा राम ॥ ३ ॥ करि कीरति जसु अगम अथाहा। खिनु खिनु राम नामु गावाहा। मोकउ धारि क्रिपा मिलीऐ गुर दाते हरि नानक भगति ओमाहा राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥

हे भाई ! हमेशा प्रभु का नाम जपा करो। गुरु की शरण लेकर सदा परमात्मा की नाम-कमाई प्राप्त करते रहो। परमात्मा की भक्ति हृदय में दृढ़ कर लो। परमात्मा का नाम आनन्द उपजाता है ॥ १ ॥ हे भाई ! परमात्मा दया का स्रोत है, हमेशा उसका नाम-स्मरण करते रहो। परमात्मा के प्रेम-रंग में रँगकर उसके गुण गाते रहो। हे भाई ! हमेशा परमात्मा की गुणस्तुति करते रहो। (इसी गुणस्तुति का) नाच नाचो और सत्संगति में रहकर आत्मिक आनन्द प्राप्त करो ॥२॥ हे सत्संगियो ! आओ, प्रभु के चरणों में रहें। उस प्रभु की गुणस्तुति की बातें सुनकर उसके नाम-स्मरण की कमाई करते रहें। हे प्रभु ! कृपा करो और गुरु से भेंट करा दो। यदि गुरु मिल जाए तो हृदय में आनन्द पैदा हो जाता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! उस अगम्य तथा गहन हृदय वाले परमात्मा की गुणस्तुति करके, यशोगान करके, प्रतिपल उसका नाम जपा करो। नानक का कथन है कि हे नाम की देन देनेवाले गुरु ! मुझ पर कृपा करो, मुझे दर्शन दो, ताकि मुझमें तुम्हारी भक्ति करने का चाव पैदा हो ॥४॥२॥८॥

॥ जैतसरी म० ४ ॥ रसि रसि रामु रसालु सलाहा। मनु राम नामि भीना लै लाहा। खिनु खिनु भगति करह दिनुराती गुरमति भगति ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि हरि गुण गोविंद जपाहा। मनु तनु जीति सबदु लै लाहा। गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥ २ ॥ नामु रतनु हरि नामु जपाहा। हरि गुण गाइ सदा लै लाहा। दीन दइआल क्रिपा करि माधो हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥३॥ जपि जगदीसु जपउ मन माहा। हरि हरि जगंनाथु जगि लाहा। धनु धनु वडे ठाकुर प्रभ मेरे जपि नानक भगति ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥

हे भाई ! हम अत्यन्त आनन्दपूर्वक रसिक राम की गुणस्तुति करते

हैं। हमारा मन राम के नाम-रस में भीग रहा है और हम हरि-नाम की कमाई कर रहे हैं। हम प्रतिपल परमात्मा की भक्ति करते हैं। गुरु की शिक्षा के प्रभाव से भक्ति का चाव बन रहा है ॥ १ ॥ हम गोविन्द हरि के गुण गा रहे हैं। मन, तन को नियन्त्रित करके गुरु-शिक्षा का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। हे भाई ! गुरु की शिक्षा स्वीकारने से पाँचों वैरी वश में आ जाते हैं और मन, तन में हरि-नाम जपने का उत्साह होता है ॥ २ ॥ हे भाई ! हरि-नाम रत्न-तुल्य क़ीमती पदार्थ है, हम यह हरि-नाम जप रहे हैं। परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गा-गाकर सच्ची (शाश्वत) कमाई कर रहे हैं। हे दीनदयालु प्रभु ! कृपा करो, (ताकि) हमारे मन में तुम्हारा नाम जपने का चाव बना रहे ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि हे सराहनीय प्रभु ! हे मेरे सर्वोपरि मालिक ! मैं तुझ जगत के मालिक को सदा मन में जपता रहूँ, (क्योंकि) तुझ जगत के स्वामी का नाम-स्मरण करना ही जगत में असल लाभ है। (इसलिए) कृपा करो, (ताकि) तुम्हारा नाम जपकर भक्ति करने का उत्साह बना रहे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥

॥ जैतसरी महला ४ ॥ आपे जोगी जुगति जुगाहा। आपे निरभउ ताड़ी लाहा। आपे ही आपि आपि वरतै आपे नामि ओमाहा राम ॥ १ ॥ आपे दीप लोअ दीपाहा। आपे सतिगुरु समुंदु मथाहा। आपे मथि मथि ततु कढाए जपि नामु रतनु ओमाहा राम ॥ २ ॥ सखी मिलहु मिलि गुण गावाहा। गुरमुखि नामु जपहु हरि लाहा। हरि हरि भगति द्रिड़ी मनि भाई हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ ३ ॥ आपे वडदाणा वडसाहा। गुरमुखि पूंजी नामु विसाहा। हरि हरि दाति करहु प्रभ भावै गुण नानक नामु ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥

हे भाई ! परमात्मा आप ही योगी है, आप ही सब युगों में योग-युक्ति है, वह आप ही निर्भय होकर समाधि लगाता है। सर्वत्र आप ही आप काम कर रहा है और आप ही नाम में प्रवृत्त होकर स्मरण का उत्साह दे रहा है ॥ १ ॥ प्रभु स्वयं ही द्वीप है। स्वयं ही समस्त भुवनों के रूप में है और उन भुवनों में प्रकाश है। प्रभु आप ही गुरु है, आप ही वाणी का समुद्र है और आप ही समुद्र का मन्थन करनेवाला है। आप ही इसका मन्थन कराकर इसमें से मक्खन प्राप्त कराता है और आप ही रत्न जैसा नाम जपकर जीवों के भीतर नाम जपने का चाव पैदा करता है ॥ २ ॥ हे सत्संगियो ! एकत्रित होओ, आओ, एकत्रित होकर प्रभु के गुण गाएँ। गुरु की शरण लेकर हरि-नाम जपें, (यही जीवन का) लाभ है। जिस मनुष्य ने प्रभु-भक्ति अपने हृदय में दृढ़ कर ली, जिसे प्रभु की भक्ति मन में

प्यारी लगी । प्रभु का नाम उसके भीतर स्मरण का उत्साह पैदा करता है ॥ ३ ॥ हे भाई ! प्रभु स्वयं अत्यन्त बुद्धिमान और महान साहूकार है। गुरु की शरण लेकर उसका नाम-धन एकत्रित करो । नानक का कथन है कि हे हरि ! मुझे नाम की देन दो । अगर तुम्हें भला लगे, तो मेरे भीतर तुम्हारा नाम स्थिर रहे और तुम्हारे गुणों को याद करने का चाव पदा हो ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥

॥ जैतसरी महला ४ ॥ मिलि सत संगति संगि गुराहा । पूंजी नामु गुरमुखि वेसाहा । हरि हरि क्रिपा धारि मधुसूदन मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि गुण बाणी स्रवणि सुणाहा । करि किरपा सतिगुरू मिलाहा । गुण गावह गुण बोलह बाणी हरि गुण जपि ओमाहा राम ॥ २ ॥ सभि तीरथ वरत जग पुंन तुोलाहा । हरि हरि नाम न पुजहि पुजाहा । हरि हरि अतुलु तोलु अति भारी गुरमति जपि ओमाहा राम ॥ ३ ॥ सभि करम धरम हरि नामु जपाहा । किलविख मैलु पाप धोवाहा । दीन दइआल होहु जन ऊपरि देहु नानक नामु ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥

हे शत्रुओं के नाश करनेवाले हरि ! कृपा कीजिए कि सत्संगति में मिलकर तुम्हारे नाम का चाव पैदा हो । सत्संगति में मिलकर, गुरु के सान्निध्य में रहकर, गुरु का शरणागत होकर तुम्हारा नाम-धन एकत्रित करें ॥१॥ हे हरि ! कृपा करके मुझे गुरु से मिलाओ, ताकि तुम्हारे गुणों वाली वाणी कानों से सुनें, गुरु की वाणी के माध्यम से तुम्हारे गुण गाएँ और तुम्हारे गुण याद कर-करके तुम्हारी भक्ति का चाव पैदा करें ॥ २ ॥ हे भाई ! यदि समस्त तीर्थ, व्रत, यज्ञ और पुण्य (एकत्रित करके) तोलें, तो ये एक साथ भी परमात्मा के नाम तक नहीं पहुँच सकते । परमात्मा के नाम का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, वह अतुलनीय है । गुरु की शिक्षा पर चलकर अर्थात् नाम-स्मरण करने से उत्साह पैदा होता है ॥ ३ ॥ नानक का कथन है कि हे हरि ! अपने तुच्छ दासों पर कृपा करो, दासों को अपने नाम की देन दो, उत्साह दो, (ताकि) हम तुम्हारा नाम जपें; (क्योंकि) तुम्हारा नाम-स्मरण ही धार्मिक कार्य है, जिससे समस्त पापों-विकारों का मैल धुल जाता है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥

जैतसरी महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कोई जानै कवनु ईहा जगि

मीतु। जिसु होइ क्रिपालु सोई बिधि बूझै ताकी निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई। पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥ १ ॥ मुकतिमाल कनिक लाल हीरा मन रंजन की माइआ। हाहा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु न पाइआ ॥ २ ॥ हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन चतुरांगा। संगि न चालिओ इन महि कछूऐ ऊठि सिधाइओ नांगा ॥ ३ ॥ हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के ताकै हरि हरि गाईऐ। नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाईऐ ॥ ४ ॥ १ ॥

कोई विरला मनुष्य ही जानता है कि यहाँ जगत में वास्तविक मित्र कौन है। जिस मनुष्य पर प्रभु दयालु होता है, वही मनुष्य इस बात को समझता है और उस मनुष्य की जीवनयुक्ति पवित्र हो जाती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! माँ, बाप, स्त्री, पुत्र, रिश्तेदार, प्यारे मित्र और भाई —ये सब पूर्व जन्मों के संयोगों के कारण मिले हैं। अन्तिम समय में इनमें से कोई भी साथी नहीं बनता ॥ १ ॥ मोतियों की मालाएँ, सोना, लाल, हीरे और मन को आनन्दित करनेवाली माया —इनमें सारी उम्र 'हाय-हाय' करते हुए बीत जाती है, लेकिन मन तृप्त नहीं होता ॥२॥ भले ही किसी के पास हाथी, रथ, वायुवेगगामी घोड़े हों, वह धनाढ्य हो, ज़मीन का मालिक हो, चार प्रकार की फ़ौजों का स्वामी हो, (लेकिन) इनमें से भी कोई चीज़ साथ नहीं जाती। (इन वस्तुओं का स्वामी अन्त में) ख़ाली हाथ ही उठकर चल पड़ता है ॥ ३ ॥ हे नानक ! सन्तजन उस परमात्मा को प्यारे होते हैं, उनकी संगति में परमात्मा की गुणस्तुति करनी चाहिए। (इससे) इस लोक में सुख मिलता है और परलोक में मुक्ति हो जाती है, लेकिन यह देन सत्संगति के माध्यम से ही मिलती है ॥ ४ ॥ १ ॥

जैतसरी महला ५ घरु ३ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ देहु संदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ। बिसमु भई मै बहु बिधि सुनते कहहु सुहागनि सहीअउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ। बरनु न दीसै चिहनु न लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥ १ ॥ सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु

नही अलपहीअउ । नानकु कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ।। २ ।। १ ।। २ ।।

हे सौभाग्यवती सहेलियो ! मुझे प्यारे प्रभु का मधुर सन्देश दो । मैं उसकी कई तरह की बातें सुन-सुनकर हैरान हो रही हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। कोई कहता है कि वह सबसे बाहर विद्यमान ह, कोई कहता है कि वह सबके भीतर अवस्थित है । उसका रंग नहीं दिखता, कोई लक्षण दृष्टिगत नहीं होता । हे सुहागिनो ! (हरि से मिलाप-प्राप्ता आत्माओ !) तुम मुझे सच्ची बात समझाओ ।। १ ।। नानक कहते हैं कि हे लोगो ! सुनो, वह परमात्मा सबमें अवस्थित है, प्रत्येक शरीर में विद्यमान है, उसे माया से तनिक भी लगाव नहीं है । वह प्रभु सन्तजनों की जिह्वा पर बसता है अर्थात् सन्तजन जिह्वा द्वारा परमात्मा का नाम-स्मरण करते हैं ।।२।।१।।२।।

।। जैतसरी म० ५ ।। धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ।। १ ।। रहाउ ।। जीअ प्रान मनु तनु सभु अरपउ नीरउ पेखि प्रभ कउ नीरउ ।। १ ।। बे सुमार बेअंतु बड दाता मनहि गहीरउ पेखि प्रभ कउ ।। २ ।। जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा पूरउ जपि प्रभ कउ ।। ३ ।। गुरप्रसादि नानक मनि वसिआ दूखि न कबहू झूरउ बुझि प्रभ कउ ।। ४ ।। २ ।। ३ ।।

हे भाई ! मैं प्रभु की बातें सुन-सुनकर धैर्य धारण करता हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु को प्रतिपल समीप मानकर मैं अपनी आत्मा, अपना मन, तन उसके प्रति अर्पित करता हूँ ।। १ ।। हे भाई ! वह प्रभु बड़ा दाता है, अनन्त है, उसके गुणों का उल्लेख नहीं हो सकता । मैं उस प्रभु को सर्वत्र अनुभव कर उसे अपने भीतर बसाए रखता हूँ ।। २ ।। मैं जो चाहता हूँ, वही उस प्रभु से प्राप्त कर लेता हूँ । प्रभु का नाम-स्मरण कर अपनी सब कामनाएँ पूर्ण कर लेता हूँ ।। ३ ।। नानक का कथन है कि गुरु की कृपा से वह प्रभु मेरे भीतर आ बसा है, (इसलिए) अब मैं प्रभु को समझकर किसी भी दुख में चिन्तातुर नहीं होता ।। ४ ।। २ ।। ३ ।।

।। जैतसरी महला ५ ।। लोड़ीदड़ा साजनु मेरा । घरि घरि मंगल गावहु नीके घटि घटि तिसहि बसेरा ।। १ ।। रहाउ ।। सूखि अराधनु दूखि अराधनु बिसरै न काहू बेरा । नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अंधेरा ।। १ ।। थानि थनंतरि सभनी जाई जो दीसै सो तेरा । संत संगि पावै जो नानक तिसु बहुरि न होईहै फेरा ।। २ ।। ३ ।। ४ ।।

हे भाई ! मेरा सज्जन प्रभु ऐसा है, जिसे प्रत्येक जीव पाना चाहता है। सब अपनी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा उसकी गुणस्तुति के सुन्दर गीत गाया करो। प्रत्येक शरीर में उसका ही निवास है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! सुख में भी उस प्रभु का स्मरण करना चाहिए, दुख में भी उसी का स्मरण करना चाहिए, वह परमात्मा किसी भी समय हमें विस्मृत न हो। उस परमात्मा का नाम-स्मरण करते हुए मानो करोड़ों सूर्यों का प्रकाश मिलता है, माया-सम्बन्धी दुबिधा समाप्त हो जाती है और (अज्ञान का) अँधेरा नष्ट हो जाता है ॥ १ ॥ नानक का कथन है कि हे प्रभु ! प्रत्येक स्थान पर, सर्वत्र जो परिलक्षित है, वह सब तुम्हारा ही स्वरूप है। सत्संगति में रहकर जो मनुष्य तुम्हें प्राप्त कर लेता है, उसे दोबारा जन्म-मरण का चक्र नहीं व्यापता ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

जैतसरी महला ५ घरु ४ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अब मै सुखु पाइओ गुर आज्ञि। तजी सिआनप चिंत विसारी अहं छोडिओ है तिआज्ञि ॥१॥रहाउ॥ जउ देखउ तउ सगल मोहि मोहीअउ तउ सरनि परिओ गुर भागि। करि किरपा टहल हरि लाइओ तउ जमि छोडी मोरी लागि ॥ १ ॥ तरिओ सागरु पावक को जउ संत भेटे वडभागि। जन नानक सरब सुख पाए मोरो हरि चरनी चितु लागि ॥ २ ॥ १ ॥ ५ ॥

अब मैंने गुरु की आज्ञा का अनुसरण कर आनन्द प्राप्त कर लिया है। मैंने अपनी चतुराई त्याग दी है, चिन्ता विस्मृत कर दी है और मैंने अपने भीतर से अहंत्व मिटा दिया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जब मैंने देखा कि समस्त दुनिया मोह में फँसी है, तो मैंने दौड़कर गुरु की शरण ले ली। गुरु ने कृपा करके मुझे प्रभु की सेवा-भक्ति में लगा दिया, जिससे यमराज ने मेरा पीछा छोड़ दिया ॥ १ ॥ जब सौभाग्यवश गुरु मिल गए, तो मैंने विकारों की अग्नि का समुद्र पार कर लिया। दास नानक का कथन है कि अब मैंने समस्त सुख प्राप्त कर लिये हैं और मेरा मन प्रभु के चरणों में रमा रहता है ॥ २ ॥ १ ॥ ५ ॥

॥ जैतसरी महला ५ ॥ मन महि सतिगुर धिआनु धरा। द्रिढ़िओ गिआनु मंत्रु हरि नामा प्रभ जीउ मइआ करा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काल जाल अरु महा जंजाला छुटके जमहि डरा।

आइओ दुख हरण सरण करुणापति गहिओ चरण आसरा ॥ १ ॥ नाव रूप भइओ साध संगु भवनिधि पारि परा । अपिउ पीओ गतु थीओ भरमा कहु नानक अजरु जरा ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥

जब मैंने गुरु के चरणों में मन लगाया, तब परमात्मा ने मुझ पर कृपा की । मैंने परमात्मा का नाम-मन्त्र हृदय में बसा लिया और आत्मिक जीवन की सूझ हृदय में दृढ़ कर ली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (गुरु की कृपा से) मैं दुखनाशक प्रभु की शरण में आ गया और करुणा-अधिपति हरि का सहारा ले लिया । आत्मिक मृत्यु लानेवाले माया के बन्धन टूट गए, माया के जंजाल मिट गए और यमों का भय दूर हो गया ॥१॥ गुरु की संगति ने मेरे लिए नाव का कार्य किया है, मैं संसार-सागर से पार उतर गया हूँ । नानक का कथन है कि मैंने आत्मिक जीवन देनेवाला नाम-जल पान कर लिया है, मेरे मन की दुविधा दूर हो गई है । मैंने वह आत्मिक स्थिति प्राप्त कर ली है, जिसे कभी भी जरावस्था नहीं आ सकती ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥

॥ जैतसरी महला ५ ॥ जा कउ भए गोविंद सहाई । सूख सहज आनंद सगल सिउ वाकउ बिआधि न काई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीसहि सभ संगि रहहि अलेपा नह विआपै उन माई । एकै रंगि तत के बेते सतिगुर ते बुधि पाई ॥ १ ॥ दइआ मइआ किरपा ठाकुर की सेई संत सुभाई । तिन कै संगि नानक निसतरीऐ जिन रसि रसि हरि गुन गाई ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ ॥

हे भाई ! जिन मनुष्यों के लिए प्रभु सहायक हो जाता है, उनकी उम्र आत्मिक स्थिरता और सुखों के साथ बीतती है और उन्हें कोई विकार-रोग स्पर्श नहीं करता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वे मनुष्य सबके साथ व्यवहार करते हुए दिखते हैं, लेकिन वे माया से निर्लिप्त रहते हैं, माया उन पर अपना प्रभाव नहीं कर सकती । वे एक परमात्मा के प्रेम में स्थिर रहते हैं, वे जीवन की वास्तविकता को जाननेवाले बन जाते हैं —यह बुद्धि उन्हें गुरु से प्राप्त होती है ॥ १ ॥ वे मनुष्य प्रेमपूरित हृदय वाले सन्त बन जाते हैं, जिन पर मालिक-प्रभु की कृपा होती है । जो मनुष्य सदैव प्रेमपूर्वक परमात्मा के गुण गाते हैं, उनकी संगति में रहकर संसार-समुद्र से पार उतरा जाता है ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ ॥

॥ जैतसरी महला ५ ॥ गोबिंद जीवन प्रान धन रूप । अगिआन मोह मगन महा प्रानी अंधिआरे महि दीप ॥१॥रहाउ॥ सफल दरसनु तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप । अनिक

बार करउ तिह बंदन मनहि चर्हावउ धूप ।। १ ।। हारि परिओ तुम्हरै प्रभ दुआरै द्रिढु करि गही तुम्हारी लूक । काढि लेहु नानक अपुने कउ संसार पावक के कूप ।। २ ।। ४ ।। ८ ।।

हे गोविन्द ! तुम हम जीवों की ज़िन्दगी हो, प्राण, धन और सूर्य हो। जीव आत्मिक जीवन के प्रति अज्ञानता में, मोह में डूबे रहते हैं, इस अँधेरे में तुम दीपक हो ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रियतम ! तुम्हारा दर्शन जीवन-मनोरथ पूर्ण करनेवाला है, तुम्हारे सुन्दर चरण अप्रतिम हैं, मैं इन चरणों पर अनेकों बार नमन करता हूँ, अपने मन की धूप (पूजा-सामग्री के रूप में) अर्पित करता हूँ ।। १ ।। हे प्रभु ! मैं सब ओर से निराश होकर तुम्हारे द्वार पर आ गया हूँ। तुम्हारी ओट को दृढ़ समझकर शरण में आया हूँ। हे प्रभु ! संसार रूपी अग्नि के कुएँ से अपने दास नानक को निकाल लीजिए ।। २ ।। ४ ।। ८ ।।

।। जैतसरी महला ५ ।। कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि । चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि ।। १ ।। रहाउ ।। मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि । इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि ।। १ ।। आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुम्हरी ओरि । अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि ।। २ ।। ५ ।। ६ ।।

जो कोई परमात्मा के साथ मेरी भेंट करा दे, मैं उसके चरण पकड़ लूँ। मैं जिह्वा द्वारा मीठे वचन बोलूँ। मेरे यह प्राण उसके प्रति भेंट कर दिए जाएँ ।। १ ।। रहाउ ।। कोई विरला मनुष्य परमात्मा की कृपा से अपने मन, तन को पवित्र क्यारी बनाता है, उसमें प्रभु का नाम-जल भली प्रकार से सींचता है और मनमोहिनी माया से विच्छिन्न होकर नाम-रस में मस्त रहता है ।।१।। हे दीनों के दुखनाशक ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, मैं तुम्हारा ही आश्रय चाहता हूँ। हे प्रभु ! मुझे (नानक को) बन्धन-मुक्त करके अपने नाम का स्मरण दो और मुझे विकारों से निर्भय अवस्था प्रदान करो ।। २ ।। ५ ।। ९ ।।

।। जैतसरी महला ५ ।। चात्रिक चितवत बरसत मेंह । क्रिपासिंधु करुणा प्रभ धारहु हरि प्रेम भगति को नेंह ।।१।।रहाउ।। अनिक सूख चकवी नही चाहत अनद पूरन पेखि देंह । आन उपाव न जीवत मीना बिनु जल मरना तेंह ।। १ ।। हम अनाथ नाथ हरि सरणी अपुनी क्रिपा करेंह । चरण कमल नानकु आराधै तिसु बिनु आन न केंह ।। २ ।। ६ ।। १० ।।

जैसे पपीहा प्रतिपल मेंह का बरसना कल्पित करता है वैसे ही, हे कृपा के समुद्र ! हे प्रभु ! मुझ पर दया करो और अपनी प्रेमपूरित भक्ति की लग्न प्रदान करो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! चकवी अनेक सुख नहीं माँगती, केवल सूर्य को देखकर उसके भीतर पूर्ण आनन्द पैदा हो जाता है। पानी के अतिरिक्त अन्य उपायों से मछली जीवित नहीं रह सकती, पानी के बिना उसकी मृत्यु हो जाती है ॥ १ ॥ हे नाथ ! तुम्हारे बिना हम निराश्रित हैं। कृपा करो और हमें अपनी शरण में अपनाओ, (ताकि) नानक तुम्हारे सुन्दर चरणों की आराधना करता रहे। स्मरण के बिना नानक को और कुछ भला नहीं लगता ॥ २ ॥ ६ ॥ १० ॥

॥ जैतसरी महला ५ ॥ मनि तनि बसि रहे मेरे प्रान। करि किरपा साधू संगि भेटे पूरन पुरख सुजान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रेम ठगउरी जिन कउ पाई तिन रसु पीअउ भारी। ताकी कीमति कहणु न जाई कुदरति कवन हम्हारी ॥ १ ॥ लाइ लए लड़ि दास जन अपुने उधरे उधरनहारे। प्रभु सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइओ नानक सरणि दुआरे ॥ २ ॥ ७ ॥ ११ ॥

मेरे प्राणों का आश्रय प्रभु अब मेरे मन, तन में विद्यमान है। गुरु के सान्निध्य में वह सर्वगुणसम्पन्न, सर्वव्यापक, अन्तर्यामी प्रभु कृपा करके मुझे प्राप्त हो गए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे भाई ! जिन मनुष्यों को प्रेम की ठग-बूटी मिल गई अर्थात् गुरु द्वारा प्रेम-मन्त्र प्राप्त हो गया, उन्होंने पेट भर कर नाम-जल पी लिया। उस नाम-जल की क़ीमत नहीं बतलाई जा सकती। फिर मेरी क्या सामर्थ्य है (कि उसका बखान करूँ) ॥ १ ॥ हे नानक ! प्रभु ने सदा अपने सेवकों को अपने संरक्षण में रखा है और इस प्रकार सामर्थ्यवान प्रभु ने सेवकों की रक्षा की है। प्रभु के द्वार पर आकर, उसकी शरण लेकर, सेवकों ने प्रभु को स्मरण कर सदैव आनन्द महसूस किया है ॥ २ ॥ ७ ॥ ११ ॥

॥ जैतसरी महला ५ ॥ आए अनिक जनम भ्रमि सरणी। उधरु देह अंध कूप ते लावहु अपुनी चरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु किछु करमु न जाना नाहिन निरमल करणी। साध संगति कै अंचलि लावहु बिखम नदी जाइ तरणी ॥ १ ॥ सुख संपति माइआ रस मीठे इह नही मन महि धरणी। हरि दरसन त्रिपति नानक दास पावत हरि नाम रंग आभरणी ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥

हे प्रभु ! हम जीव कई जन्मों में भटककर अब तुम्हारे शरणागत हैं। हमारे शरीर को घोर अँधेरे कुएँ से बचा लो और अपने चरणों में जगह दो ।। १ ।। रहाउ ।। मुझे आत्मिक जीवन की सूझ नहीं, मेरी सुरति तुम्हारे चरणों में नहीं लगती, मुझे कोई शुभ काम करना नहीं आता और मेरा कर्म भी पवित्र नहीं है। हे प्रभु ! मुझे सत्संगति में बिठाइए, ताकि यह दुस्तर संसार रूपी नदी पार की जा सके ।। १ ।। हे नानक ! दुनिया के सुख, धन, माया के मीठे स्वाद आदि पदार्थों को परमात्मा के दास मन में नहीं बसाते। परमात्मा के दर्शनों से वे सन्तोष पाते हैं, क्योंकि परमात्मा के नाम का प्रेम ही उनका एक मात्र आभूषण है ।। २ ।। ८ ।। १२ ।।

।। जैतसरी महला ५ ।। हरि जन सिमरहु हिरदै राम। हरि जन कउ अपदा निकटि न आवै पूरन दास के काम ।। १ ।। रहाउ।। कोटि बिघन बिनसहि हरि सेवा निहचलु गोविद धाम। भगवंत भगत कउ भउ किछु नाही आदरु देवत जाम ।। १ ।। तजि गोपाल आन जो करणी सोई सोई बिनसत खाम। चरन कमल हिरदै गहु नानक सुख समूह बिसराम ।। २ ।। ६ ।। १३ ।।

हे परमात्मा के प्यारो ! अपने हृदय में परमात्मा का नाम स्मरण किया करो। कोई भी विपत्ति प्रभु के सेवकों के निकट नहीं आती। सेवकों के समस्त काम सफल हो जाते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। परमात्मा की भक्ति के द्वारा सैकड़ों कठिनाइयाँ नष्ट हो जाती हैं और परमात्मा का स्थिर (सच्चा) घर प्राप्त हो जाता है। परमात्मा के भक्तों को कोई भय स्पर्श नहीं कर सकता, यमराज भी उनका सत्कार करता है ।। १ ।। हे नानक ! परमात्मा के स्मरण को भुलाकर दूसरा जो भी कार्य किया जाता है, वह नश्वर है, मिथ्या है। इसलिए परमात्मा के सुन्दर चरण अपने हृदय में बसाए रखो, (क्योंकि प्रभु के चरण ही) समस्त सुखों के घर हैं ।। २ ।। ९ ।। १३ ।।

जैतसरी महला ९

१ ओं सतिगुर प्रसादि।। भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ। जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ।। १ ।। रहाउ ।। समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ। संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनु खोजन कउ धाइओ ।। १ ।। रतनु रामु घट ही के भीतरि ताको

गिआनु न पाइओ। जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥ २ ॥ १ ॥

हे भाई ! पथभ्रमित मन माया में फँसा रहता है। यह लालच में फँसकर जो-जो काम करता है, उनके द्वारा अपने आप को माया-मोह में फंसा लेता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ (कुमार्गगामी व्यक्ति को) आत्मिक जीवन का ज्ञान नहीं होता, (वह) विषयों के आस्वादन में मस्त रहता है और प्रभु की गुणस्तुति भुलाए रखता है। अपने साथ अन्तर में रहते परमात्मा के साथ सम्बन्ध नहीं जोड़ता, (बल्कि) जंगल में खोजने के लिए दौड़ पड़ता है ॥ १ ॥ रत्न-तुल्य बहुमूल्य हरि-नाम हृदय में ही रहता है, (लेकिन भ्रमवश) मनुष्य उसके साथ मेल नहीं करता। दास नानक का कथन है कि परमात्मा के भजन के बिना मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ गँवा देता है ॥ २ ॥ १ ॥

॥ जैतसरी महला ६ ॥ हरि जू राखि लेहु पति मेरी। जम को त्रास भइओ उरअंतरि सरनि गही किरपानिधि तेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा। भै मरबे को बिसरत नाहन तिह चिंता तनु जारा ॥ १ ॥ कीए उपाव मुकति के कारनि दहदिसि कउ उठि धाइआ। घट ही भीतरि बसै निरंजनु ताको मरमु न पाइआ ॥ २ ॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै। नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥ ३ ॥ २ ॥

हे प्रभुजी ! मेरी प्रतिष्ठा की रक्षा करो। मेरे हृदय में मृत्यु का भय विद्यमान है। हे कृपा के भण्डार प्रभु ! मैंने तुम्हारा आश्रय लिया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रभु ! मैं अत्यन्त विकारी, मूर्ख और लालची भी हूँ। पाप करता-करता अब मैं थक गया हूँ। मुझे मृत्यु का भय किसी वक्त विस्मृत नहीं होता, इस चिन्ता ने मेरा शरीर जला दिया है ॥ १ ॥ मैंने मुक्ति पाने के लिए अनेक प्रयत्न किए हैं, दसों दिशाओं में उठ-उठकर भागा हूँ। निर्लिप्त परमात्मा हृदय में ही बसता है, उसका रहस्य मैंने नहीं समझा ॥ २ ॥ गुरु नानक का कथन है (कि मृत्यु के भय से बचाने के लिए) कोई गुण नहीं, कोई जप, तप नहीं, इसलिए अब कौन सा काम किया जाए ? हे प्रभु ! अब मैं हारकर तुम्हारा शरणागत हूँ। तुम मृत्यु के भय से मुक्ति का दान दो ॥ ३ ॥ २ ॥

॥ जैतसरी महला ६ ॥ मन रे साचा गहो बिचारा। राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥

जाकउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा । सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ।। १ ।। पावन नाम जगत मै हरि को कबहू नाहि संभारा । नानक सरनि परिओ जगबंदन राखहु बिरदु तुहारा ।। २ ।। ३ ।।

हे मेरे मन ! यह शाश्वत विचार (अनुसरण करके) देख। परमात्मा के नाम के अतिरिक्त शेष समस्त संसार को नश्वर जान ।। १ ।। रहाउ ।। योगी लोग जिस प्रभु को खोजते-खोजते थक गए और उसके स्वरूप का रहस्य न पा सके, उस मालिक को तू अपने अंग-संग अवस्थित जान, लेकिन उसका कोई रूप, कोई चिह्न नहीं बताया जा सकता ।। १ ।। हे मेरे मन ! जगत में परमात्मा का नाम पावनता-दायी है, तुमने उसे कभी सँभालकर नहीं रखा। नानक का कथन है कि हे समस्त जगत के द्वारा प्रणम्य प्रभु ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, मेरी रक्षा करो। यह तुम्हारा विरद है (कि शरणागत की रक्षा करते हो) ।। २ ।। ३ ।।

जैतसरी महला ५ छंत घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। सलोक ।। दरसन पिआसी दिनसु राति चितवउ अनदिनु नीत । खोल्हि कपट गुरि मेलीआ नानक हरि संगि मीत ।। १ ।। छंत ।। सुणि यार हमारे सजण इक करउ बेनंतीआ । तिसु मोहन लाल पिआरे हउ फिरउ खोजंतीआ । तिसु दसि पिआरे सिरु धरी उतारे इक भोरी दरसनु दीजै । नैन हमारे प्रिअ रंग रंगारे इकु तिलु भी ना धीरीजै । प्रभ सिउ मनु लीना जिउ जल मीना चात्रिक जिवै तिसंतीआ । जन नानक गुरु पूरा पाइआ सगली तिखा बुझंतीआ ।। १ ।। यार वे प्रिअ हभे सखीआ मू कही न जेहीआ । यार वे हिकड़ूं हिकि चाड़ै हउ किसु चितेहीआ । हिकदूं हिकि चाड़े अनिक पिआरे नित करदे भोग बिलासा । तिना देखि मनि चाउ उठंदा हउ कदि पाई गुणतासा । जिनी मैडा लालु रीझाइआ हउ तिसु आगै मनु डेंहीआ । नानकु कहै सुणि बिनउ सुहागणि मू दसि डिखा पिरु केहीआ ।। २ ।। यार वे पिरु आपण भाणा किछु नीसी छंदा । यार वे तै राविआ लालनु मू दसि दसंदा । लालनु तै पाइआ आपु गवाइआ जै धन भाग मथाणे । बांह

पकड़ि ठाकुरि हउ घिधी गुण अवगण न पछाणे। गुण हारु तै पाइआ रंगु लालु बणाइआ तिसु हभो किछु सुहंदा। जन नानक धंनि सुहागणि साई जिसु संगि भतारु वसंदा ॥ ३ ॥ यार वे नित सुख सुखेदी सा मै पाई। वरु लोड़ीदा आइआ वजी वाधाई। महा मंगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नवरंगीआ। वड भागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सत संगीआ। आसा मनसा सगल पूरी प्रिअ अंकि अंकु मिलाई। बिनवंति नानकु सुख सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥ ४ ॥ १ ॥

॥सलोक॥ मुझे मित्र-प्रभु के दर्शन की इच्छा लगी है। मैं दिन-रात प्रतिपल उसके दर्शनों की कल्पना करती रहती हूँ। नानक का कथन है कि गुरु ने मन के किवाड़ खोलकर मुझे मित्र-हरि के साथ मिला दिया है ॥१॥छंत॥ हे सत्संगी मित्र! हे सज्जन! मेरी एक प्रार्थना है। मैं उस मनमोहन प्यारे प्रभु को खोजती फिरती हूँ। मुझे उस प्यारे का पता बताओ, मैं उसके समक्ष सिर काटकर रख दूँगी (अहम् त्याग दूंगी)। हे प्रभु! पल भर के लिए ही मुझे दर्शन दो। मेरी आँखें प्यारे के प्रेम-रंग में रँगी हैं, (उसके बिना) पल मात्र के लिए भी चैन नहीं मिलता। मेरा मन प्रभु में इस प्रकार लीन है, जसे पानी की मछली (पानी में मस्त रहती है और) पपीहे को स्वाति की बूँदों की प्यास लगी रहती है। दास नानक का कथन है कि जिसे पूर्णगुरु मिल जाता है, उसकी सारी प्यास बुझ जाती है (तृष्णा दूर हो जाती है) ॥ १ ॥ समस्त सहेलियाँ प्यारे प्रभु की (स्त्रियाँ) हैं, मैं इनमें से किसी के तुल्य भी नहीं, ये एक से एक सुन्दर हैं, मैं किस गिनती में हूँ ? प्रभु से अनेक प्रेम करनेवाले हैं, एक दूसरे से अधिक सुन्दर जीवन वाले हैं, वे हमेशा आत्मिक मिलन का आनन्द अनुभव करते हैं। इन्हें देखकर मेरे मन में भी चाव पैदा होता है कि मैं भी कभी उस गुणों के भण्डार प्रभु को पा लूँ। जिस गुरु ने मेरे प्यारे हरि को प्रसन्न कर लिया है, मैं उसके समक्ष अपना मन अर्पित करने को तत्पर हूँ। नानक का कथन है कि हे सौभाग्यवती! मेरी प्रार्थना सुनो। मुझे बताओ, मैं देखूँ कि प्रभु-पति कैसा है ॥ २ ॥ हे सत्संगी सज्जन! जिस जीव-स्त्री को अपना प्रभु-पति प्यारा लगने लगता है, उसे किसी की अधीनता नहीं रहती। तुमने सुन्दर प्रभु का मिलाप प्राप्त कर लिया है, मैं पूछता हूँ, मुझे भी उसका पता बताओ। तुमने सुन्दर प्रिय को पा लिया है और अहंत्व-भाव दूर कर दिया है। जिस जीव-स्त्री के मस्तक पर भाग्य लिखा है (उसी का मिलाप प्रभु से होता है)। मालिक-प्रभु ने मेरी बाँह पकड़कर मुझे अपनी बना लिया है, मेरा कोई गुण-अवगुण उसने नहीं परखा। दास

नानक का कथन है कि वही जीव-स्त्री भाग्यशालिनी है, जिसके अन्तर्मन में प्रभु-पति विद्यमान रहता है ॥ ३ ॥ जिस सुख की कामना मैं हमेशा करती थी, वह मुझे प्राप्त हो गया है। जिस प्रभु-पति की मैं खोज करती आ रही थी, वह मेरे हृदय में आ बसा है। अब मेरे भीतर आत्मिक उत्साह का संगीत ध्वनित होता है। सदा नये प्रेम-रंग वाला तथा दया का स्रोत प्रभु-पति (मेरे भीतर अवस्थित है जिससे) अत्यन्त आनन्द और उत्साह हो रहा है। हे सज्जन ! सौभाग्यवश वह प्रभु-पति मुझे मिला है, गुरु ने मुझे सत्संगति में सम्मिलित होने का अवसर दिया, मेरा अहंत्व प्यारे के अंक में (अर्थात् प्रिय से मिलन कराकर) मिटा दिया है और अब मेरी प्रत्येक आशा, आकांक्षा पूर्ण हो गई है। गुरु नानक प्रार्थना करते हैं कि जो मनौती मैं किया करता था, वह गुरु को मिलकर पूर्ण हो गई है ॥ ४ ॥ १ ॥

जैतसरी महला ५ घरु २ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु। नानक प्रभ सरणागती राखन कउ समरथु ॥ १ ॥ छंतु ॥ जिउ जानहु तिउ राखु हरि प्रभ तेरिआ। केते गनउ असंख अवगण मेरिआ। असंख अवगण खते फेरे नितप्रति सद भूलीऐ। मोह मगन बिकराल माइआ तउ प्रसादी घूलीऐ। लूक करत बिकार बिखड़े प्रभ नेर हू ते नेरिआ। बिनवंति नानक दइआ धारहु काढि भवजल फेरिआ ॥ १ ॥ ॥ सलोकु ॥ निरति न पवै असंख गुण ऊचा प्रभ का नाउ। नानक की बेनंतीआ मिलै निथावे थाउ ॥ २ ॥ छंतु ॥ दूसर नाही ठाउ का पहि जाईऐ। आठ पहर कर जोड़ि सो प्रभु धिआईऐ। धिआइ सो प्रभु सदा अपुना मनहि चिंदिआ पाईऐ। तजि मान मोहु विकारु दूजा एक सिउ लिव लाईऐ। अरपि मनु तनु प्रभू आगै आपु सगल मिटाईऐ। बिनवंति नानकु धारि किरपा साचि नामि समाईऐ ॥ २ ॥ सलोकु ॥ रे मन ताकउ धिआईऐ सभ बिधि जाकै हाथि। राम नाम धनु संचीऐ नानक निबहै साथि ॥ ३ ॥ छंतु ॥ साथीअड़ा प्रभु एकु दूसर नाहि कोइ। थान थनंतरि आपि जलि थलि पूर सोइ। जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ सरब दाता प्रभु धनी। गोपाल गोबिंद

अंतु नाही बेअंत गुण ताके किआ गनी । भजु सरणि सुआमी सुखहगामी तिसु बिना अन नाहि कोइ । बिनवंति नानक दइआ धारहु तिसु परापति नामु होइ ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ चिति जि चितविआ सो मै पाइआ । नानक नामु धिआइ सुख सबाइआ ॥ ४ ॥ छंतु ॥ अब मनु छूटि गइआ साधू संगि मिले । गुरमुखि नामु लइआ जोती जोति रले । हरि नामु सिमरत मिटे किलबिख बुझी तपति अघानिआ । गहि भुजा लीने दइआ कीने आपने करि मानिआ । लै अंकि लाए हरि मिलाए जनम मरणा दुख जले । बिनवंति नानक दइआ धारी मेलि लीने इक पले ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ सलोकु ॥ (गुरु) नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं तुम्हारा शरणागत हूँ, तुम शरणागत की रक्षा करने की सामर्थ्य रखते हो। हे सर्वोच्च, अगम्य और अनन्त ! तुम सबके स्वामी हो, तुम्हारा स्वरूप अव्यक्त है, अवर्णनीय है ॥ १ ॥ छंतु ॥ हे हरि, प्रभु ! मैं तुम्हारा हूँ। तुम जैसा चाहो वसे ही मेरी रक्षा करो। मैं अपने कितने अवगुण गिनूँ ? मेरे भीतर अनगिनत अवगुण हैं। हे प्रभु ! मेरे अनगिनत अवगुण हैं, पाप चक्रों में फँसा रहता हूँ, नित्यप्रति ही अवगुण (संचित) करता रहता हूँ। ऐसी भयानक माया-मोह में मस्त रहता हूँ, जिससे तुम्हारी कृपा से ही बचा जा सकता है। हम जीव दुखदायक विकृत कर्म परदे में (छिपकर) करते हैं। लेकिन, हे प्रभु ! तुम हमारे निकट अवस्थित रहते हो। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! हम पर कृपा करो, हम जीवों को संसार-समुद्र के चक्र से निकाल लो ॥ १ ॥ सलोकु ॥ परमात्मा के अनगिनत गुणों का निर्णय नहीं हो सकता, उसका बड़प्पन सर्वोच्च है। नानक की प्रार्थना है कि मुझ निराश्रित को उसके चरणों में स्थान मिल जाए ॥ २ ॥ छंतु ॥ हे भाई ! हम जीवों के लिए परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा स्थान नहीं है, हम और किसके पास जा सकते हैं ? (एतदर्थ) दोनों हाथ जोड़कर हमें आठों प्रहर प्रभु का स्मरण करना चाहिए। हे भाई ! अपने उस प्रभु का स्मरण कर मनोवांछित कामना प्राप्त करना चाहिए। अहंकार, मोह तथा किसी दूसरे अवलम्ब की खोज करने का दोष त्यागकर परमात्मा के चरणों में लग्न लगानी चाहिए। प्रभु की सेवा में अपना मन, तन भेंट करके अहंत्वभाव मिटा देना चाहिए। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! तुम्हारी कृपा से ही सत्यस्वरूप नाम में लीन हुआ जा सकता है ॥ २ ॥ सलोकु ॥ जिस परमात्मा के हाथ में हमारे जीवन की युक्ति है, उसका स्मरण करना चाहिए। हे नानक ! परमात्मा का नाम-धन

एकत्रित करना चाहिए, (यही धन) हमारे साथ रहता है ।। ३ ।। छंतु ।। हे भाई ! केवल परमात्मा ही साथी है, उसके अतिरिक्त कोई साथी नहीं, वही परमात्मा पानी, पृथ्वी में सर्वत्र अवस्थित है । हे भाई ! वह मालिक-प्रभु पानी, पृथ्वी और आकाश में सर्वत्र व्याप्त है, सब जीवों को देन देनेवाला है । उस गोपाल गोविन्द के गुणों का अन्त नहीं हो सकता, उसके गुण अनन्त हैं, मैं उसके क्या-क्या गुण गिन सकता हूँ ? हे भाई ! उस मालिक की शरण लिये रहो, वही समस्त सुख पहुँचानेवाला है । उसके अतिरिक्त दूसरा कोई सहारा नहीं है । नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! जिस पर तुम कृपा करते हो, उसे ही तुम्हारा नाम प्राप्त होता है ।। ३ ।। सलोकु ।। नानक का कथन है कि परमात्मा का स्मरण किया करो । उसके द्वार पर सारे सुख हैं । मैंने जो भी माँग अपने हृदय में उससे की है, वह पूर्ण हुई है ।। ४ ।। छंतु ।। गुरु के सान्निध्य में रहकर अब मेरा मन स्वतन्त्र हो गया है । जिन्होंने भी गुरु की शरण लेकर परमात्मा का नाम स्मरण किया है, उनकी आत्मा प्रभु की ज्योति में लीन रहती है । हे भाई ! परमात्मा का नाम स्मरण करने से सारे पाप मिट जाते हैं, विकारों की जलन बुझ जाती है, मन तृप्त हो जाता है । जिन पर प्रभु दया करता है, जिनकी बाँह पकड़कर अपना बना लेता है और आदर देता है, जिन्हें अपने चरणों में जगह देता है, (उन्हें) अपने में मिला लेता है और उनके जन्म-मरण के समस्त दुख जल जाते हैं । नानक प्रार्थना करता है कि जिन पर प्रभु कृपा करता है, उन्हें एक पल में अपने साथ मिला लेता है ।। ४ ।। २ ।।

।। जैतसरी छंत म० ५ ।। पाधाणू संसारु गारबि अटिआ । करते पाप अनेक माइआ रंग रटिआ । लोभि मोहि अभिमानि बूडे मरणु चीति न आवए । पुत्र मित्र बिउहार बनिता एह करत बिहावए । पुजि दिवस आए लिखे माए दुखु धरम दूतह डिठिआ । किरत करम न मिटै नानक हरिनाम धनु नही खटिआ ।। १ ।। उदम करहि अनेक हरिनामु न गावही । भरमहि जोनि असंख मरि जनमहि आवही । पसू पंखी सैल तरवर गणत कछू न आवए । बीजु बोवसि भोग भोगहि कीआ अपणा पावए । रतन जनमु हारंत जूऐ प्रभू आपि न भावही । बिनवंति नानक भरमहि भ्रमाए खिनु एकु टिकणु न पावही ।। २ ।। जोबनु गइआ बितीति जरु मलि बैठीआ । कर कंपहि सिरु डोल नैण न डीठिआ । नह नैण दीसै बिनु भजन ईसै छोडि माइआ

चालिआ। कहिआ न मानहि सिरि खाकु छानहि जिन संगि मनु तनु जालिआ। स्री राम रंग अपार पूरन नह निमख मन महि वूठिआ। बिनवंति नानक कोटि कागर बिनस बार न झूठिआ ॥ ३ ॥ चरन कमल सरणाइ नानकु आइआ। दुतरु भै संसारु प्रभि आपि तराइआ। मिलि साध संगे भजे स्री धर करि अंगु प्रभ जी तारिआ। हरि मानि लीए नाम दीए अवरु कछु न बीचारिआ। गुण निधान अपार ठाकुर मनि लोड़ीदा पाइआ। बिनवंति नानकु सदा त्रिपते हरिनामु भोजनु खाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

हे भाई! जगत यात्री है, फिर भी अहंकार में लिप्त रहता है। माया के कौतुकों में मस्त जीव अनेक पाप करते हैं। (जीव) लोभ, मोह में डूबे रहते हैं, इन्हें मृत्यु स्मरण नहीं होती। पुत्र, मित्र, स्त्री के संयोग में प्रवृत्त रहकर उम्र बीत जाती है। परमात्मा द्वारा लिखे उम्र के दिन जब खत्म हो जाते हैं, तो धर्मराज के दूतों को सामने देखने से बड़ी तकलीफ़ होती है। हे नानक! मनुष्य यहाँ परमात्मा का नाम-धन नहीं कमाता (जब कि) दूसरे कृत कर्मों का लेखा नहीं मिटता ॥ १ ॥ जो मनुष्य दूसरे कर्म तो करते हैं लेकिन परमात्मा का नाम नहीं जपते, वे अनगिनत योनियों में भटकते फिरते हैं और मृत्यु-सापेक्ष बार-बार जन्मते-मरते हैं। वे मनुष्य पशु, पक्षी, पत्थर, वृक्ष आदि योनियों में पड़ते हैं, जिनकी गणना नहीं हो सकती। हे भाई! जैसा बीज तू बोएगा वैसा ही फल खाएगा। हरेक मनुष्य कृत कर्मों का फल पाता है। जो मनुष्य इस क़ीमती मनुष्य-जन्म को जुए में हार गए हैं, वे परमात्मा को भी भले नहीं लगते। नानक निवेदन करते हैं कि ऐसे मनुष्य कुमार्गगामी होकर भटकते फिरते हैं (योनियों के चक्र में) एक क्षण भर भी टिक नहीं सकते ॥ २ ॥ आख़िर जवानी समाप्त हो जाती है और बुढ़ापा उसकी जगह ले लेता है। हाथ काँपने लगते हैं, सिर हिलने लगता है और आँखों से कुछ सूझता नहीं। मनुष्य जिस माया के लिए परमात्मा के भजन से अलग रहा, अन्त में उसी माया को छोड़कर चल पड़ता है। जिनके साथ अपना मन तृष्णा की अग्नि में जलाता रहा, वे (पुत्र आदि वृद्धावस्था में भी) कहना नहीं मानते, सिर पर राख डालते हैं (अपमानित करते हैं)। अनन्त एवं सर्वव्यापक परमात्मा के प्रेम की बातें एक क्षण के लिए भी मन में न बसीं। नानक निवेदन करते हैं कि यह नश्वर शरीर नष्ट होते देर नहीं लगती, जैसे करोड़ों मन काग़ज़ (पल भर में जलकर राख हो जाते हैं) ॥ ३ ॥ हे भाई! नानक प्रभु के कोमल चरणों का शरणागत है। यह संसार-समुद्र अनेक

भयों से परिपूरित है, इससे पार उतरना अत्यन्त विषम है। (अपने शरणागतों को) प्रभु ने आप संसार-समुद्र से पार उतार दिया। प्रभु ने सदा उन्हें मान-सम्मान दिया, अपने नाम की देन दी और उनके गुण-अवगुण का विचार न किया। नानक प्रार्थना करता है कि जिन मनुष्यों ने परमात्मा का नाम-भोजन पाया, वे माया की तृष्णा से सदा के लिए मुक्त हो गए; उन्होंने उस गुणों के ख़ज़ाने अनन्त मालिक-प्रभु को अपने मन में पा लिया, जिसे मिलने की उन्हें चिर-आकांक्षा थी ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ सलोक॥ आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसुरह। सिमरंति संत सरबत्र रमणं नानक अघ नासन जगदीसुरह ॥ १ ॥ पेखन सुनन सुनावनो मन महि द्रिड़ीऐ साचु। पूरि रहिओ सरबत्र मै नानक हरि रंगि राचु ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ हरि एकु निरंजनु गाईऐ सभ अंतरि सोई। करणकारण समरथ प्रभु जो करे सु होई। खिन महि थापिउथापदा तिसु बिनु नही कोई। खंड ब्रहमंड पाताल दीप रविआ सभ लोई। जिसु आपि बुझाए सो बुझसी निरमल जनु सोई ॥ १ ॥

॥ सलोक ॥ सन्तजन उस सर्वव्यापक परमेश्वर को स्मरण करते हैं, जो जगत के आदि से सर्वत्र मौजूद है, अब भी सर्वव्यापक है और अन्त में भी सर्वत्र अवस्थित रहेगा। हे नानक! वह जगत का मालिक-प्रभु सब पापों का नाश करनेवाला है ॥ १ ॥ उस सत्यस्वरूप प्रभु को भली प्रकार स्मरण करना चाहिए। वह आप देखनेवाला है, आप ही सुननेवाला है और आप ही सुनानेवाला है। हे नानक! उस हरि की प्यारी स्मृति में लीन हो जाओ, जो सर्वत्र मौजूद है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो प्रभु माया से निर्लिप्त है, केवल उसी की गुणस्तुति करनी चाहिए। वही सबके भीतर मौजूद है। वह प्रभु समस्त जगत का मूल है और सब प्रकार की शक्ति वाला है। वही होता है, जो प्रभु करता है। वह पल भर में जीवों को उत्पन्न करके नष्ट कर देता है, उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है, सब देशों, ब्रह्माण्डों, लोकों एवं द्वीपों में सर्वत्र प्रभु व्यापक है। जिस मनुष्य को यह विवेक प्रभु आप देता है, उसे यह सूझ होती है और वह मनुष्य पवित्र हो जाता है ॥ १ ॥

॥ सलोक ॥ रचंति जीअ रचना मात गरभ असथापनं । सासि सासि सिमरंति नानक महा अगनि न बिनासनं ॥ १ ॥ मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइ । नानक सो धणी किउ विसारिओ उधरहि जिसदै नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ रकतु बिंदु करि निंमिआ अगनि उदर मझारि । उरध मुखु कुचील बिकलु नरकि घोरि गुबारि । हरि सिमरत तू ना जलहि मनि तनि उरधारि । बिखम थानहु जिनि रखिआ तिसु तिलु न विसारि । प्रभ बिसरत सुखु कदे नाहि जासहि जनमु हारि ॥ २ ॥

॥ सलोक ॥ जो परमात्मा जीवों की सृजना करता है और उन्हें माँ के उदर में स्थान देता है, जीव उस परमात्मा को प्रत्येक श्वास के साथ स्मरण करते रहते हैं और इसीलिए वे माँ के उदर की भयानक अग्नि से नाश नहीं होते ॥ १ ॥ नानक का कथन है कि जब तुम्हारा मुँह नीचे को था, पैर ऊपर को थे, अत्यन्त विषम स्थान पर तुम्हारा निवास था, तब जिस प्रभु के नाम के प्रभाव से तू बचा रहा अब उसी मालिक को क्यों भुला दिया है ? ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे जीव ! माँ के रक्त और पिता के वीर्य से माँ के पेट की अग्नि में तू उत्पन्न हुआ । तेरा मुँह नीचे को था, गन्दा और भयानक था, (मानो) एक अँधेरे घोर नरक में पड़ा था । जिस प्रभु को स्मरण कर तू (उस स्थिति में) जलने से मुक्त था —उसे तन-मन से हृदय में स्मरण कर । जिस प्रभु ने तुझे विषम स्थान से बचाया, उसे तनिक न भुला । प्रभु को विस्मरण करने से कभी सुख नहीं होता (क्योंकि उसे विस्मरण करने पर) तू मनुष्य-जन्म की बाज़ी हार जाएगा ॥ २ ॥

॥ सलोक ॥ मन इछा दान करणं सरबत्र आसा पूरनह । खंडणं कलि कलेसह प्रभ सिमरि नानक नह दूरणह ॥ १ ॥ हभि रंग माणहि जिसु संगि तै सिउ लाईऐ नेहु । सो सहु बिंद न विसरउ नानक जिनि सुंदरु रचिआ देहु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीउ प्रान तनु धनु दीआ दीने रस भोग । ग्रिह मंदर रथ असु दीए रचि भले संजोग । सुत बनिता साजन सेवक दीए प्रभ देवन जोग । हरि सिमरत तनु मनु हरिआ लहि जाहि विजोग । साध संगि हरि गुण रमहु बिनसे सभि रोग ॥ ३ ॥

॥ सलोक ॥ हे नानक ! जो प्रभु हमें मनोवांछित देन देता है, जो सर्वत्र कामनाएँ पूर्ण करता है, जो हमारे झगड़े और क्लेश नष्ट करनेवाला

है, उसे स्मरण कर, वह तुझसे दूर नहीं है ॥ १ ॥ हे नानक ! जिस प्रभु की कृपा से तू सब आनन्द अनुभव करता है, उससे प्रीति कर। जिस प्रभु ने तुम्हारा सुन्दर शरीर बनाया है, ईश्वर (कृपा) करे कि वह तुम्हें कभी विस्मृत न हो ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस प्रभु ने तुम्हें शरीर और धन दिया तथा स्वादिष्ट पदार्थ आस्वादन के लिए दिए, तुझे सौभाग्यशाली बनाकर, तुझे उस प्रभु ने घर, मकान, रथ और घोड़े दिए। सर्वस्व प्रदाता प्रभु ने तुझे पुत्र, पत्नी, मित्र और नौकर दिए, उस प्रभु को स्मरण करने से मन, तन प्रसन्न रहता है और समस्त दुख मिट जाते हैं। सत्संग में बैठकर उस हरि के गुण स्मरण किया करो, (क्योंकि) उसे स्मरण करने से सारे क्लेश नष्ट हो जाते हैं ॥ ३ ॥

॥ सलोक ॥ कुटंब जतन करणं माइआ अनेक उदमह । हरि भगति भावहीणं नानक प्रभ बिसरत ते प्रेततह ॥ १ ॥ तुटड़ीआ सा प्रीति जो लाई बिअंन सिउ । नानक सची रीति सांई सेती रतिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु बिसरत तनु भसम होइ कहते सभि प्रेतु । खिनु ग्रिह महि बसन न देवही जिन सिउ सोई हेतु । करि अनरथ दरबु संचिआ सो कारजि केतु । जैसा बीजै सो लुणै करम इहु खेतु । अकिरतघणा हरि विसरिआ जोनी भरमेतु ॥ ४ ॥

॥ सलोक ॥ मनुष्य अपने परिवार के लिए कई प्रयत्न करते हैं, माया के लिए अनेक कोशिशें करते हैं, लेकिन प्रभु-भक्ति से रिक्त रहते हैं और हे नानक ! जो जीव प्रभु को विस्मृत करते हैं वे मानो भूत-प्रेत हैं ॥ १ ॥ जो प्रीति (प्रभु के अतिरिक्त) किसी अन्य से की जाती है, वह आखिरकार टूट जाती है (अस्थायी होती है)। लेकिन, हे नानक ! यदि प्रभु के प्रति अनुरक्त रहें, तो ऐसी जीवन-युक्ति हमेशा बनी रहती है ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ जिस आत्मा के बिछुड़ने से देह राख हो जाती है, तमाम लोग उसे अपवित्र कहने लगते हैं। जिन सम्बन्धियों से इतना लगाव होता है, वे निमिष मात्र के लिए भी घर में नहीं रहने देते। मनुष्य पाप कर-करके धन एकत्र करता रहा, लेकिन यह संचित धन आत्मा के किसी काम नहीं आता। यह शरीर कर्मों की खेती है; जैसा कोई बीज बोता है, वैसा ही काटता है। जो मनुष्य प्रभु के उपकारों को भुलाते हैं, वे उसे भी विस्मृत कर देते हैं और आखिरकार (८४ लाख) योनियों में भटकते हैं ॥ ४ ॥

॥ सलोक ॥ कोटि दान इसनानं अनिक सोधन पवित्रतह । उचरंति नानक हरि हरि रसना सरब पाप बिमुचते ॥ १ ॥

ईधणु कीतो मू घणा भोरी दितीमु भाहि । मनि वसंदड़ो सचु सहु नानक हभे डुखड़े उलाहि ।। २ ।। पउड़ी ।। कोटि अघा सभि नास होहि सिमरत हरि नाउ । मन चिंदे फल पाईअहि हरि के गुण गाउ । जनम मरण भै कटीअहि निहचल सच थाउ । पूरबि होवै लिखिआ हरि चरण समाउ । करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक बलि जाउ ।। ५ ।।

।। सलोक ।। हे नानक ! जो मनुष्य जिह्वा द्वारा प्रभु का नाम उच्चरित करते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । उन्होंने मानो करोड़ों रुपये दान कर लिये, करोड़ों बार तीर्थस्नान कर लिये हैं और अनेकों ही पवित्रता के साधन कर लिये हैं ।। १ ।। मैंने बहुत सारा ईंधन एकत्रित किया और उसी में थोड़ी सी अग्नि लगा दी (वह तमाम ईंधन भस्म हो गया, बिल्कुल इसी प्रकार) हे नानक ! यदि मन में सच्चा साईं बस जाए, तो तमाम दुख दूर हो जाते हैं (जैसे ईंधन को चिंगारी भस्म कर देती है, वैसे ही नाम की एक कणिका दुःखों के पर्वत जला देती है) ।। २ ।। ।। पउड़ी ।। प्रभु का नाम-स्मरण करने से करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं । प्रभु की गुणस्तुति करने से मनोवांछित फल मिलते हैं, जन्म से मरण तक समस्त भय मिट जाते हैं और शाश्वत सत्य पदवी मिल जाती है । प्रभु के चरणों में जगह तो तभी मिलती है, जब प्रभु के दरबार से ही भाग्य लिखा हो । नानक का कथन है कि हे प्रभु ! कृपा करो, मुझे पापों से बचा लो । मैं तुझ पर बलिहारी हूँ ।। ५ ।।

।।सलोक।। ग्रिह रचना अपारं मनि बिलास सुआदं रसह । कदांच नह सिमरंति नानक ते जंत बिसटा क्रिमह ।। १ ।। मुचु अडंबरु हभु किहु मंझि मुहबति नेह । सो सांई जैं विसरै नानक सो तनु खेह ।। २ ।। पउड़ी ।। सुंदर सेज अनेक सुख रस भोगण पूरे । ग्रिह सोइन चंदन सुगंध लाइ मोती हीरे । मन इछे सुख माणदा किछु नाहि विसूरे । सो प्रभु चिति न आवई विसटा के कीरे । बिनु हरि नाम न सांति होइ कितु बिधि मनु धीरे ।। ६ ।।

।। सलोक ।। घर की सजावट, मन में अरमान तथा स्वादिष्ट पदार्थों के चस्के (इन विविध प्रकार के मोह में लगकर) हे नानक ! जो मनुष्य कभी परमात्मा को स्मरण नहीं करते, वे विष्ठा के कीड़े हैं ।। १ ।। खूब साज-सज्जा हो, हर वस्तु उपलब्ध हो, हृदय में मुहब्बत और लगाव हो —इनके परिणामस्वरूप (हे नानक !) जिसे साँईं की स्मृति विस्मृत हो गई है, वह शरीर मानो मिट्टी ही है ।। २ ।। पउड़ी ।। यदि सुन्दर सेज मिली

हो, अनेक सुख हों और समस्त प्रकार के स्वादिष्ट भोग उपलब्ध हों; यदि हीरे-मोतियों से जड़े सोने के घर हों, जिसमें चन्दन की सुगन्धि हो; यदि मनुष्य मनोवांछित आनन्द भोगता हो और कोई चिन्ता, दुख न हो, (फिर भी) यदि मन में प्रभु की याद नहीं है तो (विविध पदार्थों के भोक्ताओं को) गन्दगी के कीड़े जानो। (वास्तव में तो) प्रभु के नाम के बिना शान्ति नहीं मिलती तथा और किसी भी प्रकार से मन धैर्य धारण नहीं करता ॥ ६ ॥

॥ सलोक ॥ चरन कमल बिरहं खोजंत बैरागी दहदिसह । तिआगंत कपट रूप माइआ नानक आनंद रूप साध संगमह ॥ १ ॥ मनि सांई मुखि उचरा वता हभे लोअ । नानक हभि अडंबर कूड़िआ सुणि जीवा सची सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बसता तूटी झुंपड़ी चीर सभि छिना । जाति न पति न आदरो उदिआन भ्रमिना । मित्र न इठ धन रूप हीण किछु साकु न सिना । राजा सगली स्रिसटि का हरि नामि मनु भिना । तिस की धूड़ि मनु उधरै प्रभु होइ सु प्रसंना ॥ ७ ॥

॥ सलोक ॥ हे नानक ! प्रभु का भक्त प्रभु के सुन्दर चरणों में जगह पाने के लिए दसों दिशाओं में दौड़ता है, छल रूपी माया का परित्याग करता है और आनन्द रूपी सत्संगति (उसे) प्राप्त होती है ॥ १ ॥ समस्त लौकिक दिखावे मुझे नश्वर दिख रहे हैं, मेरे मन में साँईं की स्मृति है। मैं उसका नाम उच्चरित करता हूँ और सारे जगत में चक्कर लगाता हूँ। (जगत में) उस सत्यस्वरूप प्रभु (शाश्वत) की शोभा सुनकर मैं जीवित हो जाता हूँ (अर्थात् उसका गुणगान ही मेरा प्राणाधार है) ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ यदि कोई मनुष्य टूटी हुई झोंपड़ी में रहता हो, उसके सब कपड़े फटे हुए हों, वह कुलीन भी न हो, उसका आदर भी कोई न करता हो और वह उजाड़ प्रदेश में रहता हो; कोई उसका मित्र, प्यारा न हो, उसके पास धन-सौन्दर्य न हो और न कोई उसका सगा सम्बन्धी हो; (इतना होने पर भी) यदि उसका मन प्रभु के नाम में अनुरक्त है, तो उसे समस्त पृथ्वी का स्वामी समझो। उस मनुष्य के चरणों की धूलि पाकर मन विकारों से बचता है और परमात्मा प्रसन्न होता है ॥ ७ ॥

॥ सलोक ॥ अनिक लीला राज रस रूपं छत्र चमर तखत आसनं । रचंति मूड़ अगिआन अंधह नानक सुपन मनोरथ माइआ ॥ १ ॥ सुपनै हभि रंग माणिआ मिठा लगड़ा मोहु । नानक नाम विहूणीआ सुंदरि माइआ ध्रोहु ॥२॥ पउड़ी ॥ सुपने

सेती चितु मूरखि लाइआ। बिसरे राज रस भोग जागत भखलाइआ। आरजा गई विहाइ धंधै धाइआ। पूरन भए न काम मोहिआ माइआ। किआ वेचारा जंतु जा आपि भुलाइआ ॥ ८ ॥

॥ सलोक ॥ अनेक कौतुक-तमाशे, राज्यसुख, सौन्दर्य, छत्र, चँवर और बैठने को शाही सिंहासन —इन पदार्थों में अन्धे, मूर्ख, अविवेकी व्यक्ति ही मस्त होते हैं। माया के ये कौतुक तो स्वप्न की चीज़ों के समान हैं ॥ १ ॥ हे नानक ! प्रभु के नाम से अलग रहने पर तो सुन्दर माया छलावा ही है। जैसे स्वप्न में मनुष्य सब प्रकार का आनन्द भोगता है और वह उसके लिए आकर्षण बना रहता है, लेकिन जागने पर कुछ भी देखने में नहीं आता (वैसे ही मनुष्य का सांसारिक आनन्द है) ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ मूर्ख मनुष्य स्वप्न के मोह में घिरा हुआ है। राज्य और रसों के भोगों में प्रभु को विस्मृत कर बड़बड़ा रहा है। दुनियावी धन्धे में भटकते हुए उसकी तमाम उम्र बीत जाती है, लेकिन माया-मोह में आबद्ध व्यक्ति के काम समाप्त होने में नहीं आते। बेचारे जीव के भी क्या वश में है ? उस प्रभु ने ही इसे भ्रम में डाला हुआ है ॥ ८ ॥

॥ सलोक ॥ बसंति स्वरग लोकह जितते प्रिथवी नवखंडणह। बिसरंत हरि गोपालह नानक ते प्राणी उदिआन भरमणह ॥ १ ॥ कउतक कोड तमासिआ चिति न आवसु नाउ। नानक कोड़ी नरक बराबरे उजड़ु सोई थाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ महा भइआन उदिआन नगर करि मानिआ। झूठ समग्री पेखि सचु करि जानिआ। काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ। सिरि लगा जम डंडु ता पछुतानिआ। बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥ ९ ॥

॥ सलोक ॥ यदि स्वर्ग जैसे देश में रहते हों, यदि तमाम पृथ्वी को जीत लें, इतना होने पर भी यदि जगत के रक्षक प्रभु को भुला दें तो (मानो) वे मनुष्य जंगल में भटक रहे हैं ॥ १ ॥ जगत के करोड़ों कौतुकपूर्ण तमाशों के कारण यदि प्रभु का नाम हृदय में न रहे तो, हे नानक ! उस हृदय को उजाड़ समझो। वह स्थान भयावह नरक के तुल्य है ॥ २ ॥ ॥पउड़ी॥ अत्यन्त भयावह जंगल को जीवों ने शहर स्वीकार कर लिया है। इन नश्वर पदार्थों को देखकर हमेशा स्थिर रहनेवाले मान लिया है, (इसलिए) अहंकारवश पागल हुए वे काम, क्रोध एवं लोभ के वशीभूत होकर फिरते हैं। (लेकिन) जब मृत्यु का डण्डा सिर पर लगता है, तब

पश्चात्ताप करते हैं। (वास्तव में) पूर्णगुरु की शरण लिये बिना मनुष्य शैतान के तुल्य है ॥ ९ ॥

॥ सलोक ॥ राज कपटं रूप कपटं धन कपटं कुल गरबतह। संचंति बिखिआ छलं छिद्रं नानक बिनु हरि संगि न चालते ॥ १ ॥ पेखंदड़ो की भुलु तुंमा दिसमु सोहणा। अढु न लहदड़ो मुलु नानक साथि न जुलई माइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चलदिआ नालि न चलै सो किउ संजीऐ। तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वंजीऐ। हरि बिसरिऐ किउ त्रिपतावै ना मनु रंजीऐ। प्रभू छोडि अन लागै नरकि समंजीऐ। होहु क्रिपाल दइआल नानक भउ भंजीऐ ॥ १० ॥

॥ सलोक ॥ हे नानक ! यह राज्य, रूप, धन और कुलीन होने का अभिमान —सब धोखा है। जीव छलपूर्वक और दूसरों पर दूषण लगाकर माया एकत्रित करते हैं, लेकिन प्रभु के नाम के बिना कोई चीज़ यहाँ से साथ नहीं जाती ॥ १ ॥ तुंबा (कड़वी ककड़ी) देखने में मुझे प्रिय लगा, क्या यह कोई दोष है ? किन्तु इसका तो आधी कौड़ी मूल्य भी नहीं मिलता। नानक का कथन है कि यह माया जीव के साथ नहीं जाती (तुंबे की तरह देखने में आकर्षक और चखने में कड़वी है) ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ उस माया को एकत्रित करने का क्या लाभ, जो अन्तिम समय में साथ नहीं जाती ? जिस माया से बिछुड़ जाना ज़रूरी है, उसके लिए बताओ, क्यों यत्न किया जाए ? प्रभु को विस्मृत करने पर मन न तो तृप्त होता है और न ही प्रसन्नता पाता है। हे प्रभु ! कृपा करके, दया करके मेरा भय दूर कर दीजिए ॥ १० ॥

॥ सलोक ॥ नच राज सुख मिसटं नच भोग रस मिसटं नच मिसटं सुख माइआ। मिसटं साध संगि हरि नानक दास मिसटं प्रभ दरसनं ॥ १ ॥ लगड़ा सो नेहु मंन मझाहू रतिआ। विधड़ो सच थोकि नानक मिठड़ा सो धणी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा। आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा। अगिआनु भरमु दुखु कटिआ गुर भए बसीठा। चरन कमल मनु बेधिआ जिउ रंगु मजीठा। जीउ प्राण तनु मनु प्रभू बिनसे सभि झूठा ॥ ११ ॥

॥ सलोक ॥ राज्यादि के सुख, भोगों के आस्वादन और माया के आमोद-प्रमोद —इनमें कुछ भी स्वादिष्ट नहीं है। हे नानक ! सत्संग में

मिला प्रभु का नाम मीठा है और सेवकों को प्रभु का साक्षात्कार मीठा लगता है ॥ १ ॥ हे नानक ! जिस मनुष्य को वह अनुराग हो जाए, जिससे मन रँग जाए और जिसका मन सच्चे नाम रूपी पदार्थ के साथ पिरोया जाए, उस मनुष्य को प्रभु प्यारा लगता है ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ परमात्मा के नाम के बिना भक्तों को कोई चीज़ मीठी नहीं लगती। उन्होंने छानबीन करके देख लिया है कि नाम के बिना सारे स्वाद फीके हैं। सतिगुरु का समर्थन पाकर उनका अज्ञान, दुबिधा और दुख सब कुछ दूर हो गया। जिस प्रकार मजीठ से कपड़े पर पक्का रंग चढ़ता है, उसी प्रकार उनका मन प्रभु के सुन्दर चरणों में दृढ़ हो जाता है। प्रभु ही उनकी आत्मा और प्राण है (क्योंकि) अन्य नश्वर आकर्षण उनके भीतर से नष्ट हो जाते हैं ॥ ११ ॥

॥ सलोक ॥ तिअकत जलं नह जीव मीनं नह तिआगि चात्रिक मेघ मंडलह। बाण बेधंच कुरंक नादं अलि बंधन कुसम बासनह। चरन कमल रचंति संतह नानक आन न रुचते ॥ १ ॥ मुखु डेखाऊ पलक छडि आन न डेऊ चितु। जीवण संगमु तिसु धणी हरि नानक संतां मितु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिउ मछुली बिनु पाणीऐ किउ जीवणु पावै। बूंद विहूणा चात्रिको किउकरि त्रिपतावै। नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै। भवरु लोभी कुसम बासु का मिलि आपु बंधावै। तिउ संत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥ १२ ॥

॥ सलोक ॥ पानी का परित्याग कर मछली जीवित नहीं रह सकती, मेघ-मण्डल का परित्याग कर पपीहा जीवित नहीं रह सकता, हरिण नाद के तीर द्वारा बींधा जाता है और पुष्पों की सुगन्धि भौंरे के बन्धन का कारण बन जाती है, इसी प्रकार सन्तजन प्रभु के कमल-चरणों में लीन रहते हैं (क्योंकि) प्रभु-चरणों के अतिरिक्त उन्हें कुछ भला नहीं लगता ॥ १ ॥ यदि एक पल मात्र ही मैं तुम्हारा मुख देख लूँ, तो तुम्हें छोड़कर मैं किसी और के प्रति कभी मन न लगाऊँ। हे नानक ! जीने की युक्ति उस मालिक-प्रभु के साथ ही हो सकती है, (वास्तव में) वह प्रभु सन्तों का मित्र है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस प्रकार मछली पानी के बिना जीवित नहीं रह सकती, जिस प्रकार मेंह की बूंद के बिना पपीहा तृप्त नहीं हो सकता, जिस प्रकार आवाज़ हरिण को मोह लेती है और वह आवाज़ सुनकर उस ओर ही दौड़ पड़ता है, जिस प्रकार भँवरा पुष्प की सुगन्धि का प्रेमी होता है जिसके (परिणामस्वरूप) अपने आप को बन्दी बना लेता

ह, उसी प्रकार सन्तों को प्रभु के साथ प्रेम होता है, वे प्रभु का दर्शन करके तृप्त हो जाते हैं ।। १२ ।।

।। सलोक ।। चितवंति चरन कमलं सासि सासि अराधनह । नह बिसरंति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ।। १ ।। सीतड़ा मंन मंझाहि पलक न थीवै बाहरा । नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखंदो सचु धणी ।। २ ।। पउड़ी ।। आसावंती आस गुसाई पूरीऐ । मिलि गोपाल गोबिंद न कबहू झूरीऐ । देहु दरसु मनि चाउ लहि जाहि विसूरीऐ । होइ पवित्र सरीरु चरना धूरीऐ । पारब्रहम गुर देव सदा हजूरीऐ ।। १३ ।।

।। सलोक ।। जो मनुष्य प्रभु के कमल रूपी चरणों का चिन्तन करते हैं, श्वास-श्वास उसका स्मरण करते हैं और जो अविनाशी प्रभु का नाम कभी विस्मृत नहीं करते, नानक का कथन है कि परमेश्वर उनकी आशाएँ पूर्ण करता है ।। १ ।। जिन मनुष्यों के मन में प्रभु सदा विद्यमान रहता है, जिनसे एक क्षण के लिए भी वह अलग नहीं होता, नानक का कथन है कि सच्चा मालिक उनकी आशाएँ पूर्ण करता है और उनकी सर्वांगीण देखभाल करता है ।। २ ।। पउड़ी ।। हे पृथ्वीपति, पृथ्वी-रक्षक गोविन्द ! मेरी कामनाएँ पूर्ण करो, मुझे दर्शन दो ताकि मैं कभी दुखी न होऊँ । मेरे मन में चाव है, मुझे दर्शन दो ताकि मेरे दुख मिट जाएँ । तुम्हारे चरणों की धूलि से मेरा शरीर पवित्र हो जाए । हे प्रभु ! हे गुरुदेव ! (कृपा करो) मैं हमेशा तुम्हारी सेवा में रहूँ ।। १३ ।।

।।सलोक।। रसना उचरंति नामं स्रवणं सुनंति सबद अंम्रितह । नानक तिन सद बलिहारं जिना धिआनु पारब्रहमणह ।। १ ।। हभि कूड़ावे कंम इकसु साई बाहरे । नानक सेई धंनु जिना पिरहड़ी सच सिउ ।। २ ।। पउड़ी ।। सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा । पूरे ते परधान निवावहि प्रभ मथा । हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा । चरन पुनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा । संतां संगि उधारु सगला दुखु लथा ।। १४ ।।

।। सलोक ।। जो मनुष्य जिह्वा द्वारा ब्रह्म का नाम उच्चरित करते हैं, जो कानों द्वारा गुणस्तुति की पवित्र वाणी सुनते हैं और जो ब्रह्म का नाम स्मरण करते हैं, हे नानक ! मैं उन मनुष्यों पर हमेशा बलिहारी जाता हूँ ।। १ ।। एक प्रभु-पति की याद के अतिरिक्त समस्त काम व्यर्थ हैं । हे नानक ! केवल वही व्यक्ति भाग्यशाली हैं, जिनका सच्चे प्रभु के

साथ प्रेम है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मैं उन व्यक्तियों पर सदा बलिहारी हूँ, जो प्रभु की बातें सुनते हैं। वे मनुष्य सर्वगुणसम्पन्न तथा सर्वश्रेष्ठ हैं, जो प्रभु के समक्ष सिर झुकाते हैं। वे हाथ सुन्दर लगते हैं जो अनन्त प्रभु की गुणस्तुति लिखते हैं, वे चरण पवित्र हैं जो प्रभु के मार्ग का अनुसरण करते हैं। सन्तों की संगति में दुखों से बचाव हो जाता है और समस्त क्लेश दूर हो जाता है ॥ १४ ॥

॥ सलोकु ॥ भावी उदोत करणं हरि रमणं संजोग पूरनह। गोपाल दरस भेटं सफल नानक सो महूरतह ॥ १ ॥ कीम न सका पाइ सुख मिती हू बाहरे। नानक सा वेलड़ी परवाणु जितु मिलंदड़ो मापिरी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सा वेला कहु कउणु है जितु प्रभ कउ पाई। सो मूरतु भला संजोगु है जितु मिलै गुसाई। आठ पहर हरि धिआइ कै मन इछ पुजाई। वडै भागि सत संगु होइ निवि लागा पाई। मनि दरसन की पिआस है नानक बलि जाई ॥ १५ ॥

॥ सलोकु ॥ हे नानक ! वह घड़ी भाग्यशालिनी है, जब पूर्ण संयोग के साथ मस्तक पर लिखे लेख प्रकट होते हैं, प्रभु का स्मरण किया जाता है और परमात्मा का दर्शन होता है ॥ १ ॥ प्रभु इतने अपरिमित सुख देता है कि मैं उनका मूल्यांकन नहीं कर सकता। वही घड़ी भाग्यशालिनी (वास्तविक) है, जिस घड़ी अपना प्यारा प्रभु मिल जाए ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ (ईश्वर करे) वह समय शीघ्र आए, जब मैं प्रभु को मिलूँ। वह मुहूर्त, वह समय भाग्यशाली होता है, जब पृथ्वी का मालिक-प्रभु जीव को मिलता है। मैं आठों प्रहर प्रभु को स्मरण कर अपने मन की आकांक्षा (प्रभु-मिलन की चाह) पूर्ण करूँ। सौभाग्यवश सत्संग मिल जाए, तो मैं झुक-झुककर सत्संगियों के चरण स्पर्श करूँ। मेरे मन में प्रभु के दर्शनों की प्यास है। हे नानक ! मैं सत्संगियों पर बलिहारी हूँ ॥ १५ ॥

॥ सलोक ॥ पतित पुनीत गोबिंदह सरब दोख निवारणह। सरणि सूर भगवानह जपंति नानक हरि हरि हरे ॥ १ ॥ छडिओ हभु आपु लगड़ो चरणा पासि। नठड़ो दुख तापु नानक प्रभु पेखंदिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ। रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ। भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ। तुझ बिनु नाही

है, उसी प्रकार सन्तों को प्रभु के साथ प्रेम होता है, वे प्रभु का दर्शन करके तृप्त हो जाते हैं ॥ १२ ॥

॥सलोक॥ चितवंति चरन कमलं सासि सासि अराधनह । नह बिसरंति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ॥ १ ॥ सीतड़ा मंन मंझाहि पलक न थीवै बाहरा । नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखंदो सचु धणी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आसावंती आस गुसाई पूरीऐ । मिलि गोपाल गोबिंद न कबहू झूरीऐ । देहु दरसु मनि चाउ लहि जाहि विसूरीऐ । होइ पवित्र सरीरु चरना धूरीऐ । पारब्रहम गुर देव सदा हजूरीऐ ॥ १३ ॥

॥ सलोक ॥ जो मनुष्य प्रभु के कमल रूपी चरणों का चिन्तन करते हैं, श्वास-श्वास उसका स्मरण करते हैं और जो अविनाशी प्रभु का नाम कभी विस्मृत नहीं करते, नानक का कथन है कि परमेश्वर उनकी आशाएँ पूर्ण करता है ॥ १ ॥ जिन मनुष्यों के मन में प्रभु सदा विद्यमान रहता है, जिनसे एक क्षण के लिए भी वह अलग नहीं होता, नानक का कथन है कि सच्चा मालिक उनकी आशाएँ पूर्ण करता है और उनकी सर्वांगीण देखभाल करता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे पृथ्वीपति, पृथ्वी-रक्षक गोविन्द ! मेरी कामनाएँ पूर्ण करो, मुझे दर्शन दो ताकि मैं कभी दुखी न होऊँ । मेरे मन में चाव है, मुझे दर्शन दो ताकि मेरे दुख मिट जाएँ । तुम्हारे चरणों की धूलि से मेरा शरीर पवित्र हो जाए । हे प्रभु ! हे गुरुदेव ! (कृपा करो) मैं हमेशा तुम्हारी सेवा में रहूँ ॥ १३ ॥

॥सलोक॥ रसना उचरंति नामं स्रवणं सुनंति सबद अंम्रितह । नानक तिन सद बलिहारं जिना धिआनु पारब्रहमणह ॥ १ ॥ हभि कूड़ावे कंम इकसु साई बाहरे । नानक सेई धंनु जिना पिरहड़ी सच सिउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा । पूरे ते परधान निवावहि प्रभ मथा । हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा । चरन पुनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा । संतां संगि उधारु सगला दुखु लथा ॥ १४ ॥

॥ सलोक ॥ जो मनुष्य जिह्वा द्वारा ब्रह्म का नाम उच्चरित करते हैं, जो कानों द्वारा गुणस्तुति की पवित्र वाणी सुनते हैं और जो ब्रह्म का नाम स्मरण करते हैं, हे नानक ! मैं उन मनुष्यों पर हमेशा बलिहारी जाता हूँ ॥ १ ॥ एक प्रभु-पति की याद के अतिरिक्त समस्त काम व्यर्थ हैं । हे नानक ! केवल वही व्यक्ति भाग्यशाली हैं, जिनका सच्चे प्रभु के

साथ प्रेम है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मैं उन व्यक्तियों पर सदा बलिहारी हूँ, जो प्रभु की बातें सुनते हैं। वे मनुष्य सर्वगुणसम्पन्न तथा सर्वश्रेष्ठ हैं, जो प्रभु के समक्ष सिर झुकाते हैं। वे हाथ सुन्दर लगते हैं जो अनन्त प्रभु की गुणस्तुति लिखते हैं, वे चरण पवित्र हैं जो प्रभु के मार्ग का अनुसरण करते हैं। सन्तों की संगति में दुखों से बचाव हो जाता है और समस्त क्लेश दूर हो जाता है ॥ १४ ॥

॥ सलोकु ॥ भावी उदोत करणं हरि रमणं संजोग पूरनह। गोपाल दरस भेटं सफल नानक सो महूरतह ॥ १ ॥ कीम न सका पाइ सुख मिती हू बाहरे। नानक सा वेलड़ी परवाणु जितु मिलंदड़ो मापिरी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सा वेला कहु कउणु है जितु प्रभ कउ पाई। सो मूरतु भला संजोगु है जितु मिलै गुसाई। आठ पहर हरि धिआइ कै मन इछ पुजाई। वडै भागि सत संगु होइ निवि लागा पाई। मनि दरसन की पिआस है नानक बलि जाई ॥ १५ ॥

॥ सलोकु ॥ हे नानक ! वह घड़ी भाग्यशालिनी है, जब पूर्ण संयोग के साथ मस्तक पर लिखे लेख प्रकट होते हैं, प्रभु का स्मरण किया जाता है और परमात्मा का दर्शन होता है ॥ १ ॥ प्रभु इतने अपरिमित सुख देता है कि मैं उनका मूल्यांकन नहीं कर सकता। वही घड़ी भाग्यशालिनी (वास्तविक) है, जिस घड़ी अपना प्यारा प्रभु मिल जाए ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ (ईश्वर करे) वह समय शीघ्र आए, जब मैं प्रभु को मिलूँ। वह मुहूर्त, वह समय भाग्यशाली होता है, जब पृथ्वी का मालिक-प्रभु जीव को मिलता है। मैं आठों प्रहर प्रभु को स्मरण कर अपने मन की आकांक्षा (प्रभु-मिलन की चाह) पूर्ण करूँ। सौभाग्यवश सत्संग मिल जाए, तो मैं झुक-झुककर सत्संगियों के चरण स्पर्श करूँ। मेरे मन में प्रभु के दर्शनों की प्यास है। हे नानक ! मैं सत्संगियों पर बलिहारी हूँ ॥ १५ ॥

॥ सलोक ॥ पतित पुनीत गोबिंदह सरब दोख निवारणह। सरणि सूर भगवानह जपंति नानक हरि हरि हरे ॥ १ ॥ छडिओ हभु आपु लगड़ो चरणा पासि। नठड़ो दुख तापु नानक प्रभु पेखंदिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ। रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ। भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ। तुझ बिनु नाही

कोइ बिनउ मोहि सारिआ। करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥ १६ ॥

॥ सलोक ॥ गोविन्द प्रभु विकारियों को भी पवित्र करनेवाला है और तमाम दोषों का निवारक है। हे नानक ! जो मनुष्य उस प्रभु को जपते हैं, भगवान उन शरणागतों की लज्जा रखने में समर्थ है ॥१॥ जिस मनुष्य ने समस्त अहंत्वभाव मिटा दिया, जो मनुष्य प्रभु-चरणों में मन लगाए रहा, हे नानक ! प्रभु के दर्शन करने से उसके समस्त दुख, क्लेश नष्ट हो जाते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हे दयालु प्रभु ! मैं तुम्हारे द्वार पर आ गया हूँ (आ गिरा हूँ), इसलिए मुझे चरणों में जगह दो। हे दीनदयालु प्रभु ! मेरी प्रतिष्ठा बचाइए, मैं भटकता-भटकता अब बहुत थक गया हूँ। भक्तों को प्यार करना और पतितों का उद्धार करना —यह तुम्हारा विरद है। हे प्रभु ! तुम्हारे बिना दूसरा कोई नहीं है, जो मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर सफल बनाए। हे दयालु ! मेरा हाथ पकड़कर मुझे संसार-समुद्र से निकाल लो ॥ १६ ॥

॥ सलोक ॥ संत उधरण दइआलं आसरं गोपाल कीरतनह। निरमलं संत संगेण ओट नानक परमेसुरह ॥ १ ॥ चंदन चंदु न सरद रुति मूलि न मिटई घांम। सीतलु थीवै नानका जपंदड़ो हरि नामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चरन कमल की ओट उधरे सगल जन। सुणि परतापु गोविंद निरभउ भए मन। तोटि न आवै मूलि संचिआ नामु धन। संत जना सिउ संगु पाईऐ वडै पुन। आठ पहर हरि धिआइ हरि जसु नित सुन ॥ १७ ॥

॥ सलोक ॥ जो सन्तजन गोपाल प्रभु के कीर्तन को अपने जीवन का सहारा बना लेते हैं, दयालु प्रभु उन सन्तों को माया के प्रभाव से बचा लेता है। उन सन्तों के सान्निध्य में रहकर सब पवित्र हो जाते हैं, (इसलिए) ऐसे सन्तों की संगति में रहकर परमेश्वर का अवलम्ब लो ॥ १ ॥ चाहे चन्दन हो, चाहे चन्द्रमा और चाहे शीत ऋतु हो —इनके द्वारा मन की जलन बिल्कुल ही नहीं मिट सकती। हे नानक ! प्रभु का नाम-स्मरण करने से ही मनुष्य का मन शान्त होता है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु के सुन्दर चरणों का आश्रय लेकर सारे जीव बच जाते हैं। गोविन्द की महिमा सुनकर सबके मन निर्भीक हो जाते हैं। वे प्रभु का नाम-धन एकत्रित करते हैं, जिसमें कभी कमी नहीं होती। ऐसे गुरमुखों की संगति सौभाग्यवश मिलती है। ऐसे सन्तजन आठों प्रहर प्रभु का स्मरण करते हैं और हमेशा प्रभु का यश श्रवण करते हैं ॥ १७ ॥

॥सलोक॥ दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह। दइआल पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ ॥ १ ॥ भाहि बलंदड़ी बुझि गई रखंदड़ो प्रभु आपि। जिनि उपाई मेदनी नानक सो प्रभु जापि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जा प्रभ भए दइआल न बिआपै माइआ। कोटि अघा गए नास हरि इकु धिआइआ। निरमल भए सरीर जन धूरी नाइआ। मन तन भए संतोख पूरन प्रभु पाइआ। तरे कुटंब संगि लोग कुल सबाइआ ॥ १८ ॥

॥ सलोक ॥ हे नानक ! यदि मनुष्य दयालु सर्वव्यापक प्रभु के नाम की महिमा-गायन करे तो प्रभु उस पर कृपा करता है, उसके दुखों को नष्ट करता है और वह मनुष्य माया-मोह में नहीं फँसता ॥ १ ॥ हे नानक ! जिस प्रभु ने सारी सृष्टि का सृजन किया है, उसी का स्मरण करो। (क्योंकि स्मरण करने से) वह प्रभु आप जीव का रक्षक बनता है और उसके भीतर प्रज्वलित तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जब जीव पर प्रभु कृपालु हों, तो माया असर नहीं करती। एक प्रभु को स्मरण करने से करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं। प्रभु का स्मरण करनेवाले व्यक्तियों की चरणधूलि में नहाने से शरीर पवित्र हो जाते हैं, सन्तों की संगति में पूर्णप्रभु मिल जाता है और तन, मन दोनों को सन्तोष प्राप्त होता है। ऐसे मनुष्यों की संगति में उनके पारिवारिक व्यक्तियों और समस्त वंशावली का उद्धार हो जाता है ॥ १८ ॥

॥ सलोक ॥ गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह। गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥ १ ॥ भउजलु बिखमु असगाहु गुरि बोहिथै तारिअमु। नानक पूर करंम सतिगुर चरणी लगिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धंनु धंनु गुरदेव जिसु संगि हरि जपे। गुर क्रिपाल जब भए त अवगुण सभि छपे। पारब्रहम गुरदेव नीचहु उच थपे। काटि सिलक दुख माइआ करि लीने अपदसे। गुण गाए बेअंत रसना हरि जसे ॥ १९ ॥

॥ सलोक ॥ हे नानक ! गुरु गोविन्द-रूप है, गोपाल-रूप है, सर्वव्यापक नारायण का रूप है। गुरु दया का घर है, सामर्थ्यवान है और विकार-ग्रस्तों का उद्धार करनेवाला है ॥ १ ॥ संसार-समुद्र अत्यन्त भयानक और अथाह है, लेकिन गुरु रूपी जहाज़ ने मुझे इससे बचा लिया है। हे नानक ! जो मनुष्य सतिगुरु के चरणों में जगह पाते हैं, उनके

भाग्य भले होते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मैं गुरु पर बलिहारी हूँ, जिसके सान्निध्य में रहने से प्रभु का भजन किया जा सकता है। जब सतिगुरु कृपालु होता है, तो समस्त अवगुण दूर हो जाते हैं, प्रभु रूपी गुरु निम्न से उच्च (अर्थात् अधम से उत्तम) कर देता है, माया के दुखों के बन्धन काटकर अपना सेवक बना लेता है। (गुरु के सान्निध्य में रहकर) जिह्वा द्वारा अनन्त प्रभु के गुण गाए जा सकते हैं और प्रभु की गुणस्तुति की जा सकती है ॥ १९ ॥

॥ सलोक ॥ द्रिसटंत एको सुनीअंत एको वरतंत एको नरहरह । नामदानु जाचंति नानक दइआल पुरख क्रिपा करह ॥ १ ॥ हिकु सेवी हिकु संमला हरि इकसु पहि अरदासि । नाम वखरु धनु संचिआ नानक सची रासि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभ दइआल बेअंत पूरन इकु एहु । सभु किछु आपे आपि दूजा कहा केहु । आपि करहु प्रभ दानु आपे आपि लेहु । आवण जाणा हुकमु सभु निहचलु तुधु थेहु । नानकु मंगै दानु करि किरपा नामु देहु ॥ २० ॥

॥ सलोक ॥ हे नानक ! जिन पर दयालु प्रभु कृपा करता है, वे उससे प्रभु-भक्ति की कामना करते हैं। उन्हें सर्वत्र सृष्टि का स्वामी ही दिखता है, वे उसी का शब्द सुनते हैं और उसे व्यापक मानते हैं ॥१॥ मेरी प्रभु के पास एक प्रार्थना है कि मैं प्रभु को ही स्मरण करता रहूँ और उसे हृदय में सँभालकर रखूँ। हे नानक ! जिन व्यक्तियों ने नाम रूपी सौदा, नाम रूपी धन जोड़ा है, उनकी यह पूंजी सनातन है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ केवल यह दयालु और अनन्त प्रभु ही सर्वत्र विद्यमान है, वह आप ही आप सर्वस्व है और दूसरा कौन सा बतलाऊँ ? हे प्रभु ! तुम आप ही दाता हो और आप ही दान लेनेवाले हो। जीवों का जन्मना और मरना —सब तुम्हारा हुक्म है। तुम्हारा अपना ठिकाना शाश्वत है। नानक तुमसे कृपा की याचना करता है, इसलिए कृपा करो और नाम दो ॥ २० ॥

जैतसरी बाणी भगता की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

नाथ कछूअ न जानउ । मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी । हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥ १ ॥ इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ । पलु पलु हरि जी ते अंतरु

पारिओ ।। २ ।। जत देखउ तत दुख की रासी । अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ।। ३ ।। गोतम नारि उमापति स्वामी । सीसु धरनि सहस भग गांमी ।।४।। इन दूतन खलु बधु करि मारिओ । बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ।। ५ ।। कहि रविदास कहा कैसे कीजै । बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै ।। ६ ।। १ ।।

हे प्रभु ! मैं अपना मन माया के हाथ बेच चुका हूँ । मेरा इसके सामने वश नहीं चलता ।। १ ।। रहाउ ।। हे स्वामी ! तुम जगत के पति कहलाते हो और हम कलियुगी विषयी जीव ।। १ ।। इन पाँचों (कामादिक पाँचों) से मेरा मन इतना विकृत है कि हर पल इन्होंने परमात्मा से मेरा अलगाव कर दिया है ।। २ ।। मैं जिधर देखता हूँ उस तरफ़ दुखों की ही राशि दृष्टिगत होती है, ये सब देखकर भी मेरा मन नहीं समझता । वेदादिक धार्मिक पुस्तकें भी इसी तथ्य का साक्ष्य दे रही हैं ।। ३ ।। गौतम की पत्नी अहल्या, पार्वती का पति शिव, ब्रह्मा, हज़ारों योनियों के चिह्न वाला इन्द्र (सब कामादिक द्वारा पराजित हुए हैं) ।। ४ ।। इन विषय-भोगों ने मेरे मूर्ख मन पर अनेक प्रहार किये हैं, लेकिन यह मन अत्यन्त निर्लज्ज है (इसीलिए) अभी भी इन विकारों से विमुख नहीं हुआ ।। ५ ।। रविदास का कथन है कि कहाँ जाऊँ ? क्या करूँ ? परमात्मा के अतिरिक्त दूसरे किसकी शरण लूँ ? ।। ६ ।। १ ।।

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।।

रागु टोडी महला ४ घरु १

हरि बिनु रहि न सकै मनु मेरा । मेरे प्रीतम प्रान हरि प्रभु गुरु मेले बहुरि न भवजलि फेरा ।। १ ।। रहाउ ।। मेरै हीअरै लोच लगी प्रभ केरी हरि नैनहु हरि प्रभु हेरा । सतिगुरि दइआलि हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि पाधरु हरि प्रभ केरा ।। १ ।। हरि रंगी हरि नामु प्रभ पाइआ हरि गोविंद हरि प्रभ केरा । हरि हिरदै मनि तनि मीठा लागा मुखि मसतकि भागु चंगेरा ।। २ ।। लोभ विकार जिना मनु लागा हरि विसरिआ

पुरखु चंगेरा। ओइ मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि तिन मसतकि भागु मंदेरा ॥ ३ ॥ बिबेक बुधि सतिगुर ते पाई गुर गिआनु गुरू प्रभ केरा। जन नानक नामु गुरू ते पाइआ धुरि मसतकि भागु लिखेरा ॥ ४ ॥ १ ॥

(हे भाई!) मेरा मन परमेश्वर के (स्मरण) बिना रह नहीं सकता। मेरे प्राणप्रिय प्रभु को सद्गुरु ने मिला दिया है, इसलिए अब मैं संसार-सागर से पार हो गया हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे हृदय में अभिलाषा थी कि प्रभु को अपने नयनों से निहारूँ। दयालु सद्गुरु ने प्रभु का नाम मेरे हृदय में दृढ़ किया, क्योंकि प्रभु को प्राप्त करने का यही मार्ग सरल है ॥ १ ॥ बहुरंगी (अनेक कौतुकों के स्वामी) हरि-प्रभु गोविन्द का नाम जिसे प्राप्त हो जाता है, उसे भगवान हृदय और तन-मन से मीठा लगने लगता है, उसके मुख पर और मस्तक पर अच्छा भाग्य जाग उठता है (अर्थात् उसके भाग्य जाग जाते हैं) ॥ २ ॥ परन्तु जिनका मन लोभ आदि विकारों में लगा रहता है, उन्हें वह श्रेष्ठ अकालपुरुष (परमात्मा) विस्मृत रहता है। ऐसे वे मनमुख (मन के वशीभूत) लोग मूढ़ एवं अज्ञानी कहलाते हैं, ऐसे लोग मन्दभाग्य हैं ॥ ३ ॥ श्री गुरुजी का कथन है कि जिनके माथे पर भगवान के घर से अच्छे भाग्य लिखे थे, उन्हें सद्गुरु से ईश्वर की नाम-उपलब्धि हुई। उन्हें विवेक-बुद्धि (अच्छे-बुरे की पहचान करने की ज्ञानात्मिका बुद्धि) प्राप्त हुई और प्रभु-मिलाप का ज्ञान हुआ ॥ ४ ॥ १ ॥

टोडी महला ५ घरु १ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ संतन अवर न काहू जानी। बेपरवाह सदा रंगि हरि कै जाको पाखु सुआमी ॥ रहाउ ॥ ऊच समाना ठाकुर तेरो अवर न काहू तानी। ऐसो अमरु मिलिओ भगतन कउ राचि रहे रंगि गिआनी ॥ १ ॥ रोग सोग दुख जरा मरा हरि जनहि नही निकटानी। निरभउ होइ रहे लिव एकै नानक हरि मनु मानी ॥ २ ॥ १ ॥

(हे भाई!) परमेश्वर जिनकी सहायता करता है, ऐसे सन्तजन और किसी को (ईश्वर के बिना) नहीं जानते। वे सदा बेपरवाह और प्रभु के रंग में मस्त रहते हैं ॥ रहाउ ॥ (सन्तों की दृष्टि में) हे ठाकुर! तुम्हारे शामियाने से ऊँचा अन्य किसी का शामियाना तना हुआ नहीं (सन्त-भक्तों का शरण-स्थल तुमसे बढ़कर अन्य कोई नहीं, यह भाव है)। ऐसा अमर ईश्वर भक्तों को प्राप्त होने पर वे ज्ञानवान होकर उसके ही रंग

में रँगे रहते हैं ॥ १ ॥ श्री गुरुजी का कथन है कि कोई रोग, शोक, दुख, बुढ़ापा (जरा) और मृत्यु किसी भक्तजन के पास नहीं फटकते। वे भक्त तो निर्भय होकर प्रभु से लग्न लगाए रखते हैं और उस एकमेव ईश्वर का ही मन में ध्यान करते हैं ॥ २ ॥ १ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ हरि बिसरत सदा खुआरी। ताकउ धोखा कहा बिआपै जाकउ ओट तुहारी ॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सरप जैसे अरजारी। नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ॥ १ ॥ गुण निधान गुण तिन ही गाए जाकउ किरपा धारी। सो सुखीआ धंनु उसु जनमा नानक तिसु बलिहारी ॥ २ ॥ २ ॥

परमेश्वर को भूल जानेवाले सदा ही अप्रतिष्ठित (प्रतिष्ठाहीन) होते हैं। हे ईश्वर! जिन्हें तुम्हारी ओट प्राप्त हो उन्हें भला किसी प्रकार का धोखा कहाँ ? ॥ रहाउ ॥ भगवान के स्मरण के बिना जीवन व्यतीत करना साँप के समान अपनी आयु बिताना है (साँप अपनी लम्बी आयु अपना विष पालकर और छिप-छिपकर बिताता है, ऐसे ही भगवन्नाम के स्मरण बिना यह जीव अपनी इच्छा-वासनाओं के विष की जलन में जलता हुआ जीवन व्यतीत करता है)। ऐसा व्यक्ति चाहे नव-खण्ड (सम्पूर्ण पृथ्वी) का राज्य भी प्राप्त कर ले, तो भी अन्त में जीवन की बाज़ी हारकर ही जाता है ॥ १ ॥ श्री गुरुजी कहते हैं— जिस पर भगवान ने अपनी कृपा की हो, वही उस गुणनिधान प्रभु के गुण गाने में समर्थ हो सकता है। सचमुच वही सुखी कहा जा सकता है और उसका ही जन्म धन्य है। ऐसे जीव के बलिहारी जाना चाहिए ॥ २ ॥ २ ॥

टोडी महला ५ घरु २ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ धाइओ रे मन दहदिस धाइओ। माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिओ तिनि प्रभि आपि भुलाइओ ॥ रहाउ ॥ हरि कथा हरि जस साध संगति सिउ इकु मुहतु न इहु मनु लाइओ। बिगसिओ पेखि रंगु कसुंभ को पर ग्रिह जोहनि जाइओ ॥ १ ॥ चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सतपुरखु मनाइओ। धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइओ ॥ २ ॥ नाम दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ। नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ

नह बूझिओ अपनाइओ ।। ३ ।। परउपकार न कबहू कीए नही सतिगुरु सेवि धिआइओ । पंच दूत रचि संगति गोसटि मतवारो मद माइओ ।। ४ ।। करउ बेनती साध संगति हरि भगति वछल सुणि आइओ । नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ ।। ५ ।। १ ।। ३ ।।

हे प्रभो, यह मन दसों दिशाओं की ओर भागता है (अर्थात् स्थिर नहीं)। माया में मग्न एवं स्वादों के लालच में मोहित हुआ स्वयं (आत्मरूप) को भूला है ।। रहाउ ।। हरि-कथा (गुणगान) हरि-यश और साधु-संगति से एक मूहूर्त (दो घड़ी) भी यह मन नहीं जुड़ता। कुसुंभे के फूल का रंग (ऊपरी शोभा) देखकर प्रसन्न होता है और पराये घर को ही ताकता है अर्थात् आत्मस्वरूप भूलकर अपने से भिन्न तत्त्व पर मोहित होता है ।। १ ।। इसने प्रभु के चरण-कमलों से प्रेम नहीं किया और न ही सद्गुरु को प्रसन्न किया। जो पदार्थ स्थिर नहीं, उनके पीछे अनेक प्रकार से तेली के तैल की भाँति घूमता रहा है ।। २ ।। भगवान का नाम नहीं लिया, स्नान-दान नहीं किया और एक पल मात्र भी प्रभु-गुण नहीं गाया। अनेक मिथ्या पदार्थों से अपने को सन्तुष्ट करता रहा और इसी कारण अपने स्वरूप को जान नहीं पाया ।। ३ ।। कभी परोपकार नहीं किया और न ही सद्गुरु की कभी सेवा की तथा प्रभु का ध्यान किया। काम-क्रोधादि पाँच दूतों की संगति करके उनकी गोष्ठी (साथ रहना) में मदमत्त एवं मतवाला बना रहा ।। ४ ।। श्री गुरुजी कहते हैं कि हे हरि ! मैं विनती करता हूँ कि मुझे साधु-संगति प्राप्त हो, क्योंकि आप भक्तवत्सल हैं यही सुनकर आया हूँ। उन पाँचों दूतों से भागकर आपके पीछे पड़ा हूँ, इसलिए मुझे अपनाकर मेरी लाज रख लें ।। ५ ।। १ ।। ३ ।।

।। टोडी महला ५ ।। मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ । अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ ।।रहाउ।। धाइ धाइ क्रिपन स्रमु कीनो इकत्र करी है माइआ । दानु पुंनु नही संतन सेवा कितही काजि न आइआ ।। १ ।। करि आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ । संगु न पाइओ अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ ।। २ ।। सारो दिनसु मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ । खेदु भइओ बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ।। ३ ।। भइओ अनुग्रहु जाकउ प्रभ को तिसु हिरदै नामु बसाइआ । साध संगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ।। ४ ।। २ ।। ४ ।।

(हे भाई !) अपने स्वरूप को समझे बिना जीव का यहाँ संसार में आना व्यर्थ ही जानो। यह अनेक प्रकार के साज-शृंगार करता है, परन्तु आत्मस्वरूप के ज्ञान बिना ऐसा ही है जैसे मुर्दे को वस्त्र आदि पहनाए गए हों ।। रहाउ ।। भाग-दौड़ करके जैसे कोई कृपण बहुत परिश्रमपूर्वक माया (सम्पत्ति) इकट्ठी तो करता है, परन्तु न दान करता है, न पुण्य, और न ही सन्तों की सेवा करता है। ऐसे शुभ कर्मों के बिना वह धन-सम्पत्ति किसी काम की नहीं ।।१।। जैसे आभूषण आदि पहनकर कोई नारी काम-सुख के लिए शय्या सजाती-सँवारती है, परन्तु जब उसे अपने पति का संग प्राप्त नहीं होता, तब उन्हें देख-देखकर उसे और अधिक दुख होता है, ऐसे ही इस जीव की स्थिति जानो ।। २ ।। जैसे कोई व्यक्ति दिन भर मज़दूरी करता हुआ चावल रहित केवल धान के छिलकों को ही कूटता रह जाता है; जैसे कोई बेगारी मनुष्य दूसरों के लिए भार ढोकर केवल दुख ही अनुभव करता है, क्योंकि उसका अपने घर का तो कोई कार्य सिद्ध नहीं हुआ होता। इसी तरह भगवन्नाम के बिना इस जीव की स्थिति समझनी चाहिए ।। ३ ।। भगवद्भक्त नानक कहते हैं कि जिस जीव पर भगवान (प्रभु) का अनुग्रह होता है, उसी के हृदय में प्रभु-नाम स्थित होता है (सब किसी के हृदय में नहीं होता)। जो जीव साधु-संगति करता है, उसे ही भगवन्नाम के रस की प्राप्ति होती है ।। ४ ।। २ ।। ४ ।।

।। टोडी महला ५ ।। क्रिपानिधि बसहु रिदै हरि नीत। तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति ।। रहाउ ।। दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ। महा पतित ते होत पुनीता हरि कीरतन गुन गावउ ।। १ ।। आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ तुहारो भावउ। जो तू देहि तही इहु त्रिपतै आन न कतहू धावउ ।। २ ।। सदही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ। साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ।। ३ ।। सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा। नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ।। ४ ।। ३ ।। ५ ।।

हे कृपानिधे भगवान ! नित्य मेरे हृदय में निवास करो। मुझमें बुद्धि का ऐसा प्रकाश करो कि तुम्हारे साथ प्रीति लगी रहे ।। रहाउ ।। तुम्हारे भक्तजनों की चरणधूलि प्राप्त करूँ और उसे माथे लगाऊँ। तुम्हारे जिस गुणगान से महापतित भी पवित्र हो जाते हैं, मैं उन्हीं का कीर्तन करता रहूँ ।। १ ।। मुझे तुम्हारी आज्ञा सदा मीठी लगती रहे और तुम जो-जैसा भी करो, वही मुझे भाता रहे। जो कुछ तुम मुझे प्रदान

पुरखु चंगेरा । ओइ मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि तिन मसतकि भागु मंदेरा ॥ ३ ॥ बिबेक बुधि सतिगुर ते पाई गुर गिआनु गुरू प्रभ केरा । जन नानक नामु गुरू ते पाइआ धुरि मसतकि भागु लिखेरा ॥ ४ ॥ १ ॥

(हे भाई !) मेरा मन परमेश्वर के (स्मरण) बिना रह नहीं सकता । मेरे प्राणप्रिय प्रभु को सद्गुरु ने मिला दिया है, इसलिए अब मैं संसार-सागर से पार हो गया हूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे हृदय में अभिलाषा थी कि प्रभु को अपने नयनों से निहारूँ । दयालु सद्गुरु ने प्रभु का नाम मेरे हृदय में दृढ़ किया, क्योंकि प्रभु को प्राप्त करने का यही मार्ग सरल है ॥ १ ॥ बहुरंगी (अनेक कौतुकों के स्वामी) हरि-प्रभु गोविन्द का नाम जिसे प्राप्त हो जाता है, उसे भगवान हृदय और तन-मन से मीठा लगने लगता है, उसके मुख पर और मस्तक पर अच्छा भाग्य जाग उठता है (अर्थात् उसके भाग्य जाग जाते हैं) ॥ २ ॥ परन्तु जिनका मन लोभ आदि विकारों में लगा रहता है, उन्हें वह श्रेष्ठ अकालपुरुष (परमात्मा) विस्मृत रहता है । ऐसे वे मनमुख (मन के वशीभूत) लोग मूढ़ एवं अज्ञानी कहलाते हैं, ऐसे लोग मन्दभाग्य हैं ॥ ३ ॥ श्री गुरुजी का कथन है कि जिनके माथे पर भगवान के घर से अच्छे भाग्य लिखे थे, उन्हें सद्गुरु से ईश्वर की नाम-उपलब्धि हुई । उन्हें विवेक-बुद्धि (अच्छे-बुरे की पहचान करने की ज्ञानात्मिका बुद्धि) प्राप्त हुई और प्रभु-मिलाप का ज्ञान हुआ ॥ ४ ॥ १ ॥

टोडी महला ५ घरु १ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ संतन अवर न काहू जानी । बेपरवाह सदा रंगि हरि कै जाको पाखु सुआमी ॥ रहाउ ॥ ऊच समाना ठाकुर तेरो अवर न काहू तानी । ऐसो अमरु मिलिओ भगतन कउ राचि रहे रंगि गिआनी ॥ १ ॥ रोग सोग दुख जरा मरा हरि जनहि नही निकटानी । निरभउ होइ रहे लिव एकै नानक हरि मनु मानी ॥ २ ॥ १ ॥

(हे भाई !) परमेश्वर जिनकी सहायता करता है, ऐसे सन्तजन और किसी को (ईश्वर के बिना) नहीं जानते । वे सदा बेपरवाह और प्रभु के रंग में मस्त रहते हैं ॥ रहाउ ॥ (सन्तों की दृष्टि में) हे ठाकुर ! तुम्हारे शामियाने से ऊँचा अन्य किसी का शामियाना तना हुआ नहीं (सन्त-भक्तों का शरण-स्थल तुमसे बढ़कर अन्य कोई नहीं, यह भाव है) । ऐसा अमर ईश्वर भक्तों को प्राप्त होने पर वे ज्ञानवान होकर उसके ही रंग

में रँगे रहते हैं ॥ १ ॥ श्री गुरुजी का कथन है कि कोई रोग, शोक, दुख, बुढ़ापा (जरा) और मृत्यु किसी भक्तजन के पास नहीं फटकते। वे भक्त तो निर्भय होकर प्रभु से लग्न लगाए रखते हैं और उस एकमेव ईश्वर का ही मन में ध्यान करते हैं ॥ २ ॥ १ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ हरि बिसरत सदा खुआरी। ताकउ धोखा कहा बिआपै जाकउ ओट तुहारी ॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सरप जैसे अरजारी। नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ॥ १ ॥ गुण निधान गुण तिन ही गाए जाकउ किरपा धारी। सो सुखीआ धंनु उसु जनमा नानक तिसु बलिहारी ॥ २ ॥ २ ॥

परमेश्वर को भूल जानेवाले सदा ही अप्रतिष्ठित (प्रतिष्ठाहीन) होते हैं। हे ईश्वर! जिन्हें तुम्हारी ओट प्राप्त हो उन्हें भला किसी प्रकार का धोखा कहाँ? ॥ रहाउ ॥ भगवान के स्मरण के बिना जीवन व्यतीत करना साँप के समान अपनी आयु बिताना है (साँप अपनी लम्बी आयु अपना विष पालकर और छिप-छिपकर बिताता है, ऐसे ही भगवन्नाम के स्मरण बिना यह जीव अपनी इच्छा-वासनाओं के विष की जलन में जलता हुआ जीवन व्यतीत करता है)। ऐसा व्यक्ति चाहे नव-खण्ड (सम्पूर्ण पृथ्वी) का राज्य भी प्राप्त कर ले, तो भी अन्त में जीवन की बाज़ी हारकर ही जाता है ॥ १ ॥ श्री गुरुजी कहते हैं— जिस पर भगवान ने अपनी कृपा की हो, वही उस गुणनिधान प्रभु के गुण गाने में समर्थ हो सकता है। सचमुच वही सुखी कहा जा सकता है और उसका ही जन्म धन्य है। ऐसे जीव के बलिहारी जाना चाहिए ॥ २ ॥ २ ॥

टोडी महला ५ घरु २ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ धाइओ रे मन दहदिस धाइओ। माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिओ तिनि प्रभि आपि भुलाइओ ॥ रहाउ ॥ हरि कथा हरि जस साध संगति सिउ इकु मुहतु न इहु मनु लाइओ। बिगसिओ पेखि रंगु कसुंभ को पर ग्रिह जोहनि जाइओ ॥ १ ॥ चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सतपुरखु मनाइओ। धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइओ ॥ २ ॥ नाम दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ। नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ

नह बूझिओ अपनाइओ ।। ३ ।। परउपकार न कबहू कीए नही सतिगुरु सेवि धिआइओ । पंच दूत रचि संगति गोसटि मतवारो मद माइओ ।। ४ ।। करउ बेनती साध संगति हरि भगति वछल सुणि आइओ । नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ ।। ५ ।। १ ।। ३ ।।

हे प्रभो, यह मन दसों दिशाओं की ओर भागता है (अर्थात् स्थिर नहीं)। माया में मग्न एवं स्वादों के लालच में मोहित हुआ स्वयं (आत्मरूप) को भूला है ।। रहाउ ।। हरि-कथा (गुणगान) हरि-यश और साधु-संगति से एक मूहूर्त (दो घड़ी) भी यह मन नहीं जुड़ता । कुसुंभे के फूल का रंग (ऊपरी शोभा) देखकर प्रसन्न होता है और पराये घर को ही ताकता है अर्थात् आत्मस्वरूप भूलकर अपने से भिन्न तत्त्व पर मोहित होता है ।। १ ।। इसने प्रभु के चरण-कमलों से प्रेम नहीं किया और न ही सद्‌गुरु को प्रसन्न किया । जो पदार्थ स्थिर नहीं, उनके पीछे अनेक प्रकार से तेली के तैल की भाँति घूमता रहा है ।। २ ।। भगवान का नाम नहीं लिया, स्नान-दान नहीं किया और एक पल मात्र भी प्रभु-गुण नहीं गाया । अनेक मिथ्या पदार्थों से अपने को सन्तुष्ट करता रहा और इसी कारण अपने स्वरूप को जान नहीं पाया ।। ३ ।। कभी परोपकार नहीं किया और न ही सद्‌गुरु की कभी सेवा की तथा प्रभु का ध्यान किया । काम-क्रोधादि पाँच दूतों की संगति करके उनकी गोष्ठी (साथ रहना) में मदमत्त एवं मतवाला बना रहा ।। ४ ।। श्री गुरुजी कहते हैं कि हे हरि ! मैं विनती करता हूँ कि मुझे साधु-संगति प्राप्त हो, क्योंकि आप भक्तवत्सल हैं यही सुनकर आया हूँ । उन पाँचों दूतों से भागकर आपके पीछे पड़ा हूँ, इसलिए मुझे अपनाकर मेरी लाज रख लें ।। ५ ।। १ ।। ३ ।।

।। टोडी महला ५ ।। मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ । अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ ।।रहाउ।। धाइ धाइ क्रिपन स्रमु कीनो इकत्र करी है माइआ । दानु पुंनु नही संतन सेवा कितही काजि न आइआ ।। १ ।। करि आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ । संगु न पाइओ अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ ।। २ ।। सारो दिनसु मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ । खेदु भइओ बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ।। ३ ।। भइओ अनुग्रहु जाकउ प्रभ को तिसु हिरदै नामु वसाइआ । साध संगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ।। ४ ।। २ ।। ४ ।।

(हे भाई !) अपने स्वरूप को समझे बिना जीव का यहाँ संसार में आना व्यर्थ ही जानो। यह अनेक प्रकार के साज-शृंगार करता है, परन्तु आत्मस्वरूप के ज्ञान बिना ऐसा ही है जैसे मुर्दे को वस्त्र आदि पहनाए गए हों ॥ रहाउ ॥ भाग-दौड़ करके जैसे कोई कृपण बहुत परिश्रमपूर्वक माया (सम्पत्ति) इकट्ठी तो करता है, परन्तु न दान करता है, न पुण्य, और न ही सन्तों की सेवा करता है। ऐसे शुभ कर्मों के बिना वह धन-सम्पत्ति किसी काम की नहीं ॥१॥ जैसे आभूषण आदि पहनकर कोई नारी काम-सुख के लिए शय्या सजाती-सँवारती है, परन्तु जब उसे अपने पति का संग प्राप्त नहीं होता, तब उन्हें देख-देखकर उसे और अधिक दुख होता है, ऐसे ही इस जीव की स्थिति जानो ॥ २ ॥ जैसे कोई व्यक्ति दिन भर मज़दूरी करता हुआ चावल रहित केवल धान के छिलकों को ही कूटता रह जाता है; जैसे कोई बेगारी मनुष्य दूसरों के लिए भार ढोकर केवल दुख ही अनुभव करता है, क्योंकि उसका अपने घर का तो कोई कार्य सिद्ध नहीं हुआ होता। इसी तरह भगवन्नाम के बिना इस जीव की स्थिति समझनी चाहिए ॥ ३ ॥ भगवद्भक्त नानक कहते हैं कि जिस जीव पर भगवान (प्रभु) का अनुग्रह होता है, उसी के हृदय में प्रभु-नाम स्थित होता है (सब किसी के हृदय में नहीं होता)। जो जीव साधु-संगति करता है, उसे ही भगवन्नाम के रस की प्राप्ति होती है ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ क्रिपानिधि बसहु रिदै हरि नीत। तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति ॥ रहाउ ॥ दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ। महा पतित ते होत पुनीता हरि कीरतन गुन गावउ ॥ १ ॥ आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ तुहारो भावउ। जो तू देहि तही इहु त्रिपतै आन न कतहू धावउ ॥ २ ॥ सदही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ। साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ॥ ३ ॥ सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा। नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

हे कृपानिधे भगवान ! नित्य मेरे हृदय में निवास करो। मुझमें बुद्धि का ऐसा प्रकाश करो कि तुम्हारे साथ प्रीति लगी रहे ॥ रहाउ ॥ तुम्हारे भक्तजनों की चरणधूलि प्राप्त करूँ और उसे माथे लगाऊँ। तुम्हारे जिस गुणगान से महापतित भी पवित्र हो जाते हैं, मैं उन्हीं का कीर्तन करता रहूँ ॥ १ ॥ मुझे तुम्हारी आज्ञा सदा मीठी लगती रहे और तुम जो-जैसा भी करो, वही मुझे भाता रहे। जो कुछ तुम मुझे प्रदान

करो उसी से तृप्त रहूँ, अन्य किसी जगह भाग-दौड़ न करूँ ॥ २ ॥ हे प्रभो ! मैं सदा ही तुम्हें अपने समीप समझूँ । मैं तो सभी भक्तों की धूलि-समान हूँ । साधु-संगति प्राप्त होने पर ही प्रभु की प्राप्ति हो सकती है ॥ ३ ॥ हे प्रभु हम सब जीव तुम्हारे दास हैं और तुम हमारे स्वामी हो । गुरुजी कहते हैं कि मैं तो तुम्हारा बालक हूँ, प्रभो ! तुम ही मेरे माता-पिता हो और तुम्हारा नाम रूपी दूध सदा मेरे मुँह में रहे, यही प्रार्थना है (अर्थात् मेरा पोषण तुम्हारे नाम रूपी दूध से ही हो) ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

टोडी महला ५ घरु २ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मागउ दानु ठाकुर नाम । अवरु कछू मेरै संगि न चालै मिलै क्रिपा गुण गाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु अनेक भोग रस सगल तरवर की छाम । धाइ धाइ बहु बिधि कउ धावै सगल निरारथ काम ॥ १ ॥ बिनु गोविंद अवरु जे चाहउ दीसै सगल बात है खाम । कहु नानक संत रेन मागउ मेरो मनु पावै बिस्राम ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥

हे ठाकुर ! मैं तुम्हारे नाम का ही दान माँगता हूँ, क्योंकि और तो कुछ मेरे साथ नहीं जाएगा, इसलिए आपका गुणगान (नाम-कीर्तन आदि) मुझे मिले, ऐसी कृपा करो ॥१॥ रहाउ ॥ यह राज्य, पदार्थ, अनेक रसीले भोगादि तो पेड़ की छाया के समान (अर्थात् अस्थिर) हैं । इनके ही पीछे मन अनेक भाँति (विविध प्रकार से) भागता है, परन्तु इसकी सब इच्छाएँ (भोगादि के पीछे भागना) निरर्थक (फलहीन) हैं ॥ १ ॥ हे प्रभो ! तुम्हारे बिना किसी अन्य पदार्थ आदि की चाह करना तो कच्ची (सारहीन) बात है । श्री गुरुजी कहते हैं कि मैं तो सन्तजनों की चरण-धूलि माँगता हूँ, जिससे मेरे मन को विश्राम (शान्ति) मिले ॥२॥१॥६॥

॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी को नामु मनहि साधारै । जीअ प्रान सूख इसु मन कउ बरतनि एह हमारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु जाति नामु मेरी पति है नामु मेरै परवारै । नामु सखाई सदा मेरै संगि हरिनामु मोकउ निसतारै ॥ १ ॥ बिखै बिलास कहीअत बहुतेरे चलत न कछू संगारै । इसटु मीतु नामु नानक को हरि नामु मेरै भंडारै ॥ २ ॥ २ ॥ ७ ॥

(हे भाई !) प्रभु का नाम ही मन को आधार (सहारा) प्रदान करता है । जीवन के लिए प्राण-रूप, इस मन के लिए सुखकारी एवं तन

के लिए बल-रूप यही प्रभु का नाम है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु-नाम ही मेरी जाति है, प्रभु-नाम ही मेरी प्रतिष्ठा है और प्रभु का नाम ही मेरा परिवार है। प्रभु-नाम ही सखा-रूप में सदा मेरे साथ रहनेवाला है। भगवन्नाम ही मेरा उद्धार करनेवाला है ॥ १ ॥ अन्य बहुत भाँति के विषय-भोग बताए जाते हैं, परन्तु उनमें से साथ जानेवाला (मरण के बाद परलोक का साथी) कुछ नहीं। श्री गुरुजी कहते हैं कि मेरा इष्ट-मित्र प्रभु का नाम ही है और प्रभु का नाम ही मेरा खज़ाना है ॥ २ ॥ २ ॥ ७ ॥

॥ टोडी म० ५ ॥ नीके गुण गाउ मिटही रोग। मुख ऊजल मनु निरमल होईहै तेरो रहै ईहा ऊहा लोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन पखारि करउ गुर सेवा मनहि चरावउ भोग। छोडि आपतु बादु अहंकारा मानु सोई जो होगु ॥ १ ॥ संत टहल सोई है लागा जिसु मसतकि लिखिआ लिखोगु। कहु नानक एक बिनु दूजा अवरु न करणै जोगु ॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥

(हे भाई!) उस प्रभु का उत्तम गुणगान करो, जिससे सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। उसके गुणगान से तेरा मुख उजला और मन निर्मल रहेगा। तेरा यह लोक और परलोक दोनों सँवरेंगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सद्गुरु के चरण धोकर उनकी सेवा करो और मन को भोग-रूप में अर्पण कर दो। स्वार्थों और अहंकार का त्याग करके, जैसा भी प्रभु को इच्छित है, उसे ही स्वीकार करो ॥१॥ श्री गुरुजी का कथन है कि सन्तों की सेवा भी वही कर सकता है, जिसके भाग्य में पहले से ही लिखा हो। उस एक परमेश्वर के बिना और कोई (देव-देवता आदि) कुछ करने योग्य नहीं ॥२॥३॥८॥

॥ टोडी महला ५ ॥ सतिगुर आइओ सरणि तुहारी। मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिओ तउ दुआरी। लेखा छोडि अलेखै छूटह हम निरगुन लेहु उबारी ॥ १ ॥ सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी। नानक दास संत पाछै परिओ राखि लेहु इह बारी ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥

हे सद्गुरु! मैं आपकी शरण आया हूँ। आप मुझे सुख और शोभादायक भगवन्नाम प्रदान करके मेरी चिन्ता दूर करो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुझे अन्य कोई शरणस्थल नहीं सूझता, इसलिए हारकर आपके द्वार आ पड़ा हूँ। कर्मों का लेखा (फल) त्यागकर उस पर बिना विचार किए ही मुझ गुणहीन का उद्धार करो (क्योंकि यदि कर्मों के फल आदि का ध्यान करोगे,

तब तो मुझ जैसा कर्म रहित अथवा मन्दकर्मा कभी उद्धार नहीं पा सकेगा) ॥ १ ॥ आप सदा बख़्शिश (दया-कृपा) करनेवाले हो, मेहरवान हो और सबको सहारा देनेवाले हो। श्री गुरुजी कहते हैं, मैं दास बनकर सन्तों की शरण आ पड़ा हूँ, इसलिए इस बार अर्थात् इस जन्म में मेरी रक्षा करो ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ रसना गुण गोपाल निधि गाइण। सांति सहजु रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण ॥१॥रहाउ॥ जो मागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण रसाइण। जनम मरण दुहहू ते छूटहि भवजलु जगतु तराइण ॥ १ ॥ खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण। अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥ २ ॥ ५ ॥ १० ॥

(हे भाई!) जिन्होंने अपनी जिह्वा से गुणों के सागर गोपाल (परमेश्वर) का गुणगान किया है, उन्हें शान्ति मिली है और उनके मन में आत्मज्ञान का आनन्द प्राप्त हुआ है। उनके सभी दुख दूर हो गए हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसे भक्तजन सकल रसायन-रूप भगवान की चरण-सेवा करके जो-जो माँगते हैं, वही-वही प्राप्त करते हैं। जन्म-मरण दोनों से मुक्त हो जाते हैं और इस संसार-सागर से तर जाते हैं ॥ १ ॥ ऐसे भक्तजनों ने खोज करके तत्त्व-रूप में यह विचार प्रस्तुत किया है कि ईश्वरपरायण (भगवदाधार) भक्त (दास) ही उसे प्राप्त कर सकता है। श्री गुरुजी कहते हैं कि यदि अपना अविनाशी क्षेम (कल्याण) चाहते हो, तो सदा नारायण का स्मरण करो ॥ २ ॥ ५ ॥ १० ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ निंदकु गुर किरपा ते हाटिओ। पारब्रहम प्रभ भए दइआला सिव कै बाणि सिरु काटिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै सच का पंथा थाटिओ। खात खरचत किछु निखुटत नाही राम रतनु धनु खाटिओ ॥ १ ॥ भसमा भूत होआ खिन भीतरि अपना कीआ पाइआ। आगम निगमु कहै जनु नानकु सभु देखै लोकु सबाइआ ॥ २ ॥ ६ ॥ ११ ॥

(हे भाई!) गुरु-कृपा से निन्दक भी अपना स्वभाव छोड़ देता है। जिस पर परब्रह्म प्रभु दयालु होते हैं, उसका अहंकार रूपी सिर उस कल्याणकारी परमेश्वर के नाम रूपी बाणों से कट जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसे भक्तजन को काल अपने जाल में फँसा नहीं सकता और यम उसकी ओर ताक भी नहीं सकता (अर्थात् उसे मृत्यु का भय नहीं रहता), क्योंकि

उसने सत्य का मार्ग अपनाया हुआ है। ऐसा भक्त भगवान के नाम रूपी उस रत्नधन को प्राप्त कर लेता है, जो खाने-खर्चने पर भी कम नहीं होता ॥ १ ॥ निन्दक अपने कर्मफल (निन्दा आदि) भोगकर क्षण भर में गुरु-कृपा से अहंभाव को भस्म कर लेता है। श्री गुरुजी कहते हैं कि सभी शास्त्र एवं वेद भी यही बतलाते हैं और सम्पूर्ण संसार गुरु-कृपा की इस अलौकिकता को देखता है ॥ २ ॥ ६ ॥ ११ ॥

॥ टोडी म० ५ ॥ किरपन तन मन किलविख भरे। साध संगि भजनु करि सुआमी ढाकन कउ इकु हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक छिद्र बोहिथ के छुटकत थाम न जाही करे। जिस का बोहिथु तिसु आराधे खोटे संगि खरे ॥ १ ॥ गली सैल उठावत चाहै ओइ ऊहा ही है धरे। जोरु सकति नानक किछु नाही प्रभ राखहु सरणि परे ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥

हे कृपण जीव! तुम्हारे तन-मन पापों से भरे हुए हैं। इसलिए तुम साधु-संगति करो और उस मालिक का भजन करो, क्योंकि वही एक मात्र प्रभु समस्त दोष ढकनेवाला है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इस शरीर रूपी जहाज़ में अनेक छिद्रों (दोषादि) के होने से जो स्थान खोखले हो गए हैं, वे परमेश्वर के नाम के बिना किसी तरह भी भरे नहीं जा सकते। परन्तु जिसने इस शरीर रूपी जहाज़ की रचना की है, उस प्रभु की आराधना से खोटे (दुष्ट) भी खरे (अच्छे अथवा भक्तजन) लोगों का साथ पाकर पार उतर जाते हैं ॥ १ ॥ यदि कोई केवल बातों से ही पहाड़ उठाना चाहे तो असम्भव है और वे पहाड़ वहाँ के वहाँ ही रहते हैं, इसी प्रकार केवल मौखिक ज्ञान से अज्ञान दूर नहीं होता। श्री गुरुजी कहते हैं कि तन-मन के उन छिद्रों (दोषों) को दूर करने का न तो हममें कोई बल है और न शक्ति है। हे भगवान! हम तो आपकी शरण पड़े हैं, इसलिए शरण में आगत की रक्षा करो ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ हरि के चरन कमल मनि धिआउ। काढि कुठारु पित बात हंता अउखधु हरि को नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि। ताकउ बिघनु न कोऊ लागै जाकी प्रभ आगै अरदासि ॥ १ ॥ संत प्रसादि बैद नाराइण करणकारण प्रभ एक। बाल बुधि पूरन सुखदाता नानक हरि हरि टेक ॥ २ ॥ ८ ॥ १३ ॥

हे भाई! हरि के चरण-कमलों का ध्यान किया करो। भगवान का नाम अहंकार-वृक्ष के लिए कुल्हाड़ा है और क्रोधादि वात-पित्त जैसे रोगों के

नाश के लिए औषध है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु-नाम तीनों प्रकार के (दैहिक, दैविक, भौतिक) ताप निवारण करनेवाला दुखों का नाशक है और सुखों की राशि (ढेर-समूह) है। जो पुरुष प्रभु के आगे विनती करनेवाला है, उसे कोई विघ्न नहीं होता ।। १ ।। सन्तों की प्रसन्नता से ही वह रोगहर्ता जगत का कर्ता एवं मूल वैद्य रूपी एक मात्र नारायण प्राप्त होता है। श्री गुरुजी कहते हैं कि बालबुद्धि (सरल एवं अभेद बुद्धि वाले) भक्तों के लिए वह भगवान सुखदाता है और वही एक मात्र आधार है ।। २ ।। ८ ।। १३ ।।

।। टोडी महला ५ ।। हरि हरि नामु सदा सद जापि। धारि अनुग्रहु पारब्रहम सुआमी वसदी कीनी आपि ।। १ ।। रहाउ ।। जिसके से फिरि तिन ही सम्हाले बिनसे सोग संताप। हाथ देइ राखे जन अपने हरि होए माई बाप ।। १ ।। जीअ जंत होए मिहरवाना दया धारी हरि नाथ। नानक सरनि परे दुख भंजन जाका बड परताप ।। २ ।। ९ ।। १४ ।।

(हे भाई !) सदा हरि-नाम ही जपना चाहिए। जिसने भी उसका नाम जपा है, परब्रह्म प्रभु ने अनुग्रहपूर्वक स्वयं उसके हृदय में निवास किया है ।। १ ।। रहाउ ।। जिस प्रभु के हम दास हैं, वही प्रभु हमें सँभालनेवाला है। वही हमारे शोक-सन्ताप नाश करता है। वही भगवान भक्तजनों की स्वयं माता-पिता की तरह रक्षा करता है ।। १ ।। जिस पर दयालु होकर भगवान अपना अनुग्रह करता है, उस पर सभी जीव-जन्तु मेहरवान हो जाते हैं। श्री गुरुजी कहते हैं, जिसका सबसे बड़ा प्रताप है, उसी दुख-भंजन प्रभु की शरण पड़ना ही ठीक है ।। २ ।। ९ ।। १४ ।।

।। टोडी महला ५ ।। स्वामी सरनि परिओ दरबारे। कोटि अपराध खंडन के दाते तुझ बिनु कउनु उधारे ।।१।।रहाउ।। खोजत खोजत बहु परकारे सरब अरथ बीचारे। साध संगि परमगति पाईऐ माइआ रचि बंधि हारे ।। १ ।। चरन कमल संगि प्रीति मनि लागी सुरि जन मिले पिआरे। नानक अनद करे हरि जपि जपि सगले रोग निवारे ।। २ ।। १० ।। १५ ।।

हे स्वामिन् ! मैं आपके दरबार की (द्वार की) शरण पड़ा हूँ। करोड़ों अपराध नाश करनेवाले दाता ! आपके बिना मेरा कौन उद्धार कर सकता है ? ।। १ ।। रहाउ ।। अनेक भाँति खोज-खोजकर अन्त में यही विचार स्थिर किया है कि साधु-संगति से परमगति प्राप्त होती है और

माया की रचना में बँधने पर (माया में फँसने पर) जीव हार प्राप्त करता है अर्थात् जीवन के उद्देश्य में असफल रहता है ॥ १ ॥ जिसके मन की प्रीति भगवान के चरण-कमलों में लग जाती है, उसे श्रेष्ठ जनों का संग मिलता है। श्री गुरुजी कहते हैं कि भक्त प्रभु का नाम जपकर आनन्द प्राप्त करता है और उसके सभी रोगादि दूर हो जाते हैं ॥ २ ॥ १० ॥ १५ ॥

टोडी महला ५ घरु ३ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हां हां लपटिओ रे मूढ़े कछू न थोरी। तेरो नही सु जानी मोरी ॥ रहाउ ॥ आपन रामु न चीनो खिनूआ। जो पराई सु अपनी मनूआ ॥ १ ॥ नामु संगी सो मनि न बसाइओ। छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ॥ २ ॥ सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ। अंम्रित नामु तोसा नही पाइओ ॥ ३ ॥ काम क्रोधि मोह कूपि परिआ। गुर प्रसादि नानक को तरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १६ ॥

अहो! यह मूढ़ जीव माया (आदि) में लिपटा हुआ है और इसकी माया में प्रीति थोड़ी नहीं बल्कि बहुत है। ऐ जीव! जिस माया को तू अपनी समझ रहा है, वह तेरी नहीं बन सकती ॥ रहाउ ॥ अरे! तूने अपने राम को तो कभी क्षण भर भी नहीं जाना, वरन जो माया अपनी नहीं है उसे अपनी समझा ॥ १ ॥ भगवान का नाम, जो सचमुच तुम्हारा साथी है, उसे मन में स्थान नहीं दिया, बल्कि जिन पदार्थों को तू यहाँ छोड़ जाएगा, उनसे ही अपना मन बाँधे रखा है ॥ २ ॥ हे जीव! तुमने उन पदार्थों का संचय किया है, जिनसे भूख-प्यास बनी ही रहती है (अर्थात् आशा-तृष्णा आदि मिटती नहीं, बल्कि उन्हें पाने की इच्छा और अधिक बलवती होती है)। अमृत जैसा प्रभु का नाम, जो सम्पूर्ण जीवन भर का पाथेय है, वही तुमने प्राप्त नहीं किया ॥ ३ ॥ जीव काम-क्रोध-मोह आदि के कूप में पड़ा हुआ है। श्री गुरुजी कहते हैं कि गुरु की कृपा बिना भला कोई पार हो सकता है? (अर्थात् कभी नहीं हो सकता) ॥४॥१॥१६॥

॥ टोडी महला ५ ॥ हमारै एकै हरी हरी। आन अवर सिञाणि न करी ॥ रहाउ ॥ वडै भागि गुरु अपुना पाइओ। गुरि मोकउ हरि नामु द्रिड़ाइओ ॥ १ ॥ हरि हरि जाप ताप ब्रत नेमा। हरि हरि धिआइ कुसल सभि खेमा ॥ २ ॥ आचार बिउहार जाति हरि गुनीआ। महा अनंद कीरतन हरि

सुनीआ ॥ ३ ॥ कहु नानक जिनि ठाकुरु पाइआ । सभु किछु तिसके ग्रिह महि आइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ १७ ॥

हे भाई ! हमारे तो एक मात्र भगवान ही आसरा हैं । हमने किसी अन्य से तो पहचान ही नहीं की ॥ रहाउ ॥ बड़े भागों से हमें अपना गुरु प्राप्त हुआ और गुरु ने हमें प्रभु का नाम दिया ॥ १ ॥ अब भगवान का नाम ही हमारे लिए जप-तप-व्रत और नियम है । उस भगवान की नाम-आराधना से ही हमारा सब कुशल-क्षेम हुआ है ॥ २ ॥ अब हमारे लिए हरि का गुणगान ही जाति है और आचार-व्यवहार है । हमें हरि-कीर्तन सुनने से महान आनन्द प्राप्त होता है ॥ ३ ॥ श्री गुरुजी कहते हैं कि जिसने उस प्रभु को प्राप्त कर लिया, उसके घर (हृदय) में सब कुछ आ गया समझो ॥ ४ ॥ २ ॥ १७ ॥

टोडी महला ५ घरु ४ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रूड़ो मनु हरि रंगो लोड़ै । गाली हरि नीहु न होइ ॥ रहाउ ॥ हउ ढूढेदी दरसन कारणि बीथी बीथी पेखा । गुर मिलि भरमु गवाइआ हे ॥ १ ॥ इह बुधि पाई मै साधू कंनहु लेखु लिखिओ धुरि माथै । इह बिधि नानक हरि नैण अलोइ ॥ २ ॥ १ ॥ १८ ॥

हे भाई ! मेरा रँगीला मन प्रभु के सुन्दर रंग का इच्छुक है, परन्तु वह (प्रेम) केवल बातों से प्राप्त नहीं हो सकता ॥ रहाउ ॥ मैं (प्रेमिका) उस भगवान को देखने के लिए गली-गली ढूँढ़ती रही । गुरु मिले तब मेरा भ्रम दूर किया ॥ १ ॥ यह बुद्धि मुझे सन्तों से प्राप्त हुई, क्योंकि मेरे भाग्य में ऐसा लिखा हुआ था । अब तो मैं अपनी आँखों से हर कहीं भगवान को देखता हूँ ॥ २ ॥ १ ॥ १८ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ गरबि गहिलड़ो मूड़ड़ो हीओ रे । हीओ महराज री माइओ । डीहर निआई मोहि फाकिओ रे ॥ रहाउ ॥ घणो घणो घणो सद लोड़ै बिनु लहणे कैठै पाइओ रे । महराजरो गाथु वाहू सिउ लुभड़िओ निहभागड़ो भाहि संजोइओ रे ॥ १ ॥ सुणि मन सीख साधू जन सगलो थारे सगले प्राछत मिटिओ रे । जाको लहणो महराजरी गाठड़ीओ जन नानक गरभासि न पउड़िओ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १९ ॥

(हे भाई !) इस मूढ़ जीव का हृदय अहंकार से बावला हो रहा है । भगवान की माया ने इसका हृदय मछली के समान मोह में फँसा रखा है ।। रहाउ ।। यह जीव सदा ही अधिक से अधिक (पदार्थ आदि की) माँग करता रहता है, लेकिन बिना प्रारब्ध कौन प्राप्त कर सकता है ? प्रभु द्वारा दिए गए इस शरीर पर ही लोभायमान हो रहा है और यह मन्दभाग्य तृष्णा की आग से इसे जोड़े हुए है ।।१।। श्री गुरुजी कहते हैं कि हे मन ! तू साधुजनों की शिक्षा ग्रहण कर, ताकि तेरे सभी पाप मिट जाएँ । जिसके भाग्य में प्रभु के नाम की गठरी में से कुछ प्राप्ति लिखी है, उसका फिर से गर्भ में निवास नहीं होता अर्थात् भाग्यवान का ही भगवन्नाम प्राप्त होता है और वही जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति पाता है ।।२।।२।।१९।।

टोडी महला ५ घरु ५ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। ऐसो गुनु मेरो प्रभ जी कीन । पंच दोख अरु अहंरोग इह तन ते सगल दूरि कीन ।। रहाउ ।। बंधन तोरि छोरि बिखिआ ते गुर को सबदु मेरै हीअरै दीन । रूपु अनरूपु मोरो कछु न बीचारिओ प्रेम गहिओ मोहि हरि रंग भीन ।। १ ।। पेखिओ लालनु पाट बीच खोए अनद चिता हरखे पतीन । तिसही को ग्रिहु सोई प्रभु नानक सो ठाकुरु तिसही को धीन ।। २ ।। १ ।। २० ।।

(हे भाई !) प्रभु ने मुझ पर ऐसा उपकार किया है कि मेरे काम-क्रोधादि पाँचों दोष (विकार) और अहंभाव का रोग शरीर से दूर कर दिए ।। रहाउ ।। माया के सभी बन्धन तोड़कर और विषय-विकारों से छुड़ाकर सद्गुरु का शब्द मेरे हृदय में बसा दिया । उसने मेरे रूप अथवा कुरूपता का कुछ विचार नहीं किया, बल्कि मेरा प्रेमभाव ही ग्रहण करके प्रभु-रंग में भिगो दिया अर्थात् भक्ति में लीन कर दिया ।। १ ।। जब भ्रम का परदा नष्ट हो गया, तब उस प्रियतम (लाल) का दर्शन हुआ, तब चित्त में आनन्द हुआ और मन प्रसन्नता से भर गया । श्री गुरुजी कहते हैं कि तब से यह शरीर उस प्रभु का निवासस्थान बन गया है, तब से वही इसका स्वामी है और मैं उसके अधीन बना हूँ अर्थात् उसकी सेवा में लगा हूँ ।। २ ।। १ ।। २० ।।

।। टोडी महला ५ ।। माई मेरे मन की प्रीति । एही करम धरम जप एही राम नाम निरमल है रीति ।। रहाउ ।। प्रान अधार जीवन धन मोरै देखन कउ दरसन प्रभ नीति । बाट

घाट तोसा संगि मोरै मन अपुने कउ मै हरि सखा कीत ॥ १ ॥ संत प्रसादि भए मन निरमल करि किरपा अपुने करि लीत । सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ आदि जुगादि भगतन के मीत ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥

हे माँ ! मेरे मन में प्रभु की प्रीति समायी है । मेरे लिए तो कर्म, धर्म और जप यही प्रीति है । राम का नाम लेना ही सबसे निर्मल रीति है ॥ रहाउ ॥ प्रभु का नित्य दर्शन पा लेना ही मेरे प्राणों का आधार और जीवन का धन है । प्रत्येक मार्ग में, प्रत्येक स्थान में यही मेरा पाथेय है । क्योंकि मैंने अपने मन को प्रभु का सखा बना दिया है ॥ १ ॥ सन्तों की कृपा से मन निर्मल होने पर प्रभु ने कृपा करके मुझे अपना बना लिया है । श्री गुरुजी कहते हैं कि भगवान का नाम-स्मरण करने से ही सुख प्राप्त होता है और वह भगवान सृष्टि के आरम्भ से ही भक्तों का मित्र है ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी मिलु मेरे प्रान । बिसरु नही निमख हीअरे ते अपने भगत कउ पूरन दान ॥ रहाउ ॥ खोवहु भरमु राखु मेरे प्रीतम अंतरजामी सुघड़ सुजान । कोटि राज नाम धनु मेरै अंम्रित द्रिसटि धारहु प्रभ मान ॥ १ ॥ आठ पहर रसना गुन गावै जसु पूरि अघावहि समरथ कान । तेरी सरणि जीअन के दाते सदा सदा नानक कुरबान ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥

हे प्रभो ! मेरे प्राणों में समा जाओ । एक पल भर के लिए भी मेरे हृदय से मत भूलो, अपने भक्त को पूर्णता का दान दो अर्थात् द्वैत के कारण उसका जो अधूरापन है, उसे दूर कर पूर्ण बनाओ ॥ रहाउ ॥ मेरा भ्रम दूर करके हे सुघड़-सुजान अन्तर्यामी मेरी रक्षा करो । मेरे लिए तो तुम्हारा नाम ही करोड़ों राज्यों और समृद्धियों के बराबर है । हे मान्य प्रभो ! मुझ पर अपनी अमृत-दृष्टि डालो ॥ १ ॥ मेरी जिह्वा आठों प्रहर तुम्हारा ही गुण गाए और मेरे कान तुम्हारे यश-श्रवण से पूर्ण रहें अर्थात् तृप्ति पाएँ । श्री गुरुजी कहते हैं कि प्रभु तुम जीवनदाता हो, मैं तुम्हारी शरण हूँ, तुम पर क़ुर्बान (न्यौछावर) हूँ ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ तेरे पग की धूरि । दीन दइआल प्रीतम मन मोहन करि किरपा मेरी लोचा पूरि ॥रहाउ॥ दहदिस रवि रहिआ जसु तुमरा अंतरजामी सदा हजूरि । जो तुमरा जसु गावहि करते से जन कबहु न मरते झूरि ॥ १ ॥

धंध बंध बिनसे माइआ के साधू संगति मिटे बिसूर। सुख संपति भोग इसु जीअ के बिनु हरि नानक जाने कूर ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥

हे ईश्वर ! हम तेरे चरणों की धूलि हैं। हे दीनदयालु, प्रियतम, हे मनमोहन ! कृपा करो, मेरी अभिलाषा पूरी करो ॥ रहाउ ॥ हे अन्तर्यामी ! दसों दिशाओं में तुम्हारा ही यश रम रहा है (समाया हुआ है)। जो तुम्हारा यशगान करते हैं, वे भक्तजन कभी दुख पाकर नहीं मरते ॥ १ ॥ उनके सभी प्रकार के माया के बन्धन नष्ट हो जाते हैं और सन्त-संगति होने से सभी चिन्ताएँ मिट जाती हैं। श्री गुरुजी कहते हैं कि इस जीव के लिए जितने भी सुख, सम्पत्ति और भोगादि हैं, वे सब भगवान के नाम के बिना झूठे अथवा नाशवान हैं ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥

॥ टोडी म० ५ ॥ माई मेरे मन की पिआस। इकु खिनु रहि न सकउ बिनु प्रीतम दरसन देखन कउ धारी मनि आस ॥ रहाउ ॥ सिमरउ नामु निरंजन करते मन तन ते सभि किलविख नास। पूरन पारब्रहम सुखदाते अबिनासी बिमल जाको जास ॥ १ ॥ संत प्रसादि मेरे पूर मनोरथ करि किरपा भेटे गुण तास। सांति सहज सूख मनि उपजिओ कोटि सूर नानक परगास ॥ २ ॥ ५ ॥ २४ ॥

हे भाई ! मेरे मन में ऐसी प्यास जगी है कि एक पल भी अपने प्रियतम को देखे बिना नहीं रह सकती। मैंने अपने मन में उसके दर्शन की ही अभिलाषा बना रखी है ॥ रहाउ ॥ उस निरंजन भगवान का नाम स्मरण करने से तन-मन के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। वह भगवान पूर्णपरब्रह्म है, सुखदाता है, अविनाशी है और उसका यश निर्मल है ॥ १ ॥ सन्त-कृपा से मेरे मनोरथ पूर्ण हो गए और गुणराशि भगवान मुझ पर कृपा करके मुझे मिल गए। मेरे मन में शान्ति और सहज सुख उत्पन्न हो गए हैं और अनेक सूर्यों जैसा प्रकाश हो गया है ॥ २ ॥ ५ ॥ २४ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि पतित पावन। जीअ प्रान मान सुखदाता अंतरजामी मन को भावन ॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघड़ु चतुरु सभ बेता रिद दास निवास भगत गुन गावन। निरमल रूप अनूप सुआमी करम भूमि बीजन सो खावन ॥ १ ॥ बिसमन बिसम भए बिसमादा आन न बीओ दूसर लावन। रसना सिमरि सिमरि जसु जीवा नानक दास सदा बलि जावन ॥ २ ॥ ६ ॥ २५ ॥

हे भगवान ! तुम पतितपावन हो, जीवों के प्राणदाता, मान (प्रतिष्ठा) और सुखदाता हो । तुम अन्तर्यामी हो और सबके मन को अच्छे लगते हो ॥ रहाउ ॥ तुम सुन्दर हो, सुघड़ और सयाने (चतुर) हो, सर्वज्ञ हो। जो भक्त तुम्हारा गुणगान करते हैं, उनके हृदय में सदा निवास करनेवाले हो । तुम्हारा निर्मल रूप है, तुम अनुपम हो । यह जीव इस कर्मभूमि (जीवन) में जो कुछ बोता है, उसी का फल भोगता है ॥ १ ॥ तुम्हारे विस्मयकारी कौतुकों पर सभी चकित हैं, क्योंकि तुम्हारे समान अन्य कोई नहीं है । हे प्रभो ! मैं अपनी जिह्वा से तुम्हारा यश गाकर सदा तुम्हें स्मरण करता हुआ जीवन व्यतीत करूँ । श्री गुरुजी कहते हैं कि हे भगवान ! मैं तुम्हारा दास हूँ और तुम पर सदा बलिहारी जाता हूँ ॥ २ ॥ ६ ॥ २५ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ माई माइआ छलु । त्रिण की अगनि मेघ की छाइआ गोबिद भजन बिनु हड़ का जलु ॥ रहाउ ॥ छोडि सिआनप बहु चतुराई दुइ कर जोड़ि साध मगि चलु । सिमरि सुआमी अंतरजामी मानुख देह का इहु ऊतम फलु ॥ १ ॥ बेद बखिआन करत साधू जन भागहीन समझत नही खलु । प्रेम भगति राचे जन नानक हरि सिमरनि दहन भए मल ॥२॥७॥२६॥

हे माई ! यह माया तो निरा छल है । गोविन्द के भजन के बिना यह माया तिनकों की आग, बादल की छाया और बाढ़ के पानी के समान है ॥ रहाउ ॥ इसलिए अत्यधिक सयानापन और चतुराई छोड़कर दोनों हाथ जोड़कर सन्तजनों के मार्ग पर चलो । उस अन्तर्यामी स्वामी का स्मरण करो, क्योंकि मनुष्य-देह धारण करने का यही सबसे उत्तम फल है ॥ १ ॥ सभी वेदादि और साधुजन यही बात बतलाते हैं (व्याख्या करते हैं), परन्तु भाग्यहीन दुष्ट जीव इस तत्त्व को नहीं समझ पाते । जो लोग उस प्रभु के प्रेम और भक्ति में रँगे हुए हैं और प्रभु का स्मरण करते हैं, उनके सभी मल-पाप भस्म हो जाते हैं ॥ २ ॥ ७ ॥ २६ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ माई चरन गुर मीठे । वडै भागि देवै परमेसरु कोटि फला दरसन गुर डीठे ॥ रहाउ ॥ गुन गावत अचुत अबिनासी काम क्रोध बिनसे मद ढीठे। असथिर भए साच रंगि राते जनम मरन बाहुरि नही पीठे ॥ १ ॥ बिनु हरि भजन रंग रस जेते संत दइआल जाने सभि झूठे । नाम रतनु पाइओ जन नानक नाम बिहून चले सभि मूठे ॥ २ ॥ ८ ॥ २७ ॥

हे माई ! सद्गुरु के चरण अत्यन्त मीठे (प्रिय) हैं । जिनके बड़े

(अत्यन्त) भाग्य होते हैं परमात्मा उन्हें ही गुरु-चरणों का प्रेम प्रदान करता है, क्योंकि गुरुदर्शन से करोड़ों पुण्यों का फल प्राप्त होता है ॥ रहाउ ॥ उस अच्युत अविनाशी भगवान के गुणगान करनेवाले जीव के ढीठ काम-क्रोध और मद आदि नष्ट हो जाते हैं। वे भक्तजन उस प्रभु के सच्चे रंग में रँगे जाकर स्थिर (अडोल) हो जाते हैं और जन्म-मरण के चक्कर में बार-बार नहीं पिसते ॥१॥ भगवान के भजन के अतिरिक्त सभी रस-रंगों को दयालु सन्तों ने झूठा माना है। श्री गुरुजी कहते हैं कि भगवान के भक्तों को ही नाम रूपी रत्न प्राप्त होता है, नाम-स्मरण से रहित लोग तो अपने जीवन (जन्म) से ठगे जाते हैं अर्थात् उनका जीवन (जन्म) व्यर्थ ही जाता है ॥ २ ॥ ८ ॥ २७ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ साध संगि हरि हरि नामु चितारा। सहजि अनंदु होवै दिनु राती अंकुरु भलो हमारा ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा भेटिओ बडभागी जाको अंतु न पारावारा। करु गहि काढि लीओ जनु अपुना बिखु सागर संसारा ॥ १ ॥ जनम मरन काटे गुरबचनी बहुड़ि न संकट दुआरा। नानक सरनि गही सुआमी की पुनह पुनह नमसकारा ॥ २ ॥ ६ ॥ २८ ॥

(हे भाई !) सन्तों की संगति के कारण ही भगवान का नाम स्मरण होता है। जिससे दिन-रात अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है और हमारे पुण्य कर्मों का अंकुर फूटता है ॥ रहाउ ॥ अनन्त एवं अथाह (अपार) पूर्ण सद्गुरु का मेल भी बड़े भागों से होता है। विषैले संसार-सागर से गुरु ही हाथ पकड़कर उद्धार करने में समर्थ है ॥ १ ॥ गुरु ही अपनी वाणी (वचनों) से जन्म-मरण से मुक्ति दिलाता है और उसकी कृपा से ही अनेक संकटों का द्वार रूपी यह जन्म फिर नहीं होता। श्री गुरुजी कहते हैं कि हमने अपने स्वामी की शरण ली है, उसे बार-बार नमस्कार है ॥ २ ॥ ९ ॥ २८ ॥

॥ टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन को सुखु। कोटि अनंद राज सुखु भुगवै हरि सिमरत बिनसै सभ दुखु ॥१॥रहाउ॥ कोटि जनम के किलबिख नासहि सिमरत पावन तन मन सुख। देखि सरूपु पूरनु भई आसा दरसनु भेटत उतरी भुख ॥ १ ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु। नानक सरनि गही सुख सागर जनम मरन फिरि गरभ न धुखु ॥ २ ॥ १० ॥ २६ ॥

हे माई ! प्रभु-स्मरण से मेरे मन को सुख प्राप्त हुआ है। उस प्रभु

के नाम-स्मरण से उत्पन्न सुख करोड़ों राज्यों के सुख-भोग के आनन्द के समान है। उसके नाम-स्मरण से सब दुख नष्ट हो जाते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करोड़ों जन्मों के पाप नाश हो जाते हैं और तन पवित्र होता है तथा मन को सुख मिलता है। प्रभु के स्वरूप को देखकर मेरी सब आशाएँ पूर्ण हो गईं और दर्शन होने पर मेरी सब पदार्थों की भूख मिट गई ॥ १ ॥ धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारों पदार्थ और अणिमा-महिमा आदि आठों सिद्धियों के दाता भगवान को मैंने कामधेनु और कल्पवृक्ष के समान पा लिया है। श्री गुरुजी कहते हैं कि जो लोग सुख के सागर-रूप भगवान की शरण लेते हैं, उन्हें जन्म-मरण और गर्भ की पीड़ा नहीं झेलनी पड़ती ॥२॥१०॥२९॥

॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि चरन रिदै उरधारे। सिमरि सुआमी सतिगुरु अपुना कारज सफल हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुंन दान पूजा परमेसुर हरि कीरति ततु बीचारे। गुन गावत अतुल सुखु पाइआ ठाकुर अगम अपारे ॥१॥ जो जन पारब्रहमि अपने कीने तिन का बाहुरि कछु न बीचारे। नाम रतनु सुनि जपि जपि जीवा हरि नानक कंठ मझारे ॥ २ ॥ ११ ॥ ३० ॥

हे भाई! हम सब भगवान के चरणों को हृदय में धारण करें, क्योंकि अपने सद्गुरु एवं स्वामी का स्मरण करने से ही हमारे सभी काम सफल होंगे ॥१॥रहाउ॥ सबसे बड़ी तत्त्व की बात यही है कि भगवान का चिन्तन करना ही पुण्य, दान और पूजा है। उस अगम अपार प्रभु के गुणगान से ही अतुलनीय आनन्द प्राप्त होता है ॥१॥ जिन भक्तों को वह प्रभु अपना लेता है, उनके कर्म आदि पर फिर कुछ विचार नहीं होता। श्री गुरुजी कहते हैं कि मैं तो उसी प्रभु के नाम-रूप रत्न की महिमा सुन-सुनकर और वर्णन करके जीता हूँ और मैंने उसे ही अपने कण्ठ में धारण कर रखा है ॥ २ ॥ ११ ॥ ३० ॥

टोडी महला ९

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कहउ कहा अपनी अधमाई। उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥१॥रहाउ॥ जग झूठै कउ साचु जानिकै ता सिउ रुच उपजाई। दीनबंधु सिमरिओ नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥ १ ॥ मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मनकी काई। कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

हे प्रभो ! मैं अपनी क्या-क्या अधमता वर्णन करूँ ? क्योंकि मैं तो निरन्तर कनक और कामिनी (धन और स्त्री) के आनन्द में ही उलझा रहा। कभी प्रभु का गुणगान नहीं किया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इस झूठे संसार को सत्य मानकर इसमें ही अपनी रुचि बनाए रखी। सदा सहायक दीन-बन्धु प्रभु का कभी स्मरण नहीं किया ॥१॥ मैं सदा ही माया में मग्न रहा, इसीलिए मन की मलिनता दूर नहीं हो सकी। श्री गुरुजी कहते हैं कि अब भगवान की शरण के बिना अन्य कोई गति (चारा) नहीं ॥२॥१॥३१॥

टोडी बाणी भगतां की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि। जल की माछुली चरै खजूरि ॥ १ ॥ कांइ रे बकबादु लाइओ। जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंडितु होइकै बेदु बखानै। मूरखु नामदेउ रामहि जानै ॥२॥१॥

हे भाई ! भगवान को कोई तो समीप कहता है, तो कोई दूर बतलाता है। यह निर्णय करना वैसा ही है जैसे कोई यह कहे कि जल की मछली खजूर पर चढ़ी हुई है ॥ १ ॥ भगवान को दूर या समीप कहना तो कोरी बकवास है, क्योंकि जो भगवान को प्राप्त कर लेता है वह उसका प्रचार नहीं करता बल्कि गुप्त ही रखता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू पंडित (विद्वान) बनकर वेद बखानता है; परन्तु मैं नामदेव विद्वान तो नहीं हूँ, लेकिन केवल भगवान को ही जानता हूँ। भाव यह कि भगवान को तर्क से सिद्ध नहीं किया जा सकता, बल्कि अनुभव से ही उसका अस्तित्व सिद्ध है ॥ २ ॥ १ ॥

कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही। पतित पवित भए रामु कहत ही ॥ रहाउ ॥ राम संगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई। एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जांई ॥ १ ॥ भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए। गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए ॥ २ ॥ २ ॥

हे भाई ! राम का नाम लेते ही किसी का कोई भी कलंक (पाप) शेष नहीं रहता। 'राम' यह शब्द कहते ही पतित भी पवित्र बन जाता है ॥ रहाउ ॥ भगवान का संग मिलने पर यह निश्चय हो गया कि एकादशी का व्रत करने और तीर्थ आदि जाने की कोई आवश्यकता नहीं ॥१॥ भक्त नामदेव कहते हैं कि भगवान का नाम स्मरण करने से व्यक्ति सद्बुद्धि

और पुण्य प्राप्त करता है। इसलिए गुरु की शिक्षा से प्रभु का नाम लेना चाहिए, क्योंकि ऐसा कौन है जो गुरु का उपदेश पाकर भगवान का नाम लेने पर वैकुण्ठ न गया हो? अर्थात् सभी (गुरु-भक्तों) को वैकुण्ठ मिलता है ॥ २ ॥ २ ॥

तीनि छंदे खेलु आछै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुंभार के घर हांडी आछै राजा के घर सांडी गो। बामन के घर रांडी आछै रांडी सांडी हांडीगो ॥ १ ॥ बाणीए के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो। देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो ॥ २ ॥ तेली कै घर तेलु आछै जंगल मधे बेल गो। माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो ॥ ३ ॥ संतां मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे सिआम गो। नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंद गो ॥ ४ ॥ ३ ॥

कर्म-उपासना-ज्ञान तथा सत्त्व, रज, तम आदि गुण इन तीनों का अच्छा खेल रचा है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसमें तीन शब्दों का ही चमत्कार दर्शनीय है, क्योंकि उनसे ही तीन दृष्टान्त दिए गए हैं। कुम्हार के घर में हाँडी (मिट्टी का बर्तन) हो तभी उसकी शोभा है और राजा के घर यदि हस्तिनी हो तभी उसकी शोभा है। इसी प्रकार ब्राह्मण के घर में पञ्चांग (पत्रा) हो उसकी प्रतिष्ठा भी तभी है। इन तीनों ही ब्राह्मण, राजा और कुम्हार की क्रमशः पञ्चांग, हस्तिनी और हाँडी से ही शोभा है, परन्तु इसके विपरीत होने से नहीं अर्थात् राजा के घर पञ्चांग या हाँडी, इसी प्रकार कुम्हार के यहाँ पञ्चांग या हस्तिनी शोभा नहीं बढ़ाते ॥१॥ (ऐसे ही) बनिए (दुकानदार) के घर हींग का मिलना, भैंसे के माथे पर सींग होना और देवालय में शिवलिंग का स्थापित हुआ होने से ही इनकी शोभा है ॥ २ ॥ तेली के घर तेल का होना, जंगल में घास-फूस आदि फूलने से उसका हरा-भरा होना और माली के घर केले का होना ही इनके लिए शोभाकारक हैं ॥ ३ ॥ इसी प्रकार भगवान का निवासस्थान सन्तों का हृदय है अर्थात् भगवान का निवासस्थल होने से ही सन्तों के हृदय की शोभा है, अन्यथा नहीं; जैसे गोकुल की शोभा श्याम के होने से है। भक्त नामदेव कहते हैं कि मेरे हृदय में राम का निवास है, इसलिए मेरी शोभा भगवान के कारण, गोकुल की श्याम के कारण और सन्त हृदयों की शोभा गोविन्द के कारण ही कही जानी उचित है ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु बैराड़ी महला ४ घरु १ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सुनि मन अकथ कथा हरिनाम । रिधि बुधि सिधि सुख पावहि भजु गुरमति हरि राम राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान जसु ऊतम खट दरसन गावहि राम । संकर क्रोड़ि तेतीस धिआइओ नही जानिओ हरि मरमाम ॥ १ ॥ सुरि नर गण गंध्रब जसु गावहि सभ गावत जेत उपाम । नानक क्रिपा करी हरि जिन कउ ते संत भले हरि राम ॥ २ ॥ १ ॥

हे मन ! उस अवर्णनीय (अनिर्वचनीय) भगवान के गुण श्रवण कर और उसका नाम का जाप कर । गुरु के सदुपदेश से भगवान का नाम स्मरण करने पर ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं और सद्बुद्धि एवं सुख मिलते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगवान का यश अनेक आख्यानों के रूप में पुराणों ने गाया है और छहों दर्शनों में उसका नाना रूपों में आख्यान किया गया है । शिवशंकर से लेकर तेंतीस करोड़ देवताओं तक ने उस प्रभु का ध्यान किया, परन्तु वे भी उसका भेद नहीं पा सके ॥ १ ॥ देवताओं से लेकर मनुष्य, गन्धर्व और जितने भी जीव उस भगवान ने उत्पन्न किए हैं, सभी उसका यशगान करते हैं । श्री गुरुजी कहते हैं कि जिन पर वह प्रभु अपनी कृपा करता है, वे ही भगवान के अच्छे भक्त माने जाते हैं ॥ २ ॥ १ ॥

॥ बैराड़ी महला ४ ॥ मन मिलि संत जना जसु गाइओ । हरि हरि रतनु रतनु हरि नीको गुरि सतिगुरि दानु दिवाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन कउ मनु तनु सभु देवउ जिनि हरि हरि नामु सुनाइओ । धनु माइआ संपै तिसु देवउ जिनि हरि मीतु मिलाइओ ॥ १ ॥ खिनु किंचत क्रिपा करी जगदीसरि तब हरि हरि हरि जसु धिआइओ । जन नानक कउ हरि भेटे सुआमी दुखु हउमै रोगु गवाइओ ॥ २ ॥ २ ॥

हे मन ! सन्तजनों ने मिलकर प्रभु का गुणगान किया है । सब रत्नों में श्रेष्ठ भगवान का नाम-रूप रत्न सद्गुरु ही दान में दिलाने के लिए समर्थ होता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो व्यक्ति प्रभु का नाम मुझे सुनाए, मैं उसे अपना तन-मन एवं सभी कुछ दे दूँगा । जो मुझे मेरे मित्र भगवान

को मिलाए, मैं उसे समूचा धन-सम्पत्ति दे दूँगा ।। १ ।। एक क्षण मात्र के लिए भी यदि भगवान अपनी थोड़ी सी भी कृपा कर देता है, तभी यह जीव उस मनहरण भगवान का यशगान एवं ध्यान कर सकता है। श्री गुरुजी कहते हैं कि जिसे भी भगवद्प्राप्ति हो जाती है, उसके सभी प्रकार के (दैहिक, दैविक, भौतिक) दुख और अहंकार आदि रोग नष्ट हो जाते हैं ।। २ ।। २ ।।

।। बैराड़ी महला ४ ।। हरि जनु राम नाम गुन गावै । जे कोई निंद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै ।। १ ।। रहाउ ।। जो किछु करे सु आपे सुआमी हरि आपे कार कमावै । हरि आपे ही मति देवै सुआमी हरि आपे बोलि बुलावै ।। १ ।। हरि आपे पंच ततु बिसथारा विचि धातू पंच आपि पावै । जन नानक सतिगुरु मेले आपे हरि आपे झगरु चुकावै ।। २ ।। ३ ।।

हे भाई ! भगवान का भक्त सदा ही उसके गुण गाता है। यदि कोई उस भक्त की निंदा भी करता है, तो भी वह अपना गुण (परोपकार आदि की वृत्ति) नहीं छोड़ता ।। १ ।। रहाउ ।। भक्त भली प्रकार जानता है कि जो कुछ भी (निन्दा-स्तुति) करनेवाला है, वह तो स्वयं प्रभु ही है। सब कार्य वही करवाता है। वह स्वयं ही बुद्धि प्रदान करता है और स्वयं ही वचन बुलवाता है ।। १ ।। स्वयं भगवान ने ही पाँच तत्त्वों से जगत का विस्तार किया है और उसमें काम-क्रोधादि भी स्वयं ही दे दिए हैं। वह भगवान भक्त का स्वयं ही किसी सच्चे गुरु से मेल करवाता है और सद्गुरु-प्राप्ति के अनन्तर स्वयं ही उन काम-क्रोधादि का झगड़ा चुका देता है ।। २ ।। ३ ।।

।। बैराड़ी महला ४ ।। जपि मन राम नामु निसतारा । कोट कोटंतर के पाप सभि खोवै हरि भवजलु पारि उतारा ।। १ ।। रहाउ ।। काइआ नगरि बसत हरि सुआमी हरि निरभउ निरवैरु निरंकारा । हरि निकटि बसत कछु नदरि न आवै हरि लाधा गुर वीचारा ।। १ ।। हरि आपे साहु सराफु रतनु हीरा हरि आपि कीआ पासारा । नानक जिसु क्रिपा करे सु हरिनामु विहाझे सो साहु सचा वणजारा ।। २ ।। ४ ।।

हे मन ! भगवान का नाम जप, इसी से तेरा उद्धार होगा। भगवान का नाम करोड़ों जन्म-जन्मान्तरों के पाप नाश करनेवाला और संसार-सागर से पार करनेवाला है ।। १ ।। रहाउ ।। इस काया (शरीर) रूपी नगरी

में वही निर्भय, निर्वैर एवं निराकार भगवान निवास करता है। परन्तु इतना समीप रहते हुए भी वह किसी को दिखाई नहीं देता। उसकी प्राप्ति तो तभी होती है, जब गुरु से ज्ञान प्राप्त होता है ॥ १ ॥ वह भगवान स्वयं ही शाह (दुकान का स्वामी अथवा साहूकार) है, स्वयं ही सर्राफ़ (सोना-चाँदी के गहने बेचनेवाला) है और वही भगवान स्वयं ही हीरा-रत्न आदि का विस्तार किए हुए स्थित है। श्री गुरुजी कहते हैं— परन्तु उस सच्चे साहूकार-व्यापारी से उसका नाम-रूप रत्न वही ख़रीद सकता है, जिस पर स्वयं उसकी कृपादृष्टि होती है ॥ २ ॥ ४ ॥

॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन हरि निरंजनु निरंकारा। सदा सदा हरि धिआईऐ सुखदाता जाका अंतु न पारावारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि कुंट महि उरध लिव लागा हरि राखै उदर मंझारा। सो ऐसा हरि सेवहु मेरे मन हरि अंति छडावणहारा ॥ १ ॥ जाकै हिरदै बसिआ मेरा हरि हरि तिसु जन कउ करहु नमसकारा। हरि किरपा ते पाईऐ हरि जपु नानक नामु अधारा ॥ २ ॥ ५ ॥

हे मन! उस निराकार-निरंजन भगवान का भजन कर। सदा ही उस सुखदाता, अनन्त एवं अपार भगवान का ध्यान करना उचित है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गर्भावस्था में जब जीव उलटा लटका हुआ भगवान का ध्यान करता है, तब उस स्थिति में उदर के अग्निकुण्ड में पड़े जीव की वही रक्षा करता है। इसलिए, हे मन! ऐसे भगवान का भजन कर, क्योंकि अन्त समय (मृत्यु के समय) यम आदि से वही मुक्ति दिलानेवाला है ॥ १ ॥ वह प्रभु जिस भक्त के हृदय में निवास करता है, उस भक्त को सदा नमस्कार करो। भगवान की कृपा से ही भगवन्नाम की प्राप्ति सम्भव है। श्री गुरुजी कहते हैं कि भगवान का नाम जपना चाहिए, क्योंकि वही सबका एक मात्र आधार है ॥ २ ॥ ५ ॥

॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन हरि हरि नामु नित धिआइ। जो इछहि सोई फलु पावहि फिरि दूखु न लागै आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ। बिनु हरि प्रीति होर प्रीति सभ झूठी इक खिन महि बिसरि सभ जाइ ॥ १ ॥ तू बेअंतु सरब कल पूरा किछु कीमति कही न जाइ। नानक सरणि तुम्हारी हरि जीउ भावै तिवै छडाइ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे मन ! भगवान का भजन कर और नित्य उसका ही ध्यान कर । भगवान का भजन-ध्यान करने से जो चाहो (यथाभिलषित) वही फल प्राप्त होता है और फिर कोई दुख नहीं रहता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वही जप, तप, व्रत और पूजा श्रेष्ठ है, जो भगवान की ओर जीव की प्रीति लगाते हैं । भगवान के प्रेम के अतिरिक्त अन्य सभी प्रेम झूठे हैं, क्योंकि वे तो एक पल भर में भुलाए जाने योग्य हैं ॥ १ ॥ हे ईश्वर ! आप सब कलाओं से पूर्ण हो, आपकी कोई क़ीमत नहीं आँकी जा सकती । श्री गुरुजी कहते हैं कि मैं तो आपकी शरण हूँ, इसलिए जैसे आपको अच्छा लगे वैसे मुझे बन्धनों से मुक्त करो ॥ २ ॥ ६ ॥

रागु बैराड़ी महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ संत जना मिलि हरि जसु गाइओ । कोटि जनम के दूख गवाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो चाहत सोई मनि पाइओ । करि किरपा हरि नामु दिवाइओ ॥ १ ॥ सरब सूख हरि नामि वडाई । गुरप्रसादि नानक मति पाई ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

हे भाई ! जिस जीव ने भगवान के भक्तों के साथ मिलकर भगवान का गुणगान किया है, उसके करोड़ों जन्मों के दुख समाप्त हो गए जानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वह भक्त जीव अपने मन से जो भी इच्छा करता है, वही उसकी पूरी होती है । ऐसे भक्त को गुरु स्वयं कृपा करके भगवन्नाम का दान भी दिला देता है ॥ १ ॥ भगवान के नाम की महिमा यह है कि जीव को सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं । श्री गुरुजी कहते हैं कि भगवान की ओर उन्मुख होने की बुद्धि भी गुरु की प्रसन्नता से ही मिलती है ॥२॥१॥७॥